

देवत-संहिता

प्रथम भाग ।

१ अग्निदेवता ।

२ इंद्रदेवता ।

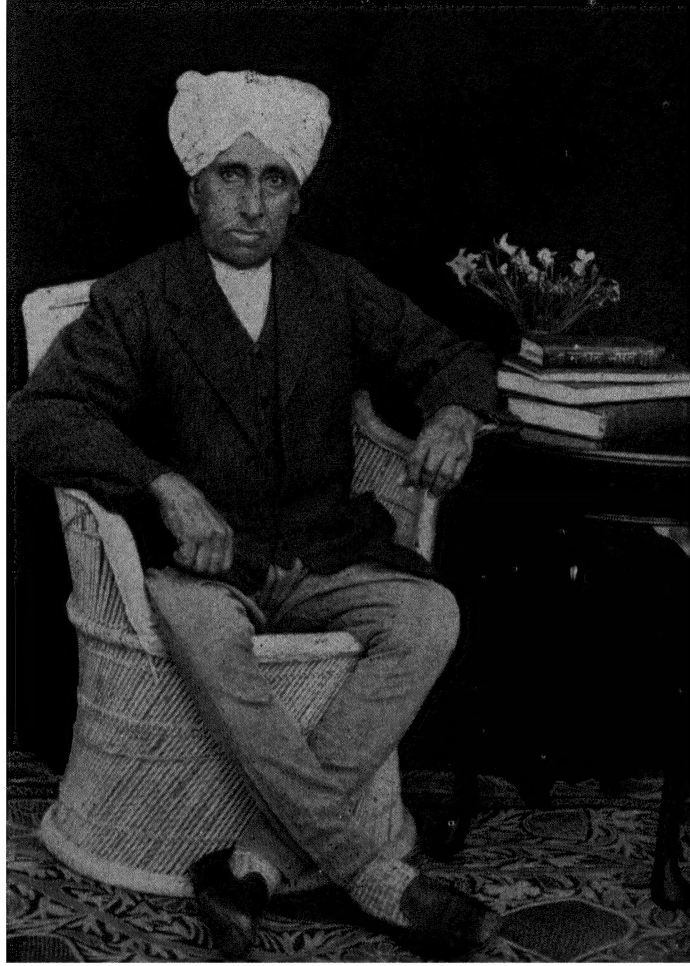
३ सोमदेवता ।

४ मरुदेवता ।

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_184204

UNIVERSAL
LIBRARY



पं० नाथूलालजी शर्मा जोशी, पेन्शनर, आदर्शनगर-अजमेर

एकसहस्रोत्तरनवशताधिकाष्टादशे विक्रमाब्दे ज्येष्ठस्य शुक्लपक्षस्य षष्ठ्यां तिथौ सिंहलग्ने लब्धजन्मना, राजस्थानान्तर्गत-कृष्णगढाधीशस्य ['हिज हाईनेस' उपाधिविभूषितस्य] राष्ट्रकूटा- (राठोडा) न्वयमुक्तामणेर्पुण्ड्रपुगातिथर्महाराजाधिराज-श्री-शार्दूलसिंहस्य सूतोः मदनसिंहदेववर्मणो राजपरिषदि सेवां विधाय सम्मानितेन श्रीनगरवासिनः गुर्जरगौडविप्रांतर्गत-मुद्गलगोत्रोत्पन्नस्य जोशी इत्युपाहृतस्य श्री-पंडित-बदरीनाथस्यात्मजेन नाथूलालशर्मणा, भूतपूर्वेषु कृष्णगढराज्यस्य न्यायाधीशेन सम्प्रति सेवानिवृत्तेन अजमेरांतर्गतमादर्शनगरमधिवसता दैवतसंहितामुद्रणार्थं द्विसहस्रमिता मुद्राः प्रदत्तास्तेन धनेन मुद्रितोऽयं दैवतसंहिताग्रन्थः ।

राष्ट्रकूट (राठोड) नामसे विख्यात क्षत्रिय कुलके विभूषण, कृष्णगढ (राजस्थान) रियासतके नरेश, हिज हाईनेस स्वर्गीय महाराजाधिराज श्री शार्दूल सिंहके सुपुत्र स्व० श्री० महाराजाधिराज हिज हाईनेस वीरश्रेष्ठ श्री महाराजा मदनसिंहजी देववर्माकी सेवाद्वारा सम्मानित हुए और श्रीनगर (अजमेर) के निवासी गुर्जर गौड ब्राह्मणजातिके अंतर्गत मुद्गल गोत्रमे उत्पन्न श्री पंडित बदरीनाथके सुपुत्र नाथूलालजी जोशी, जो अब कृष्णगढरियासत के सेवानिवृत्त न्यायाधीश है और आदर्शनगरमें निवास करते है । जन्म विक्रम सन् १९१८ ज्येष्ठ शुक्ला ६ सिंहलग्न । आपने दैवतसंहिताके मुद्रण के लिये २०००) दो सहस्र ६० का दान किया, जिससे दैवतसंहिता मुद्रित हुई है ।



दैवत-संहिता

(१)

अग्निदेवता



संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय-मण्डल, औध्र (त्रि० सातारा)



संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४१



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B A,
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

दैवत-संहिता का परिचय ।

दैवत-संहिताका प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा जाता है, इसका अध्ययन पाठक करें ।

अग्निदेवता के करीब दार्द्व हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं और इन्द्रदेवता के करीब साठे-तीन हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं । अर्थात् दोनों देवताओं के मिलकर करीब छः हजार अर्थात् आधे ऋग्वेद के जितने मन्त्र हुए हैं । इससे वेदमें इन दोनों देवताओं का महत्त्व कितना है, यह स्पष्ट होता है । वेदों में इन दो देवताओं के जितने मन्त्र हैं, करीब उतने ही अन्य सब देवताओं के मिलकर हैं । वेदों का आधा भाग इन दो देवताओं के लिये समर्पित हुआ है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि, इन देवताओं का महत्त्व वेद में अधिकसे अधिक है ।

प्रत्येक देवता के मन्त्र छापनेके बाद (१) पुनरुक्त मंत्र तथा पुनरुक्त मन्त्रभागों की सूची छपी है । इस सूची से कौनसा मन्त्र कहां दुबारा आया है, यह स्पष्ट हो जाता है, जो स्वाध्याय के लिये और निष्प पाठसे अर्थज्ञान होने के लिये अत्यन्त ही आवश्यक है । इस के पश्चात् मंत्रों की (२) वर्णानुक्रमसूची छपी है, जिससे कौनसा मंत्र कहां है, इसका पता लगता है । केवल मन्त्र छापे जाय और सूची न हो, तो कौनसा मन्त्र कहां है, इसका पता नहीं लग सकता । इस कारण से यह सूची आवश्यक है । इसके पश्चात् (३) 'विशेषणसूची' छपी है । अग्नि-देवता के स्वरूप का निर्णय उस देवता के विशेषणों से हो सकता है । ये सब विशेषण इस सूची में वर्णानुक्रम से दिये हैं और उनके पते भी दिये हैं । चतुर्थ सूची (४) 'उपमाओं की सूची' है । अग्नि को कितनी उपमाएं वेद में दी हैं यह इससे पता लग सकता है । उपमाओं से देवता के स्वरूप की पहचान होती है ।

इस तरह सूचियां प्रत्येक देवता के साथ रहेंगी । पाठक विचार करके देखेंगे, तो उन को पता लग जायगा कि, इन सूचियों के बिना दैवतों का मंत्रसंग्रह विशेष लाभदायक नहीं होगा ।

आज तक किसीने इन सूचियोंका संग्रह नहीं किया था । कोई पाठक अब इन सूचियों के विचार से अर्थात् अग्नि आदि देवताओं के विशेषण, उपमा, पुनरुक्त मन्त्रभाग आदि का मनन करके अग्निदेवता का ठीकठीक स्वरूप जान सकता है । यह सुविधा इस से पूर्व नहीं थी । यह सुविधा दैवत-संहिताद्वारा हो रही है । जैसी अग्नि-देवता की ये सूचियां छपी हैं वैसी ही इन्द्र की भी छपेंगी और अन्यान्य देवताओंकी भी छपेंगी ।

जो पाठक इन के बनानेके कष्टों को जानेंगे और इनका महत्त्व स्वाध्यायमें कितना है, यह समझेंगे, वे इनका उपयोग करके देवताका स्वरूप ठीकठीक जानेंगे ।

आर्येय-संहिता ।

सब वेदोंमें जो मन्त्र हैं, वे विभिन्न विभागोंमें बांटे हैं, जैसा (१) ऋग्वेद के प्रथम सात मण्डलों के सब मन्त्र ऋषिवार प्रथित हैं, केवल नवम मण्डल दैवत-संहिता के रूप में है, अर्थात् हम में 'सोम' देवताके ही मन्त्र हैं । प्रथम के छः मण्डल ऋषिवार हैं—

२. द्वितीय	मण्डल	गुप्तमद ऋषि	सूक्त ४३	मंत्र ४२०
३. तृतीय	"	विश्वामित्र	" ६२	" ६१७
४. चतुर्थ	"	वामदेव	" ५८	" ५८९
५. पञ्चम	"	अत्रि	" ८७	" ७२७
६. षष्ठ	"	भरद्वाज	" ७५	" ७६५
७. सप्तम	"	वसिष्ठ	" १०४	" ८४१

यदि चतुर्थ और तृतीय आगेपीछे किये जाय, तो ये मण्डल 'बढ़ती हुई मन्त्रसंख्या' के दीखते हैं ।

प्रथम मण्डलके सूक्त १९१ हैं, वैसे ही दशम मण्डलके भी १९१ ही सूक्त हैं । पर प्रथम मण्डल की मंत्रसंख्या २००६ है और दशम मण्डलकी १७५४ है । अष्टम मण्डल बहुतांश 'कण्व' ऋषिवाला दीखता है और प्रथम मण्डल मधुच्छंदा से शुरू है । पर इन दोनों में अन्यान्य ऋषियों के भी मंत्र दीखते हैं, इस का कारण भी है ।

इस ऋग्वेद में केवल नवम मण्डल 'दैवत-संहिता' है, शेष मण्डल प्रायः ' आर्षेय-संहिता ' के रूप में हैं। इस नवम मण्डल के सोमदेवता के मन्त्र देखने से हमें दैवत-संहिताकी कल्पना प्रथम आ गयी। और वह हमने पाठकोंके सामने रख दी, जो प्रायः सब पाठकोंको पसंद आ गयी।

हार्दिक धन्यवाद ।

इस संहिता की कल्पना पसंद आते ही अजमेरनिवासी श्री० पं० नथूलाल शर्माजी पेन्शनर ने इस के निर्माण और मुद्रण के लिये दो सहस्र रु० का दान किया, जिससे इस का कार्य शुरू हुआ है। इनके सब स्वाध्यायशील सज्जनोंपर उक्त दानके कारण अनन्त उपकार हुए हैं। अतः वे धन्यवाद के लिये पात्र हैं।

दैवत-संहिता के निर्माण करने में प्रथम हमारी इतनी हि इच्छा थी कि, केवल एक एक देवता के मंत्र छोटकर एक स्थानपर छापना और इसमें जैसे ऋषिवार मंत्र हैं वैसे ही रखना। अर्थात् एक देवताके मंत्र एक स्थानपर छापना और उस एक देवताके मंत्रों में एक एक ऋषि के मन्त्र इकट्ठे छापना। इससे नित्य पाठ करनेवालोंके लिये आसानी होगी, और अर्थ का विचार करनेवालों के लिये भी अर्थ का मनन करना सहज हो जायगा।

इस समय एक देवता के मंत्र किसी वेदमें एक स्थानपर नहीं है। इसलिये किस देवता के विषय में कहां क्या लिखा है, इसका किसी को पता नहीं रहता, अनुसन्धान करना कठिन होता है। 'दैवत-संहिता' बननेसे प्रत्येक देवताके मन्त्र इकट्ठे होंगे और स्वाध्याय करना सुगम हो जायगा।

उक्त प्रकार सहायता आते ही हमने अग्निमन्त्रों का मुद्रण करना शुरू किया। इस समय विचार यही था कि, साल दो साल में देवतावार चारों वेदों के मन्त्र छोटकर छाप देना। इससे अधिक विचार इस समय नहीं था। इस कारण इस समय हमने जो विज्ञापन छापे, उसमें इस दैवत-संहिता का मुद्रण दो वर्षोंमें होगा, ऐसा छाप दिया था।

सूचियाँ ।

अग्नि-मन्त्रों का मुद्रण होते होते, यह विचार मन में आया कि यदि इन देवता-मन्त्रों के साथ साथ—

(१) अकारादि मन्त्रसूची ।

(२) पुनरुक्त मन्त्र-भागोंकी सूची ।

(३) विशेषण-सूची ।

(४) उपमा-सूची ।

ऐसी सूचियाँ दी जायेंगी, तो देवता-निर्णय करना सुगम हो जायगा और स्वाध्याय करनेवालों की बहुत ही सहायता हो जायगी।

ऐसा करनेसे पृष्ठसंख्या डेढ़ गुनी हो जायगी, यह भी खयाल आया और देड़ गुना व्यय भी बढ़ेगा, इसका भी विचार हुआ। पर स्वाध्याय करनेवाला जो कोई हो गा उसकी सहायता होनी चाहिये। एक स्वाध्याय करनेवाले को भी सहायता मिली, तो हमारे श्रम और सब व्यय सफल हुए, ऐसा विचार करके हमने उक्त सूचियाँ छपी हैं।

स्वाध्याय की सहायता निर्माण करना, व्यय का भी विचार करना नहीं, पर जो आवश्यक वेद का भाग है, वह छापना। यह हमारा विचार हुआ है और इस दिशा से कार्य चलाया जा रहा है।

दैवत-संहिताकी प्राचीनता ।

ऋग्वेद में ही नवम मण्डल दैवत-संहिता ही है, वेदमें इतनाही दैवतसंहिता का नमूना है, ऐसा हमारा पहिले खयाल था। पर सामवेद का विचार करते करते यह बात स्पष्ट हुई है कि, सामवेद-पूर्वार्ध निःसंदेह दैवत-संहिता है, देखिये—

पूर्वार्ध में- १. आग्नेय काण्ड ११४ मंत्र

२. ऐन्द्र काण्ड ३५२ मंत्र

३. पावमान काण्ड ११९ मंत्र

इस तरह तीन देवताओंके मंत्र पूर्वार्धमें क्रमपूर्वक हैं। यह दैवत-संहिता ही है। अर्थात् जैसी ऋग्वेद के नवम मण्डल में सोम की दैवत-संहिता है, वैसीहि सामवेद-पूर्वार्ध में तीन देवताओंकी 'दैवत-संहिता' ही है। अतः हम अब कह सकते हैं कि, 'दैवत-संहिता' की कल्पना, यद्यपि हमारी कल्पना में उत्पन्न हुई ऐसा हमें प्रथम प्रतीत हुआ, तथापि वह कल्पना निःसंदेह वैदिक है और इस का स्वरूप ऋग्वेद के नवम मण्डल में तथा सामवेद के पूर्वार्ध में आज भी दीख पड़ता है।

छांदस-संहिता ।

सामवेद-पूर्वार्ध देखने से एक और बात भी स्पष्ट हो गयी कि, यहां गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, बृहती ऐसे छंद वार मंत्र संग्रहित हुए हैं । वेद के अध्ययन की जो पाठ विधि हमने निर्धारित की है, उस में भी हमने अपने अनुभव से छन्द के क्रम से ही पाठविधि निर्धारित की है। यही प्रणाली सामवेद में हमें दीख रही है । अर्थात् यह 'छांदस-संहिता' भी वैदिक ही है ।

इस पद्धति को अनुसरते हुए हमें इस दैवत-संहिता में छन्दों के क्रम से हि मन्त्र रखने चाहिये थे । पर हमने ऋषियों के क्रम से ही रखे हैं, जैसे ऋग्वेद में है । छन्द के क्रम से रखने से अध्ययन की सुगमता होती है, यह सत्य है, पर ऋषिक्रम से भी बड़ा लाभ है । दोनों लाभ एक ही ग्रन्थ में शामिल नहीं किये जा सकते । इसलिये हमने ऋग्वेद-क्रम को प्राधान्य देकर देवता के मन्त्र ऋषि-क्रमानुसार रखे हैं और उसकी उक्त सूचियां भी दी हैं ।

इस ग्रन्थमें अग्निके मन्त्र सूचियोंसमेत तथा इन्द्रके मन्त्र भी सूचियोंसमेत हैं ।

इन दो देवताओं के मन्त्र चारों वेदों के मन्त्र-संग्रह के तीसरे भाग के बराबर हैं । अर्थात् इन दो देवताओं की हि मन्त्र-संख्या अधिक है । इसके आगे के देवता बहुत मन्त्र-वाले नहीं हैं । एक तिहाई मन्त्रसंख्या से ये दो देवता हैं और दो-तिहाई मन्त्रसंख्या में संपूर्ण अन्य देवतागण हैं ।

मंत्रोंके तीन संग्रह ।

सब मंत्रोंके तीन प्रकारके संग्रह हो सकते हैं (१) एक आर्षेय मंत्रसंग्रह, इसी को 'आर्षेय-संहिता' कह सकते हैं । ऋग्वेदका मुख्य भाग इस तरहके संग्रहका है । (२) दूसरी 'दैवत-संहिता' । ऋग्वेदका नवम मंडल तथा सामवेद पूर्वार्धमें इस तरह का संग्रह है । यह दैवत संहिता भी उसी का अनुसरण करके बनायी है । (३) तीसरी 'छांदस-संहिता' जो छन्दांनुसार मंत्रसंग्रहसे बनती है । सामवेद पूर्वार्ध में ऐसी ही रचना है । इससे एक छंद के मंत्र इकट्ठे रहते हैं ।

ये तीन ही मंत्रसंग्रह बड़े कामके हैं । वास्तवमें देखा जाय, तो सब वेदमंत्र इस तरहकी तीनों प्रकार की

संहिताओं में छापने चाहिये । प्रत्येक के अध्ययन का विभिन्न फल है । इस तरह के मंत्रसंग्रह बननेके पूर्व साधारण मनुष्य नहीं जान सकता कि, इनसे क्या लाभ होगा । पर इस अनुभवसे कह सकते हैं कि, वेदमंत्रों का उत्तम अध्ययन करना है, तो इन तीनों मंत्रसंग्रहों की अत्यंत आवश्यकता है ।

आर्षेय-संहिता से ऋषिपरंपरा का इन मंत्रोंके साथ जो संबंध है, वह जाना जा सकता है । ऋषिज्ञान के बिना मंत्रज्ञान नहीं होगा । यह प्राचीन परंपरा से सिद्ध हुई बात है । दैवत-संहितासे देवताओं का ज्ञान उत्तम हो सकता है । और छांदस-संहिता से शीघ्र अध्ययन हो सकता है । ये तीन लाभ इन तीन संहिताओं से स्पष्ट रूपसे होते हैं । अतः जो धन इन संहिताओंपर खर्च होगा, वह वेदमेवामें लगेगा, इसमें बिल्कुल संदेह नहीं ।

एक व्यर्थ भय ।

जब हमने 'दैवत-संहिता' की कल्पना प्रगट की, तब कई लोगोंने हमें लिखा कि, यदि यह दैवतसंहिता बन गयी, तो मूल चार वेदोंकी संहिताएं कोई देखेगा नहीं । पर यह भय व्यर्थ है । ऊपर हमने तीनों प्रकारकी संहिताओंका वर्णन किया है, इसमें से एक दूसरे की मारक नहीं है, परंतु ये सब परस्पर उपकारक ही हैं ।

इसलिये ऐसा भय करनेकी कोई भी आवश्यकता नहीं है । अध्ययनोंके मार्ग सुगम करने ही चाहियें । यही हमारा कार्य है, जो इस दैवत-संहिता द्वारा किया गया है । हमें पूर्ण विश्वास है कि, इससे वेदपाठकों का अत्यंत लाभ होगा और वेद का तत्त्वज्ञान समझने में तथा उसके प्रचार में बड़ी सहायता होगी ।

इस ग्रंथमें उपमा और विशेषणसूचियां श्री० पं० अनंत दिनकर रास्ते पननिवासीने बनवाईं, इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य हैं ।

इस तरह यह दैवत-संहिता का प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा है । हमें पूर्ण आशा है कि सब वेदानुयायी इसका हार्दिक स्वागत करेंगे ।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६

शके १८६३

संवत् १९१८

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मंडल, और

अग्निदेवता का परिचय ।



(१) विषयप्रवेश ।

वेदकी “ अग्नि-विद्या ” ठीक प्रकार समझने आनेके लिये सबसे प्रथम “ अग्निदेवताका परिचय ” होनेकी आवश्यकता है। देवताका परिचय हुए बिना मंत्रका आशय समझना अशक्य है। इस कारण हरएक देवताके विषयमें निश्चित ज्ञान होनेके लिये उस उस देवता के संपूर्ण मंत्रोंका उत्तम अध्ययन करके, प्रत्येक देवताका मंत्रोक्त स्वरूप निश्चित करनेके यत्न की आवश्यकता है। इस लिये अध्ययन करनेवालोंको उचित है कि, वे वेदमंत्रोंके अध्ययनसे वैदिक देवताका वैदिक स्वरूपही जाननेका यत्न करें। तथा जो विद्वान् इन देवताओंका रूपान्तर पुराणोंमें देखना चाहते हैं, वे वेद और पुराणोंका तुलनात्मक अभ्यास करें और दोनों कल्पनाओंमें समानता कहां है और विषमता कहां है, इसका निश्चय करें। ऐसा जिन्होंने किया नहीं है, उनके कथनमें बड़ी अशुद्धियां हुई हैं; इसलिये इस विषयमें पूर्वोक्त प्रकार सावधानता रखनेकी अत्यंत आवश्यकता है।

यहां इस निबंधमें अग्निदेवताका वैदिक स्वरूप निश्चित करनेका यत्न करना है।

(२) भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।

अग्निदेवताके स्वरूपका निश्चय इस लेखमें करना है। पाठक यहां कहेंगे कि, “अग्नि” के स्वरूपके निश्चय का तात्पर्य क्या है? अग्नि शब्द “भाग” का पर्याय है और उसका उपयोग एकानेके समय हर एक दिन हम करते हैं। उसका स्वरूप सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिये उसके स्वरूपका तो और क्या निश्चय करना है? इस शंकाके उत्तर में निवेदन है कि, यद्यपि “अग्नि” शब्द “भाग”का वाचक है, तथापि वेदके अग्नि देवताके सब मंत्र “भाग” का ही वर्णन कर रहे हैं, ऐसा मानना बड़ी भारी भूल है। लौकिक संस्कृत भाषामें भी “अग्नि” शब्दके भागके अतिरिक्त बहुतसे अन्य अर्थ हैं। जैसा—“अग्निजार वृक्ष, केशर, स्वर्ण, निंबू, भिलावा, चित्रक, रक्तचित्रक, कपि स्थाष्टक, जठराग्नि, पित्त” आदि अनेक अर्थ लौकिक

संस्कृत भाषामें भी अग्नि शब्दके हैं। इसलिये “अग्नि” शब्द केवल “भाग” का ही वाचक मानना गलती है। इसके अतिरिक्त अग्निवाचक कई ऐसे शब्द हैं कि, जो “भाग” में कदापि सार्थ नहीं हो सकते, इनमेंसे कुछ यहां देखिये—

(३) अग्निके पर्याय शब्द ।

- (१) वैश्वानरः=विश्वमें (नर) पुरुषशक्ति, विश्वका चालक, (विश्व) सब (नर) मनुष्योंके संबंधसे होनेवाला, इत्यादि ।
- (२) धनंजयः= धनकी जीतनेवाला, धन प्राप्त करनेवाला ।
- (३) जातवेदाः= जिससे वेद उत्पन्न हुए हैं, जिससे धन उत्पन्न होता है, जिससे ज्ञान होता है ।
- (४) तनूनपात्=(तनू) शरीरोंकी(न-पात्)न गिराने-वाला, जिसके कारण शरीरोंका पतन नहीं होता ।
- (५) रोहिताश्वः- लाल रंगके घोड़ोंसे युक्त ।
- (६) हिरण्यरेताः- सुवर्णका वीर्य ।
- (७) सप्तार्चिः-सात उजालाओंसे युक्त ।
- (८) सप्तजिह्वः-सात जिह्वाओंसे युक्त ।
- (९) सर्वदेवमुखः- सब देवोंमें प्रमुख, किंवा सब देवोंका मुख ।

इत्यादि शब्द ‘ अग्नि ’ के पर्याय हैं, परंतु ये ‘ भाग ’ में सार्थ नहीं हो सकते। उक्त शब्दोंका भाव ‘ भाग ’ में नहीं दिखाई देता है, कमसे कम उक्त अर्थ भागमें चरितार्थ होनेका अनुभव नहीं है। इस लिये ‘ अग्नि ’ शब्दका आशय भागसे भिन्न मानना आवश्यक ही है। वेदमंत्रोंको देखकर भी यही निश्चय होता है। देखिये—

(४) पहला मानव “ अग्नि ” ।

पहला जो मानव प्राणी हुआ था, उसका नाम ‘ अग्नि ’ है, ऐसा वेदमें ही कहा है, देखिये—
त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पति । इळामकृण्वन्नहुषस्य शासनी पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते ॥ (६० ऋ. १।३।१।१)

“हे अग्ने! (नहुषस्य विशपतिं) मनुष्योंके नरपतिरूप (त्वां प्रथमं भातुं) तुझ प्रथम मनुष्य को (देवाः) देवोंने (आयवे अकृण्वन्) मानवजातिके लिये बनाया है । (इळां) वाणी को (नहुषस्य शासनीं) मानवजातिकी शासनकर्त्री (अकृण्वन्) बनाई है । (यत् ममकस्य पितुः) जो ममत्वरूप पिताका पुत्र होता है ।” उसके आगे वैसी ही संतति होती जाती है और वंशानुरूप वाणी आदिका प्रचार होता है । इस मंत्रका यह भाव देखनेसे निम्न बातोंका पता निःसंदेह लग जाता है—

(१) देवोंने जो पहला मानवप्राणी बनाया, उसीका नाम “अग्नि” था । मनुष्यजातिकी उत्पत्ति करनेकी इच्छासे देवोंने इस प्रथम मानवप्राणी को बनाया था ।

(२) यही पहला मानव मनुष्यों का पिता होनेसे इसी को (विश-पति) नरपति अथवा नरेश कहते हैं ।

(३) जिस प्रकार इस मानवप्राणी को प्रारंभ में देवोंने बनाया था, उसी प्रकार उसके साथ वाणी की भी उत्पत्ति की गई थी । इसे उसकी धर्मपत्नी भी मान सकते हैं ।

(४) इस मानवमें ममता रखी गई है । इस ममत्व के कारण स्त्रीपुरुष इकट्ठे होते हैं और भागे संतति बढ़ाते हैं, इसलिये सब संतति इस “ममत्व” की ही है और पिता की वाणी इसी कारण संतान बोलते हैं ।

निघंटु २।३में मनुष्य नामोंमें ‘आयवः (आयुः), नहुषः विशः’ ये शब्द पठित होनेसे, इनका अर्थ मनुष्यही है। तथा निघंटु १।११ में ‘इळा’ शब्द वाङ्मयों में पठित होनेसे इसका अर्थ वाणी है । देवोंके द्वारा इस प्रकार जो ‘पहला मनुष्य’ बनाया गया, उसका नाम अग्नि है और उसकी पत्नी वाणी है । तात्पर्य, मनुष्योंमें भी अग्नि है, अर्थात् मानवप्राणी अग्नि शब्द से वेदमें लिया जाता है । वेदमंत्रों में अग्नि के अनेक अर्थ होंगे, परंतु उसमें एक अर्थ ‘मानव प्राणी’ है, इसमें कोई शंका नहीं है । क्योंकि जो मानव-प्राणी सबसे प्रारंभ में देवोंने बनाया, उसके वंशजों में भी वही भाव और वही वाणी होने के कारण उसमें उसका ‘अग्निपन’ भी उत्तरा ही है । पिताके गुणधर्म आनुवंशिक होकर पुत्रमें उतरते हैं, इसी रीतिसे पिताका अग्निपन पुत्रों में उतरा है । ‘अग्नि’ का ‘वाणी’ के साथ संबंध इस प्रकार माना गया है । मनुष्य उत्पन्न होनेके पूर्व पशुपक्षियों

की अनेक योनियोंमें अनेक प्राणी उत्पन्न हो गये थे, परन्तु जैसी वाणी की पूर्णता इस मनुष्यमें हुई है, वैसी किसी अन्य प्राणीमें नहीं हुई । इसलिये उक्त मंत्रमें कहा है कि, (१) जिस प्रकार मनुष्यरूप अग्निको मानवजातिके पितृस्थानमें देवोंने उत्पन्न किया, (२) उसी प्रकार वाणीको मानवजातिकी शासनकर्त्री देवोंने बनाई । और मानवका इस वाणीके साथ सम्बन्ध भी कर दिया है । इसलिये वाणी मनुष्य की ही अर्धांगी है । अन्य प्राणियोंमें और मनुष्योंमें यदि किसी विशेष गुण के कारण भेद है, तो इस वाणीके कारण ही है । मनुष्यने इस वाणीके कारण ही इतनी उन्नति की है । अनादि कालसे जो ज्ञानका संग्रह हो रहा है, वह वाणी के कारण ही है और यह ज्ञानही, जो वाणीद्वारा प्राप्त हो रहा है, वही मानवजातिका शासन कर रहा है । इस प्रकार देखनेसे पता लग सकता है, कि वेदका कथन कितना ठीक है । तात्पर्य (१) पहला मानवप्राणी अग्नि है, (२) और उसकी ‘अग्नायी’ वाणी ही है ।

अग्नि	अग्नायी
प्रथम मनुष्य	इळा (वाणी)
यम	यमी
शासक	शासनी
विशपति	विशपत्नी
पिता	माता
आत्मा	अवा (रक्षणशक्ति)
आदम	हवा

‘इळा’ शब्दका दूसरा अर्थ ‘भूमि’ है । भूमि बीज बोनेके लिये होती है । मनुष्य अपना ज्ञानरूप बीज इस वाणी में बोता है और इस प्रकार जो ज्ञानवृक्ष फैलता है, उसके फलही हम आज खा रहे हैं । इसके अतिरिक्त भूमि का अर्थ क्षेत्र है और स्त्रीको भी क्षेत्र कहते हैं । इस अर्थ के लेनेसे यह तात्पर्य होगा कि, देवोंने एक पुरुष और एक स्त्री सबसे प्रथम निर्माण की । इसलिये कि यह पुरुष अपने वीर्यसे इस स्त्रीमें पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न करें । और इस प्रकार ममत्वसे संतति उत्पन्न हो । इसी रीतिसे यह संतति उत्पन्न हो गई है ।

(५) वृषभ और धेनु ।

‘इळा’ शब्द का तीसरा अर्थ ‘गाय’ है और गायवाचक ‘गो’ शब्दके संस्कृतमें ‘वाणी, भूमि और गाय’ ऐसे अर्थ

हैं । तात्पर्य ये शब्द परस्परो के बाचक हैं । इस भाव को लेकर निम्न मंत्र देखिये—

असत्त्व सत्त्व परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदिते-
रुपस्थे । अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आयुनि
वृषभश्च धेनुः ॥ (१५१९, ऋ० १०।५।७)

‘(दक्षस्य जन्मन्) दक्ष के जन्म के समय (आदितेः उपस्थे) अदितिके पास (परमे व्योमन्) परम आकाश में असत् और सत् ये दो पदार्थ थे । अग्निही हमारा (ऋतस्य प्रथमजाः) ऋत का पहला प्रवर्तक है और पूर्व आयु में वृषभ और धेनु हैं । ’ पूर्व आयु में अग्नि वृषभ था और उसकी धर्मपत्नी धेनु थी । वृषभ शब्द का अर्थ वीर्यवान् और धेनु शब्द का अर्थ वीर्य का धारण करनेवाली है । पूर्व कीष्टकमें निम्न शब्द और मिलाइये—

अग्नि	अग्नायी
वृषभ	धेनु
पुरुषशक्ति	स्त्रीशक्ति
क्षेत्रपति	इळा (क्षेत्र)
वाक्पति, गोपति	गाँ : (वाक्)

उक्त मन्त्रमें भी कहा है कि “ अग्नि पहला प्रवर्तक ” अर्थात् शासक है । अग्नि मनुष्यरूपमें अवतीर्ण होनेके पूर्व आयुमें “ वृषभ ” रूपमें था । अर्थात् पशुरूपमें था, तत्पश्चात् वही मनुष्यरूपमें प्रकट हुआ है । यह कथन ‘ उत्क्रांतिवाद ’ का सूचक है । वैदिक उत्क्रांतिवादका तत्त्व बतानेके लिये इस निबंधमें स्थान नहीं है, तथापि उक्त बातमें वैदिक उत्क्रांतिवाद की ध्वनि है, इतनाही यहां बताना है । इस प्रकार अग्नि न केवल मनुष्योंमें है, प्रत्युत पशुपक्षियोंमें भी है, यह बात उक्त कथनसे सिद्ध होती है । पशुपक्षियोंमें जो अग्नि होगा, उसका विचार हम किसी अन्य स्थानमें करेंगे, यहाँ मनुष्योंमें जो पहला मानव अग्नि हुआ, उसीका अधिक विचार करना है । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(६) पहला अंगिरा ऋषि ।

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः ।
शिषः सखा । तव व्रते कथ्यो विश्वनापसोऽ-
जायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ (५०; ऋ. १।३।१।१)

‘ हे अग्ने ! (त्वं प्रथमः अंगिरा ऋषिः) तू पहिला अंगिरा ऋषि है । तू स्वयं (देवः) दिव्य शक्तिसे युक्त है और (देवानां शिवः सखा अभवः) देवोंका शुभ मित्र हुआ है । (तव व्रते) तेरे नियम में (विश्वनापसः) ज्ञानयुक्त होकर पुरुषार्थ करनेवाले (मरुतः कवयः) मर्त्य कवि (भ्राज-दृष्टयः) तेजस्वी दृष्टिसे युक्त होते हैं । ’ इस मन्त्रमें कहा है कि, पहला ‘ अंगिरा ऋषि ’ अग्नि ही है, इसेही पहला मानव समझना उचित है । पहला मानव जो अंगिरा ऋषि था, वही अग्नि नामसे प्रसिद्ध है । तथा और देखिये—

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां परि-
भूषसि व्रतं । विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो
द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ॥ (५१; ऋ. १।३।१।२)

‘ हे अग्ने ! तू (प्रथमः अंगिरस्तमः कविः) अंगिरसोंमें पहला कवि है और (देवानां व्रतः) देवोंका व्रत सुभूषित करता है । तू (विभूः) विशेष प्रकार होनेवाला (विश्वस्मै भुवनाय) सब भुवनों अर्थात् बने हुए प्राणी आदिकोंके लिये (मेधि-रः) बुद्धिसे प्रकाशित करनेवाला, (द्विमाता) दोनों पुरुषार्थोंका निर्माता तथा (आयवे) मनुष्यमात्रके लिये (कतिधा चित्) कई प्रकारसे (शयुः) आराम देनेवाला है । ’

इस मन्त्रमें कहा है कि, अंगिरसोंमें सबसे पहला कवि अग्नि ही है । यही मनुष्योंमें पहला मानव अग्नि है । वाणी इसके साथ उत्पन्न हुई थी, अतः यह कवि है । यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यदि पहला मानवप्राणी ही अग्नि है, तो उसीकी संतति भी अग्निरूप ही होनी चाहिये, अर्थात् जैसा एक मानवप्राणी अग्नि है, उसी प्रकार मानव-जाति भी अग्नि ही होनी चाहिये । जैसी एक व्यक्ति होती है, वैसाही उसका समाज होता है, इस सार्वमानुष अग्नि का वर्णन निम्न मंत्रमें हुआ है । देखिये—

(७) वैश्वानर अग्नि ।

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो
विभावा । शातधनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे
जरते सूनृतावान् ॥ (१७२९; ऋ० १।५।१०)

‘ वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्वसे (विश्व-कृष्टिः) सर्व मनुष्य ही है । (भरत्-वाजेषु) पोषक अर्कों के यज्ञों में (यजतः)

पूजनीय और (विभावा) विशेष प्रभावयुक्त है । (स्मृता वाक्) सत्य वाणी से युक्त होने के कारण यह (अग्नि) सर्व मनुष्यरूप अग्नि (शात-वनेये) सैकड़ों द्वारा जहाँ सेवन होता है, ऐसे (पुरु-नीथे) बहुतोंके नेतृत्वसे चलने-बाले कार्यों में (शतिनीभि) सैकड़ों की संख्याओं से (जरते) प्रशंसित होता है । '

'विश्व+कृष्टिः' अर्थात् 'सर्व-मनुष्य' रूप ही यह अग्नि है । मनुष्यों का समाजरूप ही यह अग्नि है । इसी का नाम 'वैश्वानर' अग्नि है । 'विश्व-नर' शब्द का अर्थ भी 'सर्व मनुष्य' ही है । सब मनुष्यों का जो एक संघ होता है, उस के अन्दर एक प्रकार का तेज रहता है, यही वैश्वानर अग्नि है । इस को 'राष्ट्रीय जीवनाग्नि' अथवा 'सामाजिक जीवनाग्नि' समझिये । इस के छोटे नाम 'राष्ट्रग्नि, सामाजिक अग्नि' हैं । इस की पूजा उन यज्ञों में होती है, कि जिन में (भरत-वाज) अन्न और बल का संवर्धन करना होता है । सघ के कारण बल संवर्धन होना प्रत्यक्ष ही है । इसलिये जिस जाति में अपना बल बढ़ाने की सदिच्छा होती है, उसी में 'वैश्वानर अग्निकी उपासना' की जाति है । मानवसंघरूप अग्नि की उपासना वे ही करेंगे कि, जो संघशक्ति बढ़ाना चाहते हैं । वैश्वानर में (विश्व-नर) सब मनुष्यों की अभेद्य संघशक्ति की निश्चित कल्पना है । वही भाव 'विश्व-कृष्टि' में है । इस शब्द का भाव श्रीसायणाचार्य निम्न प्रकार देते हैं—

विश्वकृष्टिः । कृष्टिरिति मनुष्य नाम । विश्वे सर्वे मनुष्याः यस्य स्वभूताः स तथोक्तः ।

(ऋ. सायणभाष्य १-५९.७)

वैश्वानरः सर्वनेता । विश्वकृष्टिः विश्वा सर्वाः कृष्टीर्मनुष्यादिकाः प्रजाः ॥

(ऋ. दयानन्दभाष्य १-५९.७)

सायणभाष्य— कृष्टि मनुष्यवाचक शब्द है । सब मनुष्य जिस के लिये अपने ही निज होते हैं, वह विश्व-कृष्टि है । दयानन्दभाष्य— वैश्वानर सब का नेता है । विश्वकृष्टि सब प्रजाओं का संघ है ।

दोनों भाष्यकारों के उक्त अर्थ देखनेयोग्य हैं । सब प्रजाओं का जो एक अभेद्य संघ होता है, उस का नाम

'विश्व-कृष्टि अग्नि' है । इसी का वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखिये—

स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्विरस्तु तरुता ॥

विप्रेभिरस्तु सनिता ॥ (४६; ऋ. १-२७-९)

'वह (विश्व-चर्षणि) सर्व-मनुष्यरूप अग्नि (अर्वद्वि) कृतिवालों के साथ (वाज) युद्ध के (तरुता) पार होनेवाला और (विप्रेभि.) जातियों के साथ (सनिता) पूज्य (अस्तु) होवे ।'

यह अग्नि ही मानवों का संघ बनाता है, यही इस का तात्पर्य है ।

(८) ब्राह्मण और क्षत्रिय ।

मानवजातिरूप जो समाज है, वह पुरुषार्थियों के प्रयत्नोंद्वारा आपत्ति से पार होता है और ज्ञानियों के उद्योग से पूज्य होता है । 'अर्वन्' शब्द 'गमन करने-वाला, हलचल करनेवाला, प्रयत्नशील, पुरुषार्थी, घोड़ा जिस के पास है, घुड़सवार' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है । इसलिये यह क्षत्रियों का सूचक है, तथा 'विप्र' शब्द विशेषतः ज्ञानी का भाव बताता है, इसलिये ब्राह्मणों का बोधक है । यह अर्थ लेने से उक्त मंत्र का भाव निम्न प्रकार बनता है— 'सर्व-मनुष्यसंघरूपी जो अग्नि है, वह क्षत्रियों के प्रयत्नों से युद्धों में यशस्वी होता है, और ब्राह्मणों के प्रयत्न से वंदनीय होता है ।' इस प्रकार क्षत्रियों और ब्राह्मणों के द्वारा इस मानवसंघ की उन्नति होती रहती है । ब्राह्मण-क्षत्रियों के सघ का महार वेद में अन्यत्र बहुत स्थानों पर वर्णन किया है, देखिये—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह ॥

तं देशं पुण्यं प्रक्षेपं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ य. २०.२५

'जहाँ (ब्रह्म क्षत्र च) ब्राह्मण और क्षत्रिय (सम्यंचौ सह चरतः) मिल कर हलचल करते हैं, वही पुण्यदेश है, और (प्रज्ञा-इष्ट) बुद्धिसे इच्छा करनेयोग्य है, तथा वहाँही देव अग्निके साथ रहते हैं ।'

ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी मिलजुलकर जो हलचल होती है, वही राष्ट्रीय हलचल होती है । क्योंकि येही राष्ट्र के प्रधान अवयव हैं । वास्तव में यह ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी हलचल नहीं है, परन्तु (ब्रह्म क्षत्र) ज्ञान और पुरुषार्थकी संगठित हलचलही है । जहाँ ज्ञान और कर्मका संगठित कार्य

होता है, वहाँही सिद्धि मिलती है। सब मनुष्य जिस अग्निसे संबधित हुए हैं, वह विश्वकृष्टि, वैश्वानर या विश्वचर्षणि अग्नि है। इस प्रकार जो अभेद्य संघ होता है, उसीका नाम “ विश्व कृष्टि ” अग्नि है। इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

मंद्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थं
विश्वचर्षणिम् ॥ रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुहितं
सदमिदू राय ईमह ॥ (१७४१, ऋ० ३।२।१५)

‘ (मद्र) आनंदकारक (होतारं) दाता (शुचिं) पवित्र (अद्वयाविनं) द्वैत अर्थात् सगुण जिसमें नहीं है, (दमूनसं) संयमी, (उक्थं) प्रशसनीय, (मनुः-हितं) मनुष्यमात्रका हित करनेमें तत्पर ऐसे (विश्व-चर्षणिं) सर्व-मनुष्यसंघरूप अग्निकी (सद इत्) सदा (राये) श्रेष्ठ ऐश्वर्यके लिए (ईमहे) हम प्राप्ति करते हैं, जिस प्रकार सुन्दर दर्शनीय आकृतिसे युक्त रथकी प्राप्ति की जाती है ।’

इस मंत्र में ‘ सार्व-मानुष अग्नि ’ के कई गुण वर्णन किये हैं। उनका विचार करनेसे ‘ राष्ट्राग्नि ’ का स्वरूप ठीक ध्यान में आ सकता है। ‘ अ-द्वयाविन् ’ यह शब्द जाति जाति के आपस के झगड़ों का निषेध कर रहा है। जिन में आपस के झगड़े नहीं हैं, परस्पर कष्ट और ईर्ष्याद्वेष के भाव नहीं हैं और जो मानवसंघ एकता से अपनी शक्ति बढ़ा रहा है, परस्पर अभेद्य एकता प्रस्थापित कर जो उन्नति प्राप्त कर रहा है और जो निष्कपट भाव के आचरण करने के कारण उन्नत हो रहा है, उस प्रकार का अभेद्य मानवसंघ इस शब्द से बोधित हो रहा है। ‘ मनुः+हितं ’ मनुष्यमात्र का हित करनेवाला, यह भाव इस शब्द में है। मानवसंघ निष्कपट भाव से जो कार्य करेगा, उस से संपूर्ण मनुष्यों का ही हित होगा, इस में संदेह ही नहीं हो सकता। ‘ दमू-नसू = जिस का मन स्वाधीन है, अर्थात् जो संयमी है। तात्पर्य, जो नियमों से बंधा है और नियमानुकूल चल रहा है। नियम छोड़कर स्वेच्छासे जो स्वैर वर्तन नहीं करता, इस प्रकारका जो मनुष्य तथा मानवसंघ होता है, वही उन्नति प्राप्त कर सकता है। इन शब्दों के विचार से वैदिक राष्ट्रीय अग्नि का पता लग सकता है। इस के संवर्धन का उपाय देखिये ।

(९) अग्निसंवर्धन ।

अग्निं घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ॥

स्वाधीभिर्वचस्युभिः ॥ (८६५; ऋ० ५-१४-६)

‘ (विश्व-चर्षणिं अग्निं) सार्व-मानुष अग्निकी (घृतेन) तेजस्वितासे (स्तोमेभिः) संघभावसे (स्वा-धीभिः) आत्म-बुद्धिसे तथा (वचस्युभिः) वाणीके योगसे (वावृधुः) बढ़ाते हैं ।’ यह मंत्र विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है। ‘ घृत ’ शब्दके दो अर्थ हैं, घी और तेजस्विता। ‘ स्तोम ’ शब्द के भी दो अर्थ हैं- यज्ञ और संघभाव (group, assemblage)। ‘ स्वा-धी ’ शब्द के दो अर्थ हैं- अध्ययन और आत्मबुद्धि । ‘ वचस्+यु ’ के दो अर्थ हैं, प्रशंसाकी इच्छा और मंत्रणा, सुविचार इ०। ये सब अर्थ लेकर सार्वजनिक भावदर्शक उक्त मंत्र का तात्पर्य निम्न प्रकार है। ‘ सर्व-मानव-संघरूप जो अग्नि है, वह तेजस्विता, संघ-भाव, आत्म-बुद्धि तथा सुविचारसे बढ़ाया जाता है ।’ मनुष्यसंघ का हित इन गुणों से होता है। इसलिये जिस राष्ट्र को अपना उद्धार करना है, उस को चाहिये कि, वह अपने अन्दर तेजस्विता, संघभाव, एकता, आत्मबुद्धि, तथा सुविचार आदि गुण बढ़ावे। यही राष्ट्रीय उन्नति का मूल मंत्र है। अस्तु। उक्त मंत्र में सार्वमानुष अग्निकी उन्नति का मार्ग बताया है। यह सार्वजनिक अग्नि क्या देता है, इसका वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखनेयोग्य है—

अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ॥

अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं

स्तोतृभ्य आभर ॥ (८०३; ऋ० ५-६-३)

‘ यह (विश्व-चर्षणि अग्निः) सार्वमानुष अग्नि (विश्वे) प्रजाओं के लिये (वाजिनं) अन्नयुक्त बल देता है। यह अग्नि संतुष्ट (प्रीतः) होकर (राये) ऐश्वर्य के लिये (सु+आभुवं वार्य इत्) उत्तम प्रभावयुक्त वरणीय अन्न (याति) प्राप्त करता है। यह सब याजकों को भर दो ।’

मानवसंघरूप यह अग्नि यदि संतुष्ट हुआ, तो सब प्रजाओं को अन्न, बल, संतति, यश, प्रभाव, ऐश्वर्य तथा हरएक प्रकार का इष्ट सुख देता है। इसलिये इस की संतुष्टि सिद्ध करनी चाहिये। संघ, समाज और राष्ट्र की संतुष्टि उस के स्वातन्त्र्य के संरक्षण से होती है। व्यक्ति-

स्वातन्त्र्य और संघ का नियमन योग्य रीति से होने से इस की संतुष्टता होती है । व्यक्तिस्वातन्त्र्य संघभाव का घातक न हो और संघभाव व्यक्ति को परतंत्र न बनावे, यह उपदेश निम्न मंत्रों में कहा है—

(१०) व्यक्तिभाव और संघभाव ।

(१) अंधं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रता ॥९॥

(२) अन्यदेवाहुः सम्भवाद्व्यदाहुरसम्भवात् ।

इति शश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१०॥

(३) सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥११॥

(वा० य० ४०; ईश० उ० १२-१४)

‘ (१) जो (अ-सं-भूति) केवल अ-संघभाव अर्थात् व्यक्तिभावकी उपासना करते हैं, वे अंधकार में गिरते हैं, तथा उससे घने अंधकार में वे पहुँचते हैं, कि जो केवल (सं-भूत्यां) संघभाव में ही रमते हैं । (२) संघभाव का फल भिन्न है और व्यक्तिभाव का फल भिन्न है, ऐसा धीर लोग कहते आये हैं । (३) संघभाव और असंघभाव किंवा व्यक्तिभाव को जो साथ साथ उपयोगी समझते हैं, वे व्यक्तिभाव से अपमृत्यु आदि के कष्ट दूर करके संघभाव से अमर होते हैं । ’

संघभाव की उपासना करने की वैदिक रीति इसमें दी है । केवल सङ्घभाव बढ़ाया गया, तो व्यक्ति की सत्ता दब जाती है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य नष्ट होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति में परतन्त्रता बढ़ने से सब समाज कालांतर से परतन्त्र हो जाता है, यह दोष संघभाव का अतिरेक करने से होता है । तथा जो व्यक्तिस्वातन्त्र्य को हृदय से अधिक बढ़ाते हैं, उनमें संघशक्ति बढ़ नहीं सकती, क्योंकि हर एक व्यक्ति किसी एक नियंत्रणा में बद्ध नहीं होती । इसलिये उक्त गुण केवल अकेला अकेलाही रहने से लाभदायक नहीं होता । परन्तु संघभाव से बल बढ़ता है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य से हर एक की शक्ति विकसित होती है, यह देख कर बुद्धिमान् पुरुष युक्तिसे संघभाव को भी सीमित रखते हैं और सीमित व्यक्तिस्वातन्त्र्यको भी सीमित रखते हैं । इस प्रकार करने से वैयक्तिक शक्तियों की वृद्धि होती है और संघभाव से समाज में बल भी बढ़ जाता है । यही समविकास

का वैदिक सिद्धांत है और मानवसंघ की सच्ची उन्नति करने का यही उपाय है । इस रीति से जो जनता अपना समविकास करती है, उनका समाज अथवा राष्ट्र प्रसन्न होता है और उन प्रजाजनों में पूर्वमंत्रोक्त आनन्द पाया जाता है । इस संघरूप अग्नि से और एक लाभ होता है, उसे भी यहां देखिये—

(११) संघशक्ति का अद्भुत बल ।

स हि ऽग्ना विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।

अग्न एष क्षयेऽवा रेवन्नः शुक्र दीदिहि ध्रुमत्

पावक दीदिहि ॥ (१०६. ऋ० ५।२३।४)

‘ वह (विश्व-चर्षणिः) सार्व-मानुष अग्नि (अभि-माति) शत्रु का नाश करने का (सहः) बल (दधे) धारण करता है । हे (शुक्र अग्ने) शुद्ध अग्ने ! हमारे (अग्रेषु) स्थानों में (रेवन्) धनयुक्त (दीदिहि) प्रकाश रखो । हे (ध्रुमत् पावक) तेजस्वी शुद्धिकर्ता ! प्रकाश करो । ’

सर्व मनुष्यों के संघ का जो एक राष्ट्रअग्नि है, वह शत्रु का नाश करने का बल अपने राष्ट्र में रखता है । इसका तात्पर्य स्पष्ट ही है । संघशक्ति से समाज में जो एकता पाई जाती है, उससे उस समाज में इतना बल बढ़ जाता है कि, उस के सामने कोई शत्रु टडर नहीं सकता । जो अपनी राष्ट्रीयता का विकास करना चाहते हैं, उन को इस मंत्र से बहुत ही बोध मिल सकता है । जो राष्ट्र अपनी संघशक्ति बढ़ावेगा, उस की शक्ति भी वैसी प्रबल हो जायगी ।

विश्वचर्षणिः= विश्वे चर्षणयो मनुष्या रक्षणीया यस्य ।

(ऋ० सायणभाष्य ५।६-२)

‘ सब मनुष्य जिस के रक्षणीय हैं, उस का नाम विश्वचर्षणि है । ’ यह सार्वमानुष अग्नि है । सब मनुष्यों का संघ ही यह अग्नि है । इसी प्रकार सर्व मनुष्यों के संघ के दर्शक शब्द वेद में बहुत है, देखिये—

विश्व+कृष्टि= सर्व मनुष्य, सब कृषि करनेवाले ।

विश्व+चर्षणिः= ,, ,, ,, ,, ,,

विश्व+आयुः (विश्व+आयुः)= सब मनुष्य (पूर्णायुषी मानव) ।

विश्व+जन्म्यः= सब जनों के संबंध से उत्पन्न ।

पांच+जन्यः= पंच जनों के संबन्ध से उत्पन्न ।
 ब्राह्मण, अन्निय, वैश्य, शूद्र और निषा-
 दोंके संघ से बननेवाला एक राष्ट्र ।
 विश्व+मानवः= सब मनुष्यों से बना हुआ संघ ।
 विश्वा+नरः { = संपूर्ण मनुष्यों का संघ, अथवा सब
 वैश्वा+नरः { = का नेता ।
 सर्व+पुरुषः= सब पुरुषों से युक्त ।

इन सब वैदिक शब्दों का भाव अत्यन्त स्पष्ट है । इस-
 लिये इन का अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता
 नहीं । तथा अग्निदेवता से भिन्न अन्य देवों के मंत्रों में
 जो इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन का यहां
 अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है । जो शब्द
 अग्निसूक्तों में आ गये हैं, उन का विचार इस के पूर्व
 किया ही है । उसमें दिये मंत्रों से ' सर्व-जन-सङ्घ '
 की वैदिक कल्पना पाठकों के मन में आ चुकी होगी ।
 यही संचालक अग्नि है, अथवा इस की राष्ट्रीय अग्नि भी
 कह सकते हैं । अस्तु । इस प्रकार हमने देखा कि, (१)
 एक मनुष्य भी अग्नि है और (२) मानवसंघ भी एक प्रकार
 का अग्नि है । यह स्पष्ट ही है कि, यदि एक मनुष्य अग्नि-
 रूप है, तो उस का संघ भी अग्निरूप ही होना चाहिये,
 तथा जो संघ अग्निरूप होगा, उस का एक अवयव भी
 अग्निरूप ही होना चाहिये । तात्पर्य, मनुष्य और मानव-
 संघ ये दोनों अग्निरूप हैं । यही ' वैश्वानर अग्नि ' है ।
 देखिये इस का वर्णन—

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिः ॥ (ऋ० १-५९-७)

' वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्व से सब-मनुष्य ही है । '

इस से वैश्वानर अग्नि की उत्तम कल्पना हो सकती है ।
 सब मनुष्यों का जो एक संघ है, वही वैश्वानर है । ' विश्व-
 नर ' शब्द का अर्थ ' सब-मनुष्य ' ऐसा ही है, वही भाव
 वैश्वानर शब्दसे व्यक्त होता है । इसका और वर्णन देखिये—

(१२) जनता का केंद्र ।

वया इदमे अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता
 मादयन्ते ॥ वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव
 जना उपमिद्यतन्ध ॥ (१७१७; ऋ० १-५९-१)

' हे अग्ने ! (ते अन्ये अग्नयः) वे दूसरे अग्नि (त्वे)
 तेरे अन्दर (वया इद्) शाखाओं के समानही हैं । वे

सब अमृत अग्नि तेरेसे ही (मादयन्ते) हर्षित होते हैं ।
 हे वैश्वानर अग्ने ! तू (क्षितीनां नाभिः) सब मनुष्यों का
 केंद्र है । तू (स्थूणा इव) स्तंभ के समान (जनान्) सब
 जनता का तू आधार है । '

अग्नि का अर्थ एक मनुष्य और वैश्वानर का अर्थ मनुष्य-
 संघ । ये अर्थ पहले बताये ही हैं । ये अर्थ लेकर इस मंत्र
 का भाव निम्न प्रकार होता है । ' हे मानवसंघ ! ये सब
 मनुष्य तेरी शाखायें ही हैं । तेरे आधार से ही ये सब
 मनुष्य अमर बने हैं । तू सब जनताका केंद्र है । जिस
 प्रकार स्तंभ आधार देता है, उस प्रकार तू ही इन सब का
 आधार है । '

(१३) समाज का अमरत्व ।

संघ, समाज अथवा राष्ट्र सब मनुष्यों का आधार है,
 सब का केंद्र है, सब का उपास्य और सब का आधार है ।
 सब मनुष्य संघभाव से ही अमर होते हैं । यद्यपि एक
 एक व्यक्ति मरती है, तथापि जानि अमर होती है ।

सम्भृत्याऽमृतमश्नुते ॥ (वा० य० ४०।११)

' (स+भृत्या, एकीभूय संस्थित्या) संघभाव से अमरत्व
 प्राप्त होता है । ' यही भाव पूर्वोक्त मंत्र में स्पष्ट शब्दों से
 कहा है, देखिये— (१) सब अन्य मनुष्य राष्ट्र-पुरुष की
 शाखायें हैं, राष्ट्रपुरुष वृक्ष है और जनता उसकी फैली हुई
 शाखायें हैं । (२) राष्ट्र के आधार से सब जनता अमर
 है, यद्यपि एक एक व्यक्ति मरती है, तथापि राष्ट्र अमर है ।
 (३) राष्ट्र ही सब जनता का केंद्र है, (४) राष्ट्र ही सब
 जनता का आधारस्तंभ है । वैश्वानर का अर्थ ठीक समझने
 से वेदमंत्रों के अर्थ इस प्रकार सुगम हो जाते हैं । वैश्वानर
 की उत्पत्ति के विषय में निम्न मंत्र देखिये—

तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं

वैश्वानर ज्योतिरिदर्याय ॥ (१७१८; ऋ० १।५९।२)

' हे वैश्वानर ! तुम देवों ने देव बनाया है, क्योंकि तू
 आर्यों के लिये ज्योति है । ' मानवसंघरूपी यह देव
 देवों के द्वारा इसलिये निर्माण हुआ कि, यह आर्यों के
 लिये उन्नति का मार्ग बतानेवाला दीप बने । अर्थात्
 इसके तेज से अपनी उन्नति का मार्ग आर्य देख सकते
 हैं, और चल कर अभ्युदय प्राप्त कर सकते हैं । इससे
 स्पष्ट है कि, सब आर्यों को अपने राजजनरूपी राष्ट्र को ही

देव मानना चाहिये और उसके साथ अपनी उन्नति प्राप्त करनी चाहिये । तथा—

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवांसो वैश्वानरे दधिरेऽग्रा वसूनि । या पर्वतेष्वोषधीष्वसु या मानुषे ष्वसि तस्य राजा ॥ (१७१९; ऋ० १।५९।३)

‘ जिस प्रकार सूर्य में किरणें स्थिर हैं उसी प्रकार इस वैश्वानर अग्नि में धन स्थिर हैं । जो धन पर्वतों औषधियों और मनुष्यों में हैं, उन सब का तू राजा है । ’

(१४) सब धन संघका ही है ।

सब धन मानवसंघ का ही है । उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है । जो धन पर्वतों में, वृक्षों और वनस्पतियों में, तथा मनुष्यों में अथवा भूमि आदि में है, वह सब मानवसंघ का ही है । व्यक्ति के पास जो धन है, वह भी उस व्यक्ति को, प्रसंग आने पर, संघ के चरणों पर न्यौछावर करना आवश्यक है । मनुष्यों के पास तन, मन, धन जो कुछ है, वह सब जाति का ही है, इसलिये योग्य समय आते ही श्रेष्ठ पुरुष अपने सर्वस्वकी आहुति राष्ट्र-पुरुष की पूजा करने के लिये अर्पण कर देते हैं । क्योंकि वही सर्वस्व का सच्चा राजा है । देखिये—

स्वर्वते सत्यशुभाय पूर्वोर्वैश्वानराय नृतमाय यद्हीः ॥ (१७२०; ऋ० १।५९।४)

‘ (सु+अर्वते) उत्तम हलचल करनेवाले, (सत्य+शुभाय) सच्चे बलवान् (नृ+तमाय) अत्यंत मनुष्यों से युक्त (वैश्वानराय) सब मानवसंघ के लिये (पूर्वाः) सनातन (यद्हीः) बड़ी प्रशंसा होती है । ’ अर्थात् जो पंचजन मानवसंघ किंवा राष्ट्र उत्तम हलचल करता है, सच्चा बल रखता है और सत्यता में अत्यंत अधिक मनुष्यों से युक्त है, वही प्रशंसनीय है । इसलिये राष्ट्रीय उन्नति चाहनेवालों को चाहिये कि, वे (सु+अर्वत्) अच्छी हलचल करें, (सत्य+शुभ) सच्चा बल प्राप्त करें, (नृ+तमः) अपने मनुष्यों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ाएं, ऐसा करने से ही उनकी सर्वत्र प्रशंसा होगी । तथा और देखिये—

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्ररिचि वे महिष्वम् ॥ राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिषश्चकर्थ ॥ (१७२१; ऋ० १।५९।५)

‘ हे जातवेद वैश्वानर ! तेरी महिमा बड़े सुलोक से भी अधिक फैली है । तू (मानुषीणां कृष्टीनां) मानवी प्रजाओं का राजा है । युद्ध से तूही देवों के लिये धन देता है । ’

मानवी संघ की महिमा सब से बड़ी है । यही संघ मानवों का राजा अर्थात् सच्चा राजा है । युद्ध में विजय इसी के कारण होता है । राष्ट्रीय भावना से, जातीय महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर जो युद्ध करते हैं, उनका ही विजय होता है । देश के हित के लिये लड़ने का उपदेश इस मंत्र से सूचित होता है । इस प्रकार इस सूक्त में मानव-संघ का स्वरूप बताया है । यही वैश्वानर अग्नि है । इसका और वर्णन देखिये ।

(१५) संघ के विजयमें व्यक्ति का जय ।

अश्माकमग्ने मध्वत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यं । वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः । (१७८५; ऋ० ६।८।६)

‘ हे वैश्वानर अग्ने ! हमारे (मध+वत्सु) घनिकों में उत्तम वीर्ययुक्त क्षात्र तेज धारण कर । तेरे संरक्षणों से हम सब सौ अथवा हजारों सैनिकों के साथ हमला करनेवाले शत्रु को भी पराजित करेंगे । ’

मानवसंघ के प्रेमसे लड़नेवालों को इस प्रकार बल प्राप्त होना स्वाभाविक ही है । जो अपने राष्ट्रहित के लिये जागते हैं, उनसे ही राष्ट्री उन्नति होती है, इस विषयमें कहा है—
वैश्वानरो वावृध्रे जागृवद्भिः ॥ (१७९४; ऋ० ७।५।१)

‘ मानवसंघरूप अग्नि जागनेवालों के द्वारा ही बढ़ता है । ’ जो लोग अपनी जातीय उन्नतिके लिये जागते हैं, वे ही अपनी जातीय अथवा राष्ट्रीय उन्नति सिद्ध करते हैं । अस्तु । इस प्रकार सर्व मनुष्यों के संघरूप अग्नि का वर्णन वेद में है । इतने स्पष्टीकरण से पाठकों को पता लगा ही होगा कि, जिस प्रकार एक मनुष्य-विशेषतः पहिला मनुष्य-अग्नि है, उसी प्रकार मानवसमाज भी अग्नि है । इसीलिये धर्म-कर्मों में एक मनुष्य के साथ अग्नि उपासना का सम्बन्ध आता है; अग्निकार्य, हवन, आदि धार्मिक विधियों में वैयक्तिक अग्नि की उपासना है । तथा सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय अथवा सामुदायिक अग्निपूजा भी सामाजिक अग्नि की शोतक है इस । सामुदायिक पूजा का रूप अग्निहोम

उयोतिष्टोम, अश्वमेध, वाजपेय आदि महान् यज्ञों में दिखाई देता है। व्यक्तिगत अग्नि तथा सामुदायिक अग्नि जो कुडों में जलाया जाता है, वह सब के मनो का केंद्रीकरण करने के लिये ही है। वास्तविक उस का स्वरूप वैयक्तिक और सामुदायिक दृष्टि से जो वेदमंत्रों में है, वह ऊपर बताया ही है। अब वैयक्तिक अग्नि की और अधिक खोज करने की आवश्यकता है, इसलिये निम्न मंत्र देखिये—

(१६) बुद्धि में पहिला अग्नि ।

अग्निं वो देव यज्ययाग्निं प्रयत्यध्वरे ॥ अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वत्यग्निं क्षेत्रांय साधसे । (१४२०; ऋ. ८-७१-१२)

‘ (१) (देव-यज्यया) देवों के यज्ञ से आप के पास एक अग्नि है । (२) (अध्वरे प्रयति) यज्ञ की प्रगति में एक अग्नि है । (३) (धीषु प्रथम अग्नि) बुद्धियों में पहला एक अग्नि है । (४) (अर्वति अग्नि) हलचल करनेवाले में एक अग्नि है । (५) (क्षेत्रांय साधसे अग्नि) भूमिकी प्राप्ति करानेवाला एक अग्नि है । इन सबकी पूजा मैं करता हूँ । ’ इस मंत्र में पांच प्रकार की अग्नियों का वर्णन है। इन में एक अग्नि है, जो यज्ञकुंड में प्रदीप्त होता है। दूसरा अग्नि बड़े बड़े अध्वरों में जलता रहता है। तीसरा अग्नि मनुष्यों की बुद्धि में है, जिस की चेतना से मनुष्य धारणाशक्ति के कार्य करता है। चौथा अग्नि सामुदायिक हलचल करनेवालों में होता है। इसलिये इनकी हलचल से जनता में एक प्रकार की आग जलती हुई दिखाई देती है। पांचवां अग्नि क्षत्रियों में जलता है और उस के कारण वे अपने राज्य का विस्तार करते रहते हैं। इन पांच अग्नियों में पहले तीन अग्नि ब्राह्मण्य के साथ विशेषतः सम्बन्ध रखते हैं और आगे के दो अग्नि क्षत्रियों के साथ विशेष कर सम्बन्ध रखते हैं। जो पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, उन को ‘ अग्नि ’ शब्द के व्यापक भाव का पता लग सकता है। हवनों और यागों में जलनेवाला अग्नि और है, और मानवी बुद्धियों में जलनेवाला ‘ ज्ञानाग्नि ’ उससे भिन्न है। इस ज्ञानाग्नि को प्रदीप्त करने की और उस में ज्ञान के हवन की विधि भी भिन्न ही है। हलचल कर के सामुदायिक जीवन पैदा करनेवालों में तथा राज्य-विस्तार करनेवाले क्षत्रियों के जोश में जो अग्नि होता है, वह और ही है। विचारकी दृष्टिसे इन अग्नियोंकी निश्चित

कल्पना करनी चाहिये। हवनों और यज्ञों में प्रयुक्त होने-वाले अग्नि को सब जानते ही हैं। इसलिये उसका अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है। बुद्धि में जो अग्नि किंवा ज्ञानाग्नि बसता है, उस का विचार करना चाहिये। इस अग्नि स्वरूप ‘ चित् ’ है। सत्, चित्, आनन्द में यही चित् है, यही आत्मा नाम से प्रसिद्ध है। इस के स्वरूप का वर्णन निम्न प्रकार है—

(१) ह्रीर्धोर्भीरित्येतत्सर्वं मन एव ॥ (बृ. १-५-३)

(२) धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(बृ. ६-३-६) (ऋ. ३-६२-१०)

(३) इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः ।
मनसस्तु पराबुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥

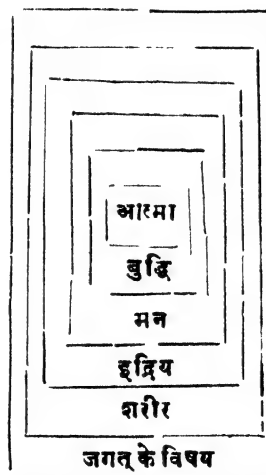
(कठ० ३-१०)

(४) इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

भ. गी. ३-४२)

‘ (१) (हो) नम्रता, (धीः) बुद्धि, (भी) भीति जो अधर्म से उत्पन्न होती है, यह सब मन ही है।

(२) जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करता है । (३) इन्द्रियोंसे परे अर्थ हैं, अर्थोंसे मन परे है, मन से बुद्धि परे है और बुद्धि से महान् आत्मा परे है । (४) विषयों से परे इन्द्रिय, इन्द्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे वह है । ’ बुद्धि के अन्दर, परान्तु बुद्धि से परे, जो अग्नि है, वह आत्माग्नि ही है। इस की स्थिति साथ-वाले चित्र में बताई है ।



यह आत्माग्नि बुद्धि की वेदीमें प्रज्वलित होता है। मन आदि इन्द्रियां इसी में विविध ज्ञान-संस्कारों का हवन कर रही हैं और इस प्रकार यह ‘ ज्ञानयज्ञ ’ चल रहा है। बुद्धि के अंदर जो चित्रूप पहिला अग्नि है, वह यही आत्माग्नि है। मनुष्यको इसी आत्माग्नि का प्रज्वलन करना चाहिये। यही आत्मशक्तिका विकास

कहलाता है ।

सामुदायिक हलचल करनेवालों में तथा राज्य बढ़ाने-वालों में जो उत्साही क्षात्राग्नि होता है, वह क्षत्रियों के इतिहास में सुप्रसिद्ध है । यह भी क्षात्रबुद्धि में वसता है और क्षत्रियों को सुस्त रहने नहीं देता । अस्तु । ये सब अग्नि केवल ' आग ' के स्वरूप के ही नहीं हैं, प्रत्युत मानवी बुद्धि के ये शक्ति-विशेष हैं । आत्मा बुद्धि के अन्दर बैठा हुआ, बुद्धि मन तथा इंद्रियादिकों में विशेष शक्ति की प्रेरणा करता है । ब्राह्म प्रवृत्ति, क्षात्र-प्रवृत्ति तथा अन्य प्रवृत्तियाँ इसी से निष्पन्न होती हैं । इस लिये यही आत्माग्नि मुख्य है और अन्य गौण अग्नि बहुत से हैं । इन सब का मूल बुद्धि में जो पहला प्रवर्तक आत्मा है, उसी में है । इस आत्माग्नि का और वर्णन देखिये—

(१७) पहिला मननकर्ता अग्नि ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोताऽस्या धियो अभवो दस्म होता । त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीत सहा विश्वस्मै सहसे सहध्वै ॥ (१३९, ऋ० ६।१।१)

' हे अग्ने ! (त्वं प्रथम. मनोता) तू पहिला मनन-कर्ता है । हे (दस्म) दर्शनीय ! (अस्या. धियः होता अभव.) इस बुद्धि का हवनकर्ता तूही है । हे (वृषन्) बलवान् ! तू (सीं) सब प्रकार से (दुष्ट-तरीतु) पाग होने के लिये कठिन (सहः) बल (विश्वस्मै सहसे) सब बलवान् शत्रु को (सहध्वै) पराजित करने के लिये धारण (अकृणोः) करता है । '

इस मंत्र में ' अग्नि ' का विशेषण ' मनोता ' है । श्री सायणाचार्य इस शब्द का अर्थ— देवानां मनः यज्ञ ऊतं संबद्धं भवति तादृशः ' अर्थात् देवों का मन जिसमें संबंधित होता है, ' ऐसा करते हैं । देव शब्द का एक अर्थ इंद्रियगण है । इंद्रियों का मन आत्मा में संबंधित होता है, इसका सचित्र वर्णन इस से पूर्व किया ही है । इससे स्पष्ट होता है, ' मनोता अग्नि ' वही आत्मा है कि, जिस से मन आदि सब इंद्रियां संबंधित होती हैं । इस विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में निम्न प्रकार कहा है—

एव ह्यग्ने प्रथमो मनोतेति । ...तिस्रो वै देवानां मनोतास्तास् हि तेषां मनांस्योतानि । चाग्नौ देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि ।

गौर्वै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि । अग्निर्वै देवानां मनोता, तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता, अग्नी मनोताः संगच्छन्ते ॥ (ऐ० ब्रा० २।१०)

' देवों के तीन मनोता है । वाणी देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें देवों का मन सबधित होता है । गौ देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें उनके मन संबंधित होते हैं । अग्नि देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें सब देवों के मन संबंधित होते हैं । अग्नि ही सब मनोता है, क्योंकि अग्नि में ही सब मनोता संगत होते हैं । ' अग्नि, सूर्य आदि देवों का सम्बन्ध जैसा परमात्मा से है, उसी प्रकार वाणी, नेत्र, कर्ण आदि इंद्रियों का सम्बन्ध शरीर में जीवात्मा के साथ है । दोनों का तात्पर्य यही है कि, देवों का आत्माग्नि से नित्य सम्बन्ध है । यही आत्माग्नि अत्यंत बलवान् है और सब शत्रुओं को दूर करने की अनिवार्य शक्ति अपने अन्दर धारण करता है । सब बलवानों से यह अधिक बलवान् है और इसके समान किसी अन्य का बल नहीं है । अपनी आत्मा का यह सामर्थ्य है । यह विश्वास हर एक वैदिकधर्मी मनुष्य के अन्दर स्थिर होना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक प्राणी के अन्दर यह शक्ति विद्यमान है ।

(१८) मनुष्यमं अग्नि ।

अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ॥ यमपनवानो भृगवो विरुहचूर्वनेषु चित्रं विभ्रं विशे विशे ॥ (६९३, ऋ० ४।७।१)

' यह (प्रथमः) पहला (होता) हवनकर्ता यज्ञ में अत्यन्त पूज्य धाताओं द्वारा यही रखा है । जिस को (भृगवानो भृगवः) कर्मकुशल भृगु (विशे विशे विभ्रं) प्रत्येक मनुष्य के लिये विशेष प्रभावसंपन्न और (वनेषु चित्रं) वंदनीय पदार्थों में विलक्षण देखकर (विरुहः) विशेष तेजस्वी करते रहें । ' अर्थात् यह अग्नि प्रत्येक मनुष्य में है और विशेष प्रभाव से युक्त है । यद्यपि प्रत्येक मनुष्य छोटासा है, तथापि उस की आकृति के अनुसार यह आत्मा तुच्छ नहीं है । छोटेसे छोटे प्राणीमें भी यह विशेष प्रभाव-युक्त है और सबसे पहला पूजनीय है । मनुष्य के जीवन में इस आत्मशक्ति का विकास करने का ही मुख्य कर्तव्य है । प्रत्येक मनुष्य में जो आत्माग्नि है, उस का उत्तम आरं स्पष्ट

वर्णन इस मंत्र में हुआ है । मर्त्य मनुष्यों में जो अमर तत्त्व है, वह यही है, यह बात निम्न मंत्र में देखिये—

(१९) मर्त्यो मं अमृत अग्नि ।

अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिर्मृतं
मर्त्येषु । अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्य-
स्तन्वा वर्धमानः ॥ (१७९०, ऋ. ६-९-४)

‘ (अयं प्रथमः होता) यह पहिला हवनकर्ता है । (इमं पश्यत) इस को देखिये । (मर्त्येषु इदं अमृतं ज्योति) मर्त्यों में यह अमर ज्योति है । (स. अयं ध्रुवः जज्ञे) यह स्थिर प्रकट हुआ है । (तन्वा सह वर्धमानः अमर्त्यः) शरीर के साथ बढ़नेवाला अमर (आनिषत्त.) प्रकट हुआ है । ’ इस में स्पष्ट शब्दों से कहा है कि, यह (मर्त्येषु अमृतं ज्योति = He is light immortal in the mortal men) मर्त्यों में अमर तेज है । मरणधर्मवाले देहों में यह एक न मरनेवाला तेज है, इस का वर्णन गीता में देखिये—

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ॥

अनाशिनीऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ ८ ॥

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो ।

न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय । नवानि गृह्णाति
नरोऽपराणि ॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥ २२ ॥

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ॥ ३० ॥

(भ. गी. २)

‘ कहा है, कि जो शरीर का स्वामी (आत्मा) नित्य अविनाशी और अचिंत्य है, उसे प्राप्त होनेवाले ये शरीर नाशवान् हैं । अत एव हे भारत ! तू युद्ध कर ॥ १८ ॥ यह आत्मा अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, एवं शरीर का वध हो जाय, तो वह मारा नहीं जाता ॥ २० ॥ जिस प्रकार कोई मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही अर्थात् शरीर का स्वामी आत्मा पुराने शरीर त्याग कर दूसरे नये शरीर धारण करता है ॥ २२ ॥ सब के शरीर में यह शरीर का स्वामी सर्वदा अवध्य अर्थात् कभी वध न किया जानेवाला है ’ ॥ ३० ॥

यह गीता का कथन पूर्वोक्त मंत्र के कथन का ही

विस्तार है । ‘ मर्त्यो मं यह अमर ज्योति है । ’ इस बात की सचाई हर एक मनुष्य के अनुभव में भी है । अनेक शास्त्र यही बात कह रहे हैं । वेद कहता है कि, (इमं पश्यत) इस को देखिये । इस आत्मा की ज्योति का साक्षात्कार करना मनुष्य का कर्तव्य है । मनुष्य अपने आप को शरीररूप समझकर मरनेवाला न समझे, परन्तु आत्मरूप से अपने आप को अमर समझे । वेद का यह उपदेश विशेष रीति से देखनेयोग्य है । वेद कहता है कि, यह ‘ ध्रुव ’ है । हमी का वर्णन वेद में अन्यत्र ‘ स्थानु, स्कम्भ, स्थूण ’ आदि नामों से किया है । इस मंत्र में ‘ अमर्त्य. तन्वा वर्धमानः । ’ अर्थात् ‘ यह अमर शरीर के साथ बढ़ता है, ऐसा कहा है, ’ इसका तात्पर्य यह है कि, ‘ यह अमर होता हुआ भी मर्त्य शरीर के साथ बढ़ता है । ’ यह बताता है कि, यह आत्मा ही है । अजर, अमर और अजन्मा आत्मा जीर्ण होनेवाले, मरनेवाले और जन्म को प्राप्त होनेवाले शरीर के साथ बढ़ता है, अथवा ऐसा दिखाई देता है कि, यह शरीर के साथ बढ़ रहा है । वास्तविक तत्त्वज्ञान की दृष्टि से देखा जाय, तो न यह शरीर के साथ जन्मता है, न जीर्ण होता है और न मरता है । परन्तु सामान्य दृष्टि से ऐसा भासमान हो रहा है । इस परका सायणभाष्य देखिये—

(२०) जाठराग्नि ।

मर्त्येषु मरणस्वभावेऽपि शरीरेषु अमृतं मरणरहितं
इदं वैश्वानराख्यं ज्योतिः जाठररूपेण वर्तते । अपि
च सोऽयमग्निः ध्रुवो निश्चल आ समन्तान्निषण्णः
सर्वव्यापि अतएवामर्त्यो मरणरहितोऽपि तन्वा
शरीरेण सम्बन्धाज्जज्ञ ॥ (ऋ. सायणभाष्य ६-९-४)

‘ मरनेवाले शरीरों में मरणधर्मरहित वैश्वानर नामक तेज जाठराग्नि रूप से रहता है । यह ध्रुव सर्वव्यापक अमर होता हुआ भी शरीर के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है । ’ अस्तु । यह मंत्र मर्त्यों में जो अमर अग्नि का स्वरूप है, उस का स्पष्टीकरण कर रहा है । यही वेदप्रतिपाद्य मुख्य अग्नि है । श्री सायणाचार्य पूर्व मंत्रोक्त अग्नि को जाठराग्नि कहते हैं, तथा निम्न मंत्र में भी उन के मत से जाठराग्नि का ही वर्णन है—

मथीद्यर्वा विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं
विश्वदेव्यम् । नि यं दधुर्मनुष्यासु विश्वे स्वणे
चित्रं वपुषे विभावं ॥ (३४८, ऋ. १-१४८-१)

सायणभाष्य-देवाः मनुष्यासु मनोरम्यभूतासु विश्व
प्रजासु प्राणिषु वपुषे स्वरूपाय शरीरधारणाय जाठराग्नि-
रूपेण निदधुः स्थापितवन्तः ॥

‘ (होतारं) हवनकर्ता (विश्व-अप्सुं) विश्वरूपी,
नाना रूप धारण करनेवाले (विश्व-देव्य) सब देवों से
युक्त (ई-एनं) इस आत्माग्नि को (विष्ट मातरिश्वा)
व्यापक प्राण (मथीत्) मंथन से उत्पन्न करता है । (य)
जिस को देव (मनुष्यासु विश्व) मानवी प्रजाओं में
(वपुषे) शारीरिक स्वरूप के लिये (निदधुः) धारण
करते हैं । (न) जिस प्रकार (चित्रं विभावं स्व.)
विचित्र प्रभावशाली दीप घर में रखते हैं । ’

शरीररूपी घरमें यह आत्माका दीप देवोंने जगाया है ।
देखिये इस दीपको और इसका प्रकाश फैलाइये । यद्यपि
श्री सायणाचार्यजी के मत से ये दोनों मंत्र जाठराग्निका
वर्णन कर रहे हैं, तथापि इस विषयमें मतभेद होना संभव
है । ऋ० ६।१।४ यह मंत्र पहिले दिया ही है । इस का
अर्थ श्री० स्वा० दयानंद सरस्वतिजीने आत्मा परमात्मापरक
लगाया है । मंत्रका स्पष्टार्थ निःसंदेह आत्माकाही भाव
बता रहा है । यहां श्री सायणाचार्यजी का मत देनेका
उद्देश्य इतनाही है कि, ये भी इसका अर्थ भाग नहीं करते,
परन्तु ‘मनुष्यकी पाचक शक्ति’ कर रहे हैं । पहलेसेही
हमारा कथन रहा है कि, अग्निका मुख्य भाव मानवी
शरीरमें दिखा देनेका वेद का मतव्य है और वह वेदमंत्रों
में विविध प्रकारके वर्णनोंसे बताया गया है ।

मान लीजिये कि, उक्त मंत्रों में पाचक जाठराग्निका
वर्णन है, परन्तु विचार करनेपर उसके पीछे आत्माका
अस्तित्व माननाही पड़ेगा, क्योंकि वह आत्माही इस शरीर
में सब कार्य कर रहा है, वही कानसे सुनता और आंखसे
देखता है, उसी प्रकार वही पेटमें अन्नका पचन कर रहा है ।
वही वाणी के मूलमें है और शब्द बोल रहा है, देखिये—

(२१) वाणी के स्थानमें अग्नि ।

जोह्नो अग्निः प्रथमः पितेवेळस्पदे मनुषा
यत्समिद्धः । श्रियं वसानो, अमृतो विचेता
मर्त्यजेभ्यः श्रवस्यः स वाजी ॥ (४०९, ऋ० २।१०।१)

‘ (जोह्नः) उपास्य अग्नि (प्रथमः पिता इव) पहला
पिता जैसा जो है, वह (इळः पदे) वाणीके पदोंमें (मनुषा
समिद्धः) मनुष्यने प्रदीप्त किया है । यह (श्रियं वसानः)
शोभा देनेवाला अमर (विचेता) विशेष चेतन (मर्त्यजेभ्यः)
छुड़ता करनेवाला (श्रवस्यः) प्रसिद्ध है और वही (वाजी)
बलवान् है । ’

वाणी के पदोंमें, वाचा के मूलस्थान में यह अमर चेतन
अग्नि है । यही सबसे बलवान् प्रेरक है । विशेष चेतन,
विशेष चित्तसे युक्त अथवा चित्स्वरूप यह अग्नि है ।
चित्स्वरूप होनेसे यही आत्मा है, यह बात सिद्ध होती है ।
आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप है और वही वाणी
के पदों के मूल में विराजमान होता है । क्योंकि यही
‘आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर मनके द्वारा प्राण
को संचारित करके नाना प्रकारके शब्द उत्पन्न
करता है । ’ (पाणिनी-शिक्षा) । यह वर्णन यहां देखनेसे
मंत्र का भाव स्पष्ट हो जाता है । और देखिये—

(२२) दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं
जनेभ्यः ॥ होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं
न शेवं दिव्याय जन्मने ॥ (११५, ऋ० १।१८।६)

‘ हे अग्ने ’ भृगु (दिव्याय जन्मने) दिव्य जन्मके लिये
(चारुं रयिं न) उत्तम धनके समान (मानुषेषु आ दधुः) मनु-
ष्योंमें धारण करते रहे हैं । ऐसा तू (मित्रं शेवं न) सेवनीय
मित्र के समान, (होतारं) दाता, (अ-तिथिं) जिसकी
आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, ऐसा (वरेण्यं) श्रेष्ठ है । ’

दिव्य जन्मकी प्राप्तिकी इच्छासे श्रेष्ठ लोग मनुष्योंमें
इस अग्निकी धारणा करते हैं । इसकी धारणा करनेसे वह
संतुष्ट होता है और उनका जन्म दिव्य करता है । यह
अग्नि वैसा धारण किया जाता है कि, जैसा अत्यंत श्रेष्ठ
धन धारण करते हैं । मनुष्यमें सबसे श्रेष्ठ धन किंवा (रयिं)
श्रेष्ठ शोभा ‘आत्मा’ ही है । यदि इस मानवी शरीरमें
आत्मा न रहा, तो अन्य धन और अन्य शोभाएं कुछ भी
कार्य नहीं कर सकतीं । जिससे धनका धनपन रहा है और
जिसकी शोभासे शोभा सुशोभित हो रही है, वही सच्चा
धन और सच्ची शोभा है । यही धनका धन आत्माही है ।
सब जानते ही हैं कि, यह आत्मा ‘अ+तिथि’ है, क्योंकि

इसकी शरीरमें आनेकी और शरीर छोड़कर चले जानेकी तिथि निश्चित नहीं है। यही सेवा करनेयोग्य सत्त्वा मिश्र है, क्योंकि यही सबका मान्य कर रहा है। इसलिये इसकी शक्तिकी धारणा सबको करनी चाहिये। क्योंकि इसकी शक्तिका चिंतन करनेसे ही अपनी शक्तिका विकास हो सकता है। कोई अन्य मार्ग नहीं। इसकी धारणा करनेसे शक्तिकी वृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि, यह उपासकको विलक्षण शक्तियाँ देता है, देखिये—

(२३) शक्ति प्रदाता अग्नि ।

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभि पुरोहितो होता निषत्तो
रथिषालमर्त्यः ॥ रथो न विश्वंजसान आयुषु
व्यानुषवार्था देव ऋण्वति ॥ (११२, ऋ० १।५।१३)

‘(वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसुओं और रुद्रोंने जिसको अग्रभागमें रखा है, इस प्रकारका यह (क्राणा) कर्ता, (होता) दाता, आह्वाता, (निषत्तः) व्यास, (रथि+पाद) धनके साथ रहनेवाला, (अ-मर्त्यः) अमर देव, (रथो न) रथके समान, (विश्व आयुषु) प्रजाजनोंमें, (ऋजसानः) आगे बढ़नेवाला प्रेरक (वार्थाणि) विविध शक्तियों (आयुषू वि ऋण्वति) प्राप्त कराता है ।’

इस मन्त्रमें शक्तिप्रदान करनेका गुण स्पष्टतापूर्वक कहा है। जो शक्ति इससे मिलती है, वह साधारण शक्ति नहीं है, परन्तु ऐसी विलक्षण शक्ति होती है कि, जो सब (वार्थ) शत्रुओंका निवारण कर सकती है। जो शक्ति शरीरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य अपने सब प्रकारके शत्रुओंको दूर भगा देता है। सब अन्य शक्तियोंसे ‘आत्मशक्ति’ ही सबसे विशेष प्रभावशाली होती है। आत्मशक्ति के द्वारा अन्य शक्तियोंका उपयोग किया जाता है, तथा आत्माकी दुर्बलता होनेसे अन्य शक्तियाँ कुछ भी कार्य नहीं कर सकती, इतनी इस शक्तिकी योग्यता है और यही शक्ति आत्माग्निसे प्राप्त होती है।

(२४) पुरोहित अग्नि । गणराज ।

इस मन्त्रमें ‘पुरोहित’ शब्दके अर्थका निश्चय हुआ है। ‘पुर + हित’ शब्दका अर्थ ‘अग्रभागमें रखा हुआ, अग्रसर, प्रमुख, मुखिया’ है। इस अर्थका स्वीकार करनेसे प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि, यह किनका अग्रसर है,

किन्होंने इसको अग्रभागमें अथवा मुख्य स्थानमें रखा है, किनका यह मुखिया है ? इत्यादि प्रश्नोंका उत्तर इस मन्त्रमें दिया गया है= (वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसु तथा रुद्र देवोंने इसको अपना अग्रसर अथवा मुखिया बनाया है। वसु रुद्र और आदित्य ये ‘गणदेव’ हैं। गणदेव वे होते हैं कि, जो अपने संघमें रहते हैं और संघसे ही कार्य करते हैं। संघशक्ति का महत्त्व इन ‘गणदेवों’ के द्वारा बताया जाता है। गणदेवों के प्रत्येक संघका एक मुखिया होता ही है, और उस मुखिया को ‘पुरो-हित’ कहते हैं, क्योंकि गणोंके सब घटकों द्वारा वह स्वीकृत होता है। यह एक प्रकारकी ‘गण-राज-संस्था’ है जो वैदिक मन्त्रोंमें वर्णन की है। इसका व्यापक स्वरूप बतानेके लिये यहां स्थान नहीं है, तथापि इतना कहना आवश्यक है कि, इसके मुखिया कौं जैसा ‘पुरो-हित’ कहते हैं, उसी प्रकार ‘गण-राज, गणपति, गणेश’ आदि नाम होते हैं और इसकी अनुमतिके बिना कोई गण कोई कार्य कर नहीं सकता। प्रत्येक कार्यमें इसको बुलाया जाता है, इसका सत्कार किया जाता है और इसकी अनुमतिसे ही सब कार्य किये जाते हैं। यद्यपि गणके प्रत्येक व्यक्तिको अपना मुखिया चुननेका अधिकार होता है, तथापि मुखिया चुननेके पश्चात् मुखियाका अधिकार सर्वतोपरि होता है।

इस मन्त्रमें वसुगण और रुद्रगण का नाम आया है। अध्यात्मदृष्टिसे ‘रुद्र’ नाम प्राणोंका है। पंच प्राण और पंच उपप्राण मिलकर दस प्राण मानवी शरीरमें कार्य करते हैं। यही प्राणगण किंवा रुद्रगण हैं। स्थूल शक्तियों के अर्थात् पृथिवी आप तेज आदिकों के गणों का नाम ‘वसुगण’ है। इन दोनों गणोंका अग्रसर मुखिया आत्मा ही है। इन दोनों गणों के सब देवताओंने इस आत्माको ही अपना मुखिया बनाया है। सब कार्य करनेके समय ये सब देवगण इसको अपने अग्रभागमें रखते हैं और इसीसे शक्ति लेकर कार्य करते हैं। यह पुरोहितका भाव पाठकों को यहाँ ठीक ध्यान में धरना चाहिये।

यह अमर आत्मदेव सब अन्य देवताओं का अग्रसर है और सब प्रजाओं में बैठा हुआ उन सबको विलक्षण शक्ति देता है। इस दृष्टिसे इस मन्त्रका विचार करनेपर आत्माग्नि की ठीक ठीक कल्पना आ सकती है। इसी का और वर्णन देखिये—

(२५) हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।

स जायत प्रथमः पस्यासु महो बुध्ने रजसो
अस्य योनौ । अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायो-
युवाने वृषभस्य नीळे ॥११॥ प्र शर्ध आर्त प्रथमं
विपन्यं ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे । स्पाहो
युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त
वृष्णे ॥१२॥ (६३७-३८, ऋ० ४।१)

‘(स प्रथमः) वह पहला (पस्यासु जायत) प्रजाओं
में हुआ है । तथा वह (अस्य महः रजसः बुध्ने योनौ)
इस महान् अंतरिक्षके मूल स्थानमें होता है । यह (अपाद-
शीर्षा) पाँव सिर आदि अवयवोंसे रहित (अंतः-गुहमानः)
अंदर गुप्त है । (वृषभस्य नीळे) वीर्ययुक्त पुरुषके स्थानमें
(आ योयुवानः) संघटनाका कार्य करता है, संमेलन का
कार्य करता है ।’ इस मन्त्रका का तात्पर्य यह है कि, सब
देवोंमें अत्यंत प्राचीन तथा सबसे पहिला यह देव है, इस
महान् अवकाशमें इसका स्थान है । न इसको हाथ हैं और न
पाँव, न सिर आदि अवयव है । अर्थात् यह अशरीरी निरा-
कार है और सबके अंदर गुप्त अथवा व्याप्त है । शरीररहित
होनेके कारण ही यह निरवयव होनेसे सबमें व्याप्त और
अव्यक्त है । बलवान् मनुष्यके अंदर यह संमिश्रणका कार्य
करता है, अर्थात् निर्बलके अंदर यह भेदन का कार्य करता
है । ‘नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः’ (मुंडक० ३।२।४)
यह आत्मा बलहीनको प्राप्त नहीं होता, यह तत्त्वज्ञान का
सिद्धांत ही है । निश्चयपूर्वक दृढ़ अनुष्ठानसे ही इसकी
प्राप्ति होती है और जिस समय इसकी प्राप्ति होती है,
उस समय उस मनुष्यकी शक्ति, शोभा और योग्यता बढ़
जाती है ।

‘(ऋतस्य योनौ) ऋतके मूल कारणमें (वृषभस्य
नीळे) बलवान् के स्थानमें (प्रथमं विपन्यं) पहले ज्ञानी
को (शर्धः प्र आर्तं) तेज और बल प्राप्त होता है । यह
(स्पाहः) स्पृहणीय, प्राप्त करने की इच्छा करनेयोग्य,
युवा (वपुष्यः) देहधारी, (विभावा) प्रभावयुक्त है ।
(वृष्णे) इस बलवान् के लिये (सप्त प्रियासः) सात प्रिय
देव (अजनयन्त) उत्पन्न करते हैं ।’

इस मन्त्रके अन्य शब्द पूर्व केखके अनुसार सुगमतासे
ध्यानमें आ सकते हैं, इसलिये उनका विशेष वर्णन करनेकी

यहां आवश्यकता नहीं है । पूर्व मन्त्रमें ‘अ-पाद-शीर्ष’
हस्तपाद आदि अवयवहीन है, ऐसा वर्णन है, परन्तु यहां
इस मन्त्रमें ‘वपुष्यः’ शरीरधारी है, ऐसा है । यद्यपि
इसमें परस्पर विरोध दिखाई देता है, तथापि विचारकी
दृष्टिसे इसमें कोई विरोध नहीं है । क्योंकि यह आत्माग्नि
यद्यपि वस्तुतः शरीररहित है, तथापि इस शरीरको धारण
करनेवाला यही है । इसलिये दोनों शब्द इस आत्मामें
सुसंगत होते हैं । इस आत्मासेही इस शरीरमें तेज, बल,
वीर्य आदि होता है, इसीलिये इसके विषयमें सब ही प्राणी
हार्दिक प्रेमभाव रखते हैं, सबको ही यह प्रिय है । इस
मन्त्र में ‘सात प्रिय देव इसको प्रकट करते हैं,’ ऐसा जो
कहा है, इसका स्पष्टीकरण इस लेखके अंतिम भागमें होगा ।
वहांही इसको पाठक देख सकते हैं । (सप्त) सात संख्या
का महत्त्व क्या है, इसका पता वहांही पाठकोंको लग सकता
है । अस्तु । इस प्रकार इस गुह्य अग्निका वर्णन वेदमन्त्रोंमें
है । इससे स्पष्ट होता है कि, यह आत्माग्नि हृदयाकाशमें
सब प्रजाओंके अंदर गुह्य रीतिसे विराजमान है । तात्पर्य,
‘अग्नि’ शब्दसे केवल ‘भाग’ का ही भाव नहीं लिया
जाता, परन्तु प्रकरणानुसार अन्य अर्थ भी इस शब्दसे
व्यक्त होते हैं । इसका अब और एक विलक्षण रूपक देखिये—

(२६) वृद्ध नागरिक ।

अधा हि विश्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः ।

रणवः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः ॥

(१५८, ऋ० ६।२।७)

‘(अधा हि) और तू (नः प्रियः अतिथिः) हमारा
प्रिय अतिथि तथा (विश्व ईड्यः असि) प्रजाओंमें पूजनीय
है । जैसा (पुरीव जूर्यः रणवः इव) नगरीमें वृद्ध पुरुष
रमणीय होता है, अथवा (सूनु न त्रययाय्य) जैसा
पुत्र संरक्षणीय होता है ।’

नगरीमें जो सबसे वृद्ध बुजुर्ग होता है, वह सबको
वन्दनीय होता है । इसी प्रकार यह इस शरीररूपी नवद्वार
पुरीमें बहुत समय से रहनेवाला सबसे प्राचीन पूर्वज
होनेसे सबको पूज्य है । तथा घरमें जैसा बालक सबको
संरक्षणीय होता है, वैसा यहां इस शरीररूपी घरमें यह
बालकवत् ही है और इसलिये इसका संगोपन करना और
इसकी सब शक्तियोंका विकास करना सबको उचित है ।

दोनों उपमाओंमें एक विशेष बात बताई है कि, यह स्वयं अशक्त है और इसलिये दूसरोंकी सहायताकी अपेक्षा करता है । यद्यपि वृद्ध मनुष्य पूज्य होता है, तथापि तरुणोंके साथ उसकी शक्तिका मुकाबला नहीं हो सकता । तथा यद्यपि बालक सुकुमार होनेसे सबको प्यारा होता है, तथापि तरुणोंकी अपेक्षा वह अशक्त ही होता है । यद्यपि वृद्ध और बालक अशक्त होते हैं, तथापि वृद्धमें अनुभवकी शक्ति होनेसे वह सबको वंदनीय होता है और बालक सुकुमार होनेसे तथा सब शक्तियोंको बीजवत् अपने अंदर धारण करता है, इसलिये सबको प्यारा होता है । आत्मा इस शरीरके जन्मसे पहिले विद्यमान था, इसलिये शरीरसे वृद्ध है और उसकी संपूर्ण शक्तियोंका विकास होने-वाला है, इस कारण वह बालकवत् ही है । तथा यह आत्मा जो कार्य करता है, यद्यपि अपनी शक्तिसे करता है, तथापि इंद्रियोंद्वारा कराता है, इसलिये इंद्रियोंकी सहायताकी अपेक्षा रहनेके कारण वह वृद्धवत् अथवा बालकवत् दूसरेकी सहायता चाहता है । ये सब रूपकके भाव यहां देखने-योग्य हैं । अग्निके रूपसे यह आत्माका भाव यहां बताया है । अग्निका चिनगारी छोटी होनेके कारण जैसी उसकी रक्षा करनी आवश्यक है, परंतु अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् वही चिनगारी बड़े दावानल का रुद्ररूप धारण करती है और बड़े पुरंधर शत्रुओंको भी डराती है, उसी प्रकार यह आत्मा प्रारंभमें अपने अंदर सब शक्तियां बीजरूपसे धारण करता है, उस समय बड़ा अशक्तता प्रतीत होता है, परंतु अनुकूल माता-पिता, गुरु, मित्र आदिकी परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् जिस समय यह आत्माका “ महात्मा ” बनता है, तब यही सबको पूज्य होता है, और इसके तेजसे इसके शत्रुभी डरने लग जाते हैं । इस प्रकार अग्निके साथ इस आत्माकी समानता देखनेयोग्य है । इसका ग्रहण कैसे किया जाता है, इस विषयमें निम्न भन्न देखिये—

(२७) प्रजामें देवताका अनुभव ।

अग्ने कदा ते आनुषम्भुवद्देवस्य चेतनम् ।

अथा हि त्वा जगृभिरे मर्तासो विश्वीडयम् ॥

(६९४; ऋ. ४।१२)

‘ हे अग्ने ! जब तुझ देवताकी चेतनता हुई, तब ही तुझे सब मर्त्योंने (विश्व ईश्वर) सब प्रजाओंमें पूजनीयको

(जगृभिरे) धारण किया । ’ अर्थात् जब तेरे चैतन्यका पता लगा, तब मनुष्योंने तेरा ग्रहण किया । आत्माका ग्रहण उस समय होता है कि, जब आत्माकी चेतनशक्ति का पता लग जाता है । विचारशील मनुष्य पहले शरीरमें अनुभव करता है कि, इसमें एक चेतन चालक शक्ति है, तत्पश्चात् उसकी खोज की जाती है और उसका ग्रहण करनेके लिये अनुष्ठानपूर्वक साधन होता है । इसके पश्चात् उसका ग्रहण हो जाता है । यह उसकी अंतिम उन्नतिकी सीमा है । इसका वर्णन देखिये—

(२८) न दबनेवाला ।

स मानुषीषु दूळभो विश्वु प्रावीरमर्त्यः ।

दूतो विश्वेषां भुवत् ॥ (७१३; ऋ. ४।१२)

‘ वह (मानुषीषु विश्वु) मानवी प्रजाओंमें (दूळभः दुर्दमः) न दबनेवाला (अमर्त्यः) अमर (प्रावीः) प्रकट हुआ है, वह सबका दूत हो गया है । ’ इस के पूर्व एक मंत्रमें कहा है कि, यह वृद्धके समान अथवा बालकके समान है । यह प्रारंभिक अवस्था थी । इस प्रारंभिक अवस्थामें इसका बचाव करना आवश्यक होता है । परंतु जिस समय यह अपनी शक्तियोंके उत्कर्षके साथ प्रकट हो जाता है, उस समय यही (दूळभः- दुर्दमः) न दबनेवाला हो जाता है । कितनी भी शक्ति शत्रुकी हो, उसके दबावसे यह दबाया नहीं जायगा, इतनी प्रचंड शक्ति यह प्राप्त करता है । इस मंत्रमें एक विशेष बात कही है । वह यह है कि, यह आत्मा (मानुषीषु विश्वु दूळभः) मानवी प्रजाओंमें ही यह न दबनेवाला बन जाता है, यह अवस्था उसको मानवयोनिमें ही प्राप्त होती है । पशुपक्षियोंकी योनिमें इस प्रकार उन्नति यह प्राप्त नहीं कर सकता । इस विधानसे हम अग्निका आत्मा ही स्वरूप है । यह बात निश्चिन्त होती है, क्योंकि आत्माके विकासकी कर्मभूमि या कुक्षेत्र यह मानवयोनि ही है । अन्यत्र ऐसा पुरुषार्थ नहीं हो सकता । यह सबका ‘ दूत ’ है । जिस समय श्रद्धाभक्तिसे इसको कहा जाता है कि, यह कार्य ऐसा करो, तो यह वैसा बना देता है । ‘ मानस-चिकित्सा ’ से जो आरोग्य प्राप्त होता है, वह इसी आत्माकी निज शक्तिसे होता है । ‘ हे आत्मदेव ! तुम मुझे आरोग्य दो, इस अवयवमें नीरोगता करो, ’ ऐसा विश्वासपूर्वक कहनेसे उसकी

शक्ति वहां इष्ट कार्य कर देती है । इसको कहनेसे यह बैसाही कर देता है, इसलिये इसको आज्ञाधारक ' दूत ' कहते हैं । अग्निमंत्रोंमें दूत के विषयमें बहुत वर्णन है । प्रसंगविशेषसे भिन्न भिन्न प्रकारका भाव उस वर्णन में है, तथापि उनमें एक भाव यह है, जो यहां बताया है । अन्य भाव स्थान स्थान में बताये जायेंगे । इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मर्त्येष्याविशन् ।

अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत ॥

(११४; ऋ ५।२५।४)

(१) अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, (२) अग्नि मर्त्योंमें आवेश करता है, (३) अग्नि हमारा अज्ञाहक है, (४) इसलिये अग्नि की बुद्धियों और कर्मोंसे पूजा कीजिये ।'

इस मंत्रमें चार विधान हैं । अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, यह पहिला कथन है । देव शब्द इंद्रियवाचक सुप्रसिद्ध है । इंद्रियोंमें आत्माकी शक्ति प्रकाशित होती है । सब मनुष्यों को इसका अनुभव अपने ही शरीरमें हो सकता है । आंख, नाक, कानोंमें आत्माकी ही शक्ति वहांका कार्य कर रही है । यही आत्माका आवेश मर्त्योंमें है । शरीर स्वयं चेतन नहीं है, आत्माकी शक्तिसे ही इसकी चेतनता है । आत्म-शक्तिका आवेश जब इस शरीरमें होता है, तभी यह मूक शरीर वक्तृत्व करने लग जाता है, जड शरीर दौड़ने लग जाता है, मुर्दा शरीर सचेतन प्रतीत होता है । यही इस महा-भूत का संचार है, इसीको आवेश कहते हैं । यही आत्माग्नि इस शरीर में अन्न का भोग लेता है और सब इंद्रियोंको पहुंचाता है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक देव बैठा है, वहां उसके पास योग्य अन्नरसको पहुंचानेका कार्य यह करता है, यही उसका ' दूत ' भाव है । जिस प्रकार दूत, उसको दिये हुए पदार्थ बांट देता है, ठीक इसी प्रकार यह दूत शरीरस्थानीय देवताओंको अन्नरसका विभाग यथायोग्य रीतिसे बांटता रहता है । इस दूतकर्मसे ही अन्य देव अर्थात् इंद्रियगण पुष्ट होते हैं और अपना अपना कार्य यथायोग्य रीतिसे करते रहते हैं । यह आत्मा इतना कार्य कर रहा है, इसलिये बुद्धियोंद्वारा इसकी उपासना करनी अत्यावश्यक है । यह इस मंत्रका तात्पर्य है । यह जैसा अचेतन देहको सचेतन करता है, वैसेही मूकसे वक्तृत्व कराता है, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(२९) मूकमें वाचाल ।

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्त्येष्वग्निरमृतो

निधायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः

सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ (१३७, ऋ० ७।४।४)

(' अयं प्रचेताः अग्निः ') यह ज्ञानी अग्नि (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालों में शब्दका प्रवर्तक, (मर्त्येषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर (निधायि) रहा है । हे (सहस्वः) बलवान् ! तेरे विषयमें सदा हम (सु-मनसः) मन का उत्तम भाव धारण करेंगे, इसलिये वह तू हमारी (मा जुहुरः) हिंसा न कर ।'

इस मंत्रके प्रथमाधेमें आत्माग्निके गुण वर्णन किये हैं । (१) यह आत्माग्नि (अ-कविषु) जो शब्दका उच्चार नहीं कर सकते, जो स्वयं ज्ञानी नहीं है, उनमें (कविः) शब्द का प्रवर्तक और ज्ञानी है । (२) तथा (मर्त्येषु) मरनेवालों में यह अमर तत्त्व है । इस विधान की सत्यता हमने इससे पूर्व देखी है । मुख जड है, स्वयं मुखसे शब्द नहीं निकल सकता, परन्तु यह जड मुखसे बड़ा ओजस्वी वक्तृत्व करा सकता है । सब हस्तपादादि अवयव और इंद्रिय मरनेवाले और क्षीण होनेवाले हैं, उन सबमें यह अविनाशी और अमर है । जो ज्ञानी लोग इसके विषयमें मनमें (सु-मनसः) उत्तम भावना धारण करेंगे, उनकी उन्नति होगी, क्योंकि यह आत्माग्नि अपनी शक्ति उनमें विकसित करता है और उनको तेजस्वी करता है । इसीलिये आत्मनिष्ठ मनुष्योंका तेज सर्वत्र फैलता है । यह आत्माग्नि सच्चा मित्र है और इसीलिये उपासकोंकी सहायता करता है—

(३०) पुराना मित्र ।

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रतनमृत्विजमध्व-

रस्य जारं । बाहुभ्यामग्निमायशोऽज्जनयंत विश्व-

होतारं न्यासादयन्त ॥ (१५३१, ऋ० १०।७।५)

(' द्युभिः हितं ') तेजस्वियोंके साथ रहनेवाला, (प्रतनं मित्रं इव प्रयोगं) पुराने मित्रके समान योग्य सहायता देनेवाला, (ऋतु+इज्ज) ऋतुके अनुकूल कर्म करनेवाला, (अ-ध्वरस्य जारं) सत्कर्म की समाप्ति करनेवाला, अग्नि है । इसको (आयवः) मनुष्य अपने पुरुषार्थसूचक बाहुओंसे प्रकट करते रहे और उस (होतारं) दाताको (विश्व) प्रजाओंमें रखते रहे ।'

यह आत्माग्नि (प्रत्यं मित्रं) पुराने मित्रके समान योग्य समयमें योग्य सहायता करनेवाला है । जो इस आत्माग्नि की यह मित्रता जानते हैं, वेही उसका सच्चा मूल्य अनुभव करते हैं और वेही अपने आपको धन्य धन्य बना सकते हैं । बाहुबलों अर्थात् पुरुषार्थोंसेही उसकी प्रसिद्धि होती है । यह महात्मा ऐसे शुभ कर्म करनेसे जगत् में वंदनीय बना है । योग्य सर्वजन हितकारी पुरुषार्थों से ही प्रशंसा होती है । तात्पर्य यह है कि, निष्ठापूर्वक ज्ञानसे आत्माग्नि का अनुभव होता है और सर्वजन हितकारी पुरुषार्थोंसे उसकी प्रसिद्धि होती है । इस प्रकार पुराने मित्रकी उदारता है, इसलिये सबको इसके विषयमें आदर रखना उचित है । अब और इसका अमरत्व देखिये—

(३१) विनाशियोंमें अविनाशी ।

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विश्वे ॥

(१६३७, ऋ० १०।७९।१)

‘ (मर्त्यासु विश्वे) मर्त्य प्रजाओंमें (अस्य महतः अमर्त्यस्य) इस महान् अमरका महत्त्व देखा है । ’ यह अनुभव की बात इस मंत्रमें कही है । सब देह मरनेपर भी यह अमर रहता है । मरणधर्मां शरीरोंमें यह अमर और अविनाशी आत्मशक्ति रहती है । इसीका नाम आत्माग्नि है । तथा—

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।

द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्व्वा होता मंद्रतमो विशि ॥

(१४१९, ऋ० ८।७१।११)

‘ (सहसः सूनुं) सहनशक्ति को बढ़ानेवाले, (जातवेदसं) जिससे ज्ञान और धन की उत्पत्ति हुई है, ऐसे अग्नि की (वार्याणां दानाय) शत्रुनिवारक शक्तियोंके दानके लिये प्रशंसा करता हूँ । जो (मर्त्येषु अमृतः) मरणधर्म-वालों में अमर, (विशि मंद्रतमः) प्रजामें अत्यंत तृप्ति करनेवाला (होता) दाता (द्वि-ता भू) दो प्रकारसे होता है । ’

(१) यह आत्माग्नि सहनशक्ति अर्थात् शत्रुको दूर भगानेकी शक्ति बढ़ाता है, आत्मिक बलसेही संपूर्ण शत्रु दूर भाग जाते हैं । (२) यह चित्स्वरूप होनेसे इससे ही ज्ञान का प्रवाह चलता है । (३) शत्रुता-निवारक धन और

शक्ति का प्रदान यही करता है । (४) ‘ सब मर्त्यों में यही अमर है, ’ और (५) सबको अत्यंत हर्ष देनेवाला भी यही है । (६) इसकी शक्ति स्थूल और सूक्ष्ममें संचारित हो रही है । यह इसका वर्णन स्पष्टतासे इसका आत्मिक स्वरूप व्यक्त कर रहा है । तथा और देखिये—

स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वेदारु
वेद्यश्च नो धात् । विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषू-
पर्भुद् भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ (१७२, ऋ० ६।४१२)

‘ (वस्तो चक्षणिः न) दिनमें सूर्य जैसा (विभावा) प्रकाशक (वेद्यः) और जाननेयोग्य, वह अग्नि (वेदारु चनः) वंदनीय अन्न (नः धात्) हम सबको देवे । (विश्व+ आयु अमृतः) पूर्ण आयु देनेवाला यह अमर (मर्त्येषु उपर्भूत) मर्त्यों में ब्राह्ममुहूर्तके समय जागनेवाला (जातवेदाः) ज्ञान का प्रकाशक (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है ऐसा है । ’

सूर्य जैसा सब को प्रकाश देता है, उसी प्रकार यह आत्माग्नि सबको ज्ञान का प्रकाश देता है । इसलिये यह (वेद्य) जाननेयोग्य है । इसकी खोज करनी चाहिये, ऐसा जो कहते हैं, उसका यही कारण है । (विश्व-आयुः) सब आयु का धारण यही करता है, जबतक यह अमर देव मर्त्य शरीर में रहता है, तब तकही इसकी आयु होती है । जब यह चला जाता है, तब कहते हैं कि, इसकी आयु पूरी हो गई । इसका तात्पर्य ही यह है कि, सबकी आयु इसके साथही सम्बन्धित होती है । इस प्रकारका यह आत्माग्नि मर्त्योंमें अमर रूपसे रहता है । तथा और देखिये—

स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया धुम्नेन श्रवसा
विभाति ॥ (१८३, ऋ० ६।५।५)

‘ हे अमृत ! वह मर्त्योंमें (प्र-चेता) विशेष ज्ञानसंपन्न (राया) धन और (धुम्नेन श्रवसा) तेजस्वी यशसे (विभाति) विशेष चमकता है । ’ अमर आत्माग्नि के कारण ही यह यश और यह धनयुक्त तेज उसको प्राप्त होता है, इसलिये यह धन, शोभा, तेज और यश उसीका है और उसीसे सबको प्राप्त होता है । इसलिये इसीकी उपासना प्रातःकाल करनी चाहिये । देखिये—

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः ह्यवेताऽतिथिः ।

विश्वानि यो अमर्त्यो ह्य्या मर्त्येषु रण्यति ॥

(८८१, ऋ० ५।१८।१)

‘(अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, वह (विशः) सबका निवासक (पुरु+प्रियः) सबको प्रिय अग्नि (प्रातः सवेत) प्रातःकाल में प्रशंसित होवे । वह मर्त्योंमें अमर (विश्वानि हव्या) सब अन्तों को (रणयति) चाहता है ।’

यह पूर्वोक्त आत्माग्नि सबको प्रिय है, इससे अधिक प्रिय वस्तु दुनियाभरमें और कोई भी नहीं है । इसलिये इसको ‘पुरु-प्रिय’ कहते हैं, इस विषयमें उपनिषदों में निम्न प्रकार वर्णन है—

आत्मानमेव प्रियमुपासीत ॥ (बृ० उ० १।४।८)
न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवति
आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति ॥
न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्त्या-
त्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति ॥
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवत्या-
त्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति । आत्मा वा
अरे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः ॥
(बृ० उ० २।४।५)

‘आत्माको ही प्रिय मानकर उपासना करनी चाहिये । अरे वित्त के लिये वित्त प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही वित्त प्रिय होता है । ... देवोंके लिये देवतायं प्रिय नहीं होती हैं, परन्तु आत्माके लिये ही देव प्रिय होते हैं । ... सबके लिये ही सब प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही सब कुछ प्रिय होता है । इसलिये आत्मा की खोज करनी चाहिये और उसीका श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना चाहिये ।’ पूर्वोक्त वेदमंत्रमें जो ‘पुरु+प्रिय’ शब्द है, उसीका यह स्पष्टीकरण है । प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें इसीका चिंतन करना चाहिये—

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय चित्तयेदात्मनो हितं ॥

‘ब्राह्म मुहूर्त में उठकर आत्मा का हित करनेका उपाय सोचना चाहिये ।’ यह आयुर्वेदकी सनातन रीति है । अस्तु ।

पूर्वोक्त मंत्रमें कहा है कि, यह आत्मा सब अन्न, (विश्वानि हव्या) सब प्रकारका भक्ष्य चाहता है । इसकी सत्यता देखनेके लिये हरएक योनिके प्राणियोंका निरीक्षण कीजिये । हरएक योनिके प्राणीका भक्ष्य अलग अलग रहता है । प्रायः सब योनियों के प्राणी सब कुछ पदार्थ खाते हैं । इसलिये कहा है कि—

स यद्यदेवाऽसृजत तत्तद्वत्सुमध्रियत सर्वं वा
अत्तीति तददितेरदितित्वं सर्वस्यैतस्यात्ता
भवति सर्वमस्यान्नं भवति य एवमदितेरदिते
तित्वं वेद ॥ (बृ० उ० १।२।५)

सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति ।

(बृ० उ० २।२।४)

वात्यश्त्वं प्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः ॥

(प्रश्न उ० २।११)

‘उसने जो उत्पन्न किया, वह सब खाने के लिये धर दिया, क्योंकि यह सबका भक्षक है । इसीलिये इसको अदिति कहते हैं, यह सबका भक्षक है और सब इसका अन्न है । हे प्राण ! तू वात्य, एक, ऋषि, सत्पति और सब विश्वका भक्षक है ।’ यह उपनिषदों का वर्णन पूर्वोक्त मंत्र के साथ देखनेयोग्य है । इस विधानों की तुलना करने से मंत्र का आशय अधिक स्पष्ट होता है और वैदिक कल्पना विशेष स्पष्ट होनेमें सहायता हो जाती है । अस्तु । तात्पर्य यह कि, यह आत्माही ही (अत्ता) भक्षक किंवा सर्वभक्षक है । यह न केवल मर्त्योंका अपितु देवोंका भी हित करता है, इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

(३२) अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ

इरुणोति देवान् ॥ (२३४; ऋ० १।७।१)

‘यह मर्त्योंमें अमर, (ऋता-वान्) सत्य नियमों का पालक, दाता, (यजिष्ठः) पूज्य है, और यह देवोंका हित करता है ।’ यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यह मर्त्य शरीरमें रहता हुआ देवोंका हित कैसा करता है? इस प्रश्नका उत्तर इतनाही है कि, इस शरीरमें ही स्थानस्थानमें अनेक देवताएं अंशरूपसे आकर बैठी हैं, उनका हित यही करता है । आंखमें सूर्यनारायण है, नाकमें अश्विनी देव हैं, छातीमें मरुत् हैं, इसी प्रकार अन्यान्य स्थानोंमें अन्यान्य देव हैं । इन सब देवगणोंका हित यही आत्माग्नि कर रहा है । देवोंका अपने अपने स्थानमें निवास कराना, उनको अन्नरस पहुंचाना, उनसे योग्य कार्य लेना, अपने साथ उनको लाना और ले जाना, उनको हृष्टपुष्ट करना, इत्यादि सब कार्य इसी आत्माग्निके हैं । अग्निस्पर्शमें स्थानस्थानमें

इस विषय के वर्णन अनेक हैं, उनका विशेप विचार किसी समय हो जायगा। यहां केवल सूचानाके लिये लिखा है। तथापि कुछ थोड़े वाक्य देखिये—

- [१] स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ य. ३।४।५१
 [२] स देवेषु घनते घार्याणि ॥ ऋ. ५।४।३
 [३] देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ॥ ऋ. २।१२।१
 [४] देवो देवान् परिभूर्ऋतेन ॥ ऋ. १०।१२।२
 [५] देवो देवान् यजत्वग्निरर्हन् ॥ ऋ. २।३।१
 [६] देवो देवान् यजसि जातवेदः ॥ ऋ. १०।११।०।१
 [७] देवो देवान् स्वेन रसेन पृंचन् ॥ ऋ. ९।२७।१२

‘(१) वह देवोंमें दीर्घ आयु करता है। (२) वह देवोंमें शक्तियां देता है। (३) वह देव अपने कर्मसे देवोंको सुभूषित करता है। (४) सत्यसे वह देव देवोंको व्यापता है। (५) अग्नि देव योग्य होनेसे देवोंका यजन करता है, (६) जातवेद अग्नि देव देवोंका यज्ञ करता है। (७) देव अपने रससे देवोंको पुष्ट करता है।’

इस प्रकारके सैकड़ों वचन हैं कि, जो आत्मा और इन्द्रियोंका ही संबंध वर्णन कर रहे हैं। आत्मा अग्नि है और इन्द्रिय-स्थानमें सब देवतागण है। इनका ही वर्णन यहां अग्निसूक्तों में मुख्यतया है और इसी प्रकार अन्य देवता के सूक्तोंमें भी है। परंतु यहां अग्निविषयक ही वर्णन का विचार करना है, इसलिये अन्य देवताके मंत्र देखनेकी आवश्यकता नहीं है। अब निम्न लिखित मंत्रमें इसका संबंध अन्य देवोंके साथ देखिये—

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरति
 न्येरिरे इति कृत्वा न्येरिरे। अमर्त्यं यजत
 मर्त्येष्वामा देवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं
 जनत प्रचेतसम् ॥ (६३१; ऋ. ४।१।१)

‘हे अग्ने! (स-मन्यवः) अत्यंत उत्साही देव (अरति त्वां देवं) गतियुक्त तुझ देवको (सदं इत्) सदा (न्येरिरे) प्रेरित करते हैं। हे (यजत) पूज्य! (मर्त्येषु अमर्त्य) मर्त्योंमें अमर (आदेवं देवं) देवताको (आजनत) प्रकट करते हैं, तथा (प्र-चेतसं) चिखरूप देवको प्रकट करते हैं।’

यह आत्माग्नि मरणधर्मवालोंमें अमर है और इसको अन्य देव प्रकट कर रहे हैं। अर्थात् अन्य देवताओंके कारण

इसका अनुभव हो रहा है। बाह्य जगत् में देखिये कि, सूर्यादि देवताओंके अस्तित्व से ही परमात्माका अस्तित्व है, यह कल्पना उत्पन्न होती है। इसी प्रकार अध्यात्मपक्षमें अपने देहमें आंख, नाक, कानोंके व्यापार देखकर इनके अंदर एक आत्मतत्त्व है, ऐसा अनुभव होता है। दोनों दृष्टियोंसे देवताएं आत्माको प्रकट करती हैं, यह कथन सत्य है। इस प्रकार मर्त्योंमें अमर आत्माग्निका वर्णन वेदमें अग्निके मिषसे होता है। इस विषयमें और एक ही मंत्र देखिये—

यो मर्त्येष्वमृतं क्रतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि।
 होता यजिष्ठो महा शुच्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरभ्यै॥
 (६४७; ऋ. ४।२।१)

‘(यः अमृतः) जो अमर (क्रतावा) सत्य धर्मसे युक्त, (अरतिः) गतिमान् अग्निदेव है, वह (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (निधायि) रखा है। यह (होता) दाता (यजिष्ठः) पूज्य (महा) अपने महत्त्वसे (शुच्यै) प्रकाश करनेके लिये रखा है। तथा (हव्यैः) अक्षोंसे (मनुषः) मनुष्यको (ईरभ्यै) प्रेरणा अर्थात् उन्नति करने के लिये रखा है।’

इस मंत्रमें यह आत्माग्नि किस प्रयोजन के लिये यहां इस शरीरमें रखा है, उसका वर्णन है। श्री सायणाचार्य इस मंत्रपर निम्न प्रकार भाष्य करते हैं।

मर्त्येषु मनुष्यसम्बन्धिषु वागादीन्द्रियेषु निहितः।
 अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत् इति श्रुतेः।

(सा० भाष्य०, ऋ० ४।२।१)

‘मर्त्यों में अर्थात् मनुष्यसंबन्धी वाग् आदि इन्द्रियोंमें रखा है। क्योंकि अग्नि वाक् बनकर मुखमें प्रविष्ट हुआ, ऐसा श्रुतिवचन है। (तै. ब्रा. ३।९।१७)। यह आत्माग्नि मनुष्योंमें रहकर (शुच्यै) उनमें तेज उत्पन्न करता है, तथा (ईरभ्यै) उन्नतिकी ओर प्रेरणा करता है। ये दो कार्य इसके इस शरीरमें हैं। मर्त्य प्राणियोंमें अमर आत्माग्निका यह कार्य हरएक को देखनेयोग्य है। अपने अंदर इस प्रकार की दिव्य और अमर आत्मशक्ति है और वह हमको उन्नतिकी ओर प्रेरणा कर रही है, यह विश्वास उत्पन्न होना चाहिये। वैदिक धर्मका यही उद्देश्य है। अपने नित्य जपके गायत्री मंत्रमें (धियो यो नः प्रचोदयात्। ऋ. ३।६२।१०) ‘जो हमारी इन्द्रियोंको प्रेरणा

करता है, ” उसका हम ध्यान करते हैं, ऐसा जो कहा है, उसका भी यहां विचार करना चाहिये । क्योंकि दोनों में उन्नतिकी प्रेरणा समानही है । अस्तु । इस प्रकार प्रेरक आत्माग्नि मत्स्यमें है और वह अमर है, यह बात उक्त मंत्रोंद्वारा सिद्ध हुई । अब अन्य बातका विचार करेंगे । वेदमें देवों के साथ अग्नि आता है, अथवा जाता है, इस आशयके वर्णन अनेक स्थानोंमें हैं । इनमेंसे कुछ मंत्र इससे पूर्व दिये गये हैं और कुछ आगे दिये जायेंगे । यहां उक्त आशय के ही परंतु वही आशय अन्य शब्दोंद्वारा जिनमें बताया है, ऐसे मंत्र पहिले दिये जाते हैं । उनका विचार होनेके पश्चात् देवोंका संबंध अग्निके साथ देखेंगे—

(३३) अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।

जिस समय अग्निका स्वरूप निश्चय करना होता है, उस समय ‘ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि है, ’ यह वेदका वर्णन सब से पहले देखना चाहिये । क्योंकि कि ऐसे मंत्रोंमें “ अग्नि ” शब्द विशेष भावसे प्रयुक्त होता है । देखिये—

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः ।

चनो धाः सहसो यहो ॥ (३७; ऋ० १।२६।१०)

‘ हे (सहसः यहो) बल के सरक्षक ! हे अग्ने ! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियोंके साथ इस यज्ञमें आ और इस वचन को सुनो । तथा हमको (चनः) भक्ष दो । ’ इस मन्त्रका कथन स्पष्ट है कि, यह अग्नि एक यज्ञमें अपने साथ सब अग्नियोंको लाता है । अब पता लगाना चाहिए कि, यह एक अग्नि कौन है और उसके साथ आनेवाले अनेक अग्नि कौन हैं । इसका पता लगानेके लिए निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ।

यज्ञेषु ये उ चावयः ॥ (५३०; ऋ० ३।२४।४)

‘ हे अग्ने ! (विश्वेभिः अग्निभिः देवेभिः) सब अग्निदेवों के साथ तू (गिरः महय) वाणीको सुपूजित करो, तथा जो (चावय) यज्ञमें पूजक होते हैं, उनको भी उन्नत करो । ’

इस मन्त्रमें (अग्निभिः देवेभिः) अग्नि और देव ये शब्द एकही पदार्थके द्योतक हैं । तात्पर्य, किसी स्थानपर ‘ देव ’ शब्द प्रयुक्त हुआ अथवा किसी स्थानपर ‘ अग्नि ’ शब्द का उपयोग हुआ, तोभी उन दोनोंसे एकही वक्तव्य

सिद्ध होता है । अर्थात् “ हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ ” तथा “ हे अग्ने ! तू अग्नियोंके साथ आ ” इसका भाव एकही है । “ देव ” शब्दका भाव अध्यात्ममें “ इंद्रिय ” है, यह बात पहिले निश्चित की गई है, वही भाव ‘ अग्नि ’ शब्दमें है, यह यहां निश्चित हो रहा है । इस विषयमें भगवद्गीताका प्रमाण देखिए—

शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥

(भ० गी० ४।२६)

‘ शब्दादि विषयोंका इन्द्रियाग्नियों में हवन करते हैं । ’ इस श्लोकमें इन्द्रियरूप अग्नि अनेक हैं, यह स्पष्ट है । प्रत्येक इन्द्रियमें एक एक अग्निकुंड है और वहां उस उस विषयका हवन हो रहा है । आंखके स्थानीय अग्निमें रूप का हवन होता है, कर्णस्थानीय अग्निमें शब्द का हवन, इसी प्रकार अन्यान्य इन्द्रियाग्नियोंमें अन्यान्य विषयों का हवन हो रहा है । और जिसका हवन होता है, उसको वह अग्नि महान् आत्माग्नि तक पहुंचाता है । यह केवल आलंकारिक वर्णन नहीं है, परन्तु इसका अनुभव भी पाठक कर सकते हैं । इन्द्रियस्थानीय सपूर्ण अग्नि यदि नियत रीतिसे योग्य आहुतियां डालकर सुपूजित किये गये, तो वे इस शरीरके अभिष्टाता मुख्य आत्माको इष्ट उन्नतितक पहुंचाते हैं, परन्तु यदि कोई एक इंद्रियाग्नि हृदसे अधिक बढ़ गया, तो सबको जलाकर सबका नाश करता है । फिर सब इन्द्रियाग्नि भडकने लगे, तो क्या अवस्था होगी, इसका विचार कल्पनासेही पाठक कर सकते हैं !!! इस अवस्थाको देखनेसे प्रत्येक इंद्रियमें अग्नि है, यह बात सिद्ध होती है, अर्थात् यहां जितनी इंद्रियां हैं, उतनेही अग्नि हैं । इसलिए “ हे अग्ने ! तू सब अग्निदेवोंके साथ सुपूजित हो । ” इस वाक्यका तात्पर्य, “ हे आत्मन् ! तू सब इंद्रिय शक्तियोंके साथ पूज्य बनो ” यही है । जहाँ ‘ आत्माग्नि ’ जाता है, वहाँ सब इतर ‘ इंद्रियाग्नि ’ जाते हैं, यह सब स्वाभाविक ही है । शरीरस्थानीय इन्द्रियाग्नियोंके विषयमें यह विचार हुआ । इनके अतिरिक्त भी और बहुतसे अग्नि यहां रहते हैं, उनका विचार निम्न लिखित उपनिषद्वाक्य में देखिए—

शरीरमिति कस्मात् । अग्नयो ह्यत्र श्रियन्ते, ज्ञानाग्निर्दर्शनाग्निः कोष्ठाग्निरिति । तत्र कोष्ठा-

अग्निर्माशितपीतलेह्यचोष्यं पचति । दर्शनाग्नी
रूपाणां दर्शनं करोति । ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च
कमे विन्दति । त्रीणि स्थानानि भवन्ति, मुखे
आहवनीय, उदरे गार्हपत्यो, हृदि दक्षिणाग्निः ।
आत्मा यजमानो, मनो ब्रह्मा, लोभादयः पशवो,
धृतिर्दीक्षा संतोषश्च, बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञ-
पात्राणि, हवीषि कर्मेन्द्रियाणि, शिरः कपालं,
केशा दर्भाः, मुख्यमन्तर्वेदिः ॥ (गर्भोपनिषद् ५)

‘ इस को शरीर क्यों कहते हैं ? क्योंकि यहां अग्नि
आश्रय लेते हैं, ज्ञानाग्नि, दर्शनाग्नि और कोष्ठाग्नि । उस
में कोष्ठाग्नि अन्न का पचन करता है । दर्शनाग्नि रूपों को
देखता है । ज्ञानाग्नि शुभाशुभ कर्मोंको प्राप्त करता है ।
अग्नियों के तीन स्थान होते हैं, मुख में आहवनीयाग्नि,
उदर में गार्हपत्याग्नि और हृदय में दक्षिणाग्नि है ।
इस यज्ञ में आत्मा यजमान है, मन ब्रह्मा, लोभादि पशु,
धृति दीक्षा, ज्ञानेन्द्रियां यज्ञपात्र है, कर्मेन्द्रियां हविर्द्रव्य
हैं, मिर कपाल है, केश दर्भ है और मुख अन्तर्वेदि है । ’
इस प्रकार यह यज्ञ चल रहा है । यही शतसावसरिक
महासत्र है । यहां यज्ञपुरुष प्रत्यक्ष आत्मा है । जो इस यज्ञ
को अपने अन्दर देखेगा, उस को ही एक अग्निकी तथा
उस के साथवाले अनेक अग्नियों की कल्पना ठीक प्रकार
हो सकती है और उसी को संदेहरहित ज्ञान होना सम्भव
है । इस प्रकार ये अनेक अग्नि यहां इस देहरूपी
यज्ञशाला में प्रत्यक्ष हैं और इसी का नक्शा बाहिर की
यज्ञशाला में किया जाता है । बाह्य यज्ञ जो हवनकुंडों में
किया जाता है, वह इसलिये ही है कि, उस नक्शे को
देख कर इस असली यज्ञ का पता लगे । परन्तु शोक की
बात इतनी ही है कि, यह ‘ नक्शा ’ ही अधिक प्रिय हो
गया है और वास्तविक यज्ञ की ओर कोई देखता ही नहीं
है ॥ वेद का अर्थ जानने की इच्छा करनेवालों को तो
यह आध्यात्मिक, यज्ञ अवश्यमेव ध्यानपूर्वक समझना
चाहिये । अन्यथा वेदमंत्र का अर्थ समझना ही अशक्य है ।
‘ अनेक अग्नियों के साथ एक अग्नि आता है ’
यह वेदमंत्र का कथन पूर्वोक्त रूपक का सूचक है, इस
विषय में अब सदेह नहीं हो सकता । अब निम्न लिखित
मंत्र देखिये—

तमु द्युमः पूर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष
इधानः । स्तोमं यमस्मै ममतेष शूषं घृतं न
शुचि मतय पवन्ते ॥ (१९४; ऋ. ६-१०-२)

‘ हे (द्युमः) तेजस्वी (पुरु+अनीक) बहुसेनायुक्त,
बहुबलयुक्त अग्ने ! (अग्निभि) अग्नियों के साथ प्रज-
लित होनेवाला तू (मनुषः) मनुष्य के उस स्तुति का
श्रवण कर । (यं स्तोमं) जिस स्तोत्र को, (शुचि शूषं घृतं
न) शुद्ध सुखकर घी के समान, (मतयः) बुद्धियां
पुनीत करती है । ’

इस मंत्र में एक अग्नि अनेक अग्नियों के साथ प्रदीप्त
हो रहा है, यही वर्णन है । इस का भाव पूर्वोक्त स्पर्शीकरण
के साथ विशेष खुल सकता है । एक आत्माग्नि अनेक
इन्द्रियों के साथ यहां इस देह में प्रदीप्त हो रहा है । यह
मुख्य आत्माग्नि (पुरु अनीक) अनेक बलों से युक्त है,
अनेक शक्तियां इस में हैं, तथा अनेक सेनासमूह भी इस
के साथ रहते हैं । प्रत्येक इन्द्रियस्थान में सैनिकों का एक
एक गण है और सब गणों का यही एक अध्यक्ष ‘ गणपति ’
है । गणेश को सैनिकों के गणों का स्वामी कहते ही हैं ।
शरीरके प्रत्येक इन्द्रिय में सूक्ष्म कीटाणुओं का एक एक गण
रहता है, वहां प्रत्येक गण का एक अधिष्ठाता रहता है ।
और संपूर्ण गणों का यह मुख्याधिष्ठाता होता है । इसलिये
इस को (पूर्वणीक=पुरु-अनीक) बहु सेना से युक्त कहते
हैं । प्रत्येक गण का अधिष्ठाता एक अग्नि और सब गणों
के अधिष्ठातारूप अनेक अग्नियों का मुख्याधिष्ठाता यह
महान् अग्नि है । यही गणराज होता है । इस गणराज-
संस्था को अपने शरीर में ही देखना चाहिये । यहां इस
का अनुभव होने के पश्चात् राष्ट्र में ‘ गणराज-संस्था ’
किस प्रकार होती है, इस का ज्ञान होना सम्भव है । इस
लिये पाठक इस संस्थाको अपने अन्दर देखें और अनुभव
करें । तथा अपने समाज में इसी गणराज-संस्था को
जीवित कर के अपना राज्ययन्त्र उत्तम सजीव करने का
यत्न करें । अस्तु । अब इन अग्नियों के विषय में एक
वर्णन देखिये—

(३४) अग्नियोंमें अग्नि ।

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यं ।

ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यंत्यानुषगिषं
स्तोतृभ्य आभर ॥ (८०६. ऋ. ५-६-६)

‘ (अन्नयः) ये अग्नि (अग्निषु) अग्नियों में (विश्वं वार्यं) सब शक्ति का (प्रो पुष्यति) पोषण करते हैं । (ते हिन्विरे) वे संतुष्टता करते हैं, (ते इन्विरे) वे व्यापते हैं, (ते इषण्यन्ति) वे अन्न की इच्छा करते हैं । इसलिये स्तोताओं का क्रमशः पोषण करो । ’

इस मंत्रमें चार विधान हैं, जो अग्नि का वास्तविक स्वरूप बता रहे हैं— (१) (विश्वं वार्यं पुष्यति) सब निवारक शक्तिको बढ़ाते हैं । शरीर में एक निवारक शक्ति है, जो रोगादिकों का प्रतिबन्ध करती है, अपमृत्यु का निवारण करती है । उस का पोषण यह अग्नि कर रहा है । (२) (हिन्विरे) संतोष करते हैं । संतोष, खुशी, आनन्द दे रहे हैं । पूर्वोक्त अग्नि अपने अन्दर विविध प्रकार के हवन स्वीकार कर के देवताओं की संतुष्टता कर रहे हैं । यह भाव अपने अन्दर पूर्वोक्त स्मृतीकरण से विशद हो सकता है । (३) (इन्विरे) व्यापते हैं । अपनी इन्द्रियशक्तियों से व्यापक होते हैं । देखिये, अपना ही दर्शनाग्नि जो आंख में है, वह जगत् में सूर्यचंद्रादि कों तक फैलता है, इसी प्रकार कर्णस्थानीय श्रवणाग्नि दश दिशाओं में फैल रहा है । इसी प्रकार अपनी शक्तियां फैल रही हैं । (४) (इषण्यन्ति) अन्न की इच्छा करते हैं । ये इन्द्रियाग्नि अपने अपने भोग्य अन्न को प्रतिदिन चाहते हैं । अपना अपना अन्न मिल जाने से ही वे शक्तियों को पुष्ट करते हैं, संतोष देते हैं, तथा व्यापते हैं और अन्न न मिलने पर वे शक्तिहीन होते हैं, संतोष नहीं देते और अपनी शक्ति को फैला भी नहीं सकते ।

सूक्ष्म दृष्टि से यदि पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, तो उन के ध्यान में स्पष्ट रीति से आ सकता है कि, इस मंत्र में कहे हुए अग्नि ‘ इन्द्रियाग्नि ’ ही मुख्यतया हैं । क्योंकि इन में ही मंत्रोक्त बातों का अनुभव हो सकता है । अन्यत्र लक्षणा से भी अनुभव आना अशक्य है । इसलिये ये अग्नि मुख्यतः अपने शरीर की शक्तियां ही हैं और उनका सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये ही बाहर के वज्र में विविध अग्नियों की योजना की गई है । यही बात निम्न लिखित मंत्र में और स्पष्ट हुई है । देखिये—

(३५) देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वाग्निपु
प्रवोचः । मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमाच्चि-
देवस्य सूनो सहस्रो नशन्त (११२१; ऋ. ७-१-२२)
‘ हे अग्ने ! (न सचा) हमारा सहायक तू है, इस-
लिये इन (देवेद्धेष्) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हुए अग्नियों
में (दुर्भृतये) कृशता के लिये (मा प्रवोचः) न कहो ।
तथा हे (सहस्र. सूनो) बलपुत्र ! (ते देवस्य दुर्मतय)
तुझ देव की दुर्बुद्धियां (भृमाच्चित्) भ्रम से भी
हमारा नाश न करे । ’

इस में मुख्य अग्नि की प्रार्थना की गई है कि, वह मुख्यग्नि गौण अग्निधों में कृशता के शब्द न बोले और भ्रम से भी दुष्ट भाव न धारण करे । मुख्यग्नि आत्माग्नि है और गौणाग्नि इन्द्रियाग्नि ही हैं । आत्माग्नि की प्रेरणा इन्द्रियाग्नियों में होती है और यहां का सब कार्य चलता है । यह आत्माग्नि गुप्त शब्दोंद्वारा इन्द्रियाग्नियों में प्रेरणा करता है । इस की यह प्रेरणा (दुर्भृतये) कृशता के लिये न हो, परन्तु (सुभृति) पुष्टि के लिये होवे । निम भाव की धारणा होती है, वैसी ही यहां की अवस्था बन जाती है । ‘ मैं प्रतिदिन उन्नत, पुष्ट और नीरोग हो रहा हूं । ’ ऐसी भावना धरने से उन्नति, पुष्टि और नीरोगता सिद्ध होती है । तथा इस के विपरीत भाव धारण करने से विपरीत परिणाम होता है । इसलिये भ्रम में भी दुष्ट भावना मन में धारण नहीं करनी चाहिये । क्योंकि यदि दुष्ट भावना का धारण हुआ, तो निःसंदेह नाश होगा । इतनी प्रबल शक्ति भावना मैं है । यह मंत्र मानसशास्त्र के एक बड़े भारी सिद्धांत का प्रकाश कर रहा है । आशा है कि, पाठक इस का विचार कर के अपना लाभ करने का यत्न करेंगे । निश्चय शुद्ध भावना की स्थिरता करने से निश्चय लाभ होगा, यह अटल सिद्धांत है ।

इस मंत्र में (देवेद्धः अग्निः) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये अग्नियों का उल्लेख है । यहां कौनसे अग्नि, देवों के प्रयत्न से प्रदीप्त हुए हैं ? इस का पता लगाना आवश्यक है । उपनिषदों में कहा है कि— (१) सूर्य भगवान् नेत्रस्थान में आकर रहे हैं और दर्शनाग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं । (२) आश्विनी देव नासिकास्थान में प्राणाग्नि

को प्रदीप्त कर रहे हैं । (३) अग्नि वाक् स्थान में बैठ कर शब्दाग्निको जला रहा है । (४) शिस्नस्थान में जल-देवताएं बैठी हैं और वीर्याग्नि का प्रदीपन कर रही हैं । (५) नाभिस्थान में सृष्ट्युदेव आकर अपनाग्नि को उद्दीपित कर रहा है, इसी प्रकार अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इंद्रिय-स्थानों में बैठ कर अपने अपने हवनकुंड में अपने अपने अग्नि प्रदीप्त कर रही हैं । ये सब अग्नि (देव+इन्द्र) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हैं । पाठक इतना अनुभव अपने देह में कर सकते हैं ।

देवी शक्तियोंद्वारा इंद्रियाग्नियों का प्रज्वलन सर्वत्र उपनिषदादि ग्रंथों में वर्णन किया है । इसलिये वही यहां लेना उचित है और वह लेने से ही मंत्रका गर्भिताशय स्पष्ट हो जाता है । यही भाव निम्न लिखित मंत्र में देखिये-

दशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभि
रिधानः । रायः सूनो सहसो वावसाना अति
स्वसेम वृजनं नांहः ॥ (१००५; ऋ ६-११-६)

‘ हे (पुरु-अनीक) बहुबलयुक्त (होतः) दाता अग्ने ! (देवेभिः अग्निभिः) अग्निदेवों के साथ (इधानः) प्रदीप्त होता हुआ, (न) हम को (रायः) धन (दशस्य) दो । हे (सहसः सूनो) बल-पुत्र ! (वावसाना) वसने की इच्छा करनेवाले हम सब (वृजनं न) शत्रु के समान (नांहः) पाप का भी (अतिस्वसेम) अतिक्रमण कर के परे चले जायेंगे ।’

हममें भी अनेक अग्निदेवों के साथ प्रदीप्त होनेवाले एक मुख्य अग्निका वर्णन है और इस में प्रायः वे ही शब्द हैं, कि जो पहिले आ चुके हैं, इसलिये इनका अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है । इसी प्रकार निम्न लिखित मंत्र में भी यही वर्णन है-

स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्नेभि-
रिधानः । वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मन्त्रे
शतहिमा सुवीराः ॥ (१०११; ऋ ६-१२-६)

‘ हे (अर्वन्) गतिशील अग्ने ! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियों के साथ प्रदीप्त होता हुआ (निदायाः) निंदा से (पाहि) हमारा रक्षण कर, (रायः वेषि) धन दो, (दुच्छुना वियासि) दुःखकारकोंको विविध प्रकारसे भगाओ, जिससे हम (शत-हिमाः) सौ वर्ष (सु-वीरा)

उत्तम वीरोंसे युक्त होकर (मन्त्रे) आनंदित हों ।’

सब इंद्रियाग्नियोंसे युक्त होता हुआ आत्माग्नि ऐसी प्रेरणा करे कि, हम सब निंदासे बचें, धन प्राप्त करें, विपरीत भावनाओंको दूर भगा दे । ऐसा करनेसे हम सौ वर्ष आनंद से व्यतीत करेंगे । इस का तात्पर्य यह है कि, यदि हम घृणित कर्म करेंगे, धन नहीं प्राप्त करेंगे, विपरीत भावना-रूपी शत्रुओंको दूर न भगायेंगे, तो घृणित कर्मों के कारण हमारा अतःकरण मलिन होगा, धनहीनताके कारण संसार-यात्रा कष्टप्रद होगी, विरुद्ध भावनाओंके कारण क्लेश होंगे और इन सबका यही परिणाम होगा कि, हमारी आयु क्षीण हो जायगी । इसलिए मंत्रोक्त उपदेशके अनुसार आचरण करके दीर्घायु बनना हर एक वैदिक धर्मीको उचित है । अस्तु । अब उक्त विषयकाही और एक मन्त्र देखिए-

(३६) दूत अग्नि ।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूत-
मध्वरे कृणुध्वं ॥ यो मर्त्येषु निध्वर्विर्कृतावा
तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ (११२४; ऋ ० ७।३।१)

‘ (अग्निभिः) अग्नियोंके साथ रहनेवाले (यजिष्ठं देव) पूज्य अग्निदेव को (अध्वरे) यज्ञमें दूत कीजिए । जो अग्नि (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (नि-ध्रुविः) ध्रुव, (ऋतावा) सत्यवान्, (तपुर्मूर्धा) तपस्वी, (घृत्+अन्नः) घीयुक्त अन्न खानेवाला और (पावकः) शुद्धिकर्ता है ।’

इंद्रियोंके साथ रहनेवाला आत्माग्नि पूज्य, अमर, स्थिर, दृढ़, सत्य, तपस्वी और शुद्ध है । इसीको यज्ञ में दूत करना चाहिए । दूत वह होता है कि जो नियत कार्यको करता है, जिस प्रकार कहा जाय, वैसा ही कर लेता है । क्या यह आत्माग्नि हमारा दूत है ? आध्यात्मिक दृष्टिसे विचार करनेपर पता लग जायगा कि, विशेष अवस्थामें यह दूत भी बनता ही है । योगसाधन से जिनका मन शांत और स्थिर हुआ है, वे योगी जो भाव मनमें लाते हैं, वैसा ही बन जाता है । यह कौन करता है ? विचार करनेपर मानना पड़ता है कि, यह आत्माही करता है । मनमें जो इच्छा होगी, वह बन जायगी । अर्थात् मनकी इच्छाके अनुसार यह दूत बनकर कार्य करता है । इस अर्थमें यह दूत है । पौराणिक मतसे श्रीकृष्ण भगवान् परमात्माका पूर्णावतार होता हुआ भी साधक जीव अर्जुन के रथपर

साराथी अर्थात् दूत ही बना था, उसके घोड़े साफ किया करता था, महायज्ञमें भोजनके बाद उच्छिष्ट निकालनेका काम करता था और पांडवोंकी इच्छाके अनुसार सब कार्य करता था । इस कथामें परमात्मा, जीवात्माका दौत्य करता है । वास्तविक यह अलंकार है । और वही अलंकार अग्नि के मिश्रसे यहाँ इस इस मन्त्रमें बताया है । योगबलसे साधक जीवको इतना अधिकार प्राप्त हो सकता है कि, वह जिसकी इच्छा करेगा, वह उसको परमात्मा देगा । इच्छा करनेवाला योगी और सिद्ध करनेवाला आत्मा यहाँ होता है । इसीलिए इसको दूत कहा है । इस दूतकर्म के विषयमें वेदमें सैकड़ों प्रकारके आलंकारिक वर्णन हैं, उनका स्पष्टीकरण स्थानस्थानमें किया जायगा । उनमेंसे एक भाव यहाँ बताया है । इसी विषयमें दूसरा अलंकार देखिये—

(३७) होता अग्नि ।

अग्न आयाह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।

आ त्वामनक्तु हविष्मती यजिष्ठं बर्हिंरासदे ॥

(१३८९, ऋ. ८-६०-१)

‘ हे अग्ने ! तू अग्नियों के साथ आ । तुझे हम हवनकर्ता ऋत्विज् स्वीकार करते हैं । (हविष्मती बर्हिः) अन्न-युक्त वेदी तुझ पूज्य को प्राप्त करके सुपूजित करे । ’

पूर्वमंत्र में इस आत्माग्नि को दूत स्वीकार किया था, अब इस मंत्र में ऋत्विज् हवनकर्ता स्वीकार करते हैं । ‘ होता ’ शब्द का अर्थ दाता, आदाता, आह्वानकर्ता और हवनकर्ता है । यह आत्माग्नि इंद्रियाग्नियों, प्राणा-ग्नियों तथा जाठरादि अग्नियों में विविध प्रकार के हवन कर रहा है । इस प्रत्यक्ष बात का ही यह वर्णन है, इस-लिये अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है । अब और एक अलंकार देखिये—

(३८) अग्निरूप होना ।

स्वग्नयो घो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जा

पते ॥ सुवीरस्वमस्मयुः । (१२३०; ऋ. ८/११/७)

‘ हे (सहस सूनो) बल पुत्र ! हे (ऊर्जा पते) अन्न-पते ! आप के अग्नियों के साथ (अग्नयः) हम अग्नि (स्याम) बनेंगे । तू (सुवीरः) उत्तम वीर और (अस्मयुः) हम सब को चाहनेवाला हो । ’

इस मंत्र में कहा है कि, हम सब अग्निरूप बनेंगे । आत्मा मुख्याग्नि है और हम उस के साथी अन्य अग्नि बनेंगे । अर्थात् उन के समान उन के गुणधर्मों से युक्त और उन के मित्र बनकर रहेंगे । तथा वह भी हम को चाहनेवाला होवे, अर्थात् हमारे द्वारा कोई ऐसा आचरण न हो कि, जिस से वह आत्मशक्ति हम से विमुख हो । हम आत्मशक्ति से विमुख न हों और वह आत्मा हम से विमुख न हो ।

माहं ब्रह्म निराकुर्यौ

मा मा ब्रह्म निराकरोत् ॥ (उप. शांति. केन. उ.)

‘ मैं ब्रह्म का निराकरण न करूँ, ब्रह्म मेरा निराकरण न करे । ’ यह केनोपनिषद् की शांति का वाक्य यही भाव बता रहा है, तथा—

(वयं) अग्नयः स्याम ।

(अग्निः) अस्मयुः (भवतु) ॥ (ऋ. ८-१९-७)

‘ हम अग्नि बनें, अग्नि हमारा भला चाहनेवाला बने । ’ यह भाव शांतिमंत्र के समान ही है । यहाँ शंका हो सकती है कि, एक अग्नि का दूसरे अनेक अग्नियों के साथ कौनसा सम्बन्ध है ? इस का विचार करने के लिये (१) एक परमात्मा का अनेक जीवात्माओं के साथ सम्बन्ध, (२) एक महात्मा का दूसरे अल्प आत्माओं के साथ सम्बन्ध, (३) एक जीवका अन्य जीवों के साथ सम्बन्ध, (४) एक आत्मा का अन्य इंद्रियों से सम्बन्ध, (५) एक अवयव का अन्य अवयवों के साथ सम्बन्ध देखना चाहिये । विचार करने पर पता लगेगा कि, यह एक विलक्षण सम्बन्ध है और उस सम्बन्ध के कारण ही यह विश्व चल रहा है । एक के द्वारा दूसरे के जीवन में परिणाम होता है । इस का भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

(३९) एक अग्नि से दूसरे अग्नि का जलना ।

अग्निनाऽग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।

हव्यवाड् जुहाव्यः ॥ (१५; ऋ. १-१२-६)

‘ (अग्निना अग्निः) एक अग्नि से दूसरा अग्नि (संमिध्यते) प्रदीप्त किया जाता है । यह अग्नि कवि, गृह-पति (युवा) जवान्, (हव्य-वाट्) अन्नवाहक और (जुहु+आव्यः) चमस से घी मुख में डालनेवाला है । ’

इस मंत्र में कवि, गृहपति, युवा ये शब्द हैं । ये शब्द

मानवी अग्नि के ही वाचक हैं । जो गृहस्थी युवा कवि हैं, वह भी समाज में अग्निवत् ही है । वह अन्न से पुष्ट होता है और चमस से घी पीता है, इसलिये हृष्टपुष्ट रहता है । पहला मनुष्य अग्नि था, यह बात मानवी अग्नि के विषय में इस लेख के प्रारम्भ में ही कही है । उस बात की स्पष्टता पुनः यह मंत्र कर रहा है । अध्यात्म-दृष्टि से जीवात्मा का घर यह शरीर है । इस कारण आत्मा गृहपति है, इस की गृहपत्नी बुद्धि है । यह युवा इसलिये है कि, यह न शरीर के साथ जन्मता और न मरता है, शरीर के बाल्य और वार्धक्य ये गुण इस को बाधित नहीं करते, इसलिये यह सदा युवा ही कहलाता है । यही बुद्धि, मन और प्राणद्वारा शब्द की प्रेरणा करता है, इस कारण यह कवि है । यह अन्नभक्षक और घी पीनेवाला है । शरीर के साथ रहने से इस को खानपान करना पड़ता है । यद्यपि शरीर ही खानपान करता है, तथापि इस के होने तक शरीर खातापीता है, इसलिये ही इस को (अत्ता) भक्षक कहते हैं । तात्पर्य व्यक्ति में आत्मा और समाज में गृहस्थी कवि अग्निरूप है ।

एक अग्नि दूसरे अग्नि को प्रदीप्त करता है, यह इस मंत्र का कथन है । इस की सत्यता देखिये— राष्ट्र में अध्यापक शिष्यों को ज्ञान देते हैं । विद्वान् अध्यापक युवा शिष्यों को ज्ञान देते हैं । इसमें ज्ञानाग्नि का प्रज्वलन है । अध्यापक अपने ज्ञानाग्नि से शिष्य के अन्दर ज्ञानाग्नि प्रदीप्त कर रहा है । सब अध्ययन का क्रम इसी प्रकार चलता है । एक कवि अपने काव्य से दूसरों में काव्यस्फूर्ति उत्पन्न करता है । प्राचीन ज्ञानी अपने ग्रंथों और उपदेशों-द्वारा नवीनों में स्फूर्ति दे रहे हैं । यही भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् सता ।

सखा सख्या समिध्यसे ॥ (१२३३; ऋ. ८.४३-१४)

‘ हे अग्ने ! तू (अग्निः अग्निना) अग्नि अग्नि से (विप्रः विप्रेण) ज्ञानी ज्ञानी से, (सन् सता) साधु साधु से, (सखा सख्या) मित्र मित्र से प्रदीप्त होता है । ’

इस मंत्र के निम्न शब्द देखनेयोग्य हैं—

अग्निः अग्निना (समिध्यते) । ऋ० १।१२।६
हे अग्ने ! त्वं अग्निना (समिध्यसे) । ऋ० ८।४२।१४

विप्रः विप्रेण (समिध्यते) । ऋ० १।१२।६
सन् सता ,, ,,
सखा सख्या ,, ,,
(शिष्यः अध्यापकेन) ,, ,,

पहला कथन अग्निविषयक होनेसे देवताविषयक है । दूसरा ज्ञानीके विषयमें है, तीसरा सज्जनों के संबंध में है और चौथा साधारण मित्रताके संबंधमें है । इसके साथ हम “ शिष्य अध्यापकके द्वारा उत्तेजित होता है ” यह वाक्य जोड़ सकते हैं । मित्रता करनेसे ही मैत्री बढ़ती है, साधुके साथ रहनेसे साधुता प्राप्त होती है, विद्वान् की संगतिसे ज्ञान बढ़ता है, तेजस्वीके साथ रहनेसे तेजस्विता बढ़ती है, गुरुके साथ रहनेसे शिष्यको विद्या प्राप्त होती है, यही तात्पर्य है कि, अग्निके द्वारा दूसरे अग्निका प्रज्वलन होता है । अग्निसंकेतसे कितनी बातें लेनी होती हैं, इसका यहां स्पष्टीकरण हुआ है । यही वैदिक “ अग्निविद्या ” है । इस रीतिसे मंत्रोंका भाव अन्य वेदमंत्रों के साथ देखने से वैदिक आशयका ठीक ठीक रीतिसे पता लग जाता है और मंत्रके भावार्थके विषयमें किसी प्रकारका संदेह नहीं रहता । अस्तु ।

इस प्रकार यहां एक अग्नि अनेक अग्नियोंके साथ किस रूपमें रहता है, यह बात देखी है । आत्माग्नि इंद्रियाग्नियों के साथ रहता है, परमात्माग्नि सूर्यादि तेजोंके साथ रहता है, ज्ञानी ज्ञानियोंके साथ प्रकाशता है, कवि कवियोंके साथ रहता है, तेजस्वी तेजस्वियोंके साथ शोभता है, साधु साधुओंके साथ रहता है, विप्र विप्रोंके साथ रहता है, मित्र मित्रोंके साथ रहते हैं, गुरु शिष्योंके साथ प्रकाशते हैं, तात्पर्य एक अग्नि दूसरे अनेक अग्नियोंके साथ ही रहता है, वह कदापि अपने विरोधियोंके साथ नहीं रह सकता । समानधर्मियोंके साथ रहनेसे शोभा बढ़ती है और विरोधियोंके साथ रहनेसे शक्ति क्षीण होती है । इत्यादि सहजों उपदेश यहां विचारी पाठकों को प्राप्त हो सकते हैं । अस्तु । यहां इस विषयको समाप्त करके अब अनेक देवों द्वारा स्थापित एक अग्निका मनोरंजन विषय देखेंगे—

(४०) देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।

इस समयतक देवोंके साथ रहनेवाला, अग्नियोंके साथ आनेजानेवाला, देवोंको बुलानेवाला अग्नि किस भावका

घोतक है, यह देख लिया। अब देवोंद्वारा स्थापित अग्निकी कल्पना देखनी है। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

अग्निदेवासो मानुषीषु विश्वे प्रियं धुः क्षेप्यन्तो
न मित्रं । स दीदयदुशतीरुर्म्या आ दक्षायो
यो दास्वते दम आ ॥ (४१८; ऋ० २।४।३)

‘ (क्षेप्यन्तः देवासः) गतिमान देवोंने (मानुषीषु विश्वे) मानवी प्रजाओंमें प्रिय (अग्नि) अग्निकी (मित्रं न) मित्रके समान (धुः) स्थापना की अथवा धारणा की है। यह (दक्षायः) दक्ष अग्नि अपने दमनमें तथा (उशतीः ऊर्म्याः) स्पृहणीय रात्रियोंमें (दास्वते) दाताके लिए (आ दीदयत्) प्रकाश देता है ।’

‘ देव ’ शब्द का अर्थ बाह्य जगत् में सूर्य, चंद्र आदि देवता है और शरीरमें चक्षुरादि इंद्रियगण है। इस मंत्र में मनुष्य में आत्माग्नि की स्थापना करनेवाली जो देवताएँ हैं, वही शरीरस्थानीय चक्षुरादि इंद्रिय ही हैं। इन इंद्रियों के द्वारा आत्मा शरीर में रखा गया है, किंवा ये इंद्रिय-शक्तियाँ शरीर के अन्दर आत्मा का धारण कर रही हैं। जिस प्रकार सब ओहदेदार राष्ट्र में राजा का धारण करते हैं, उसी प्रकार ये आत्मा के ओहदेहार चक्षुरादि इंद्रियगण शरीर में आत्मा की धारणा कर रहे हैं। यह आत्माग्नि ही सब के लिये प्रिय और हितकारी है और सब का सच्चा मित्र भी है। आत्मा से अधिक प्रिय और अधिक हितकारक मित्र दूसरा कोई भी नहीं है, यह बात पूर्व स्थल में बता दी है। इस की दक्षता इतनी है कि, यह रात्रि के अन्धकार में प्रकाश देकर सब का मार्गदर्शक होता है। धर्मके लक्षणों में ‘ आत्मा की तुष्टि ’ एक लक्षण इसी हेतु से कहा है, देखिये—

भुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्थ च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं ज्ञेयं साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥१२॥

तथा—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥६॥

(मनु. २)

यहां धर्म के लक्षणों में (१) भुति, (२) स्मृति, (३) सदाचार, (४) आत्माकी तुष्टि ये चार लक्षण कहे हैं। धर्म का अंतिम निश्चय अपनी आत्मा की तुष्टि से

होता है, इतना आत्मा का अधिकार है, क्योंकि अन्धकार-पूर्ण रात्रि के अत्यन्त थिकट प्रसंग में यही आत्मा शुद्ध प्रकाश देकर ठीक मार्ग बताता है। सच्चा मित्र कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में कहना पड़ेगा कि, वही सच्चा मित्र है, जो कि कठीण प्रसंग में सहायक होता है। यह लक्षण आत्मा के मित्रत्व की सिद्धि करता है, क्योंकि जहां अन्य बल काम नहीं देते, वहाँ ‘ आत्मिक बल ’ ही सहायता देता है। यह आत्मिक बल संयम में है, यह भाव उक्त मंत्र में ‘ दम ’ शब्दद्वारा व्यक्त किया है। इस प्रकार देवों द्वारा स्थापित आत्माग्नि की कल्पना है। इसी विषय का निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(४१) मानवी प्रजा में अग्नि ।

आधत्यग्निर्मानुषीषु विश्वपां गर्भो मित्र ऋतेन
साधन् । आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो
हव्यो मतीनाम् ॥ (४७२; ऋ- ३-५ ३)

‘ (ऋतेन साधन्) सीधे मार्ग से जाने पर सिद्धि देने-वाला सच्चा मित्र और (अपां गर्भः) कर्मों का केंद्र अग्नि (मानुषीषु विश्वे) मानवी प्रजाओं में (देवैः) देवों द्वारा (अधायि) रखा गया है। यह (हर्यत) स्पृहणीय और (यजतः) पूज्य होता हुआ (सानु) उच्च स्थान में (आ स्थात्) रहता है। यह (वि-प्रः) विशेष ज्ञानी (मतीनां हव्यः) बुद्धियों का हवन करनेवाला (अभूत्) है ।’

आत्माग्नि मानवी देह में उच्च स्थान में निवास करता है, इस बात को यह मंत्र कहता है। मानवी देह में हृदय से लेकर मस्तक तक जो स्थान है, वही उच्च स्थान है। इसमें आत्माग्नि का निवास है। यह सच्चा मित्र है और यही सीधे मार्गसे चलाता है, यही सब कर्मों और संपूर्ण हलचलों का प्रेरक है। जिस प्रकार किरणों का केंद्र सूर्य है, उसी प्रकार कर्मों का केंद्र यही आत्माग्नि है। यह इस शरीरमें सौ वर्ष निवास करके सैंकड़ों कर्म करता है, इसीलिए इसको “ शत-ऋतु ” कहते हैं। इसका स्वभाव-धर्म ही कर्म है, इसीलिए इसको “ ऋतु ” भी कहते हैं। यह आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप होने से ही इसको “ वि-प्र ” कहते हैं, तथा यही बुद्धि का प्रेरक है। इस प्रकार इस मन्त्रका वर्णन आत्माका परियय करा रहा

है, इसका अभिच विचार पाठक करें। इसीके विषयमें अब निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

(४२) जीवन-रसरूप अग्नि ।

अच्छा नो अंगिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः ।
होता यो अस्ति विश्वा यशस्तमः ॥

(१२७९; ऋ० ८।२३।१०)

‘ (नः संयतः यज्ञासः) हमारे नियत यज्ञ (अंगिरस्-तमं) अंगोंके रसोंमें मुख्य अग्निके प्रति (यन्तु) पहुँचें। जो (विश्व) प्रजाओं में (होता) हवनकर्ता और (यशस्-तमः) अत्यंत यशस्वी है । ’

यह मन्त्र अग्निका निश्चित रूप बता रहा है। यह अग्नि “ अंगिरस्-तम ” है। प्रत्येक अग्नमें जो जीवनरस है, उस प्रकारके जीवनरसों में अत्यंत मुख्य जीवन-रस यही है। सब हमारे कर्म इस मुख्य जीवनरस के संवर्धनके लिए ही होने चाहिये। मनुष्यों से ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए कि, जिससे इस मुख्य जीवनरस में कुछ क्षति हो सके। इसीका नाम “ आत्मघातक कर्म ” है। वास्तव में आत्माका घात नहीं हो सकता, परन्तु आत्माके विकास में प्रतिबन्ध जिससे होता है, उस को आत्मघातक कर्म कहते हैं। इसी प्रकार आत्माग्नमें किसी प्रकारकी क्षति भी नहीं होती, तथापि उसके आत्मिक बलके विस्तार में जिनसे न्यूनता हो सकती है, वैसे कर्म नहीं करने चाहिए और ऐसे करने चाहिए कि, जिनसे अंगोंमें मुख्य जीवनरस की समृद्धि हो। मनुष्योंमें यही आत्मा यशका प्रदाता है। इसीलिए जो मनुष्य शांतिसे आत्मिक बलके कार्य करता है, उसीका यश होता है। इस मन्त्रका ‘ अंगिरस्तम ’ शब्द इस अग्निकी मुख्य विभूति आत्माही है, यह भाव स्पष्ट कर रहा है। यह “ जीवनरस ” होनेके कारण इसीसे सबकी पुष्टि होती है, इस विषय में निम्न लिखित मंत्र देखिए—

(४३) देवोंका निवासक अग्नि ।

अग्निर्देवेषु संवसुः स विश्वु यज्ञियास्वा ॥
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति ।
देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥

(१३०६; ऋ० ८।३९।७)

‘ अग्नि देवों में तथा (यज्ञियासु विश्व) पूज्य प्रजाओंमें (संवसुः) उत्तम निवासक है। वह (भूमा इव) भूमिके समान (पुरु विश्वं) सब कुछ पुष्ट करता है, तथा (मुदा) आनंदसे (काव्या) काव्योंको करता है। वही देवों में पूजनीय है। (समे) सब (अन्यके) शत्रु (नभन्ताम्) नष्ट हो जावें । ’

यह मन्त्र अग्निका स्वरूप-विज्ञान होनेके लिए अनेक दृष्टियोंसे उपयोगी है। देवोंके अन्दर रहता हुआ यह अग्नि देवोंका उत्तम प्रकार से निवासक होता है। पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह बात आत्मा-ग्नमें ही विशेष कर घट सकती है, क्योंकि देवों अर्थात् इंद्रियों में रहता हुआ ही आत्मा उन इंद्रियों का निवास उत्तम प्रकार कर रहा है। जिस प्रकार भूमि सब का पोषण कर रही है, उसी प्रकार आत्मा सबका पोषण कर रहा है। कई पाठक यहां शका करेंगे कि, पौष्टिक अन्न से पोषण होता है, आत्माग्न का किस प्रकार पोषक हो सकता है ? इसका उत्तर इतनाही है कि मुर्देमें कितना भी पौष्टिक अन्न रखा जाय, उस अन्नसे मुर्दा पुष्ट नहीं होगा; क्योंकि ‘ सत्त्वा पोषक ’ वहां नहीं है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, आत्मा ही पोषक है और अन्य पौष्टिक अन्नादि सहायक हैं। यह आत्माग्न सबसे प्रमुख है, इसलिए (देवेषु यज्ञियो देवः) देवोंमें पूज्य देव अर्थात् सब इंद्रियोंमें पूज्य आत्माही है, यह मन्त्रका वर्णन सार्थ हो जाता है, इस प्रकार यह वर्णन देवों के निवासक अग्नि का है। पाठक इस मन्त्रमें यह वर्णन देखें और देवोंद्वारा स्थापित अग्नि का वर्णन पूर्व मंत्रोंमें पढ़ें। इन दोनों वर्णनोंका विचार करने से उनको स्पष्ट पता लग जायगा कि यद्यपि ये दोनों वर्णन दो भिन्न दृष्टिकोनोंसे हुए हैं, तथापि एकही पदार्थ के हैं। इंद्रियोंमें रहनेवाला, इंद्रियोंको पुष्टि देनेवाला, इंद्रियोंद्वारा प्रकट होनेवाला एकही आत्मा है। यही भाव विश्वव्यापक परमात्माके विषयमें सत्य है, क्योंकि वह परमात्मा सूर्यादि देवोंमें रहता है, इन देवताओंको पुष्ट करता है और इन देवताओंसे ही प्रकट हो रहा है। व्यापकता का वर्तुल छोटा किया, तो वही वर्णन आत्मा के विषयमें हुआ और व्यापकता का वर्तुल अमर्याद बड़ा किया, तो वही वर्णन परमात्माका हुआ। यह बात यहां स्पष्ट हो जाती है। वेद

की वर्णनशैली की यही अद्भुतता है । पाठक यहां इसका अनुभव करे । अस्तु । इस प्रकारका यह आत्माग्नि मनुष्यों में ही प्रज्वलित होता है, अर्थात् अन्य प्राणिमात्रमें यह वैसा तेजस्वी नहीं होता, जैसा कि मानवी देहमें होता है । इसका कारण स्पष्टही है कि, मानवी योनि ' कर्मयोनि ' है, यहां ही पुरुषार्थ होना संभव है, उस प्रकार अन्य योनियोंमें संभव ही नहीं है । पुरुषार्थके बिना उन्नति होनी अशक्य है । इसीलिए मन्त्र में कहा होता है कि, ' मानवी प्रजामें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है ' और देखिए—

न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरा पितरा
नृचिद्विष्टौ ॥ अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽ-
ग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्व ॥ (६८८; ऋ० ४, ६, ७)

‘ जिस (जनितोः) उत्पादक के (सातुः) तेजको मातापितादि कोई भी (न अवारि) प्रतिबन्ध कर नहीं सकते, इस प्रकारका (मित्रः न) मित्रके समान हितकारी (सुधितः पावकः अग्निः) सुरक्षित शुद्ध अग्नि (मानु-
षीषु विश्व) मानवी प्रजाओंमें (दीदाय) प्रदीप्त होता है । ’

जिस समय यह आत्माग्नि मानवी प्रजाओं में प्रदीप्त होता है, उस समय उस महान् आत्माका तेज फैलता जाता है, कोई उसको प्रतिबन्ध कर नहीं सकते । इतनाही नहीं, परन्तु जो प्रतिबन्ध करनेका यत्न करते हैं, वेही नष्ट-
भ्रष्ट होते हैं, अथवा उनके प्रतिबन्ध के कारण उस महान् आत्माका तेज अधिक विस्तृत होने लगता है । इस बातकी साक्षी इतिहास में सर्वत्र मिलती है । आत्मिक बलकी उग्रता सर्वत्र प्रसिद्ध ही है । यह आत्मा सबका मित्र होने से जिसमें इसका तेज प्रदीप्त होता है, वह बड़ा यशस्वी हो जाता है । इस मन्त्रमें (मानुषीषु विश्व दीदाय) मानवी प्रजाओंमें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है, यह बात स्पष्ट कही है । इसका अर्थ यह है कि, अन्य प्राणियोंमें यह निवास करता है, परन्तु वहां यह विकसित नहीं हो सकता, क्योंकि उन्नतिसाधक योनि मनुष्ययोनि ही है । इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद् में देखिए—

ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्पर्यवे प्राप-
तन्...॥ ता एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि
यस्मिन्प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति ॥ १ ॥ ताभ्यो
गामानयत्, ता अब्रुवन् वै नोऽयमलमिति ॥

ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन् वै नोऽयमल-
मिति ॥ २ ॥ ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन्
सुकृतं बतेति ॥ पुरुषो वाव सुकृतम् ॥ ता
अब्रवीद्यथाऽऽयतनं प्रविशतेति ॥ ३ ॥ (ऐ० उ० २)

‘ वे सब देवताएं इस बड़े समुद्रमें आ पड़ीं । सब देवताएं उससे कहने लगीं कि, हमें स्थान दो कि जहां बैठकर हम अन्न खायेगे । वह देवताओंके सम्मुख गां लाया । देवताओंने कहा कि यह ठीक नहीं है, पश्चात् घोड़ा लाया, उसको देखकर देवताओंने कहा कि यह भी ठीक नहीं है । इसके अनन्तर मनुष्य लाया गया, उसे देखकर देवताएं कहने लगीं कि यह ठीक है, मनुष्य ही ठीक है । ऐसा कह कर सब देवताएं अपने अपने स्थानपर इस मानवी देहमें बैठ गईं । ’

यह विकास-वादका वर्णन स्पष्टतासे कह रहा है कि, मानवी योनि ही उत्कर्षकी योनि है और इसके अगप्रत्य-
गोंमें सपूर्ण देवताएं निवास कर रही हैं, और अपना अपना भोग्य भोग ले रही हैं । इन सब देवताओंका अधिष्ठाता आत्मा है, जिसके साथ देवताएं आती हैं और वह जिस समय इस देहको छोड़कर चला जाता है, उस समय चली जाती है । यह वर्णन ही वेदमन्त्रों में अनेक प्रकार के रूप-
रूपांतरोंसे आया है । अस्तु । तात्पर्य यह है कि यह आत्मा इस मानवी योनिमें ही उत्कर्षको प्राप्त हो सकता है और जिस समय इसका तेज फैलने लगता है, उस समय उसको कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती । यही वर्णन उक्त मन्त्रमें है । अब और एक दृष्टिकोण से देखिए । पूर्वस्थल में एक मन्त्र दिया ही है, जिसमें कहा है कि, यह आत्माग्नि देवों द्वारा प्रकट होता है । यही भाव निम्न लिखित मन्त्र में भिन्न रूपक से वर्णन किया है—

(४४) दस बहिर्ने इसको प्रकट करती हैं ।

द्विर्यं पंच जीजनन्संवसानाः स्वसारो अग्नि
मानुषीषु विश्व ॥ (६८९, ऋ० ४, ६, ८)

‘ इस अग्नि को (द्विः पंच स्वसारः) दो गुणा पांच बहिर्ने मानवी प्रजाओं में (संवसानाः) रहती हुई, (जीजनन्) प्रकट करती हैं । ’

दो गुणा पांच बहिर्ने अर्थात् दस बहिर्ने मानवी शरीर में हैं और ये दस बहिर्ने आत्माग्नि को प्रकट करती हैं ।

पंच ज्ञानेन्द्रियां और पंच कर्मेन्द्रियां इस देह में हैं और उन के द्वारा यह आत्मा प्रकट हो रहा है। अरणियों के घर्पण से जो अग्नि सिद्ध होता है, वह भी दम अंगुलियों से ही घर्पण होता है। इसलिये ये बहिने कहलाती है। ये भाव इस मंत्र में स्पष्ट हैं।

अन्दर आत्मा का अस्तित्व है। यह बात इंद्रियों के द्वारा ही प्रकट हो रही है, यदि इंद्रियां न होतीं, तो अन्दर के मुख्य देव को जानना ही अशक्य होता। विचार कर के पाठक देखेंगे, तो उन को इस बात का पता लग जायगा कि, इंद्रियों के कार्य से ही आत्मा के अस्तित्व का अनुमान होता है। तात्पर्य, इंद्रियों से आत्मा प्रकट होता है। यही भाव देवोंद्वारा प्रकट होनेवाले अग्नि में है। पाठक यहां देखें कि, विभिन्न दृष्टिकोनों के वर्णनोंसे एक ही बात किस प्रकार व्यक्त हो जाती है। और इस मुख्य बात को ही सर्वत्र देखने का यत्न करें। इंद्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिने हैं, इस में भलकार की दृष्टिसे कोई अत्युक्ति ही नहीं है। परन्तु इस में एक विशेष विचार करनेयोग्य श्लेषार्थ भी है। 'स्व-सृ' शब्द का अर्थ 'बहिने' है, परन्तु इस का यौगिक अर्थ (स्व सरति) अपने निज के प्रति जो जाती है, अथवा (स्वस्मात् सरति) अपने निज से जो चलती है, वह 'स्व-सृ' है। अर्थात् जागृति की अवस्थामें जो इंद्रियां आत्मा से शक्ति लेकर बाहर जाती हैं और सुषुप्ति अवस्था में इंद्रियां बाहर से आकर आत्मा के अन्दर लीन हो जाती हैं, वह सब इंद्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिने ही हैं। यह श्लेषार्थ पूर्णतया आत्मा और इंद्रिय-शक्तियों में सगत हो रहा है। इस रीतिसे अनेक दृष्टिकोनों द्वारा ही सद्रस्तु के भिन्न भिन्न भाष्य प्रकट हो रहे हैं। वेद के वर्णन में यह श्लेषार्थ की अपूर्वता पाठक देख सकते हैं। यह अग्नि मनुष्यों के अन्दर ही है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिये—

त्वं होता मद्रतमो नो अधुगंतर्देवो विदथा
मर्त्येषु । (१००१; ऋ० ६।११२)

'हे अग्ने' तू (मर्त्येषु अन्त) मनुष्यों के अन्दर है और (विदथा) इस यज्ञ में हवनकर्ता तू ही है। तथा (मद्रतमः) सुखदायक और (अधुक्) द्रोह न करने वाला देव तू ही एक है।'

अग्नि मनुष्य के अन्दर है, मानवी आयुष्य में जो शत-सांवत्सरिक यज्ञ चलता है, उसका होता अर्थात् याज्ञक यही आत्माग्नि है। यह बात अब अधिक स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वेद ही स्वयं कह रहा है कि, यह आत्माग्नि मनुष्य के अन्दर रहता है और द्रोह न करना हुआ सबको सुख देता है। यही सबको पूज्य और प्राप्त्य है, क्योंकि यही सबसे मुख्य है। कितनी स्पष्टता से वेद यह कह रहा है, यहां देखनेयोग्य है। इतना स्पष्ट कथन होनेपर किसीकी शंका नहीं होनी चाहिये। परन्तु वैदिक दृष्टिकोन ठीक प्रकार ध्यान में न आनेके कारण यह सब गड़बड़ हो रही है। एक बार वेदका दृष्टिकोन समझ में आ गया, तो कोई शंका ही नहीं रहेगी। अस्तु।

इस आत्माग्नि के पूज्य होने के विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिये—

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्व ।।

त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ (१२१४; ऋ० ८।११-१)

'हे अग्ने ! हे देव ! तू मर्त्यों में व्रतपालक है और तू ही यज्ञोंमें पूज्य है।' मर्त्य शरीरमें अमर आत्मा है, इसलिए अमर की ही पूजा करनीयोग्य है। अमरको छोड़कर मरने-वालेकी पूजा कौन करेगा ? सब प्रकार के यज्ञों में जिसकी पूजा होती है, वह यही आत्माग्नि है। यही व्रतपालक अर्थात् नियमपालक है। उक्तिके सब नियमों का पालन करके विकसित होना इसका ही स्वभाव-धर्म है। इस प्रकार आत्माकी उपासना वेदमंत्रोंद्वारा सूचित होती है। यही आत्मा सबका रक्षक है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिए—

(४५) प्रजाका रक्षक ।

अग्निं द्वेषो योतवै नो मृणीमस्यग्निं शंयोश्च
दातवै ॥ विश्वासु विश्ववितेव हव्यो भवद्वस्तु-
र्ऋषूणाम् ॥ (१४२३; ऋ० ८, ७१, १५)

'(नः द्वेषः) हम शत्रुओंको (योतवै) दूर करनेके लिए अग्निकी (मृणीमसि) स्तुति करते हैं। तथा (शं योः च) सुखप्राप्ति और दुःखदूरीकरण के लिये अग्नि की उपासना करते हैं। क्योंकि यही अग्नि (विश्वासु विश्व) सब प्रजाओंमें (भविता) रक्षण करता है और इसलिये (ऋषूणां) ऋषियोंका (वस्तु) निवासक (हव्यः)

और प्राप्त्य हुआ है ।'

आत्माग्निकी उपासना करनेसे कौनसे लाभ होते हैं, यह इस मन्त्रमें उत्तम प्रकार वर्णन किया है— (१) शत्रु के साथ युद्ध करके उनको दूर भगानेका सामर्थ्य प्राप्त होता है, (२) शांति प्राप्त होती है और दुःख दूर होते हैं । क्योंकि यही आत्मिक बलसे युक्त होनेके कारण सब प्रजाओंमें सच्चा रक्षक है और इसीलिए ऋषि इसकी प्राप्तिके लिए यत्न करते हैं ।

इस मन्त्रमें अग्नि शब्दसे आत्माका वर्णन स्पष्ट ही हुआ है । यह वर्णन आत्मामें ही सार्थ होता है, इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । क्योंकि इस समय तक यही एक विषय बारंबार आ गया है । यह आत्माग्निकी मुख्य है, और इससे ही सब इंद्रियादिकों को सुख होता है, इस विषयमें स्पष्ट मन्त्र यह है—

महँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता
मादयन्ते । आ विश्वेभिः स-रथं याहि देवै-
र्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ (१११६, ऋ० ७/१११९)

' हे अग्ने ! तू (अध्वरस्य) इस यज्ञका (महान् प्रकेत.) बड़ा ध्वज है । (त्वत् ऋते) तेरे बिना (अमृता.) देव (न मादयन्ते) सुखी नहीं होते । (विश्वेभिः देवैः) सब देवोंके साथ (स-रथं) अपने रथपर से आओ और (प्रथमः होता) मुख्य याजक बनकर (इह) यहां (नि सद) बैठो । ' देखिए, कैसा इस वर्णन का प्रत्येक वाक्य अपने अन्दर अनुभव होता है— (१) इस शत-सांवत्सरिक महायज्ञका यही आत्माग्निकी मुख्य चिह्न है । (२) इस आत्माग्निके बिना कोई इंद्रिय सुख का अनुभव कर ही नहीं सकती । (३) सब इंद्रियशक्तियोंके साथ यह आत्मा यहां इस देहमें आता है और जानेके समय भी सबको साथ ले जाता है, मानो सब देव इसके रथ परसे यहां आते हैं, किंचित् काल रहते हैं और इसीके रथपर बैठकर इसके साथ ही चले जाते हैं । (४) यहां इस देहमें—इस कर्म भूमिमें—जो यह शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, उसका मुख्य याजक यही आत्माग्निकी है । इत्यादि प्रकार विचार करनेसे उक्त मन्त्रके कथनका साक्षात् अनुभव अपने शरीरमें ही होता है । और जिस समय अपनेमें यह दृष्टि खुल जाती है, उस समय वेदमन्त्रोंकी सत्यता अधिकाधिक

अनुभवमें आ जाती है । सब अनुभव अपने अन्दर ही होता है, किसी बातका अनुभव बाहर नहीं हो सकता । अपने अन्दर जो अनुभव बीजरूपसे होता है, विस्तृत रूपसे वही अवस्था बाह्य जगत् में है, परन्तु यह तर्क से जानी जाती है, अर्थात् अनुभव की बात अपने अन्दर ही होती है । पाठक इस दृष्टि से मंत्रों का विचार करें और सत्य बातका साक्षात् अनुभव लेने और देखने का पुरुषार्थ करें । अब एक अनुभव की बात देखिये । देवों के साथ यह आत्माग्निकी इस शरीरमें आता है, रहता है और चला जाता है, यह वर्णन पूर्वस्थल में आया है । इस के आने का मार्ग देखिये—

(४६) देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरुर्णावतं प्रथमः

सीद योनिं । कुलायिनं घृतवतं सवित्रे यज्ञं

नय यजमानाय साधु ॥ (१०३८, ऋ० ६-१५-१६)

' हे (स्वनीक अग्ने) उत्तम सेनापते अग्ने ! तू प्रथम देवों के साथ आकर (उर्णा-वतं योनिं) उनसे युक्त योनिके स्थान में (सीद) बैठ जाओ । और (सवित्रे) प्रसव करने-वाले यजमान के लिये (साधु) उत्तम प्रकार से (कुला-यिन) घर बढानेवाले तेजस्वी यज्ञ को (नय) चलाओ ।'

' सब देवों के साथ ऊनवाली योनि के स्थान में आकर बैठ जाओ । ' यह मंत्र का पहिला कथन है । स्त्री का योनिस्थान देहका जन्मस्थान है, इसलिये स्पष्ट है कि, यदि किसी रीति से आत्माग्निकी अन्य देवों के साथ आगमन इस देह में होना है, तो योनिमार्ग से ही होना चाहिये, दूसरा कोई मार्ग नहीं । मंत्र के ' उर्णावतं योनिं ' ऊनवाली योनि ये शब्द स्पष्टतया बता रहे हैं कि, गर्भधारणयोग्य तरुण युवती के ही सूचक ये शब्द हैं, क्योंकि तारुण्य में ही उस स्थान पर बालों की उत्पत्ति होती है । गर्भधारणा के समय सब देवी शक्तियों के समेत जीवात्मा यहां आवे और प्रवेश करे, यह इच्छा यहां स्पष्ट रीति से व्यक्त हो रही है ।

शरीर में देवों का अंशावतार होने का वर्णन ऐतरेयोप-निषद् के प्रारम्भ में ही है । अग्नि, वायु, रवि आदि देव क्रमशः वाक्, प्राण, चक्षु आदि के रूप धारण कर के इस

शरीर में आ बसे हैं और यहां का कार्य कर रहे हैं । यह उपनिषद् का कथन सत्य होने के लिये आत्माको अन्य देवों के साथ इस शरीर में आना आवश्यक ही है । इस का आगमन जिस मार्ग से होता है, उस मार्ग का वर्णन उक्त मंत्र में किया है । रजवीर्य का संयोग होकर जिस समय गर्भ बनने लगता है, उस समय आत्मा के समेत सब देवताएं आती हैं और अपने अपने स्थान में रहती हैं, (णं उ २) आत्माग्नि (स्वनीक=सु+अनीक) उत्तम सैन्ययुक्त है, अन्य देवताओं के अंश ही उस का सैन्य है । जहां यह सेनापति जाता है, वहां उस के सैनिक जाते हैं । (विश्वेभि देवेभिः) सब देवों के अंशों के साथ यह आत्माग्नि जनवाली योनि में आता है ।

इस कथनसे एक बात सिद्ध होती है कि, जगत् में जितने देव हैं, अर्थात् देवी तत्त्व हैं, उन सबके अंश इस देह में हैं । पंच महाभूत पांच बड़े देव हैं । इन महाभूतों के अंश इस देह में हैं । इसी प्रकार अन्य देवों के अंश इस देह में रहते हैं । देवताका जो अंश इस शरीर में आता है, वह इस शरीरका निज बनकर रहता है । पृथ्वीका अंश मिट्टीके रूप से शरीर में नहीं है, परन्तु उसका शरीर बन कर वह अंश रहता है । इसी प्रकार अन्यान्य देवों के विषय में समझना चाहिए । ये सब देव यहां आकर इस शतसांवत्सरिक सत्र को चलाते हैं । यह बात (यज्ञं नय) 'यज्ञ को चलाओ' इन शब्दों द्वारा सूचित की है । यह यज्ञ (कुलायिनं घृत-घृतं) कुल अथवा घर बढानेवाला और तेज वृद्धिगत करनेवाला है । आत्मा इस शरीर में जब संपूर्ण देवों के साथ आता है, तब घर बढता है, इसका अनुभव संतान उत्पत्ति की खुशीसे पाठकोंको हुआ ही है । इसलिए इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । पाठक देखें कि, वैदिक तत्त्वज्ञान कैसा प्रत्यक्ष होता है, देखिए निम्न मन्त्र-

(४७) यज्ञका झंडा ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधरे । इंद्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ (८४३; ऋ० ५, ११, २)

(नरः) मनुष्य (प्रथमं पुरोहितं) पहिले पूर्ण हितकारी (इंद्रेण देवैः) इंद्रके तथा अन्य देवों के साथ (सरथं) एक रथ में आनेवाले अग्निकी प्रदीप्ति (त्रि-सधस्थे)

तीन स्थानों में करते हैं । यह अग्नि यज्ञका ध्वज है । वह उत्तम यज्ञ करनेवाला (बर्हिषि) अन्तःकरण में बैठकर हवन करता है ।

इन्द्र और अन्य देवों के साथ एक रथ में आनेवाला यह अग्निदेव है । इंद्र देवों का अधिपति है । तैत्तिरीयकोटि देवों के साथ इंद्रको भी अपने रथपर से लानेवाले अग्निका रथ कितना बड़ा होगा ? क्या इसका अंदाजा हो सकता है ? यदि सूर्यचंद्रादि सबही देव अग्निके रथ में बैठने हैं, तो उस अग्निका रथ इस विश्वके बराबर विशाल होना चाहिए । तात्पर्य, व्यापक दृष्टिसे देखा जाय, तो संपूर्ण जगत् ही इस अग्निका रथ है; इस रथपर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायु आदि सब देव बैठे हैं । यहां विश्वव्यापक परमात्मा रथी है और अन्य देव उसके रथपर बैठनेवाले उसके सहायक हैं । इस का प्रतिरूप दूसरा छोटा रथ है, जिसको देह कहते हैं, इसमें आत्माग्नि रथी है और संपूर्ण देवताओं के अंश अर्थात् इंद्रिय उसके सहायक हैं । यह जीवात्माका रथ छोटा है और परमात्मा बड़ा है । तथापि दोनों में, छोटे और बड़ेपन को छोड़ दिया जाय, तो तत्त्वोंकी एकता ही है । देह में अंशरूप ३३ देव हैं और विश्व में विस्तृत ३३ देवता विराजमान हुए हैं । इस प्रकार विचार करके मन्त्रका तत्त्व जानना चाहिए । इस मन्त्रका तत्त्व इस शरीर में ही प्रत्यक्ष होता है, इसलिए अध्यात्मदृष्टिसे मन्त्रका अर्थ मुख्य और अन्य रीतिसे गौण है ।

' यज्ञका झंडा ' यही आत्माग्नि है । शरीर में जो शतसांवत्सरिक सत्र चल रहा है, उस का सब से प्रमुख अधिकारी यही है, यही पूर्ण हितकर्ता है । इस की पूजा तीन (त्रि-सधस्थे) तीन स्थानों में होती है- (१) मस्तिष्क, (२) हृदय और (३) पेट में इस की पूजा हो रही है । जो केवल पेट की पूजा करते हैं, वे गिरते हैं; परन्तु जो साथ साथ मस्तिष्क के ज्ञान से और हृदय की भक्ति से भी इस की पूजा करते हैं, वे दुःख के पार हो जाते हैं । तीन स्थानों में, तीन धामों में इस प्रकार इस की उपासना करना आवश्यक है । यही तीन धामों की यात्रा है, जो करने से पुण्य मिलता है और न करने से पाप लगता है । यही आत्माग्नि मस्तिष्क में ज्ञानरूप कार्य करता है, हृदय में शांति का अनुभव

करता है और पेट में भक्षक बनकर अन्नरसों को अपनाता है । ये इस के कार्य देखनेयोग्य हैं । वेद में इन तीन धामों और स्थानों का वर्णन अनेक स्थानोंमें है, इसलिये इस बात का ठीक ज्ञान होने पर उन मंत्रों की संगति लग सकती है । यह आत्मा (बर्हिषि) अन्तःकरण में बैठता है, यहीं इस का मुख्य स्थान है । यही सब का केंद्र है, यहीं से यह राजा सर्वत्र प्रेरणा भेजता है, यहींसे यह यजमान सर्व यज्ञमण्डप का यज्ञप्रबन्ध करता है, यहीं से यह रथी अपने रथके घोड़े चलाता है और विरोध करनेवाले शत्रुओं से लड़कर अपना जय प्राप्त करता है । इसीलिए इसको (सु+क्रतु) उत्तम कर्म करनेवाला कहा है । इस प्रकार जो उत्तम कर्म करता है, उसकी शक्ति विकसित होती है और जो नहीं करता, उसका विकास वैसा नहीं होता । इसलिये ही कर्मका महत्त्व बड़ा भारी है । इसका यह यज्ञ किम स्थानमें दिखाई देता है ? ऐसा प्रश्न यहां पूछा जा सकता है, उसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(४८) देवोंमें यज्ञ ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व ॥

[६१८; ऋ० ३।२।११]

‘ इस हमारे यज्ञ को (अ-मृतेषु) अमर देवोंमें (धेहि) पहुंचाओ और हे (जात-वेदः) वेदजनक अग्ने ! इन हवनीय पदार्थोंको स्वीकार करो । ’

इस मंत्रमें कहा है कि, यह अग्नि यज्ञके हव्य पदार्थोंको लेता है और देवों में पहुंचाता है । जो अग्नि हवनकुंड में रहता है, उसमें डाली हुई आहुतियां सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि देवोंतक पहुंचती हैं, या नहीं इस विषयमें कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है । यह बात तर्कसे नहीं विदित हो सकती । किसी ग्रंथ के वचनपर कोई विश्वास करे, वह बात दूसरी है, परंतु प्रत्यक्ष अनुभव इस विषयमें कोई भी नहीं है । परंतु इसका अनुभव अध्यात्ममें अर्थात् अपने शरीरमें प्रत्यक्ष हो सकता है । जो अन्न पेटमें डाला जाता है, उसके अंश संपूर्ण इंद्रियों और अवयवों में यथाभाग पहुंचते हैं । इस जठराग्निमें डाली हुई आहुतिएं सूर्यके प्रतिनिधिरूप नेत्रमें जाती हैं और वहांकी पुष्टि करती हैं, इसी प्रकार अन्य देवताओंके प्रतिनिधिभूत जो अन्य इंद्रियगण हैं, उनकी भी इसी प्रकार पुष्टि होती है । यह प्रतिदिनके अनुभवका

ज्ञान है । यद्यपि यह आत्माग्नि अन्नके विभाग किस प्रकार करता है और इंद्रियों में रहनेवाले देवोंतक किस रीति से पहुंचाता है, इसका भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है; तथापि अनुभव से पता है कि, वह पहुंचाता है और वहांके देवताकी पुष्टि करता है । वैद्यलोग इसका ज्ञान अधिक विस्तार से बता सकते हैं, उस प्रकार सामान्य मनुष्यको बताना असंभव है । परंतु अन्न खानेके बाद शरीरकी पुष्टिका अनुभव बताता है कि, यह आत्माग्नि ही कार्य है, क्योंकि आत्माग्नि चला गया, तो शरीरकी पुष्टि नहीं होती । इस बातका विचार करनेसे इसका नाम ‘ (हव्य-वाह) हव्य पदार्थोंको देवताओंतक पहुंचानेवाला ’ किम उद्देश्यसे रखा है, इस बातका पता लग सकता है ।

(४९) यही दूत है ।

दूत नाम सेवक का होता है । आज्ञाकारी सेवक आज्ञाके अनुसार कार्य सत्वर करता है । पेटमें रखा हुआ अन्न संपूर्ण इंद्रियोंतक पहुंचानेका दूतका कार्य यह करता है । इसीलिये इस आत्माग्निको अनेक सूक्तों में ‘ दूत ’ कहा है—

विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ॥

श्रुष्टीदेव प्रथमो यज्ञियो भुवः । (१२८७; ऋ. ८।२३।१८)

‘ (स-जोषतः) एक विचारसे कार्य करनेवाले सब देवोंने तुमको दूत (अक्रत) बनाया है । हे देव ! तू पहला (यज्ञियः) पूज्य देव है । ’

इस मंत्रके प्रथम अर्धमें कहा है कि, “ देवोंने इसको दूत बनाया है । ” और दूसरे अर्ध भागमें कहा है कि, “ यह पहला पूज्य देव है । ” जो सबसे प्रथम पूजनीय देव है, वह सबसे श्रेष्ठ देव होना स्वाभाविक है, इसलिये यहां शंका हो सकती है कि, जो सबसे श्रेष्ठ देव है, वह सब गौण देवों का दूत कैसा हो सकता है ? इस शंकाका समाधान होनेके लिये एक उदाहरण लेता हूं । राजा, महाराजा अथवा सम्राट् अपने राज्यमें सबसे श्रेष्ठ होता है, उसके नीचे अनेक ओहदेदार होते हैं, और इनके आधीन सब प्रजाजन रहते हैं । तथापि सब ओहदेदारोंको प्रजाके नौकर (Public servant) ही कहा जाता है । प्रजाके नौकरोंमें जो ‘ सबसे बड़ा नौकर ’ होता है, वही ‘ राजा, महाराजा और सम्राट् ’ कहलाता है । तात्पर्य यह है कि, यद्यपि राजाके और राजपुरुषों के आधीन प्रजाजन

होते हैं, तथापि वे सबही अधिकारी प्रजाजनोंके नौकर ही होते हैं, और राजा नौकरोका भी बड़ा नौकर होता है। इसलिये वही राजा इतिहास में सुपूजित होता है कि, जो अपनी नौकरी सबसे उत्तम करता है। जिस प्रकार अभिभूत मे अर्थात् राष्ट्रमें यह बात सत्य है, उसी प्रकार अध्यात्ममें भी सत्य है। यहां आत्मा राजा महाराजा और सम्राट् है और इसी लिये उक्त प्रकार वह सबका सबसे बड़ा दूत, नौकर अथवा सेवक है। इसी कारण जो अन्न उमके पास दिया जाता है, वह सब देवोंके पास पहुंचाता है, तथा हरएक प्रकारसे (देवों) इंद्रियोंकी सेवा करता है। वह अपने लिये कुछ भी चाहता नहीं। जो कुछ चाहता है, सब इंद्रियोंके लिये ही चाहता है। यह इस आत्मा-ग्निका दूतकर्म विचार की दृष्टिसे देखनेयोग्य है। परमात्माका यही दूतकर्म अभिवनमें हो रहा है।

पाठक यहां एक नया दृष्टिकोणका अनुभव कर सकते हैं। पूर्व समयमें इस आत्माग्निका वर्णन अधिकारीके भावसे किया, अब उसी का वर्णन दूतभावसे किया जाता है। वेदमें इस प्रकार अनेक दृष्टिकोण हैं। हरएक दृष्टिकोणसे वस्तु देखी जाती है और उसीके अनेक विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया जाता है। यह प्रयाम इसलिये है कि, उस सद्वस्तुका सब पहलुओं से यथार्थ ज्ञान सबको हो जावे। जो पाठक इन सब दृष्टिकोणों को यथावत् जान सकते हैं, वेही वेदकी गंभीरता जान सकते हैं। अस्तु। अब इसके अनंतर अग्निके गुहानिवासित्वका विचार करेंगे। इसके विचारसे अग्निके शुद्ध स्वरूपका पता लग सकता है।

(५०) गुहासंचारी अग्नि ।

गुहासंचारी अग्निका स्वरूप अब देखना है। इसका मूल स्वरूप देखनेके लिये “ गुहा ” शब्दका वैदिक अर्थ देखना चाहिये। इस लिये निम्नलिखित वचन देखिये—
आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥ (कठ उ २।२०)
विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायाम् ॥ (कठ. उ. १।१४)
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम् ॥ (कठ. उ. २।१२)
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः ॥ (श्वे. उ ३।२० ;
महा. ना. उ. ८।३)
एष पंचधात्मानं विभज्य निहितो गुहायाम् ॥
(मैत्री उ २।६)

एतद्यो वेद निहितं गुहायाम् ॥ (मुंड. उ. २।१।१०)
अंतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः ॥

(महा. ना. उ. १।५।६)

आविः संनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदम् ॥

(मुंड. उ. २।२।१)

इस प्रकार “ गुहा ” शब्दका प्रयोग उपनिषद्गोंमें अनेक स्थानपर आया है। इन सब वचनोंका यही तात्पर्य है कि ‘ आत्मा इस प्राणीकी (गुहा) अर्थात् हृदयमें रहता है । ’ गुहा शब्दका अर्थ इस दृष्टिसे ‘ हृदय, अंतःकरण, ’ आदि है। कोशोंमें भी ‘ गुहा ’ शब्दका अर्थ ‘ हृदय, बुद्धि, अंतःकरण, गुफा, गुप्त रहनेका स्थान ’ इस प्रकार दिया है। आत्मा हृदय की गुहामें छिपा है, वहांही उसको देखना चाहिये, यह भाव वेद और वेदांतशास्त्रमें सर्वत्र है इस प्रकार गुहा शब्दका अर्थ ‘ हृदय ’ निश्चित हुआ। जो गुहामें होता है, उसको ‘ गुह्य ’ कहते हैं। हृदयके अंदर अपने मनमें ही जो रखनेकी बात होती है, उसको गुह्य कहते हैं। आत्माका भी नाम गुह्य इसलिये है कि, वह हृदयमें गुप्त होता है। इस दृष्टिसेभी गुहाका अर्थ अंतःकरणही होता है। इस अर्थको लेकर निम्नलिखित मंत्र देखिये—

पश्वा न तायुं गुहाचरन्तं नमो युजानं नमो
वहन्तम् ॥ सजोषा धीराः पदैरनुगमन्नुप त्वा
सीदन् विश्वे यजत्राः ॥ (१२४-१२५; ऋ १।६५।१)
इस मंत्रके दो अर्थ हैं। एक अर्थ चोरके विषयका है और दूसरा आत्माके विषयका है। इस मंत्रका ऋषि पराशर है और देवता अग्नि है। देखिये इसके दोनों अर्थ—

(१) चोरविषयक अर्थ— (न) जैसा पशुकी चोरी करके (तायु) चोर उस (पश्वा) पशुके साथ (गुहा-चरन्तं) पर्वतों की गुहाओंमें जा कर छिप जाता है, वहां वह चोर अपने साथ (नमः वहन्तं) अन्न भी रखता है और (नमः युजानं) शस्त्र की भी योजना करता है। इस प्रकारके बड़े डाकू को पकड़नेके लिये (स-जोषाः यजत्राः विश्वे धीराः) एक विचारसे प्रयत्न करनेवाले सब धैर्यशाली वीर [पदैः अनुगमन्] पशुके और चोरके पांवोंके चिह्न जो भूमिपर लगे होते हैं, उनको देख देखकर पास पहुंचते हैं और [उप सीदन्] बिलकुल समीप जाकर उसको पकड़ते हैं। इसी प्रकार धैर्यसे चोरको पकड़ना चाहिये ।

जो डाकू, चोर, लुंटेर आदि होते हैं, वे शहरों में चोरी करके पशु, धन, अन्न आदि पदार्थ अपने साथ लेकर भागते हैं और पर्वतों के दुर्गम स्थानों में जाकर छिपते हैं । वहां वे रहते हैं, अपने साथ का अन्न खाते हैं और पकड़नेका प्रयत्न करनेवाले नागरिकोंके ऊपर अपने पासके शस्त्रप्रयोग करते हैं और पास आने नहीं देते ! इस प्रकारके चोरोंको पकड़कर दंड देना चाहिये । पकड़ने की यह युक्ति है कि सबको एक विचारसे मिलकर, संघ बनाकर, भागे बढना चाहिये और उसके पदचिह्नों को देखदेखकर उसका पता लगाना चाहिये और युक्तिसे उसको पकड़ना चाहिये । यह चोरको दंड देने और उससे जनताका बचाव करनेके विषय में वेदका उपदेश है । इसका यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं । जैसी गुहामें चोरकी खोज की जाती है, उसी प्रकार हृदयकंदरामें आत्माकी खोज होती है । इस विषय का अर्थ देखिये—

(२) आत्मा के विषयमें अर्थ— (न) जिस प्रकार (तायुं) चोर पशुके साथ गुहामें रहता है, उस प्रकार (पश्वा) इंद्रियादि शक्तियों को लेकर (गुहा चरन्तं) जो हृदयमें रहता है और वहां (नमः वहन्तं) नमस्कारों को स्वीकार करता है और (नमः युजानं) नमन का योग करता है, उसको देखनेके लिये (स-जोषाः धीराः) समान ज्ञानवाले बुद्धिमान् लोग (पदैः) मंत्रों के पदों के साथ, अथवा आत्माके जो पद इंद्रियादि स्थानोंमें दिखाई देते हैं, उनको देखदेखकर (अनु-गमन्) पीछेसे जाते हैं और वे (विश्वे-यजत्राः) सब याजक (उप सीदन्) पास बैठते हैं, अर्थात् उपासना करते हैं ।

एकही मंत्रमें ये दोनों भाव देखनेयोग्य है । चोरकी उपमा आत्माको देनेसे कोई हानि नहीं है । ' छिपकर रहने का भाव ' ही दोनों स्थानपर विशेषतया देखना है । सब इंद्रियोंकी शक्तियोंका आकर्षण करनेवाला यह 'कृष्ण' किंवा 'संकर्षण', गौवों (इंद्रियों) का पालन करनेवाला यह 'गोपाल', गौवोंके साथ पर्वतकी गुहामें छिपकर रहनेवाला यह मायाविहारी 'गोपनाथ', पशुओंकी पालना करनेवाला यह 'पशुपति' एकही है । इन सब विविध रूप-कों और अलंकारों में एकही आत्मतत्त्वका वर्णन होता है । इसीको 'चोर-जार-कपटनाटकी' भी कहा जाता है !!

यद्यपि ये शब्द बाह्य अर्थमें निदाय्यजक हैं, तथापि इसका गुप्त अर्थ बुरा नहीं है । रुद्रके वर्णन में 'तरकर, स्तेन, स्तेनानां पति.' ये 'चोर' वाचक शब्द रुद्रदेवताके लिये आये हैं । रुद्र पशुपति है अर्थात् पशुपतिही तरकर है । इसका तात्पर्य इतनाहि है कि, ये शब्द किसी एक आशयके साथ मंत्रमें देखने होते हैं । अर्थात् 'चोरके समान छिपकर रहने-वाला आत्मदेव है । इसमें 'गुप्त रहना' ही देखना है, चोर का दूसरा भाव देखना नहीं है । अब इस आत्माकी खोज कैसी करनी है, देखिये । एकविचारसे, एकनिष्ठा से अनुष्ठान करने का निश्चय करना चाहिये । उसके जो पद अर्थात् विह्व इंद्रियों और अवयवों में दिखाई देते हैं, उन को देखते हुए उसका मार्ग ढूँढना चाहिये । इन पदोंपर अपना कदम रखकर जायेगे, तो संभवतः उसके मूळ स्थान-गुहामें-पहुच सकते हैं और वहां उसका पता लगा सकते हैं । वह जिस गुहामें छिपकर बैठा है, उसके पता लगानेका यही एक उपाय है । इसके गुहानिवासी होनेके विषयमें और एक मन्त्र देखिये—

हस्ते दधानो नृष्णा विश्वान्यमे देवान्धातुहा-
निषीदन् ॥ विदन्तोमन्न नरो धियं धा हृदा
यत्तपान्मन्त्रां अशंसन् ॥ [१४६, क्र० १।६७।३]

' (विश्वानि नृष्णानि) सब सुखों को (हस्ते दधानः) अपने हाथमें धारण करनेवाला, (गुहा निषीदन्) अपनी अंतःकरण की गुहामें बैठनेवाला, (देवान् अमे धात्) सब देवों को अर्थात् इंद्रियों को जीवनमें धारण करता है । (धियं-धाः नरः) बुद्धि को धारण करनेवाले नर (अन्न) इस गुहामें ही (हं विदति) इसको जानते हैं, (यत्) जिस समय (हृदा तपान् मन्त्रान्) हृदयसे निकले हुए सुविचारों को (अशंसन्) कहते हैं । '

जिस समय हृदयमें भक्ति के भाव चलने लगते हैं और दिलमें सच्ची भक्ति होती है, उसी समय शानी मनुष्य इस को हृदयकंदरामेंही प्राप्त करते हैं । यह यहां हृदयमें बैठा हुआ, सब सुखों को अपने पास रखकर, सब इंद्रियों में जीवन का प्रवाह चलाता है । पाठक इस वर्णन से जान सकते हैं कि, इस मंत्रमें जिस अग्निका वर्णन है, वह अग्नि कौन है ? निःसंदेह चूल्हमें जलनेवाली आग इस मंत्रमें अभिप्रेत नहीं है । मनुष्यके हृदयमें जो आत्माभि है, वही

यहां वर्णित है । यहाँ (१) सब सुखों को अपने में धारण करता है, (२) इंद्रियोंमें जीवनका प्रवाह चलाता है और (३) भक्तिकी भावनासे आनंदित होकर यही ज्ञानियोंको प्राप्त होता है । और देखिये—

य ई चिकेत गुहा भवन्तमायः ससाद् धारामृतस्य ॥
वि ये चृतमृत्युता सपन्त आदिद्वसूनि प्रववाचास्मे ॥

[१५०-१५१, ऋ० १।६७।४]

‘ (यः) जो ज्ञानी (गुहा भवन्तं) हृदयकंदरामें रहनेवाले (ई) इसको (चिकेत) जानता है, (यः) वह मानो (ऋतस्य धारां) सत्यके स्रोतको (आससाद्) प्राप्त करता है । (ये च ऋतानि सपन्तः) जो सत्यका आश्रय करनेवाले पुरुष हैं, जो सत्याग्रही हैं, वे (भात् इत्) निश्चयसे (अस्मै) इसके लिये ही (वसूनि प्रववाच) धन है, ऐसा कहते हैं । अर्थात् सब धन इसी का है, ऐसा कहकर हमीको अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं । ’

हृदयमें जहाँ यह आत्माभि रहता है, वहाँसे ही सत्यका स्रोत चलता है और इसीलिये जो सत्यके ऊपर स्थिर रहनेवाले होते हैं, वे ही इसको प्राप्त करते हैं । जिस प्रकार नदीके प्रवाहके साथ उलटा जानेसे नदीके उगम-स्थानतक पहुँच सकते हैं, उसी प्रकार सत्यकी नदी इससे शुरू होती है, इसलिये जो सत्यका आश्रय करते हैं, वे इसके पास पहुँचते हैं, क्योंकि इसके पास सत्य है और इससे दूर असत्य है । इसके पास जितना जितना जाय, उतना उतना सत्य अधिक होता है और जितना इससे विमुख होता है, उतना असत्य पास आने लगता है । इसी कारणही कहते हैं कि असत्य छोड़कर सत्य को पास करने से देवत्व प्राप्त होता है । अस्तु । इस रीतिसे इन मन्त्रों का विचार करनेपर निश्चय होता है कि यह गुहानिवासी अग्नि आत्मा ही है । और देखिये—

गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिः ॥ (४५५, ऋ० ३।१।९)

‘ शुभ मित्रोंके साथ गुहामें संचार करनेवाला ’ यह अग्नि है । यह भी आत्माग्निकाही रूपक है । आत्माग्निके शुभ मित्र संपूर्ण इंद्रियशक्तियाँही हैं । क्योंकि ये शक्तियाँ इसके साथ आती हैं, इसके साथ रहती हैं और इसके जानेके समय इसके साथ चली जाती हैं । अर्थात् मित्रवत् इनका बर्ताव होता है । कई समझते हैं कि, इसका ज्ञान

प्राप्त होना कठिन है, परन्तु वेद कहता है कि यह बात सुगम है, देखिये—

चित्रं संतं गुहाहितं सुवेदं ॥ (६९८, ऋ० ४।७।६)

‘ यह गुहानिवासी बड़ा विलक्षण है, परन्तु यह (सु-वेदं) उत्तम प्रकारसे अथवा सुगमतासे जाननेयोग्य है । ’ इन मंत्रोंके विचारसे अग्निका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । यह विचार यहाँही समाप्त करके और एक रीतिसे विचार करेंगे । सहचारी देवोंके विचारसे इसका विचार अब करना है ।

(५१) अग्निके साथी अनेक देव ।

अग्निके साथी जो अनेक देव हैं, उनकी संख्याका उल्लेख निम्न मन्त्रमें किया है । इसलिये वह मंत्र देखिये—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा

नव चासपर्यन् ॥ (५०८, ऋ० ३।९।९)

‘ तीन सहस्र, तीन सौ, तीस और नौ देव इस अग्निकी (सपर्यन्) सेवा करते हैं । ’ इस मन्त्रमें अग्निदेवकी पूजा अथवा सेवा करनेवाले देवोंकी संख्या कही है । जहाँ अग्निदेव जाता है, वहाँ उसके साथ ये भी देव जाते हैं । ये देव उसके रथपरसे जाते हैं और अग्निके साथ उसके रथपर बैठकर ही आते हैं । देखिये इसका वर्णन—

एभिरग्रे सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवा

ह्यग्वाः ॥ पत्नीवतस्त्रिंशत् त्रींश्च देवाननुष्वध

मा वह मादयस्व ॥ (४८८, ऋ० ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! आपके अश्व (वि-भवः) प्रभावशाली हैं, इसलिये (एभिः) इन सब देवोंके साथ (सरथं) एक ही रथ परसे अथवा (नाना-रथ) अनेक रथोंके ऊपर (आ याहि) आओ । पत्नियोंके साथ तीस और तीन देवोंको बल के लिये यहाँ ले आओ और आनंदित रहो । ’

इस मंत्रमें ३३ देवोंका संबंध अग्निके साथ बतलाया है । पूर्व मंत्रमें ३३३९ देवोंका संबंध वर्णन किया है ।

१
३
३३
३३३
३३३९

यह देवोंकी संख्या विशेष महत्त्व रखती है । उक्त संख्या बढ़नेका क्रम ३३ करोड़ तक है । स्थानस्थानमें इस संख्या

का वर्णन ब्राह्मणोंमें आता है । एक मुख्य देव है, जिसको आत्मदेव कहते हैं । उसके साथ अनेक देवताएं हैं । अन्य देवताएं प्राकृतिक शक्तियां हैं और एक देव आत्मा है । आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, आदि शब्द इस भेदका वर्णन कर रहे हैं । आत्माकी शक्तियां प्रकृतिमें जाकर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल आदि अनेक देव बने हैं । इसका क्रम निम्न लिखित प्रकार है—

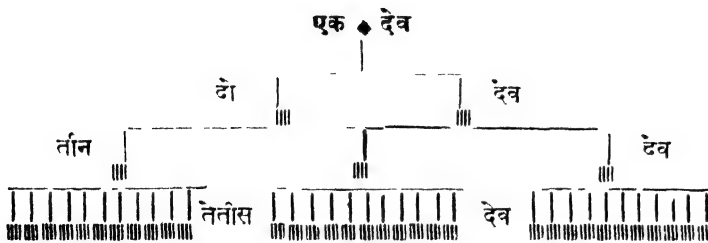
१ एक देव—आत्मा ।

२ दो देव—आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, इत्यादि ।

३ तीन देव—पृथ्वीस्थानपर अग्नि, अतरिक्ष स्थानपर विद्युत् और द्युस्थानमें सूर्य । त्रिमूर्ति ।

३३ तैत्तिरीय देव— ११ पृथ्वीपर, ११ अतरिक्षमें, ११ द्युलोकमें ।

इन्हीं के विभाग ३३२९ और इसी क्रम से इससे भी अधिक हुए हैं । इसका चित्र निम्न प्रकार बन सकता है—



इस प्रकार प्रत्येकके और भेद होनेसे अनेक देव हो जाते हैं । ये सब 'अनेक विभिन्न देव' हैं । ये विभिन्न देव 'एक अभिन्न देव' के साथी हैं ।

(१) एक अभिन्न देव (आत्मा) = आत्मा ।

(२) अनेक विभिन्न देव (अनात्मा) = देवताएं ।

यह कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आ गई, तो वेदके बहुतसे मन्त्रोंके वर्णन सुगमतया ध्यानमें आ सकते हैं । इसलिये पाठकोंसे प्रार्थना है कि, वे इस कल्पनाको ध्यानमें लानेका यत्न करें ।

अनेक विभिन्न देवोंमें एक अभिन्न देवकी शक्ति कार्य करती है, इसलिये एक अभिन्न देव श्रेष्ठ और अनेक विभिन्न देव गौण हैं । पूर्वोक्त मंत्रमें एक अग्निदेवके साथी ३३३९ अथवा ३३ होनेका वर्णन है । इसका भाव इसी

प्रकार समझना चाहिये । इस समयतक के वर्णन से पाठकों के मनमें यह बात आ गई होगी, कि इन मन्त्रोंमें जो अग्नि शब्दसे वर्णन हो रहा है, वह मुख्यतया 'आत्माग्नि' का ही वर्णन है । इस आत्माग्निके साथ तीन, तैत्तिरीय अथवा इसी प्रमाणसे अधिक देवताएं आती हैं, रहती हैं और जाती हैं । इन सबका आना और रहना इस शरीरमें होता है, इस विषयमें पूर्व स्थलमें बहुत बार कह दिया है । अस्तु, इस प्रकार अग्निदेवके वर्णनसे मुख्यतया आत्माका वर्णन होता है । और इसकी सूचनाएं पूर्वोक्त प्रकार स्थानस्थान के सूक्तोंमें वर्णन की गई हैं । अब अग्निदेवके वर्णनमें 'सप्त' अर्थात् 'सात' संख्याका विशेष महत्त्व है, इसका विचार करके निश्चय करना है कि यह किस बातका वर्णन है—

(५२) " सात " संख्या का महत्त्व ।

वैदिक तथा लौकिक सारस्वतमें अग्निके वर्णनमें 'सप्त-हस्त' 'सप्त-जिह्व' आदि शब्द आते हैं । [१]

सात हाथोंसे युक्त । [२] सात-जिह्वाओंसे युक्त यह उन शब्दोंका भाव है । देखिये—

सप्तहस्तश्चतुःशृंगः सप्तजिह्वो द्विशि-
र्षकः ॥ त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखा-
सीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहां तु
दक्षिणे पाद्वे देवी वामे स्वधां
तथा ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्ति-

मन्त्रं स्मृचं स्मृचम् ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं
च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो
हुताशनः ॥

हुताशन अग्निका यह वर्णन सुप्रसिद्ध है । इसमें 'सप्त-हस्त, सप्त-जिह्व' शब्द है । यह पौराणिक वर्णन जिम वेदमंत्रके आधार पर रचा गया है, वह मंत्रभी यहां देखिये—

(५३) सात हाथ ।

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त
हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धा वृषभो रोरवीति
महो देवो मर्या आविवेश ॥ (१८९७, ऋ. ४।५।८।३)
इस अग्नि देवताके मंत्रका आशय भगवान् पतंजलि

मुनिने शब्दविषयक लिया है और बताया है कि, यहाँके 'सप्त हस्त' शब्दका भाव सात विभक्तियाँ हैं । इस मन्त्रका शब्दविषयक यह एक अर्थ है । परंतु इसके अनेक अर्थ हैं, क्योंकि यह 'कूट मन्त्र' है, इसका विशेष स्पष्टीकरण 'तर्कसे वेदका अर्थ' इस पुस्तकके अंदर 'भाष्यकारोंका मतभेद' इस शीर्षक के लेखमें विशेष रूपसे दिया है । पाठक वह लेख इस प्रकरणमें अवश्य अवलोकन करे । इस कूट मन्त्रके अनेक अर्थ होनेका कारण वहाँ ही स्पष्ट कर दिया है । इसके अध्यात्मपरक अर्थ केवल आत्माके विषयमें ही होते हैं, प्रायः सब भाष्यकार इसको मानते हैं । आरण्यकादिकोंमें यह प्रणव अर्थात् ओंकार पर मन्त्र घटाया है । इससे स्पष्ट है कि, आत्मा पर इसका अर्थ होनेके प्रसंगमें इस मन्त्रका 'सप्त-हस्त' शब्द आत्माकी सात शक्तियोंका ही वाचक होगा । यही बात 'सप्त-जिह्वा' शब्दके विषयमें समझनी चाहिये । यहाँ सूचना मिलती है कि, आत्माकी सात शक्तियाँ हैं, जो 'सात हाथ' अथवा 'सात जिह्वाएँ' शब्दोंद्वारा वर्णन की गई हैं, यही बात निम्न लिखित मन्त्रमें देखिये—

(५४) सात जिह्वाएँ ।

दिद्यश्चिदग्ने महिना पृथिव्या ।

वच्यन्तां ते वह्नयः सप्तजिह्वाः ॥

(४८१, ऋ. ३।६.२)

'हे अग्ने ! [महिना] अपनी महिमासे पृथ्वीमें और वृत्तोंमें वह्निरूप तेरी सात जिह्वाएँ [वच्यन्तां], घोषणा कर । ' इसमें अग्निकी सात जिह्वाओंका वर्णन है । इन सात जिह्वाओंसे अग्नि तीनों लोकोंमें घोषणा कर रहा है । प्रत्येक जिह्वाकी अलग अलग घोषणा हो रही है । एक जिह्वाकी घोषणा दूसरी जिह्वाकी घोषणासे भिन्न है, यह बात यहाँ ध्यानमें धरने योग्य है । इस मन्त्रमें सात जिह्वाओंका स्वरूप [वह्नयः सप्तजिह्वाः] वह्निरूप है, ऐसा स्पष्ट कहा है । वह्नि शब्द जैसा अग्निवाचक है, उसी प्रकार 'वाहक' अर्थमें भी प्रसिद्ध है । अर्थात् ये सात जिह्वाएँ वाहक हैं । वाहक होनेके कारण यहाँ प्रश्न हो सकता है कि ये किस पदार्थको लाती हैं ? इसका उत्तर निम्न लिखित मन्त्रमें देखिये—

(५५) सात नदियाँ ।

अवर्धयत्सुभगं सप्त यज्ञीः इवेतं जज्ञानमरुषं महित्वा । शिशुं न जातमभ्याहरन्वा देवासो अग्निं जनिमन्त्रपुष्यन् ॥ (४५०; ऋ. ३।१।४)

'जिस प्रकार [अग्निः शिशुं जातं अभ्यारुः न] घोड़ियाँ नूतन उत्पन्न बच्चेके चारों ओर रहती हैं, उसी प्रकार यह (सप्त यज्ञीः) सात नदियाँ उस (सुभगं) उत्तम भाग्यशालीको (अवर्धयत्) बढ़ाती हैं कि, जो (जज्ञानं श्वेतं) उत्पत्तिके समय श्वेत था, परंतु पश्चात् (महित्वा) अपने महत्त्वसे (अरुषं) लाल बन गया । इस प्रकारके अग्निके जन्म की देव पुष्टि करते हैं । '

इस मन्त्रमें निम्न लिखित बातें हैं कि, जो अग्निकी स्वरूप तथा सप्त नदियोंकी कल्पनाका तत्त्व विशद कर रही है—

[१] बछड़ेको बीचमें रखकर जिस प्रकार घोड़ियाँ अथवा माताएँ चारों ओर बैठती हैं ।

[२] उस प्रकार इस अग्निको बीचमें रख कर उसके चारों ओर ये सात नदियाँ प्रवाहित होती हैं ।

[३] अपने प्रवाहके साथ ये सातों नदियाँ भाग्यशाली इस अग्निको बढ़ाती हैं,

[४] यह अग्नि आरभ में श्वेत था, परंतु पश्चात् लाल हो गया है ।

[५] इस अग्नि की पुष्टि देवोंने भी की है ।

अग्निको बीचमें रख कर उस मध्यस्थानसे चारों ओर अथवा सातों ओर सात नदियाँ बह रही हैं, अर्थात् सात नदियोंके उगमस्थानमें यह अग्नि है । कौनसे एक स्थानसे सात नदियाँ बह रही हैं ? और कौनसी नदीके उगमस्थानमें प्रतापी अग्नि रहता है ? बहुतसे विद्वान् कहते हैं कि, वेदमें वर्णित सात नदियाँ पंजाब में हैं, कई कहते हैं कि, मध्य एशियामें हैं, कई कहते हैं कि उत्तर ध्रुवके पास हैं । परंतु स्थानस्थानमें प्रयत्नपूर्वक देखनेपर एक स्थानपर उगम होनेवाली सात नदियाँ कहीं भी दिखाई नहीं देती और जो थोड़ी हैं, उनके उगमस्थानमें ऐसा कोई अग्नि नहीं है । चूंकि यह वर्णन पृथ्वीपर का नहीं है । इसलिये जो विद्वान् इसको इस भूमिपर देखनेका यत्न करते हैं, वे फलीभूत नहीं होते !! इसका स्वरूप देखना है तो निम्न लिखित मन्त्र देखिये—

(५६) सप्त ऋषि और सप्त नद ।

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति
सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र
जागृतो अस्वप्नजौ सप्तसदौ च देवौ ॥

[वा० य० ३४।५५]

‘ प्रत्येक (शरीरे) शरीरमें (सप्त ऋषयः) सात ऋषि (हिताः) रहते हैं । ये सात इस (सदं) घरका रक्षण करते हैं । ये (सप्त आपः) जल के सात प्रवाह (स्वपत) सोने-वाले आत्माके (लोक ईयुः) स्थान को पहुंचते हैं । इस (सप्त-सदौ) यज्ञमें जागनेवाले और (अ-स्वप्न-जौ) कभी न सोनेवाले (देवौ) दो देव हैं । ’

इस मंत्रमें कई गूढ तत्त्वोंका स्थायीकरण किया है, उसका आशय निम्न प्रकार है—

(१) प्रत्येक शरीरमें सात ऋषि रहते हैं ।

(२) इस शरीरका संरक्षण ये सात ऋषि कर रहे हैं ।

(३) सात जलप्रवाह (सात नदियां) भी इसी शरीरमें हैं, जो सुषुप्तिकी अवस्थामें आत्माके स्थानको वापस जाते हैं । अर्थात् जागृति की अवस्था में ये सात नदियां आत्मा से चलकर बाहर जगत् में फैलती हैं ।

(४) मनुष्य-जीवन एक सप्त अर्थात् शतसांवत्सरिक महायज्ञ है । इसीमें ये सप्त ऋषि यज्ञ कर रहे हैं । सप्त नदियों के किनारे पर इनका यज्ञ चल रहा है । ये सात ऋषि कुछ काल सोते हैं और कुछ काल जागते हैं ।

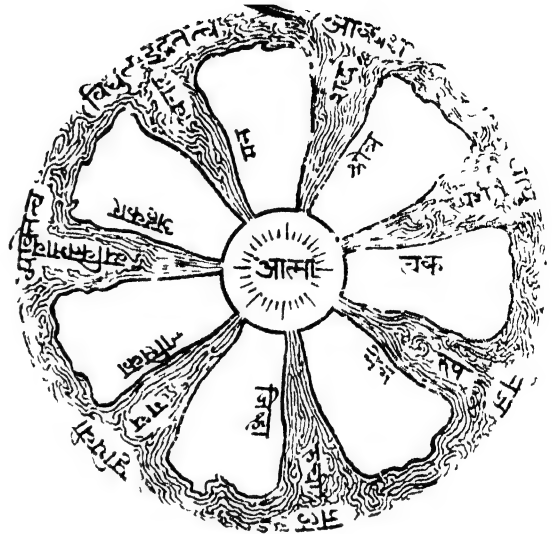
(५) सोने के समय इन सप्त नदियोंका प्रवाह उलटा होता है और इस समय ये नदियां अंतर्मुख होती हैं । तथा जागने के समय इनका प्रवाह बहिर्मुख होता है ।

(६) इस सप्त में दो देव खड़े पहरा दे रहे हैं, जो कभी सोते नहीं । सदैव इसके संरक्षण करने में ये दक्ष रहते हैं ।

इस वर्णनसे स्पष्ट पता लग जाता है कि, यह सप्त नदियोंका वर्णन आत्माभिपरही विशेष रूपसे घट सकता है ।

सप्त नद ।

आत्माभि मध्यमें है और इस उगमस्थानसे अहंकार, मन, ओन्न, स्पर्श, नेत्र, रसना और नासिका ये सात प्रवाह चलते हैं । (१) अहंकार की नदी घमंडके क्षेत्रमें बह रही



सप्त नद ।

है । (२) मनका नद मननके प्रदेश को भिगी रहा है । (३) ओन्नकी नदी कानोंके द्वारा प्रवाहित होकर शब्दकी भूमिमें बह रही है । (४) स्पर्श की नदी चर्ममार्गसे स्पर्शके प्रदेश में फैल रही है । (५) नेत्रकी नदी दृष्टिके मार्गसे दर्शनक्षेत्र में प्रवाहित हो रही है । (६) रसना नदी रुचिके श्रंत्रमं जिह्वाके स्थानसे व्याप्त हो रही है । इसी प्रकार (७) नासिका द्वारा सुवासके क्षेत्रमें नासा नदी बह रही है । प्रत्येक नदी का क्षेत्र भिन्न है, प्रत्येक नदीका जल भी भिन्न है और प्रत्येक नदीका स्वभाव भी भिन्न है । ये सप्त नदियां हैं, जो कि आत्माके स्थानसे बह रहीं हैं । सुषुप्तिकी अवस्थामें ये सातों नदियां अंतर्मुख होकर उलटी बहने लग जाती हैं और आत्मामें मग्न होती हैं; परन्तु जागृतिमें आत्मासे बहिर्मुख होकर फिर बाहर प्रवाहित होकर जगत् में कार्य करने लग जाती हैं ।

प्रतिदिन इन सातों नदियोंका यह प्रवाह हरएकके अनुभवमें आता है । इनका प्रवाह उलटा चलनेवाली नाम सुषुप्ति और इनका प्रवाह बाहरकी ओर बहनेकाही नाम जागृति है ।

प्रत्येक नदीके तटपर एक एक अधिष्ठाता ऋषि हैं, जो वहां तप कर रहा है । ये सात ऋषि इस जीवनरूपी महा-

यज्ञ में यजन कर रहे हैं । जिस समय ये सातों अधिष्ठाता ऋषिगण थक कर सो जाते हैं, उस समय तथा अन्य समय में भी इस देहरूपी सत्रमें दो देव जागते हैं !! इन देवोंका नाम प्राण अर्थात् श्वाभ और उच्छ्वास है । जन्मसे मरने-तक ये श्वासोच्छ्वासरूपी दो देव जागते हैं और खड़े पहरा करते हैं । इनके कारणही इस सत्र अर्थात् देहरूपी यज्ञ-भूमिका संरक्षण हो रहा है ।

पाठक विचार करेंगे, तो उनका पता लग जायगा कि, यह वर्णन हमारे देहका ही है और इसीमें (१) सात ऋषि, (२) सात नदियां और (३) जलके सात प्रवाह अपना अपना कार्य कर रहे हैं ।

अब पूर्वोक्त मंत्र का अनुसंधान कीजिये, तो पता लग जायगा कि आत्माग्निको मध्यमें रख कर सात नदियां चारों ओर फैल रही हैं, इसका तात्पर्य क्या है ? नदियोंके उगमस्थानमें कौनसा अग्नि है ? उससे कौनसे प्रवाह किस भूमिमें फैलते हैं ? और समयपर वापस भी किस रीतिसे होते हैं ?

यह आत्माग्नि प्रारंभमें श्वेत और पश्चात् रक्तवर्ण होता है । यह भी स्पष्ट है । श्वेतवर्ण सस्वगुण और रक्तवर्ण रजोगुण का द्योतक है । प्रथमतः आत्मबुद्धिमें सार्वत्रिक भाव होते हैं, परन्तु जब वे भाव भोगोंके साथ परिणत होते हैं, तब रजोगुणमय होते हैं । इत्यादि विषय अब पूर्णतासे स्पष्ट हो सकता है ।

- (१) ये ही आत्माग्निके सात हाथ हैं, जिनसे वह कार्य करता है ।
- (२) ये ही आत्माग्निकी सात जिह्वाएं हैं, जिनसे वह आत्माकी घोषणा करता है, अथवा जगत की रुचि लेता है ।
- (३) ये ही सात नदियां हैं, जो अपने अपने क्षेत्रमें बहती हैं ।
- (४) ये ही सात जलप्रवाह हैं, जिनपर सात ऋषि तपस्या कर रहे हैं ।
- (५) ये ही सप्त ऋषि हैं, जो सात प्रकारका ज्ञान दे रहे हैं और शरीरका अर्थात् ऋषि आश्रमका संरक्षण कर रहे हैं ।

(६) ये ही ऋषि-आश्रम हैं, जिनपर रोगरूपी राक्षस बारंबार हमला करते हैं और इस शतसांवसरिक सत्रका विध्वंस करते हैं । जिनका कि दो देव रक्षण कर रहे हैं ।

(७) ये ही सप्तारिषि हैं, जो आत्मारूपी सूर्यके सात किरण हैं, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(५७) सात किरण ।

आ यस्मिन्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि ।

मनुष्वहैव्यमष्टमं पोता विद्वं तदिन्वति ॥

(४२६, ऋ० २।५।२)

‘(यस्मिन् यज्ञस्य नेतरि) जिस यज्ञ के नेताके अंदर सप्त रश्मयः) सात किरण अथवा सात लगाम (तताः) तने हुए हैं । वह यज्ञका नेता (पोता) पवित्र कर्ता आत्मा (मनुष-वत्) मनुष्ययुक्त (दैव्यं विश्व) देवतामय विश्वको अष्टम होकर (इन्वति) प्राप्त करता है ।’

“ यज्ञका नेता ” आत्माही है, जो इस शरीररूपी यज्ञमंडपमें इस शतसांवसरिक महायज्ञ को चलाता है । इसी आत्माके पूर्वोक्त सात किरण इस देहरूपी यज्ञमंडपमें प्रकाशित हो रहे हैं । यह सूर्यचंद्रादि देवतामय विश्व जो मनुष्यप्राणियोंके कारण विशेष रूपसे प्रसिद्ध है, उसको अष्टम अर्थात् आठवां मान कर यही प्राप्त करता है । सात इन्द्रियशक्तियां, आठवां देवतामय विश्व और उसको प्राप्त करनेवाला स्वयं यजमान आत्मा है । यह मंत्र भी आत्माग्निकाही वर्णन कर रहा है ।

इस मंत्रका मनन करनेसे पता लग सकता है कि, वेदमें जो सप्त रश्मि, सप्त किरण, आदि वर्णन है, वह केवल सूर्यप्रकाश के ही सात किरणोंका वर्णन नहीं है, प्रत्युत आत्माकी सात शक्तियों का वह मुख्य वर्णन है और गौण-वृत्तिसे अन्य भाव को भी व्यक्त करता है । वेदमें केवल सप्त रश्मियोंकाही वर्णन नहीं है, प्रत्युत यह सप्त संख्या अनेक बार विविध प्रकारके वर्णनमें आई है, देखिये—

(५८) सप्त रत्न ।

दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा
यजीयान् ॥

(७५९, ऋ० ५।१।५)

‘ घरघरमें सात प्रकारके रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करता हुआ बैठा है । ’ इस मंत्रमें सात रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यही आत्माग्नि है और उनके सात रत्न पूर्वोक्त सात शक्तियाँही हैं । “ दमे दमे ” का अर्थ प्रत्येक घरमें अर्थात् प्रत्येक शरीरमें है, क्योंकि शरीर ही आत्माका घर है । रत्न शब्दका अर्थ रमणीय है । उक्त सात इंद्रियाँ ज्ञान देनेके कारण आत्माको रममाण करती हैं, इसलिये रत्न शब्दका मूल धात्वर्थ भी यहां सगत होता है । जो सप्त रत्न है, वे ही “ सप्त धातु ” हैं । इनका वर्णन निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५९) सप्त धातु ।

बृहद्वाथ धृषता गभीरं यद्गं पृष्ठं प्रयसा सप्त धातु ॥
(१७६३; ऋ० ४।५।७)

‘ (धृषता प्रयसा) वीर्ययुक्त प्रयत्नके साथ रहनेवाला गभीर (पृष्ठं) प्रशंसनीय महान् (सप्तधातु) सप्तधातु-रूप धन दो । ’

आत्माकी उक्त सात शक्तियाँ ही शरीरमें मुख्य धन हैं । इनमें एकाध शक्ति न होनेसे अन्य धन उतने उपयोगी नहीं हो सकते । इसीलिये वेदमें इन सात शक्तियोंको ही मुख्य धन कहा है । इस विषयका और एक अलंकार देखिये—

(६०) सात घोड़े ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं
हविष्मंत ईळते सप्तवाजिनम् ॥

(६७८, ऋ १०।१२२।४)

‘ यज्ञका केतु, पहला पुरोहित (सप्त-वाजिनं) सात घोड़ोंसे युक्त है, उसीकी प्रशंसा करते हैं । ’ इस मंत्रमें ‘ सप्तवाजी ’ शब्द है । ‘ वाज ’ शब्दका अर्थ बल है और ‘ वाजी ’ शब्दका अर्थ घोड़ा है । ‘ सप्तवाजी ’ शब्दका अर्थ सात प्रकारके बलोंसे युक्त, अथवा सात घोड़ोंसे युक्त है । पूर्व वर्णन के साथ विचार करनेपर पता लग जायगा कि, ये ‘ सात घोड़े ’ कौनसे हैं । इस अग्निके रथको येही सात घोड़े जोते हैं । सूर्यके रथको जो सात घोड़े जोते हैं, वेभी येही हैं । सात ऋषि, सात किरण, सात घोड़े, सात नदियाँ, सात प्रवाह, सात रत्न, सात धातु, ये सर्व भिन्न नाम पूर्वोक्त सात शक्तियोंके ही वाचक हैं । ये ही अग्निकी सात बहिनें हैं—

(६१) सात बहिनें ।

सप्त स्वसूरुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व
उज्जभारा दशे कम् । अंतयेमे अंतरिक्षे
पुराजा इच्छन् वयिमविदत् पूषणस्य ॥

(१५१७, ऋ. १०।५।५)

‘ [वावशानः] इच्छा करनेवाला विद्वान् [अरुषीः] गमनशील [सप्त स्वसृः] सात बहिनों को [मध्वः] मीठपनका [कं दशे] सुख देखनेके लिये [उत् जभार] ऊपर उठाता है । यह [पुरा जाः] पुराणपुरुष [पूषणस्य वात्रि] पूषाके रूपकी इच्छा करता हुआ अंतरिक्ष में [अंतःयेमे] अदरसे नियमन करता है और [अविदत्] प्राप्त करता है । ’

इस मंत्रमें ‘ सात बहिनों ’ का वर्णन है । एक मूल-स्थानसे जो सात शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, उनकी सात बहिनें कहा है । एक मातासे भाईबहिनोंकी उत्पत्ति होती है । यहां भी परमात्मा, परम पिता और प्रकृति परम माता हैं । वहांसे ही पूर्वोक्त सातों शक्तियोंकी उत्पत्ति है, इसलिये परमात्माका अमृत पुत्र आत्मा है और पूर्वोक्त सातों शक्तियाँ उसकी बहिनें हैं । अलंकार इसी रीतिसे स्पष्ट हो जाता है । ये ही सात हवन करनेवाले ऋत्विज हैं, इसका वर्णन देखिये—

(६२) सात ऋत्विज् ।

सप्त होतारस्तमिदीळते स्वाग्ने ।

[१४०४, ऋ. ८।६०।१६]

‘ हे अग्ने ! [सप्त होतारः] सात ऋत्विज् तेरी ही स्तुति करते हैं । ’ ‘ होता ’ उसको कहते हैं कि जो हवन करता है । यहां आत्माग्निमें पूर्वोक्त सात इंद्रियाँ हवन कर रहीं हैं । नेत्र रूपका हवन करता है, कान शब्दोंका हवन करता है । इसी प्रकार अन्यान्य ज्ञानेन्द्रियाँ अन्यान्य ज्ञानोंकी आहुतियाँ आत्मातक पहुंचाती हैं, मानो, आत्माके हवनकुंडसे ये सात इंद्रियगणरूपी ऋत्विज् अपने अपने विषयकी आहुतियाँ ही डाल रहे हैं और इस प्रकारका यह हवन इस यज्ञमंडपमें सौ वर्षतक चलना है । शतसांवत्सरिक यज्ञ यही है । इसके ये होता गण हैं । ये ही ऋत्विज्-सप्त ऋषि नामसे अन्य स्थानमें कहे गये हैं । सप्त ऋषि, सप्त होता, सप्त ऋत्विजः, सप्त मानुषः, आदि शब्द यही भाव बना रहे हैं । इसके साथ अब निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(६३) पांच और दो दोहनकर्ता ।

दुहन्ति सत्तैकामुप द्वा पंच सृजतः ।

तीर्थे लिधोरधि स्वरे ॥ (१४३०; ऋ. ८।७२।७)

‘ [एकां] एक गौ माताका [सप्त दुहन्ति] सात दोहन कर रहे हैं । उनमें [द्वौ] दो [पच] अन्य पांचोको [उप सृजतः] प्रेरित करते हैं । [अधि स्वरे] स्वरयुक्त सिंधुके तीर्थ पर यह हो रहा है । ’

एक गौका सात ग्वालियों द्वारा दोहन निःसंदेह आलंकारिक है । इसमें भी दो ग्वालिये अन्य पांचको प्रेरणा करनेवाले हैं । यह सब बात अपना पूर्वोक्त अलंकार स्वीकार करनेपर ठीक प्रकारसे ध्यानमें आ सकती है । पूर्वोक्त सातोंमें [१] मन तथा [२] अहंकार ये दो अन्य इंद्रियशक्तियोंके प्रेरक हैं; [१] श्रोत्र, [२] त्वक्, [३] चक्षु, [४] रसना और [५] घ्राण ये पांच उन दोनों द्वारा प्रेरित होकर अपना अपना दोहन का कार्य कर रहे हैं । आत्मारूपी एक गौ से ये सात ग्वालिये अपने लिये अलग अलग प्रकारका दूध निचोड़ रहे हैं, और एक ही वह गाय इनमेंसे प्रत्येक को भिन्न प्रकारका दूध दे रही है !!!

अब विचार कीजिये, वेदमें एक ही बात कितने भिन्न अलंकारोंसे वर्णन की है । ‘सात’ संख्याका अलंकार अग्नि के विषयमें इतना ही नहीं है प्रत्युत बहुत ही प्रकारका है; यहां केवल नमूनेके लिये थोड़ेसे ही उदाहरण दिये हैं । पाठक विचार करके इन उदाहरणोंके मननसे अन्य अलंकारोंको भी जान सकते हैं ।

तात्पर्य, इन सब विभिन्न अलंकारोंके वर्णनसे वेदको एक आत्मा का ही वर्णन करना है । उसके जितने पहलू हो सकते हैं, उन सब पहलुओंके द्वारा विभिन्न अलंकारोंमें वेद वर्णन करता है । इसलिये पाठकोंको उचित है कि, वे सबसे प्रथम वैदिक शैलीको देखकर वेदमंत्रोंका मनन करे और वेदके गंभीर आशयको समझनेका यत्न करे । एक समय वेदकी मूलभूत कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आगई तो पश्चात् वेदका कोई भी वर्णन समझनेमें कठिनता नहीं रहेगी ।

(६४) तनूनपात् अग्नि ।

अब ‘तनूनपात्’ शब्दका विचार करिये । यह शब्द अग्निका वाचक है । इसका अर्थ (तनू+न+पात्) शरी-

रोंको न गिरानेवाला होता है । जिसके रहनेसे शरीरोंका पतन नहीं होता और जिसके न होनेसे शरीरोंका पतन होता है । पाठकोंके ध्यानमें यह बात आ गई होगी कि, यहां स्थूल सूक्ष्म कारण नामक शरीरोंको धारण करनेवाला और उन शरीरोंपर कार्य करनेवाला आत्माही है । इसलिये ‘तनू-न-पात्’ अग्नि निःसंदेह ‘आत्माऽग्नि’ है । इस समयतक अग्निवाचक मंत्रोंका जो विचार किया गया है, उसके साथ यह अर्थ कितना ठीक सजता है, इसकी सत्यता पाठक यहां अवश्य देखें और वेदमें अग्नि शब्दसे आत्माग्निका भाव ही मुख्यतः लेना है, यह बात यहां ठीक समझनेका यत्न करे । क्या कि यह शब्द मुख्यतः इसी अर्थमें प्रयुक्त होता है । गौण वृत्तिसे इसके तथा अन्य शब्दोंके भाव विविध होनेपर भी मुख्य अर्थको भूलना कदापि उचित नहीं है । यह ‘तनू-न-पात्’ शब्द निम्न मंत्रमें देखिये—

मधुमंतं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे ॥

अद्या कृणुहि वीतये ॥ [१९०७; ऋ. १।१३।२]

‘हे [तनू-न-पात्] शरीरोंको न गिरानेवाले [कवे] शब्दके प्रेरक अग्ने ! तू मधुयुक्त यज्ञ आज ही देवोंके अंदर [वीतये] रक्षण के लिये [कृणुहि] कर ।’

देवोंके अंदर ‘शरीरोंको न गिरानेवाले आत्माग्नि’ द्वारा होनेवाले इस शतसांवत्सरिक महायज्ञका वर्णन ही विभिन्न रूपसे स्थानस्थानपर है । यह बात इस समयतक अनेक मंत्रोंके उदाहरणोंसे पूर्व स्थलमें बताई गई है । वही बात इस मंत्रमें ‘तनू-न-पात्’ देवताके भिषसे वर्णन की गई है ।

यह तनूनपात् शब्द अग्निदेवका वास्तविक स्वरूप व्यक्त कर रहा है । जितने दिन यह ‘तनू+न+पात्’ आत्माग्नि इस शरीरमें निवास करता है, उतने दिन ही यह शरीर सचेतन रहता है और जीवित रहता है । इसके चले जानेके पश्चात् इस शरीरका ऐसा पतन होता है कि, कोई इसको पास रखना नहीं चाहते । इस से स्पष्ट होता है कि यही आत्माग्नि तनूको न गिरानेवाला ‘तनू-न-पात्’ अग्नि है । इस तनूनपात् आत्माग्निका शरीरमें अवस्थान निम्न लिखित प्रकार है—

अपनी शरीर की रचनाका संबन्ध यज्ञशालासे वैसा है, यह बात विचार करनेसे ज्ञात हो सकती है । यज्ञशाला के विविध अग्निकुंडोंके स्थान अपने शरीरके आधारपर रचे गए हैं । इसका स्पष्टीकरण सहजहीसे हो सकता है । अपने शरीरमें आत्मा, हृदय, मस्तिष्क, प्रजनन आदिके स्थान हैं । वही स्थान हवनकुंडोंके आकारमें यज्ञशालामें बताये जाते हैं । अपने शरीरमें आत्माको आधार रखकर जो घटनाएं होती हैं, उनकोही यज्ञशालामें विविध अग्नियोंके नामसे बताया है । मानो यज्ञशाला एक अपने देहका ही नकशा है । जिस प्रकार पाठशालाओंमें देशोंके नक्शे होते हैं और उनमें ग्राम, प्रांत, नदी, पर्वत, आदि बताये जाते हैं उसी प्रकार शरीरका नक्शा यज्ञशालाके रूपसे बताया गया है । जो बातें अव्यक्त रूप से शरीर में हो रही हैं, वही बातें यज्ञशाला में हवनरूप से की जाती हैं ।

(१) मुखमें अन्न डालनेसे वह पेटमें जाता है और वहां उसका जठराग्निद्वारा पचन होता है । आहवनीय अग्नि के हवनकुंड में भी उसी अन्न का हवन किया जाता है । अग्नि प्रदीप्त हुआ, तो हवन अच्छा होता है, प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में किया हुआ हवन धूँव को बढ़ाता है । उसी प्रकार जठराग्नि प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में खाये हुए अन्न से पेट में वायु कुपित होता है और अग्निमांघ्र, डकार, अपान वायु आदि होता है ।

(२) गार्हपत्याग्नि वास्तविक स्त्रीके योनिस्थानमें है । इसके विशेष वर्णन की यहाँ आवश्यकता नहीं है । पाठक अपनी विचारशक्तिसेही इसको जान सकते हैं ।

(३) उत्तर वेदीमें ज्ञानाग्नि है, जो मस्तिष्क नामसे प्रसिद्ध है । इसमें कुछ मनोविकारोंका हवन होता है । पाशवीय भावनाओंका हवन यहाँ होता है ।

इस प्रकार सारांशरूपसे यज्ञशालाका संबन्ध अपने शरीर के व्यापारों से है । पाठक विशेष विचार करके यह जान सकते हैं । यहाँ विशेष विचार करनेके लिये स्थान नहीं है, परन्तु प्रसंग प्राप्त होनेके कारण संक्षेपसे लिखना पड़ा है ।

यज्ञशालाकी रचना शरीरकी घटनापर हुई है, यह ज्ञान हो जानेके पश्चात् 'आत्माग्नि ही तनूनपात् अग्नि है' यह बात स्पष्ट हो जाती है और पूर्वोक्त सब वर्णन ठीक प्रकार ध्यानमें आ सकता है । इसका ठीक ठीक ज्ञान होनेके

पश्चात् ही वैदिक यज्ञोंका तत्त्वज्ञान ठीक प्रकार समझ में आ सकता है, इसलिए पाठकोंसे प्रार्थना है, कि वे इस बात को विशेष रूपसे समझनेका यत्न करें ।

उपनिषदोंमें भी इस शारीरयज्ञका वर्णन इसी प्रकार है, देखिए—

तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी० ॥

(नारायणोपनिषद् ८०)

पुरुषो धाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि

तत्प्रातःसवनम् ॥ (छां. उ. ३, १६, १)

'इस यज्ञका यजमान आत्मा है और यजमानपत्नी श्रद्धा है । पुरुषही यज्ञ है, उसकी चौबीस वर्षकी आयु प्रातःसवन है ।' इत्यादि वचनोंसे स्पष्ट हो जाता है कि, इस शरीरमें जो शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, वही सत्य यज्ञ है और उसीका यजमान आत्मा और यजमानपत्नी श्रद्धाबुद्धि है और इसी यज्ञका प्रातःसवन प्रारंभ की २४ वर्षोंकी आयु है । इस यज्ञकी दृष्टिसेही वेदके मंत्रोंको हमें देखना चाहिए ।

इस से पूर्व जो विचार किया है, वह इसी दृष्टि से किया है, इस से पाठकों के मन में बात आ गई होगी कि, यही उपनिषदों की दृष्टि होने से सत्यदृष्टि है । और इसी सत्य दृष्टि से वेद का अर्थ देखना चाहिये ।

(६५) अन्य बातों का उपदेश ।

इस से कोई यह न समझे कि, वेद में अध्यात्म से भिन्न कोई अन्य बात ही नहीं है । अन्य बातें बहुत ही हैं, उन का प्रसंगवशात् विचार अवश्य होगा । परन्तु पूर्वोक्त विवरण से यही बताया है कि, ये देवतावाचक शब्द मुख्य अर्थ में किस प्रकार आत्मा का भाव बताते हैं । स्थान स्थान के सूक्तों में परमात्मा ब्रह्म, राजा, विद्वान् शूर आदि प्रकरणों के अनुसार अग्निशब्द ही उक्त पदार्थों का वाचक है । इस बात के उदाहरण भी यहाँ विशेष रूप से देने की कोई आवश्यकता ही नहीं है ।

'चत्वारि शृंगाः' यह ऋग्वेद का अग्निदेवता का मंत्र भगवान् पतंजलि महामुनिने 'शब्द' पर लगाया है । इस से 'अग्नि' देवता का एक अर्थ 'शब्द' है, यह बात स्पष्ट होती है । यह मंत्र (ऋ. ४-५८ ३) में

हैं और इस का अध्यात्मविषयक अर्थ इसी लेख में दिया ही है। यहाँ इतना ही बताना है कि, जिस प्रकार इस का अध्यात्मविषयक अर्थ होने पर 'शब्द' विषयक अर्थ हटा नहीं है, उसी प्रकार अन्यान्य मंत्रों के विषय में पाठकों को समझना चाहिये। 'अग्नि' शब्द परमात्म-वाचक भी है, देखिये—

(६६) परम आत्मानि ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । स नो मह्यादितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ (२७; ऋ १-२४-२)

'हम (अमृतानां प्रथमस्य) अमर देवों में पहले (देवस्य अग्ने.) अग्निदेव का अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का (चारु नाम) सुन्दर नाम (मनामहे) मन में लाते हैं। वही हम सब को (अदितये) प्रकृति में पुनः डालता है और जिस से हम माता-पिता को देखते हैं।'

इस मंत्र में 'सब से पहले अग्निदेव' अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का वर्णन स्पष्ट है। इसी प्रकार अन्यान्य पदार्थों के वाचक स्पष्ट मन्त्र अनेक हैं। उन का यहाँ भूमिका में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन का स्पष्ट विचार सूक्तों के विचार करने के समय ठीक प्रकार किया जायगा। यहाँ इस भूमिका में अग्निमन्त्रों का आध्यात्मिक

विचार करने की राति इसलिये विशेष रूप से बताई है कि साधारण पाठक 'अग्नि' शब्द से 'आग' का ही ग्रहण करते हैं और वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते हैं, इसलिये अग्नि-देवता का मुख्य अध्यात्म स्वरूप जानने की इस स्थानपर विशेष आवश्यकता है। उपनिषदोंमें यही बात स्थान स्थानपर कही है, देखिए—

अयमग्निवैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषे येनेदमन्नं पच्यते, यदिदमद्यते ॥ (बृ उ ५।९)

'यही वैश्वानर अग्नि है, जो इस मनुष्यशरीर के अन्दर है, जो खाये हुए भक्षक पचन करता है।' यहाँ वैश्वानर अग्निका आध्यात्मिक रूप बताया है, वैश्वानर अग्निका आधिभौतिक रूप इसी लेखके प्रारंभमें बताया है। वहीं उसको पाठक देख सकते हैं। इसी प्रकार अग्निके भिन्न-भिन्न स्वरूप का विचार वेदमें स्थानस्थानके मन्त्रोंमें है और उसको उसी प्रकार उस उस स्थानपर समझना चाहिए।

(६७) सारांश ।

सारांश यह है कि, इस भूमिकामें जो विचार किया है, वह बिलकुल नया नहीं है। ब्राह्मणग्रंथोंमें, उपनिषदोंमें तथा संपूर्ण आर्ष वाङ्मयमें यही विचार स्थानस्थानपर है। उसको स्पष्ट शब्दों में यहाँ एकत्रित किया है। इसका अधिक विचार पाठक भी अपनी स्वतंत्र बुद्धिसे करें और वेदके अर्थकी अधिक खोज करें।

अग्निदेवताके विचार करनेकी दिशा ।

ऋग्वेद का प्रथम सूक्त 'वैश्वामित्रमधुच्छंदा' ऋषिवा देखा हुआ है। इसी प्रकार का गायत्री 'विश्वामित्र' ऋषिका देखा हुआ एक सूक्त तृतीय मंडलमें है। दोनों सूक्त 'अग्नि' देवता के हैं और दोनों में ९ मन्त्र हैं, तथा शब्दों और वाक्यों की समानता भी बहुत है। सबसे प्रथम यह समानता देखने योग्य है—

वैश्वामित्रो मधुच्छंदाः (ऋ० १।१)

(१) अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृ-
त्विजं होतारं ॥ १ ॥

(२) गोपामृतस्य दीदिवि ॥ वर्धमानं स्व दमे ॥ ८ ॥

(३) राजन्तमध्वराणां ॥ ८ ॥

(४) देवो देवेभिरागमत् ॥ ८ ॥

गायिनो विश्वामित्रः (ऋ० ३।१०)

त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने होतारमीळते ॥ २ ॥

गोपा ऋतस्य दीदिवि स्वे दमे ॥ २ ॥

स केतुरध्वराणाम् ॥ ४ ॥

अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ ४ ॥

इस प्रकार देवताकी स्तुतिमें अनेक स्थानोंमें समानता है। शब्द, वाक्य और मन्त्रभाग तथा पूर्ण मन्त्र एक देवता

के वर्णनमें तथा भिन्न देवताओं के वर्णन में भी पुनःपुनः वैसेके वैसेही आ गये हैं। यह समानता यहाँ प्रथमतः

देखने का उद्देश्य इतना ही है कि, मन्त्रों का अर्थ निश्चित करने के लिए इस समानताके देखनेसे बहुत सहायता होती है ।

अग्नि का विचार करनेके पूर्व 'अग्नि' के विशेषणरूप जो शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, वे किस पदार्थके विशेषतया बोधक हो सकते हैं, इसका प्रथम विचार करना आवश्यक है । 'अग्नि' शब्दसे लोकभाषामें 'आग' का बोध होता है, परन्तु इस सूक्तमें केवल 'आग' का भावही है, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि कई शब्दोंकी सार्थकता 'आग' अर्थ लेनेसे नहीं होती है । देखिये—

(१) रत्न-धा-तमः = रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा' होता है, और अनेक प्रकारके रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा+तम' कहलाता है । प्रत्यक्ष देखा जाय, तो यह 'आग' स्वयं अपने शरीरपर अनेक रत्नोंका धारण करती हुई दिखाई नहीं देती, इसलिए यह शब्द विशेष कर किसी अन्य पदार्थ की सूचना दे रहा है, ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है ।

(२) कविऋतुः = 'कवि' शब्द केवल 'भाग' का गुण बतानेके लिए प्रयुक्त हुआ है, ऐसा मानना असंभव है । क्योंकि भाग में कवित्वकी प्रत्यक्षता नहीं है । कवि वह होता है कि, जो अतीव्रिय बातोंको शब्दोंके द्वारा प्रकट करता है । यह बात 'भाग' में नहीं है । 'ऋतु' शब्द 'प्रज्ञा' वाचक मानते हैं, यह भाव भी 'भाग' में नहीं है । इसलिए मुख्य दृष्टिसे 'कवि+ऋतु' शब्द आगका सूचक यहां नहीं हो सकता । कवि मानव ही होगा । ऋतु भी मानव ही करता है ।

(३) सत्यः = यह शब्द भी त्रिकालाबाधित तत्त्वका बोधक है । इसलिए 'आग' का बोधक नहीं है, क्योंकि भाग बुझ जानी है और तीनों कालोंमें एक जैसी नहीं रहती ।

(४) पुरोहित, ऋत्विज्, होता = ये शब्द भी मुख्य दृष्टिसे आगके बोधक नहीं हो सकते । ये मानवोंके बोधक हैं ।

इस प्रकार ये विशेषणरूप शब्द 'आग' का बोध नहीं कराते, परन्तु किसी अन्य पदार्थमें ये अन्वयधक होते हैं । जिस पदार्थमें सूक्तके सब शब्द सुसंगत हो सकते हैं, वही पदार्थ सूक्त का 'मुख्य देवता' है । अन्य भाव गौण दृष्टि

से मानना न मानना योजक की योजना पर ही अवलंबित है । यहां हमें देखना है कि, इस सूक्तमें मुख्य दृष्टिसे किस का वर्णन हो रहा है और किस रीतिसे गौण दृष्टिमें अन्य पदार्थोंका बोध हो सकता है । इसका निश्चय करनेके लिए इस सूक्तमें निम्न दो शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं—

(५) अंग = 'अंग' शब्द का अर्थ 'अवयव' है । 'शरीर, अवयव, शरीरके अंग अथवा भाग' इस अर्थमें मुख्यतः यह शब्द प्रयुक्त होता है । हर एक प्राणिमात्रको अपना शरीर अथवा अपने शरीर के अंग अत्यंत प्रिय होते हैं, इसलिए अवयववाचक 'अंग' शब्दका 'प्रिय' ऐसा अर्थ पीछेसे ढंने लगा । यदि इस सूक्तका 'अंग' शब्द अपने ही निज 'अवयव' का बोधक माना जायगा, तो मानना पड़ेगा कि, इस सूक्तमें वर्णित 'अग्नि' अपने ही शरीरमें निज अवयवरूप अथवा अपना अंगभूत ही कोई पदार्थ है, जहां यह 'अंग' शब्द पूर्ण रीतिसे सार्थक हो सकता है । इस विषय में निम्नलिखित शब्द विशेष सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेयोग्य हैं—

(६) अंगिराः = (अंगि+रस) = अपने शरीरके अंगोंमें जो एक जीवनरूप रस होता है, उसको 'अंगीय-रस' कहते हैं । यही जीवनरूप अंग-रस 'अंगि+रस्' शब्दसे बताया जाता है । इस विषय में ब्राह्मण ग्रंथों का कथन देखनेयोग्य है—

(१) तद्देवा रेतः प्राजनयन्, ततोऽंगाराः समभवन्, अंगारेभ्योऽगिरसः । (शं० ब्रा० ४।५।१।८)

(२) तं वा एतं अंगरसं संतं अंगिरा इत्याचक्षते । (गो० ब्रा० पू० १।७)

(३) योऽगिरसः स रसः ये अथर्वाणः...तद्देवजं । तद्मृतं ... तद्, ब्रह्म । (गो० ब्रा० पू० ३।४)

" (१) देवोंने रेत उत्पन्न किया, उससे अंगार (जलते हुए कोयले) उत्पन्न हुए, उनसे अगिरस हुए हैं । (२) जो अंग+रस है, वही अंगिर (अंगि-रस्) है । (३) जो अंगिरस् है, वह रस है, यही अथर्वा है और यही औषधी ... अमृत ... और ब्रह्म है । "

इस कथन से स्पष्ट हो रहा है कि "अंगि-रस्" मुख्य-तया शरीर का जीवनरस है । क्योंकि जो यह जीवनरस शरीरके अंगों और अवयवों में है, वही अमृत रस है, उर्म

में प्रकृति की शक्ति रहती है। इसलिये जबतक यह जीवन-रस शरीर में ठीक अवस्था में रहता है, तबतक ही आरोग्य रहता है। इसीलिये इस रस को गोपथ-ब्राह्मण में 'भेषज' अर्थात् दोषनिवारक औषधि कहा है। अंगिरस का यह मूल स्वरूप है। और यह अपने शरीर के अंगों में ही व्यापक है, इतनाही नहीं, परन्तु अपना अंगरूप ही सख है। इस प्रकार जो जीवन का मन्त्र 'अंगिरस् और अंग' शब्दों से बनाया जाता है, वही इस सूक्तका प्रतिपाद्य विषय मुख्य रूप से है। इस अर्थ को ध्यान में धरनेसे सूक्त का मुख्यार्थ ध्यान में आ सकता है।

मुख्य दृष्टि और गौण दृष्टि, ऐसी दो दृष्टियोंसे वेदका अर्थ देखना होता है। मुख्य प्रतिपाद्य विषय में मन्त्र के संपूर्ण शब्द पूर्णतया सगत होते हैं और गौण विषय में लक्षणा करके, अर्थ का संकोच करके, केवल भाव ही देखा जाता है। इन दो प्रकार के अर्थों का अन्य वर्गीकरण, जो वैदिक सारस्वत में सुप्रसिद्ध है, यहां अवश्य देखना चाहिये। वेद-मंत्रोंका अर्थ—(१) आध्यात्मिक, (२) आधिभौतिक, और (३) आधिदैविक ज्ञानक्षेत्रसे भिन्न भिन्न होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र वह है कि, जो आत्मासे लेकर स्थूल देह-तक फैला है, आधिभौतिक क्षेत्र वह है कि, जो प्राणिमात्रके सघात में फैला है, तथा आधिदैविक क्षेत्र वह है कि जो संपूर्ण जगत् की स्थिर चर समष्टिमें व्यापक है। उक्त तीनों क्षेत्रोंका भाव बतानेवाला सक्षिप्त और बालबोध शब्द ' (१) व्यक्ति, (२) समाज और (३) जगत् ' येही हैं। यद्यपि इनसे संपूर्ण पूर्वोक्त क्षेत्रों का बोध नहीं होता, तथापि उनका साधारण तात्पर्य इन शब्दोंसे जाना जा सकता है।

'अंग, अंगरस्' आदि शब्दोंसे बोधित होनेवाला जो अग्नि है, वह 'आग' नहीं है, प्रत्युत हमारे शरीर के अंगों में कार्य करनेवाला जीवनरूप अंगरस ही है, इस बातका सूचना इससे पूर्व दी गई है। शरीरका 'अंगरस' व्यक्तिगत होनेसे आध्यात्मिक पदार्थ है। इसीका आधि-भौतिक अर्थात् सामाजिक किंवा राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिनिधि 'राष्ट्रीय जीवन' उत्पन्न करनेवाला संघ होना स्वाभाविक है। यही 'पंचजन, वैश्वानर या विश्वमानुष' है। तथा आधिदैविक क्षेत्र में इसीका रूप अग्नि अथवा आगमें

देखा जा सकता है। इस से स्पष्ट हुआ है कि, यहां का 'अग्नि' शब्द किस क्षेत्र में किस पदार्थ का बोधक है। यद्यपि सूक्त का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'जीवनाग्नि' है, तथापि 'राष्ट्रीय जीवनाग्नि' और 'प्रांशुभौतिक अग्नि' भी उक्त प्रकार बोधित होते हैं।

प्रत्येक प्राणिमात्र के शरीर में जो जीवनरस है, वही उस व्यक्ति का सच्चा कल्याण करता है। इसलिये यह जीवनशक्ति संपूर्ण अन्य शक्तियों की अपेक्षा सब से अधिक कल्याण करनेवाली है। इसी प्रकार जगत् के व्यवहार में अग्नि का महत्त्व है। इस आग्नेय शक्ति का यह कार्य विचार की दृष्टि से सर्वत्र देखनेयोग्य है। इसलिये वेद में अन्यत्र कहा है—

- (१) अग्निमीडिष्य यंतुरम् ॥ (ऋ. ८.१९-२)
 (२) अग्निमीडिष्यावसे ॥ (ऋ. ८.७१-१४)
 (३) अग्निमीडीत मर्यः ॥ (ऋ. ५.२१-४)
 (४) अग्निमीडीताध्वरेहविष्मान् ॥ ऋ. ६-१६-४६
 (५) अग्निमीडे कविकृतुम् ॥ (ऋ. ३-२७-१९)
 (६) अग्निमीडेभ्यं कविम् ॥ (ऋ. ५.१४-५)
 (७) अग्निमीडे पूर्वचिंस्ति नमोभिः ॥

(वा. य. १३-४३)

- (८) अग्निमीडेभुजां यविष्ठम् ॥ (ऋ. १०-२०-२)
 (९) अग्निमीडे व्यष्टिषु ॥ (ऋ. १-४४-४)

' (१) नियामक अग्नि की प्रशंसा कर, (२) अपने संरक्षण के लिये अग्नि का वर्णन कर, (३) मर्य अग्नि की स्तुति करे, (४) यज्ञ में हविर्द्रव्य लेनेवाला अग्नि का महत्त्व कहे, (५) कवि और क्रतुरूप अग्नि का वर्णन करता हूं, (६) कवि अग्नि वर्णनीय है, (७) पहिले प्रदीप्त अग्नि को नमस्कारों या भजनोंद्वारा बढ़ाता हूं, (८) (भुजां) भोग करनेवालों में (यविष्ठं) युष्ठा अग्नि का वर्णन करता हूं, (९) (व्यष्टिषु) उदय के समयों में अग्नि का वर्णन करता हूं । '

ये मन्त्रभाग बता रहे हैं कि आग्नेय शक्ति का महत्त्व कितना है। इन मंत्रों का महत्त्व उस समय ध्यान में आ सकता है कि, जिस समय तीनों क्षेत्रों में अग्निस्वरूप का ठीक ठीक पता लग जाय। उक्त मन्त्रभागों में स्पष्ट बताया है कि, यह अग्नि (यंतुर) नियामक, व्यवस्थापक

अथवा प्रवधकर्ता है, (कवि) शब्दशास्त्र में प्रवीण है, (भुजां यविष्ठं) भोग करनेवालों में युवा है, तथा (वृष्टिषु) उदय के समय में इस का चिंतन किया जाता है । ये शब्द अग्नि का स्वरूप व्यक्त कर सकते हैं । अग्नि की जो प्रशंसा की जाती है, वह अपने (अवसे) संरक्षण के लिये ही है, क्योंकि यही अपना सच्चा संरक्षण करता है । इतने वर्णन से अग्नि के स्वरूप का थोड़ासा निश्चय हुआ है और उस का पुरोहित होने का भाव भी ध्यान में आ गया है । अब देखना है कि, ' ईडे ' शब्द का वास्तविक तात्पर्य क्या है । क्योंकि अग्नि के साथ ' ईडे ' शब्द का प्रयोग कई मंत्र में हुआ है और यह शब्द विशेष हेतु से ही प्रयुक्त होता है । प्रायः इस का अर्थ ' प्रशंसा, स्तुति, वर्णन ' आदि करते हैं और हमने भी ये ही अर्थ ऊपर रखे हैं, परन्तु इस का विशेष भाव यहां है । यह भाव निम्न लिखित मंत्रों से व्यक्त हो सकता है—

(१) ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ (क. १०-५३ २)

(२) तं हि शश्वत ईळते स्रुचा देवं घृतश्रुता
अग्निं हव्याय वोळहवे ॥ (क. ५-१४-३)

(३) देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ (क. ५ २८ १)

(४) को अग्निमीडे हविषा घृतेन ॥ (क. १-८४ १८)

(१) (आज्येन) घी के साथ पूजनीयों की पूजा करेंगे, (२) (घृतश्रुता स्रुचा) घीवाले चमस से अग्नि-देव की पूजा करते हैं, (३) घी से देवों की पूजा होती है, (४) घृतयुक्त द्रवि से कौन अग्नि की पूजा करता है ?

इन मंत्रभागों में ' ईड् ' के साथ ' आज्य ' का संबंध है । अर्थात् इस के विचार से पता लगेगा कि, ' ईडे ' शब्द का अर्थ केवल स्तुति नहीं है, परन्तु घी, (द्रवि) अन्न आदि के साथ अर्पण का संबंध है । यह भाव ध्यान में धरकर निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(१) अग्निमीडे पूर्वचित्ति नमोभिः ॥ (वा. य. १३-४१)

(२) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ (क. १०-२०-२)

(३) घृता चिरीडानो वह्निर्मसा ॥ (अ. ५ २७-४)

(१) (नमोभिः) अर्चोंद्वारा अग्नि की पूजा करता हूँ, (२) भोग करनेवालों में युवा अग्नि की अर्थात् जवान होने के कारण अधिक खानेवाले अग्नि की मैं पूजा करता हूँ, (३) घी और (नमसा) अन्न से अग्नि की पूजा होती है ।

इन मंत्रों में ' नम ' शब्द है, पूर्वमंत्रों के साथ इनका विचार करने से यहां ' नमः ' का अर्थ ' अन्न ' प्रतीत होता है । अन्न, वज्र और नमन ये तीन अर्थ ' नम ' के हैं । प्रसंगानुकूल यहां अन्न इष्ट है, क्योंकि उसके साथ घी भी है । अन्न और घीसे अग्नि की स्तुति, प्रशंसा आदि नहीं हो सकती, परन्तु उसका संवर्धन हो सकता है । इसलिये ' अग्निमीडे पुरोहित ' इन पदों का अर्थ मैं प्रत्यक्ष हितकर्ता (अग्नि) जीवनाग्नि का संवर्धन करता हूँ । ऐसा हो सकता है । घी और उत्तम अर्चों से जीवनशक्ति का संवर्धन होना संभवनीय भी है, इसलिये यह अर्थ प्रत्यक्ष अनुभव में भी आ सकता है ।

वेद में अन्न वाचक ' इष्, इप् ' ये शब्द हैं । नेरुक्त दृष्टिसे इनका संबंध ' इष्, इर, इरा, इडा, ईरा, इड्, ईडा, इळा, इला ' शब्दों के साथ है और इसीलिये इन सब शब्दों के अनेक अर्थों में ' अन्न ' भी एक अर्थ है । यही कारण है कि, अन्न और घी के साथ ही अग्नि की (ईडा) वधाई होती है, जो पूर्वोक्त मंत्रोंसे सूचित हो गई है । सब प्रणी अन्न चाहते हैं, इसलिये ' इप् (इच्छ) ' का अर्थ अन्न होता है और वही भाव ' ईड्, ईळ् ' आदि शब्दों में है । इससे ' ईडे ' का सम्बन्ध अन्नसे है, यह बात सिद्ध है ।

इस सूक्त में अग्नि शब्द का मुख्य स्वरूप जीवनाग्नि है, यह बात पूर्व ही बताई गई है । यह जीवनाग्नि घी और अन्न के योग्य सेवन से बढ़ सकता है, यह दीर्घायु-प्राप्ति का बोध यहां इस मंत्र में बताया गया है । यही जीवनाग्नि किंवा आत्मानि, अगिरम, अगारम, अमृत रम अथवा ब्राह्म रम है, जिसका योग्य अन्न और उत्तम घीद्वारा पोषण होता है, यही सूचना इस मंत्र में ' ईड् ' धातु कर रहा है । यह आध्यात्मिक जीवनाग्नि के पक्ष में अर्थ है । आधिभौतिक पक्ष में राष्ट्रीय जीवनाग्नि गुरु और उपाध्यायों के रूप में समाज में होता है, इनका सम्कार अन्न-दि-द्वारा करना योग्य है । आधिदैविक पक्ष में हवनीय अग्नि घी आदि हवनीय पदार्थों द्वारा बढ़ाया जाता है, इत्यादि भाव प्रत्येक समय में पाठक विचार की दृष्टिसे देखते जाय । वैयक्तिक और सामाजिक अर्थ मानवी उन्नति के साधक है और पांचभौतिक अग्निपरक अर्थ सामान्य दृष्टि से स्थूल उपासनाका साधक है । अब और दो पदों का विचार करेंगे—

‘ यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥
होतारं रत्नधातमम् ॥ ’

इन दोनों पादों में अग्नि का स्वरूप-वर्णन है । सब से प्रथम ‘ यज्ञस्य देवं ’ ये शब्द विशेष महत्व रखने के कारण यहां देखनेयोग्य हैं । यह अग्नि यज्ञ का देवता है । जिस यज्ञ का देवता अग्नि है, वह यज्ञ कौनसा है ? और कहाँ चल रहा है ? इस बात का पता लगाना आवश्यक है । इसका विचार करने के लिये निम्न वाक्य देखिये-

हृदयं यज्ञ ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीत्

यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ॥ (ऋ० १०।१८।१।२)

‘ जो (यज्ञस्य परमं धाम) यज्ञ का परम स्थान (गुहा) बुद्धि में, हृदय में है, वह (अति-हितं) अत्यंत गुप्त है, परन्तु ज्ञानी सत्पुरुष उस को (अविन्दन्ते) प्राप्त करते हैं । ’ इस मंत्र में यज्ञ का स्थान हृदय है, ऐसा स्पष्ट कहा है । हृदयस्थान में अत्यन्त गुप्त रूप से अर्थात् अदृश्य रीति से यह यज्ञ चल रहा है । जो विशेष ज्ञानी हैं, वे ही इस को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जानते हैं । अन्य साधारण मनुष्य जो स्थूल दृष्टि के हैं, वे इस यज्ञ को देख नहीं सकते, इस का कारण उन का अज्ञान ही है । ऐसे अज्ञानी मनुष्यों को व्यक्त रूप में बताने के लिये ही बाह्य यज्ञ रचा गया है, जो अग्नि में आहुतियां डाल कर किया जाता है । तात्पर्य यह कि, मनुष्य की हृदयरूप गुहा में सच्चा यज्ञ गुप्त रीति से चल रहा है, उस का नकशा ही यह बाह्य यज्ञ है । इस बात का विशेष वर्णन क्रमशः आगे आ जायगा । अब यहां इस का और भाव देखना है, इस-लिये निम्न लिखित वचन देखिये-

(१) पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्थि-
शति वर्षाणि तत्प्रातःसवनं... ॥ १ ॥ ...यानि
चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यंदिनं सवनं...
॥ ३ ॥ . यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयस-
वनं... ॥ ५ ॥ (छां. ३-१६)

(२) यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् ॥
(छां. ८-५-१)

(३) अहं ब्रह्माहं यज्ञः ॥ (बृ. १-५-१७)

(४) तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः,
श्रद्धा पत्नी, शरीरमिध्मं, उरो वेदिः, लोमानि बर्हिः,
वेदः शिखा, हृदयं यूपः, काम आज्यं, मन्युः पशुः,
तपोऽग्निः, दमः शमयिता, वाग्धोता, प्राण उद्गाता,
चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा, श्रोत्रमग्नीत्, यावद् ध्रियते
सा दीक्षा, यदश्नाति तद्धविः, यत्पिबति तदस्य
सोमपानं..... यन्मुखं तदाहवनीयः..... ॥

(५) स्वे शरीरे यज्ञं परिवर्तयामि ॥ (प्राणानि उ. २)

(६) अहं क्रतुरहं यज्ञः ॥ (भ. गी. ९-१६)

(७) बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि ॥ (गर्भ उ. ४ ;
प्राणानि उ. ४)

(८) वाग्वै यज्ञस्य होता, चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः,
... प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता, मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा
(बृ० ३-१-१)

‘ (१) मनुष्य का जीवन-संपूर्ण आयु-ही एक यज्ञ है, पहिले २४ वर्ष का प्रातःसवन है, मध्य के ४४ वर्ष माध्यं-दिन सवन है, अंत के ४८ वर्ष तृतीय सवन है । (२) जो यह यज्ञ है, वही ब्रह्मचर्य है । (३) मैं ब्रह्मा और मैं यज्ञ हूं । (४) इस ज्ञानी के यज्ञ में आत्मा यजमान, श्रद्धा यजमान पत्नी, शरीर इध्म, छाती वेदी, बाल बर्हि, वेद शिखा, हृदय यूप, वासना घी, क्रोध पशु, तप अग्नि, दम शमिता, वाणी होता, प्राण उद्गाता, चक्षु अध्वर्यु, मन ब्रह्मा, कान आग्नीध्र, व्रतपालन दीक्षा, भोजन हवि, जल सोमपान, मुख आहवनीय अग्नि है । (५) अपने शरीर में यज्ञ का परिवर्तन करता हूं । (६) मैं क्रतु और मैं ही यज्ञ हूं । (७) बुद्धि और इतर इंद्रिय यज्ञपात्र हैं । (८) यज्ञ का होता वाक् है, ... अध्वर्यु चक्षु है, ... उद्गाता प्राण है, ... और ब्रह्मा मन है । ’

यह यज्ञ का वर्णन विस्पष्ट रूप से बता रहा है कि, यह यज्ञ मनुष्य के अंदर ही हो रहा है । ‘ यज्ञ का स्थान हृदय में गुप्त है ’ (ऋ० १०।१८।१।२) इस ऋग्वेद के कथन का आशय ही उपनिषद्कारों ने उक्त प्रकार स्पष्ट किया है । यही यज्ञ यहां इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में है और इसी यज्ञ का देव (यज्ञस्य देवं) जो अग्नि है, वह हृदयस्थान में ही विराजमान है । अब पाठकों को पता लग सकता है कि, ‘ अंग, अंगिरस्’ आदि पदोंद्वारा किस

रहस्य का कथन हुआ है । हृदय में जो आत्मशक्ति है, वही यह अग्नि है । यहां हृदय में बैठकर यही आत्मा आयुष्य की समाप्ति तक यज्ञ कर रहा है । यही क्रतु है । प्रत्येक वर्ष एक एक क्रतु करता है और इस प्रकार १०० वर्षों में १०० क्रतु होनेके कारण इसीका नाम 'शतक्रतु' होता है । यह शतक्रतु आत्मा ही 'इंद्र' नाम से प्रसिद्ध है और इसी आत्मा शतक्रतु इंद्र की शक्ति 'इंद्रियों' में कार्य कर रही है । इस प्रकार यहां इंद्र और अग्नि एक ही हैं । इसीलिये कहा है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो
गरुत्मान् । एकं सस्त्रिंश बहूधा वदंत्यग्निं यमं
मातरिश्वानमाहुः ॥ (ऋ १।१६४।४६)

'एकही स्रष्टा का ज्ञानी लोग इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, सुरर्ण, यम, मातरिश्वा आदि विविध नामोंसे वर्णन करते हैं ।' जिस एक आत्माका विविध नामोंसे उक्त प्रकार वर्णन होता है, वही आत्माग्नि इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्तमें वर्णन किया गया है । और यही 'यज्ञका देव' है । क्योंकि जबतक यह इस शरीर के हृदयमंडप में रहकर यज्ञ करता है, तबतक ही यह यज्ञ चलता रहता है । जब यह चला जाता है, तब यज्ञ समाप्त हो जाता है । पूर्ण शतायु (अर्थात् १०८ अथवा १२० वर्ष की आयु) का उपभोग लेकर स्वेच्छा से यज्ञ समाप्त करके यह नला गया, तो कहा जाता है कि, 'इसका यज्ञ समाप्त हुआ,' परन्तु जब विविध व्याधियां इस पर आक्रमण करती हैं और इसका अकालमृत्यु होता है, तब कहा जाता है कि राक्षसोंने इस यज्ञ का विध्वंस किया । इस प्रकार बीच में अकाल में ही यज्ञ का विध्वंस न हो, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये । क्या ऐसा प्रबन्ध करना मनुष्य के अधीन है ? वेदादि शास्त्रों के परिशीलन से पता लग सकता है कि, योगादि साधन प्रारम्भ से ही यदि किये जायं, तो उक्त सिद्धि प्राप्त हो सकती है । इस हेतु से ही इस प्रथम मंत्र में कहा है कि, यही 'यज्ञ का देव' है । यदि इसका यथायोग्य सत्कार हुआ, तो यह यज्ञ की समाप्ति ठीक प्रकार कर सकेगा, अन्यथा चला जायगा । प्रत्येक मनुष्य को यह सूचना यहां मिल रही है कि, 'यज्ञका देव' अपने हृदय में है, उसको देखना चाहिये और इसका महत्त्व

जानना चाहिये । इस आध्यात्मिक दृष्टि से वेदमंत्रों का मनन करने से उक्त ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

यह 'यज्ञ का देव' है और यही 'ऋत्विज्' है । पाठकों को यहां ध्यानपूर्वक देखना चाहिये कि, यही यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही हुए हैं (१) यज्ञ का देव, (२) पुरोहित, (३) ऋत्विज्, (४) होता आदि सब बाह्य यज्ञ में अलग अलग होते हैं, परन्तु इस प्रथम मंत्र में वर्णित यज्ञ में ये सब एकही वस्तु में मिल गये हैं । जो यज्ञ का देव है, वही पुरोहित, ऋत्विज् और वही होता है । इतना ही नहीं प्रत्युत अन्य याजक भी वही एक है । इसीलिये इस मंत्र में वर्णन किया हुआ यज्ञ अध्यात्म-यज्ञ है और बाह्य यज्ञ नहीं है । क्योंकि अध्यात्मयज्ञ में आत्मा ही सब कुछ बनता है, वैसा इस बाह्य यज्ञ में नहीं हो सकता । इस बाह्य यज्ञ में यज्ञ का देव अन्य होता है तथा ऋत्विज्, यजमान आदि उससे भिन्न होते हैं । जहां अग्निष्टोमादि यज्ञ होते हैं, वहां देखने से पता लग सकता है कि, उक्त भिन्नता कितनी स्पष्ट होती है । परन्तु इस मंत्र में स्पष्ट रीति से कहा है कि, यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही है । अध्यात्म में यह एकता कैसी होती है देखिये ।

'वाणी, प्राण, चक्षु, मन, ये क्रमशः होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा हैं । (बृ० उ० ३।१।१-६)' जिन्होंने आत्मविचार किया है, उनको पता है कि, आत्मा की शक्ति ही वाणी, प्राण, चक्षु और मन में कार्य कर रही है, इसलिये आत्मा ही सब यज्ञ कर रहा है । वही यज्ञ का देव है, जिसकी उपासना यज्ञ में की जाती है, वही यजमान है, जो यज्ञ करता है, वही होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि ऋत्विज् है, जिन के द्वारा यज्ञ कराया जाता है । इस अवस्था में उपास्य और उपासक एक ही हो जाते हैं । यह भाव प्रथम मंत्र में वेदने दिया है । जो कहते हैं कि, अध्यात्मविद्या उपनिषदों में ही है और वेद में नहीं है, उनको इस मंत्र का विचार उक्त प्रकार अवश्य करना चाहिये । तब पता लगेगा कि वेदमंत्रों की गुप्त विद्या अब तक ही गूढ़ रही है और उसमें से थोड़ीसी उपनिषदों में प्रकट हो गई है । अस्तु । अब ऋत्विज आदि शक्तियों का तात्पर्य देखना चाहिये ।

क्रातिवृत् = (ऋतु + यज्) = जो ऋतु के अनुसार यज्ञ करता है । अध्यात्मदृष्टि से व्यक्ति में छः ऋतु हैं । (१) उत्पत्ति, (२) अस्तित्व, (३) वर्धन, (४) विपरिणाम, (५) क्षीणता और (६) नाश । जगत् के संपूर्ण पदार्थों में ये छः ऋतु हैं । कोई पदार्थ ऐसा नहीं है कि, जिसमें ये न हों । वनस्पति, पशु, पक्षी, तथा मनुष्य इनमें ये प्रत्यक्ष हैं । प्राणिमात्र में जो आत्मारिण है, वह इन छः ऋतुओं में प्राप्त ऋतु के अनुकूल व्यापार करता है । आत्मा की प्रेरणा से बालक पैदा होता है, वह अपने अस्तित्व के लिये प्रयत्न करता है, शरीरादि को बढ़ाता है, बढ़ते बढ़ते परिपक्व हो जाता है, पश्चात् क्षीणता का ऋतु प्रारम्भ होता है और अन्त में नाश होता है । इस प्रकार इस यज्ञ का प्रारम्भ और अंत आत्मा ही करता है । इन व्यापारों में आत्मा की शक्ति का कार्य देखना इष्ट है । वैदिक धर्म की यदि कोई विशेषता है, तो यही है कि, यह वैदिक धर्म हर एक स्थान पर आत्मा की शक्ति की जागृति कराता है । अस्तु ।

इस रीतिसे व्यक्तिके शरीरमें आत्मा का ऋतुओंके अनुकूल कार्य देखा जाता है, यही अध्यात्मज्ञान है । आत्माके संबंधसे जिसकी उत्पत्ति है, वह अध्यात्म (अधि+आत्मा) है । हर एक मनुष्य को ऋतुओं के अनुकूल कार्य करना चाहिए, यह उपदेश यहां मिलता है । बाल्य, तरुण्य और वार्धक्य इन तीन कालोंमें प्रत्येकमें दो ऋतु होनेसे आयुभर में छः ऋतु होते हैं । प्रत्येक ऋतुमें जो करनेयोग्य कर्तव्य होते हैं, उनको उत्तम प्रकार करना अत्यावश्यक है । कर्तव्य स्वयं अपने विषयमें जैसे होते हैं, वैसे ही दूसरोंके संबंधके कारण भी उत्पन्न होते हैं । ये सब ऋतुके अनुकूल ही करने चाहिए । मनुष्यके संपूर्ण आयुमें छः ऋतु है, उसी प्रकार सालमें छः ऋतु हैं । इन ऋतुओंके अनुसार अपनी ऋतुचर्या रखनेसे आयु, आरोग्य और बल प्राप्त होता है । इसी प्रकार मासमें और प्रतिदिन ऋतु होते हैं । इसका कोष्ठक यह है—

आयुमें ऋतु	वर्षमें ऋतु	मासमें ऋतु	दिनमें ऋतु
१०० वर्ष	१२ मास	३० दिन	२४ घण्टे
जन्म, बाल्य	वसंत	प्रतिपदा	प्रातःकाल
कुमारावस्था	ग्रीष्म	अष्टमी	मध्याह्न
तरुण्य	वर्षा	पूर्णिमा	सायंकाल

वृद्धता	शरद	षष्ठी	रात्रिका प्रारंभ
क्षीणावस्था	हेमंत	द्वादशी	मध्यरात्र
अंतसमय	शिशिर	अमावास्या	रात्रि का अंतिम प्रहर ।

इस प्रकार समय के छोटे या बड़े विभाग में ऋतुओंकी कल्पना की जाती है और प्रत्येक प्राप्त ऋतुकाल में व्यक्ति-विषयक, समाजविषयक और जगद्विषयक कर्तव्य अवश्य पालन होना चाहिए । यज्ञका देव आत्माप्रि है, वह ऋतुके अनुसार अपने कर्तव्य करता है, इसलिए हर एकको वैसा करना अत्यावश्यक है, जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्य योग्य रीतिसे करेगा, वही उन्नत होगा और जो न करेगा वह अवनत होगा । यज्ञका देव हमारा आदर्श है । उसके गुण, धर्म और कर्म वेदमंत्रों में इसलिए कहे हैं, कि उसके अनुसार मनुष्य कार्य करे और अपनी उन्नतिका साधन करे ।

आधिभौतिक दृष्टिसे सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र में भी राष्ट्रीय जीवनमें जो ऋतु होते हैं, उनके अनुसार हर एक को अपने कर्तव्य अवश्य करने चाहिए । राष्ट्रीय ऋतु-परिवर्तन राजकीय क्रांतिरूपसे इतिहासमें प्रसिद्ध है । इसी प्रकार अन्यान्य अवस्थामें राष्ट्रके और समाज, संघ अथवा जातिके ऋतु होते हैं । इन ऋतुओंके अनुकूल अपना कर्तव्य पालन करनेसे राष्ट्रीय उन्नति और कर्तव्यपालन न करनेसे राष्ट्रीय अवनति होती है । सब अन्य व्यवहारोंके विषयमें भी यही बात सनातन है । योग्य विचार करके इस विषय का अनुभव पाठक ले लें । जगत् के अन्दर जो सांवात्सरिक ऋतु परिवर्तन होता है अथवा राष्ट्रके तथा समाजके जीवन में ऋतुपरिवर्तन होता है, उसके अनुकूल मनुष्यमात्र को अपना आचरण करना आवश्यक ही है । जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्यपालन न करेगा, उसका नाश होगा । सामान्यतः बहुत से यज्ञयाग ऋतुसंधि में जो बीमाधियां होती हैं, उनके निवारण के लिए किए जाते हैं, इसलिए कहा है—

भैषज्ययज्ञा वा पते । तस्मादृतुसंधिषु प्रयुज्यन्ते ।

ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते (गो. उ. प्र. १-१९)

‘ औषधियोंके ही ये यज्ञ हैं, इसलिए ऋतुके संधिसमय में ये किए जाते हैं, क्योंकि ऋतुसंधिमें व्याधियां होती हैं । ’ इस प्रकार यह आधिदैविक दृष्टिसे विचार हुआ है ।

पाठक विचार करके इससे अधिक बोध ले ले ।

होता = इस शब्दका अर्थ दाता, आदाता और आह्वानकर्ता है । देनेवाला, लेनेवाला और बुलानेवाला ये तीन भाव इस शब्दमें हैं । पहिला दान लेना है, पश्चात् दूसरों को बुलाना और तदनंतर उनको दान देना होता है । विद्या प्राप्त करनी, विद्यार्थियोंको अपने पास बुलाना और उनको विद्यादान करना, यह 'ज्ञानयज्ञ' का हवन है । धन प्राप्त करना, जिनको धनकी आवश्यकता है, उनको निमंत्रण देना और उनको धनका अर्पण करना, यह 'द्रव्ययज्ञ' है । इसी प्रकार अन्यान्य यज्ञोंमें 'होता' का काम निश्चित है । अध्यात्मदृष्टिसे व्यक्ति के शरीरमें आत्माप्रति प्राकृतिक पदार्थों को अपने पास कर रहा है, वायु, सूर्य, जल आदि देवताओंके अंशोंको बुलाकर उनको शरीरके भिन्नभिन्न स्थानोंमें रखता है और अपनी शक्ति उनको देकर उनके द्वारा यह शतसांख्यिक यज्ञ कराता है । इसी प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएकको अपने अपने कार्यक्षेत्र में करना चाहिये ।

रत्नधातमः = (रत्न + धा + तमः) = रत्नोंका धारण करनेवाला है । यहां शका हो सकती है कि यह आत्मा रत्नोंका धारक कैसा है, इसके रत्न कौनसे हैं और उनका धारण यह कैसा करता है ? इन प्रश्नोंके उत्तर के लिए निम्नलिखित मन्त्र देखिये—

दमे दमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता निषसादा यजीयान् ॥ (७५९, ऋ० ५ १-५)

' (दमे) घर घर में सात रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करनेके लिये होता बनकर बैठा है ! ' आत्माप्रति शरीरमें बैठा है, आत्माका घर यही शरीर है, इत्यादि बातों का निश्चय पहिले हो चुका है । इस शरीरमें यह आत्माप्रति सात रत्नोंका धारण करता है । ये सात रत्न— (१) मुख, (२) नेत्र, (३) कर्ण, (४) नासिका, (५) त्वचा ये पंच ज्ञानेन्द्रियाँ और (६) मन तथा (७) बुद्धि (किंवा कईयों के मतसे अहंकार) मिलकर होते हैं । जिन प्रकार विविध रत्नोंके अलंकारोंसे शरीरकी शोभा बढ़ती है, उसी प्रकार उक्त इंद्रिय-शक्तियोंके विकास से मनुष्यकी शोभा वृद्धिगत होती है । परन्तु इसमें विशेष बात यह है कि, यदि ये आत्माके सात रत्न उत्तम अवस्थामे रहे, तो बाह्य रत्नोंके बिना भी शोभा और यश बढ़ता है और ये आत्मा

के सप्त रत्न ठाक न रहे, तो बाह्य रत्नोंसे शरीरके अलंकार बढ़ानेपर भी उसका कोई उपयोग नहीं होता । तात्पर्य ये आत्माके रत्न मुख्य हैं और बाह्य रत्न गौण है ।

व्यक्तिमें और जगत्में भी सप्त रत्न हैं । समाज और राष्ट्रमें प्रकाश, शांति, उम्रता, ज्ञान, गुरुत्व, वीर्य और स्थैर्य इन सप्त गुणोंके कर्म करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष रत्नरूप होते हैं और वेही राष्ट्रकी शोभा बढ़ाते हैं । इस प्रकार सर्वत्र सप्त रत्नोंका रूप देखकर उनका धारण, पोषण करना आवश्यक है ।

प्रत्येक रत्नका वर्ण भिन्न होता है और 'वर्णचिकित्सा' के नियमानुसार अपने अनुरूप वर्णका रत्न शरीरपर धारण करनेसे शरीरका आरोग्य, आयुष्य और बल बढ़नेमें सहायता होती है । इस विषयका विचार सुविचारों वैद्योंको करना उचित है ।

यहां प्रथम मंत्रके संपूर्ण शब्दोंका विचार हुआ । इस मन्त्र में कहे सब शब्द अग्निका स्वरूप निश्चित करनेके लिए सहायता दे रहे हैं । इन शब्दोंके आशयका विचार करनेसे जो स्वरूप निश्चित होता है, वह ऊपर बताया ही है । इस स्वरूपको ध्यानमें धरकर इस प्रकार का यह अग्नि 'यज्ञ का देव' है और यह यज्ञ मुख्यतया अपने शरीरमेंही चल रहा है, इसके नियम देखकर मानवसंघका व्यवहार होना चाहिए, इत्यादि बोध अशरूपसे हमने देखा है ।

अब और देखिये—

“ स देवाँ एह वक्षति ॥ २ ॥ (२)

' वह देवों को यहां लाता है । ' यह क्रिया वर्तमानकाल की और प्रत्यक्ष अनुभव की है । इस कथन से प्रश्न होता है कि (१) यह देवों को कहां लाता है ? किस रीति से लाता है ? किस समय लाता है ? और कहां से लाता है ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने के पूर्व यह देखना चाहिये कि, इस मंत्रभाग की वेदमें कहां द्रुति हुई है । देखिये—

(१) मधुच्छंदा वैश्वामित्रः ॥ अग्निः ॥

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनरुत ।

स देवाँ एह वक्षति ॥ (२, ऋ० १-१-२)

(२) वामदेवो गौतमः ॥ अग्निः ॥

स हि वेदा वसुधितिं महीं आरोधनं दिवः ।

स देवाँ एह वक्षति ॥ (७०५; ऋ० ४-८-९)

दो भिन्न ऋषियों के देखे हुए मंत्रों में इस तृतीय चरण की द्रिष्टि हुई है । जो मंत्र वेद में बारंवार आता है, उसमें विशेष महत्त्व का उपदेश होता है, इसलिये उस बात को बारंवार कहकर पाठकों के मन में वह बात स्थिर की जाती है । पुनरुक्त मंत्रों का इस प्रकार महत्त्व है । अब पता लगाना चाहिये कि, कोनसी महत्त्व की बात इस मंत्रभाग में कही है ? इसका विचार करने के लिये निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(१) स देवान् विश्वान् बिभर्ति ॥ ऋ० ३-५९ ८

(२) स देवान् सर्वानुरस्युपदध्य सपश्यन्
याति भुवनानि विश्वा ॥ (अ० १०-८-१८)

‘ (१) वह एक देव सब अन्य देवों का धारण, पोषण करता है । (२) वह एक देव सब अन्य देवों को अपनी छाती में धारण करके सब भुवनों को देखता हुआ चलता है । ’ यह उस एक आत्मा का वर्णन है कि, जिस के आधार से अन्य देवगण रहते हैं । यही सब अन्य देवों का धारण, पोषण करनेवाला और सब से उचित कार्य करानेवाला देव है । इसलिये कहा है—

(१) यज्ञो बभूव, स आबभूव, स प्रजज्ञे, स उ
घाववृध्रे पुन । स देवानामधिपतिर्बभूव ॥
(अ० ७-५-१)

(२) स योनिमैति, स उ जायते पुनः, स देवाना-
मधिपतिर्बभूव ॥ (अ० १३-२-२५)

‘ (१) एक यज्ञ था, वह प्रकट हुआ, वह बन गया और पुनः बढ़ने लगा । वह देवों का अधिपति हो गया । (२) वह योनि को प्राप्त हुआ, वह निःसंदेह पुनः पुनः जन्म लेता है, वह देवों का अधिपति हुआ है । ’

यज्ञ प्रकट होता है, पुनः पुनः बनता है, बनने के पश्चात् बढ़ता है, यह वर्णन ‘जीवनरूप यज्ञ’ का है । क्योंकि अगले मंत्रमें ही कहा है कि वह देवों का अधिपति बननेवाला है, वह योनि में प्रविष्ट होकर पुनः पुनः जन्म लेता है ।

इस प्रकार बारंवार जन्म लेता हुआ, अनेक बार यज्ञ करने का यत्न करता है । इसके यज्ञ पर राक्षस हमला करते हैं, और बीच में विघ्न करते हैं । इस प्रकार यज्ञों में विघ्न होने पर वह फिर योनि में प्रविष्ट होकर पुनः जन्म

लेता है और पुनः यज्ञ करता है । यह उसका प्रयत्न यज्ञ की पूर्णता होने तक चलता है । यह मंत्र पुनर्जन्म का स्वरूप बता रहा है, परन्तु उसका अधिक विचार करने का यह स्थान नहीं है । पुराणों में ऋषियों के यज्ञों का नाश राक्षसों के द्वारा होने की अनेक कथाएं हैं, उनका मूल यहां इन मंत्रों में है । विचारशील पाठकों को पता लग सकता है कि, यह आत्मा का शतसांवरसरिक जीवन-यज्ञ ही है । जिस समय यज्ञ करने की इच्छा से यह योनिक्षेत्र में उतरता है, उस समय यह देवों को अपने साथ लाता है और इसका आह्वान सुन कर सब ३३ कोटी देव अपने अंशरूप से इस गर्भ में अवतार लेते हैं और उन सब देवों का अधिराजा यह स्वयं हृदयस्थान में रहने लगता है । इसका प्रभाव देखिये—

(१) स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ (य. ३४-५१)

(२) स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ (अ. १-३५-२)

(३) स देवेषु धनते वार्याणि ॥ (ऋ. ५-४-३)

(४) स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु ॥

(ऋ. २-२४-११)

‘ (१) वह देवों में दीर्घ आयु करता है, (२) वह जीवों में दीर्घ आयु करता है, (३) वह देवों में से वरने-योग्य सत्त्वों को स्वीकार करता है, (४) वही एक देव है, जो अन्य सब देवों के प्रति कैला है । ’ इस एक आत्म-देव का इतना प्रभाव होने के कारण इसका शब्द सुनते ही इसके साथ सब अन्य देव जाते हैं । अब और देखिये—

(१) देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति ॥

(ऋ. ९-९५-२)

(२) देवो देवानां जनिमा विवक्ति ॥

(ऋ. ९-९७-७)

(३) आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां
न मिनामि धाम ।

ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तु-
तमषाल्लहम् ॥ (ऋ. १०-४८-११)

(४) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवा-
नामभवः शिषः सखा ॥

तव व्रते कवयो विश्वनापसोऽजायन्त
मरुतो भ्राजदृष्टयः (५०; ऋ० १।३।११)

- (५) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां
परिभूषसि व्रतम् ॥ (५१; ऋ० १।३।१२)
- (६) देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्व-
सूनामसि चारुर्ध्वरे । शर्मन्स्याम तव
सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं
तव ॥ (२६८; ऋ० १।१४।१३)
- (७) देवो देवान् ऋतुना पर्यभूषत् ॥
(ऋ० २।१२।१)
- (८) देवो देवान् परिभूर्ऋतेन (ऋ० १०।१२।२)
- (९) होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो
देवान् यजत्वग्निरहन् ॥ (ऋ० २।३।१)
- (१०) समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्
यजसि जातवेदः ॥ (ऋ० १०।११०।१)
- (११) देवो देवान् स्वेन रसेन पृञ्चन् ॥
(ऋ० १।९७।१२)

‘ (१) यह एक देव अन्य देवोंके (नामानि) नामों को प्रकट करता है, (२) यह एक देव अन्य सब देवोंके जन्म कहता है, (३) वसु, रुद्र और आदित्यादि देवोंके धामका भे नाश नहीं करता । क्योंकि मैं अपराजित, अजेय और असह्य हूं और वेही कल्याण और बल के लिये मुझे व्यक्त करते हैं, (४) हे अग्ने ! वही पहिला अगिरा ऋषि है, और तू एक देव अन्य सब देवोंका सच्चा शुभ मित्र है । तेरे नियममें ही ज्ञानसे पुरुषार्थ करनेवाले कवि तेजस्वी होते हैं, (५) हे अग्ने ! तू पहिला अत्यंत अगस्त है, और अन्य देवोंके नियमको सुभूषित करता है, (६) तू सब देवोंका एक देव अद्भुत मित्र है, और यज्ञमें वसुओंका भी वसु तूही है । हे अग्ने ! तेरे सत्यमें हम (मा रिषाम) नष्ट नहीं होंगे और (शर्मन्) सुख ही प्राप्त करेंगे, (७) तू एक देव अन्य देवोंको कर्मसे भूषित करता है, (८) सत्य नियमसे तू एक देव अन्य देवोंको व्यापता है, (९) होता, (पावकः) पवित्रकर्ता, उत्तम मेधावान् योग्य अग्निदेव देवोंका यजन करे, (१०) हे जातवेद अग्ने ! तू (मनुषः दुरोणे) मनुष्यके घरमें प्रदीप्त होकर देवोंके लिये यज्ञ करता है, (११) एक देव अपने रससे अन्य देवोंको तृप्त करता है । ’

यह एक देवका महत्त्व है । यह एक देव सब अन्य

देवोंको अपने यज्ञ में बुलाता है, वे देव उसके यज्ञमें आते हैं, उसके साथ रहते हैं और वह चला गया, तो उसके साथ चले जाते हैं । यह सब वेदका आलंकारिक वर्णन एक ही बातको बता रहा है । वह बात यह है कि, ‘ (१) आत्मा जन्म लेने के समय योनि में प्रवेश करना चाहता है, उस समय वह अन्य देवोंके अर्थात् पृथिवी, आप, तेज, वायु सूर्य, चंद्र, विष्णु, आदि सब देवताओंको अपने साथ बुलाता है, (२) उसका शब्द सुनकर सब ३३ कोटी देव अपने अपने अंशको उसके साथ भेजने हैं, (३) सब देवोंका यह देह बनता है और उसका अधिष्ठाता आत्मदेव होता है और इस प्रकार बनकर वह जन्म लेता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ प्रारंभ करता है । ये देव आकर कहा रहते हैं, इसका वर्णन भी देखिये—

- [१] सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१२॥
[२] गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१३॥
[३] रेतः कृत्वा आर्ज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥२९॥
[४] सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य विभेजिरे ॥३१॥
[५] तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन् देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥३२॥
(अ. १।१।८)

[६] अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,
वायुः प्राणां भूत्वा नासिके प्राविशत्,
आदित्यश्चक्षुर्भुत्वाऽक्षिणी प्राविशत्,
चंद्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,
आपो रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ॥ (ए. उ. २।४)

‘ (१) सब मर्त्य शरीरका भिन्न करके देव पुरुषमें घुसे हैं, (२) मर्त्य घर करके देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं, (३) रेत का घी बनाकर देव पुरुष में वसने लगे हैं, (४) सूर्य चक्षु बना है, वायु प्राण-हुआ है, (५) इन्द्रालिये जानी इस पुरुषको ब्रह्म मानता है, क्योंकि सब देवताएं इसीके अंदर रहती हैं, जैसी गौवं गोशालामें रहती हैं । (६) अग्नि वाचा बनकर मुखमें घुसा है, वायु प्राण बनकर नासिकामें रहने लगा, सूर्य चक्षु बनकर आंखमें वसने लगा, चंद्र मन बनकर हृदयमें रहने लगा, जलदेव वीर्य बनकर शिस्नमें रहा । ’ इस प्रकार अन्यान्य देवताएं इस एक देवके साथ आ गईं और यहां इस शरीरमें अपने अपने

स्थानमें रहने लगीं । यह सब वेदों और उपनिषदोंका वर्णन देखनेसे पता लग सकता है कि, इस शरीरमें आत्माके साथ देव आकर बसे हैं । इस हेतुसे ही कहा है कि ' स देवान् एहं वक्षति ' अर्थात् ' वह सब देवोंको यहां लाता है । ' उक्त मंत्रोंके विचारसे पाठकोंको पता लगाही होगा कि कहां और किस प्रकार लाता है, इसलिये इसका अधिक विचार अब करनेकी आवश्यकता नहीं है । परमात्मा सपूर्ण जगत् में व्यापक होकर सूर्यादि सब देवताओंका धारण-पोषण करता है, उसी प्रकार उसका अमृतपुत्र जीवात्मा इस देहमें रहकर सूर्यादि देवताओंका धारण-पोषण करता है, यह दोनोंमें समानता होनेके कारण मंत्रोंमें दोनोंका वर्णन एकही रीतिसे होता है, यह बात पाठक पूर्वोक्त मंत्रोंमें स्पष्ट रूपसे देख सकते हैं । अस्तु । इस रीतिसे यह आत्माभि अन्य देवोंको यहां- इस देहमें-इस कर्णभूमिमें- लाता है और शतसंवत्सरिक यज्ञ करनेकी तैयारी करता है ।

अध्यात्मदृष्टिसे शरीरमें देखिये कि यह आत्मा, प्राण अथवा जीवनका सत्वरस शरीरमें प्राणघातक व्याधिकीटकोंके साथ सदैव युद्ध करता है, युद्धमें उनका पराभव करता है और आरोग्य का रक्षण करता है । व्याधिकीटक आसुरी स्वभावके कारण शरीरकी हिंसा करना चाहते हैं, उस हिंसासे इस शरीरका बचाव करनेके कारण आत्माके इस सत्कर्म को " अ-ध्वर यज्ञ " अर्थात् हिसारहित यज्ञ कहते हैं । शरीरका सर्वतोपरि संरक्षण करनेका कार्य पूर्णतया यही जीवनका केंद्र कर रहा है, इसलिये मंत्रमें कहा है कि (विश्वतः परिभूः) सब प्रकारसे सबका नियामक और शासक यही है । सब जानते ही हैं कि, आत्माकी श्रेष्ठता है और अन्य इन्द्रिय-शक्तियोंकी गौणता है, क्योंकि आत्माकी जीवनरूप प्राणशक्ति ही अन्य इन्द्रियों, अंगों और अवयवोंमें पहुंच कर कार्य करती है । यही भाव (स, इत् देवेषु गच्छति) " वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है " इस वाक्यसे व्यक्त किया है । आत्माग्नि यज्ञ करता है, उसका मुख्य प्रबधकर्ता स्वयं आत्माही है और वह यज्ञ (देवों द्वारा) इन्द्रियोंद्वारा होता है, इन्द्रियोंमें उसका प्रभाव पहुंचता है । यह सब हरएक के अनुभव में है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे संघ में, समाज में अथवा राष्ट्रमें भी यही भाव दिखाई देता है ।

तीनों स्थानोंमें इस बातकी सार्वत्रिकता देखनेयोग्य है । (१) अपना संरक्षण, (२) शत्रुशक्तिका पराभव, आत्मशक्तिका विजय, (३) अपनी उन्नति और स्वकीय शक्तिका विकास, (४) सहाय्यकर्ताओंका संघीकरण और उनका पोषण, यही मुख्य बातें हैं, जो इस यज्ञसे ध्वनित होती हैं । जिस व्यक्तिमें और जिस राष्ट्रमें ये होती रहेगी, उसका संरक्षण होगा और जहां न होगी वहां नाश होगा । इसलिये सबको उचित है कि, इस प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएक प्रयत्न करे । अब द्विरुक्तिका विचार करना है—

[१] मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

विश्वतः परिभूरसि ॥ (४; ऋ० १।१।४)

[२] कुत्सः आंगिरसः । अग्नि शुचिः ।

एवं हि विश्वतो मुखो ' विश्वतः परिभूरसि ' ।

अप नः शोशुवदधम् ॥ (१८९२, ऋ० १।९।६)

दो विभिन्न ऋषियोंके मंत्रोंमें ' विश्वतः परिभूः असि ' (सब प्रकारसे सर्वोपरि है) यह वाक्य द्विरुक्त हुआ है । अग्निका सर्वतोपरि शासक होना इस द्विरुक्तिसे व्यक्त होता है । सबका नियामक आत्मा होनेसे यहां विशेषतया आत्माभि ही वक्तव्य है, इसकी सिद्धता पहिले हो चुकी है । आत्माका वर्णन भी इन्ही शब्दोंसे ईशोपनिषद् में हुआ है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धम-
पापविद्धं । कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथात-
थ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

(वाय० ४०।८; ईश. ८)

' वह आत्मा (पर्यगात्) व्यापक है और (शुक्रं) वीर्यरूप, देहरहित, व्रणहीन, स्नायुहीन, शुद्ध, निष्पाप, कवि, बुद्धिमान्, (परिभू) सबका नियंता, तथा (स्वयंभूः) स्वयंसिद्ध है । वह शाश्वत कालसे यथायोग्य रीतिसे सब अर्थों को करता आया है । ' वही आत्माग्निका यज्ञ जो शाश्वत कालसे चल रहा है, वही ऋग्वेदके प्रथम सूक्तमें वर्णन किया है । ' परिभू, कवि, ' आदि शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, अग्निका नाम ' पावकाः, शुचिः ' प्रसिद्ध है, इस नाममें ' शुद्ध ' शब्दका भाव आ गया है । वह स्वयं ' अ-पाप-विद्ध ' अर्थात् निष्पाप है, इतनाही नहीं, परंतु

वह (नः अर्घं अप शोशुचत् । (क. १।९।६) वह हमारे पापको दूर करके हमको भी पवित्र करता है, अर्थात् वह स्वयं शुद्ध है और दूसरोंको भी पवित्र करता है । वह एकदेशी नहीं है, परंतु वह (पर्यगात्) सर्वत्र है, यही भाव (त्वं हि विश्वतो मुख) ' तू सर्वत्र मुखवाला है ' इस कथनमें व्यक्त हुआ है । एक देवता का वर्णन वेदमें निम्न प्रकार आया है—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो
विश्वतो बाहुस्त विश्वतस्पात् ।

सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैः

द्यावाभूमी जनजन् देव एकः ॥ (क. १०।८।१३)

' जिस एक देवके (विश्वतः चक्षुः) सर्वत्र आंख, (विश्वतः मुखः) सर्वत्र मुख, सर्वत्र बाहु और सर्वत्र पांव है, जो बाहुओंसे और पंखोंसे सबका धारण और नियमन करता है, वही ह्यलोक और पृथिवीको उत्पन्न करता है । ' इस मंत्रका ' विश्वतो मुखः ' शब्द इस आत्माग्निके वर्णनमें इस मंत्रमें है । आत्माकी सर्वव्यापकता इस मंत्रसे बताई है । अग्नि भी सब जगत्के सब पदार्थोंमें विद्यमान है, देखिये—

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो
बभूव । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं
प्रतिरूपो बहिश्च ॥ (कट. उ. ५।९)

' जिस प्रकार एकही अग्नि सब भुवनमें प्रविष्ट हो कर प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है, वैसाही एक सब भूतोंका अंतरात्मा प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है और बाहिर भी है । ' यहां प्रसंगतः अग्निके विषयका उपनिषदोंका संतव्य देखनेयोग्य है—

(१) एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यदग्निर्ज्वलति । (कौ. उ. १२)

(२) यः पुरुषः सोऽग्निर्वैश्वानरः । (मैत्री. उ. २।६)

(३) प्राणोऽग्निः परमात्मा । (मैत्री. ६।९, प्राणाभि २)

(४) प्राणोऽग्निरुदयते । (मुंड. २।१।७, प्रश्न १।७)

(५) अग्निर्ह वै प्राणः । (जावा ४)

(६) अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।

मंत्रोऽहमहमेवाऽयमहमग्निरहं हुतम् ॥

(भ. गी. ९।१६)

' (१) यह ब्रह्मही प्रकाशता है जो अग्नि जलता है, (२) जो पुरुष है वही वैश्वानर अग्नि है, (३) प्राण अग्नि परमात्मा है, (४) यह प्राण अग्निही उदय पाता है, (५) प्राण ही निःसदेह अग्नि है, (६) (अहं) मैं आत्माही क्रतु, यज्ञ, स्वधा, औषध, मंत्र, आज्य, अग्नि और हवन हूँ । ' इन उपनिषदोंके कथनेके साथ निम्न उपनिषद्वाक्य देखिये—

(१) पुरुषो द्याव गौतमाग्निः, तस्य वागेव समित्, प्राणो धूमो, जिह्वा अर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुते रेतः संभवति ॥ २ ॥ ७॥

(२) योषा वाव गौतमाग्निः, तस्या उपस्थ एव समित्, यदुपमंत्रयते स धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुते-
गर्भः संभवति ॥ २ ॥ ८ ॥ (छां उ. ५।३)

यही कथन थोड़ेसे भिन्न-प्रकारके साथ बृहदारण्यकमें आया है, वह भी यहां देखिये—

अंशावतार

पुरुषो वाऽग्निर्गौतम, व्यासमेव समित्, प्राणा धूमो, वागर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुत्यै रेतः संभवति ॥ १२ ॥

(२) योषा वा अग्निर्गौतम, तस्या उपस्थ एव समित्, लोमानि धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति, तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति, स जीवति यावज्जीवति ॥ १३ ॥

(बृ. आ. ६।२)

' (१) पुरुष अग्नि है, इसमें अन्नका हवन होता है, इस हवन से रेतकी उत्पत्ति होती है, (२) स्त्री अग्नि है, इसमें रेतका हवन होता है, इस हवनसे बालक उत्पन्न होता है । ' इस वर्णनसे पता लग सकता है कि किस अपूर्व अलंकार से अग्निकी विभूति स्थानस्थानमें देखनी होती है और वहां का भाव समझना होता है । स्त्रीरूप अग्निमें जिस समय आत्मा आता है, उस समय वह त्रैलोक्यके संपूर्ण

देवोंको अपने साथ बुलाता है और उनके साथ ' अंशा-वतार ' लेता है । यही बालक है । बालक का जन्म होते ही उसके शरीरमें यह शतसांख्यिक क्रतु करने लगता है, जो भोग इसको दिये जाते हैं, वे उस उस देवता तक पहुंचाता है । रूपके भोग आंखमें रहनेवाले सूर्यके अंशको देता है, सुगंधके भोग नामिकानिवासी अश्विनी देवोंको देता है, रसिके भोग जिह्वानिवामी जलदेव वरुणको देता है, स्पर्शके भोग वायुको पहुंचाता है, इसी प्रकार अन्यान्य भोग अन्यान्य देवताओंके अंशोंके द्वारा उस उस देवता तक पहुंचाता है । यही इस आत्माग्निका दत्त है । अग्नि दत्त होनेका वर्णन आगे अनेक सूक्तोंमें आनेवाला है, इसलिये पाठक इस विषयको ठीक प्रकार समझनेका यत्न करे । यदि यह बात ठीक रीतिसे ध्यानमें आ गई, तो आत्माग्नि यज्ञ (देवेषु गच्छति) देवोंतक कैसा पहुंचाता है, इसका ठीक विज्ञान हो सकता है । अपने शरीरमें ही यह यज्ञ पाठक देख सकते हैं। वेदको अभीष्ट है कि पाठक इस यज्ञको अपने अंदर अनुभव करें । यही आत्माग्नि सब देवोंका केंद्र है, देखिये—

(१) अग्ने नेमिरगाँ इव देवांस्त्वं परिभूरसि ॥

(८५९; ऋ ५।१३।६)

(२) स होता विश्वं परिभूध्वरं ॥ (३८९; ऋ. २।२।५)

' (१) हे अग्ने ! जैसे चक्रकी नाभिमें आर होते हैं, वैसे देव तंत्र में हैं, और देवोंका तू नियामक है । (२) वही अग्नि हवनकर्ता है और सब (अ-ध्वरं) यज्ञका प्रबंधकर्ता है । ' इन मंत्रोंसे अग्नि शब्द आत्माग्निका ही मुख्य-तथा वाचक है, यह बात ध्यानमें ठीक प्रकार आ सकती है। पूर्वोक्त भगवद्गीताके श्लोकमें ' मैं (आत्माग्नि) यज्ञ हूं, और मैं ही अग्नि, घी, मंत्र, तथा हवन भी मैं ही हूं ' (गी ९।१६) यह बात ध्यानमें धर कर इस सूक्तका कथन देखिये— ' अग्नि यज्ञका देव, पुरोहित, होता और ऋत्विज् आदि है । ' दोनोंका एकही तात्पर्य है । दोनोंको आत्माग्नि ही वर्णन भिन्न रीतिसे करना है । यह आत्माग्नि यहां इस देहमें सब देवोंको लाता है और सौ वर्ष तक यज्ञ करनेका यत्न करता है । यह आत्माग्नि जो यह यज्ञ करता है, वह यज्ञ निःसंदेह देवोंतक पहुंचता है । पूर्वोक्त स्पष्टीकरणसे यह कथन अब पाठकोंको प्रत्यक्ष हुआही होगा ।

यहां आत्माग्नि मुख्य केंद्र है और अन्य देव उसके साथी हैं । ये साथी उसको यथाशक्ति सहाय्यता करते हैं । यद्यपि आत्माकी शक्तिके बिना आंख, नाक, कुछ भी कार्य नहीं कर सकते, तथापि आंखके बिना देखना तथा अन्य इंद्रियोंके बिना अन्य अनुभव लेना आत्माके लिये अशक्य है । इसलिये (१) आत्मा सम्राट् है और ये अन्य देव उसके मांडलिक राजे हैं । ये मांडलिक राजे अपने देशके उत्पन्नका करभार सम्राट्को देते हैं, और सम्राट्ही उनको यथायोग्य प्रसाद देता है । अथवा (२) अन्य देव इसके सेवक हैं, अपना कार्य करनेद्वारा उसकी सेवा करते हैं और वह भी उनको यथायोग्य वेतन देता है । अथवा (३) ये देव उसके मित्र हैं, वे इसकी सहाय्यता करते हैं और वह भी अपना धन उनको बांटता है । किंवा (४) वह यज्ञ करनेवाला है और ये ऋत्विज हैं, ये उसका यज्ञ यथायोग्य रीतिसे करते हैं और वह भी इसको योग्य दक्षिणा देता है । कोई अलंकार लीजिये, ये तथा बहुतसे अन्य अलंकार वेदमें न्याय स्थानमें आ गये हैं । सब अलंकारोंका तात्पर्य एकसा ही है । (स इत् देवेषु गच्छति) वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है, इसका तात्पर्य उक्त प्रकार है । यदि किसीने किसीसे सेवा ली, तो उसको उचित है कि, वह सहाय्यकर्ताका ऋण प्रत्युपकार द्वारा नापस करे, यह बोध यहां मिलता है ।

' स देवानेह वक्षति । ' इस प्रथम मंत्रके कथनसे पता लगा है, कि ' आत्माग्नि देवोंको यहां लाता है । ' इसका शब्द सुनकर सब देव अंशरूपसे आते हैं, अथवा अपने अपने सूक्ष्म अंशोंको भेजते हैं । सब देव आनेके पश्चात् इसका यज्ञ शुरू होता है और यज्ञमें यह आत्माग्नि ' (स इत् देवेषु गच्छति) ' सब देवोंको यथायोग्य यज्ञ-भाग देता है । परस्पर सहाय्यता करनेका यह बोध हर एक मनुष्यको देखना चाहिये और इस प्रकार परस्पर सहाय्यता करके संघशक्तिद्वारा अपनी उन्नति करनी चाहिये । यहां यह विशेष रूपसे कहनेकी आवश्यकता नहीं कि, यह शरीर देवोंके ' संघका ही कार्य ' है । इस प्रकार जो अभेद्य सघ बनायेंगे, वे भी विलक्षण शक्तिसे युक्त होकर उन्नत हो जायेंगे ।

यह आत्मा (होता) हवनकर्ता है । यह अपने आन्तरिक सब इंद्रियोंको ' संयमाग्नि ' में हवन करता है

और संयमी बनकर अभ्युदयको प्राप्त करता है । शब्दादि सब विषयोंको यही ' इन्द्रियाग्नि ' में हवन करता है और उपभोग लेकर सुखी होता है । तथा सब इंद्रियकर्मोंको और प्राणकर्मों को ' योगाग्नि ' में हवन करके योगी बनता है और स्वाधीनता प्राप्त करता है । हवन किसी प्रकारका हो, यही हवनकर्ता है, इसमें कोई सदेह ही नहीं है ।

साधारण सुबोध भाषा में बोलना हो, तो इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह आत्मा इन्द्रियोंको विषयभोग देता है, यही उसका इन्द्रियाग्नि में हवन है और इसीलिये इसको ' होता ' कहते हैं । हवन किये पदार्थ वह देवों तक पहुँचाता है, इसका यही तात्पर्य है । ' देव ' शब्दका अध्यात्मदृष्टिसे अर्थ ' इन्द्रिय ' ही है । जो आत्माका इन्द्रियों से संबध है, वही ब्रह्माग्नि का अन्य देवोंसे है । ब्रह्माग्नि, आत्माग्नि और अग्नि सांकेतिक दृष्टिसे एकही पदार्थ है ।

(कवि-ऋतुः) ज्ञानी और पुरुषार्थी ' अग्नि ' अर्थात् आत्माग्नि है । आत्माका चित् स्वरूप सुप्रसिद्ध है तथा चेतन आत्मा सबका प्रेरक होनेसे सब पुरुषार्थोंका प्रवर्तक निःसन्देह है । ' कवि ' शब्दका अर्थ ज्ञानी, बुद्धिमान् और शब्दप्रेरक है । इसलिये कहा है कि—

अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ॥

(१६५३, ऋ १०।११।३)

अग्ने कविर्वेधा असि ॥ (१३९; १ ऋ० ८।६०।३)

' हे अग्ने ! तू कवि है और अपने काव्यसे (विश्व-वित्) सर्व-ज्ञ है । हे अग्ने ! तू कवि और (वेधाः) ज्ञानी है । '

यह अग्निका वर्णन उसके ' आत्माग्नि ' होनेकी सिद्धता कर रहा है । क्योंकि (विश्व-वित्) सर्वज्ञत्व एक आत्मा में ही संभवनीय है । कवि काव्य करता है और सर्वज्ञ कविका काव्य भी सर्वज्ञानसे परिपूर्ण होना संभवनीय है । इसीलिये परमात्माका ' शब्द ' प्रमाण माना जाता है । आत्माभी शब्दका प्रेरक ही है—

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युंक्ते विचक्षया ।

मनः कायाग्निमाहंति स प्रेरयति माहृतम् ॥६॥

माहृतस्तूरसि स्वरन् मंद्रं जनयति स्वरम् ॥७॥

सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य माहृतः ।

वर्णान् जनयते तेषां विभागः पञ्चधा स्मृतः ॥९॥

(पाणिनीय शिक्षा)

' आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर अर्थकी प्रेरणा मनमें करता है । मन शरीरकी उष्णता पर आघात करके वायुको प्रेरित करता है । वह वायु छातिसे ऊपर चलने लगता है, उस समय सूक्ष्म स्वर उत्पन्न करता है । यही स्वर मुखमें विविध स्थानोंमें आकर विविध वर्णोंमें परिणत होता है । '

इस प्रकार आत्मा शब्द का प्रेरक है, इसलिये ' कवि ' है । आत्माग्नि का कवि होना इस प्रकार शास्त्रसिद्ध है । उपनिषदोंमें भी कहा है—

[१] केनेषितां वाचमिमां वदन्ति ?

[२] वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ॥

[३] यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि० ॥ (केन उ० १।१-४)

' (१) किससे प्रेरित हुई वाणी बोलते है ? (२) (वह प्रेरक) वाणीकी वाणी और प्राण का प्राण है । (३) जो वाणीसे प्रकाशित नहीं होता, परन्तु जिससे वाणी प्रेरित होती है, वह ब्रह्म है, ऐसा तू जान । ' इससे स्पष्ट है कि आत्माग्नि ही वाणीका प्रेरक है । इसीलिये इसको कवि कहते हैं । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

[१] युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ॥

(६२७, ऋ० ३।२३।१)

[२] अहं कविरुशना पश्यता मा ॥

(ऋ० ४।२६।१)

[३] युवा कविः पुरुभिःष्ठ क्रतावा धर्ता कृष्टी-

नायुत मध्य इद्ध ॥ (७६०; ऋ० ५।१।६)

[४] अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेऽवग्निरमृतो

निधायि ॥ (११३७, ऋ० ७।४।४)

[५] अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सु सं सन्मित्रो

अतिथिः शिवो न ॥ (११५७; ऋ० ७।९।३)

[६] सत्यो यज्वा कवितमः स वेधा ॥

(५८१; ऋ० ३।१४।१)

[७] होता मंद्रः कवितमः पावकः ॥

(११५५; ऋ० ७।९।१)

' (१) यह जवान कवि यज्ञका चालक है, (२) मैं ही इच्छा करनेवाला कवि हूं, मुझे देखिये, (३) जवान कवि (पुरुभिः-ष्ठः) सब पदार्थोंमें स्थित, सत्यवान्, (कृष्टी-धर्ता) प्रजाओं का धारण करनेवाला और मध्यमें प्रदीप्त है, (४) यह (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालोंमें

शब्दकर्ता है, (प्र-चेता) चेतन और यही मर्त्योंमें अमृत है, (५) यह (अ-मूरः) मूढ नहीं है, कवि, (अ-दितिः) अमर्याद, (विवस्वान्) सबका निवासक, उत्तम मित्र, (अ-तिथि) जिसकी आनेकी तिथि निश्चित नहीं होती, ऐसा और (शिव) कव्याणकारी है, (६) सत्य, याजक श्रेष्ठ कवि और (वेधा) ज्ञानी है, (७) यह हवनकर्ता, हर्षकारक, श्रेष्ठ कवि और (पावकः) पवित्रकर्ता अग्नि है ।

इन मन्त्रोंमें ' कवि ' शब्द है और उसका शब्दकी उत्पत्तिके साथ ही संबंध है । (अहं कविः) ' मैं कवि हूं ' ऐसा अध्यात्म वचन है । इसका स्पष्ट भाव है कि, मैं इन्द्र कवि हूं, जिसका दूसरा नाम अग्नि भी है । क्योंकि एकही सद्बस्तुको अग्नि, इन्द्र, आदि अनेक नाम ज्ञानी देते हैं । यह कवि अग्नि (युवा) जवान है । जो अज और अनंत होता है, उसको ही ' युवा ' कहते हैं । आत्माही अजन्मा और अविनाशी है, इसलिये युवा भी है । यह ' पुरु+निष्ठ ' सबमें व्याप्त है । (कृष्टीनां धर्ता) प्रजाओंका धारणपोषणकर्ता यही है । (अ-कविपु कविः) शब्द न करनेवालोंमें यह शब्द उत्पन्न करनेवाला है, जड़ोंमें यह वक्ता है, शरीरके मूक जड़ अवयवोंमें यही एक शब्द बोलनेवाला है और यही (मर्त्येषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर है । सब शरीर मरता है और उसमें यही एक आत्मा अमर है । यह ऐसा है कि (अ-तिथिः) जिसकी तिथि निश्चित नहीं है, जिसके आनेकी और जानेकी तिथि निश्चित नहीं है, जन्म और मरणकी तिथि इस आत्माकीही निश्चित नहीं है । इस प्रकारका यह अग्नि निःसंदेह ' आत्माग्नि ' ही है । उक्त शब्द यदि किसीका सत्य वर्णन कर रहे हैं, तो वह निःसंदेह आत्माग्नि ही है, क्योंकि उक्त शब्दोंकी सार्थकता आत्माग्निमेंही होती है । अस्तु । इस प्रकार यह आत्माग्नि कवि है ।

यह ' क्रतु ' अर्थात् ' यज्ञ ' भी है । क्योंकि ' पुरुषार्थ ' ही इसका स्वरूप है । सतत पुरुषार्थ इसका निज धर्म है । ' पुरुषो घाव यज्ञः ' (छां० उ० ३।१६) पुरुष अर्थात् आत्मा यज्ञस्वरूपही है । इसलिये उसको ' क्रतु ' तथा ' शत-क्रतु ' कहते हैं । ' क्रतु ' शब्दका दूसरा अर्थ ' प्रज्ञा ' है । ज्ञानरूप चित्स्वरूप, होने से इसके भावमें यह अर्थ भी योग्य हो सकता है ।

' कवि-क्रतु ' का दूसरा अर्थ ' क्रांत-प्रज्ञ ' अर्थात्

' विशेष ज्ञानी ' है । यह अर्थ भी पूर्व अर्थोंके साथ सुसंगतहि है ।

' सत्यः ' यह इस मन्त्रका शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है । इसका भाव ' तीनों कालोंमें विद्यमान ' ऐसा होता है । यह आग भूतकालमें नहीं होती, बीचमें जलती है और फिर बुझ जाती है, तीनों कालोंमें एक रूपमें नहीं रहती, परन्तु यह आत्मा तीनों कालोंमें समरस रहता है । यद्यपि गुप्त, व्यापक अग्नि सर्वदा विद्यमान होता है, तथापि इस अग्निका अग्निपन भी उस आत्मापर तो अवलंबित है, क्योंकि इस अग्निका अग्निही यह ' आत्माग्नि ' है । ' सत, सत्य ' ये शब्द एक सत्यस्वरूप आत्माकेही मुख्यतया वाचक हैं ।

" चित्र+श्रवः+तमः " विलक्षण यशसे युक्त । यह शब्द मुख्य वृत्तिसे आत्मात्मिकाही वर्णन कर रहा है । देखिये इसका वर्णन—

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्ब्रूति तथैव चान्यः । आश्चर्यवच्चैवमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ (भ०गी० २।२९)

' कोई तो आश्चर्य समझकर इसकी और देखते हैं, कोई आश्चर्य सरीखा इसका वर्णन करता है, कोई आश्चर्यसे सुनता है, परन्तु सुन कर भी कोई इसे जानता नहीं है । "

इस प्रकार आत्माग्निके अपूर्व यशका गुणगान सब शास्त्र कर रहे हैं । इस प्रकारकी यह अद्भुत वस्तु है । अस्तु । इतना विवेचन चतुर्थ मंत्रके प्रथम दो पादोंका हुआ और इससे निश्चय हुआ है कि, यह मुख्यतया आत्माग्निका ही वर्णन है और गौण वृत्तिसे अन्य पदार्थोंका वर्णन है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे समाज और राष्ट्रमें मनुष्य कोभी इसी प्रकार बर्ताव करना चाहिये । सृज् मनुष्य (अग्निः) अग्निके समान तेजस्वी, (होता) दाता, यज्ञ करनेवाला, (सत्यः) सच्चा, सत्याग्रही, सत्यनिष्ठ, (चित्र-श्रवः-तमः) विलक्षण यशस्वी बने और अनुकरणीय बनकर सबका चालक बने । इस रीतिसे येही शब्द मनुष्यके सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्योंके बोधक हैं । इस प्रकार दो पादोंका स्पष्टीकरण करनेके पश्चात् अब विशेष महत्त्वका तृतीय पाद देखना है—

देवो देवेभिरागमत् ॥ (ऋ० १।१।५)

‘यह एक देव अन्य सब देवोंके साथ आ जावे।’ इस विषयमें जो वक्तव्य है, वह स इहेवेषु गच्छति ॥ (ऋ० १।१।४) तथा “स देवान् एह वक्षति।” (ऋ० १।१।२) इनकी व्याख्या करते हुए कहा ही है ।

- [१] स देवान् इह आवक्षति = वह देवोंको यहां लाता है।
[२] स देवेषु इत् गच्छति = वह देवोंमें पहुंचता है।
[३] देवो देवेभि आगमत् = देव देवोंके साथ आ जाय।

इन तीनों कथनोंमें एकही विशेष भाव है । एक आत्मा का अन्य देवोंके साथ जो संघ है, वही यहां बताया है । इसका स्वरूप ठीक ठीक ध्यानमें आनेके लिये निम्न मंत्रोंका विचार करना आवश्यक है—

[१] अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ (५१२ ऋ० ३।१०।४)

[२] विश्वेभिः देवेभिर्याहि यक्षि च ॥

(ऋ० १।१४।१)

[३] देवेभिरग्न आगहि ॥ (ऋ० १।१४।२)

[४] क्षयं बृहन्त परिभूषति द्युभिर्देवेभिरग्निः ॥

(ऋ० ३।३।२)

[५] अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जंतुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरुषेशसं धिया ॥ (ऋ० ३।३।६)

[६] गमहेवेभिरा स नो यजिष्ठः ॥ (ऋ० ३।१३।१)

[७] देवेभिर्देव सुरचा रुद्रानः ॥ (ऋ० ३।१५।६)

[८] अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ॥

(ऋ० ३।२४।४)

[९] अग्ने विश्वेभिरागहि देवेभिर्हव्यदातये ॥

[१०] देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ॥

(ऋ० ६।११।६)

[११] त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।

देभिर्मानुषे जने ॥ (ऋ० ६।१६।१)

[१२] आ नो देभिरुप देवहूतिमग्ने याहि ॥

(ऋ० ७।१४।३)

[१३] यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निर्देवेभिर्ऋता-
वाजस्रः । (ऋ० १०।६।२)

‘(१) देवोंके साथ अग्नि आया है, (२) सब देवोंके साथ आओ और यजन करो, (३) हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ, (४) अग्नि सब तेजस्वी देवोंके साथ बडे

(क्षयं) निवासस्थानको भूषित करता है, (५) देवोंके साथ और मनुष्यके संतानों के साथ बुद्धिमे विविध रूपवाला यज्ञ अग्नि फैलाता है, (६) पूज्य अग्नि देवोंके साथ हमारे पाम आता है, (७) हे देव ! अनेक देवोंके साथ तू तेजसे तेजस्वी है, (८) हे अग्ने ! सब अग्निरूप देवोंके साथ वाणीको बढाओ, (९) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ अन्नदानके लिये आओ, (१०) हे अग्ने ! तू सब अग्निरूप देवोंसे प्रदीप्त होता है, (११) हे अग्ने तू मानवी जनोंमें सब यज्ञोंका हितकारक और सब देवोंके साथ हवन करने-वाला है, (१२) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ हमारे यज्ञमें आओ, (१३) जो तेजस्वी अग्नि तेजस्वियोंके साथ चमकता है ।’

इत्यादि मंत्रोंमें भी अनेक देवोंके साथ अग्निका रहना वर्णन किया है । “अनेक अग्नियोंके साथ अग्नि (अग्नि-भिः अग्निः) आता है ।” यह इन मंत्रोंका वर्णन स्पष्ट-तासे सिद्ध कर रहा है कि, यहां अग्नि शब्द विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है, और केवल आगका ही वाचक नहीं है । इसी प्रकार देवतावाचक अन्य शब्दोंका भी उपयोग किया है । देखिये—

देवता इंद्र—

(१) स वह्निभिर्ऋकभिर्गोषु शश्वन् मितहूभि पुरु-
कृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहा सखिभिः सखी-
यान् दृळ्हा हरोज कविभिः कविः सन् ॥

(ऋ० ६।३।२।३)

(२) इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञ विश्वेभिः देवेभिः ।
तिरस्तवान विश्वते ॥ (ऋ० ३।४।३)

(३) प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो
अप्रतीतः ॥ (ऋ० ३।४।३)

देवता अश्विनौ—

(१) आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं
मधुपेयमश्विना ॥ (ऋ० १।१४।११)

(२) आ नी देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या
रथेन ॥ (ऋ० ७।७।२)

(३) आ...गतं ॥ देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥

(ऋ० ८।२।६।८)

इंद्र देवता के मंत्र-(१) (पुरु-कृत्वा) विविध कर्म करनेवाला वह इंद्र (शश्वत्) सर्वदा (मित-जुभि वह्निभिः ऋकभिः) घुटनोके बल बैठनेवाले अग्निके समान तेजस्वी उपासकों के साथ (गोषु) गौवो, इंद्रियो और भूमि आदिकों के संबंधमें (जिगाय) विनय प्राप्त करता है । (पुरो-हा) शत्रु के नगरोका नाश करनेवाला (सखिभिः कविभिः) मित्ररूप कवियों के साथ (सखीयन् कविः) मित्रता करनेवाला कवि (दृढा पुरः) बल युक्त नगरोका (रुरोज) भेदन करता है ॥ (२) हे (विश्व+पते इंद्र) प्रजापालक प्रभो! (नः धिता+वान यज्ञ) हमारे उत्तम उपकारी यज्ञको (विश्वेभिः देवेभिः) सब देवों के साथ (प्र तिरः) पूर्ण करो ॥ (३) यह इंद्र (रोचमानः) तेजस्वी होता हुआ (मात्राभिः) सब प्रमाणों से (प्र रिरिचे) विशेष तेजस्वी हुआ है और (देवेभिः) देवों के साथ (विश्वतः) सब प्रकार से (अ-प्रतीतः) पीछे हटनेवाला नहीं है ।

अश्विनी देवता के मंत्र = (१) (त्रिभिः एकादशैः देवेभिः) तीन गुणा ग्यारह देवों के साथ, हे अश्विदेवो! यहां मधुपान के लिये आइये । (२) हे (नासत्या) अश्वि-देवो! देवों के साथ रथमें बैठकर वंग से हमारे पास आइये । (३) हे (सचनस्तमौ देवौ) पूज्य देवो! अन्य देवों के साथ यहां आइये ।

अग्नि, इंद्र और अश्विनी देवताओं के मंत्र ऊपर दिये हैं। उनको देखने से पता लग सकता है कि, वाक्य कैसे समान भाव के ही हैं। देखिये—

अग्निदेवता—

देवो देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. १।१।५)
अग्निः देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. ३।१०।४)
अग्ने, अग्निभिः देवेभिः मह्य ॥ (ऋ. ३।२४।४)
भानुभिः देवेभिः अग्निः विभाति ॥ (ऋ. १०।६।२)

इंद्र देवता—

वह्निभिः सः गोषु जिगाय ॥ (ऋ. ६।३२।३)
पुरोहा सखिभिः सखीयान् रुरोज ॥ (ऋ. ६।३२।३)
कविभिः कविः पुरः रुरोज ॥ (ऋ. ६।३२।३)

अश्विनी देवता—

त्रिभिरेकादशैः देवैः आयातं ॥ (ऋ. १।३४।११)
नासत्यौ देवेभिः आयातं ॥ (ऋ. ७।७२।२)

देखिये, भिन्न शब्दों से किस प्रकार एक ही भाव व्यक्त किया गया है । ' इंद्र ' शब्द ' आत्मा ' अर्थ में सुप्रसिद्ध है, क्योंकि ' इंद्रिय ' शब्द इंद्रशक्तिका वाचक आजकल की भाषा में भी अवयवों के अर्थ में प्रयुक्त है, अर्थात् ' अनेक देवों के साथ देवों का राजा इंद्र शत्रु के किले तोड़ता है ' इस वर्णन में ' आत्मा इंद्रियशक्तियों के साथ विरोध-कोका नाश करता है ' यही भाव है । तात्पर्य, इंद्रवर्णन से आत्मवर्णन होने में कोई शका नहीं हो सकती । अश्विनी-देवों के विषय में किम्पीको शका होना स्वाभाविक है । परंतु ' नास+त्य ' शब्द ' नासिका में रहनेवाला ' प्राण इस अर्थ में प्रयुक्त होता है । ' नास+त्य ' यह विशेषण अश्विनी देवों का है, इससे इनका स्थान नासिका है । इसलिये प्राणापान, श्वास-उच्छ्वास आदिकों का वाचक यह शब्द है, इसमें शका नहीं । यह प्राण अन्य देवों के साथ शरीर में आता है और यहां यज्ञ करता है, यह वर्णन पूर्वोक्त अग्नि के वर्णन के साथ मिलाने से पता लग सकता है कि, दोनों वर्णनों से एक ही यज्ञका भाव बताया गया है । (देवो देवेभि आगमत्) ' एक देव अनेक देवों के साथ यहां आता है, यहां यज्ञ करता है। देवों से यज्ञ कराता है, देवों को हविर्भाग देता है, यज्ञसमाप्तिके पश्चात् देवों के साथ चला जाता है । ' यह सब वर्णन यहां ही इस शरीर में देखने का है । आत्मा इंद्रियशक्तियों के साथ यहां आता है, इंद्रियों से कार्य कराता है, खाये हुए अन्न से अंशरूप भोग प्रत्येक इंद्रिय तक पहुंचाता है, इस अंशभोग से इंद्रिय-स्थानीय देवतागग संतुष्ट होता है और वह इस आत्मा को भी सुखी करता है । यह भाव निम्न गीतावचन में देखिये—

देवान् भावयताऽनेन ते देवा भावयंतु वः ।
परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

(भ. गी. ३।११)

' तुम इस यज्ञ से देवताओं को संतुष्ट करते रहो और वे देवता तुम्हें संतुष्ट करते रहे । इस प्रकार परस्पर एक दूसरे को संतुष्ट करते हुए दोनों परम श्रेय अर्थात् कल्याण प्राप्त कर लो । '

आत्मा और अन्य ३३ देव इतनेही पदार्थ इस जगत् में हैं। आत्मा स्वयंप्रकाशी सम्राट् है और ३३ देव आत्माके सेजसे प्रकाशित होनेवाले और आत्माके आदेशानुसार अपना नियत कार्य करनेवाले हैं। जहां आत्मा जाता है, वहां ये जाते हैं, जिस प्रकार सम्राट् के साथ ओहदेदारोंको जाना पड़ता है। अकेला आत्मा कुछ कर नहीं सकता और न सब देव आत्मशक्तिके बिना कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार अन्यान्य सहाय्यताकी आवश्यकता है। अन्यान्य संगतिका ही नाम यज्ञ है। परस्पर सहकारितासे बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं। आत्मा और ३३ देवोंकी सहकारितासे ही यह शरीरका कार्य चल रहा है। इसका इतना महत्त्व है कि, इससे और आश्चर्यकारक घटना जगत्में दूसरी है ही नहीं। परस्पर सहकारितासे इतने आश्चर्यकारक कार्य होना संभव है। यदि एक देव यहां बिगड़ बैठा, तो सब बिगड़ हो जाता है, तात्पर्य सबसे सहकार्यसेही आनंद होना संभव है।

तुलना ।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

[१] राजन्तमध्वराणां ॥ (८; ऋ० १।१।८)

प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः ।

[२] राजन्तमध्वराणां ॥ (१०३, ऋ० १।४।५।४)

[३] पतिर्ह्यध्वराणामग्ने ॥ (९४, ऋ० १।४।४।९)

देवरातः, शुनःशेष अजीगर्तिः । अग्निः ।

[४] सम्राजन्तमध्वराणां ॥ (३८, ऋ० १।२।७।१)

विश्वामित्रः । अग्निः ।

[५] स केतुरध्वराणां ॥ (५१२, ऋ० ३।१।०।४)

सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ ।

[६] राजन्तौ अध्वराणां ॥ (ऋ० ८।८।१।८)

वत्सप्रिः । अग्निः ।

[७] नेतारमध्वराणाम् ॥ (१६०४; ऋ० १०।४।६।४)

भिन्न ऋषि-दृष्ट मन्त्रोंमें वर्णन की समानता इस प्रकार है। अश्विनी देवोंका भी वर्णन इन्हीं शब्दोंसे हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि द्रष्टा ऋषिकी भिन्नता और वर्णनीय देवताकी भिन्नता होनेपर भी 'प्रतिपाद्य विषयकी

एकता' है, अर्थात् जो 'यज्ञ' अग्निदेवताके भिषसे वेवमें बताया है, वही यज्ञ 'अश्विनौ' देवताके नामसे वर्णन किया है और इसी प्रकार अन्यान्य देवताओंके वर्णनसे 'उसी बातका दर्शन होता है।' 'अग्नि यज्ञोंका राजा किंवा प्रकाशक अथवा नेता है,' यही आशय ऊपरके मन्त्रोंका है। यहां इसके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है, उसका सविस्तर वर्णन इसी स्पष्टीकरण में इसीसे पूर्व बताया जाता है। उसको देखनेसे पाठकोंको स्वयं अनुभव हो सकता है कि, यह यज्ञोंका राजा कैसा है और किस रीतिसे यज्ञ कर रहा है।

'ऋतस्य गोपा' अर्थात् 'अनादि सत्य नियमोंका पालनकर्ता' यही है। 'ऋत और सत्य' ये दो अनादि-मिद्ध त्रिकालाबाधित सत्य नियम इस जगत् में सनातन हैं। इनका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। इनका संरक्षक यही आत्माग्नि है। इस विषयमें निम्न मन्त्र देखिये—

[१] ऋतं च सत्यं चाभीक्षात्तपसोऽध्यजायत ॥

(ऋ० १०।१९०।१)

[२] ऋतं पिपर्यन्तं नि तारीत् ॥

(ऋ० १।१५२।२)

[३] ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्ध्यृतस्य धारा
अनु तृन्धि पूर्वीः ॥ (ऋ० ५।१२।२)

[४] ऋतं ऋताय पवते सुमेधाः ॥

(ऋ० ९।९७।२३)

[५] ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते ॥

(ऋ० ५।६८।४)

'(१) प्रदीप्त तपसे ऋत और सत्य उत्पन्न हुए हैं, (२) ऋतका पालन करता है और अनृतको हटाना है, (३) ऋतके जाननेवाले ऋतके नियमको जानो, सनातन ऋतके प्रवाह फैलाओ, (४) उत्तम बुद्धिमान् ऋतके लिये ही ऋत को पवित्र करता है, (५) ऋत नियमसे ऋतका पोषण करनेवाले बहुत सामर्थ्य प्राप्त करते हैं।'।

जिन दो अटल सत्य और सनातन नियमोंसे यह जगत् चल रहा है, वे 'ऋत और सत्य' ये दो नियम हैं। ऋतके विषयमें और देखिये—

[१] हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसज्जोता वेदिषद्-
तिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद् वरसद्वतसद्वयोमस-
दज्ञा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

(ऋ. ४।४०।५; कठ० ५।२)

[२] प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य ॥ (महा. ना. उ. २।७)

[३] अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य ॥ (तै. उ. ३।१०।६)

[४] ऋतं तपः सत्यं तपः ॥ (महा. ना. उ. ८।१)

[५] ऋतं सत्यं परं ब्रह्म ॥ (महा. ना. उ. १२।१)

‘(१) (हंसः) जिस प्राणका बाहिर आनेके समय ‘ह’ ध्वनि होता है और अंदर जानेके समय ‘स’ ध्वनि होता है, वह प्राण (शुचि+षद्) शुद्धमें रहनेवाला, (वसुः) निवासक, (अंतरिक्ष+सद्) हृदयके मध्यमें रहनेवाला, (होता) हवन करनेवाला, (वेदि-षद्) हृदय की वेदिमें रहनेवाला, (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, (दुरोण-सत्) स्वस्थानमें रहनेवाला, (नृ+षद्) मनुष्यके अंदर-हृदयमें-रहनेवाला, (वर-सद्) श्रेष्ठ स्थान में रहनेवाला, (ऋत-सद्) सत्यमें रहनेवाला, (व्योम-सद्) आकाशमें रहनेवाला, (अप्-जा) कर्मके साथ होने-वाला, जीवनके साथ रहनेवाला, (गो-जा) इंद्रियोंके साथ रहनेवाला, (ऋत-जा) ऋतका प्रवर्तक, (अ-द्रि-जा) जड़में रहनेवाला, जो है, वही ‘बृहत् ऋत’ है। (२) ऋतका प्रथम प्रवर्तक प्रजापति है। (३) मैं (अहं) आत्मा ऋतका पहिला प्रवर्तक हूं। (४) ऋत और सत्य तपही है। (५) ऋत और सत्य परब्रह्म है।’

यह ऋत की महिमा है। ऋत स्वयं आत्माका रूपही है। पूर्व मंत्रमें प्राण और आत्माही ऋत है, ऐसा स्पष्ट कहा है, इस लिये आत्माके निज धर्म ही ऋत और सत्य नामसे प्रसिद्ध है। ‘ऋत’ नाम यज्ञका भी है इसलिये (ऋतस्य गोपा) ‘ऋतका रक्षक’ का अर्थ ‘यज्ञका रक्षक’ भी है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

यज्ञस्य देवः । (ऋ. १।१।१)

ऋतस्य गोपा । (ऋ. १।१।८; ३।१०।२)

अध्वराणां राजन् । (ऋ. १।१।८)

अध्वराणां नेता । (ऋ. १०।४६।४)

यज्ञस्य नेता । (ऋ. २।५।२)

यज्ञस्य प्राविता । (ऋ. ३।२।१३)

यज्ञस्य साधनः ।

(ऋ. ३।२।७८)

अग्निदेवता का यह वर्णन एकही भावका द्योतक होना स्वाभाविक है। यज्ञका स्वरूप पहले निश्चित किया ही है। पुरुषका जीवन यज्ञ ही है। इस जीवनरूप यज्ञका नेता, चालक, रक्षक यही आत्माग्नि है, इसमें कोई शंका नहीं है। यही बात पूर्वोक्त उपनिषद्ग्रन्थोंसे सिद्ध हो रही है। वहां भी ऋतका स्वरूप ‘आत्मा’ ही बताया है। इस प्रकार अनेक रीतिसे विचार करनेपर तात्पर्य एकही सिद्ध होता है, यही सत्य अर्थका लक्षण है।

‘दीदिवि’ शब्द इसके पश्चात् आता है। इसका अर्थ ‘प्रकाशमान’ है। इसके समान जो अन्यत्र मंत्रभाग है, उसमें ‘दीदिहि’ पाठ है, देखिये—

मधुच्छंश वैश्वामित्रः । अग्निः ।

गोपामृतस्य दीदिविम् । (ऋ. १।१।८)

विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । (ऋ. ३।१०।२)

उरुक्षय आमहीयवः । अग्नी रक्षोहा ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । (ऋ. १०।११।८।७)

थोडासा पाठभेद होनेपर भी अर्थकी एकता ही है, ‘दीदिवि’ शब्दका अर्थ ‘प्रकाशमान’ है और ‘दीदिहि’ का अर्थ ‘प्रकाशित हो,’ ऐसा है, इसलिये अर्थकी दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

‘वर्धमानं स्वे दमे’ अपने दमनमें बढनेवाला, अपने घरमें वृद्धिको प्राप्त होनेवाला, यह इसका भाव है। ‘दम’ शब्दका अर्थ ‘संयम, दमन, आत्मसंयम, मनोविकार और इंद्रिय वृत्तियोंका संयम मनकी स्थिरता, घर, परिवार’ इतना है। संयमसे अपनी शक्ति बढती है। मनोनिग्रहसे आत्मशक्तिका विकास होता है। यही उन्नतिका नियम है।

(१) सत्कर्मोंका फैलाव करना, (२) सत्यनिष्ठा बढानी, (३) अज्ञानांधकार दूर करके ज्ञानका प्रकाश करना, और (४) संयमसे अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। इस मंत्रसे सब मनुष्योंके लिये यही उपदेश है और जो आत्मोन्नति चाहते हैं, उनके लिये ये बोध अमूल्य हैं। इनका पालन करनेसे मनुष्य अग्निके समान तेजस्वी हो सकता है।

इस तरह तुलनात्मक अध्ययन वेदके मंत्रोंका करना उचित है । इस तरहके अध्ययनसे ही वेद मंत्रोंका रहस्य ध्यानमें आ सकता है । इस दैवत-संहितासे इस तरहके अध्ययनकी अतीव सहायता होनेवाली है । आशा है, इस तरह का अध्ययन करके पाठक लाभ उठावेंगे ।

सूचियोंका उपयोग ।

अग्निदेवताकी 'पुनरुक्त-मन्त्र-सूची' पृ० १८७ से २१६ तक है । इस सूचीसे किस मन्त्रका कौनसा भाग कहाँ पुनरुक्त हुआ है, इसका पता लग सकता है । अग्निके विवरणमें तथा भूमिकामें जो पुनरुक्त मन्त्र दिये हैं और जो विवरण किया है, उससे इस सूचीकी सहायता वेद-मन्त्रोंका अर्थ करनेमें कितनी है, इसका पता लग सकता है । भूमिका पृ० ४८ से ६६ तक पाठक देख सकते हैं कि पुनरुक्त मन्त्रसूचीसे कैसा लाभ हो सकता है । यदि पाठक इस सूचीका उत्तम उपयोग कर सकेंगे, तो मन्त्रका अर्थ अन्तर्गत प्रमाणोंसे निश्चित होनेमें बड़ी सहायता हो सकती है ।

दूसरी उपमा-सूची है । इससे पता लग सकता है कि अग्निको कितनी उपमाएं किस अर्थमें दी हैं ।

तीसरी सूची मन्त्रोंकी अकारादि वर्णानुक्रम-सूची है । इससे कौनसा मन्त्र कहाँ है, इसका पता लग सकता है । अन्तिम सूची विशेषणोंकी है, इससे अग्निके गुण जाने जा सकते हैं । गुणोंका बोध होनेसे स्वरूप का निश्चय होता है । इस तरह ये सब सूचियाँ बड़ी उपयोगी हैं ।

अन्तिम निवेदन ।

यहाँ अन्तिम निवेदन यह है कि यहाँ अग्निके विषयमें जो लिखा है, वही परिपूर्ण है, ऐसा नहीं समझना चाहिये । पाठक विचार करते रहेंगे, तो उनके सामने कई अन्य बातें स्वयं उपस्थित होंगी और प्रकाशित होती रहेंगी । इसलिये हरएक पाठक अपनी स्वतंत्र विचार-शक्तिसे इन मंत्रोंका विचार करें और जो विचार होगा, वह जनताके सामने रखते जाय । इसी तरह करनेसे ही वेद-विद्याका प्रकाश होगा ।

—संपादक



अग्निदेवता का परिचय ।

भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ विषय प्रवेश ।	६	२६ वृद्ध नागरिक ।	१९
२ भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।	११	२७ प्रजामें देवताका अनुभव ।	२०
३ अग्निके पर्याय शब्द ।	११	२८ न दबनेवाला ।	११
४ पहला मानव “ अग्नि ”	११	२९ मूकमें वाचाल ।	२१
५ वृषभ और घेनु ।	७	३० पुराना मित्र ।	११
६ पहला अगिरा ऋषि ।	८	३१ विनाशियोंमें अविनाशी ।	२२
७ वैश्वानर अग्नि ।	११	३२ अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।	२३
८ ब्राह्मण और क्षत्रिय ।	९	३३ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।	२५
९ अग्निसंवर्धन ।	१०	३४ अग्नियोंमें अग्नि ।	२६
१० व्यक्तिभाव और सघभाव ।	११	३५ देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।	२७
११ संवशक्ति का अद्भुत बल ।	११	३६ दूत अग्नि ।	२८
१२ जनता का केन्द्र ।	१२	३७ होता अग्नि ।	२९
१३ समाज का अमरत्व ।	११	३८ अग्निरूप होना ।	११
१४ सत्र धन सघका ही है ।	१३	३९ एक अग्नि से दूसरे अग्निका जलना ।	११
१५ सघ के विजयमें व्यक्ति का जय ।	११	४० देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।	३०
१६ बुद्धि में पहिला अग्नि ।	१४	४१ मानवी प्रजा में अग्नि ।	३१
१७ पहिला मननकर्ता अग्नि ।	१५	४२ जीवन-रसरूप अग्नि ।	३२
१८ मनुष्यमें अग्नि ।	१६	४३ देवोंका निवासक अग्नि ।	११
१९ मर्यादों में अमृत अग्नि ।	१७	४४ दस बहिर्न इसको प्रकट करती हैं ।	३३
२० जाठराग्नि ।	१८	४५ प्रजाका रक्षक ।	३४
२१ वाणी के स्थानमें अग्नि ।	१८	४६ देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।	३५
२२ दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।	१८	४७ यज्ञका ऋषि ।	३६
२३ शक्ति प्रदाता अग्नि ।	१८		
२४ पुरोहित अग्नि । गणराज ।	१८		
२५ हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।	१९		

४८ देवीमें यज्ञ ।	३७	५८ सप्त धातु ।	४५
४९ यही दूत है ।	,,	६० सात घोड़े ।	,,
५० गुहा संचारी अग्नि ।	३८	६१ सात बहिनें ।	,,
५१ अग्निके साथी अनेक देव ।	४०	६२ सात ऋत्विज् ।	,,
५२ " सात " संख्या का महत्त्व ।	४१	६३ पाँच और दो दोहनकर्ता ।	४६
५३ सात हाथ ।	,,	६४ तनूनपात् अग्नि ।	,,
५४ सात जिह्वाएं ।	४२	६५ अन्य बातों का उपदेश ।	४७
५५ सात नदियां ।	४२	६६ परम आत्माग्नि ।	४८
५६ सप्त ऋषि और सप्त नद ।	४३	६७ सारांश ।	,,
५७ सात किरण ।	४४	६८ अग्नि देवताके विचार करनेकी दिशा ।	,,
५८ सप्त रत्न ।	,,	६९ हृदयमें यज्ञ	५२

अग्निदेवताकी सूचियाँ ।

१ पृथक्-मन्त्रसूची	पृ० १८७-२१६
प्रथम-मण्डल	१८७-१९४
द्वितीय "	१९४-१९५
तृतीय "	१९५-१९८
चतुर्थ "	१९८-२००
पञ्चम "	२००-२०४
षष्ठ "	२०४-२०६
सप्तम "	२०६-२०८
अष्टम "	२०८-२१०
दशम "	२१०-२१६
२ उपमासूची	२१७-२२४
३ मंत्राणां अकारानुक्रमसूची	२२५-२३८
४ (विशेषण)गुणबोधकपदसूची	२३८-२७४

अग्निमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) अग्निः ।

ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-९	१	धरुण आङ्गिरसः	८६६-८७०	६४
मेधातिथिः काण्वः	१०-२६	"	पूरुषात्रेयः	८७१-८८०	६५
शुनः शेष आजीगर्तिः,	} २७-४९	२	द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः	८८१-८८५	"
स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः			वन्निरात्रेयः	८८६-८९०	६६
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	५०-६७	३	प्रयस्वन्त आत्रेयाः	८९१-८९४	"
कण्वो घौरः	६८-८५	५	सस आत्रेयः	८९५-८९८	६७
प्रस्कण्वः काण्वः	८६-१०९	६	विश्वसामा आत्रेयः	८९९-९०२	"
नोधा गौतमः	११०-१२३	८	शुम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः	९०३-९०६	"
पराशरः शाकल्यः	१२४-२१४	९	बन्धुः सुबन्धु श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च	} ९०७-९१०	"
गौतमो राहगणः	२१५-२५५	१४	क्रमेण गौपायना लोपायना वा		
कुत्स आङ्गिरसः	२५६-२७१	१६	वसूयव आत्रेयाः	९११-९२७	"
परुच्छेपो दैवोदासिः	२७२-२९१	१८	धरुणक्षैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरु-	} ९२८-९३२	६९
दीर्घतमा औचथ्यः	२९२-३६०	२०	कुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः		
अगस्त्यो मैत्रावरुणः	३६१-३६८	२६	(अत्रिभौम इति केचित्)		
गृत्समदः शौनकः	३६९-४१५	२७	विश्ववारात्रेयी	९३३-९३८	"
सोमाहुतिर्भागवः	४१६-४४६	३०	भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	९३९-१०८९	७०
विश्वामित्रो गाथिनः	४४७-५७३	३२	शंयुर्बार्हस्पत्य (तृणपाणिः)	१०९०-१०९९	८०
ऋषभो वैश्वामित्रः	५७४-५८७	४१	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	११००-१२१३	८१
उत्कीलः कात्यः	५८८-५९९	४२	वत्सः काण्वः	१२१४-२३	८९
ऋतो वैश्वामित्रः	६००-६०९	४३	सोभरिः काण्वः	१२२४-६९	९०
गाथी कौशिकः	६१०-६२६	४४	विश्वमना वैयश्वः	१२७०-९९	९३
देवश्रवा देववातश्च भारतौ	६२७-६३०	४६	नाभाकः काण्व	१३००-१३०९	९४
वामदेवो गौतमः	६३१-७५४	"	विरूप आङ्गिरसः	१३१०-१३८८	९५
बुधगविष्टिरावात्रेयौ	७५५-७६६	५५	भर्गः प्रागाथः	१३८९-१४०८	९८
कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः	} ७६७-७७८	५६	सुदीति-पुरुमीळहावाङ्गिरमौ,	} १४०९-१४२३	१००
उभौ वा			तयोर्बोध्यतरः		
वसुश्रुत आत्रेयः	७७९-८१०	५७	हर्यतः प्रागाथः	१४२४-४१	१०१
हृष आत्रेयः	८११-८२७	६०	गोपवन आत्रेयः	१४४२-५३	१०२
गय आत्रेयः	८२८-८४१	६१	उशना कात्यः	१४५४-६२	"
सुतंभर आत्रेयः	८४२-८६५	६३			

प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्नि-
बार्हस्पत्यो वा गृहस्पति-यविष्ठौ } १४६३-८४ १०३
सहसः पुत्रावान्यतरो वा

प्रित आप्त्यः १४८५-१५३३ ११
त्रिशिरास्वाष्टः १५३४-३९ १०८
हविर्धान आङ्गिः १५४०-५६ ११
दमनो यामायनः १५५७-७० ११०

विमद ऐन्द्र, प्राजापत्यो वा, } १५७१-८८ १११
वसुकृद्वा वासुकः

वत्सप्रिर्भालन्दनः १५८९-१६१० ११२
देवाः १६११-२४ ११४

सुमित्रो वाङ्मयश्चः १६२५-३६ ११५
सौचीकोऽग्निः, वैश्वानरो वा, } १६३७-५० ११६
(ससिर्वाजंभरो वा)

अरुणो वैतहव्यः १६५१-६५ ११७
उपस्तुतो वार्हिहव्यः १६६६-७४ ११८

चित्रमहा वासिष्ठः १६७५-८२ ११९
अग्निः १६८३ १२०

पावकोऽग्निः १६८४-८९ ११

शाङ्गर्गाः (जरिता, द्रोणः, } १६९०-९७ १२१
सारिसृक्चः, सार्वमित्रः)

मृत्कीको वासिष्ठः १६९८-१७०९ ११

केतुराग्नेयः १७०३-७ १२२

सुनुराभ्वः १७०८-१० ११

वत्स आग्नेयः १७११-१५ ११

संवन्नन आङ्गिरसः १७१६ ११

(२) वैश्वानरोऽग्निः ।

नोधा गौतमः १७१७-२३ १२३

कुत्स आङ्गिरसः १७२४-२६ ११

विश्वामित्रो गाथिनः १७२७-५७ १२४

वामदेवो गौतमः १७५८-७२ १२६

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः १७७३-९३ १२७

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः १७९४-१८१२ १२९

(३) रक्षोहाऽग्निः ।

वामदेवो गौतमः १८१३-२७ १३१

पायुर्भारद्वाजः १८२८-५२ १३२
उरुक्षय आमहीयवः १८५३-६१ १३४

(४) जातवेदा अग्निः ।

कश्यपो मारीचः १८६२ ११
श्येन आग्नेयः १८६३-६५ १३५
भृगुः १८६६ ११

(५) घर्मोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः १८६७ ११

(६) औषसोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः १८६८-७८ ११

(७) द्रविणोदा अग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः १८७९-८६ १३३

(८) शुचिरग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः १८८७-९४ १३७

(९) अग्निरापो गावश्च ।

वामदेवो गौतमः १८९५-१९०५ १३८

(१०) आप्री सूक्तानि ।

मेधातिथिः काण्वः १९०६-१७ १३९

दीर्घतमा औचथ्यः १९१८-३० ११

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः १९३१-४१ १४०

गुत्समदः शौनकः १९४२-५२ ११

विश्वामित्रो गाथिनः १९५३-६३ १४१

वसुश्रुत आग्नेयः १९६४-७३ १४२

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः १९७४-८० १४३

असितः काश्यपो देवलो वा १९८१-९१ १४४

सुमित्रो वाङ्मयश्च १९९२-२००२ ११

जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा } २००३-१३ १४५
जामदग्न्यः

विवस्वानुषि २०१४-७१ १४६

मत्स्य २०७२-८३ १५२

विवस्वानुषिः २०८४-२१२८ १५३

विष्वानृषिः	२१२९-४१	१५७
अथर्वा	२१४२-२२१६	१५९
भृगुः	२२१७-७४	१६५
भृग्वक्त्रिः	२२७५-७८	१६९
भङ्गिरा	२२७९-८३	१७०
चातनः	२२८४-२३१८	"
शौनकः	२३१९-२९	१७२
मृगारः	२३३०-३६	१७३
गार्ग्यः	२३३७-३८	१७४
पतिवदनः	२३३९-४०	"
गृत्समदो मेधातिथिर्वा	२३४१	"
शुक्रः	२३४२	"
ब्रह्मा	२३४३-५४	"
वसिष्ठः	२३५५-६४	१७५
बादरायणिः	२३६५-७१	१७६
भङ्गिराः प्रचेताः	२३७२	१७७
मरीचिः काश्यपः	२३७३	"
जातवेदाः	२३७४	"
कौशिकः	२३७५-८९	"
कबन्धः	२३९०-९६	१७८

अग्निसहचारी देवगणः ।

(१) वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

सूर्यन्वाङ्गिरसो,	२३९७-२४१५	१७९
वामदेव्यो वा		

(२) रक्षोहाऽग्निः ।

रक्षोहा ब्रह्मः	२४१६-२१	१८१
-----------------	---------	-----

(३) अपां-न-पादाग्निः ।

गृत्समदः शौनकः	२४२२-३६	"
----------------	---------	---

(४) अग्नीन्द्रादयः ।

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	२४३७	१८२
----------------------	------	-----

(५) अग्निर्मरुतश्च ।

मेधातिथिः काण्वः	२४३८-४६	१८३
सोभरिः काण्वः	२४४७	"

(६) अग्निमित्रवरुणादयः ।

हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	२४४८	"
----------------------	------	---

(७) अग्निर्वरुणश्च ।

वामदेवो गोतमः	२४४९-५२	"
---------------	---------	---

(८) अग्नाविष्णू ।

मेधातिथिः	२४५३-५४	१८४
-----------	---------	-----

(९) अग्निः सूर्यौ ।

पृषधः काण्वः	२४५५	"
--------------	------	---

(१०) अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

दीर्घतमा आचथ्यः	२४५६	"
-----------------	------	---

(११) अग्निः सूर्यानिताः ।

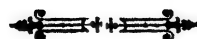
इरिम्बिठिः काण्वः	२४५७	"
-------------------	------	---

(१२) [केशिनः=] अग्निः सूर्यवायवः ।

वातरशना मुनयः= (१-७)		
क्रमेण जूतिः, वातजूतिः,	२४५८-६४	१८५
विप्रजूतिः, वृषाणकः, करि-		
कतः, एतशः, ऋष्यशृङ्ग		

(१३) अग्नीषोमौ ।

गोतमो राह्वगणः	२४६५-७६	"
ब्रह्मा	२४७७-७९	१८६
अथर्वा (यशस्कामः)	२४८०	"
शन्तातिः	२४८१	"
भार्गवः	२४८२-८३	"





दैवत-संहिता

(ऋग्वेदःसामायर्वणां संहितानां सर्वान् मंत्रान् देवतानुसारेण सगृह्य निर्मिता)

१ अग्निदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋग्वेदस्य मण्डलं १, सूक्तं १, मंत्राः १-९) [१ - ९] मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री (८×३) ।

॥ॐ॥ अग्निमीळे पुरोहितं	यज्ञस्य देवमृत्विजम्	। होतारं रत्नधातमम्	१
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिर्	ईड्यो नूतनैरुत	। स देवाँ एह वक्षति	२
अग्निना रयिमश्रवत्	पोषमेव दिवेदिवे	। यशसं वीरवत्तमम्	३
अग्ने यं यज्ञमध्वरं	विश्वतः परिभूरसि	। स इद् देवेषु गच्छति	४
अग्निर्होता कविक्रतुस्	सत्यश्चित्रश्रवस्तमः	। देवो देवेभिरा गमत्	५
यदुङ्ग दाशुषे त्वम्	अग्ने भद्रं करिष्यसि	। तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः	६
उप त्वामे दिवेदिवे	दोषावस्तर्धिया वयम्	। नमो भरन्त एमसि	७
राजन्तमध्वराणां	गोपामृतस्य दीदिविम्	। वर्धमानं स्वे दमे	८
स नः पितेव सूनवे	ऽग्ने स्रपायनो भव	। सचस्वा नः स्वस्तये	९

॥ २ ॥ (ऋ० १ । १२ । १-१२) [१० - २६] मेधातिथिः काण्वः ।

अग्निं दूतं वृणीमहे	होतारं विश्वेदसम्	। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्	१०
अग्निमग्निं हवीमभिस्	सदा हवन्त विश्वतिम्	। हव्यवाहं पुरुप्रियम्	११
अग्ने देवाँ इहा बह	जज्ञानो वृक्तबर्हिषे	। असि होता न ईड्यः	१२
ताँ उञ्जतो वि बौधय	यदग्ने यासि दूत्यम्	। देवैरा सन्ति बर्हिषि	१३

घृताहवन दीदिवः	प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः	१४
अग्निनाग्निः समिध्यते	कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाड् जुह्वास्यः	१५
कविमग्निमुप स्तुहि	सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीव चार्तनम्	१६
यस्त्वामग्ने हविर्षतिर्	दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव	१७
यो अग्निं देववीतये	हविष्मौ आविर्वासति । तस्मै पावक मृळय	१८
स नः पावक दीदिवो	ऽग्ने देवाँ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः	१९
स नः स्तवान् आ भर	गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम्	२०
अग्ने शुक्रेण शोचिषा	विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः	२१

॥ ३ ॥ (ऋ० १ । १५ । ४, १२)

अग्ने देवाँ इहा वह	सादया योनिषु त्रिषु । परिं भूष पिबं क्रतुना	२२
गार्हपत्येन सन्त्य	क्रतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज	२३

॥ ४ ॥ (ऋ० १ । २२ । ९-१०)

अग्ने पत्नीरिहा वह	देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये	२४
आ गा अग्न इहावसे	होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं धिषणां वह	२५

॥ ५ ॥ (ऋ० १ । २३ । २४) अनुष्टुप् (८×४) ।

सं माग्ने वर्चसा सृज	सं प्रजया समायुषा ।	
विद्युर्मै अस्य देवा	इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः	२६

॥ ६ ॥ (ऋ० १ । २४ । २)

[२७-४९] शुनःशेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् (११×४) ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां	मनामहे चारु देवस्य नाम ।	
स नो मखा अदितये पुनर्दात्	पितरं च दृशेयं मातरं च	२७

॥ ७ ॥ (ऋ० १ । २६ । १-१०) गायत्री (८×३) ।

वसिष्वा हि मियेध्य	वस्त्राण्यूर्जां पते । सेमं नो अध्वरं यज	२८
नि नो होता वरेण्यस्	सदा यविष्ठ मन्मभिः । अग्ने दिविर्त्मता वचः	२९
आ हि ष्मा सूनवे पिता	ऽऽपिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्यः	३०

आ नो ब॒र्ही रि॒शाद॑सो वरु॒णो मि॒त्रो अ॒र्य॒मा । सीद॑न्तु मनु॒षो यथा	३१
पूर्व्य॑ होत॒रस्य॑ नो म॒न्दस्व॑ स॒ख्यस्य॑ च । इ॒मा उ॒ षु श्रु॒धी गि॑रः	३२
यच्चि॒द्धि श॒श्वता॑ तना॒ देव॑दे॒वं यजा॑महे । त्वे इ॒द्रूय॑ते ह॒विः	३३
प्रि॒यो नो अस्तु॑ वि॒श्वप॑तिर् होता॒ म॒न्द्रो वरे॑ण्यः । प्रि॒याः स्व॒ग्रयो॑ व॒यम्	३४
स्व॒ग्रयो॑ हि वा॒र्य दे॒वासो॑ दधि॒रे च॑ नः । स्व॒ग्रयो॑ मना॒महे	३५
अथा॑ न उ॒भये॑षाम् अमृ॒त म॒र्त्याना॑म् । मि॒थः स॑न्तु प्रश॑स्तयः	३६
वि॒श्वेभिर॑ग्रे अ॒ग्निभि॑र् इ॒मं य॒ज्ञमि॒दं वचः॑ । च॒नो धाः॑ सहसो॒ यहो	३७

॥ ८ ॥ (ऋ० १ । २७ । १-१२) ।

अ॒श्वं न त्वा॑ वा॒रव॑न्तं वृ॒न्द॒ध्या अ॒ग्नि नमो॑भिः । स॒म्राज॑न्तमध्व॒राणा॑म्	३८
स घा॑ नः सु॒नुः शर्व॑सा पृथु॒प्रगा॑मा सुशे॒वः । मी॒ढ्वाँ अ॒स्माकं॑ बभू॒यात्	३९
स नो॑ दू॒राच्चा॑साच्च नि म॒र्त्याद॑घा॒योः । पा॒हि स॒दमि॑द् वि॒श्वायुः॑	४०
इ॒मम् षु॑ त्वम॒स्माकं॑ स॒नि गा॒यत्रं॑ न॒र्व्यास॑म् । अ॒ग्रे दे॒वेषु॑ प्र वो॒चः	४१
आ नो॑ भज॒ पर॑मे॒ष्वा वा॒जेषु॑ म॒ध्यमे॑षु । शि॒क्षा व॒स्वो अ॒न्त॑मस्य	४२
वि॒भक्ता॑सि चि॒त्रभा॑नो सि॒न्धो॒रूर्मा॑ उ॒पाक॑ आ । स॒द्यो दा॑शु॒षे क्षर॑सि	४३
यम॑ग्रे पु॒त्सु म॒र्त्यम् अ॒वा वा॒जेषु॑ यं जु॒नाः । स य॑न्ता श॒श्वती॑रिषः	४४
नकि॑रस्य सह॒न्त्य प॑र्ये॒ता क॑र्यस्य चि॒त् । वा॒जो अ॑स्ति श्र॒वाय्यः॑	४५
स वा॒जं वि॒श्वच॑र्ष॒णिर् अ॒र्व॒ङ्गि॒रस्तु॑ तरु॒ता । वि॒प्रेभिर॑स्तु स॒निता॑	४६
जरा॑बोध॒ तद् वि॑वि॒द्धि वि॒शेवि॑शे य॒ज्ञिया॑य । स्तोमं॑ रु॒द्राय॑ दृ॒शीक॑म्	४७
स नो॑ म॒हाँ अ॒निमा॑नो धू॒मके॑तुः पु॒रुश्च॑न्द्रः । धि॒ये वा॒जाय॑ हि॒न्वतु॑	४८
स रे॒वाँ इ॒व वि॒श्वप॑तिर् दै॒व्यः के॑तुः शृ॒णोतु॑ नः । उ॒क्थैर॑ग्नि॒र्वृह॑द्भानुः	४९

॥ ९ ॥ (ऋ० १ । ३१ । १-१८) [५० - ६७] हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।

जगती (१२×४), ५७, ६५, ६७ त्रिष्टुप् (११×४) ।

त्वम॑ग्रे प्रथ॒मो अ॒ङ्गिरा॑ ऋषि॒र् दे॒वो दे॒वाना॑मभवः शि॒वः सखा॑ ।	
तव॑ त्र॒ते क॒वयो॑ वि॒श्वना॑प॒सो ऽजा॑यन्त म॒रुतो॑ भ्राज॑दृष्टयः	५०
त्वम॑ग्रे प्रथ॒मो अ॒ङ्गिर॑स्तमः क॒विदे॑वानां परि॒ भूष॑सि त्र॒तम् ।	
वि॒भुर्वि॑श्व॒स्मै भु॒वना॑य मेधि॒रो द्वि॒मा॒ता श॒युः क॑ति॒धा चि॑दा॒यवे॑	५१

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्चन आविर्भव सुकृतूया विवस्वते ।	
अरेजेतां रोदसी होतृवूर्ये ऽसंघोर्भारमयजो महो वंसो	५२
त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरुरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।	
श्वात्रेण यत् पित्रोर्मर्त्यसे पर्या ऽऽ त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः	५३
त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतसुचे भवसि श्रवाग्यः ।	
य आहुतिं परि वेदा वर्षट्कृतिम् एकायुरग्रे विश आविवाससि	५४
त्वमग्ने वृजिनवर्तेनि नरं सकर्मन् पिपार्षि विदथे विचर्षणे ।	
यः शूरसाता परितकम्ये धने दग्नेभिश्चित् समृता हंसि भूर्यसः	५५
त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्ते दधासि श्रवसे दिवेदिवे ।	
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मर्यः कृणोषि प्रय आ च सूरये	५६
त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः ।	
ऋध्याम कर्मापसा नवेन देवैर्घावापृथिवी प्रावतं नः	५७
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ आ देवो देवेष्वनवद्य जागृविः ।	
तनुकृद् बोधि प्रमतिश्च कारवे त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे	५८
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस् त्वं वयस्कृत् तवं जामयो वयम् ।	
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य	५९
त्वमग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन् नहुषस्य विश्पतिम् ।	
इळामकृण्वन् मनुषस्य शासनीं पितुर्यत् पुत्रो मर्मकस्य जायते	६०
त्वं नो अग्ने तवं देव पायुभिर् मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।	
त्राता लोकस्य तनेये गवामसि अनिमेषं रक्षमाणस्तवं व्रते	६१
त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरो ऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे ।	
यो रातहव्योऽवृकाय धार्यसे कीरेश्चिन् मन्त्रं मनसा वनोषि तम्	६२
त्वमग्ने उरुशंसाय वाघते स्पार्ह यद् रेकणः परमं वनोषि तत् ।	
आध्रस्य चित् प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्सि प्र दिक्षो विदुष्टरः	६३
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः ।	
स्वादुक्षन्ना यो वसतौ स्योनकृज् जीवयाजं यजते सोपमा दिवः	६४

इमामग्ने शरणिं भीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।	
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भूमिरस्यृषिकृन् मर्त्यानाम्	६५
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत् सदाने पूर्ववच्छुचे ।	
अच्छ याहा वह्ना दैव्यं जनम् आ सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्	६६
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्तीं वा यत्ते चकृमा विदा वा ।	
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त् सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या	६७

॥ १० ॥ (क्र० १ । ३६ । १-१२, ५-२०)

[६८ - ८५] कण्वो घोरः । प्रगाथः = बृहती (८ । ८ । १२ । ८) + सतो बृहती (१२ । ८ । १२ । ८) ।

प्र वो यद्दं पुरुषां विशां देवयतीनाम् ।	
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे यं सीमिदन्य ईळते	६८
जनांसो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते ।	
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य	६९
प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ।	
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः	७०
देवासंस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते ।	
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धनं यस्ते ददाश मर्त्यः	७१
मन्द्रो होता गृहपतिर् अग्ने दूतो विशामसि ।	
त्वे विश्वा संगतानि त्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत	७२
त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठय विश्वमा हूयते हविः ।	
स त्वं नो अद्य सुमना उताऽपरं यक्षि देवान्सुवीर्या	७३
तं धेमिन्था नमस्विन् उपं स्वराजमासते ।	
होत्राभिरग्निं मनुषः समिन्धते तितिर्वासो अति स्निधः	७४
मन्तो वृत्रमतरन् रोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ।	
भुवत् कण्वे वृषा द्युमन्याहुतः क्रन्ददश्चो गर्विष्टिषु	७५
सं सीदस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः ।	
वि भूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम्	७६

यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन । यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः	७७
यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईध क्रतादधि । तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा क्रचस् तमग्निं वर्धयामसि रायस्पृधिं स्वधावोऽस्ति हि ते ऽग्ने देवेष्वाप्यम् । त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महौ असि	७८ ७९
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यर्विष्ठय घनेव विष्वग् वि जह्वराव्णस् तपुर्जम्भ यो अस्मध्रुक् । यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर् मा नः स रिपुरीशित	८० ८१
अग्निर्वन्ने सुवीर्यम् अग्निः कण्वाय सौभगम् । अग्निः प्रार्वन् मित्रोत मेध्यातिथिम् अग्निः साता उपस्तुतम् अग्निना तुर्वशं यदु परावत उग्रादेवं हवामहे । अग्निर्नयन् नववास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीति दस्यवे सहः	८२ ८३
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते । दीदेथ कण्वं क्रतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये । रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समन्त्रिणं दह	८४ ८५

॥ ११ ॥ (क्र० १।४४।१-१४)

[८६ - १०९] प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = बृहती (८।८।१२।८) + सतो बृहती (१२।८।१२।८) ।

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्य । आ दाशुषे जातवेदो बहा त्वम् अद्या देवाँ उपबुधः जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽग्ने रथीरध्वराणाम् । सजूरश्चिभ्यामुषसा सुवीर्यम् अस्मे धेहि श्रवो बृहत् अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् । धूमकेतुं भाक्रजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम्	८६ ८७ ८८
--	----------------

श्रेष्ठं यर्विष्टमर्तिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे । देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम् अग्निमीळे व्युष्टिषु	८९
स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन । अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन	९०
सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठय मधुजिह्वः स्वाहुतः । प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम्	९१
होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते । स आ वह पुरुहूत प्रचेतसो ऽग्ने देवाँ इह द्रवत्	९२
सवितारमुषसमश्विना भगम् अग्निं व्युष्टिषु क्षपः । कणासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर	९३
पतिर्ह्यध्वराणाम् अग्ने दूतो विशामसि । उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दशः	९४
अग्ने पूर्वा अनुषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः । असि ग्रामेष्वविता पुरोहितो ऽसि यज्ञेषु मानुषः	९५
नि त्वा यज्ञस्य सार्धनम् अग्ने होतारमृत्विजम् । मनुष्वद् देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम्	९६
यद् देवानां मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दूत्यम् । सिन्धौरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽग्नेर्भ्राजन्ते अर्चयः	९७
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर् देवैरग्ने सयावभिः । आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्	९८
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः । पिबन्तु सोमं वरुणो धृतव्रतो ऽश्विभ्यामुषसा सज्रः	९९

॥ १२ ॥ (ऋ० १ । ४५ । १-१०) अनुष्टुप् (८×४) ।

त्वमग्ने वक्षिहि रुद्राँ आदित्याँ उत । यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् १००
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः । तान् रोहिदश्च गर्विणस् त्रयस्त्रिंशत्तमा वह १०१
प्रियमेधवदन्निवज् जातवेदो विरूपवत् । अङ्गिरस्वन् महिब्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् १०२

महिर्केव उतये प्रियमेधा अहूषत । राजन्तमध्वराणाम् अग्निं शुक्रेण शोचिषा १०३
घृताहवन सन्त्य इमा उ पु श्रुधी गिरः । याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा १०४
त्वां चित्रश्रवस्तम् हवन्ते विश्व जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रिय अग्ने हव्याय वोह्वे १०५
नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिर्विष्टिषु १०६
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः । बृहद् भा बिभ्रतो हविर् अग्ने मर्तीय दाशुषे १०७
प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य । इहाद्य दैव्यं जनै बृहिरा सादया वसो १०८
अर्वाञ्च दैव्यं जनम् अग्ने यक्ष्व सहतिभिः । अयं सोमः सुदानवस् तं पात तिरोजह्यम् १०९

॥१३॥ (ऋ० १।५८।१-९) [११०-१२३] नोधा गौतमः । जगती, (१२×४) ११५-१२३ त्रिष्टुप् (११×४) ।

नू चित् सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद् दूतो अभवद् विवस्वतः ।
वि सार्धिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषां विवासति ११०
आ स्वमघं युवमानो अजरस् तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति ।
अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् १११
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः ।
रथो न विक्ष्वञ्जसान आयुषु व्यानुषग् वार्या देव क्रण्वति ११२
वि वार्तजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुह्वभिः सृण्या तुविष्वणिः ।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ११३
तपुर्जम्भो वन आ वार्तचोदितो यूथे न साह्वौ अव वाति वंसंगः ।
अभित्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः ११४
दधुष्टा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनैभ्यः ।
होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ११५
होतारं सप्त जुहोः यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।
अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ११६
अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ ।
अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्य ऊर्जो नपात् पूभिरायसीभिः ११७
भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन् मघवञ्चः शर्म ।
उरुष्याग्ने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ११८

॥ १४ ॥ (ऋ० १ । ६० । १-५)

[११९-१२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योऽर्थम् ।	
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं रातिं भरद् भृगवे मातरिश्वा	११९
अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मतीः ।	
दिवश्चित् पूर्वो न्यसादि होता ऽऽपृच्छयौ विश्वपतिर्विष्णु वेधाः	१२०
तं नव्यसी हृद आ जायमानम् अस्मत् सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।	
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त	१२१
उशिक् पावको वसुमानुषेषु वरेण्यो होताधायि विश्व ।	
दर्पूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्धुवद् रयिपती रयीणाम्	१२२
तं त्वा वयं पतिमग्रे रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः ।	
आशुं न वाजंभरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्ष धियावसुर्जगम्यात्	१२३

॥ १५ ॥ (ऋ० १ । ६५ । १-१०)

[१२४-२१४] पराशरः शाक्त्यः । द्विपदा विराद् ।

पश्चा न तायुं, गुहा चतन्तं नमो युजानं, नमो वहन्तम्	१२४
सजोषा धीराः, पदैरनु गमन् उप त्वा सीदन्, विश्वे यजत्राः	१२५
ऋतस्य देवा, अनु व्रता गुर् भुवत् परिष्टिर, द्यौर्न भूम	१२६
वर्धन्तीमार्षः, पन्वा सुशिश्विम् ऋतस्य योना, गर्भे सुजातम्	१२७
पृष्टिर्न रण्वा, क्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुजम्, क्षोदो न शंभु	१२८
अत्यो नाज्मन्, त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्न क्षोदुः, क ई वराते	१२९
जामिः सिन्धूनां, भ्रातैव स्वस्त्राम् इभ्यान् न राजा, वनान्यत्ति	१३०
यद्वातजूतो, वना व्यस्थाद् अग्निर्ह दाति, रोमा पृथिव्याः	१३१
श्वसित्यप्सु, हंसो न सीदन् कृत्वा चेतिष्ठो, विशामुषर्धुत्	१३२
सोमो न वेधा, ऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा, विश्वदूरेभाः	१३३

॥ १६ ॥ (ऋ० १ । ६६ । १-१०)

स्यिर्न चित्रा, सूरौ न संहग् आयुर्न प्राणो, नित्यो न सूनुः	१३४
तक्का न भूर्णिर्, वना सिषक्ति पयो न धेनुः, शुचिर्विभावा	१३५

दाधार क्षेमम्, ओको न रण्वो	यवो न पक्वो, जेता जनानाम्	१३६
ऋषिर्न स्तुभ्वा, विश्व प्रशस्तो	वाजी न प्रीतो, वर्यो दधाति	१३७
दुरोकशोचिः, क्रतुर्न नित्यो	जायेव योनाव्, अरं विश्वस्मै	१३८
चित्रो यदभ्राद्, ह्येतो न विश्व	रथो न रुक्मी, त्वेषः समत्सु	१३९
सेनेव सृष्टा, ऽमै दधाति	अस्तुर्न दिद्युत्, त्वेषप्रतीका	१४०
यमो ह जातो, यमो जनिष्व	जारः कनीनां, पतिर्जनीनाम्	१४१
तं वञ्चराथा, वयं वसत्यास्	तं न गावो, नक्षन्त इद्धम्	१४२
सिन्धुर्न क्षोदुः, प्र नीचीरैनोन्	नवन्त गावः, स्वर्दृशीके	१४३

॥ १७ ॥ (ऋ० १। ६७। १-१०)

वनेषु जायुर्, मतेषु मित्रो	वृणीते श्रुष्टि, राजेवाजुर्यम्	१४४
क्षेमो न साधुः, क्रतुर्न भद्रो	भुवत् स्वाधीर्, होता हव्यवाद्	१४५
हस्ते दधानो, नृम्णा विश्वानि	अमै देवान् धाद्, गुहा निषीदन्	१४६
विदन्तीमत्र, नरो धियंधा	हृदा यत् तृष्टान्, मन्त्राँ अशंसन्	१४७
अजो न क्षां, दाधार पृथिवीं	तस्तम्भ द्यां, मन्त्रैभिः सुत्यैः	१४८
प्रिया पदानि, पश्वो नि पाहि	विश्वायुरग्रे, गुहा गुहं गाः	१४९
य ई चिकेत, गुहा भवन्तम्	आ यः ससाद्, धारामृतस्य	१५०
वि ये चृतन्ति, क्रता सर्पन्त	आदिद् वल्लनि, प्र ववाचास्मै	१५१
वि यो वीरुत्सु, रोधन् महित्वा	उत प्रजा, उत प्रसूष्वन्तः	१५२
चित्तिरपां, दमै विश्वायुः	समेव धीराः, संमाय चक्रुः	१५३

॥ १८ ॥ (ऋ० १। ६८। १-१०)

श्रीणन्नपे स्थाद्, दिवं भुरण्युः	स्थातुश्चरथम्, अक्तून् व्यूणीत्	१५४
परि यदेषाम्, एको विश्वेषां	भुवद् देवो, देवानां महित्वा	१५५
आदित् ते विश्वे, क्रतुं जुषन्त	शुष्काद्यद् देव, जीवो जनिष्ठाः	१५६
भजन्त विश्वे, देवत्वं नाम	क्रतं सर्पन्तो, अमृतमेवैः	१५७
क्रतस्य प्रेषा, क्रतस्य धीतिर्	विश्वायुर्विश्वे, अपांसि चक्रुः	१५८
यस्तुभ्यं दाशाद्, यो वा ते शिक्षात्	तस्मै चिकित्वान्, रयिं दयस्व	१५९
होता निषत्तो, मनोरपत्ये	स चिन् न्वासां, पती रयीणाम्	१६०

इच्छन्त॒ रेतो॑, मिथ॒स्तनू॑षु सं जान॒त स्वैर्, दक्षै॑रमू॒राः	१६१
पितु॑र्न पु॒त्राः, कर्तुं जुष॑न्त॒ श्रोष॑न् ये अस्य॒, शासं॑ तुरासः	१६२
वि राय॑ और्णो॒द्, दुरः॑ पुरु॒क्षुः पिपे॑श नाकं, स्तृभि॑र्दमू॒नाः	१६३

॥ १९ ॥ (ऋ० १ । ६९ । १-१०)

शुक्रः शु॒शुक्रौ॑, उ॒षो न जा॒रः प॒प्रा संमी॑ची, दि॒वो न ज्योतिः॑	१६४
परि॑ प्रजा॒तः, कृ॒त्वा बभू॑थ भुवो॑ दे॒वानां॑, पि॒ता पु॒त्रः सन्	१६५
वे॒धा अ॒दृप्तो॑, अ॒ग्निर्वि॑जानन् ऊ॒धर्न॑ गो॒नां, स्वा॒न्नां पि॒तूनाम्	१६६
जने॑ न शेव॑, आ॒हूयः॑ सन् मध्ये॑ निष॑त्तो, र॒ण्वो दुरो॑णे	१६७
पु॒त्रो न जा॒तो, र॒ण्वो दुरो॑णे वा॒जी न प्री॑तो, वि॒शो वि ता॑रीत्	१६८
वि॒शो यद॑ह्ने, नृ॒भिः सनी॑ळा अ॒ग्निर्दे॑वत्वा, वि॒श्वान्य॑श्याः	१६९
नकि॑ष्ट ए॒ता, व्र॒ता मि॑नन्ति नृ॒भ्यो यदे॑भ्यः, श्रु॒ष्टिं च॒कर्त्त॑	१७०
तत् तु ते दं॑सो, यद॑हन्त॒समानै॑र् नृ॒भिर्यद् यु॑क्तो, वि॒वे रपा॑सि	१७१
उ॒षो न जा॒रो, वि॒भावो॑स्रः सं॒ज्ञातरू॑पश्चि॒कैतद॑स्मै	१७२
त्मना॑ वह॑न्तो, दुरो॑ व्यृ॒ण्वन् नव॑न्त॒ विश्वे॑, स्व॒र्दे॒शीके॑	१७३

॥ २० ॥ (ऋ० १ । ७० । १-११)

व॒नेम॑ पूर्वी॒र्, अ॒र्यो म॑नीषा अ॒ग्निः सु॒शोको॑, वि॒श्वान्य॑श्याः	१७४
आ दै॒व्यानि॑, व्र॒ता चि॑कित्वा॒न् आ मा॑नुषस्य॒, ज॒नस्य॑ जन्म	१७५
ग॒र्भो यो अ॒पां, ग॒र्भो व॑ना॒नां ग॒र्भश्च॑ स्था॒तां, ग॒र्भश्च॑रथाम्	१७६
अ॒द्रौ चि॑दस्मा, अ॒न्तर्दुरो॑णे वि॒शां न वि॒श्वो, अ॒मृतः॑ स्वा॒धीः	१७७
स हि क्ष॑पावो॑, अ॒ग्नी र॑यीणां दा॒शद् यो अ॑स्मा, अ॒रं सू॑क्तैः	१७८
ए॒ता चि॑कित्वा॒न्, भू॒मा नि पा॑हि दे॒वानां॑ जन्म॒, म॒तीश्च॑ वि॒द्वान्	१७९
व॒र्धान्यं॑ पूर्वीः, क्ष॒पो वि॑रूपाः स्था॒तुश्च॑ रथम्, कृत॑प्रवीतम्	१८०
अ॒राधि॑ हो॒ता, स्व॒र्निष॑त्तः कृ॒ण्वन् वि॒श्वानि॑, अ॒पांसि॑ स॒त्या	१८१
गोषु॑ प्र॒शस्ति॑, व॒नेषु॑ धिषे भर॑न्त॒ विश्वे॑, ब॒लिं स्व॑र्णः	१८२
वि त्वा॑ नरः, पु॒रुषा॑ संपर्यन् पि॒तुर्न जि॒त्रेर्, वि वे॑दो भरन्त॒	१८३
सा॒धुर्न गृ॑ध्नु॒र्, अ॒स्तैव॑ श॒रो या॑तैव भ॒मिस्, त्वे॒षः स॒मत्सु॑	१८४

॥ २१ (ऋ० १।७१।१-१०) । त्रिष्टुप् ।

उप प्र जिन्वन्नृशतीरुशन्तं	पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः ।	
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुषन्	चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः	१८५
वील्ल चिद् दृह्वा पितरो न उक्थैर्	अद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण ।	
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे	अहः स्वर्विविदुः केतुमुम्नाः	१८६
दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिम्	आदिदुर्यो दिधिष्वोरे विभृत्राः ।	
अतृष्यन्तीरपसौ यन्त्यच्छा	देवाञ् जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः	१८७
मथीद् यदीं विभृतो मातरिश्वा	गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत् ।	
आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा	सन्ना दूत्यं भृगवाणो विवाय	१८८
महे यत् पित्र ई रसं दिवे कर्	अव त्सरत् पृश्न्यश्चिकित्वान् ।	
सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै	स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात्	१८९
स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति	नमो वा दाशदुशतो अनु दून् ।	
वधौ अग्ने वयो अस्य द्विवर्हा	यासद् राया सरथं यं जुनासि	१९०
अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते	समुद्रं न स्रवतः सप्त यहीः ।	
न जामिभिर्वि चिकिते वयो नो	विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान्	१९१
आ यदिषे नृपतिं तेज आनद्	शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीकै ।	
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं	स्वाध्व्यं जनयत् सुदयञ्च	१९२
मनो न योऽध्वनः सद्य एति	एकः सत्रा सूरौ वस्व ईशे ।	
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी	गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा	१९३
मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि	प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन् ।	
नभो न रूपं जरिमा मिनाति	पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि	१९४

॥ २२ ॥ (ऋ० १।७२।१-१०)

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्	हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।	
अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणां	सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा	१९५
अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन्	इच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः ।	
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्	तस्थुः पदे परमे चार्वमे	१९६

तिस्रो यदग्ने शरदुस्त्वाभिच् छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान् । नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि असूदयन्त तन्वः सुजाताः	१९७
आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रिया जग्निरे यज्ञियासः । विदन् मर्तो नेमषिता चिकित्वान् अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम्	१९८
संजानाना उप सीदन्नभिज्जु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन् । रिरिक्कांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः	१९९
त्रिः सप्त यद् गुह्यानि त्वे इत् पदार्विदन् निहिता यज्ञियासः । तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशुश्च स्थातृश्चरथं च पाहि	२००
विद्राँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषक्छुरुधो जीवसे धाः । अन्तर्विद्राँ अध्वनो देवयानान् अतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट्	२०१
स्वाध्याँ दिव आ सप्त यद्वा रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन् । विदद् गव्यं सरमा दृह्ममूर्वं येना नु कं मानुषी भोजते विट्	२०२
आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् । महा महद्भिः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः	२०३
अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन् दिवो यदुक्षी अमृता अकृण्वन् । अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन्	२०४

॥ २३ ॥ (क्र० १ । ७३ । १-१०)

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शसुः । स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो होतेव सन्न विधतो वि तारीत्	२०५
देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा । पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत्	२०६
देवो न यः पृथिवी विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा । पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी	२०७
तं त्वा नरो दम् आ नित्यमिदम् अग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु । अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन् भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम्	२०८

वि पृक्षो अग्ने मघवानो अश्वयुर् वि सूरयो ददतो विश्वमायुः ।	
सनेम वाजै समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः ।	२०९
ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूधीः पीपयन्त द्युभक्ताः ।	
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया ससुरर्द्रिम्	२१०
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः ।	
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः	२११
यान् राये मर्तान्तसुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं च ।	
छायेव विश्वं भुवनं सिसाक्षि आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्	२१२
अर्वेद्विरग्ने अर्वतो नृभिर्नृन् वीरैर्वीरान् वनुयामा त्वोताः ।	
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः शतहिमा नो अश्वयुः	२१३
एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च ।	
शकेम रायः सुधुरो यमं ते ऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः	२१४

॥ २४ ॥ (ऋ० १ । ७४ । १-९) [२१५-२५५] गोतमो राहृगणः । गायत्री ।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्रये । आरे अस्मे च शृण्वते	२१५
यः स्त्रीहितीषु पूर्यः सैजग्मानासु कृष्टिषु । अरक्षद् दाशुषे गर्यम्	२१६
उत भुवन्तु जन्तव उदभिर्वृत्रहार्जनि । धनंजयो रणेरणे	२१७
यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये । दुस्मत् कृणोष्यध्वरम्	२१८
तमित् सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम्	२१९
आ च वहासि तां इह देवाँ उप प्रशस्तये । हव्या सुश्वन्द्र वीतये	२२०
न योरुपन्दिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन । यदग्ने यासि दूत्यम्	२२१
त्वोतो वाज्यहयो ऽभि पूर्वस्मादपरः । प्र दाश्वौ अग्ने अस्थात्	२२२
उत द्युमत् सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि । देवेभ्यो देव दाशुषे	२२३

॥ २५ ॥ (ऋ० १ । ७५ । १-५)

जुषस्व सप्रथस्तमं बचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि	२२४
अथा ते अङ्गिरस्तम अग्ने वेधस्तम प्रियम् । वोचेम ब्रह्म सानसि	२२५
कस्ते जामिर्जनानाम् अग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः	२२६

त्वं जामिर्जनानाम् अग्रे मित्रो असि प्रियः । सखा सखिभ्य ईड्यः २२७
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ क्रतुं बृहत् । अग्रे यक्षि स्वं दमम् २२८

॥ २६ ॥ (ऋ० १ । ७६ । १-५) त्रिष्टुप् ।

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शतमा का मनीषा ।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम २२९
एह्यन्न इह होता नि पीद अदब्धः सु पुरेता भवा नः ।
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे सौमनसाय देवान् २३०
प्र सु विश्वान् रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा ।
अथा वह सोमपतिं हरिभ्याम् आतिथ्यमस्मै चक्रुमा सुदान्त्रे २३१
प्रजावता वचसा वहिरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः ।
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम् २३२
यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर् देवाँ अयजः कविभिः कविः सन् ।
एवा होतः सत्यतर त्वमद्य अग्रे मन्द्रया जुह्वा यजस्व २३३

॥ २७ ॥ (ऋ० १ । ७७ । १-५)

कथा दाशेमाग्रये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः ।
यो मर्त्येष्वमृतं क्रतावा होता यजिष्ठ इत् कृणोति देवान् २३४
यो अध्वरेषु शतम क्रतावा होता तमु नमोभिरा कृणुध्वम् ।
अग्निर्यद् वेर्मतीय देवान् त्स चा बोधाति मनसा यजाति २३५
स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर् मित्रो न भुदद्भुतस्य रथीः ।
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर् विश उप ब्रुवते दुस्ममारीः २३६
स नो नृणां नृतमो रिशादा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम् ।
तना च ये मधवानः शर्विष्ठा वाजप्रसूता इष्यन्त मन्म २३७
एवाग्निर्गोतमेभिर्क्रतावा विप्रैरभिस्तोष्ट जातवेदाः ।
स एषु द्युम्नं पीपयत् स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् २३८

॥ २८ ॥ (ऋ० १ । ७८ । १-५) गायत्री

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र गोनुमः २३९

तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । धुम्नैराभि प्र णौनुमः	२४०
तमु त्वा वाजसातमम् अङ्गिरस्वद् हवामहे । धुम्नैराभि प्र णौनुमः	२४१
तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यैरवधूनुषे । धुम्नैराभि प्र णौनुमः	२४२
अवोचाम् रहूगणा अग्नये मधुमद् वचः । धुम्नैराभि प्र णौनुमः	२४३

॥ २९ ॥ (ऋ० १ । ७९ । १-१२)

२४४-४६ त्रिष्टुप्; २४७-४९ उष्णिक्, २५०-२५५ गायत्री ।

हिरण्यकेशो रजसो विसारे ऽहिर्धुनिर्वात इव ध्रजिमान् ।	
शुचिभ्राजा उषसो नवैदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः	२४४
आ ते सुपर्णा अभिनन्त एवैः कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम् ।	
शिवाभिर्न स्मर्यमानाभिरागात् पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा	२४५
यदीमृतस्य पर्यसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः ।	
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ	२४६
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो । अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः	२४७
स ईधानो वसुष्कविर् अग्निरीळन्यो गिरा । रेवदुस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि	२४८
क्षपो राजकुत त्मना ऽग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिमजम्भ रक्षसो दह प्रति	२४९
अवा नो अग्न ऊतिभिर् गायत्रस्य प्रभर्मणि । विश्वासु धीषु वन्द्य	२५०
आ नो अग्ने रयि भर सत्रासाहं वरेण्यम् । विश्वासु पृतसु दुष्टरम्	२५१
आ नो अग्ने सुचेतुना रयि विश्वायुषोषसम् । माडीकं धेहि जीवसे	२५२
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये । भरस्व सुम्नयुगिरः	२५३
यो नो अग्नेऽभिदासति अन्ति दूरे पदीष्ट सः । अस्माकमिद् वृधे भव	२५४
सहस्राक्षो विचर्षणिर् अग्नी रक्षोसि सेधति । होता गृणीत उक्थ्यः	२५५

॥ ३० ॥ (ऋ० १ । ९४ । १-१६)

[२५६-२७१] कुत्स आङ्गिरसः । जगती; २७०-७१ त्रिष्टुप् ।

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।	
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५६
यस्मै त्वमायजसे स साधति अनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम्	
स तूताव नैनमश्रोत्यंहतिर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५७

शकेम त्वा समिधं साधया धियस् त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।	
त्वमादित्याँ आ वह तान ह्यु॑श्मसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५८
भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।	
जीवातवे प्रतरं साधया धियो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५९
विशां गोपा अस्य चरन्ति जुन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदुक्तुभिः ।	
चित्रः प्रकेत उषसो मह्यँ असि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६०
त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जुनुषा पुरोहितः ।	
विश्वा विद्राँ आर्त्विज्या धीर पुष्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६१
यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्क्षि दूरे चित् सन्तळिदिवाति रोचसे ।	
राज्याश् चिदन्धो अर्तिं देव पश्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६२
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।	
तदा जानीतोत पुष्यता वचो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६३
वधैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः ।	
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृधि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६४
यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते रवः ।	
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुना ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६५
अध स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत् ते यवसादो व्यस्थिरन् ।	
सुगं तत् ते तावकेभ्यो रथेभ्यो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६६
अयं मित्रस्य वरुणस्य धार्यसे ऽवयातां मरुतां हेळो अङ्गुतः ।	
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६७
देवो देवानामसि मित्रो अङ्गुतो वसुर्वस्रनामसि चारुर्ध्वरे ।	
शर्मन् तस्याम तव सप्रथस्तमे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६८
तत् ते भद्रं यत् समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळयत्तमः ।	
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६९
यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशो ऽनागास् त्वमदिते सर्वताता ।	
यं भद्रेण शर्वसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम	२७०

स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वान् अस्माकमायुः प्र तिरेह देव ।
तन् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २७१

॥ ३१ ॥ (ऋ० १ । १२७ । १-११)

[२७२—२९१] परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, २७७ अतिधृतिः ।

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सुनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमुनु वष्टि शोचिषा ऽऽजुह्वानस्य सर्पिषः २७२

यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर् विप्रैभिः शुक्र मन्मभिः ।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः २७३

स हि पुरु चिदोर्जसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः ।
वीळ चिद् यस्य समृतौ श्रुवद् वनेव यत् स्थिरम् ।
निष्पहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते २७४

दृष्ट्वा चिदस्मा अनु दुर्यथा विदे तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्ट्यवसे ऽग्नये द्वाष्ट्यवसे ।
प्र यः पुरुणि गार्हते तक्षद् वनेव शोचिषा ।
स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योर्जसा नि स्थिराणि चिदोर्जसा २७५

तमस्य पृक्षष्टुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शितरो दिवातराद् अप्रायुषे दिवातरात् ।
आदस्यायुर्ग्रभणवद् वीळ शर्म न सुनवे ।
भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्नयो व्यन्तो अजराः २७६

स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिर् अम्रस्वतीपूर्वरास्विष्टनिर् आर्तेनास्विष्टनिः ।
आदद्भ्रव्यान्यादुदिर् यज्ञस्य केतुरर्हणा ।
अध स्मास्य हर्षतो हर्षीवतो विश्वे जुषन्त पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् २७७

द्विता यदी क्रीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो मधन्तो दाक्षा भृगवः ।
अग्निरीशे वसूनां शुचिर्यो धर्णिरेषाम् ।
प्रियां अपिर्धोर्वैनिषीष्ट मेधिर् आ वनिषीष्ट मेधिः २७८

विश्वासां त्वा विशां पतिं हवामहे सर्वसां समानं दंपतिं भुजे सत्यगिर्वाहसं भुजे ।

अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यास्या ।

अमी च विश्वे अमृतास आ वयो हव्या देवेष्वा वयः २७९

त्वमग्ने सहसा सहन्तमः शुष्मिन्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये ।

शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युष्मिन्तम उत क्रतुः ।

अध स्मा ते परिं चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर २८०

प्र वो महे सहसा सहस्वत उषर्बुधे पशुषे नामये स्तोमो बभूत्वग्रये ।

प्रति यदीं हविष्मान् विश्वासु क्षासु जोगुवे ।

अग्ने रेभो न जरत ऋषूणां जूणिर्होत ऋषूणाम् २८१

स नो नेदिष्ठं ददृशान आ भर अग्ने देवेभिः सचंनाः सुचेतुनां महो रायः सुचेतुनां ।

महिं शविष्ठ नस्कृधि संचक्षे भुजे अस्यै ।

महिं स्तोतृभ्यो मघवन् त्सुवीर्यं मथीरुग्रो न शर्वसा २८२

॥ १२ ॥ (ऋ० १ । १२८ । १-८)

अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतम् अग्निः स्वमनु व्रतम् ।

विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते ।

अदब्धो होता नि षददिलस्पदे परिवीत इळस्पदे २८३

तं यज्ञसाधमपि वातयामसि क्रतस्य पथा नमसा हविष्मता देवताता हविष्मता ।

स न ऊर्जामुपाभृनि अया कृपा न जूर्यति ।

यं मातरिश्वा मनवे परावतो देवं भाः परावतः २८४

एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं मुहुर्मी रेतो वृषभः कर्निकदद् दधद् रेतः कर्निकदत् ।

शतं चक्षाणो अक्षभिर् देवो वनेषु तुर्वणिः ।

सदो दधान उपरेषु सानुषु अग्निः परेषु सानुषु २८५

स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमे ऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति क्रत्वा यज्ञस्य चेतति ।

क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे ।

यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वह्निर्वेधा अजायत २८६

ऋत्वा यदस्य तविषीषु पृश्नते ऽग्नेरवेण मरुतां न भोज्या इषिराय न भोज्या ।

स हि ष्मा दानमिन्वति वसूनां च मज्मना ।

स नस् त्रासते दुरितादभिहृतः शंसादुघादभिहृतः

२८७

विश्वो विहाया अरतिर्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच् छूवस्यया न शिश्रथत् ।

विश्वस्मा इदिषुध्यते देवत्रा हव्यमोहिषे ।

विश्वस्मा इत् सुकृते वारमृण्वति अग्निर्द्वारा व्यृण्वति

२८८

स मानुषे वृजने शंतमो हितोऽग्ने ऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विस्पतिः प्रियो यज्ञेषु विस्पतिः ।

स हव्या मानुषाणाम् इळा कृतानि पत्यते ।

स नस् त्रासते वरुणस्य धूर्तेर् महो देवस्य धूर्तेः

२८९

अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्यैरिरे हव्यवाहं न्यैरिरे ।

विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् ।

देवासो रण्वमवसे वसूयवो गीर्भो रण्वं वसूयवः

२९०

॥ ३३ ॥ (ऋ० १ । १३९ । ७)

ओ धू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवासि यज्ञियेभ्यो राजभ्यो यज्ञियेभ्यः ।

यद्ध त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन ।

वि तां दुहे अर्यमा कर्तरी सचा एष तां वेद मे सचा

२९१

॥ ३४ ॥ (ऋ० १ । १४० । १-१३)

[२५२-३६०] दीर्घतमा औचध्यः । जगती, ३०१ त्रिष्टुप्वा, ३०३-४ त्रिष्टुप् ।

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युते धासिमिव प्र भरा योनिमग्रये ।

वस्त्रेणैव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम्

२९२

अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः ।

अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्यन्येन वनिनो मृष्ट वारणः

२९३

कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तररेते अभि मातरा शिशुम् ।

प्राचारिहं ध्वसयन्तं तृषुच्युतम् आ साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः

२९४

मुमुक्ष्वोऽग्रे मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवः ।

अममना अजिरासो रघुष्यदो वातज्ज्ञता उप युज्यन्त आशवः

२९५

आदस्य ते ध्वस्यन्तो वृथैरते कृष्णमम्बं महि वर्षः करिकृतः ।	
यत् सीं महीमवनिं प्राभि मर्मृशद् अभिश्चसन् तस्तनयञ्चेति नानदत्	२९६
भूषन् न योऽधि बभूषु नम्रते वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् ।	
ओजायमानस् तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गभिः	२९७
स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ शये ।	
पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यम् अन्यद् वर्षः पित्रोः कृण्वते सचा	२९८
तमग्रुवः केशिनीः सं हि रैभिर ऊर्ध्वासु तस्थुर्मग्नूषीः प्रायवे पुनः ।	
तासां जरां प्रमुञ्चन्तेति नानदद् असुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम्	२९९
अधीवासं परि मातू रिहन्नहं तुविश्रेभिः सत्त्वभिर्याति वि जयः ।	
वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदा अनु श्येनीं सचते वर्तनीरहं	३००
अस्माकमग्रे मघवत्सु दीदिहि अध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः ।	
अवास्या शिशुमतीरदीदेर् वमेव युत्सु परिजर्भुराणः	३०१
इदमग्रे सुधितं दुधितादधि प्रियादु चिन् मन्मनः प्रेयो अस्तु ते ।	
यत् तै शुक्रं तन्वोऽ रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम्	३०२
रथाय नार्वमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्रे ।	
अस्माकं-वीरां उत नो मघोनो जनांश्च या पारयाच्छर्म या च	३०३
अभी नो अग्न उक्थमिज् जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वर्गूर्ताः ।	
गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहा इषं वरमरुण्यो वरन्त	३०४

॥ ३५ ॥ (ऋ० १ । १४१ । १-१३) जगती. ३१६-१७ त्रिष्टुप् ।

बळित्था तद् वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनिं ।	
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर् ऋतस्य धेना अनयन्त ससुतः	३०५
पृक्षो वपुः पितृमान् नित्य आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु ।	
तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः	३०६
निर्यदीं बुध्नान् महिषस्य वर्षस ईशानासः शर्वसा क्रन्तं सूरयः ।	
यदीमनु प्रदिबो मध्व आध्वे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति	३०७

प्र यत् पितुः परमाग्नीयते परि आ पृथुधो वीरुधो दंसु रोहति ।
 उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत आदिद् यविष्ठो अभवद् घृणा क्षुत्तिः ३०८
 आदिन्मातृराविशद् यास्वा शुचिर् अहिंस्यमान उर्विया वि वावृधे ।
 अनु यत् पूर्वा अरुहत् सनाजुवो नि नव्यसीष्ववरासु धावते ३०९
 आदिद्वोतारं वृणते दिविष्टिषु भगमिव पपृचानासं ऋञ्जते ।
 देवान् यत् कृत्वा मज्मना पुरुष्टुतो मर्तं शंसं विश्वधा वेति धावसे ३१०
 वि यदस्थाद् यजतो वार्तचोदितो ह्यारो न वक्त्रा जरणा अनाकृतः ।
 तस्य पत्नम् दक्षुषः कृष्णजैहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः ३११
 रथो न यातः शिर्कभिः कृतो घाम् अङ्गैभिररुषेभिरीयते ।
 आदस्य ते कृष्णासौ दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः ३१२
 त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो मित्रः शशद्रे अर्यमा सुदानवः ।
 यत् सीमनु कर्तुना विश्वथा विश्वर् अरान् न नेमिः परिभूरजायथाः ३१३
 त्वमग्ने शशमानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि ।
 तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन् वयं भगं न कारे महिरत्न धीमहि ३१४
 अस्मे रयि न स्वर्थं दग्धनसं भगं दक्षं न पपृचासि धर्णसिम् ।
 रश्मीरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसंमृत आ च सुक्रतुः • ३१५
 उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो होता मन्द्रः शृणवच् चन्द्ररथः ।
 स नो नेषन्नेषतमैरमूरो ऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ३१६
 अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिरकैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः ।
 अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरौ अति निष्ठतन्युः ३१७

॥ ३६ ॥ (ऋ० १ । १४३ । १-८) जगती, ३२५ त्रिष्टुप् ।

प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्रये वाचो मतिं सहसः सूनवे भरे ।
 अपां नपाद् यो वसुभिः सह प्रियो होता पृथिव्यां न्यसीददृत्वियः ३१८
 स जायमानः परमे व्योमनि आविरभिरभवन् मातरिश्चने ।
 अस्य कृत्वा समिधानस्य मज्मना प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत् ३१९

अस्य त्वेषा अजरा अस्य भानवः सुसंद्दशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः । मास्त्वक्षसो अत्यक्तुर्न सिन्धवो ऽग्ने रेंजन्ते असंसन्तो अजराः	३२०
यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्जना । अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्वो वरुणो न राजति	३२१
न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा दिव्या यथाशनिः । अग्निर्जम्भैस् तिगितैरत्ति भवेति योधो न शत्रून् त्स वना न्यृञ्जते	३२२
कुविन्नो अग्निरुचयस्य वीरसद् वसुष्कुविद् वसुभिः काममावरत् । चोदः कुवित् तुतुज्यात् सातये धियः शुचिप्रतीकं तमया धिया गृणे	३२३
घृतप्रतीकं व क्रतुस्य धूर्षदम् अग्निं मित्रं न समिधान ऋञ्जते । इन्धानो अक्रो विदथेषु दीर्घच् छुक्रवर्णामुदु नो यंसते धियम्	३२४
अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने शिवेभिर्नः पायुभिः पाहि शग्मैः । अदब्धेभिरदपितेभिरिष्टे ऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः	३२५

॥ ३७ ॥ (क्र० १ । १४४ । १-७) जगती ।

एति प्र होता व्रतमस्य मायया ऊर्ध्वा दधानः शुचिपेशसं धियम् । आभि सुचः क्रमते दक्षिणावृतो या अस्य धाम प्रथमं ह निसते	३२६
अभीमृतस्य दोहना अनूषत योनौ देवस्य सदर्ने परीवृताः । अपामुपस्थे विभृतो यदावसद् अर्ध स्वधा अर्धयद् याभिरीयते	३२७
युयूषतः सर्वयसा तदिद् वपुः समानमर्थं वितरित्रता मिथः आर्दी भगो न हव्यः समस्मदा वोहूर्न रश्मीन् त्समयंस्त सारथिः	३२८
यमीं द्वा सर्वयसा सपर्यतः समाने योना मिथुना समोकसा । दिवा न नक्तं पलितो युवाजनि पुरु चरन्नजरो मानुषा युगा	३२९
तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश त्रिंशो देवं मर्तास ऊतये हवामहे । धनोरधि प्रवत् आ स ऋण्वति अभिव्रजद्भिर्वयुना नवाधित	३३०
त्वं हग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपा इव त्मना । हनीं त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्करी बर्हिशाशते	३३१

अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद् वचो मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
यो विश्वतः प्रत्यङ्मुसि दर्शतो रणवः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः ३३२

॥ ३८ ॥ (ऋ० १ । १४५ । १-५) जगती, ३३७ त्रिष्टुप् ।

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते ।
तस्मिन्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ३३३
तमित् पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत् ।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचो ऽस्य ऋत्वा सचते अप्रदपितः ३३४

तमिद् गच्छन्ति जुह्वस्तमर्वतीर् विश्वान्येकः शृणवद् वचांसि मे ।
पुरुषैषस् ततुरिर्यज्ञसाधनो ऽच्छिद्रोतिः शिशुरादत्त सं रभः ३३५

उपस्थायं चरति यत् समारत सद्यो जातस् तत्सार युज्येभिः ।
अभि श्वान्तं मृशते नान्द्ये मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ३३६

स ई मृगो अप्यो वनर्गुर् उप त्वच्युपमस्यां नि धायि ।
व्यब्रवीद् वयुना मर्त्येभ्यो ऽग्निर्विद्राँ ऋतचिद्धि सत्यः ३३७

॥ ३९ ॥ (ऋ० १ । १४६ । १-५) त्रिष्टुप् ।

त्रिमूर्धानं सप्तर्षिम गृणीषे ऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे ।
निषत्तमस्य चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रौचनापप्रिवांसम् ३३८

उक्षा महौ अभि ववक्ष एने अजरस् तस्थावितऊतिर्ऋष्वः ।
उर्व्याः पदो नि दधाति सानौ रिहन्त्यूधो अरुषासो अस्य ३३९

समानं वत्समभि संचरन्ती विष्वग् धेनू वि चरतः सुमेके ।
अनपवृज्याँ अर्ध्वनो मिमाने विश्वान् केताँ अधि महो दधाने ३४०

धीरांसः पदं कवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् ।
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम् आविरेभ्यो अभवत् सूर्यो नृन् ३४१

दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्य ईलेन्यो महो अभीय जीवसे ।
पुरुत्रा यदभवत् सूरैभ्यो गर्भेभ्यो मधवा विश्वदर्शतः ३४२

॥ ४० ॥ (ऋ० १ । १४७ । १-५)

कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर् ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ।
उमे यत् तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन् रणयन्त देवाः ३४३

बोधा मे अस्य वर्चसो यविष्ठु मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।	
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुस् ते तन्वं वन्दे अग्ने	३४४
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् ।	
ररक्ष तान् सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देभुः	३४५
यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुर् अरातीवा मर्चयति द्वयेन ।	
मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः	३४६
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् मतो मर्ति मर्चयति द्वयेन ।	
अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तम् अग्ने मार्किनो दुरिताय धायीः	३४७

॥ ४१ ॥ (ऋ० १ । १४८ । १-५)

मथीद् यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सु विश्वदैव्यम् ।	
नि यं दुधुर्मेनुष्यासु विक्षु स्वर्णं चित्रं वपुषे विभावंम्	३४८
दुदानमिन्न ददभन्त मन्म अग्निर्वरूथं मम तस्य चाकन् ।	
जुषन्त विश्वान्यस्य कर्म उपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः	३४९
नित्ये चिन्नु यं सदेने जगुभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियांसः	
प्र स्र नयन्त गृभयन्त इष्टौ अश्वासो न रथ्यो रारहाणाः	३५०
पुरुणि दुस्मो नि रिणाति जम्भैर् आद् रोचते वन आ विभावा ।	
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अस्तुर्न शर्यामसनामनु घून्	३५१
न यं रिपवो न रिष्यवो गर्भे सन्त रेषणा रेषयन्ति ।	
अन्धा अपइया न दभन्नभिख्या नित्यास ई प्रेतारो अरक्षन्	३५२

॥ ४२ ॥ (ऋ० १ । १४९ । १-५) विराट्

महः स राय एषते पतिर्दम् इन इनस्य वसुनः पद आ ।	
उप भ्रजन्तमद्रयो विधमिन्	३५३
स यो वृषा नरा न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जीवपीतसर्गः ।	
प्र यः संस्त्राणः शिश्रीत योनौ	३५४
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेद् अत्यः कविर्नमन्योऽ नार्वी ।	
स्रो न रुरुक्काञ्छतात्मा	३५५

अभि द्विजन्मा त्री रौचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् ।
होता यज्ञिष्ठो अपां सधस्थे

३५६

अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दुधे वार्याणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश

३५७

॥ ४३ ॥ (ऋ० १ । १५० । १-३) उष्णिक् ।

पुरु त्वां दाश्वान् वौचे अरिग्ने तव स्विदा । तोदस्येव शरण आ महस्य ३५८
व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदररुषः । कदा चन प्रजिगतो अदेवयोः ३५९
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो ब्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत् ते अग्ने वनुषः स्याम ३६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० १ । १८९ । १-८)

(३६१-३६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने नय सुपथां राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यः स्मज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ३६१

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् त्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।

पृथ्वी पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः ३६२

अग्ने त्वमस्मद् युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः ।

पुनरस्मभ्यं सुविताय देव क्षां विश्वेभिरमृतैर्भिर्यजत्र ३६३

पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैर् उत प्रिये सदन आ शुशुक्लान् ।

मा ते भयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदुन् मापरं सहस्वः ३६४

मा नो अग्नेऽव सृजो अघाय अविष्यवे रिपवे दुच्छुनायै ।

मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन् परा दाः ३६५

वि घ त्वावां ऋतजात यंसद् गृणानो अग्ने तन्वेडे वरूथम् ।

विश्वाद् रिरिक्षोरुत वा निनित्सोर् अभिहुतामसि हि देव विष्पद् ३६६

त्वं तां अग्न उभयान् वि विद्वान् वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र ।

अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर् मर्मृजेन्य उशिग्भिर्नाक्रः ३६७

अवोचाम निवर्चनान्यस्मिन् मानस्य सनुः सहसाने अग्नौ ।

वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ३६८

॥ ४५ ॥ (ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलं २, सूक्तं १, मन्त्राः १-१६)

जगती । (३६९—४१५) गृत्समदः शौनकः (आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवः) ।

त्वमग्ने द्युभिस् त्वमांशुशुक्षणिस् त्वमद्भ्यस् त्वमश्मनस् परि ।	
त्वं वनैभ्यस् त्वमोषधीभ्यस् त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः	३६९
तवाग्ने होत्रं तव पोथ्रमृत्विद्यं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।	
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश् च नो दमे	३७०
त्वमग्ने इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः ।	
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरंध्या ।	३७१
त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस् त्वं मित्रो भवसि दुस्म ईड्यः ।	
त्वमर्थमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः	३७२
त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव गावो मित्रमहः सजात्यम् ।	
त्वमांशुहेमा ररिषे स्वश्व्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरुवसुः	३७३
त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस् त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।	
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस् त्वं पूषा विधतः पांसि नु त्मना	३७४
त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।	
त्वं भगो नृपते वस्वं ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस् तेऽविधत्	३७५
त्वामग्ने दम आ बिश्वपतिं विशस् त्वां राजानं सुविदत्रमृजते ।	
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति	३७६
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस् त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम् ।	
त्वं पुत्रो भवसि यस् तेऽविधत् त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः	३७७
त्वमग्ने क्रभुराके ममस्यसि त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे ।	
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातनिः	३७८
त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ।	
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती	३७९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस् तव स्पार्हे वर्ण आ संदशि श्रियः ।	
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः	३८०

त्वामग्न आदित्यास आस्यं । त्वां जिह्वां शुचयश् चक्रिरे कवे ।	
त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्वरे त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।	३८१
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो अद्रुह आसा देवा हविरदन्त्याहुतम्	
त्वया मर्तासः स्वदन्त आसुति त्वं गर्भो वीरुधो जज्ञिषे शुचिः	३८२
त्वं तान् त्सं च प्रति चासि मज्मना अग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे ।	
पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवद् अनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे	३८३
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसम् अग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः ।	
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	३८४

॥ ४६ ॥ (ऋ० २ । २ । १-१३)

यज्ञेन वर्धत जातवेदसम् अग्नि यजध्वं हविषा तना गिरा ।	
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्	३८५
अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरे अग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।	
दिव इवेदरतिर्मानुषा युगा आक्षपो भासि पुरुवार संयतः	३८६
तं देवा बुध्रे रजसः सुदंसं दिवस्पृथिव्योररति न्येरिरे ।	
रथमिव वेद्यं शुक्रशौचिषम् अग्नि मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम्	३८७
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे चन्द्रमिव सुरुचं ह्यार आ दधुः ।	
पृथ्व्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न पायुं जनसी उभे अनु	३८८
स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं तमु हव्यैर्मनुष ऋञ्जते गिरा ।	
हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्धुरद् द्यौर्न स्तृमिश् चितयद् रोदसी अनु	३८९
स नो रेवत् समिधानः स्वस्तये संददस्वान् रथिमस्मासु दीदिहि ।	
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये	३९०
दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि ।	
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्वर्णं शुक्रमुषसो वि दिद्युतुः	३९१
स इधान उषसो राम्या अनु स्वर्णं दीदेदरुषेण भानुना ।	
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश् चारुणयवे	३९२

एवा नो अग्ने अमृतेषु पूर्य धीष् पीपाय बृहद्विषे मातुषा ।	
दुहाना धेनुर्वृजनैषु कारवे तमनां श्रुतिनै पुरुरूपमिषणि	३९३
वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति ।	
अस्माकं द्युममधि पञ्च कृष्टिषु उच्चा स्वर्णं शुशुचीत दुष्टरम्	३९४
स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन् त्सुजाता इषयन्त सूरयः ।	
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्यं तोके दीदिवान्सं स्वे दमे	३९५
उभयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश् च शर्मणि ।	
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः	३९६
ये स्तोतृभ्यो० (३८४)	

॥ ४७ ॥ (क्र० २ । ८ । १-६) गायत्री, ४०२ अनुष्टुप् ।

वाजयन्निव नू रथान् योगाँ अग्रेरुपं स्तुहि । यशस्तमस्य मीहुषः	३९७
यः सुनीथो दंदाशुषे अजुर्यो जरयन्नरिं । चारुप्रतीक आहुतः	३९८
य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते । यस्य व्रतं न मीर्यते	३९९
आ यः स्वर्णं भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा । अज्जानो अजरैरभि	४००
अत्रिमनु स्वराज्यम् अग्निमुक्थानि वावृधुः । विश्वा अधि श्रियो दधे	४०१
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वियम् । अरिष्यन्तः सचेमहि अभि प्याम पृतन्यतः	४०२

॥ ४८ ॥ (क्र० २ । ९ । १-६) । त्रिष्टुप् ।

नि होता होतृषदने विदानस् त्वेषो दीदिवान्सं सदत् सुदक्षः ।	
अदन्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रंभरः शुचिजिह्वो अग्निः	४०३
त्वं दूतस् त्वमु नः परस्पास् त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता ।	
अग्ने तोकस्य नस् तनै तनूनाम् अप्रयुच्छन् दीद्यद् बोधि गोपाः	४०४
विधेम ते परमे जन्मन्मग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।	
यस्माद् योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवीषि जुहुरे समिद्धे	४०५
अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ् छुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः ।	
त्वं क्षसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचसो मनोता	४०६

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म ।
 कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ४०७
 सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति ।
 अदब्धो गोपा उत नः परस्पा अग्ने द्युमदुत रेवद् दिदीहि ४०८

॥ ४९ ॥ (ऋ० २ । १० । १-६)

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेव इळस्पदे मनुषा यत् समिद्धः ।
 श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मजेन्यः श्रवस्यः स वाजी ४०९
 श्रूया अग्निश् चित्रभानुर्हव मे विश्वाभिर्गोभिर्मृतो विचेताः ।
 श्यावा रथं वहतो रोहिता वा उतारुषाह चक्रे विभृत्रः ४१०
 उत्तानायामजनयन् त्सुषूतं भुवदग्निः पुरुपेशासु गर्भः ।
 शिरिणायां चिद्वक्तुना महोभिर् अपरीवृतो वसति प्रचेताः ४११
 जिघर्म्यग्निं हविषा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।
 पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानं ४१२
 आ विश्वतः प्रत्यश्च जिघर्मि अरक्षसा मनसा तजुषेत ।
 मर्यश्रीः स्पृहयद् वर्णो अग्निर् नाभिमृशे तन्वाडे जर्भराणः ४१३
 ज्ञेया भागं सहसानो वरेण त्वादूतासो मनुवद् वदेम ।
 अनूनमग्निं जुद्धा वचस्या मधुपृचं धनसा जौहवीभि ४१४

॥ ५० ॥ (ऋ० २ । ४१ । १९ तृतीयः पादः) गायत्री ।

अग्निं च हव्यवाहनम् ४१५

॥ ५१ ॥ (ऋ० २ । ४ । १-२) (४१६-४४६) सोमाहुतिर्भागवः । त्रिष्टुप् ।

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम् ।
 मित्र इव यो दिधिषायो भूद् देव आदेवे जनं जातवेदाः ४१६
 इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्मृगवो विक्ष्वाड्योः ।
 एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जीराश्वः ४१७
 अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेप्यन्तो न मित्रम् ।
 स दीदयदुशतीरूम्या आ दृक्षायो यो दास्वते दम आ ४१८

अस्य रण्वा स्वस्यैव पुष्टिः संदष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः ।	
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वाम् अत्यो न रथ्यो दोधवीति वारान्	४१९
आ यन्मे अर्भवं वनदः पनन्त उशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम् ।	
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वो यो मुहुरा युवा भूत्	४२०
आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्यैव स्वानीत् ।	
कृष्णाध्वा तपू रण्वश् चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः	४२१
स यो व्यस्थादुभि दक्षदुर्वी पशुनैति स्वयुरगोपाः ।	
अग्निः शोचिष्मो अतसान्युष्णन् कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूमं	४२२
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्मं शंसि ।	
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः	४२३
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपरौ अभि प्युः ।	
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत् सूरिभ्यो गृणते तद् वयो धाः	४२४

॥ ५२ ॥ (ऋ० २ । ५ । १-८) । अनुष्टुप् ।

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये ।	
प्रयक्षञ्जेन्यं वसु श्केर्म वाजिनो यमम्	४२५
आ यस्मिन् त्सप्त रश्मयस् तता यज्ञस्य नेतरि ।	
मनुष्वद् दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति	४२६
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत् ।	
परि विश्वानि काव्या नेमिश् चक्रमिवाभवत्	४२७
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि ।	
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते	४२८
ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः ।	
कुर्विस्त तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः	४२९
यदी मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित ।	
तास्मभध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते	४३०
स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम् ।	
स्त्रोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम्	४३१

यथा विद्वाँ अरं करद् विश्वेभ्यो यजतेभ्यः ।

अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चक्रुमा वयम्

४३२

॥ ५३ ॥ (ऋ० २ । ६ । १-८) गायत्री ।

इमां मे अग्ने समिधम्	इमामुपसदं वनेः	। इमा उ पु श्रुधी गिरः	४३३
अया ते अग्ने विधेम	ऊर्जो नपादश्वमिधे	। एना सूक्तेन सुजात	४३४
तं त्वा गीर्भिर्गिर्विणसं	द्रविणस्थुं द्रविणोदः	। सपर्येम सपर्यवः	४३५
स बोधि सूरिर्मघवा	वसुपते वसुदावन्	। युयोध्यः स्मद् द्वेषांसि	४३६
स नो वृष्टिं दिवस्परि	स नो वार्जमनर्वाणम्	। स नः सहस्रिणीरिषः	४३७
ईळानायावस्यवे	यविष्ठ दूत नो गिरा	। यजिष्ठ होतरा गहि	४३८
अन्तर्ह्यग्र ईर्यसे	विद्वान् जन्मोभया कवे	। दूतो जन्यैव मित्र्यः	४३९
स विद्वाँ आ च पिप्रयो	यक्षि चिकित्वा आनुषक्	। आ चास्मिन् त्सत्सि बर्हिषि	४४०

॥ ५४ ॥ (ऋ० २ । ७ । १-६)

श्रेष्ठं यविष्ठ भारत	अग्ने द्युमन्तमा भर	। वसो पुरुस्पृहं रयिम्	४४१
मा नो अरातिरीशत	देवस्य मर्त्यस्य च	। पर्षि तस्या उत द्विषः	४४२
विश्वा उत त्वया वयं	धारा उदन्या इव	। अति गाहेमहि द्विषः	४४३
शुचिः पावक वन्द्यो	अग्ने बृहद् वि रोचसे	। त्वं घृतोभिराहुतः	४४४
त्वं नो असि भारत	अग्ने वशाभिरुक्षभिः	। अष्टापदीभिराहुतः	४४५
द्रुमः सर्पिरासुतिः	प्रतो होता वरेण्यः	। सहसस्पुत्रो अद्भुतः	४४६

॥ ५५ ॥ (ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलं ३, सूक्तं १, मन्त्राः १-२३)

(४४७—५७३) विश्वामित्रो गाथिनः । त्रिष्टुप् ।

सोमस्य मा तवसं वक्ष्यमे	वह्निं चकर्थ विदथे यजध्वै ।	
देवाँ अच्छा दीर्घद् युञ्जे अद्रिं	शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व	४४७
प्राञ्चं यज्ञं चक्रुम वर्धतां गीः	समिद्धिरग्निं नमसा दुवस्यन् ।	
दिवः शशासुर्विदथा कवीनां	गृत्साय चित् तवसे गातुमीषुः	४४८
मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो	दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः ।	
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर	देवासो अग्निमपसि स्वसृणाम्	४४९

अवर्धयन् त्सुभगं सप्त यद्वाहीः	श्वेतं जज्ञानमरुपं महित्वा ।	
शिष्टं न जातमभ्यासुरश्वा	देवासो अग्निं जनिमन् वपुष्यन्	४५०
शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान्	ऋतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।	
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां	श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः	४५१
वव्राजा सीमनवस्तीस्वब्धा	दिवो यद्वाहीरवसाना अनग्नाः ।	
सना अत्र युवतयः सयोनीर्	एकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः	४५२
स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा	घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम् ।	
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना	मही दुस्मस्य मातरा समीची	४५३
बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्	दधानः शुक्रा रभसा वपूषि ।	
श्रोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य	वृषा यत्र वावुधे काव्येन	४५४
पितुश् चिद्धर्जनुषा विवेदु	व्यस्य धारा असृजद् वि धेनाः ।	
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्	दिवो यद्वाहिर्न गुहा बभूव	४५५
पितुश् च गर्भं जनितुश् च बभ्रे	पूर्वीरेको अधयत् पीप्यानाः ।	
वृष्णे सपत्नी शुचये सर्वन्धू	उभे अस्मै मनुष्येभ्यो नि पाहि	४५६
उरौ महौ अनिवाधे ववर्ध	आपो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः ।	
ऋतस्य योनावशयद् दमूना	जामीनामभिरपसि स्वसृणाम्	४५७
अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां	दिदृक्षेयः सूनवे भाक्रजीकः ।	
उदुस्त्रिया जनिता यो जजान	अपां गर्भो नृत्तमो यद्वाहो अग्निः	४५८
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	वना जजान सुभगा विरूपम् ।	
देवासंश् चिन्मनसा सं हि जग्मुः	पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन्	४५९
बृहन्त इद् भानवो भाक्रजीकम्	अग्निं संचन्त विद्युतो न शुक्राः ।	
गुहैव वृद्धं सदासि स्वे अन्तर	अपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः	४६०
ईळे च त्वा यजमानो हविभिर्	ईळे सखित्वं सुमतिं निकामः ।	
देवैरवो मिमीहि सं जस्त्रि	रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः	४६१
उपक्षेतारस् तव सुप्रणीते	अग्ने विश्वानि धन्या दधानाः ।	
सुरेतसा श्रवसा तुज्जमाना	अग्निं प्याम पृतनार्यूरदेवान्	४६२

आ देवानामभवः केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान् ।	
प्रति मर्तौ अवासयो दमूना अनु देवान् रथिरो यासि साधन्	४६३
नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विद्वानि साधन् ।	
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौद् अभिविश्वानि काव्यानि विद्वान्	४६४
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर् महान् महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।	
अस्मे रयि बहुलं संतरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृषी नः	४६५
एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्याय नूतनानि वोचम् ।	
महान्ति वृष्णे सर्वना कृतेमा जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदाः	४६६
जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः ।	
तस्य वयं सुमर्तौ यज्ञियस्य अपि भद्रे सौमनसे स्याम	४६७
इमं यज्ञं सहसावन् त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः ।	
प्र यैसि होतर्बृहतीरिषो नो अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	४६८
इळामग्ने पुरुदंसं सुनि गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।	
स्यान्नः सुनुस् तनयो विजावा अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे	४६९

॥ ५६ ॥ (ऋ० ३।५।१-११)

प्रत्यग्निरुषसश् चेर्कितानो ऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।	
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धो ऽपु द्वारा तमसो वह्निरावः	४७०
प्रेद्वग्निर्वीवृधे स्तोमेभिर् गीभिः स्तोतृणां नमस्य उक्थैः ।	
पूर्वीर्ऋतस्य संदृशश् चक्रानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके	४७१
अघाय्यग्निर्मानुषीषु विश्व अपां गर्भो मित्र ऋतेन साधन् ।	
आ हर्षतो यजतः सान्वस्थाद् अभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम्	४७२
मित्रो अग्निर्भवति यत् समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।	
मित्रो अघ्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम्	४७३
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यद्वाश् चरणं सूर्यस्य ।	
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः	४७४

ऋभुश् चक्र ईड्यं चारु नाम	विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।	
ससस्य चर्म घृतवत् पदं वेस्	तदिदुग्मी रक्षत्यप्रयुच्छन्	४७५
आ योनिमग्निधृतवन्तमस्थात्	पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।	
दीधानः शुचिर्ऋष्वः पावकः	पुनःपुनर्मातरा नव्यसी कः	४७६
सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे	यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।	
आप इव प्रवता शुम्भमाना	उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे	४७७
उदु घृतः समिधा यद्धो अद्यौद्	वर्ष्मन् दिवो अधि नाभा पृथिव्याः ।	
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा	दूतो वक्षद् यजथाय देवान्	४७८
उदस्तम्भीत् समिधा नाकमुष्वोऽ	अग्निर्ववक्षुत्तमो रोचनानाम् ।	
यदी भृगुम्यः परि मातरिश्वा	गुहा सन्त हव्यवाहं समीधे	४७९
इलाममे० (४६९)		

॥ ५७ ॥ (ऋ० ३ । ६ । १-११)

प्र कारवो मनना वच्यमाना	देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ।	
दक्षिणावाड् वाजिनी प्राच्येति	हविर्भरन्त्यग्नये घृताचीं	४८०
आ रोदसी अपृणा जायमान	उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो ।	
दिवश् चिदग्ने महिना पृथिव्या	वच्यन्तां ते वह्नयः सप्तजिह्वाः	४८१
द्यौश् च त्वा पृथिवी यज्ञियासो	नि होतारं सादयन्ते दमाय ।	
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः	प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः	४८२
महान् त्सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो	अन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः ।	
आस्त्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते	सबर्दुधे उरुगायस्य धेनू	४८३
वृता ते अग्ने महतो महानि	तव क्रत्वा रोदसी आ तंतन्थ ।	
त्वं दूतो अभवो जायमानस्	त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम्	४८४
ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्	घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व ।	
अथा वह देवान् देव विश्वान्	त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः	४८५
दिवश् चिदा ते रुचयन्त रोका	उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः ।	
अपो यदग्न उशधग् वनेषु	होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः	४८६

उरौ वा ये अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रौचने सन्ति देवाः ।
 ऊर्मा वा ये सुहवासो यजत्रा आयेभिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः ४८७
 ऐभिरे सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।
 पत्नीवतस् त्रिंशत् त्रींश् च देवान् अनुष्वधमा वह मादयस्व ४८८*
 स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञयज्ञमभि वृधे गृणीतः ।
 प्राचीं अध्वरेव तस्थतुः सुमेकैः क्रतावरी क्रतजातस्य सत्ये ४८९
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ५८ ॥ (ऋ० ३। ७। १-११)

प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेर् आ मातरां विविशुः सप्त वाणीः ।
 परिक्षिता पितरा सं चरेते प्र संस्मृते दीर्घमायुः प्रयक्षे ४९०
 दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा देवीरा तस्थौ मधुमद् बहन्तीः ।
 क्रतस्य त्वा सदैसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनि गौः ४९१
 आ सीमरोहत् सुयमा भवन्तीः पतिंश् चिकित्वान् रयिविद् रयीणाम् ।
 प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस् ता अवासयत् पुरुधप्रतीकः ४९२
 महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्य स्तभूयमानं बहतो वहन्ति ।
 व्यङ्गैर्भिर्दिद्युतानः सधस्थ एकांमिव रोदसी आ विवेश ४९३
 जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवम् उत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति ।
 दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः ४९४
 उतो पितृभ्यां प्रविदानु घोषं महो महज्जामनयन्त शुषम् ।
 उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोर् अनु स्वं धाम जरितुर्ववक्ष ४९५
 अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः ।
 प्राञ्चो मदन्त्युक्ष्णो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः ४९६
 दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।
 क्रतं शंसन्त क्रतमिद् त आहुर् अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ४९७
 वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर् वृष्णे चित्राय रश्मयः सुयामाः ।
 देव होतर्मन्द्रतरश् चिकित्वान् महो देवान् रोदसी एह वक्षि ४९८

पृथग्प्रयत्नो द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदेषु ।
 उतो सिद्धमे महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य ४९९
 इलाममे० (४६९)

॥ ५९ ॥ (क्र० ३ । ९ । १-९) बृहती, ५०८ अष्टप ।

सखाग्रिस् त्वा बभ्रुमहे देवं मर्तीस ऊतये ।
 अपां मयसं सुभगं सुदीदिति सुप्रतीमनेहसम् ५००
 कार्यमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।
 न तद् ते अग्रे प्रमृषे निवर्त्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः ५०१
 अति तृष्टं ववक्षिथ अथैव सुमना असि ।
 प्रप्रान्ये मन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः ५०२
 ईयिवासमति सिधः शश्वतीरति सश्वतः ।
 अन्वीमविन्दन् निचिरासो अद्रुहो अप्सु सिंहमिव श्रितम् ५०३
 ससृवांसमिव त्मना अभिमित्था तिरोहितम् ।
 ऐनं नयन् मातरिश्वा परावतो देवेभ्यो मथितं परि ५०४
 तं त्वा मर्ती अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 विश्वान् यद् यज्ञां अभिपासि मानुष तव कृत्वा यविष्ठ ५०५
 तद् भद्रं तव दुंसना पाकाय चिच्छदयति ।
 त्वां यक्ष्मे पञ्चः सुमासते सन्निद्धमग्निश्वरे ५०६
 आ जुहोता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम् ।
 आशुं दूतमजिरं प्रनमीज्यं श्रुष्टी देवं संपर्यत ५०७
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
 औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिर्स्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ५०८

॥ ६० ॥ (क्र० ३ । १० । १-९) उष्णिक् ।

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तीस इन्धते समध्वरे ५०९
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजम् अग्रे होतारमीकृते । गोपा कृतस्य दीदिहि स्वे दमे ५१०
 स धा यस् ते ददाशति समिधा जातवेदसे । सो अग्रे धत्ते सुवीर्यं स पुण्यति ५११

स केतुरध्वराणाम् अग्निर्देवेभिरा गमत् । अज्ञानः सप्त होतृभिर्हविष्मते ५१२
 प्र होत्रे पूर्य वचो अग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ५१३
 अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत उक्थ्यः । महे वाजाय द्रविणाय दर्शतः ५१४
 अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज । होता मन्द्रो वि राजस्यति स्निधः ५१५
 स नः पावक दीदिहि द्युमदस्मे सुवीर्यम् । भवां स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये ५१६
 तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । हव्यवाहममर्त्य सहोवृधम् ५१७

॥ ६१ ॥ (ऋ० ३ । ११ । १-९) गायत्री ।

अग्निर्होता पुरोहितो अध्वरस्य विचर्षणिः । स वेद यज्ञमानुषक् ५१८
 स हव्यवाहमर्त्य उशिग् दूतश् चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति ५१९
 अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्यः । अर्थ ह्यस्य तरणि ५२०
 अग्निं सूनुं सनश्नुतं सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत ५२१
 अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः ५२२
 साह्वान् विश्वा अभियुजः ऋतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस् तुविश्रवस्तमः ५२३
 अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वां अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः ५२४
 परि विश्वानि सुधिता अग्नेरश्याम मन्मभिः । विप्रांसो जातवेदसः ५२५
 अग्ने विश्वानि वार्या वार्येषु सनिषामहे । त्वे देवास एरिरे ५२६

॥ ६२ ॥ (ऋ० ३ । २४ । १-५) ५२७ अनुष्टुप्; ५२८-५३१ गायत्री ।

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य । दुष्टरस् तरन्मरातीर् वचो धा यज्ञवाहसे ५२७
 अग्ने इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः । जुषस्व स्र नो अध्वरम् ५२८
 अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः स्रनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ५२९
 अग्ने विश्वेभिरग्निभिर् देवोर्भिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उं चायवः ५३०
 अग्ने दा दाशुषे रयि वीरवन्तं परीणसम् । शिशिहि नः स्रनुमतः ५३१

॥ ६३ ॥ (ऋ० ३ । २५ । १-५) विराट् ।

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास् तनां पृथिव्या उत विश्ववेदाः । ५३२
 ऋषग् देवा इह यजा चिकित्वः ५३३
 अग्निः सनोति वीर्याणि विद्वान् त्सनोति वाजममृताय भूषन् । ५३४
 स नो देवा एह वहा पुरुक्षो ५३५

अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ते	आ भाति देवी अमृतं अमूरः ।	
क्षयन् वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः		५३४
अग्न इन्द्रश् च दाशुषो दुरोणे	सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् ।	
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा		५३५
अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे	नित्यः सूनो सहसो जातवेदः ।	
सधस्थानि मह्यमान ऊती		५३६

॥ ६४ ॥ (ऋ० ३ । २७ । १-१५) गायत्री ।

प्र वो वाजा अभिर्घवो	हविष्मन्तो घृताच्या	। देवाञ्जिगाति सुमयुः	५३७
ईळे अग्निं विपश्चितं	गिरा यज्ञस्य साधनम्	। श्रुष्टीवानं धितावानम्	५३८
अग्ने शकेम ते वयं	यमं देवस्य वाजिनः	। अति द्वेषांसि तरेम	५३९
समिध्यमानो अध्वरेऽ	अग्निः पावक ईड्यः	। शोचिष्केशस् तमीमहे	५४०
पृथुपाजा अमर्त्यो	घृतनिर्णिक् स्वाहुतः	। अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाद्	५४१
तं सबाधो यत्सुच	इत्था धिया यज्ञवन्तः	। आ चक्रुरग्निमृतये	५४२
होता देवो अमर्त्यः	पुरस्तादिति मायया	। विदथानि प्रचोदयन्	५४३
वाजी वाजेषु धीयते	अध्वरेषु प्र णीयते	। विप्रो यज्ञस्य साधनः	५४४
धिया चक्रे वरेण्यो	भूतानां गर्भमा दधे	। दक्षस्य पितरं तना	५४५
नि त्वा दधे वरेण्यं	दक्षस्येळा सहस्कृत	। अग्ने सुदीतिमुशिजम्	५४६
अग्निं यन्तुरमप्युतम्	ऋतस्य योगे वनुषः	। विप्रा वाजैः समिन्धते	५४७
ऊर्जो नपातमध्वरे	दींदिवांसमुप दधि	। अग्निमीळे कविक्रतुम्	५४८
ईळैन्यो नमस्यस्	तिरस् तमांसि दर्शतः	। समग्निरिध्यते वृषा	५४९ *
वृषो अग्निः समिध्यते	अश्वो न देववाहनः	। तं हविष्मन्त ईळते	५५० *
वृषणं त्वा वयं वृषन्	वृषणः समिधीमहि	। अग्ने दीद्यतं बृहत्	५५१ *

॥ ६५ ॥ (ऋ० ३ । २८ । १-६)

५५२-५५३, ५५७ गायत्री, ५५४ उष्णिक्, ५५५ त्रिष्टुप्, ५५६ जगती ।

अग्ने जुषस्व नो हविः	पुरोळाशं जातवेदः	। प्रातःसावे धियावसो	५५२
पुरोळा अग्ने पचतस्	तुभ्यं वा घा परिष्कृतः	। तं जुषस्व यविष्ठय	५५३
अग्ने वीहि पुरोळाशम्	आहुतं तिरोजह्यम्	। सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः	५५४

माध्यंदिने सर्वने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व ।
 अग्ने यद्दस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः ५५५
 अग्ने तृतीये सर्वने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः स्रनुवाहुतम् ।
 अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम् ५५६
 अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः । जुषस्व तिरोअह्वयम् ५५७

॥ ६६ ॥ (ऋ० ३ । २९ । १-१६) त्रिष्टुपः

५५८, ५६१, ५६७, ५६९ अनुष्टुपः ५६३, ५६८, ५७१, ५७२ जगती ।

अस्तीदमधिमन्थनम् अस्ति प्रजननं कृतम् ।
 एतां विष्पत्नीमा भर अग्निं मन्थाम पूर्वथा ५५८
 अरण्येनिहितो जातवेदा गर्भे इव सुधितो गर्भिणीषु ।
 दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर् हविष्माद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ५५९
 उत्तानायामव भरा चिकित्वान् त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।
 अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास् पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ५६०
 इळायास् त्वा पदे वयं नाभां पृथिव्या अधि ।
 जातवेदो नि धीमहि अग्ने हव्याय वोह्वे ५६१
 मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् ।
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्ताद् अग्निं नरो जनयता सुशेवम् ५६२
 यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि रोचते अश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा ।
 चित्रो न यामभश्चिनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस् तृणा दहन् ५६३
 जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ।
 यं देवास ईड्यै विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु ५६४
 सीदं होतः स्व उ लोके चिकित्वान् त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ ।
 देवावीर्देवान् हविषा यज्ञसि अग्ने बृहद् यजमाने वयो धाः ५६५
 कुणोत्तं धूमं वृषणं सखायो अस्तेष्वन्त इतन् काजमच्छ ।
 अयमग्निः पृतनाषाद् सुवीरो येन देवासो असेहन्त दस्युन् ५६६

अयं ते योनिर्ऋत्वियो	यतो जातो अरोचथाः ।	
तं जानन्नग्र आ सीद	अथा नो वर्धया गिरः	५६७
तनूनपादुच्यते गर्भे आसुरो	नराशंसो भवति यद् विजायते ।	
मातरिश्वा यदर्मिमीत मातरि	वातस्य सर्गो अभवत् सरीमणि	५६८
सुनिर्मथा निर्मेथितः	सुनिधा निर्हितः कविः ।	
अग्ने स्वध्वरा कृणु	देवान् देवयते यज	५६९
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो	अस्त्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।	
दश स्वसरो अग्रवः समीचीः	पुमांसं जातमभि सं रभन्ते	५७०
प्र सप्तहोता सनकादरोचत	मातुरुपस्थे यदशोचदूधनि ।	
न नि मिषति सुरणो द्विवेदिवे	यदसुरस्य जठरादजायत	५७१
अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः	प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद् विदुः ।	
द्युम्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिर्	एकएको दमे अग्निं समीधिरे	५७२
यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्	होतश् चिकित्वोऽवृणीमहीह ।	
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्टाः	प्रजानन् विद्राँ उप याहि सोमम्	५७३

॥ ६७ ॥ (ऋ० ३ । १३ । १-७) [५७४-५८७] ऋषभो वैश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

प्र वो देवायानये	बर्हिष्ठमर्चास्मै ।	
गमद् देवेभिरा स नो	यजिष्ठो बर्हिरा सदत्	५७४
ऋतावा यस्य रोदसी	दक्षं सचन्त ऊतयः ।	
हविष्मन्तस् तमीळते	तं सनिष्यन्तोऽवसे	५७५
स यन्ता विप्र एषां	स यज्ञानामथा हि षः ।	
अग्निं तं वो दुवस्यत्	दाता यो वर्निता मघम्	५७६
स नः शर्माणि वीतये	अग्निर्यच्छतु शतमा ।	
यतो नः प्रुष्णवद् वसु	दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा	५७७
दीदिवांसमपूर्व्य	वस्वीभिरस्य धीतिभिः ।	
ऋक्काणो अग्निमिन्धते	होतारं विश्वतिं विशाम	५७८

उत नो ब्रह्मन्निविष उक्थेषु देवहृतमः ।

शं नः शोचा मरुद्रुधो अग्ने सहस्रसातमः

५७९

नू नो रास्व सहस्रवत् तोकवत् पुष्टिमद् वसु ।

द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितम्

५८०

॥ ६८ ॥ (ऋ० ३ । १४ । १-७) त्रिष्टुप् ।

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात् सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।

विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत्

५८१

अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस् तुभ्यं चेतते सहस्वः ।

विद्राँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र

५८२

द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने वातस्य पृथ्याभिरच्छ ।

यत् सीमञ्जन्ति पूर्य हविर्भिर् आ बन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे

५८३

मित्रश् च तुभ्यं वरुणः सहस्वो अग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन् ।

यच्छोचिषा सहसस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन् त्वर्यो नृन्

५८४

वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।

यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान् असेधता मन्मना विप्रो अग्ने

५८५

त्वद्धि पुत्र सहस्रो वि पूर्वीर् देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः ।

त्वं देहि सहस्रिणं रयि नो अद्रोघेण वर्चसा सत्यमग्ने

५८६

तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म ।

त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह

५८७

॥ ६९ ॥ (ऋ० ३ । १५ । १-७) (५८८-५९९) उत्कीलः कात्यः । त्रिष्टुप् ।

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बार्धस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः ।

सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम् अग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ

५८८

त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः ।

जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात

५८९

त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि ।

वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ

५९०

अषाहो अग्ने वृषभो दिदीहि	पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान् ।	
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्	जातवेदो बृहतः सुप्रणीते	५९१
अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि	देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः ।	
रथो न सस्त्रिभि वक्षि वाजम्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुमेकै	५९२
प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजान्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुदोषै ।	
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो	मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परिं घात्	५९३
इळामग्ने० (४६९)		

॥ ७० ॥ (ऋ० ३ । १६ । १-६) प्रगाथः (= बृहती + सतोबृहती ।)

अयमग्निः सुवीर्यस्य ईशे महः सौभगस्य ।	
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमंतं ईशे वृत्रहथानाम्	५९४
इमं नरो मरुतः सश्रता वृधं यस्मिन् रायः शेवृधासः ।	
अभि ये सन्ति पृतनासु दुह्यो विश्वाहा शत्रुमादधुः	५९५
स त्वं नो रायः शिशीहि मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य ।	
तुर्विद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतो अनमीवस्य शुष्मिणः	५९६
चक्रियो विश्वा भुवनाभि सांसहिश् चक्रिर्देवेष्वा दुवः ।	
आ देवेषु यतंत आ सुवीर्य आ शंसं उत नृणाम्	५९७
मा नो अग्नेऽमृतये मावीरतायै रीरधः ।	
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदे अप द्वेषास्या कृधि	५९८
शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतो अग्ने बृहतो अध्वरे ।	
सं राया भूर्यसा सृज मयोभुना तुर्विद्युम्न यशस्वता	५९९

॥ ७१ ॥ (ऋ० ३ । १७ । १-५) ६००—६०१ कतो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा	समक्तुभिरज्यते विश्ववारः ।	
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक पावकः	सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान्	६००
यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्या	यथा दिवो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
एवानेन हविषा यक्षि देवान्	मनुष्वद् यज्ञं प्र तिरेममद्य	६०१

त्रीण्यायुंषि तव जातवेदस् तिस्र आजानीरुषसस् ते अग्ने ।
 तामिर्देवानामवो यक्षि विद्वान् अथा भव यजमानाय शं योः ६०२
 अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस् त्वेड्यं जातवेदः ।
 त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ६०३
 यस् त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः ।
 तस्यानु धर्मं प्र यजा चिकित्वो अथा नो धा अध्वरं देववीतौ ६०४

॥ ७२ ॥ (ऋ० ३ । १८ । १-५)

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः ।
 पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रतिं प्रतीचीर्देहतादरातीः ६०५
 तपो ष्वग्ने अन्तरां अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य ।
 तपो वसो चिकितानो अचित्तान् वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः ६०६
 इध्मेनाग्र इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
 यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ६०७
 उच्छोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद् वयः शशमानेषु धेहि ।
 रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर् मर्मज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः ६०८
 कृधि रत्नं सुसनिर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत् समिद्धः ।
 स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत् सृप्रा करत्ना दधिषे वपूंषि ६०९

॥ ७३ ॥ (ऋ० ३ । १९ । १-५) [६१०—६२६] गार्गी कौशिकः ।

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम् ।
 स नो यक्षद् देवताता यजीयान् राये वाजाय वनते मघानि ६१०
 प्र ते अग्ने हविष्मतीमियमि अच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।
 प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ६११
 स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः ।
 अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश् च वस्वः ६१२
 भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीका अग्ने देवस्य यज्यवो जनासः ।
 स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यदद्य दिव्यं यजासि ६१३

यत् त्वा होतारमनर्जन् मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः ।
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोधि अधि श्रवांसि धेहि नस् तनूषु ६१४

॥ ७४ ॥ (ऋ० ३ । २० । २-४)

अग्ने त्री ते वाजिना त्री पृधस्था तिस्रस् ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः ।
तिस्र उ ते तन्वो देववातास् तामिर्नः पाहि गिरो अप्रयुच्छन् ६१५
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम ।
याश् च माया मायिना विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः सँदधुः पृष्ठबन्धो ६१६
अग्निर्नेता भग इव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा ।
स बृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्पद् विश्वाति दुरिता गृणन्तेम् ६१७

॥ ७५ ॥ (ऋ० ३ । २१ । १-५)

६१८, ६२१ त्रिष्टुप्, ६१९-२० अनुष्टुप्, ६२२ विराड् रूपा सतोबृहती ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहि इमा हव्या जातवेदो जुषस्व ।
स्तोकानामग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य ६१८
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्रोतन्ति मेदसः ।
स्वधर्मन् देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ६१९
तुभ्यं स्तोका घृतश्रुतो अग्ने विप्राय सन्त्य ।
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ६२०
तुभ्यं श्रोतन्त्यग्निगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य ।
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ६२१
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्धृतं प्र ते वयं ददामहे ।
श्रोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान् देवशो विहि ६२२
॥ ७६ ॥ (ऋ० ३ । २२ । १-५) ६२६ पुरीष्याग्रयः । त्रिष्टुप्, ६२६ अनुष्टुप् ।
अयं सो अग्निर्यस्मिन् त्सोमं इन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः ।
सहस्रिणं वाज्रमत्यं न समिं ससवान् त्सन् तस्तूयसे जातवेदः ६२३
अग्ने यत् ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र ।
येनान्तरिक्षमूर्वातन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ६२४

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगासि अच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या ये ।
 या रौचने परस्तात् सूर्यस्य याश् चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ६२५
 पुरीण्यासो अग्रयः प्रावणेभिः सजोषसः ।
 जुषन्तां यज्ञमद्रुहो अनमीवा इषो महीः ६२६
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ७७ ॥ (ऋ० ३ । २३ । १-५)

६२७-६३० देवश्रवा देववातश्च भारतौ । त्रिष्टुप्, ६२९ सतोबृहती ।

निर्मथितः सुधित आ सुधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ।
 जूर्यत्स्वग्निरजरो वनेषु अत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ६२७
 अमन्थिष्ठां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम् ।
 अग्ने वि पश्य बृहताभि राया इषां नो नेता भवतादनु धून् ६२८
 दश क्षिपः पूर्य सीमजीजनन् त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।
 अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो यो जनानामसद् वशी ६२९
 नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्वाम् ।
 दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि ६३०
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ७८ ॥ (ऋग्वेदस्य चतुर्थे मण्डले , सूक्तं १, मंत्राः १, ६-२०)

[६३१—७५५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ६३१ अष्टिः ।

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरति न्येरिर इति कृत्वा न्येरिरे ।
 अमर्त्यं यजत मर्त्येष्व्वा देवमादेवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ६३१
 अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य सदृग् देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु ।
 शुचिं घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ६३२
 त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः ।
 अनन्ते अन्तः परिवीत आगात् शुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ६३३
 स दूतो विश्वेदभि वष्टि सन्ना होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः ।
 रोहिदश्चो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत् ६३४

स चैतयन् मनुषो यज्ञबन्धुः	प्र तं मद्या रश्नया नयन्ति ।	
स क्षेत्यस्य दुर्यासु सार्धन्	देवो मर्तस्य सधनित्वमाप	६३५
स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्	अच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य ।	
धिया यद् विश्वे अमृता अकृष्वन्	द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्	६३६
स जायत प्रथमः पस्त्यासु	महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।	
अपादशीर्षा गुहमानो अन्ता	आयोर्युवानो वृषभस्य नीळे	६३७
प्र शर्धे आर्तं प्रथमं विपन्यां	ऋतस्य योनां वृषभस्य नीळे ।	
स्पाहो युवा वपुष्यो विभावा	सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे	६३८
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या	अभि प्र सैदुर्ऋतमाशुषाणाः ।	
अश्मव्रजाः सुदुधा वत्रे अन्तर्	उदुस्त्रा आजन्नुषसो हुवानाः	६३९
ते मर्मजत ददृवांसो अद्रिं	तदैषामन्ये अभितो वि वोचन् ।	
पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्	विदन्त ज्योतिश् चकृपन्त धीभिः	६४०
ते गव्यता मनसा दध्रमुब्धं	गा येमानं परि पन्तमद्रिम् ।	
दृहं नरो वचसा दैव्येन	व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः	६४१
ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्	त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन् ।	
तज्जानतीरभ्यनूपत त्रा	आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः	६४२
नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौर	उद् देव्या उपसो भानुरर्त ।	
आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठदज्ज्ञौ	ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्	६४३
आदित् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्	आदिद् रत्नं धारयन्त द्युभक्तम् ।	
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा	मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु	६४४
अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं	होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम् ।	
शुच्यूधो अतृणन्न गवाम्	अन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः	६४५
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम् ।	
अग्निर्देवानामव आवृणानः	सुमृलीको भवतु जातवेदाः	६४६

॥ ७९ ॥ (ऋ० ४ । २ । १-२०) त्रिष्टुप् ।

यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा	देवो देवेष्वरतिर्निधायि ।	
होता यजिष्ठो मद्वा शुच्यै	हव्यैरग्निर्मनुष ईर्यध्वै	६४७

इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तरंग्रे ।	
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च	६४८
अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू कृतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा ।	
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश् च देवान् विश आ च मर्तान्	६४९
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषाम् इन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत ।	
स्वश्वो अग्रे सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय	६५०
गोमाँ अग्रेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः ।	
इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुधः सभावान्	६५१
यस् त इध्मं जभरत् सिध्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया ।	
भुवस् तस्य स्वतवाँः पायुरग्रे विश्वस्मात् सीमघायत उरुष्य	६५२
यस् ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन् मन्द्रमतिथिमुदीरत् ।	
आ दैवयुरिन्धते दुरोणे तस्मिन् रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्	६५३
यस् त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात् प्रियं वा त्वा कृण्वते हविष्मान् ।	
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तमंहसः पीपरो दाश्वांसम्	६५४
यस् तुभ्यमग्रे अमृताय दाशद् दुवस् त्वे कृण्वते यतस्तृक् ।	
न स राया शशमानो वि योषत् नैनमंहः परिं वरदघायोः	६५५
यस्य त्वमग्रे अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः ।	
प्रीतेदसद्वोत्रा सा यविष्ठ असाम यस्य विधतो वृधासः	६५६
चित्तिमचित्ति चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्	
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य	६५७
कवि शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः ।	
अतस् त्वं दृश्याँ अग्न एतान् पङ्क्तिः पश्येरद्धताँ अर्य एवैः	६५८
त्वमग्रे वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ ।	
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथुश्चैन्द्रमवसे चर्षणिप्राः	६५९
अधा ह यद् वयमग्रे त्वाया पङ्क्तिर्हस्तेभिश् चक्रुमा तनूभिः ।	
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर् ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः	६६०

अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नृन्
दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो भवेम अद्रिं रुजेम धनिनै शुचन्तः ६६१

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्र क्रतमाशुषाणाः ।
शुचीदयन् दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपं व्रन् ६६२

सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः ।
शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रम् ऊर्वं गव्यं परिषदन्तो अगमन् ६६३

आ यूथेवं क्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां यज् जनिमान्त्युग्र ।
मतीनां चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः ६६४

अकर्म ते स्वपसो अभूम क्रतमवसन्नृषसो विभातीः ।
अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मजतश् चारु चक्षुः ६६५

एता ते अग्र उचथानि वेधो अवोचाम कवये ता जुषस्व ।
उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ६६६

॥ ८० ॥ (ऋ० ४ । ३ । २-१६)

अयं योनिश् चक्रुमा यं वयं ते जायेव पत्यं उशती सुवासाः ।
अर्वाचीनः परिवीतो नि षीद इमा उ ते स्वपाक प्रतीचीः ६६७

आशृण्वते अदपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृलीकाय वेधः ।
देवाय शस्तिममृताय शंस शर्वेव सोता मधुषुद् यमीळे ६६८

त्वं चिन्नः शम्या अग्ने अस्या क्रतस्य बोध्यतचित् स्वाधीः ।
कदा ते उक्था संधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते ६६९

कथा ह तद् वरुणाय त्वमग्ने कथा दिवे गर्हसे कन्न आगः ।
कथा मित्राय मीहुषे पृथिव्यै ब्रवः कदर्यम्णे कद् भगाय ६७०

कद्विष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद् वाताय प्रतवसे शुभये ।
परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने रुद्राय नृग्ने ६७१

कथा महे पुष्टिभराय पूष्णे कद् रुद्राय सुमखाय हविर्दे ।
कद् विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शरवे बृहत्यै ६७२

कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सुरे बृहते पृच्छयमानः । प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश् चिकित्वान्	६७३
ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ गोर् आमा सचा मधुमत् पक्वमग्ने । कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पर्यसा पीपाय	६७४
ऋतेन हि ष्मा वृषभश् चिदुक्तः पुमाँ अग्निः पर्यसा पृष्ठ्यैन । अस्पन्दमानो अचरद् वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः	६७५
ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः समाङ्गिरसो नवन्त गोभिः । शुनं नरः परि षदन्नुषासम् आविः स्वरभवज् जाते अग्नौ	६७६
ऋतेन देवीरमृता अमृक्ता अर्णोभिरापो मधुमद्भिरग्ने । वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र सदामित् सवितवे दधन्युः	६७७
मा कस्य यक्षं सदामिदुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः । मा भ्रातुरग्ने अनृजोर्ऋणं वेर् मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम	६७८
रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः । प्रति प्फुर वि रुज वीङ्महो जहि रक्षो महि चिद् वावृधानम्	६७९
एभिर्भैव सुमना अग्ने अर्केर् इमान् त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान् । उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत	६८०
एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि । निवर्चना कवये काव्यानि अशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः	६८१
॥ ८१ ॥ (ऋ० ४ । ६ । १-११)	
ऊर्ध्व ऊ षु णो अघ्वरस्य होतर् अग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् । त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसंश् चित् तिरसि मनीषाम्	६८२
अमूरो होता न्यसादि विक्षु अग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः । ऊर्ध्व भानुं सवितेवाश्रेन् मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम्	६८३
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः । उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः	६८४

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्रा ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुषाणो अस्थात् । पर्यग्भिः पशुषा न होता त्रिविष्टयेति प्रदिव उगणः	६८५
परि त्मना मितद्रुरेति होता अग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा । द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्	६८६
भद्रा ते अग्ने स्वनीक संहग् घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः । न यत् ते शोचिस् तमसा वरन्त न ध्वस्मानस् तन्वीरे रेप आ धुः	६८७
न यस्य सातुर्जनिर्तोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ । अधा मित्रो न सुधितः पावको अग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्वु	६८८
द्विर्य पञ्च जीजनन् त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विश्वु । उषर्बुधमथयोरे न दन्तै शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्	६८९
तव त्वे अग्ने हरितो घृतस्ना रोहितास क्रज्वञ्चः स्वञ्चः । अरुषासो वृषण क्रजुमुष्का आ देवतातिमहन्त दुस्माः	६९०
ये ह त्वे ते सहमाना अयासस् त्वेषासो अग्ने अर्चयश् चरन्ति । श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः	६९१
अकारि ब्रह्म समिधानं तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः । होतारमग्निं मनुषो नि पैदुर् नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः ।	६९२

॥ ८२ ॥ (ऋ० ४ । ७ । १-११) त्रिष्टुप्, ६९३ जगती, ६९४-९८ अनुष्टुप् ।

अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर् होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः । यमर्गवानो भृगवो विरुचुर् वनेषु चित्रं विभ्वं विशेर्विशे	६९३
अग्ने कदा त आनुषग् भुवद् देवस्य चेतनम् । अधा हि त्वा जगृभिरे मर्तीसो विक्षीड्यम्	६९४
क्रतावानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तुभिः । विश्वेषामध्वराणां हस्कृतीरं दमेदमे	६९५
आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश् चर्षणीरभि । आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेर्विशे	६९६

तमीं होतारमानुषक् चिकित्वांसं नि वेदिरे ।	
रुण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः	६९७
तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम् ।	
चित्रं सन्तं गुहां हितं सुवेदं कूचिदुर्थिनम्	६९८
सप्तस्य यद् वियुता सस्मिन्नूधन् क्रतस्य धामन् रणयन्त देवाः ।	
मह्यो अग्निर्ममसा रातहव्यो वेरध्वराय सदुमिदृतावा	६९९
वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वान् उभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान् ।	
दूत ईयसे प्रदिव उरणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि	७००
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश् चरिष्ण्वर्चिर्वपुषामिदेकम् ।	
यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश् चिज् जातो भवसीदु दूतः	७०१
सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवार्ति शोचिः ।	
वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः	७०२
तृषु यदन्ना तृषुणा ववक्षं तृषु दूतं कृणुते यद्वा अग्निः ।	
वातस्य मेळि सचते निजूर्वन् आशुं न वाजयते हिन्वे अवी	७०३

॥ ८३ ॥ (ऋ० ४ । ८ । १-८) गायत्री ।

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम् । यजिष्ठमृञ्जसे गिरा	७०४
स हि वेदा वसुधितिं मह्यं आरोधनं दिवः । स देवाँ एह वक्षति	७०५
म वेद देव आनमं देवाँ क्रतायते दमे । दाति प्रियाणि चिद् वसु	७०६
स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते । विद्वान् आरोधनं दिवः	७०७
ते स्याम ये अग्नये ददाशुर्हव्यदातिभिः । य ई पुष्यन्त इन्धते	७०८
ते राया ते सुवीर्यैः सप्तवांसो वि शृण्विरे । ये अग्ना दधिरे दुवः	७०९
अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्त पुरुस्पृहः । अस्मे वाजास ईरताम्	७१०
स विप्रश् चर्षणीनां शर्वसा मानुषाणाम् । अति क्षिप्रेव विध्यति	७११

॥ ८४ ॥ (ऋ० ४ । ९ । १-८)

अग्ने मृळ मह्यं असि य ईमा देवयुं जनम् । इयेथ बर्हिरासदम्	७१२
स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः । दूतो विश्वेषां भुवत्	७१३

स सद्य परि णीयते	होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति	७१४
उत मा अग्निरध्वर	उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति	७१५
वेषि हध्वरीयताम्	उपवक्ता जनानाम् । हव्या च मानुषाणाम्	७१६
वेषीद् वस्य दूत्यं	यस्य जुजोषो अध्वरम् । हव्यं मर्तस्य वोहवे	७१७
अस्माकं जोष्यध्वरम्	अस्माकं यज्ञमङ्गिरः । अस्माकं शृणुधी हवम्	७१८
परि ते दूळभो रथो	अस्माँ अश्रोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः	७१९

॥ ८५ ॥ (ऋ० ४ । १० । १-८)

पदपांक्तिः, (७२३, ७२५, ७२६ उष्णिग्वा,) ७२४ महापदपांक्तिः, ७२७ उष्णिक् ।

अग्ने तमद्य	अश्वं न स्तोमैः	क्रतुं न भद्रं	हृदिस्पृशम् । ऋध्यामां त ओहैः	७२०
अघ्ना हग्ने	क्रतोर्भद्रस्य	दर्शस्य साधोः । रथीर्कृतस्य	बृहतो बभूथ	७२१
एभिर्नो अकैर्	भवां नो अवाङ्	स्वर्णं ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः	सुमना अनीकैः	७२२
आभिष्टे अद्य	गीर्भिर्गुणन्तो	अग्ने दाशेम । प्र ते दिवो न	स्तनयन्ति शुष्माः	७२३
तव स्वादिष्ट	अग्ने संदष्टिर्	इदा चिदहं	इदा चिदुक्तोः । श्रिये रुक्मो न	रोचत उपाके ७२४
घृतं न पुतं	तनूररेपाः	शुचि हिरण्यम् । तत् ते रुक्मो न	रोचत स्वधावः	७२५
कुतं चिद्धि ष्मा	सनेमि, द्वेषो	अग्रं इनोषि मर्तात् । इत्था यजमानादृतावः		७२६
शिवा नः सख्या	सन्तु, भ्रात्रा	अग्ने देवेषु युष्मे । सा नो नाभिः	सदने सस्मिन्नुधन्	७२७

॥ ८६ ॥ (ऋ० ४ । ११ । १-६) त्रिष्टुप् ।

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकम्	उपाक आ रोचते सूर्यस्य ।	
रुशद् दृशे दृदृशे नक्त्या चिद्	अरुक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्	७२८
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां	खं वेपसा तुविजातु स्तवानः ।	
विश्वेभिर्यद् वावनः	शुक्र देवैस् तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म	७२९
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्	त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि ।	
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा	इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय	७३०
त्वद् वाजी वाजंभरो विहाया	अभिष्टिकृज् जायते सत्यशुष्मः ।	
त्वद् रयिर्देवजूतो मयोभुस्	त्वदाशुर्जुवाँ अग्ने अवी	७३१
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो	देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम् ।	
द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्	दमूनसं गृहपतिममूरम्	७३२

आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति ७३३

॥ ८७ ॥ (ऋ० ४ । १२ । १-६)

यस् त्वामग्र इनधते यतस्रुक् त्रिस् ते अन्नं कृणवत् सस्मिन्नहन् ।
स सु द्युमैरभ्यस्तु प्रसन्नत् तव कृत्वा जातवेदश् चिकित्वान् ७३४
इध्मं यस् ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा संपर्यन् ।
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन् रयिं संचते घ्नन्नमित्रान् ७३५
अग्निरींशे बृहतः क्षत्रियस्य अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषङ् मर्त्याय स्वधावान् ७३६
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठ अचित्तिभिश् चकृमा कश्चिदार्गः ।
कृधी प्वस्माँ अर्दितेरनागान् व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने ७३७
महश् चिदग्र एनसो अभीकं ऊर्वाद देवानामुत मर्त्यानाम् ।
मा ते सखायः सदमिद् रिषाम यच्छा तोफाय तनयाय शं योः ७३८
यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् पदि पिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो प्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ७३९

॥ ८८ ॥ (ऋ० ४ । १३ । १-५)

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद् विभातीनां सुमनां रत्नधेयम् ।
यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् उत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति ७४०
ऊर्ध्व भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रुप्सं दर्विध्वद् गविषो न सत्वा ।
अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत् सूर्यं दिव्यारोहयन्ति ७४१
यं सीमकृण्वन् तमसे विपृचं ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम् ।
तं सूर्यं हरितः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ७४२
वहिष्ठेभिर्विहरन् यासि तन्तुम् अवव्ययन्नसितं देव वस्म ।
दर्विध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चमेवावाधुस् तमो अप्स्वन्तः ७४३
अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव पद्यते न ।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नार्कम् ७४४

॥ ८९ ॥ (ऋ० ४ । १४ । १-५)

प्रत्यभिरुषसो जातवेदा अख्यद् देवो रोचमाना महोभिः ।	
आ नासत्योरुगाया रथेन इमं यज्ञमुप नो यातमच्छ	७४५
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।	
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो रश्मिभिश् चेर्कितानः	७४६
आवहन्त्यरुणीज्योतिषागान् मही चित्रा रश्मिभिश् चेर्किताना ।	
प्रबोधयन्ती सुविताय देवी उषा ईयते सुयुजा रथेन	७४७
आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उपसो व्युष्टौ ।	
इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन् यज्ञे वृषणा मादयेथाम्	७४८
अनायतो० (७४४)	

॥ ९० ॥ (ऋ० ४ । १५ । १-६) गायत्री ।

अग्निहोता नो अध्वरे वाजी सन् परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः	७४९
परि त्रिविष्टचध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत्	७५०
परि वार्जपतिः कविर् अग्निहव्यान्यक्रमीत् । दधद् रत्नानि दाशुषे	७५१
अयं यः सृज्ये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः	७५२
अस्य घा वीर ईवतो अग्नेरीशीत् मर्त्यः । तिग्मजम्भस्य मीहुषः	७५३
तमर्वन्तं न सानसिम् अरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मज्यन्ते दिवेदिवे	७५४

॥ ९१ ॥ (ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१२)

(७५५-७६६) बुधगविष्टिरावात्रेयौ । त्रिष्टुप् ।

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।	
यङ्क्ता इव प्र व्यामुजिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ	७५५
अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।	
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस् तमसो निरमोचि	७५६
यदी गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्के शुचिभिर्गोभिरग्निः ।	
आद् दक्षिणा युज्यते वाजयन्ती उत्तानामूर्ध्वो अधयज् जुहूर्भिः	७५७

अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूषीव सूर्ये सं चरन्ति । यदीं सुवाते उपसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्वाम्	७५८
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्वां हितो हितेष्वरूपो वनेषु । दमेदमे सप्त रत्ना दधानो अग्निर्होता नि पसादा यजीयान्	७५९
अग्निर्होता न्यसीदुद् यजीयान् उपस्थे मातुः सुरभा उ लोके । युवां कविः पुरुनिष्ठ क्रतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इन्द्रः	७६०
प्र णु त्वं विप्रमध्वरेषु साधुम् अग्निं होतारमीळते नमोभिः । आ यस् ततान रोदसी क्रतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनै वृतेन	७६१
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः । सहस्रशृङ्गो वृषभस् तदोजा विश्वा अग्रे सहसा प्रास्यन्यान्	७६२
प्र सद्यो अग्रे अत्येयन्यान् आविर्यस्मै चारुतमो बभूथ । ईळेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम्	७६३
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्रे अन्तित ओत दूरात् । आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत् तै अग्रे महि शर्म भद्रम्	७६४
आद्य रथं भानुमो भानुमन्तम् अग्रे तिष्ठ यजतेभिः समन्तम् । विद्वान् पथीनामुर्वन्तरिक्षम् एह देवान् हविरद्याय वक्षि	७६५
अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे । गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्मसुरुव्यञ्जमश्रेत्	७६६

॥ ९२ ॥ (क्र० ५।२। १-१२)

(७६७-७७८) कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभौ वा; २, ९ वृशो जानः । त्रिष्टुप्, १२ शकवरी ।

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहां बिभर्ति न ददाति पित्रे । अनीकमस्य न मिनजनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरुतौ	७६७
कमेतं त्वं युवते कुमारं पेपी बिभर्षि महिषी जजान । पूर्वाहिं गर्भः शरदो ववर्ध अपश्यं जातं यदस्रत माता	७६८
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् । ददानो अस्मा अमृतं विपृक्त किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुकथाः	७६९

क्षेत्रादपश्यं सनुतश् चरन्तं सुमद् युथं न पुरु शोभमानम् ।	
न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्कीरिद् युवतयो भवन्ति	७७०
के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर् न येषां गोपा अरणश् चिदासं ।	
य ई जगृध्ररव ते सृजन्तु आज्ञाति पञ्च उप नश् चिकित्वान्	७७१
वसां राजानं वसति जनानाम् अरातयो नि दधुर्मर्त्येषु ।	
ब्रह्माण्यत्रैरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु	७७२
शुनश्चिच्छेपं निर्दितं सहस्राद् यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः ।	
एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान् होतश् चिकित्व इह तू निषद्यं	७७३
हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।	
इन्द्रो विद्रां अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्	७७४
वि ज्योतिषा बृहता भाल्यभिर् आविर्विश्वानि कृणुते महित्वा ।	
प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे	७७५
उत स्वानासो दिवि पन्त्वग्रेस् तिग्मार्युधा रक्षसे हन्तवा उ ।	
मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः	७७६
एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।	
यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम	७७७
तुविशीवो वृषभो वावृधानो अशत्र्वर्यः समजाति वेदः ।	
इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्विष्मते मनवे शर्म यंसत्	७७८

॥ ९३ ॥ (ऋ० ५ । ३ । १-२, ४-१२)

(७७९-८१०) वसुधृत आत्रेयः । ७७९ विराट्, ७८०-७८९ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः ।	
त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास् त्वमिन्द्रो दाशुपे मर्त्याय	७७९
त्वमर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं बिभर्षि ।	
अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर् यद् दंपती समनसा कृणोषि	७८०
तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरु दधाना अमृतं सपन्त ।	
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर् दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः	७८१

न त्वद्गोता पूर्वो अग्ने यजीयान् न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः । विशश् च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान्	७८२
वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसुयवो हविषा बुध्यमानाः । वयं समये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्	७८३
यो न आगो अभ्येनो भगति अधीदधमघशंसे दधात । जही चिकित्वो अभिशस्तिमेताम् अग्ने यो नो मर्चयति द्रुयेन	७८४
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः । संस्थे यदग्न ईर्यसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः	७८५
अवं स्पृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस् ते सहसः स्रन ऊहे । कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नो अग्ने कदाँ ऋतचिद् यातयासे	७८६
भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज् जोषयासे । कुविद् देवस्य सहसा चक्रानः सुम्रमग्निर्वनते वावृधानः	७८७
त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरितातिं पर्षि । स्तेना अदृश्रन् रिपवो जनासो अज्ञातकेता वृजिना अभूवन्	७८८
इमे यामासस् त्वद्रिगभूवन् वसवे वा तदिदागो अवाचि । नाहायमग्निरभिश्स्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात्	७८९

॥ ९४ ॥ (ऋ० ५ । ४ । १-११) त्रिष्टुप् ।

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनाम् अभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन् । त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम अभि प्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम्	७९०
हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विश्वविभावा सुदशीको अस्मे । सुगार्हपत्याः समिषो दिदीहि अस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांसि	७९१
विशां कविं विश्वपतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् । नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि	७९२
जुषस्वाग्ने इळ्या सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य । जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान् हविरद्याय वक्षि	७९३

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान् ।	
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि	७९४
वधेन दस्युं प्र हि चातर्यस्व वर्यः कृण्वानस् तन्वेडे स्वायै ।	
पिपर्षि यत् सहसस्पुत्र देवान् त्सो अग्ने पाहि नृतम् वाजै अस्मान्	७९५
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे ।	
अस्मे रयि विश्ववारं समिन्व अस्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि	७९६
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम् ।	
वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नम् त्रिवरूथेन पाहि	७९७
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिं पर्षि ।	
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोडे अस्माकं बोध्यविता तनूनाम्	७९८
यस् त्वा हुदा कीरिणा मन्यमानो अमर्त्य मर्त्यो जोहवीमि ।	
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्	८०९
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् ।	
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयि नशते स्वस्ति	८००

॥ ९५ ॥ (ऋ० ५ । ६ । १-१०) पङ्क्तिः ।

अग्निं तं मन्ये यो वसुर् अस्तं यं यन्ति धेनवः ।	
अस्तमर्वन्त आशवो अस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०१
सो अग्नियो वसुर्गुणे सं यमायन्ति धेनवः ।	
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं मुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०२
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।	
अग्नी राये स्वाश्रुवं स प्रीतो याति वार्यम् इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०३
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।	
यद्ग स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०४
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते ।	
सुश्वन्द्र दस्म विदपते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०५

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु	विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।	
ते हिंन्विरे त ईन्विरे	त इषण्यन्त्यानुषग्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०६
तव त्ये अग्ने अर्चयो	महिं ब्राधन्त वाजिनः ।	
ये पत्वंभिः शफानां	व्रजा भुरन्त गोनाम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०७
नवां नो अग्न आ भेर	स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः ।	
ते स्याम य आनुचुस्	त्वादूतासो दमेदम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०८
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो	दर्वीं श्रीणीष आसनि ।	
उतो न उत् पुपूर्या	उक्थेषु शवसस्पत	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०९
एवाँ अग्निर्मजुर्यमुर्	गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक् ।	
दधदुस्मे सुवीर्यम्	उत त्यदाश्चश्यम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८१०

॥ ९६ ॥ (ऋ० ५। ७। १-१०) (८११-८२७) इष आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८२० पङ्क्तिः ।

सखायः सं वः सम्यञ्चम्	इषं स्तोमं चाग्नये ।	
वर्षिष्ठाय क्षितीनाम्	ऊर्जो नष्ट्रे सहस्वते	८११
कुत्रा चिद् यस्य समृतौ	रुणा नरो नृषदने ।	
अहन्तश् चिद् यमिन्धते	संजनयन्ति जन्तवः	८१२
सं यदिषो वनामहे	सं हव्या मानुषाणाम् ।	
उत द्युमस्य शवस	ऋतस्य रश्मिमा ददे	८१३
सः स्मा कृणोति केतुमा	नक्तं चिद् दूर आ सते ।	
पावको यद् वनस्पतीन्	प्र स्मा मिनात्यजरः	८१४
अव स्म यस्य वेपणे	स्वेदं पथिषु जुहति ।	
अभीमह स्वर्जेन्यं	भूमा पृष्ठेव रुरुहुः	८१५
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं	विदद् विश्वस्य धार्यसे ।	
प्र स्वादनं पितूनाम्	अस्तताति चिदायवे	८१६
स हि ष्मा धन्वाक्षितं	दाता न दात्या पशुः ।	
हिरिश्मश्रुः शुचिदम्	ऋभुरनिभृष्टतविषिः	८१७

शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते ।	
सुषूरस्रत माता क्राणा यदानशे भगम्	८१८
आ यस्ते सर्पिरासुते अग्ने शमस्ति धार्यसे ।	
ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः	८१९
इति चिन् मन्युमध्रिजस् त्वादातमा पशुं ददे ।	
आदग्ने अपृणतो अत्रिः सासह्याद् दस्यून् इषः सासह्यान्नुन्	८२०

॥ ९७ ॥ (ऋ० ५ । ८ । १-७) जगती ।

त्वामग्ने ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नासं ऊतये सहस्कृत ।	
पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दर्मनसं गृहपतिं वरेण्यम्	८२१
त्वामग्ने अतिथिं पूव्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे ।	
बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पतं सुशर्माणं स्वर्वसं जरद्विषम्	८२२
त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचि रत्नधातमम् ।	
गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्णवसं सुयजं घृतश्रियम्	८२३
त्वामग्ने धर्णासि विश्वधा वयं गीर्भिर्गुणन्तो नमसोप सोदिम ।	
स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः	८२४
त्वामग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत ।	
पुरुण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे	८२५
त्वामग्ने समिधानं यविष्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।	
उरुजयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति	८२६
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे ।	
स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि जयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे	८२७

॥ ९८ ॥ (ऋ० ५ । ९ । १-७)

(८२८-८४१) गय आत्रेयः । अनुष्टुप् । ८३२; ८३४ पङ्क्तिः ।

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।	
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक्	८२८
अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।	
सं यज्ञासश् चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः	८२९

- उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी ।
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम् ८३०
- उत स्म दुर्गृभीयमे पुत्रो न ह्यार्याणाम् ।
पुरू यो दग्धासि वना अग्ने पशुर्न यवसे ८३१
- अध स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः ।
यदीमहं त्रितो दिवि उप ध्मातेव धमति शिशीति ध्मातरीं यथा ८३२
- तवाहमग्न उतिभिर् मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम् ८३३
- तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
स क्षेपयत् स पोषयद् भुवद् वाजस्य मातर्य उतैधि पृत्सु नो वृधे ८३४

॥ ९९ ॥ (ऋ० ५। १०। १-७) अनुष्टुप्. ८३८, ८४१ पङ्क्तिः ।

- अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमग्निगो ।
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम् ८३५
- त्वं नो अग्ने अद्भुतं कृत्वा दक्षस्य मंहना ।
त्वे असुर्यमारुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः ८३६
- त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय ।
ये स्तोमैभिः प्र सूरयो नरो मघान्यान्शुः ८३७
- ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
शुष्मैभिः शुष्मिणो नरो दिवश् चिद् येषां बृहत् सुक्तीतिर्बोधति त्मना ८३८
- तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः ८३९
- नू नो अग्न उतर्ये सबाधसश् च रातर्ये ।
अस्माकासश् च सूरयो विश्वा आशास् तरीषणि ८४०
- त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान् आ भर ।
होतर्विभ्वासहै रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे ८४१

॥ १०० ॥ (क्र० ५ । ११ । १-६) (८४२-८६५) सुतंभर आत्रेय । जगती ।

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
 घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ८४२
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितम् अग्निं नरस् त्रिपथस्थे समीधिरे ।
 इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ८४३
 असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर् मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः ।
 घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस् ते केतुरभवद् दिवि श्रितः ८४४
 अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुया अग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।
 अग्निर्दूतो अभवद्भव्यवाहनो अग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम् ८४५
 तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस् तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।
 त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीर् आ पृणन्ति शर्वसा वर्धयन्ति च ८४६
 त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम् अन्वविन्दज्जिश्त्रियाणं वनेवने ।
 स जायसे मथ्यमानः सहो महत् त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ८४७

॥ १०१ ॥ (क्र० ५ । १२ । १-६) त्रिष्टुप् ।

प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म ।
 घृतं न यज्ञ आस्येऽ सुपृतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम् ८४८
 ऋतं चिकित्व ऋतमिच्छ चिकिद्धि ऋतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वाः ।
 नाहं यातुं सहसा न द्रयेन ऋतं संपाम्यरुषस्य वृष्णः ८४९
 कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः ।
 वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः ८५०
 के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः ।
 के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वर्चसः सन्ति गोपाः ८५१
 सखायस् ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् ।
 अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर् ऋजयते वृजिनानि ब्रुवन्तः ८५२
 यस् ते अग्ने नमसा यज्ञमीदृं ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः ।
 तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसर्त्तणस्य नहुषस्य शेषः ८५३

॥ १०२ ॥ (ऋ० ५ । १३ । १-६) गायत्री ।

अर्चन्तस् त्वा हवामहे	अर्चन्तः समिधीमहि	। अग्ने अर्चन्त ऊतये	८५४
अग्नेः स्तोमं मनामहे	सिध्मद्य दिविस्पृशः	। देवस्य द्रविणस्यवः	८५५
अग्निर्जुषत नो गिरो	होता यो मानुषेष्वा	। स यक्षद् दैव्यं जनम्	८५६
त्वमग्ने सप्रथा असि	जुष्टो होता वरेण्यः	। त्वया यज्ञं वि तन्वते	८५७
त्वमग्ने वाजसातमं	विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम्	। स नो रास्व सुवीर्यम्	८५८
अग्ने नेमिराँ इव	देवाँस् त्वं परिभूरासि	। आ राधश् चित्रमृञ्जसे	८५९

॥ १०३ ॥ (ऋ० ५ । १४ । १-६)

अग्निं स्तोमेन बोधय	समिधानो अमर्त्यम् ।	हव्या देवेषु नो दधत्	८६०
तमध्वरेष्वीळते	देवं मर्ता अमर्त्यम् ।	यजिष्ठं मानुषे जने	८६१
तं हि शश्वन्त ईळते	स्रुचा देवं घृतश्रुता ।	अग्निं हव्याय वोह्वे	८६२
अग्निर्जातो अरोचत	घ्नन् दस्यून् ज्योतिषा तमः ।	अविन्दद् गा अपः स्वः	८६३
अग्निमीळेन्यं कवि	घृतपृष्ठं सपर्यत ।	वेतु मे शृण्वद्ववम्	८६४
अग्निं घृतेन वावृधुः	स्तोमेभिर्विश्वर्षणिम् ।	स्वाधीभिर्ध्वचस्युभिः	८६५

॥ १०४ ॥ (ऋ० ५ । १५ । १-५) (८६६-८७०) धरुण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

प्र वेधसे कवये वेद्याय	गिरं भरे यज्ञसे पूर्याय ।		
घृतप्रसक्तो असुरः सुशेवो	रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः		८६६
ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त	यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् ।		
दिवो धर्मेन् धरुणे सेदुषो नृभू	जातैरजाताँ अभि ये ननक्षुः		८६७
अंहोयुवस् तन्वस् तन्वते वि	वयो महद् दुष्टरं पूर्याय ।		
स संवतो नवजातस् तुतुर्यात्	सिंहं न क्रुद्धमभितः परिं घृः		८६८
मातेव यद् भरसे पप्रथानो	जनंजनं धार्यसे चक्षसे च ।		
वयोवयो जरसे यद् दधानः	परि त्मना विषुरूपो जिगासि		८६९
वाजो नु ते शर्वसस्यात्वन्तम्	उरुं दोषं धरुणं देव रायः ।		
पदं न तायुर्गुहा दधानो	महो राये चित्तयन्नत्रिमस्पः		८७०

॥ १०५ ॥ (ऋ० ५ । १६ । १-५) [८७१-८८०] पूरुत्रेयः । अनुष्टुप्, ८७५ पङ्क्तिः ।

बृहद् वयो हि भानवे ऽर्चा देवायाम्ये ।
यं मित्रं न प्रशस्तिभिर् मतीसो दधिरे पुरः ८७१
स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाहोः ।
वि हव्यमग्निर्गनुषग् भगो न वारमृण्वति ८७२
अस्य स्तोमैर्मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः ।
विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि समर्ये शुष्ममादधुः ८७३
अधा ह्यग्र एषां सुवीर्यस्य मंहना ।
तमिद् यद्द्वं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः ८७४
नू न एहि वार्यम् अग्ने गृणान आ भर ।
ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचा उत्तैर्धि पृत्सु नो वृधे ८७५

॥ १०६ ॥ (ऋ० ५ । १७ । १-५) अनुष्टुप्, ८८० पङ्क्तिः ।

आ यज्ञैर्देव मर्त्ये इत्था तव्यांसमूतये ।
अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे ८७६
अस्य हि स्वयंशस्तर आसा विधर्मन् मन्यसे ।
तं नाकं चित्रशोचिषं मन्द्रं परो मनीषया ८७७
अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा ।
दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः ८७८
अस्य क्रत्वा विचेतसो दुस्मस्य वसु रथ आ ।
अधा विश्वासु हव्यो ऽग्निर्विभु प्र शस्यते ८७९
नू न इद्धि वार्यम् आसा संचन्त सूरयः ।
ऊर्जो नपादुभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तये उत्तैर्धि पृत्सु नो वृधे ८८०

॥ १०७ ॥ (ऋ० ५ । १८ । १-५)

[८८१-८८५] द्वितो मृकवाहा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८८५ पङ्क्तिः ।

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः ।
विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति ८८१

द्विताय मृक्तवाहसे	स्वस्य दक्षस्य मंहना ।	
इन्दुं स धत्त आनुषक्	स्तोता चित् ते अमर्त्य	८८२
तं वो दीर्घायुशोचिषं	गिरा हुवे मघोनाम् ।	
अरिष्टो येषां रथो	व्यश्वदावन् नीयते	८८३
चित्रा वा येषु दीर्घतिर	आसन्नकथा पान्ति ये ।	
स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे	श्रवांसि दधिरे परि	८८४
ये मे पञ्चाशतं ददुर्	अश्वानां सधस्तुति ।	
द्युमदग्रे महि श्रवां	बृहत् कृधि मघोनां नृवदमृत नृणाम्	८८५

॥ १०८ ॥ (ऋ० ५ । १९ । १-५)

[८८६-८९०] वज्रित्रात्रेयः । ८८६-८८७ गायत्री, ८८८-८८९ अनुष्टुप्, ८९० विराङ्गरूपा ।

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	प्र वव्रेर्वत्रिश् चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे	८८६
जुहुरे वि चितयन्तो	ऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ दृह्णां पुरं विविशुः	८८७
आ श्वेत्रेयस्य जन्तवो	द्युमद् वर्धन्त कृष्टयः ।	
निष्कग्रीवो बृहदुक्थ	एना मध्वा न वाजयुः	८८८
प्रियं दुग्धं न काम्यम्	अजामि जाम्योः सचा ।	
घर्मो न वाजजठरो	ऽदब्धः शश्वतो दभः	८८९
क्रीळन् नो रश्म आ भुवः	सं भस्मना वायुना वेविदानः ।	
ता अस्य सन् धूपजो न तिग्माः	सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः	८९०

॥ १०९ ॥ (ऋ० ५ । २० । १-४) [८९१-८९४] प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अनुष्टुप्, ८९४ पङ्क्तिः ।

यमग्रे वाजसातम्	त्वं चिन् मन्यसे रयिम् ।	
तं नो गीभिः श्रवाय्यं	देवत्रा पनया युजम्	८९१
ये अग्रे नेरयन्ति ते	वृद्धा उग्रस्य शवसः ।	
अप द्वेपो अप ह्वरो	ऽन्यव्रतस्य सश्विरे	८९२
होतारं त्वा वृणीमहे	ऽग्रे दक्षस्य सार्धनम् ।	
यज्ञेषु पूव्य गिरा	प्रयस्वन्तो हवामहे	८९३
इत्था यथा त ऊतये	सहसावन् दिवेदिवे ।	
राय क्रताय सुक्रतो	गोभिः प्याम सध्मादो वीरैः स्याम सध्मादः	८९४

॥ ११० ॥ (ऋ० ५ । २१ । १-४) [८९५-८९८] सप्त आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८९८ पङ्क्तिः ।

मनुष्वत् त्वा नि धीमहि मनुष्वत् समिधीमहि । अग्रे मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज ८९५
 त्वं हि मानुषे जने ऽग्रे सुप्रीत इध्यमे । सुचस् त्वा यन्त्यानुषक् सुजात सपिरासुते ८९६
 त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत । सपर्यन्तस् त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ८९७
 देवं वो देवयज्यया अग्निमीळीत मर्त्यैः ।
 समिद्धः शुक्र दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः सप्तस्य योनिमासदः ८९८

॥ १११ ॥ (ऋ० ५ । २२ । १-४) [८९९-९०२] विश्वसामा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ९०२ पङ्क्तिः ।

प्र विश्वसामन्नत्रिवद् अर्ची पावकशोचिषे । यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ८९९
 न्यः प्रि जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् । प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः ९००
 चिकित्विन् मनसं त्वा देवं मर्तीस ऊतये । वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ९०१
 अग्रे चिकिद्ध्यस्य न इदं वचः सहस्य ।
 तं त्वा सुशिप्र दंपते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः ९०२

॥ ११२ ॥ (ऋ० ५ । २३ । १-४) [९०३-९०६] द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अनुष्टुप्, ९०६ पङ्क्तिः ।

अग्रे सहन्तमा भेर द्युम्नस्य ग्रासहा रयिम् । विश्वा यश् चर्षणीरभि आऽसा वाजेषु मामहत् ९०३
 तमग्रे पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भेर । त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ९०४
 विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः । होतारं सन्नसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु ९०५
 स हि ष्मा विश्वचर्षणिर् अभिमाति सहो दुधे ।
 अग्रे एषु क्षयेष्वा रेवन् नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि ९०६

॥ ११३ ॥ (ऋ० ५ । २४ । १-४)

[९०७-९१०] बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च क्रमेण गोपायना लौपायना वा । द्विपदा विगद ।

अग्रे त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूध्यः ९०७
 वसुरग्निर्यसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ९०८
 स नो बोधि श्रुधी हवम् उरूष्या गो अघायतः समस्मात् ९०९
 तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ९१०

॥ ११४ ॥ (ऋ० ५ । २५ । १-२) [९११-९२७] वसूयव आत्रेयाः । अनुष्टुप् ।

अच्छा वो अग्निवसे देवं गांसि स नो वसुः ।
 रासत् पुत्र ऋषुणाम् ऋतावा पर्षति द्विषः ९११

स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासंश् चिद् यमीधिरे ।	
होतारं मन्द्रजिह्वमित् सुदीतिभिर्विभावसुम्	९१२
स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ।	
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य	९१३
अग्निदेवेषु राजति अग्निर्मतेष्वाविशन् ।	
अग्निर्नो हव्यवाहनो ऽग्निं धीभिः संपर्यत	९१४
अग्निस् तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् ।	
अतूर्तं श्रावयत् पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे	९१५
अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः ।	
अग्निरत्यै रघुष्यदं जेतारमपरंराजितम्	९१६
यद् वाहिष्ठं तदग्रये बृहदर्चं विभावसो ।	
महिषीव त्वद् रायिस् त्वद् वाजा उदीरते	९१७
तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।	
उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो अर्तं त्मना दिवः	९१८
एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।	
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेवं सुक्रतुः	९१९

॥ ११५ ॥ (ऋ० ५ । २६ । १-८) गायत्री ।

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान् वक्षि यक्षि च	९२०
तं त्वा घृतस्त्रवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम् । देवाँ आ वीतर्ये वह	९२१
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे	९२२
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये । होतारं त्वा वृणीमहे	९२३
यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह । देवैरा संत्सि बर्हिषि	९२४
समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्यः	९२५
न्य॑ग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्यम् । दधाता देवमृत्विजम्	९२६
प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः । स्तृणीत बर्हिरासदे	९२७

॥ ११६ ॥ (ऋ० ५।२७।१-५)

[१२८-१३२] त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः (अग्निर्भौम इति केचित्) । त्रिष्टुप्, १३१-१३२ अनुष्टुप् ।

अनस्वन्ता सत्पतिर्भामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।	
त्रैवृष्णो अग्ने दुशभिः सहस्रैर् वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत	१२८
यो मे शता च विंशति च गोनां हरीं च युक्ता सुधुरा ददाति ।	
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानो ऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म	१२९
एवा ते अग्ने सुमतिं चक्रानो नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः ।	
यो मे गिरस् तुविजातस्य पूर्वोर् युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति	१३०
यो म इति प्रवोचति अश्वमेधाय सूरये ।	
ददद्वा सनि यते ददन्मेधामृतायते	१३१
यस्य मा परुषाः शतम् उद्धर्षयन्त्युक्षणः ।	
अश्वमेधस्य दानाः सोमा इव त्र्याशिरः	१३२

॥ ११७ ॥ (ऋ० ५।२८।१-६)

[१३३-१३८] विश्ववागत्रेयी । १३३, १३५ त्रिष्टुप्, १३४ जगती, १३६ अनुष्टुप्, १३७-१३८ गायत्री ।

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरंश्रेत् प्रत्यङ्मुपसंमुर्विया वि भाति ।	
एति प्राचीं विश्ववारा नमोभिर् देवाँ ईळाना हविषा घृताचीं	१३३
समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष् कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।	
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वसि आतिथ्यमग्ने नि च धत्त इत् पुरः	१३४
अग्ने शर्धं महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।	
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि	१३५
समिद्धस्य प्रमहसो ऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।	
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे	१३६
समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि	१३७
आ जुहोता दुवस्यत अग्निं प्रयत्यध्वरे । वृणीध्वं हव्यवाहनम्	१३८

॥ ११८ ॥ (ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१३)

[९३९-१०९०] भरद्वाजो वार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता अस्या धियो अभवो दस्म होता ।	
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्वै	९३९
अधा होता न्यसीदो यजीयान् इळस्पद इषयन्नीज्यः सन् ।	
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु गमन्	९४०
वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैः त्वे रयिं जागृवांसो अनु गमन् ।	
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्	९४१
पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रवं आपन्नमृकतम् ।	
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ	९४२
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयांसो जनानाम् ।	
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्	९४३
सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वग्निर् होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।	
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसम् उप जुबाधो नमसा सदेम	९४४
तं त्वा वयं सुध्योऽ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः ।	
त्वं विशो अनयो दीधानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन	९४५
विशां कविं विस्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम् ।	
प्रेतीपणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्	९४६
सो अग्र ईजे शशमे च मतो यस्त आनद् समिधा हव्यदातिम् ।	
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर् विश्वेत् स वामा दधते त्वोतः	९४७
अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।	
वेदीं स्रनो सहसो गीभिर् रुक्थैर् आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम	९४८
आ यस् ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यैस् तरुवः ।	
बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि	९४९
नृवद् वसो सदमिद्वैह्यस्मे भूरिं तोकाय तनयाय पश्वः ।	
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअधा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु	९५०

पुरुष्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन् वसुता ते अश्याम् ।
पुरुणि हि त्वे पुरुवार सन्ति अग्ने वसु विधत्ते राजनि त्वे

९५१

॥ ११९ ॥ (ऋ० ६ । २ । १-११) अनुष्टुप्, ९६२ शकरी ।

त्वं हि क्षैतवद् यशो ऽग्ने मित्रो न पत्यसे । त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ९५२
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते । त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्चर्षणिः ९५३
सजोषस् त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते । यद्ग स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे ९५४
ऋधद् यस् ते सुदानवे धिया मर्तः शशमते । ऊती षवृहतो दिवो द्विपो अंहो न तरति ९५५
समिधा यस् त आहुतिं निशितिं मर्त्यो न शत् । वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ९५६
त्वेषस् ते धूम ऋण्वति दिवि षञ्छुक्र आततः । सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ९५७
अधा हि विक्षीड्यो ऽसि प्रियो नो अतिथिः । रण्वः पुरीव जूर्यः सुनुर्न त्रययाय्यः ९५८
ऋत्वा हि द्रोणे अज्यसे ऽग्ने वाजी न कृत्व्यः । परिजमेव स्वधा गयो ऽत्यो न ह्यार्यः शिशुः ९५९
त्वं त्या चिदच्युता अग्ने पशुर्न यवसे । धामा ह यत् ते अजर वना वृश्नन्ति शिर्कसः ९६०
वेषि ह्यध्वरीयताम् अग्ने होता दमे विशां । समृधौ विरपते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ९६१
अच्छा नो मित्रमहो देव देवान् अग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्ति सुक्षितिं दिवो नृन् द्विपो अंहांसि दुरिता तरेम, ता तरेम, तवावसा तरेम ९६२

॥ १२० ॥ (ऋ० ६ । ३ । १-८) त्रिष्टुप् ।

अग्ने स क्षेषदत्ता ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे ।
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ९६३
इजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर् ऋधद्वारायाग्रये ददाश ।
एवा च न तं यशसामजुष्टिर् नांहो मर्तं नशते न ग्रहसिः ९६४
सरो न यस्य दशतिररेपा भीमा यदेति शुचतस् त आ धीः ।
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद् रण्वो वसतिर्वनेजाः ९६५
तिग्मं चिदेम महि वर्षो अस्य भसदश्चो न यमसान आसा ।
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ९६६
स इदस्तेव प्रति धादमिष्यञ् छिशीति तेजोऽयसो न धाराम् ।
चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर् वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ९६७

स ई' रेभो न प्रति वस्त उस्त्राः	शोचिषा रारपीति मित्रमहाः ।	
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नृन्	अमर्त्यो अरुषो यो दिवा नृन्	९६८
दिवो न यस्य विधतो नवीनोद्	वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत् ।	
घृणा न यो धर्जसा पत्मना यन्	ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी	९६९
धायोभिर्वा यो युज्येभिरकैर्	विद्युन्न दविद्योत् स्वेभिः शुष्मैः ।	
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष	ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अघौत्	९७०

॥ १२१ ॥ (ऋ० ६ । ४ । १-८)

यथा होतुर्मनुषो देवताता	यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि ।	
एवा नो अद्य समना समानान्	उशन्नम् उशतो यक्षि देवान्	९७१
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोर्	अग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात् ।	
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु	उषर्भुद्भूदतिथिर्जातवैदाः	९७२
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं	भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः ।	
वि य इनोत्यजरः पावको	ऽश्वस्य चिच्छिन्नथत् पूर्याणि	९७३
वन्ना हि सूनो अस्यन्नसदा	चक्रे अभिर्जनुषाज्मानम् ।	
स त्वं न ऊर्जसन् ऊर्ज धा	राजैव जेरवृके क्षेप्यन्तः	९७४
नितिकित्त यो वारणमन्नमत्ति	वायुर्न राष्ट्रयत्येत्यक्तून् ।	
तुर्याम यस् त आदिशामरातीर्	अत्यो न हुतः पततः परिहृत	९७५
आ सूर्यो न भानुमद्भिरकैर्	अग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा ।	
चित्रो नैयत् परि तमांस्यक्तः	शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन्	९७६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्	ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने ।	
इन्द्रं न त्वा शर्वसा देवता	वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः	९७७
नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति	वेषि रायः पथिभिः पर्यहः ।	
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्रं	मदेम शतहिमाः सुवीराः	९७८

॥ १२२ ॥ (ऋ० ६ । ५ । १-७)

हुवे वः सूनुं सहसो युवानम्	अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।	
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता	विश्ववाराणि पुरुवारो अधुक्	९७९

त्वे वस्त्रनि पुर्वणीक होतर् दोषा वस्तेरेरिरे यज्ञियासः ।	
क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन् त्सं सौभगानि दधिरे पावके	९८०
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु कृत्वा रथीरभवो वार्याणाम् ।	
अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग् जातवेदो वस्त्रनि	९८१
यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् ।	
तमजरैर्भिर्वृषभिस् तव स्वैस् तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्	९८२
यस् तै यज्ञेन समिधा य उक्थैर् अर्केभिः सूनो सहसो ददाशत् ।	
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति	९८३
स तत् कृधीषितस् तूर्यमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान् ।	
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस् तज् जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म	९८४
अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि रयिवः सुवीरम् ।	
अश्याम वाजमभि वाजयन्तो अश्याम द्युम्नमजराजरं ते	९८५

॥ १२३ ॥ (ऋ० ६ । ६ । १-७)

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः ।	
वृश्चद्वनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति	९८६
स श्रितानस् तन्यतू रोचनस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः ।	
यः पावकः पुरुतमः पुरुणि पृथून्यग्निरनुयाति भर्वन्	९८७
वि ते विष्वग् वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश् चरन्ति ।	
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः	९८८
ये तै शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः ।	
अधं भ्रमस् त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः	९८९
अधं जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना ।	
शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर् दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि	९९०
आ भानुना पार्थिवानि ज्रयांसि महस् तोदस्य धृषता ततन्थ ।	
स बाधस्वार्प भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन् वनुषो नि जूर्व	९९१

स चित्रं चित्रं चितर्यन्तमस्मे चित्रक्षत्रं चित्रतमं वयोधाम् ।

चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रं चन्द्राभिर्गृणते युवस्व

९९२

॥ १२४ ॥ (ऋ० ६ । १० । १-७) त्रिष्टुप्; ९९९ द्विपदा विराट् ।

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निर्मध्वरे दधिध्वम् ।

पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः

९९३

तमु द्युमः पुर्वणीक होतर् अग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।

स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचिं मतयः पवन्ते

९९४

पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः ।

चित्राभिस् तमूतिभिश् चित्रशोचिर् व्रजस्य साता गोमतो दधाति

९९५

आ यः पग्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा ।

अधं बहु चित् तम ऊर्म्यायास् तिरः शोचिषा ददृशे पावकः

९९६

नू नंश् चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवञ्चश् च धेहि ।

ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान् त्सुवीर्येभिश् चाभि सन्ति जनान्

९९७

इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशनं यं त आसानो जुहुते हविष्मान् ।

भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिम् अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ

९९८

वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां मदम शतहिमाः सुवीराः

९९९

॥ १२५ ॥ (ऋ० ६ । ११ । १-६) त्रिष्टुप् ।

यजस्व होतरिषितो यजीयान् अग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति ।

आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः

१०००

त्वं होता मन्द्रतमो नो अधुग अन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु ।

पावकया जुह्वाङ् वह्निरासा ऽग्ने यजस्व तन्वं तव स्वाम्

१००१

धन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ् जन्म गृणते यजर्घ्यै ।

वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद् विप्रो मधु च्छन्दो भनन्ति रेभ इष्टौ

१००२

अर्दिद्युतत् स्वपाको विभावा ऽग्ने यजस्व रोदसी उरुची ।

आयुं न यं नमसा रातह्वया अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः

१००३

वृज्जे ह यन्नमसा बर्हिर्ग्नौ अयामि सुग् घृतवती सुवृक्तिः ।
 अम्यक्षि सद्य सदर्ने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः स्वये न चक्षुः १००४
 दशस्या नः पुर्वणीक होतर् देवाभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 रायः सूनो सहसो वावसाना अति ससेम वृजनं नाहः १००५

॥ १२६ ॥ (ऋ० ६ । १२ । १-६)

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राक् अग्निस् तोदस्य रोदसी यजध्वै ।
 अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात् स्वयो न शोचिषा ततान १००६
 आ यस्मिन् त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद् राजन्त्सर्वततिव नु द्यौः ।
 त्रिषधस्थस् ततरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्वै १००७
 तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत् ।
 अद्रोघो न द्रविता चैतति तमन् अमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु १००८
 सास्माकेभिरेतरी न शुषैर् अग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
 दृष्टो वन्वन् क्रत्वा नार्वा उस्तः पितेव जारयार्थि यज्ञैः १००९
 अध स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत् तक्षदनुयाति पृथ्वीम् ।
 सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धवीयान् ऋणो न तायुरति धन्वा राट् १०१०
 स त्वं नो अर्वभिदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम शतहिमाः सुवीराः १०११

॥ १२७ ॥ (ऋ० ६ । १३ । १-६)

त्वद् विश्वा सुभग सौभगानि अग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः ।
 श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् १०१२
 त्वं भगो न आ हि रत्नमिषे परिज्मेव क्षयसि दुस्मर्वर्चाः ।
 अग्ने मित्रो न बृहत् ऋतस्य असि क्षत्ता वामस्य देव भूरैः १०१३
 स सत्पतिः शर्वसा हन्ति वृत्रम् अग्ने विप्रो वि पणेर्भिति वाजम् ।
 यं त्वं प्रचेत ऋतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि १०१४
 यस् ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् यज्ञैर्मतो निशिति वेद्यानट् ।
 विश्वं स देव प्रति वारमग्ने धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः १०१५

ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीरा अग्ने सूनो सहसः पुण्यसे धाः ।
 कृणोषि यच्छवसा भूरि पश्वो वयो वृकायारये जसुरये १०१६
 वद्वा सूनो सहसो नो विहाया अग्ने तोकं तनयं वाजि नो दाः ।
 विश्वाभिर्गीभिर्भि पृतिमइयां मदम शतहिमाः सुवीराः १०१७

॥ १२८ ॥ (ऋ० ६ । १४ । १-६) अनुष्टुप्, ९६२ शकरी ।

अग्रा यो मर्त्यो दुवो धियं जुजोष धीतिभिः । भसन्नु ष प्र पूर्य इषं वुरीतावसे १०१८
 अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः । अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः १०१९
 नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः । तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् १०२०
 अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम् । यस्य व्रसन्ति शवसः संचक्षि शत्रवो भिया १०२१
 अग्निहिं विघ्नानां निदो देवो मर्तमुक्ष्यति । सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः १०२२
 अच्छा नो मित्रमहो० (९६२)

॥ १२९ ॥ (ऋ० ६ । १५ । १-१९)

जगती, १०२५, १०३७ शकरी, १०२८ अतिशकरी, १०३९ अनुष्टुप्, १०४० बृहती;
 १०३२-३६, १०३८, १०४१ त्रिष्टुप् ।

इमम् पु वो अतिथिमुष्वेधं विश्वासां विशां पतिमृज्जसे गिरा ।
 वेतीद् दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर् ज्योक् चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् १०२३
 मित्रं न यं सुधितं भृगवो दुधुर् वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् ।
 स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे १०२४
 स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूर्यः परस्य अन्तरस्य तरुषः ।
 रायः सूनो सहसो मर्त्येष्व्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः १०२५
 द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरम् अग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।
 विप्रं न द्युक्षर्वचसं सुवृक्तिभिर् हव्यवाहमरतिं देवमृज्जसे १०२६
 पावकया यश् चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुच उषसो न भानुना ।
 तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नूरण आ यो घृणे न तृषाणो अजरः १०२७
 अग्निमग्निं वः समिधां दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणि ।
 उप वो गीभिर्मृतै विवासत देवो देवेषु वनते हि वार्यं देवो देवेषु वनते हि नो दुवः १०२८

- समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विभ्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुमैरीमहे जातवेदसम् १०२९
- त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासंश् च मर्तासंश् च जागृवि विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे १०३०
- विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यत् तै धीतिं सुमतिमावृणीमहे ऽध स्मा नस् त्रिवरूथः शिवो भव १०३१
- तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चम् अविद्वांसो विदुष्टं सपेम ।
स यक्षद् विश्वा वयुनानि विद्वान् प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत् १०३२
- तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस् त आनट् कवये शूर धीतिम् ।
यज्ञस्य वा निशितिं वोदिति वा तमित् पृणक्षि शर्वसोत राया १०३३
- त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् ।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री १०३४
- अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः ।
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा १०३५
- अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्टं हि यज्वा ।
ऋता यजासि महिना वि यद् भूर् हव्या बंह यविष्ठ या तै अद्य १०३६
- अभि प्रयांसि सुधितानि हि रयो, नि त्वा दधीत रोदसी यजध्वै ।
अवा नो मघवन् वाजसातौ, अग्ने विश्वानि दुरिता तरेम, तातरेम तवावसा तरेम १०३७
- अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैर् ऊर्णावन्तं प्रथमः सीदु योनिम् ।
कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु १०३८
- इममु त्यमर्थववद् अग्निं मन्थन्ति वेधसः ।
यमङ्कयन्तमानयन् अमूरं श्याव्याभ्यः १०३९
- जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये ।
आ देवान् वक्ष्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः १०४०
- वयमु त्वा गृहपते जनानाम् अग्ने अकर्म समिधा बृहन्तम् ।
अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस् तेजसा सं शिशाधि १०४१

॥ १३० ॥ (क्र० ६ । १६ । १-१८)

गायत्री; १०४२, १०४७ वर्धमाना; १०६८।१०८८-१०८९ अनुष्टुप्; १०८७ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।	देवेभिर्मानुषे जनैः १०४२
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः ।	आ देवान् वक्षि यक्षि च १०४३
वेत्था हि वैधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा ।	अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो १०४४
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम् ।	ईजे यज्ञेषु यज्ञियम् १०४५
त्वमिमा वार्या पुरु दिवोदासाय सुन्वते ।	भरद्वाजाय दाशुषे १०४६
त्वं दूतो अमर्त्य आ ब्रह्मा दैव्यं जनम् ।	शृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम् १०४७
त्वमग्ने स्वाध्वोऽसौ मर्तासो देववीतये ।	यज्ञेषु देवमीळते १०४८
तव प्र यक्षि संदशम् उत क्रतुं सुदानवः ।	विश्वे जुषन्त कामिनः १०४९
त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः ।	अग्ने यक्षि दिवो विशः १०५०
अग्र आ याहि वीतर्ये गृणानो हव्यदातये ।	नि होता सत्सि बर्हिषि १०५१
तं त्वा समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।	बृहच्छोचा यविष्ठय १०५२
स नः पृथु श्रवाय्यम् अच्छा देव विवाससि ।	बृहदग्ने सुवीर्यम् १०५३
त्वमग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत ।	मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः १०५४
तमु त्वा दध्यङ्घ्रिषिः पुत्र ईधे अथर्वणः ।	वृत्रहणं पुरंदरम् १०५५
तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम् ।	धनंजयं रणे रणे १०५६
एह्यु षु ब्रवाणि ते ऽग्र इत्थेतरा गिरः ।	एभिर्वर्धास इन्दुभिः १०५७
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् ।	तत्रा सदः कृणवसे १०५८
नहि ते पूर्वमेक्षिपद् भुवन्नेमानां वसो ।	अथा दुवो वनवसे १०५९
आग्निरंगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः ।	दिवोदासस्य सत्पतिः १०६०
स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन् महित्वना ।	वन्वन्नवातो अस्तृतः १०६१
स प्रब्रवन्नवीयसा अग्ने घुम्नेन संयता ।	बृहत् ततन्थ भानुना १०६२
प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।	अर्चं गायं च वेधसे १०६३
स हि यो मानुषा युगा सीदद्भोता कविक्रतुः ।	दूतश्च हव्यवाहनः १०६४
ता राजाना शुचित्रता आदित्यान् मारुतं गणम् ।	वसो यक्षीह रोदसी १०६५
वस्वी ते अग्ने संदष्टिर् इष्यते मर्त्याय ।	ऊर्जो नपादमृतस्य १०६६
क्त्वा दा अस्तु श्रेष्ठो ऽद्य त्वा वन्वन्तसुरेक्षणाः ।	मर्त आनाश सुवृक्षितम् १०६७

ते ते अग्ने त्वोता इष्यन्तो विश्वमायुः ।

तरन्तो अर्यो अरातीर् वन्वन्तो अर्यो अरातीः

१०६८

अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यासद् विश्वं न्यत्रिणम् ।

अग्निर्नो वनते रयिम्

१०६९

सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे

जहि रक्षांसि सुक्रतो

१०७०

त्वं नः पाहंहसो जातवेदो अघायतः

रक्षा णो ब्रह्मणस् कवे

१०७१

यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति

तस्मान्नः पाहंहसः

१०७२

त्वं तं देव जिह्या परि बाधस्व दुष्कृतम्

मर्तो यो नो जिघांसति

१०७३

भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य

अग्ने वरेण्यं वसु

१०७४

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया

समिद्धः शुक्र आहुतः

१०७५

गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे

सीदन्नुतस्य योनिमा

१०७६

ब्रह्म प्रजावृदा भर जातवेदो विचर्षणे

अग्ने यद् दीदयद् दिवि

१०७७

उप त्वा रण्वसंहसं प्रयस्वन्तः सहस्कृत

अग्ने ससृज्महे गिरः

१०७८

उप च्छायामिव घृणेर् अगन्म शर्म ते वयम्

अग्ने हिरण्यसंहसः

१०७९

य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसंगः

अग्ने पुरो रुरोजिथ

१०८०

आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति

विशामग्निं स्वध्वरं

१०८१

प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम्

आ स्वे योनौ नि षीदतु

१०८२

आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतार्तिथिम्

स्योन आ गृहपतिम्

१०८३

अग्ने युक्ष्वा हि ये तव अश्वासो देव साधवः

अरं वहन्ति मन्यवे

१०८४

अच्छा नो याह्या वह अभि प्रयांसि वीतये

आ देवान् त्सोमपीतये

१०८५

उदग्ने भारत द्युमद् अर्जसेण दविद्युतत्

शोचा वि भाह्यजर

१०८६

वीती यो देवं मर्तो दुवस्येद् अग्निमीलीताध्वरे हविष्मान् ।

होतारं सत्ययज्ञं रोदस्योर् उत्तानहस्तो नमसा विवासेत्

१०८७

आ ते अग्न क्रुचा हविर् हृदा तष्टं भरामसि । ते ते भवन्तूक्ष्णं

ऋषभासो वशा उत १०८८

अग्निं देवासो अग्रियम् इन्धते वृत्रहन्तमम् । येना वसून्यामृता

तृह्णा रक्षांसि वाजिना १०८९

॥ १३१ ॥ (क्र० ६। ४८। १-१०)

(१०९०-१०९९) शंयुबार्हस्पत्यः (तृणपाणिः) । प्रगाथः = १०९०, १०९२ बृहती; १०९१, १०९३ सतोबृहती, १०९४ बृहती, १०९५ महा सतोबृहती, १०९६ महा बृहती, १०९७ महा सतो-
बृहती, १०९८ बृहती, १०९९ सतोबृहती ।

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १०९०
ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर् दाशेम हव्यदातये ।
भुवद् वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् १०९१

वृषा ह्यग्ने अजरो महान् विभास्यर्चिषा ।
अर्जस्त्रेण शोचिषा शोशुचच् छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि १०९२
महो देवान् यजसि यक्ष्यानुषक् तव क्रत्वोत दुंसना ।
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वैस्व १०९३

यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि १०९४
आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।
तिरस् तमो ददश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरूपो वृषा श्यावा अरूपो वृषा १०९५

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि १०९६
विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।
शतं पुर्भिर्यविष्ठ पाह्वंसः समेद्वारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति १०९७

त्वं नश् चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस् त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः १०९८
पर्षिं तोकं तनयं पृथ्विष्वम् अदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नो ऽदेवानि ह्वरांसि च १०९९

॥ १३२ ॥ (ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-२५)

[११००-१२१३] वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । विराट्, १११८-२४ त्रिष्टुप् ।

अग्निं नरो दीधितिभिरण्योर्	हस्तंच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।	
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्		११००
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्	त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश् चित् ।	
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः		११०१
प्रेद्धां अग्ने दीदिहि पुरो नो	ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।	
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः		११०२
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः	सुवीरांसः शोशुचन्त द्युमन्तः ।	
यत्रा नरः समासते सुजाताः		११०३
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं	स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।	
न यं यावा तरति यातुमावान्		११०४
उप यमेति युवतिः सुदक्षं	द्रोपा वस्तोर्हविष्मती घृताचीं ।	
उप स्वैनमुरमतिर्वसूयुः		११०५
विश्वा अग्रेऽपं दहारातीर्	येभिस् तपोभिरदहो जरूथम् ।	
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम्		११०६
आ यस् ते अग्न इधते अनीकं	वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पार्वक ।	
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः		११०७
वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं	मर्ता नरः पित्र्यांसः पुरुत्रा ।	
उतो न एभिः सुमना इह स्याः		११०८
इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा	विश्वा अर्देवीरग्नि संन्तु मायाः ।	
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम्		११०९
मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां	माशेषसोऽवीरंता परि त्वा ।	
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य		१११०
यमश्ची नित्यमुपयाति यज्ञं	प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।	
स्वर्जन्मना शेषसा वावृधानम्		११११

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात् त्वा युजा पृतनायूरभि ष्याम्	पाहि धूर्तेरररूपो अघायोः ।	१११२
सेदग्निरग्नीरत्यस्त्वन्यान् सहस्रपाथा अक्षरा समेति	यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।	१११३
सेदग्नियो वनुष्यतो निपाति सुजातासः परि चरन्ति वीराः	समेद्वारमंहस उरुष्यात् ।	१११४
अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा परि यमेत्यध्वरेषु होता	यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान् ।	१११५
त्वे अग्न आहवनानि भूरि उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे	ईशानास आ जुहुयाम नित्या ।	१११६
इमो अग्ने वीततमानि हव्या प्रति न ई सुरभीणि व्यन्तु	ऽजस्रो वाक्षि देवतातिमच्छ ।	१११७
मा नो अग्नेऽवीरिते परा दा मा नः क्षुधे मा रक्षसं क्रतावो	दुर्वाससेऽमृतये मा नो अस्यै । मा नो दमे मा वन आ जुह्वर्थाः	१११८
नू मे ब्रह्माण्यग्र उच्छशाधि रातौ स्यामोभयास आ ते	त्वं देव मघवञ्चः सुपूदः । यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१११९
त्वमग्ने सुहवो रणवसैदक् मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्	सुदीती स्रनो सहसो दिदीहि । मा वीरो अस्मन्नयो वि दासीत्	११२०
मा नो अग्ने दुर्भृतये सचा मा ते अस्मान् दुर्मतयो भूमाचिद्	एषु देवेद्वैष्वग्निषु प्र वोचः । देवस्य स्रनो सहसो नशन्त	११२१
स मतो अग्ने स्वनीक रेवान् स देवता वसुवर्नि दधाति	अमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् । यं सुरिरर्थी पृच्छमान एति	११२२
महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान् येन वयं सहसावन् मदेम	रयि सुरिभ्य आ वहा बृहन्तम् । अर्विक्षितास आयुषा सुवीराः	११२३
नू मे ब्रह्माण्यग्र० (१११९)		

॥ १३३ ॥ (ऋ० ७ । ३ । १-१०) त्रिष्टुप् ।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् । यो मर्त्येषु निधुर्विर्कृतावा तपुर्मूर्धा घृताक्षः पावकः	११२४
प्रोथदश्चो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात् । आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति	११२५
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽग्रे चरन्त्यजरा इधानाः । अच्छा घामरूपो धूम एति सं दूतो अग्न ईर्यसे हि देवान्	११२६
वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत् तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः । सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्स जुह्वा विवेक्षि	११२७
तमिद् दोषा तमुषसि यविष्ठम् अग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः । निशिशांना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः	११२८
सुसंहक् ते स्वनीक प्रतीकं वि यद् रुक्मो न रोचस उपाके । दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश् चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम्	११२९
यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्धृतवद्भिश् च हव्यैः । तेभिर्नो अग्रे अर्मितैर्महोभिः शतं पुर्भिरायसीभिर्नि पाहि	११३०
या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः । ताभिर्नः सूनो सहस्रो नि पाहि सत् सूरिञ् जरितृञ् जातवेदः	११३१
निर्यत् पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात् स्वया कृपा तन्वाङ् रोचमानः । आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः	११३२
एता नो अग्रे सौभगा दिदीहि अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम । विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	११३३

॥ १३४ ॥ (ऋ० ७ । ४ । १-१०)

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम् । यो दैव्यानि मानुषा जनुषि अन्तर्विश्वानि विन्नना जिगाति	११३४
स गृत्सो अग्निस् तरुणश् चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः । सं यो वना युवते शुचिदन् भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः	११३५

अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तीसः श्येतं जगृध्रे ।	
नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोचं दुरोकमग्निरायवे शुशोच	११३६
अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वभिरमृतो नि धायि ।	
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम	११३७
आ यो योनिं देवकृतं ससाद कत्वा ह्यभिरमृताँ अतारीत् ।	
तमोषधीश् च वनिनश् च गर्भं भूमिश् च विश्वधायसं बिभर्ति	११३८
ईशे ह्यभिरमृतस्य भूरे ईशे रायः सुवीर्यस्य दातोः ।	
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः	११३९
परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।	
न शेषो अग्रे अन्यजातमस्ति अचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः	११४०
नहि ग्रभायारणः सुशेवो ऽन्योदयो मनसा मन्तवा उ ।	
अधा चिदोक्तः पुनरित् स एति आ नो वाज्यभीषाकेतु नव्यः	११४१
त्वमग्ने वनुष्यतो० (१०३४)	
एता नो अग्ने० (११३४)	

॥ १३५ ॥ (ऋ० ७।७।१-७)

प्र वो देवं चित् सहसानमग्निम् अश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः ।	
भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान् त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः	११४२
आ याह्यग्रे पथ्याइ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः ।	
आ सानु शुष्मैर्नदयन् पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग् वनानि	११४३
प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरिच्छितो न होता ।	
आ मातरा विश्ववारि हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः	११४४
सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् ।	
विशामधायि विश्वर्तिदुरोणेइ ऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा	११४५
असादि वृतो वह्निराजगन्वान् अग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता ।	
द्यौश् च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम्	११४६

एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।
 प्र ये विशस् तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीर्घयन्तस्य ११४७
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
 इषं स्तोतृभ्यो मघवञ्च आनङ् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११४८

॥ १३६ ॥ (ऋ० ७।८।१-७)

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर् यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
 नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ११५९
 अयमु प्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यद्वा अग्निः ।
 वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ११५०
 कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्ति काशु स्वधामृणवः शस्यमानः ।
 कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ११५१
 प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत् सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
 अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ११५२
 असन्नित त्वे आहव्नानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।
 स्तुतश् चिदग्रे शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ११५३
 इदं वचः शतसाः संसहस्रम् उदग्रये जनिषीष्ट द्विवर्हीः ।
 शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ११५४
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा० (११५०)

॥ १३७ ॥ (ऋ० ७।९।१-६)

अवोधि जार उषसामुपस्थाद् होता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
 दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर् हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ११५५
 स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अकं पुरुभोजसं नः ।
 होता मन्द्रो विशां दमूनास् तिरस् तमो ददृशे राम्याणाम् ११५६
 अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
 चित्रभानुरुषसां भात्यग्रे ऽपां गर्भः प्रस्व आ विवेश ११५७

ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनुगा अशुचज् जातवेदाः ।
 सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ११५८
 अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृतां गणेन ।
 सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान् रत्नधेयाय विश्वान् ११५९
 त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन् यक्षि राये पुरंधिम् ।
 पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११६०

॥ १३८ ॥ (ऋ० ७। १०। १-५) ।

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद् दर्विद्युतत् दीद्यच्छोशुचानः ।
 वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ११६१
 स्वर्णं वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।
 अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान् द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ११६२
 अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीर् अग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः ।
 सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वञ्च हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ११६३
 इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् ।
 आदित्येभिरदितिं विश्वजन्त्यां बृहस्पतिमृकभिर्विश्ववारम् ११६४
 मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठम् अग्निं विश ईळते अध्वरेषु ।
 स हि क्षपावाँ अभवद् रयीणाम् अतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ११६५

॥ १३९ ॥ (ऋ० ७। ११। १-५)

महाँ अस्यध्वरस्य प्रक्रेतो न क्रुते त्वदुमृता मादयन्ते ।
 आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर् न्यग्ने होता प्रथमः संदेह ११६६
 त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन् मानुषासः ।
 यस्य देवैरासदो बर्हिर्ग्रे ऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ११६७
 त्रिश् चिदुक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्यीय ।
 मनुष्वदश्च इह यक्षि देवान् भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा ११६८
 अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य अग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य
 क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्त अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ११६९

आग्नें वह हविरघाय देवान् इन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७०

॥ १४० ॥ (ऋ० ७ । १२ । १-३)

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ११७१

स मङ्गा विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्निः ष्ट्वे दम आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्याद् अस्मान् गृणत उत नो मधोनः ११७२

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७३

॥ १४१ ॥ (ऋ० ७ । १४ । १-३) त्रिष्टुप्, ११७४ बृहती ।

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ।
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्रये ११७४

वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र ।
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर् वयं देव हविषा भद्रशोचे ११७५

आ नो देवेभिरुप देवहूतिम् अग्ने याहि वर्षट्कृतिं जुषाणः ।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७६

॥ १४२ ॥ (ऋ० ७ । १५ । १-१५) गायत्री ।

उपसद्याय मीहुष आस्ये जुहुता हविः । यो नो नेदिष्ठमाप्यम् ११७७

यः पञ्च चर्षणीरभि निषसादु दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा ११७८

स नो वेदो अमात्यम् अग्नी रक्षतु विश्वतः । उतास्मान् पात्वंहसः ११७९

नवं नु स्तोममग्रये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद् वनार्ति नः ११८०

स्पार्हा यस्य श्रियो हशे रयिर्वीरवतो यथा । अग्ने यज्ञस्य शोचतः ११८१

सेमां वेतु वर्षट्कृतिम् अग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः ११८२

नि त्वा नक्ष्य विष्पते द्युमन्तं देव धीमहि । सुवीरमग्र आहुत ११८३

क्षप उन्नश् च दीदिहि स्वग्रयस् त्वया वयम् । सुवीरस् त्वमस्मयुः ११८४

उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः । उपाक्षरा सहस्रिणी ११८५

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः । शुचिः पावक ईड्यः ११८६
 स नो राधास्या भर ईशानः सहसो यहो । भर्गश् च दातु वार्यम् ११८७
 त्वमग्ने वीरवद् यशो देवश् च सविता भर्गः । दितिश् च दाति वार्यम् ११८८
 अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः । तर्पिष्ठैरजरो दह ११८९
 अथा मही न आयासि अनाधृष्टो नृपीतये । पूर्ववा शतश्रुजिः ११९०
 त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः । दिवा नक्तमदाभ्य ११९१

॥ १४३ ॥ (ऋ० ७ । १६ । १-१२) प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती ।)

एना वो अग्नि नमसा ऊर्जो नपातमा हुवे ।
 प्रियं चेतिष्ठमर्ति स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ११९२
 स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।
 सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ११९३
 उदस्य शोचिरस्थाद् आजुह्वानस्य मीहुषः ।
 उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः ११९४
 तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।
 विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद् यत् त्वमहे ११९५
 त्वमग्ने गृहपतिस् त्वं होता नो अध्वरे ।
 त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ११९६
 कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
 आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश् च दक्षते ११९७
 त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
 यन्तारो ये मघवानो जनानाम् ऊर्वान् दयन्त गोनाम् ११९८
 येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राप्ता निषीदति ।
 ताँस् त्रायस्व सहस्य दुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ११९९
 स मन्द्रया च जिह्या वह्निरासा विदुष्टरः ।
 अग्ने रयि मघवन्मो न आ वह हव्यदाति च सूदय १२००

ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः ।	
ताँ अंहसः पिपृहि पर्तुभिष्टं शतं पुर्भिर्येविष्म	१२०१
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्वासिचम् ।	
उद् वा सिश्वध्वसुप वा पृणध्वम् आदिद् वो देव औहते	१२०२
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।	
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर्जनाय दाशुषे	१२०३

॥ १४४ ॥ (ऋ० ७ । १७ । १-७) छिपदा त्रिष्टुप् ।

अग्ने भव सुषामिधा समिद्ध उत बर्हिर्हविषा वि स्तृणीताम्	१२०४
उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्ताम् उत देवाँ उशत आ वहेह	१२०५
अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् त्वध्वरा कृणुहि जातवेदः	१२०६
स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद् देवाँ अमृतान् पिप्रयच्च	१२०७
वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य	१२०८
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम्	१२०९
ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः	१२१०

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७ । ५० । २) जगती ।

यद् विजामन् परुषि वन्दनं भुवद् अष्टीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् ।	
अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदुत् त्सरुः	१२११

॥ १४६ ॥ (ऋ० ७ । १०४ । १०, १४) त्रिष्टुप् ।

यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस् तनूनाम् ।	
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद् दुश्ममेतु नि ष हीयतां तन्वाइ तना च	१२१२
यदि बाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्युहे अग्ने ।	
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस् ते निर्ऋथं संचन्ताम्	१२१३

॥ १४७ ॥ (ऋग्वेदस्य अष्टमं मण्डलम् । सूक्तं ११, मन्त्राः १-१०)

(१२१४—१२२३) वत्सः काण्वः । गायत्री, १२१४ प्रतिष्ठा, १२१५ वर्धमाना, १२२३ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वाम । त्वं यज्ञेष्वीड्यः	१२१४
---	------

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् १२१५
 स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः । अदेवीरग्ने अरातीः १२१६
 अन्ति चित् सन्तमहं युञ्जं मर्त्यस्य रिपोः । नोप वेपि जातवेदः १२१७
 मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे । विप्रासो जातवेदसः १२१८
 विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मर्तास उतये । अग्निं गीभिर्हवामहे १२१९
 आ ते वत्सो मनो यमत् परमाचित् सधस्थात् । अग्ने त्वां-कामया गिरा १२२०
 पुरुत्रा हि सदङ्कुसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे १२२१
 समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे । वाजेषु चित्रराघसम् १२२२
 प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश् च सत्सि ।
 स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्व अस्मभ्यं च सौभगमा यजस्व १२२३

॥ १४८ ॥ (ऋ० ८ । १९ । १-३३)

(१२२४—१२६९) सोमरिः काण्वः । प्रगाथः = (ककुप+ सतोबृहती), १२५० छिपदा विराट् ।

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरति दधन्विरे । देवत्रा हव्यमोहिरे १२२४
 विभूतराति विप्र चित्रशोचिषम् अग्निमीळिष्व यन्तुरम् ।
 अस्य मेघस्य सोम्यस्य सोमरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् १२२५
 यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होता रममर्त्यम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् १२२६
 ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिम् अग्निं श्रेष्ठशोचिषम्
 स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपाम् आ सुम्नं यक्षते दिवि १२२७
 यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्रये । यो नमसा स्वध्वरः १२२८
 तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस् तस्य द्युन्नितमं यशः ।
 न तमहो देवकृतं कृतं च न मर्त्यकृतं नशत् १२२९
 स्वग्रयो वो अग्निभिः स्याम स्वनो सहस ऊर्जा पते । सुवीरस् त्वमस्मयुः १२३०
 प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियो ऽग्नी रथो न वेद्यः ।
 त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस् त्वं राजा रयीणाम् १२३१
 सो अद्धा दाश्वध्वरो ऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः । स धीभिर्स्तु सनिता १२३२

यस्य त्वमुध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते ।	
सो अर्वेद्भिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम्	१२३३
यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं चनो दधीत विश्ववार्यः । हव्या वा वेविषद् विषः	१२३४
विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो मक्षतमस्य रातिषु ।	
अवोदैवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः	१२३५
यो अग्निं हव्यदातिभिर् नमोभिर्वासुदक्षमाविवसति । गिरा वाजिरशोचिषम्	१२३६
समिधा यो निशित्नी दाशदादिति धामभिरस्य मर्त्यः ।	
विश्वेत् स धीभिः सुभगो जनाँ अतिं द्युमैरुद्र इव तारिषत्	१२३७
तदग्ने द्युममा भर यत् सासहत् सदाने कं चिदुत्रिणम् । मन्युं जनस्य दूढ्यः	१२३८
येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा येन नासत्या भगः ।	
वयं तत् ते शर्वसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि	१२३९
ते धेदग्ने स्वाध्योऽं ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् । विप्रसो देव सुक्रतुम्	१२४०
त इद् वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चकिरे दिवि ।	
त इद् वाजैर्भिर्जिग्युर्महद्भनं ये त्वे कामं न्येरिरे	१२४१
भद्रो नो अगिराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः	१२४२
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहः ।	
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्वतां वनेमा ते अभिष्टिभिः	१२४३
ईळे गिरा मनुहितं यं देवा दूतमरतिं न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम्	१२४४
तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रयो गायस्यग्रये ।	
यः पिंशते सूनृताभिः सुवीर्यम् अभिर्धृतेभिराहुतः	१२४५
यदी धृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चाव च । असुर इव निर्णिजम्	१२४६
यो हव्यान्यैरयता मनुहितो देव आसा सुगन्धिना ।	
विवासते वार्याणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यः	१२४७
यदग्ने मर्त्यस् त्वं स्यामहं मित्रमहो अमर्त्यः । सहसः सूनवाहुत	१२४८

न त्वा रासीयाभिर्शस्तये वसो न पापत्वार्य सन्त्य ।	
न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया	१२४९
पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः	१२५०
तवाहमग्न ऊतिभिर् नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो । सदा देवस्य मर्त्यः	१२५१
तव ऋत्वा सनेयं तव रातिभिर् अग्ने तव प्रशस्तिभिः ।	
त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो मम अग्ने हर्षस्व दातवे	१२५२
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस् तिरते वार्जभर्मभिः । यस्य त्वं सख्यमावरः	१२५३
तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।	
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि	१२५४
तमार्गन्म सोभरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे । सम्राजं त्रासदस्यवम्	१२५५
यस्य ते अग्ने अन्ये अग्रय उपक्षितो वया इव ।	
विपो न द्युम्ना नि युवे जनानां तव क्षत्राणि वर्धयन्	१२५६

॥ १४९ ॥ (ऋ० ८ । १०३ । १-१३)

बृहती; १२६१ विराड् रूपा, १२६३, १२६५, १२६७, १२६९, सतो बृहती;

१२६४, १२६८ ककुप्, १२६६ हसीयसी ।

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।	
उपो षु जातमार्थस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्त नो गिरः	१२५७
प्र दैवोदासो अग्निर् देवाँ अच्छा न मज्मना ।	
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि	१२५८
यस्माद् रेजन्त कृष्टयश् चर्कृत्यानि कृण्वतः ।	
सहस्रसां मेधसाताविव त्मना अग्निं धीभिः संपर्यत	१२५९
प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस् ते वसो दाशत् ।	
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्	१२६०
स दृष्टे चिदभि तृणत्ति वाजम् अर्वता स धत्ते अक्षिति श्रवः ।	
त्वे देवत्रा सदा पुरुवसो विश्वा वामानि धीमहि	१२६१

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।	
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्यग्रये	१२६२
अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मज्यन्ते देवयवः ।	
उभे तोके तनये दस्म विस्पते पर्षि राधो मघोनाम्	१२६३
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋतान्नै बृहते शुक्रशोचिषे ।	
उपस्तुतासो अग्रये	१२६४
आ वंसते मधवा वीरवद् यशः समिद्धो द्युह्याहुतः ।	
कृविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयसी अच्छा वाजैभिरागमत्	१२६५
प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्यासावार्तिथिम् ।	
अग्नि रथानां यमम्	१२६६
उदिता यो निर्दिता वेदिता वसु आ यज्ञियो वर्ततेति ।	
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयो धिया वाजं सिषासतः	१२६७
मा नो हणीतामर्तिथिर् वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।	
यः सुहोता स्वध्वरः	१२६८
मो ते रिष्ये अच्छोक्तिभिर्वसो ऽग्ने केभिश् चिदेवैः ।	
कीरिश् चिद्धि त्वामीदृ दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः	१२६९

॥ १५० ॥ (ऋ० ८ । २३ । १-३०)

(१२७०—१२९९) विश्वमना वैयध्वः । उष्णिक् ।

ईळिष्वा हि प्रतीव्यं यजस्व जातवेदसम् । चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्	१२७०
वामानं विश्वचर्षणे ऽग्नि विश्वमनो गिरा । उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम्	१२७१
येषामाबाध ऋग्मिय इषः पृक्षश् च निग्रमे । उपविदा वह्निर्विन्दते वसु	१२७२
उदस्य शोचिरस्थाद् दीदियुषो व्यजर्म । तर्पुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः	१२७३
उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो देव्या कृपा । अभिख्या भासा बृहता शुशुक्निः	१२७४
अग्ने याहि सुशस्तिभिर् हव्या जुह्वान आनुषक् । यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः	१२७५
अग्नि वः पूर्य हुवे होतारं चर्षणीनाम् । तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे	१२७६
यज्ञेभिरुतक्रतुं यं कृपा सूदर्यन्त इत् । मित्रं न जने सुधितमृतावनि	१२७७

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा । उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे	१२७८
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः । होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः	१२७९
अग्ने तव त्वे अजर इन्धानासो बृहद् भाः । अश्वा इव वृषणस् तविषीयवः	१२८०
स त्वं न ऊर्जा पते रयिं रास्व सुवीर्यम् । प्राव नस् तोके तनये समस्त्वा	१२८१
यद्वा उ विस्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि । विश्वेदुग्निः प्रति रक्षीसि सेधति	१२८२
श्रुष्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विस्पते । नि मायिनस् तपुषा रक्षसो दह	१२८३
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः । यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः	१२८४
व्यश्वस् त्वा वसुविदम् उक्षण्युरप्रीणादपिः । महो राये तमु त्वा समिधीमहि	१२८५
उशना काव्यस् त्वा नि होतारमसादयत् । आयजि त्वा मनवे जातवेदसम्	१२८६
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमकृत । श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः	१२८७
इमं वा वीरो अमृतं दूतं कृष्वीत मर्त्यः । पावकं कृष्णवर्तनि विहायसम्	१२८८
तं हुवेम यतस्रुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् । विशामग्निमजरं प्रलमीढ्यम्	१२८९
यो अस्मै हव्यदातिभिर् आहुतिं मतोऽविधत् । भूरि पोषं स धत्ते वीरवद् यशः	१२९०
प्रथमं जातवेदसम् अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् । प्रति सुगेति नमसा हविष्मती	१२९१
आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्व्यश्ववत् । मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे	१२९२
नूनमर्च विहायसे स्तोमैभिः स्थूरयूपवत् । ऋषे वैयश्च दम्यायाग्नये	१२९३
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम् । विप्रा अग्निमवसे प्रलमीढ्यते	१२९४
महो विश्वा अभि पतोऽग्निं हव्यानि मानुषा । अग्ने नि पत्सि नमसाधि बर्हिषि	१२९५
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः । सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः	१२९६
त्वं वीरो सुषाम्णे अग्ने जनाय चोदय । सदा वसो राति यविष्ठ शश्वते	१२९७
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः । महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि	१२९८
अग्ने त्वं यशा असि आ मित्रावरुणा वह । ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा	१२९९

॥ १५१ ॥ (ऋ० ८। ३९। १-१०) [१३००-१३०९] नाभाकः काण्वः । महापङ्क्तिः ।

अग्निमस्तोष्यृग्मियम् अग्निमीळा यज्यै ।
 अग्निदेवां अनक्तु न उभे हि विदथे कविर् अन्तश्चरति दूत्यं । नभन्तामन्यके संमे १३००
 न्यग्ने नव्यसा वचस् तनूषु शंसमेषाम् ।
 न्यराती रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीर् इतो युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके संमे १३०१

अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।	
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्यः शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके समे	१३०२
तत्तदुग्विर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।	
ऊर्जाहुतिर्वस्त्रनां शं च योश् च मयो दधे विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे	१३०३
स चिकेत सहीयसा अग्निश् चित्रेण कर्मणा ।	
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिरभीवृत इनोति च प्रतीव्यं नभन्तामन्यके समे	१३०४
अग्निर्जाता देवानामग्निर् वेदु मर्तीनामपीच्यम् ।	
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे	१३०५
अग्निर्देवेषु संवसुः स विश्व यज्ञियास्वा ।	
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुण्यति देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे	१३०६
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।	
तमार्गन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्दस्युहन्तमम् अग्नि यज्ञेषु पूर्य नभन्तामन्यके समे	१३०७
अग्निस् त्रीणि त्रिधातूनि आ क्षेति विदथा कविः ।	
स त्रीरैकादुशो इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे	१३०८
त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्य वस्व एक इरज्यसि ।	
त्वामापः परिस्नुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके समे	१३०९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ८।४३।१-३३) [१३१०-१३८८] विरूप आङ्गिरसः । गायत्री ।

इमे विप्रस्य वेधसो ऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते	१३१०
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनानि सुष्टुतिम्	१३११
आरोका इव घेदहं तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दुद्धिर्वनानि बप्सति	१३१२
ईरयो धूमकेतवो वातजूता उप दधि । यतन्ते वृथगग्रयः	१३१३
एते त्ये वृथगग्रय इद्भासः समदक्षते । उपसामिव केतवः	१३१४
कृष्णा रजसि पत्सुतः प्रयाणो जातवेदसः । अग्निर्यद् रोधति क्षमि	१३१५
शसि कृष्णान ओषधीर् बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन् तरुणीरपि	१३१६
जिह्वाभिरह नभमद् अर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते	१३१७
प्रप्स्वमे साधिष्टव सौषधीरनु रुच्यसे । गर्भे सन् जायसे पुनः	१३१८

उदग्ने तव तद् घृताद् अर्ची रोचत आहुतम् ।	निसानं जुहोतु मुखे	१३१९
उक्षात्राय वशात्राय सोमपृष्ठाय वेधसे ।	स्तोमैर्वेधमाग्रये	१३२०
उत त्वा नमसा वयं होतर्वरेण्यक्रतो ।	अग्ने समिद्धिरीमहे	१३२१
उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदम् आहुत ।	अङ्गिरस्वद्वामहे	१३२२
त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्तसता ।	सखा सख्या समिध्यसे	१३२३
स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् ।	अग्ने वीरवतीमिषम्	१३२४
अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्च शुचित्रत ।	इमं स्तोमै जुषस्व मे	१३२५
उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते ।	गोष्ठं गाव इवाशत	१३२६
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।	अग्ने कामाय येमिरे	१३२७
अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः ।	अन्नसद्याय हिन्विरे	१३२८
तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् ।	वाह्निं होतारमीळते	१३२९
पुरुत्रा हि सदङ्कुसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।	समत्सु त्वा हवामहे	१३३०
तमीळिष्व य आहुतो ऽग्निर्विभ्राजते घृतैः ।	इमं नः शृण्वद्ववम्	१३३१
तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् ।	अग्ने घन्तमप द्विषः	१३३२
विशां राजानमद्भुतम् अध्यक्षं धर्मणामिमम् ।	अग्निमीळे स उ श्रवत्	१३३३
अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम् ।	सग्निं न वाजयामसि	१३३४
घ्नन् मृधाण्यप द्विषो दहन् रक्षांसि विश्वाहा ।	अग्ने तिग्मेन दीदिहि	१३३५
यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम ।	अग्ने स बोधि मे वचः	१३३६
यदग्ने दिविजा असि अप्सुजा वा सहस्कृत ।	तं त्वा गीर्भिर्हवामहे	१३३७
तुभ्यं घेत् ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।	धासिं हिन्वन्त्यत्तवे	१३३८
ते घेदग्ने स्वाध्यो ऽहा विश्वा नृचक्षसः ।	तरन्तः स्याम दुर्गहा	१३३९
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम् ।	हृद्धिर्मन्द्रेभिरीमहे	१३४०
स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्तस्यो न रश्मिभिः ।	शर्धन् तमांसि जिघ्रसे	१३४१
तत् ते सहस्व ईमहे दात्रं यन्नोपदस्यति ।	त्वदग्ने वार्यं वसु	१३४२

॥ १५३ ॥ (ऋ० ८ । ४४ । १-३०)

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् ।	आस्मिन् हव्या जुहोतन	१३४३
अग्ने स्तोमै जुषस्व मे वर्षस्वानेन मन्मना ।	प्रति सूक्तानि हर्य नः	१३४४

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे	। देवाँ आ सादयादिह	१३४५
उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः	। अग्ने शुक्रास ईरते	१३४६
उप त्वा जुहो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत	। अग्ने हव्या जुषस्व नः	१३४७
मन्द्रं होतारमुत्विजं चित्रभानुं विभावंसुम्	। अग्निमीळे स उ श्रवत	१३४८
प्रत्नं होतारमीड्यं जुष्टमग्निं कविक्रतुम्	। अध्वराणामभिश्रियम्	१३४९
जुषाणो अङ्गिरस्तम इमा हव्यान्यानुषक्	। अग्ने यज्ञं नय क्रतुथा	१३५०
समिधान उ सन्त्य शुक्रशोच इहा वह	। चिकित्वान् दैव्यं जनम्	१३५१
विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावंसुम्	। यज्ञानां केतुमीमहे	१३५२
अग्ने नि पाहि नस् त्वं प्रति षम देव रीषतः	। भिन्धि द्वेषः सहस्कृत	१३५३
अग्निः प्रलेन मन्मना शुम्भानस् तन्वं१ स्वाम्	। कविर्विप्रेण वावृधे	१३५४
उर्जो नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम्	। अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे	१३५५
स नो मित्रमहस् त्वम् अग्ने शुक्रेण शोचिषा	। देवैरा संत्सि बर्हिषि	१३५६
यो अग्निं तन्वो३ दमे देवं मर्तैः सपर्यति	। तस्मा इद् दीदयद् वसु	१३५७
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम्	। अपां रेतोसि जिन्वति	१३५८
उदग्ने शुचयस् तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते	। तव ज्योतीष्यर्चयः	१३५९
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः	। स्तोता स्यां तव शर्माणि	१३६०
त्वामग्ने मनीषिणस् त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः	। त्वां वर्धन्तु नो गिरः	१३६१
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा	। अग्नेः सख्यं वृणीमहे	१३६२
अग्निः शुचिर्व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः	। शुची रोचत आहुतः	१३६३
उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा	। अग्ने सख्यस्य बोधि नः	१३६४
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्	। स्युष्टे मत्था इहाशिषः	१३६५
वसुर्वसुपतिर्हि कम् अस्यग्ने विभावंसुः	। स्याम ते सुमतावपि	१३६६
अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायैव सिन्धवः	। गिरो वाश्रास ईरते	१३६७
युवानं विश्वपतिं कविं विश्वादे पुरुवेपसम्	। अग्निं शुम्भामि मन्मभिः	१३६८
यज्ञानां रथ्ये वयं तिग्मजम्भाय वीळ्वे	। स्तोमैरिपेमाग्र्ये	१३६९
अयमग्ने त्वे अपि जरिता भूतु सन्त्य	। तस्मै पावक मृळय	१३७०
धीरो ह्यस्यग्रसद् विप्रो न जागृविः सदा	। अग्ने दीदयसि धवि	१३७१

पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मृध्रेभ्यः कवे । प्र ण आयुर्वसो तिर १३७२

॥१५४॥ (क्र० ८ । ७५ । १-१६)

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ	अश्वाँ अग्ने रथीरिव	। नि होता पुन्यः सन्दः	१३७३
उत नो देव देवाँ	अच्छा वोचो विदुष्टरः	। श्रद् विश्वा वार्या कृधि	१३७४
त्वं ह यद् यविष्ठय	सहसः सूनवाहुत	। ऋतावा यज्ञियो भुवः	१३७५
अयमग्निः सहास्त्रिणो	वाजस्य शतिनस्पतिः	। मूर्धा कवी रयीणाम्	१३७६
तं नेमिमृभवो यथा	नमस्व सहूतिभिः	। नेदीयो यज्ञमङ्गिरः	१३७७
तस्मै नूनमभिद्यवे	वाचा विरूप नित्यया	। वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम्	१३७८
कमुं ष्विदस्य सेनया	अग्नेरपाकचक्षसः	। पणि गोषु स्तरामहे	१३७९
मा नो देवानां विशः	प्रस्तातीरिवोस्त्राः	। कृशं न हीसुरध्याः	१३८०
मा नः समस्य दृढ्यः	परिद्वेषसो अंहतिः	। ऊर्मिर्न नावमा वधीत्	१३८१
नमस् ते अग्न ओजसे	गृणन्ति देव कृष्टयः	। अमैरमित्रमर्दय	१३८२
कुवित् सु नो गर्विष्टये	ऽग्ने संवेर्षिषो रयिम्	। उरुकुदुरु णस् कृधि	१३८३
मा नो अस्मिन् महाधने	परा वर्भारभृद् यथा	। संवर्गं सं रयिं जय	१३८४
अन्यमस्मद्भिया इयम्	अग्ने सिषक्तु दुच्छुना	। वर्धा नो अमवच्छवः	१३८५
यस्याजुषन्नमस्विनः	शमीमर्दुर्मखस्य वा	। तं घेदुभिर्वृधावति	१३८६
परस्या अधि संवतो	ऽवराँ अभ्या तर	। यत्राहमस्मि ताँ अव	१३८७
विद्वा हि ते पुरा वयम्	अग्ने पितुर्यथावसः	। अधा ते सुममीमहे	१३८८

॥१५५॥ (क्र० ८।६०।१-२०) [१३८९-१४०८] भर्गः प्रागाथः ।

प्रागाथः= (बृहती+सतोबृहती) ।

अग्न आ याह्यग्निभिर्	होतारं त्वा वृणीमहे ।	
आ त्वामनक्तु प्रयता	हविष्मती यजिष्ठं बहिरासदे	१३८९
अच्छा हि त्वा सहसः	सूनो अङ्गिरः सुचश् चरन्त्यध्वरे ।	
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहे	ऽग्निं यज्ञेषु पुन्यम्	१३९०
अग्ने कविर्वेधा असि	होता पावक यक्षयः ।	
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो	विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः	१३९१

अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य देवाँ अजस्र वीतये ।	
अभि प्रयाँसि सुधिता वंसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः	१३९२
त्वमित् सप्रथा असि अग्ने त्रातर्कतस् कविः ।	
त्वां विप्रांसः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः	१३९३
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे म्हाँ असि ।	
देवानां शर्मन् मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्रयः	१३९४
यथा चिद् वृद्धमंतसम् अग्ने संजूर्वसि क्षमि ।	
एवा दह मित्रमहो यो अस्मधुग् दुर्मन्मा कश् च वेनति	१३९५
मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः ।	
अस्त्रेधद्भिस् तरणिभिर्यविष्ठ्यं शिवेभिः पाहि पायुभिः	१३९६
पाहि नो अग्र एकया पाह्युत द्वितीयया ।	
पाहि गीभिस् तिसृभिरूर्जा पते पाहि चतसृभिर्वसो	१३९७
पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्यः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।	
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपि नक्षामहे वृधे	१३९८
आ नो अग्ने वयोवृधे रयि पावक शंस्ये ।	
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयंशस्तरम्	१३९९
येन वंसाम् पृतनासु शर्धतस् तरन्तो अर्य आदिशः ।	
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः	१४००
शिशानो वृषभो यथा अग्निः शृङ्गे दर्विध्वत् ।	
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः	१४०१
नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद् वितिष्ठसे ।	
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु	१४०२
शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इन्धते ।	
अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद् देवेषु राजसि	१४०३
सप्त होतारस् तमिदीळते त्वा अग्ने सुत्यजमहंयम् ।	
भिनत्स्वद्वि तर्पसा वि शोचिषा प्राप्ते तिष्ठ जनाँ अति	१४०४

अग्निमग्निं वो अग्निं गुं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।	
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम्	१४०५
केतेन शर्मन्त्सचते सुषामणि अग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।	
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमतये	१४०६
अग्ने जरितर्विष्पतिस् तेपानो देव रक्षसः ।	
अप्रोषिवान् गृहपतिर्महो असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः	१४०७
मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।	
परोगव्यूत्यनिरामप क्षुधम् अग्ने सेध रक्षस्विनः	१४०८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८।७१।१-१५)

[१४०८—१४२३] सुदीति-पुरुमीहृळावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । गायत्री, १४१८-१४२३
प्रगाथः=(बृहती, सतोबृहती) ।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । उत द्विषो मर्त्यस्य	१४०९
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिदं क्षपावान्	१४१०
स नो विश्वेभिर्देवेभिर् ऊर्जो नपाद् भद्रं शोचे । रयिं देहि विश्ववारम्	१४११
न तमग्ने अरातयो मर्तं युवन्त रायः । यं त्रायसे दाश्वांसम्	१४१२
यं त्वं विप्र मेधसातौ अग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता	१४१३
त्वं रयिं पुरुवीरम् अग्ने दाशुषे मर्तीय । प्र णो नय वस्यो अच्छ	१४१४
उरुष्या णो मा परा दा अघायते जातवेदः । दुराध्येडु मर्तीय	१४१५
अग्ने मार्किटे देवस्य रातिमदेवो युयोत । त्वमीशिषे वसूनाम्	१४१६
स नो वस्व उप मासि ऊर्जो नपान्मार्हिनस्य । सखे वसो जरितृभ्यः	१४१७
अच्छा नः शरिशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।	
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरुवसुं पुरुप्रशस्तमतये	१४१८
अग्निं सनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।	
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्व होता मन्द्रतमो विशि	१४१९
अग्निं वो देवयज्यया अग्निं प्रयत्यध्वरे ।	
अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वति अग्निं क्षेत्राय साधमे	१४२०

अग्निरिषां सख्ये ददातु न ईशे यो वार्याणाम् ।
अग्निं तोके तनये शश्वदीमहे वसुं सन्तं तनूपाम्

१४२१

अग्निमीळिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीह्म श्रुतं नरो ऽग्निं सुदीतये छार्दिः

१४२२ ×

अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमसि अग्निं शं योश् च दातवे ।
विश्वासु विक्ष्ववितेव हव्यो भुवद् वस्तुर्कषूणाम्

१४२३

॥ १५७ ॥ (क्र० ८ । ७२ । १-१८) [१४२४-१४४१] हर्यतः प्रागाथः । गायत्री ।

हविष्कृणुध्वमा गमद् अध्वर्युर्वेनते पुनः	। विद्वो अस्य प्रशासनम्	१४२४
नि तिग्ममभ्यंशुं सीदुद्रोता मनावधि	। जुषाणो अस्य सख्यम्	१४२५
अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया	। गृभ्णन्ति जिह्वया ससम्	१४२६
जाम्यतीतपे धनुर् वयोधा अरुहद्वनम्	। दृषदं जिह्वयावधीत्	१४२७
चरन् वत्सो रुशन्निह निदातारं न विन्दते	। वेति स्तोतव अम्व्यम्	१४२८
उतो न्वस्य यन्महद् अश्वावद् योजनं बृहत्	। दामा रथस्य ददृशे	१४२९
दुहन्ति सप्तैकाम् उप द्वा पञ्च सृजतः	। तीर्थे सिन्धोरधि स्वरे	१४३०
आ दशभिर्विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत्	। खेदया त्रिवृता दिवः	१४३१
परि त्रिधातुरध्वरं जुर्णिरैति नवीयसी	। मध्वा होतारो अञ्जते	१४३२
सिञ्चन्ति नमसावतम् उच्चाचक्रं परिज्मानम्	। नीचीनवारमक्षितम्	१४३३
अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु	। अवतस्य विसर्जने	१४३४
गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा	। उभा कर्णा हिरण्यया	१४३५
आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम्	। रसा दधीत वृषभम्	१४३६
ते जानत स्वमोक्ष्यं सं वत्सासो न मातृभिः	। मिथो नसन्त जामिभिः	१४३७
उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि	। इन्द्रे अग्रा नमः स्वः	१४३८
अधुक्षत् पिप्युषीमिषम् ऊर्जे सप्तपदीमरिः	। सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः	१४३९
सोमस्य मित्रावरुणा उर्दिता सूर आ ददे	। तदातुरस्य भेषजम्	१४४०
उतो न्वस्य यत् पदं हर्यतस्य निधान्यम्	। परि द्यां जिह्वयातनत्	१४४१

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८।७४।१-१२)

[१४४२-१४५३] गोपवन आत्रेयः । अनुष्टुप्मुखः प्रगाथः = (अनुष्टुप् + गायत्री) ।

विशोर्विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।

अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुपे शूषस्य मन्मभिः १४४२

यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः १४४३

पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता । हव्यान्यैरयद् दिवि १४४४

आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।

यस्य श्रुतर्वा बृहन् आक्षो अनीक एधते १४४५

अमृतं जातवेदसं तिरस् तमांसि दर्शतम् । घृताहवनमीड्यम् १४४६

सबाधो यं जना इमेडं ऽग्निं हव्येभिरीळते । जुह्वानासो यतसुचः १४४७

इयं ते नव्यसी मतिर् अग्ने अधाय्यसदा ।

मन्द्र सुजात सुक्रतो ऽमरं दस्मातिथे १४४८

सा तै अग्ने शंतमा चनिष्ठा भवतु प्रिया । तया वर्धस्व सुष्टुतः १४४९

सा युमैद्युभिर्नी बृहद् उपोष श्रवांसि श्रवः । दधीत वृत्रतूर्ये १४५०

अश्वमिद् गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम् ।

यस्य श्रवांसि तूर्वथ पन्येषन्यं च कृष्टयः १४५१

यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम् १४५२

यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये । स बोधि वृत्रतूर्ये १४५३

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८।८४।१-९) (१४५४-१४६२) उशना काव्यः । गायत्री ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुपे मित्रमिव प्रियम् । अग्निं रथं न वेद्यम् १४५४

कृविमिव प्रचेतसं यं देवासो अधं द्विता । नि मर्त्येष्वदुधुः १४५५

त्वं यविष्ठ दाशुषो नूः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षां तोकमुत त्मना १४५६

कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे १४५७

दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कर्दु वोच इदं नमः १४५८

अधा त्वं हि नस् करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः १४५९

कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दंपते । गोषाता यस्य ते गिरः १४६०

तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् १४६१

क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर् नक्रियं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते १४६२

॥ १६० ॥ (ऋ० ८ । १०२ । १ २२)

१४६३-१४८४ प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ अन्यतरो वा ।

त्वमग्ने बृहद् वयो	दधासि देव दाशुषे	। कविर्गृहपतिर्युवा	१४६३
स न ईळानया सह	देवाँ अग्ने दुवस्युवा	। चिकिद् विभानवा ब्रह्म	१४६४
त्वया ह स्विद् युजा वयं	चोदिष्टेन यविष्ठ्य	। अभि ष्मो वार्जसातये	१४६५
और्वभृगुवच्छुचिम्	अमवानवदा हुवे	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६६
हुवे वातस्वनं कविं	पर्जन्यक्रन्धं सहः	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६७
आ सवं सवितुर्यथा	भगस्येव भुजिं हुवे	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६८
अग्निं वो वृधन्तम्	अध्वराणां पुरुतमम्	। अच्छा नष्ट्रे सहस्वते	१४६९
अयं यथा न आभुवत्	त्वष्टां रूपेव तक्ष्या	। अस्य क्रत्वा यशस्वतः	१४७०
अयं विश्वा अभि श्रियो	ऽग्निदेवेषु पत्यते	। आ वाजैरुप नो गमत्	१४७१
विश्वेषामिह स्तुहि	होतृणां यशस्तमम्	। अग्निं यज्ञेषु पूर्यम्	१४७२
शीरं पावकशोचिषं	ज्येष्ठो यो दमेष्वा	। दीदाय दीर्घश्रुतमः	१४७३
तमर्वन्तं न सानसि	गृणीहि विप्र शुष्मिणम्	। मित्रं न यातयज्जनम्	१४७४
उप त्वा जामयो गिरो	देदिशतीर्हविष्कृतः	। वायोरनीके अस्थिरन्	१४७५
यस्य त्रिधात्ववृतं	बर्हिस् तस्थावसंदिनम्	। आपश् चिन्नि दधा पदम्	१४७६
पदं देवस्य मीहुषो	ऽनाष्टृष्टाभिरुतिभिः	। भद्रा सूर्य इवोपहृक्	१४७७
अग्ने घृतस्य धीतिभिस्	तेपानो देव शोचिषा	। आ देवान् वक्षि यक्षि च	१४७८
तं त्वाजनन्त मातरः	कविं देवासो अङ्गिरः	। हव्यवाहममर्त्यम्	१४७९
प्रचेतसं त्वा कवे	ऽग्ने दूतं वरेण्यम्	। हव्यवाहं नि पैदिरे	१४८०
नहि मे अस्त्यध्या	न स्वधितिर्वनन्वति	। अथैतादृग् भंगामि ते	१४८१
यदग्ने कानि कानि चिद्	आ ते दारूणि दुध्मसि	। ता जुपस्व यविष्ठ्य	१४८२
यदस्युपजिह्विका	यद् वम्रो अतिसर्पति	। सर्वं तदस्तु ते घृतम्	१४८३
अग्निमिन्धानो मनसा	धियं सचेत् मर्त्यः	। अग्निमीधे विवस्वभिः	१४८४

॥ १६१ ॥ ऋग्वेदस्य मण्डलं १० । सूक्तं १ । मन्त्राः १-७)

[१४८५-१५३३] त्रित आप्त्यः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान् निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।

अभिर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सन्नान्यप्राः

१४८५

स जातो गर्भो असि रोदस्योर् अग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु ।	
चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून् प्र मातृभ्यो अधि कनिकदद् गाः	१४८६
विष्णुरित्था परममस्य विद्वान् जातो बृहन्नभि पाति तृतीयम् ।	
आसा यदस्य पयो अकृतं स्वं सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र	१४८७
अतं उ त्वा पितुभृतो जनित्रीर् अन्नावृधं प्रति चरन्त्यन्नैः ।	
ता ई प्रत्येषि पुनरन्यरूपा असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता	१४८८
होतारं चित्ररथमध्वरस्य यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम् ।	
प्रत्यर्धि देवस्यदेवस्य मद्धा श्रिया त्वग्निमर्तिथि जनानाम्	१४८९
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः ।	
अरुषो जातः पद इळायाः पुरोहितो राजन् यक्षीह देवान्	१४९०
आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ ।	
प्र याह्यच्छोशतो यविष्ठ अथा वह सहस्येह देवान्	१४९१

॥ १६२ ॥ (ऋ० १० । २ । १-७)

पिप्रीहि देवा उशतो यविष्ठ विद्रां ऋतूँऋतुपते यजेह ।	
ये दैव्या ऋत्विजस् तेभिरग्ने त्वं होतृणामस्यायजिष्ठः	१४९२
वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां मन्धातासि द्रविणोदा ऋतावा ।	
स्वाहा वयं कृणवामा हवींषि देवो देवान् यजत्वग्निर्हन्	१४९३
आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्रवाम तदनु प्रवोह्युम् ।	
अग्निर्विद्वान् त्स यजात् सेदु होता सो अध्वरान् त्स ऋतून् कल्पयाति	१४९४
यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।	
अग्निष्टद् विश्वमा पृणाति विद्वान् येभिर्देवां ऋतुभिः कल्पयाति	१४९५
यत् पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यांसः ।	
अग्निष्टद्वोता ऋतुविद् विज्ञानन् यजिष्ठो देवां ऋतुशो यजाति	१४९६
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान ।	
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पार्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्याः	१४९७

यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस् त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान ।
पन्थामनु प्रविद्वान् पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि

१४९८

॥ १६३ ॥ (ऋ० १० । ३ । १-७)

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमां अदर्शि ।
चिकिद् वि भाति भासा बृहता असिक्रीमेति रुशतीमपाजन्
कृष्णां यदेनीमभि वर्षसा भूज् जनयन् योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरग्ने राममस्थात्
अस्य यामासो बृहतो न वयन् इन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य ।
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो यामासो यामन्नक्तवशं चिकिरे
स्वना न यस्य यामासः पर्वन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः ।
ज्येष्ठेभिर्यस् तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर् वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम्
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर् जेहमानस्य स्वनयन् नियुद्धिः ।
प्रलेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा
स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः ।
अग्निः सुतुकः सुतुकैभिरश्वै रभस्वद्धी रभस्वाँ एह गम्याः

१४९९

१५००

१५०१

१५०२

१५०३

१५०४

१५०५

॥ १६४ ॥ (ऋ० १० । ४ । १-७)

प्र ते यक्षि प्र ते इयमि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु ।
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन्
यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति गाव उष्णमिव ब्रजं यविष्ठ ।
दूतो देवानामसि मर्त्यानाम् अन्तर्महाँश् चरसि रोचनेन
शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना ।
धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ् जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः
मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से ।
शयै वव्रिश् चरति जिह्यादन् रेरिह्यते युवतिं विस्पतिः सन्

१५०६

१५०७

१५०८

१५०९

कृचिजायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः । अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं प्रणयन्त मतीः	१५१०
तनूत्यजैव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् । इयं ते अग्रे नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः	१५११
ब्रह्म च ते जातवेदो नमश् च इयं च गीः सदुमिद् वर्धनी भूत् । रक्षां णो अग्रे तनयानि तोका रक्षोत नस् तन्वोऽे अप्रयुच्छन्	१५१२

॥ १६५ ॥ (ऋ० १० । ५ । १-७)

एकः समुद्रो धरुणो रयीणां अस्मद्भूदो भूरिजन्मा वि चष्टे । सिषक्त्यूधर्निण्योरुपस्थ उत्संस्य मध्ये निहितं पदं वेः	१५१३
समानं नीलं वृषणो वसानाः सं जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः । ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे पराणि	१५१४
ऋतायिनीं मायिनीं सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती । विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य कवेश् चित् तन्तुं मनसा वियन्तः	१५१५
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातम् इषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते । अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम्	१५१६
सप्त स्वसररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशे कम् । अन्तर्यमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन् वत्रिमविदत् पूषणस्य	१५१७
सप्त मर्यादाः कवयस् ततक्षुस् तासामेकामिदुभ्यंहुरो गात् । आयोर्हि स्कम्भ उपमस्य नीले पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ	१५१८
असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नर्दितेरुपस्थैः । अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आरुनि वृषभश् च धेनुः	१५१९

॥ १६६ ॥ (ऋ० १० । ६ । १-७)

अयं स यस्य शर्मन्नवोभिर् अग्रेरेधते जरिताभिष्टौ । ज्येष्ठैभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा	१५२०
यो भानुभिर्विभावा विभाति अग्निर्देवेभिर्ऋतावाजस्रः । आ यो विवार्य सख्या सखिभ्यो ऽपरिहृतो अत्यो न सप्तिः	१५२१

ईशे यो विश्वस्या देववीतेर् ईशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ ।	
आ यस्मिन् मना हवींष्यग्नौ अरिष्टरथः स्कन्नाति शूषैः	१५२२
शूषेभिर्वृधो जुषाणो अकैर् देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति ।	
मन्द्रो होता स जुह्वा यजिष्ठः संमिंश्लो अग्निरा जिघर्ति देवान्	१५२३
तमुस्त्रामिन्द्रं न रेजमानम् अग्निं गीभिर्नमोभिरा कृणुष्वम् ।	
आ यं विप्रासो मतिभिर्गुणन्ति जातवेदसं जुह्वं सहानाम्	१५२४
सं यस्मिन् विश्वा वसूनि जग्मुर् वाजे नाश्वाः मर्षीवन्त एवैः ।	
अस्मे ऊतीरिन्द्रवाततमा अवाचीना अग्न आ कृणुष्व	१५२५
अथा ह्यग्ने मृहा निषद्या सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।	
तं ते देवासो अनु केतमायन् अधावर्धन्त प्रथमाम् ऊमाः	१५२६

॥ १६७ ॥ (ऋ० १०।७।१-७)

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव ।	
सचैमहि तव दस्म प्रक्रेतर् उरुण्या ण उरुभिर्देव शंसैः	१५२७
इमा अग्ने मतयस् तुभ्यं जाता गोभिरश्वैरभि गृणन्ति राधः ।	
यदा ते मर्तो अनु भोगमानङ् वमो दधानो मतिभिः सुजात	१५२८
अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिम् अग्निं भ्रातरं सदामित् सखायम् ।	
अग्नेरनीकं बृहतः संपर्य दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य	१५२९
सिध्ना अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर् यं त्रायसे दम् आ नित्यहोता ।	
ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर् द्युभिरस्मा अहभिर्नाममस्तु	१५३०
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमुत्विजमध्वरस्य जारम् ।	
बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विश्वु होतारं न्यसादयन्त	१५३१
स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः ।	
यथायज ऋतुभिर्देव देवान् एवा यजस्व तन्वै सुजात	१५३२
भवा नो अग्नेऽवितोत गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः ।	
रास्वा च नः सुमहो हव्यदाति त्रास्वोत नस् तन्वोऽे अप्रयुच्छन्	१५३३

॥ १६८ ॥ (क्र० १०।८।१-६) [१५३४-१५३९] त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ।

प्र केतुना बृहता यात्यग्निर् आ रोदसी वृषभो रौरवीति ।	
दिवश् चिदन्ता उपमाँ उदानळ् अपामुपस्थे महिषो ववर्ध	१५३४
मुमोद गर्भो वृषभः ककुब्बान् अस्त्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत् ।	
स देवतात्युद्यतानि कृण्वन्त् स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति	१५३५
आ यो मूर्धानं पित्रोरगन्ध न्यध्वरे दधिरे सरो अर्णः ।	
अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुधा क्रतस्य योनौ तन्वो जुषन्त	१५३६
उषउषो हि वसो अग्रमेपि त्वं यमयौरभवो विभावा ।	
क्रताय सप्त दधिषे पदानि जनयन् मित्रं तन्वेडे स्वायै	१५३७
भुवश् चक्षुर्मह क्रतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृताय वेषि ।	
भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः	१५३८
भुवो यज्ञस्य रजसश् च नेता यत्रा नियुद्धिः सचसे शिवाभिः ।	
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्	१५३९

॥ १६९ ॥ (क्र० १०।११।१-९) [१५४०-१५५६] हविर्धान आङ्गिः । जगती, १५४६-४८ त्रिष्टुप् ।

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यद्वो अदितेरदाभ्यः ।	
विश्वं स वेदु वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियो क्रतून्	१५४०
रपद् गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः ।	
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो आता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति	१५४१
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वती उषा उवास मनवे स्वर्वती ।	
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुम् अग्निं होतारं विदथाय जीजनन्	१५४२
अध त्वं द्रप्सं विश्वं विचक्षणं विराभरदिषितः इयेनो अध्वरे ।	
यदी विशो वृणते दुस्ममार्या अग्निं होतारमध धीरजायत	१५४३
सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।	
विग्रस्य वा यच्छशमान उक्थयं वाजं ससवाँ उपयासि भूरिभिः	१५४४
उदीरय पितरां जार आ भगम् इयक्षति हर्यतो हृत् इष्यति ।	
विवक्ति वाङ्मिः स्वपस्यते मखस् तविष्यते असुरो वेपते मती	१५४५

यस् ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत् सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे । इषं दधानो वहमानो अश्वैर् आ स द्युमां अमवान् भूषति द्यन्	१५४६
यदग्न एषा समितिर्भवाति देवी देवेषु यजता यजत्र । रत्नां च यद् विभजासि स्वधावो भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात्	१५४७
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवितुम् । आ नो वह रोदसी देवपुत्रे मार्किर्देवानामपं भूरिह स्याः	१५४८

॥ १७० ॥ (ऋ० १० । १२ । १-९) त्रिष्टुप् ।

द्यावां ह क्षामां प्रथमे ऋतेन अभिश्रावे भवतः सत्यवाचा । देवो यन्मर्तान् यजथाय कृण्वन् मीदुद्धोतो प्रत्यङ् स्वमसुं यन्	१५४९
देवो देवान् परिभूऋतेन वहा नो हव्यं प्रथमश् चिकित्वान् । धूमकेतुः समिधा भाक्रजीको मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान्	१५५०
स्वावृग् देवस्यामृतं यदी गोर् अतो जातासो धारयन्त उर्वी । विश्वे देवा अनु तत् ते यजुर्गुर् दुहे यदेनीं दिव्यं घृतं वाः	१५५१
अर्चामि वां वर्धायापो वृतस्नु द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे । अहा यद् द्यावोऽसुनीतिमयन् मध्वा नो अत्र पितरां शिशीताम्	१५५२
किं स्विन्नो राजा जगृहे कदस्य अतिं व्रतं चकृमा को वि वेद । मित्रश् चिद्विष्मा जुहुराणो देवाञ् छोको न यातामपि वाजो अस्ति	१५५३
दुर्मन्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद् विषुरुपा भवाति । यमस्य यो मनवते सुमन्तु अग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन्	१५५४
यस्मिन् देवा विदथे मादयन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते । सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्यक्तून् परि द्योतनिं चरतो अजसा	१५५५
यस्मिन् देवा मन्मनि संचरन्ति अपीच्येड् न वयमस्य विद्म । मित्रो नो अत्रादितिरनागान् सविता देवो वरुणाय वोचत्	१५५६
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे० । (१५४८)	

॥ १७१ ॥ (ऋ० १०।१६।१—१४)

[१५५७-१५७०] दमनो यामायनः । त्रिष्टुप्, १५६७-७० अनुष्टुप् ।

मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।	
यदा शृतं कृण्वो जातवेदो ऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितृभ्यः	१५५७
शृतं यदा करांसि जातवेदो ऽथेमेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।	
यदा गच्छात्यसुनीतिमेताम् अथा देवानां वशनीर्भवाति	१५५८
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मेणा ।	
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितम् ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः	१५५९
अजो भागस् तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस् तपतु तं ते अर्चिः ।	
यास् ते शिवास् तन्वो जातवेदस् तामिर्वहनं सुकृतांस्तु लोकम्	१५६०
अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस् त आहुतश् चरति स्वधाभिः ।	
आयुर्वसान उर्ष वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः	१५६१
यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोर्द पिपीलः सर्प उत वा श्वार्पदः ।	
अग्निष्टद् विश्वाद्गदं कृणोतु सोमश् च यो ब्राह्मणां आविवेश	१५६२
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुध्व पीवसा मेदसा च	
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दुधृग् विधृक्ष्यन् पर्यङ्क्ष्याति	१५६३
इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् ।	
एष यश् चमसो देवपानस् तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ते	१५६४
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।	
इहेवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्	१५६५
यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश वो गृहम् इमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।	
तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स घर्ममिन्वात् परमे सधस्थे	१५६६
यो अग्निः क्रव्यवाहनः पितृन् यक्षदतावृधः ।	
प्रेतु हव्यानि वोचति देवेभ्यश् च पितृभ्य आ	१५६७
उशन्तस् त्वा नि धीमहि उशन्तः समिधीमहि ।	
उशन्तुशत आ वह पितृन् हविषे अक्षवे	१५६८

यं त्वमग्ने समदहस् तमु निर्वीपया पुनः ।

क्रियाम्बवत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा १५६९

शीर्तिके शीर्तिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।

मण्डूक्याइ सु सं गम इमं स्वग्निं हर्षय १५७०

॥ १७२ ॥ (ऋ० १० । २० । १-१०)

[१५७१-१५८८] विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुकः । गायत्री, १५७१ एकपदा विराट्
(एष मन्त्रः शान्त्यर्थः), १५७२ अनुष्टुप्, १५७९ विगाढः, १५८० त्रिष्टुप् ।

भद्रं नो अपि वातय मनः १५७१

अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम् ।

यस्य धर्मन् तस्वरेनीः सप्रर्यन्ति मातुरूधः १५७२

यमासा कृपनीकं भासाकैतुं वर्धयन्ति । भ्राजते श्रेणिदन् १५७३

अर्यो विशां गातुरेति प्र यदानं दिवो अन्तान् । कविरभ्रं दीद्यानः १५७४

जुषद्गव्या मानुषस्य ऊर्ध्वस् तस्थावृभ्वा यज्ञे । मिन्वन् त्सन्नं पुर एति १५७५

स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् १५७६

यज्ञासाहं दुवं इषे ऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य । अद्रेः सनुमायुमाहुः १५७७

नरो ये के चास्मदा विश्वेत् ते वाम आ स्युः । अग्निं हविषा वर्धन्तः १५७८

कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न क्रज्र उत शोणो यशस्वान् ।

हिरण्यरूपं जनिता जजान १५७९

एवा तै अग्ने विमदो मनीषाम् ऊर्जो नपादुमृतेभिः सजोषाः ।

गिर आ वक्षत् सुमतीरियान इषमूर्जे सुक्षितिं विश्वमाभाः १५८०

॥ १७३ ॥ (ऋ० १० । २१ । १-८) आस्तारपङ्क्तिः (८+८+१२+१२) ।

आग्निं न स्ववृक्तिभिर् होतारं त्वा वृणीमहे ।

यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे १५८१

त्वामु ते स्वाभुवः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।

वेति त्वामुपसेचनी वि वो मदु ऋजीतिरग्न आहुतिर्विवक्षसे १५८२

त्वे धर्माण आसते जुह्वभिः सिञ्चतीरिव ।

कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि अग्नौ धिषे विवक्षसे १५८३

यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य ।	
तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भरा विवक्षमे	१५८४
अग्निर्जातो अथर्वणा विदद् विश्वानि काव्या ।	
भुवद् दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे	१५८५
त्वां यज्ञेष्वीळते ऽग्ने प्रयत्यध्वरे ।	
त्वं वसन्ति काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षमे	१५८६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि पैदिरे ।	
घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षमे	१५८७
अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु प्रथयसे बृहत्	
अभिक्रन्दन् वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे	१५८८

॥ १७४ ॥ (ऋ० १० । ४५ । १-१२) [१५८९-१६१०] वत्सप्रिर्भालन्दनः । त्रिष्टुप् ।

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निर् अस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः ।	
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रम् इन्धान एनं जरते स्वाधीः	१५८९
विद्वा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्वा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।	
विद्वा ते नाम परमं गुहा यद् विद्वा तमुत्सं यत आजगन्थ	१५९०
समुद्रे त्वा नृमणा अप्सवन्तर् नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊर्धन् ।	
तृतीयं त्वा रजसि तस्थिवांसम् अपामुपस्थे महिषा अवर्धन्	१५९१
अक्रन्ददुग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।	
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अरुयद् आ रोदसी भानुना भात्यन्तः	१५९२
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।	
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः	१५९३
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।	
वीळं चिदद्रिमभिनत् परायन् जना यदग्निमयजन्त पञ्च	१५९४
उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।	
इयति धूममरुषं भरिभ्रद् उच्छुक्तेण शोचिषा द्यामिनक्षन्	१५९५

दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद् दुर्मर्षमारुः श्रिये रुचानः ।	
अभिरमृतौ अभवद् वयौभिर् यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः	१५९६
यस् ते अद्य कृण्वद् भद्रशोचे ऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने ।	
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ अभि सुभ्रं देवभक्तं यविष्ठ	१५९७
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउक्थ आ भज शस्यमाने ।	
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति उज्जातेन भिनददुज्जित्वैः	१५९८
त्वामग्ने यजमाना अनु दृन् विश्वा वसुं दधिरे वार्याणि ।	
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः	१५९९
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः ।	
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्	१६००

॥ १७५ ॥ (ऋ० १० । ४६ । १-१०)

प्र होता जातो महान् नभोविन् नृषद्वा सीददुपामुपस्थे ।	
दधिर्यो धायि स ते वयसि यन्ता वस्त्रनि विधत्ते तनूपाः	१६०१
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु गमन् ।	
गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिर् इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन्	१६०२
इमं त्रितो भूर्येविन्ददिच्छन् वैभूवसो मूर्धन्यङ्घ्रायाः ।	
स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्य	१६०३
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणाम् ।	
विशामकृण्वन्नरतिं पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु	१६०४
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दुर्माणम् ।	
नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर् हिरिश्मश्रुं नार्वीणं धनर्चम्	१६०५
नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनौ सीददुन्तः ।	
अतः संगृभ्यां विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नृन्	१६०६
अस्याजरासो दुमामरित्रा अर्चद्भूमासो अग्नयः पावकाः ।	
क्षितीचयः श्वात्रासो भूरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः	१६०७

प्र जिह्वा भरते वेपों अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः ।
तमायवः शुचयन्तं पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् १६०८

द्यावा यमग्निं पृथिवीं जनिष्टाम् आपस् त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः ।
ईळेन्यं प्रथमं मातरिश्वा देवाम् ततक्षुर्मनवे यजत्रम् १६०९

यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम् ।
स यामन्त्रे स्तुवते वयो धाः प्र देवयन् यशसः सं हि पूर्वीः १६१०

॥ १७६ ॥ (ऋ० १० । ५२ । १, ३, ५, ७, ९,) [१६११-१६२४] देवाः ।

महत् तदुल्लं स्थविरं तदासीद् येनाविष्टितः प्रविवेशिश्चापः ।
विश्वा अपश्यद् बहुधा ते अग्ने जातवेदस् तन्वो देव एकः १६११

ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्सवोर्षधीषु ।
तं त्वा यमो अचिकेचित्रमानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् १६१२

एहि मनुर्देवयुर्यज्रकामो ऽरंकृत्या तमसि क्षेप्यग्ने ।
सुगान् पथः कृणुहि देवयानान् वहं हव्यानि सुमनस्यमानः १६१३

कुर्मस् त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिप्याः ।
अथा वहामि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात १६१४

तव प्रयाजा अनुयाजाश् च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।
तवाग्ने यज्ञोऽयमस्तु सर्वम् तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश् चतस्रः १६१५

॥ १७७ ॥ (ऋ० १० । ५३ । १-३, ६-११) जगती, १६१६-१८, १६२१ त्रिष्टुप् ।

यमैच्छाम मनसा सोऽयमागाद् यज्ञस्य विद्वान् परुषश् चिकित्वान् ।
स नो यक्षद् देवताता यजीयान् नि हि पत्सदन्तरः पूर्वी अस्मत् १६१६

अराग्नि होता निषदा यजीयान् अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत् ।
यजामहै यज्ञियान् हन्त देवा ईळामहा ईड्याँ आज्येन १६१७

साध्वीर्मकर्देववीति नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम् ।
स आयुरागात् सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूति नो अद्य १६१८

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
अनुल्वणं वयत् जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् १६१९

अ॒क्षान॒हो न॒ह्यत॒नोत॒ सोम्या॒	इष्कृ॑णुध्वं र॒शना॒ ओत॒ पि॑शत ।	
अ॒ष्टाव॑न्धुरं व॒हता॒भितो॒ रथं॒	येन॑ दे॒वासो॒ अन॑यन्न॒भि प्रि॒यम्	१६२०
अ॒श्मन्व॑ती रीयते सं र॒भध्व॑म्	उत् तिष्ठ॑त् प्र ते॒रता॒ सखा॑यः ।	
अत्रा॑ ज॒हाम॒ ये अ॒सन्न॑शै॒वाः	शि॒वान् व॒यमु॑त् तेरे॒माभि॑ वा॒जान्	१६२१
त्वष्टा॑ मा॒या वे॑दप॒सांम॒पस्त॑मो	बिभ्र॑त् पात्रा॑ दे॒वपा॒नानि॑ श॒तमा॒ ।	
शि॒शीते॒ नूनं॑ प॒रशुं॒ स्वाय॑सं	येन॑ वृ॒श्वादे॑त॒शो ब्र॒ह्मण॑स्पतिः	१६२२
स॒तो नूनं॑ क॒वयः॒ सं शि॑शीत॒	वा॒शीभि॒र्याभि॑र॒मृता॑य॒ तक्ष॑थ ।	
वि॒द्वांसः॒ प॒दा गु॒ह्यानि॑ क॒र्तन॒	येन॑ दे॒वासो॒ अमृ॑त॒त्वमा॑न॒शुः	१६२३
ग॒र्भे यो॒षाम॑द॒धुर्व॑त्स॒मास॑नि	अ॒पीच्ये॑न॒ मन॑सो॒त जि॒ह्वया॑ ।	
स वि॒श्वाहा॑ सु॒मना॑ यो॒ग्या अ॒भि	सि॒पास॑निर्व॒नते॒ का॒र इ॒ज्जि॑तिम्	१६२४

॥१७८॥ (ऋ० १० । ६९ । १-१२) [१६२५-१६३६] सुमित्रा वा॒ध्यश्वः । त्रिष्टुप्, १६२५, २६ जगती ।

भ॒द्रा अ॒ग्नेर्वै॒ध्यश्च॑स्य॒ संदृ॑शो॒	वा॒मी प्र॑णी॒तिः सु॒रणा॒ उप॑तयः ।	
यदी॑ सु॒मित्रा॒ विशो॒ अग्र॑ इ॒न्धते॒	घृ॒तेना॑हु॒तो ज॑रते॒ दर्वि॑द्युतन्	१६२५
घृ॒तम॒ग्नेर्वै॒ध्यश्च॑स्य॒ वर्ध॑नं	घृ॒तम॒न्नं घृ॒तम्ब॑स्य॒ मेद॑नम् ।	
घृ॒तेना॑हु॒त उर्वि॑या वि प॒प्रथे॒	सूर्य॑ इव॒ रोच॑ते स॒पिरा॑मु॒तिः	१६२६
यत् ते॒ मनु॑र्यदनी॒कं सु॒मित्रः॒	सं॒मीधे॒ अ॒ग्ने तदि॑दं नवी॒यः ।	
स रे॒वच्छो॑च॒ स गि॑रो॒ जुष॑स्व	स वा॒जैर्द॑र्पि॒ स इ॒ह श्र॑वो॒ धाः	१६२७
यं त्वा॒ पूर्व॑मी॒ळितो॒ व॒ध्यश्चः॒	सं॒मीधे॒ अ॒ग्ने स इ॒दं जु॑षस्व ।	
स नः॑ स्ति॒पा उ॒त भ॑वा॒ तनू॑पा	दा॒त्रं र॑क्ष॒स्व या॑दि॒दं ते॒ अ॒स्मे	१६२८
भवा॑ द्यु॒म्नी वा॑ध्य॒श्चोत॒ गो॒पा	मा त्वा॑ तारी॒दुभि॑मा॒तिर्ज॑नाना॒म् ।	
शूर॑ इव॒ धृष्णु॑श्च्य॒र्वनः॒ सु॒मित्रः॒	प्र नु॒ वोचं॑ वा॒ध्यश्च॑स्य॒ नाम॑	१६२९
सम॑ज्या॒ पर्व॑त्या॒इ व॒सूनि॒	दा॒सा वृ॒त्राण्य॑र्या॒ जिगे॑थ ।	
शूर॑ इव॒ धृष्णु॑श्च्य॒र्वनो॒ जना॑नां	त्वम॑ग्ने पृ॒तना॑यू॒रभि॑ ष्याः	१६३०
दी॒र्घत॑न्तु॒र्बृह॑दु॒क्षाय॑म॒ग्निः	स॒हस्र॑स्तरिः॒ श॒तनी॑थ॒ ऋ॒भ्वा ।	
द्यु॒मान् द्यु॒मत्सु॒ नृभि॑र्मृ॒ज्यमा॑नः	सु॒मित्रे॑षु॒ दी॒दयो॑ दे॒व्यत्सु॑	१६३१

त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो ऽसश्चतैव समना संवर्धुक् ।	
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः	१६३२
देवाश् चित् ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्यश्च प्र वोचन् ।	
यत् संपृच्छं मानुषीर्विश आयन् त्वं नृभिरजयस् त्वावृधेभिः	१६३३
पितेवं पुत्रमविभरुपस्थे त्वामग्ने वध्यश्चः संपर्यन् ।	
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठ उत पूर्वा अवनोव्राधतश् चित्	१६३४
शश्चदग्निर्वध्यश्चस्य शत्रून् नृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः ।	
समनं चिददहश् चित्रभानो ऽव व्राधन्तमभिनद् वृधश् चित्	१६३५
अयमग्निर्वध्यश्चस्य वृत्रहा संनकात् प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।	
स नो अजामीरुत वा विजामीन् अभि तिष्ठ शर्धतो वाध्यश्च	१६३६

॥ १७९ ॥ (ऋ० १० । ७९ । १-७)

[१६३७--१६५०] अग्निः साँचीको, वैश्वानरो वा, (सतिर्वाजंभरो वा) । त्रिष्टुप् ।

अपश्यमस्य महतो महित्वम् अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु ।	
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः	१६३७
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि ।	
अत्राण्यस्मै पङ्भिः सं भेरन्ति उत्तानहस्ता नमसार्धि विक्षु	१६३८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः ।	
ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः	१६३९
तद वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति ।	
नाहं देवस्य मर्त्येश् चिकेत अग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः	१६४०
यो अस्मा अन्नं तृष्वाद्दधाति आज्यैर्धृतैर्जुहोति पुष्यति ।	
तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षे ऽग्रे विश्वतः प्रत्यङ्कुसि त्वम्	१६४१
किं देवेषु त्यज एनश् चकर्थ अग्रे पृच्छामि नु त्वामविद्वान् ।	
अक्रीळन् क्रीळन् हरिरत्तवेऽदन् वि पर्वशश् चकर्त गार्मिवासिः	१६४२
विषूचो अश्वान् युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् ।	
चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः	१६४३

॥ १८० ॥ (क्र० १० । ८० । १-७)

अग्निः सप्तिं वाजंभरं ददाति	अग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठाम् ।	
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जन्	अग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्	१६४४
अग्नेरमसः समिदस्तु भद्रा	ऽग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।	
अग्निरेकं चोदयत् समत्सु	अग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि	१६४५
अग्निर्ह त्वं जरतः कर्णमाव	अग्निरज्यो निरदहज्जरूथम् ।	
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदुन्तर्	अग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम	१६४६
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा	अग्निर्ऋषिं यः सहस्रां सनोति ।	
अग्निर्दिवि हव्यमा तंतान	अग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा	१६४७
अग्निमुक्थैर्ऋषयो वि ह्वयन्ते	ऽग्निं नरो यामनि बाधितासः ।	
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तो	ऽग्निः सहस्रा परि याति गोनाम्	१६४८
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या	अग्निं मनुषो नहुषो वि ज्ञाताः ।	
अग्निर्गान्धर्वी पृथ्यामृतस्य	अग्नेर्गव्यूतिर्धृत आ निषत्ता	१६४९
अग्नये ब्रह्म क्रभवंस् ततक्षुर्	अग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।	
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठ	अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	१६५०

॥ १८१ ॥ (क्र० १० । ९१ । १-१५) [१६५१-१६६५] अरुणो वैतहव्यः । जगती, १६६५ त्रिष्टुप् ।

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते	दमे दमूना इषयन्निळस्पदे ।	
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो	विभुर्विभावा सुषखा सखीयते	१६५१
स दर्शतश्चीरतिथिर्गृहेगृहे	वनेवने शिश्रिये तक्रवीरिव ।	
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते	विश आ क्षेति विश्योऽं विशंविशम्	१६५२
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुर्	अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।	
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद्	द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः	१६५३
प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियम्	इळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।	
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयो	ऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः	१६५४
तव श्रियो वर्ण्यस्येव विद्युतश्	चित्राश् चिकित्र उषसां न केतवः ।	
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च	परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये	१६५५

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्विद्यं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।	
तमित् समानं वनिर्नश् च वीरुधो ऽन्तर्वतीश् च सुवते च विश्वहा	१६५६
वातोपधूत इषितो वशां अनु तृषु यदन्ना वेविषद् वितिष्ठसे ।	
आ ते यतन्ते रथ्योऽथ यथा पृथक् शर्धीस्यग्रे अजराणि धक्षतः	१६५७
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् ।	
तमिदमे हविष्या समानमित् तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत्	१६५८
त्वामिदत्र वृणते त्वायत्रा होतारमग्रे विदथेषु वेधसः ।	
यद् देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तवर्हिषः	१६५९
तवाग्रे होत्रं तव पोत्रमृत्विद्यं तव नेष्टं त्वमग्निद्वितायतः ।	
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयमि ब्रह्मा चासि गृहर्पतिश् च नो दमे	१६६०
यस् तुभ्यमग्रे अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति ।	
तस्य होता भवसि यासि दूत्यम् उप ब्रूषे यजस्यध्वरीयमि	१६६१
इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदो कचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत ।	
वसूयवो वमवे जातवेदसे वृद्धासु चिद् वर्धनो यासु चाकनत्	१६६२
इमां प्रत्ताय सुष्टुतिं नवीयसी वोच्यमस्मा उशते शृणोतु नः ।	
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः	१६६३
यस्मिन्नश्वास कषभास उक्षणो वशा मेपा अवसृष्टास आहुताः ।	
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधमे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये	१६६४
अहाव्यग्रे हविरास्ये ते सुचीव घृतं चम्बीव सोमः ।	
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्	१६६५

॥ १८२ ॥ (क्र० १०।११५।१-९)

[१६६६-१६७४] उपस्तुतो वार्षिहव्यः । जगती, १६७३ त्रिष्टुप्, १६७४ शकरी ।

चित्र इच्छिशोस् तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे ।	
अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो मर्हि दूत्यं चरन्	१६६६
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता ।	
अभिप्रमुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा	१६६७

तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् ।
 आसा वह्निं न शोचिषा विरप्तिनं महिब्रतं न सरजन्तमध्वनः १६६८
 वि यस्य ते जयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः ।
 आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिपन्त इष्टये १६६९
 स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखा अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।
 अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीन् अग्निर्ददातु तेषामवो नः १६७०
 वाजिन्तमाय सहस्रे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे ।
 अनुद्रे चिद् यो धृषता वरं मते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यत १६७१
 एवाग्निर्मतैः सह सूरिभिर् वसुः एवे सहस्रः सूनरो नृभिः ।
 मित्रासो न ये सुधिता क्रतायवो द्यावो न द्युम्नेभि सन्ति मानुषान् १६७२
 ऊर्जो नपात् सहसावन्निति त्वा उपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् ।
 त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः १६७३
 इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुताम् कर्षयोऽवोचन ।
 तौश्च पाहि गृणतश् च सूरीन् वषट्पळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्
 नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन् १६७४

॥ १८३ ॥ (क्र० १० । १२२ । १-८) [१६७५-१६८२] चित्रमहा वासिष्ठः । जगती, १६७५-१६७९ त्रिष्टुप् ।

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमर्तिथिमद्विपेण्यम् ।
 स रांसते शुरुधो विश्वधायसो ऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम् १६७५
 जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान् वयुनानि सुक्रतो ।
 घृतनिर्णिग् ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अजनयन्ननु व्रतम् १६७६
 सप्त धामानि परियन्नमत्यो दाशद् दाशुषे सुकृते मामहस्व ।
 सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस् त आनद् समिधा तं जुषस्व १६७७
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम् ।
 शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं देवं पृणते सुवीर्यम् १६७८
 त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व ।
 त्वां मर्जयन् मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः १६७९

इषं दुहन् त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो ।
 अग्ने घृतस्नुस् त्रिर्ऋतानि दीर्घद् वर्तिर्यज्ञं परियन् त्सुक्रतूयसे १६८०
 त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः ।
 त्वां देवा महयाय्याय वावृधुर् आज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे १६८१
 नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः ।
 रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः १६८२

॥ १८४ ॥ (ऋ० १० । १२४ । १) [१६८३] अग्निः । त्रिष्टुप ।

इमं नो अग्र उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ।
 असौ हव्यवालुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम् आशयिष्ठाः १६८३

॥ १८५ ॥ (ऋ० १० । १४० । १-६)

[१६८४-१६८९] अग्निः पावकः । सतोबृहती, १६८४-८६ विष्टारपङ्क्तिः, १६८९ उपरिष्टाज्ज्योतिः ।

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
 बृहद्भानो शर्वसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे १६८४
 पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियषि भानुना ।
 पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे १६८५
 ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर् मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
 त्वे इषः सं दधुर्भूरिर्वपसश् चित्रोतयो वामजाताः १६८६
 इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिर् अस्मे रायो अमर्त्य ।
 स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसि क्रतुम् १६८७
 इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः ।
 राति वामस्य सुभगा महीमिषं दधासि सानसि रयिम् १६८८
 ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतम् अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः ।
 श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा १६८९

॥ १८६ ॥ (ऋ० १० । १४२ । १—८)

[१६९०—१६९७] १६९०-१६९१ जरिता, १६९२-९३ द्रोणः, १६९४-९५ सारिस्तुकः, १६९६-९७ स्तम्भमित्रः
(एते शाङ्ग्याः) । त्रिष्टुप्. १६९०-९१ जगती, १६९६—९७ अनुष्टुप् ।

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् ।
भद्रं हि शर्म त्रिवरुथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि १६९०
प्रवत् तै अग्ने जनिमा पितृयुतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे ।
प्र सप्तयुः प्र सनिपन्त नो धिर्यः पुरश् चरन्ति पशुपा इव त्मना १६९१
उत वा उ परि वृणक्षि वप्सद् वहोरग्र उलपस्य स्वधावः ।
उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा तै हेति तविषीं चुक्रुधाम १६९२
यदुद्रतो निवतो यासि वप्सत् पृथगेषि प्रगृधिनीं व सेना ।
यदा ते वातो अनुवाति शोचिर् वप्सेव श्मश्रु वपसि प्र भूम १६९३
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः ।
बाहू यदग्ने अनुमर्मृजानो न्यङ्कुत्तानामन्वेषि भूमिम् १६९४
उत् ते शुष्मा जिहतामुत् तै अर्चिर् उत् तै अग्ने शशमानस्य वाजाः ।
उच्छ्वस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु १६९५
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशां अनु १६९६
आयने ते पुरायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः ।
हृदाश् च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे १६९७

॥ १८७ ॥ (ऋ० १० । १५० । १-५)

[१६९८—१७०२] मृळीको वासिष्ठः । बृहती, १७०१-२ उपरिष्ठाज्ज्योतिः, १७०१ जगती वा ।

समिद्धश् चित् समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन ।
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गंहि मृळीकार्यं न आ गंहि १६९८
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागंहि ।
मतीसस् त्वा समिधान हवामहे मृळीकार्यं हवामहे १६९९

त्वामु जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया ।
 अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान् मृळीकार्यं प्रियव्रतान् १७००
 अग्निर्देवो देवानामभवत् पुरोहितो ऽग्निं मनुष्याः ऋषयः समीधिरे ।
 अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये १७०१
 अग्निरग्निं भरद्वाजं गर्विष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे ।
 अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकार्यं पुरोहितः १७०२

॥ १८८ ॥ (ऋ० १० । १५६ । १-५) [१७०३-१७०७] केतुराग्नेयः । गायत्री ।

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुर्मिवाजिषु । तेन जेष्म धनं धनम् १७०३
 यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या । तां नो हिन्व मघत्तये १७०४
 आग्ने स्थावरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्घ्रिं खं वर्तया पणिम् १७०५
 अग्ने नक्षत्रमजरम् आ सूर्यं रोहयो दिवि । दधज् ज्योतिर्जनैभ्यः १७०६
 अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधां स्तोत्रे वयो दधत् १७०७

॥ १८९ ॥ (ऋ० १० । १७६ । १-४) [१७०८-१७१०] सूनुराभ्वः । गायत्री, १७०९-१० अनुष्टुप् ।

प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम् । हव्या नो वक्षदानुषक् १७०८
 अयमुष्य प्र देवयुर् होता यज्ञाय नीयते ।
 रथो न योरभीवृतो घृणीवाञ् चेतति त्मना १७०९
 अयमग्निरुरुष्यति अमृतादिव जन्मनः ।
 सहसश् चित् सहीयान् देवो जीवार्तवे कृतः १७१०

॥ १९० ॥ (ऋ० १० । १८७ । १-५) [१७११-१७१५] वत्स आग्नेयः । गायत्री ।

प्राग्ये वार्चमीरय वृषभाय क्षितीनाम् । स नः पर्षदति द्विषः १७११
 यः परस्याः परावर्तस् तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः १७१२
 यो रक्षांसि निजूर्वति वृषां शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः १७१३
 यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः १७१४
 यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः १७१५

॥ १९१ ॥ (ऋ० १ । १९१ । १) [१७१६] संवनन आङ्गिरसः । अनुष्टुप् ।

संसमिद् युवसे वृषन् अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
 इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर १७१६

वैश्वानरोऽग्निः ।

॥ १९२ ॥ (ऋ० १ । ५९ । १-७) [१७१७-१७२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

व॒या इ॒दमे॒ अ॒ग्नय॑स् ते अ॒न्ये त्वे वि॒श्वे अ॒मृता॑ मा॒दय॑न्ते ।	
वै॒श्वान॑र॒ नाभि॑रसि क्षि॒तीनां॑ स्त॒थूणे॑व॒ जना॑ उ॒पमि॑द् य॒यन्थ	१७१७
मूर्धा॑ दि॒वो नाभि॑र॒ग्निः पृ॒थि॒व्या अ॒थाभ॑वद॒रती॑ रो॒दस्योः॑ ।	
तं त्वा॑ दे॒वासो॑ऽज॒नय॑न्त दे॒वं वै॒श्वान॑र॒ ज्योति॑रि॒दार्या॑य	१७१८
आ सूर्ये॑ न र॒श्मयो॑ ध्रु॒वासो॑ वै॒श्वान॑रे द॒धिरे॑ऽग्ना व॒सूनि॑ ।	
या प॑र्व॒तेष्वो॑ष॒धीष्व॑प्सु या मा॒नुषे॑ष्व॒सि तस्य॑ राजा	१७१९
बृ॒हती॑ इ॒व सू॒नवे॑ रो॒दसी॑ गि॒रो होता॑ म॒नुष्यो॑ऽ॒ न दक्षः॑ ।	
स्व॑र्व॒ते स॒त्यशु॑ष्माय प॒र्वीर् वै॒श्वान॑राय नृ॒तमा॑य य॒ह्नीः	१७२०
दि॒वश् चि॑त् ते बृ॒हतो॑ जा॒तवे॑दो वै॒श्वान॑र॒ प्र रि॑रि॒चे म॒हित्व॑म् ।	
राजा॑ कृ॒ष्टीना॑म॒सि मा॒नुषी॑णां यु॒धा दे॒वेभ्यो॑ व॒रिव॑श् च॒कर्त्त॑	१७२१
प्र नू॑ म॒हित्वं॑ वृष॒भस्य॑ वो॒चं यं पू॒र्वो वृ॒त्रह॑णं स॒चन्ते॑ ।	
वै॒श्वान॑रो द॒स्युम॑ग्निर्ज॒घन्वा॑ अ॒धूने॑त् का॒ष्ठा अ॒व श॑म्भ॒रं भेत्	१७२२
वै॒श्वान॑रो म॒हिम्ना॑ वि॒श्वकृ॑ष्टिर् भ॒रद्वा॑जेषु य॒जतो॑ वि॒भावा॑ ।	
शा॒तव॑ने॒ये श॒तिनी॑भि॒र॒ग्निः पु॒रुणी॑थे ज॒रते॑ सू॒नृता॑वान्	१७२३

॥ १९३ ॥ (ऋ० १ । ९८ । १-३) [१७२४-१७२६] कुन्स आङ्गिरसः ।

वै॒श्वान॑रस्य॒ सुम॑तौ स्या॒म राजा॑ हि कं भु॒व॒नाना॑म॒भि॒श्रीः ।	
इ॒तो जा॒तो वि॒श्वमि॑दं वि च॒ष्टे वै॒श्वान॑रो य॒तते॑ सूर्ये॒ण	१७२४
पृ॒ष्ठो दि॒वि पृ॒ष्ठो अ॒ग्निः पृ॒थि॒व्यां पृ॒ष्ठो वि॒श्वा ओष॑धी॒रा वि॒वेश॑ ।	
वै॒श्वान॑रः स॒हसा॑ पृ॒ष्ठो अ॒ग्निः स नो॑ दि॒वा स रि॑षः पा॒तु न॑क्तम्	१७२५
वै॒श्वान॑र॒ तव॑ तत् स॒त्यम॑स्तु अ॒स्मान् रा॒यो म॒घवा॑नः स॒चन्ता॑म् ।	
त॒पो मि॒त्रो व॑रु॒णो मा॑म॒हन्ता॑म् अ॒दितिः॑ सि॒न्धुः पृ॒थि॒वी उ॒त द्यौः	१७२६

॥ १९४ ॥ (ऋ० ३।२।१-१५) [१७२७-१७५७] विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे धृतं न पूतमग्नये जनामसि ।	
द्विता होतारं मनुषश् च वाधतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति	१७२७
स रोचयज् जनुषा रोदसी उभे स मात्रोरभवत् पुत्र ईड्यः ।	
हव्यवाळग्रिरजरश् चनोहितो दूळभो विशामतिथिर्विभावसुः	१७२८
क्त्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।	
रुचानं भानुना ज्योतिषा महाम् अत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे	१७२९
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अह्यं वाजमृग्नियम् ।	
रातिं भृगूणामुशिजं कृविकृतुम् अग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा	१७३०
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना वाजश्रवसमिह वृक्तबर्हिषः ।	
यतस्रुचः सुरुचं विश्वदैव्यं रुद्रं यज्ञानां सार्धदिष्टिमपसाम्	१७३१
पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतयज्ञेषु वृक्तबर्हिषो नरः ।	
अग्ने दुर्व इच्छमानास आप्यम् उपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः	१७३२
आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज् जातं यदेनमपसो अधारयन् ।	
सो अध्वराय परि णीयते कविर् अत्यो न वाजसातये चनोहितः	१७३३
नमस्यते हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत् दम्यं जातवेदसम् ।	
रथीर्कृतस्य बृहतो विचर्षणिर् अग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः	१७३४
तिस्रो यहस्य समिधः परिज्मनो ऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।	
तासामेकामदधुर्मर्त्ये भुजसु लोकमु द्वे उप जामिर्मायतुः	१७३५
विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः सं सीमकृण्वन् त्स्वधितिं न तेजसे ।	
स उद्वतो निवतो याति वेर्विषत् स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत्	१७३६
स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान् वृषा चित्रेषु नानन्दुन्न सिंहः ।	
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे	१७३७
वैश्वानरः प्रलथा नाकमारुहद् दिवस्पृष्टं भन्दमानः सुमन्मभिः ।	
स पूर्ववज् जनयज् जन्तवे धनं समानमज्मं पर्येति जागृविः	१७३८

ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्यम् आ यं दुधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।
 तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे १७३९
 शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषवुधम् ।
 अग्निं मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कृतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् १७४०
 मन्द्रं होतारं शुचिमद्रयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।
 रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद् राय ईमहे १७४१

॥ १९५ ॥ (ऋ० ३ । ३ । १-११)

वैश्वानरायं पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।
 अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुवस्यति अथा धर्माणि सनता न दृदुषत् १७४२
 अन्तर्दूतो रोदसी दुस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।
 क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर् देवेभिरग्निरिषितो धियावंसुः १७४३
 केतुं यज्ञानां विदथस्य सार्धनं विप्रांसो अग्निं महयन्त चित्तिभिः ।
 अपांसि यस्मिन्नाग्निं संदधुर्गिरम् तस्मिन् त्सुम्नानि यजमान आ चक्रे १७४४
 पिता यज्ञानामसुरो विपश्चिता विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम् ।
 आ विवेश रोदसी भूरिवर्षसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः १७४५
 चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरित्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् ।
 विगाहं तूर्णि तविषीभिरावृतं भूर्णि देवास इह सुश्रियं दधुः १७४६
 अग्निर्देवेभिर्मनुषश् च जन्तुभिस् तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ।
 रथीरन्तरीयते सार्धदिष्टिभिर् जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः १७४७
 अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुनि ऊर्जा पिन्वस्व समिपो दिदीहि नः ।
 वयांसि जिन्व बृहतश् च जागृव उशिग् देवानामासि सुक्रतुर्विषाम् १७४८
 विश्वपतिं यद्वमतिथिं नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम् ।
 अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे १७४९
 विभावा देवः सुरणः परि क्षितीर् अग्निर्वभूव शर्वसा सुमद्रथः ।
 तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयम् उप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः १७५०
 वैश्वानर तव धामान्या चक्रे यैभिः स्वर्विदभवो विचक्षण ।
 जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना १७५१

वैश्वानरस्य दुंसनाभ्यो बृहद् अरिणादेकः स्वपस्यया कविः ।

उभा पितरां महयन्नजायत अग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा १७५२

॥ १९६ ॥ (ऋ० ३ । २६ । १-३, ७-८) जगती, [१७५६-१७५७] त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वविदम् ।

सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे १७५३

तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।

बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् १७५४

अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे ।

स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतैषु जागृविः १७५५

अग्निर्गस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।

अर्कस् त्रिधातु रजसो विमानो ऽर्जसो घर्मो हविरस्मि नाम १७५६

त्रिभिः पवित्रैरपुण्ड्र्यैर्कं हुदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।

वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिर् आदिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् १७५७

॥ १९७ ॥ (ऋ० ४ । ५ । १-१५) [१७५८-१७७२] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानराय मीढुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्रये बृहद् भाः ।

अनूनेन बृहता वक्षथेन उप स्तभायदुपमिन्न रोधः १७५८

मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो दुदौ मर्त्यीय स्वधावान् ।

पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यहो अग्निः १७५९

मामं द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस् तुर्विष्मान् ।

पदं न गोरपगूहं विविद्वान् अग्निर्मह्यं प्रेदु बोचन्मनीषाम् १७६०

प्र ताँ अग्निर्वैभसत् तिग्मजम्भस् तर्षिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः ।

प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धामं प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि १७६१

अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः ।

पापासः सन्तो अनुता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् १७६२

इदं मे अग्ने कियते पावक अमिनते गुरुं भारं न मन्म ।

बृहद् दधाथ धृषता गभीरं यह्यं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु १७६३

तमिन्वेदुध समना समानम् अभि कृत्वा पुनती धीतिरदयाः ।	
ससस्य चर्मन्नाधि चारु पृश्नेर् अग्रे रूप आरुपितं जबारु	१७६४
प्रवाच्यं वचसः किं मे अस्य गुहा हितमुप निणिग् वदन्ति ।	
यदुस्त्रियाणामप वारिव व्रन् पार्ति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः	१७६५
इदमु त्यन्महि महामनीकं यदुस्त्रिया सचत पूर्य गौः ।	
ऋतस्य पदे अधि दीघानं गुहा रघुप्यद् रघुयद् विवेद	१७६६
अध द्युतानः पित्रोः सचासा ऽमनुत गुह्यं चारु पृश्नेः ।	
मातुष पदे परमे अन्ति षद् गोर वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा	१७६७
ऋतं वोचे नमसा पृच्छयमानस् तवाशसा जातवेदो यदीदम् ।	
त्वमस्य क्षयसि यद् विश्वं दिवि यद् द्रविणं यत् पृथिव्याम्	१७६८
किं नो अस्य द्रविणं कद् रत्नं वि नो वोचो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म	१७६९
का मर्यादा वयुना कद् वामम् अच्छा गमेम रघवो न वाजम् ।	
कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरौ वर्णेन ततननुपासः	१७७०
अनिरेण वचसा फल्ग्वेन प्रतीत्येन कृधुनातुपासः ।	
अथा ते अग्रे किमिहा वदन्ति अनायुधास आसता सचन्ताम्	१७७१
अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम आ रुरोच ।	
रुशद् वसानः सुदशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अधौत्	१७७२

॥ १९८ ॥ (ऋ० ६ । ७ । १-७)

[१७७३-१७९३] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १७७८—१७७९ जगती ।

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।	
कविं सम्राजमार्तिथिं जनानाम् आसन्ना पात्रं जनयन्त देवाः	१७७३
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त ।	
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य कृतं जनयन्त देवाः	१७७४
त्वद् विप्रो जायते वाज्यग्रे त्वद् वीरासो अभिमातिषाहः ।	
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वस्त्रानि राजन् त्स्पृहयाय्याणि	१७७५

त्वां विश्वे अमृतं जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।	
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत् पित्रोरदीदेः	१७७६
वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्रे नकिरा दधर्ष ।	
यज् जायमानः पित्रोरुपस्थे ऽविन्दः केतुं वयुनेष्वहाम्	१७७७
वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना ।	
तस्येदु विश्वा भुवनार्धि मूर्धनि वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः	१७७८
वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो वि दिवो रौचिना कविः ।	
परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथे ऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता	१७७९

॥ १९९ ॥ (ऋ० ६ । ८ । १-७) जगती, १७८६ त्रिष्टुप् ।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः ।	
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोम इव पवते चारुरग्रे	१७८०
स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत ।	
व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्	१७८१
व्यस्तभ्राद् रोदसी मित्रो अद्भुतो ऽन्तर्वावदकृणोज् ज्योतिषा तमः ।	
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद् वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम्	१७८२
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुर्कृग्निर्यम् ।	
आ दूतो अग्निमभरद् विवस्वतो वैश्वानर मातरिश्वा परावतः	१७८३
युगेयुगे विदथ्यं गुणञ्चो ऽग्रे रयिं यशसं धेहि नव्यसीम् ।	
पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा	१७८४
अस्माकमग्रे मधवत्सु धारय अनामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।	
वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्रे तवोतिभिः	१७८५
अदब्धेभिस् तव गोपाभिरिष्टे ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरिन् ।	
रक्षा च नो ददुषां शर्धो अग्रे वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः	१७८६

॥ २०० ॥ (६ । ९ । १-७) त्रिष्टुप् ।

अहश् च कृष्णमहरजुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।	
वैश्वानरो जायमानो न राजा अवातिरज् ज्योतिषाग्निस् तमांसि	१७८७

नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं	न यं वयान्ति समरेऽतमानाः ।	
कस्य स्वित् पुत्र इह वक्त्वानि	परो वंदात्यवरेण पित्रा	१७८८
स इत् तन्तुं स वि जानात्योतुं	स वक्त्वान्यृतुथा वंदाति ।	
य ई चिकेतदुमृतस्य गोपा	अवश् चरन् परो अन्येन पश्यन्	१७८९
अयं होता प्रथमः पश्यतेमम्	इदं ज्योतिरुमृतं मर्त्येषु ।	
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तो	ऽमर्त्यस् तन्वाइ वर्धमानः	१७९०
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृश्ये कं	मनो जविष्ठं पतर्यस्वन्तः ।	
विश्वे देवाः समनसः सकेता	एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु	१७९१
वि मे कर्णी पतयतो वि चक्षुर्	वीइदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।	
वि मे मनश् चरति दूरार्धोः	किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये	१७९२
विश्वे देवा अनमस्यन् भियानास्	त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।	
वैश्वानरोऽवतूतये नो	ऽमर्त्योऽवतूतये नः	१७९३

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७ । ५ । १-९) [१७९४-१८१२] वासिष्ठा मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

प्रागग्रे तवसे भरध्वं	गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः ।	
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे	वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः	१७९४
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां	नेता सिन्धूनां वृषभः स्तिर्यानाम् ।	
स मानुषीरभि विशो वि भाति	वैश्वानरो वावृधानो वरेण	१७९५
त्वद् भिया विश आयन्नसिक्तीर्	असमना जहतीर्भोजनानि ।	
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः	पुरो यदग्ने दुरयन्नदीदेः	१७९६
तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्	वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।	
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थ	अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः	१७९७
त्वामग्ने हरितो वावशाना	गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।	
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां	वैश्वानरमुषसां केतुमह्वाम्	१७९८
त्वे असुर्यो वसवो न्यृण्वन्	क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।	
त्वं दस्यूरोकसो अग्न आज	उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय	१७९९

स जायमानः परमे व्योमन् वायुर्न पाथुः परिं पासि सुद्यः ।	
त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन् अर्पत्याय जातवेदो दशस्यन्	१८००
तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।	
यया राधुः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय	१८०१
तं नो अग्ने मध्वद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यै युवस्व ।	
वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः	१८०२

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७।६।१-७)

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्ति पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।	
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि	१८०३
कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर् हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।	
पुरंदरस्य गीर्भिरा विवासे ऽग्नेर्व्रतानि पूर्या महानि	१८०४
न्यक्रतून् ग्रथिनो मध्रवाचः पर्णीरंश्रद्धां अवृधौ अयज्ञान् ।	
प्रप्र तान् दस्यूरग्निर्विवाय पूर्वश चकारापरां अयज्यन्	१८०५
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचींश् चकार नृतमः शचीभिः ।	
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषे ऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून	१८०६
यो देहोऽनमयद् वधस्त्रैर् यो अर्यपत्नीरुषसंश् चकार ।	
स निरुध्या नहुषो यहो अग्निर् विशंश् चक्रे बलिहतः सहोभिः	१८०७
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास् एवैस् तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः ।	
वैश्वानरो वरमा रोदस्योर् आग्निः संसाद पित्रोरुपस्थम्	१८०८
आ देवो ददे बुध्याऽ वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य ।	
आ समुद्रादवरादा परस्माद् आग्निर्देदे दिव आ पृथिव्याः	१८०९

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७।१३।१-३)

प्राग्रये विश्वशुचं धियंधे ऽसुरग्ने मन्म धीतिं भरध्वम् ।	
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम्	१८१०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान् आ रोदसी अपृणा जायमानः ।	
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा	१८११

जातो यदग्ने भुवना व्यस्यः पशून् न गोपा इर्यः परिज्मा ।
वैश्वानरं ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१८१२

३ रक्षोहाऽग्निः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० ४ । ४ । १-१५) [१८१३-१८२७] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इमेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिं दूणानो ऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः १८१३
तव भ्रमासं आशुया पतन्ति अनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
तपूष्यमे जुह्वा पतङ्गान् असंदितो वि सृज विष्वगुल्काः १८१४
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवां पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दुरे अघशंसो यो अन्ति अग्ने मार्किष्टे व्यथिरा दधर्षात् १८१५
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् १८१६
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मद् आविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् १८१७
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् ।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्ययो वि दुरो अभि द्यात् १८१८
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर् यस् त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासद्विष्टिः १८१९
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सं ते वावातां जरतामियं गीः ।
स्वश्वास् त्वा सुरथा मर्जयेम अस्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून् १८२०
इह त्वा भूर्या चरेदुष त्मन् दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून् ।
क्रीळन्तस् त्वा सुमनसः सपेम अभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् १८२१
यस् त्वा स्वर्धः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस् तं आतिथ्यमानुषग् जुजोषत् १८२२

महो रुजामि बन्धुता वचोभिस् तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय । त्वं नो अस्य वचसश् चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः	१८२३
अस्वप्नजस् तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः । ते पायवः सध्र्यश्चो निषद्य अग्रे तव नः पान्त्वमूर	१८२४
ये पायवो मामतेयं ते अग्रे पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् । ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देशुः	१८२५
त्वया वयं सध्न्यस् त्वोतास् तव प्रणीत्यश्याम वाजान् । उभा शंसां स्रुदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्ययाण	१८२६
अया ते अग्रे समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय । दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्	१८२७

॥ २०५ ॥ (क्र० १० । ८७ । १-२५)

[१८२८—१८५२] पायुर्भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १८४९-५२ अनुष्टुप् ।

रक्षोहणं वाजिन्मा जिघर्षि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्	१८२८
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानान् उप स्पृश जातवेदः समिद्धः । आ जिह्वया मूर्देवान् रभस्व क्रव्यादो वृक्त्वयपि धत्स्वासन्	१८२९
उभोभयाविश्रुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च । उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ् जम्भैः सं धेह्याभि यातुधानान्	१८३०
यज्ञैरिषूः संनममानो अग्रे वाचा शल्यां अशनिभिर्दिहानः । ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ध्येषाम्	१८३१
अग्रे त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंसाशनिर्हरसा हन्त्वेनम् । प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम्	१८३२
यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस् तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम् । यद् वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्तां विध्य शर्वा शिशानः	१८३३
उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् । अग्रे पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादुः क्ष्विक्कास तमदन्त्वेनीः	१८३४

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने	यो यातुधानो य इदं कृणोति ।	
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ	नृचक्षसश् चक्षुषे रन्ध्रयैनम्	१८३५
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं	प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः ।	
हिंसं रक्षोस्यभि शोशुचानं	मा त्वा दभन् यातुधाना नृचक्षः	१८३६
नृचक्षा रक्षः परि पश्य विश्व	तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा ।	
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि	त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च	१८३७
त्रिर्योतुधानः प्रसिति त एतु	ऋतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति ।	
तमर्चिषा स्फूर्जयज् जातवेदः	समक्षमेनं गृणते नि वृद्धि	१८३८
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे	शंफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् ।	
अथर्ववज् ज्योतिषा दैव्येन	सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष	१८३९
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो	यद् वाचस् तृष्टं जनयन्त रेभाः ।	
मन्योर्मनसः शर्व्याड् जायते या	तया विध्य हृदये यातुधानान्	१८४०
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्	पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।	
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि	परासुतृपो अभि शोशुचानः	१८४१
पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु	प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः ।	
वाचास् तैनं शर्व कच्छन्तु मर्मन्	विश्वस्यैतु प्रसिति यातुधानः	१८४२
यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्के	यो अक्ष्येन पशुना यातुधानः ।	
यो अद्याया भरति क्षीरमग्ने	तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च	१८४३
संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्	तस्य माशीद् यातुधानो नृचक्षः ।	
पीयूषमग्ने यतमस् तितृप्सात्	तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्	१८४४
विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु	आ वृश्च्यन्तामदितये दुरेवाः ।	
परैरान् देवः संविता ददातु	परा भागमोषधीनां जयन्ताम्	१८४५
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्	न त्वा रक्षांमि पृतनासु जिग्युः ।	
अनु दह सहमूरान् क्रव्यादो	मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः	१८४६
त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्	त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ।	
प्रति ते ते अजरासस् तपिष्ठा	अवशंसं शोशुचतो दहन्तु	१८४७

पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् कविः काव्येन परि पाहि राजन् ।	
सखे सखायमजरौ जरिम्णे ऽग्ने मर्ता अमर्त्यस् त्वं नः	१८४८
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि ।	
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्	१८४९*
विपेणं भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह ।	
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः	१८५०
प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना ।	
सं त्वा शिशामि जागृहि अदब्धं विप्र मन्मभिः	१८५१
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति ।	
यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्	१८५२
॥ २०६ ॥ (ऋ० १०। ११८। १—९) [१८५३-१८६१] उरुक्षय आमहीयवः । गायत्री ।	
अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन् मर्त्येष्वाम । स्वे क्षये शुचिव्रत	१८५३
उत् तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे । यत् त्वा सुचः समस्थिरन्	१८५४
स आहुतो वि रोचते ऽगिरीलेन्यो गिरा । सुचा प्रतीकमज्यते	१८५५
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभावंसुः	१८५६
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः	१८५७
तं मर्ता अमर्त्य घृतेनाग्निं संपर्यत । अदाभ्यं गृहपतिम्	१८५८
अदाभ्येन शोचिषा ऽग्ने रक्षस् त्वं दह । गोपा ऋतस्य दीदिहि	१८५९
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः । उरुक्षयेषु दीद्यत्	१८६०
तं त्वा गीभिर्ऋक्षया हव्यवाहं समीधिरे । यजिष्ठं मानुषे जनं	१८६१

४ जातवेदा अग्निः ।

॥ २०७ ॥ (ऋ० १। ९९। १) [१८६२] ऋक्षपो मारीचः । त्रिष्टुप् ।

जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातीयतो नि दहाति वेदः ।	
स नः पर्यदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः	१८६२

॥ २०८ ॥ (ऋ० १० । १८८ । १-३) [१८६३-१८६५] इयं आग्नेयः । गायत्री ।

प्र नूनं जातवेदसम् अश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिःसदं १८६३
अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीहुषः । महीमियमि सुष्टुतिम् १८६४
या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु १८६५

॥ २०९ ॥ (अथर्ववेदे कां० ७ । ८४ (८९) । १) [१८६६] भृगुः । जगती ।

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्रे क्षत्रभृद् दीदिहीह ।
विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् १८६६

५ घर्मोऽग्निः ।

॥ २१० ॥ (ऋ० १ । ११२ । १ छितीयः पादः) [१८६७] कुत्स आंगिरसः ।

अग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । १८६७

६ औषसोऽग्निः ।

॥ २११ ॥ (ऋ० १ । ९५ । १-११) [१८६८-१८७८] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते ।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ् छुक्रो अन्यस्यां ददशे सुवर्चाः १८६८
दशेमं त्वष्टृर्जनयन्त गर्भम् अतन्द्रासो युवतयो विभृत्रम् ।
तिग्मानीकं स्वयंशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति १८६९
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु ।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानाम् ऋतून् प्रशासद् वि दधावनुष्टु १८७०
क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः ।
बहूनां गर्भो अपसामुपस्थात् महान् कविर्निश् चरति स्वधावान् १८७१
आविष्ट्यो वर्धते चारुं रासु जिह्वानामूर्ध्वः स्वयंशा उपस्थे ।
उभे त्वष्टुर्विभ्यतुर्जायमानात् प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते १८७२

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः ।	
स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूव अञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः	१८७३
उद् यैयमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन् ।	
उच्छ्रुक्रमत्कमजते सिमस्मात् नवा मातृभ्यो वसना जहाति	१८७४
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् संपृञ्चानः सद्ने गोभिरद्भिः ।	
कविर्बुधं परि मर्मज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव	१८७५
उरु ते जयः पर्येति बुधं विरोचमानं महिषस्य धाम ।	
विश्वेभिरग्ने स्वयंशोभिरिद्धो ऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान्	१८७६
धन्वन् त्स्रोतः कृणुते गातुमूर्भि शुक्रैरूर्भिर्भिरभि नक्षति क्षाम् ।	
विश्वा सनानि जठरैषु धत्ते ऽन्तर्नवासु चरति प्रसृष्टु	१८७७
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत् पावक श्रवसे वि भाहि ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१८७८

७ द्रविणोदा अग्निः ।

॥ २१२ ॥ (ऋ० १।९६।१-२) [१८७९—१८८७] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

स प्रलथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा ।	
आपंश् च मित्रं धिषणा च साधन् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८७९
स पूर्वया निविदा कव्यतायोर् इमाः प्रजा अजनयन् मनूनाम् ।	
विवस्वता चक्षसा द्यामपश् च देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८०
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् ।	
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८१
स मातरिश्वा पुरुवारं पुष्टिर् विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित् ।	
विशां गोपा जनिता रोदस्योर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८२
नक्तोषासा वर्णमामेभ्याने धापयेते शिशुमेकं समीची ।	
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८३

रायो बुध्नः संगमनो वस्त्रनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वेः ।	
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८४
नू च पुरा च सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम् ।	
सतश् च गोपां भवतश् च भूरैर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८५
द्रविणोदा द्रविणसस् तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यंसन् ।	
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रांसते दीर्घमायुः	१८८६
एवा नो अग्ने सुमिधां वृधानो० । (१८७८)	

७ शुचिरग्निः ।

॥ २१३ ॥ (क्र० १।९७।१-८) (१८८७-१८९४) कुत्स आङ्गिरसः । गायत्री ।

अप नः शोशुचदुघम्	अग्ने शुशुग्ध्या रयिम् ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८७
सुक्षेत्रिया सुगातुया	वसूया च यजामहे ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८८
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	प्रास्माकांसश् च सूर्यः ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	जायमहि प्र ते वयम् ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९०
प्र यदग्नेः सहस्वतो	विश्वतो यन्ति भानवः ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९१
त्वं हि विश्वतोमुख	विश्वतः परिभूरसि ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९२
द्विषो नो विश्वतोमुख	अति नावेव पारय ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९३
स नः सिन्धुमिव नावया	अति पर्षा स्वस्तये ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९४

८ अग्निरापो गावश्च ।

अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा ।

॥ २१४ ॥ (ऋ० ४।५८। १-११) [१८९५-१९०५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, १९०५ जगती ।

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारद् उपांशुना सममृतत्वमानद् ।

घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः १८९५

वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्य अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।

उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौर एतत् १८९६

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश १८९७

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गर्वि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।

इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः १९९८

एता अर्पन्ति हृद्यात् समुद्रात् शतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।

घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् १९९९

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।

एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीपमाणाः १९००

सिन्धोरिव प्राध्वने शङ्घनासो वार्तप्रमियः पतयन्ति यद्वाः ।

घृतस्य धारा अरुपो न वाजी काष्ठा भिन्दन्मूर्भिभिः पिन्वमानः १९०१

अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मर्यमानासो अग्निम् ।

घृतस्य धाराः समिधो न सन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः १९०२

कन्या इव वहतुमेतवा उ अङ्गयज्ञाना अभि चाकशीमि ।

यत्र सोमः सुयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते १९०३

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम् अस्मासु भद्रा द्रविणानि घत्त ।

इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते १९०४*

धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितम् अन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ।

अपामनीके समिधे य आभृतस् तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् १९०५

१ आप्रीसूक्तानि ।

॥ २१५ ॥ (ऋ० १ । १३ । १-१२)

१९०६-१७ मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इल्लः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसां, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीलाभात्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः] । गायत्री ।

सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च १९०६
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये १९०७
नराशंसमिह प्रियम् अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् १९०८
अग्ने सुखर्तमे रथे देवाँ ईल्लित आ वह । असि होता मनुर्हितः १९०९
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् १९१०
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्वतः । अद्या नूनं च यष्टवे १९११
नक्तोषासां सुपेशसा अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । इदं नो बर्हिरासदे १९१२
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् १९१३
इल्ला सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वसिधः १९१४
इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः १९१५
अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम् १९१६
स्वाहा यज्ञं कृणोतुन इन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये १९१७

॥ २१६ ॥ (ऋ० १ । १४२ । १-१३)

१९१८-३० दीर्घमता औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इल्लः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसां, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीलाभात्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः, १३ इन्द्रः] । अनुष्टुप् ।

समिद्धो अग्न आ वह देवाँ अद्य यत्सुचे । तन्तुं तनुष्व पूर्य सुतसोमाय दाशुषे १९१८
घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात् । यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः १९१९
शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति । नराशंसस् त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः १९२०
ईल्लितो अग्न आ वह इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । इयं हि त्वा मतिर्मम अच्छा सुजिह्व वच्यते १९२१
स्तृणानासो यत्सुचो बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे । वृज्जे देवव्यचस् तमम् इन्द्राय शर्म सप्रथः १९२२
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रये देवेभ्यो महीः । पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्वतः १९२३

आ भन्दमाने उपाक्वे नक्तोपासा सुपेशसा । यद्ही कृतस्य मातरा सीदतां बर्हिः सुमत् १९२४
 मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमं सिध्मद्य दिविस्पृशम् १९२५
 शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती । इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः १९२६
 तन्नस् तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरु त्मना । त्वष्टा पोषाय विष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः १९२७
 अवसृजन्नुप त्मना देवान् यक्षि वनस्पते । अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः १९२८
 पृषण्वते मरुत्वते विश्वदैवाय वायवे । स्वाहा गायत्रेवैपसे हव्यमिन्द्राय कर्तन १९२९
 स्वाहाकृतान्या गृहि उप हव्यानि वीतये । इन्द्रा गृहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे १९३०

॥ २१७ ॥ (क्र० १ । १८८ । १-११)

१९३१-४१ अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उपासानक्ता, ७ दैव्यो होतारौ प्रचेतसा, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित्	। दूतो हव्या कविर्वह	१९३१
तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते	। दधत् सहस्रिणीरिषः	१९३२
आजुह्वानो न ईड्यो देवा आ वक्षि यज्ञियान्	। अग्रं सहस्रसा असि	१९३३
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन्	। यत्रादित्या विराजथ	१९३४
विराट् सम्राड् विभ्वीः प्रभ्वीर् बह्वीश् च भूयसीश् च याः ।	दुरो घृतान्यक्षरन्	१९३५
सुरुक्मे हि सुपेशसा अधि श्रिया विराजतः ।	। उपासावेह सीदताम्	१९३६
प्रथमा हि सुवाचसा होतारा दैव्या कवी	। यज्ञं नो यक्षतामिमम्	१९३७
भारतीळे मरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे	। ता नश् चोदयत श्रिये	१९३८
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून् विश्वान् त्समानजे	। तेषां नः स्फातिमा यज	१९३९
उप त्मन्या वनस्पते पार्थो देवेभ्यः सृज	। अग्निर्हव्यानि सिष्वदत्	१९४०
पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते	। स्वाहाकृतीषु रोचते	१९४१

॥ २१८ ॥ (क्र० २ । ३ । १-११)

१९४२-५२ गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उपासानक्ता, ७ देव्यो होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः] । त्रिष्टुप्; १९४८ जगती ।

समिद्धो अग्निर्निर्हितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात् ।
 होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान् यजत्वग्निर्हन्

१९४

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मद्वा स्वर्चिः ।	
घृतपुषा मनसा हव्यमुन्दन् मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्	१९४३
ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन् देवान् यक्षि मानुषात् पूर्वो अद्य ।	
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतम् इन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम्	१९४४
देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम् ।	
घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आदित्या यज्ञियासः	१९४५
वि श्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः ।	
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजूर्या वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम्	१९४६
साध्वपांसि सनतां न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते ।	
तन्तुं तत् संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुधे पयस्वती	१९४७
दैव्या होतारा प्रथमा त्रिदुष्टर ऋजु यक्षतः समृचा वपुष्टरा ।	
देवान् यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु	१९४८
सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः ।	
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदम् अच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य	१९४९
पिशङ्गरूपः सुभरो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः ।	
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिस्मस्मे अथा देवानामप्येतु पार्थः	१९५०
वनस्पतिरवसृजन्नुपं स्थाद् अग्निर्हविः सृदयाति प्र धीभिः ।	
त्रिधा समक्तं नयतु प्रजानन् देवेभ्यो दैव्यः समितोप हव्यम्	१९५१
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर् घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम ।	
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्	१९५२

॥ २१९ ॥ (ऋ० ३।४। १-११)

१९५३-६३ विश्वामित्रो गाथिनः॥ आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपान्, ३ इळा, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः] । त्रिष्टुप् ।

समित् समित् सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रांसि वस्वः ।
आ देव देवान् यजथाय वक्षि सखा सखीन् त्सुमना यक्षये १९५३

यं देवासस् त्रिरहन्नायजन्ते	दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः ।	
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस्	तनूनपाद्भृतयोनिं विधन्तम्	१९५४
प्र दीर्घितिर्विश्ववारा जिगाति	होतारमिळः प्रथमं यजध्वै ।	
अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्वै	स देवान् यक्षदक्षितो यजीयान्	१९५५
ऊर्ध्वो वां गतुरध्वरे अकारि	ऊर्ध्वा शोचीषि प्रस्थिता रजांसि ।	
दिवो वा नाभा न्यसादि होता	स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः	१९५६
सप्त होत्राणि मनसा वृणाना	इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन ।	
नृपेशसो विदथेषु प्र जाता	अभीक्ष्णं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः	१९५७
आ भन्दमाने उपसा उपाके	उत स्मयेते तन्वाक्ष विरूपे ।	
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषद्	इन्द्रो मरुत्वां उत वा महोभिः	१९५८
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे	सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।	
ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहुर	अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः	१९५९
आ भारती भारतीभिः सजोषा	इळा देवैर्मनुष्यैर्भिरग्निः ।	
सरस्वती सारस्वतेभिर्वाक्	तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं संदन्तु	१९६०
तन्नस् तुरीपमधं पोषयितु	देवं त्वष्टृर्विराणः स्यस्व ।	
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो	युक्तग्रावा जायते देवकामः	१९६१
वनस्पतेऽवं सृजोषं देवान्	अग्निर्हविः शमिता संदयाति ।	
सेदु होता सत्यतरो यजाति	यथा देवानां जनिमानि वेद	१९६२
आ याह्यग्रे समिधानो अर्वाङ्	इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।	
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा	स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	१९६३

॥ २२० ॥ (ऋ० ५ । ५ । १-११)

१९६४-७३ वसुधुत आत्रेयः । आग्रीसूक्तं = (क्रमेण- १ इधमः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळाः, ४ बर्हिः, ५ देवीर्द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्या होतारो प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा भारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

सुसमिद्धाय शोचिषे	घृतं तीव्रं जुहोतन	। अग्नये जातवेदसे	१९६४
नराशंसः सुषूदति	इमं यज्ञमदाभ्यः	। कविर्हि मधुहस्त्यः	१९६५

ईलितो अग्न आ वह	इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । सुखै रथैभिरुतये	१९६६
ऊर्णप्रदा वि प्रथस्व	अभ्यर्का अनूषत । भवा नः शुभ्र सातये	१९६७
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं	सुप्रायणा न उतये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन	१९६८
सुप्रतीके वयोवृधा	यज्ञी ऋतस्य मातरा । दोषामुपासमीमहे	१९६९
वार्तस्य पत्मन्नीलिता	दैव्या होतारा मनुषः । इमं नो यज्ञमा गतम्	१९७०
इळा सरस्वती मही० । (१९१४)		
शिवस् त्वष्टरिहा गहि	विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव	१९७१
यत्र वेत्थ वनस्पते	देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय	१९७२
स्वाहाग्नये वरुणाय	स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः । स्वाहा देवेभ्यो हविः	१९७३

॥ २९१ ॥ (ऋ० ७।२।१-११)

१९७४-८० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं- (क्रमेण १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवाः द्वारः, ६ उपासानक्ता, ७ दैव्या होतारौ प्रचेतसां, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्याः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य	शोचा बृहद् यजतं धूममुष्वन् ।	
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः	सं रश्मिभिस् ततनः सूर्यस्य	१९७४
नराशंसस्य महिमानमेषाम्	उप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।	
ये सुकृतवः शुचयो धियंधाः	स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या	१९७५
ईलेन्यं वो असुरं सुदक्षम्	अन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम् ।	
मनुष्वदुमि मनुना समिद्धं	समध्वराय सदुमिन्महेम	१९७६
सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु	प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ ।	
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्	अध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम्	१९७७
स्वाध्योऽ वि दुरो देवयन्तो	ऽशिश्नू रथयुर्देवताता ।	
पूर्वां शिशुं न मातरा रिहाणे	समग्रुवो न समनेष्वञ्जन्	१९७८
उत योषणे दिव्ये मही न	उपासानक्ता सुदुधेव धेनुः ।	
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी	आ यज्ञिये सुवितार्य श्रयेताम्	१९७९
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू	मन्ये वां जातवेदसा यजध्वै ।	
ऊर्ष्व नो अध्वरं कृतं हवेषु	ता देवेषु वनथो वार्याणि	१९८०

आ भारती भारतीभिः सजोषा० । (१९६०)

तन्नस् तुरीयमधं पोषयितु० । (१९६१)

वनस्पतेऽर्वं सजोषं देवान्० । (१९६२)

आ याह्यग्रे समिधानो अर्वाङ्० । (१९६३)

॥ २२२ ॥ (ऋ० ९।५।१-११)

१९८१-९१ असितः काश्यपो देवलो वा । आग्नीसूक्तं=(क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीद्वार, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः । गायत्री, १९९४-९७ अनुष्टुप् ।

समिद्धो विश्वतस्पतिः	पर्वमानो वि राजति ।	ग्रीणन् वृषा कर्निकदत्	१९८१
तनूनपात् पर्वमानः	शृङ्गे शिशानो अर्षति ।	अन्तारिक्षेण रारजत्	१९८२
इळैन्यः पर्वमानो	रयिधि राजति द्युमान् ।	मधोर्धाराभिरोजसा	१९८३
बर्हिः प्राचीनमोजसा	पर्वमानः स्तृणन् हरिः ।	देवेषु देव ईयते	१९८४
उदातैर्जिहते बृहद्	द्वारो देवीर्हिरण्ययीः ।	पर्वमानेन सुष्टुताः	१९८५
सुशिल्पे बृहती मही	पर्वमानो वृषण्यति ।	नक्तोषासा न दर्शते	१९८६
उभा देवा नृचक्षसा	होतारा दैव्या हुवे ।	पर्वमान इन्द्रो वृषा	१९८७

भारती पर्वमानस्य सरस्वतीळा मही । इमं नो यज्ञमा गमन् तिस्रो देवीः सुपेशसः १९८८
 त्वष्टारमग्रजां गोपां पुरोयावानमा हुवे । इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः पर्वमानः प्रजापतिः १९८९
 वनस्पतिं पर्वमान मध्वा समङ्ग्धि धारया । सहस्रवल्शं हरितं भ्राजमानं हिरण्ययम् १९९०
 विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं पर्वमानस्या गत । वायुर्बृहस्पतिः सूर्यो ऽग्निरिन्द्रः सजोषसः १९९१

॥ २२३ ॥ (ऋ० १०।७०।१-११)

१९९२-२००२ सुमित्रो वाच्यश्वः । आग्नीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

इमां मे अग्रे समिधं जुषस्व इळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम् ।
 वर्ष्मन् पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्वाम् ऊर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या १९९२
 आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः ।
 ऋतस्य पथा नमसा म्रियेधो देवेभ्यो देवतमः सुषूदत् १९९३

शश्चत्तममीकते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् । वहिष्मैः सुवृता रथेन आ देवान् वक्षि नि षदेह होता	१९९४
वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्वाध्मा सुरभि भूत्वस्मे । अहेळता मनसा देव बहिर् इन्द्रज्येष्ठो उशतो यक्षि देवान्	१९९५
दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम् । उशतीर्द्वीरो महिना महद्भिर् देवं रथं रथयुधीरयध्वम्	१९९६
देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनां । आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थं	१९९७
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदुभिः समिद्धः प्रिया धामान्यदितेरुपस्थं । पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन् विदुष्टरा द्रविणमा यजथाम्	१९९८
तिस्रो देवीर्बहिर्दं वरीय आ सीदत चक्रुमा वः स्योनम् । मनुष्वद् यज्ञं सुधिता हवींषि इळा देवी घृतपदी जुपन्त	१९९९
देवं त्वष्टर्यद्धं चारुत्वमानद् यदाङ्गिरसामभवः सचाभूः । स देवानां पाथ उप प्र विद्वान् उशन् यक्षि द्रविणोदः सुग्लैः	२०००
वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान् । स्वदाति देवः कृण्वद्धवींषि अवतां द्यावापृथिवी हवीं मे	२००१
आग्ने वह वरुणमिष्ट्ये न इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात् । सीदन्तु बहिर्विश्च आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२००२

॥ २२४ ॥ (ऋ० १० । ११० । १ ११)

११ जमदग्निर्भागवः, रामो वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं = (क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळा, ४ बार्हीः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ देव्यो होतागो प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् । (अथर्व० ५ । १० । १-११ [अथर्ववेदे अंगिरा ऋषिः ।] काठक सं० १६ । २०, मैत्रायणी सं० ४।१३ । ३; तै० ब्रा० ३।६।३)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२००३
तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्वस्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः	२००४

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्च आ याह्यग्रे वसुभिः सजोषाः । त्वं देवानामसि यहु होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२००५
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् । व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्	२००६
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२००७
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने	२००८
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजर्ध्यै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्तां	२००९
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेतु इळा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु	२०१०
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिशद्भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२०११
उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवींषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२०१२
मद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञम् अग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२०१३

२२५ ॥ (वा० यजुर्वेद २०।३६-४६, तैत्ति० सं० २।६।८; काठकसं० ३।८।६, मैत्रायणीसं० ३।११।१।)

समिद्धं इन्द्र उषसामनीके पुरुरुचा पूर्वकृद् वावृधानः । त्रिभिर्देवैस् त्रिंशता वज्रं बाहुर् जघान वृत्रं वि दुरो ववार	२०१४
नराशंसः प्रति शूरो मिमानस् तनूनपात् प्रति यज्ञस्य धाम । गोभिर्वपावान् मधुना समञ्जन् हिरण्यैश् चन्द्री यजति प्रचेताः	२०१५

मैत्रायणी-पाठभेदाः- २०१४ (१ समिद्धा) (२००४-५ मध्ये ' नराशंसस्य० ' इति मन्त्रोऽग्रे वा० यजुर्वेदे अ० २९-२५-३६ द्रष्टव्य)

काठकपाठभेदाः- २०१५ (१ यजतु)

ईडितो देवैर्हरिवाँ २ अभिष्टिर् आजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।	
पुरन्दरो गोत्रभिद् वज्रबाहुर् आ यातु यज्ञमुप नो जुषाणः	२०१६
जुषाणो बर्हिर्हरिवान् न इन्द्रः प्राचीनं सीदतु प्रदिशा पृथिव्याः ।	
उरुप्रथाः प्रथमानं स्येनम् आदित्यैरुक्तं वसुभिः सजोषाः	२०१७
इन्द्रं दुरः कवृष्यो धावमाना वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः ।	
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्तां सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः	२०१८
उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पर्यस्वती सुदुधे शूरमिन्द्रम् ।	
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे	२०१९
दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा होतारो विन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।	
मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः	२०२०
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना इन्द्रं जुषाणा जनेयो न पत्नीः ।	
अच्छिन्नं तन्तुं पर्यसा सरस्वती इडा देवी भारती विश्वतूर्तिः	२०२१
त्वष्टा दधच् छुष्ममिन्द्राय वृष्णे ऽपाकोऽचिष्ट्यशसे पुरुणि ।	
वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्	२०२२
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस् तमन्या समञ्जश् छमिता न देवः ।	
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन	२०२३
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो वृषायमाणो वृषभस् तुराषाट् ।	
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२०२४

॥ २२६ ॥ (वा० यजुर्वेद २० । ५५-६६; मैत्रा० सं० ३।११।३, काठक सं० ३।८।८; तैत्ति० ब्रा० २।६।१०)

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः ।

दुहे धेनुः सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् २०२५

मैत्रा० पाठ०- २०१६ (१ गोत्रभृद्), २०१७ (१ ना, २ सीदात्) २०१८ (१ यन्ति), २०१९ (१ पेशस्वती तन्तुना);
 २०२० (१ मनसा ; २ होतारा इन्द्र) २०२१ (१ वृषण); २०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको)
 २०२३ (१ स्वदातु), २०२४ (१ हव्यमुन्दन्स्वाहाकृतं जुषतां हव्यमिन्द्रः)

काठ० पाठ०- २०१९ (१ पेशस्वती तन्तुना), २०२० (१ मनसा , २ होतारा इन्द्र) २०२१ (१ वृषण),
 २०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको) २०२४ (१ हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य जुषतां स्वाहा)

तनूपा भिषजां सुते ऽश्विनोभा सरस्वती ।	
मध्वा रजांसीन्द्रियम् इन्द्राय पथिभिर्वहान्	२०२६
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती नराशंसेन नम्रहुम् ।	
अघातामश्विना मधु भेषजं भिषजां सुते	२०२७
आजुह्वाना सरस्वती इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् ।	
इडाभिरश्विनां विषं समर्जं संधं रयिं दधुः	२०२८
अश्विना नम्रचेः सुतं सोमं शुक्रं परिस्रुता ।	
सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे	२०२९
कवष्यो न व्यचंस्वतीर् अश्विभ्यां न दुरो दिशः ।	
इन्द्रो न रोदसी उभे दुहे कामान् त्सरस्वती	२०३०
उपासानक्तमश्विना दिवेन्द्रं सायमिन्द्रियैः ।	
सज्जानाने सुपेशसा समज्जाते सरस्वत्या	२०३१
पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तं सरस्वति ।	
देव्यां होतारा भिषजा पातमिन्द्रं सचां सुते	२०३२
तिस्रस् त्रेधा सरस्वती अश्विना भारतीडा ।	
तीव्रं परिस्रुता सोमम् इन्द्राय सुषुवुर्मदम्	२०३३
अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती ।	
इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियं रूपं रूपमधुः सुते	२०३४
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता ।	
कीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती	२०३५
गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता ।	
समघातं सरस्वत्या स्वाहेन्द्रे सुतं मधु	२०३६

मैत्रा० पाठ०- २०२६ (१ पथिभिर्वह), २०२८ (१ अश्विना इषं); २०३३ (१ इन्द्रायासुषुवु०).

२०३६ (१ समघाता)

काठ० पाठ०- २०२८ (१ अश्विना इषं); २०३० (१ दुहे), २०३३ (१ इन्द्रायासुषुवु०)

२०३४, (१ द्वितीयऽर्षः, तथा कामाक २०३५ गोपल्यते); २०३६ (१ समघाता)

॥ २२७ ॥ (वा० यजुर्वेद २१ । १२-२२; मैत्रा० सं० ३।११।११, काठक सं० ३।१०; तै० ब्रा० २।६।१८)

समिद्धो अग्निः समिधा सुसमिद्धो वरेण्यः ।	
गायत्री छन्द इन्द्रियं त्र्यविर्गौर्वयो दधुः	२०३७
तनूनपांश्च छुचिव्रतस् तनूपाश्च सरस्वती ।	
उष्णिहा छन्द इन्द्रियं दित्यवाङ् गौर्वयो दधुः	२०३८
इडाभिरग्निरिडयः सोमो देवो अमर्त्यः ।	
अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्वयो दधुः	२०३९
सुबर्हिरग्निः पूषण्वान् स्तीर्णबर्हिरमर्त्यः ।	
बृहती छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो दधुः	२०४०
दुरो देवीर्दिशो महीर् ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।	
पङ्क्तिश् छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाङ् गौर्वयो दधुः	२०४१
उषे यह्नी सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः ।	
त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाङ् गौर्वयो दधुः	२०४२
दैव्या होतारा भिषजा इन्द्रेण सयुजा युजा ।	
जगती छन्द इन्द्रियम् अनड्वान् गौर्वयो दधुः	२०४३
तिस्र इडा सरस्वती भारती मरुतो विशः ।	
विराट् छन्द इहेन्द्रियं धेनुर्गौर्न वयो दधुः	२०४४
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।	
द्विपदा छन्द इन्द्रियम् उक्षा गौर्न वयो दधुः	२०४५
शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।	
ककुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः	२०४६
स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ।	
अतिच्छन्दा इन्द्रियं बृहद् ऋषभो गौर्वयो दधुः	२०४७

मैत्रा० पाठ०-- २०३७ (१ त्रियवि०), २०३८ (१ अयं प्रथमोऽधो न दश्यते; २ उष्णिक्), २०४१ (१ इन्द्रियं);
 २०४४ (१ तिस्रो देवीरिडा मही; २ इन्द्रियं), २०४६ (१ ऋषभो गौर्वयो), २०४७
 (१ बृहद्वशा वेहद्वयो)

काठ० पाठ०-- २०३७ (१ त्रियवि०), २०४१ (२ इहेन्द्रियं), २०४५ (१ अतिच्छन्द; २ बृहद्वयो)

॥ २२८ ॥ (वा० यजुर्वेद २१।२९—४०; मैत्रायणी सं० ३।११।२; तै० ब्रा० २।६।११)

होता यक्षत् समिधाग्निमिडस्पदे—ऽश्विनेन्द्रां सरस्वती—मजो धुम्रो न गोधूमैः कुर्वलै-
भेषजं मधु शप्तेर्न तेज इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०४८

होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वती—मर्विर्मेषो न भेषजं पथा मधुमतां भर—अश्विनेन्द्राय
वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्माभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०४९

होता यक्षन्नराशं न नग्रहं पतिं सुरयां भेषजं मेषः सरस्वती भिषग् रथो न
चन्द्रयश्विनो—वपा इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्माभिः पयः सोमः
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५०

होता यक्षदिडेडित आजुह्वानः सरस्वती—मिन्द्रं बलेन वर्धय—नृषभेण गर्वेन्द्रिय—म-
श्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभि—र्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं
मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५१

होता यक्षद् बहिरूर्णम्रदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्चा शिशुमती भिषग् धेनुः
सरस्वती भिषग् दुह इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०५२

होता यक्षद् दुरो दिशः कवृष्यो न व्यचस्वती—रश्विभ्यां न दुरो दिशं इन्द्रो न
रोदसी दुघे दुहे धेनुः सरस्वत्य—श्विनेन्द्राय भेषजं शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५३

होता यक्षत् सुपेशसोषे नक्तं दिवा—श्विना समञ्जाते सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न
भेषजं श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५४

मैत्रा० पाठ० - २०४९ (१ मधुमदाभरण०; २ वेत्वाज्यस्य); २०५० (१ सुराया, २ वेत्वाज्यस्य);
२०५२ (१ भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं); २०५३ (१ दिशा; २ 'अश्विनेन्द्राय भेषजं' इति न
दृश्यते) २०५४ (१ संजानाने सुपेशमा समञ्जाते, २ त्विषिमिन्द्रेण; ३ हृदा पयः; ४ वीतामा-
ज्यस्य)

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजाश्विने—न्द्रं न जाग्रवि दिवा नक्तं न भेषजैः शूष॑थ
सरस्वती भिषक् सीसैन दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०५५

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे हिरण्ययं—माश्विनेडा न
भारती वाचा सरस्वती महं इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५६

होता यक्षत् सुरेतसंमृषभं नर्यापसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं न सरस्वती—मोजो न
जुतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग् यशः सुर्या भेषज॑थ श्रिया न मासरं
पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५७

होता यक्षद् वनस्पति॑थ शमितार॑थ शतक्रतुं भीमं न मन्यु॑थ राजानं व्याघ्रं नमसा-
श्विना भाम॑थ सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वा ज्यस्य होतर्यजं २०५८

होता यक्षदुग्धि॑थ स्वाहाज्यस्य स्तोक्राना॑थ स्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा छागम-
श्विभ्या॑थ स्वाहा भेष॑थ सरस्वत्यै स्वाहं ऋषभमिन्द्राय सि॑थहाय सहस इन्द्रिय॑थ
स्वाहाग्निं न भेषजं॑थ स्वाहा सोममिन्द्रियं स्वाहेन्द्र॑थ सुत्रामाण॑थ सवितारं वरुणं
भिषजां पति॑थ स्वाहा वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषज॑थ स्वाहा देवा आज्यपा
जुषा॑णो अग्निभेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५९

॥ २२८ ॥ (वा० यजुर्वेद २७ । ११—२२; काठक सं० १८ । १७; मैत्रा० सं० २ । १२ । ६)

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोची॑थप्यग्नेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः २०६०

तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन २०६१

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराश॑थसो अग्ने । सुकृदेवः सविता विश्ववारः २०६२

मैत्रा० पाठ०— २०५५ (१ वीतामाज्यस्य); २०५६ (१ रूपमिन्द्रो ; २ महा). २०५७ (१ यक्षत्वष्टारं
रूपकृतं सुपेशसं वृषभं, २ सुराया; ३ वेत्वाज्यस्य), २०५८ (१ वेत्वाज्यस्य), २०५९ (१ स्वाहा;
२ भेषजैः ; ३ ०मिन्द्रियैः) [पंक्तिपदच्छेदपद्धतिः कचिद्विज्ञाः] २०६० (१ देवेभ्यो देवयानान्)
२०६२ (१ नक्षति; २ अग्निः;)

काठ० पाठ०— [पंक्तिच्छेदपद्धतिभिज्ञा] २०६१ (१ घृतेन... .प्रीणानः इत्येव एका पंक्तिः) २०६२ (१ नक्षति)

अच्छायमेति शर्वसा धृतेनेडानो वह्निर्मसा ।

अग्निं सुचो अध्वरेषु प्रयत्सु २०६३

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्द्रो सुप्रयसः ।

वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च २०६४

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः ।

उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः २०६५

ते अस्य योषणे दिव्ये न योनी उषासानक्ता ।

इमं यज्ञमवतामध्वरं नः २०६६

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नो ऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।

कृणुतं नः स्विष्टिम् २०६७

तिस्रो देवीर्बहिरेदं सन्दन्तु इडा सरस्वती भारती ।

मही गृणाना २०६८

तन्नस्तुरीपमङ्गुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम् ।

रायस्पोषं वि प्यतु नाभिमस्मे २०६९

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्मना देवेषु ।

अग्निर्हव्यं शमिता हृदयाति २०७०

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदं इन्द्राय हव्यम् ।

विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २०७१

॥ २३० ॥ (अथर्व० का० ५।२७)

१—१२ ब्रह्मा । अग्निः । १ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ; २ द्विपदा साम्नी भुरिगनुष्टुप् ; ३ द्विपदार्ची बृहती ;

४ द्विपदा साम्नी भुरिगबृहती ; ५ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ; ६ द्विपदा विराणनाम गायत्री ;

७ द्विपदा साम्नी बृहती ; ८ संस्तारपशक्तिः ; ९ षट्पदानुष्टुगर्भा पराति-

जगती, १०—१२ पुरण्डणिक (२-७ एकावसाना) ।

उर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचीष्यग्नेः ।

धुमत्तमा सुप्रतीकः सखनुस् तनूनपादसुरो भूरिपाणिः २०७२

मैत्रा० पाठ० - २०६४ (१ स ई मन्द्रा सुप्रयसा स्तरीमन् । बहिषो मित्रमहा) २०६५ (१ विश्वा) ; २०६७ (१ होतारा ऊर्ध्वमिमध्वरं, २ स्विष्टम्) ; २०६८ (१ स्थोनम् ; २ मही शब्दः नास्ति) २०६९ (१ त्वष्टः) २०७० (१ विध्य ; २ देवेभ्यः) २०७१ (१ जातवेदा, २ देवेभ्यः)

काठ० पाठ० - २०६३ (१ अच्छायं यन्ति ; २ घृताचीः ईडाना वह्निः ; २०६४ (१ स्तनी मन्द्रस्तुप्रयक्षु) ; २०६६ (१ दिव्यो न योनिषासानक्ताग्नेः) , २०६७ (१ होतारोर्ध्वमिमध्वरं ; २ स्विष्टम्) २०६८ (१ महीगृणानाः) ; २०६९ (१ त्वष्टः पोषाय विध्य नाभिमस्मे) २०७० (१ सृजा ; २ हविः)

देवो देवेषु देवः पथो अनाक्ति मध्वा घृतेन ।	२०७३
मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः	२०७४
अच्छायमेति शर्वसा घृता चिदीडानो वह्निर्मसा	२०७५
अग्निः सुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः	२०७६
तरी मुन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च	२०७७
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा	२०७८
उरुव्यचंसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने ।	
आ सुष्वर्यन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः	२०७९
दैवा होतार उध्वम् अध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वाया अभि गृणत गृणता नः स्विष्टये ।	
तिस्रो देवीर्वहिरेदं सदन्तामिडा सरस्वती मही भारती गृणाना	२०८०
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु । देवं त्वष्टा रायस्पोषं वि प्य नाभिर्मस्य	२०८१
वनस्पतेऽव सृजा रराणः । तमना देवेभ्यो अग्निर् हव्यं शमिता स्वदयतु	२०८२
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः । इन्द्राय यज्ञं विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्	२०८३

॥ २३१ ॥ (वा० यजुर्वेद २८।१-११)

होता यक्षत् समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।	
दिवा वर्ष्मन् त्समिध्यत ओजिष्ठश्चर्षणीसहा वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८४
होता यक्षत् तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम् ।	
इन्द्रं देवथं स्वर्विदं पृथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशथंसेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८५
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानममर्त्यम् ।	
देवो देवैः सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दुरो वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८६
होता यक्षद् बर्हिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम् ।	
वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्मिर्बर्हिरासदुद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८७
होता यक्षदोजो न वीर्युथं सहो द्वार इन्द्रमवर्धयन् ।	
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो द्वार इन्द्राय मीढुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८८
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुधे मातरा मही ।	
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यजं	२०८९

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।	
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्त इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यजं	२०९०
होता यक्षत् तिस्रो देवान् भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपस इडा सरस्वती भारती महीः ।	
इन्द्रपत्नी हविष्मती व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९१
होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजं सुयजं घृतश्रियम् ।	
पुरुषं सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९२
होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।	
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९३
होता यक्षदिन्द्रं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा	
स्तोकानां स्वाहा स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यस्तृक्तीनाम् ।	
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु होतर्यजं	२०९४

॥ २३२ ॥ (वा० यजुर्वेद २८ । २४-३४)

होता यक्षत् समिधानं महद् यज्ञः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम् ।	
गायत्रीं छन्दं इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९५
होता यक्षत् तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमादितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम् ।	
उष्णिहं छन्दं इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९६
होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीडयत् सहः सोममिन्द्रं वयोधसम् ।	
अनुष्टुभं छन्दं इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९७
होता यक्षत् सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्यं सीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम् ।	
बृहतीं छन्दं इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९८
होता यक्षद् व्यचस्वतीः सुप्रायणा ऋतावृधो द्वारौ देवीर्हिरेण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम् ।	
पङ्क्तिं छन्दं इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२०९९
होता यक्षत् सुपेशसा सुशिल्पे बृहती उभे नक्तोपासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम् ।	
त्रिष्टुभं छन्दं इहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यजं	२१००
होता यक्षत् प्रचेतसा देवानामुत्तमं यज्ञो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम् ।	
जगतीं छन्दं इन्द्रियमनडवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यजं	२१०१

होता यक्षत् पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीभारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम् ।	
बिराजं छन्दं इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०२
होता यक्षत् सुरेतसं त्वष्टारं पुष्टिवर्धनं रूपाणि बिभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम् ।	
द्विपदं छन्दं इन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०३
होता यक्षद् वनस्पतिंश्च शमितारंश्च शतक्रतुंश्च हिरण्यपर्णमुक्थिनंश्च	
रश्नानां बिभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।	
ककुभं छन्दं इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०४
होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग् वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् ।	
अतिच्छन्दसं छन्दं इन्द्रियं बृहदृषभं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०५

॥ २३३ ॥ (वा० यजुर्वेद २९ । १-११ काठक, सं० पा० १२; मैत्रा० सं० ३ । १६ । २; तै० ब्रा० पा० १११)

समिद्धो अञ्जन्दरं मतीनां घृतमग्रे मधुमत् पिन्वमानः ।	
वाजी वहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम्	२१०६
घृतेनाञ्जन् त्सं पथो देवयानान् प्रजानन् वाज्यप्येतु देवान् ।	
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्तांश्च स्वधामस्मै यजमानाय धेहि	२१०७
ईक्षश्वासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्वासि मेर्ध्यश्च सप्ते ।	
अग्निष्ठां देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः	२१०८
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टीरिमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।	
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु	२१०९
एता उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा उदातैः ।	
ऋषाः सतीः कवेषः शुम्भमाना द्वापो देवीः सुप्रायणा भवन्तु	२११०
अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि सैविदाने ।	
उषासा वांश्च सहिरण्ये मुशिल्ये ऋतस्य योनीविह सादयामि	२१११

मैत्रा० पाठ० — २१०७ (१ तनूनपात्सं, २ स्वधा देवैः); २१०८ (१ मेयश्वासि); २१०९ (१ देवेभिरक्तम०)
२११० (१ विश्ववारा); २१११ (४ योना इह)

काठ० पाठ० — २१०९ (१ देवेभिरक्तम०), २११० (१ विश्ववारा; २ कवेष, ३ सुप्रायणा) २१११ (१ योना इह)

प्रथमा वांश्च सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा । अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता	२११२
आदित्यैर्ना भारती वष्टु यज्ञश्च सरस्वती सह रुद्रैर्न आवीत । इडोपहृता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त	२११३
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरवीं जायत आशुरश्वः । त्वष्टेर्देवं विश्वं भुवनं जजान बर्हाः कर्तारमिह यक्षि होतः	२११४
अथो घृतेन त्मन्या समक्तं उप देवो २ ऋतुशः पार्थ एतु । वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत्	२११५
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्रे । स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः	२११६

॥ २३४ ॥ (वा० यजुर्वेद २५।२५-३६; काठकसं० १६।२०, मैत्रा० सं० ४।१३।३, तैत्ति० ब्रा० २।६।३)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२११७
तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः	२११८
नराशश्चसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः । ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या	२११९
आजुह्वानं ईड्यो वन्द्यश्वा याह्यग्रे वसुभिः सजोषाः । त्वं देवानामसि यह्य होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२१२०
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् । व्युं प्रथते वितरं वरीयो देव्येभ्यो अदितये स्योनम्	२१२१
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२१२२

मैत्रा० पाठ०— २११३ (१ स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु) २११४ (१ त्वष्टेमा विश्वा भुवना) २११५ (१ समक्षा;
२ देव) ; २११९ (१ स्वदन्तु) ; २१२० (१ आजुह्वाना)

काठ० पाठ०— २११६ (१ गगिषे; २ सकृया) ; २११९ अयं गन्त्रो नास्ति ।

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उपासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने	२१२३
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्वै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशां दिशन्ता	२१२४
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बहिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु	२१२५
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद् भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरपितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२१२६
उपावसृज तमन्या समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवींषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२१२७
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२१२८

॥ २३५ ॥ (ऋग्वेदीय-परिशिष्ट-प्रैषाध्याये १-१३ । मैत्रा० सं० ४ । १३ । २, २०० । १; काठक
सं० १५ । १३, तै० ब्रा० ३ । ६ । २ । १)

होता यक्षदग्निं समिधा सुषमिधा समिद्धं नाभा पृथिव्याः संगथे वामस्य । वर्ष्मन् दिव इळस्पदे वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१२९
होता यक्षत् तनूनपातमदितेर्गर्भे भुवनस्य गोपाम् । मध्वाद्य देवो देवेभ्यो देवयानान् पथो अनक्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३०
होता यक्षन्नराशंसं नृशस्त्रं प्रणेत्रं । गोभिर्वपावान् तस्याद् वीरैः शक्तीवान् रथैः प्रथमयावा हिरण्यैश्चन्द्री वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३१
होता यक्षदग्निमीळ ईळितो देवो देवा आवक्षद्दूतो हव्यवाळमूरैः । उपेमं यज्ञमुपेमो देवो देवहूतिमवतु वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३२

मैत्रा० पाठ०- २१२८ मंत्रः नोपलभ्यते; २१३१; (१ नृशस्तं, नृ २ प्रणेत्रं); २१३२ (१ दग्निमिड, २ देवं
आ च वक्षद्, ३ ० मूरा),

काठ० पाठ०- २१२९ (१ समिधं), २१३१ अयं मन्त्र नोपलभ्यते; २१३२ (१ देवहूतिं वेत्वा०);

होता यक्षद् बर्हिः सुष्टरीमोर्णम्रदा अस्मिन् यज्ञे वि च प्र च प्रथतां स्वासस्थं देवेभ्यः ॥

एमेनदद्य वसवो रुद्रा आदित्याः सदैन्तु प्रियमिन्द्रस्यास्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३३

होता यक्षद् दुर ऋष्याः कव्यो कोषधावनीरुद्राताभिर्जिहतां विपक्षोभिः श्रयतां ।

सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३४

होता यक्षदुषासानक्ता बृहती सुपेशसा नृःपतिभ्यो योनिं कृण्वाने ।

संस्मयमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सीदतां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३५

होता यक्षद् दैव्या होतारा मन्द्रा पोतारा कवी प्रचेतसा ।

स्विष्टमद्यान्यः करदिषा स्वभिगूर्तमन्य ऊर्जा मतवसेमं यज्ञं दिवि

देवेषु धत्तां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३६

होता यक्षत् तिस्रो देवीरपसामपस्तमा अच्छिद्रमद्येदमपस्तन्वतां ।

देवेभ्यो देवीर्देवमपो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३७

होता यक्षत् त्वष्टारमर्चिष्टमपाकं रेतोधां विश्रवसं यशोधां ।

पुरुषमकामकर्शनं सुपोषः पोषैः स्यात् सुवीरो वीरैर्वेत्वाज्यस्य हातर्यज २१३८

होता यक्षद् वनस्पतिमुपावस्रक्षद्वियो जोष्टारं शशमं नरः ।

स्वदान् स्वधितिर्ऋतुथाद्य देवो देवेभ्यो हव्यवाद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३९

अजैदग्निरसनद्वाजं नि देवो देवेभ्यो हव्यवाद् प्रांजोभिर्हिन्वानो धेनाभिः ।

कल्पमानो यज्ञस्यायुः प्रतिरन्नुपप्रेष्य होतर्हव्या देवेभ्यः २१४०

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा स्तोकानां स्वाहा

स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ॥

स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा अग्न आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज २१४१

मैत्रा० पाठ०- २१३३ (१ देवेभ्यः; स्वदन्तु); २१३४ (१ श्रयतां); २१३५ (नृःपतिभ्यो);

२१३९ (१ स्वदान्; २ हव्यवाद्); २१४०-२१४२ मन्त्रा नोपलभ्यन्ते ।

काठ० पाठ०- २१३४ (१ श्रयतां), २१३६ (१ करत्स्वभिः, २ ०मन्यस्वतसेमं), २१३८ (१ ०मर्चिष्टमपाकं)

२१३९ (१ स्वदान्); २१४० अयं मन्त्रो नोपलभ्यते ।

अथर्ववेदेऽग्निमन्त्राः ।

(अथर्ववेदे कां० १, सू० ९, मं० ३-४ अथर्वा । त्रिष्टुप् ।)

येनेन्द्राय समभरः पर्या—स्युत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः ।
 तेन त्वमग्न इह वर्धयेम संजातानां श्रेष्ठ्य आ वेद्येनम् २१४२
 ऐषां यज्ञमुत वर्चो ददेऽहं रायस्पोषमुत चित्तान्यग्ने ।
 सपत्ना अस्मदधरे भव—न्तूत्तमं नाकुमार्धि रोहयेमम् २१४३

(अथर्व० २ । १९ । १-४ । विष्टुष्टिषमा गायत्री, २१४८ भुरिग्विषमा ।)

अग्ने यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४४
 अग्ने यत् ते हरस्तेन तं प्रति हरं योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४५
 अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्चं योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः । २१४६
 अग्ने यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोचं योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४७
 अग्ने यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४८

(अथर्व० २।२९।१—२। २१४९ अनुष्टुप्, २१५० त्रिष्टुप् ।)

पार्थिवस्य रस देवा भगस्य तन्वोरे बले ।
 आयुष्यमिस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः २१४९
 आयुरस्मै वेहि जातवेदः प्रजां त्वंष्टरधिनिधेह्यस्मै ।
 रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदुस्तवायम् २१५०

(अथर्व० २ । ३४ । ३ । त्रिष्टुप् ।)

ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
 अग्निष्टानग्ने प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः २१५१

(अथर्व० कां० ३ । १ । १-३, ५-६। २१५२ त्रिष्टुप्, २१५३ विराङ्गर्भा भुरिक, २१५४ अनुष्टुप्,
 २१५६ विरादपुर उष्णिक् ।)

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्मभिर्शस्तिमरातिम् ।
 स तेना मोहयतु परेषां निर्हस्ताश्च कृणवज्जातवेदाः २१५२

युयमुग्रा मरुत ईदृशे स्था—भि प्रेतं मृणतु सहध्वम् ।
 अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्द्वेषां दूतः प्रत्येतुं विद्वान् २१५३
 अमित्रसेनां मघवन् अस्मान् छत्रयतीमभि ।
 युवं तानिन्द्र वृत्रहन् अग्निश्च दहतं प्रति २१५४
 इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो मन्त्वोजमा ।
 चक्ष्ण्यगिरा दत्तां पुनरेतु पराजिता २१५५

(अथर्व० ३।२।१—३।२१५६ त्रिष्टुप् ; २१५७-५८ अनुष्टुप् ।)

अग्निनां दूतः प्रत्येतुं विद्वान् प्रतिदहन्नभिर्नास्तिमरातिम् ।
 स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः २१५६
 अयमग्निरमूमुहद् यानि चित्तानि वो हृदि ।
 वि वो धमत्वोक्तसः प्र वो धमतु सर्वतः २१५७
 इन्द्रं चित्तानि मोहय—अर्वाङ्गाकूत्या चर ।
 अग्नेर्वर्तस्य ध्राज्या तान् विषूचो वि नाशय २१५८

(अथर्व० ३।३।१। त्रिष्टुप्)

अचिक्रदत् स्वपा इह भुवदग्ने व्यचिस्व रोदसी उरूची ।
 युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमं नय नमसा रातहव्यम् २१५९

(अथर्व० ३।४।३)

अच्छ त्वा यन्तु हविर्नः सजाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चरातै ।
 जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु बृहुं बलिं प्रति पश्यासा उग्रः २१६०

(अथर्व० ३।२७।१। पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।)

प्राची दिग्भिरधिपतिसितो रक्षितादित्या इषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः २१६१

(अथर्व० ४।४।६। भुरिक् ।)

अद्याग्ने अद्य संवित—रद्य देवि सरस्वति ।
 अद्यास्य बह्मणस्पते धनुर्निवा तानया पसः २१६२

(अथर्व० ५।८। १-३। अनुष्टुप्. २१६४ इयवसाना षट्पदा जगती ।)

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह ।

अग्ने ताँ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् २१६३

इन्द्रा याहि मे हवम् इदं करिष्यामि तच्छृणु ।

इम ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे ।

तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन २१६४

यदुसावृमुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।

मा तस्याग्निर्हव्यं वांसीद्वयं देवा अस्य मोषं गुर्मपैव हवमेतन २१६५

(अथर्व ५।२४। २। चतुष्पदातिशक्ती ।)

अग्निर्वनस्पतीनाम् अधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां

विच्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा २१६६

(अथर्व० ५।२८। १-१४ । त्रिष्टुप्. २१७२ पञ्चपदातिशक्ती २१७३, ७५, ७६ ७८

ककुम्भत्यनुष्टुप् २१७९ पुरउष्णिक् ।

नवं प्राणान् नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।

हरिते त्रीणि रजते त्रीणि अयमि त्रीणि तपमाविष्टितानि २१६७

अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च ।

आर्तवा ऋतुभिः संविदाना अनेन मा त्रिवृता पाग्यन्तु २१६८

त्रयः पोषास्त्रिवृतिं श्रयन्ताम् अनक्तुं पूषा पर्यसा घृतेन ।

अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् २१६९

इममादित्या वसुना समुक्षते मग्ने वर्धय वावृधानः ।

इममिन्द्र सं सृज वीर्येणास्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु २१७०

भूमिष्ठा पातु हरितेन विश्वभृदग्निः पिपृत्वयसा सजोषाः ।

वीरुद्धिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् २१७१

त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिमितस्य परापतत् ।

अपामेकं त्रेधा नां रेत आहुस् तत् ते हिरण्यं त्रिवृदुस्त्वायुषे २१७२

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । त्रेधामृतस्य चक्ष्णं त्रीण्यायूषि तेऽकरम्	२१७३
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदार्यन्न एकाक्षरमभिसंभूय शक्राः । प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकम् अन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा	२१७४
दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् । भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम्	२१७५
इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः । तास्त्वं बिभ्रद्वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव	२१७६
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबिधे प्रथमो देवो अग्रे । तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदावर्धे मे	२१७७
आ त्वां चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः । अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि	२१७८
ऋतुभिर्घातैवैरायुषे वर्चसे त्वा । संवत्सरस्य तेजमा तेन संहनु कृणमसि	२१७९
घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं भूमिदंहमच्युतं पारयिष्णु । भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मां रोह सहते सौभगाय	२१८०

(अथर्व० ६ । ३६ । १-३ । गायत्री ।)

ऋतावानं वैश्वानरम् ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे	२१८१
स विश्वा प्रति चाक्लप ऋतूरुत्सृजते वशी । यज्ञस्य वयं उत्तिरन्	२१८२
अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको वि राजति	२१८३

(अथर्व० ६ । ११० । २-३ । त्रिष्टुप् ।)

ज्येष्ठेभ्यं जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हणात् परि पाह्येनम् । अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय	२१८४
व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ठ वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः । स मा वर्धेत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीजनित्रीम्	२१८५

(अथर्व० ६ । १११ । १-४ । अनुष्टुप्, २१८६ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।)

इमं मे अग्ने पुरुषं सुपुण्ड्रं यं यो वदः सुयतो लालपीति ।

अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति २१८६

अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २१८७

देवैः सादुन्मदितम् उन्मत्तं रक्षसस्परि । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति २१८८

पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽसति २१८९

(अथर्व० ६ । ११२ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न एषां मूलवर्हेणात् परि पाह्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे २१९०

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २१९१

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धो ऽङ्गैश्चार्पित उत्सितश्च ।

वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भ्रूणाग्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व २१९२

(अथर्व० ७ । ३४ (३५) । १ ॥ जगती ।)

अग्ने जातान् प्र पुंदा मे सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व ।

अधस्पदं कृणुष्व ये पृतन्यवो ऽनागसस्ते वयमदितये स्याम २१९३

(अथर्व० ७ । ३५ [३६] १-३ ॥ त्रिष्टुप्, २१९४ अनुष्टुप् ।)

प्रान्यान् त्सपत्नान् त्सहसा सहस्व प्रत्यजातान् जातवेदो नुदस्व ।

इदं राष्ट्रं पिपूहि सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः २१९४

इमा यास्ते शतं हिराः सहस्रं धमनीरुत ।

तासां ते सर्वासामहमश्मना बिलमप्यधाम् २१९५

परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वा प्रजाभि भून्मोत स्रुतुः ।

अस्वैः त्वाप्रजसं कृणोम्यश्मानं ते अपिधानं कृणोमि २१९६

(अथर्व० ७ । ७४ [७८] । ४ ॥ अनुष्टुप् ।)

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।

तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे २१९७

(अथर्व० ७ । ७८ (८३) १-२॥ २१९८ परोष्णिक्, २१९९ त्रिष्टुप् ।)

वि ते मुञ्चामि रश्नां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यमे २१९८
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।
दीदिह्यस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २१९९

(अथर्व० ७ । १०६ [१११] । १ । बृहत् गिर्मा त्रिष्टुप् ।)

यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः ।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः २२००

(अथर्व० ७ । ११५ । १२० । १-४॥ अनुष्टुप्, २-०२-३ त्रिष्टुप् ।)

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः प्रामुतः पत । अयस्मयेनाङ्गेन द्विषते त्वा संजामसि २२०१

या मा लक्ष्मीः पतयाल्लरजुष्टा—भिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वधुं नो रराणः २२०२
एकशतं लक्ष्म्योऽष्ट मर्त्यस्य साकं तन्वा जनुषांऽधि जाताः ।
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नि यच्छ २२०३
एता एना व्याकरं खिले गा विष्टिता इव ।
रमेन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् २२०४

(अथर्व० १९ । ३ । १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०६ भुरिक् ।)

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् वनस्पतिभ्यो अद्योषधीभ्यः ।
यत्रयत्र विभृतो जातवेदास्ततस्तुतो जुषमाणो न एहि २२०५
यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्व१न्तः ।
अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्रः २२०६
यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्वविवेश ।
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथे ऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि २२०७
श्रुत्कर्णाय क्वये वेद्याय वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम् ।
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्व—व देवानां यज हेडो अग्ने २२०८

अथर्व० १९ । ४ । १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०९ पचपदा विराडितिजगती, २२१० जगती ।

यामाहुतिं प्रथमामर्थवा या जाता या हव्यमकृणो जातवेदाः ।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्सो वहतु हव्यमग्नि—रग्नये स्वाहा २२०९

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
 यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् २२१०
 आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि ।
 अथो भगस्य नो धेहि अथो नः सुहवो भव २२११
 बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् ।
 यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वैत्वसान् २२१२

(अथर्व० १२।३७।१-४॥ २२१३ त्रिष्टुप्; २२१४ आस्तारपङ्क्तिः, २२१५ त्रिपदा महाबृहती,
 २२१६ पुरोष्णिक् ।)

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भगो यशः सह ओजो वयो बलम् ।
 त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे २२१३
 वर्च आ धेहि मे तन्वांश्च सह ओजो वयो बलम् ।
 इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्यायि प्रति गृह्णामि शतशारदाय २२१४
 ऊर्जे त्वा बलाय त्वौर्जसे सहसे त्वा ।
 अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्युहामि शतशारदाय २२१५
 ऋतुभ्यध्वत्वेभ्यो माञ्च्यः सैवत्सरेभ्यः ।
 धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे २२१६

(अथर्व० ४।१४।१-९। भृगु । त्रिष्टुप्; २२१८, २२२० अनुष्टुप्; २२१९ प्रस्तारपङ्क्तिः;
 २२२३, २२२५ जगती, २२२४ पञ्चपदातिशकरी ।)

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यज्जनितामग्रे ।
 तेन देवा देवतामग्रे आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मध्यासः २२१७
 क्रमध्वमग्निना नाक—मुख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः ।
 दिवस्पृष्ठं स्वर्गित्वा मिश्रा देवेभिराध्वम् २२१८
 पुष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षम् आरुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम् ।
 दिवो नाकस्य पुष्ठात् स्वर्ग्योतिरगामहम् २२१९
 स्वर्ग्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी ।
 यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे २२२०

अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम् ।
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्गिन्तु यजमानाः स्वस्ति २२२१

अजमनजिम् पर्यसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम् ।
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् २२२२

पञ्चोदनं पञ्चभिर्ङ्गुलिभिर्—देव्योद्गर पञ्चधैतमौदनम् ।
प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् २२२३

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य धेहि उत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम् ।
ऊर्ध्वायां दिश्य१जस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्य१ अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यमस्य २२२४

शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि त्वचा सर्वैरङ्गैः संभृतं विश्वरूपम् ।
स उत्तिष्ठेतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु २२२५

(अथर्व० ७ । ८४ । १ । जगती ।)

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह ।
विश्वा अमीथाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् २२२६

(अथर्व० ७ । १०८ [११३] । १-२॥ २२२७ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्, २२२८ त्रिष्टुप् ।)

यो नस्तायद् दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने ।
प्रतीच्येत्वरणी दृत्वती तान् स्मेषामग्ने वास्तु भून्मो अपत्यम् २२२७

यो नः सुप्ताज्जाग्रतो वाभिदासात् तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः ।
वैश्वानरेण सयुजा सजोषास् तान् प्रतीचो निर्देह जातवेदः २२२८

(अथर्व० कां १२ । २ । १-१३, ३३-५५ । त्रिष्टुप्, २२३०, २२३३, २२३८-४५, २२४७-४९, २२५१-५४, २२५६, २२६४, २२६७ अनुष्टुप् (२२४२ ककुम्भती पराबृहती, २२४४ निचृत्, २२५३ पुरस्तात्ककुम्भती); २२३१ आस्नारपङ्क्तिः, २२३४ भुरिगार्ची पङ्क्तिः २२५८ जगती; २२६१-६२ भुरिग्, २२३५ अनुष्टुप्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः २२५० पुरस्ताद्बृहती; २२५५ त्रिप० एकाव० भुरिगार्ची गायत्री; २२५७ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती; २२५९ एका० द्विप० सास्त्री त्रिष्टुप्; २२६० पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा जगती, २२६३ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती; २२६५ पुरस्ताद्विराड् बृहती, २२६८ बृहतगर्भा ।)

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकर्मधरा परोहि २२२९

अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि २२३०

निरितो मृत्युं निऋतिं निररातिमजामसि ।

यो नो द्वेष्टि तमद्वयग्रे अक्रव्याद्यमु द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि २२३१

यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।

तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुपदोऽप्यग्नीन् २२३२

यत्त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्रे तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि २२३३

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्रे ।

पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशरदाय २२३४

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेश० (ऋ० १० । १६ । १०) (१५६६)

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं० (१० । १६ । ९) (१५६६)

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दंहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।

नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितॄणां लोकेऽपि भागो अस्तु २२३५

क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यैः प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाजैः ।

मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितॄषु जागृहि त्वम् २२३६

समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।

जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति २२३७

देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्टान्यारुहत् ।

मुच्यमानो निरेणसो ऽमोगस्माँ अशस्त्याः २२३८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।

अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयुषि तारिषत् २२३९

संकसुको विकसुको निऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन् २२४०

यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु । क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः २२४१

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।

निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः २२४२

यस्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत । तस्मिन् घृतस्तावो मृष्टा त्वमग्रे दिवं रुह २२४३

समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यर्पक्रमीः । अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे २२४४

सीसे मृड्ङ् नडे मृड्ङ्म अग्नौ संकसुके च यत् । अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपबर्हणे २२४५

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्व१—न्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।

मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् २२४६

अपावृत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेतं दक्षिणा । प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् २२४७
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः २२४८
यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्त्रेण विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः २२४९
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनैन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद् यं क्रव्यादनुवर्तते २२५०
मुहुर्गृध्रैः प्र वंदत्या—र्तिं मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिका—दनुविद्वान्वितावति २२५१

ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।

ब्रह्मैव विद्वानेष्यो३ यः क्रव्यादं निरादधत् २२५२

यद् रिप्रं शर्मलं चकृम यच्च दुष्कृतम् । आपो मा तस्माच्छुम्भ—न्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् २२५३

ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजानुतीः पृथिभिर्देवयानैः ।

पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्वरन्ति सरितः पुराणीः २२५४

अग्ने अक्रव्याग्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह २२५५

इमं क्रव्यादा विवेश—यं क्रव्यादुमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् २२५६

अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणाम् अग्निगार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः २२५७

जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितृणां लोकमपि गच्छतु ये मृताः ।

सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिम् उषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै २२५८

सर्वानग्ने सहमानः सपत्ना—नैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि २२५९

इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वारंभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम् २२६०

अनङ्गाहं प्लवमन्वारंभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम २२६१

अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः ।

अनातुरान् त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज् ज्योगेव नः पुरुषगान्धिरोधि २२६२

ते देवेभ्य आ वृश्न्ते पापं जीवन्ति सर्वदा । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकाद—श्च इवानुवर्तते नृडम् २२६३

येऽश्रद्धा धनकाम्यात् क्रव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भी पर्यादधति सर्वदा २२६४

प्रेव पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । क्रव्याद्यानग्निरन्तिका—दनुविद्वान्वितावन्ति २२६५
 अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं ते आहुः ।
 माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्य—मरण्यान्या गह्वरं सचस्व २२६६
 इषीकां जरतीमिष्ट्वा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम् ।
 तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ २२६७
 प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पथां वि ह्यविवेश ।
 परामीषामस्रन्दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान् त्सृजामि २२६८

(अथर्व० १९ । ५५ । १-६ ॥ त्रिष्टुप्; २२७० आस्तारपांतिः; २२७३ ज्यवसाना पंचपदा पुरस्ताज्ज्यातिष्मती।)

रात्रिरात्रिमप्रयातं भरन्तो ऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।
 रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२६९
 या ते वमोर्वाति इषुः सा त एषा तया नो मृड ।
 रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२७०
 सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता ।
 वसोर्विसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम २२७१
 प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।
 वसोर्विसोर्वसुदान एधी—न्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम २२७२
 अपश्वा दुग्धानस्य भूयासम् । अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ।
 सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः २२७३
 त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
 अहरहर्बलिमिह ते हरन्तो ऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने २२७४

(अथर्व० कां० १, सू० २५, मं० १-४ । भृग्वक्त्रिः । २२७५ त्रिष्टुप् २२७६-७७ त्विराङ्गर्भा, २२७८ पुराऽनुष्टुप् ।)

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमोसि ।
 तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन् २२७५
 यद्यर्चिर्यदि वारिं शोचिः शशल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।
 हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन् २२७६

यदि शोको यदि वाभिशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।
 ब्रूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं त्वमन् २२७७
 नमः शीतार्य त्वमने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।
 यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु त्वमने २२७८

(अथर्व० २ । ३९ । १ ॥ अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।)

ये भक्षयन्तो न वसून् यानूधुर्यान् ग्रयो अन्वतेष्यन्त धिष्ण्याः ।
 या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा २२७९

(अथर्व० ४ । ३९ । १, २, ९, १० ॥ अङ्गिराः । २२८० त्रिपदा महाबृहती, २२८१ संस्तारपङ्क्तिः, २२८२-८३ त्रिष्टुप् ।)

पृथिव्यामग्रये समनमन्तस आर्ध्नीत् ।
 यथा पृथिव्यामग्रये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु २२८०
 पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः । सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।
 आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा २२८१
 अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ ।
 नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् २२८२
 हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
 सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् २२८३

(अथर्व० १ । ७ । १-७ ॥ चातनः । अनुष्टुप्, २२८८ त्रिष्टुप् ।)

स्तुवानमग्र आ वह यातुधानं किमीदिनम् । त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्विभूविथ २२८४
 आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् । अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २२८५
 वि लपन्तु यातुधानां अत्त्रिणो ये किमीदिनः । अथेदमग्ने नो हवि-रिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् २२८६
 अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् । ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयमस्मीत्येत्य २२८७
 पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानां नृचक्षः ।

त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् २२८८

आ रभस्व जातवेदो ऽस्माकार्थीय जज्ञिषे । दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय २२८९
 त्वमग्ने यातुधानान् उपबद्धां इहा वह । अथैषामिन्द्रो वज्रेण अपि शीर्षाणि वृश्चतु २२९०

(अथर्व० १ । ८ । ३-४ ॥ २२९१ अनुष्टुप्, २२९२ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्षुतावरम् २२९१

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणो जातवेदः ।

तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने २२९२

(अथर्व० १ । २८ । १-२ । अनुष्टुप् ।)

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचार्तनः । दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः २२९३

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः । प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः २२९४

(अथर्व० ४ । ३६ । १-१० ॥ अनुष्टुप्, २३०३ भुरिक् ।)

तान् त्सत्यौजाः प्र दह—त्वग्निर्वैश्वानरो वृषा । यो नो दुरस्यादिप्सा—चाथो यो नो अरातियात् २२९५

यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति । वैश्वानरस्य दंष्ट्रयो—रग्रेरपि दधामि तम् २२९६

य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशेऽमावास्ये । क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वास्तान् त्सहसा सहे २२९७

सहे पिशाचान् त्सह—सैषां द्रविणं ददे । मर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्कृध्यताम् २२९८

ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण भिमते जवम् । नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे २२९९

तर्पनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव ।

श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यश्चनम् २३००

न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे २३०१

यं ग्राममाविशत् इदमुग्रं सहो मम । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते २३०२

ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनैर्मशका इव । तानहं मन्ये दुर्हितान् जने अल्पशयूनिव २३०३

अभि तं निर्ऋतिर्धत्ताम् अश्वमिवाश्वभिधान्या । भ्रूवो यो मह्यं कृध्यति स उ पाशान्न मुच्यते २३०४

(अथर्व० ५ । २९ । १-१५ । त्रिष्टुप्, २३०७ त्रिपदा विराण्णाम गायत्री; २३०९ पुरोऽतिजगती विगाडजगती

२३१५-१८ अनुष्टुप् (२३१५ भुरिक्; २३१७ चतुष्पदा परावृहती ककुम्भती ।)

पुरस्ताद् युक्तो बह जातवेदो ऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्च पुरुषं सनेम २३०५

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति २३०६

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः २३०७

अक्षयौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्दि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्रे यविष्ठ प्रति तं शृणीहि २३०८

यदस्य हृतं विहृतं यन् पराभृतम् आत्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्रे विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः २३०९

आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने दुदम्भ ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१०

क्षीरे मा मन्थे यतमो दुदम्भा कृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३११

अपां मा पाने यतमो दुदम्भ क्वयाद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१२

दिवा मा नक्तं यतमो दुदम्भ क्वयाद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१३

क्वयादमग्रे रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु च्छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः २३१४

सनादग्रे मृणसि यातुधानान्० (ऋ० १० । ८७ । १९) (१८४६)

। माहर जातवेदो यद्वतं यत् पराभृतम् । गात्राण्यस्य वर्धन्ताम् अंशुरिवा प्यायतामयम् २३१५

। गोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् । अग्रे विरग्निनं मेध्यम् अयक्ष्मं कृणु जीवतु २३१६

। तास्ते अग्रे समिधः पिशाचजम्भनीः । तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः २३१७

। षाष्टाधीरग्रे समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा । जहातु क्वयाद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति २३१८

(अथर्व० २ । ६ । १-५ ॥ शौनकः । त्रिष्टुप् २३२२ चतुष्पदाशी पङ्क्तिः. २३२३ विगाट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।)

समास्त्वाग्र क्रतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।

सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः २३१९

सं चेध्यस्वाग्रे प्र च वर्धयेमम् उच्चं तिष्ठ महते सौभगाय ।

मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्रे ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये २३२०

त्वामग्रे वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्रे संवरणे भवा नः ।

सपत्न्याग्रे अभिमातिजिद् भव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् २३२१

क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व ।
 सजातानां मध्यमेष्टा राज्ञाम् अग्ने विहव्यो दीदिहीह २३२२
 अति निहो अति सिधो ऽत्यचित्तरिति द्विषः ।
 विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः २३२३

(अथर्व० ६ । १०८ । ४ । अनुष्टुप् ।)

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तया मामद्य मेधया ऽग्ने मेधाविनं कृणु २३२४
 (अथर्व० ७ । ८२ (८७) । २-६ ॥ त्रिष्टुप्, २३२५ ककुम्मती बृहती, २३२६ जगती ।)

मय्यग्ने अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।
 मयि प्रजां मय्यायु—र्दधामि स्वाहा मय्यग्निम् २३२५
 इहैवाग्ने अग्निं धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निष्कारिणः ।
 क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यम् उपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः २३२६
 अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन् वहानि प्रथमो जातवेदाः ।
 अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन् अनु द्यावापृथिवी आ विवेश २३२७
 प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः ।
 प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान २३२८
 घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुर्द्या समिन्धे ।
 घृतं ते देवीर्निपत्य आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुहतां गावो अग्ने २३२९
 (अथर्व० ४ । २३ । १-७ । मृगारः । त्रिष्टुप्, २३३० पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, २३३३ अनुष्टुप्, २३३५ प्रस्तारपङ्क्तिः ।)

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।
 विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३०
 यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।
 एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः २३३१
 यामन् यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन् कर्मन्नाभंगम् ।
 अग्निमीडे रक्षोहर्णं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः २३३२
 सुजातं जातवेदसम् अग्निं वैश्वानरं विशुम् ।
 हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३३

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।
 येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः २३३४
 येन देवा अमृतमन्वर्विन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।
 येन देवाः स्वश्राभरन् तस नो मुञ्चत्वंहसः २३३५
 यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।
 स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः २३३६

(अथर्व० ६।४९।१-२ ॥ गार्ग्यः । २३३७ अनुष्टुप्, २३३८ जगती ।)

नहि ते अग्ने तन्वः क्रूरमानंश्च मर्त्यः ।
 कृषिर्विभस्ति तेजं स्वं जरायु गौरिव २३३७
 मेष इव वै सं च वि चोर्वच्यसे यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः ।
 शीर्ष्णा शिरोऽप्ससाप्सो अर्दयन् अंशन् बभस्ति हरितेभिरासभिः २३३८

(अथर्व० २।३६।१, ३। पतिवेदनः । २३३९ त्रिष्टुप्, २३४० भुरिक् ।)

आ नो अग्ने सुमतिं सँभलो गमे—दिमां कुमारीं सह नो भगेन ।
 जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गुरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै २३३९
 इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
 सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २३४०

(अथर्व० २०।२।२। गृत्समदो मेधातिथिर्वा । विगाङ् गायत्री ।)

अभिराग्रीध्रात् सुष्टुभः स्वर्कादितुना सोमं पिबतु २३४१

(अथर्व० ४।४०।१। शुक्रः । त्रिष्टुप् ।)

ये पुरस्ताञ्जुह्वन्ति जातवेदुः प्राच्यां दिशोभिदासन्त्यस्मान् ।
 अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि २३४२

(अथर्व० ३।३१।१, ६। ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या । व्यश्वं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४३
 अग्निः प्राणान् त्सं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः ।
 व्यश्वं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४४

(अथर्व० ५ । २६ । १ । द्विपदार्थी उष्णिक् ।)

यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहा ऽग्निः प्रविद्वानिह वो युनक्तु २३४५

(अथर्व० ६ । ७१ । १-३ । जगती, २३४८ त्रिष्टुप् ।)

यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविष् ।
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहम् अग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४६यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।
यस्मान्मे मन उदिव रारजीत्यग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४७यदन्नमद्वयनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि ।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मयं मधुमदुस्त्वन्नम् २३४८

(अथर्व० १९ । ६५ । १ । जगती ।)

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम् ।
अव तां जहि हरसा जातवेदो ऽविभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य २३४९

(अथर्व० १९ । ६६ । १ । अति जगती ।)

अयोजाला असुरा मायिनो ऽयस्मयैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रक्रष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः २३५०

(अथर्व० १९ । ६४ । १-४ ॥ अनुष्टुप् ।)

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु २३५१
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि । तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजया च धनेन च २३५२
यदग्ने यानि कार्णिचिदा ते दारूणि दुध्मसि । सर्वतदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्य २३५३
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्धव । आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्यायि २३५४

(अथर्व० ३ । २१ । १-१० । वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, २३५५ पुरोनुष्टुप्, २३५६-५७, २३६१ भुरिक्, २३५९ जगती, २३६० उपरिष्टाद्विराड्बृहती, २३६१ विराड्गर्भा, २३६३ निचृदनुष्टुप्, २३६४ अनुष्टुप् ।)

ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु ।
य आविवेशोषधीर्यो वनस्पतींस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५५यः सोमं अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु ।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५६

य इन्द्रेण सरथं याति देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः ।	
यं जोहवीमि पृतनासु सासहि तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५७
यो देवो विश्वाद्यमु काममाहु यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः ।	
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५८
यं त्वा होतां मनसाभि सविदुस् त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः ।	
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५९
उक्षान्नाय वक्षान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।	
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६०
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुमंचरन्ति ।	
ये दिक्ष्वन्तर्ये वार्ते अन्तस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६१
हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमाग्निम् ।	
विश्वान् देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वग्निम्	२३६२
शान्तो अग्निः क्रव्याच् छान्तः पुरुषरेषणः ।	
अथो यो विश्वदाव्यस् तं क्रव्यादमशीशमम्	२३६३
ये पर्वाताः सोमपृष्ठा आप उत्तानशीवरीः ।	
वार्तः पर्जन्य आदुगिस् ते क्रव्यादमशीशमन्	२३६४

(अथर्व० ७ । १०९ (११४) । १-७ । वादरायणिः । अनुष्टुप् २३६५ विराट् पुरस्ताद्बृहती,
२३६६-६७, २३६९-७० त्रिष्टुप्)

इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेषु तनूवशी ।	
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे	२३६५
घृतमप्सुराभ्यो वह त्वमग्ने पांसूनक्षेभ्यः सिकता अपश्च ।	
यथाभागं हव्यदाति जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या	२३६६
अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्ये च ।	
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु	२३६७
आदिनवं प्रतिदीप्ते घृतेनास्मां अभि क्षर ।	
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान् प्रतिदीव्यति	२३६८

यो नो द्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च ।

स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम २३६९

संवसत्र इति वो नामधेयम् उग्रंपश्या रोष्टृभृतो ह्यक्षाः ।

तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् २३७०

देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदपिम् । अक्षान् यद् बभ्रुनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे २३७१

(अथर्व० ६ । ४७ । १ । अङ्गिराः प्रचेताः । त्रिष्टुप् ।)

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।

स नः पावको द्रविणे दधातु आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम २३७२

(अथर्व० ७ । ६२ (६४) । १ । मरीचिः काश्यपः । जगती ।)

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्नीनजयत् पुरोहितः ।

नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतद् अधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः २३७३

(अथर्व० ७ । ६३ (६५) । २ । जातवेदाः । जगती ।)

पृतनाजितं सहमानमग्निमुक्थैर् हवामहे परमात् सधस्थात् ।

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद् देवोऽति दुरितान्यग्निः । २३७४

(अथर्व० ६ । ३५ । १-३ । कौशिकः । गायत्री ।)

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टुतीरुप २३७५

वैश्वानरो न आगमद् इमं यज्ञं सजूरुप । अग्निरुक्थेष्वंहसु २३७६

वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाकल्पत् । ऐषु द्युम्नं स्वर्यिमत् २३७७

(अथर्व० ६ । ११७ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

अपमित्यमप्रतीक्षं यदास्मि यमस्य येन बालिना चरामि ।

इदं तदग्ने अनुणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् २३७८

इहैव सन्तः प्रति दद्य एनज् जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत् ।

अपमित्यं धान्यं यज्ञघसाहम् इदं तदग्ने अनुणो भवामि २३७९

अनुणा अस्मिन्ननुणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनुणाः स्याम ।

ये देवयानाः पितृयाणांश्च लोकाः सर्वान् पथो अनुणा आ क्षियेम २३८०

(अथर्व० ६ । ११८ । १-३ । त्रिष्टुप्)

यद्वस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाणि अक्षाणां गन्तुमुपलिप्समानाः ।
 उग्रपश्ये उग्रजितौ तदद्य अप्सरसावनु दत्तामृणं नः २३८१
 उग्रपश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिषाणि यदुक्ष्वृत्तमनु दत्तं न एतत् ।
 ऋणान्नो नर्णमेत्सीमानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत् । २३८२
 यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवाः ।
 ते वाचं वादिषुर्मोक्षरां महेर्वपन्ती अप्सरमावधीतम् २३८३

(अथर्व० ६ । ११९ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

यददीच्यन्नृणमहं कृणोमि अदास्यन्नग्र उत संगृणामि ।
 वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८४
 वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु ।
 स एतान् पाशान् विचृतं वेदु सर्वान् अथ पक्केन सह सं भवेम २३८५
 वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संग्रमेभिधावाम्याशाम् ।
 अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि २३८६

(अथर्व० ६ । १२१ । १, २, ४ । २३८७, २३३८, त्रिष्टुप्, २३८९, २३९० अनुष्टुप् ।)

विषाणा पाशान् वि ष्याध्यस्मद् य उत्तमा अधमा वारुणा ये ।
 दुष्वभ्यं दुरितं नि ष्वास्मद् अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् २३८७
 यद् दारुणि बध्यसे यच्च रज्ज्वां यद् भूम्यां बध्यसे यच्च वाचा ।
 अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निर् उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८८
 वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम् ।
 योन्या इव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वो अनु क्षिय २३८९

(अथर्व० ६ । ७६ । १-४ कवन्धः । अनुष्टुप्, २३९२ ककुम्भती ।)

य एनं परिपीदन्ति ममादधति चक्षसे । संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिर् उदेतु हृदयादधि २३९०
 अग्नेः सातपनस्याहं आयुषे पदमा रभे । अद्वातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः २३९१
 यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वरे पदं नि दधाति स मृत्यवे २३९२

नैनं मन्ति पर्यायिणो न सखाँ अव गच्छति । अग्रेयः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे २३९३

(अथर्व० ६ । ७७ । १-३ । अनुष्टुप ।)

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिवि अस्थाद् विश्वमिदं जगत् ।

आस्थाने पर्वता अस्थु स्थास्यश्वाँ अतिष्ठिपम्

२३९४

य उदानट् परायणं य उदानण्णयनम् । आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे २३९५

जातवेदो नि वर्तय शतं ते सन्त्वावृतः । सहस्रं त उपावृतस् तामिर्नः पुनरा कृधि २३९६

अग्निसहस्रग्री देवगणः

१२ वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

(ऋ० १० । ८८ । १-१९) मूर्धन्यानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा । सौर्य-
वैश्वानरोऽग्निः । त्रिष्टुप ।)

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि दिविस्पृष्टयाहुतं जुष्टमग्नौ ।

तस्य भर्मेणे भुवनाय देवा धर्मेणे कं स्वधया पप्रथन्त

२३९७

गीर्णं भुवनं तमसापगूळहम् आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।

तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽग्णयन्नोपधीः सख्ये अस्य

२३९८

देवेभिर्निषितो यज्ञियेभिर् अग्निं स्तोपाण्यजरं बृहन्तम् ।

यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमाम् आततान रोदसी अन्तरिक्षम्

२३९९

यो होतासीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जनाज्येना वृणानाः ।

स पतन्नीत्वरं स्था जगद् यत् श्वात्रमग्निरकृणो जातवेदाः

२४००

यजातवेदो भुवनस्य मूर्धन् अतिष्ठो अग्ने सह रञ्चनेन ।

तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः

२४०१

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस् ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।

मायामू तु यज्ञियानामेताम् अपो यत् तूर्णिश्चरति प्रजानन्

२४०२

दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।

तस्मिन्नग्नौ सक्तवाकेन देवा हविर्विश्च आजुहवुस्तनूपाः

२४०३

सूक्तवाकं प्रथममादिदुग्निम् आदिद्विविरजनयन्त देवाः । म एषां यज्ञो अभवत् तनूपास् तं द्यौर्वेदं तं पृथिवी तमापः	२४०४
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा । सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमाम् ऋजुयमानो अतपन्महित्वा	२४०५
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निम् अजीजनञ्छक्तिभी रोदसिग्राम् । तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः	२४०६
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् । यदा चरिष्णू मिथुनावभूताम् आदित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा	२४०७
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् । आ यस्ततानोषसो विभातीर् अपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्	२४०८
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् । नक्षत्रं प्रलमर्मिनचरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	२४०९
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः । यो महिम्ना परिवभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्	२४१०
द्वे सुती अंशृणवं पितृणाम् अहं देवानामुत मर्त्यानाम् । ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च	२४११
द्वे समीची विभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् । स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्थौ अप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः	२४१२
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद । आ शैकुरित् संधमादुं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्	२४१३
कत्यग्रयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः । नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विब्रने कम्	२४१४
यावन्मात्रमुषमो न प्रतीकं सुपण्योऽं वसते मातरिश्चः । तावद् दधात्युषं यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्	२४१५

१३ रक्षोहाग्निः ।

(ऋ० १० । १६२ । १-६ । रक्षोहा = (गर्भस्य दोषनिवारकः) (अत्रानुसंधेया मन्त्राः १८१३-१८६१)
रक्षोहा ब्राह्मः । अनुष्टुप् ।)

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।	
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये	२४१६
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।	
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्	२४१७
यस्ते हन्ति पतर्यन्तं निषत्सुं यः संरीसृपम् ।	
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४१८
यस्त ऊरू विहरति अन्तरां दंपती शये ।	
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि	२४१९
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निषद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२०
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निषद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२१

१४ अपां-न-पादग्निः ।

(ऋ० २ । ३५ । १-१५ । गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।)

उपैमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे ।	
अपां नपादाशुहेमा कुवित् स सुपेशसस्करति जोषिषद्धि	२४२२
इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं मन्त्रं वोचेम कुविदस्य वेदत् ।	
अपां नपादसुर्यस्य मद्वा विश्वान्ययो भुवना जजान	२४२३
समन्या यन्त्युप यन्त्यन्याः समानमूर्धं नद्यः पृणन्ति ।	
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसम् अपां नपातं परि तस्थुरापः	२४२४
तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मज्यमानाः परि यन्त्यापः ।	
स शुक्रेभिः शिकभी रेवदस्मे दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु	२४२५

अस्मै तिस्रो अव्यध्याय नारीर् देवाय देवीर्दिधिपन्त्यन्नम् ।	
कृता इवोप हि प्रसर्से अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वस्रनाम्	२४२६
अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वरं द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन् ।	
आमासु पूषु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नश्चान्नानृतानि	२४२७
स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति ।	
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर् वसुदेयाय विधत्ते वि भाति	२४२८
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस उर्विया विभाति ।	
वया इदुन्या भुवनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः	२४२९
अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्वानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।	
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर् हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यद्हीः	२४३०
हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदग् अपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः ।	
हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै	२४३१
तदस्यानीकमुत चारु नाम अपीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् ।	
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्ण घृतमन्नमस्य	२४३२
अस्मै बहूनामवमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविभिः ।	
सं सानु मार्जिम दिधिषामि विल्मैर् दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः	२४३३
स ई वृषाजनयत् तासु गर्भं स ई शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।	
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णो ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष	२४३४
अस्मिन् पदे परमे तस्थिवांसम् अध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम् ।	
आपो नप्त्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यद्हीः	२४३५
अयांसमग्रे सुक्षिति जनाय अयांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् ।	
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	२४३६

१५ अग्नीन्द्रादयः ।

(ऋ० ७ । ४१ । १ । वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नीन्द्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः । जगती ।)

प्रातरग्निं प्रातरिद्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।	
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम	२४३७

१६ अग्निर्मरुतश्च ।

(ऋ० १ । १९ । १-९ । मेघातिथिः काण्वः । गायत्री ।)

प्रति त्वं चारुमध्वरं	गोपीथाय प्र हूयमे । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४३८
नहि देवो न मन्यो	महस्तव क्रतुं परः । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४३९
ये महो रजसो विदुर्	विश्वे देवासो अदुहः । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४०
ये उग्रा अर्कमानुचुर्	अनाधृष्टास ओजसा । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४१
ये शुभ्रा घोरवर्षसः	सुक्षत्रासो रिशादसः । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४२
ये नाकस्याधि रोचने	दिवि देवास आसते । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४३
य ईह्वयन्ति पर्वतान्	तिरः समुद्रमर्णवम् । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४४
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्	तिरः समुद्रमोजसा । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४५
अभि त्वा पूर्वपीतये	सृजामि सोम्यं मधु । मरुद्भिर्गन् आ गहि	२४४६

(ऋ० ८ । १०३ । १४ । सोमरिः काण्वः । अनुष्टुप् ।)

अग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये ।

सोमर्या उप सुष्टुति मादयस्व स्वर्णरे २४४७

१७ अग्निमित्रावरुणादयः ।

(ऋ० १ । ३५ । १ । हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निर्मित्रावरुणौ रात्रिः सविता च । जगती ।)

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ।

ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमृतये २४४८

१८ अग्निर्वरुणश्च ।

(ऋ० ४ । १ । २-५ । वामदेवो गोतमः । त्रिष्टुप्, २४४९ अति जगती, २४५० धृतिः ।)

स आतरं वरुणमग्ने आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञर्वनसं ज्येष्ठं यज्ञर्वनसम् ।

ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम् २४४९

सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंहास्मभ्यं दस्म रंहा ।

अग्ने मृलीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।

तोकार्यं तुजे शुशुचानं शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि २४५०

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः ।
 यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् २४५१
 स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसो व्युष्टौ ।
 अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि २४५२

१९ अग्नाविष्णू ।

(अथर्व कां० ७ । २९ (३०) । १-२ । मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।)

अग्नाविष्णू महि तद्वी महित्वं पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम ।
 दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात् २४५३
 अग्नाविष्णू महि धाम प्रियं वां वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ ।
 दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात् २४५४

२० अग्निसूर्यौ ।

(ऋ० ८ । ५६ । (८) ५ । वाल्यखिल्यसूक्तम् । पृषधः काण्वः । पंक्तिः ।)

अचेत्यग्निश्चिकितुर् हव्यवाट् स सुमद्रथः ।
 अग्निः शुक्रेण शोचिषा बृहत्सरो अरोचत दिवि सूर्यो अरोचत २४५५

२१ (केशिनः)–अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

(ऋ० १ । १६४ । ४४ दीर्घतमा औचध्यः । त्रिष्टुप् ।)

त्रयः केशिनं ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत् एक एषाम् ।
 विश्वमेको अग्नि चष्टे शचीभिर् ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम् २४५६

२२ अग्निसूर्यानिलाः ।

(ऋ० ८ । १८ । ९ हरिस्विठिः काण्वः । उष्णिक् ।)

शमभिरग्निभिः करच् छं नस्तपतु सूर्यः । शं वातो वातु अरपा अप सिधः २४५७

अग्निसूर्यवायवः ।

(ऋ० १० । १३६ । १-७ ॥ २४५८ जूतिः, २४५९ वातजूतिः २४६० विप्रजूतिः, २४६१ वृषाणकः, २४६२ करिकतः २४६३ एतशः, २४६४ ऋष्यशृङ्गः (एते वातरशना मुनयः) । (केशिनः=)
अग्नि-सूर्य-वायवः । अनुष्टुप् ।)

केश्य॑ग्निं केशी॑ विषं केशी॑ विमर्ति॑ रोदसी ।	
केशी॑ विश्वं॑ स्वर्द॑शे केशी॑दं ज्योति॑रुच्यते	२४५८
मुनयो॑ वातर॑शनाः पि॒शङ्गा॑ वसते॒ मला॑ ।	
वा॒तस्या॑नु ध्राजिं॑ यन्ति॒ यद् दे॒वासो॑ अ॒र्विक्ष॑त	२४५९
उ॒न्मदि॑ता॒ मौने॑येन॒ वाताँ॑ आ त॑स्थिमा व॒यम् ।	
शरी॑रेद॒स्माकं॑ यु॒यं म॒र्तासो॑ अ॒भि प॑श्यथ	२४६०
अ॒न्तरि॑क्षेण प॒तति॑ विश्वा॑ रूपाव॒चाक॑शत् ।	
मु॒निर्दे॒वस्य॑दे॒वस्य॑ सौ॒कृत्या॑य॒ सखा॑ हितः	२४६१
वा॒तस्या॑श्चो॒ वायोः॑ सखा॒ अथो॑ दे॒वेषि॑तो॒ मुनिः॑ ।	
उ॒भौ स॑मु॒द्रावा॑ क्षेति॒ यश्च॑ पूर्वे॒ उ॒ताप॑रः	२४६२
अ॒प्सर॑सां गन्ध॒र्वाणां॑ मृ॒गाणां॑ च॒रणे॑ च॒रन् ।	
केशी॑ के॒तस्य॑ वि॒द्वान् त॒सखा॑ स्वा॒दुर्म॑दि॒न्तमः॑	२४६३
वा॒युर॑स्मा॒ उपाम॑न्थत् पि॒नष्टि॑ स्मा कु॒नन्म॑मा ।	
केशी॑ वि॒षस्य॑ पात्रे॒ण यद् रु॒द्रेणा॑पि॒बत् स॒ह	२४६४

अग्नीषोमौ ।

(ऋ० १ । ९३ । १-१२ । गोत॑मो रा॒हुग॑णः । २४६५-२४६७ अनुष्टुप् । २४६८-२४७१, २४७२ त्रि॒ष्टुप् २४७२ जग॑ती त्रि॒ष्टुप् २४७३-२४७५ गाय॑त्री ।

अग्नी॑षोमा॒विमं॑ सु मे॒ शृणु॑तं वृ॒षणा॑ ह॒वम् । प्र॒ति स॑क्तानि॒ हर्य॑तं भ॒वतं॑ दा॒शुषे॑ म॒र्यः २४६५
अग्नी॑षोमा॒ यो अ॒द्य वा॑म् इ॒दं व॑चः स॒पर्य॑ति । तस्मै॑ ध॒त्तं सु॑वीर्यं ग॒त्रां पोषं॑ स्व॒श्चर्य॑म् २४६६
अग्नी॑षोमा॒ य आहु॑तिं यो वां दा॒शाद्भ॒विष्कृ॑तिम् । स प्र॒जया॑ सु॒वीर्यं॑ वि॒श्वमायु॑र्व्य॒श्नवत् २४६७

अग्नी॑षोमा॒ चेति॑ तद् वी॒र्यं वां॑ यदमु॑ष्णीतम॒वसं॑ प॒णिं गाः ।

अवा॑तिर॒तं वृ॑स॒यस्य॑ शे॒षो ऽवि॑न्द॒तं ज्योति॑रेकं ब॒हुभ्यः॑

२४६८

युवमेतानि दिवि रौचनानि अग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।	
युवं सिन्धूरभिशस्तेरवद्याद् अग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान्	२४६९
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभार अमथ्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।	
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधाना उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम्	२४७०
अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यंतं वृषणा जुषेथाम् ।	
मुशर्माणा स्ववसा हि भूतम् अथा धत्तं यजमानाय शं योः	२४७१
यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।	
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्	२४७२
अग्नीषोमा सर्वेदसा सहृती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः	२४७३
अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत्	२४७४
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा	२४७५
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्त्रिया हव्यसूदः ।	
अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम्	२४७६

(अथर्व० ६ । ५४ । १-३ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

इदं तद् युज उत्तरम् इन्द्रं शुम्भाम्यष्टये । अस्य क्षत्रं श्रियं महीं वृष्टिरिव वर्षया तृणम् २४७७
 अस्मै क्षत्रमग्नीषोमौ अस्मै धारयतं रयिम् । इमं राष्ट्रास्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् २४७८
 सबन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्मां अभिदासति । सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते २४७९

(अथर्व० ६ । ५८ । ३ । अथर्वा (यशस्कामः) । अग्निः, इन्द्रः, सोमः । अनुष्टुप् ।)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर् यशाः सोमो अजायत ।
 यशा विश्वस्य भूतस्य अहमस्मि यशस्तमः २४८०

(अथर्व० ६ । ९३ । ३ । शन्तातिः । अग्निषोमौ वरुणः मरुतः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।)

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वृधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।
 अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम २४८१

(अथर्व० ७ । ११४ (११९) । १-२ ॥ भार्गवः । अग्नीषोमौ । अनुष्टुप् ।)

आ ते ददे वृक्षणाभ्य आ तेऽहं हृदयाद् ददे ।
 आ ते मुखस्य संकाशात् सर्वे ते वर्चे आ ददे २४८२
 प्रेतो यन्तु व्याध्यः प्रानुध्याः प्रो अशस्तयः ।
 अग्नी रक्षस्विनीर्हन्तु सोमो हन्तु दुरस्यतीः २४८३

अग्निदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२] १।१।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि)

स देवाँ एह वक्षति ।

(७०५) ४।८।२ (वामदेवो गौतम । अग्नि)

स देवाँ एह वक्षति ।

[४] १।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि)

विश्वत परिभूरसि ।

(१८९२) १।९।६ (कुन्स आगिरम । अग्नि)

विश्वतः परिभूरसि ।

[५] १।१।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि)

देवो देवेभिरागमत् ।

(५१२) ३।१०।४ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

अग्निर्देवेभिरागमत् ।

[८] १।१।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि)

राजन्तमध्वराणां ।

(३८) १।२७।१ (शुनः शेष आर्जगति । अग्नि)

सम्राजन्तमध्वराणाम् ।

(१०३) १।४५।४ (प्र ण्व काण्व । अग्नि)

राजन्तमध्वराणाम् ।

८।८।१८ (सभ्वंस काण्व । अध्विनै ।

राजन्तमध्वराणाम् ।

[१०] १।१२।१ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

अग्निं दूतं वृणीमहे ।

(७०) १।३६।३ प्र त्वा दूत वृणीमहे ।

(८८) १।४४।३ अद्या दूत वृणीमहे ।

[१०] १।१२।१ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

(७०) १।३६।३ (कण्वो घोर । अग्नि)

प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

(९२) १।४४।७ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)

होतारं विश्ववेदसम् ।

(१२२६) ८।१९।३ (सोमरि काण्व । अग्नि)

यजिष्ठं त्वा वधुमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

[१२] १।१२।३ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

अग्ने देवाँ इहा वह ।

(१९) १।१०।१० (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

अग्ने देवाँ इहा वह ।

(२२) १।१५।४ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

अग्ने देवाँ इहा वह ।

[१३] १।१२।४ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

(२२१) १।७४।७ (गौतमो राहगग । अग्नि)

यदग्ने यासि दूत्यम् ।

(९२४) ५।२६।५ (वसूयव अघ्नया । अग्नि)

देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

(१३५६) ८।४४।१४ (विष्णु अग्निरम । अग्नि)

देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

[१५] १।१२।६ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

कविर्गृहपतिर्युवा ।

(११७८) ७।१५।२ (वरिष्ठो मन्त्रावर्णि । अग्नि)

कविर्गृहपतिर्युवा ।

(१४६३) ८।१०२।१ (प्रयोगो मार्गन — । अग्नि)

कविर्गृहपतिर्युवा ।

[१६] १।१२।७ कविमग्निमुप स्तुहि ।

१।१३६।६ इन्द्रमार्गमुप स्तुहि ।

[१६] १।१२।७ सत्यधर्माणमध्वरं ।

५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।

[१८] १।१२।९ (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

तस्मै पावक मृत्त्रय ।

(१३७०) ८।४४।२८ (विष्णु अग्निरम । अग्नि)

तस्मै पावक मृत्त्रय ।

[१९] १।१२।१० (मेधातिथि काण्व । अग्नि)

स नः पावक दीदिवः ।

(५१६) ३।१०।८ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

स नः पावकः दीदिवः ।

[१९] १।१२।१०।१२।१।१०।३. (२०) १।१५।४

अग्ने देवाँ इहा वह ।

[२०] १।१२।११ (मेधातिथि काण्व । अग्निः)

स नः स्तवान् आ भर ।

...रयि वीरवतीमिषम् ।

८।२४।३ (विश्वमना वैयश्व । इन्द्र)

स नः स्तवान् आ भर रयि ।

९।४०।५ (बृहन्मतिराङ्गिरस । पवमान सोम)

स नः पुनान् आ भर रयि स्तोत्रे सुवीर्यम् ।

९।६१।६ अमर्हायुराङ्गिरस । पवमान सोम)

स नः पुनान् आ भर रयि वीरवतीमिषम् ।

[२१] १।१२।१२ (मेधातिथि काण्व । अग्निः)

अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।

.. इमं स्तोमं जुषस्व न ।

(१३५६) ८४४।१४ (विरूप आङ्गिरस । अग्निः)

अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।

(१५८८) १०।२१।८ (विमद ऐन्द्र । अग्निः)

अग्ने शुक्रेण शोचिषोरू ।

(१३२५) ८।४३।२६ (विरूप आङ्गिरस । अग्निः)

इमं स्तोमं जुषस्व मे ।

[२२] १।१५।४. (१२) १।१२।३. (१९) १।१२।१०

अग्ने देवा इहा वह ।

[२८] १।२६।१; १।१४।११, सेमं नो अध्वरं यज ।

[३१] १।२६।४ (शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः)

वरुणो मित्रो अर्यमा । सीदन्तु मनुषो यथा ।

१।४१।१ (कण्वो घौर । वरुणमित्रार्यमणः)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

४।५५।१० (वामदेवो गौतम । विश्वेदेवा)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

५।६७।३ (यजत अत्रेयः । मित्रावरुणौ)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।१८।३ (इरिम्बिठि काण्व । आदित्या)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।२८।२ (मनुर्वैवस्वत । विश्वेदेवा)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।८३।२ (कुसीदी काण्व । विश्वेदेवा)

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

९।६४।२९ (कश्यपो मारीच । पवमान सोम)

सीदन्तो वनुषा यथा ।

[३२] १।२६।५ (शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः)

इमा उ पु धुधा गिरः ।

(१०४) १।४५।५ (प्रस्कण्व काण्व । अग्निः)

इमा उ पु धुधी गिरः ।

(४३३) २।६।१ (सोमाहुतिर्भोगेव । अग्निः)

इमा उ पु धुधी गिरः ।

[३७] १।२६।१० (शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः)

इमं यज्ञमिदं वचः ।

१।९१।१० (गोतमो राहुगण । सोम)

इमं यज्ञमिदं वचो । जुजुषाण उपागहि ।

(१६९९) १०।१५०।२ (मृळीको वासिष्ठ । अग्निः)

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।

[३८] १।२७।१ (शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः)

सम्राजन्तमध्वराणाम् ।

(८) १।१८; (१०३) १।४५।४ राजन्तमध्वराणां ।

८।८।१८ राजन्तावध्वराणां ।

[५७] १।३१।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरस । अग्निः)

यशसं कारं कृणुहि स्तवानः ।

देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

९।६९।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरस । पवमान सोमः)

भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

१०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरस । बृहस्पतिः)

देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

[७०] १।३६।३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे,

(१०) १।१२।१ अग्निं दूतं वृणीमहे ।

(८८) १।४४।३ अद्या दूतं वृणीमहे ।

[७०] १।३६।३; (१०) १।१२।१; (९२) १।४४।७

होतारं विश्वेवदसं ।

[७१] १।३६।४ देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१।४०।५ यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

७।६६।१२ यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।

७।८२।१०; ८३।१० अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।१९।१६ येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।२६।११ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।३६।१ द्यावा क्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।६५।१ अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।६५।९ इन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।९२।६ तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।

[७२] १।३६।५ (कण्वो घौर । अग्निः)

अग्ने दूता विशामसि ।

(९४) १।४४।९ (प्रस्कण्व काण्व । अग्निः)

अग्ने दूता विशामास ।

- [७४] १ । ३६ । ७ (कण्वो घौर । अग्नि)
तं घेमिन्त्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
८ । ६९ । १७ (प्रियमेध आङ्गिरस । इन्द्र)
तं घेमिन्त्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
[७५] १ । ३६ । ८ (कण्वो घौर । अग्नि)
उरु क्षयाय चक्रिरे ।
७ । ६० । ११ (वसिष्ठ । मित्रावरुणौ)
उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ।
[७७] १ । ३६ । १० (कण्वो घार । अग्नि)
यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।
(९०) १ । ४४ । ५ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
यजिष्ठं हव्यवाहन ।
(११८२) ७ । १५ । ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
यजिष्ठो हव्यवाहनः ।
(१२४४) ८ । १९ । २१ (सोमरि काण्वः । अग्नि)
यजिष्ठं हव्यवाहनम् ।
[७९] १ । ३६ । १२ स नो मृळ महौ असि ।
(७१२) ४ । ९ । १ अग्ने मृळ महौ असि ।
१ । ३६ । १४ (कण्वो घौर । यूप)
कृधी न उर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे ।
१ । १७२ । ३ (अगस्त्यो मैत्रावरुण । मरुतः)
उर्ध्वान्नः कर्तं जीवसे ।
[८०] १ । ३६ । १५ (कण्वो घौर । अग्नि)
पाहि नो अग्ने रक्षस पाहि धूर्तेरराणः ।
(१११२) ७ । १ । १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेरराणो अघायो
[८७] १ । ४४ । २ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
(१२१५) ८ । ११ । २ (वत्स काण्व । अग्नि)
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
[८७] १ । ४४ । २; १ । ९ । ८; ८ । ६५ । ९
अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ।
[८८] १ । ४४ । ३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
(१०) १ । १२ । १ अग्निं दूतं वृणीमहे ।
(७०) १ । ३६ । ३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
[९०] १ । ४४ । ५, (७७) १ । ३६ । १०
यजिष्ठं हव्यवाहन । ७ । १५ । ६ यजिष्ठो
हव्यवाहनः । ८ । १९ । २१ यजिष्ठं हव्यवाहनं ।
[९२] १ । ४४ । ७; (१०) १ । १२ । १;
(७०) १ । ३६ । ३ होतार विश्ववेदसं ।

- [९४] १ । ४४ । ९, (७२) १ । ३६ । ५
अग्ने दूतो विशामसि ।
[९६] १ । ४४ । ११ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् ।
(५३८) ३ । २७ । २ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
८ । ६ । ३ (वत्स काण्व । इन्द्र)
स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।
(१२७८) ८ । २३ । ९ (विश्वमना कैयश्च । अग्नि)
यज्ञस्य साधनं गिरा ।
[९९] १ । ४४ । १४ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
अश्विभ्यामुपसा सजूः ।
७ । ६६ । १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । आदित्य)
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
१० । ६५ । ७ (वसुकर्णो वामुक । विश्वेदेवा)
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
५ । ५१ । ८ (स्वस्त्यात्रेय । विश्वेदेवा)
अश्विभ्यामुपसा सजूः ।
[१०३] १ । ४५ । ४ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
प्रियमेधा अहूषत ।
८ । ८ । १८ (सन्वस काण्व । अश्विनौ)
प्रियमेधा अहूषत ।
८ । ८ । ७ । ३ वृषीको वा वसिष्ठ । अश्विनौ)
[१०३] १ । ४५ । ४; (८) १ । १८ राजन्तमध्वराणाम् ।
८ । ८ । १८ राजन्तावध्वराणाम् ।
(३८) १ । २७ । १ सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
[१०३] १ । ४५ । ४ अग्निं शुक्रेण शोचिषा ।
(२१) १ । १२ । १२ अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
[१०४] १ । ४५ । ५; (३२) १ । २६ । ५, २ । ६ । १
इमा उ पु श्रुधी गिरः ।
[१०५] १ । ४५ । ६ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
अग्ने हव्याय वोळहवे ।
(५६१) ३ । २९ । ४ (विश्वामित्रो गाथिन अग्नि)
अग्ने हव्याय वोळहवे ।
[१०६] १ । ४५ । ७ (प्रस्कण्व काण्व । अग्नि)
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं ।
(१६८९) १० । १४० । ६ (अग्नि पावक । अग्नि)
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा ।

[१०७] १, ४५, ८, अग्ने मर्ताय दाशुषे १ ८४, ७, ९, ९८, ४
वम् मर्ताय दाशुषे । ८, १, २२ देवो मर्ताय दाशुषे ।

[१११] १, ५८, २ (नोधा गौतम । अग्नि)

दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् ।

९, ८६, ९ (अकृष्टा माषा । पवमान सोम)

[११३] १, ५८, ४ (नोधा गौतम । अग्नि)

कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ।

(७०१) ४, ७, ९ (वामदेवो गौतम । अग्नि)

कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाक् ।

(११६) १ । ५८ । ७ (नोधा गौतम । अग्नि)

यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

१०, ३०, ४ (कवष णेलष । आप अपानपान वा)

यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।

३, ५४, ३ (प्रजापतिवैश्वामित्र प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवा)

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

[११७] १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अघ

४, २, २ इह त्वं सूनो ०-६, ५०, ९ उत त्वं सूनो ०- ।

[११८] १, ५८, ९, (१२३) १, ६०, ५, १, ६१, १६, १, ६२, १३,

१६४, १५, ८, ८०, १०, ९, ९३, ५ प्रातर्मक्षू

धियावसुर्जगम्यात् ।

[१२२] १, ६०, ४ (नोधा गौतम । अग्नि)

अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ।

(१९५) १, ७२, १ (पराशर शाक्त्य अग्नि)

[१४३] १ । ६६ । ९, १० (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

ऐनोन्नवन्त गावः स्व १ ईशीके ।

(१७३) १, ६९, ९, १० (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

नवन्त विश्वे स्व १ ईशीके ।

[१६०] १, ६८, २, १०, पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त ।

९, ९७, ३०, पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यता न ।

[१७०] १, ६९, ७ नकिष्ट एता व्रता भिनन्ति ।

१०, १०, ५ नकिरस्य प्र भिनन्ति व्रतानि ।

[१७३] १, ६९, ९, १० ; (१४३) १, ६६, ९, १०

[१७८] १, ७०, ५, ६, (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।

(११६५) ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)

स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणाम् ।

[१८८] १, ७१, ४ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

मथीघर्दी विभ्रतो मातरिश्वा ।

(३४८) १, १४८, १ (दीर्घतमा औचथ्य । अग्नि.)

मथीघर्दी विष्टो मातरिश्वा ।

[१९३] १, ७१, ९ (पराशर शाक्त्य । अग्नि.)

राजानामित्रावरुणा सुपाणी ।

३, ५६, ७ (प्रजापतिवैश्वामित्र प्रजापतिर्वाच्यो वा ।

विश्वेदेवा)

[१९४] १, ७१, १० (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कवि सन् ।

७, १८, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)

एवाव द्युभिरभि०— ।

[१९५] १, ७२, १ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।

७, ४५, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । सविता)

[१९५] १, ७२, १ ; (१२२) १, ६०, ४ अग्निर्भुवद्रयिपती

रयीणां ।

[१९७] १, ७२, ३ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

नामानि चिद्धिरे यज्ञियानि ।

(९४२) ६, १, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)

[१९८] १, ७२, ४ अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ।

२, ३५, १४ अस्मिन् पदे०— ।

[१९९] १, ७२, ५ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः ।

४, २४, ३ (वामदेवो गौतम । इन्द्र)

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत त्राम ।

[२०३] १, ७२, ९ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् ।

३, ३१, ९ (कुशिक ऐषीरथि विश्वामित्रो गार्थिनो वा । इन्द्र)

[२०६] १, ७३, २ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

देवो न यः सविता सत्यमन्मा ।

९, ९७, ४८ (कुत्स आङ्गिरसः । पवमान सोमः)

[२०७] १, ७३, ३ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

देवो न यः पृथिवा विश्वधाया उपक्षेति

हितमित्रो न राजा ।

पुरः सदः शर्मसदो न वीरा ।

३, ५५, २१ (प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापति

र्वाच्यो वा । विश्वेदेवा)

इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति०— ।

[२१२] १, ७३, ८ (पराशर शाक्त्य । अग्नि)

आपमिवाग्नोदसी अन्तरिक्षम् ।

१०, १३९, २ (विश्वावसुर्देवगन्धर्व । सविता)
 [२१४] १, ७३, १० (पराशर शाक्त्य । अग्नि)
 एता ते अग्न उच्चथानि वेधो जुष्टानि सन्तु ।
 (६६६) ४, २, २० (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 एता ते अग्न उच्चथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व ।
 उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ।
 [२१७] १, ७४, ३ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 अभिर्वृत्रहाजनि ।
 धनंजयो रणेरणे ।
 (१०५६) ६, १६, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्निः)
 दस्युहन्तमम् ।
 धनंजयं रणेरणे ।
 [२२१] १, ७४, ७; (१३) १, १२, ४ यदग्ने यासि दूत्यम् ।
 [२२७] १, ७५, ४ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 सखा सखिभ्य ईडयः ।
 ९ ६६, १ (शनं वैखानसा । पवमान सोम)
 [२३२] १, ७६, ४ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र ।
 (१४९३) १०, २, २ (त्रित आप्त्य । अग्नि)
 — पोत्रं जनानां ।
 [२३४] १, ७७, १ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 यो मर्येध्वमुत ऋतावा होता यजिष्ठ ।
 (६४७) ४, २, १ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 — ऋतावा । होता यजिष्ठो ।
 [२३७] १, ७७, ४ वाजप्रसूता इषयन्त मन्म ।
 ७, ८७, ३ प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ।
 [२३९] १, ७८, १ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे ।
 द्युमैरभि प्र णोनुमः ।
 ४, ३२, ९ (वामदेवो गौतम । इन्द्र)
 अभि त्वा गोतमा गिरानूषत ।
 (१०७०) ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।
 (१०७७) ६, १६, ३६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।
 (१३१११) ८, ४३, २ (विरूप आत्रिरस । अग्नि)
 जातवेदो विचर्षणे ।
 [२३९ - २४३] १, ७८, १-५ द्युमैरभि प्र णोनुमः ।
 [२४६] १, ७९, ३ (गोतमो राहूगण । अग्निः)
 अर्यमा मित्रो वरुणः परिष्मा ।

८, २७, १७ (मनुर्वैवस्वत । विश्वेदेवा)
 — वरुणः सरातयो ।
 १०, ९३, ४ (तान्व पात्र्य । विश्वेदेवा)
 [२४७] १, ७९, ४ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 ईशानः सहस्रो यहो ।
 (११८७) ७, १५, ११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 [२४८] १, ७९, ५ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 अग्निरीळेन्यो गिरा ।
 (१८५५) १०, ११८, ३ (उरुक्षय आमर्षयव । रक्षोहाऽग्नि)
 [२५१] १, ७९, ८ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 सत्रासाहं वरेण्यम् ।
 ३, ३४, ८ (विश्वामित्रो गोथिन । इन्द्र)
 — वरेण्यं सत्रोदां ।
 [२५२] १, ७९, ९ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 रयिं विश्वायुपोपसम् ।
 ६, ५९, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । इन्द्राग्नी)
 [२५५] १, ७९, १२ (गोतमो राहूगण । अग्नि)
 अग्नी रक्षांसि सेधति ।
 (११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 [२५६-२६९] १, ९४, १-१४ अग्ने सख्ये मा रिषामा
 वयं तव ।
 [२५८] १, ९४, ३ (कुन्म आत्रिरस । अग्नि)
 त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
 (३८१) २, १, १३ (गृत्समद आनक्रो मार्गव (आत्रिरस
 आनहोत्रो) । अग्नि)
 [२६८] १, ९४, १३ शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमे ।
 ५, ६५, ५ स्याम सप्रथस्तमे ।
 [२७१] १, ९४, १६, (१८७८) ९५, ११, (१८७८)
 ९६, ९; (१७२६) ९८, ३, १००, १९, १०२,
 ११; १०३, ८; १०५, १९, १०६, ७, १०७,
 ३; १०८, १३; १०९ ८; ११०, ९, १११, ५;
 ११२, २५; ११३, २०; ११४, ११, ११५, ६;
 ९, ९७, ५८; तन्नो मित्रो वरुणो मामह-
 न्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७२] (औषसोऽग्नि प्रकरणं) । ऋ १।१.५। १-११
 १, ९५, ५ जिह्मानामूर्ध्वः स्वयंशा उपस्थे ।
 २, ३५, ९ जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।
 [१८७५] १, ९५, ८ (कुत्स आत्रिरसः । अग्नि औषसोऽग्निर्वा)
 त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् गोभिरद्भिः । धीः ।

१.७१.८ (ऋषभो वैश्वामित्र । पवमान सोम.)
 त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्थ सुष्टुती गोअग्रया ।
 (ऋ१, ९६, १—९ द्रविणोदा अग्निः प्रकरण ।)
 [१८७८] १.९५.११; १.९६९ (कुत्स आत्रिरस । अग्नि.)
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो
 रेवत्पाषक श्रवसे वि भाहि ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदिति
 सिन्धु पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७९-१८८६] १, ९६, १-७ देवा अग्नि
 धारयन्द्रविणोदाम् ।
 [१८८४] १.९६.६ (कुत्स आत्रिरस । अग्नि
 द्रविणोदा अग्निर्वा)
 रायो बुध्नः संगमनो वसूनां ।
 १०, १३९, ३ विश्वावसुर्देव गन्धर्वः । सविता)
 [१८८६] १.९६.८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।
 १, १५, ७ द्रविणोदा द्रविणसो ।
 [१८७८] १. ९६, ९ (१८७८) १. ९५, ११
 (गुचिरमि प्रकरणं ऋ १, ९७, १-८)
 (१८८७-१८९४) १, ९७, १, १-८,
 अप नः शोमुचदधम् ।
 [१८८९] १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
 (८४०) ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयो ।
 [१८९२] १, ९७, ६, (४) १, १, ४
 विश्वतः परिभूरसि ।
 [१७२५] १, ९८. २ (कुत्स आत्रिरस । अग्नि,
 वैश्वानरोऽग्निर्वा)
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां । स नो दिवा
 स रिषः पातु नक्तम् ।
 (१७९५) ७, ५, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्नि)
 पृष्टो दिवि धार्यग्निः पृथिव्यां ।
 (१८२८) १०, ८७, १ (पायुर्भारद्वाज । रक्षोहामि)
 स नो दिवा ।
 (जातवेदा अग्नि प्रकरण)
 [१८६२] १, ९९, १ स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ।
 (३६२) १, १८९, २, १०, ५६, ७
 स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
 [२७२] १, १२७, १ वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं ।
 (१४१९) ८, ७१, ११ अग्निं सूनुं-
 [२७३] १, १२७, २ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः) हुवेम
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः । होतारं चर्षणीनाम् ।

(१३९१) ८ । ६०, ३ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः
 १२७६) ८, २३, ७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
 अग्निं वः हुवे होतारं चर्षणीनाम् ।
 (१४०५) ८, ६०, १७ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 अग्निमग्निं वो हुवेम । होतारं चर्षणीनाम् ।
 [२७९] १, १२७; ८ (परुच्छेपो दैवोदासि । अग्निः)
 अतिथिं मानुषाणां ।
 (१२९४) ८ २३, २५ (विश्वमना वैयश्वः । अग्नि)
 [२८०] १, १२७, ९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्नि)
 शुष्मिन्तमो हि ते मदो घस्मिन्तम उत क्रतुः ।
 १, १७५, ५ (अगस्त्यो मैत्रावरुण । इन्द्र)
 [२८१] १, १२७, १० (परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि)
 विश्वासं क्षासु जोगुवे ।
 ५, ६४, २ (अर्चनाना आत्रेय । मित्रावरुणौ)
 [२८४] १, १२८, २ (परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि)
 क्रतुस्य पथा नमसा हविष्मता ।
 (१९९३) १०, ७०, २ (सुमित्रो वाऽयश्व ।
 आप्रीसूक्तं=नराशंस)
 क्रतुस्य नमसा मियेधो ।
 १०, ३१, २ (कवष ऐलषः । विश्वे देवाः)
 पथा नमसा विवासेत् ।
 [२८८] १, १२८, ६ (परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि)
 अरतिः . ।
 ... देवत्रा हव्यमोहिषे ।
 अग्निर्द्वारा व्यूषति ।
 (१२२४) ८, १९, १ (सोभरिः काण्व । अग्नि)
 अरतिं देवत्रा हव्यमोहिरे ।
 (१३०५) ८, ३९, ६ (नाभाक काण्व । अग्नि)
 अग्निर्द्वारा व्यूणुते ।
 [२९०] १, १२८, ८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्नि.)
 अग्निं होतारमीळते वसुधिति प्रियं चेतिष्ठमरतिं
 न्येरिरे
 (७६१) ५, १, ७ (बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः)
 अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
 (१०१९) ६, १४, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 अग्निं होतारमीळते
 (११९२) ७, १६, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । प्रगाथः)
 प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं ।

- [३०१] १, १४०, १० (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि ।
 (१७८५) ६, ८, ६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
 — धारयानामि ।
 [३१३] १, १४१, ९ अरान्न नेमिः परिभूरजायथा ।
 १, ३२, १५ — परि ता बभूव ।
 [३१९] १, १४३, २ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 स जायमानः परमे व्योमन्याविर्गनिः ।
 (१७८१) ६, ८, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
 — व्योमनि व्रतान्यग्निः ।
 (१८००) ७, ५, ७ (वसिष्ठो मन्त्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्निः)
 — व्योमन् ।
 क्रन्नपत्याय जातवेदो ।
 [३२५] १, १४३, ८ अदब्धेभिरदृष्टितेभिर्गिष्टेऽग्निमि-
 षद्भिः परि पाहि नो जा ।
 (१७८६) ६, ८, ७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिर्गिष्टे
 ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरिन् ।
 [३२९] १, १४४, ४ समाने योना मिथुना समोकसा ।
 १, १५९, ४ जामी सयोनी -- ।
 [३३०] १, १४४, ५ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 देवं मर्तास ऊतये हवामहे ।
 (५००) ३, ९, १ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 देवं मर्तास ऊतये ।
 (९०१) ५, २२, ३ (विश्वमामा आत्रेयः । अग्निः)
 — ऊतये ।
 (१२१९) ८, ११, ६ (वत्स काण्व । अग्निः)
 — ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
 [३३२] १, १४४, ७ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
 रण्वः संदृष्टौ पितुर्माँइव क्षयः ।
 (१४४८) ८, ७४, ७ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
 मन्द्र सुजात सुक्रतो ।
 १०, ६४, ११ (गयः श्रुतः । विश्वदेवाः)
 — क्षयो ।
 [३४०] १, १४६, ३ समानं वत्समभि संचरन्ती ।
 ३, ३३, ३, १०, १७, ११ समानं योनिमनु
 संचरन्ती (१०, १७, ११, संचरन्तम्) ।
 [३४३] १, १४७, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 ऋतस्य सामन्नयन्त देवाः ।

- (६९९) ४, ७, ७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 — धामन्नयन्त — ।
 [३४५] १, १४७, ३ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 (१८२५) ४, ४, १३ (वामदेवो गौतम । रक्षोहाऽग्निः)
 ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं
 दुरितादरक्षन् । — ररक्ष तान्सुकृतो
 विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ।
 [३४८] १, १४८, १ मर्थाद्यदी विष्टा मातरिश्वा ।
 (१८८) १, ७१, ४ — विभृतो -- ।
 [३५१] १, १४८, ४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् ।
 (११२५) ७, ३, २ (वसिष्ठो मन्त्रावरुणि । अग्निः)
 [३५३] १, १४९, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 महः स राय एषते पतिर्दन् ।
 १०, ९३, ६ (तान्व पाथ्यः । विश्वदेवाः)
 — एषते ।
 [३६१] १, १८९, १ (अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । अग्निः)
 विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
 (४७५) ३, ५, ६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 — देवो -- ।
 [३६२] १, १८९, २ (अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । अग्निः)
 स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
 १०, ५६, ७ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वदेवाः)
 [२४३८-४६] १, १९, १-९ मरुद्भिरग्न आ गहि ।
 [२४४०] १, १९, ३ (मेधातिथि काण्व । अग्निर्मरुतश्च)
 विश्वे देवासो अद्रुहः ।
 ९, १०२, ५ (त्रित आपत्य । पवमानः सोमः)
 [२४४६] १, १९, ९ (मेधातिथि काण्व । अग्निर्मरुतश्च)
 अभि त्वा पूर्वपीतये ।
 ८, ३, ७ (मेधातिथि काण्व । इन्द्रः)
 [२४६६] १, ९३, २ (गौतमो राहृगण । अग्नीषोमः)
 गवां पोषं स्वश्च्यम् ।
 ९, ६५, १७ (भृगुवार्कणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
 [२४६७] १, ९३, ३ (गौतमो राहृगण । अग्नीषोमः)
 विश्वमायुर्व्यश्नुत ।
 ८, ३१, ८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पती)
 विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
 १०, ८५, ४२ (सूर्यो सावित्री ऋषिका । सूर्यो सावित्री)
 विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

[२४६८] १, ९३, ४ अग्निपोमा चेति तद्वीर्यं ।
३, १२, ९ तडां चेति प्र वीर्यम् ।
[२४७०] १, ९३, ६ (गोमामा गहगण । अग्निपोमा)
यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ।

७, ९९, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राविष्णू)
[२४७२] १, ९३, ८ (गोतमो गहगण. । अग्निपोमौ)
विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
७, ८२, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि. । इन्द्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[३७०] २, १, २ (गृत्समद ज्ञानको मार्गव [आग्निग
जोनहोत्र] । अग्नि)
(१६६०) १०, ९१, १० (अग्निग वनहोत्र । अग्नि)
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमुत्विष्यं तव नेष्टु
त्वमग्निहृतायतः ।
तव प्रशास्त्र त्वमध्वरीयस्मि ब्रह्मा चासि
गृहपतिश्च नो दमे ।
[३८१] २, १, १३ (२५८) १ ९४३
त्व देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
[३८४] २, १, १६ (गृत्समद ज्ञानको मार्गव [आग्निग
जोनहोत्र] । अग्नि) =
(३८४) २, २, १३, (गृत्समद ज्ञानको । अग्नि)
ये स्तोतृभ्यो गो अग्रामश्वेषशस-
मग्ने गतिमुपसृजन्ति मृग्यः ।
अस्माञ्च ताश्च प्र हि नेपि वम्य
आ बृहद्वेदम विदथे सुवीराः ।
(३८४) २, १, १६, २, १३, ११, २१, १३, १३, १४, १२
१५, १०, १६, ९, १७, ९, १८, ९ २०, ९ २३, १९ २४, १६
२७, १७, २८, ११, २९, ७, ३३, १५, ३५, १५, ३९, ८, ४०, ६,
४२, ३, ९, ८६, ४८, बृहद्वेदम विदथे सुवीराः ।
[३८६] २, २, २ (गृत्समद ज्ञानको । अग्नि)
अभि त्वा नक्तीरुपसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न
स्वसेरपु धेनवः ।
८, ८८, १ (नोया गोतम । इन्द्र)
अभि वत्स न स्वसेरपु धेनवः ।
[३८८] २, २, ४ पाथो न पायु जनसी उभे अनु ।
९ ७०, ३ अदाभ्यासो जनुपी उभे अनु ।
[३९०] २ २, ८ (गृत्समद ज्ञानको । अग्नि)
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो ।
(१५४४) १०, ११, ५ (हविर्यान आग्नि । अग्नि)
होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।

[४१७] २, ४, २ (गोमाहुतिर्भागव । अग्नि)
इमं विधन्तो अपां सधस्थे
द्वितादयुर्मृगवो विश्वारयोः ।
(१६००) १०, ४६, २ (वत्सप्रिर्भालन्दन. । अग्नि.)
—सधस्थे ।
इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ।
[४२८] २, ५, ४ (गोमाहुतिर्भागव । अग्नि.)
वया इवानु रोहते ।
८, १३, ६ (नारद काण्व. । इन्द्र)
—जुषन्त यत् ।
[४३२] २, ५, ८ (गोमाहुतिर्भागव । अग्नि)
अयमग्ने त्वे अपि ।
(१३७०) ८, ४४, २८ (विष्णु आङ्गिरस । अग्नि)
[४३३] २, ६, १ (३२) १, २६, ५, (१०४) १, ४५, ५
इमा उ पु श्रुधी गिरः ।
[४३७] २, ६, ५ (गोमाहुतिर्भागव । अग्नि)
स नो वृष्टिं दिवस्परि ।
९, ६५, २४ (मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा । पवमान सोम)
ते नो — ।
[४४३] २, ७, ३ अति गांहमहि द्विषः ।
(५३९) ३, २७, ३ अति द्वेषांसि तरेम ।
[४४४] २, ७, ४ (गोमाहुतिर्भागव । अग्नि)
शुचिः पावक वन्द्यो ।
(११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणि. । अग्नि)
—ईड्यः ।
[४०१] २, ८, ५ अग्निमुक्त्यानि वावृधुः ।
८, ६, ३५, ८, ९५, ६ इन्द्रमुक्त्यानि वावृधुः ।
[४०१] २, ८, ५ (गृत्समद ज्ञानको । अग्नि)
विश्वा अधि श्रियो दधे ।
(१५८३) १०, २१, ३ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा
वमुकृद्धा वामुक । अग्नि)
—श्रियो धिषे विवक्षसे ।

१०, १२७, १ (कुशिक सोमरात्रिर्वा भारद्वाजा ।
रात्रि)

—अथियो ऽधित ।

[४०२] २, ८, ६ (गुत्तमद शौनक । अग्नि)

अरिण्यन्त सचेमह्यभि प्याम पृतन्यत ।

८, २५, ११ (विश्वमना वेयथ । विश्वदेवा)

अरिण्यन्तो नि पायुभि सचेमहि ।

९, ३५, ३ (प्रभवमगात्रिरम । पवमान सोम)

अभि प्याम पृतन्यतः ।

(९२०) ५, २६, १, (१०४३) ६, १८, २,

(१४७८) ८, १००, १६.

आ देवान्वाक्षि यक्षि च

२, ३६, ४, (गुत्तमद शौनक । अभि शुचिश्च)

आ वक्षि देवो इह विप्र यक्षि च ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[४५१] ३, १, ५, क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।

३, ३१, १६ मध्वः पुनाना — ।

[४५९] ३, १, १३, १, १६४, ५०

अपा गर्भं दर्शतमोषधीनां ।

[४६१] ३, १, १५ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।

३, ५४, १ (प्रजापतिवेद्यामित्र, प्रजापतिर्वान्यो वा ।

विश्वदेवा) शृणोतु नो — ।

[४६५] ३, १, १९ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान

महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।

३, ३१, १८ (कुशिक णेर्षारि विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्र)

४, ३२, १ (वामदेवो गातम । इन्द्र)

आ त न इन्द्र वृत्रहन्त्रस्मात्समर्धमा गहि ।

महान्महीभिरूतिभिः ।

[४६६] ३, १, २० (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः)

महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जमन्

निहितो जातवेदाः ।

३, ३०, २ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र)

स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा ।

(४६६) ३, १, २१. (४६७) ३, १, २० जन्मञ्जमन्

निहितो जातवेदाः ।

[४६७] ३, १, २१ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

तस्य वयं सुमर्तो यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे

स्याम ।

३, ५९, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । मित्र)

६, ४७, १३ (गणो भारद्वाज । इन्द्र)

१०, १३१, ७ (मुर्कारि काक्षीवत । इन्द्र)

१०, १४, ६ (यमो वैवस्वत । अत्रि पित्रथर्वभृगुमोसा)

लिङ्गोक्तदेवता पितरौ वा)

तेषां वयं सुमर्तो यज्ञियानामपि —

[४६८] ३, १, २२ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

अग्ने महि द्रविणमा यजस्व ।

(१६५०) १०, ८०, ७ (अग्नि गान्धर्वो वश्यानरो वा

सतिर्वाजंभरो वा । अग्नि)

[४६९] ३, १, २३ = ३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११

(विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि) ३, १५, ७ (उरुक्षाल कात्य ।

अग्नि) = ३, २२, ५ (गार्गी काशिक । अग्नि) = ३, २३, ५

(देवत्रया देववान्वा भारतो । अग्नि)

इच्छामग्ने पुरुदस् सनि गोः शश्वत्तमं हवमानाय

साध ।

स्यान्नः सृनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ।

[४७३] ३, ५, ४, मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।

(७७९) ५, ३, १ त्वं मित्रो भवासि यत्समिद्धः ।

[४७३] ३, ५, ४, (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।

१०, ८३, २ (मन्युस्तापग । मन्यु)

मन्युर्होता—

[४७४] ३, ५, ५, (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

पाति प्रियं रिपो अग्रं पद वेः ।

(१७६५) ४, ५, ८, (वामदेवो गातम । वयानरोऽग्नि)

—रूपो—

[४७५] ३, ५, ६ विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।

(६६१) १, १८९, १ —देव— ।

[४६९] ३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११

३, १५, ७ = ३, २२, ५ = ३, २३, ५

[४८१] ३, ६, २ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)

आ रोदसी अपृणा जायमान

४ १८, ५ (अदिति ऋषिका । वामदेव)
 आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।
 (१८११) ७, १३, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।
 वैश्वानरोऽग्नि)
 —जायमानः ।
 (१५९४) १० ४५, ६ (वन्मग्निर्मालन्दन । अग्नि)
 —अपृणाज्जायमानः ।
 [४८४] ३, ६, ५ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 त्वं दूतो अभवो जायमानः ।
 [४८५] ३, ६, ६, (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ।
 (९९३) ६, १०, १ (भरद्वाजो वारुण्य । अग्नि)
 —करति जातवेदा ।
 (१२०६) ७, १७, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 (१२०७) ७, १७, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 —करति जातवेदा ।
 [४८८] ३, ६, ९ (१९५२) २, ३, ११ अनुष्वधमा
 वह मादयस्व ।
 [४६९] ३, ६, ११ ३, १, २३ ३, ५, ११
 ३, ६, ११, ३, ७, ११;
 ३, १५, ७ ३, २२, ५ ३, २३, ५
 [४९७] ३, ७, ८, (१९५९) ३, ४, ७
 [५००] ३, ९, १ : (९०१) ५ २२, ३, ८, ११, ६
 देवं मर्तास ऊतये ।
 (३३०) १, १४४, ५ — ऊतये हवामहे ।
 [५००] ३, ९, १ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 अपां नपातं सुभग सुदीदिति ।
 (१२२७) ८, १९, ४ (सोमग्नि काव । अग्नि)
 ऊर्जो —
 [५००] ३, ९, १; १, ४०, ४ सुप्रतूर्तिमनेहसम् ।
 [५०५] ३, ९, ६ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 (१८५७) १०, ११८, ५ (उरुक्षय आमहीयव ।
 रक्षोहाऽग्नि)
 देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः ।
 १०, ११९, ६३ (लव ऐन्द्र । आत्मा [इन्द्र])
 देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
 (१६९८) १०, १५०, १ (मृळीको वासिष्ठ । अग्निः)
 देवेभ्यो हव्यवाहन ।

[५०७] ३, ९, ८ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 शिरं पावकशोचिषम् ।
 (१३४०) ८, ४३, ३१ (विष्प आङ्गिरस । अग्नि)
 (१४७३) ८, १०२, ११ (प्रयोगो भार्गव, पावकोऽ
 मिर्बाहर्हस्पत्यो वा, गृहपति — यविष्ठो सहस
 पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्नि)
 (१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,
 वसुकृद्वा वामुक । अग्नि)
 —पावकशोचिषं विवक्षसे ।
 [५०८] ३, ९, ९ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 १०, ५२, ६ (अग्नि सौर्चाक । विश्वेदेवा)
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं
 त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
 औक्षन्धृतरस्तुर्न्यीहरस्मा
 आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥
 [५०९] ३, १०, १ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् ।
 (१३६१) ८, ४४, १९ (विष्प आङ्गिरस । अग्नि)
 —मनीषिणः ।
 १०, १३४, १ (मान्धाता यौवनाश्व । इन्द्र)
 महान्त त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
 [५१०] ३, १०, २ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने ।
 गोपा क्रतस्य दीदिहि स्वे दमे ।
 (१५८७) १०, २१, ७ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,
 वसुकृद्वा वामुक । अग्नि)
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि वेदिरे ।
 (१८५९) १०, ११८, ७ (उरुक्षय आमहीयव ।
 रक्षाहोऽग्नि)
 अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह । गोपा क्रतस्य
 दीदिहि ।
 [५१०] ३, १०, २ अग्ने होतारमीळते । (१०१९)
 ६, १४, २, अग्निं होतारमीळते (२९०) १, १२८, ८
 [५११] ३, १०, ३ (विश्वामित्रो गायिन । अग्नि)
 ददाशति समिधा जातवेदसे ।
 (११७४) ७, १४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 समिधा जातवेदसे ... ।
 नमस्विनो वयं दाशमाग्नये ।
 [५१२] ३, १०, ४ अग्निर्देवभिरागमत् ।
 (५) १, १, ५ देवो— ।

[५१६] ३, १०, ८ स नः पावक दीदिहि
(१९) १, १२, १० — दीदिव ।

[५१७] ३, १०, ९ तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः
समिन्धंत । १, २२, २१ (विष्णुदेवता)
तद्विप्रासो विपन्यवो — ।

[५१६] ३, १०, ८ द्युमदस्मे सुवीर्यम् ।
(५८०) ३, १३, ७ द्युमदग्ने — ।

[५१७] ३, १०, ९ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
हव्यवाहममर्त्य सहोवृधम् ।
(७०४) ४, ८, १ (वामदेवो गांतम । अग्नि)

हव्यवाहममर्त्यम् ।
(१४७९) ८, १०२, १७ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्निर्वार्ह-
स्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठो सहम पुत्राऽन्यतरं वा । अग्नि)
हव्यवाहममर्त्यम् ।

[५२०] ३ ११ ३ केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः ।
१, २, १० आत्मा — ।

[५२१] ३, ११, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
वह्नि देवा अकृण्वत ।
(१२०३) ७, १६, १२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । प्रगाथ)

[५२३] ३, ११, ६ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
अग्निस्तुविश्रवस्तम ।
(९१५) ५ २५ ५ (वसुध आत्रेय । अग्नि)
— स्तमं ।

[५२५] ३, ११, ८ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
मन्मभिः । विप्रासो जातवेदसः ।
(१२१८) ८ ११ ५ (वसु मण्व । अग्नि)
मनामहे — ।

[५७५] ३, १३, २ १, १३४, २ दक्षं सचन्त ऊतयः ।
[५८०] ३, १३, ७ द्युमदग्ने सुवीर्यम् ।
(५१६) ३, १०, ८ द्युमदस्मे — ।

[५८५] ३, १४, ५ (ऋषभो वैश्वामित्र । अग्नि)
उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।
(१०८७) ६, १६, ४६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)

उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ।
(१६३८) १०, ७९, २ (अग्नि सौचीको वैश्वानरो वा
सतिर्वाजंभरो वा । अग्नि)
उत्तानहस्ता नमसाधि विश्व ।

[५९२] ३, १५, ५ अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरुणि ।

२, २५, ५ — दधिरे — ।

(४६९) ३, १५, ७ = ३, १, २३ = ३, ५, ११ =
३, ६, ११ = ३, ७, ११ = ३, २२, ५ = ३, २३, ५

[५९५] ३, १६, २ (उक्कील कात्य । अग्निः)

इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं ।
७, १८, २५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मुद्राम पेजवन)
— मरुतः सश्चतानु ।

[५९९] ३, १६, ६ तुविद्युन्न यशस्वता ।

१, ९, ६ — यशस्वतः ।
[६०१] ३, १७, २ यथा दिवा जातवेदश्चिकित्वान् ।
(६७३) ४, ३, ८ साधा दिवो — ।

[६०३] ३, १७, ४, २, ४०, १ अकृण्वन्नमृतस्य देवा
नाभिम् ।

[६०४] ३, १७, ५ (कतो वैश्वामित्र । अग्नि)

यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता
स्वधया च शंभुः ।

(७८२) ५, ३, ५ (वसुध आत्रेय । अग्निः)
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो
अस्ति स्वधावः ।

[६१०] ३, १९, १ (गार्गी कौशिक । अग्नि)

स नो यक्षदेवताता यजीयान् ।
(१६१६) १०, ५३, १ (देवा आग्नि सोचीक । अग्नि)
[६११] ३, १९, २ (गार्गी कौशिकः । अग्नि)

सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।
प्रदक्षिणिदेवतातिमुराणः ।
(६८४) ४, ६, ३ (वामदेवो गांतम । अग्नि)
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।

[६१८] ३, २१, १ (६०१) ३, २१, ४ स्तोकासो
(३, २१, ४ स्तोकासो)
अग्ने मेदसो घृतस्य ।

[६१९] ३, २१, २ (गार्गी कौशिक । अग्नि)

श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ।
१०, २४, २ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा, वसुकुद्धा
वासुकः । इन्द्र)
वार्यं विवक्षसे ।

[६६९] ३, २२, ५ (गार्गी कौशिक । अग्नि)

३, १, २३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११ =

३, १५, ७ (उत्काल कात्य । अग्नि)
 ३, २३, ५ (देवपत्न्या देववात-य मार्गता । अग्नि.)
 इलामग्ने पुरुदंसं सनि गा साध ।
 स्यान्नः सूनस्तनयो त्वस्म ॥
 [५२७] ३, २४, १ ३, ८, ३ चर्चो धा यज्ञवाहसे ।
 [५२९] ३, २४, ३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 अग्ने द्युमन जागृवे सहसः सूनवाहुत ।
 एद वर्हि सदो मम ।
 (१२४८) ८, १९, २५ (रोमरि काण्व । अग्नि)
 यदग्ने ।
 सहसः सूनवाहुत ।
 (१३७५) ८, ७५, ३ (विष्प आदिरग । अग्नि)
 सहसः सूनवाहुत ।
 ८, १७, १ (ररिम्बठि काण्व । इन्द्र)
 एद वर्हि सदो मम ।
 [५३८] ३, २७, २ गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
 (९६) १, ४४, ११ नि त्वा — ।
 ८, ६, ३ स्तोमयज्ञस्य — ।
 (१२७८) ८, २३, ९ यज्ञस्य साधनं गिरा ।
 [५३९] ३, २७, ३ अनि द्वेपांसि तरेम ।
 (४४३) २, ७, ३ अनि गाहेमहि द्विप ।

[५४०] ३, २७, ४ अग्निः पावक ईड्यः ।
 (११८६) ७, १५ १०, शुचि — ।
 [५४१] ३, २७, ५ पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 (१७३७) ३, २, ११ वैश्वानरः — ।
 [५४३] ३, २७, ७ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 होता देवो अमर्त्यः ।
 (१२४७) ८, १९, २४ (रोमरि काण्व । अग्नि)
 [५४९] ३, २७, १३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 तिरस्तमांसि दर्शतः ।
 (१४४६) ८, ७४, ५ (गोपवन आत्रेय । अग्नि)
 दर्शतम् ।
 [५५२] ३, २८, १ (५५७) ३, २८, ६
 पुगोलाशं जातवेदः ।
 [५६१] ३, २९, ४ नाभा पृथिव्या अधि ।
 (१९४८) २, ३, ७ — अधि सानुषु त्रिषु ।
 [५६१] ३, २९, ४. (१०५) १, ४५, ६ अग्ने हव्याय
 वोल्हवे ।
 (८३२) ५, १४, ३ अग्निं हव्याय — ।
 [५७३] ३, २९, १६ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 प्रजानन्विद्वौ उप याहि सोमम् ।
 ३, ३५, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२४५०] ४, १, ३, (वामदेवो गौतम । अग्नि ,
 अग्नी वरुणौ)
 अग्ने मृळाक वरुणे सचा विदे मरुत्सु विश्वभानुषु ।
 ८, २७, ३ (मनुवेवग्वत । विश्वेदेवा)
 प्र म न एत्ववरोरिश्ना देवेषु पर्य्य ।
 आदित्येषु प्र वरुणे यतप्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ।
 [६३७] ४, १, ११ महो बुधे रजसो अस्य योनौ ।
 ४, १७, १४ त्वचो बुधे —
 [६३९] ४, १, १३ अश्मव्रजा सुदुघा वज्र अन्तः ।
 ५, ३१, ३ प्राचोदयत्सुदुघा — ।
 [६४१] ४, १, १५ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 इह नरो वचसा देव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वज्रु ।
 ४, १६, ६ (वामदेवो गौतम । इन्द्र)
 वचोभिर्व्रजं — ।

(१५९९) १०, ४५, ११ (वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः)
 व्रजं — ।
 [६४३] ४, १, १७ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
 ६, ५१, २ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः)
 ७, ६०, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)
 [६४६] ४, १, २० (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 सुमृळाको भवतु जातवेदाः ।
 ६, ४७, १२ (गणो भारद्वाज । इन्द्र)
 १०, १३१, ६ (मुकृति काक्षीवत । इन्द्र)
 विश्ववेदाः ।
 [६४७] ४, २, १ (२३४) १, ७७, १
 यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ।
 [६४८] ४, २, २ इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य ।

- (११७) १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो ।
 ६, ५०, ९ उत त्वं सूनो— ।
 [६६४] ४, २, १८ आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्य
 देवानां यजनिमान्त्युय ।
 ७, ६०, ३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्ट ।
 ८, २५, ७ अधि या बृहता दिवो रे मि यूथेव पश्यत ।
 [६६६] ४, २, २०, (२१४) १, ७३, १० एता ते अग्न
 उचथानि वेधा ।
 [६६६] ४, २, २० उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो न ।
 ८, ४८, ६ प्र चक्षय कृणुहि— ।
 [६६७] ४, ३, २ १, १२४, ७, १०, ७१, ४, (१६६३)
 १०, ९१, १३ जायेव पत्य उशती सुवासा ।
 [६७३] ४, ३, ८ साधा दिवो जातवेदाश्चिकित्वान् ।
 (६०१) ३, १७, २ यथा दिवो— ।
 [६७५] ४, ३, १० (वामदेवो गांतम । अग्नि)
 वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।
 ६, ६६ १ (भारद्वाजो बार्हस्पत्य । मत्त)
 सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।
 [६७६] ४, ३, ११ (वामदेवो गांतम । अग्नि)
 आवि स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
 (२३९८) १०, ८८, २ सर्वन्वानाग्निस्मा वामदेव्यो वा ।
 मर्यु-वैश्वानरो)
 [६८३] ४, ६, २ (वामदेवो गांतम । अग्नि)
 ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् ।
 (७४१) ४ १३, २ (वामदेवो गांतम । अग्नि
 [लिङ्गोक्तदेवता इति एके])
 —सविता देवो अश्रेद् ।
 (७४६) ४, १४, २ (वामदेवो गांतम । अग्नि
 [लिङ्गोक्तदेवता इति एके])
 ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ।
 ७, ७२, ४, (वसिष्ठो मैत्रावरुण । अध्विनौ)
 —सविता देवो अश्रेद् ।
 [६८४] ४, ६ ३ यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।
 ६, ६३, ४ प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।
 [६८४] ४, ६, ३; (६११) ३, १९, २
 प्रदक्षिणैवतातिमुराणः ।
 [६८५] ४, ६, ४ (वामदेवो गांतमः । अग्नि)
 स्तीर्णो बर्हिषि समिधाने अग्ना ।
 ६, ५२, १७ (ऋजिश्वा भरद्वाजः । विध्वेदेवा)
 —अग्नौ ।

- [६८६] ४, ६, ५ (वामदेवो गांतम । अग्नि
 अग्निर्मन्दो मधुवचा क्रतावा
 (११४५) ७, ७, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुण । अग्नि
 [६९२] ४, ६, ११ (वामदेवो गांतम । अग्नि)
 होतारमग्नि मनुषो नि षेदुर्मस्यन्त
 उशिजः शंसमायोः
 (७८१) ५, ३, ४ (वयु उत आत्रेय । अग्नि
 —नि षेदुर्मस्यन्त उशिज —
 [६९३] ४, ७ १ (वामदेवो गांतम । अग्निः)
 होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः
 (१३९१) ८, ६०, ३ (मर्यु प्रगायः । अग्निः
 मन्दो —ड्यो
 [६९६] ४, ७, ४ १, ८६, ५, (९०३) ५, २३ १
 विश्वा यश्चर्षणीरभि
 [७००] ४, ७ ८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि ।
 (७०७) ४, ८, ४ विड्वा आरोधनं दिव
 [७०१] ४ ७ ९ कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाः ।
 (११३) १, ५८ ४— रुशर्मे अजर ।
 [७०२] ४, ७, १० यदस्य वातो अनुवाति शोचिः ।
 (३५१) १, १४८, ४; (११२५) ७, ३, १
 आदस्य वातो अनु वाति शोचिः
 (१६९३) १०, १४२, ४ यदा ते वातो अनुवाति
 शोचिः
 [७०४] ४, ८, १, (१४७९) ८, १०२, १७ हव्यवाह
 ममर्त्यम् । ३, १०, ९ —मर्त्य सहावृधम्
 [७०५] ४, ८, २; (२) १, १, २ स देवा एह वक्षति
 [७०७] ४, ८, ४ विड्वा आरोधनं दिवः ।
 (७००) ४ ७, ८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि
 [७०९] ४, ८, ६, (वामदेवो गांतमः । अग्निः
 ससवांसो वि शृण्वरे
 ८, ५४, ६ (मार्तण्ड्या काण्व । उन्द्रः
 [७१२] ४, ९, १ अग्ने मृळ महौ असि ।
 (७९) १, ३६, १२ स नो मृळ
 [७१६] ४, ९, ५ (वामदेवो गांतम । अग्नि)
 वेपि ह्यध्वरीयताम्
 हव्या...
 (९६१) ६, २, १० (भारद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि
 वेपि—
 .. हव्यम्—
 [७२४] ४, १०, ५ धिये रुक्मो न रोचत उपाके ।

(११२९) ७. ३, ६ वि यद्रक्षमो न रोचस उपाके ।
 [७३२] ४, ११, ५ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 त्वामग्ने ... ।
 दमूनसं गृहपतिममूरम् ।
 (८२१) ५, ८, १ (इष आत्रेय । अग्नि)
 त्वामग्ने— ।
 .. वरेण्यम्— ।
 [७३६] ४, १२, ३ अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।
 ७, ६०, ११ वाजस्य साता ।
 [७३६] ४, १२, ३ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 दधाति रत्नं विधत्ते यविष्ठो ।
 (१२०३) ७, १६, १० (वसिष्ठो मेत्रावरुणि । अग्नि)
 —विधत्ते सुवीर्यम् ।
 [७३९] ४, १०, ६ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 १०, १२६, ८ (कुल्मलवर्हिष ङैलपि अहोमुखा वामदेव्य ।
 विश्वेदेवा)
 यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि पिताममुञ्चता
 यजत्राः ।
 एषो ष्व १ स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतर
 न आयुः ।
 [७४०] ४, १३, १ यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् ।
 १, ११७, २ (अश्विनो)
 [७४१] ४, १३, २, ७, ७२ ४ ऊर्ध्वं भानुं सविता
 देवो अश्रेत् । (६८३) ४, ६, २
 —सवितेवाश्रेत् । (७४६) ४, १४ २ ऊर्ध्वं केतुं— ।
 [७४४] ४, १३, ५=४, १४, ५ (वामदेवो गौतम । अग्नि
 (लिङ्गोक्तदेवता इति एके)
 अनायतो अनिवद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव
 पथते न ।
 कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः
 समृतः पाति नाकम् ।
 [७४६] ४, १४, २ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेत् ।
 (७४१) ४, १३, २

[७४६] ४, १४, २ जोतिर्विध्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।
 १, ९२, ४ — कृण्वती ।
 [७४६] ४, १४, २, १, ११५, १ आप्रा द्यावापृथिवी
 अन्तरिक्षं ।
 [७४७] ४, १४, ३; उषा ईयते सुयुजा रथेन ।
 १, ११३, १४ ओषा याति— ।
 [७४८] ४, १४ ४ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।
 ४, ४५, २ (वामदेवो गौतम । अश्विनो)
 —उषसो व्युष्टिषु ।
 [७४८] ४, १४, ४ अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ।
 १, १८४, २ अस्मे उ षु वृषणा मादयेथाम् ।
 [७४४] ४, १४, ५; ४, १३, ५
 [७५१] ४, १५, ३ (वामदेवो गौतम । अग्निः)
 दधद्रत्नानि दाशुषे ।
 ९, ३, ६ (अनुःशेष आर्जगति स देवरात कृत्रिमो
 वैश्वामित्रः । पवमान सोम)
 [७५४] ४, १५, ६ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 तमर्धन्तं न सानसिम् ।
 (१४७४) ८, १०२, १२ (प्रयोगो मार्गव , पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो
 वा गृहपति—यविष्ठो सहग . पुत्राऽन्यतरो वा । अग्निः)
 ४, १५, ७, ९ (म ७, देवता सोमक माहदेव्य ,
 कुमार साहदेव्यः । म ९, अश्विनो)
 ४, १५, ८ कुमारात्साहदेव्यात् ।
 [१८२७] ४, ५८, ३ (वामदेवो गौतम । अग्नि सूर्यो वा
 आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा)
 महो देवो मर्त्या आ विवेश
 ८, ४८, १२ अमर्त्यो— ।
 [१९०४] ४, ५८, १० अभ्यर्पत सुष्टिं गव्यमाजिम् ।
 ९, ६२, ३ (पवमान सोम.) ।

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[७५९] ५, १, ५ (बुधगर्विष्ठरावात्रेयो । अग्नि)
 दमेदमे सप्त रत्ना दधानो ।
 ६, ७४, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सोमारुद्रो)
 —दधाना ।

[७५९, ७६०] ५, १, ५-६ अग्निर्होता नि षसादा
 (६ न्यसीदत्) यजीयान् ।
 (९४०) ६, १, २ अधा होता न्यसीदो यजीयान् ।
 (९४४) ६, १, ६ होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।

- १०, ५२, २ अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।
 [७६१] ५, १, ७ अग्निं होतारमीलते नमोभिः ।
 (२९०) १, १२८, ८ अग्निं होतारमीलते
 वसुधितिं । (१०१९) ६, १४, २ अग्निं
 होतारमीलते ।
 [७६२] ५, १, ८ सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजाः ।
 ७, ५५, ७ — वृषभः ।
 [७६५] ५, १, ११ एह देवान्हविरद्याय वक्षि ।
 (७९३) ५, ४, ४ आ च देवान्हवि .. ।
 [७७४] ५, २, ८ (कुमार आत्रेय वृषो वा जान उभौ वा,
 २, ९ वृषो जान । अग्नि)
 प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
 इन्द्रो विद्वो अनु हि त्वा चक्ष
 तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ।
 १०, ३२, ६ (कवष णेलषः । इन्द्रः)
 [७७७] ५, २, ११; ५, २९, १५ रथं न धीर स्वपा
 अतक्षम् ।
 १, १३०, ६ — स्वपा अतक्षिणः ।
 [७७९] ५, ३, १ त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्ध ।
 (४७३) ३, ५, ४ मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।
 [७८१] ५, ३, ४; (६९२) ४, ६, ११ होतारमग्निं
 मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त (४, ६, ११ नमस्यन्त)
 उशिजः शंसमायोः ।
 [७८५] ५, ३, ८ (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
 त्वामस्या व्युषि देव पूर्वं दूतं कृण्वाना अयजन्त
 हव्यै ।
 (१६८१) १०, १२२, ७ (चित्रमहा वामिष्ठ । अग्निः)
 त्वामिदस्या उपसो व्युषिषु दूतं कृण्वाना
 अजयन्त मानुषा ।
 [७९१] ५, ४, २ हव्यवाल्ग्निरजर पिता न ।
 (१७९८) ३, २, २ हव्यवाल्ग्निरजरश्चनोहितः ।
 [७९१] ५, ४, २, ३, ५४, २२, ६, १९, ३
 अस्मद्यक्षसं मिमीहि श्रवांसि ।
 [७९२] ५, ४, ३ विशां कविं विशपतिं मानुषीणां ।
 (१७३६) ३, २, १० — मानुषीरिषः ।
 (९४६) ६, १, ८ — शश्वतीनां ।
 [७९३] ५, ४, ४ यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
 १, १२३, १२ यतमाना — ।
 [७९३] ५, ४, ४ आ च देवान्हविरद्याय वक्षि ।
 (७६५) ५, १, ११ एह देवान्ह — ।

- [७९६] ५, ४, ७ (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
 वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक
 भद्रशोचे ।
 (११७५) ७, १४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 वयं ते अग्नं समिधा विधेम ।
 वयं देव हविषा भद्रशोचे ।
 [७९७] ५, ४, ८ (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
 अस्माकमग्ने अध्वर जुपस्व ।
 ६, ५२, १२ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवा)
 इमं नो अग्ने अध्वरं ।
 ७, ४२, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । विश्वेदेवा)
 इमं नो अग्ने — ।
 [७९८] ५, ४, ९ अस्माकं बोध्यविता तनूनाम् । ;
 ७, ३२, ११ (इन्द्रः)
 [८०१-१०] ५, ६, १ - १०; ९, २०, ४
 इपं स्तोतृभ्य आ भर ।
 ८, ७७, ८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।
 ८, ९३, १९ कया स्तोतृभ्य — ।
 [८०५] ५, ६, ५ (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
 आ ते अग्न ऋचा हविः ।
 (१०८८) ६, १६, ४७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 — हविर ।
 [८०६] ५, ६, ६, १, ८१, ९ विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
 १०, १३३, २ विश्वं पुष्यासि — ।
 [८१०] ५, ६१० (वसुधृत आत्रेयः । अग्निः)
 दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 ८, ६, २४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 उत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 ८, ३१, १८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
 असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 [८११] ५, ७, १ ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते ।
 (१४६९) ८, १०२, ७ अच्छा नप्त्रे — ।
 [८२१] ५, ८, १ दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ।
 (७३२) ४, ११, ५ — गृहपतिममूरम् ।
 [८३०] ५, ९, ३ (गय आत्रेयः । अग्निः)
 यं शिशुं यथा जनिष्टारणी ।
 विशामग्निं स्वध्वरम् ।
 (१०८१) ६, १६, ४० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 शिशु जातं न विभ्रति ।
 विशामग्निं स्वध्वरं ।

[८३१] ५, ९, ४ (गय आत्रेय । अग्निः)

वनाग्ने पशुर्न यवसे ।

(९६०) ६, २, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्निः)

अग्ने पशुर्न यवसे ।

वना वृश्चन्ति शिकम ।

[८३४] ५, ९, ७ (गय आत्रेय । अग्निः)

तं नो अग्ने अमो नगे रयिं सहस्व आ भर ।

(९०४) ५, २३, २ (द्युम्नो विश्वचर्षणिआत्रेय । अग्निः)

तमग्ने पृथनाषट् रयिं सहस्व आ भर ।

[८३४] ५, ९, ७, (८४१) ५, १०, ७, (८७५) ५, १६, ५,

(८८०) ५, १७, ५, उतैधि पृत्सु नो वृधे ।

६, ४६, ३ भवा समत्सु ... ।

[८३५] ५, १०, १ प्र नो गया परीणसा । १, १२९, ९

[८३६] ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।

(८८२) ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।

[८४०] ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयः ।

(१८८९) १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।

[८४०] ५, १०, ६, ४, ३७, ७ विश्वा आशास्तर्यणि ।

[८४१] ५, १०, ७ स्तुत स्तवान आ भर ।

(२०) १, १२, ११ स न स्तवान आ भर ।

[८४३] ५, ११, २ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं ।

(१६७८) १०, १२२, ४ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)

—पुरोहित ।

शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं ।

[८४३] ५, ११, २ इन्द्रेण देवैः सरथं स वर्हीषि ।

(१९६३) ३, ४, ११— सरथं तुरेभिः ।

१०, १५, १०— सरथं दधानाः ।

[८४६] ५, ११, ५ आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ।

१०, १२०, ९ हिन्वन्ति च शवसा ।

[८४९] ५, १२, २ (८५३) ५, १२, ६ ऋतं स पात्यरुषस्य ।

(८४९) ५, १२, २ सपाम्यरुषस्य वृष्ण ।

[८५५] ५, १३, २ सिधमद्य दिविस्पृशः ।

(१९२५) १, १४२, ८, २, ४१, २० दिविस्पृशम् ।

[८५८] ५, १३, ५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)

त्वामग्ने वाजसातमं ।

स नो राख सुवीर्यम् ।

८, ९८, १० (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तं ।

स नो राख सुवीर्यम् ।

[८६१] ५, १४, २ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)

तम् ... ।

यजिष्ठ मानुषे जने ।

(१८६१) १०, ११८, ९ (उरुक्षय आमहीयवः ।

रक्षोहाऽग्निः) तं ... ।

[८६२] ५, १४, ३ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)

तं हि शश्वन्त ईळते ।

७, ९४, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)

ता हि शश्वन्त ईळते ।

[८६२] ५, १४, ३, (५६१) ३, २९, ४

[८६५] ५, १४, ६ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।

१, ९, ३ (इन्द्रः) स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।

[८६९] ५, १५, ४ (धरुण आङ्गिरसः । अग्निः)

दधानः परि त्मना विपुरूपो जिगासि ।

७, ८४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणां)

दधाना परि त्मना विपुरूपा जिगाति ।

[८७१] ५, १६, १ मर्तासो दधिरे पुरः ।

१, १३१, १, ८, १२, २२ देवासो ... ।

८, १२, २५ देवास्त्वा ।

[८७७] ५, १७, २ (पुरुरात्रेयः । अग्निः)

अस्य हि स्वयशस्तर ।

५, ८२, २ (शावाश्च आत्रेयः । सविता)

— स्वयशस्तरं ।

[८७७] ५, १७, २ मन्द्र परो मनीषया ।

(१४२६) ८, ७२, ३ रुद्रं ... ।

[८८२] ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।

(८३६) ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य— ।

[८९३] ५, २०, ३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)

होतार त्वा वृणीमहे ।

प्रयस्वन्तो हवामहे ।

(९२३) ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)

होतारं त्वा वृणीमहे ।

(१३८९) ८, ६०, १ (भर्ग प्रागाथ । अग्निः)

होतारं— ।

(१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,

वसुकृद्वा वासुक । अग्निः)

होतारं— ।

७, ९४, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)

प्रयस्वन्तो— ।

- ८, ६५, ६ (प्रगाथ काण्व । इन्द्रः)
 प्रयस्वन्तो— ।
 [८९७] ५, २१, ३ (सस आत्रेय । अग्नि)
 त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमकृत ।
 (९०५) ५, २३, ३ (द्युमो विश्वचर्षणिरात्रेय । अग्नि)
 विश्वे हि त्वा सजोषसो ।
 (१२८७) ८, २३, १८ (विश्वमना वयस्व । अग्नि)
 विश्वे हि त्वा सजोषसो— ।
 [८९७] ५, २१, ३, १, १५, ७,
 (१०४८) ६, १६, ७ यज्ञेषु देवमालते ।
 [८९८] ५, २१, ४ देवं वो देवयज्यया ।
 (१४२०) ८, ७१, १२ अग्निं वो— ।
 [८९८] ५, २१, ४ ऋतस्य योनिमासदः । ३, ६२, १३
 ९, ८, ३; ९, ६४, २२ ऋतस्य योनिमासदम् ।
 [८९९] ५, २२, १ (विश्वसामा आत्रेय । अग्नि)
 होता मन्द्रतमो विशि ।
 (१४१९) ८, ७१, ११ (सुदीति— पुस्मीलहावाग्निरसो
 तयोर्बान्यतरः । अग्नि)
 [९००] ५, २२, २ (विश्वसामा आत्रेय । अग्निः)
 न्यग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।
 प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ।
 (९२६) ५, २६, ७ (९२७) ८ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
 न्यग्निं जातवेदसं ।
 दधाता देवमृत्विजम् ।
 प्र यज्ञ— ।
 [९०१] ५, २२, ३; (५००) ३, ९, १,
 (१२१९) ८, ११, ६ देवं मर्तास ऊतये ।
 (३३०) १, १४४, ५ — ऊतये हवामहे ।
 [९०२] ५, २२, ४ स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रय
 ५, ३९, ५ गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ।
 [९०४] ५, २३, २, (८३४) ५, ९, ७
 [९०५] ५, २३, ३; (८९७) ५, २१, ३
 [९०५] ५, २३, ३; ५, ३५, ५; ८, ५, १७, ६, ३७
 जनासो वृक्तबर्हिष ।
 ३, ५९, ९ जनाय वृक्तबर्हिषे ।
 [९०६] ५, २३, ४ (द्युमो विश्वचर्षणिरात्रेय । अग्नि)
 रेवन्नः शुक्र दीदिहि शुम्भत्पावक दीदिहि ।
 (१०९६) ६, ४८, ७ (शंयुर्बार्हस्पत्य , तृणपाणि ।
 अग्निः)

- [९१४] ५, २५, ४ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
 अग्निं धीभिः सपर्यत ।
 (१२५९) ८, १०३, ३ (सोमर्ग काण्व । अग्निः)
 [९१५] ५, २५, ५; (५२३) ३, ११, ६
 [९१६] ५, २५, ६, १, ११, २ जेताग्मपरजितम् ।
 [९१८] ५, २५, ८ प्रावेवोच्यते बृहत् ।
 १०, ६४, १५, १०० । ८ प्रावा यत्र मधुपदुच्यते
 बृहत् ।
 [९१९] ५, २५, ९ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
 स नो विश्वा अति द्विषः ।
 ६, ६१, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । सरर्यती)
 सा नो— ।
 [९२०] ५, २६, १ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
 मन्द्रया देव जिह्वया ।
 आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
 (१०४३) ६, १६, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा मत् ।
 आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
 (१४७८) ८, १०२, १६ (प्रयोगो भार्गव , पावकोऽ
 मिर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति—यविष्टो सहस पुत्रोऽन्यतरं
 वा । अग्नि) आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
 [९२१] ५, २६, २ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
 तं त्वा घृतस्नवीमहे ।
 देवो आ वीतये वह ।
 (११९५) ७, १६, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 तं त्वा दूतं कृण्वहे यशस्तमं देवो आ वीतये
 वह । ... तयस्त्वमहे ।
 [९२३] ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
 अग्ने विश्वेभिरा गद्दि देवेभिर्द्व्यदातये ।
 ५, ५१, १ (स्वर्ग्यात्रेय । विश्वेदेवा)
 अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैर्द्व्यभिरा गद्दि ।
 देवेभिर्द्व्यदातये ।
 [९२३] ५, २६, ४, (८९३) ५, २०, ३,
 (१३८९) ८, ६०, १
 (१५८१) १०, २१, १ होतार त्वा वृणीमहे ।
 [९२४] ५, २६, ५ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
 यजमानाय सुन्वते ।
 ८, १४, ३ (गोप्रकल्पयसक्तिनो काण्वायन । इन्द्र)
 —सुन्वते ।

८, १०, १७ (इरिम्बिठि काण्व । इन्द्र)
 १०, १७५, ४ (ऊर्ध्वग्रावा आर्बुदिः सर्प । ग्रावाणः)
 [९२४] ५, २६, ५, (१३) १, १२, ४, (१३५६)
 ८, ४४, १४ देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
 (९२६) ५, २६, ७ (९२७) ८, (९००) ५, २२, २
 ५, २६, ९, १, ३९, ५ देवासः सर्वया विशा ।

[९२८] ५, २७, १ त्रैवृणो अग्ने दशभि सहस्रै ।
 ८, १, ३३ आसंगो अग्ने — ।
 [९३८] ५, २८, ६ (विश्ववारत्रेयी । अग्नि)
 अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
 (१५८६) १०, २१, ६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
 (१४२०) ८, ७१, १२ (सुदीति-पुरुमीकहावाङ्गिरसौ,
 तयोर्वान्यतरः । अग्नि)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[९४०] ६, १, २ (७५९) ५, १, ५
 [९४२] ६, १, ४ (१९७) १, ७२, ३ नामानि चिद्वधरे
 यक्षियानि ।
 [९४४] ६, १, ६ (९४०) ६, १, २
 [९४६] ६, १, ८ (७९२) ५, ४, ३
 [९४७] ६, १, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 यस्त आनद् समिधा हव्यदातिम् ।
 (१६७७) १०, १२२, ३ (चित्रमहा वासिष्ठ, । अग्नि)
 — समिधा तं जुपस्व ।
 [९४८] ६, १, १० नमोभिरग्ने समिधोत हव्यै ।
 ७, ६३, ५ नमोभिन्नावरुणोत हव्यैः ।
 [९४८] ६, १, १० (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् ।
 (१०१५) ६, १३, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 यस्ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्मर्तो निशितिं
 वेद्यानद् ।
 [९४९] ६, १, ११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा ।
 (९७६) ६, ४, ६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 अग्ने ततन्थ— ।
 [९५०] ६, १, १२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि)
 पूर्वोरिपो बृहतीरारे अधा
 अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ।
 ९, ८७, ९ (उशना काव्य । पयमानः सोम)
 पूर्वोरिपो बृहतीर्जीरदानो ।
 ६, ७४, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । सोमारुद्रा)
 अस्मे भद्रा— ।
 [९६०] ६, २, ९, (८३१) ५, ९, ४ अग्ने पशुर्न यवसे ।
 [९६१] ६, २, १०, (७१६) ४, ९, ५ वेपि ह्यध्वरीयताम् ।

[९६२] ६, २, ११= ६, १४, ६, (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।
 अग्नि)
 अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोच
 सुमतिं रोदस्यो । वीहि स्वस्ति सुक्षितिं
 दिवो नृन्दिषो अंहांसि दुरिता तरेम
 ता तरेम तवावसा तरेम ।
 (१०२७) ६, १५, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो,
 वातहव्य आङ्गिरसो वा । अग्नि)
 दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ।
 [९७३] ६, ४, ३ २, २०, ५
 अश्रस्य चिच्छिन्नश्चतुर्व्याणि ।
 [९७६] ६, ४, ६, (९४९) ६, १, ११
 [९७८] ६, ४, ८, (९९९) १०, ७, (१०११) १२, ६,
 (१०१७) १३, ६, १७, १५, २४, १०,
 मदेम शतहिमाः सुवीराः ।
 [९७९] ६, ५, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।
 ६, २२, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 — मतिभि शविष्ठम् ।
 [९८३] ६, ५, ५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।
 ४, ४, ७ यस्त्वा नित्येन हविषा य— ।
 [९९२] ६, ६, ७ चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं ।
 ४, ४४, ६ नू नो रयि— ।
 [१०७७] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
 ५, ८५, ६, मही देवस्य नकिरा— ।
 [१०७९] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर ।
 १, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
 [१०७९] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कवि ।
 ९, ८५, ९ अरुरुचद्धि दिवो— ।

[९९३] ६, १०, १; (४८५) ३, ६, ६,
 [९९९] ६, १०, ६ अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ ।
 ६, २६, २ महो वाजस्य— ।
 [१००४] ६, ११, ५ वृञ्जे ह यन्नमसा वर्हिरग्ने ।
 ७, २, ४ प्र वृञ्जते नमसा— ।
 [१००५] ६, ११, ६ देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 (१०११) ६, १२, ६ विश्वेभिरग्ने — ।
 [१००९] ६, १२, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 अग्निः ष्वे दम आ जातवेदाः ।
 (११७२) ७, १२, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 [१०११] ६, १२, ६; (१००५) ६, ११, ६
 [१०१५] ६, १३, ४; (९४८) ६, १, १०
 [१०१९] ६, १४, २ (७६१) ५, १, ७
 [९६२] ६, १४, ६ =, ६, २, ११; (१०३७) ६, १५, १५
 ता तरेम तवावसा तरेम ।
 [१०२५] ६, १५, ३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य
 आद्विरसो वा । अग्निः)
 अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।
 छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथ ।
 (१६७०) १०, ११५, ५ (उपस्तुतां वाग्निहव्यः ।
 अग्निः) अर्यः तरुषः ।
 (१०७४) ६, १६, ३३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 भरद्वाजाय सप्रथ शर्म यच्छ ।
 [१०२८] ६, १५, ६ देवो देवेषु वनते हि वार्य
 (६ . नो दुवः) ।
 [१०२९] ६, १५, ७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य
 आद्विरसो वा । अग्निः)
 विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुन्नैरीमहे
 जातवेदसम् ।
 (१३५२) ८, ४४, १० (विरुष आद्विरसः । अग्निः)
 विप्रं होतारमद्रुहं ।
 यज्ञानां केतुमीमहे ।
 [१०३४] ६, १५, १२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य
 आद्विरसो वा । अग्निः)
 (१०३४) ७, ४, ९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः
 सहसावन्नवद्यात् ।
 सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः
 स्पृहयाय्यः सहस्री ।

[१०३७] ६, १५, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः वीतहव्य
 आद्विरसो वा । अग्निः)
 (१६१७) १०, ५३, २ देवा अग्निं सौचीक । अग्निः
 — हि ख्यत् ।
 [१०४३] ६, १६, २ (९२०) ५, २६, १
 [१०४६] ६, १६, ५ दिवोदासाय सुन्वते ।
 ४, ३०, २० — दाशुषे ।
 ६, ३१, ४ — सुन्वते सुतक्र ।
 [१०४८] ६, १६, ७, त्वामग्ने स्वाध्यो ।
 (१२४०) ८, १९, १७; (१३३९) ४३, ३०
 ते घेदग्ने स्वाध्यो ।
 [१०४८] ६, १६, ७. (८९७) ५, २१, ३
 [१०५०] ६, १६, ९; १, १४, ११ तं होता मनुर्हित ।
 [१०५०] ६, १६, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 वह्निरासा विदुष्टरः ।
 (१२००) ७, १६, ९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 [१०५१] ६, १६, १० अन्न आ याहि वीतये ।
 ५, ५१, ५ वायवा याहि वीतये ।
 [१०५६] ६, १६, १५ (२१७) १, ७४, ३
 [१०६१] ६, १६, २० स हि विश्वाति पार्थिवा ।
 ६, ४५, २० स हि विश्वानि पार्थिवा ।
 [१०६३] ६, १६, २२ ५, ५२, ४ स्तोमं यज्ञं च
 धृष्ण्या ।
 [१०६५] ६, १६, २४; १, १४, ३ आदित्यान्मारुतं
 गणम् ।
 [१०६९] ६, १६, २८, अग्निस्तिग्मेन शोचिषा ।
 (२१) १, १२, १२ अग्ने शुक्रेण — ।
 [१०७०] ६, १६, २९, (२३९) १, ७८, १
 (१०७७) ६, १६, ३६;
 (१३११) ८, ४३, २ जातवेदो विचर्षण ।
 [१०७०] ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 जहि रक्षांसि सुक्रतो ।
 ९, ६३, २८ (निरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 [१०७१] ६, १६, ३० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 त्वं नः पाह्यहसो जातवेदो अघायत ।
 (११९१) ७, १५, १५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 — हसो दोषावस्तरघायतः ।
 [१०७४] ६, १६, ३३; (१०२५) ६, १५, ३

[१०७६] ६, १६, ३५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
सीदन्नुतस्य योनिमा ।
 ९, ३२, ४ (श्यावाश्व आत्रेय । पवमान सोम)
 ९, ६४, ११ (कश्यपो मारीच । पवमानः सोम)
 [१०७७] ६, १६, ३६; (१०७०) ६, १६, २९
 [१०८१] ६, १६, ४०, (८३०) ५, ९, ३
 [१०८५] ६, १६, ४४ अभि प्रयांसि वीतये ।
 १, १३५, ४ सुधितानि वीतये ।
 [१०८५] ६, १६, ४४, १, १४, ६ आ देवान्त्सोमपीतये ।
 [१०८७] ६, १४, ४६, ४, ३, १ होतारं सत्ययजं
 रोदस्योः ।
 [१०८७] ६, १६, ४६, (५८५) ३, १४, ५
 [१०८८] ६, १६, ४७, (८०५) ५, ६, ५
 [१०९०] ६, ४८, १ प्रप्र वयममृतं जातवेदसं ।
 (१४४६) ८, ७४ ५ अमृतं जातवेदसं ।

[१०९२] ६, ४८, ३ (शंयुर्बार्हस्पत्य, तृणपाणि । अग्निः)
 महान्विभास्यर्चिषा ।
अजस्त्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे ।
 (१७९७) ७, ५, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्नि)
 त्वं भासा रोदसा आ ततन्थाजस्त्रेण शोचिषा
शोशुचानः ।
 [१०९५] ६, ४८, ६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणि । अग्निः)
तिरस्तमो ददश ऊर्म्यास्वा ।
 (११५६) ७, ९, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 — ददशे रास्याणाम् ।
 [१०९७] ६, ४८, ८ (शंयुर्बार्हस्पत्य, तृणपाणिः । अग्नि)
 शतं पूर्भिर्यविष्ट पाह्यंहसः शत हिमाः स्तोतृभ्यो
 ये च ददति ।
 (१२०१) ७, १६, १० वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 ये राधासि ददत्यश्व्या ।
 ता अंहस पिप्रति पर्तमिष्टवं शतं पूर्भिर्यविष्टय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[१११२] ७, १, १३, (८०) १, ३६, १५
 [१११९] ७, १, २० = ७, १, २५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।
 अग्नि)
 नृ मे ब्रह्माण्यश्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्य
 सुषुदः ।
 रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभि
 सदा नः ।
 [१११९] ७, १, २०, २५; (११३३) ३, १०; (११४८) ७, ७, ७,
 ७, ८, ७ (११६०) ९, ६; (११७०) ११, ५, (११७३)
 १२, ३, १३, ३; (११७६) १४, ३, १९, ११,
 २०, १०, २१, १०, २२, ९, २३, ६; २४, ६; २५,
 ६, २६, ५, २७, ५; २८, ५; २९, ५, ३०, ५;
 ३४, २५; ३५, १५, ३६, ९; ३७, ८; ३९, ७;
 ४०, ६; ४१, ७, ४२, ६, ४३, ५, ४५, ४, ४६, ४,
 ४७, ४, ४८, ४, ५१, ३, ५३, ३; ५४, ४; ५६,
 २५; ५७, ५, ५८, ६, ६०, १२; ६१, ७; ६२, ६;
 ६३, ६, ६४, ५, ६५, ५, ६७, १०; ६८, ९, ६९, ८;
 ७०, ७, ७१, ६; ७२, ५; ७३, ५; ७५, ८; ७६, ७, ७७,
 ६, ७८, ५; ७९, ५; ८०, ३; ८४, ५; ८५, ५;
 ८६, ८; ८७, ७, ८८, ७; ९०, ७, ९१, ७; ९२, ५;
 ९३, ८, ९५, ६; ९७, १०, ९८, ७; ९९, ७, १००,

७, १०१, ६, ९, ९०, ६, ९७, ३, ६; १०, ६५,
 १५; ६६, १५, १२२, ८, यूयं पात स्वस्तिभिः
 सदा नः ।
 [११२५] ७, ३, २, १, १४८, ४ आदस्य वातो अनु वाति
 शोचिः ।
 [११२९] ७, ३, ६, ४, १०, ५,
 [११३३] ७, ३, १०; = ७, ४, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 अग्नि)
 एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं
 वतेम ।
 विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात
 स्वस्तिभिः सदा नः ।
 ७, ६०, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)
 अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस् ।
 [११३५] ७, ४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु ।
 सं यो वना युवते शुचिदन् ।
 (१६६७) १०, ११५, २ (उपस्तुतो वार्धिहव्यः । अग्निः)
 अग्निर्ह नाम धायि दक्षपस्तम सं यो वना युवते
 भस्मना दत्ता ।

[११३७] ७, ४, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
 (१५९५) १०, ४५, ७ (वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः)
 [११४०] ७, ४, ७; ४, ४१, १० नित्यस्य रायः पतय
 स्याम ।
 ७, ४, ९ = (१०३४) ६, १५, १२
 ७, ४, १० = (११३३) ७, ३, १०
 ७, ४, १० = ७, ३, १०
 [११४५] ७, ७, ४; (६८६) ४, ६, ५
 [११४८] ७, ७, ७ ७, ८, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 अग्निः)
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहस्रो
 वसुनाम् ।
 इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनङ् यूय पात
 स्वस्तिभि सदा नः ॥
 [११५४] ७, ८, ६; २, ३८, ११
 शं यस्तोतृभ्य आपये भवाति ।
 (११४८) ७, ८, ७ = ७, ७, ७
 [११५६] ७, ९, २ (१०९५) ६, ४८, ६
 [११६५] ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 मन्द्र होतारमुशिजो यविष्ठमग्नि विश ईळते
 अध्वरेषु ।
 (१६०४) १०, ४६, ४ (वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः)
 मन्द्र होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्च यज्ञ
 नेतारमध्वराणाम् । विशाम् ।
 [११६५] ७, १०, ५ स हि क्षपावाँ अभवद्भ्योणाम् ।
 (१७८) १, ७०, ५ — क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।
 (११६६) ७, ११, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो ।
 १०, १०४, ६ (अष्टको वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
 दाश्वौ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।
 [११६७] ७, ११, २ त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः
 सदमिन्मानुषासः ।
 (१९९४) १०, ७०, ३ शश्वत्तममीळते दूत्याय
 हविष्मन्तो मनुष्यामो अग्निम् ।
 [११६९] ७, ११, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
 १०, ५२, ३ (अग्निः सौचिकः । विवे देवाः)
 [११७२] ७, १२, २; (१००९) ६, १२, ४
 [११७४] ७, १४, १; (५११) ३ १०, ३

[११७५] ७, १४, २ वयं ते अग्ने समिधाविधेम ।
 (१८२७) ४, ४, १५ अया ते— ।
 (७९६) ५, ४, ७ वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ।
 [११७६] ७, १४, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम ।
 (१२०६) ७, १७, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 ते ते देवाय दाशत स्याम ।
 [११७८] ७, १५, २, ९, १०१, ९ यः पञ्च चरणीरग्नि ।
 ५, ८६, २ या पञ्च— ।
 [११७८] ७, १५, २ (१५) १, १२, ६
 [११८२] ७, १५, ६ (७७) १, ३६, १०
 [११८४] ७, १५, ८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 स्वग्नयस्त्वया वयम् । सुवीरस्त्वमस्मयुः ।
 (१२३०) ८, १९, ७ (सोमरि काण्व । अग्निः)
 स्वग्नयो .. ।
 सुवीरस्त्वमस्मयुः ।
 [११८६] ७, १५, १०. (२५५) १, ७९, १२
 अग्नी रक्षांसि सेधति ।
 [११८६] ७, १५, १०; (४४४) २, ७, ४
 [११८७] ७, १५, ११, (२४७) १, ७९, ४
 ईशान सहस्रो यहो ।
 [११८९] ७, १५, १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 अग्ने रक्षा णो अहस प्रति ष्म देव रीषतः ।
 (१३५३) ८, ४४, ११ (विष्णु आङ्गिरस । अग्निः)
 अग्ने नि पाहि नस्त्वं प्रति ष्म देव रीषतः
 [११९१] ७, १५, १५; (१०७१) ६, १६, ३०
 [११९२] ७, १६, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 ऊर्जो नपातमा हुवे ।
 (१३५५) ८, ४४, १३ (विष्णु आङ्गिरस । अग्निः)
 [११९२] ७, १६, १; (२८३) १, १२८, ८
 [११९४] ७, १६, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 उदस्य शोचिरस्थाद् ।
 (१२७३) ८, २३, ४ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
 [११९५] ७, १६, ४, (९२३) ५, २६, २
 [११९७] ७, १६, ६, १, १५, ३ त्वं हि रत्नधा असि ।
 [१२००] ७, १६, ९; (१०५०) ६, १६, ९
 [१२०१] ७, १६, १०, (१०९५) ६, ४८, ८
 [१२०२] ७, १६, ११ पूर्णो विषष्ट्यासिचम् ।
 २, ३७, १ अध्वर्यवः स पूर्णो विषष्ट्यासिचम् ।
 [१२०३] ७, १६, १२; (५२१) ३, ११, ४

[१२०३] ७, १६, १२; (७३६) ४, १२, ३
[१२०६] ७, १७, ३, (४८५) ३, ६, ६

[१२०७] ७, १७, ४; (१२०६) ७, १७, ३
[१२१०] ७, १७, ७; (११७६) ७, १४, ३

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१२१४] ८, ११, १ त्व यज्ञेष्वीड्यः ।
(१५८६) १०, २१, ६ त्वां यज्ञेष्वीळते ।
[१२१५] ८, ११, २, (८७) १, ४४, २
[१२१८] ८, ११, ५, (५२५) ३, ११, ८
[१२१९] ८, ११, ६, (५००) ३, ९, १
[१२१९] ८, ११, ६ (वत्सः काण्व । अग्निः)
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
१०, १४१, ३ (अग्निस्तापस । विश्वे देवा)
[१२२१] ८, ११, ८ (वत्स काण्वः । अग्निः)
(१३३०) ८, ४३, २१ (विरूप आङ्गिरस । अग्निः)
पुरुत्रा हि सदङ्गडसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ।
[१२२२] ८, ११, ९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
वाजयन्तो हवामहे ।
८, ५३ (वाल्खित्य ५), २ (मेन्यः काण्वः । इन्द्रः)
(१२२४) ८, १९, १; (२८८) १, १२८, ६
[१२२६] ८, १९, ३, (१०) १, १२, १
[१२२७] ८, १९, ४ ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदिति-
मग्निं श्रेष्ठशोचिषम् । (१३५५) ८, ४४, १३
ऊर्जो नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम् ।
[१२२९] ८, १९, ६ न तमंहो देवकृतं कुतश्चन ।
२, २३, ५ न तमंहो न दुरितं कुतश्चन ।
१०, १२६, १ न तमंहो न दुरितं ।
[१२३०] ८, १९, ७ (११८४) ७, १५, ८
[१२३१] ८, १९, ८ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न वेद्यः ।
(१४५४) ८, ८४, १ (उशना काण्वः । अग्निः)
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुपे मित्रमिव प्रियम् ।
अग्निं रथं न वेद्यम् ।
[१२३२] ८, १९, ९, ४, ३७, ६ स धीमिरस्तु सनिता ।
[१२३९] ८, १९, १६; (७१) १, ३६, ४
[१२४०] ८, १९, १७ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्यो ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् ।
(१३३९) ८, ४३, ३० (विरूप आङ्गिरस । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा नृचक्षसः ।

[१२४३] ८, १९, २०; २, २६, २ भद्रं मनः कृणुष्व
वृत्रतूर्यं ।
[१२४४] ८, १९, २१; (७७) १, ३६, १०
[१२४७] ८, १९, २४; (५४३) ३, २७, ७
[१२४८] ८, १९, २५, (५२९) ३, २४, ३
[१२५५] ८, १९, ३२ सम्राज त्रासदस्यवम् ।
१०, ३३, ४ राजानं त्रासदस्यवम् ।
[१२५८] ८, १९, ३५ स्यामेहतस्य रथ्यः ।
७, ६६, १२, ८, ८३, ३ यूयमृतस्य — ।
[१२७३] ८, २३, ४, (११९४) ७, १६, ३
[१२७६] ८, २३, ७; (२७३) १, १२७, २
[१२७८] ८, २३, ९; (९६) १, ४४, ११
[१२८१] ८, २३, १२ रयिं रास्व सुवीर्यम् ।
(८५८) ५, १३, ५; ८, ९८, १२
स नो रास्व सुवीर्यम् ।
९, ४३, ६ सोम रास्व सुवीर्यम् ।
[१२८७] ८, २३, १८; (८९७) ५, २१, ३
[१२९१] ८, २३, २२ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् । प्रति क्षुगेति ।
(१३०७) ८, ३९, ८ (नाभाक काण्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
(१३९०) ८, ६०, २ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
सुचश्चरन्त्यध्वरे । अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
(१४७२) ८, १०२, १० (प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽ
मिर्बाह्स्पत्यो वा, गृहपति- यविष्टौ सहस्रः पुत्रौऽन्यतरो
वा । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
[१२९२] ८, २३, २३ आभिर्विधेमाग्नये ।
८, ४३, ११ स्तोमैर्विधेमाग्नये ।
[१२९४] ८, २३, २५, १, १२७, ८
[१२९६] ८, २३, २७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
वंस्वा नो वार्या पुरु ।
(१४०२) ८, ६०, १४, (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
[१२९८] ८, २३, २९ त्वं नो गोमतीरिषः ।

५, ७९, ८; ८, ५, ९; ९, ६२, ४ उत नो— ।
[१२९९] ८, २३, ३० (विश्वमना वैयश्व । अग्नि)

ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।

८, २५, १ (विश्वमना वैयश्व । मित्रावरुणां)

ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।

[१३००] ८, ३९, १-१०, ८, ४०, १-११, ४१, १-१०;
४२, ४-६ नभन्तामन्यके समे ।

[१३०५] ८, ३९, ६, (२८८) १, १२८, ६

[१३०७] ८, ३९, ८, (१२९१) ८, २३, २२

[१३१०] ८, ४३, १, ८, ३, १५ गिरः स्तोमास ईरते ।

[१३११] ८, ४३, २ (२३९) १, ७८, १

[१३२०] ८, ४३, ११ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

उक्षानाय वशानाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।

स्तोमैर्विधेमाग्नये ।

(१६६४) १०, ९१, १४ (अरुणो वैतहव्य । अग्नि)

यस्मिन्नश्वाम ऋषभास उक्षणो वशा ।

कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे ।

(१३६९) ८, ४४, २७ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

स्तोमैरिषेमाग्नये ।

[१३२४] ८, ४३, १५ अग्ने वीरवतीमिषम् ।

(२०) १, १२, ११, ९, ६१, ६ रयिं — ।

[१३२५] ८, ४३, १६; इमं स्तोमं जुषस्व मे ।

(२१) १, १२, १२ इमं स्तोमं जुषस्व नः ।

[१३२७] ८, ४३, १८ विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।

(१३३८) ८, ४३, २९

[१३२९] ८, ४३, २० वह्निं होतारमीळते ।

(१०१९) ६, १४, २ अग्निं होतारमीळते ।

(५१०) ३, १०, २ अग्ने— ।

[१३३०] ८, ४३, २१= (१२२१) ८, ११, ८

[१३३१] ८, ४३, २२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

इम नः शृणवद्भवम् ।

१०, २६, ९ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्या वा वसुकृद्वा

वासुक । पूषा)

[१३३२] ८, ४३, २३, ४, ३२, १३= ८, ६५, ७

त त्वा वय द्वावामहे ।

[१३३३] ८, ४३, २४ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

अग्निमीळे स उ श्रवत् ।

(१३४८) ८, ४४, ६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

[१३३९] ८, ४३, ३०; (१२४०) ८, १९, १७

२७

[१३४०] ८, ४३, ३१, (५०७) ३, ९, ८

[१३४१] ८, ४३, ३२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

शर्धन्तमांसि जिघ्रसे ।

९, १००, ८ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः रोमः)

[१३४८] ८, ४४ ६, (१३३३) ८, ४३, २४

[१३५१] ८, ४४, ९, ६, ५२, १२

चिकित्वान्दैव्यं जनम् ।

[१३५२] ८, ४४, १० (१०२९) ६, १५ ७

[१३५३] ८, ४४, ११ (११८९) ७, १५, १३

[१३५५] ८, ४४, १३ (११९२) ७, १६, १

[१३५६] ८, ४४, १४ (२१) १, १२, १२

[१३६१] ८, ४४, १९ (५०९) ३, १०, १

[१३६७] ८, ४४, २५; ८, ६, ४ समुद्रायिव सिन्धवः ।

[१३६९] ८, ४४, २७ (१३२०) ८, ४३, ११

[१३७०] ८, ४४, २८, २, ५, ८

[१३७०] ८, ४४, २८, १, १०, ९ तस्मै पावक मृळ्य ।

८, ४५, १ (त्रिशोक काण्व । अमीन्द्रा)

स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।

(१९१०) १, १३, ५ (मेघातिथि काण्व ।

आर्षामुक्त=वर्हिः)

स्तृणीत बर्हिरानुषक् ।

८, ४५, १, १-३ येषामिन्द्रो युवा सखा ।

[२४५५] ८, ५६ (वाल ८) ५, (पृषन्नः काण्व । अर्षामया)

(२१) १, १०, १०

[१३८९] ८, ६०, १; ५, २०, ३

[१३९०] ८, ६०, २; ८, २३, २२

[१३९१] ८, ६०, ३; ४, ७, १

[१३९१] ८, ६०, ३; १, १२७, २

[१३९२] ८, ६०, ४ (भर्ग प्रागाथ । अग्निः)

मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।

(१६८६) १०, १४०, ३ (अग्नि पावक । अग्नि)

[१३९६] ८, ६०, ८ मा नो मर्ताय रिपवे रक्षम्विने ।

८, २२, १४ — रिपवे वाजिनीवसू ।

[१३९८] ८, ६०, १० पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अरावणः ।

१, ३६, १५

[१४००] ८, ६०, १२ येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।

६, १९, ८ — पृतनासु शत्रून् ।

[१४०२] ८, ६०, १४; ८, २३, २७

[१४०५] ८, ६०, १७; १, १२७, २

[१४०६] ८, ६०, १८; इषण्यया नः पुरुरूपमा भर

वाजं नेदिष्ठमृतये ।
 ८,१,४ उप क्रमस्व पुरुषरूपमा— ।
 [१४०७] ८,६०,१९ (भर्ग प्रागाथ । अग्नि)
 तेपानो देव रक्षसः ।
 (१४०८) ८,१०२,१६ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्नि
 बार्हस्पत्या वा गृहपति-यविष्ठा सहस पुत्रावन्यतरो वा ।
 अग्नि) तेपानो देव शोचिषा ।
 [१४१४] ८,७१,६ प्र णो नय वर्यो अच्छ ।
 ६,४७,७ प्र नो नय प्रतरं वर्यो अच्छ ।
 (१५९७) १०,४५,९ प्र तं नय प्रतरं वर्यो अच्छ ।
 [१४१६] ८,७१,८ त्वमीशिषे वसूनाम् ।
 १,१७०,५ त्वमीशिषे वसुपते वसूनाम् ।
 [१४१७] ८,७१,९, १,३०,१० सखे वसो जरितृभ्यः ।
 ३,५१,६ —जरितृभ्यो वयो धाः ।
 [१४१८] ८,७१,१० पुरुप्रशस्तमृतये ।
 ८,१२ १४ पुरुप्रशस्तमृतये ऋतस्य यत् ।
 [१४२०] ८,७१,१२ (८९८) ५,२१,४
 [१४२१] ८,७१,१२ (९३८) ५,२८,६
 (१५८६) १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
 [१४२१] ८,७१,१३ ईशा यो वार्याणाम् ।
 १,५,२; २४,३ ईशानां वार्याणाम् ।
 १०,९,५ ईशानां वार्याणाम् ।
 [१४२३] ८,७२,३ (८७७) ५,१७,२
 [१४२८] ८,७२,१५ उप स्रक्केषु वणसत ।
 ७,५५,२ — वणसतो नि षु स्वप ।
 [१४३९] ८,७२,१६ अधुक्षत्पिप्युषीमिषम् । ८,७,३
 [१४४६] ८,७४,५ (१०९०) ६,४८,१
 [१४४६] ८,७४,५, (५४९) ३,२७,१३
 [१४४८] ८,७४,७, (३३२) १,१४४,७
 [१४५३] ८,७४,१२, ७,९४,५ सबाधो वाजसातये ।
 ८,७४,१४ वक्षन्वयो न तुग्रयम् ।
 ८,३,२३ अस्तं वयो— ।
 [१३७५] ८,७५,३, (५२९) ३,२४,३
 [१३८४] ८,७५,१२ मा नो अस्मिन्महाधने परा वग्भार्
 रभृद्यथा ।
 ६,५९,७ — परा वक्तं गविष्टिषु ।

[१३८८] ८,७५,१६ ३,४२,६, ८,९८,११
 अधा ते सुसमीमहे ।
 [१४५४] ८,८४,१ प्रेषं वो अतिथि (स्तुषे) ।
 १,१८६,३ — अतिथिं गृणीषे ।
 [१४५४] ८,८४,१ (१२३१) ८,१९,८
 [१४५६] ८,८४,३ रक्षा तोकमुत त्मना ।
 १,४१,६ विश्व तोकमुत त्मना ।
 [१४६१] ८,८४,८ ५,३५,७ पुरोयावानमाजिषु ।
 [१४६३] ८,१०२,१ (१५) १,१२,६
 [१४६५] ८,१०२,३, ८,२१,११ त्वया ह स्विशुजा वयं ।
 [१४६६-६८] ८,१०२, ४-६ अग्नि समुद्रवाससम् ।
 [१४६९] ८,१०२,७ ५,७,१
 [१४७१] ८,१०२,९ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्निबार्हस्पत्यो-
 वा गृहपति-यविष्ठा सहस
 पुत्रावन्यतरो वा । अग्नि)
 अग्निदेवेषु पत्यये ।
 आ वाजैरुप नो गमत् ।
 ९,४५,४ (अयाम्य आक्षिरस । पवमान सोम)
 इन्दुदेवेषु पत्यये ।
 [१४७२] ८,१०२,१० (१२९१) ८,२३,२२
 [१४७३] ८,१०२,११ (५०७) ३,९,८
 [१४७४] ८,१०२,१२ (७५४) ४,१५,६,
 [१४७८] ८,१०२,१६, (१४०७) ८,६०,१९
 [१४७८] ८,१०२,१६, (९२०) ५,२६,१
 [१४७९] ८,१०२,१७, (७०४) ४,८,१
 [१४८०] ८,१०२,१८ अग्ने दूत वरेण्यम् ।
 (१०) १,१२,१ अग्नि दूतं वृणीमहे ।
 [१२५९] ८,१०३,३, (९१४) ५,२५,४
 [१२६१] ८,१०३,५, १,४०,४ स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
 ९,६६,७ दधानो अक्षिति श्रवः ।
 [१२६१] ८,१०३,५, ५,८२,६; ८,२२,१८
 विश्वा वामानि धीमहि ।
 [१२६३] ८,१०३,७ (सोभरि काण्व । अग्नि)
 पर्वि राधो मघोनाम् ।
 ९,१,३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मंडलम् ।

[१४९३] १०,२,२, (२३२) १,७६,४
 [१४९३] १०,२,२ देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन् ।

(१९४२) २,३,१
 [१४९५] १०,२,४ यज्ञो वयं प्रमिनाम व्रतानि ।

८४८,९ यत्ते वयं — ।
 [१५०७] १०,४,२ अन्तर्महाँश्चरासि रोचनेन ।
 ३,५५,९ अन्तर्महाँश्चरति रोचनेन ।
 [१५१२] १०,४,७ (त्रित आत्त्य । अग्नि)
 रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत
 नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।
 (१५३३) १०,७,७ (त्रित आत्त्य । अग्नि)
 भवा नो अग्नेऽ विनोत गोपा ।
 त्रास्वोत नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।
 [१५१४] १०,५,२ (त्रित आत्त्य । अग्निः)
 ऋतस्य पद कवयो नि पान्ति ।
 १०,१७७,२ (पतद्वा प्राजापत्य । मायाभेद)
 ऋतस्य पदे कवयो — ।
 [१५२६] १०,६,७ सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।
 ८९६,२१ —हव्यो बभूव ।
 [१५२६] १०,६,७, त ते देवासो अनु केतमायन् ।
 ४,२६,२ मम देवासो— ।
 [१५२८] १०,७,२, १,१६३,७
 यदा ते मतो अनु भोगमानत् ।
 [१५३१] १०,७,५ विश्वु होतार न्यसादयन्त । ३,९,९
 [१५३३] १०,७,७ (१५१२) १०,४,७
 [१५३४] १०,८,१, ६,७३,१
 आ रोदसी वृषभो गेरवीति ।
 [१५३४] १०,८,१ अपामुपस्थं महिषा ववर्ध ।
 (१५९१) १०,४५,३
 अपामुपस्थं महिषा अवर्धन् ।
 १०,९,५ ईशाना वार्याणाम् ।
 १,५,२, २४,३ ईशान वार्याणाम् ।
 (१४२१) ८,७१,१३ ईशो यो वार्याणाम् ।
 १० ९६,६= १,२३,२०
 १०,९,७= १,२३,२१
 १०,९,७= १,२३,२१ १०,५७,४ ज्योक्च
 सूर्यं दृशे । १०,९,८= १,२३,२२
 १० ९,९=१,२३,२३
 [१५४४] १०,११,५ (३९२) २,२,८
 [१५४७] १०,११,८ देवी देवेषु यजता यजत्र ।
 ४,५६,२ दवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।
 ७,७५,७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।
 [१५४८] १०,११,९=१०,१२,९ (हविर्धान आत्ति । अग्निः)
 धुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा

रथममुतस्य द्रवितुम् ।
 आ नो वह रोदसी देवपुत्र माकिर्देवानामप
 भूरिह स्या ।
 [१५५४] १०,१२,६; १०,१०,२
 सलक्ष्मा यद्विपुरुषा भवति ।
 [१५४८] १०,१२,९=१०,११,९
 [१५६४] १०,१६,८ तस्मिन्देवा अमुता मादयन्ते ।
 (१९६३) ३,४,११=७,२ ११ स्वाहा देवा — ।
 [१५७१] १०,२०,१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुक्ता
 वासुक । अग्निः)
 भद्रं नो अपि वातय मनः ।
 १०,२५ १ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुक्ता
 वासुक । रोम)
 —वातय मनो ।
 [१५८०] १०,२०,१० (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुक्ता
 वासुक । अग्निः)
 एवा .. ।
 इयान इषमूर्जं सुक्षिति विश्वमाभाः ।
 १०,९९,१२ (वस्रो वेखानस । ऐन्द्र)
 एवा ।
 स इयान करति स्वस्तिमम्मा इषमूर्जं सुक्षिति
 विश्वमाभाः ।
 [१५८१] १०,२१,१ (८९३) ५,२०,३
 [१५८१] १०,२१,१ (५०७) ३,९,८
 [१५८३] १०,२१,३ (४०१) २,८,५
 [१५८६] १०,२१,६ (१२१४) ८,११,१
 [१५८६] १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
 (९३८) ५,२८,६,
 (१४२०) ८,७१,१२ अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
 [१५८७] १०,२१,७ (५१०) ३,१०,२
 [१५८८] १०,२१,८ (२१) १,१२,१२
 [१५९०] १०,४५,२ विद्या ते धाम विभृता पुरुषा ।
 (१६४७) १०,८०,४ अग्नेर्धामानि ।
 [१५९०] १०,४५,२ (वत्सप्रिर्माळन्दनः । अग्निः)
 विद्या ते नाम परमं गुहा यद्विद्या तमुत्सं
 यत आजगन्थ ।
 १०,८४,५ (मन्व्युतापमः । मन्व्युः)
 प्रियं ते नाम सहुरं गृणामि
 विद्या तमुत्सं यत आवभूथ ।
 [१५९१] १०,४५,३ (१५३४) १०,८,१

[१५९४] १०, ४५, ६ (४८४) ३, ६, ५
 [१५९५] १०, ४५, ७ (११३७) ७, ४, ४
 [१५९७] १९, ४५, ९ (१४१४) ८, ७१, ६
 [१५९८] १०, ४५, १०, ५, ३७, ५
 प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवति ।
 [१५९९] १०, ४५, ११ (६४१) ४, १, १५
 [१६००] १०, ४५, १२, ९, ६८, १० अद्वेषे यावापृथिवी
 हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ।
 [१६००] १०, ४६, २ (४१७) २, ४, २
 [१६०४] १०, ४६, ४ (११६५) ७, १०, ५
 [१६१०] १०, ४६, १० यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
 ७, ११, ४
 [१६१६] १०, ५३, १ (६१०) ३, १९, १
 [१६१७] १०, ५३, २ (१०३७) ६, १५, १५
 देवा देवता १०, ५३, ५: ७, ३५, १४
 गांजाता उत ये यज्ञियासः ।
 १०, ५३, ५, ७, १०४, २३ पृथिवी नः पार्थिवा-
 त्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ।
 [१६२३] १०, ५३, १० येन देवासो अमृतत्मानशुः ।
 १०, ६३, ४ बृहदेवासो— ।
 [१६३१] १०, ६९, ७ सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
 १, १००, १२ सहस्रचेता शतनीथ ऋभ्वा ।
 [१६३८] १०, ७९, २ (५८५) ३, १४, ५
 [१६४५] १०, ८०, २ अग्निमही रोदसी आ विवेश ।
 ३, ६१, ७ वृषा मही — ।
 [१६४७] १०, ८०, ४, (१५९०) १०, ४५, २
 [१६५०] १०, ८०, ७ (४६८) ३, १, २२
 [१६५४] १०, ९१, ४ अरेपसः सूर्यस्येव रश्मय ।
 ५, ५५, ३ विरोकिणः सूर्यस्येव — ।
 [१६६०] १०, ९१, १० (३७०) २, १, २
 [१६६३] १०, ९१, १३ (६६७) ४, ३, २
 [१६६४] १०, ९१, १४ (८०५) ५, ६, ५
 [१६६४] १०, ९१, १४ (१३२०) ८, ४३, ११
 [१६६७] १०, ११५, २ (११३५) ७, ४, २
 [१६७०] १०, ११५, ५ (१०२५) ६, १५, ३
 [१६७३] १०, ११५, ८, १, ५३, ११ त्वां स्तोषाम त्वया
 सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
 [१६७७] १०, १२२, ३ (९४७) ६, १, ९
 [१६७८] १०, १२२, ४ (८४३) ५, ११, २
 यज्ञस्य कर्तुं प्रथमं पुरोहितं ।

[१६८१] १०, १२२, ७ (७८५) ५, ३, ८
 [१६८५] १०, १४०, २ पृणक्षि रोदसी उभे ।
 ८, ६४, ४ ओभे पृणासि रोदसी ।
 [१६८६] १०, १४०, ३ (१३९२) ८, ६०, ४
 [१६८९] १०, १४०, ६ (१७३१) ३, २, ५
 अग्निं सुज्ञाय दधिरे पुरो जना ।
 [१६८९] १०, १४०, ६ (१०६) १, ४५, ७
 [१६९८] १०, १५०, १ (५०५) ३, ९, ६
 [१६९९] १०, १५०, २ (३७) १, २६, १०
 [१७०१] १०, १५०, ४ अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरो-
 हितः । (१७३४) ३, २, ८ अग्निर्देवानामभव
 त्पुरोहितः । (२०१३) १०, ११०, ११
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोणा ।
 [१७०५] १०, १५६, ३ पृथुं गोमन्तमश्विनम् ।
 ८, ६, ९, ९, ६२, १२, ६३, १२
 रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
 [१७०६] १०, १५६, ४; ८, ८९, ७; ९, १०७, ७ आ
 सूर्यं रोहयो दिवि । १, ७, ३ — रोहयदिवि ।
 [१७११] १०, १८७, १ वृषभाय क्षितीनाम् ।
 ७, ९८, १ जुहोतन— ।
 [१७११-१५] १०, १८७, १-५ स नः पर्षदति द्विष- ।
 [१७१३] १०, १८७, ३ वृषा शुक्रेण शोचिषा ।
 (२१) १, १२, १२ अग्निः शुक्रेण— ।
 [१७१६] १०, १९१, १ अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
 ९, ६१, ११ एना — ।
 [१७१६] १०, १९१, १ स नो वसून्या भर ।
 ८, ९३, २९ स नो विश्वान्या भर ।
 [१७१९] १, ५९, ३ (नोधा गांतम । अग्निर्वैश्वानर)
 या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
 १, ९१, ४ (गोतमो राहूगण । सोमः)
 [१७१९] १, ५९, ५ राजा कर्षीनामसि मानुषीणां ।
 ३, ३४, २ इन्द्र क्षितीनामसि — ।
 [१७२१] १, ५९, ५ (नोधा गांतम । अग्निर्वैश्वानर)
 युधा देवेभ्यो वरिवश्चकथं ।
 ७, ९८, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्र)
 [१७२५] १, ९८, २ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निं वैश्वानरोऽभिर्वा)
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां ।
 (१७९५) ७, ५, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 वैश्वानरोऽग्निः)
 पृष्टो दिवि धार्यग्निः पृथिव्यां ।

(१८२८) १०, ८७, १ (पायुर्भारद्वाज । रक्षोहाऽग्नि)
 स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।
 [१७२८] ३, २, २ (विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि)
 हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो ।
 (७९, १) ५, ४, २ (वसुधुत आत्रेयः । अग्नि)
 हव्यवाळग्निरजरः पिता नो ।
 [१७३१] ३, २, ५ (विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि)
 अग्निं सुस्त्राय दधिरे पुरो जना ।
 (१६८९) १०, १४०, ६ (अग्निः पावकः । अग्निः)
 [१७३४] ३, २, ८ (विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि)
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ।
 (२०१३) १०, ११०, ११ (जमदग्निर्भर्गव रामो वा
 जामदग्न्यः) आप्रासृक्तं = (स्वाहाकृतय)
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
 (१७०१) १०, १५०, ४ (मृत्कां वासिष्ठ । अग्नि)
 अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितो ।
 [१७३६] ३, २, १० (विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 विशां कवि विश्पतिं मानुषीरिषः ।
 (७९२) ५, ४, ३ (वसुधुत आत्रेयः । अग्निः)
 — मानुषीणां शुचि पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।
 (९४६) ६, १, ८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि)
 — विश्पतिं शश्वतीनां ।
 प्रतीक्षाणिमिपयन्त पावकं ।
 [१७३७] ३, २, ११ (विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 (५४१) ३, २७, ५ (विश्वामित्रो गायिनः । अग्नि)
 पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 [१७५५] ३, २६, ३ स नो अग्निः सुवीर्यं स्वद्वयं ।
 ८, १२, ३३ सुवीर्यं स्वद्वयं ।
 [१७६०] ४, ५, ३ सहस्ररेता वृषभस्तुविष्मान् ।
 २, १२, १२ यः सप्तरश्मिवृषभस्तुविष्मान् ।
 [१७६१] ४, ५, ४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्नि)
 प्र ये भिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया
 मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ।
 १०, ८९, ८ (रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्र)
 प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना
 भिनन्ति मित्रम् ।
 [१७६५] ४, ५, ८ पाति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः ।
 (४७४) ३, ५, ५ पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।
 [१७७७] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।

५, ८५, ६ मही देवस्य नकिरा दधर्ष ।
 [१७७९] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
 १, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
 [१७७९] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कवि ।
 ९, ८५, ९ अरू रूचद्वि दिवो रोचना कविः ।
 [१७८१] ६, ८, २; (३१९) १, १४३, २ स जायमानः
 परमे व्योमनि । (१८००) ७, ५, ७ — व्योमन् ।
 [१७८१] ६, ८, २ व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुः ।
 (१७७९) ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
 [१७८५] ६, ८, ६ अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय ।
 (३०१) १, १४०, १० — मघवत्सु दीदिहि ।
 [१७८६] ६, ८, ७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं
 पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।
 (३२५) १, १४३, ८ अदब्धेभिरिष्टपितेभिर्गिष्टे
 ऽनिमिपद्भिः परि पाहि नो जाः ।
 [१७९५] ७, ५, २ पृष्टो दिवि धाव्यग्निः पृथिव्यां ।
 (१७२५) १, ९८, २ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः
 पृथिव्यां ।
 [१७९५] ७, ५, २ नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 ६, ४४, २१ वृषा सिन्धूनां — ।
 [१७९७] ७, ५, ४ अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः ।
 (१०९२) ६, ४८, ३ — शोशुचच्छुचे ।
 [१७९९] ७, ५, ६ उरु ज्योतिर्जनयन्तार्याय ।
 १, ११७, २१ उरु ज्योतिश्चक्रधुरार्याय ।
 [१८००] ७, ५, ७ स जायमानः परमे व्योमन् ।
 (३१९) १, १४३, २, (१७८१) ६, ८, २ — व्योमनि ।
 [१८०६] ७, ६, ४ (वसिष्ठो भेन्वावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 शचीभिः ।
 अनानतं दमयन्तं पृतन्यन् ।
 १०, ७४, ५, (गौरिर्वाति आकत्यः । इन्द्र)
 शचीव इन्द्रमवसे कृणु वमनानतं दमयन्तं पृतन्यन् ।
 [१८११] ७, १३, २ (४८१) ३, ६, २
 आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
 ४, १८, ५ (१५९४) १०, ४५, ६
 आ रोदसी अपृणाजायमानः ।
 [१८१७] ४, ४, ५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
 अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामि प्र गृणाहि
 शन्नून् ।
 १०, ११६, ५ (अग्नियुतः स्थौराऽग्नियुषो वा स्थौरः । इन्द्रः)
 अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ।
 [१८१९] ४,४,७ यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थै ।
 (९८३) ६,५,५ यस्ते यक्षेन समिधा य उक्थै ।
 [१८२५] ४,४,१३ = (३४५) १,१४७,३
 [१८२७] ४,४,१५ (वामदेवो गोतमः । रत्नाहाऽग्निः)
 अया ते अग्ने समिधा विधेम ।
 (११७५) ७,१४ २ (वामिष्ठो मैत्रावरुणः । अग्निः)
 वयं ते अग्ने— ।
 [१८२८] १०,८७ १, (१७२५) १,९८,२
 स नो दिवा स रिष पातु नक्तम् ।
 [१८३१, १८४०] १०,८७,४ १३
 तामि- (१३ तथा)- विध्य हृदयं यातुधानान् ।
 [१८४८] १०,८७ २१ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् ।
 ७,१०४,१९ प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तात् ।
 [१८५०] १० ८७,२३ अग्ने तिभेन शोचिषा ।
 अग्निस्तिग्ममन— । (२१) १,१२,१२
 [१८५५] १०,११८,३ (२४८) १,७७,५
 अग्निरीळिन्यो गिरा ।
 [१८५७] १०,११८,५, (५०५) ३,९,६,
 (१६९८) १०,१५०,१ देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 १०,११९,१३ देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 [१८५९] १०,११८ ७ गोपा ऋतस्य दीदिहि ।
 (५१०) ३,१०,२ दीदिहि स्वं दमे ।
 [१८६१] १०,११८,९; (८६१) ५,१४,२
 यजिष्ठं मानुषं जने ।
 (देवता- १- २३ अश्विनो) १,११२,१-२३
 तामिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम् ।
 [१८६३] १०,१८८,१ अश्वं हिनोत वाजिनम् ।
 ९,६२,१८ हरिं हिनोत वाजिनम् ।
 [१८६३] १०,१८८,१; (१९२४) १,१३,७, ८,६५,६
 इदं नो बर्हिरासदे ।
 [१८७२] १,९५,५ जिह्वानामूर्ध्वं स्वयशा उपस्थे ।
 २,३५,९ जिह्वानामूर्ध्वो विद्युतं वसान् ।
 [१८७५] १,९५,८ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः, औषसोऽग्निर्वा)
 त्वेष रूपं कृणुत उत्तरं यत्सपृजान मदने
 गोभिराङ्घ्रिः ।
 धीः ।
 ९,७१,८ (ऋषयो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
 वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समुता
 संधति स्मिन् ।

स मुष्टुती नसते सं गो अग्रया ।
 [१८७८] १,९५,११=१,९६,९ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः,
 औषसोऽग्निर्वा)
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक
 श्रवसे वि भाहि ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः
 पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७९-८५] १,९६,१-७
 देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ।
 [१८८४] १,९६,६ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः द्रविणोदा अग्निर्वा)
 रायो बुध्नः संगमनो वसूना ।
 १०,१३९,३ (विश्वावमुर्देवगन्धर्वः । सविता)
 [१८८६] १,९६,८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।
 १,१५,७ द्रविणोदा द्रविणसो ।
 [१८८७] १,९६,९=१,९५,११
 [१८८७-९४] १,९७,१,१-८ अप नः शोशुचदधम् ।
 [१८८९] १,९७,३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
 (८४०) ५,१०,६ अस्माकासश्च सूरयो ।
 [१८९२] १,९७,६; (४) १,१,४ विश्वतः परिभूरसि ।
 [१८९७] ४,५८,३ महो देवो मर्त्या आ विवेश ।
 ८,४८,१२ अमर्त्या मर्त्या आविवेश ।
 [१९०४] ४,५८,१० अभ्यर्षत मुष्टुतिं गव्यमाजिम् ।
 ९,६२,३
 [१९०७] १,१३,२ (मेघातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं=
 तन्नपात) मधुमन्तं तन्नपाद् ।
 (१९१९) १,१४२,२ (दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसूक्तं=
 तन्नपात)
 [१९०७] १,१३,२ अद्या कृणुहि वीतये ।
 ६,५३,१० नृवत्कृणुहि वीतये ।
 [१९०८; १२] १,१३,३, ७ अस्मिन्यज्ञ उप ह्ये ।
 [१९०९] १,१३,४ असि होता मनुर्हितः ।
 १,१४,११ त्वं होता मनुर्हितो ।
 ८,३४,८ आ त्वा होता मनुर्हितो ।
 [१९१०] १,१३,५ (मेघातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
 स्तृणीत बर्हिरानुषम् ।
 ३,४१,२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र)
 तिस्तिरे बर्हिरानुषम् ।
 ८,४५,१ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्र, १ अग्नीन्त्री)
 स्तृणन्ति बर्हिरानुषम् ।

[१९२८] १,१४२,११; १,१०५,१४

अग्निर्हव्या सुषुदति देवो देवेषु मेधिरः ।

(१९४०) १,१८८,१० अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ।

[१९३४] १,१८८,४ (अग्रन्यो मैत्रावरुण । आप्रीसृक्तं=बर्हि)

प्राचीनं बर्हिरोजसा महध्वीरमस्तृणन् ।

(१९८४) ९,५,४ (अमित काश्यपो देवलो वा ।

आप्रीसृक्तं=बर्हि.)

बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमान स्तृणन्हरिः ।

[१९३७] १,१८८,७, (१९१३) १,१३,८

[१९४०] १,१८८,१० (१९२८) १,१४२,११

[१९४२] २,३,१ (गृत्समद शौनक । आप्रीसृक्तं=

धूमः समिद्धोऽग्निर्वा)

देवो देवान्यजत्वग्निर्हन् ।

(१४९३) १०,२,२ (त्रित आत्य । अग्नि.)

[१९४८] २,३,७ (गृत्समद शौनक । आप्रीसृक्तं=

देव्यौ होतारौ प्रचेतसां)

दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ।

नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु ।

(१९५९) ३,४,७ (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=

देव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)

(४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्नि)

दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्ज ।

१०,६६,१३ (वसुर्णो वामुकः । विश्वे देवा)

—प्रथमा पुरोहित ।

(२००९) १०,११०,७ (जमदग्निर्भर्गवः रामो वा

जामदग्नयः । आप्रीसृक्तं=देव्यौ होतारौ प्रचेतसां)

—प्रथमा सुवाचा ।

(५६१) ३,२२,४ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि.)

नाभा पृथिव्या अधि ।

[१९५०] २,३,९ अथा देवानामप्येतु पाथः ।

३,८,९; ७,४७,३ देवा (७,४७,३ देवैर्)

देवानामपि यन्ति पाथः ।

[१९५२] २, ३, ११ (गृत्समद शौनकः । आप्रीसृक्तं=

स्वाहाकृतयः)

अनुष्वधमा वह मादयस्व ।

(४८८) ३,६,९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१९५८] ३,४,६ यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषत् ।

१,४३,३ यथा नो मित्रो वरुणो ।

[१९५९] ३,४,७ (४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिन. ।

आप्रीसृक्तं=देव्यौ होतारौ प्रचेतसां)

दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्ज सप्त पृक्षासः

स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमिच्छ

आहुरनुव्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥

[१९५९] ३,४,७, (१९४८) २,३,७

[१९६०] ३, ४, ८ (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=

७,२,८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । आप्रीसृक्तं=

तिष्ठो देव्य सरस्वतीळाभारत्यः)

आ भारती भारतीभिः सज्जोषा इच्छा देवैर्म-

नुष्येभिरग्नि । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वा-

क्षितस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥

[१९६१] ३,४,९ (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=त्वष्टा)

७,२,९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसृक्तं=त्वष्टा)

तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि

रराणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो

युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥

[१९६२] ३,४,१० (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=

वनस्पति.)

७,२,१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । आप्रीसृक्तं=

वनस्पतिः)

वनस्पतेऽव सृजोष देवानग्निर्हविः शमिता सृदयाति ।

सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां

जनिमानि वेद ॥

[१९६३] ३,४,११ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसृक्तं=

७,२,११ वसिष्ठो मैत्रावरुणि । आप्रीसृक्तं=

स्वाहाकृतयः)

आ याहाग्नं समिधानो अर्वाङ्मिद्रेण देवैः सरथं

तुरेभिः ।

बर्हिर्न आस्तामदिति सुपुत्रः स्वाहा देवा अमृता

मादयन्ताम् ।

(८४३) ५,११,२ (सुतंभर आत्रेय । अग्नि)

इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।

१०,१५,१० (शङ्खो यामायनः । पितरः)

इन्द्रेण देवैः सरथं दधाना ।

(२००२) १०,७०,११ (सुमित्रो वा० न्यद्व ।

आप्रीसृक्तं=स्वाहाकृतयः ।

स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ।

[१९६६] ५,५,३; (१९२१) १,१४२,४

[१९६९] ५,५,६; (१९२४) १,१४२,७

देवत--संहितान्तर्गत- अग्निमन्त्राणां उपमामूची ।



अंशुः इव ५, १९, ११; २३१५ अय आयायताम् ।
 अंहः न ६, १, ४, ९५५ स मर्त द्विष तरति ।
 अंहः न ६, ११, ६, १००५ वावमाना वय .. वृजन ।
 अग्रुवः न ७, २, ५, १९७८ समनेषु [अग्नि शिशु] . समजन् ।
 अघ्न्या कृश न ८, ७५, ८; १३८० देवा नः मा हासु ।
 अंगिरस्वत् १, ३१, १७; ६६ [अग्ने] मदने अच्छ आ याहि ।
 अंगिरस्वत् ८, ४३, १३, ८२२ शुचे, त्वा हवामहे ।
 अज न १, ६७, ५; १४८ अग्निः...क्षां पृथिवीं च दाधार ।
 अतस यथा [त्व] ८, ६०, ७, १३९५ क्षमिवृद्ध सज्वंसि ।
 अतसं शुष्कं न ४, ४, ४, १८१६ समिधान, यः नः ।
 अतिथिः न १, ७३, १, २०५ स्योनशीः [अग्नि] . प्रीणान् ।
 अतिथिः (न) ६, २, ७, ९५८ प्रिय. . अमि ।
 अतिथिः न ८, १९, ८, १२३१ अग्नि मित्रियः प्रशसमान् ।
 अत्य न १, ५८, २; १११ प्रुषितस्य [अग्ने] पृष्ठ... रोचते ।
 अत्यः रथ्य वारान् दोषवीति न २, ४, ४, ४१९
 अत्यः न ६, २, ८; ९५९ अग्ने, शिशु [त्व]... ह्यार्थं ।
 अत्यः न ६, ४, ५, ९७५... त्व हुत. पततः पशितु ।
 अत्यः न १०, ६, २, १५२१. . अपरिहृतः सति ।
 अत्यः न ३, २, ७; १७३३ सः [अग्नि] अध्वराय परि ।
 अत्यम् न ७, ३, ५; ११२८ यविष्ठ तं अग्नि नः मर्जयन्त ।
 अत्यम् न ३, २, ३, १७२२ महौ अग्नि वाज सनिष्यन् ।
 अत्रिवत् ५, ७, ८; ८१८ यस्मै (अग्रये)...परीयते ।
 अथर्वः न ४, ६, ८; ६८९ य अग्निं द्विः पञ्च स्वसार ।
 अथर्ववत् ६, १५, १७. १३०९ वेधस इम उ ह्यन ।
 अथर्ववत् १०, ८७, १२; १३८९ दैव्येन ज्योतिषा सत्य ।
 अद्भोचः न ६, १२, ३, १००८ ओषधीषु द्रविता अवर्त्र ।
 अध्वराः इव ३, ६, १०; ४८९ ऋतजातस्य सुमेके ऋतावरी ।
 अग्रवानवत् ८, १०२, ४, १४६६ समुद्रवाससं अग्नि आहुवे ।
 अमतिः न १, ७३, २; २०६ पुरुप्रशस्तः (अग्नि) सत्यः ।
 अमृतात् इव १०, १७६, ४; १७९० अयम् अग्नि . जन्मनः ।
 अयः न ४, २, १७; ६६३ सुकर्मणः देवाः जनिम. धमंत ।
 अयसः धारां न ६, ३, ५ ९६७ सः [अग्निः] असिष्यत् तेजः..
 अर्वन्तम् न ४, १५, ६, ७५४ सानसिं तम् दिवेदिवे. ।
 अर्वन्तं न ८, १०२, १२, १४७४ सानसिं शुष्मिणं...गृणीहि ।

दै० [अग्निः] २८

अर्वाणम हिमिश्मन् न १०, ४६, ५, १६०५ प्रिय ३ ।
 अरशयून् जन इव [अथर्व] ८४, ३६, ९, २३०३ ये
 अरनी मही सिन्धु इव ५, ११, ५, ८४६ अग्ने, त्वा गिर ।
 अविता विश्वासु विश्नु इव ८, ७२, १५, १४२३ ऋषगा वरन्तु ।
 अशनि यथा दिव्या १, १४३, ५, ३२२ य (अग्निः) वराप ।
 अशनि. गोपुयुध. सजाना न ६, ६, ५, ९९०
 अशन्या वृक्षम् इव (अथ०) ७, १०९, ४, २३६८ यः अमान ।
 अश्वः गविष्टिषु क्रन्वत् १, ३६, ८, ७५ अग्ने त्व वृषे ।
 अश्व. न ३, २७, १४, ५५० वृषा देववाहनः अग्निः ।
 अश्व. न ३, २९, ६, ५६३ वनेषु वात्री अरुप आ विरोचते ।
 अश्व न ४, २, ८, ६५४ दाध्याय न हरे दमे हेम्या तान्त्व ।
 अश्व. न ६, ३, ४; ९६६ (अग्निः) आया यामान् ।
 अश्व. न यवसे अविष्यन् प्रोयन् ७, ३, २; ११२५ मर ।
 अश्व क्रन्दत् जनिभि. न ३, २६, ३, १७५५ युगे युगे ।
 अश्वास. न राहणा. रथ्यः १, १४८, ३, ३५० य [अग्निम्] ।
 अश्वाः (इव) विविताम. ६, ६, ४, ९८९ प्रसू नयन्ता ।
 अश्वा. इव ८, २३, ११, १२८० तत्र हन्वानाम. मा ।
 अश्वा. एवै. ससीवन्तः वाजन १०, ६, ६, १५२५ यग्मिन् ।
 अश्व वाजिन न ७, ७, १, १४४२ सहमान देव अग्नि . ।
 अश्व रथ्य न ८, १०३, ७, १२६३ सुदानवः दाययः ।
 अश्वाव न ८, ७२, ६, १४२९ अरय महत् वृहत् योजन ।
 अश्वाः जात शिशु न ३, १, ४, ४५० सस यङ्क्षी सुभग ।
 अश्वः इव (अथर्व०) १२, २, ५०; २२६३ अग्निः अन्निका ।
 अश्वं अश्वाभिधान्या इव (अथ०) ४, ३६, १०, २३०४
 अश्वाय इव (अथर्व०) १२, ५५, १; २२६९ अस्मा घाय ।
 अश्वाय इव (अथर्व०) १२, ५५, ६, २२७४ अस्मै घायम् ।
 अश्वमिद ८, ७४, १०. १४५१ गां रथपा [अग्नि] त्वय्य ।
 अमश्वता इव १०, ६९, ८; १६३२ समना सवर्धुक् त्वे ।
 असिः गां इव १०, ७९, ६; १६४२ अक्रौलन क्रौलन् हरि. ।
 असुरः इव ८, १९, २३, १२४६ अग्निः निणिज उत् च ।
 अस्ता इव १, ७०, ११; १८४ [अग्नि] शूर. ।
 अस्ता इव ६, ३, ५; ९६७ [स्वकीया ज्जालाम्] अमिष्यन् ।
 अस्तु दिद्युत् न १, ६६, ७; १४० त्वेपप्रतीका ।
 अस्तुः अशनां शयां न १, १४८, ४, ३५१ अस्य शोत्रिः ।

आत्मा इव १,७३,२, २०६ अग्निः . शेषः ।
 आप इव प्रवता ३,५,८; ४७७ ... शुभमाना प्रस्वः ।
 आपि (यथा) आपये यजति १,२६,३, ३० तथा स्वमपि ।
 आयु न ६,११,४; १००३ य सुमयस पञ्च जना . भजते ।
 आरुकाः इव ८,४३,३, १३१२ अग्ने तव तिग्मा त्विषः ।
 आशुम् न १,६०,५; १२३ वाजंभर त्वा (अग्निम्) ।
 आशुम् न ४,७,११, ७०३ अर्वा (अग्निः) [स्वरदिम्] ।
 आशुम् इव अग्निषु मसि १०,१५६,१ १७०३ न. धियः ।
 इन्द्र न ६,४,७, ९७७ शवसा त्वा नृतमा देवता ।
 इन्द्र न ८,७४,१०, १४५१ सम्पत्तिम्, (हं) कृष्ट्य ।
 इन्द्र न १०,६,५, १५२४ रेजमान अग्नि गीर्भिः ।
 इन्द्रस्य इव ७,६,१, १८०३ वन्दमान [अहम्] तवसः ।
 इषिराय भोज्या न १,१२८,५, २८७ अस्य अग्नेः ।
 उग्र शवसा न १,१२७,११, २८२ अग्ने शवसा ।
 उग्र इव ६,१६,३९, १०८० शयंहा [अग्निः अस्ति] ।
 उग्र इव ८,१९,१४; १२३७ स. सुभगः जनान् युजते ।
 उपमित रोध न ४,५,१; १७५८ अनूनेन बृहता वभ्रथेन ।
 उरुव्यञ्ज इव दिविरुक्म ५,१,०२; ६६६ गविष्ठिर... अश्रेत् ।
 भानुता उपम न ६,१५,५; १०२७ य. [अग्निः] रुक्वे ।
 उपमाम् इव १०,९१,४; १६५४ चिकिप्र ते इतय . संति ।
 उपसां केतवः इव ८,४३,५, १३१४ एते ते अग्नयः ।
 उपसा केतव न १०,९१,५ १६५५ चिकिप्र तव केतव ।
 उपः जार न १,६९,१, १६४ शुक्र. [अग्निः] [भवति] ।
 उपः जार न १,६९,९, १७२ विभावा सज्जानरूप ।
 उप जार न ७,१०,१; १६६१ पृथु पाजः अश्रेत् ।
 उम्भः पिता इव ६,१२,४, १००९ द्रवजः यज्ञे जारयाधि ।
 उम्भा इव प्रस्तातीः ८,७५,८, १३८० देवाः .. न. मा हासुः ।
 उध मातु [प्रतिथया वत्साः उपजीवन्ति] १०,२०,२; १५७२ [तद्वत्] यस्य धर्मन् स्वर एनीः सपर्यन्ति ।
 उध. न गौना १,६९,३, १६६ अग्नि .. पितृनां स्वाय ।
 ऊर्मा सिन्धोः. उपाके आ १,२७,६; ४३चित्रभानो विभक्तासि ।
 ऊर्मय सिन्धोः प्रस्वनितास इव १,४४,१२, ९७ अग्नेः ।
 ऊर्मि नाव न ८,७५,९; १३८१ समस्य, दृष्ट्यः परिद्वेषसः ।
 ऊर्मय प्रवणे न ८,१०३,११; १२६७ धिया वाज सिषासत ।
 ऊम्सु न ६,३,८; ९७० खेप. रथमानः [अग्निः] .. अघौत् ।
 ऊपिः न १,६६,४, १३७ [अग्निः] स्तुभ्रा [अस्ति] ।
 एकाम् इव ३,७,४, ४९३ दिद्युतः अग्नि रोदसी वि ।
 एतरी न ६,१२,४, १००९ अस्माकेभिः शूयैः अग्निः .. स्तवे ।
 ओकः न १,६६,३; १३६ [अग्निः] रणवः ।
 औशिज परमन् न दीयन् ६,४,६, ९७६ चित्रः शोचिषा ।
 कन्या इव अजि अज्ञानाः बहव ४,५८,९, १९०३ बहवुं ।

कविम् इव ८,८४,२; १४५५ प्रचेतसं यं देवासः मर्येषु ।
 कुमार न १०,७९,३; १६३९ मातु प्रतर गुह्यं इच्छन् ।
 क्रतुः न १,६६,५; १३८ [अस्ति] नित्यः ।
 क्रतुम् न ४,१०,१; ७२० तम्ते (त्वा) ओहैः स्तोमैः ऋध्याम ।
 क्रतुः न १,६७,२, १४५ ... [अग्निः] भद्रः ।
 क्षामा इव विष्वा भुवनानि ६,५,२; ९८० यस्मिन् पात्रके ।
 क्षितिः पृथ्वी न १,६५,५; १२८ [विस्तीर्णा भूमिः इव ।]
 क्षिति राया न ४,५,१५; १७७२ सुदशीकरूप पुरुवारः ।
 क्षेमः न १,६७,२, १४५ [अग्निः] साधुः ।
 क्षोदः न १,६५,५; १२८ शंभु (यथा उदकं सुखं करोति) ।
 क्षोदः न १,६५,६, १२९ [अग्निः] सिन्धुः स्यन्दनशालं ।
 क्षोदः सिन्धु न १,६६,१०; १४३ [अग्निः] नीचीः ऐनोन ।
 स्वादिनम् न ६,१६,४०, १०८१ यं स्वध्वरं अग्निम् ।
 गर्भ इव गर्भिणीषु सुधितः ३,२९,२; ५५९ जातवेदाः ।
 गर्भ इव योन्यो प्रच्युतः अथ ६,१२१,४; २३८९ सर्वान् ।
 गविषः द्रापं दविष्मन् ४,१३,२; ७४१ यत् रश्मय ।
 गिरिः न १,६५,५, १२८ भुजा (सर्वेषां भोजयिता ।)
 गुहा इव ३,१,१४; ४६०... स्वे सदसि वृद्धं अग्नि नव ।
 गावः अस्त न १,६६,९, १४२ तं व. (त्वा) इद्धं अग्निं ।
 गावः वाधाय प्रनिहयते ८,४३,१७, १३२६ अग्ने, ममस्तुतः ।
 गावः उष्णा घजम् इव १०,४,२; १५०७ यविष्ठ, त्वां जनासः ।
 गावः वाध्राः न (वा०) ९,५,६; १८७३ उभे मेने... एवैः ।
 गाः खिले विष्टिताः इव (अथ०) ७,११५,४; २२०४ एता ।
 गाः स्व जरायुम् इव (अथ०) ६,४९,१, २३३७ कपिः ।
 गावः श्यावी उच्छन्ती अरुणी न १,७१,१; १८५ सनीलाः ।
 गोः पदम् न ४,५,३, १७६० अग्नि . अपगृह्यं मनीषां ।
 गोपाः पशून् न ७,१३,३, १८१२ हर्यः परिजमा, अग्ने ।
 गौर्यं यथा ह त्वत् पद्विषितां ४,१२,६, ७३९ एवो ।
 प्रावा सोता इव ४,३,३, ६६८ (तस्मै) देवाय शर्ति ।
 प्रावा इव ५,२५,८, ९१८ बृहत् [त्वम्] उच्यते ।
 घनाः इव १,३६,१६, ८१ तपुर्जम्भ, अराव्यः विष्वक् .. ।
 घर्मः न ५,१९,४; ८८९ [अग्निः] वाजजठरः अद्वयः ।
 घृतं न अग्न्यायाः तप्तं शुचि ४,१,६; ६३२ देवस्य मेहना ।
 घृतं पूतं न ४,१०,६, ७२५ स्वयावः, ते तनूः... ओपाः ।
 घृतं न अस्य [प्रहुतं] यज्ञे सुपूतं ५,१२,१; ८४८ वृषभाय ।
 घृतं शुचि न ६,१०,२; ९९४ मतयः .. यं शूयं सोमं अस्मै ।
 आसनि कं घृतं न ८,३९,३, १३०९ अग्ने, तुभ्यं सम्मानि ।
 घृतं शुचि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते आस्ये... ।
 घृतं पूतं न ३,२,१; १७२७ क्रतावृधे वैश्वानराय... ।
 चक्षणि वस्तोः न ६,४,२; ९७२ सः अग्निः... विभावा ।
 चन्द्रम् सुरुचं इव २,२,४, ४८८ [देवाः] अग्निं स्वहारे ।

चर्म इव ४,१३,४; ७४३ सूर्यस्य रश्मयः अप्सु अनाः .. ।
 चर्मणी इव ६,८,३; १७८२ वैश्वानरः धिषणे अवर्तयत् ।
 चित्रः यामन् अभिनोः न ३,२९,६; ५६३ वनेषु वाजी ।
 छाया इव १,७३,८; २१२ स्व अग्निः विश्व भुवन ।
 छाया इव ६,१२,३८, १०७९ अग्ने, घृगेः ते शर्म वय ।
 जनयः नित्य पति न १,७१,१; १८५ उशतीः सनीळा ।
 जनयः शुभमाना १०,११०,५, २००७ व्यचस्वतीः ।
 " " (चा०य०) २९,३०; २१२२ " ।
 जनयः न पतिरिष ४,५,५, १७६२ दुरेवाः पापाम् सन्तः ।
 जनयः सुपत्नी (यथा) वा०य० २०,४०; २०१८ इन्द्र दुरः ।
 जनयः पत्नीः न वा०य० २०,४३, २०२१ इन्द्र जुषाणाः ।
 जन्म तनय न ३,१५,२, ५८९ अग्ने, मे स्तोम नित्य ।
 जाया योनौ इव १,६६,५; १३८ [अग्निहोत्रादिगृहे ।]
 जाया परये उशती सुवासाः ४,३,२, ६६७ अय ते योनि ।
 जाया परये उशती सुवासाः १०,९१,१३, १६६३ [अहम् ।]
 जारः आ १०,११,६; १५४५ ... भगं पितरा उदीरय ।
 जूर्यः इव पुरि ६,२,७, ९५८ [अग्ने] स्व रण्व ।
 तक्रवीः इव १०,९१,२; १६५२ वने वने शिभिये ।
 तक्रा न १,६६,२; १३५ [अग्नि] भूर्णि ।
 ततरुष न ६,१२,२; १००७ जहः [त्रिषधस्थ ।]
 तन्यतुः यथा ५,२५,८, ९१८ दिवः ते स्वान आर्त ।
 दिवः तन्यतु. न ७,३,६; ११२९ ते शुभमः एति ।
 तरणिः इव १,१२८,६; २८८ अतिः अग्निः दक्षिणे हस्ते ।
 तस्कराः तनु स्वजा इव १०,४,६; १५११ वनर्गुः दक्षिणि ।
 तस्किन् इव १,९४,७, २६२ दुरे चित सन् अति रोचसे ।
 तातृषाणः न २,४,६, ४२१ यः अग्निः .. वना आनाति ।
 तापुं पश्वा (सहवर्तमानं) न १,६५,६, १२४ धीराः सजोषाः ।
 तापुः गुहा पदं दधानः न ५,१५,५; ८७० महः राये अग्नि ।
 तापुः क्रुणः न ६,१२,५; १०१० यः रुयः स्पन्द्रः विषितः ।
 तोदः अध्वन् न ६,१२,३ १००८ वृधसानः वनेराट् अग्नि ।
 तोदस्य शरणे महस्य आ १,१५०,१; ३५८ अग्ने, तव स्विन् ।
 त्रष्टा रूपा इव ८,१०२,८, १४७० अयं [अग्नि] नः .. ।
 यथा अग्ने इळाभि ७,३,७; ११३० अग्ने, नः तेभि ।
 दिव्युत् अस्तुः स्वेपप्रतीका न १,६६,७, १४० [अग्नि] ।
 दिवः उपोतिः न १,६९,१; [अग्निः] समीची प्रपा ।
 दिवः शिशुं न ४,१५,६ ७५४ अरुषं त दिवे दिवे ।
 दिवः न ४,१०,४, ७२७ अग्ने ते शुभमाः प्रस्तनयन्ति ।
 दिवः न ५,१७,३; ८७८ यस्य [अग्ने] रेतसा व्याप्त ।
 दिवः न ६,३,७, ९६९ विधत् यस्य [अग्ने] .. ।
 दुग्धम् न ५,१९,४, ८८९ जाम्यो रुचा [अग्नि] शृगोतु ।
 दूतः जग्ध. मिश्रः इव २,६,७ ४३९ कवे अग्ने, उभया ।

देव न १,७३,३, २०७ [अग्नि] ... विश्वधारयः ।
 द्याम् इव परिजमानं १,१२७,२, २७३ चर्चणीनां होतार ।
 द्यौः स्तुभि न २,२,५, ६८९ [अग्नि] रोदसी ।
 द्यौः नभोभिः स्तयमान २,४,६; ४२१ ... कृष्णाया तपुः ।
 द्याम् इव स्तुभिः ४,७,३, ६९५ विश्वेषां अध्वराणां ।
 द्यौः न १,६५,३, १२६ .. भूम अभुत् ।
 द्याव. न १०,११५,७, १६७२ [ऋतायव] युम्ने मंति ।
 द्यौः स्तनयन् इव १०,४५,४; १५९२ अग्नि अक्रन्दत् ।
 द्रविः न ६,३,४, ९६६ [अग्निः] उत्तत् दात द्रावयति ।
 द्रवो युतः न ५,९,६, ८३३ . मर्यानां दुरिता तुर्याम् ।
 धनुः इव (अधर्व०) ४,४,६, २६६२ ... पम आ तनय ।
 धन्वाराहा न १,१२७,३, २७४ निषहमाण (अग्नि) ।
 धायोभि वा ६,३,८, ९७० यः [अग्नि] युज्येभि ।
 धारा उदन्या इव २,७,३; ४४३ वय विश्वा द्विष . ।
 धामिम् इव १,१४०,१; २९२ सुद्युते अग्नये योनिम् . ।
 धीर स्वेन इव १,१४५,२, ३३४ [अग्निः] मनसा ।
 धेनव स्वसरेषु वत्स न २,२,२; ३८६ [अग्ने] त्वा ।
 धेनुः दुहाना (इव) २,२,९, ३०३ [अग्ने स्वदीया] वीः ।
 धेनो मंहना इव ४,१,६; ६३२ देवस्य महना स्पर्हा ।
 धेनुम् इव ५,१,१; ७५५ आयतीं उपारां प्रति जनानां ।
 धेनुः सुदुघा इव ७,२,६, १९७९ उपामा नक्ता सुविताय ।
 धमाता इव ५,९,५, ८३२ यत् [अग्निः] ईम् उपधमति ।
 धमातरी यथा ५,९,५, ८३२ .. (स्वयमेव स्वात्मान ।
 नभः रूपं न १,७१,४०, १९४ (स्व) कवि सन् अभि ।
 नभन्यः अर्वा १,१४९,३; ३५५ अग्नि अत्यः कवि ।
 नराम् न १,१४९,२, ३५४ यः रोदस्योः वृषा ।
 नारी इव अनवद्या पतिजुष्टा १,७३,३, २०७ अग्निः भग्नि ।
 नेमिः अरान् न १,१४१,९; ३१३ अग्ने यत् सीम क्रतुना ।
 नेमिः चक्रम् इव २,५,३; ४२७ अग्नि ... विश्वानि काव्या ।
 नेमिः अरान् इव ५,१३,६, ८५९ अग्ने स्व देवान् ।
 नेमिं क्रमव यथा ८,७५,५, १३७७ अग्निः महतिथि ।
 नावा सिन्धुम् न ५,४,९, ७९८ ज्ञानवेदः नः विश्वानि ।
 नावा इव ५,२५,९; ९१९ अग्नि. नः विश्वा द्विषः ।
 नावा इव सिन्धु १,९९,१; १८६२ अग्नि न विश्वा ।
 नावा इव १,९७,७, १८९३ विश्वतोमुख, नः द्विषः ।
 नावया सिन्धुम् इव १,०,७,८; १८९४ सः स्वन स्वस्याय ।
 पयः न धेनुः १,६६,२; १३५ (पयः इव प्रीणयिता) ।
 परशु न द्रुहतरः १,१२७,३, २७४ दीद्यान. अग्निः ।
 परशु न ४,६,८, ६८९ तिग्मं स्वास दन्त अग्निम् ।
 परशुः न ६,३,४, ९६६ [अग्निः] . जिह्वा विजेहमानः ।
 परिजमा इव ६,२,८, ९५९ अग्ने [स्व] [सर्वभारा] ।

परिजमा इव ६,१३,२, १०१३ दस्मवर्चाः क्षयसि ।
 पण्या इव ६,८,५ १७८४ राजन्, अजर, .. तेजसा ।
 पशु न शिश्वा १,६५,१०, १३३ अग्नि शिश्वा अभूत ।
 पशु न २,४,७, ४२२ अग्नि . सयु अगोपा एति ।
 पशु न दाता ५,७,७, ८१७ सहिष्म आक्षित धन्य . ।
 पशु न यवसे ५,५,४, ८३१ अग्ने (त्व) वना .. पुरु ।
 पशु न यवसे ६,२,९०, ९६० अग्ने, त्वं त्याचित ।
 पशु इव अवसृष्ट १०,४,३, १५०८ [द्विवा] जिगीषसे ।
 पशु नष्ट पदै. न १०,४३,२, १६०२ धीरा. अषां सध स्ये ।
 पशुपा इव १,४४,६, ३३१ अग्ने, त्व दिव्यस्य पार्थिवस्य ।
 पशुपा इव ४,६,४, ६८५ अग्नि त्रिविष्टि .. परि एति ।
 पशुपा इव १०,१४२,२, १६९१ न. धिय. .. त्मना ।
 पशुपे न १,१२७,१०, २८१ उपबुधे अग्नये व स्तोम ।
 पाथ. न २,२,४, ३८८ पायु पृथ्या. पतरं अक्षभिः ।
 पितृमान् इव १,१४४,७, ३३२ अग्ने, त्वं संदृष्टो रण्यः ।
 पिता सूनवे इव १,१,९, ९ अग्ने, न. . स्यायन ।
 पिता सूनवे इव १,२६,३, ३० अग्ने (पितृस्थानीय. ।)
 पितु न जिमेः १,७७,१०, १८३ [अग्ने] त्वा नरः पुरुषा ।
 पितु न १,१२७,८, २७९ यस्य आसया अमी विश्वे ।
 पिता इव २,१०,१, ४०९ जोहूत्र. प्रथम. अग्निः यत् ।
 पितु यथा ८,७५,२६, १३८८ अग्ने, ते अवसः वय पुरा ।
 पिता पुत्रम् इव १०,६९,१०, १६३४ सपर्यन्तं वाधयश्चः... ।
 पितरा इव ३,१८,१, ६०५ अग्ने, त्वं उपेतो सुमनाः ।
 पित्रो (इ) ७,६,६, १८०८ रोदस्योः उपस्थ वैश्वानर ।
 पुत्रा. पितुः न १,६८,९, १६२ ये अस्य (अग्नेः) शाम ।
 पुत्रः न १,६९,५, १६८ जातः अग्निः .. दुरोणे रण्यः ।
 पुत्रः मातग न १०,१७,१, १४९१ अग्ने, (त्व) द्यावा ।
 पुत्र. पितुः न ८,१९,२७, १२५० सुष्टतः [अग्निः] न. ।
 पुष्टिः रणवा न १,६५,५, १२८ (अग्नि. सर्वेषां ।)
 पुष्टिः स्वस्य इव २,४,४, ४१९ अस्य पुष्टिः रणवा ।
 पृ न मही आयसी शतभुजिः ७,१५,१४, ११९० अग्ने ।
 पूर्ववत् ३,२,१२, १७६८ सः . जन्तवे धन जनयन् ।
 पृष्ठा चीता वृजिता च इव ४,२,११, ६५७ विद्वान् [अग्नि ।]
 प्रपा धन्यन् इव १०,४,१, १५०६ हे अग्ने [त्व] असि ।
 प्रयाः मरुता इव ३,२९,१५, ५७२ ब्रह्मणः प्रथमजाः सति ।
 प्रयुक्ति मरुतां न ६,११,१, १००० अग्ने .. [अस्मच्छन्] ।
 प्रसितिः श्वस्य इव ६,६,५, १९० अग्नेः क्षातिः . अयि ।
 प्रसिति पृथ्वी न ४,४,१, १८१३ ... पाजः कृणुष्व ।
 प्राणः बायुः न १,६६,१, १३४ (प्रश्नसन् चायुरिव अग्निः ।)
 वन्तुग इव ३,१४,३, ५८२ ते उपास. दुरोणे तस्थतुः ।
 वृत्ता इव १,५०,४, १७२० रोदसां यतव [अभूताम् ।]

भगः इव १,१४४,३, ३९८ हव्यः सारथिः (सन्) ।
 भगः ऋतुपाः इव ३,२०,४, ६१७ दैवीनां क्षितीनां नेता ।
 भगः न ५,१६,२, ८७२ अग्निः ... चारं वि ऋषवति ।
 भगम् इव १,१४१,६, ३१० होतार अग्नि पट्टचानासः ।
 भगं दक्ष न १,१४१,११, ३१५ अग्ने, अस्मं पर्णसि ।
 भग न १,१४१,१०, ३१४ हे महिरन्, नव्वं त्वा वय ।
 भगस्य भुजिम् इव ८,१०२,६, १४६८ भुजि समुद्रवाससं ।
 भद्रे न १,९५,६, १८७३ [एनं अग्नि] उभे भद्रे मेने .. ।
 भार गुरु न ४,५,६, १७६३ अग्ने, क्रियते [त्वदीयं कर्म] ।
 भारभृत् यथा ८,७५,१२, १३८४ [तथा] अस्मिन् महाधने ।
 भीमः न १,१४०,६, २९७ दुर्गभिः... शृङ्गा दविधाव ।
 स्वजेन्यं भूम पृष्ठा इव ५,७,५, ८१५ ईम् [अग्नि] घृतस्य ।
 भूमा विश्व इव ८,३९,७, १३०६ मः मुदा पुरु कात्या.. ।
 भृगुवत् ८,४३,१३, १३२२ शुचे त्वा... हवामहे ।
 भृगुवत् और्व ८,१०२,४, १४६६ समुद्रवारुम अग्नि... हुवे ।
 भोज्या मरुतां न १,१२८,५, २८७ अस्य अग्नेः तविधीषु ।
 भ्राता इव स्वस्त्रां १,६५,७, १३० (अग्नि हितकारी अस्ति) ।
 मधो पात्रा न ८,१०३,६, १२६२ अस्मै अग्नये... प्रयंति ।
 मध्या न ५,१९,३, ८८८ जन्तवः कृष्टय एना ।
 मन. न १,७१,९, १९३ यः एकः सूर अध्वन . एति ।
 मनुवत् २,१०,६, ४१४ [वधम्] ... वदेम ।
 मनुष. यथा (सीदन्ति) १,२६,४, ३१ तथा वरुणः, मित्रः ।
 मनुषः यथा यजेभिः ६,४,१, ९७१ एवा नः अथ समना ।
 मनुष्वत् १,३१,१७, ६६ अगिरः, सद्ने अच्छ आयाहि ।
 मनुष्वत् २,५,२, ४२६ पोता अष्टम दैव्य विश्व ... हवति ।
 मनुष्वत् ३,१७,२, ६०१ अध इमं यश प्रतिर ।
 मनुष्वत् ५,२१,१, ८९५ अग्ने, त्वा निधीमहि ।
 मनुष्वत् ५,२१,१, ८३५ अग्ने, त्वा समिधीमहि ।
 मनुष्वत् ५,२१,१, ८९५ अगिरः अग्ने, देवयते ... देवान् ।
 मनुष्वत् ७,२,३, १२७६ मनुता समिद्ध अग्नि महेम ।
 मनुष्वत् ७,११,३, ११६८ अग्ने, देवान् इह यक्षि ।
 मनुष्वत् ८,४३,१३, १३२२ शुचे, त्वा हवामहे ।
 मनुष्वत् ८,४३,२७, १३३६ त्वां जनासः इन्धते ।
 मनुष्वत् १०,७०,८, १९९९ यज्ञ इळां देवी घृतपदी जुषन्ता ।
 मनुष्वत् १०,११०,८, २०१० चेतयन्ती इह इळा ।
 मनुष्यः न १,५९,४, १७२० दक्ष. होता वैश्वानराय प्रायुक्त ।
 भमता इव ६,१०,२, ९९४ मतयः ... यं शूषं स्तोमं पवंते ।
 मर्मृजेन्य. उशिग्भि न १,१८९७, ३६७ अग्ने अक्रः त्वं ।
 मर्यं वाजिन न ८,४३,२५, १३३४ विश्वायुवेपसं हित ।
 माता इव ५,१५,४, ८६९ पप्रधानः [त्वं] जनजन... भरसे ।
 मित्रम् य शेवम १,५८,६, ११५ जनेभ्यः सुहवं वरेण्यं दधुः

मित्रः न १,७७,३, २३६ सः [अग्नि] रथीः ... अभूत ।
 मित्रम् इव १,१४३,७; ३२४ समिधानः अग्निं कञ्जते ।
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं अरितेषु ।
 मित्रः इव २,४,१, ४१६ य जातवेदा देवः ... भूत ।
 मित्रं न (क्षेप्यन्तः) २,४,३, ४१८ देवाम क्षेप्यन्तः ।
 मित्रः न ४,६,७, ६८८ ... सुधित पावकः अग्निं दीदाय ।
 मित्रम् न ५,३,२, ७८० सुधितं गोमि अञ्जन्ति ।
 मित्रम् न ५,१६,१, ८७१ मर्तासः [अग्निं] प्रशस्तिभिः ।
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, त्वं क्षैतवत् यशः पत्यसे ।
 मित्रं न ६,१५,२, १०२४ मृगव सुधित य दधुः ।
 मित्रं न ८,२३,८; १२७७ कृतावनि जने सुधितम् ।
 मित्रं न ८,७४,२, १४४३ सर्पिरासुति जनासः क्षमति ।
 मित्रम् इव ८,८४,१, १४५४ प्रिय वः श्रेष्ठ अतिथिं रतुषे ।
 मित्रम् इव १०,७,५, १५३१ प्रयोग अग्निं भायव ।
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं क्षितिषु ।
 मित्रः इव २,४,१, ४१६ य देव जातवेदा दिधिषाययः ।
 मित्रः न ५,१०,२, ८३६ यज्ञियः त्वं क्राणा [भव] ।
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, त्वं क्षैतवत् यशः ।
 मित्रं न ६,१३,२; १०१३ वृद्धत कृतस्य, क्षत्ता असि ।
 मित्रं प्रियं न ६,४८,१; १०९० अमृत जातवेदस वयः ... ।
 मित्रं न ८,१०२,१२, १४७४ यातयजन्तं शुष्मिणः . गृणीहि, मित्रः यथा, वरुण, इन्द्रः ३,४,६, १९५८ तथा उपासानक्ते ।
 मित्रास न १०,११५,७; १६७२ सुधिता कृतायव ।
 मृगाः क्षिपणः ईषमाणा इव ४,५८,६; १९०० एते घृतस्य ।
 मेता इव ४,६,२, ६८३ [अग्नि] धूमं धाम् उप ।
 मेष इव (अध०) ६,४९,२; २३३८ यत् उत्तरद्रौ उपरः च ।
 यथा ऋतुभिः देवान् देवः, १०,७,६, १५३२ एवं, आ यज्ञा यज्ञं प्रजानन् यथा अय ४,२३,२, २३३१ एवा देवेभ्य न ।
 यथातिवत् १,३१,१७, ६६ अगिर, सद्ने अच्य आ याति ।
 यवः न पक्वः १,६६,३, १३६ पक्वः यवः इव उपभोग योग्य ।
 यवः वृष्टि इव २,५,६; ४३० तामा (जुह्वाङ्गिनाम्) आगतौ ।
 यवं न ७,३,४, ११२७ दस्य, [त्र] जुह्वा विवेक्षि ।
 यवसा पुष्पते इव १०,१२,५, १५४४ त्वं सदा रणवः असि ।
 यद्धम् न ५,१६,४; ८७४ रोदसी श्रवः तमिन् परि ।
 याता इव १,७०,११, १८४ भीमः अग्निपि दृष्टमाग्ने ।
 यामन् तूर्त्वन न ६,१५,५; १०२७ एतश्चस्य रणं य ।
 युयुधयः न १०,११५,४; १६६९ रणवासः ऋत्विज सन्ति ।
 युवत्योः [न] १०,३,७; १५०५ दिवस्पृथिव्यो .. अरतिः ।
 युवतयः युवानं अस्मेराः २,३५,४, २४२५ मर्म्यमानाः ।
 यूथा इव क्षुमति पश्वः ४,२,१८; ६६४ देवानां यत् ।
 यूथम् न ५,२,४ ७७० अहं मुमन्तं पुरुः शोभमानं अन्तान् ।

योधः शत्रून् न १,१४३,५; ३२२ अग्निः वनानि कञ्जते ।
 योषण अन्नातर न ४,५,५, १७६२ दुरेवाः पापासः ।
 योषाः समना इव ४,६८,८; १९०२ कल्याण्यः स्मयमानासः ।
 रघवः वाजम् न ४,५,१३, १७७० का मर्यादा, वयुना ।
 रथः न १,५८,३, ११२ देवः विष्णु .. आयुषु कञ्जमान ।
 रथ न १,६६,६, १३९ रुक्मी [अग्नि] ।
 रथः शिकभिः कृतः न १,१४१,८, ३१२ यातः (मन्) ।
 रथ न ३,१५,५, ५९२ अग्ने, रुक्मि त्वं न वाज .. ।
 रथः न स्वान ५,१०,५, ८३९ अग्ने, धृष्ण्या भ्राजन्त्य ।
 रथ न ८,१९,८, १२३१ [अग्नि] वेधः ।
 रथम् इव १,९४,१, २५६ जातवेदसे मर्तापया इम स्तोमा ।
 रथम् इव २,२,३; ३८७ देवाः त वंश अग्निम् न्येरिरे ।
 रथम् न क्रन्तः ४,२,१४, ६६० सुधयः आशुषाणा ।
 रथम् न ५,२,११, ७७७ तुविजात, विप्रः अहं ते पुत ।
 रथम् न ८,८४,१, ११५४ वेध अग्निं रतुषे ।
 रथम् न १०,४,६, १५११ शुचयद्भि अङ्गे ... युंक्ष्व ।
 कुलिशः रथ न ३,२,१, १७२७ द्विता होतार मनुषः ।
 रथम् न ३,२,१५, १७४१ मन्त्रं विश्वचर्षणि चित्रं ईमहे ।
 रथामः एकं नियानं बहवः १०,१४२,५, १६९४ ददध्रे ।
 रथः न १०,१७६,२, १७०९ य अभीवृतः ।
 रथी इव ४,१५,२, ७५० अग्निः अध्वरः परि याति ।
 रथी इव ८,७५,१, १३७३ अग्नेः देवहूतमानं युंक्ष्व ।
 रथ यथा १०,२१,७, १६५७ अग्ने, यक्षतः ते अजराणि ।
 रथी पत्नीन् इव अथर्व ७,६२,१; २३७३ अग्निः अजयत ।
 रथ्या इव २,४,६, ४२१ [अग्निः] .. स्वानीत् ।
 रथिः न १,६६,१, १३४ [अग्निः] चित्रः ।
 रथिः पितृवित्तः इव १,७३,१, २०५ यः [अग्निः] वयोधाः ।
 रथिः न देवतातये १,१२७,९, २८० अग्ने, शुष्मिन्तमः ।
 रथिः इव १,१२८,१; २८३ अग्निः श्रवस्थते . [भवति] ।
 रथिः यथा वीरवतः ७,१५,५; ११८१ [तथा] यस्य श्रियः ।
 रथि चारु न १,५८,६, ११५ [अग्ने] मृगवः त्वा आदधुः ।
 रथिम् इव १,६०,१, ११९ प्रशस्त [अग्नि] मानसिधा भरत ।
 रथि न १,१४१,११, ३१५ अस्मै स्वयं दमूनसं ... पृच्छामि ।
 रथमयः ध्रुवासः सूर्ये न १,५९,३, १७१९ वैश्वानरं अग्नौ ।
 रथीन् यमति इव १,१४१,११; ३१५ स उभे जन्मनी ।
 रथीन् सारथिः वोळुः १,१४४,३, ३२८ हव्य सारथिः ।
 राजा इभ्यान् न १,६५,७; १३० [अग्निः] वनानि . अस्ति ।
 राजा अजुयम् इव १,६७,१; १४४ मित्रः [अग्नि] . ।
 राजा हितमित्रः न १,७३,३; २०७ [यः अग्निः] .. उपेक्षति ।
 राजा इव ६,४,४; ९७४ अवृक्ते क्षेप्यन्त जे ।
 राजा न ६,९,१, ६७८ जायमानः अग्निः .. योतिषा ।

राजा अमवान् ह्येन इव ४,४,१, १८१३ [अग्ने, त्व याहि।]
 राजानम् विशाः इव ६,८,४; १७८३ . [स्रोतारः ।]
 रुक्म न ४,१०,५; ७२४ अग्ने, स्वादिष्टा तव मरुष्टि ।
 रुक्म. न ४ १०,६; ७२५ स्वधाव, ते शुचि हिरण्यः रोञ्जने।
 रुक्म' न ७,३,६, ११२९ स्वर्नाक, यन ..उपाके ।
 रभ न ६,३,६; ९६८ सः [अग्निः]...उस्त्रा प्रति वस्ते ।
 रभः (ऋषगा अग्ने) न १,१२७,१०, २८१ ऋषगां [मध्ये]
 वन्दना वृक्षम् इव (अथ०) ७,११५,२; २२०२ या पतयात् ।
 वषग (यूथे साहान्) न १,५८,५, ११४ तपुर्जम्भ वाति ।
 वंसग तिग्मशृग. न ६,१६,३९, १०८० अग्ने, त्व .. ।
 वत्स. [इव] ८,७२,५, १४२८ चरन रुशन् इह निदातारं ।
 वत्साम. मातृभि न ८,७२,१४, १४३७ जामिभि नसना ।
 वना इव १,१२७,३, २७४ यस्य [अग्ने] समृता वीळु ।
 वना इव १,१२७,४, २७५ य [अग्निः] पुरुणि गाहते ।
 वनिनः वयाः न ६,१३,१, १०१२ अग्ने, त्वत् विश्वा ।
 वनिनं न ६,८,५; १७८४ अजर, अधशस नीचा... वृश्च ।
 वनेराट् [न] ६,१२,३; १००८ यस्य [अग्नेः] अरतिः ।
 वता इव १०,१४२,४, १६९३ यदा वानः ते शोचि ।
 वयाः इव २,५,४; ४२८ अस्य [अग्नेः] भुवा प्रता विठान् ।
 वयाम् प्र उज्जिहताः इव ५,१,१, ७५५ अस्य यद्वाः ।
 वया. (उपक्षित.) इव ८,१९,३३, १२५६ अग्ने, अन्य ।
 वया. इव ६,७,६, १७७८ सप्त विसुहः...वैश्वानरस्य ।
 वयथाः इव २,३,६, १९४७ उपायानके . रणिवे तत ।
 वरुण. यथा १०,११,१, १५४० स' [अग्निः] धिया वेद ।
 वरुणः न १,१४३,४; ३२१ य. एकः वस्त्रः [अग्निः] ।
 वर्म स्थूत इव १,२१,१५, ६४ अग्न, त्व नर पाप्मि ।
 वर्म युसु इव १,१४१,१०; ३०१ [त्व] परिजर्भुराणः भव ।
 वसुम् न १०,१०२,१, १६७५ चित्रमहम् [अग्निम्] गृणीषे ।
 वस्त्रेग इव १,१४०,१, २९२ योनि [योनिस्थान] ... ।
 वाङ्मि न १०,११५,३, १६६८ आसा . [हविः] वहतां ।
 वाजयन इव २,८,१, ३९७ यशसामस्य मीळहुष अग्नेः ।
 वाजयु न ५,१०,५, ८३९ अग्ने घृणुया आजनय यति ।
 वाजी न १,६६,४; १३७ [अग्नि] प्रीतः [अस्ति] ।
 वाजी न प्रीतः १,६९,५, १६८ [अग्निः] विशाः ..विनारीत ।
 वाजी न सर्गेषु प्रस्तुमान ४,३,१२; ६७७ अग्ने, मधुमन्त्रि ।
 वाजिन न ४,६,५, ६८६ अस्य [अग्नेः] शोकाः द्रवति ।
 वाजी मन् (इव) ४,१५,१, ७४९ होता अग्निः न. अध्वरे ।
 वाजी न ६,२,८, ९५९ अग्ने, [त्व] कृष्य. ।
 वाजी अरुपः न ४,५८,७; १९०१ घृतस्य धारा. भवति ।
 वातः इव १,७९,१; २४४ हिरण्यकेशः अहिः धुतिः ... ।
 वाता न १०,११५,४; १६६९ पक्षीः अध्युता [प्रभावा] ।

वायुः न ६,४,५, ९७५ राष्टी ..अक्तून् अत्येति ।
 वायुं न ६,४,७, ९७७ शवसा...त्वा नृतमाः पृणति ।
 वायु पाथः न ७,५,७; १८०० परमे ष्योमन् जायमानः ।
 वार् न २,४,६, ४२१ य. अग्निः ... पथा [गच्छति] ।
 वार् इव ४,५,८, १७६८ उस्त्रियाणां यत् ...अप मन् ।
 वे. न ६,३,५; ९६७ अग्निः.. रघुपत्नजंहाः दुषट्वा ।
 विं न १०,११५,३, १६६८ दुषद् देवम् अग्निम् ।
 विदे यथा [ददति] १,१२७,४, २७५ अस्यै इळ्हा चित् दुः ।
 विद्युत न ३,१,१४; ४६० शुक्रा. बृहन्तः भानवः सचंत ।
 विद्युतः परिजमान न ५,१०,५, ८३९ अग्ने, घृणुया ।
 विद्युत न ६,३,८; ९७० य. [अग्निः] स्वेभि शुष्मैः ... ।
 विद्युत' वयस्य इव १०,९१,५; १६५५ चिकित्त्र, श्रियः संति ।
 विपः न ८,१९,३३; १२५६ तव क्षत्राणि वर्धयन् ।
 विप्र(जातवेदसं) न १,१२७,१, २७२ होतारं अग्नि मन्वे ।
 विप्र न ६,१५,४, १०२६ शुभ्रवचस हव्यवाहं ... कंजसे ।
 विप्रः न ८,४४,२९, १३७१ अग्ने, ...सदा जागृविः अस्ति ।
 विशपतिः रेवान् इव १,२७,१२; ४९ सः अग्निः शृगोतु ।
 विशपति जेन्य न १,१२८,७; २८९ अग्नि. यज्ञेषु ।
 विश्व. विशाम् न १,७०,४; १७७ अमृतः अग्निः ... ।
 वीराः शर्मसदः न १,७३,३, २०७ [यस्य अग्नेः] पुरः वसंते ।
 वृजन न ६,११,६, १००५ वावसानाः [वयं] .. क्लसेम ।
 वृषभस्य इव १,९४,१०, २६५ अग्ने, ते रवः अस्ति ... ।
 वृषभ शृंगशिशानः यथा ८,६०,१३; १४०१ [तया] अग्निः ।
 वृषभ. न १०,४,५, १५१० अस्त्राता अपाः प्र वेति ।
 वृषा इव १,१४०,६; २९७ अग्नि (नमन्) ..रोरुवत ।
 वृषा इन. प्रोयमानः यवसे न १०,११५,२; १६६७ अभि ।
 वेधसे न ३,१०,५, ५१३ विषां ज्योतीषि विञ्जते...भरत ।
 व्याघ्र गोमतां इव (अथ०) ४,३६,६; २३०० [अहम्] ।
 शमिता न देव [वा० य०] २०,४५; २०२३ वनस्पतिः ।
 शर्धः मारुत न १,१२७,६, २७७ [अग्नि] तुविष्वणि ।
 शर्धः मारुतं न ४,६,१०, ६९१ ते स्वेपाराः अर्चयः ... ।
 शर्म सुनवे वीळु न १,१२७,५; २७६ अस्य आयुः अभूत् ।
 शर्यहा इव ६,१६,३९, १०८० त्वम् उग्रः [अस्ति] ।
 शर्यहा उग्र इव (वा) त्वं शत्रूणां पुरः रुरोजिष ।
 शामु चिकितुषः न १,७३,१; २०५ यः [अग्निः] ।
 शिवाभि. स्मयमानाः १,७९,२, २४५ [अग्निः विद्युन्नि] ।
 शिशु नव यथा ५,९,३; ८३० यम् अग्नि अरणी जनिहा ।
 शिशु जात न ६,१६,४०, १०८१ अग्निम् हस्ते आ ।
 शिशु न १०,४,३; १५०८ माता जेन्यं त्वा...वर्धयन्ती ।
 शिशुं न ६,७,४, १७७६ जायमानं त्वा...विश्वे देवाः नवन्ते ।
 शिशुं मातरा न ७,२,५; १९७८ पूर्वी गिहाणे समनेषु ।

सूरः इव १०,६९,५; १६२९ धृष्णुः च्यवनः अग्निः ।
 सूरः इव १०,६९,६; १६३० धृष्णुः च्यवनः जनानाम् ।
 सूरस्य खेषयात् वयः इव १,१४१,८; ३१२ खेषयात् अग्ने ।
 सूरस्य प्रसितिः इव ६,६,५, ९९० अग्ने क्षातिः दुर्वतुः ।
 गुरुषः हेषस्वतः न ६,३,३; ९६५ अयं वनेजाः अक्तोः ।
 शेवः जने न १,६९,४; १६७ अग्निः .. मध्ये आहूयः ।
 इयेनाय दिवः ७,१५,४, ११८० अग्नये नव सोमम् ।
 इयेनासः न ४,६,१०, ६९१ खेषासः ते अर्चय ... गच्छन्ति ।
 श्रुष्टीवानः न १,१२७,९; २८० अजर ते ... परिचरन्ति ।
 श्वेतः न १,६६,६, १३९ यत् अन्नात् तदा .. (श्वेत आदित्य ।
 संवयन्ती तत् तन्तुं पेशमा वा० य० २०,४१; २०१९ देवानां ।
 ससद् पितुमती इव ४,१,८; ७३४ अग्निः सदा रण्यः ।
 सत्वा सख्ये यथा १,२६,३, ३० तथा अग्ने मद्यं अभीष्ट देहि ।
 सत्वा सख्ये इव ३,१८,१, ६०५ अग्ने उपेतौ नः .. भव ।
 सचा मन् सहायसे राजे १,७१,४, १८८ भृगवाणः ईम् ।
 सत्याः यशस्वती अपस्युव १,७९,१, २४४ उपसः नवेदा ।
 ससिम् न ३,२२,१, ६२३ जातवेदः सहस्विण अन्यम् ।
 ससि न ८,४३,२५, १३३४ सुवेपसं अग्निं वाजयामसि ।
 सस्य इव १०,१४२,२, १६९१ नः धियः .. सनिषत ।
 सद्यम् इव १,६७,१०; १५३ धीराः [अग्नि] .. समाय चक्रुः ।
 समनम् पृथिव्या अग्नये (अथ०) ४,३९,४, २२८० एवं मद्या ।
 समिधा जातवेद इध्मेन अथ० १९,३४,२, २३५२ तथा खं ।
 सरजन्तम् न १०,११५,३, १६६८ अध्वनः [राजयन्तम्] ।
 सरितः घेनाः व ४,५८,६, १९०० घृतस्य धाराः स्वन्ति ।
 सवातरी तेजसा (वा० य०) २८,६, २०८९ सुदुधे मही ।
 सविता देवः न १,७३,२, २०६ [यः अग्निः] सत्य० ।
 सविता इव ४,६,१, ६८३ [अग्निः] भानु . ऊर्ध्व ।
 सवितुः यथा सवम् ८,१०२,६, १४६८ अग्निं आहुवे ।
 सविता बाहू इव १,९५,७, १८७४ औषसः अग्निः .. ।
 ससं पक्वं न १०,७९,३; १६३९ शुचन्तं रिपु उपस्थे अविदत् ।
 ससृवांसम् इव ३,९,५, ५०४ इत्यात्मना तिरोहितं अग्निः ।
 साधी इव १०,१४२,२; १६९१ अग्ने, खं विश्वा न्यूजसे ।
 साधुः न १,७०,११; १८४ [अग्नि] ... गृधुः ।
 सारथिः वोळहुः रश्मीज १,१४४,३; ३२८ हव्यः सारथिः ।
 सिंहम् इव ३,९,४; ५०३ अट्टहः निचिरामः स्निधः ।
 सिंहं क्रुद्धं न [मृगाः] ५,१५,३, ८६८ शत्रव मां परिष्टुः ।
 सिंहं न नानदत् ३,२,११, १७३७ प्रजज्ञिवान् वृषामः जिन्वते ।
 सिंहं ज्ञानः (अथ०) ४,३६,६; २३०० ते [पिशाचः] ।
 सिञ्चतीः इव १०,२१,३; १५८३ धर्माणः जुहुमि ।
 सिन्धवः नीचीः न १,७२,१०, २०४ अग्नेः सृष्टाः क्षरन्ति ।
 सिन्धवः समुद्राय इव ८,४४,२५, १३६७ अग्ने गिरः ईरते ।

सिन्धोः इव ४,५८,७, १९०१ प्राध्वने शूधनामः ।
 सिन्धव (भावक्षमः) १,१४३,३; ३२० भावक्षमः ।
 सुनुः न नित्यः १,६६,१; १३४ (ध्रुव पुत्रः इव प्रियकारः) ।
 सुनुः न ६,२,७, ९५८ [अग्ने, ख] प्रययायः ।
 सूरः न १,६६,१; १३४ [अग्नि] सट्ठ ।
 सूर मिह न १,१४३,१३, ३२७ अमीचवस न अग्निः ।
 सूर न १,१४२,३; ३५५ अय अग्निं रुक्मान शतामा ।
 सूर न ६,२,६; ९५७ पावक, ख शुता रोचसे ।
 सूर न ६,३,३; ९६५ यस्य दशति .. अरेपा ।
 सूरः न ७,३,६, ११२९ चित्र भानु प्रति चक्षि ।
 सूर्यः न ६,४,३, ९७३ शुक्रः भासासि वस्ते ।
 सूर्यः भानुमदि अर्के न ६,४,६, ९७६ अग्ने, ख भामा ।
 सूर्यः न ६,१२,१, १००६ सः अय सहसः सुनु नतान् ।
 सूर्यः न ७,८,४; ११५२ बृहद्वा अग्निः .. विरोचते ।
 सूर्यः सृजन् न ८,४३,३२, १३४१ अग्ने खं रश्मिभिः ।
 सूर्यः इव ८,१०२,१५, १४७७ अस्य [अग्नेः] उपट्ठ ।
 सूर्य इव १०,६९,२; १६२६ सर्पिगसुति . रोचते ।
 सूर्यस्य इव १०,९१,४; १६५४ चिकित्र ते रश्मयः .. ।
 सूर्यं चक्षुषि इव ५,१,४ ७५८ देवयता मनांसि अग्निः ।
 सूर्यं चक्षु न ६,११,५; १००४ यजः अश्रायि ।
 सूर्यस्य दिवि शुक्र यजतमिव १०,७,३, १५२९ बृहत् ।
 सृष्टा सेना इव १,६६,७, १४० [अग्निः] भय दधाति ।
 सृष्टा सेना इव १,१४३,५; ३२२ य अग्निं वराय न ।
 सृष्टा सेना इव ७,३,४; ११२७ ते [अग्ने] प्रमितिः पति ।
 सेना प्रगर्धिनी इव १०,१४२,४; १६९३ पृथक् पृथि ।
 सोमाः इव ५,२७,५, ९३२ बापन् यायि ।
 सोमा न १०,४६,७; १६०७ वायवः अग्नयः ।
 सोम चम्वि इव १०,९२,१५, १६६५ अग्ने ते आस्ये ।
 सोमः इव ६,८,१; १७८ वैश्वानराय अग्नये नग्यमी पवते ।
 सोमः न १,६५,१०, १३३ अग्नि . वेधाः ।
 सोमस्य अंशुः इव (अथ०) ५,२९ १२, २३१६ अय ।
 स्थूणा उपमित् इव १,५९,१; १७१७ अग्ने ख उपमित् ।
 सस यहीः स्वतः समुद्र न १,७१,७; १९१ विश्वा पृश्ना ।
 स्वधितिः इव ५,७,८; ८१८ शुचि यम यस्मै [अग्नये] ।
 स्वधितिः पूता इव ७,३,९; ११३२ शुचिः [अग्निः] निरगात् ।
 स्वधितिं न ३,२,१०, १७३६ हयः मानुषीः विशा अकृण्वन् ।
 स्वनः मरुता इव १,१४३,५, ३२२ यः [अग्निः] वराय ।
 स्वनाः न १०,३,५, १५०३ यस्य भामामः .. पवन्ते ।
 स्वर चित्रं विभाव न १,१४८,१; ३४८ यं मनुष्यासु विक्षु ।
 स्वर न २,२,७; ३९१ अग्ने, द्यावापृथिवी . ब्रह्मणा कृधि ।
 स्वर न २,२,८; ३९२ सः [अग्नि] राम्याः उषमः दीदेत् ।

स्वर न २,२,१०, ३९४ अस्माकं पञ्च कृष्टिषु अधि।
 स्वर भानुना न २,८,४. ४०० चित्रः अग्निः विभाति।
 स्वर न ४,१०,३, ७२२ ज्योतिः।
 स्वर न ७,१०,२, ११६२ उपमां [अग्ने] तन्मो... अरोचि।
 स्वर न ४,६,३, ६८४ नवजाः स्वर उदु अक्क।
 हम् न मीदन् १,६,५, १३२ [अग्नि] आसु इवमिति।

हनवः न ८,६०,३३: १४०१ अस्य [ज्वाला.] तिग्माः।
 हस्तिनं मशका. इव ४,३६,९, अथ० २३०३ ये लपिताः।
 हस्य यथा वहसि ४,२३,२, अथ० २३३१ एव जातवेद।
 होता इव १,७३,१, २०५ प्रीणानः [अग्नि.] विधत्तः रुभ।
 द्वारः अनाकृत. वक्त्र. १,१४१,७, ३११ यद् [अयं अग्निः।]
 द्वार्याणा पुत्र न ५,९,४, ८३१ ... [अग्ने त्व दुर्गभीषसे।]

देवत-संहितान्तर्गत-अग्निमंत्राणां सूची।

अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते	८६८	अग्निं विश्वा अभि पृश्न.	१९१	अग्निमीलेन्य कवि	८६४
अकर्म ते स्वपयो अभूम	६६५	अग्निं विश्वायुवेपसं	१३३४	अग्निमीले पुरोहित	१
अकारि ब्रह्म समिधान	६९२	अग्निं वो देवमग्निभि.	११२४	अग्निमीले भुजां	१५७२
अक्रन्ददग्निः स्तनयज्ञिव	१५९२	अग्निं वो देवयज्यया	१४२०	अग्निमुत्थैर्ऋषयो	१६४८
अक्रो न बभ्रिः समिधे	४५८	अग्निं वो वृधन्तम्	१४६९	अग्निं रत्रि भरद्वाजं	१७०२
अक्षानहो नक्षतनोत	१६२०	अग्निं सुदीति सुदशं	६०३	अग्निं रामासृतीषहं	१०२१
अक्षयौ३ नि विध्य	२३०८	अग्निं सुम्नाय दधिरे	१७३१	अग्निं रस्मि जन्मना	१७५६
अगन्म महा नमसा यविष्ठ	११७१	अग्निं सुतु सनध्रुतं	५२१	अग्निं रागनीध्रात् सुष्टुभः	२३४१
अग्न आ याहि वीतये	१०५१	अग्निं सुतु सहसो	१४१९	अग्निं रिद्धि प्रचेता	१०१९
अग्न आ याह्यग्निभि	१३८९	अग्निं स्तोमेन बोधय	८६०	अग्निं रिपां सख्ये	१४२१
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोगे	५३५	अग्निं हिन्वन्तु नो धियः	१७०३	अग्निं रीशो बृहतः अत्रियरय	७३६
अग्न इळा समिधसे	५२८	अग्निं होतार प्र वृणे मिथेधे	६१०	अग्निं रीशो बृहतो अध्वरस्य	११६९
अग्न ओजिष्ठमा भर	८३५	अग्निं होतार मन्ये दास्वन्तं	२७२	अग्निं रीशो अथर्वणा	१५८५
अग्नये ब्रह्म ऋभन	१६५०	अग्निं होतारमीळते वसुधिति	२९०	अग्निं रीशो अरोचत	८६३
अग्नो यो मर्यां दुवो	१०१८	अग्निः पशु धामसु	२१८३	अग्निं रीशो देवानामग्निः	१३०५
अग्नावग्निश्चरति	२२८२	अग्निः पूर्व आ रभतां	२०८७	अग्निं रीशो नो गिरो	८५६
अग्नाविष्णु महि तद्वां	२४५३	अग्निः पूर्वभिर्ऋषिभिः	२	अग्निं रीशो सत्पतिं	९१६
अग्नाविष्णु महि धाम	२४५४	अग्निः प्रनेन मन्मना	१३५४	अग्निं रीशो द्रविण	१६४७
अग्निं वर्मं सुहृत्	१८६७	अग्निः प्राणान्स दधाति	२३४४	अग्निं रीशो वेभिर्मनुष्य	१७४७
अग्निं घृतेन वावृधुः	८६५	अग्निः प्रात सवने	२३७२	अग्निं रीशो वेषु राजति	९१४
अग्निं च हस्यवाहनम्	४१५	अग्निः शुचिर्वततमः	१३६३	अग्निं रीशो वेषु संवसुः	१३०६
अग्निं तं मन्ये यो वसु	८०१	अग्निः सनोति वीर्याणि	५३३	अग्निं रीशो देवानाम्	१७०१
अग्निं दूतं पुगे दधे	१३४५	अग्निः ससिं वाजभर	१६४४	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं दूतं वृणीमहे	१०	अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा	२१६८	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं देवासो अघ्नियम्	१०८९	अग्निः स्रुचो अध्वरेषु	२०७६	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं देवासो भानुषीषु	४१८	अग्निनाग्निः समिधते	१५	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं द्वेषो योतवै	१४२३	अग्निना तुर्वशं यदु	८३	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं धीभिर्मनीषिणो	१३२८	अग्निना रथिमभवत	३	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं नरो दीधितिभि.	११००	अग्निमग्निं वः समिधा	१०२८	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं	१३४०	अग्निमग्निं वो अघ्नियं	१४०५	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं मन्ये पितरमग्निम्	१५२९	अग्निमग्निं हवीमभिः	११	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं यन्तुरमन्तुरम्	५४७	अग्निमग्निं देवयतां	७५८	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं वः पूर्यं हुवे	१२७६	अग्निमग्निं देवयतां	१३००	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो	५१४	अग्निमग्निं देवयतां	१३८४	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४
अग्निं विश ईळते	१६४९	अग्निमग्निं देवयतां	१४२२	अग्निं रीशो देवानाम्	५३४

अग्निर्हि वाजिनं विशे	८०३	अग्ने त्वं नो अन्तम उत	९०७	अग्ने युक्ष्वा हि ये तव	१०८४
अग्निर्हि विघ्नाना निदो	१०२२	अग्ने त्वं पारया नव्यो	३६२	अग्ने रक्षाणो अहसः	११८९
अग्निर्होता कविक्रतुः	१	अग्ने त्व यशा असि	१२९२	अग्नेरममः समिदस्तु	१६४५
अग्निर्होता गृहपतिः	१०३५	अग्ने त्वच यातुधानस्य	१८३२	अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य	४०२
अग्निर्होता दास्वत	८२९	अग्ने त्वमस्मद युयोध्य	३६३	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य	२३३०
अग्निर्होता नो अध्वरे	७४९	अग्ने दा दाशुषे रयि	५३१	अग्नेर्वय प्रथमस्यामृताना	२७
अग्निर्होता न्यसीदधु	७६०	अग्ने दिवः सुतुरयि	५३२	अग्नेर्वर्म परि गोभिः	११६३
अग्निर्होता पुरोहितो	५१८	अग्ने दिवो अर्णमच्छा	६२५	अग्ने वाजस्य गोमत	२४७
अग्निष्टे नि शमयतु	२१८७	अग्ने देवा इहा वह जजानो	१२	अग्ने त्रिवस्वदुपमः	८६
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	१०६९	अग्ने देवा इहा वह सादया	२२	अग्ने विश्वानि वार्या	५२६
अग्निस्तुविश्रवस्तम	९१५	अग्ने युञ्जन् जागृवे	५२९	अग्ने विश्वेभिः स्पर्त्नाक	१०३८
अग्निस्त्रीणि त्रिधातुनि	१३०८	अग्ने षृतव्रताय ते	१३६७	अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	५३०
अग्नी रक्षांसि सेधति	११८६	अग्ने नक्षत्रमजरम्	१७०६	अग्ने विश्वेभिर्गहि	९२३
अग्नीषोमा चेति तवृ	२४६८	अग्ने नय सुपथा राये	३६१	अग्ने वीहि पुरोळाशम्	५५४
अग्नीषोमा पिपृतम्	२४७६	अग्ने नि पाहि नस्त्वं	१३५३	अग्ने वीहि हविषा यक्षि	१२०६
अग्नीषोमा य आहुति	२४६७	अग्ने नेमिररा इव	८५९	अग्ने वृधान आहुति	५५७
अग्नीषोमा यो अथ	२४६६	अग्ने पन्नीरिहा वह	२४	अग्ने शक्रेम ते वय	५३९
अग्नीषोमावनेन वां	२४७४	अग्ने पावक रोचिषा	९२०	अग्ने शर्ध महते सौभगाय	९३५
अग्नीषोमाविमं सु मे	२४६५	अग्ने पूर्वा अनृषसो	९५	अग्ने शुक्लेण शोचिषा उरु	१५८८
अग्नीषोमाविमानि नो	२४७५	अग्ने ग्रेहि प्रथमो	२२२१	अग्ने शुक्लेण शोचिषा विश्वामि	२१
अग्नीषोमा सवेदमा	२४७३	अग्ने वृहन्नुपसामूर्ध्वो	१४८५	अग्ने स क्षेपदत्तपा	९६३
अग्नीषोमा हविष	२४७१	अग्ने भव सुषमिधा	१२०४	अग्ने समिधमाहर्ष	२३५१
अग्नेः सांतपनस्याहं	२३२१	अग्ने भूरीणि तव जातवेदो	६१६	अग्ने सहन्तमा भर	९०३
अग्नेः स्तोमं मनामहे	८५५	अग्ने भ्रातः सहस्कृत	१३२५	अग्ने सहस्व पृतना	५०७
अग्ने अक्रव्याज्जिः	२२५५	अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं	१३०२	अग्ने सुचतमं रथे	१९०९
अग्ने अपां समिध्यसे	५३६	अग्ने माकिष्टे देवस्य	१४१६	अग्ने स्तोम जुपस्य	१३४४
अग्ने कदा त आनुषग्	६९४	अग्ने मृळु महौ असि	७१२	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय यज्ञ०)	२०८३
अग्ने कविर्वेधा असि	१३९१	अग्ने य यज्ञमध्वर	४	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय हव्य०)	२०७१
अग्ने केतुर्विशामसि	१७०७	अग्ने यजस्व हविषा	४०६	अग्ने हवि न्यश्त्रिण	१८५३
अग्ने घृतस्य धीतिभिः	१४७८	अग्ने यजिष्ठी अध्वरे	५१५	अवशसदुःशसाभ्यां	२२३०
अग्ने चिकिद्धयस्य न	९०२	अग्ने यत् ते तपस्तेन	२१४४	अचिक्रदन् स्वपा इह	२१५९
अग्ने जरस्व स्वपत्य	१७४८	अग्ने यत् ते तेजस्तेजः	२१४८	अचेत्यग्निश्चिकितु	२४५५
अग्ने जरितर्विज्ञपति	१४०७	अग्ने यत् ते दिवि वर्चः	६२४	अच्छ त्वा यन्तु हविनः	२१६०
अग्ने जातान् प्र णुदा	२१९३	अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन	२१४६	अच्छा गिरो मतयो	११६३
अग्ने जुषस्व नो हविः	५५२	अग्ने यत् ते शोचिस्तेन	२१४७	अच्छा न शीरशोचिपं	१४१८
अग्ने जुषस्व प्रति हर्य	३३२	अग्ने यत् ते हरस्तेन	२१४५	अच्छा नो अङ्गिरस्तम	१२७९
अग्ने तमद्याश्च न स्तामैः	७२०	अग्ने यदद्य विशो	१०३६	अच्छा नो मिग्रमहां	९६२
अग्ने तव रथे अजर	१२८०	अग्ने याहि दूत्यमा	११५९	अच्छा नो याहा वह	१०८५
अग्ने तव श्रवो वयो	१६८४	अग्ने याहि सुशस्तिभिः	१२७५	अच्छायमेति शवसा घना	२०७५
अग्ने तृतीये सवने हि	५५६				
अग्ने त्री ते वाजिना त्री	६१५				

अन्त्यामेति शवसा नृतेन	२०६३	अधा यथा नः पितरः	६६२	अस्वग्ने सधिष्टव	१३१८
अन्त्रा यो अग्निमवसे	९११	अधाद्यग्निर्मानुषीषु	४७२	अबोधि जार उषसाम्	११५५
अन्त्रा बोधेय शुशुचानम्	६४५	अधा इ यद्वयमग्ने	६६०	अबोधि होता यजथाय	७५६
अन्त्रा हि स्वा सहस्रः	१३९०	अधा हि विक्ष्वीह्यो	९५८	अबोध्यग्निः समिधा	७५५
अन्त्रिद्रा शर्म जरितः	५९२	अधा होता न्यसीदो	९४०	अभि तं निर्कतिर्धत्ताम्	२३०४
अन्त्रिद्रा सूतो सहस्रो	११७	अधा ह्यग्न एषा	८७४	अभि स्वा गोतमा गिरा	२३९
अजमनजिम पयसा	२२२२	अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	७२१	अभि स्वा नक्तीरुषसो	३८६
अजीजनक्षसृत् मर्यागो	५७०	अधा ह्यग्ने मद्वा	१५२६	अभि स्वा पूर्वपीतये	२४४६
अजैर्दाम्तरसनद्वाज	२१४०	अधि श्रिय नि दधुश्चाहम्	२०४	अभि द्विजन्मा त्रिवृदक्षम्	२९३
अजो न क्षा दावार	१४८	अधीवास परि मातु	३००	अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि	३५६
अजो नागस्तपसा	१५६०	अधुक्षत पितृपीमिषम्	१४३९	अभि प्रयांसि वाहसा	५२४
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट	२२१७	अध्वर्युभि पञ्चभिः सप्त	४९६	अभि प्रयांसि सुधितानि	१०३७
अन उ न्ना पितृभृगो	१४८८	अनडवाह लवमन्वारभध्व	२२६१	अभि प्रवन्त समनेव	१९०२
अनि तृष्ट चवाश्रिय	५०२	अनस्वन्ता सप्ततिर्मांसे	९२८	अभी नो अग्न उक्थमिज्	३०४
अनिर्वा मानुषाणा	१२९४	अनाष्टव्यो जातवेदा	१८६६; २२२६	अभीमृतस्य दोहना अनूषत	३२७
अनि निर्हा अनि मिधा	२३२३	अनायतो अनिबद्ध	७४४	अभ्यर्पत सुष्टुति	१९०४
अन्या वृधसन् रोहिता	६४२	अनिरेण वचसा	१७७१	अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	८८६
अन्यो नाउमन्मर्गप्रतक्तः	१२९	अनृणा अस्मिन्नृणाः	२३८०	अभ्यारमिदद्वयो	१४३४
अत्रिमनु स्वराजाम्	४०१	अन्तरा मित्रावरुणा	२१११	अभ्रातरो न योषणो	१७६२
अथा ते अक्षिस्तम	२२५	अन्तरिक्षेण पतति	२४६१	अमन्धिष्टां भारता रेवर्दिन	६२८
अथा न उभयेषाम्	३६	अन्तरिक्षान्ति त जने	१४२६	अमित्रसेनां मघवन्	२१५४
अदव्यस्य स्वधात्रता	१३६२	अन्तर्द्वतो रोदसी दस्म	१७४३	अमित्रायुधो महतामिव	५७२
अदव्यमिस्तव गोपामि	१७८६	अन्तर्धिर्देवाना	२१५७	अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्	११५७
अदाश गातुत्रिक्तमां	१२५७	अन्तर्ह्यग्न ईयसे	४३९	अमूरो होतान्यसादि	६८३
अदाभ्यः पुरणता	५२२	अन्ति चित् सन्नमह	१२१७	अमृत जातवेदमं	१४४६
अदाभ्येन शोचिषा	१८५९	अन्यमस्मद्विया इयम्	१३८५	अय कविरकविषु	११३७
अदितुतस्वपाक्रो विभावा	१००३	अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२२४०	अय जायत मनुषो	२८३
अधारणे अद्य सवितरथ	२१६०	अन्वगिरुपसामग्रम्	२३२७	अय ते योनिर्कविषो	५६७
अद्या दृत वृणामहे	८८	अप नः शोशुचदधम्	१८८७	अयं मित्रस्य वरुणस्य	२६७
अद्रोघमा यदोशतो	१३९२	अपमित्यमप्रतीतं	२३७८	अय यः सृजये पुरो	७५२
अद्रो चिदस्मा अन्तर्द्वराणे	१७७	अपश्चा दग्धाज्ञस्य	२२७३	अयं यथा न आभुवन्	१४७०
अध जिद्रा पापतीति	९९०	अपश्यमस्य महतो	१६३७	अयं योनिश्चक्रमा यं	६६७
अध त्व द्रप्स विभ्रं	१५४३	अपामिद न्ययनं	१६९६	अय विश्वा अभि श्रियो	१४७१
अध द्युतानः पित्रोः	१७६७	अपामुपस्थे महिषा	१७८३	अय स यस्य शर्मन्	१५२०
अध स्म यस्याचय	८३२	अपावृत्य गार्हपत्यात	२२४७	अयं स होता यो द्विजन्मा	३५७
अध स्मास्य पनयन्ति	१०१०	अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	४५२	अयं सो अनिराहुतः	१११५
अध स्वनाहुत बिभ्यु	२६६	अपां मा पाने यतमो	२३१२	अयं सो अग्निर्यस्मिन्सोम	६२१
अथा त्व हि नम्करो	१४५९	अप्रयुच्छप्रयुच्छद्विरग्ने	३२५	अयं होता प्रथमः	१७९५
अथा मही न आयसि	११९०	अप्सरसः सधमाद	२३६७	अयज्ञियो हतवर्चा	२२५५
अथा मातुरुपसः सप्त	६६१	अप्सरसां गन्धर्वाणां	२४६३	अयमग्निः सपतिः	२३७५

अयमग्निः सहास्त्रिणो	१३७६	अश्व न गीर्भा रथ्य	१२६३	अस्य रणवा स्वस्थेव	४६९
अयमग्निः सुवीर्यस्य	५९४	अश्वं न स्वा वारवन्तं	३८	अस्य वामा उ अर्चिषा	८७८
अयमग्निरमूमुहद्	२१५७	अश्वमिद् गां रथप्रां	१४५१	अस्य शासुरुभयाम	६२०
अयमग्निरुह्यति	१७१०	अश्वस्यात्र जनिमास्य	२४२७	अस्य शुभामसो दहजानपव	११०४
अयमग्निर्वध्यश्वस्य	१६३६	अश्विना नमुचेः सुत-	२०२९	अस्य श्रिये समिधानस्य	१७७२
अयमग्ने जरिता रवे	१६९०	अश्विना भेषज मधु	२०३४	अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य	६३२
अयमग्ने रवे अपि	१३७०	अश्वो घृतेन रमन्या	२११५	अस्य स्तोमे मघोन	८७३
अयमिह प्रथमो धायि	६९३	अश्वो न क्रदत्तनिभिः	१७५५	अस्य हि रथ्यशाम	८७७
अयमु व्य प्र देवयुः	१७०९	अषाढो अग्ने वृषभो	५९१	अस्याजराभो दमामरिषा	१६०७
अयमु व्य सुमहो अवेदि	११५०	अमसृष्टो जायसे मात्रो	८४४	अस्वप्रजस्वरणय	१८२४
अयाममग्ने सुक्षिति	२४३६	अमच्च सच्च परमे	१५१९	अहश्च कुप्यमह	१७८७
अया ते अग्ने विधेम	४३४	असन्नित् एवं आहवनानि	११५३	अहाव्यग्ने हरिरास्य	१६६१
अया ते अग्ने समिधा	१८२७	असादि वृत्तो वह्निराज	११४६	अहोरात्रे अन्त्रेपि	२०६२
अयामि ते नमउक्ति	५८२	अस्ताव्यग्नि शिमीवादिः	३१७	आकृति देवा सुभगा	२२१०
अयोजाला असुरा	२३५०	अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो	१६००	आकृत्या नो गृह्णात	२०११
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा	१८२९	अस्तीदमधिमन्थनम्	५५८	आगन्म वृत्रहन्तम	१४४१
अरण्योर्निहितो जातवेदा	५५९	अस्थाद् घौरस्थात	२३९४	आ रना अग्न इहावसे	२११
अराधि होता निषदा	१६१७	अस्मा उ ते महि महे	९४८	आग्नि न स्ववृत्तिभिः	१५८१
अराधि होता स्वर्गनिषत्तः	१८१	अस्माक जोष्यध्वरम	७१८	आग्निरगामि भारतो	१०६०
अर्चन्तस्त्वा इवामहे	८५४	अस्माकमग्ने अध्वरं	७९७	आग्ने याहि मरुतमगा	२४४७
अर्चामि ते सुमति	१८२०	अस्माकमग्ने मधवत्सु दीदिहि	३०१	आग्ने वह वरुणमिष्टये	२००२
अर्चामि वां वर्धायापो	१५५२	अस्माकमग्ने मधवत्सु धारय	१७८५	आग्ने वह हरिरास्य	११५१
अयमण वरुण मित्रम्	६५०	अस्माकमत्र पितरो	६३९	आग्ने स्तूर रथि भर	१७१५
अर्यां विशां गानुरेति	१५७४	अस्मिन् पदे परमे	२४३५	आ च वहामि तो इह	२००
अर्वङ्गिरग्ने अर्वतो नृभिः	२१३	अस्मिन् वय संकसुके	२२३९	आ जात जातवेदमि	१०८३
अर्वाञ्च देव्यं जनम्	१०९	अस्मै रथि न स्वयं	३१५	आ जुहोता दुःस्पत	९३८
अवर्धयन्सुभग सप्त यक्षीः	४५०	अस्मै रायो दिवेदिवे	७१०	आ जुहोता स्व-र	१०७
अवसृजन्तुप त्मना	१९२८	अस्मै वस्म परि पन्तं	१९६	आजुह्वान ईड्यो यन्शस्त्र २००७, ०१२०	०१२०
अव सृज पुनरग्ने	१५६१	अस्मै क्षत्रमरणीपोमो	२४७८	आजुह्वाना मरुतवी	२०२८
अव सृजा वनस्पते	१९१६	अस्मै अत्राणि धारयन्त	२१९९	आजुह्वानो न ईड्या	१९४३
अव स्पृधि पितर योधि	७८६	अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय	२४२६	आज्यस्य परमष्टि	२०८१
अव स्म यस्य वेषणे	८१५	अस्मं ते प्रतिहृत्यते	१३११	आ त भज सौध्रयसे	१५९८
अवा नो अग्न ऊतिभिः	२५०	अस्मै बहूनामवसाय	२४३३	आ ते अग्न इवामहि	८०४
अवि. कृष्णा भागधेयं	२२६६	अस्य क्रवा विचेतमो	८७९	आ ते अग्न (शुक्रभय)	८०१
अवोचाम कवये मेधाय	७६६	अस्य घा वीर ईवतो	७५३	आ ते अग्न (हृदा)	१०८८
अवोचाम निवचनान्यस्मिन्	३६८	अस्य त्वेषा अजरा	३२०	आ ते ददे वध्रणाभय	२४८२
अवोचाम रङ्गुणा	२४३	अस्य देवस्य ससद्यनीके	११३६	आ ते वत्सो मनो यन्त	१२२०
अश्मन्वती रीयते	१६२१	अस्य प्र जातवेदमो	१८६४	आ ते सुपर्णा अभिनगे	२४१
अश्याम तं काममग्ने	९८५	अस्य यामामो बृहतो	१५०२	आ त्वा चूतवर्धमा	२१७८
				आ त्वा त्रिषा अनुन्य	१०७

आ दशभिर्विवस्वत	१४३१	आ यन्मे अभव वनद	४२०	आ होता मन्द्रो विदधा	५८१
आदम्य ते ध्रुमयन्तो	२९६	आ यस्तन्ध रोदसी	९४९	इच्छन्त रेतो मिथस्तनृषु	१६१
आदित् ते विद्वे क्रतु जुषन्त	१५६	आ यस्ते अग्न इधते	११०७	इडाभिरग्निरिड्यः	२०३९
आदित्यश्चा बुबुधाना	६४४	आ यस्ते सर्पिरासुते	८१९	इति चिन्मन्युमग्निजः	८२०
आदित्यैर्नो भारती	२११३	आ यस्मिन् त्वे स्वपाके	१००७	इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य	१६७४
आदिद्धातार वृणते	३१०	आ यस्मिन्सप्त रश्मयः	४२६	इत्या यथा त ऊतये	८९४
आदिनव प्रतिदीप्त	२३६८	आ याह्यग्ने पथ्याऽनु	११४३	इदं तद्युज उत्तरम्	२४७७
आदिन्मातृराविशाराऽरा	३०९	आ याह्यग्ने समिधानो	१९६३	इदं मे अग्ने कियते	१७६३
आ देवानामप्रयावेह	१९९३	आयुस्मै धेहि जातवेद	२१५०	इदं वचः शतसा	११५४
आ देवानामपि	१४९४	आ यूथेव क्षुमति पश्चा	६६४	इदं वचो अग्निना	२२१३
आ देवानामभव	४६३	आ य तन्वन्ति रश्मिभिः	२४४५	इदमग्ने सुधित दुर्धिताद्	३०२
आ देवो ददे बुभ्याऽ	१८०९	आ ये विश्वा स्वपथ्यानि	२०३	इदमुप्राय बभ्रवे	२३६५
आ देव्यानि वना चिकित्वान्	१७५	आ योनिमग्निर्घृतवन्तम्	४७६	इदमु त्यन्महि महाम्	१७६६
आद्य रथ भानुमो	७६५	आ यो मूर्धान पित्रोः	१५३६	इधं यस्ते जभरच्छश्रमाणो	७३५
आ नो अग्ने रयि भर	२५१	आ यो योनि देवकृत	११३८	इधेन त्वा जातवेदः	२३५२
आ नो अग्ने वयोवृध	१३९९	आ यो वना तातृषाणो	४२१	इधेनाग्न इच्छमानो	६०७
आ नो अग्ने सुचंतुता	२५२	आ रभस्व जातवदो	२२८९	इनो राजन्नरतिः समिद्धो	१४९९
आ नो अग्ने सुमति	२३३९	आरे अस्तदमतिमारे	७३३	इन्द्रं दुरः कवष्यो	२०१८
आ नो गहि सव्येभिः	४६५	आरोका इव घेदह	१३१२	इन्द्र नो अग्ने वसुभिः	११६४
आ नो देवेभिरुप	११७६	आ रोदसी भृगुणदा	१७३३	इन्द्रः सेना मोहयतु	२१५५
आ नो वहाँ रिशादसो	३१	आ रोदसी अपृणा	४८१	इन्द्र चित्तानि मोहयन्	२१५८
आ नो भज परमेष्वा	४२	आ रोदसी बृहती	१९८	इन्द्रा याहि मे हवम्	२१६४
आ नो यज्ञ भारती	२०१०; २१२५	आ वंसते मघवा वीरवद्	१२६५	इन्द्रायेन्दुः सरस्वती	२०२७
आन्य दिवा मातरिश्वा	२४७०	आवहन्यरुणीर्जोतिषा	७४७	इन्धे राजा समर्थो नमोभिः	११४९
आ भन्दमाने उपाके	१९२४	आ वां वहिष्ठा इह ते	७४८	इम क्रव्यादा विवंशा	२२५६
आ भन्दमाने उपसा	१९५८	आ विश्वतः प्रत्यञ्च	४१३	इमं घा वीरो अमृत	१२८८
आ भानुना पार्थिवानि	९९१	आविष्टयो वर्धते चारुसु	१८७२	इमं त्रितो भूर्यविन्दद्	१६०३
आ भारती भारतीभिः	१९६०	आशु दूतं विवस्वतो	६९६	इमं नरो मरुतः सश्रता	५९५
आभिर्विधेमाग्नये	१२९२	आश्रयते अदपिताय	६६८	इमं नो अग्न उप	१६८३
आभिष्टे अद्य गीर्भिः	७२३	आ श्वेत्रेयस्य जन्तवो	८८८	इम नो यज्ञममृतेषु	६१८
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो	१७३०	आ सव सविमुर्यथा	१४६८	इमं मे अग्ने पुरुष	२१८६
आमे सुपक्वे शबले	२३१०	आ सीमरोहस्युयमा	४९२	इम यज्ञं चनो धा अग्न	९९८
आ य इस्ते न खादिन	१०८१	आ सुते सिञ्चत श्रियं	१४३६	इमं यज्ञ सहसावन्वं	४६८
आ य पप्रौ जायमान	९९६	आ सुव्ययन्ती यजते	२००८, २१२३	इम यज्ञमिदं वचो	१६९९
आ यः पप्रौ भानुना	१०९५	आ सूर्ये न रश्मयो	१७१९	इमं विधन्तो द्वितादधुः	४१७
आ यः पुर नार्मिणीम्	३५५	आ सूर्यो न भानुम्	९७६	इम विधन्तो...पशुं	१६०२
आ यः स्वर्ण भानुना	४००	आ स्वमग्न युवमानो	१११	इमं स्तोममर्हते	२५६
आ यज्ञेदेव मर्त्य	८७६	आ हि यावापृथिवी	१४९१	इमं स्वस्मै हव आ	२४२३
आ यद्विधे नृपति तेज	१९२	आ हि ण्मा सूनवे पिता	३०	इममग्ने चमसं मा	१५६४
आयते ते परायणे	१६९७			इममादित्या वसुना	२१७०

इमामिन्द्रं वह्नि	२२६०	ईलितो अग्न० (सुखै रयेभिः०)	१९६६	उत्ते बृहन्तो अर्चयः	१३४६
इममु त्वमथर्ववद्	१०३९	ईलितो अग्ने मनसा	१९४४	उत्ते शुष्मा जिहताम्	१६९५
इमम् पु त्वमस्माकं	४१	ईलिष्वा हि प्रतीव्य१	१२७०	उदग्ने तव तद् घृताद्	१३१९
इमम् पु वो अतिथिम्	१०२३	ईले अग्नि विपश्चित	५३८	उदग्ने तिष्ठ प्रत्या	१८१६
इमां प्रत्याय सुष्टुतिं	१६६३	ईले गिरा मनुर्हित	१२४४	उदग्ने भारत शुमद्	१०८६
इमां मे अग्ने इमां	४३३	ईले च त्वा यजमानो	४६१	उदग्ने शुचयस्तव	१३५९
इमां मे अग्ने ..सुपस्व	१९९२	ईलेन्यं वो असुरं	१९७६	उदस्तम्भीस्तमिधा	४७९
इमा अग्ने मतय.	१५२८	ईलेन्यः पवमानो	१९८३	उदस्य शोचिरस्थाद् (आनुह्वा०)	११९४
इमा अस्मै मतयो	१६६२	ईलेन्यो नमस्यः	५४९	उदस्य शोचिरस्थाद् दीदिगुषो)	१०७३
इमामग्ने शराणि मीमूषो	६५	ईलेन्यो वो मनुषो	११५८	उदातैर्जिहते बृहद्	१९८५
इमा यास्ते शत हिरा	२१९५	उक्षास्त्राय० (। वैश्वानरज्येष्टेभ्य०)	२३६०	उदिता यो निदिता	१२६७
इमास्तिस्रो देवपुरा	२१७६	उक्षास्त्राय० (। स्तोमैर्विधेम०)	१३२०	उदीरय पितरा जार	१५४५
इमे नरो वृत्रहत्येषु	११०९	उक्षा महो अभि ववक्ष	३३९	उदु तिष्ठ स्वध्वर	१२७४
इमे यामासस्वद्विगु	७८९	उग्रपश्ये राष्ट्रभृत्	२३८२	उदु घृत समिधा यज्ञो	४७८
इमे विप्रस्य वेधसो	१३१०	उच्छोचिषा सहसस्पुत्र	६०८	उद्ययमीति सवितेव	१८७४
इमो अग्ने वीततमानि	१११७	उत ग्ना अग्निरध्वर	७१५	उद्यस्य ते नवजातस्य	११२६
इयं ते नव्यसी मति.	१४४८	उत त्वाग्ने मम स्तुतो	१३२६	उन्मदिता मौनेयन	२४६०
इयमग्ने नारी पति	२३४०	उत त्वा धीतयो मम	१३६४	उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न	२१९१
हरज्यज्ञग्ने प्रथयस्व	१६८७	उत त्वा नमसा वय	१३२१	उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते	४६२
इषं दुहन्सुदुघां	१६८०	उत त्वा भृगुवच्छुचे	१३२२	उप च्छायाभि वृणे	१०७९
इषीकां जरतीमिष्ट्वा	२२६७	उत शुमस्सुवीर्यं	२२३	उप त्मन्या वनस्पते	१९४०
इष्कर्तारमध्वरस्य	१६८८	उत द्वार उशतीर्वि	१२०५	उप त्वाग्ने दिवेन्द्रि	७
इह त्वं सुनो सहसो	६४८	उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो	३१६	उप त्वा जामयो गिरो	१४७५
इह त्वष्टारमप्रिय	१९१५	उत नो देव देवां	१३७४	उप त्वा जुहो३ मम	१३४७
इह त्वा भूर्या चरेदुप	१८२१	उत नो ब्रह्मन्नविप	५७९	उप त्वा रण्वसंहश	१०७८
इह प्र ब्रूहि यतम	१८३५	उत शुवन्तु जन्तवः	२१७	उप त्वा मातये नरो	११८५
इहैव सन्त. प्रति दग्ध	२३७९	उत योषणे दिव्ये	१९७९	उप प्र जिन्वन्नुशती.	१८५
इहैवाग्ने अधि धारया	२३२६	उत वा उ परि वृणक्षि	१६९२	उपप्रयन्तो अध्वर	२१५
इळामग्ने पुरुदंस	४६९	उत वा यः सहस्य प्रविद्वान्	३४७	उप प्रागाद् देवो	२२९३
इळायस्त्वा पदे वयं	५६१	उत स्म दुर्गुभीयसे	८३१	उप यमेति युवति.	११०५
इळा सरस्वती मही	१९१४	उत स्म यं शिशु यथा	८३०	उपसद्याय मीळुप	११७७
ईजे यज्ञेभि शशमे	९६४	उत स्वानासो दिवि	७७६	उपस्थायं चरति यत्	३३६
ईडितो देवैर्हरिवोर	२०१६	उतालब्धं स्पृणुहि	१८३४	उप स्रक्वेपु बप्सतः	१४३८
ईड्यश्वासि वन्धश्च	२१०८	उतो न्वस्य यत् पद	१४४१	उपावसृज त्मन्या	२०१२, २१२७
ईयिवांसमति स्त्रिधः	५०३	उतो न्वस्य यन्महद्	१४२९	उपेयसृक्षि वाजयु	२४२२
ईशिषे वार्यस्य हि	१३६०	उतो पितृभ्यां प्रविदानु	४९५	उभय ते न क्षीयते	४०७
ईशो यो विश्वस्या	१५२२	उत्तानायामजनयन्	४११	उभयासो जातवेद स्याम	३९६
ईशो अग्निरमृतस्य	११३९	उत्तानायामव भरा	५६०	उभा देवा नृचक्षसा	१९८७
ईळानायावस्यवे	४३८	उत्तिष्ठसि स्वाहुतो	१८५४	उभे भद्रे जोषयेते	१८७३
ईलितो अग्न० (। इयं हि०)	१९२१			उभे सुश्रन्नं सर्पिषो	८०९

उभोभयाविन्नुप धेहि	१८३०	ऋतायिनी मायिनी	१५१५	एषा अग्निं वसूयः	९१९
उरु ते ज्ञय पर्येति	१८७६	ऋतावानं महिषं	१६८९	एषा अग्निमजुर्वसुः	८१०
उरुयचसाग्नेर्धाज्ञा	२०७९	ऋतावानं यज्ञियं	१७३९	एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा	२३८
उरुया णो मा परा दा	१४१५	ऋतावानं विचेतसं	६९५	एवाग्निर्मतैः सह	१६७२
उरौ महो अनिवाधे	४५७	ऋतावानं वैश्वानरम्	२१८१	एवा ते अग्ने विमदो	१५८०
उरौ वा ये अन्तरिक्षे	४८७	ऋतावानमृतायवो	१२७८	एवा ते अग्ने सुमतिं	९३०
उशना काव्यस्त्वा	१२८६	ऋतावा यस्य रोदसी	५७५	एवा नो अग्ने अमृतेषु	३९३
उशन्तस्त्वा नि धीमहि	१५६८	ऋतुयेन्द्रो वनस्पतिः	२०३५	एवा नो अग्ने समिधा	१८७८
उशिक पावको अरतिः	१५९५	ऋतुभिष्टवार्तवैरायुषे	२१७२	एवेन सद्य पर्येति पार्थिवं	२८५
उशिक पावको वसुः	१२२	ऋतुभ्यष्टवार्तवेभ्यो	२२१६	एहि मनुर्देवयुर्वैश्वकामो	१६१३
उपउपो हि वसो	१५३७	ऋतेनं ऋत धरुणं	८६७	एह्यग्न इह होता	२३०
उपापानक्तमश्विना	२०३१	ऋतेन ऋत नियतमीळ	६७४	एह्येषु ब्रवाणि ते	१०५७
उपामानक्ता बृहती	२०१९	ऋतेन देवीरमृता	६७७	एच्छाम त्वा बहुधा	१६१२
उपो यद्वी सुपेशसा	२०४२	ऋतेन हि ष्मा वृषभः	६७५	ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ्	४८८
उपो न जार पृथु	११६१	ऋतेनाद्रि व्यसन् भिदन्तः	६७६	ऐषां यज्ञमुत वचो	२१४३
उपो न जारो विभावोस्व	१७२	ऋधद्यस्ते सुदानवे	९५५	ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद	६२२
ऊर्जे त्वा बलाय	२२१५	ऋभुश्चक्र ईक्ष्य चारु	४७५	ओ पू णो अग्ने शृणुहि	२९१
ऊर्जो नपाजातवेदः	१६८६	ऋषिर्न स्तुभ्वा विश्व	१३७	और्वभृगुवच्छुचिम्	१४६६
ऊर्जो नपात स हिनायम्	१०९१	एकः समुद्रो धरुणो	१५१३	क इमं वो निष्यमा	१८७१
ऊर्जो नपात सुभग	१२२७	एकशतं लक्ष्म्यां	२२०३	कथ्यप्रयः कति सूर्यासः	२४१४
ऊर्जो नपातमध्वरे	५४८	एत ते स्तोमं तुविजात	७७७	कथा ते अग्ने शुचयन्त	३४३
ऊर्जो नपातमा हुवे	१३५५	एता अर्पन्ति हृद्यान्	१८९९	कथा दाशेमाप्रये	२३४
ऊर्जो नपात्तहसावन्	१६७३	एता उ वः सुभगा	२११०	कथा महे पुष्टिभराय	६७२
ऊर्जो नपात्तहसावन्	१९६७	एता एना व्याकरं	२२०४	कथा शर्धाय मरुता	६७३
ऊर्ध्व ऊ पु णो अध्वरस्य	६८२	एता चिकित्वो भूमा नि	१७९	कथा ह तद्वरुणाय	६७०
ऊर्ध्व केतु सप्रिता देवो	७४६	एता ते अग्नः (। शकेम राय)	२१४	कद्धिण्यासु वृधसानो	६७१
ऊर्ध्व मानु सविता देवो	७४१	एता ते अग्नः (। उच्छोचस्व)	६६६	कन्या इव वहतुमेतवा	१९०३
ऊर्ध्व अस्य समिधो	२०६०, २०७२	एता ते अग्ने जनिमा	४६६	कमु त्विदस्य सेनया	१३७९
ऊर्ध्वया दिश्यजस्य	२२२४	एता नो अग्ने सौभगा	११३३	कमेतं त्वं युवते	७६८
ऊर्ध्वो ब्रावा बृहदग्निः	१९९८	एता विश्वा विदुषे	६८१	कया ते अग्ने अङ्गिर	१४५७
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या	१८१७	एतास्ते अग्ने समिधः पिशाच	२३१७	कया नो अग्न ऋतयः	८५०
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे	१९५६	एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः	२३५४	कया नो अग्ने वि वस	११५१
ऋत चिकित्व ऋतमिच्छ	८४९	एति प्र होता व्रतमस्य	३२६	कवयो न व्यचस्वती	२०३०
ऋत वोचं नमसा	१७६८	एते स्ये वृथगगनय	१३१४	कविं शशासुः कवयो	६५८
ऋतस्य देवा अनु व्रता	१२६	एते सुमेभिर्विश्वमातिः	११४७	कविं केतुं धासिं	१८०४
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीति	१५८	एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व	६७	कविमग्निमुप स्तुहि	१६
ऋतस्य वा केशिना	४८५	एना वो अग्निं नमसा	११९२	कविमिव प्रचेतसं	१४५५
ऋतस्य हि धेनवो	२१०	एभिर्नो अर्कैर्भवा नो	७२२	कस्ते जामिर्जनानाम्	२२६
ऋतस्य हि वर्तनयः	१५१६	एभिर्भव सुमना अग्ने	६८०		

कस्य नूनं परीणसो	१४६०	क्षेत्रेणामग्ने स्वेन	२३२२	चित्तिमचितिं चिनवद्	६५७
का त उपेतिर्मनसो	२२९	क्षप उच्चश्च दीदिहि	११८४	चित्तिरपां दमे विश्वायुः	१५३
का मर्यादा वयुना	१७७०	क्षपो राजन्नुत त्मना	२४९	चित्र इच्छिन्नोस्तरुणस्य	१६६६
कायमानो बना एवं	५०१	क्षीरे मा मन्ये यतमो	२३११	चित्रा वा येषु दीधिति	८८४
किं देवेषु त्यज पुनः	१६४२	क्षेति क्षेमेभिः साधुभिः	१४६२	चित्रो यदभ्राद् ह्वेतो	१३९
किं नो अस्य द्रविणं	१७६९	क्षेत्रादपश्य सनुतः	७७०	जनस्य गोपा अजनिष्ट	८४२
किं स्वित्तो राजा जगृहे	१५५३	क्षेमो न साधुः क्रतुर्न	१४५	जनासो अग्निं दधिरे	६९
कुत्रा चिद्यस्य समूतौ	८१२	गर्भे मातुः पितृष्पिता	१०७६	जनिष्ट हि जैन्यो अग्ने	७५९
कुमारं माता युवतिः	७६७	गर्भे योषामदधुः	१६२४	जनिष्वा देववीतये	१०४०
कुर्मस्त आयुरजरं	१६१४	गर्भो यो अपां गर्भो	१७६	जने न शोव आहूयः	१६७
कुविस्तु नो गविष्टये	१३८३	गार्हपत्येन सन्त्य	२३	जन्मज्जन्मक्षिहितो	४६७
कुविस्तो अग्निरुच०	३२३	गाव उपावतवातं	१४३५	जरमाण समिध्यसे	१८५७
कूचिज्जायते सनयासु	१५१०	गीर्णं भुवनं तमसा	२३९८	जराबोध तद्विविद्धि	४७
कृतं त्विद्धि त्मा सनेमि	७२६	गृहा शिरो निहितम्	१६३८	जातवेदसे सुनवाम	१८६२
कृधि रत्नं यजमानाय	११९७	गोभिर्न सोममग्निना	२०३६	जातवेदो नि वर्तय	२३९६
कृधि रत्नं सुसन्तः	६०९	गोमो अग्नेऽविमो अग्नी	६५१	जातो अग्नी रोचते	५६४
कृणुष्व पाजः प्रसिति	१८१३	गोषु प्रशस्ति वनेषु	१८२	जातो यदग्ने भुवना	१८१२
कृणोत धूमं वृषणं	५६६	ग्राह्या गृहा स	२२५२	जानन्ति वृष्णो अरुपस्य	४९४
कृष्ण श्वेतोऽरुषो यामो	१५७९	घृनेव विष्वग्वि जहि	८१	जामि सिन्धुना आत्रेय	१३०
कृष्णं त एम रुशतः	७०१	घृत ते अग्ने दिव्ये सृज्यन्ते	२३२९	जिघर्ष्याग्नि हविषा	४१२
कृष्णमुतौ वेविजे	२९४	घृत न पूतं तनू०	७२५	जाम्यतीतये धनुः	१४२७
कृष्णां यदेमीमभि	१५००	घृतप्रतीकं व क्रतस्य	३२४	जिह्वाभिरह नक्षमद्	१३१७
कृष्णा रजांसि पस्मुत	१३१५	घृतमग्नेर्वध्यश्चस्य	१६२६	जीवानामायुः प्र तिर	२२५८
केतुं यज्ञानां विदधस्य	१७४४	घृतमप्सराभ्यो वह	२३६६	जुषद्व्या मानुषस्य	१५७१
के ते अग्ने रिपवे	८५१	घृत मिमिक्षे घृतमस्य	१९५२	जुषस्व नः समिधमग्ने	१९७४
केतेन शर्मन्सचते	१४०६	घृतवन्तः पावक ते	६१९	जुषस्व सप्रयस्तम	२२४
के मे मर्यकं वि	७७१	घृतवन्तमुप नासि	१९१९	जुषस्वाग्ने इळया	७९३
केश्य१ग्नि केशी विषं	२४५८	घृतादुल्लस मधुना	२१८०	जुषाणो अग्ने प्रति हयं	१६७६
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो	१७२९	घृताहव्यन दीदिव	१४	जुषाणो अङ्गिरस्तम	१३५०
क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठो	१०६७	घृताहव्यन सन्त्य	१०४	जुषाणो बर्हिर्हरिवान्	२०१७
क्रत्वा यदस्य तविषीषु	२८७	घृतेनाग्निः समज्यते	१८५६	जुष्टो दमूना अतिथि	७९४
क्रत्वा हि द्रोणे अजयसे	९५९	घृतेनाज्जन्तं पथो	२१०७	जुष्टो हि दूतो अग्नि	८७
क्रमध्वमग्निना नाकम्	२२१८	घृतो वृत्रमतरन्	७५	जुहुरे वि चितयन्तो	८८७
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि	१५६५	घृतमृध्राण्यप द्विषो	१३३५	जोहूयो अग्निः प्रथम	४०९
क्रव्यादमग्निं शशमानम्	२२३६	चक्रिर्गो विश्वा भुवना०	५९७	ज्ञेया भागं सहसानो	४१४
क्रव्यादमग्निमिशितो	२२३५	चत्वारि शृङ्गा त्रयो	१८९७	ज्येष्ठान्यो जातो विचृतोः	२१८४
क्रव्यादमग्ने रुधिरं	२३१४	चन्द्रमग्नि चन्द्ररथं	१७४६	तं यज्ञसाधमपि	२८४
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभि	११२	चरन्वत्सो रुशक्तिह	१४२८	त वशराथा वय	१४२
क्रीळन् नो रश्म आ	८९०	चिकिप्विन्मनसं त्वा	९०१	त वो दीर्घायुशोविष	८८३

तं वो वि न हुषद	१६६८	तं त्वा वयं पतिमग्ने	१२३	तमु त्वा पाथ्यो वृषा	१०५६
तं शश्वतीषु मातृषु	६९८	तं त्वा वयं सुध्यो	९४५	तमु त्वा वाजसातमं	२४१
तं शुभ्रमग्निमवसे	१७५४	तं त्वा वयं हवामहे	१३३२	तमु त्वा वृषहन्तमं	२४२
तं सबाधो यतस्तुच	५४२	त त्वा विप्रा विपन्यवो	५१७	तमु धुमः पुर्वणीक	९९४
त सुप्रतीकं सुदृशं	१०३२	तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः	९१०	तमुत्ताभिन्द्र न रेजमानम्	१५२४
तं हि शश्वन्त ईळते	८६२	त त्वा समिन्द्रिराजिरो	१०५२	तमोषधीर्दधिरे गर्भम्	१६५६
तं हुवेम यतस्तुचः	१२८९	तं देवा बुध्न रजसः	३८७	तं पृच्छता स जगामा	३३३
तं होतारमध्वरस्य	१२०३	तं नव्यसी हृद आ	१२१	तं मर्जयन्त सुक्रतु	१४६१
त इद् वेदि सुभग	१२४१	तन्नस्तुरीपमद्भुतं (देव त्वष्टा०)	२०८१	तं मर्ता अमर्त्यं घृतेन	१८५८
तक्का न भूर्णिर्वना	१३५	तन्नस्तुरीपमद्भुतं (। रायस्पोष)	२०६९	तरी मन्द्रासु प्रयक्षु	२०७७
तं गूर्धया स्वर्णर देवासो	१२२४	तन्नस्तुरीपमद्भुत पुरु वार	१९२७	तव कृत्वा सनेयं	१२५२
त घेमिस्था नमस्विन	७४	तन्नस्तुरीपमध पोषयितु	१९६१	तव त्वे अग्ने अर्च्यो	८७१, ८३९
तत्तदग्निर्वयो दधे	१३०३	तं नेमिमृभवो यथा	१३७७	तव त्वे अग्ने हरितो	६९०
तत्तु ते दंसो यद०	१७१	त नो अग्ने अभी नरो	८३४	तव त्रिधातु पृथिवी	१७९७
तत्ते भद्र यत्	२६९	त नो अग्ने मधवद्भयः	१८०२	तव धुमन्तो अर्च्यो	९१८
तत्ते सहस्व ईमहे	१३४२	तपनो अस्मि पिशाचानां	२३००	तव द्रप्सो नीलवान्	१२५४
तथा तदग्ने कृणु	२३०६	तपुर्जम्भो वन आ	११४	तव प्र यक्षि संदशम्	१०४९
तदग्ने चक्षु प्रति धेहि	१८३९	तपो एवग्ने अन्तरां	६०६	तव प्रयाजा अनुयाजा	१६१५
तदग्ने धुमना भर	१२३८	तमग्निमस्ते वसवो	११०१	तव भ्रमास आश्रया	१८१४
तदस्यानीकमुत चारु	२४३२	तमग्ने पास्थुत तं	१०३३	तव श्रिया सुदृशो	७८१
तद्भद्रं तव दगना	५०६	तमग्ने पृतनाषहं	९०४	तव श्रियो वर्णस्येव	१६५५
तद्वाभृतं रोदसी प्र	१६४०	तमग्नेवः केशिनीः	२९९	तव स्वादिष्ट अग्ने	७२४
तनृत्यजेव तस्करा	१५११	तमध्वरेष्वीळते देवं	८६१	तवाग्ने होत्र तव	३७०, १६६०
तनूनपाच्छुचिघ्नतः	२०३८	तमर्वन्त न सानसि	७५४; १४७४	तवाहमम ऊतिभिः	८३३; १२५१
तनूनपात् पथ क्रतस्य	२००४; २११८	तमस्मेरा युवतयो	२४२५	तस्मै नूनमभिधवे	१३७८
तनूनपान् पवमान	१९८२	तमस्य पृक्षसुपरासु	२७६	तस्येदर्वन्तो रंहयन्त	१२२९
तनूनपादसुरो विश्ववेदा	२०६१	तमागन्म सोभरयः	१२५५	ता अधरादुदीची	२२५४
तनूनपादुच्यते	५६८	तमित्पृच्छन्ति न सिमो	३३४	ता अस्य वर्णमायुवो	४२९
तनूनपादृतं यते	१९३२	तमित्सुहव्यमङ्गिरः	२१९	ता उशतो वि बोधय	१३
तनूपा भिषजा सुते	२०२६	तमित्पृच्छन्ति जुह्व०	३३५	ता नृभ्य आ सौश्रवसा	१०१६
तन्तुं तन्वन् रजसो	१६१९	तमिदांषा तमुषसि	११२८	तान्सत्यौजाः प्र दह	२२९५
तं त्वा गीभिर्हरक्षया	१८६१	तमिन्वेरेव समना	१७६४	तामग्ने अस्मे हृषभेरयस्व	१८०१
तं त्वा गीभिर्गिर्वणस	४३५	तमीं हिन्वान्ति धीतयो	३३०	ता राजाना शुचिघ्नता	१०६५
तं त्वा घृतस्त्रवीमहे	९२१	तमीं होतारमानुषक्	६९७	ताष्टावीरग्ने समिधः	२३१८
तं त्वाजनन्त मातरः	१४७९	तमीळत प्रथमं यज्ञसाध	१८८१	ता सुजिह्वा उप ह्वये	१९१३
तं त्वा दूतं कृणमहे	११९५	तमीळिष्व य आहुतो	१३३१	तिग्म चिदेम महि	९६६
त त्वा नरो दम आ	२०८	तमुक्षमाणं रजसि	३८८	तिग्मजम्भाय तरुणाय	१२४५
त त्वामजम्भे वाजिनं	१३२९	तमु त्वा गोतमो गिरा	२४०	तिज्ज इहा सरस्वती	२०४४
तं त्वा मर्ता अगृभ्णत	५०५	तमु त्वा दध्यङ्कृषि	१०५५	तिज्जस्त्रेधा सरस्वती	२०३३

तिष्ठो देवीर्बर्हिर्हिरिदं वरीय	१९९९	त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुः	११६८	स्व नृचक्षा वृषभानु	५९०
तिष्ठो देवीर्बर्हिरेदं सदनन्तु	२०६८	त्रीणि जाना परि भूपन्थस्य	१८७०	स्वं नो अग्न आयुषु	१३०९
तिष्ठो देवीर्हविषा वर्धमाना	२०२१	त्रीणि शता त्री सहस्राः	५०८	स्व नो अग्न एषां गयं	८३७
तिष्ठो यदग्ने शरदः	१९७	त्रीण्यायूषि तव जात०	६०२	स्व नो अग्ने अङ्गिर	८४१
तिष्ठो यक्षस्य समिधः	१७३५	त्रेधा जात जन्मनेदं	२१७२	स्वं नो अग्ने अद्भुत	८३६
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष	१८३६	व्यायुष जमदग्नेः	२१७३	स्वं नो अग्ने अधराद्	१८४७
तुभ्य श्रोतन्त्यग्निगो	६२१	स्व यविष्ठ दाशुषो	१४५६	स्व नो अग्ने तव देव	६१
तुभ्यं स्तोका घृतश्रुतो	६२०	स्व रयिं पुरुवारम्	१४१४	स्व नो अग्ने पित्रोः	५८
तुभ्यं घेत् ते जना इमे	१३३८	स्व वरुण उत मित्रो	११७३	स्व नो अग्ने महोभिः	१४०९
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	१३२७	स्व वरो सुषाग्ने	१२९७	स्वं नो अग्ने वरुणस्य	२४५१
तुभ्यं दक्ष कविकृतो	५८७	स्व विश्वु प्रदिवः सीद	९८१	स्व नो अग्ने सनधे	५७
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो	७६४	स्व ह यद्यविष्ठ	१३७५	स्व नो असि भारत	४४५
तुभ्येदमग्ने मधु०	८४६	स्वं हि क्षेतवद्यक्षो	९५२	स्व नो अस्या उषसो	५८९
तुविमीवो वृषभो	७७८	स्वं हि मानुषे जने	८९६	स्वमग्न इन्द्रो वृषभ	३७१
तृषु यदज्ञा तृपुणा	७०३	स्व हि विश्वतोमुख	१८९२	स्वमग्न उरुशसाय	६३
ते अस्य योषणे दिध्ये	२०६६	स्व हि सुप्रतूरसि	१२९८	स्वमग्न ऋभुराके	३७८
ते गव्यता मनसा	६४१	स्वं होता मनुर्हितो	१०५०	स्वमग्ने अदितिर्देव	३७९
ते घेदग्ने स्वाध्वो३ ये स्वा	१२४०	स्व होता मन्द्रतमो	१००१	स्वमग्ने गृहपति	११९६
ते घेदग्ने स्वाध्वोऽहा	१३३९	स्वं ह्यग्ने अग्निना	१३२३	स्वमग्ने त्वष्टा विधते	३७३
ते जानत स्वमोक्य१ सं	१४३७	स्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि	३३१	स्वमग्ने द्यामिस्त्वमा०	३६९
तेजिष्ठा यस्यारतिः	१००८	स्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता	९३९	स्वमग्ने द्रविणोदा	३७५
ते ते अग्ने त्वोता	१०६८	स्व चिन्नः शम्या अग्ने	६६९	स्वमग्ने पुरुरूपो	८२५
ते ते देवाय दाशतः	१२१०	स्व जामिर्जनानाम्	२२७	स्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः	५१
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते	२२६३	स्वदग्ने काव्या त्वम्म०	७३०	स्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा	५०
ते मन्वत प्रथम	६४२	स्वद्वि पुत्र सहस्रो	५८६	स्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन	५२
ते मर्मजत दृढवांसो	६४०	स्वद्विया विश आयज्ञ	१७९६	स्वमग्ने प्रमतिस्त्व	५९
ते राया ते सुवीर्यैः	७०९	स्वद्विजाजी वाजभरो	७३१	स्वमग्ने प्रयतदक्षिण	६४
ते स्याम ये अग्नये	७०८	स्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने	१७७५	स्वमग्ने बृहद्वयो	१४६३
स्मना वहन्तो दुरो	१७३	स्वद्विश्वा सुभग सौभगानि	१०१२	स्वमग्ने मनवे द्याम०	५३
त्रयः केशिन ऋतुथा	२४५६	स्व त देव जिह्वया	१०७३	स्वमग्ने यज्ञानां होता	१०४२
त्रयः पोषास्त्रिवृति	२१६९	स्वं तमग्ने अमृतस्व	५६	स्वमग्ने यज्यवे पायु०	६२
त्रय सुपर्णास्त्रिवृता	२१७४	स्व तौ अग्न उभयान्	३६७	स्वमग्ने यातुधानान्	२२९०
त्रायध्व नो अधविषाभ्यो	२४८१	स्वं तान्स च प्रति चासि	३८३	स्वमग्ने राजा वरुणो	३७२
त्रिः सप्त यद्रुहानि	२००	स्वं त्या चिदच्युता	९६०	स्वमग्ने रुद्रो असुरो	३७४
त्रिधा हितं पणिभिः	१८९८	स्व दूतो अमर्त्य आ	१०४७	स्वमग्ने वनुष्यतो	१०३४
त्रिभि पवित्रैरपुपोद्धय१कं	१७५७	स्व दूत प्रथमो वरेण्यः	१६७९	स्वमग्ने वरुणो जायसे	७७९
त्रिमूर्धानं सप्तरश्मि	३३८	स्वं दूतस्त्वमु नः	४०४	स्वमग्ने वसूरिह	१००
त्रिरस्य ता परमा	६३३	स्वं नः पाह्यहसो	१०७१, ११९१	स्वमग्ने वाघते सुप्र०	६५९
त्रिर्यातुधान. प्रसिति	१८३८	स्व नश्चित्र ऊर्या	१०९८	स्वमग्ने वीरवद्यक्षो	११८८

त्वमग्ने वृजिनवर्तनि	५५	त्वामग्ने अङ्गिरसो	८४७	त्वेषासो अग्नेरमवन्तो	८५
त्वमग्ने वृषभ पुष्टि०	५४	त्वामग्ने अतिथि पूर्यं	८२२	त्वोजो वाज्यहयोऽभि	२२२
त्वमग्ने व्रतपा असि	१२१४	त्वामग्ने दम आ विप्रतिं	३७६	ददानमिन्न ददभन्त	३४९
त्वमग्ने शशमानाय	३१४	त्वामग्ने धर्णासि विश्वधा	८२४	दधन्तुत धनयज्ञस्य	१८७
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान	१८११	त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः	३७७	दधन्वे वा यदीमनु	४२७
त्वमग्ने सप्रथा असि	८५७	त्वामग्ने पुष्करादधि	१०५४	दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा	११५
त्वमग्ने सहसा सहन्तम	२८०	त्वामग्ने प्रथम देव०	७३२	दश क्षिप पूर्यं सीम०	६२९
त्वमग्ने सुभृत उत्तम	३८०	त्वामग्ने प्रथममायुम्	६०	दशस्या न. पुर्वणीक	१००५
त्वमग्ने सुहव रणव०	११२०	त्वामग्ने प्रदिव आहुत	८२७	दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त	१८६९
त्वमङ्ग जरितार	७८८	त्वामग्ने मनीषिण	५०९	दाधार क्षेममोको	१३६
त्वमध्वर्युर्भुत होतासि	२६१	त्वामग्ने मनीषिणस्त्वा	१३६१	दा नो अग्ने धिया	११०४
त्वमर्यमा भवसि यत्	७८०	त्वामग्ने मानुषीरीळते	८२३	दा नो अग्ने बृहतो	३९१
त्वमसि प्रशस्यो विदधेभु	१२१५	त्वामग्ने यजमाना अनु	१५९९	दामान विश्वचर्षणे	१२७१
त्वमित् सप्रथा असि	१३९३	त्वामग्ने वसुपति	७९०	दाशेम कस्य मनसा	१४५८
त्वमिन्द्रा पुरुहूत	२२७४	त्वामग्ने वाजसातम	८५८	दिदक्षेण्य. परि	३४२
त्वमिमा वायां पुरु	१०४६	त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा	२३२१	दिवक्षसो धेनवो	४९१
त्व भगो न आ हि	१०१३	त्वामग्ने हरितो वावशाना	१७९८	दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं	२३६१
त्वया यथा गृत्समदासो	४२४	त्वामग्ने हविष्मन्तो	८२८	दिवश्चिते बृहतो जातवेदो	१७२१
त्वया वयं सधन्यस्त्वोताः	१८२६	त्वामग्ने समिधान	८२६	दिवश्चिदा. ते रुचयन्त	४८६
त्वया ह स्विशुजा	१४६५	त्वामग्ने समिधानो	११६०	दिवस्त्वा पातु हरित	२१७५
त्वया ह्यग्ने वरुणो	३१३	त्वामग्ने स्वाध्वोऽमर्तासो	१०४८	दिवस्परि प्रथमं जज्ञे	१५८९
त्वष्टा तुरीपो अञ्जुत	२०४५	त्वामस्या व्युषि देव	७८५	दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद्	२२०५
त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय	२०२२	त्वामिदन्न वृणते	१६५९	दिवा मा नक्त यतमो	२३१३
त्वष्टा माया वेदपसाम	१६२२	त्वामिदस्या उपसो	१६८१	दिवो न यस्य विधतो	९६९
त्वष्टारममजां गोपां	१९८९	त्वामीळते अजिर	११६७	दिवो वा सानु स्पृशता	१९९६
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभु	१९३९	त्वामीळे अध द्विता	१०४५	दीदिवांसमपूर्यं	५७८
त्वष्टा वीर देवकामं	२११४	त्वामु जातवेदम	१७००	दीर्घतनुर्बृहदुक्षायमग्नि	१६३१
त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने	१५८६	त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं	१२०९	दुरोकशोचिः क्रतुर्न	१३८
त्वा यज्ञेष्त्वृत्विजं	५१०; १५८७	त्वामु ते स्वाभुवः	१५८२	दुरो देवीर्दिशो महीः	२०४१
त्वां वर्धन्ति क्षितयः	९४३	त्वे अग्न आहवनानि	१११६	दुर्मन्त्रव्रामृतस्य	१५५४
त्वां विश्वे अमृत जायमानं	१७७६	त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो	३८२	दुहन्ति सप्तकाम्	१४३०
त्वां विश्वे सजोषसो	८९७	त्वे अग्ने सुमतिं	२११	दूत वो विश्ववेदस	७०४
त्वां हि मन्त्रतम०	९७७	त्वे अग्ने स्वाहुत	११९८	दशानो रुक्म उर्विया	१५९६
त्वां हि ष्मा चर्षणयो	९५३	त्वे असुर्यवसवो	१७९९	दशेन्यो यो महिना	२४०३
त्वां ह्यग्ने सदमित्	६३१	त्वे इदग्ने सुभगे	७३	दृक्का चिदस्मा अनु	२७५
त्वां चिन्नश्रवस्तम	१०५	त्वे धर्माण आसते	१५८३	देवं वो देवयज्यया	८९८
त्वां दूतमग्ने अमृतं	१०३०	त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो	१६३२	देव त्वष्टर्यं चारुत्वम्	२०००
त्वामग्न आदित्यास	३८१	त्वे वसुनि पुर्वणीक	९८०	देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं	१९४५
त्वामग्न ऋतायवः	८२१	त्वेषं रूपं कृणुत	१८७५	देवान् यज्ञाभितो हुवे	२३७१
		त्वेषस्ते धूम ऋषवति	९५७		

देवाश्रिते अमृता	१६३३	धन्या चिद्धि त्वे	१००२	नहि ते पूर्वमक्षिपद्	१०५९
देवासस्त्वा वरुणो	७१	धन्वन्स्त्रोतः कृणुते	१८७७	नहि मन्यु पौरुषेय	१४१०
देवी दिवो दुहितरा	१९९७	धामन् ते विश्वं भुवनमधि	१९०५	नहि मे अस्यधन्या	१४८१
देवीर्द्वाविंशो वि श्रयध्व	१९६८	धायोभिर्वा यो युज्येभि	९७०	नाना ह्यग्नेऽवसे स्वधन्ते	१०२०
देवेभिर्निषितो यज्ञियेभिः	२३९९	धासि कृण्वान ओषधी	१३१६	नाभि यज्ञानां सदनं	१७७४
देवैःसादुन्मदितम्	२१८८	धिया चक्र वरेण्यो	५४५	नाहं तन्तु न वि जानामि	१७८८
देवो अग्निः संकसुको	२२३८	धीरासः पद कवयो	३४१	नि काव्या वेधसः	१९५
देवो देवानामसि	२६८	धीरो ह्यस्यसद्विप्रो	१३७१	नितिक्रि यो वारण	९७५
देवो देवान् परिभृक्तेन	१५५०	ध्रुव ज्योतिर्निहितं	१७९१	नित्ये चिन्तु यं सद्ने	३५०
देवो देवेषु देव पथो	२०७३	नकिरस्य सहस्य	४५	नि तिगममभ्यशुं	१४२५
देवो न यः पृथिवीं	२०७	नकिष्ट एता व्रता	१७०	नि त्वा दधे वर आ	६३०
देवो न यः सविता	२०६	नक्तोषासा वर्णमामेभ्याने	१८८३	नि त्वा दधे वरेण्यं	५४६
देवो वो द्रविणोदाः	१२०२	नक्तोषासा सुपेशसा	१९१२	नि त्वा नक्ष्य विज्ञते	११८३
दैवा होतार ऊर्ध्वम्	२०८०	नडमा रोह न ते अग्र	२२२९	नि त्वामग्ने मनुर्दधे	८४
दैव्या मिमाना मनुषः	२०२०	न तमग्ने अरायतो	१४१२	नि त्वा यज्ञस्य साधनम्	९६
दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं	२०६७	न तस्य मायया चन	१२८४	नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त	१६८२
दैव्या होतारा प्रथमा० ४९७, १९५९		न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने	७८२	नि त्वा होतारमृत्विज	१०६
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर	१९४८	न त्वा रासीयाभिःस्तथे	१२४९	नि दुरोणे अमृतो	४६४
दैव्या हो०प्र० सुवाचा २००९; २११४		न पिशाचैः सं शक्नोमि	२३०१	नि नो होतार वरेण्य	२९
दैव्या होतारा भिषजा	२०४३	नमः शीताय तक्मने	२२७८	नि पस्यासु त्रितः	१६०६
द्यावा यमग्नि पृथिवी	१६०९	नमस्ते अग्न ओजसे	१३८२	निरितो मृत्तु निर्कृति	२२३१
द्यावा इ क्षामा प्रथमे	१५४९	नमस्यत हव्यदाति	१७३४	निर्मथितः सुधित	६२७
द्यावो न यस्य पनय०	९७३	न य रिपवो न	३५२	निर्यत् पूतेव स्वधितिः	११३२
द्युतानं वो अतिथि	१०२६	न यस्य सातुर्जनितो	६८८	निर्यदी बुध्नान् महिषस्य	३०७
द्युमिहितं मित्रमिव प्रयोग	१५३१	न योरुपद्विरदस्य	२२१	नि होता होतृषदने	४०३
द्यौश्च त्वा पृथिवी	४८२	न यो वराय मरुता०	३२२	नू च पुरा न सदन	१८८५
द्रवतां त उपसा	५८३	नराशंस प्रति धामान्यज्जन्	१९४३	नू चित्सहोजा अमृतो	११०
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य	१८८६	नराशंसः प्रति शूरो	२०१५	नू ते पूर्वस्यावसो	४२३
द्रवज्ञः सर्पिरासुतिः	४४६	नराशंस सुषूदति	१९६५	नू त्वामग्न ईमहे	११४८
द्रावो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं	२०७८	नराशंसमिह प्रियम्	१९०८	नू न इद्धि वार्यम्	८८०
द्रावो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता	२०६५	नराशंसस्य महिमानं १९७५; २११९		नू न एहि वार्यम्	८७५
द्विता यदी कीस्तासो	२७८	नरो ये के चास्मदा	१५७८	नूनमर्चं विहायसे	१२९३
द्विताय मृक्तवाहसे	८८२	नवं नु स्तोममग्नये	११८०	नू नश्चित्रं पुरुवाजा०	९९७
द्विभागधनमादाय	२२४८	नव प्राणान् नवाभि.	२१६७	नू नो अग्न ऊतये	८४०
द्विर्यं पञ्च जीजनन्	६८९	नवा नो अग्न आ भर	८०८	नू नो अग्नेऽवृकेभिः	९७८
द्विषो नो विश्वतोमुख	१८९३	नहि प्रभायारणः	११४१	नू नो रास्व सहस्रवत्	५८०
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे	१८६८	नहि ते अग्ने तन्वः	२३३७	नू मे ब्रह्माण्यग्न	१११९
द्वे समीची बिभृतः	२४१२	नहि ते अग्ने वृषभ	१४०९	नृचक्षा रक्ष परि पश्य	१८३७
द्वे स्त्रुती अशृणवं	२४११	नहि देवो न मर्त्यो	२४३९	नृश्वसो सदमिद्धे०	९५०

नेशत्तमो दुधित	६४३	पिता यज्ञानामसुरो	१७४५	प्रचेतस त्वा कवे	१४८०
नैनं धनन्ति पर्यायिणो	२३९३	पितुर्न पुत्र. सुभृतो	१२५०	प्रजानञ्जग्ने तव	१६५४
न्यक्रतून् ग्रथिनो मृध्रवाचः	१८०५	पितुर्न पुत्रा. क्रतु	१६२	प्रजापतेस्तपसा वावृधानः	२११६
न्यग्निं जातवेदस	९००, ९२६	पितुश्च गर्भं जनितुः	४५६	प्रजावता वचसा	२३२
न्यराती नराणां विद्वा	१३०१	पितुश्चिद्धर्जनुषा	४५५	प्र जिह्वया भरते वेपो	१६०८
पञ्चौदन पञ्चभिः	२२२३	पितेव पुत्रमबिभरुषस्थे	१६३४	प्र णु त्वं विप्रमध्वरेषु	७६१
पतिह्यध्वराणाम्	९४	पिप्रीहि देवो उशतो	१४९२	प्र तव्यसी नव्यसी	३१८
पदं देवस्य नमसा	९४२	पिशङ्गरूपः सुभरो	१९५०	प्र तो अग्निर्बभसत्	१७६१
पदं देवस्य मीळुदुषो	१४७७	पोपाय स श्रवसा	९९५	प्रति त्वं चारुमध्वरं	२४३८
पन्यांस जातवेदसं	१४४४	पुत्रो न जातो रण्वो	१६८	प्रति दह यातुधानान्	२२९४
पर योनेरवर ते	२१९६	पुनस्त्वादित्या रुद्रा	२२३४	प्रति स्पशो वि सृज	१८१५
परस्या अधि सवतो	१३८७	पुनस्त्वा दुरप्परसः	२१८९	प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो	११०३
पराद्य देवा वृजिन	१८४२	पुर देवानाममृतं	२१७७	प्र ते अग्ने हविष्मती	६११
परा शृणीहि तपसा	१८४१	पुरस्ताद् युक्तो वह	२३०५	प्र ते यक्षि प्र त इयमिं	१५०६
परि ते दूळभो रथो	७१९	पुराग्ने दुरितेभ्यः	१३७२	प्रल होतारमीह्य	१३४९
परि त्रिधातुरध्वर	१४३२	पुरीष्यासो अग्नय	६२६	प्रतो हि कमीह्यो अध्वरेषु	१२२३
परि त्रिविष्टपध्वरं	७५०	पुरुत्रा हि सदङ्ङसि	१२२१; १३३०	प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो	४७०
परि त्मना मितदुरेति	६८६	पुरु त्वा दाश्वान्वोचे	३५८	प्रत्यग्निरुषसामग्रम्	७४०; २३२८
परि त्वाग्ने पुर वय	१८४९	पुरुणि दस्मो नि	३५१	प्रत्यग्निरुषसो जातः	७४५
परि प्रजातः क्रवा	१६५	पुरुष्यग्ने पुरुधा	९५१	प्रत्यग्ने मिथुना दह	१८५१
परि यदेषामेको	१५५	पुरोगा अग्निर्देवानां	१९४१	प्रत्यग्ने हरसा हरः	१८५२
परि वाजपतिः कवि	७५१	पुरो वो मन्द्रं दिव्यं	९९३	प्रत्यञ्जमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२२६८
परि विश्वानि सुधिता	५२५	पुरोळा अग्ने पचत.	५५३	प्रत्यस्य श्रेणयो दहश्च	१६९४
परिपद्य ह्यरणस्य	११४०	पुष्टिर्न रणवा क्षितिर्न	१२८	प्र त्वा दूतं वृणीमहे	७०
पर्वि लोक तनयं	१०९९	पूर्वो देवा भवन्तु	२६३	प्रथम जातवेदसम्	१२९१
पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात्	१८४८	पूर्व्य होतरस्य नो	३२	प्रथमा वो सरथिना	२११२
पश्वा न तायु गुहा	१२४	पूषपवते मरुवते	१९२९	प्रथमा हि सुवाचसा	१९३७
पश्याम ते वीर्यं	२२८८	पृक्षप्रयजो द्रविण.	४९९	प्र दीधितिर्विश्ववारा	१९५५
पातं नो अश्विना दिवा	२०३२	पृक्षस्य वृणो अरुषस्य	१७८०	प्र देवं देववीतये	१०८२
पाति प्रिय रिपो अग्र	४७४	पृक्षो वपुः पितुमान्	३०६	प्र देवं देव्या धिया	१७०८
पाथिवस्य रसे देवा	२१४९	पृतनाजितं सहमानम्	२३७४	प्र दैवोदासो अग्निः	१२५८
पावकया यश्चितयन्त्या	१०२७	पृथिवी धेनुस्तस्या	२२८१	प्र नव्यसा सहसः	९८६
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा	१६८५	पृथिव्यामग्नवे समनमन्स	२२८०	प्र नून जातवेदसम्	१८६३
पावकशोचे तव हि	१७३२	पृथुपाजा अमर्त्यो	५४१	प्र नू महित्वं वृषभस्य	१७२२
पाहि गीर्भिस्तिसृभि	१३९८	पृथो दिवि धायग्निर	१७९५	प्र पतेतः पापि लक्ष्मि	२२०१
पाहि नो अग्न एकया	१३९७	पृथो दिवि पृथो अग्निः	१७२५	प्र पीपाय वृषभ	५९३
पाहि नो अग्ने पायुभिः	३६४	पृष्ठात् पृथिव्या अहम्	२२१९	प्र पूतास्त्रिमशोचिषे	२५३
पाहि नो अग्ने रक्षसः	८०; १११२	प्र कारवो मनना	४८०	प्र प्रायमग्निरभरतस्य	११५२
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो	१३९८	प्र केतुना बृहता	१५३४	प्र भूर्जयन्तं महां	१६०५

प्र महिष्ठाय गायत	१२६४	प्रातर्याङ्गः सहस्कृत	१०८	भवा वरूथ गृणते	११८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यम्	१६३९	प्रान्यान्सपत्नान्	२१९४	भारती पवमानस्य	१९८८
प्र यं राये निनीषसि	१२६०	प्रियं दुग्धं न काम्यम्	८८९	भारतीके सरस्वति	१९३८
प्र य आरुः शिति०	४९०	प्रियमेधवदत्रि०	१०२	भुवश्चक्षुर्महं क्रतस्य	१५३८
प्र यज्ञ एत्वानुषग्	९२७	प्रिया पदानि पश्वो	१४९	भुवो यज्ञस्य रजसश्च	१५३९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१८९०	प्रियो नो अस्तु विस्पति.	३४	भूमिष्टवा पातु हरितं	२१७१
प्र यत् पितुः परमा०	३०८	प्रेतो यन्तु व्याध्य	२४८३	भूरि नाम वन्दमानो	७८७
प्र यदग्ने सहस्वतो	१८९१	प्रेद्धो अग्ने दीदिहि	११०२	भूरीणि हि त्वे दधिरे	६१३
प्र यद् भन्दिष्ट एषां	१८८९	प्रेद्गग्निर्वावृधे स्तोमेभिः	४७१	भूपन् न योऽधि	२९७
प्र व शुक्राय भानवे	११३४	प्रेव पिपतिपति	२२६५	मथीद्यदीं विभृतो	१८८
प्र वः सखायो अग्नये	१०६३	प्रेष्ठ वो अतिथि	१४५४	मथीद्यदी विष्टो	३४८
प्रवत् ते अग्ने जनिमा	१६९१	प्रेष्ठसु प्रियाणां	१२६६	मधुमन्त तनूनपाद्	१९०७
प्रवाच्यं वचसः कि मे	१७६५	प्रो त्वे अग्नयोऽग्निपु	८०६	मध्ये होता दुरोगे	१००६
प्र विश्वसामग्नविद्	८९९	प्रोथदश्वो न यवसे	११२५	मध्वा यज्ञं नक्षति	२०७४
प्र वेधसे कवये	८६६	ब्रध्नाण. सूनो सहसो	४५४	मध्वा यज्ञं नक्षसे	२०६२
प्र वो देव चित्सहसा	११४२	बर्हिः प्राचीनमोजसा	१९८४	मनुष्वत्वा नि धीमहि	८९५
प्र वो देवायाम्नये	५७४	बळिस्था तद्गुणे	३०५	मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्व०	६६
प्र वो महे सहसा	२८१	बृहती इव सूनवे	१७२०	मनो न योऽध्वन	१९३
प्र वो यह्मं पुरूणां	६८	बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः	१०९६	मन्यता नर. कविः	५६२
प्रशंसमानो अतिथिर्न	१२३१	बृहद्वयो हि भानवे	८७१	मन्द्र होतारं शुचिमद्	१७४१
प्र शर्ध आर्तं प्रथमं	६३८	बृहन्त इज्जानवो	४६०	मन्द्र होतारमुक्षिजो	११६५, १६०४
प्र सद्यो अग्ने अद्येपि	७६३	बृहस्पतिर्म आकूतिम्	२२१२	मन्द्र होतारमृत्विजं	१३४८
प्र सप्तहोता सनका	५७१	बोधा मे अस्य वचसो	३४४	मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी	१९२५
प्र सन्नाजो असुरस्य	१८०३	ब्रह्म च ते जातवेदो	१५१२	मन्द्रो होता गृहपतिः	७२
प्र सु विश्वान् रक्षसो	२३१	ब्रह्मणाग्निः संविदानो	२४१६	मयो दधे मेधिर	४४९
प्र सो अग्ने तवोतिभिः	१२५३	ब्रह्म प्रजावदा भर	१०७७	मय्यग्ने अग्नि गृह्णामि	२३२५
प्र होता जातो महान्	१६०१	भजन्त विश्वे देवत्वं	१५७	मर्ता अमर्त्यस्य ते	१२१८
प्र होत्रे पूर्यं वचो	५१३	भद्र ते अग्ने सहसि०	७२८	महः स राय एपते	३५३
प्राग्नये तवसे भरध्वं	१७९४	भद्रं नो अपि वातय	१५७१	महत् तदुल्वं स्थविर	१६११
प्राग्नये बृहते यज्ञियाय	८४८	भद्र मनः कृणुष्व	१२४३	महश्चिदग्न एतसो	७३८
प्राग्नये वाचमीरय	१७११	भद्रा अग्नेर्वधयइवस्य	१६२५	महो अस्यध्वरस्य	११६६
प्राग्नये विश्वशुचे	१८१०	भद्रा ते अग्ने स्वनीक	६८७	महान्सधस्थे ध्रुव	४८३
प्राची दिगग्निरधिपतिः	२१६१	भद्रो नो अग्निराहुतो	१२४२	महिकेरव उतये	१०३
प्राचीनं बर्हिः प्रादिशा	२००६, २१२१	भद्रो भद्रया सचमान	१५०१	महि त्वाष्टमूर्जयन्ती	४९३
प्राचीनं बर्हिरोजसा	१९३४	भरद्वाजाय सप्रथः	१०७४	महे यपित्र ई	१८९
प्राचीनो यज्ञः सुधितं	११४४	भरामेधं कृणवामा	२५९	महो देवान्यजसि	१०९३
प्राञ्च यज्ञं चक्रम	४४८	भवा धुम्नी वाध्यइवोत	१६२९	महो नो अग्ने सुवितस्य	११२३
प्रातः प्रातरगृहपतिर्नो	२२७२	भवा नो अग्नेऽवितोत	१५३३	महो रुजामि बन्धुता	१८२३
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	२४३७	भवा नो अग्ने सुमना	६०५	महो विश्वो अभि	१२९५
प्रातरग्निः पुरुप्रियो	८८१				

मा कस्य यक्ष	६७८	य उदानट् परायणं	२३९५	यस्वा क्रुद्धा प्रचक्रुः	२२३३
मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न	२१९०	य उ श्रियो दमेष्वा	३९९	यस्वा होतारमनजन्	६१४
मातेव यद्भरसे	८६९	य एन परिधीदन्ति	२३९०	यथा चिद् बृद्धमतसम्	१३९५
माध्यंदिने सवने	५५५	य सीमकृषवन्	७४२	यथायजो होत्रमग्ने	६०१
मा नः समस्य दूढ्यः १:	१३८१	यः पञ्च चर्षणीराभि	११७८	यथा व स्वाहाग्ने	११३०
मा निन्दत य इमां	१७५९	य परस्या परावतः	१७१२	यथा विद्वो अरं करद्	४३२
मा नां अग्ने दुर्भृतये	११२१	य पौरुषयेण क्रविपा	१८४३	यथा त्रिप्रस्य मनुषो	२३३
मा नो अग्नेऽमतये	५९८	यः समिधा य आहुती	१२२८	यथा सो अस्य प्ररिधिः	२३०७
मा नो अग्नेऽव सृजो	३६५	यः सुनीथो ददाशुषे	३९८	यथा ह स्यद्वसवो	७३९
मा नो अग्नेऽवीरते	१११८	य सोमे अन्तर्यो	२३५६	यथा हव्य वहसि	२३३१
मा नो अग्ने सख्या	१९४	य स्नीहितीषु पूर्व्य	२१६	यथा होतर्मनुषो	९७१
मा नो अरातिरीशत	४४२	य प्राममाविशत	२३०२	यदग्न एषा समितिः	१५४७
मा नो अस्मिन् महाधने	१३८४	यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा	७३७	यदग्निरापो भदहत्	२२७५
मा नो देवानां विश	१३८०	यच्चिद्धि शश्वता तना	३३	यदग्ने अथ मिथुना	१८४०
मा नो मर्ताय रिपवे	१३९६	यजमानाय सुन्वत	९२४	यदग्ने कानि कानि	१४८२
मा नो रक्ष आ वेशीद्	१४०८	यजस्व होतरिषितो	१०००	यदग्ने दिविजा अस्मि	१३३७
मा नो हृणीतामतिथिः	१२६८	यजा नो मित्रावरुणा	२२८	यदग्ने मर्त्यस्त्वं	१२४८
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे	७६२	यजिष्ठ त्वा यजमाना	२७३	यदग्ने यानि कानि	२३५३
मा शूने अग्ने नि षदाम	१११०	यजिष्ठ त्वा ववृमहे	१२२६	यदग्ने स्यामह त्वं	१३६५
मित्र न य सुधित	१०२४	यजुषि यज्ञे समिधः	२३४५	यदग्न दाशुषे त्वं	६
मित्रश्च तुभ्य वरुण.	५८४	यजातवेदो भुवनस्य	२४०१	यदस्युपजिह्वा यद्	१४८३
मित्रो अग्निर्भवति	४७३	यज्ञस्य केतुं प्रथमं	८४३, १६७८	यददीव्यन्नृणमह	२३८४
मुनयो वातरशनाः	२४५९	यज्ञानां रथ्ये वय	१३६९	यदद्य त्वा प्रयति	५७३
सुमुक्ष्वोऽ मनवे	२९५	यज्ञायज्ञा वो अग्नये	१०९०	यदग्नमग्नि बहुधा	२३४६
सुमोद गर्भो वृषभः	१५३५	यज्ञासाहं दुव इषे	१५७७	यदग्नमदस्यनृतेन देवा	२३४८
सुहुर्गृध्रैः प्र वदस्यातिं	२२५१	यज्ञेन वर्धत जात०	३८५	यदयुक्था अरुषा	२६५
मूरा अमूर न वय	१५०९	यज्ञेभिरद्भुतक्रतु	१२७७	यदसावसुतो देवा	२१६५
मूर्धा दिवो नाभिरग्नि	१७१८	यज्ञैरिषू सन्नममानो	१८३१	यदस्मृति चक्रम किं	२२००
मूर्धानं दिवो अरतिं	१७७३	यं जनासो हविष्मन्तो	१४४३	यदस्य हतं विहृतं	२३०९
मूर्धा भुवो भवति	२४०२	यता सुजूर्णां रातिनी	६४८	यदि वाहमनृतदेव	१२१३
मेधाकारं विदधस्य	१६५८	यस्कृषते यद्वनुते	२२४९	यदि शोको यदि	२२७७
मेष इव वै सं च	२३३८	यत्ते कृष्णः शकुन	१५६२	यदीं गणस्य रक्षना०	७५७
मैनमग्ने वि दहो माभि	१५५७	यत्ते मनुर्धदनीक	१६२७	यदी घृतेभिराहुतो	१२४६
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिः	१२६९	यत्पाकत्रा मनसा	१४९६	यदी मन्थन्ति बाहुभि	५६३
य भागरे मृगयन्ते	२२९७	यत्र क्व च ते मनो	१०५८	यदी मातुरुष स्वसा	४३०
य इन्द्रेण सरथं याति	२३५७	यत्र वेत्थ वनस्पते	१२७२	यदीमृतस्य पयसा	२४६
य इमे द्यावापृथिवी	२०११; २१२६	यत्रा वदेते अवरः	२४१३	यदुद्धतो निवतो यासि	१६९३
य ई चिकेत गुहा	१५०	यत्रेदानीं पश्यसि	१८३३	यदेदेनमदधुः	२४०७
य उग्र इव शर्यहा	१०८०	यत्रैषामग्ने जनिमानि	२२९२	यद् दारुणि बध्यसे	२३८८

यद्देवानां मित्रमहः	९७	यस्त ऊरू विहरति	२४१९	यस्येदं प्रदिशि यद्	२३३६
यद्धस्ताभ्यां चक्रम	२३८१	यस्तुभ्य दाशाद्यो	१५९	यातुधानस्य सोमप	२२९१
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा	२२३२	यस्तुभ्यमग्ने अमृताय	६५५, १६६१	या ते वसोर्वात इषु	२२७०
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचि	२२७६	यस्ते अग्ने नमसा	८५३	यान् राये मर्तान्सुपूदो	२१२
यद् रिप्रं शमलं चक्रम	२२५३	यस्ते अग्ने सुमति	१५४६	यामन् यामन्नुपयुक्त	२३३२
यद्वा उ विश्वपति शितः	१२८२	यस्ते अद्य कृणवद्	१५९७	या मा लक्ष्मी पतयात्	२२०२
यद्वातजृतो वना	१३१	यस्ते अप्सु महिमा	२२०६	यामाहुतिं प्रथमामथर्वा	२२०९
यद्वाहिष्ठं तदग्नये	९१७	यस्ते गर्भममीवा	२४१७	यामृषयो भूतकृतो	२३२४
यद् विजामन्परुषि	१२११	यस्ते देवेषु महिमा	२२०७	या रूचो जातवेदमो	१८६५
यद् वो वय प्रमिनाम	१४९५	यस्ते भरादन्नियते	६५३	यावन्मात्रमुषसो	२४१५
यं त्वं विप्र मेधसातौ	१४१३	यस्ते यज्ञेन समिधा	९८३	या वा ते सन्ति दाशुपे	११३१
यं त्वमग्ने समदहः	१५६९	यस्ते सुनो सहसो	१०१५	युक्ष्वा हि देवहूतमो	१३७३
यं त्वा गोपवनो गिरा	१४५२	यस्ते हन्ति पतयन्त	२४१८	युगेयुगे विदधं	१७८४
यं त्वा जनास इन्धते	१३३६	यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने	६०४	युयूषतः सवयसा	३२८
यं त्वा जनास ईळते	१४५३	यस्त्वा दोषा य उपसि	६५४	युवमेतानि दिवि	२४६९
यं त्वा जनासो अभि	१५०७	यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा	२४२०	युवानं विश्वपति कवि	१३६८
यं त्वा देवा दधिरे	१६१०	यस्त्वामग्ने इन्धते	७३४	यूयमुष्मा मरुत ईदृशे	२१५३
यं त्वा देवासो मनवे	७७	यस्त्वामग्ने हविष्पति.	१७	ये अग्नयो अपस्वन्तये	२३५५
यं त्वा द्यावापृथिवी	१४९८	यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	२४२१	ये अग्ने चन्द्र ते गिरः	८३८
यं त्वा पूर्वमीळितो	१६२८	यस्त्वा स्वश्च सुहिरण्यो	१८२२	ये अग्ने नेरयन्ति	८९२
यं त्वा होतारं मनसाभि	२३५९	यस्त्वा हृदा कीरिणा	७९९	ये उग्र अर्कमानृचु	२४४१
यं देवासस्त्रिरहन्	१९५४	यस्मा ऋण यस्य जायाम्	२३८३	ये ते शुक्रास शुचयः	९८९
यं देवासोऽजनयन्त	२४०५	यस्माद् रेजन्त कृष्टय	१२५९	ये देवास्तेन हासन्ते	२२९९
यन्मा हुतमहुतम्	२३४७	यस्मिन् देवा अमृजत	२२४३	येन ऋषयो बलम्	२३३४
यमग्नि मेध्यातिथिः	७८	यस्मिन् देवा मन्मनि	१५५६	येन चष्टे वरुणो मित्रो	१२३९
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम्	४४	यस्मिन् देवा विदधे	१५५५	येन देवा अमृतम्	२३३५
यमग्ने मन्यसे रथि	१५८४	यस्मिन्नास ऋषभाम	१६६४	येन वसाम पृतनासु	१४००
यमग्ने वाजसातम	८९१	यस्मै त्व सुकृते	८००	ये नाकस्याधि रोचने	२४४३
यमर्था नित्यमुपयाति	११११	यस्मै त्व सुद्रविणो	२७०	येनेन्द्राय समभरः	२१४२
यमापो अद्रयो वना	१०९४	यस्मै त्वमायजसे	२५७	ये पर्वताः सोमपृष्ठा	२३६४
यमासा कृपनीळं	१५७३	यस्य ते अग्ने अन्ये	१२५६	ये पायवो मामतेय	३४५; १८२५
यमीं द्वा सवयसा	३२९	यस्य त्रिधात्वृता	१४७६	ये पुगस्ताज्जुह्वति	२३४२
यमेरिरे भृगवो	३२१	यस्य त्वमग्ने अध्वरं	६५६	ये बध्यमानमनु दीध्याना	२१५१
यमैच्छाम मनसा	१६१६	यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय	१२३३	ये भक्षयन्तो न वसूनि	२२७९
यमो ह जातो यमो	१४१	यस्य दूतो असि क्षये	२१८	येभिः पाशै विरिवित्तो	२१९२
यं मर्त्यः पुरुषपृहं	८१६	यस्य मा परुषा शतम्	९३२	ये महो रजमो विदुः	२४४०
यया गा आकरामहे	१७०४	यस्य शर्मन्नुप विश्वे	१८०८	ये मा क्रोधयन्ति लपिता	२३०३
यशा इन्द्रो यशा अग्निः	२४८०	यस्याग्निर्वपुर्गृहे	१२३४	ये मे पञ्चाशतं ददुः	८८५
यस्त इधम जभरत्	६५२	यस्यानुषन्नमस्विनः	१३८६	ये राधांसि ददत्यद्वया	१२०१

ये शुभ्रा घोरवर्षस.	२४४२	यो विश्वा दयते वसु	१२६२	वर्धन्तीमापः पन्वा	१२७
येऽश्रद्धा धनकाम्यात्	२२६४	यो विश्वाभि विपश्यति	१७१४	वर्धन्यं पूर्वाः क्षपो	१८०
येपामाबाध ऋग्मिय	१२७२	यो हव्यान्धैरयता	१२४७	वज्राजा सीमनदत्तीः	४५२
येपामिळा घृतहस्ता	११९९	यो होतासीत् प्रथमो	२४००	वसां राजानं वसतिं	७७२
ये स्तोत्रभ्यो गोअग्रा०	३८४	रक्षा णो अग्ने तव	६७९	वसिष्वा हि मियेध्य	२८
ये ह त्ये ते सहमाना	६९१	रक्षोहणं वाजिनमा	१८२८	वसु न चित्रमहसं	१६७५
यो अग्निं तन्वो३ दमे	१३५७	रथाय नावमुत नो	३०३	वसुरग्निर्वसुश्रवा	९०८
यो अग्नि देवधीतये	१८	रथो न यातः शिक्कभिः	३१२	वसुर्वसुपतिर्हि कम्	१३६६
यो अग्नि हव्यदातिभिः	१२३६	रपङ्गन्धर्वीरण्या च	१५४१	वस्त्री ते अग्ने संदशिः	१०६६
यो अग्निः ऋव्यवाहनः	१५६७	रयिर्न चित्रा सूरौ	१३४	वहिष्ठेभिर्विहरन्	७४३
यो अग्निः ऋव्यात् प्रविशेत्	१५६६	रयिर्न यः पितृवित्तो	२०५	वाजयन्निव नू रथान्	३९७
यो अग्निः सप्तमानुष	१३०७	राजन्तमध्वराणां	८	वाजिन्तमाय सद्यसे	१६७१
यो अग्नीषोमा हविषा	२४७२	रात्रिरात्रिमप्रयातं	२२६९	वाजी वाजेषु धीयते	५४४
यो अध्वरेषु शतम	२३५	रायस्पर्धि स्वधावोऽस्ति	७९	वाजो नु ते शवस०	८७०
यो अपार्चानि तमसि	१८०६	रायो बुध्नः संगमनो	१८८४	वातस्य पत्न्यङ्गीकृता	१९७०
यो अपस्वा शुचिना दैव्येन	२४२९	वंस्व विश्वा वार्याणि	१२०८	वातस्या श्वो वायोः सखा	२४६२
यो अस्मा अन्न तृणा३	१६४१	वस्वा नो वार्या पुरु	१२९६	यातोपधूत इषितो	१६५७
यो अस्मै हव्यादातिभिः	१२९०	वस्त्रा सूनो सहसो	१०१७	वायुरस्मा उपामन्यत्	२४६४
यो अस्य पारं रजसः	१७१५	वस्त्रा हि सूनो अस्य०	९७४	वि घ त्वावां ऋतजात	३६६
यो अस्य समिधं वेद	२३९२	वधेन दस्यु प्र हि	७९५	वि जिहीष्व लोक कृणु	२३८९
यो देवो विश्वाद्यमु	२३५८	वधैर्दु शंसो अप दूढ्यो	२६४	वि ज्योतिषा बृहता	७७५
यो देह्यो३ अनमयद्	१८०७	वनस्पति पवमान	१९९०	वि ते मुञ्चामि रशनां	२१९८
यो न आगो अभ्येनो	७८४	वनस्पतिरवसृजन्	१९५१	वि ते विष्वग्वातज्जातो	९८८
यो नः सनुयो अभि	९८२	वनस्पतिरवसृष्टो	२०२३	वि त्वा नर पुरुषा	१८३
यो न सुप्ताङ्गाग्रतो	२२२८	वनस्पते रशनया नियूया	२००१	विदन्तीमन्न नरो	१४७
यो नस्त्यद दिप्सति	२२२७	वनस्पतेऽव सृजोप	१९६२	वि देवा जरसावृतन्	२३४३
यो नो अग्नि पितरो	२२४६	वनस्पतेऽव सृजा	२०७०, २०८२	विद्या ते अग्ने त्रेधा	१५९०
यो नो अग्ने अररिवा	३४६	वनेम पूर्वीरयो	१७४	विद्या हि ते पुरा वयम्	१३८८
यो नो अग्ने दुरव	१०७२	वनेषु जायुर्मतेषु	१४४	विद्वो अग्ने वयुनानि	२०१
यो नो अग्नेऽभिदासति	२५४	वह्नि यशसं विदथस्य	११९	वि द्वेपासीनुहि	९९९
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२२४१	वय ते अग्न उक्थेः	७९६	विधेम ते परमे	४०५
यो नो दिप्सददिप्सतो	२२९६	वयं ते अग्ने समिधा	११७५	वि पाजसा पृथुना	५८८
यो नो ध्रुवे धनमिदं	२३६९	वयं ते अद्य ररिमा	५८५	वि पृक्षो अग्ने मघवानो	२०९
यो नो रमं दिप्सति	१२१२	वयं नाम प्र ब्रवामा	१८९६	विप्रं विप्रासोऽवसे	१२१९
यो भानुभिर्विभावा	१५२१	वयमग्ने अर्वता	३९४	विप्र होतारमद्रुहं	१३५२
यो म इति प्रवोचति	९३१	वयमग्ने वनुयाम	७८३	वि प्रथतां देवजुष्टं	१९९५
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा	६४७	वयमु त्वा गृहपते	१०४१	विप्रस्य वा स्तुवत	१२३५
यो मे शता च विशतिं	९२९	वया इदग्ने अग्नयस्ते	१७१७	विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु	१९८०
यो रक्षांसि निजूर्वति	१७१३	वर्च आ धेहि मे तन्वां३	२२१४	विभक्तासि चित्रभानो	४३
यो विश्वतः सुप्रतीकः	२६२			विभावा देव सुरणः	१७५०

विभूतरातिं विप्र	१२२५	विष गवां यातुधाना	१८४५	वैश्वानरोऽङ्गिरसां	२३७७
विभूषन्नग्न उभयाँ	१०३१	विषाणा पाशान् वि	२३८७	वैश्वानरो न आगमद्	२३७६
वि मे कर्णा पतयतो	१७९२	वि षाह्यग्ने गृणते	७२९	वैश्वानरो न ऊतय	२३७५
वि यदस्थायजतो	३११	विषूचो अश्वान् युयुजे	१६४३	वैश्वानरो महिम्ना	१७२३
वि यस्य ते ज्ञयसानस्य	१६६९	विषेण भट्गुरावतः	१८५०	व्यचस्वतीरुर्विया	२००७, २१२२
वि यस्य ते पृथिव्यां	११२७	विष्णुस्थि परममस्य	१४८७	व्यनिनस्य धनिनः	३५९
वि ये चृतन्ति क्रता	१५१	वीतिहोत्र स्वा कवे	९२२	व्यश्वस्त्वा वसुविदम्	१२८५
वि ये ते अग्ने भेजिरे	११०८	वीती यो देवं मर्तो	१०८७	व्यस्तभ्राद् रोदसी मित्रो	१७८२
वि यो रजांस्यमिमीत	१७७९	वीळु चिद् दृढहा पितरो	१८६	व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ट वीरो	२१८५
वि यो वीरुसु रोधन्	१५२	वृज्जे ह यज्ञमसा	१००४	व्रता ते अग्ने महतो	४८४
विराट् सन्नाड् विभ्वी	१९३५	वृतेव यन्त बहुभि	९४१	व्रतेन त्वं व्रतपते	२१९७
वि राय और्णोदुर	१६३	वृषण स्वा वय वृषन्	५५१	शक्रेम स्वा समिधं	२५८
वि लपन्तु यातुधाना	२२८६	वृषायन्ते महे अत्याय	४९८	शग्धि वाजस्य सुभग	५९९
वि वातजूतो अतसेपु	११३	वृषा वृण्णे दुदुहे	१५४०	शमग्निरग्निभिः करच्छं	२४५७
विशां कवि विस्पति	७९२, ९४६;	वृषा ह्यग्ने अजरो	१०९२	शमिता नो वनस्पतिः	२०४६
१७३६		वृषो अग्निः समिध्यते	५५०	शश्वत्तममीळते दूत्याय	१९९४
विशा गोपा अस्य	२६०	वेस्था हि वेधो अध्वनः	१०४४	शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य	१६३५
विशां राजानमद्भुतम्	१३३३	वेदिषदे प्रियधामाय	२९२	शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्त	२३६३
विशो यदहं नृभिः	१६९	वेधा अदृप्तो अग्निः	१६६	शिवस्त्वष्टरिहा गहि	१९७१
विशोविशो वो अतिथि	१४४२	वेध्वरस्य दूत्यानि	७००	शिवा नः सख्या सन्तु	७२७
विस्पतिं यज्ञमतिथि	१७४९	वेपि होत्रमुत पोत्रं	१४९३	शिशानो वृषभो यथा	१४०१
वि श्रयन्तामुर्विया	१९४६	वेपि ह्यध्वरीयताम्	७१६, ९६१	शिशु न स्वा जेन्यं	१५०८
वि श्रयन्तामृतावृधः	१९२३	वेपीद्वस्य दूत्यं	७१७	शीतिके शीतिकावति	१५७०
वि श्रयन्तामृतावृधो	१९११	वैकङ्कतेनेध्मेन	२१६३	शीर पावकशोचिष	१४७३
विश्वस्मा अग्नि भुवनाय	२४०८	वैश्वानरं कवयो	२४०९	शुक्रः शुशुक्वाँ उपो	१६४
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य	१५९४	वैश्वानर मनसाग्निं	१७५३	शुक्रेभिरङ्गै रज	४५१
विश्वा अग्नेऽप दहारातीः	११०६	वैश्वानरं विश्वहा	२४१०	शुचि न यामाञ्जिरं	१७४०
विश्वा उत स्वया वय	४४३	वैश्वानर. पविता मा	२३८६	शुचिः पावक वन्द्यो	४४४
विश्वानि नो दुर्गहा	७९८	वैश्वानर प्रतन्था नाकम्	१७३८	शुचिः पावको अद्भुतो	१९२०
विश्वामां गृहपतिः	१०२७	वैश्वानर तय तत्	१७२६	शुचिः षम यस्मा अश्विवत्	८१८
विश्वासां स्वा विशां	२७९	वैश्वानर तव तानि	१७७७	शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा	१९२६
विश्वे देवाः स्वाहाकृति	१९९१	वैश्वानर तव धामान्या	१७५१	शुनश्चिच्छेप निदित	७७३
विश्वे देवा अनमस्यन्	१७९३	वैश्वानरस्य दसनाभ्यो	१७५२	शूषेभिरवृधो जुषाणो	१५२३
विश्वेभिरग्ने अग्निभिः	३७	वैश्वानरस्य विमितानि	१७७८	शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः	९९
विश्वेषां ह्यध्वराणाम्	१४९७	वैश्वानरस्य सुमतौ	१७२४	शृतं यदा करसि	१५५८
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	६४६	वैश्वानराय धिषणाम्	१७२७	शृतमज शृतया	२२२५
विश्वेषामिह स्तुहि	१४७२	वैश्वानराय पृथुपाजसे	१७४२	शेषे वनेषु माघोः सं	१४०३
विश्वे हि स्वा सजोषसो ९०५; १२८७		वैश्वानराय प्रति	२३८५	शोचा शोचिष्ठ दीदिहि	१३९४
विश्वो विहाया अरति.	२८८	वैश्वानराय मीळहुषे	१७५८	श्रीणन्नुप स्याद्विं	१५४

श्रीणामुदारो धरुणो	१५९३	स जातो गर्भो असि	१४८६	स नः शर्माणि वीतये	५७७
श्रुत्कर्णाय कवये	२२०८	स जायत प्रथमः	६३७	स नः सिन्धुमिव नावया	१८९४
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः	९८	स जायमानः परमे	३१९; १७८१	स नः स्तवान आ भर	२०
श्रुधी नो अग्ने सदने	१५४८	स जायमानः परमे व्योमन्	१८००	सनादग्ने मृणसि	१८४६
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे	१०१	स जिन्वते जठरेषु	१७३७	स नो दूराक्षासाध	४०
श्रुत्कृष्णे नवस्य मे	१२८३	सजोपस्त्वा दिवो नरो	९५४	स नो धीती वरिष्ठया	९१३
श्रूया अग्निश्चित्रभानुः	४१०	सजोषा धीराः पदैरनु	१२५	स नो नृणां नृतमो	२३७
श्रेष्ठ यविष्ठ भारत	४४१	सं चेध्यस्वाग्ने प्र	२३२०	स नो नेदिष्ठं दृष्टान	२८२
श्रेष्ठ यविष्ठमतिथि	८९	स जागृवद्भिर्जरमाण	१६५१	स नो बोधि श्रुधी हवम्	९०९
श्वसित्यप्सु हंसो न	१३२	संजानाना उप सीद	१९९	स नो बोधि सहस्य	३९५
सं यदपिो वनामहे	८१३	स तत्कृधीषित०	९८४	स नो मन्द्राभिरध्वरे	१०४३
सं यस्मिन्विश्वा वसूनि	१५२५	स तु वस्त्राण्यध पेक्षानानि	१४९०	स नो महो अनिमानो	४८
संवत्सरीणं पय	१८४४	स तू नो अग्निर्नयतु	६३६	स नो मित्रमहस्वम्	१३५६
संवसव इति वो	२३७०	स ते जानाति सुमतिं	१८१८	स नो राधास्या भर	११८७
संसमिष्टुवसे वृषन्	१७१६	स तेजीयसा मनसा	६१२	स नो रेवत्समिधानः	३९०
सं सीदस्व महो असि	७६	सतो नूनं कवय सं	१६२३	स नो वस्व उप मासि	१४१७
स आ वक्षि महि न आ	१५०५	स त्वं दक्षस्यावृको	१०२५	स नो विभावा चक्षणि	९७२
स आहुतो वि रोचते	१८५५	स त्वं न ऊर्जा पते	१२८१	स नो विश्वेभिर्देवेभिः	१४११
स इत्तन्तु स वि जानाति	१७८९	स त्वं नो अग्नेऽवमो	२४५२	स नो वृष्टिं दिवस्परि	४३७
स इदग्निः कण्वत्तमाः	१६७०	स त्वं नो अवञ्जिदाया	१०११	स नो वेदो अमात्यम्	११७१
स इदस्तेव प्रति	९६७	स त्वं नो रायः शिशोहि	५९६	सपर्यवो भरमाणा	१९७७
स इधान उषसो	३९२	स त्वं विप्राय दाशुषे	१३२४	सपर्येण्यः स प्रियो	९४४
स इधानो वसुष्कवि	२४८	स त्वमग्ने प्रतीकेन	१८६०	स पूर्वया निविदा	१८८०
स ईं मृगो अप्यो वनर्गुः	३३७	स त्वमग्ने विभावसु	१३४१	सस धामानि परियन्	१६७७
स ईं रेभो न प्रति	९६८	स त्वमग्ने सौभग०	२७१	सस मर्यादाः कवयः	१५१८
स ईं वृषाजनयत्	२४३४	स त्वमस्मदप द्विषो	१२१६	सस स्वसूरुषीः	१५१७
स केतुरध्वराणाम्	५१२	स दर्शत श्रीरतिथि	१६५२	सस होतारस्तमिदीळते	१४०४
सखाय सं वः सम्यञ्चम्	८११	सदासि रणवो यवसेव	१५४४	सस होत्राणि मनसा	१९५७
सखायस्ते विषुणा	८५२	स दूतो विश्वेदभि	६३४	स प्रत्नया सहसा	१८७९
सखायस्त्वा ववृमहे	५००	स दृढहे चिदाभि तृणति	१२६१	स प्रत्नवज्रवीयसा	१०६२
सखे सखायमभ्या	२४५०	सद्यो अध्वरे रथिरं	११४५	सबन्धुश्चासबन्धुश्च	२४७९
स गृत्सो अग्निस्तरुणः	११३५	सद्यो जात ओषधीभि	४७७	सबाधो य जना इमे३	१४४७
स घा नः सूनुः	३९	सद्यो जातस्य दृष्टान०	७०२	स बोधि सूरिर्मघवा	४३६
स घा यस्ते ददाशति	५११	सद्यो जातो व्यमिमीत २०१३, २१२८		स आतरं वरुणमग्न	२४४९
संकसुको विकसुको	२२४०	स न ईजानया सह	१४६४	समक्रया पर्वत्या३ वसूनि	१६३०
स चन्द्रो विप्र मर्या	३६०	स नः पावक दीदिवो	१९	समस्वग्निमवसे	१२२२
स चिकेत सहीयसा	१३०४	स नः पावक दीदिहि	५१६	स मन्द्रया च जिह्वया	१२००
स चित्र चित्र चितयन्त०	९९२	स नः पितेव सूनवे	९	समन्या यन्त्युप यन्ति	२४२४
स चेतयन्मनुषो	६३५	स न पृथु श्रवायम्	१०५३	स मर्तो अग्ने स्वनीक	११२२

स मङ्गा विश्वा दुरितानि	११७२	स योजते अरुषा	११९३	स होता सेदु दूष्यं	७०७
स मातरिश्वा पुरुवार	१८८२	स यो वृषा नरां न	३५४	साक हि शुचिना शुचि	४१८
समानं नीळ वृषणो	१५१४	सरस्वती साधयन्ती	१९४९	स ते अग्ने शन्तमा	१४४९
समानं वत्समभि	३४०	स रेवो इव विस्पति	४९	सा शुभ्रैर्गुम्भिनी बृहद्	१४५०
स मानुषीषु दूळभो	७१३	स रोचयज्जनुषा	१७२८	साधुर्न गृधुरस्तेव	१८४
स मानुषे वृजने	२८९	सर्वानग्ने सहमानः	२२५९	साध्वर्पांसि सनता न	१९४७
समास्वाग्न ऋतवो	२३१९	स वाजं विश्वचर्षणिः	४६	साध्वीमकर्देववीति	१६१८
समाहर जातवेदो	२३१५	सवितारमुपसमाश्विना	९३	साम द्विबर्हा महि	१७६०
समिस्समिस्सुमना	१९५३	स विद्वो आ च पिप्रयो	४४०	सायसाय गृहपतिर्नो	२२७१
समिद्ध इन्द्र उषसाम्	२०१४	स विप्रश्चर्षणीनां	७११	सास्माकेभिरेतरी	१००९
समिद्धमग्निं समिधा	१०२९	स विश्वा प्रति चाकल्य	२१८२	साह्वान्विश्वा अभियुजः	५२३
समिद्धश्चित् समिध्यसे	१६९८	स वेद देव आनम	७०६	मिञ्चन्ति नमसावतम्	१४३३
समिद्धस्य प्रमहसो	९३६	स व्यस्थादभि	४२२	सिध्ना अग्ने धियो अस्मे	१५३०
समिद्धो अग्न आ वह	१९१८	स श्वितानस्तन्यतू	९८७	सिन्धुर्न क्षोदः प्र	१४३
समिद्धो अग्न आहुत	९३७, २२४४	स संस्तिरो विष्टिरः	२९८	सिन्धोरिव प्राध्वने	१९०१
समिद्धो अग्निः समिधा	२०३७	स सत्यति शवसा	१०१४	सीद होत स्व उ लोके	५६५
समिद्धो अग्निरश्विना	२०२५	स सन्न परि णीयते	७१४	सीसे मृड्द्वं नडे मृड्द्वम्	२२४५
समिद्धो अग्निर्दिवि	९३३	ससस्य यद्वियुता	६९९	सुकर्माण सुखो	६६३
समिद्धो अग्निर्निहित	१९४२	स सुक्रतु पुरोहितो	२८६	सुक्षेत्रिया सुगातुया	१८८८
समिद्धो अज्जन्कुरं	२१०६	स सुक्रतुर्यो वि दुरः	११५६	सुजातं जातवेदस	२३३३
समिद्धो अद्य मनुषो	२००३; २११७	ससृवांसमिव त्मना	५०४	सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि	१६५३
समिद्धो अद्य राजसि	१९३१	सः स्मा कृणोति केतुमा	८१४	सुनिर्मथा निर्मथितः	५६९
समिद्धो विश्वतस्पतिः	१९८१	स हव्यवाळमल्यं	५१९	सुप्रतीके वयोवृषा	१९६९
समिधाम्नि दुवस्यत	१३४३	सहस्राक्षो विचर्षणिः	२५५	सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्	२०४०
समिधा जातवेदसे	११७४	स हि क्रतुः स मर्यं	२३६	सुखमे हि सुपेशसा	१९३६
समिधान उ सन्त्य	१३५१	सहि क्षपावो अग्नी	१७८	सुवीर रयिमा भर	१०७०
समिधानः सहस्रजिद्	९२५	स हि क्षेमो हविर्यज्ञ	१५७६	सुशसो बोधि गृणते	९१
समिधा यस्य आहुति	९५६	स हि शुभिर्जनानां	८७२	सुशित्पे बृहती मही	१९८६
समिधा यो निशितो	१२३७	स हि पुरु चिदोजसा	२७४	सुसदृक् ते स्वनीक	११२९
समिध्यमानः प्रथमानु	६००	स हि यो मानुषा युगा	१०६४	सुसमिद्धाय शोचिषे	१९६४
समिध्यमानो अध्वरे	५४०	स हि विश्वाति पार्थिवा	१०६१	सुसमिद्धो न आ वह	१९०६
समिध्यमानो अमृतस्य	९३४	स हि वेदा वसुधिति	७०५	सूक्तवाकं प्रथमम्	२४०४
समिन्धते संक्रुक्	२२३७	स हि शर्धो न मारुतं	२७७	सूरो न यस्य दशति०	९६५
समुद्रादूर्मिर्भुमौ	१८९५	स हि ष्मा धन्वाक्षितं	८१७	सूर्यं चक्षुर्गच्छतु	१५५९
समुद्रे त्वा नृमणा	१५९१	स हि ष्मा विश्वचर्षणि	९०६	सेदग्निरग्नोरत्य०	१११३
सं माग्ने वर्चसा सृज	२६	स हि सत्यो यं पूर्वं	९१२	सेदग्निर्यो वनुष्यतो	११४
सम्यक् स्रवन्ति सरितो	१९००	सहे पिशाचान्सहसा	२२९८	सेदग्ने अस्तु सुभगः	१८१९
स यक्षदस्य महिमानम्	२०६४	स होता यस्य रोदसी	४८९	सेनेव सृष्टामं दधाति	१४०
स यन्ता विप्र एषां	५७६	स होता विश्वं परि	३८९	सेमां वेतु वषट्कृतिम्	११८२

सैनानीकेन सुविदध्रो	४०८	स्वाष्ट्यं देवस्यामृत	१५५१	होता यक्षत् समिधाग्निम्	२०४८
सो अग्न ईजं शशमे	९४७	स्वाहाकृतान्या गहि	१९३०	होता यक्षत् समिधानं	२०९५
सो अग्निर्यो वसुगृणे	८०२	स्वाहाग्नये वरुणाय	१९७३	होता यक्षत् समिधेन्द्रम्	२०८४
सो अद्धा दाश्वधरो	१२३२	स्वाहा यज्ञं कृणोतन	१९१७	होता यक्षत् सुपेशसा	२१००
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती	१५४२	स्वाहा यज्ञं वरुणः	२०४७	होता यक्षत् सुपेशसोषे	२०५४
सोमस्य मा तवसं	४४७	हरयो धूमकेतवो	१३१३	होता यक्षत् सुवर्हिष	२०२८
सोमस्य मित्रावरुणा	१४४०	हरिः सुपर्णो दिवम्	२३४९	होता यक्षत् सुरेतसं २१०३; २०५७	
सोमस्येव जातवेदो	२३१६	हविष्कृणुध्वमा गमद्	१४२४	होता यक्षत् स्वाहाकृती	२१०५
सोमो न वेधा ऋत०	१३३	हविष्पान्तमजरं	२३९७	होता यक्षदग्निं समिधा	२१२९
स्तविष्यामि त्वामह	९०	हन्यवाळग्निरजर	७९१	होता यक्षदग्निं स्वाहा २०५९, २१४१	
स्तीर्णं बर्हिः सुष्ट्रीमा	२१०९	हस्ते दधानो नृम्णा	१४६	होता यक्षदग्निमीळ	२१३२
स्तीर्णा अस्य संहतो	४५३	हिरण्यकेशो रजसो	२४४	होता यक्षदिवाभिरिन्द्रम्	२०८६
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने	६८५	हिरण्यदन्तं शुचिर्वर्ण०	७६९	होता यक्षदिडेडित	२०५१
स्तुवानमग्न आ वह	२२८४	हिरण्यपाणि सवितारं	२३६२	होता यक्षदिन्द्रं स्वाहा	२०९४
स्तृणानासो यतस्तुचो	१९२२	हिरण्यरूप स हिरण्य	२४३१	होता यक्षदीडेन्यम्	२०९७
स्तृणीत बर्हिरानुषग्	१९१०	हुवे व. सुघोत्मानं	४१६	होता यक्षदुषासानक्ता	२१३५
स्तोकानामिन्दुं प्रति	२०२४	हुवे वः सूनु सहसो	९७९	होता यक्षदुषे इन्द्रस्य	२०८९
स्तोमेन हि दिवि देवासो	२४०६	हुवे वास्तस्वनं कवि	१४६७	होता यक्षदोजो न वीर्यं	२०८८
स्पार्हा यस्य श्रियो दशे	११८१	हृणीयमानो अप हि	७७४	होता यक्षद् दुर ऋष्याः	२१३४
स्व आ दमे सुदुघा	२४२८	हृदा पूत मनसा	२२८३	होता यक्षद् दुरो दिशः	२०५३
स्व आ यस्तुभ्यं दम	१९०	होताजनिष्ठ चेतन.	४२५	होता यक्षद् दै० २०५५, २०९०, २१३६	
स्वः स्वाय धायसे	४३१	होता देवो अमर्त्यः	५४३	होता यक्षद् बर्हिः	२१३३
स्वरनयो वो अग्निभिः	१२३०	होता निपत्तो मनो	१६०	होता यक्षद् बर्हिरूपं भद्रा	२०५२
स्वरनयो हि वार्यं	३५	होता यक्षत् तनूनपातम् २०८५, २०९६;		होता यक्षद् बर्हिषीन्द्र	२०८७
स्वध्वरा करति जातवेदा	१२०७	२१३०		होता यक्षद् वन २०५८, २०९३, २१०४	
स्वना न यस्य भामास	१५०३	होता यक्षत् तनूनपात्	२०४९	होता यक्षद् वनस्पतिम्	२१३९
स्वयं यजस्व दिवि देव	१५३२	होता यक्षत् तिस्रो देवी २०५६, २१३७		होतारं स्वा वृणीमहे	८९३
स्वर्णं वस्तोरुषसा	११६२	होता यक्षत् तिस्रो (। इन्द्रयत्नी) २०९१		होतारं विश्ववेधसं	९२
स्वर्धन्तो नापेक्षन्त आ	२२२०	होता यक्षत् पेशस्वतीः	२१०२	होतारं सप्त जुहो	११६
स्वस्ति नो दिवो अग्ने	१५२७	होता यक्षत् प्रचेतसा	२१०१	होता यक्षद् व्यचस्वती	२०९९
स्वाध्वो दिव आ सप्त	२०२	होता यक्षत् त्वष्टारमचिष्टम्	२१३८	होता यक्षक्षराशः स २०५०, २१३१	
स्वाध्वो वि दुरो देवयन्तो	१९७८	होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्र	२०९२	होतारं चित्ररथम्	१४८९
				ह्वयाम्यग्निं प्रथमं	२४४८

अग्न आयूषि पवस	२४८४	उभाभ्यां देव सवित	२४८९	यत्ते पवित्रमर्चिवद्भ्यो	२४८८
अग्निर्ऋषिः पवमानः	२४८५	त्रिभिष्टव देव सवित	२४९०	यत्ते पवित्रमर्चिवद्भ्यो	२४८७
अग्ने पवस्व स्वपा	२४८६	पुनन्तु मां देवजनाः	२४९१		

सोमसूक्तेषु पठिताः, सोममन्त्रसंग्रहे मुद्रिताश्च

अग्निमन्त्राः ।

(ऋ० ९।६६।१९--२१)

(शतं वैखानसा । अग्निः पवमानः । गायत्री ।)

अग्र आरूँपि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।	
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥	२४८४
अग्निक्रिषिः पवमानः पाश्र्वजन्यः पुरोहितः ।	
तमीमहे महागयम् ॥	२४८५
अग्रे पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।	
दधद रायि मयि पोषम् ॥	२४८६

(ऋ० ९।६७।२३--२७)

(पवित्र आङ्गिरसो वा वासिष्ठो वा उभौ वा । पवमानोऽग्निः । गायत्री, २४९१ अनुष्टुप् ।)

यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥	२४८७
यत् ते पवित्रमर्चिर्वदग्ने तेन पुनीहि नः ।	
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥	२४८८
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।	
मां पुनीहि विश्वतः ॥	२४८९
त्रिभिष्ट्वं देव सवितुर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।	
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥	२४९०
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।	
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मां ॥	२४९१

दैवत-संहितान्तर्गत-अग्निदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंशः स्वस् २, १, ४; ३७२
 अक्तः शुभिः ६, ४, ६; ९७६ । ६, ५, ६;
 ९८४
 अक्कः १, १८९, ७, ३६७
 अक्षमि शठं चक्ष्णान्. १, १२८, ३, २८५
 अक्षित ८, ७२, १०, १४३३
 अगृभीतशोचिः ८, २३, १. १२७०
 अग्रयः [बहुवचनम्] १, १२७, ५, २७६
 अग्रय अग्निभ्यः वरम् ७, १, ४; ११०३
 अग्निः. सामान्येन सर्वत्र निर्देशः ।
 अग्निः अन्यान् अग्नीन् अति अस्ति
 ७, १, १४, १११३
 अग्नि अग्निभिः सजोषा ७, ३, १; ११२४
 अग्निः ह नाम धावि दन् अपस्तमः,
 यः भस्मना दत्ता वना सं युवते
 १०, ११५, २, १६६७
 अग्नौ प्रविष्टः चरति अथर्व ४, ३९,
 ९; २२८२
 अगदः अयम् अथर्व ५, २९, ६-९,
 २३१०-२३१३
 अग्रजः [स्वहा] ९, ५, ९, १९८९
 अग्रयावा देवानाम् १०, ७०, २, १९९३
 अग्रियः ६, १६, ४८; १०८९ । १, १३,
 १०; १९१५
 अह्नुयन् ६, १५, १७; १०३९
 अह्निराः १, ३१, १७; ६६ । १, ७४, ५;

२१९ । ४, ३, १५, ६८० । ४, ९, ७;
 ७१८ । ५, ८, ४, ८२४ । ५, १०, ७,
 ८४१ । ५, ११, ६, ८४७ । ५, २१, १;
 ८९५ । ६, २, १०, ९६१ । ६, १६, ११
 १०५२ । ८, ६०, २, १३९० । ८, ७४, ११;
 १४५२ । ८, ८४, ४, १४५७ ।
 ८, १०२, १७ १४७९
 अह्निरसः [देवताविशेषः] अथर्व ०
 ३, २१, ८, २३६२
 अह्निरा ऋषि १, ३१, १; ५०
 अह्निरा ऋषिः प्रथमः १, ३१, १; ५०
 अह्निरसां ज्येष्ठः १, १२७, २; २७३
 अह्निरस्तमः १, ३१, २; ५१ । १, ७५, २;
 २२५ । ८, २३, १०, १२७९ ।
 ८, ४३, १८, १३२७ । ८, ४४, ८, १३५०
 अच्छिद्रोतिः १, १४५, ३; ३३५
 अजः अथर्व ० ४, १४, ६; २२२२
 अजरः १, ५८, २, १११ । १, ५८, ४,
 ११३ । १, १२७, ९, २८० । १, १४४, ४;
 ३२९ । १, १४६, २ ३३२ । ५, ४, २
 ७९१ । ५, ६, ४, ८०४ । ५, ७, ४,
 ८१४ । ६, २, ९, ९६० । ६, ४, ३,
 ९७३ । ६, ५, ७, ९८५ । ६, १५, ५,
 १०२७ । ६, १६, ४५; १०८६ ।
 ६, ४८, ३, १०९२ । ७, १५, १३;
 ११८९ । ८, २३, ११, १२८० ।

८, २३, २०; १२८९ । १०, ११५, ४;
 १५६९ । १०, ४६, ७; १६०७ ।
 ३, २६, २; १७२८ । ६, ८, ५; १७८४ ।
 १०, ८७, २१, १८४८ । १०, ८८, ३;
 २३९९
 अजरः जूर्यसु वनेषु ३, २३, १; ६२७
 अजराः १, १२७, ५; २७६
 अजस्रः १०, ६, २; १५२१ । अथर्व ०
 ७, ७८, १; २१९८ । १९, ३, २; २२०६
 अजिर ७, ११, २; ११६७ । अथर्व ०
 ३, ४, ३; २१६०
 अजिरशोचिः ८, १९, १३ १२३६
 अजुर्गः १, ६७, १, १४४ । २, ८, २;
 ३९८ । ३, ७, ४ ४९३ । १०, ८८, १३;
 २४०९
 अजुर्गः [देवीर्द्वार] २, ३, ५; १९४६
 अजन् मतीनां कृदरम् वा ० य ०
 २९, १; २१०६
 अज्ञानः सप्त होतृभिः ३, १०, ४; ५१२
 अतन्द्रः १, ७२, ७, २०१ । ८, ६०, १५;
 १४०३
 अतन्द्रः दूतः ७, १०, ५, ११६५
 अतिथिः १, ४४, ४; ८९ । १, ५८, ६;
 ११५ । १, १२८, ४; २८६ । २, २, ८;
 ३२२ । २, ४, १, ४१६ । ५, १, ८;
 ७६२ । ५, ४, ५; ७९४ । ५, ८, २; ८२२ ।

६, ४, २, ९७२ । ६, १५, १; १०२३ ।
 ६, १५, ४; १०, १०-२६ । ६, १५, ६;
 १०२८ । ६, १६, ४२; १०८३ ।
 ८, १०३, १०, १२६६ । ८, १०३, १२,
 १२६८ । ८, ४४, १; १३४३ ।
 ८, ७४, १; १४४२ । ८, ७४, ७; १४४८ ।
 ८, ८४, १; १४५४ । १०, ९१, २;
 १६५२ । १०, १२२, १, १६७५ ।
 ३, ३, ८, १७४९ । ३, २६, २, १७५४
 अतिथिः प्रिय - ६, २, ७, ९५८
 अतिथिः शिवः- ७, ९, ३, ११५७
 अतिथि जनानाम्- १०, १, ५; १४८९ ।
 ६, ७, १; १७७३
 अतिथिः मानुषाणाम्- १, १२७, ८; २७९
 ४, १, २०; ६१६ । ८, २३, १५; १२९४
 अतिथि, विशाम्- ३, २६, २, १७२८
 अत्यः ३, ७, २, ४९८
 अत्रिः २, ८, ५; ४०१ ।
 अथयुः ७, १, १; ११००
 अद्वयः १, ७६, २, २३० । १, १२८, १,
 २८३ । २, ९, ६; ४०८ । ५, १९, ४;
 ८८९ । ८, ४४, २०; १३६२ ।
 ६, ७, ७, १७७९ । ४, ४, ३, १८१५ ।
 १०, ८७, २४; १८५१
 अद्वयप्रवृत्तप्रमतिः २, ९, १, ४०३
 अद्वयः १, ३१, १०, ५९ । ३, ११, ५,
 ५२२ । ७, १५, १५, ११९१ ।
 १०, ११, १; १५४० । १०, ११८, ६;
 १८५८ । ९, ५, २; १९६५ । अथर्वं
 ३, २१, ४, २३५८
 अदितिः १, ९४, १५; २७० । २, १, ११,
 ३७९ । ७, ९, ३; ११५७ । ८, १९, १४,
 १२३७ । १०, ११, १, १५४१
 अदितिः विष्णोर्वा यज्ञियानाम्- ४, १, २०;
 ६४६
 अदितिः गर्भः ऋ. प्रेष० २; २१३०
 अद्विपितः ४, ३, ३; ६६८
 अद्विपितः १, ६९, ३; १६६
 अद्भुतः २, ७, ६; ४४६ । ५, १०, २,

८३६. ५, २३, २, ९०४ । ६, १५, २,
 १०२४ । ८, ४३, २४, १३३३ । ६, ८, ३;
 १७८२ । १, १४२, ३; १९२०
 अद्भुतकृतः ८, २३, ८; १२७८
 अत्यन्तसद्वा ६, ४, ४; ९७४
 अद्भुत-अद्भुक् ३, २२, ४; ६२६ ।
 ६, ५, १, ९७९ । ६, ११, २; १००१
 ६, १५, ७, १०२९ । ८, ४४, १०;
 १३५२
 अद्भुतः [मरुत] १, १९, ३; २४४०
 अद्भुतः सूतः १०, २०, ७, १५७७
 अद्भुतवाक् ६, ५, १, ९७९
 अद्भुत (यन्तम् द्वि०) ३, २९, ५,
 ५६२
 अद्भुताविन्-वी ३, २, १५; १७४१
 अद्भुतव्ययः १०, १२२, १; १६७५
 अधिप अथर्वं ६, ११९, १, २३८४
 अधिपतिः । अथर्वं ३, २७, १; २१६१
 अधिपतिः वनस्पतीनाम् । अथर्वं
 ५, २४, २; २१६६
 अध्वक्षः धर्मणाम्- ८, ४३, २४; १३३३
 अध्विगु ३, २१, ४, ६२१ । ५, १०, १,
 ८३५ । ८, ६०, १७, १४०५ ।
 अध्वरश्रीः १, ४४, ३; ८८
 अध्वरस्य इष्कर्ता १०, १४०, ५; १६८८
 अध्वरस्य जारः १०, ७, ५; १५३१
 अध्वरस्य प्रणेता ३, २३, १; ६२७
 अध्वरस्य राजा ४, ३, १; [रुद्रः] (साम)
 १, १, ७, ७
 अध्वराणां अनीकः १०, २, ६, १४९७
 अध्वराणां केतुः ३, १०, ४; ५१२
 अध्वराणां गोपा १, १, ८; ८
 अध्वराणां चेतनः ३, ३, ८; १७४९
 " पतिः १, ४४, ९; ९४
 " रथीः १, ४४, २; ८७
 " रथ्यम् ६, ७, २; १७७४
 " सम्राट् १, २७, १, ३८
 " हस्कर्ता ४, ७, ३; ६९५
 अध्वरीयसि २, १, २; ३७०
 अध्वर्युः २, ५, ६; ४३० । ३, ५, ४; ४७३
 अध्वर्युः त्वम् १, ९४, ६; २६१

अनङ्गान् अथर्वं १२, २, ४८, २२६१
 अनभिस्तातवर्णः २, ३५, १३; २४३४
 अनवद्यः १, ३१, ९, ५८
 अनाष्टः ७, १५, १४; ११९०
 अनाष्टाष्टः [मरुतः] १, १९, ४;
 २४४१
 अनाष्टव्यः अथर्वं ७, ८४, १; १८६६
 अनानतः ७, ६, ४, १८०६
 अनिधमः शुक्रभिः शिकभि दीदाय
 २, ३५, ४; २४२५
 अनिमानः १, २७, ११, ४८
 अनिष्टतविधिः ५, ७, ७, ८१७
 अनिष्टतः ३, २९, ६; ५६३
 अनीकम् उत चारु २, ३५, ११; २४३२
 अनुमाद्यः कृष्टीनाम् ७, ६, १, १८०३
 अनुषयः [सत्यः] ३, २६, १, १७५३
 अनूनः १, ४६, १, ३३८ । २, १०, ६;
 ४१४ । ४, २, १; ६६५ ।
 अनूनवर्चाः १०, १४६, २; १६८५
 अनेहाः ३, ९, १; ५००
 अन्तमः नः भव ५, २४, १, ९०७
 अन्तमः स्तोत्रभ्यः भव ३, १०, ८, ५१६
 अन्तर १०, ५३, १, १६१६
 अन्तर्धिः देवानाम् अथर्वं १२, २, ४४
 २२५७
 अन्ति चित् सन् ८, ११, ४, १२१७
 अन्नम् अत्यष्टाम् २, ३५, ११; २४३२
 अन्नपतिः अथर्वं १९, ५५, ५; २२७३
 अन्नाद्य अथर्वं १९, ५५, ५, २२७३
 अन्नवृष्टि (धम् द्वि) १०, १, ४; १४८८
 अन्जित ४, २, ७, ६५३
 अपराजित वा० य० २८, २, २०८५
 अपरीवृतः शिरिणायां चिद्वक्तुना-
 २, १०, ३; ४११
 अपस्तमः १०, ११५, २; १६६७
 अपाम् उपस्थे सीदत् १०, ४६, १;
 १६०१
 " गर्भः १, ७०, ३; १७६ ।
 ३, १, १२-१३; ४५८-५९ ।
 ३, ५, ३; ४७२

अपाम् गर्भं प्र० आ विवेश ७,९,३;
१६५७

" नपात् १,१४३,१, ३१८।
१०,८,५, १५३८

अपां नपात् [देवता] २,३५,१-१५;
२४२२-३६

अपां सध.स्थे-स्थः १०,४६,२, १६०२
अपाक. ६,११,४, १००३। ६,१२,२,
१००७

अपाकचक्षाः ८,७५,७, १३७९

अपाक् ४,१,११, ६३७

अपूर्व्यः ३,१३,५; ५७८

अप्तरः ३,२७,११, ५४७

अप्यः १,१४५,५, ३३७

अप्रतिष्कृतः ३,२,१४, १७४०

अप्रमृष्य. २,३५,६, २४२७

अप्रयुच्छन् १,१४३,८; ३२५। ३,५,६,
४७५। १०,८८,१६; २४१२। अथर्व०
२,६,३, २३२१

अप्रायुः दिवातरात् १,१२७,५, २७६

अप्रोषिवान् ८,६०,१९, १४०७

अप्सरसौ (सः)। अथर्व० ६,११८,१,
२३८१

अप्सुजाः ८,४३,२८, १३३७

अप्सु श्रितः ३,९,४; ५०३

अप्सुषद् ३,३,४; १७४६। अथर्व०
१२,२,४, २२३२

अभिद्युः ८,७५,६, १३७८

अभिमाति जनानां १०,६९,५, १६२९

अभिमाति जित् अथ० २,६,३, २३२१

अभिशास्तिचातनः ३,३,६, १७४७

अभिशास्तिपा अथर्व० ४,३९,९; २२८२

अभिशास्तिपावा ७,११,३, ११६८

अभिशास्तिपावा यज्ञानाम् १, ७६, ३;
२३१

अभिशोक. अथर्व० १,२५,३, २२७७

अभिप्री. १,९८,१; १७२४

" अध्वराणाम् ८,४४,७, १३४९

अभिष्वसन् एति १,१४०,५; २९६

अभिष्टिः [हंद्ः] वा० य० २०,३८;
२०१६

अमल्यः १,४४,१, ८६। १४४,११,

९६। १,५८,३, ११२। १,७०,४;

१७७। ३,१०,९; ५१७। ३,११,२;

५१९। ३,२४,२, ५२८। ३,२७,५-७;

५४१-४३। ४,१,१, ६३१। ४,८,१,

७०४। ५,१४,१-२; ८६०-६१।

५,१८,१-२, ८८१-८२। ६,३,६,

९३८। ६,१२,३, १००८। ६,१६,६

१०४७। ७,१,२३, ११२२।

७,१५,१०; ११८६। ८,११,५, १२१८।

८,१९,३; १२२६। ८,१९, २४;

१२४७। ८,१०२, १७; १४७९।

१०,२१,४; १५८४। १०,७९,१;

१६३७। १०, १२२, ३, १६७७।

१०, १४०, ४, १६८७। ३, २, ११.

१७३७। ६,९,४-७, १७९०-९३।

१०,८७,२१, १८४८। १०,११८,६;

१८५८। वा० य० २१,१५, २०४०।

२८,३; २०८६। २८,१७, २०९८।

अथर्व० ७,८४,१, १८६६

अमित्रदम्भन ४,१५,४; ७५२

अमीवचातनः १,१२,७; १६। अथर्व०

१,२८,१, २२९३

अमूरः १,१४१,१२, ३१६। ३,२५,३,

५३४। ३,१९,१, ६१०। ४,६,२;

६८३। ४,११,५, ७३२। ६,१५,१७,

१०३९। ७,९,३, ११५७। ८,७४,७,

१४४८। १०,४,४, १५०९।

१०,४६,५; १६०५। ४,४, १२,

१८२४। ऋ० प्रैष ४, २१३२

अमृक्तः ३,११,६; ५२३

अमृतः १,२६,९; ३६। १,४४,५;

९०। १,५८,१, ११०। १,६८,४,

१५७। १,७७,१, २३४। २,१०,१२;

४०९-१०। ३, १, १८, ४६४।

३,२९,५; ५६२। ३,२९,१३, ५७०।

३,१४,७; ५८७। ३,२०,२; ६१६।

४,२,१; ६४७। ४,२, ९; ६५५।

४,३,३; ६६८। ४,११,५, ७३२।

५,१८,५, ८८५। ६,४,२; ९७२।

६,५,५, ९८३। ६,१५,६; १०२८।

६,१५,८; १०३०। ६,४८,१, १०९०।

७,४,४, ११३७। ७,१६,१, ११९२।

८,२३,१९, १२८८। ८,७१,११,

१४१९। ८, ७४, ५; १४४६।

१०,४५,७; १५९५। १०,९१,११;

१६६१। ३,३,१; १७४२। ४,५,२;

१७५९। ६,७,४; १७७६। १,१३,५;

१९१०। १०,७०,११, २००२

अथर्व० १२,२,३३, २२४६

अमृतः वयोभि. १०,४५,८; १५२६

अमृतं म आसन् (आस्ये) ३,२६,७;

१७५६

अमृतस्य केतुः ६,७,६, १७७८

" नाभिः ३,१७,४, ६०३

" रक्षिता ६,७,७; १७७९।

६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः विश्वा १,७२,१;

१९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोर्वष्टः १०,८७,२, १८२९

अरम् विश्वस्यै १,६६, ५; १३८

अंक्रत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४;

६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१;

६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४;

१०२६। ८,१९,१, १२२४। ८,१९,२१;

१२४४। १०, २, १; १४९९।

१०,३,६; १५०४। १०,४५,७;

१५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

" दिवः इव २,२,२, ३८६।

" दिवस्पृथिव्योः २,२,३; ३८७।

१०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

" रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

अरतिः विशेषां वसूनां १०, ५८, ७, ११६
 अरपाः [वायुदेवता] ८, १८, ९, २४५७
 अरित्राः दमाम् १०, ४६, ७; १६०७
 अरुष ३, ७, ५, ४९४ । ६, २९, ६,
 ५६३ । ४, १५, ६; ७५४ । ५, १२, ६;
 ८५३ । ६, ३, ६, ९६८ । ६, ४८, ६;
 १०९५ । १०, १, ६; १४९० । ६, ८, १;
 १७८०
 अरुष कृष्णासु ३, १५, ३, ५९०
 " वनेषु ५, १, ५; ७५२
 अरुषं अरिभ्रत १०, ४५, ७, १५९५
 अरुषस्तूपः ३, २९, ३; ५६०
 अर्कः त्रिधातुः ३, २६, ७, १७५६
 अर्चङ्गमासः १० ४६, ७, १६०७
 अर्चिः अथर्व० १, २५, २; २२७६
 अर्चिषा असौ अस्यवै ५, १७, ३; ८७८
 अर्णवः ३, २२, २, ६२४ । १०, ११५, ३,
 १६६८
 अर्थ हि अस्य तरणिः ३, ११, ३, ५२०
 अर्थि मह्ना देवस्यदेवस्य १०, १, ५
 १४८९
 अर्थः ४, १, ७, ६३३ । ४, २, १२; ६५८ ।
 ७, ८, १, ११४९ । १०, ११५, ५;
 १६७२ । १०, १९१, १, १७१६ ।
 ४, ४, ६, १८१८ । २, ३५, २, २४२३
 अर्थ मनीषा १, ७०, १; १७४
 अर्थः विशाम् १०, २०, ४; १५७४
 अर्थमा ५, ३, २, ७८०
 अर्थमा त्वम् २, १, ४, ३७२
 अर्थमास्त्वया सुधातुः १, १४१, ९, ३१३
 अर्वन् अर्वा ६, १२, ६, १०११
 अर्वन्ती तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३,
 १३५
 अर्हन् १, ९४, १; २५६ । १०, २, २;
 १४९३ । २, ३, १; १९४२
 अवनः ८, ७२, १०-१२; १४३३-३५ ।
 अवमः, बहूनाम् २, ३५, १२, २४३३
 अवश्रै ६, १२, ३; १००८
 अवसि पुत्रो मातरा विचरन् उप-
 दै० [अग्निः] ३१

१०, १४०, २, १६८५
 अत्रात. ६, १६, २०, १०६१
 अवि. (अयंरामाद्याम्) अथ०
 १२, २, १९; २२४५
 अविता ३, १९, ५, ६१४ । १०, ७, ७,
 १५३३
 " ग्रामेषु १, ४४, १०; ९५
 " यज्ञस्य प्र- ३, २१, ३, ६२०
 अविष्यत् अनुद्रे ष्वता धन्वना इत्-
 १०, ११५, ६; १६७१
 अवृकः ६, १५, ३; १०२५
 अव्यथ्यः ३, ३५, ५, २४२६
 अशीर्षः ४, १, ११, ६३७
 अश्रितः ४, ७, ६; ६९८
 अश्वः १०, १८८, १, १८६३
 अश्वदावन - वा ५, १८, ३; ८८३
 अश्विन् - श्री ७, १, १२, ११११
 अश्विना [देवता] ७, ४१, १, २४३७
 असन्दिग्ध ४, ४, २; १८१४
 अमित. अथ० ३, २७, १; २१६१
 असिन्वन् जिह्वया वनानि अत्ति
 १०, ७९, २, १६३८
 असु यन्, स्वम्- १०, १२, १,
 १५४९
 असुरः ४, २, ५; ६५१ । ५, १२, १,
 ८४८ । ५, १५, १, ८६६ । ७, ६, १;
 १८०३ । ७, २, ३, १९७६, अथर्व०
 ५, २७, १, २०७२ । वा०य० २७, १२;
 २०६१
 असुरहन् - हा ७, १३, १, १८१०
 " विपश्चिताम्- ३, ३, ४; १७४५
 अस्ता ४, ४, १, १८१३
 अस्तृतः ६, १६, २०, १०६१
 अस्तृतयज्वा ८, ४३, १; १३१०
 अस्त्राता १०, ४, ५, १५१०
 अस्त्रयु ६, ४८, २; १०९१ । ७, १५, ८,
 ११८४ । ८, १९, ८, १२३१ ।
 १, १४२, १०, १९२७
 अस्त्रिध् १, १३, ९, १९१४ । ५, ५, ८

अस्त्रमा १०, ८, २, १५३५
 अस्त्रमाण ३, २९, १३, ५७०
 अहिः १, ७९, १, २४४
 अहिस्त्रयमानः १, १४१, ५, ३०९
 अहोरात्रे विभ्रन् अथ० १०, २, ४९;
 २२६२
 अहयः ८, ६०, १६; १४०४
 अहयाणः ४, ४, १४; १८२६
 आकृति [देवता] अथ० १९, ४, २-४,
 २२१०-२२१२
 आघृगावसु ८, ६०, २०, १४०८
 आजुह्वान ७, १६, ३; ११९४ ।
 १०, ११०, ३, २०१० । वा०य०
 २८, ३, २०८६ । २९, २८; २१२०
 " [इन्द्रः] वा०य० २०, ३८;
 २०१६
 आततान यः भानुना पृथिवीम्, ग्राम्
 रोदमी, अन्तरिक्षम् - १०, ८८, ३;
 २३९९
 आतनि २, १, १०; ३७८
 आदित्य [वरुणः] ४, १, २; २४४६
 आदित्याः [देवता] अथ० ३, २७, १,
 २१६१
 आदेवः मर्त्येषु - ४, १, १, ६३१
 आष्टप. २, १, ९, ३७७
 आध्रस्य चित पिता १, ३१, १४, ६३
 आनव ८, ७४, ४, १४४५
 आप [देवता] ४, ५८, १-११,
 १८९५-१९०५
 आपप्रियवान् रोदमी अन्तरिक्षम्
 १, ७३, ८; २१२
 आपि, नेदिष्ठः १, ३१, १६, ६५ ।
 ८, ६०, १०, १३९८
 आपृच्छयः १, ६०, २; १२०
 आप्यम्, नेदिष्ठम् ७, १५, १; ११७७
 आबाधः ८, २३, ३, १२७२
 आयजिः ८, २३, १७; १२८६
 आयजिष्ठः २, ९, ६; ४०८ । १०, २, १,
 १४९२

आयवे वनिधाचित्

अयुः १, ३१, २, ५१

आयुः १०, २०, ७, १५७७ ।

१०, ४५८, १५९६

आयुधामिमान् ५, २, ३, ७६९

आयो युवान् ४, १, ११, ६३७

आविष्टय, आसुआसु १, ९५, ५, १८७२

आपृणान्, अप. देवानाम् ४, १, २०, ६४६

आशव उपयुज्यन्ते अस्य १, १४०, ४, २९१

आशु ४, ७, ४, ६९६

आशुहेम २, ३५, १, २४२२

आश्वपवन् ४, ३, ३, ६६८

आसन ६, ७, १, १७७३

आमन्ते देवाय अधिनाकस्य रोचने

दिवि [मरुतः] १, १९, ६, २४४३

आसुर ३, २९, ११, ५६८

आस्य चक्रिरे, त्वा आदित्यास.

२, १, १३, ३८१

आहाव, महाम् ६, ७, २, १७७४

आहुत २, ८, २, ३९८ । ३, २४, ३,

५२९ । ५, ११, ३, ८४४ । ५, २८, ५,

९३७ । ६, १६, ३४, १०७५ ।

८, १९, २५, १२४८ । ८, ४३, १३,

१३२२ । ८, ७५, ३, १३७५ ।

१०, ११८, ३, १८५५ । १०, ११८, ४,

१८५६ । १, १६, ३, १८८१ । अथ०

१२, २, १८, २२४४

आहुतः गृतेभिः २, ७, ४, ४४४

आस्यानि सप्त तव अथ० ४, ३९, १०,

२२८३

दूडः [देवता] वा० य० २०, ३८, ५८;

२०१६, २०२८ । २१, १४, ३२, २०३९;

२०५१ । २७, १४, २०६३ । २८, ३, २६;

२०८६, २०९७ । २९, २८, २१२०

क्र० प्रैप ४, २१३२ अथर्व० ५, २७, ४,

२०७५

इडा (इळा) [देवता] अथ० ५, २७, ९;

२०८०

इद्धः १, ६६, ९, १४२

इधानः १, ७९, ५, २४८

इधान. आभिभि. विश्वेभिः ६, १०, २,

९९४ । ६, १२, ६, १०११

इधानः देवेभिः ६, ११, ६; १००५

इध्मः [अग्निदेवता] १, १३, १, १९०६ ।

१, १४२, १, १९१८ । १, १८८, १

१९३१ । २, ३, १, १९४२ । ३, ४, १

१९५३ । ५, ५, १, १९६४ । ७, २, १;

१९७४ । ९, ५, १, १९८१ । १०, ७०, १;

१९९२ । १०, ११०, १; २००३ ।

वा० य० २८, १; २०८४ । अथ०

५, १२, १, २००३

इनः १०, ३, १; १४९९

इनस्य इनः २, १, ३, ३७१

इन्द्रवः अथ० ७, १०९, ६; २३७०

इन्द्रुः अन्धस्य १०, ११५, ३, १६६८

इन्द्रुः ९, ५, ९, १९८९

इन्द्रः ९, ५, ७, ९; ९८७, ९८९, अथ०

१२, २, ७, २२६०; वा० य० २०, ३६,

४०-४६, २०१४; २०१८-२०२४ ।

२८, १-७, ९-११; २०८४-९० ।

२०९२-९४ । २८, २४-३४, २०९५-

२१०६ । अथ० १९, ५५, ६; २२७४ ।

१, ७, ३; ४-७, २२८६, २२८७-२२९०

इन्द्रः [देवता] १, १४२, १२-१३;

१९२९-३० । ७, ४१, १, २४३७ ।

अथ० ५, २९, १०, २३१४ । वा० य०

२०, ५६-६६, २०२६-२०३६ । अथ०

१, ७, ३; २२०६ । ३, २१, ८; २३६२

इन्द्र. दाशुषे मर्त्याय ५, ३, १; ७७९

इन्द्रः त्वम् २, १, ३; ३७१

इन्धानः १, १४३, ७; ३२४

इरज्यन् जन्तुभिः १०, १४०, ४, १६८७

इर्यः ७, १३, ३, १८१२

इळ [अग्निदेवता] १, १३, ४; १९०९ ।

१, १४२, ४, १९२१ । १, १८८, ३;

१९३३ ।

२, ३, ३; १९४४ । ३, ४, ३, १९५५ ।

५, ५, ३; १९६६ । ७, २, ३, १९७६ ।

९, ५, ३; १९८३ । १०, ७०, ३; १९९४ ।

१०, ११०, ३, २००५ । अथ० ५, १२, ३;

२००५

इळस्पदे हपयन् १०, ९१, १; १६५१

इळस्पदे न्मसीदः ६, १, २; ९४०

इळा [देवता] पश्य 'देव्य तिष्ठा.' १,

१४२, ९, १९२६

इळा त्वं गतं हिमा २, १, ११, ३७९

इळायास्पुत्रः ३, २९, ३; ५६०

इषाः सहस्रिणीः दधत् १, १८८, २, १९३२

इषयन् ६, १, २, ८; ९४०, ९४६

इषितः १०, ११०, ३; २०१० ।

३, ४, ३, १९५५

इषितः वा० य० २९, २८, ३४

२१२०, २१२६

इषितः देवेभिः ३, ३, २; १७४३

इषिरः, यज्ञे ३, २, १४, १७४०

इष्टयः तस्मिन् सन्ति १, १४५, १,

३३३

इष्टिः १, १४३, ८, ३६५ । ६, ८, ७,

१७८६

ईत्थयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्-

[मरुतः] १, १९, ७; २४४४

ईडानः अथ० ५, २, ७; २०७५

ईडितः वा० य० २८, २६, २०९७

ईडितः, देवैः [इन्द्रः] वा० य०

२०, ३८; २०१६ । २८, ३, २०८०

ईडेन्यः वा० य० २८, २६, २०९७

ईड्यः १, १, २; २ । १, १२, ३; १२ ।

१, ७५, ४; २२७ । २, १, ४, ३७२ ।

३, ५, ६, ९; ४७५, ४७८ । ३, ९, ८;

५०७ । ३, २७, ४; ५४० । ३, २९, ७;

५६४ । ३, १७, ४, ६०३ । ४, ७, २;

६९४ । ६, १, २; ९४० । ६, १३, १;

१०१२ । ६, १५, २८; १०२४, १०३० ।

७, १५, १०; ११८६ । ८, ११, १;

१२१४ । ८, ४४, ७; १३४९ ।

८,७४,५; १४४६ । १०,३,४;
१५०२ । ३,२६,२; १७२८ ।
१,१८८,३; १९३३ । १०,११०,३;
२०१० । वा० य० २१,१४, २०३९।
२८, २६, २०९७ । २९, २८,
२१२० ।
ईक्ष्यः अध्वरेषु - ४,७,१; ६२३
५,२२,१; ८९९। ८,११,१०, १२२३।
८,६०,३, १३९१
ईक्ष्यः दिवेदिवे ३,२९,२, ५५९
ईक्ष्यः विष्णु- ६,२,७; ९५८
ईक्षितः १,१३९,७, २९१ ।
१,१३,४; १९०९ । १,१४२,४,
१९२१ । ५,५,३, १९६६ । क्र० प्रैष
४, २१३२ ।
ईक्षेन्यः १,७९,५, २४८ । ३,२७,१३;
५४९ । ५,१४,५; ८६४ । ७,९,४;
११५८ । १०,४६,९, १६०९। ७,२,३,
१९७७ । १०, ११८, ३; १८५५ ।
९,५,३; १९८३ ।
ईवान् ४,१५,५,७५३। ४,४,६; १८१८
ईशानः ७,१५,११; ११८७। ७,६,४,
१८०६
ईशिषे वार्यस्य दात्रस्य- ८,४४,१८;
१३६०
ईशे क्षत्रियस्य बृहत् - ४,१२,३,
७३६
ईशे देववीतेः विश्वस्य - १०,६,३,
१५२२
ईशे वाजस्य रायश्च, परमस्य ४,१२,३;
७३६
ईशे सुवीर्यस्य सौभगस्य रायः
स्वपत्यस्य गोमतः, वृत्रहथानाम्-
३,१६,१, ५९४
उक्थी वा० य० २८,३३, २१०४
उक्थ्यः १,७९,१२, १५५ । ३,१०,६
५१४ । ३,२,१३, १७३९ । ३,२,१५;
१७४१ । ३,२६,२; १७५४ । अथ०
१२,२,१०; २२३६

उक्थ्यः देवानाम्- ५,२६,६; ९२५
उक्षत्-न् १,१२२,४; १६७८
उक्षमाण २,२,४; ३८८
उक्षाः १,१४६,२; ३३९ । ३,७,६,
४९५
उक्षाज्ञ. ८,४३,११, १३२०; अथ०
३,२१,६, २३६०
उक्षितः १,३६,१९, ८४
उक्षिते [उपासानक्ते] २,३,६, १९४७
उग्रः १,१२७,११, २८२ । ४,२,१८,
९६४ अथ० १९,६५,१, २३४९
७,१०९, (११४)१; २३६५
उग्रः [मरुत] १,१९,४, २४४१
उग्रजित् अथ० ६,११८,१, २३८१
उग्रपश्यः अथ० ७,१०९,६; २३७० ।
६,११८,१,२; २३८१-८२
उत्पत्तन्, दिवम्- अथ० १९,६५,१;
२३४९
उज्जिद् वा० य० २८,२५, २०९६
उपमातिः ८,६०,११, १३९९
उपवक्ता ४,२,५; ७१६
उपसथाः ७,१५,१; ११७७
उपस्थसत् १०,१५६,५, १७०७
उपाके [उपासानक्ते] ६,१४२,७,
१९२४ । ३,४,६; १९५८
उभयाविन्-वी १०,८७,३; १८३१
उराण. ४,६,३-४, ६८४-८५
४,७,८; ७००
उरुकृत् ८,७५,११, १३८३
उरुगायः ३,६,४, ४८३
उरुज्याः ५,८,६, ८२६
उरुप्रथा [इन्द्र] वा० य० २०,३९
२०१७
उर्विया २,३५,८, २४२९
उशन २,३६,४ । २,३७,६ ।
१०,१६,१२; १५६८ । १०,९१,१३;
१६६३ । १०,७०,९; २००५
उशन् समानान्- ६,४,१; ९७१
उशती १०,७०,५-६; २००१-२

उशिक १,६०,४, १२२ । ३,११,२,
५१२ । ३,२७,१०; ५४६ ।
१०,४५,७, १५९५ । ३,२६,४;
१७३० । ३,३,७-८, १७४८-१७४९
उषबुधः १,१२७,१०; २८१ । ४,६,८;
७८९ । ६,१५,१, १०२३ । ३,२,१४;
१७४०
उषर्भुत् १,६५,९, १३० । ६,४,२,
९७२
उषसः चकितानः ३,५,१; ४७०
उषसः महान् १,९४,५; २६०
उषसा अग्ने आ अगोवि ७,८, १;
११४९
उषसां अग्ने भाति ७,९,३, ११५७
उषसां हृधानः १०,४५,५; १५९३
उषसां जारः ७,९,१, ११५५
उपायानक्ता [देवते] १, १३, ७;
१९१२ । १, १४२, ७, १२२४ ।
१,१८८,६, १९३६ । २,३,६, १९४७।
३,४,६; १९५८ । ५,५,६; १९६९ ।
७,२,६, १९७९ । ९,५,६, १९८६ ।
१०,७०,६, १९९७ । १०,११०,६;
२००८ । अथ० ५,२७,८, २०७९ ।
५,१२,६; २००८
उपासानक्ते [देवते] वा० य० २०,४१;
२०१९ । २०, ६०; २०३१ ।
२१, १७, ३५; २०४२, २०५४ ।
२७,१७, २०६६ । २८,६,२९, २०८९,
२१०० । २९,६,३६, २१११, २१२३ ।
क्र० प्रैष ७, २१३५
ऊर्जः पुत्रः १,९६,३, १८८१
ऊर्जयन् २,३५,७, २४२८
ऊर्जमनः ६,४,४, ९७४
ऊर्जो नपात् १,५८,८; ११७। २,६,२;
४३४ । ३,२७,१२, ५४८ । ५,१७,५,
८८० । ६,६,२५; १०६६ । ६,४८,२,
१०९१ । ७,१६,१, ११९२ । ७,१७,६;
१२०९ । ८, १९, ४, १२७७ ।

८, ४४, १३, १३५५। ८, ६०, २;
१३२०। ८, ७१, ३, ९, १४११, १४१७।
८, ८४, ४, १४५७। १०, २०, १०,
१५८०। १०, ११५, ८, १६७३।
१०, १४०, ३, १६८६
ऊर्जापतिः १, २६, १; २८। ८, १९, ७;
१२३०। ८, २३, १२; १२८१।
८, ६, ९, १३९७
ऊर्जाहृतिः ८, ३९, ४; १३०३
ऊर्ध्वः १०, ७०, १, १९९७
ऊर्ध्वः जिह्वाम्— २, ३५, ९, २४३०
ऊर्ध्वं शोचिः ६, १५, २, १०२४
ऊर्णम्रदाः [बहिः] ५, ५, ४, १२६७
ऋग्मिथः ८, ०३, ३, १२७२।
८, ३९, १, १३००। ६, ८, ४; १७८३
ऋजूयमानः पृथिवीम् उत धाम्
१०, ८८, ९, २४०५
ऋजन् १, ९५, ७, १८७४
ऋजमानः १, ९६, ३, १८८१
ऋतः १, ६५, ३, १२६। १, ६८, ४,
१५७। १, ६८, ५, १५८। ५, १५, २;
८६७। ८, ६०, ५, १३९३
१०, ११०, ११, २०१८
ऋतम् ३, ७, ८, ४९७। ४, २, १४;
६६०। ७, ७, ६, ११४६
ऋतस्य गोपा १०, ११८, ७, १८५९
ऋतस्य चक्षुः १०, ८, ५, १५३८
ऋतस्य दीदिविः १, १, ८, ८
ऋतस्य धारा १, ६७, ७, १५०
ऋतस्य पतिः अथ० ६, ३६, १; २१८१
ऋतस्य पदम् १०, ५, २, १५१४
ऋतस्य माता [उषासानक्ते] १, १४२, ७,
१९२४। ५, ५, ६, १९६९
ऋतस्य योना गर्भे सुजातः १, ६५, ४,
१२७
ऋतस्य वृषा ५, १२, १; ८४८
ऋते आजातः ६, ७०, १; १७७३
ऋतचित् १, १४५, ५; ३३७। ४, ३, ४,

६६९। ५, ३, ९; ७८६
ऋतजात १, ३६, १९, ८४। १, १४४, ७,
३३२। १, १८९, ६; ३६६। ३, ६, १०,
४८९। ३, २०, २१, ६१५। ६, १३, ३,
१०१४
ऋतप्रजातः १, ६५, १०; १३३
ऋतप्रवीत १, ७०, ७, १८०
ऋतावान्—वा १, ७७, १; २, ५,
२३४—३५, २३८। ३, २०, ४; ६१७।
४, २, १; ६४७। ४, ६, ५, ६८६।
४, ७, ३, ७; ६२५, ६९९। ४, १०, ७,
७२६। ५, १, ६; ७६०। ५, २५, १,
९११। ६, १२, १; १००६। ६, १५, १३;
१०३५। ७, १, १९, १११८। ७, ३, १,
११२४। ७, ७, ४, ११४५। ८, १०३, ८,
१२६४। ८, १३, १९; १२७८। ८, ७५, ३;
१३७५। १०, २, २, १४९३। १०, ६, २,
१५२१। १०, १४०, ६, १६८९।
३, २, १३; १७३९। २, ३५, ८, २४२९
ऋतावान्—वा अथ० ६, ३६, १, २१८१
ऋतावान् [वरुणः] ४, १, २, २४४९
ऋतावृष्ट ३, २, १; १७२७।
१, १४२, ६; १९२३
ऋतुपतिः १०, २, १; १४९२
ऋतुपाः ३, २०, ४, ६१७
ऋतुपाः ऋतूनाम् ५, १२, ३, ८५०
ऋत्विक् १, १, १; १। १, ४४, ११,
९६। १, ४५, ७, १०६। २, ५, ७,
४३१। ३, १०, २; ५१०। ५, २२, २,
९००। ५, २६, ७; ९२६। ८, ४४, ६;
१३४८। १०, ७, ५, १५३१।
१०, २१, ७, १५८७
ऋत्विजः ३, २९, १०; ५६७
ऋत्विजम् तव २, १, २; ३७०
ऋधद्धारः ६, ३, २, ९६४
ऋन्धत् १०, ११०, २; २००९
ऋमु ३, ५, ६, ४७५। ५, ७, ७, ८१७
ऋम्वा १०, २०, ५, १५७५।
१०, ६९, ७, १६३१
ऋषभः वा० य० २१, ३८, २०५७

ऋषिः ३, २१, ३; ६२०। ६, १४, २;
१०१९। ऋ० ९, ६६, २०; साम०
२, ७, १, १२
ऋषिकृत् १, ३१, १६; ६५
ऋषीणां पुत्र अथ० ४, ३९, ९; २२८२
ऋषूणां पुत्रः ५, २५, १, ९११
ऋष्वः १, १४६, २; ३३९। ३, ५, ७;
४७६। ४, २, २; ६४८
ऋक् १०, १, ५, १५१३। १०, ९१, ३;
१६५३। ६, ९, ५; १७९१। अथ०
६, ३६, ३; २१८३
ऋम अस्य तिमं चित् ६, ३, ४, ९६६
ऋम ते कृणम् १, ५८, ४, ११३।
४, ७, ९, ७०१।
ऋयामः त्वम् शरीरे मांसं असुम्—
अथर्व० ५, २९, ५; २३०९
ओजसा विरुक्मता पुरुचित् दीधानः
१, १२७, ३, २७४
ओजसा स्थिरा अन्नानि निरिणाति
१, १२७, ४; २७५
ओजायमान तन्वश्च शुम्भते
१, १४०, ६; २९७
ओजिष्ठः चर्पणीमदाम् वा० य० २८, १,
२०८४
ओषधीः विश्वा आविवेश १, ९८, २;
१७२५
ओषधीभिः उक्षितः ५, ८, ७, ८२७
ओषधीनां गर्भः ३, १, १३; ४५९
ओषधीषु विभृतः १०, १, २, १४८६
औषमः अग्निः [देवता] १, ९५ (१-११);
१८६८-७८
ककुत् ८, ४४, १६; १३५८
ककुम्भान् १०, ८, २; १५३५
कण्वतमः १०, ११५, ५, १६७०
कण्वसखा १०, ११५, ५; १६७०
कतिक्कत् १, १२८, ३; २८५। ९, ५, १;
१९८६

कम् ८, ४४, २४; १३६६
 कपि अथ० ६, ४९, १; २३३७
 कविः १, १२, ६-७; १५-१६ ।
 १, ३१, २; ५१ । १, ७६, ५; २३३ ।
 १, ७९, ५; २४८ । १, १२८, ८, २९० ।
 २, १, १३; ३८१ । २, ६, ७; ४३९ ।
 ३, २८, ४; ५५५ । ३, २९, ५, १२;
 ५६२, ५६९ । ३, १९, १, ६१० ।
 ३, २३, १, ६२७ । ४, २, १२, ६५८ ।
 ४, २, २०, ६६६ । ४, ३, १६, ६८१ ।
 ४, १५, ३; ७५१ । ५, १, ६, १२;
 ७६०, ७६६ । ५, ४, ३; ७९२ । ५, ११, ३
 ८४४ । ५, १४, ५, ८६४ । ५, १५, १,
 ८६६ । ५, २१, ३; ८९७ । ५, २६, ३,
 ९२२ । ६, १, ८; ९४६ । ६, १५, ७,
 १०२९ । ६, १५, ११, १०३३ । ७, ४, ४,
 ११३७ । ७, ९, ३, ११५७ । ७, १५, २,
 ११७८ । ८, ३९, १, ९, १३००, १३०८ ।
 ८, ४४, १२, २१; २६, ३०; १३५४,
 १३६३, १३६८, १३७२ । ८, ७५, ४,
 १३७६ । ८, ६०, ३, ५, १३९१,
 १३९३ । ८, १०२, १, ५, १७-१८,
 १४६३-१४६७, १४७९-८० ।
 १०, २०, ४, १५७४ । १०, १४, १;
 १६८४ । ३, २, ७, १०, १७३३, १७३६ ।
 ३, ३, ४, १७४४ । ६, ७, १, ७,
 १७७३, १७७९ । ७, ६, २, १८०४ ।
 १०, ८७, २१; १८४८ । १, ९५, ४, ८;
 १८७१, १८७५ । १, १३, २, ८;
 १९०७, १९१३ । १, १४२, ८;
 १९२५ । १, १८८, १, १९३१ ।
 १०, ११०, १; २००८ । ५, ५, २,
 १९६५ । १०, ८८, १४, २४१० ।
 कविः वा० य० २८, ३४, २१०५ ।
 २९, २५; २११७ । अथ० १९, ३, ४;
 २२०८
 कविः काव्यस्य १०, ९१, ३; १६५३ ।
 कविऋतुः १, १, २; २ । ३, २७, १२;
 ५४८ । ३, १४, ७, ५८७ । ५, ११, ४,
 ८४५ । ६, १६, १३; १०६४ ।

८, ४४, ७, १३४९ । ३, २, ४; १७३०
 कवितमः ३, १४, १; ५८१ । ७, ९, १;
 ११५५
 कविप्रशस्तः ५, १, ८, ७६२
 कविशस्त ३, ११, ४; ६२१ । ३, २९, ७,
 ५६४
 कवीनां पदवीः ३, ५, १; ४७०
 कामः अथ० ३, २१, ४; २३५८
 काम भूतस्य भव्यस्य अथ० ६, ३६, ३
 २१८३
 काम्यः यमस्य १०, २१, ५; १५८५
 कारू [देव्यौ होतारौ] १०, ११०, ७,
 २००९ । ७, २, ७, १९८०
 कीलालपे (चतु०) १०, ९१, १४; १६६४
 कूचिदर्या ४, ७, ६; ६९८
 कृष्यः ६, २, ८, ९५९
 कृपनील १०, २०, ३, १५७३
 कृष्ण-अध्वार २, ४, ६; ४२१ । ६, १०, ४,
 ९९६
 कृष्णजहम् (हाः) १, १४१, ७, ३११
 कृष्णपवि. ७, ८, २, ११५०
 कृष्णयामः ६, ६, १; ९८६
 कृष्णवर्तनिः अथ० ८, २३, १९,
 १२८८ । अथ० १, २८, २, २२९४
 कृष्टीनां पति ७, ५, ५; १७९८
 केतुः ४, ७, ४; ६९६ । ७, ६, २, १८०४
 केतुः दैव्यः १, २७, १२, ४९
 केतुः अध्वराणाम् ३, १०, ४, ५१२
 केतुः अमृतस्य ६, ७, ६; १७७८
 केतु उषमाम् अह्नाम् ७, ५, ५; १८९८
 केतुः यज्ञस्य १, १२७, ६, २७७ ।
 ५, ११, २, ८४२ । ६, ७, ९, १७७४
 केतुः यज्ञानाम् ३, ३, ३; १७४४
 केतुः विदथस्य १, ६०, १; ११९
 केतुः विश्वस्य १०, ४५, ६, १५९४
 केतुना बृहता प्रयाति १०, ८, १; १५३४
 केवल. १, १३, १०, १९१५
 केशिनः [देवता] १, १६४, ४४; २४५६
 ऋतुः १, ६७, २; १४५ । १, ७७, ३;
 २३६ । ६, ९, ५; १७९१

ऋतुः एकः ६, ९, ५, १७९१
 ऋतुः देवानाम् ३, ११, ६, ५२३
 ऋतु. घुम्नितमः ते १, १२७, ९; २८०
 ऋतुविद् १०, २, ५; १४९६
 ऋत्वा चेतिष्ठः विशाम् १, ६५, ९; १३२
 ऋव्यवाहनः १०, १६, ११; १५६७
 ऋव्याद् अथर्व० १२, २, ३४-३९;
 २२४७-५२
 ऋव्यादः-त् १०, १६, ९, १०, १५६५-६६
 अथ० १२, २, ९-१०; २२३५-३६ ।
 ३, २१, ८-९, २३६२-६३ ।
 ऋणा १, ५८, ३, ११२ । ५, ७, ८; ८१८
 क्षत्रः वा० य० २८, ३४, २१०५
 क्षत्रभूत अथ० ७, ८४, १, १८६६
 क्षत्राणि धारयन् अथ० ७, ७८, २, २१९९
 क्षपावान् १, ७०, ५; १७८ । ७, १०, ५,
 ११६५ । ८, ११, २, १४१०
 क्षयः दिवि ३, २, १३, १७३९
 क्षयत् ३, २५, ३, ५३४
 क्षयत् महः राघवम् १०, १४०, ५;
 १६८८
 क्षेम १०, २०, ६, १५७६
 क्षेप्य. अथ० १२, २, ४९; २२६२
 क्षोद. १, ६५, ६; १२९
 क्षाम् जातस्य च जायमानस्य च
 १, ९६, ७, १८८५
 गणश्रीः ८, २३, ४; १२७३
 गर्भं ६, १५, १; १०२३ । १०, ८, २;
 १५३५ । १०, ४६, ५, १६०५
 गर्भं अदितेः ऋ० प्रैष २, २१३०
 गर्भं. अपसां बह्वीनाम् १, ९, ५, ४;
 १८७१
 गर्भं भगम् १, ७०, ३, १७६
 गर्भः चरथाम् १, ७०, ३, १७६
 गर्भः भुवनस्य १०, ४५, १; १५९४
 गर्भः वनानाम् १, ७०, ३; १७६
 गर्भः स्थाताम् १, ७०, ३; १७६
 गातु १०, २०, ४, १५७४
 गातुवित्तमः ८, १०३, १; १२५७

गायत्र्येवम्-पाः [इन्द्रः] १, १४२, १२, १९२२
 गार्हपत्य अथर्वं १२, २, ३४, ४४, २२४७, २२५७ । ६, १२१, २, २३८८
 गावः [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५
 गिर्वणाः (णस्) २, ६, २, ४३५
 गृहमानः ४, १, ११, ६३७
 गृहा चतन् १, ६५, १, १२४। १०, ४६, २, १६०२
 गृहा चरन् ३, १, ९, ४५५
 गृहा निषीदन् १, ६७, ३, १४६
 गृहा भवन् १, ६७, ७, १५०
 गृहा सन् १, १४१, ३, ३०७। ३, ५, १०, ४७९ । ५, ८, ३, ८२३
 गृहा हित ४, ७, ६, ६९८। ५, १९, ६, ८४७
 गृह्म ३, १, २, ४४८। ३, १९, १, ६१०। ७, ४, २, ११३५। ४, ५, २, १७५९
 गृध्नुः १, ७०, ११, १८४
 गृहपतिः १, १२, ६, १५। १, ३६, ५, ७२। १, ६०, ४, १२२। २, १, २, ३७०। ४, ९, ४, ७१५। ४, ११, ५, ७३२। ५, ८, १-२, ८२१ २२। ६, १५, १३, १९; १०३५, १०४१। ६, १६, ४२; १०८३। ७, १, १, ११००। ७, १५, २; ११७८। ७, १६, ५, ११९६। ८, ६०, १९; १४०७। ८, १०२, १, १४६३। १०, १२२, १; १६७५। १०, ११८, ६, १८५८। वा० य० २८, ३४; २१०५, अथ० १९, ५५, ३४, २१७१-७२
 गृहपतिः मानुषाम् विश्वामां विश्वाम् ६, ४८, ८; १०९७
 गोत्रभिद्व [इन्द्रः] वा० य० २०, ३८, २०१६
 गोपाः २, ९, ६, ४०८। ३, १५, २; ५८९। १०, ७, ७; १५३३। १०, ८, ५,

१५३८। १०, ६२, ५; १६२९। ६, ७, ७; १७७९। ९, ५, ९, १९८९
 गोपाः अध्वराणाम् १, १, ८, ८
 गोपाः ऋतस्य १०, ११८, ७; १८५९
 गोपाः जनस्य ५, ११, १, ८४२
 गोपाः भुवनस्य ऋ० प्रैष २, २१३०
 गोपाः विश्वाम् १, ९६, ४, १८८२
 गोपाः सतश्च भवतश्च भूरे १, ९६, ७, १८८७
 गौः गावः [देवता] 'गावः' (पश्य) ।
 ग्रा० उत अध्वरे ४, ९, ४; ७१५
 घर्मः [देवता] १, ११२, १, १८६७
 घर्मः अजस्रः ३, २६, ७, १७५६
 अथ० ६, ३६, १, २१८१
 घृणिः ६, १६, ३८, १०७२
 घृणीवान् १०, १७६, ३, १७०२
 घृतम् [देवता] ४, ५८, (१-११), १८९५-१९०५
 घृतम् अस्य अजस्रम् १०, ६९, २; १६२६
 घृतम् (अस्य) चक्षुः ३, २६, ७, १७५६
 घृतम् (अस्य) मेदन् १०, ६९, २; १६२६
 घृतम् (अस्य) वर्धनम् १०, ६९, २; १६२६
 घृतकेशः ८, ६०, २, १३९०
 घृतनिर्णिकृ ३, २७, ५, ५४१। ३, १७, १, ६००। १०, १२२, २, १६७६। २, ३५, ४, २४२५
 घृतपदी [सरस्वती] १०, ७०, ८, २००४
 घृतपृष्ठः ५, ४, ३, ७९२। ५, १४, ५; ८६४। १०, १२२, ४; १६७८
 घृतपृष्ठम् [बर्हिः] ७, २, ४; १९७७
 घृतप्रतीकः १, १४३, ७, ३२४। ३, १, १८; ४६४। ५, ११, १, ८४२। १०, २१, ७, १५८७
 घृतप्रसक्तः ५, ११, १; ८४२
 घृतयोनिः ५, ८, ६; ८२६
 घृतश्रीः १, १२८, ४; २८६। ५, ८, ३; ८२३। वा० य० २८, ९, २०९२

घृतस्तुः ५, २६, २; ९२१। १०, १२२, ५; १६८०
 घृताञ्ज ७, ३, १; ११२४
 घृताहवनः १, १२, ५; १४। १, ४५, ५, १०४। ८, ७४, ५, १४४६
 घृताहुत अथ० ४, २३, ३; २३३२
 घृष्टिः ४, २, १३ ६५९
 घोरः ४, ६, ६; ६८७
 घोरवर्षस [मरुतः] १, १९, ५, २४४२
 घ्नन् द्विषः अप ८, ४३, २३; १३३२
 चक्रानः । ५, ३, १०; ७८७
 चक्रान् ऋतस्य संदशः- ३, ५, २, ४७१
 चक्राणः विश्वा अमृतानि सप्ता- १, १७२, १; १९५
 चक्षिः ३, १६, ४; ५९७
 चक्षणि ६, ४, २; ९७२
 चक्षुः देवानां उत मानुषाणाम्- अथ० ४, १४, ५; २२२१
 चतुरक्ष १, ३१, १३, ६२
 चनोहितः ३, ११, २, ५१९। ३, २६, २-७, १७२८-१७३३
 चन्द्रः ५, १०, ४; ८३८। ६, ६, ७; ९९२। ३, ३, ५; १७४६। [देवता] अथ० ३, ३१, ६; २३४४
 चन्द्ररथः १, १४१, १२; ३१३। ३, ३, ५; १७४६
 चन्द्री वा० य० २०, ३७; २०१५
 चरथां गर्भः १, ७०, ३; १७६
 चरिष्णु धूमः ८, २३, १; १२७०
 चर्षणिप्राः ४, २, १३, ६५९
 चर्षणीधृत-तः [वरुणः] ४, १, २; २४४९
 चर्षणीनां सप्ताद् ३, १०, १; ५०९
 चष्टे आभि एकः विश्वं शचीभिः- [सूर्य देवता] १, १६४, ४४; २४५६
 चारुः १, ९४, १३, २६८। १०, १, २; १४८६। १०, २१, ७; १५८७। १, ९५, ५; १८७२। साम० १, १, ७, ३

चारुतमः ५, १, ९; ७६३
 चारुप्रतीकः २, ८, २, ३९८
 चिकित् १०, ३, १; १४९९
 चिकितानः ३, १८, २; ६०६
 चिकितुः ८, ५६, ५; २४५५
 चिकित्रः १०, ९१, ४-५; १६५४-५५
 चिकित्वान् १, ६८, ६; १५९ ।
 १, ७१, ७, १९१ । १, ७७, ५, २३८ ।
 १, १४५, १, ३३३ । २, ६, ८, ४४० ।
 ३, ७, ३, ९, ४९२, ४९८ । ३, २५, १,
 ५३२ । ३, २९, ८, ५६५ । ३, २९, १६,
 ५७३ । ३, १७, २; ६०१ । ३, १७, ५,
 ६०४ । ४, ३, ८; ६७३ । ४, ७, ५;
 ६९७ । ४, ८, ४, ७०७ । ५, २, ५, ७
 ७७१, ७७३ । ५, ३, ७; ७८४ । ५, १२, २,
 ८४९ । ५, २२, ३; ९०१ । ६, ५, ३;
 ९८१ । ८, ४४, ९, १३५१ । १०, ४, ४;
 १५०९ । १०, १२, २; १५५० । ४, ५, १२,
 १७६९ । १०, ११०, १, २००८ । वा० य०
 २९, २५; २११७
 चिकित्वान् परुषः-- १, ५३, १, १६१६
 चित्तस्य माता [आकृति देवता] अथ०
 १९, ४, २, २२१०
 चित्तिः १, ६७, १०; १५३
 चित्रः १, ९४, ५, २६० । २, ८, ४,
 ४०० । ३, ७, ९, ४९८ । ४, ७, ६;
 ६९८ । ६, ४, ६; ९७६ । ६, ६, ७;
 ९९२ । ६, ४८, २; १०९८ । ७, ३, ६;
 ११२९ । १०, १, २; १४८६ । १०, २, ६,
 १४९७ । ३, २, १५, १७४१ ।
 चित्रः वनेषु ४, ७, १, ७९३
 चित्रभ्रष्टः ६, ६, ७; ९९२
 चित्रभ्रजतिः ६, ३, ५; ९६७
 चित्रभानुः १, २७, ६, ४३ । २, १०, २,
 ४१० । ५, २६, २; ९२१ । ७, ९, ३;
 ११५७ । ७, १२, १; ११७१ ।
 ८, ४४, ६; १३४८ । १०, ५१, ३;
 १६१२ । १०, ६५, ११; १६३५
 चित्रमहसूहाः १०, १२२, १; १६७५ ।

चित्ररथ १०, १, ५; १४८९
 चित्रराधस्-धाः ८, ११, ९, १२२२
 चित्रयाम ३, २, १३; १७३९
 चित्रशोचिः ५, १७, २; ८७७ । ६, १०, ३
 ९९५ । ८, १९, २, १२२५
 चित्रश्रवस्तमः १, १, ५, ५ । १, ४५, ६,
 १०५
 चित्रा १, ६६, १; १३४
 चेकितानः ३, २९, ७; ५६४
 चेतनः २, ५, १, ४२५
 चेतन अध्वराणाम् ३, ३, ८, १७४९
 चेतिष्ठः १, ६५, ९, १३२ । ७, १६, १,
 ११९२ । १०, २१, ७; १५८७ ।
 वा० य० २७, १५; २०६४
 चेत्यः ६, १, ५, ९४३
 चोदः १, १४३, ६; ३२३
 चोदिष्ठः ८, १०२, ३; १४६५
 च्यवनः १०, ६९, ५-६; १६२९-३०
 जज्ञणाभवन् अर्चिषा ८, ४३, ८,
 १३१७
 जनयन् भुवना ७, ५, ७, १८००
 जनयोपन अथ० १२, २, १५, २२४१
 जनानां वसतिः ५, २, ६; ७७२
 जनिता रोदस्योः १, ९६, ४, १८८२
 जनिता वसूनाम् १, ७६, ४, २३२
 जनित्वम् (अग्नि एव) १, ६६, ८, १४१
 जन्यः १०, ९१, २, १६५२
 जनिमा अग्न अश्वस्य स्वरू च २, ३५, ६;
 २४२७
 जयन् १०, ४६, ५, १६०५
 जरद्विष्ट ५, ८, २, ८२२
 जरमाण १०, ११८, ५, १८५७
 जरमाणः जागृवद्भिः १०, ९१, १,
 १६५१
 जरयन् अरिम् २, ८, २, ३९८
 जराबोधः १, २७, १०, ४७
 जरिता ३, १५, ५; ५९२ । ८, ६०, १९;
 १४०७

जभुराणः तन्वा २, १०, ५; ४१३
 जह्वापाण १०, १६, ७, १५६३
 जविष्ठः मनः - (मः) ६, ९, ५; १७९१
 जागृविः १, ३१, ९, ५८ । ३, २४, ३;
 ५२९ । ५, ११, १, ८४२ । ६, १५, ८;
 १०३० । २, २, १२, १७३८ । ३, ३, ७;
 १७४८ । ३, २६, ३ १७५५
 जात १, ६६, ८, १४१ । १०, १, २-३;
 १४८६-८७ । १०, ४६, १, ३,
 १६०१, १६०३
 जातः अथर्वणा १०, २१, ५, १५८५
 जातः पृथिव्या नामां हवाया पदे
 १०, १, ६; १४९०
 जातः शीर्षित १०, ८८, १६, २४१२
 जातः सद्यः वा० य० २९, ११, ३६;
 २११६, २१२८
 जानवेदा १, ४४, १, ८६ । १, ४४, ४
 ८९ । १, ४५, ३; १०२ । १, ७७, ५,
 २३८ । १, ७८, १ २३९ । १, ७९, ४,
 २४७ । १, ९४, १, २५६ । १, १२७, १
 २७२ । २, २, १; ३८५ । २, २, १२,
 ३९६ । ३, १, २०, ४६६ । ३, १, २१;
 ४६७ । ३, ५, ४, ४७३ । ३, ६, ६,
 ४८५ । ३, १०, ३, ५११ । ३, ११, ४;
 ५२१ । ३, २८, १, ४, ६, ५५२, ५५५,
 ५५७ । ३, २९, २, ५५९ । ३, २९, ४;
 ५६१ । ३, १५, ४, ५२१ ।
 ३, १७, २-४ ६०१-३ । ३, ११, ८;
 ५२५ । ३, २५, ५, ५३६ । ३, २०, ३;
 ६१६ । ३, २१, १, ६१८ । ३, २२, १,
 ६२३ । ३, २३, १; ६२७ । ४, १, २०,
 ६४६ । ४, ३, ८; ६७३ ।
 ४, १२, १; ७३४ । ४, १४, १; ७४५ ।
 ५, ४, ४, ९-११, ७९३, ७९८-८०० ।
 ५, ९, १, ८२८ । ५, २२, २; ९०० ।
 ५, २६, ७; ९२६ । ६, ४, २; ९७२ ।
 ६, ५, ३; ९८५ । ६, १०, १; ९९३ ।
 ६, १२, ४, १००९ । ६, १५, ७, १०२९ ।
 ६, १५, १३; १०३५ । ६, १६, २९;
 १०७० । ६, १६, ३०; १०७१ ।

६, १६, ३६; १०७७ । ६, ४८, १; १०९० । ७, ३८, ११३१ । ७, ९, ४, ६; ११५८, ११६० । ७, १४, १, ११७४ । ७, १७, ३-४, १२०६ । ७, १०४, १४; १२१३ । ८, ११, ३-५, १२१६-१८ । ८, २३, १, १७, २२, १२७०, १२८६, १२९१ । ८, ४३, २, २३, १३११, १३३२ । ८, ७१, ७, ११, १४१५, १४१९ । ८, ७४, ३, ५; १४४४, १४४६ । १०, ४, ७, १६१२ । १०, ६, ५, १५२४ । १०, ८, ५; १५३८ । १०, १६, १; १५५७ । १०, १६, २, ४, ५, ९, १०, १५५८, १५६०-६१, १५६५-६६ । १०, ४५, १; १५९० । १०, ५१, १-२, १६११-१२ । १०, ५१, ७; १६१४ । १०, ६९, ८-९; १६३२-३३, १०, ९१, १२ १६६२ । १०, ११५, ६, १६७१ । १०, १४०, ३, १६८६ । १०, १५०, ३, १७०० । १०, १७६, २ १७०८ । १, ५९, ५, १७२१ । ३, ३, ८, १७४२ । ३, २६, ७, १७५६ । ४, ५, ११ १२; १७६८-६९ । ६, ८, १, १७८० । ७, ५, ७-८; १८००-१ । ७, १३, २; १८११ । १०, ८७, २, ५-७, ११, १८२९, १८३२-३४, १८३८ । १, ९९, १, १८६२ । ४, ५८, ८; १९०२ । ५, ५, १, १९६४ । १०, ११०, १; २००३

जातवेदा - वा० य० २७, २२, २०७१ । २९, १; २१०६ । २९, ३, २१०८ । २९, २५, २११७ । अथ० ७, ८४, १; १८६६ । ५, २७, १२; २०८३ । १, ९, ३, २१४२ । २, २९, २; २१५० । ५, ८, २; २१६४ । ७, ३४, १, २१९३ । ७, ३५, १; २१९४ । ७, ७४, ४, २१९७ । ७, १०६, १; २२०० । १९, ३, १, २२०५ । १९, ४, १, २२०९ । ७, १०८, २, २ २२२८, ३, १, १; २१५२ । ४, ३९, १०, १०; २२८३ । १०, ८८, ४-५, २४००-१ । १, ७, २, ५-६,

२२८५, २२८८-८९ । १, ८, ४; २२९२ । ५, २९, १-३, १०, २३०५-७, २३१४ । ५, २९, १२-१४; २३१५-१७ । ७, ८२, ४-५; २३२७-२८ । ४, २३, २, ४, २३३१, २३३३ । ४, ४०, १; २३४२ । १९, ६५, १; २३४९ । १९, ६६, १, २३५० । १९, ६४, १-२, २३५१ ५२ । ६, ७७, ३; २३९६

जातवेदा. [अग्निदेवता] १, ९९, १, १८६२ । १०, ८८, १-३; १८६३ ६५ । अथर्व० ७, ८४, १, १८६६ । अथ० ७, ६३, १; २३७४ । ६, ७७, १-३, २३९४-९६

जातवेदा. जन्मना- ३, २६, ७, १७५६

जानन् १, १४०, ७; २९८

जामिः जनानाम्- १, ७५, ४, २२७

जामिः सिन्धूनाम्- १, ६५, ७; १३०

जायमान सहसा- १, ९६, १, १८७९

जायुः वनेषु- १, ६७, १; १४४

जार. १, ६९, १, १६४ । १, ६९, २; १७२ । ७, ९, १, ११५५ । ७, १०, १, ११६१

जार कर्तृनाम्- १, ६६, ८; १४१

जिन्वन्ति अग्नय दिवम्- १, १६४, ५१ । (वामनसूक्त)

जिह्वांचकिरे स्वां शुचयः- २, १, १३, ३८१

जीवपीतसर्गः १, १४९, २, ३५४

जीवितयोपनः अथ० १२, २, १६, २२४२

जीरः १, ४४, ११; ९६।३, ३, ६; १७४७

जीराश्वः १, १४१, १२. ३१६। २, ४, २, ४१७

जुगुर्वणिः १, १४२, ८, १९२५

जुजुर्वान् यः सुहुः आयुवाभूत् २, ४, ५; ४२९

जुजुषाणः १०, १५०, २; १६९९

जुषत्-न् आनुषस्य हव्या १०, २०, ५; १५७५

जुषमाणः अथ० १९, ३, १, २२०५

जुषाणः १०, १२२, २; १६७६

जुषाणः अक्लैः, १०, ६, ४, १५२३

जुषाण. उप [इन्द्र] वा० य० २०, ३८; २०१६

जुषाण. बर्हिः [इन्द्र] वा० य० २०, ३९; २०१७

जुषाणः हव्यानि ८, ४४, ८, १३५०

जुषाणौ घृतस्य गुह्या [अग्नाविष्णू] अथ. ८, २९, २; २४५४

जुष्टः ५, ४, ५; ७९४ । ५, १३, ४; ८५७ । ८, ४४, ७; १३४९

जुष्ट. दाशुषे जनाय १, ४४, ४; ८९

जुह्व तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३, ३३५

जुह्व सदानाम् १०, ६, ५, १५२४

जुह्वास्यः १, १२, ६, १५

जूर्णिः ८, ७२, ९, १४३२

जेता वा० य० २८, २; २०८५

जेता जनानाम् १, ६६, ३; १३६

जेन्यः १, ७१, ४; १८८ । १, १२८, ७, २८९ । १, १४०, २, २९३ । १, १४६, ५; ३४२ । १०, ४, ३, १५०८

जेन्य. जनिष्ट अह्नां अग्ने ५, १, ५, ७५९

जेहमानः १०, ३, ६, १५०४

जोष्टा धिय. वा० य० २८, १०, २०९३

जोहूत्रः २, १०, १, ४०९

ज्येष्ठः ८, ७४, ४; १४४५ । ८, १०२, ११; १४७३ । [वरुणः] ४, १, २, २४४९

ज्योतिः ४, १०, ३; ७२२

ज्योतिः अमृतम् ६, ९, ४; १७९०

ज्योतिः ध्रुवम् ६, ९, ५; १७९१

ज्योतिषः पतिः ऋतस्य अथ० ६, ३६, १; २१८१

ज्योतिषा बृहता भाति ५, २, ९; ७७५

ज्योतीषि बिभ्रत्, विषाम् ३, १०, ५; ५१३

ज्यसातः १०, ११५, ४, १६६९

तक्मन् अथर्व० १९, २५, १-४; २२७५-७८

ततुरिः १, १४५, ३; ३३५

तनुषाणः ६, १५, ५; १०२७

तनूनपात् ३, २९, ११; ५६८। १, १३, २;
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।
९, ५, २; १९८७
तनूनपात् उच्यते गर्भः ३, २९, ११; ५६८
तनूनपात् [देवतामन्त्रा] १, १३, २;
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।
१, १८८, २; १९३२। ३, ४, २; १९५४।
९, ५, २; १९८९ । १०, ११०, २;
२००४ । वा० य० २०, ३७; २०१५ ।
२०, ५६; २०२६ । २१, १३; २०३८ ।
२१, ३०; २०४९ । २७, १२; २०६१ ।
२८, २; २०८५ । २८, २५; २०९६ ।
२९, २; २१०७ । २९, २६; २११८
ऋ० प्र० २; २१३०
अथर्व० ५, २७, १; २०७२ । ५, १२, २;
२००४
तनूपाः ८, ७१, १३; १४२१। १०, ४६, १;
१६०१ । १०, ६९, ४; १६२८ ।
१०, ८८, ८; २४०४
तनूरुच्-क २, १, ९; ३७७
तनूवाशिन्-शी अथ० १, ७, २; २२८५।
७, १०९, (११४), १; २३६५
तन्तुं तन्वन् १०, ५३, ६; १६१९
तन्यतुः ६, ६, २; ९८७
तन्वन्ति आ ये रश्मिभिः तिरः समुद्रम्
ओजसा-[महत्] १, १९, ८, २४४५
तपस्वान् ६, ५, ४; ९८२
तपिष्ठः ६, ५, ४; ९८२
तपुर्जम्भः १, ५८, ५; ११४। ८, १२३, ४,
१२७३
तपुर्मूर्धा ७, ३, १, ११२४
तमसि तस्थिवान् ६, ९, ७, १७९३
तपोहन्-हा १, १४०, १, २९२
तरणिः ३, २९, १३; ५७० । ६, १, ५;
९४३ । १०, ८८, १६, २५१२
तरुत्रः ६, १, ११; ९४९
तरुणः ७, ४, २; ११३५ । ८, १९, २२;
१२४५
तरुषः परस्य अवरस्य अर्थः ६, १५, ३;
१०२५ । १०, ११५, ५, १६७०

दै० [अग्निः] ३२

तल्लि हव अतिरोचते दूरेचित् सन्
१, ९४, ७; २६२
तवस् (से-चतुर्थी) ३, १, २, १३;
४४८, ४५९। ७, ५, १; १७९४। ७, ६, १;
१८०३
तविषीभिः आवृतः ३, ३, ५; १७४६
तव्यांसः ५, १७, १, ८७६
तस्थिवान् तमसि ६, ९, ७, १७९३
तस्थिवान् परमेपदे १, ७२, ४; १९८ ।
२, ३५, १४; २४३५
तानृषाणः य वना आभाति २, ४, ६,
४२१
तिग्मः ४, ६, ८; ६८९ । ८, ७२, २,
१४२५
तिग्मजम्भः १, ७९, ६; २४९। ४, १५, ५,
७५३। ८, १९, २२; १२४५। ८, ४४, २७;
१३६९ । ४, ५, ४, १७६१
तिग्मशोचिः १, ७९, १०; २५३
तिग्म हेतिः ४, ४, ४; १८१६
तिग्मानीकः १, ९५, २; १८६९
तुप्त अथ० १९, ४, १; २२०९
तुराषाद् [इन्द्रः] वा० य० २०, ४६;
२०२४
तुर्वणिः १, १२८, ३, २८५
तुविजातः ४, ११, २, ७२९ । ५, २, ११,
७७७ । ५, २७, ३; ९३०
तुविद्युन्नः ३, १६, ३, ६; ५९६, ५९९
तुविश्रवस्मः ३, ११, ६; ५२३
तुविष्मान् ४, ५, ३; १७६०
तुविष्णवस्-णाः ५, ८, ३; ८२३
तुविष्णविः १, ५८, ४; ११३। १, १२७, ६,
२७७
तूर्णिः ३, ३, ५; १७४६
तूर्णितमः ४, ४, ३; १८१५
तूर्णी ३, ११, ५; ५२२
तृतीयकः अथ० १, २५, ४, २२७८
तृष्युतः १, १४०, ३; २९४
तेपानः घृतस्य धीतिभिः ८, १०२, १६,
१४७८

तेपानः रक्षस ८, ६०, १९; १४०७
त्रययाज्यः ६, २, ७, ९५८
त्राता १, ४४, ५, ९०। ५, २४, १; ९०७।
६, १, ५; ९४३ । ८, ६०, ५; १३९३
त्रासद्वयवः ८, १९, ३२; १२५५
त्रितः १०, ४६, ६, १६०६
त्रिधातुः ८, ७२, ९; १४३२
त्रिधातुः अर्कः ३, २६, ७; १७५६
त्रिपस्त्यः ८, ३९, ८, १३०७
त्रिमूर्धा १, १४६, १; ३३८
त्रिवरुथः ६, १५, ९; १०३१
त्रिषधस्थः ५, ४, ८, ७९७ । ६, १२, २,
१००७ । ६, ८, ७, १७८६
त्रेधा अकृण्वन् देवासः भुवे क तम् ऊ
१०, ८८, १०, २४०६
त्वष्टा त्वम् २, १, ५; ३७३
त्वष्टा [देवता] १, १३, १०, १९१५ ।
१, १४२, १०, १९२७। १, १८८, ९;
१९३९ । २, ३, ९, १९५०। ३, ४, ९;
१९६१ । ५, ५, ९; १९७१ । ७, २, ९,
१९६१। ९, ५, ९; १९८९। १०, ७०, ९;
२००० । १०, ११०, ९, २०११ ।
वा० य० २०, ४४, ६५; २०२२, २०३४।
२१, २०, ३८; २०४५, २०५७ ।
२७, २०, २०६९। २८, ९, ३२, २०९२,
२१०३ । २९, ९, ३४; २११४, २१२६।
अथ० ५, २७, १०, २०८१। ऋ० प्र०
१०, २१३८। अथ० ५, १२, ९; २०११
त्वाष्टः ३, ७, ४; ४९३
त्वे विश्वेदेवाः ५, ३, १; ७७९
त्वेषः १, ६६, ६; १३९ । १, ७०, ११;
१८४ । २, ९, १, ४०३ । ३, २२, २;
६२४ । ८, ७४, १०, १४५१
त्वेषः (षष्ठी वि०) ६, २, ६, ९५७
दक्षः ३, १४, ७, ५८७ । १, ५९, ४,
१७२०
दक्षस्-क्षाः [दक्षसे] ६, ४८, १, १०९०
दक्षस्य साधनम् ५, २०, ३; ८९३
दक्षपतिः दक्षाणाम् १, ९५, ६;
१४७२

दक्षायः २, ४, ३; ४१८। ७, १, २
 ११०१
 दक्षुष १, १४१, ७; ३११
 दन (न) अदन् ४, ६, ८, ६८९
 दत् (दा) १०, ११५, २, १६६७
 ददशान नेदिष्ठम् १, १२७, ११; २८२
 ददशान पवि. १०, १, ६; १५०४
 दधान नयां पुरुणि हस्त १, ७२, १,
 १९५
 दधान. वयो वयो जरसे ५, १५, ४,
 ८६९
 दधानो सप्त ग्ला दमे दमे [अमाविष्णु]
 अथ० ७, २९ (३०), १ २४५३
 दधि. १०, ४६, १. १६०१
 दधक-ग १०, १६, ७; १५६३
 दमयन् दृत्तयून् ७, ६, ४; १८०६
 दमाम् अरिना. १०, ४६ ७, १६०७
 दम्ना. (नग) १, ६०, ४, १२२।
 १, ६८, १०, १६३। १, १४१, १०,
 ३०१। ३, १, ११; ४५७। ३, १, १७,
 ४६३। ३, ५, ४ ४७३। ४, ११, ५;
 ७३२। ५, १, ८; ७६२। ५, ४, ५;
 ७७४। ५, ८, १; ८२१। ७, ९, २;
 ११५६। १०, ४६, ६, १६०६।
 १०, ९१, १, १६५१। ३, २, २५,
 १७४१। ३, ३, ६ १७४७। ४, ४, ११;
 १८२३
 दम्पतिः १, १२७, ८, २७९। ५, २२, ४;
 ९०२। ८, ८४, ७; १४६०
 दम्प्यः ८, २३, २४, १२९३
 दयमान वि वसुस्तानि दाशुषे
 ३, २, ११, १७३७
 दर्मा (र्मन्) पुगम १०, ४६, ५; १६०५
 दर्शत् न १, १४४ ७; २३२। ३, २७, १३;
 ५४९। ६, १, ३, ९४१। ८, ७१, १०;
 १४१८। ३, २, १५; १७४१
 दर्शत् तिर तमांसि ८, ७४, ५; १४४६
 दर्शनभीः १०, ९१, २, १६५२
 दधिद्युत् ७, १०, १, ११६१।

६, १६, ४५, १०८६। अथ० ७, ६२ (६४),
 १, २३७३
 दधिद्युत् घृतेन आहुतः १०, ६९, १;
 १६२५
 दशस्यन् अपत्याय ७, ५, ७; १८००
 दशान्तरुप्यात् अतिरोचमानः
 १०, ५१, ३. १६१२
 दस्म १, ७७, ३, २३६। २, १, ४;
 ३७२। २, ९, ५; ४०७। ३, १, ७;
 ४५३। ५, १७, ४; ८७२। ६, १, १,
 ९३९। ८, १०३, ७, १२६३।
 ८, ७४, ७; १४४८। १०, ७, १,
 १५२७। १०, ११, ४; १५४३। ३, ३, २,
 १७४३ [वरुण.] ४, १, ३, २४५०
 दस्मवर्चाः ६, १३, २। १०१३
 दस्युहन्तम. ६, १६, १५; १०५६
 दस्युहन्तमः मान्धातुः ८, ३९, ८,
 १३०७
 दाता ३, १३, ३; ५७६। अथ०
 ३, २१, ४; २३५८
 दाता वाजस्य गोमतः ५, २३, २, २०४
 दाता सौमनसस्य अथ० १९, ५५, ३-४;
 २२७१-७२
 दामा (मन्) रथानाम् ८, २३, २, १२७१
 दारुः ७, ६, १, १८०३
 दाशुम्-शः (षः-षष्ठी) ७, ३, ८;
 ११३१
 दास्वत् १, १२७, १, २७२
 दिदक्षेण्यः, परिकाष्ठासु १, १४६, ५,
 ३४२
 दिदक्षेयः ३, १, १२, ४५८
 दिद्युतान ३, ७, ४, ४९३
 दिधिषाद्यः १, ७३, २, २०६। २, ४, १,
 ४१६
 दिव् घोः (दिवः-षष्ठी) १, ७३, ७;
 २११। ६, २, ४, ९५५
 दिवः केतुः ३, २, १४; १७४०
 दिवः चित् पूर्वः १, ६०, २; १२०
 दिवः दुहितौ [उपासानक्ते] १०, ७०, ६;
 २००२

दिवः पायुः (दिवस्पायुः) ८, ६०, १९;
 १४०७
 दिवः मूर्धा ८, ४४, १६, १३५८।
 ३, २, १४; १७४०
 दिवः सूनुः ३, २५, १; ५३२
 दिविजाः ८, ४३, २८; १३३७
 दिवियोनि १०, ८८, ७; २४०३
 दिविस्पृक्-श १०, ८८, १; २३९७
 दिव्यः ६, ६, १, ९८६। ६, १०, १;
 ९९३। अथ० ४, १४, ६; २०२२
 दिशन्ता प्राचीन ज्योतिः प्रदिशा
 [द्वैतौ होतारौ] १०, ११०, ७; २००९
 दिदानः शल्यान् १०, ८७, ४; १८३१
 दीदियुस्-यु. ८, २३, ४; १२७३
 दीदिवान् १, १२, ५; १४। १, १२, १०;
 १९। २, ९, १, ४०३। ३, १३, ५;
 ५७८। ३, २७, १२; ५४८। ५, २४, ४;
 ९१०। ६, १, ६; ९४४। ७, १, ८, ११०७।
 ८, ४४, ४, १३४६। ८, ६०, ५, १३९३।
 ४, ४, ९; १८२१। २, ३५, ३; २४२४
 दीदिवान् विश्वहा-६, १, ३; ९४१।
 १०, ८८, १४, २४१०। २, ३५, १४;
 २४३५। साम० १, ६, १३, १
 दीदिवि. ऋतस्य-१, १, ८; ८
 दीद्यत्-न १, १४३, ७, ३२४। ३, २७, १५;
 ५५१७, १०, १; ११६१। १०, ११८, १-८;
 १८५३-६०
 दीद्यत्, त्रिःश्रुतानि-१, १२२, ५, १६८०
 दीद्यान १, १२७, ३; २७४। ३, ५, ७;
 ४७६। १०, २०, ४; १५७४। ४, ५, ९,
 १७६६
 दीर्घतन्तुः १०, ६९, ७, १६३१
 दीर्घश्रुतम ८, १०२, ११, १४७३
 दीर्घायु शोचिः ५, १८, ३; ८८३
 दुरोकशोचिः १, ६६, ५; १३८
 दुरोगन्तुः ८, ६०, १९, १४०७
 दुर्धरीतुः १०, २०, २, १५७२
 दुर्ध ७, १, ११, १११०
 दुर्धर्तुः ६, ६, ५, ९९०
 दुष्टः ३, २४, १; ५२७

बुहन् सुबुवां विश्वधायस हषम्
१०, १२२, ६, १६८०
कूतः १, १२, १, १० । १, १२, ८; १७ ।
१, ३६, ३, ७० । १, ४४, २; ८७ ।
१, ४४, ११, ९६ । १, ५८, १; ११० ।
१, ६०, १, ११९ । १, ७२, ७, २०१ ।
२, ९, २, ४०४ । २, ६, ६, ४३८ । ३, ५, २,
४७१ । ३, ६, ५, ४८४ । ३, ९, ८; ५०७ ।
३, ११, २, ५१९ । ३, १७, ४; ६०३ ।
४, १, ८; ६३४ । ४, ७, ८; ७०० ।
४, ८, १; ७०४ । ५, ८, ६; ८२६ ।
५, ११, ४, ८४५ । ५, १२, ३, ८५० ।
५, २१, ३, ८७७ । ५, २६, ६, ९२५ ।
६, १५, ८; १०३० । ६, १६, २३, १०६४ ।
७, ७, १, ११४२ । ७, ११, ३; ११६८ ।
८, १९, २१, १२४४ । ८, २३, ६, १८१९,
१२७५, १२८७-८८ । ८, ३९, ९, १३०८ ।
८, ४४, ३, ३०; १३४५, १३६२ ।
८, १०२, १८; १४८० । १०, ८, ५;
१५३८ । १०, १२२, ५; १६७९ ।
३, ३, २, १७४३ । १, १८८, १; १९३१ ।
७, २, ३; १९७७ । १०, ११०, १, २००८ ।
वा० य० २९, २५; २११७ । ऋ० प्रैष
४, २१३२ । अथर्व० ३, २, १, २१५६ ।
३, ४, ३; २१६० । १, ७, ६, २२८९
कूतः देवानां मर्त्यानां च- ६, १५, ९;
१०३१ । १०, ४, २, १५०७
कूतः देवानां विश्वेषाम्- ४, ९, २, ७१३
कूतः विवस्वतः- ४, ७, ४, ६९६ ।
८, ३९, ३; १३०२ । १०, २१, ५, १५८५
कूतः विश्वाम्- १, ३६, ५, ७२१ । १, ४४, २,
९४
कूतः विश्वस्य ७, ६, १, ११९२
कूतः मिथ्यः २, ६, ७; ४३९
कूरेण् ७, १, १, ११००
कूरेभा. १, ६५, १०; १३३
कूरेसन् इह अभवः ३, ९, २, ५०१
कूलभः ४, ९, २; ७१३ । ३, २६, २,
१७२८

दहन् जनान् वज्रेण मृथुम् अथ०
१२, २, ९; २२३५
दशतिः यस्य अरेषा ... ६, ३, ३, ९६५
दशानः १०, ४५, ८, १५९६
दशानः रभसम् २, १०, ४; ४१२
दशीकः १, ६६, १०, १४३
दशोन्य महिना १०, ८८, ७, २४०३
देवः १, १, १, १ । १, १, ५, ५ । १, १२, ७;
१६ । १, २४, २; २७१ । १, ४४, ११, ९६ ।
१, ७४, ९; २२३ । १, ९४, ७, १६,
२६२, २७१ । १, १२७, १; २७२ ।
१, १२८, २-३; २८४-८५ । १, १८५, १,
३६१ । १, १८९, ३; ३६३ । १, १८९, ६,
३६६ । २, १, ४, ७, ३७२; ३७५ । २, ६;
३९७ । २, ४, १; ४१६ । ३, ५, ६; ४७५ ।
३, ६, ६, ४८५ । ३, ७, ९, ४९८ ।
३, ९, १, ५०० । ३, ९, ८; ५०७ ।
३, २७, ३; ५३९ । ३, २७, ७, ५४३ ।
३, १३, १; ५७४ । ३, १४, ७, ५८७ ।
३, १५, ६, ५९३ । ३, १९, ४; ६१३ ।
३, २०, ३; ६१६ । ४, १, १, ६, ९,
६३१, ६३२, ६३५ । ४, २, १, १९, ६४७-
६५४, ३, ३; ६६८ । ४, ७, २, ६९४ ।
४, ८, ३, ७०६ । ४, ११, ५, ७३२ ।
४, ११, ६, ७३३ । ४, १३, १; ७४० ।
४, १४, १; ७४५ । ४, १५, १, ७४९ ।
५, १, २, ७५६ । ५, २, २१; ७७७ ।
५, ३, ४, ५, ८; ७८१, ७८२, ७८५ ।
५, ६, ४, ८०४ । ५, ८, ४, ८२४ ।
५, ९, १, ८२८ । ५, १४, १, ८६१ ।
५, १५, ५, ८७० । ५, १६, १, ८७१ ।
५, १७, १, ८७६ । ५, २१, ४; ८९८ ।
५, २२, २, ९०० । ५, २२, ३, ९०१ ।
५, २५, १; ९११ । ५, २६, १, ७;
९२०, ९२६ । ६, २, २१, ९६२ । ६, ३, १,
९६३ । ६, ११, २; १००१ । ६, १३, २, ४,
१०१३, १०१५ । ६, १५, ४, १०२६ ।
६, १६, ३, ७, १०४४, १०४८ ।
६, १६, १२, ३२, ४१, ४३, १०५३,

१०७३, १०८२, १०८४ । ६, १६, ४६;
१०८७ । ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १,
२०, २५, १११९ । ७, ३, १, ११२४ ।
७, १४, १-३, ११७४-११७६ ।
७, १५, ७, १३, ११८३, ११८९ ।
७, १६, ११; १२०२ । ७, १७, ७, १२१० ।
८, ११, १, ६, १२१४, १२१९ । ८, १९,
१, ३, १७, २४, २४, २८, १२२४,
१२२६, १२४०, १२४७, १२५१ ।
८, २३, १८, १२८७ । ८, ३९, ७, १३०६ ।
८, ४४, ११, १५; १३५३-५७८, ७५, २,
१३७४ । ८, ६०, १०, १४०७ । ८, ७, १८,
१४१६ । ८, १०२, १५, १४७७ ।
८, १०२, १६, १४७८ । १०, २, २, १४७३ ।
१०, ७, १, ६, १५२७-३२१ । १०, १२, १, ३,
१५४९, १५५१ । १०, १६, ९, १६६५ ।
१०, ११५, ३, १६६८ । १०, १२२, ४,
१६७८ । १०, १५०, ४; १७०१ । १०,
१७६, २, १७०८ । १०, १७६, ४, १७१०
३, ३, ९, १७५० । ३, २६, १; १७५३ ।
४, ५, २, १७५९ । ७, ३, ३; १८०९ ।
देवः १, १३, ११; १९१६ । १, १४२, ३,
१९२० । १, १४२, ११; १९२८ । १, १८८,
१; १९३१ । २, ३, १९२५, ३, १९२५, ३, १९,
१७५३-६१७, २, ९, १९६१ । १९, ४, ७,
१९८४, १९८७ । १०, ७०, ४, ६, १०,
२०००, २, ६ । १०, ११०, १, २००८ ।
१, ११०, १०, २०१७ । १०, ८८, १४,
२४१० । २, ३५, ५, २४२६ । वा० य०
२७, १२-१३; २०६१ । २९, २५,
३४, २११७, २१२६ । ऋ० प्रैष २, २३२
अथर्व० ५, २७, २; २०७३ । ५, २८, २-३
२०८५-८६, १२, २, १२, ३३, २०३८,
२२४६ । २, ३४, ३, २१५१ । ४, ३९, १०,
२२८३ । १, ७, १; २२८४ । १, २८, १, २,
२२९३-९४ । ३, २१, ३-४, २३५७-
५८ । साम० १, १, १, १०
देवः प्रथमः अथ० ५, २८, ११; २१७७
देवः महः मर्त्यान् आविवेश ४, ५८, ३,
१८९७

देवास. [मरुतः] १, १९, ६. २४४३
 देवकामः (त्वष्टा) २, ३, ९. १९५०
 देवतमः १०, ३, ६; १५०४। १०, ७०, २,
 १९९८
 देवताति उराण. ३, १९, २; ६११
 देवयावा कृतः ७, १०, २, ११६२
 देवयु १०, १७६, ३; १७०९
 देववाहनः ३, २७, १४, ५५०
 देववीतमः १, ३६, ९; ७६
 देवहूतमः ३, १३, ६; ५१९
 देवानां केतु. ३, १, १७; ४६३
 देवानां कृतः ६, १५, ९, १०३१
 देवानां देव. १, ३१, १, ५०। १, ६८, २;
 १५५। १, ९४, १३, २६८। वा० य०
 २०, ४१, २०१९ इन्द्र
 देवानां पिता १, ६९, २; १६५
 देवानां पुत्रः १, ६९, २, १६५
 देवावी ३, २९, ८, ५६५
 देवेषु जागृविः १, ३१, ९; ५८
 देवेषु देवः वा० य० २७, १२; २०६१।
 अथ० ५, २७, २; २०७३
 देव्यः १, १४०, ७; २९८
 देव्य. तिस्र. सरस्वती इळा भारत्यः
 मद्याः वा १, १३, ९, १९१४।
 १, १४२, ९, १९२६। १, १८८, ८, १९३८।
 २, ३, ८, १९४७। ३, ४, ८, १९६०।
 ५, ५, ८, १९१४। ७, २, ८, १९८१।
 १, ५, ८, १९८८। १०, ७०, ८, १९९९।
 १०, ११०, ८, २०१०। वा० य० २०, ४३,
 ६४; २०२१, २०३३। २१, १९, ३७,
 २०४४, २०५६। २७, १९, २०६८।
 २८, ८, २०९१। २८, ३१, २१०२। २९, ८,
 २११३। २९, ३३; २१२५। ऋ० प्रेष
 ९, २१३७। अथ० ५, २७, ९; २०८०।
 ५, १२, ८; २००९
 देव्यः १, २७, १२; ४९
 देव्यः अतिथिः ७, ८, ४, ११५२
 देव्यः केतुः १, २७, १२; ४९
 देवोदास ८, १०३, २, १२५८
 द्यौं परिजमान इव १, १२७, २; २७३

द्युक्षः २, २, १; ३८५
 द्युक्षवचा ६, १५, ४; १०२६
 द्युतानः ६, १५, ४, १०२६। ७, ८, ४;
 ११५२। ४, ५, १०, १७६७
 द्युभिः हितः १०, ७, ५, १५३१
 द्युमः (संजी०) ६, १०, २; ९९४
 द्युमान् २, ९, ६, ४०८। ४, १५, ४, ७५२।
 ५, ६, ४; ८०४। ५, २६, ३; ९२२।
 ७, १, ४; ११०३। ७, १५, ७, ११८३।
 १०, २, ७; १४९८। ९, ५, ३; १९८३
 द्युमान् द्युमासु १०, ६९, ७, १६३१
 द्युमवान् ५, २८, ४, ९३६
 द्युम्नी १, ३६, ८, ७५। ८, १०३, ९;
 १२६५। १०, ६९, ५; १६२९
 द्रविण. अथ० ७, ७८, २, २१९९
 द्रविणस्-णाः ३, ७, १०; ४९९
 द्रविणस्युः २, ६, ३, ४३५। ६, १६, ३४;
 १०७५
 द्रविणोदा अग्निः [देवता] १, ९६, १-२;
 १८७९-१८८७
 द्रविणोदा २, १, ७, ३७५। २, ६, ३;
 ४३५। ७, १६, ११, १२०२। ८, ३९, ६;
 १३०५। १०, २, २, १४९३। १०, ७०, ९;
 २००५। अथ० १९, ३, ३; २२०६
 द्रुषद् १०, ११५, ३, १६६८
 द्रुहन्तरः १, १२७, ३, २७४
 द्रव्यः ६, १२, ४, १००९। २, ७, ६,
 ४४६
 द्वारः देवी [देवता] १, १३, ६, १९११।
 १, १४२, ६; १९२३। १, १८८, ५, १९३५।
 २, ३, ५; १९४६। ३, ४, ५; १९५७।
 ५, ५, ५; १९६८। ७, २, ५, १९७८।
 ९, ५, ५, १९८४। १०, ७०, ५; १९९६।
 १०, ११०, ५, २००७। वा० य० २०, ४७;
 २०१८। २०, ६१; २०३०। २१, १६,
 २०४१। २१, ३४; २०५३। २७, १६,
 २०६५। २८, ५; २०८८। २८, २८,
 २०२९। २९, ५, २११०। २९, ३०;
 २१२२। ऋ० प्रेष ५, २१३४। अथ०
 ५, २७, ७, २०७८। ५, १२, ५; २००७

द्विजन्मा १, ६०, १; ११९। १, १४०, २;
 २९३। १, १४९, ४-५; ३५६-३५७
 द्विबर्हा. ४, ५, ३; १७६०
 द्विमाता १, ३१, २; ५१
 द्वेषोद्युतः ४, ११, ५; ७३२
 धक्षुः १०, ११५, ४, १६६९
 धनञ्जयः १, ७४, ३; २१७। ६, १६, १५,
 १०५६
 धनर्चः १०, ४९, ५; १६०५
 धनस्पृत् १, ३६, १०, ७७। ५, ८, २;
 ८२२
 धरुणः ५, १५, १-२; ८६६-६७
 धर्णसिः ५, ८, ४; ८२४
 धर्णिः १, १२७, ७, २७८
 धर्ता ५, १, ६; ७६०
 धर्ता मानुषीणां विशाम् ५, ९, ३; ८३०
 धर्ता रायः ५, १५, १; ८६६
 धर्मः ३, १७, १; ६००
 धर्षीयान् सद्यः ६, १२, ५; १०१०
 धामनि उरुजयः विरोचमानम्
 १, ९५, ९, १८७६
 धामभि (युक्त) सप्त ४, ७, ५; ६९५
 धासिः ३, ७, १; ४९०। ७, ६, २;
 १८०४
 धितावान् ३, २७, २; ५३८
 धियधिः ७, १३, १; १८१०
 धियं साधयन्ती [सरस्वती] ९, ३, ८;
 १९४९
 धियावसु १, ५८, ९; ११८। १, ६०, ५,
 १२३। ३, २८, १, ५५२। ३, ३, २, १७४३
 धीः १, ९५, ८; १८७५
 धीनां यन्ता ३, ३, ८; १७४९
 धीरः १, ९४, ६, २६१। ८, ४४, २९;
 १३७१। अथ० ३, २१, ४; २३५८
 धुनिः १, ७९, १; २४४
 धूमः ३, २९, ९; ५६६
 धूमः ते केतुः दिविभितः ५, ११, ३, ८४४
 धूमं ऋणवन् ७, २, १; १९७५
 धूमकेतुः १, २७, ११; ४८। १, ४४, ३;

८८ । ८, ४४, १०; १३५२ । १०, ४, ५;
१५१० । १०, १२, २; १५५०
धूर्षद् १, १४३, ७, ३२४। २, १; ३८५
धृतवत् ८, ६४, २५; १३६७
धृषद्वर्णः १०, ८७, २२; १८४९
धृष्णुः ६, १६, २२; १०६३ ।
१०, १६, ७; १५६३ । १०, ६२, ५-६;
१६२९ ३०। अथ० ५, २९, १०; २३१४
धृजीमान् १, ७९, १; २४४
ध्राजिः एकस्य दृष्टे [वायुदेवता]
१, १६४, ४४, २४५६
ध्रुवः ६, १५, ७; १०२९। ६, ९, ४, १७९०
ध्वंसयन् १, १४०, ३ २९४
नक्षति घाम् आभि शुक्रैः ऊर्मिभिः
१, ९५, १०; १८७७
नक्षयः ७, १५, ७, ११८३
नडे अथ० १२, २, १९, २२४५
नसा अध्वराणाम् ८, १०२, ७, १४६९
नक्षमत् जिह्वाभिः ८, ४३, ८, १३१७
नभोविद् १०, ४६, १, १६०१
नमसा उपवाक्यः १०, ६९, १२, १६३९
नमसा रातहस्यः ४, ७, ७; ६९२
नमो युजान १६५, १, १२४
नमो वहन् १, ६५, १; १२४
नमस्यः १, ७२, ५; १९९। २, १, ३; ३७१ ।
२, १, १०; ३७८ । ३, ५, २, ४७१
३, २७, १३; ५४९
नराशंस [अग्निदेवता] १, १३, ३,
१९०८ । १, १४१, ३, १९२० । २, ३, ३,
१९४४ । ५, ५, २, १९६५ । ७, २, २,
१९७५ । १०, ७०, २; १९९३। वा०य०
२०, ३७, २०१५ । २०, ५७, २०२७ ।
२१, ३१; २०५० । २७, १३; २०६२।
२८, २; २०८५ । २९, ३; २१०८ ।
२९, २७; २११९। ऋ० प्रैष ३, २१३१।
अथ० ५, २७, ३; २०७४
नराशंसः भवति यद् विज्ञायते आसुरः
३, २९, ११, ५६८

नर्यापसः [त्वष्टा] वा० य० २१, ३८।
२०५७ । २८, ४; २०८६
नर्या पुरुणि हस्ते दधानः १, ७२, १,
१९५
नवः सदा ३, ११, ५, ५२२
नवजातः ५, १५, ३, ८६८
नव्यः १, १४१, १०; ३१४। १, १८९, २,
३६२। ६, १, ७; ९४५। १०, ४, ५, १५१०
नव्यः सनात् ८, ११, १०; १२२३
नाकः ५, १७, २, ८७७
नाद्यः २, ३५, १, २४२२
नानदत् एति १, १४०, ५ १९६
नानदत् चित्रेषु ३, २, ११; १७३७
नाभिः पृथिव्या १, ५९, २; १७१८
नाभिः यशानाम् ६, ७, २. १७७४
नाभिः रोचनस्य १०, ४६, ३; १६०३
नाभि विश्वस्य चरतः ध्रुवस्य १०, ५, ३;
१५१५
नाम अस्य चारु २, ३५, ११, २४३२
निषवः १, ९५, ४, १८७१
नितोशतः ६, १, ८; ९४६
नित्यः १, ६६, १, ५; १३४, १३८ ।
३, २५, ५, ५३६ । ५, १, ७; ७, ६१ ।
१०, १२, २; १५५०
नित्यहोता १०, ७, ४; १५३०
निधुविः मर्त्येषु ७, ३, १, ११२४
निर्ऋतः अथ० १२, २, १४; २२४०
निर्मथितः ३, २३, १, ६२७
निवेशनी जगतः [रात्रिः] १, ३५, १;
२४४८
निषत्त १, ५८, ३. ११२ । ३, ३, २,
१७४३ । ६, ९, ४; १७९०
निषत्त सन्मध्ये १, ६९, ४; १६७
निषद्वारः वा० य० २८, ४, २०८७
निष्पद्माणः यमते नायते १, १२७, ३,
२७४
निस्वरः अथ० १२, २, १४; २२४०
नीलपृष्ठः ३, ७, ३; ४२२
नू च पुरा च १, ९६, ७, १८८५

नृचक्षाः ३, १५, ३; ५९० । ३, २२, २;
६२४ । ४, ३, ३, ६६८ । ८, १९, १७;
१२४० । १०, ८७, ८-१०, १७;
१८३५-३७, १८४४। ५, ७, १९९२ ।
अथ० १, ७, ५, २२८८
नृतमः १, ७७, ४, २३७ । ३, १, १२;
४५८ । ५, ४, ६; ७९५ । १, ५९, ४;
१७२० । ४, ५, २, १७५९ । ६, ५, ४;
१८०६
नृपतिः २, १, ७; ३७५
नृपेशसः [देवीः द्वारः] ३, ४, ५; १९५७
नृमणा १०, ४५, १, १५८९
नृमणा विश्वानि हस्ते दधानः १, ६७, ३;
१४६
नृशस्तः मैत्रा० ४, १३, २, २१३१
नृशस्त्रः ऋ० प्रैष ३, २१३१
नृषद् १०, ४६, १, १६०१
मृः प्रणेष्ट्र ऋ० प्रैष ३, २१३१
नृषप्रणेष्ट्र मैत्रा० ४, १३, २; २१३१
नेता अध्वराणाम् १०, ४६, ४; १६०४
नेता ह्यवाम् ३, २३, २, ६२८
नेता क्षितीनां देवीनाम् ३, २०, ४; ६१७
नेता चर्वणीनाम् ३, ६, ५, ४८४
नेता यज्ञस्य २, ५, २, ४२६। ३, १५, ४;
५९१
नेता यस्यस्य रजसश्च १०, ५, ६; १५३९
नेता सिन्धूनाम् ७, ५, २; १७९५
नेष्टा २, ५, ५, ४२९
नेष्टम् तव २, १, २; ३७०
एवतिसः विश्वरूपा. ओषधीः १०, ८८,
१०; २४०६
पक्कः १, ६६, ३; १३६
पतिः वा० य० २८, ३१, २१०२
पतिः ३, ७, ३; ४९२
पति. जनीनाम् १, ६६, ८; १४१
पतिः पृथिव्याः ८, ४४, १६, १३५८
पतिः शतिनः सदस्त्रिणः वाजस्य
८, ७५, ४; १३७६

पदास्त्रे एव निदिताः त्रिः सप्त गुह्यानि
 १,७२,६; २००
 पदे तस्थिवान् परमे १,७२,४; १९८
 पानिष्ठ ३,१,१३; ४५९
 पन्यांसः ८,७४,३; १४४४
 पप्रथानः ५,१५,४; ८६९
 पप्रि. अथ० १२,२,४७; २२६१
 पयस-स् अथ० ४,१४,६; २२२२
 पयस्वत्-स्वान् १,२३,२३
 पयस्वतो [उषासानके] २,३,६; १९४७
 परः आमाम्बु पूषु २,३५,६; २४२७
 परमेष्ठी अथ० १,७,२; २२८५
 परस्पाः २,९,२,६; ४०४,४०८
 परिजमा ६,२,८; ९५९ । ९,७२,१०,
 १४३३ । ३,२६,९, १७३५ । ७,१३,३;
 १८१२
 परिधि मनुष्याणाम् अथ० १२,२,४४,
 २२५७
 परिभूः अथ० ३,२१,४, २३५८
 परिभूः देवान् १०,१२,२; १५५०
 परिभूः विश्वातात्मना ३,३,१०, १७५१
 परिभूतमः १०,२१,८, १६५८
 परियन् वर्तिर्यशम् १०,१२२,५, १६८०
 परिवीतः १०,४६,६; १६०६
 परिष्कृत ८,३९,९; १३०८
 पर्जन्य क्रन्धः ८,१०२,५, १४६७
 पर्थेति पार्थिवं एवेन सद्यः १,१२८,३,
 २८५
 पर्वतानां मित्रः ३,५,४; ४७३
 पलितः १०,४,५; १५१०
 पवमानः ९,५,१-११; १९८१-९१
 ९,६६,२० । साम० २,७,१,१२
 पविता अथ० ६,११९,३, २३८६ ।
 ९,६६,२०; । साम० २,७,१,१२
 पाजः अस्य रुशत् ३,२९,३; ५६०
 पाञ्चजन्यः अथ० ४,२३,१; २३३०
 पात्रः ६,७,१, १७७७
 पादा अस्य त्रयः ४,५८,३; १८९७
 पायुः ६,१५,८; १०३० । ४,४,३;
 १८१५

पावकः १,२२,१०, १९ । १,६०,४;
 १२२ । २,७,४; ४४४ । ३,५,७;
 ४७६ । ३,१०,८, ५१६ । ३,२७,४,
 ५४० । ३,१७,१, ६०० । ३,२१,२,
 ६१९ । ४,६,७; ६८८ । ५,४,३,७,
 ७९२, ७९६ । ५, ७, ४; ८१४ ।
 ५,२३,४, ९०६ । ५,२६,१; ९२० ।
 ६, १, ८; ९४६ । ६, २, ६, ९६८ ।
 ६,४,३; ९७३ । ६,५,२, ९८० ।
 ६,६,२, ९८७ । ६,२५,७; १०२२ ।
 ६,४८,७; १०९६ । ७,३,१; ११२४ ।
 ७,३,९, ११३२ । ७,९,१; ११५५ ।
 ७,१५,१०; ११८६ । ८,२३,१९,
 १२८८ । ८,४४,२८, १३७० । ८,६०,३,
 ११, १३९१, १३९९ । ८,७४,११;
 १४५२ । १०,४५,७, १५९५ ।
 १०,४६,४, ७-८, १६०४, १६०७, १६०८ ।
 ४,५,६; १७६३ । १,९५,११, १८७८ ।
 १,९६,९; १८८७ । १,१३,१; १९०६ ।
 १,१४२,३, ६, १९२०, १९२३ । २,३,१;
 १९४२ । अथ० ६,४७,१, २३७९
 पावक वर्चाः १०,१४०,२; १६८५
 पावक शोचिः ३,९,८, ५०७३, ११,७,
 ५२४ । ४,७,५; ६२७ । ५,२२,१;
 ८९९ । ६,१५,१४; १०३६ । ८,४३,३१;
 १३४० । ८,४४,१३; १३५५ । ८,
 १०२,११; १४७३ । १०,२१,१, १५८१ ।
 ३,२६,६, १७३२
 पिता १,३१,१०; ५९ । १,३१,१६;
 ६५ । २,१,९; ३७७ । २,५,१; ४२५ ।
 ३,२७,९, ५४५ । ५,४,२; ७९१
 पिता आग्रस्य चित् १,३१,४, ६३
 पिता यज्ञानाम् ३,३,४, १७४५
 पिता माता मनुषाणां सदमित् ६,१,५,
 ९४३
 पितृमान् १,१४१,२, ३०६
 पितृष्विपता ६,१६,३५, १०७६
 पितृयन् १०,१४२,२, १६९१
 पिन्वमान मधुमत् घृतम् वा० य०

२९,१,२१०६
 पिशङ्गरूपः [त्वष्टा] २,३,९, १९५०
 पुनानः क्रतुम् ३,१,५; ४५१
 पुमान् ४,३,१०; ६७५
 पुरः १०,८७,२२; १८४९
 पुर एता १,७६,२; २३०
 पुर एता विशाम् ३,११,५; ५२२
 पुरन्दरः ६,१६,१४; १०५५ । ७,६,२
 १८०४
 पुरन्दरः [इन्द्रः] वा० य० २०,३८
 २०१६ । २८,३, २०८६
 पुराजाः १०,५,५, १५१७
 पुरीष्याः [प्यासः बहु०] ३,२२,४;
 ६२६
 पुरुष्युः १,६८,१०; १६३ । ३,२५,२;
 ५३३
 पुरुचेतनः ६,१६,१९; १०६०
 पुरुतम. ६,६,२; ९८७
 पुरुषप्रतीक ३,७,३, ४९२
 पुरतिष्ठः ५,१,६, ७६०
 पुरेशासु गर्भः भुवत् २,१०,३; ४११
 पुरुषशस्तः १,७३,२; २०६ ।
 ८,१०३,१२, १२६८ । ८,७०,१०;
 १४१८
 पुरुषिय १,१२,२, ११ । १,४४,३
 ८८ । १,४५,६; १०५ । ५,१८,१;
 ८८१ । ८,४३,३१, १३४० । ८,७४,१;
 १४४२ । ३,३,४, १७४५
 पुरुषैषः १,१४५,३ ३३५
 पुरुरूपः ५,८२,५, ८२२, ८२५ । वा० य०
 २८,९; २०९२
 पुरुवारः २,२,२, ३८६ । ४,२,२०;
 ६६६ । ६,१,३; ९५१ । ६,५,१, ९७९ ।
 ६,१५,७; १०२९ । ४,५,१५; १७७९,
 पुरुवारपुष्टि. १,९६,४; १८८२
 पुरुषेपसम् (द्वि०) ८,४४,२६, १३६८
 पुरुशोभन ५,२,४, ७७०
 पुरुषश्च १,२७,११; ४८ । ३,२५,३;
 ५३४ । ५,८,१; ८२१

पुरुषेषणः अथ० ३, २१, ९; २३६३
पुरुष्टुत १, १४१, ६; ३१० । १, ८, ५,
८२५

पुरुषपृष्ठः ५, ७, ६; ८१६ । १, १४२, ६;
१९२३

पुरुष्टूतः १, ४४, ७, ९२ । अथ०
१९, ५५, ६; २२७४

पुरुष्टूते [नक्तोषासा] ७, २, ६; १९७९

पुरु (रु) चरन् १, १४४, ४, ३२९

पुरुतमः ८, १०२, ७; १४६९

पुरुवस्तुः २, १, ५, ३७३ । ८, १०३, ५;
१२६१ । ८, ७०, १०; १४१८

पुरोगाः १०, १२४, १, १६८३ । १, १८८,
११, १९४१ । १०, ११०, ११; २०१३ ।

वा० य० २९, ११, ३६; २११६, २१२८

पुरोयावा (वन्) ८, ८४, ८; १४६१ ।

९, ५, ९; १९८९

पुरोहितः १, १, १, १११, ४४, १०; ९५ ।

१, ४४, १२, ९७ । १, ५८, ३; ११२ ।

१, ९४, ६; २६१ । १, १२८, ४, २८६ ।

३, ११, १; ५१८ । ५, ११, २; ८४३ ।

१०, १, ६; १४९० । १०, १२२, ४, १६७८ ।

१०, १५०, ४; १७०१ । १०, १५०, ५;

१७०२ । ३, २, ८, १७३४ । ३, ३, २;

१७३४ । ९, ६६, २० । अथ० ७, ६२ (६४), १ ।

२३७३ । साम० १, १, ५, ४, २, ७,

१, १२

पूर्वणीकः ६, १०, २; ९९४ । ६, ५, २,

९८० । ६, ११, ६; १००५ ।

पुष्टिः वा० य० २८, ३२; २१०३

पुष्टिवर्धनः १, ३१, ५; ५४

पुष्टिवर्धनः [इन्द्राग्नी] वा० य० २१, २०;

२०४५

पूतदक्षः ३, १, ३; ४४९

पूर्वः ७, ६, ३; १८०५ । १०, ८७, ७;

१८२४

पूर्वः अस्मत् १०, ५३, १; १६१६

पूर्वकृत [इन्द्रः] वा० य० २०, ३६; २०१४

पूर्व्यः १, २६, ५; ३२१ । ७४, २, २१६ ।

२, २, ९; ३९३ । ३, ११, ३; ५२० । ३, १४, ३,

५८३ । ३, २३, ३, ६२९ । ५, ८, २; ८२२ ।

५, १५, १, ३; ८६६, ८६८ । ५, २, ३, ८९३ ।

८, १९, २; १२२५ । ८, २३, ७, २२,

१२७६, १२९१ । ८, ३९, ३, १०;

१३०२, १३०९ । ८, ७५, १; १३६३

पूर्व्यः यज्ञेषु ८, ३९, ८, १३०७ ।

८, ६०, २; १३९० । ८, १०२, १०, १४७२

पूषा अथ० ६, ११२, ३; १९२ । [देवता]

ऋ० ७, ४१, १; २४३७

पूषा स्वम् २, १, ६; ३७४

पूषण्वान् वा० य० २१, १५, २०४० ।

२८, २७, २०९८

पूषण्वान् [इन्द्रः] १, १४२, १२, १२२९

पू' शतभुजिः मदी न आयसी भव

७, १५, १४; ११९०

पृक्षः १, १४१, २; ३०६ । ६, ८, १, १७८०

पृच्छन्ति तम् इत् १, १४५, २, ३३४

पृणन् १०, १२२, ४, १६७८

पृतनाजित् अथ० ७, ६३ (६५), १,

२३७४

पृतनाषाट् ३, २९, ९; ५६६

पृथिव्याः तनः ३, २५, १; ५३२

पृथुः २, १०, ४; ४१२

पृथुपाजा ३, ५, १; ४७० । ३, २, ७, ५,

५४१ । ३, २, ११, १७३७ । ३, ३, १,

१७४२

पृथुप्रगामा १, २७, २; ३९

पृषद्वत् [बर्हिः] ७, २, ४, १९७८

पृष्टबन्धुः ३, २०, ३; ६१६

पृष्टः दिवि पृथिव्याम् विश्वा १, ९८, २;

१७२५

पोता १, ९४, ६, २६१ । २, ५, २, ४२६ ।

७, १६, ५, ११९६ । ४, ७, ३; ६१४

पौत्रम् तत्र २, १, २; ३७०

प्रकेतः १, ९४, ५; २६०

प्रकेतः अध्वरस्य महान् ७, ११, १,

११६६

प्रचेताः १, ४४, ११; २६ । २, १०, ३;

४११ । ३, २५, १; ५३२ । ३, २९, ५,

५६२ । ४, १, ११; ६३१ । ४, ६, २;

६८३ । ६, ५, १, ९७९ । ६, १३, ३;

१०१४ । ६, १४, २; १०१९ । ७, ४, ४;

११३७ । ७, ६, ५, १२, ११९६, १२०३ ।

७, १७, ५, १२०८ । ८, १०२, १८, १४८० ।

१०, ७९, ४, १६४० । १०, १४०, ५;

१६८८ । १०, ८७, ८, १८३५ । १०, ११०,

३, २००३ । वा० य० २९, २५; २११७ ।

अथर्व० ७, १०६, १, २२०० । ४, २३, १;

२३३० । [वरुण देवता]

प्रचेतसौ [देवते] ' होतारौ देव्यौ ' पश्य

प्रचोदयन् विद्यानि ३, २७, ७, ५४३

प्रचोदयन्ता विद्येषु [देव्यौ होतारौ]

१०, ११०, ७, २०१४

प्रजानन् ३, २९, १६; ५७३ । ४, १, १०;

६३६ । १०, १६, ९, १५६५ । १०,

८८, ६, २४०२ । अथ० ४, २३, २;

२३३१

प्रजानन् [वनस्पतिः] २, ३, १०; १९५१

प्रजानन् तव ऋन्विद्यं योनि. १०, ९१, ४;

१६५४

प्रजानन् देवयानान् पथः वा० य०

२९, २; २१०७

प्रजापतिः २, ५, ९; १९८९

प्रणेताः वस्य आ २, ९, २, ४०४

प्रतरणं अथ० १२, २, ४९; २२६२ ।

ऋ० २, १, १२, ३८०

प्रतिक्षियन् विश्वा भुवनानि २, १०, ४;

४१२

प्रतिगृह्णन् अथ० ३, २१, ४, २३५८

प्रतिदहन् अभिशस्ति अरातिम् अथ०

३, १, १; २२५२ । ३, २, १; २२५६

प्रतिमिमानः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७

२०१५

प्रतिहर्यन् (त्) ८, ४३, २, १३११

प्रतिव्य ८, २३, १; १२७०

प्रतनः ३, ९, ८; ५०७ । ५, ८, १, ८२१ ।

८, ११, १०, १२२३ । ८, २३, २०; १२८९ ।

८, २३, २५; १२९४ । ८, ४४, ७; १३४९

१०,४,१; १५०६ । १०,७,५, १५३१ ।
१०,९१,१२, १६६३

प्रत्नः होता २,७,६; ४४६

प्रत्यङ् विश्वतः १,१४४,७,३३२।२,१०,
५; ४१३ । १०,७९,५; १६४१

प्रत्यङ् तस्यौ सः विश्वा भुवनानि १०,८८,
१६; २४१२

प्रथमः १,३१,२,५१।२,१०,१; ४०९ ।
३,२९,५, ५६२ । ४,१,२१, ६३७ ।

४,७,१,६९३।४,११,५,७३२ । ५,११,
२; ८४३।६,१,१; ९३९।६,१५,१६;
१०३८ । ८,२३,२२; १२९१ ।

१०,१२,२, १५५० । १०,४६,९,
१६०९ । १०,१२२,४; १६७८ । १०,
१२२,५, १६७९।१,१६,३; १८८१ ।

१,१८८,७, १९३७ । ३,४,३, १९५५ ।
अथ० ७,८२, (८७), ४५, २३२७-२८।

४,२३,१, २३३०

प्रथमः अंगिरस्तमः १,३१,२; ५१

प्रथमः अंगिरा ऋषिः १,३१,१; ५०

प्रथमः अमृतानाम् १,२४,२; २७

प्रथमः देवः अथ० ५, २८, ११, २१७७

प्रथमः देवतानाम् अथ० ४,१४,५,
२२२१

प्रथमः मात रिविश्वेने विवस्वते आवि
भव १,३१,३; ५२

प्रथमः होता ७,११,१,११६६। ३,४७;
१९५९

प्रथमजाः ऋतस्य १०,५,७; १५१९

प्रदिवः ४,६,४; ६८५ । ४,७,८,७००।
५,८,७; ८२७ । ६,५,३,९८१।२,३,१,
१९४२

प्रभुः ८,४३,२१; १३३०

प्रभुः रूपाणि १,१८८,९; १९३९

प्रभुः विश्वा विशः अनु ८,११,८; १२२१

प्रमतिः १,३१,१०,१४,१६, ५९,६३,
६५ । ८,१९,२९; १२५२

प्रमहाः (हस्) ५, २८, ४, २३६

प्रमृणन् सपत्नान् अथ० १९,६६,१,
२३५०

प्रयज्युः ३,६,२, ४८१

प्रयतः ४,५,१०, १७६५

प्रयन्ता वसूनाम् १,७६,४; २३२

प्रवपन् १०,११५,३; १६६८

प्रविद्वान् अथ० ५,२६,१, २३४५

प्रविशिवान् विशः विशः अथ० ४,२३,
१, २३३०

प्रशस्यः २,२,३; ३८७

प्रशस्तः १,३६,९; ७६ । ७,१,१; ११००

प्रशस्त विश्व १,६६,४, १३७

प्रशस्यः विदथेषु ८,११,२, १२१५

प्रशासन् ऋतून् १,९५,३, १८७०

प्रशस्ता १,९४,६, २६१ । २,५,४, ४२८

प्रशास्त्रम् तव २,१,२; ३७०

प्रशिषः तस्मिन् सन्ति १,१४५,१, ३३३

प्रसूषु नवासु अन्तः चरति १,९५,१०;
१८७७

पाञ्च क् १०,४६,४; १६०४

प्राचा जिह्वा १,१४०,३, २९४

प्राचीनम् ९,५,४, १९८९

प्रावीः ४,२,२; ७१३

प्रियः १,२६,७; ३४ । १,१२८,७-८;
२८९,२९० । १,१४३,१; ३१८ ।

३,२३,२, ६२९ । ५,२३,३, ९०५ ।

६,१,६; ९४४ । ६,१६,४२; १०८३ ।

६,४८,१; १०९० । ७,१६,१,११९२ ।

१,१३,३; १९०८ ।

प्रियः चमस्य १०,२१,५; १५८५

प्रियः देवानाम् साम० १,१,७,३

प्रियः विशाम् ५,१,९; ७६३

प्रिय जातः ८,७१,२; १४१०

प्रिय धामा (मः) १,१४०,१; २९२

प्रियप्रियम् (द्वितीया) ६,१५,६,
१०२८

प्रीणन् ९,५,१; १९८६

प्रीणानः १,७३,१; २०५ । वा० य०

२७,१३; २०६२

प्रीतः १,६६,४; १३७ । १,६९,५; १६८

प्रीतीषणिः चर्षणीनाम् ६,१,८, ९४६

प्रीद्वः सनकात् १०,६९,१२; १६३६

प्रीष्ट ८,८४,१, १४५४ । १०,१५६,
५; १७०७

प्रीष्ट प्रियाणाम् ८,१०३,१०, १२६६

प्रीणानः अथ० ५,२,७; २०७४

प्रोथन् (त्) १०,११५,३; १६६८

प्लव अथ० १२,२२,४८; २२६१

ब्रह्म त्रिधा ४,५८,३, १८९७

बपसत्-न् १०,१४२,३; १६९२

बपसन्, उपस्रक्षु ८,७२,१५, १४३८

बभ्रिः ३,१,१२, ४५८

बभ्रुः अथ० ७, १०९, १, ७;

२३६५, २३७१

बर्हिः [देवता] १,१३,५, १९१० ।

१,१४२,५; १९२२।१,१८८,४; १९३४।

२,३,४; १९४५ । ३,४,४, १९५६ ।

५,५,४; १९६७ । ७,२,४; १९७७ ।

९,५,४; १९८४। १०,७०,४, १९९५।

१०,११०,४; २०१६ । वा० य०

२०, ३९, ५९; २०१७, २०२९ ।

२१,१५,३३, २०४०, २०५१। २७,१५,

२०६४। २८,४; २०८७ । २८,२७;

२०९८। २९,४,२९, २१०९, २१२१ ।

ऋ० प्रैष ५, २१३३ । अथ० ५, १२, ४;

२००६ । ५, २७, ९; २०८०

बर्हिषः राट् ६, १२, १; १००६

बहुलः २, १, १२; ३८०

बाहुमान् [इन्द्रः] अथ० १, ७, ४; २२८७

बृहन् [त्] १, ४५, ८; १०७ । २, १, १२;

३८० । ३, २७, १५; ५५१। ३, १५, १;

५८८ । ५, १२, १; ८४८ । ५, २६, ३;

९२२ । ६, १, ३; ९४१। ६, २, ४, ९५५।

८, १०३, ८, १२६४ । १०, १, १, १४८५।

१०, १, ३, १४८७। १०, ३, ४, ५; १५०२-

३। १०, ७, ३, १५२९। ३, २, १४; १७४०।

४, ५, १; १७५८। १०, ७०, ७, २००३।

१० ८८, ३, २३९९। अथ० १९, ६४, १,
२३५१। [हन्त्र] वा० य० २०, ४१,
२०१९। अथ० ४, १४, ६, २२२२
बृहत् तिरश्चा वयसा २, १०, ४, ४१२
बृहता ज्योतिषा भाति ५, २, ९; ७७५
बृहतीः [देवीः द्वार] १०, ११०, ५;
२००७

बृहत्केतुः ५, ८, २, ८२२
बृहत्सूः ८, ५६, ५, २४५५
बृहदर्चाः ५, २५, ७, ९१७
बृहदुक्षा १०, ६२, ७; १६३१
बृहद्भाः १, ४५, ८, १०७। ७, ८४; ११५२
बृहद्भानुः १, २७, १२; ४९। १, ३६, १५,
८०। १०, १४, १, १६८४
बृहत्स्यतिः ३, २६, २; १७५४
बृहत्स्पतिः [देवता] अथ० १९, ४, ४;
२२१२। २, २९, १; २१४९। ३, २१, ८,
२३६२

ब्रह्मः ३, ७, ५; ४९४
ब्रह्मन्-क्षा २, १, २; ३७०। २, १, ३;
३७१। ४, ९, ४, ७१५। ७, ५, ११४६।
४, ४, ६, १८१८। वा० य० २८, २८,
२०९९

ब्रह्मणस्कविः ६, १६, ३०, १०७१
ब्रह्मणस्वतिः २, १, ३; ३७१

" [देवता] ७, ४१, १, २४३७।
अथ० ४, ४, ६, २१६२
भग. त्वम् २, १, ७, ३७५। ६, १३, २,
१०१३। वा० य० २८, ३३, २१०४।
[देवता] क्र० ७, ४१, १; २४३७
भद्रः १, ६७, २, १४५। १०, ३, ३; १५०१
भद्रम् ४, १०, १, ७२०
भद्रशोचिः ५, ४, ७, ७९६। ७, १४, २,
११७५। ८, ७१, ३; १४११। १०, ४५, ९;
१५१७
भद्रमानः सुमन्मभिः ३, २, २; १७३८
भद्रमाने [उपासानक्ते] १, १४२, ७;
१९२४। ३, ४, ६, १९५८
भरतम्-त-तः (द्वि०) १, ९६, ३, १८८१

दे० [अग्निः] ३३

भरतस्य अग्निः ७, ८, ४; ११५२
भरद्वाजे समिधान. ६, ४८, ७; १०९६
भर्वन् पुरुषि पृथुनि ६, ६, २, ९८७
भाः १, ४५, ८, १०७। ४, ५, १, १७५८
भाक्कजीकः १, ४४, ३, ८८। ३, १, १२,
१४; ४५८, ४६०
भाक्कजीक. समिधा १०, १५, २, १५५०
भाजयुः २, १, ४, ३७२
भाति बृहता ज्योतिषा ५, २, ९, ७७५
भानु ३, २२, २, ६२४। ५, १६, १,
८७१। ७, ४, १, ११३४
भानवः अस्यत्वेषाः अजराः १, १४३, ३
३२०
भारती [देवता] पश्य ' तिन्नः देख्य.'
१, १४२, ९, १९२६। अथ० ५, २७, ९;
२०८०
भारती २, ७, १, ४४१। २, ७, ५, ४४५।
६, १६ १९, ४५; १०६०, १०८६
भारती त्वम् २, १, ११, ३७९
भासाकेतु १०, २०, ३; १५७३
भिषज्-कृ वा य० २८, ९; २०९२।
अथ० ५, २९, १; २३०५
भीम. १, ७०, ११; १८४। ६, ६, ५;
९९०। १, ९५, ७, १८७४
भीम. [वनस्वतिः] वा० य० २१, ३९,
२०५८
भुजम् १, ६५, ५, १२८
भुरग्युः १, ६८, १; १५४। १०, ४६, ७;
१६०७
भुवनस्य गर्भः १०, ४५, ६; १५२४
भूमा देवानाम् २, ४, २, ४१७
भूरि. १०, ४६, ३; १६०३
भूरिजन्मा १०, ५, १, १५१३
भूरिपाणिः अथ० ५, २७, १, २०७२
भूर्जयन् १०, ४६, ५; १६०५
भूर्णिः १, ६६, २; १३५। ३, ३, ५; १७४६
भूषन् ३, २५, २; ५३३
भेषजस्य कर्ता अथ० ५, २९, १, २३०५
भृगवान् ४, ७, ४; ६९६
भृमिः १, ३१, १६; ६५

भेषजः वा० य० २८, ३४, २१०५
भोजनः विश्वस्य १, ४४, ५; ९०
भ्राजमानः ९, ५, १०; १९९५। १०, ८८,
१६; २४१२
भ्राता ८, ४३, १६, १३२५
" [वरुणः] ४, १, २, २४४९
मंहिष्ठ ८, १०३, ८, १२६४
मघवन्-घवा १, ५८, ९; ११८।
१, १२७, ११; २८२। १, १४६, ५;
३४२। २, ६, ४; ४३६। ५, १६, ३,
८७३। ६, १५, १५, १०३७। ८, १०३, ९,
१२६५। वा० य० २८, ९; २०९२
मघोनी [उपासानक्ते] ७, २, ६, १९७९
मति. १, ९१, ८; १६५८
मदः ते शुग्मिनाम. १, १२७, ९; २८०
मधुजिह्व १, ४४, ६; ९१। १, ६०, ३;
१२१। १, १३, ३, १९०८
मधुपृच-क २, १०, ६; ४५४
मधुप्रतीक. १०, ११८, ४, १८५६
मधुवचाः ४, ६, ५, ६८५। ७, ७, ४,
११४५
मधु हस्त्यः ५, ५, २, १९६५
मनीषिणां प्रार्थनः १० ४५, ५; १५२३
मनुहितः ८, १९, २१, २४; १२४४,
१२४७। ३, २, १५, १७४१। १, १३ ४;
१९०९
मनोता प्रथमः २, ९, ४, ४०६। ६, १, १,
९३९
मन्द्रः १, २६, ७, ३४। १, ३६, ५;
७२। १, १४१, १२; ३१६। १, १४४, ७,
३३२। ३, १, १७; ४६३। ३, १०, ७,
५१५। ३, १४, १; ५८१। ४, ६, २, ५;
६८३, ६८६। ४, ९, ३, ७१४। ५, ११, ३;
८४४। ५, १७, २, ८७७। ६, १, १६;
९४४। ६, १०, १, ९९३। ७, ७, २, ४,
११४३, ११४५। ७, ८, २, ११५०।
७, ९, १-२, ११५५-५६। ७, १०, ५;
११६५। ८, १०३, ६; १२६२।
८, ४३, ३१; १३४०। ८, ४४, ६;

१३४८। ८, ६०, ३; १३९१। ८, ७४, ७;
 १४४८। १०, ६, ४, १५२३। १०, १२, २;
 १५५०। १०, ४६, ४, ८; १६०४,
 १६०८। ३, २६, ४, १७३०। ३, २, १५;
 १७४१
 मन्द्रजिह्वा ४, ११, ५, ७३२। ५, २५, २,
 ९१२। १, १४२, ८, १२२५
 मन्द्रनरः ३, ७, ९; ४९८
 मन्द्रतम ५, २२, १, ८९९। ६, ११, २,
 ११०१। ६, ४, ७, ९७७। ८, ७०, ११,
 १४१९
 मन्धाना १०, २, २, १४९३
 मन्मनि (मसमी) १०, १२, ८, १५५६
 मन्मसाधनः-वेः १, ९६, ६, १८८४
 मन्यु १०, ८७, १३, १८४०। वा० य०
 २१, ३९; २०५८
 मयोभू. [निस्त्रः देव्यः] १, १३, ९,
 १९१४। ५, ५, ८, १९१४
 मरुत. [देवता] १, १९, १-९; २४३८-
 २४४६। ८, १०३, १४; २४४७
 मरुत्वान् [इन्द्रः] १, १४२, १२; १९२९
 मरुत्सखः ८, १०३, १४; २४४७
 मर्त्यजेन्यः २, १०, १; ४०९
 मर्य. १, ७७, ३, २३६
 मर्यश्री. २, १०, ५, ४१३
 महत्-हान् १, २७, ११; ४८। १, ३६, ९,
 ७६। १, ३६, १२, ७२। १, ९४, ५;
 २६०। १, १४६, २, ३३९। ३, १, ११-१९,
 ४५७-६५। ३, ६, ४, ४८३। ४, ७, ७;
 ७९९। ४, ८, २; ७०५। ४, ९, १,
 ७१२। ५, १, २, ७५६। ६, ४८, ३,
 १०९२। ८, ६०, ६, १९; १३९४,
 १४०७। १०, ४, २, १५०७। १०, ४६, ५,
 १६०५। १०, ७९, १; १६३७।
 ३, २६, ३, १७२९। १, ९५, ४; १८७१
 महयन् छावाष्टयिवी भूरितसा-
 ३, ३, ११; १७५२
 महयमानः सधस्थानि ३, २५, ५, ५३६
 महत्-महे (चतुर्थी) १, १२७, १०, २८१।
 १, १४६, ५; ३४२। १, १४२, १, ३५३।

६, १, १०; ९४८। ७, १७, ७; १२१०
 महाम् अनीकम् ४, ५, ९; १७६६
 महाम् आहावम् ६, ७, २; १७७४
 महागय ९, ६६, २०; साम. २, ७, १, १२
 महि ३, ७, ४; ४९३। ४, ५, ९; १७६६
 महिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१
 महिम्ना यः उर्वी परिबभूव
 १०, ८८, १४; २४१०
 महिरत्नः १, १४१, १०; ३१४
 महिवर्षः अस्थ ६, ३, ४; ९६६
 महिमत १, ४५, ३, १०२। १०, ११५, ३,
 १६६८
 महिषः १०, १४०, ६; १६८९।
 १, ९५, ९; १८७६
 मही [देवता] पश्य ' देव्यः तिष्ठः '।
 मही [देवी द्वारः] १, १४२, ६, १९२३
 मही [उषासानके] ७, २, ६, १९७९।
 ९, ५, ६, १९८६
 मङ्गा विश्वानि भुवना जजान २, ३५, २;
 २४२३
 मातरिश्वा ३, २६, २, १७५४। १ ९६, ४;
 १८८२
 मातरिश्वा यत् अमिमीत मातरि ३, २९,
 ११, ५६८
 मातरिश्वेन प्रथमः १, ३१, ३; ५२
 माता मानुषाणां सवमित् ६, १, ५, ९४३
 मातृषु शश्वतीषु वने आसन् ४, ७, ६,
 ६९८
 मानुषः १, ४४, १०; ९५
 मानुषाणां अरतिः ७, १०, ३; ११६३
 मार्जाल्य ५, १, ८; ७६२
 मितहुः ४, ६, ५; ६८६। ७, ७, १; ११४२
 मित्रः [देवता] अथ० ३, २१, ८, २३६२
 मित्रः ३, ५, ३, ९; ४७२, ४७८। ५, ३, १;
 ७७९। ५, ९, ६, ८३३। ७, ९, ३;
 ११५७। १०, ७९, ७, १६४३। ६, ८, ३;
 १७८२। १०, ८७, १; १८२८
 मित्रः अजुतः १, ९४, १३, २६८। ६, ८, ३;
 १७८२

मित्रः त्वम् ७, १२, ३; ११७३
 मित्रः त्वं दस्मः ईड्यः २, १, ४; ३७२
 मित्रः त्वया शाश्वते १, १४१, ९; ३१३
 मित्रः प्रियः १, ७५, ४; २२७
 मित्रः मर्तेषु १, ६७, १; १४४
 मित्रः शाला १०, २०, २; १५७२
 मित्रः समिद्धः भवति ३, ५, ४; ४७३
 मित्रमहः १, ४४, १२; ९७८, १९, २५;
 १२४८। ८, ४४, १४, १३५६। १०,
 ११०, १, २००३। वा० य० २९, २५,
 २११७
 मित्रमहस्-हाः १, ५८, ८; ११७। २,
 १, ५, ३७३। ६, २, ११, ९६२। ६,
 ३, ६; ९६८। ६, १४, ६, ९६२। ८,
 ६०, ७, १३९५। ७, ५, ६; १७९९।
 ४, ४, १५; १८२७
 मित्रावरुणौ [देवता] १, ३५, १, २४४८।
 ७, ४१, १, २४३७
 मित्रियः ८, १९, ८; १२३१
 मिमाना यशम् [देव्यो होतारौ]
 १०, ११०, ७, २०१४
 मिषेधः १०, ७०, २; १९९३
 मिषेध्यः १, २६, १; २८। १, ३६, ९,
 ७६। १, ४४, ५; ९०
 मीढवान् १, २७, २; ३९९। २, ८, १, ३९७।
 ३, १६, ३; ५९६। ४, १५, ५, ७५३।
 ७, १५, १; ११७७। ७, १६, ३; ११९४।
 ८, १०२, १५; १४७७। ४, ५, १, १७५८।
 १०, १८८, २, १८६४। वा० य० २८, ५,
 २०८८
 मुख्यमानः निरेणसः अथ० १२, २, १२;
 २२३८
 मुहुर्गीः १, १२८, ३; २८५
 मूर्धा दिवः ६, ७, १, १७७३। १, ५९, २;
 १७१८
 मूर्धन् भुवनस्य अतिष्ठाः १०, ८८, ५;
 २४०१
 मूर्धा भुवः अग्निः नक्तं भवति १०, ८८, ६;
 २४०२

सूची रथीणाम् ८, ७५, ४, १३७६
 मृगः सईम् १, १४५, ५; ३३७
 मृज्यमानः नृभिः १०, ६९, ७, १६३१
 मृश्यते न प्रथमं ना परं वचः १, १४५, २,
 ३३४
 मृळयत्तमः १, ९४, १४; २६२
 मेधाकारः १०, ९१, ८; १६५८
 मेधिरः १, ३१, २; ५१ । १, १२७, ७,
 २७८ । ३, १, ३, ४४९, ३, २१, ४, ६२१ ।
 १, १४२, ११; १९२८
 मेध्यः ५, १, १२; ७६६
 युध्यः ८, ६०, ३, १३९१
 यजत्-न ५, ८, १, ८२१
 यजन् यज्ञैः वा०य० २९, २७, २११९
 यजन्तौ [दैव्यौ होतारौ] देवान्
 २, ३, ७, १९४८
 यजतः ४, १, १, ६३१ । ७, २, २, १९७५
 यजत रथीणाम् ६, १, ८; ९४६
 यजत्रः १, ७६, ४, २३२ । १, १८९, ३, ७;
 ३६३-३६७ । ३, १४, २, ५८२ । ३, २२, २;
 ६२४ । ६, १२, ७, १००७ । ७, १४, २;
 ११७५ । १०, ११, ८; १५४७ ।
 १०, ४६, ९-१०, १६०९-१०
 यजिष्ठः १, ३६, १०; ७७ । १, ४४, ५;
 ९० । १, ५८, ७; ११६ । १, ७७, १;
 २३४ । १, १२८, १; २८३ । १, १४९, ४,
 ३५६ । २, ६, ६; ४३८ । ३, १०, ७;
 ५१५ । ३, १३, १; ५७४ । ४, १, ४,
 ४, ११९; ६०५ । ४, २, १; ६४७ ।
 ४, ७, १, ५; ६९३-६९७ । ४, ८, १;
 ७०४ । ५, १४, २; ८६१ । ७, १५, ६;
 ११८२ । ८, १९, ३, २१; १२२६, १२४४ ।
 ८, ६०, १, ३; १३८९, १३९१ । १०, २, ५,
 १४९६ । १०, ६, ४; १५२३ । १०, ४६, ८,
 १६०८ । १०, ११८, ९; १८६१
 यजिष्ठः देवानां उत मर्यानाम्
 ६, १५, १३; १०३५
 यजीयान् २, ९, ४; ४०६ । ३, १९, १;
 ६१० । ४, ६, १-२; ६८१-८३ ।

५, १, ५-६; ७५२-६० । ५, ३, ५, ७८२ ।
 ६, १, २, ६; ९४०, ९४४ । १०, १२, २;
 १५५० । १०, ४३, १-२; १६१६-१७ ।
 ३, ४, ३; १९५५ । वा०य० २९, २८, ३४,
 २१२०, २१२६
 यज्ञः ७, १६, २, ११९३ । १०, ४६, ४;
 १६०४ । १०, ५३, ३, १६१८ ।
 १, १८८, २; १९३२ । १०, ८८, ८,
 २४०४
 यज्ञः सः १०, २, ६, १५७६
 यज्ञ तन्वानः ३, ३, ६; १७४७
 यज्ञ मिमाना [दैव्यौ होतारौ]
 १०, ११०, ७, २०१४
 यज्ञ विशिष्टः २, १, १०; ३७८
 यज्ञस्य केतुः ३, ११, ३; ५२० । ३, २९, ५;
 ५६२ । ५, ११, २, ८४३ । ६, २, ३;
 ९५४ । १०, १२२, ४; १६७८ ।
 ६, ७, २; १७७४ । १, ९६, ६, १८८४
 यज्ञस्य यज्ञस्य केतुः १०, १, ६, १४८९
 यज्ञस्य साधनः ८, २३, ९, १२७८
 यज्ञानां केतु ८, ४४, १०, १३५२ ।
 ३, ३, ३; १७४४
 यज्ञानां नाभिः ६, ७, २, १७७४
 यज्ञानां पिता ३, ३, ४; १७४५
 यज्ञीः १, १५, १२; २३
 यज्ञवन्धुः ४, १, २; ६३५
 यज्ञवृध् अथ० ४, २३, ३, २३३२
 यज्ञसाधः १, १२८, २; २८४ । १, ९६, ३;
 १८८१
 यज्ञसाधन. १, १४५, ३, ३३५ ।
 ३, २७, २, ८, ५३८, ५४४
 यज्ञसाह यज्ञसाह १०, २, ७, १५७७
 यज्ञियः ३, १, २१; ४६७ । ४, १५, १;
 ७४९ । ५, १२, १, ८४८ । ६, १६, ४;
 १०४५ । ८, १०३, ११; १२६७ ।
 ८, ३९, ७; १३०६ । ८, ७५, ३; १३७५ ।
 १०, २१, १; १५४० । ३, २, १३;
 १७३९ । १, १४२, ३; १९२०
 यज्ञियः प्रथमः ८, २३, १८; १२८७
 यज्ञिये [उवासानके] ७, २, ६; १९७९

यजन्-उवा ३, १४, १, ५८१ । ६, १५,
 १४; १०३६
 यत् (यन्) वृतेव बहुभिः वसव्यैः
 ६, १, ३, ९४१
 यतमः यतमानः सूर्यस्य राक्षिभिः
 ५, ४, ४, ७९३
 यति. मतीनाम् ७, १३, १; १८१०
 यन्ता १०, ४६, १; १६०१
 यन्ता धीनाम् ३, ३, ८; १७४९
 यन्ता यज्ञानाम् ३, १३, ३, ५७६
 यन्तुरः ३, २७, ११; ५४७ । ८, १९, २;
 १२२५
 यमः १, ६६, ८, १४१
 यम रथानाम् ८, १०३, १० १२६६
 यमति जन्मनी उभेय १, १४१, ११,
 ३१५
 यविष्ठः १, २२, १० २५ । १, २६, २,
 २९ । १, ४४, ४; ८९ । १, १४१, ४,
 १०, ३०८, ३१४ । १, १४७, २, ३४४ ।
 १, १८९, ४, ३६४ । २, ६, ६; ४३८ ।
 २, ७, १; ४४१ । ३, १५, ३, ५९० ।
 ३, १९, ४, ६१३ । ४, २, १०, १३
 ६५६, ६५९ । ४, २, ३, ४, ७३६-३७ ।
 ५, १, १०, ७६४ । ५, ३, ११, ७८८ ।
 ६, ५, १, ९७९ । ६, ६, २, ९८७ ।
 ६, १५, १४, १०३६ । ६, ४८, ८, १०९७ ।
 ७, १, ३; ११०२ । ७, ३, ५; ११२८ ।
 ७, ४, २, ११३५ । ७, ७, ३, ११४४ ।
 ७, १०, ५, ११६५ । ७, १२, १; ११७१ ।
 ८, २३, २८; १२९८ । ८, ८४, ३,
 १४५६ । १०, १, ७; १४९१ । १०, २, १;
 १४९२ । १०, ४, २; १५०७ ।
 १०, ४५, ९, १५९७ । १०, ६९, १०;
 १६३४ । १०, ८०, ७; १६५० ।
 ४, ४, ६, ११; १८१८, १८२३ ।
 १०, ८७, ८, १८३५ । अथ० ५, २९, ४,
 २३०८
 यविष्ठः भुजाम् १०, २०, २, १५७०
 यविष्ठ्य १, ३६, ६, १५; ७३, ८० ।
 १, ४४, ६, ९१ । ३, १, ६, ५०५ ।

३, २८, २, ५५३ । ५, ८, ६, ८२६ ।
 ५, २६, ७, ९२६ । ६, १६, ११, १०५२ ।
 ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १६, १०, १२०१ । ८, ७५, ३, १३७५ ।
 ८, ६०, ४, ८, १३९२, १३९६ ।
 ८, १०२, ३, २०, १४६५, १४८२ ।
 अथ० १९, ६४, ३, २३५३
 यशस्व-शाः १, ६०, १, ११९ । ८, २३, ३०, १२९९ । अथ० ३, २१, ५, २३५९ ।
 [इन्द्र] वा० य० २०, ४४, २०२२
 यशस्तम. २, ८, १, ३९७ । ७, १६, ४, ११९५
 यशस्तम., विश्वेषां होतृणाम्
 ८, १०२, १०, १४७२
 यज्ञः १, ३६, १, ६८ । ३, १, १२, ४५८ । ३, ५, ५, ९, ४७४, ४७८ ।
 ३, २८, ४, ५५५ । ४, ७, ११, ७०३ ।
 ७, ८, २, ११५० । १०, ११, १, १५४० ।
 ३, २६, ९, १७३५ । ३, ३, ८, १७४९ ।
 ४, ५, २, १७५९ । ७, ६, ५, १८०७ ।
 १०, ११०, ३, २००५ । वा० य०
 २९, २८, २१२०
 यज्ञी [उपासानक्त] १, १४२, ७,
 १९२४ । ५, ५, ६, १९६२
 यातयज्जनः ८, १०२, १२, १४७४
 यातुमान् अथ० १, ७, ४, २२८७
 युक्त अथ० ५, २९, १, २३०५
 युजानः नमः १, ६५, १, १२४
 युवा १, १२, ६, १५ । १, १४४, ४, ३२९ ।
 ३, २३, १, ६२७ । ४, १, १२, ६३८ ।
 ५, १, ६, ७६० । ६, ५, १, ९७९ ।
 ७, १५, २, ११७८ । ८, ४४, २६, १३६८ ।
 ८, १०२, १, १४३३ । १०, ४६, ३, १६०३
 युवा आ भूत् सुहु जुजुवोः २, ४, ५,
 ४२०
 योषणे दिव्ये [उपासानक्ते] ७, २, ६,
 १९७९ । १०, ११०, ६, २००८
 संसृजिह्वः ४, १, ८, ६३४
 रक्षिता अमृतस्य ६, ७, ७, १७७९

रक्षोहा [अग्निदेवता] ४, ४, (१-१५);
 १८१३-१८२७ । १०, ८७, (१-२५),
 १८२८-५२ । १०, ११८, (१-९), १८५३-
 ६१ । १०, १६२, (१-६), २४१६-२४२१
 रक्षोहा अथ० १, २८, १, २२९३ ।
 ४, २३, ३, २३३२
 रघुपत्न्यन्-त्वा १०, ६, ४, १५२३
 रघुयत्-न् ४, ५, ९, १७६६
 रघुव्य (स्य) द्व ३, २६, २, १७५४
 रघुव्यद् गुहा ४, ५, ९, १७६६
 रज. आततन्वान् शुक्रैभिः अङ्गैः ३, १, ५,
 ४५१
 रजसा विमान ३, २६, ७, १७५६
 रणवः १, ६५, ५, १२८ । १, ६६, ३, १३६ । १, १४४, ७, ३३२ । २, ४, ६,
 ४२१ । ४, ७, ५, ६९७ । ६, २, ७,
 ९५८ । ३, २६, १, १७५३
 रणवः कुत्राचिद् ६, ३, ३, ९६५
 रणव दुरोगे १, ६९, ४५, १६७-६८
 रणवः सदा ४, १, ८, ६३४
 रणव संश्र ६, १६, ३७, १०७८ ।
 ७, १, २१, ११२०
 रत्नधा ७, १६, ६, ११९७
 रत्नधातमः १, १, १, १ । ५, ८, ३, ८२३
 रत्ना दधान दमेदमे सप्त ५, १, ५,
 ७५९
 रथः ३, ११, ५, ५२२
 रथमा ८, ७४, १०, १४५१
 रथयुः १०, ७, ५, २००१
 रथिरः ७, ७, ४, ११४५ । ३, २६, १,
 १७५३
 रथीः ३, २, ८, १७३४ । ३, ३, ६, १७४७
 रथीः अप्वराणाम् १, ४४, २, ८७ ।
 ८, ११, २, १२१५
 रथीः क्रनोः ४, १०, २, ७२१
 रथीः यज्ञाणाम् ८, ४४, २७, १३६९
 " वार्याणाम् ६, ५, ३, ९८१
 रथ्य ६, ७, २, १७७४
 रभस्वान् १०, ३, ७, १५०५

रथि ९, ५, ३, १९८३
 रथिः हव श्रवस्यते १, १२८, १, २८३
 रथिः त्वम् २, १, १२, ३८०
 रथिः महिषी त्वत् षड्वारते ५, २५, ७,
 ९१७
 रथीणां दाशत् १, ७०, ५, १७८
 " धरुणः १७३, ४, २०८ ।
 १०, ५, १, १५१३ । १०, ४५, ५, १५९३
 रथीणाम् पतिः १, ६०, ५, १२३ ।
 १, ६८, ७, १६० । ३, ७, ३, ४९२ ।
 ८, ७५, ४, १३७६
 रथीणाम् रथ्यः ७, ५, ५, १७९८
 रथीणाम् रथिपतिः १, ७२, १, १२५ ।
 २, ९, ४, ४०६ ।
 रथीणाम् रथिवित् ३, ७, ३, ४९२
 रथीणाम् राजा ८, १९, ८, १२३१
 रथीणाम् सदनम् (नूच पुरा च) ६, ७, २,
 १७७४ । (१, ९६, ७, १८८५)
 रथिपति १, ६०, ४, १२२
 रथिवान् ६, ५, ७, ९८५
 रथिवित् २, १, ३, ३७१
 रथिवित् रथीणाम् ३, ७, ३, ४९२
 रराण ३, १, २२, ४६८ । ४, २, १०,
 ६५६ । ४, १, ५, २४५२
 रराणः [त्वष्टा] ३, ४, ९, १९६१ ।
 ७, २, ९, १९६१
 रराण वसु [सविता] अथ० ७, ११५, २,
 २२०२
 रवः वृषभस्य हव ते १, ९४, १०, २६५
 रशनां बिभ्रन् वा० य० २८, ३३, २१०४
 राजत् (नृ) राजन्तम् (द्वि०) १, १, ८,
 ८ । १, ४५, ४, १०३ । ६, १, ८, १३३
 ९४६, ९५१ । ८, १९, २२, १२४५ ।
 १०, १, ६, १४९० । १०, ३, १, १४९९ ।
 १०, ४, १, १५०६ । ३, २६, ४, १७३० ।
 ६, ७, ३, १७७५ । ६, ८, ५, १७८४ ।
 १०, ८७, २१, १८४८ । [वनस्पतिः]
 वा० य० २१, ३९, २०५८
 राजसि त्वं दिव्यस्य १, १४४, ६, ३३१

राजन् (राजा) २, १, ८, ३७६६, १२, २;
१००७ । ६, १५, १३, १०३५।७, ८, १;
११४९।१०, १२, ५, १५५३।१०, ४५, ५;
१५९३ । १०, ८७, ३, १८३०
राजन् अध्वरस्य ४, ३, १, साम० १, १,
७, ७
राजा [वरुणः] ४, १, २, २४४९
राजा [सोम] अथ० २, ३६, ३, २३४०
राजा कृष्टीनां मानुषीणाम् १, ५९, ५
१७२१
राजा पर्वतेषु ओषधीषु मानुषीषु वा
१, ५९, ३, १७१९
राजा भुवनानाम् १, ९८, १, १७२४
राजा मर्त्यानाम् ३, १, १८, ४६४
राट् (राज्) बर्हिषः ६, १२, १, १००६
रातहव्यः नमसा ४, ७, ७, ६९९
रातिः वामस्य १०, १४०, ५, १६८८
रात्री [देवता] १, ३५, १, २४४८
रात्र्याश्चिदन्धः अति पश्यसि १, ९४, ७,
२६२
रायः ईशिषे २, १, १०, ३७८
रायः पतिः १, १४९, १, ३५३
रायः शुभ्रः १, ९६, ६, १८८४
राष्ट्रभृत अथ० ७, १०९ (११४), ७;
२३७० । ६, ११८, २, २३८२
रिप्रवाहः १०, १६, ९, १५३५
रिशादम् (दा) १, ७७, ४, २३७
रिशादमः [मरुतः] १, १९, ५, २४४२
रीतिः अपाम् ६, १३, १, १०१२
रुक्मः १०, ४५, ८; १५१६ । १, ९६, ५;
१८८३
रुक्मी १, ६६, ६; १३९
रुक्षः ६, ३, ७, ९६९
रुचानः दुर्मर्षम् १०, ४५, ८, १५९६
रुचानः सुरुचा ३, १५, ६; ५९३
रुद्रः ८, ७२, ३; १४२६ । ३, २, ५,
१७३१ । ४, ३, १; साम० १, १, ७, ७;
अथ० १९, ५५, ५; २२७३
रुद्रः [देवता] ७, ४१, १; २४३७

रुद्रः त्वं असुरः महः दिवः २, १, ६, ३७४
रुक्कान् १, १४९, ३; ३५५
रुक्वानः भानुना ज्योतिषा ३, २६, ३,
१७२९
रुशत् (न्) ४, ७, ९, ७०१ । ६, १, ३,
९४१ । ६, ६, १, ९८६ । ८, ७२, ५;
१४२८ । १०, १, ५; १४८९
रुशद् वसानः ४, ५, १५; १७७२
रुशदूर्मिः १, ५८, ४; ११३
रूप खेष कृणुते १, ९५, ८, १८७५
रूप न ददशे एकस्य [वायु देवता]
१, १६४, ४४; २४५६
रूपाणि बिभ्रत् पृथक् वा०य० २८, ३२,
२१०३
रूपे (मसमी) ४, ११, १, ७२८
रूराः अथ० १, २५, ४; २१७८
रेजमानः १०, ६, ५; १५२४
रेत दधत् १, १२८, ३; २८५
रेभत् ८, ४४, २०; १३६२
रेरिहत् क्षामा १०, ४५, ४, १५९२
रेवत् ३, २३, २, ६२८
रोचनस्यः (स्याम्) ६, ६, २; ९८७ ।
३, २, १४; १७४०
रोचनानां उत्तमः ३, ५, १०, ४७९
रोचमान ७, २, ९, ११३२ । १०, ३, ५,
१५०३ । १०, ११८, ४; १८५६
रोदसी अधीवास वावसाने १०, ५, ४,
१५१६
रोदसी आ अष्टगाः जायमान ३, ६, २,
४८१
रोदस्योः जनिता १, ९६, ४; १८८२
रोदस्योः राज्यम् ७, ६, २; १८०४
रोरुचानः ४, १, ७, ७३३
रोहिदम्बः ४, १, ८; ६३४ । ८, ४३, १६;
१३२५
रोद्रः १०, ३, १, १४९९
वज्रः [देवता] अथ० १९, ६६, १, २३५०
वज्रबाहु [इन्द्रः] वा०य० २०, ३६, ३८,
२०१४, २०१६

वज्रहस्त वा०य० २८, ३; २०८६
वत्स १, ७२, २; १९६ । १०, ८, २;
१५३५
वत्सः चरन् ८, ७२, ५; १४९८
वत्सः पृथिवी धेनुः तस्याः अथ०
४, ३९, २; २२८१
वद्मा ६, ४, ४, ९७४ । ६, १३, ६;
१०१७
वध्वश्वः १०, ६९, १, १६२५
वनर्गः १, १४५, ५; ३३७
वनर्षद् १०, ४६, ७, १६०७
वनस्वति [देवता] १, १३, ११, १९१६ ।
१, १४२, ११, १२२८ । १, १८८, १०;
१९४० । २, ३, १०; १९५१ । ३, ४, १०;
१९६२ । ५, ५, १०; १९७२ । ७, २, १०;
१९६२ । ९, ५, १०; १९९० ।
१०, ७०, १०; २००१ । १०, ११०, १०,
२०१२ । वा० य० २०, ४५, ६६,
२०२३, २०३५ । २१, २१, ३९;
२०४६, २०५८ । २७, २१, २०७० ।
२८, १०, ३३; २०९३, २१०४ ।
२९, १०, ३५, २११५, २१२७ । ऋ० प्रैष
११, २१३९ । अथ० ५, २७, ११,
२०८२ । ५, १२, १०, २०१२
वनस्वतीनां अधिपति अथ० ५, २४, २;
२१६६
वनस्पतीनां सूनुः ८, २३, २५, १२९४
वनम् (द्वि०) १०, ४६, ५, १६०५
वना कायमानः ३, ९, २; ५०१
वनानां गर्भः १, ७०, ३; १७६
वनिता मघम् ३, १३, ३, ५७६
वनिष्टः ७, १०, २; ११६२
वनेजाः ६, ३, ३; २६५ । १०, ७९, ७;
१६४३ ।
वनेवने शिश्रियाणः ५, ११, ६, ८४७
वन्धः १, ३१, १२, ६१ । २, ७, ४;
४४४ । १०, ४, १; १५०६ । १०, ११०, ३;
२००५
वन्धः विश्वासु धीषु १, ७९, ७; २५०

वन्यः वा० य० २९, २८; २१२०
 वन्वन् महित्वना ६, १२, ४, १००९।
 ६, १६, १०, १०६१
 वपते संवत्सर एकः १, १६४, ४४;
 २४५६
 वपावान् ६, १, ३, ९४१
 वपावान् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७;
 २०१५
 वपु १, १४१, २; २९३
 वपुष्टरा (रौ) [देव्यौ होतासौ] २, ३, ७,
 १९४८
 वपुष्यः ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८।
 ५, १, ९; ७६३
 वयः त्वं उत्तमम् २, १, १२; ३८०
 वय कृण्वानः स्वापै तन्वे ५, ४, ६,
 ७९५
 वयस्कृत् १०, ७, ७, १५३०
 वयुनम् ३, ३, ४; १७४५
 वयुनानि विद्वान् १, ७२, ७, २०१
 वयुना व्यग्रवीत् मर्त्येभ्यः १, १४५, १,
 ३३७
 वयोधाः १, ७३, १, २०५। ८, ७२, ४;
 १४२७। १०, ७, ७; १५३३। वा० य०
 २८, २४-३४, २०९५-२१०५
 वयोधा [स्वष्टा] २, ३, ९; १९५०
 वयोवृधा [उषासानक्ते] ५, ५, ६; १९६९
 वरुणः [देवता] ४, १, २, ५, २४४९,
 २४५२। १, ३५, १; २४४८। ७, ४१, १;
 २४३७ अथ० ३, २१, ८, २३६२
 वरुणः २, १, ४, ३७२। ३, ५, ४, ४७३।
 ५, ३, १, ७७९। १०, २२, ८, १५५६
 वा० य० २८, ३४; २१०५
 वरुणः त्वम् ७, १३, ३; १८१२
 वरुणः श्रुतव्रतः त्वया १, १४१, ९, ३१३
 वरुणस्य पुत्रः अथ० १, २५, ३, २२७७
 वरूथ्यः ५, २४, १; ९०७
 वरेण्यः १, २६, २-३, ७; २९-३०, ३४।
 १, ५८, ६; ११५। १, ६०, ४; १२२।
 ९, ७, ६; ४४६। ३, २७, ९-१०, ५४५-४६।

५, ८, १, ८२१। ५, १३, ४; ८५७।
 ५, २२, ३; ९०१। ५, २५, ३, ९१३।
 ८, १०२, १८, १४८०। १०, ९१, १;
 १६५१। १०, १२२, ५; १६७७।
 वा० य० २१, १२, २०३७। २८, २४;
 २०९५
 वरेण्यः होता १, २६, २, २९
 वरेण्य क्रतु ८, ४३, १२; १३२१
 वचोधाः अथ० ३, २१, ५; २३५६
 वर्तनिः ३, ७, २; ४९१
 वर्धनः १०, ९१, १२; १६६२
 वर्धनः आर्यस्य ८, १०३, १; १२५७
 वर्धमान तन्वा ६, ९, ४; १७९०
 वर्धमानः स्वे दमे १, १, ८, ८
 वर्षः अस्य महि भसत् ६, ३, ४, ९६६
 वर्षिष्ठः ५, ७, १, ८११
 वशाक् ८, ४३, ११; १३२०; अथर्व०
 ३, २१, ६, २३६०
 वशिः वा० य० २८, ३३, २१०४
 वशी अथ० ६, ३६, २, २१८२
 वषट् कृतिं जुषाण. ७, १४, ३, ११७६
 वसतिः ६, ३, ३, ९६५
 वसवः अथ० ५, २७, ६, २०७७
 वसव्यै यन् बहुभिः ६, १, ३, ९४१
 वसानः रुशत् ४, ५, १५, १७७२
 वसानः वस्त्राणि पेशनानि १०, १, ६,
 १४९०
 वसान विद्युतम् २, ३५, ९, २४३०
 वसिष्ठः २, ९, १, ४०३। ७, १, ८; ११०७।
 अथ० ६, ११९, १, २३८४
 वसुः १, ३१, ३, ५२। १, ४४, ३; ८८।
 १, ४५, ९; १०८। १, ६०, ४, १२२।
 १, ७९, ५; २४८। १, १२७, १, २७२।
 १, १२८, ६; २८८। १, १४३, ६; ३२३।
 २, ७, १, ४४१। ३, १५, ३; ५९०।
 ३, १८, २; ६०६। ३, २१, ५, ६२२।
 ४, १२, ६; ७३९। ५, ३, १२; ७८९।
 ५, ६, १-२; ८०१-२। ५, २४, २, ९०८।
 ५, २५, १, ९११। ६, १, १२, ९५०।

६, २, १; ९५२। ६, १६, २४, १०६५।
 ६, ४८, ९; १०९८। ८, १९, १२, २६,
 २८-२९, १२३५, १२४९, १२५१-५२।
 ८, १०३, ४, १२-१३, १२६०,
 १२६८-६९। ८, २३, २८; १२९७।
 ८, ४४, २४, ३०, १३६६, १३७२।
 ८, ६०, ४; १३९२। ८, ७९, ९, १३,
 १४१७, १४२१। १०, ७, २; १५२८।
 १०, ८, ४, १५३७। १०, ४५, ५; १५९३।
 १०, ९१, १२; १६६२। ४, ५, १५, १७७२।
 वा० य० २७, १५; २०६४। अथ०
 १९, १५, २, २२७०
 वसुः नेमानाम् ६, १६, १९, १०५९
 वसुदानः अथ० १९, ५५, ३, २२७१
 वसुदावन्-वा २, ६, ४; ४३६
 २, ६, ४, ४३६
 वसुधातमः वा० य० २७, १५; २०६४
 वसुधातरः अथ० ५, २७, ६; २०७७
 वसुधितिः १, १२८, ८, २९०
 वसुपतिः २, १, ११, ३७२। २, ६, ४;
 ४३६। ८, ४४, २४; १३२६
 वसुविद् ८, २३, १६; १२८५; साम०
 १, ६, १३, १
 वसुवित्तमः १, ४५, ७, १०६। ६, १६, ४१;
 १०८२
 वसुश्रवाः ५, २४, २, ९०८
 वसुभिः ह्ययमानः ५, ३, ८; ७८५
 वसूनां भरति. विश्वेषाम् १, ५८, ७;
 ११६
 वसूनां ईशानः ७, ७, ७; ११४८
 वसूनां ईशे १, १२७, ७, २७८। ८, १,
 ८; १४१६
 वसूनां वसुः १, ९४, १३; २६८।
 १०, ९१, ३; १६५३
 वसूनां वसुपतिः ५, ४, १; ७९०
 वसूनां संगमनः १, ९६, ६; १८८४
 वसाम् राजा ५, २, ६; ७७२
 वस्यः १, १४१, १२; ३१६
 वस्यः आ प्रणेता २, ९, १, ४०४

वस्त्राणि वसानः पेशनानि १०, १, ६।
 १४९०
 वस्त्रः १, १४३, ४; ३२१ । ५, १५, १;
 ८६६
 वहन् नमः १, ६५, १, १२४
 वह्निः १, ६०, १; ११९ । १, १२८, ४;
 २८६ । ३, ११, ४; ५२१ । ७, ७, ५,
 ११४६ । ७, ७, १२; १२०३ । ८, ४३,
 २०; १३२९ । १०, ११, ६; १५४५ ।
 अथ० ५, २, ७, २०७५ । १२, २, ४७;
 २२६०
 वह्निः आसा ६, ११, २, १००१ । ६, १६,
 ९, १०५० । ७, १६, ९, १२०० ।
 १०, ११५, ३; १६६८
 वह्नितमः ४, १४; २४५१
 वाजः त्वम् २, १, १२; ३८०
 वाजस्य ईशानः १, ७९, ४; २४६
 वाजस्य पतिः १, १४५, १; ३३३
 वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि १, ३६, १२, ७९
 वाजपतिः ४, १५, ३; ७५१
 वाजश्रवस्-वाः ३, २६, ५; १७३१
 वाजसातमः १, ७८, ३, २४१ । ५, १३,
 ५; ८५८ । ५, २०, १; ८९१
 वाजाः त्वद् उदीरते ५, २५, ७, ९१७
 वाजिनं वहन् वा० य० २९, १; २१०६
 वाजिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१
 वाजी २, १०, १, ४०९ । ३, २७, ३, ८;
 ५३९, ५४४। ३, २९, ७, ५६४। ५, १४,
 ७, ७५८, ७६१ । ८, ४३, २०, २५;
 १३२९, १३३४ । ८, ८४, ८; १४६१ ।
 १०, १२२, ४, ८; १६७८, १६८२ ।
 ३, २, १४, १७४०। १०, ८७, १; १८२८।
 १०, १८८, १; १८६३ । वा० य०
 २९, १-२: २१०६-७
 वाजी [हन्तः] अथ० ५, २९, १०; २३१४
 वाजी स्वां याति ६, २, २; ९५३
 वाजी वाजेषु धीयते ३, २७, ८, ५४४
 वातः [वायु देवता] ८, १८, ९, २४५७
 वातचोदितः १, ५८, ५; ११४ ।

१, १४१, ७; ३११
 वातजूनः १, ५८, ४; ११३ । १, ६५, ८;
 १३१
 वातस्वनः ८, १०२, ५, १४६७
 वातस्य सर्गः अभवत्सरीमणि ३, २९,
 ११, ५६८
 वातोपधूतः १०, ९१, ७, १६५७
 वाद्यश्वः १०, ६९, १२, ९; १६३६,
 १६३३
 वामः १०, १२२, १, १६७५
 वायुः १०, ४६७, १६०७
 वायुः [देवता] १०, १४२, १२, १९२९ ।
 १, १६४, ४४, २४५६
 वार्याणाम् ईशे ८, ७१, १३, १४२१
 वावशानः १०, ५, ५, १५१७
 वावृधानः ५, २, १२; ७७८। ५, ३, १०,
 १२; ७८७, ७८९ । ५, ८, ७; ८२७ ।
 ५, २७, २, ९२९ । ७, ५, २, १७९५ ।
 अथ० ५, २८, ४, २१७०
 वावृधानः पर्वभिः १०, ७१, ७, १६४३
 वावृधानः पुरोरुचा [हन्तः] वा० य०
 २०, ३६, २०१४
 वावृधानं प्रजापतेः तपसा वा० य०
 २९, ११; २११६
 वावृधानः ब्रह्मणा अथ० १, ८, ४; २२९२
 वावृधानः वरेण ७, ५, २, १७९५
 वावृधानौ दमेदमे सुष्टया [अग्नाविष्णु]
 अथ० ७, २९ (३०), २; २४५४
 वाशीमान् १०, २०, ६; १५७६
 विः ३, ५, ६, ४७५
 विकसुकः अथ० १२, २, १४; २२४०
 विगाहः ३, ३, ५; १७४६
 विचक्षणः ३, ३, १०; १७५१
 विचर्षणिः १, ३१, ६, ५५ । १, ७८, १;
 २३९ । १, ७९, १२; २५५ । ६, २, १;
 ९५२। ६, १६, २९, ३६, १०७०, १०७७।
 ८, ४३, २; १३११। ३, २६, ८, १७३४
 विचेता २, १०, १-२; ४०९-१० ।
 ४, ७, ३, ६९५ । ५, १७, ४; ८७९ ।

१०, ७९, ४; १६४० । ४, ५, २; १७५९
 विजावन् १, ६९, ३; १६६। १०, २, ५;
 १४९६
 वितपन् अरातिम् अथ० १२, २, ४५;
 २२५८
 विदथस्य प्रसाधन १०, ९१, ८; १६५८
 विदथस्य साधनम् ३, ३, ३; १७४४
 विदानः २, २, १, ४०३
 विदिद्युतानः ६, १६, ३५; १०७६
 विदुष्ट ४, ७, ८; ७०० । ६, १५, १०;
 १०३२। ६, १६, ९; १०५०। ७, १६, ९;
 १२०० । ८, ७५, २, १३७४ ।
 १०, ७०, ७, २००३
 विदुष्टौ [देव्यौ होतारौ] २, ३, ७;
 १९४८
 विघ्नना जिगाति अन्तः विघ्नानि
 जनुषि ७, ४, १। ११३४
 विद्युदथः ३, १४, १, ५८१
 विद्वान् १, १४५, ५; ३३७ । २, ६, ७;
 ४३९। ३, २५, २; ५३१ । ३, २९, १६;
 ५७३ । ३, १४, २; ५८२ । ३, १७, ३;
 ६०२ । ४, २, ११, ६५७ । ४, ३, १६;
 ६८१। ४, ७, ८; ७०० । ५, १, ११;
 ७६५ । ५, ४, ५; ७९४ । ७, १, २४;
 ११२३। ७, ७, १; ११४२ । १०, १, ३;
 १४८७। १०, २, १, ३; १४९२, १४९४।
 १०, १, ४, १४९५। १०, ५, ५; १५१७।
 १०, ७०, ९-१०, २०००-१। ४, १, ४;
 २४९१ । अथ० ५, २९, ५; २३०९ ।
 ३, १, १, २१५२ । ३, २, १; २१५६
 विद्वान् अन्तः अध्वन देवयानान्
 १, ७२, ७; २०१
 विद्वान् आरोधनं दिवः ४, ८, ४; ७०७
 विद्वान् आर्विज्या विश्वा १, ९४, ६, २६१
 विद्वान् काव्यानि विश्वा ३, १, १७-१८;
 ४६३-६४ । १०, २१, ५, १५८५
 विद्वान् देवानां जन्म मर्तान् च
 १, ७०, ६; १७९
 विद्वान् जन्मानि ७, १०, २; ११६२

विद्वान् पितृयाण पन्थाम् अनु प्र
१०, २, ७; १४९८
विद्वान् यज्ञस्य १०, ५३, १; १६१६
विद्वान् वयुनानि १, ७२, ७; २०१
विद्वान् विश्वा वयुनानि १, १८९, १,
३६१ । ३, ५, ६; ४७५ । ६, १५, १०;
१०३२ । १०, १२२, २, १६७६ ।
अथ० ४, ३९, १०; २२८३
विधर्ता २, १, ३, ३७१ । ७, ७, ५, ११४६
विपश्चित् ३, २७, २, ५३८ ।
विपश्चितां असुरः ३, ३४, १७४५
विपां ज्योतीषि भिन्न ३, १०, ५, ५१३
विषोधाः १०, ४५, ५; १६०५
विप्रः १, १२७, १-२, २७२-७३ ।
१, १५०, ३; ३६० । ३, ५, १, ३, ४७०,
४७२ । ३, २७, ८, ५४४ । ३, २९, ७,
५६४ । ३, १३, ३; ५७६ । ३, १४, ५;
५८५ । ४, ३, १६; ६८१ । ४, ८, ८;
७१३ । ५, १, ७; ७६१ । ६, १३, ३,
१०१४ । ६, १५, ४, ७, १०२६, १०२९ ।
८, ११, ६; १२१९ । ८, १९, १७, १२४० ।
८, ३९, ९, १३०८ । ८, ४३, १; १३१० ।
८, ४३, १४; १३२३ । ८, ४४, १०, २१,
१३५२, १३६३ । ८, ७१, ५; १४१३ ।
३, २, १३, १७३९ । ३, २६, २, १७५४ ।
१०, ८७, २२, २४, १८४९, १८५१
विप्रवीरः १०, १८८, २; १८६४
विभाति अप्सु अन्तः २, ३५, ७-८;
२४२८-२९
विभाति सुसंज्ञा भानुना ७, ९, ४;
११५८
विभानुः ८, १०२, २; १४६४
विभावसुः १, ४४, १०; ९५५, २५, २, ७;
९१२, ९१७ । ८, ४३, ३२, १३४१ ।
८, ४४, ६, १०, २४; १३४८, १३५२,
१३६६ । १०, १४०, १, १६८४ ।
३, २६, २, १७२८ । १०, ११८, ४,
१८५६
विभावा १, ५८, २; ११८ । १, ६६, २;
१३५ । १, ६९, ९; १७२ । १, १४८, ४;

३५१ । ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८ ।
५, १, ९; ७६३ । ५, ४, २; ७९१ । ६, ४, २,
९७२ । ६, १०, १; ९९३ । ६, ११, ४
१००३ । १०, ६, १-२, १५२०-२१ ।
१०, ८, ४, १५३७ । १०, ९१, १,
१६५१ । १, ५९, ७, १७२३ । ३, ३, ९;
१७५० । १०, ८८, ५, २४०३
विभूतरातिः ८, १९, २, १२२५
विभूषन् उभयान् ६, १५, ९, १०३१
विभ्रः विशोविशे ४, ७, १, ६९३
विभ्रवा १०, ३, ६, १५०४
विमान. रजसः ३, २६, ७, १७५६
विमानम् ३, ३, ४, १७४५
विमृष्ट. १०, ८८, १६; २४१२
विरप्ता शोचिषा १०, ११५, ३; १६६८
विराट् अथ० ७, ८४, १; १८६६
विरूपः ३, १, १३, ४५९
विरूपे [उषासानक्ते] ३, ४, ६, १९५८
विरोचमानः १, ९५, २; १८६९
विवस्वान् ७, ९, ३; ११५७ । साम०
१, १, १, १०
विविचि. ५, ८, ३; ८२३
विविद्वान् ४, ५, ३, १७६०
विशां ह्यङ्ग्य. ८, २३, २०; १२९९
विशां केतुः १०, १५६, ५; १७०७
विशां गोपाः १, ९४, ५; २६० ।
१, ९६, ४, १८८२
विशां पतिः विश्वासात् १, १२७, ८;
२७९ । ६, १५, १, १०२३
विशां प्रियः ५, १, ९, ७६३
विशां राजा २, २, ८, ३९२ । ८, ४३, २४,
१३३३
विशः राजा ६, ८, ४, १७८३
विशां विश्वपतिः ३, १३, ५, ५७८
विश्वपतिः १, १२, २, ११ । १, २६, ७;
३४ । १, २७, १२; ४९ । १, ६०, २;
१२० । १, १२८, ७, २८९ । २, १, ८;
३७६ । ५, ६, ५, ८७६ । ६, १, ८;
९४६ । ६, २, १०; ९६१ । ६, १५, ८;
१०३० । ७, ४, ७, ११४० । ७, १५, ७;

११८३ । ७, ७, ४; ११४५ । ८, १०३, ७;
१२६३ । ८, २३, १३-१४; १२८२-८३ ।
८, ४४, २६; १३६८ । ८, ६०, १९;
१४०७ । ३, ३, ८; १७४९
विश्रति मानुषीणां विशाम् ५, ४, ३;
७१२ । ३, २, १०, १७३६
विश्वपतिः शश्वतीनां विशाम् ६, १, ८;
९४६
विश्वः १०, ९१, २, १६५२
विश्वः १, १२८, ६; २८८ । १०, ८७, १५;
१८४२ । वा०य० २८, २९; २१००
विश्वकर्मा अथ० २, ३४, ३, २१५१ ।
२, ३५, १; २२७९
विश्वकर्मा [देवता] अथ० २, ३५, १;
२२७९
विश्वकृत अथ० ६, ४७, १; २३७२
विश्वकृष्टिः १, ५९, ७, १७२३
विश्वचर्षणि. १, २७, ९; ४६ । ५, ६, ३;
८०३ । ५, १४, ६; ८६५ । ५, २३, ४;
२०६ । ३, २, १५; १७४१
विश्वतः प(स्प)तिः ९, ५, १; १९८१
विश्वतः परिभूः १, ९७, ६; १८९२
विश्वतः प्र(स्पृ)थुः २, १, १२; ३८०
विश्वतः प्रत्यङ्ग-ह ७, १२, १; ११७१
विश्वतः भानवः यन्ति १, ९७, ५, १८९१
विश्वतः (तो) मुखः १, ९७, ६-७;
१८९२-९३
विश्वतृप्तिः २, ३, ८, १९४२
विश्वदर्शत १, ४४, १०, ९५ ।
१, १४६, ५, ३४२ । ५, ८, ३; ८२३ ।
१०, १४०, ६; १६८९
विश्वदाव्यः अथ० ३, २१, ३, ९;
२३५७, २३६३
विश्वदेवः १, १४२, १२; १९२९
विश्वदेव्यः १, १४८, १; ३४८ । ३, २६, ५;
१७३१
विश्वधाया १, ७३, ३, २०७ । ५, ८, १;
८२१ । ७, ४, ५; ११३८
विश्वभरस्-राः ४, १, १९; ६४५

विश्वमानवः [मरुतः] ४, १०, ३; २४५०
विश्वभृत् अथ० ५, २८५; २१७१
विश्वमिन्व. ३, २०, ३; ६१६
विश्वमिन्वा [देवीद्वारः] १०, ११, ५,
२००७
विश्वरूपः १, १३, १०, १९१५
विश्ववार ३, १७ १, ६०० । ७, ७, ५;
११४६ । ७, १६, ५, ११९६ ।
१०, १५०, ३, १७०० । ७, ५, ८,
१८०१ । वा०य० २७, १३, २०६२ ।
अथ० ५, २, ७, २०७४
विश्ववार्यः ८, ११, ११; १२३४
विश्वविद् ३, २९, ७, ५६४ । ३, १९, १;
६१० । ५, ४, ३, ७९२ । १०, ९१, ३,
१६५३
विश्ववेदाः १, १२, १; १० । १, ३६, ३;
७० । १, ४४, ७, ९२ । १, १२८, ८;
२९० । १, १४३, ४; ३२१ । १, १४७, ३;
३४५ । ३, २५, १, ५३२ । ३, २०, ४,
६१७ । ४, ८, १, ७०४ । ४, ४, १३;
१८२५ । वा०य० २७, १२, २०६१
विश्वशभूः अथ० ६, ४७, १; २३७२
विश्वशुक्-क ७, १३, १; १८१०
विश्वशुष्टिः १, १२८, १; २८३
विश्वस्य केतुः १०, ४५, ६; १५९४
विश्वस्य नाभिः चरतः भुवस्य १०, ५, ३;
१५१५
विश्वाद् ८, ४४, २६; १३६८
विश्वाप्सुः १, १४८, १, ३४८
विश्वायुः १, २७, ३; ४० । १, ६७, ६, १०;
१४९, १५३ । १, ६८, ५; १५८ । १, ७३, ४,
२०८ । १, १२८, ८, २९० । ६, ४, २;
९७२ । १०, ६, ३, १५२२
विश्वायु वेपसम् (द्विती०) ८, ४३, २५;
१३३४
विश्वेदेवाः [देवता] अथ० ३, २१, ८;
२३६२
विश्वेदेवाः स्वे ५ ३, १, ७७९
विश्वेदेवासः [मरुत] १, १९, ३; २४४०
दै० [अग्निः] ३४

विषित ६, १२, ५; १०१०
विषुणः ४ ६, ६; ६८७
विषुरूपः स्मना परिजिगासि ५, १५, ४,
८६९
विष्णुः १०, १, ३; १४८७
विष्णुः [देवता] अथर्व० ७, २९(३०),
१-२; २४५३-५४
विष्णुः स्वम् उरुगायः २, १ ३, ३७१
विहस्यः अथ० २, ६ ४; २३२३
विहायाः १, १२८, ६; २८८ । ६, १३, ६,
१०१७ । ८, २३, १९, २४; १२८८,
१२९३
वीः उच्यस्य कुवित १, १४३, ६, ३२३
वीतः ४, ७, ६, ६९८
वीतिहोत्र. ३, २४, २, ५२८ । ५, २६, ३;
९२२
वीरः ८, २३, १४; १२८३
वीरः [स्वष्टा] २, ३, ९, १९५०
वीरपेशाः १०, ८०, ४, १६४७
वीरुधा गर्भ २, १, १४, ३८२
वीलु ८, ४४, २७, १३६९
वीलु जम्भः ३, २९, १३; ५७०
वृत्रहन्तमः १, ७८, ४, २४२ । ६, १६,
४८, १०८९ । ८, ७४ ४, १४४५
वा० य० २८, २६, २०९७
वृत्रहा २, १, ११, ३७९ । ३, २०, ४, ६१७ ।
६, १६, १४, १९. १०५५, १०६० । १०,
६९, १२, १६३६ । १, ५९, ६, १७२२
वृद्धवृष्णः अथ० ७, ६२(६४), १, २०७३
वृद्धशोचिः ५, १६, ३; ८७३
वृधः भूः दक्षस्य ६, १५ ३; १०२५
वृधः श्रुपेभिः १०, ६, ४, १५२३
वृधत्-न् ८, १०२, ७, १४६९
वृधानः समिधा ३ २८, ६, ५५७ ।
१, ९५-९६, ११, ९; १८७८
वृधमानः धिण्यासु ४, ३, ६; ६७१
वृधद्वनः ६, ६ १; ९८६
वृषः ३, २७, १४; ५५०
वृषणः ३, २९, ३, ९; ५६०, ५६६

वृषन्-वा १, ३६, ८; ७५ । १, १२७, २,
२७३ । १, १४० २, २९३ । ३, १, ८,
४५४ । ३, ७, २, ५, ९, ४९१, ४९४,
४९८ । ३, २७, १३, १५, ५४९, ५५१ ।
५, १, १२, ७६६ । ५, १२, ६; ८५३ ।
६, १, १; २३९ । ६, ३, ७; ९६९ ।
६ ६, ५; ९९० । ६, ४८ ३ ६, १०२२,
१०२५ । ७, ३, ३, ५, ११२६, ११२८ ।
७, १०, १; ११६१ । ८ ७५, ६, १३७८ ।
१०, ३, ४, १५०२ । १०, ११, १; १५४० ।
१०, १८७, ३, १७१३ । १० १९१, १,
१७१६ । ३, २, ११, १७३७ । ४ ५; १०,
१५; १७६७, १७७२ । ६ ८, १, १७८० ।
९, ५, १, ७ ९; १९८१, १९८७, १९८९ ।
२, ३५, १३; २४३४ । वा०य० २०, ४४;
२०२२ । अथ० ४, ३६, १, २२९५ ।
साम० १, १ १०, ३
वृषन्-वा [इन्द्र] वा०य० २०, ४०,
४४; २०१८, २०२२
वृषभ. १, ३१, ५, ५४ । १, १२८, ३;
२८५ । १, १४०, १०, ३०१ । २, १ ३,
३७१ । २ ९, २, ४०४ । ३ ६, ५, ४८४ ।
३, १५, ३, ४, ६; ५९०, ५९१, ५९३ ।
४, ३, १०, ६७५ । ५, १, ८, १२. ७६२,
७६६ । ५, २, १२; ७७८ । ५ २८, ४;
९३६ । ६, १, ८; ९४६ । ८ ६०, १४;
१४०२ । १०, ८, १-२; १५३४-३५ ।
१, ५९, ६, १७२२ । ४, ५, ३, १७६० ।
२, ३, ११; १९५२ । २, ४, ३; १९५५ ।
वा०य० २८, ४, २०८७
वृषभ [इन्द्रः] वा०य० २०, ४६, २०२४
वृषभः अतिनाम् १०, १८७, १; १७११
वृषभः शेरवीति १०, ८, १; १५३४ ।
४, ५८, ३; १८९७
वृषभः स्त्रियानाम् ७, ५, २, १७९५
वृषायमाणः [इन्द्रः] वा०य० २०, ४६;
२०२४
वेः मन्मसाधन १, ९६ ६, १८८४
वत्सम् ४, ५८, ५; १८९९

वेद्य हि अध्वनः पथः ६ १६, ३, १०४४
वेद सः १, १४५, १, ३३३
वेद जनिमानि देवानाम् ३, ४, १०,
७, २, १०; १९६२
वेद जाता देवानाम् ८, ३९, ६, १३०५
वेद विश्वा जनिमा ६, १५ १३; १०३५
वेद मर्तानां अपीच्यम् ८, ३९, ६; १३०५
वेदिता ८, १०३, ११; १२६७
वेदिषत् १, १४०, १ २९२
वेद्य ५, १५, १; ८६६। ६, ४, २, ९७२।

अथ० १९ ३, ४; २२०८
वेधस्-धाः १, ६५, १०; १३३१, ६९, ३,
१६६। १, ७३, १०; २१४। १, १२८, ४,
२८६। ३, १०, ५, ५१३। ३, १४, १;
५८१। ४, २, २०, ६६६। ४, ३, १६;
६८१। ५, १५, १; ८६६। ६, १६, ३, २२;
१०४४, १०६३। ८, ४३, १ ११; १३१०.
१३२०। ८, ६०, ३; १३९१। १०, ९१.
१४, १६६४। अथ० ३, २१, ६; २३६०
वेधस्तमः १, ७५, २; २२५। ६, १४, २;
१०१९

वेनः ४, ५८, ४; १८९८
वैश्वानरः [अग्नि देवता] सूक्तानि
१, ५९, (१-७), १७१७-२३। १, ९८,
(१-३) १७२४-२६। ३, २, (१-१५),
१७२७-४१, ३, ३, (१-११) १७४२-५२।
३ २६, (१-३, ७-८); १७५३-५७।
४, ५, (१-१५); १७५८-७२। ६, ७,
(१-७), १७७३-७९। ६, ८, (१-७);
१७८०-८६। ६, ९, (१-७); १७८७-
९३। ७, १५, (१-९), १७९४-
१८०२। ७, ६, (१-७); १८०३-९।
७, १३, (१-३); १८१०-१२।
वैश्वानरः ५, २७, १-२, ९२८-९९। १०,
४५, १२; १६००। १०, ८८ १२-१४;
२४०८-१०। अथ० ६, ३६, १,
२१८१। ७, १०८, २; २२२८। ४,
३६, १-२, २२९५-९६। ४, २३, ४,
२३७३। ६, ७१, ३; २३४८। ३, २१,
३; २३५७। ६, ४७, १; २३७२।

६, ३५, १, २, ३, २३७५-७६-७७।
६, ११९, १, २, ३; २३८४-८५-८६।
वैश्वानर ज्येष्ठः अथ० ३, २१, ६; २३६०।
व्यध्वा १, १४१, ७; ३११।
व्यचस्वतीः [दवीर्द्धरः] २, ३, ५;
१९४६। १०, ११०५; २००७।
व्याघ्रः [वनस्पतिः] वा० २१, ३९,
२०५८।
व्रजनम् कृष्णम् ते ७, ३, २; ११२५।
व्रतपतिः अथ० ७, ७४, ४; २१९७।
व्रतपाः १, ३१, १०, ५९। ८, ११, १;
१२१४। ६, ८, २, १७८१।
व्रता विश्वा ध्रुवा ते संगतानि १, ३६,
५; ७२।
व्रतेन समक्त अथ ७, ७४, ४, २१९७।

श्रीमः ४, ६, ११, ६९२
शक्रः अथ० ३, २१, ४, २३५८
शचीवस्-वान् ३ २१, ४; ६२१
शचीवसुः ८, ६०, १२, १४००
शतक्रतुः [वनस्पतिः] वा० य०
२१, ३९, २०५८। २८, १०, २०९३
२८, ३३; २१०४
शतनीयः १०, ६९, ७, १६३१
शतात्मा १, १४९, ३; ३५५
शन्तमः १, १२८, ७, २८९।
शन्तमः अध्वरेषु १, ७७, २, २३५
शम् ७, ६, २, १८०४।
शमिता २, ३, १०; १९५१। ३, ४, १०;
१९६२। ७, २, १०, १९६२। १०, ११०,
१० २०१२। वा० य० २७, २१,
२०७०
शमिता [वनस्पतिः] वा० य० २१,
३९, २०५८। २८, १०, २०९३।
२८, ३३; २१०४। अथ० ५, ७, ११;
२०८२
शम्भुः १, ६५, ५; १२८। ३, १७, ५;
५०४
शयिष्ठाः आ ज्योक् एव दीर्घं तमः
१०, १२४, १; १६८३

शयुः कतिधा चिद् आयवे १, ३१, २, ५१।
शर्धः त्वम् २, १, ५; ३७३
शर्धमानः [हम्भ] वा० य० २०, ३८,
२०१६
शर्महा ६, १६ ३९; १०८०
शवसस्पतिः १, १४५, १; ३३३।
५, ६, ९, ८०९
शवसा सनुः १ २७, २; ३९
शविष्ठः १, १२७, ११, २८२
शशमान १०, १४२, ६; १६९५
अथ० १२, २, १०; २३३६
शशमानः विप्रस्य उक्थ्यम् १०, ११, ५;
१५९४
शशली (शकली) अथ० १, २५, २;
२२७६
शश्वत ५, १९, ४; ८८९
शश्वतमः १०, ७०, ३; १९९४
शास् (शासुः षष्ठी) १, ६०, २; १२०
शिक्षम् ६, २, ९; ९६०
शितः ८, २३, १३; १२८२
शितिष्टः ३, ७, १; ४९०
शिमिवान् १०, ८, २; १५३५
शिव १, ३१, १; ५०। ५, १, ८, ७६२।
५, २४, १, ९०७। ८, ३९, ३; १३०२।
१०, ३, ४; १५०२
शिवः [त्वष्टा] ५, ५, ९; १९७१
शिवः दोषा ४, ११, ६; ७३३
शिशानः १०, ८७, १, ३, ६; १८२८,
१८३०, १८३१
शिशानः शृगे ९, ५, २; १९८२
शिशुः १०, १, २, १४८६
शिक्षा १, ६५, १०, १३३
शीतः अथ० १, २५, ४; २२७८
शीर ३, ९, ८, ५०७। ८ ४३, ३;
१३४०। ८, १, २, ११; १४७३। १०,
२१, १; १५८१
शीरशो चिस्-चि ८, ७१, १०, १४;
१४१८, १४२२
शीर्षे द्वे अस्य ४, ५८, ३; १८९७

शुक्रः १, ६९, १, १६४ । १, १२७, २, २७३ । ४, १, ७; ६३३ । ४, ६, ८; ६८९ । ४, ११, २; ७२९ । ५, २१, ४; ८९८ । ६, १६, ३४, १०७५ । ६, ४८, ७; १०९६ । ७, १, ८, ११०७ । ७, ४, १, ११३४ । ८, ६०, ३; १३९१ । १०, २१, ७; १५८७ । १०, १८७, ५, १७१५ । १, ९५, १; १८६८ ।
 शुक्रवर्चाः १०, १४०, २, १६८५ ।
 शुक्रशोचिः २, २, ३; ३८७ । ७, १४, १, ११७४ । ७, १५, १०; ११८६ । ८, १०३, ८; १२६४ । ८, २३, २०, २३, १२८९, १२९२ । ८, ४४, ९; १३५१
 शुक्ल-न् ६, ३, ३, ९६५
 शुक्ल-न् १०, ४६, ८; १६०८
 शुचिः १, ३१, १७; ६६ । १, ६६, २; १३५ । १, १२७, ७, २७८ । १, १४१, ४-५, ३०८-९ । २, १, १; ३६९ । २, १, १४; ३८२ । २, ५, ४; ४२८ । २, ७, ४; ४४४ । ३, ५, ७, ४७६ । ४, १, ७; ७३३ । ५, १, ३; ७५७ । ५, ४, ३; ७९२ । ५, ७, ८, ८१८ । ५, ११, १, ३, ८४२, ८४४ । ६, ६, ३; ९८८ । ६, १५, १, ७, १०२३, १०२९ । ७, १०, १, ११६१ । ७, १५, १०; ११८६ । ८, ४३, १३; १३२२ । ८, ४४, २१; १३६३ । ८, १०२, ४; १४६६ । ३, २, १४-१५, १७४०-४१ । १, १४२, ३, १९२० । २, ३५, ३; २४२४, वा० य० २८, २५, २०९६
 शुचिः [तिस्र देव्य] १, १४२, ९, १९२६
 शुचिः [अग्निदेवता] १, ९७, (१-८); १८८७-१८९४
 शुचिजन्मा १, १४१, ७; ३११
 शुचिजिह्वा २, ९, १; ४०३
 शुचिदत्-न् ५, ७, ७; ८१७ । ७, ४, २; ११३५
 शुचिप्रतीकः १, १४३, ६; ३२३

शुचिवर्णः ५, २, ३, ७६९
 शुचिघ्नतः ८, ४३, १६, १३२५ । १० ११८, १; १८५३ । वा० य० २१, १३; २०३८
 शुचिघ्नतमः ८, ४४, २१, १३६३
 शुचिघ्नः (सं०) ६, ६, ४, ९८९
 शुभ्रः ३, २६, २, १७५४
 शुभ्रः [बर्हिः] ५, ५, ४; १९६७
 शुभ्राः [मरुतः] १, १९, ५; २४४२
 शुभ्रान् स्वातन्त्र्यम् ८, ४४, १२, १३५४
 शुशुक्निः ८, २३, ५, १२७४
 शुशुक्लान् १, ६९, १; १६४
 शुशुचानः ४, १, १९, ६४५ । ४, १, ३, २४५०
 शुष्मिणस्पतिः १, १४५, १, ३३३
 शुष्मिन्तमः १, १२७, ९; २८०
 शुष्मिन्-ष्मी ८, १०२, १२, १४७४
 शूरः १, ७०, ११; १८४ । ४, ३, १५; ६८० । ६, १५, ११, १०३३
 शृङ्गाः अस्य चत्वारि-४, ५८ ३; १८९७ ।
 शृण्वन् ८, ४३, २३; १३३२ । १०, १२२ ४, १६७८
 शृण्वन् आरे अस्मे च १, ७४, १; २१५
 शोचः १, ५८ ६, ११५ । १, ६९, ४; १६७ । १, ७३, २; २०६ । १०, १२९, १; १६७५
 शोच्यः १०, ४६ ३; १६०३
 शोकः अथ० १, २५, ३, २२७७
 शोचिः ५, ५, १; १९६४
 शोचिः परिवसानः ३, १, ५, ४५१
 शोचीषि ऊर्वा शुक्रा शुमन्तमा अथ० ५, २, ७; २०७२
 शोचिष्केशः १, ४५, ६, १०५ । १, १२७, २; २७३ । ३, २७, ४, ५४० । ३, १४, १; ५८१ । ३, १७, १ ६०० । ५ ८, २, ८२२
 शोचिषस्पतिः ५, ६, ५; ८०५
 शोचिषा अरोचत शुक्लेण ८, ५६, ५; २४५५

शोचिष्ठः ५, २४, ४, ९१० । ८ ६०, ६; १३९४
 शोचिष्मान् २, ४, ७, ४२२
 शोभमानः पुरु ५, २, ४, ७७०
 शोशुचन् १०, ८७, २०, १८४७
 शोशुचन् अजस्त्रेण शोचिषा ६, ४८, ३; १०९२
 शोशुचानः ७, १०, १; ११६१ । ७, ५, ३; १७९६ । ७, १३ २, १८११ । ४, ४, २, १८१४ । १०, ८७, ७, १८३४ । १०, ८७, २, १४; १८३६, १८४१ । ४, १, ४; २४५१
 शोशुचानः पाजसा पृथुना ३, १५ १; ५८८
 शोशुचानः अजस्त्रेण शोचिषा ७, ५ ४; १७९७
 श्येतः १, ७१, ४, १८८
 श्रवस्यः २, १०, १, ४०९
 श्रवस्यः श्रवोभिः ६, १, ११, ९४९
 श्रियः यस्य स्वार्हाः दृशे ४, १५, ५, ११८१
 श्रिय दधाने शुक्रपिशम् [उवासानके] १०, ११०, ६, २००८
 श्रिय वसान २, १०, १; ४०९
 श्रीणां उदारः १०, ४५, ५; १५९३
 श्रुक्कर्णः १, ४४, १३; ९८ । १, ४५, ७, १०६ । १०, १४०, ६, १६८९ । अथ० १९ ३, ४; २२०८
 श्रुष्टिः १, ६७, १, १४४
 श्रुष्टी [स्वष्टा] २, ३, ९; १९५०
 श्रुष्टीवान् ३, २७, २; ५३८
 श्रणिदन् १०, २०, ३, १५७३
 श्रेष्ठ १, ४४, ४; ८९ । ३, २१, ३, ६२० । १०, १४६, ५, १७०७
 श्रेष्ठशोचिस्-चिः ८, १९, ४; १२२७
 श्रोता ३, २६, २; १७५४
 श्रुतीवान् १, १४०, १०; ३०१
 श्राव (श्रावः-बहु०) १०, ४६, ७, १६०७

श्वितान ६६, २, ९८७
 श्वितोचिः- चयः (बहु०) १०, ४६, ७;
 १६०७
 श्वेत ३, १, ४; ४५० । ५, १, ४;
 ७५८
 श्वेतेय ५, १९, ३, ५८८
 सः ५, १३, ४, ९०६
 सयत २, २, २, ३८६
 सवयन्ती तत तन्नुम् [उपासानक्ते]
 २, ३, ६, १९४६
 संवसवः [देवता] अथ० ७, १०९
 (११४), ६, २३७०
 सविदान ब्रह्मणा १०, १६२, १, २४१६
 सविदान विश्वभिः देवैः सह
 अथ० ५, २९, २, २३०६
 संविद्वान् अथ० १, २५, १, २, ३, २२७५-
 ७६ ७७
 सकृत् वा० य० २७, १३, २०६२
 सखा १, ३१, १, ५० । २, १, ९, ३७७ ।
 ८, ४३, १४; १३२३ । ८, ७१, ९, १४१७ ।
 १०, ३, ४, १५०२ । १०, ८७, २१, १८४८ ।
 ३, ४, १; १९५३
 सखा सावित्र्यः १, ७५, ४, २२७
 सख्य जुषाण देवानाम् ७, ७, २, ११४३
 सकसुक अथ १२, २, ११, १४, १९, ४०;
 २२३७, २२४०, २२४५, २२५३
 सचन्तः देवोभि १, १२७, ११; २८२
 सचाभूः अङ्गिरसाम् १० ७०, ९, २००५
 सजोषसः ऋषयः ३ २२, ४, ६२६
 सञ्चित्वान् ४, ७, ८, ७००
 सज्ञातरूपः १, ६९, ९, १७२
 सत्-नृ, ४३, १४, १३२३ । ८, ७१, १३,
 १४२१ । १०, ११५, ६; १६७१
 सत्पति. २, १, ४, ३७२ । ६ १६, १९,
 १०६० । ८, ७४, १०, १४५१ । अथ०
 ७, ६२ (६४), १, २३७३ । साम०
 १, २, १, ९
 सत्यः १, १, ५, ५ । १, १४५, ५, ३७७ ।
 ३, १४, १, ५८१ । ५, ७३, २, ९०२ ।

५, २५, २, ९१२
 सत्यतरः १, ७६, ५, २३३ । ३, ४, १०,
 १९६२ । ७, २ १०, १९६२
 सत्यतातिः ४, ४, १४, १८२६
 सत्यधर्मा १, १२, ७; १६
 सत्यमन्मा १, ७३, २; २०६
 सत्ययजः ६, १६ ४६; १०८७ ।
 ४, ३, १; साम० १, १, ७, ७
 सत्यवाक् ७, २, ३, १९७७
 सत्यशुभः १, ५९, ४; १७२०
 सत्योजाः अथ० ४ ३६, १; २२९५
 सत्वनः-नम् १०, ११५, ४, १६६९
 सद्दः दधानः उपरेषु परेषु सानुषु
 १, १२८, ३; २८५
 सदानवः ३, ११, ५; ५२२
 सद्दक् ८, ११, ८, १२२१ । ८, ४३, २१,
 १३३०
 सद्यो अर्थः १, ६०, १; ११९
 सद्यो जात. १० ११०, ११; २०१३
 वा० य० २९, ११; २११६
 सनकात् ३, २९, १४; ५७१
 सनश्रुत. ३, ११, ४; ५२१
 सनानि जठरेषु धन्ते विश्वा १, ९५, १०,
 १८७७
 सनुतः चरन् ५, २, ४, ७७०
 सनृजः १, १५, १२; २३ । १, ३६, २,
 ६९ । १, ४५, ५, ९, १०४, १०८ ।
 ३, २०, ४, ६१७ । ३, २१, ३, ६२० ।
 ८, १९, २९ १२४९ । ८, ४४, ९, २८,
 १३५१, १३७०
 सद्दक् १, ६६, १, १३४
 सद्दक् विश्वत सुप्रतीकः १, ६४, ७,
 २६२
 सद्दक् भद्रा चारु च ते ४, ६, ६, ६८७
 सद्दष्टि वस्वी ते ६, १६, २५, १०६६
 संनममान इषूः १०, ८७, ४, १८३१
 सपत्नहा अथ० २, ६, ३, २३२१
 सपर्येण्यः ६ १, ६, ९४४
 सप्त आस्यानि तव अथ० ४, ३९, १०,
 १२८३

सप्त धामानि परियन् १०, १२२, ३;
 १६७७
 सप्तमानुष ८, ३९, ८, १३०७
 सप्तरश्मिः १, १४६, १; ३३८
 सप्तहोता ३, २९, १४, ५०१
 सप्तिः वा० य० २९, २; २१०७
 सप्रथः ६, १५, ३; १०२५
 सप्रथम्-थाः ५, १३, ४, ८५७, ८, ६०, ५;
 १३९३
 सप्रथस्तम् १, ४५, ७, १०६ । १०, १४०,
 ६; १६८९
 सप्रथः अथ० १९, ५५, ६; २२७४
 समक्तः वनेन अथ० ७, ७४, ४; २१९७
 समञ्जन् ऋतस्य यानान् नृपथ. १०, ११,
 २, २००४ । वा० य० २९, २६; २११८
 समञ्जन् मधुना [इन्द्र.] वा० य० २०,
 ३७, २०१५
 समञ्जन् वीरुधः १०, ४५, ४; १५९२
 समनगा ७, ९, ४; ११५८
 समानः ४, ५, ७, १७६४
 समित् समित् ३, ४, १, १९५२
 समिद्धः [देवता] 'इधमः' पश्य. वा० य०
 २०, ३६, ५५, २०१४, २०२५ ।
 २१, १२, २९, २०३७, २०४८ ।
 २७, ११; २०६० । २८ १, २४,
 २०८४, २०९५ । २९, १, २५; २१०६,
 २११७ । ऋ० प्रेष १ २१२९ । अथ०
 ५, २७, १; २०७२ । ५, १२, १, २००३
 समिद्धः ३, ९, ३, ४०५, ३, ५, १, ४७० ।
 ३, २, ७, ५०६ । ५, २८ १४ ५, ९३३,
 ९३६-३७ । ६, १६, ३४; १०७५ ।
 १०, ३, १, १४९९ । १०, १५, १, १६९८ ।
 १०, ८७, १-२, १८२८ २९ । १०, ७०, ७;
 १९९८ । ७, २, ३; १९७६ । १० ८८, ७;
 २४०३ । अथ० ७, ७४ ४; २१९७ ।
 १२, २, ११, १८; २२३७, २२४४
 समिद्धः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३६;
 २०१४
 समिद्धः समिद्धा ६, १५, ७; १०२९

समिधानः १, १४३, २; ३१९, २, २, १,
६; ३८५, ३९०। ४, ६, ११, ६९२। ५,
८, ४, ६, ८२४ ८२६। ६, ४८, ७, १०९६।
७, ९, ४; ११५८। ८ ४४, ९, १३५१।
८, ६०, ५, १३९३। १०, २, ७; १४९८।
१०, १५०, ९; १६९९। ४, ५, १५ १७७२।
४, ४, ४, १८१६। ३, ४, ११, १९६३।
७, २, ११, १९६३। वा० य० २८, २४;
२०९५। साम० १, ६, १३, १
समिधः अस्व ऊर्वा अथ० ५, २, ७;
२०७२
समिध्यमानः अध्वरे ३, २७, ४, ५४०
समिध्यमानः अनु प्रथमा ३, १७, १;
६००
समीची [उषामानके] २, ३, ६,
१९४४
समुद्रः ४, ५८, १, १८९५ । १०, ५,
१, १५१३
समुद्रथ ३, ३, २, १७५०
सम्पृचानः सदनं आज्ञिः गोमि. १, ९५,
८; १८७५
सम्प्रेक्ष. अथ० ६, ७६, १, २३९०
सम्मिश्रः १०, ६४; १५२३
सम्राज्ञ-ट ८, १२, ३२, १२५५ । ७,
६, १; १८०३ । अथ० ६, ३६, ३,
२१८३
सम्राजत्-न् अध्वराण सू १, २७, १, ३८
सरजत्-न् अध्वनः १०, ११५, ३,
१६६८
सरण्यन् ३, १, १९, ४६५
सरस्वती [देवता] पश्य 'देव्य. तिष्ठः'
अथ० ४, ४, ६, २१६२
सरस्वती त्वम् २, १११, ३७९
सर्पिरासुतिः २, ७, ६, ४४६ । ५, ७,
९; ८१९ । ५, २१, २, ८९६ । १०,
६९, २; १६२६
सविता [देवता] ४, १३, २; ७४१।
१, ३५, १, २४४८। वा० य० २७, १३,
२०६२। अथ० ५, २७, ३; २०७४।

२, २९, २; २१५०। ७, ११५, २, २२०२।
३, २१, ८, २३६२। ४, ४, ६; २१६२
सविता त्व देवः रत्नधा २, १, ७,
३७५
सवीर्यः वा० य० २८, ३, २०८६
सवेदाः अथ० १२, २, १४, २२४०
ससः ३, ५, ६, ४७५
ससवान् वाजम् १०, ११, ५, १५४४
ससुतुः अथ० ५ २७, १; २०७२
सस्त्रि ३, १५, ५, ५९२
सहः [हन्द्र.] वा० य० २१, ४०; २०५९।
२८, ३६, २०९७
सहः १, ३६, १८, ८३ । ८, १०२, ५;
१४६७
सहन्तम १, १२७९. २८०
सहन्त्य १, २७, ८, ४५। ६, १६, ३३;
१०७४। ८, ११, २; १२१५
सहमानः अथ० १२, २, ४६; २२५९।
७, ६३ (६५), १, २३७३
सहसस्तुत्र २, ७, ६, ४४६ । ३, १४,
१, ४, ६, ५८१, ५८४, ५८६। ३, १६, ५,
५९८। ३, १८४, ६०८। ५, ३, १, ६,
७७९, ७८३। ५, ४, ६, ७९५। ५, ११,
६, ८४७
सहस. सूतर. १०, ११५, ७, १६७२
सहस. सूत्र. १, ५८८, ११७। १, १२७, १;
२७२ । १, १४३, १; ३१८। ३, १८;
४५४। ३, ११, ४; ५२१। ३, २४, ३;
५२९। ३, २५, ५, ५३६। ३, २८, ३, ५,
५५४, ५५६। ४, २, २; ६४८। ४, ११, ६,
७३३। ५, ३, ९; ७८६। ५ ४, ८. ७९७।
६, १, १०; ९४८। ६, ४, १, ९७१।
६ ५, १, २७९। ६, ५, ५, ९८३।
६, ६, १; ९८६। ६, ११, ६; १००५।
६, १२, १, १००६। ६, १३, ४-५,
१०१५-१६। ६, १३, ६, १०१७।
६, १५, ३; १०२५। ७, १, २१-२२;
११२०-२१। ७, ३, ८, ११३१।
७, ७, ७; ७, ८, ७, ११४८। ७, १६, ४,

११९५। ८, १९, ७, २५, १२३०, १२४८।
८, ७५, ३; १३७५। ८, ६०, २; १३९०।
८, ७१, ११; १४१९। १०, ११, ७;
१५४६। १०, ४५, ५; १५९३।
१०, १४२ १, १६९०
सहसान १, १८९, ८, ३६८। २, १०, ६,
४१४। ५, २५, ९, ९१२। ७, ७, १;
११४२
सहसावान् १, १८९, ५, ३६५।
३, १, २२; ४६८। ५, २० ४, ८९४।
७, ४, ९; १०३४। ६, १५, १२;
१०३४। ७, १, २४, ११२३। ७, ४, ६,
११३९। १०, २१, ४, १५८४।
१०, ११५, ८, १६७३
सहसिन्-मी ४, ११, १; ७२८
सहसा यहुः १, २६, १०, ३७।
१, ७४, ५, २१९। १, ७९, ४, २४७।
७, १५, ११, ११८७। ८, १२, १२,
१२३५। ८, ६०, १३, १४०१।
८, ८४, ५; १४५८
सहसो युवा १, १४१, १०, ३१४
सहस्कृतः १, ४५, ९, १०८। ३, २७, १०;
५४६। ५, ८, १; ८२१। ६, १६, ३७;
१०७८। ८, ४३, १६, २८, १३२५,
१३३७। ८ ४४, ११, १३५३
सहस्यः १, १४७, ५, ३४७। २, २, ११,
३९५। ५, २२, ४, ९०२। ७, १, ५;
११०४। ७, १६८, १११२। १०, १, ७,
१४९१। १०, ८७ २२, १८४९
सहस्रकृष्टिः [वज्रः] अथ० १९, ६६, १;
२३५०
सहस्रजित ५, २६, ६, ९२५। १, १८८, १;
१९३१
सहस्रतरी १० ६९, ७, १६३१
सहस्रमुक्तः ८, १९, ३२, १२५५
सहस्रम्भरः २, ९, १, ४०३
सहस्रोता ४, ५, ३; १७६०
सहस्रवक्त्रः [वनस्पतिः] ९, ५, १०;
१९९०

सहस्रशृङ्गः ५, १, ८, ७६२
 सहस्रसाः १, १८८, ३, १९३३
 सहस्रसातमः ३, १३, ६; ५७९
 सहस्राक्ष १, ७९, १२; २५५
 सहस्वान् १, १२७, १०, २८११, १८९,
 ४; ३६४। ३, १४ २, ४, ५८२, ५८४।
 ५, ७, १, ८११। ६, ५, ६; ९८४। ७, ४, ४;
 ११३७। ८, ४३, ३३, १३४२। ८, १०२, ७;
 १४६९। १, ९७, ५; १८९१
 सहावान् ६, १४, ५; १०२२
 सहीयान् सहस्रश्रित् १०, १७६, ४;
 १७१०
 सहोजा १, ५८, १; ११०
 सहोवृधः १, ३६, २, ६९। ३, १०, ९,
 ५१७
 सद्यस्-द्या १०, ११५, ६; १६७१
 साधदिष्टिः अपसां यज्ञानाम् ३, २६, ५,
 १७३१
 साधनम् यज्ञस्य १, ४४, ११; ९६
 साधुः १, ६७, २; १४५। १, ७७, ३; २३६
 साधुः अध्वरेषु ५, १, ७, ७६१
 साधुया ५, ११, ४; ८४५
 सानसिः ४, १५, ६, ७५४। ८, १०२,
 १२; १४७४
 सान्तपनः [अग्निदेवता] अथ० ६,
 ७६, (१-४); २३९०-२३९३
 साम्राज्याय प्रतरं दधानः १, १४१, १३;
 ३१७
 ग्रासहिः ३, १६, ४, ५९७
 सासहिः पृतनासु अथ० ३, २१, ३;
 २३५७
 साङ्गान् विश्वा अभियुज ३, ११, ६;
 ५२३
 सिंह १, ९५, ५; १८७२
 सिंहः [इन्द्र] वा० य० २१, ४०,
 २०५९
 सिन्धूनां जामिः १, ६५, ७, १३०
 सिन्धूनां नेता ७, ५, २, १७९५
 सिन्धूनां मित्र ३, ५, ४, ४७३

सिन्धुषु श्रितः विश्वेषु ८, ३९, ८,
 १३०७
 सिष्णुः ८, १९, ३१, १२५४
 सीदन्-न् अपा उपस्थे १०, ४६, १;
 १६०१
 सीदत् पस् यासु योनौ अन्त १०, ४६,
 ६; १६०६
 सीदत् प्राचीनम् [इन्द्रः] वा० य०
 २०, ३९, २०१७
 सीदत् प्रिये अमृते बर्हिषि वा० य०
 २८, २७; २०९८
 सुकृत् अथ० ५, २७, ३, २०७४
 सुकृत्तरः १, ३१, ४; ५३
 सुकृत् १, १२८, ४, २८६। १, १४१,
 ११, ३१५। १, १४४, ७, ३३२।
 ३, १, २२; ४६८। ५, ११, २; ८४२।
 ५, २०, ४, ८९४। ५, २५, ९, ९१९।
 ६, १६, ३, २९; १०४४, १०७०। ७, ३,
 ९; ११३२। ७, ९, २, ११५६। ७,
 १६, ६; ११९७। ८, १९, १७, १२४०।
 ८, ७४, ७, १४५८। ८, ८४, ८; १४६१।
 १०, १२२, २, ६; १६७६, १६८०।
 ३, ३, ७, १७४८। ६, ७, ७, १७७९।
 ६, ८, २; १७८१। ४, ४, ११; १८२३।
 १०, ७०, १, १९९२
 सुकृत् क्रतुना १०, ९१, ३, १६५३
 सुकृत् यज्ञस्य ८, १९, ३, १२२६
 सुश्र्वासः [मरुतः] १, १९, ५;
 २४४२
 सुक्षितिः २, ३५, १५, २४३६
 सुगार्हपत्यः अथ० १२, २, ४५; २२५८
 सुजग्मः ८, ६०, १३; १४०१
 सुजात २, १, १५; ३८३। २, ६, २;
 ४३४। ३, २३, ३; ६२९। ५, २१, २;
 ८९६। ७, ८, ५; ११५३। ८, १०३, १;
 १२५७। ८, ७४, ७, १४४८।
 १०, ५, ४, १५१६। १०, ७, २, ६;
 १५२८, १५३२। १०, ५१, ७, १६१४।
 अथ० ४, २३, ४, २३३३

सुजातः ऋतस्य योना गर्भे १, ६५, ४;
 १२७
 सुजातः तम्बा ३, १५, २; ५८९
 सुजात वसुभिः १०, ७९, ७। १६४३
 सुजिह्वः १, १०, ८, १९१३। १, १४२,
 ४; १९२१। १०, ११०, २; २००४
 वा० य० २९, २६, २११८
 सुतुकः १०, ३, ७; १५०५
 सुत्यजः ८, ६०, १६; १४०४
 सुदंसस् २, २, ३; ३८७। (३, ९, १;
 ५००)
 सुदक्षः २, ९, १; ४०३। ३, २३, २,
 ६२८। ५, ११, १; ८४१। ७, १, ६,
 ११०५। ८, १९, १३; १२३६। ७, २,
 ३, १९७६
 सुदक्षः दक्षैः १०, ९१, ३, १६५३
 सुदक्ष ७, ८, ३, ११५१
 सुदर्शतरः नक्त यः दिवातरात्
 १, १२७, ५; २७६
 सुदातुः ३, २९, ७, ५६४। ६, २, ४;
 ९५५। ६, १६, ८, १०४९। ३, २, ६,
 १, १७५३
 सुदिव-सुद्यौः १०, ३, ५; १५०३
 सुदीतिः ३, २७, १०; ५४६। ३, १७
 ४, ६०२। ३, २, १३, १७३९
 सुदीदितिः ३, ९, १, ५००। ८, १९,
 ४, १२२७
 सुदुवे [उषासानके] २, ३, ६;
 १९४७
 सुदृग्-क् ३, १७, ४; ६०३। ६, १५,
 १०, १०३२
 सुदृशीकः ५, ४, २; ७९१
 सुदृशीकरूपः ४, ५, १५; १७७२
 सुदेवः १, ७४, ५; २१९
 सुद्युत् १, १४०, १; २९२। १, १४३,
 ३; ३२०। ८, २३, ४; १२७३
 सुद्योत्मा १, १४१, १२; ३१६। २, ४,
 १; ४१६
 सुद्विणिः १, ९४, १५; २७०

सुधितः ३, २३, १, ६२७ । ४, ६, ७;
६८८ । ८, २३, ८; १२७७
सुधितः वनस्पतौ ६, १५, २; १०२४
सुनीयः २, ८, २; ३२८
सुपर्णः अथ० ४, १४, ६; २२२२ ।
१९, ६५, १; २३४९
सुपिच्यः १०, ११५, ६; १६७१
सुपेशसः १, १४२, ७; १९२४ । १,
१८८, ६, १९३६ । ९, ५८, १९८८
सुप्रणीतिः १, ७३, १; २०५ । ४, २,
१३; ६५९
सुप्रतिचक्षु ७, १, २, ११०१
सुप्रतीकः १, १४३, ३; ३२० । ३, २७,
५; ५९२ । ६, १५, १०, १०३२ ।
७, १०, ३, ११६३ । वा० य० २७,
११, २०६० । अथ० ५, २७, १;
२०७२
सुप्रतः ८, २३, २९; १२९८
सुप्रतीतिः ३, ९, १; ५००
सुप्रथाः २, २, १; ३८५, १४, १, ४१६ ।
६, १, ४; १००३ । वा० य० २७, १५,
२०६४
सुप्रायणाः [देवीद्वार] २, ३, ५;
१९४६ । ५, ५, ५, १९६८ । १०, ११०,
५; २००७
सुप्राव्यः १, ६०, १, ११९
सुप्रीतः ६, १५, २, १०२४ । ८, २३,
१३; १२८२
सुबन्धुः ३, १, ३, ४४७
सुबर्हिः १, ७४, ५; २१९ । वा० य०
२१, १५; २०४० । २८, २७; २०९८
सुबह्मा ७, १६, २, ११९३
सुभगः १, ३६, ६; ७३ । ३, १, ४; ४५० ।
३, १६, ६; ५९९ । ४, १, ६; ६३२ ।
५, ८, २३, ८२३ । ६, १३, १; १०१२ ।
८, १९, ४, ९, १८-१९, १२२७, १२३२,
१२४१-४२ । अथ० १९, ४, २; २२१०
सभगे [उषासानक्ते] १०, ७०, ६;
१९९७

सुभरः [स्वष्टा] २, ३, ९; १९५०
सुभास् (भाः-) भासः ८, २३, २०;
१२८९
सुमरवः ४, ३, १४, ६७९
सुमतीः ह्यान. १०, २०, १०; १५८०
सुमद्रथः ८, ५६, ५; २४५५
सुमनस्-नाः ३, ९, ३; ५०२ । ४,
१०, ३; ७२२ । ४, १३, १, ७४० ।
५, १, २, ७५६ । ७, १, ९; ११०८ ।
७, ८, ५; ११५३ । ३, ४, १; १९५३ ।
अथ० ७, ७४, ४; २१२७
सुमनस्यमान १०, ५१, ५, ७, १६१३-
१४
सुमहत्-हान् ७, ८, २; ११५०
सुमहस् हा ४, ११, २; ७२९ । १०,
७, ७; १५३३
सुमृळीकः ४, १, २०; ६४६ । ४, ३, ३;
६९८
सुमेधाः ३, १५, ५, ५९२ । १०, ४५,
७, १५९५ । २, ३, १; १९४२
सुयज्ञः ५, ८, ३, ८२३ । वा० य०
२८, ९; २०९२
सुयज्ञ ३, १७, १, ६००
सुरणः ३, २९, १४, ५७१ । ३, ३, ९;
१७५०
सुरत्नः १०, ७० ९, २००५
सुरथः ४, २, ४; ६५०
सुराधाः ४, २, ४, ६५० । ४, ५, ४,
१७६१
सुरुक्मे [उषासानक्ते] १, १८८, ६,
१९३६ । १०, ११०, ६; २००८
सुरुक्क् १, ११२, १; १८६७ । ३, २६,
५; १७३१
सुरेताः [स्वष्टा] वा० य० २१, ३८;
२०५७ । २८, ९; २०९२ । २८, ३२;
२१०३
सुवर्चाः १, ९५, १; १८६८
सुवाचसा [देव्यौ होतासौ] १, १८८, ७;
१९३७

सुवाचा [देव्यौ होतासौ] १०, ११०, ७;
२००९
सुविद्वजः २, ९, ६, ४०८
सुवीरः १ ३१, १०, ५९ । ३, २९, ९;
५६६ । ७, १, ४; ११०३ । ७, १५, ७,
११८३ । ८, १९, ७, १२३० । अथ०
१२, २, ४९; २२६२
सुवृक्तिः २, ४, १; ४१६ । ६, १०, १,
९९३
सुवेद ४, ७, ६; ६९८
सुशंसः गृणते १, ४४, ६, ९१
सुशमी ७, १६, २, ११९३
सुशर्मा ३, १५, १; ५८८ । ५, ८, २;
८२२
सुशिप्र ५, २२, ४, ९०२
सुशिल्पे [उषासानक्ते] ९, ५, ६,
१९८६ । १०, ७०, ६, १९९७
सुशिक्षिः पन्वा १, ६५, ४; १२७
सुशेव १, २७, २; ३९ । २, १, २;
३७७ । ३, २२, ५; ५६२ । ५, १५, १;
८६६ । ७, ७, ३, ११४४ । १०, ४५,
१२; १६००
सुशोकः १, ७०, १, १७४
सुश्रन्द्रः १, ७४, ६, २२० । ४, २, १२,
६६५ । ५, ६, ५, ९; ८०५, ८०९ ।
सुश्री ३, ३, ५; १७४६
सुषस्व. १०, ९१, १, १६५१
सुषुमान् १०, ३, १; १४९९
सुष्टुतः ५, १३, ५, ८५८ । ५, २७, २;
९२९ । ८, ७४, ८; १४४२
सुश्रयन्ती [उषासानक्ते] १०, ११०,
६, २०१३
सुसंसद् ७, ९, ३; ११५७
सुसनिता ३, १८, ५; ६०९
सुसंद् १, १४३, ३, ३२० । ७, ३, ६;
११२९ । ७, १०, ३; ११६१
सुसमिद्धः १, १३, १; १९०६ । ५, ५,
१; १९६४ । वा० य० २१, १२;
२०३७ । २८, २४; २०९५

सुहव ३, १५, १; ५८८। ७, १, २१, ११२०। ४, १५, २४५२
 सुहवः जनेभ्यः १, ५८, ६, ११५
 सुहव्यः १, ७४, ५, २१९
 सुहोता ८, १०३, १२, १२६८
 सुव ६, ४, ४, ९७४। वा० य० २७, ११, २०६०
 सुनृतावान् १, ५९, ७, १७२३। अथ० ३, २१, ५, २३५९
 सू-सूरः (षष्ठी) १०, ८, ३; १५३६
 सूरः [सूर्यः] ८, ५६, ५, २४५५
 सूरिः २, ६, ४; ४३६
 सूर्यः ३, १४, ४, ५८४। अथ० १२, २, १८; २२४४। ४, ३६, ५, २२९९
 सूर्यः [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५। १०, ८८, (१-१९); २३९७-२४१५। ८, १८, ९, २४५७। अथ० २, २९, १, २१४९। १९, ६५, १; २३४९। १८, ५६, ५, २४५५। १, १६४, ४४; २४५६
 सूर्यः आदितेयः १० ८८, ११, २४०७
 सूर्यः जायते प्रातः उद्यन् १०, ८८, ६; २४०२
 सूर्यः देव. ४, १३, १; ७४०
 सृप्रदानुः १, ९६, ३; १८८१
 सोमः वा० य० २८, २६; २०९७ [देवता] ७, ४१, १; २४३७। [देवता] अथ० २, ३६, ३; २३४०
 सोमः अथ० ५, २९, १०, २३१४
 सोमगोपाः १०, ४५, ५, १२, १५९३, १६००
 सोमपा अथ० १, ८३; २२९१
 सोमपृष्ठ ८, ४३, ११; १३२०। १०, ९१, १४; १६६४। अथ० ३, २१, ६, २३६०
 सौभागानि विश्वा स्वत् यन्ति १, ३, १; १०१२
 स्कम्भः आयोः १०, ५, ६; १५१८
 स्तनयन् एति १, १४०, ५, २९६

स्तभूयन् १०, ४६, ६; १६०६
 स्तभूयमान ३, ७, ४; ४९३
 स्तवमानः १, १४७, ५; ३४७
 स्तवान् ५, १०, ७, ८४१। ६, ८, ७, १७८६
 स्तिपाः १०, ६९, ४, १६२८
 स्तिथानां वृषभ ७, ५, २, १७९५
 स्तीर्ण बर्हिः वा० य० २१, १५ २०४०
 स्तुतः (ष्टुतः) ३, ५, ९; ४७८। ५, १०, ७, ८४१
 स्तुभवा १, ६६, ४, १३७
 स्थाता गर्भ १, ७०, ३, १७६
 स्पन्दः ६, १२, ५; १०१०
 स्पार्हः ४, १, १२, ६३८
 स्पृहयद्वर्णः २, १०, ५, ४१३
 स्वङ्गः १०, १, १, १४८५
 स्वञ्जः ६, १५, १०; १०३२। ७, १०, ३, ११६३
 स्वतवान् ४, २, ६; ६५२
 स्वधावान् १, १४४, ७, ३३२। १, १४७, २; ३४४। ३, २०, ३, ६१६। ४, १०, ६, ७२५। ४, १२, ३; ७३६। ५, ३, २, ५, ७८०, ७८२; ८, ४४, २०; १३६२। १०, ११८, १५४७। १०, १४२, ३, १६९२। ४, ५, २, १७५९। १, ९५, १, ४, १८६८; १८७१
 स्वध्वर. १, १२७, १, २७२। २, २, ८, ३९२। ३, ९, ८, ५०७। ५, २, ३, ८३०। ६, १५, ४, १०२६। ६, १६ ४०; १०८१। ७, १६, १, ११९२। ८, १९, २४, १२४७। ८, १०३, १२; १२६८। ८, २३, ५; १२७४। १०, ११५, २, १६६७। ३, २६, ८, १७३४
 स्वनीकः २, १, ८; ३७६। ४, ६ ६, ६८७। ६, १५, १६, १०३८। ७, १, २३; ११२२। ७, ३, ६, ११२९
 स्वपसः [तिष्ठः देव्यः] १०, ११०, ८, २०१५
 स्वभिष्टिः ८, १९, ३२, १२५५
 स्वयशा १, ९५, २, ५, १८६९, १८७२
 स्वराट् १, ३६, ७; ७४

स्वराज्यः २, ८, ५; ४०१
 स्वचिः २, ३, २, १२४३
 स्वर्णरः ६, १५, ४; १०२६। ८, १९, १; १२२४
 स्वर्कूष् ५, २६, २, ९२१। ३, २, १४; १७४०
 स्वर्पतिः ८, ४४, १८, १३६०
 स्वर्वान् १, ५९, ४; १७२०
 स्वर्वित् ३, ३, ५, १०; १७४६, १७५१। ३, २६, १; १७५३। १, ९६, ४, १८८२। १०, ८८, १; २३९७। वा० य० २८, २; २०८५
 स्ववसः ५, ८, २; ८२२
 स्वश्व. ४, २, ४, ६५०
 स्वाद्य (द्रुम) न् १, ६९, ३, १६६
 स्वाधी. १, ६७, २, १४५। १, ७०, ४; १७७। ४, ३, ४, ६६९
 स्वामः (षष्ठी) ४, ६, ८, ६८९। १०, ३, ४, १५०२
 स्वाहाकृतयः [देवता] १, १३, १२; १९१७। १, १४२, १२, १९२९। १, १८८, ११. १९४१। २, ३, ११। १९५२। ३, ४, ११, १९६३। ५, ५, ११; १९७३। ७, २, ११, १९३३। ९, ५, ११, १९९१। १०, ७०, ११; २००२। १०, ११०, ११; २०१३। वा० य० २०, ४६, ६६; २०२४, २०३६। २१, २२, ४०; २०४७, २०५९। २७, २२, २०७१। २८, ११, ३४, २०९४, २१०५। २९, ११, ३६, २११६, २१२८। १०, ६१ १३, २१४१। अथ० ५, १२, ११। २०१३। ५, २७, १२; २०८३
 हन्ता दस्योः अथ० १, ७, १; २२८४
 हन्ता भगुरावताम् १०, ८७, २२, १८४९
 हरिः ७, १०, १, ११६१। १०, ७९, ६, १६४२। १, ९५, १, १८६८। ९, ५, ४, १९८४, १९८९। अथ० १९, ६५, १; २३४९
 हरिकेशः ३, २, १३; १७३९
 हरितः [वनस्पतिः] ९, ५, १०; १९९०

हरितस्य देवः अथ० १, २५, २-३,
२२७६-७७
हरिवान् [इन्द्र] वा०य० २०, ३८-३९
२०१६-१७
हरिमत ३, ३, ५; १७४६
हर्यत-त (सर्वो) ८४४, ५; १३४७
हर्यमाणः ३, ६, ४; ४८३
हर्यत् १, १२७, ६; २७७ । १०, ४, ३;
१५०८
हविः सः १०, २०, ६; १५७६
हविः अस्मि नाम ३, २६, ७, १७५६
हविर्वाद् १.७२.७, २०१
हविष्कृत्-त-तम् (द्वि०) १, १३, ३;
१२०८
हव्यः जज्ञानः सद्यः बभूय १०, ६, ७,
१५२६
हव्यदातिः ३, २, ८; १७३४
हव्यवाद् १, १२, २; ११ । १, १२, ६;
१५ । १, ६, ७, २, १४५ । १, १२८, ८,
२९० । ३, ५, १०, ४७९ । ३, १०, ९;
५१७ । ३, ११, २, ५१९ । ३, २९, ७,
५६४ । ३, १७, ४; ६०३ । ४, ८, १,
७०४ । ५, ४, २, ७९१ । ५, ६, ५;
८०५ । ५, २८, ५, ९३७ । ६, १५, ४, ८;
१०२६, १०३० । ७, १०, ३; ११६३ ।
७, १७, ६, १२०९ । ८, ४४, ३ १३४५ ।
८, १०२, १७-१८, १४७९-८० ।
१०, ४६, ४, १०, १६०४, १६१० ।
१०, १२४, १; १६८३ । ३, २६, २;
१७२८ । १०, ११८, ९ १८६१ ।
८, ५६, ५, २४५५ । अथ० ४, २३, ४;
२३३३ । क्र० प्रैष ४, २३३१, १२, २१४०;
हव्यवाद् यज्ञस्य ३, २७, ५; ५४१
हव्यवाहनः १, ३६, १०, ७७ । १, ४४,
२, ५; ८७, ९० । २, ४१, १९; ४१५ ।
३, ९, ६; ५०५ । ५, ८, ६; ८२६ ।
५, ११, ४; ८४५ । ५, २५, ४, ९१४ ।
५, २८, ६; ९३८ । ६, १६, २, ३;
१०६४ । ७, १५, ६; ११८२ । ८, १९;
दे० ३५

२१; १२४४ । ८, २३, ६; १२७५ ।
१०, १५०, १; १६९८ । १०, ११८, ५,
१८५७
हव्या जुह्वानः १, ७५, १, २२४
हस्तासः अथ सप्त ४, ५८, ३, १८२७
हिस्रः १०, ८७, ३, ८, १८३०, १८३५
हितः १, १२८, ७, २८९ । ३, २८, ३,
५५४ । ५, १, ५, ७५९
हितः देवोमि मानुषे जने ६, १६, १,
१०४२
हिन्वान. प्र अजोमिः घेनामिः
क्र० प्रैष १२, २१४०
हिरण्यकेशः १७९, १, २४४
हिरण्यदन्तः ५, २, ३, ७६९
हिरण्यपर्णं वा० य० २८, ३३, २१०४
हिरण्यपाणि अथ० ३, २१, ८; २३६२
हिरण्ययः ४, ५८, ५, १८९९ । ९, ५,
१०; १९९०
हिरण्यरथः ४, १, ८, ६३४
हिरण्यरूपः २, ३५, १०; २४३१ ।
४, १, ३, साम० १, १, ७, ७,
हिरण्यवर्णः २, ३५, १०-११;
२४३१-३२
हिरण्यसंदृश-क् ६, १६ ३८; १०७९ ।
२, ३५, १०; २४३१
हिरण्यहस्त अथ० ७ ११५, २, २२०२
हिरिनिप्रः २, २, ५, ३८९
हिशिम्श्रुः ५, ७, ७, १८१७ । १०,
४६, ५, १६०५
हूयमानः १०, १२२, ५; १६७९
हृदः जायमानः १, ६०, ३, १२१
हृदिस्थः-क् ४, १०, १; ७२०
हृषीवत् १, १२७, ६; २७७
होता १, १, १; १ । १, १, ५; ५ ।
१, १२, १, ३, १०, १२ । १, २६, २, ५,
७; २९, ३२, ३४ । १, ३६, ३, ५, ७०, ७२ ।
१, ४४, ७, ११; ९२, ९६ । १, ४५, ७;
१०६ । १, ५८, १, ३, ६-७, ११०, ११२,
११५-१६ । १, ६०, २, ४; १२०, १२२ ।

१, ६७, २, १४५ । १, ६८, ७; १६० ।
१, ७०, ८, १८१ । १, ७६, २, ५; २३०,
२३३ । १, ७७, १-२; २३४-३५ । १,
७९, १२, २५५ । १, १२७, १, २७२ ।
१, १२८, १; २८३ । १, १२८, ८, २९० ।
१, १४१, ६, १२, ३१०, ३१६ ।
१, १४३, १, ३१८ । १, १४८, १; ३४८ ।
१, १४९, ४-५; ३५६-५७ । २, २, १,
५; ३८५, ३८९ । २, ९, १; ४०३ ।
२, ५, १, ४२५ । २, ६, ६; ४३८ ।
२, ७, ६; ४४६ । ३, १, २२; ४६८ ।
३, ५, ४; ४७३ । ३, ६, ३, १०; ४८२,
४८९ । ३, ७, ९; ४९८ । ३, ९, ९; ५०८ ।
३, १०, २, ५, ७; ५१०, ५१३, ५१५ ।
३, ११, १, ५१८ । ३, १३, ५; ५७८ ।
३, १४, १, ५८१ । ३, १९, ५, ६१४ ।
३, २१, १; ६१८ । ३, २९, ८; ५६५ ।
३, २९, १६; ५७३ । ३, २९, १; ६१० ।
४, १, ८, १९, ६३४, ६४५ । ४, २, १;
६४७ । ४, ६, १, ४ ५, ११, ६८२, ६८५-
८६, ९१ । ४, ७, १, ५, ६९३, ६९७ ।
४, ८, ४; ७०७ । ४, ९, ३; ७१४ ।
४, १५, १; ७४९ । ५, १, २, ५, ६, ७;
७५६, ७५९-६०-६१ । ५, २, ७, ७७३ ।
५, ४, ३, ७९२ । ५, ९, २, ८२९ ।
५, १०, ७; ८४१ । ५, ११, २; ८४३ ।
५, १३, ४; ८५७ । ५, १६, २; ८७२ ।
५, २०, ३; ८९३ । ५, २२, १, ८९९ ।
५, २३, ३; ९०५ । ५, २५, २; ९१२ ।
५, २६, ४; ९२३ । ६, १, १-२, ६;
९३९-४०, ९४४ । ६, २, १०; ९६१ ।
६, ४, १, ९७१ । ६, ६, १; ९८६ ।
६, १०, २; ९९४ । ६, ११, १-२, ६;
१०००-१, १००५; ६, १२, १; १००६ ।
६, १४, २, १०१९ । ६, १५, ४, ७, १३;
१०२६, १०२९, १०३५ । ६, १६, ९,
१०, २३, ४६, १०५०-५१, १०६४,
१०८७ । ७, ८, २, ११५० । ७, ९, १;
११५५ । ७, १०, ५; ११६५ । ७, १६, ५,
१२, ११९६, १२०३ । ८, ११, १०;
१२२३ । ८, १९, ३, २४, १२२६, १२४७ ।

८, १०३, ६, १२६२ । ८, २३, १७, १२८६ । ८, ४३, १२; १३२१ । ८, ४३, २०; १३२९ । ८, ४४, ६-७, १०; १३४८-४९, १३५२ । ८, ७५, १; १३७३ । ८, ६०, १, ३; १३८९, १३९१ । ८, ६० १४, १४०२ । ८, ७१, ११, १४१९ । १०, १, ५; १४८९ । १०, २, ३, ५, १४९४, १४९६ । १०, ६, ४; १५२३ । १०, ११, ३-४; १५४२-४३ । १०, १२, १-२; १५४९-५० । १०, २१, १; १५८१ । १०, ४६, १, ४, ८; १६०१, १६०४, १६०८ । १०, ५३, २; १६१७ । १०, ९१, ८-९, ११, १६५८-५९, १६६१ । १०, १२२, १, १६७५ । १०, १७६, ३, १७०९ । १०, ५९, ४ १७२० । ३, २६, १, ६, १७२७, १७३२ । ३, २, १५; १७४१ । ४, ४, ११, १८२३ । १, १३, १, ४, ८ । १९०६, १९०९, १९१३ । १, १४२, ८, १९२५ । २, ३, १, १९४२ । ३, ४, ३-४, १९५५-५६ । १०, ७०, ३; १९९९ । १०, ११०, ३, १११; २०१०, २०१८ । ३, ३, १, अथ० ६, ७१, १-२,

२३४६-४७ । ३, २१, ५, २३५९ । साम० १, १, ७, ७, होता अध्वरस्य ६, १५, १४, १०३६ होता चर्षणीनाम् १, २७, २; २७३ । ८, २३, ७; १२७६ । ८, ६०, १७, १४०५ होता देवानाम् वा० य० २९, २८, २१२० होता पूर्वः ५, ३, ५; ७८२ होता पूर्व्यः १, ९४, ६, २६१ । ८ ७५, १, १३७३ होता प्रथमः ७, ११, १; ११६६ । ६, ९, ४, १७९० होता प्रथम देवजुष्टः १०, ८८, ४, २४०० होता मनुजितः ६, १६, ९; १०५० होता यज्ञानां विश्वाम् ६, १६, १; १०४२ होता यशस्तमः विश्व ८, २३, १०; १२७९ होता रोदस्यो ६, १६, ४६, १०८७ होता विश्व मानुषीषु १०, १, ४, १४४८, १०, ७, ५; १५३१

होता शश्वतीनाम् ८, ३९, ५, १३०४ होता सनात् ८, ११, १०, १२२३ होता हविष विश्वस्य १०, ९१, १; १६५१ होतारो दैव्यौ १, १३, ८, १९१३ । १, १४२, ८, १९२५ । १, १८८, ७; १९३७ । २, ३, ७, १९४८ " (प्रचेतसौ) [देवता] ३, ४, ७, १९५९ । ५, ५, ७, १९७० । ७, २, ७; १९८० । ९, ५, ७, १९८७ । १०, ७०, ७, १९९८ । १०, ११०, ७; २००९ । वा० य० २०, ४२, ६३, २०२०, २०३२ । २१, १८, ३६, २०४३, २०५५ । २७, १८, २०६७ । २८, ७, ३०; २०९०, २१०१ । २९, ७, ३२; २११२, २१२४ । ऋ० प्रेष ८, २१३६ । अथ० ५, १२, ७, २००९ । ५, २७, ९, २०८० होत्रम् तव २, १, २, ३७६ होत्रवाह ५, २६ ७; ९२६ होत्राविद् ५, ८, ३, ८२३ ह्रुः अथ० १, २५, २-३; २२७६-७७ ।

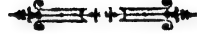




दैवत-संहिता

(२)

इन्द्रदेवता



संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय-मण्डल, ओध (जि० सातारा)



संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४९



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

इन्द्रदेवता का परिचय ।

मेघस्थानीय विद्युत् ।

अब इन्द्रदेवता के स्वरूप का परिचय करनेका यत्न करना है। इन्द्रदेवता कौन है, कहाँ रहता है, क्या करता है, हमसे उनका संबंध क्या है, उसकी सहायता हमें किस तरह मिल सकती है? इसका विचार करना है। इन्द्रदेवता 'मेघस्थानीय विद्युत्' है, ऐसा कई कहते हैं। इन्द्रका अर्थ Thunderbolt [मेघस्थानीय विद्युत्] है, ऐसा इनका कहना है। इन्द्रदेवताके अनंतविधस्वरूप में मेघस्थानीय विद्युत् यह एक रूप है, इसमें सन्देह नहीं है। पर युरोपीयन लोग सर्वथा मेघस्थानीय विद्युत् ही 'इन्द्र' है, ऐसा जब कहने लगते हैं, तब हम कहते हैं कि, वेदका संपूर्ण इन्द्रदेवता का वर्णन 'मेघस्थानीय विद्युत्' पर घट नहीं सकता। इसका विचार करना हो, तो 'इन्द्रिय' शब्दका प्रथम विचार कीजिये।

इन्द्रिय = इन्द्रकी शक्ति ।

'इन्द्रिय' शब्द इन्द्र शब्दसे ही बनता है। 'इन्द्र+इ+य' ये तीन विभाग इन्द्रपदमें हैं, इन्द्र [इ] की [य] शक्ति, यह हमका अर्थ है। इन्द्रिय 'इन्द्रकी शक्ति' है। भगवान् पाणिनी महामुनि 'इन्द्रिय' शब्दका निर्वचन ऐसा करते हैं—

इन्द्रियं इन्द्रलिङ्गं इन्द्रदृष्टं इन्द्रसृष्टं इन्द्रजुष्टं
इन्द्रदत्तं इति वा । [अष्टा० ५।२।१३]

इन्द्र आत्मा, तस्य लिङ्गं, करणेन कर्तुः अनुमानात् । इन्द्रेण दुर्जयामिन्द्रियम् । [भट्टोजी०]
इन्द्रेण दृष्टं ज्ञातं 'मम चक्षुः, मम श्रोत्रं' इत्यादिक्रमेण सृष्टं, अदृष्टद्वारा जुष्टं, प्रीणिनं सेवितं वा । दत्तं यथायथं विषयेभ्यः ॥

[कौमुदी तत्त्वबोधिनी टीका]

'इन्द्र आत्माका नाम है। इस आत्माका ज्ञान इससे होता है, इन्द्रने यह अपना साधन है, ऐसा जाना है, इन्द्रने अपनी साधना के लिये इसको निर्माण किया, इन्द्रने इसका सेवन किया, इन्द्रने यह विषयोंके प्रति भेजा है, वह इन्द्रिय है।'।

यहां भगवान् पाणिनी मुनि अपने व्याकरण में "इन्द्र की शक्ति" इस अर्थमें इन्द्रिय शब्द सिद्ध करते हैं। यह इन्द्रिय शब्द वेदमें है। अर्थात् इन्द्रकी शक्ति अर्थमें यह इन्द्रिय शब्द है और वह वेदमें है। केवल मेघस्थानीय विद्युत् ही अर्थ लेनेसे इस पाणिनी महामुनिके बताये अर्थकी सिद्धि नहीं हो सकती।

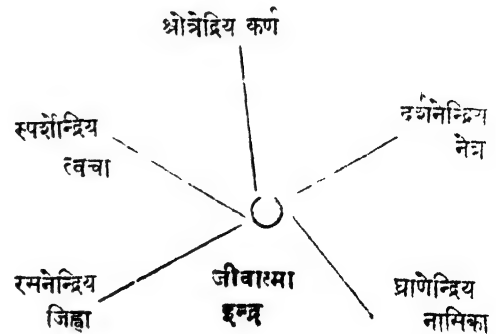
हम भी अपने आँख, नाक, कान आदि साधनोंको 'इन्द्रिय' ही कहते हैं। ये ज्ञानके साधन और कर्मके साधन इन्द्रिय ही हैं, अर्थात् ये इन्द्रके साधन हैं, ये इन्द्रकी शक्तियाँ हैं। अर्थात् इन्द्र इनके पीछे है, इन्द्रसे इनमें शक्ति आ रही है, इनसे इन्द्रका ज्ञान हो रहा है। यह विवरण देखनेसे मेघस्थानीय विद्युत् ही केवल इन्द्र नहीं है, यह बात सिद्ध हो जाती है। वेदमें कहा है—

आदित् ह नेम इन्द्रियं यजन्ते । [ऋ० ४।२।४५]

“[नेमे] अन्य लोग [आत् इत्] उस समय [इन्द्रियों] इन्द्रियोंको बल देनेवाले इन्द्रका [यजन्ते] यजन करते हैं। इस मन्त्रमें 'इन्द्रिय' शब्दही इन्द्रका वाचक आया है, क्योंकि इन्द्रमें जो शक्ति है, वह इन्द्रकी है, इन्द्रही इन्द्रिय-रूप बना है और मानवी देहोंमें कार्य कर रहा है।

देहधारी जीवके पास सब इन्द्रियाँ हैं, वह सबकी सब इन्द्रकी शक्तियाँ हैं, अर्थात् इन्द्रियोंके पीछे इन्द्र छिपा रहा है, अपनी शक्तिको इन्द्रियोंद्वारा प्रकट कर रहा है। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि, जीवात्मा इन्द्र है और इन्द्रियाँ उसकी शक्तियाँ हैं।

इन्द्रके इन्द्रिय



इन्द्रके ये इन्द्रिय हैं । इससे स्पष्ट हो जाता है, कि यह इन्द्र निःसन्देह आत्मा है, जो अन्दर रहता है और अपनी शक्तियोंको बाहर इन्द्रियस्थानोंमें भेजकर विविध कार्य करता है ।

हमारे इन्द्रियभी बाह्य देवताओपर अवलम्बित हैं। जैसा नेत्र सूर्यपर, जिह्वा जलपर, नासिका पृथ्वीपर, त्वचा वायुपर और कर्ण आकाशपर अवलम्बित हैं। बाह्य देवताओसेही ये इन्द्रियगोलक बने हैं। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषदमें इस तरह किया है—

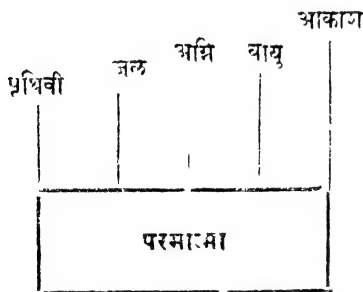
आदित्यश्चभूर्भुवः॑ऽधिणी प्राविशत् ।

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन् ।

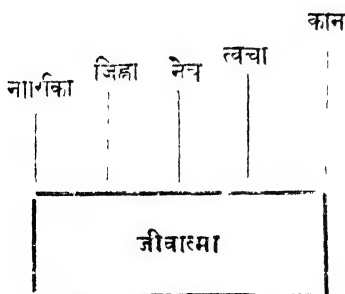
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत् ॥ ऐतरेय]

‘सूर्य आस्र बन कर नेत्रस्थानमें प्रविष्ट हुआ, दिशा (आकाश) कान बन कर श्रवणेन्द्रियके स्थानमें प्रविष्ट हुई, वायु प्राण बन कर नासिकाके स्थानमें प्रविष्ट हुआ ।’ इसी तरह अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इन्द्रियस्थानोंमें प्रविष्ट हुई हैं ।

विश्वसृष्टि



व्यक्तिसृष्टि



इससे स्पष्ट हो जाता है, जो देवता इस विशाल जगत् में परमात्मदेहमें है, वे ही सूक्ष्म अक्षरूपसे इस जीवके देहमें इन्द्रियो रूपमें प्रकट हुई हैं । इस तरह विचार

करनेपर यह बात प्रकट होगी कि, जैसा इन्द्रियोंके पीछे जीवात्माके रूपमें 'इंद्र' है, उसी तरह विश्वव्यापक शक्तियों के पीछे परमात्मारूप में भी इन्द्रही है । अर्थात् एकही इन्द्रके जीवात्मा और परमात्मा ये रूप क्रमशः शरीरमें और विश्वमें हैं । यहांतक हमने इन्द्र का स्वरूप सामान्यतः भेद्यस्थानीय विद्युत् से पृथक् है, यह देख लिया । अब इसका विचार अधिक करनेके लिये सबसे प्रथम हम निरुक्त-कार श्री यास्काचार्यजीका निर्वचन देखते हैं—

निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।

इन्द्र इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दधातीति वा, इरां दारयति इति वा, इरां धारयति इति वा, इन्द्रवे द्रवतीति वा, इन्द्रौ रमन् इति वा, इन्धे भूतानीति वा, 'तद्यदेनं प्राणैः समैन्धन्स्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वं' इति विज्ञायते, इदं करणादित्याग्रयणः, इदं दर्शनादित्यौपमन्वयः, इन्दतेर्वैश्वर्यकर्मणः, इन्द्रञ्छ्रूणां दारयिता वा द्रावयिता वा, आदरयिता च यज्यनाम् ।

(निरुक्त० १०।१।९)

इसमें निम्नलिखित प्रकार की निरुक्तियां दीं हैं । क्रमशः ये अब देखिये—

- (१) इरां दृणाति= जो अन्नको, जलको, बीजको फोड़ता है,
- (२) इरां ददाति= जो अन्न वा जलको देता है,
- (३) इरां दधाति= जो अन्न वा जलका धारण करता है,
- (४) इरां दारयते= जो अन्न वा जलका विदारण करता है,
- (५) इरां धारयते= जो अन्न वा जलका धारण करता है,
- (६) इन्द्रवे द्रवति= जो इन्दु-चन्द्रमा के लिये द्रव-रूप होता है, रस निष्पन्न करता है,
- (७) इन्द्रौ रमन्ते= जो जल या रसमें रमता है,
- (८) इन्धे भूतानी= जो भूतोंको प्रकाशित करता है, उजाला करता है, तेजस्वी करता है,
- (९) प्राणैः समैन्धन्= प्राणोंसे जिसका दीपन होता है, प्राणोंसे जो प्रकाशित होता है,
- (१०) इदं करोति= इस जगत् को जो निर्माण करता है,
- (११) इदं पश्यति= इस विश्व को जो देखता है,
- (१२) इन्द्रतीति इन्द्रः= परम वैश्वर्यसे जो संपन्न होता है,

(१३) इन्द्रं शत्रूणां दारयिता = शत्रुओं को विदारण करनेवाला,

(१४) इन्द्रं शत्रूणां द्राघययिता = शत्रुओंको जो भगा देता है,

(१५) यज्वनां आदरयिता = याजकोंका आदर करनेवाला,

ये निर्वचन श्री यास्क्याचार्य के दिये हैं । इस प्रत्येक निर्वचन की सत्यता की परीक्षा करना हो, तो इन अर्थोंके दर्शक मन्त्र वेदोंमें ढूढने चाहिये । जिस अर्थके वेदमन्त्र मिलेंगे, वह अर्थ वेदप्रमाणयुक्त है, अतः आदरणीय है, और जो वेदमें नहीं दीखेगा, वह लेनेयोग्य नहीं, ऐसा समझना योग्य है । अन्तिम तीनों अर्थ वेदके प्रमाणोंसे परिपुष्ट हैं, इसके प्रमाण हम आगे देंगे । क्रमांक ९-१२ तकके अर्थ अध्यात्म में पाठक देख सकते हैं, इस विषयमें पाणिनी मुनि का सूत्र पूर्वस्थलमें दिया है और उसका विवरण किया है और इसी तरह की ऐतरेयोपनिषद् की व्युत्पत्ति आगे हम देंगे । अध्यात्मपक्ष के मन्त्र भी पर्याप्त मिलेंगे । अन्य व्युत्पत्तियोंके लिये वेदमें मन्त्र देखने चाहिये । यह एक बड़ा खोज करनेका विषय है । इसका निर्देश यहां इसलिये किया है कि, इससे पाठकोंके मनमें इस बातका प्रकाश हो जाय कि, निरुक्तकार आदिकोंके अर्थ उस समय ही लेने चाहिये, जिस समय उस अर्थ को दर्शानेवाले मन्त्र मिल जायँ । अस्तु ! हम अब ब्राह्मणों और उपनिषदों में दिये हुए 'इन्द्र' पद के निर्वचन देखते हैं । सबसे प्रथम ऐतरेय उपनिषदमें एक उत्तम निर्वचन दिया है, वह देखिये—

उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।

तस्मादिन्द्रो नाम इन्द्रो ह वै नाम तमिन्द्रं संतं इन्द्र इत्याचक्षते पणेशेण पणेशप्रिया इव हि देवाः ॥ [ऐ० उ० ४।१।१४]

'इसका नाम 'इंद्र-द्र' था । इस 'इंद्र-द्र' को ही 'इंद्र' परोक्षशक्तिसे कहने लगे । 'इंद्र-द्र' का अर्थ है, (इंद्र) इस शरीरमें (द्र) सुरास्त्र करनेवाला । इस शरीरमें सुरास्त्र करके वहां इंद्रियों को निर्माण करनेवाला । इस आत्माने इस शरीरमें अनेक सुरास्त्र किये और उनसे अपने विविध कार्य करने लगा । इन सुरास्त्रोंका नाम ही इंद्रियों है । इस विषय में पहिले दी हुई 'इंद्रिय' शब्दकी व्युत्पत्ति देखिये । इस सम्बन्धमें 'इरां णाति' यह यास्कीय निरुक्ति देखने

योग्य है । इस तरह ऐतरेय उपनिषद् की यह व्युत्पत्ति इन्द्रका स्वरूप 'आत्मा' निश्चित करती है । अब और देखिये—

एष ब्रह्मा, एष इन्द्रः एष प्रजापतिः,

एतं सर्वं देवाः ।

[ऐ० उ० ५।३]

'यही ब्रह्मा है, यही इन्द्र है, यही प्रजापति है, यही सब देव हैं ।' अर्थात् इन्द्र नामसे अथवा 'इंद्र-द्र' नामसे यहां वर्णन किया है, वही सब देवतारूप है अथवा उसीके रूप सब देवता है ।

ततः प्राणोऽजायत, स इन्द्रः स एषोऽस्पृत्तोऽ

द्वितीयः ।

[वृ० उ० १।५।१२]

'उससे प्राण हुआ, वही इन्द्र है और वही शत्रुरहित एक तथा अद्वितीय है ।' यहां प्राणकोही इन्द्र कहा है । तथा—

एतं इन्धं सन्तं इन्द्र इत्याचक्षते । [वृ० उ० ४।१।२]

'इस इन्ध अर्थात् प्रदीप्त करनेवालेकोही इन्द्र कहते हैं ।' निरुक्तकारने यह व्युत्पत्ति दी है । 'इन्धे भूतानि' [निरु०] जो भूतोंको प्रकाशित करता है । निम्नलिखित वर्णनमें इन्द्रको परमात्मासे छोटा बताया है—

भीपास्मादग्निश्चेन्द्रश्च ।

[तै० उ० २।८।१]

इस परमात्माके भयसे अग्नि और इन्द्र डरते हुए भीमे प्रकाशते हैं ।' तथा—

शतं देवानां आनन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः ।

शतं इन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः ॥

[तै० उ० २।८।१]

'देवोंके सौ आनन्दोंके बराबर इन्द्रका एक आनन्द है । इन्द्रके सौ आनन्दोंके बराबर बृहस्पतिक एक आनन्द है ।'

एष खलु आत्मा इन्द्रः ।

[मै० उ० ६।८]

असौ वा आदित्य इन्द्रः

[मै० उ० ६।३३]

चाक्षुष इन्द्रोऽयम् ।

[मै० उ० ७।११]

इन्द्रस्त्वं प्राण तेजसा रुद्रोऽसि परिरक्षिता ।

त्यमन्तरिक्षे चरमि सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः ॥

[प्रश्न० २।९]

स ब्रह्मा, स शिवः, स हरिः, सैन्द्रः, सोऽक्षरः,

परमः स्वराट् ।

[नृ० पू० ता० उ० १।४]

'यह आत्मा निःसंदेह इन्द्र है । यह सूर्य इन्द्र है । चक्षु में तो तेज है, वह इन्द्र है । प्राण ही इन्द्र है, वही तेजसे रक्षण करता है, अन्तरिक्षमें यही संचार करता है,

सूर्यभी यही है । वही ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र, भक्षर और परम स्वराट् है ।' अर्थात् प्राण ही इन्द्र है और वही सब देवताओंका रूप धारण करता है ।

मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।

अपने शरीर मस्तकमें एक स्तन जैसा अवयव है, इसका वर्णन तै० उपनिषद् में निम्नलिखित प्रकार आया है—

अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलंबते सा इन्द्रयोनिः । [तै० उ० १।६।१]

‘तालुके अन्दर [मस्तकके बीचमें] एक स्तन जैसा अवयव है, वह इन्द्रशक्तिको उत्पन्न करनेवाला है ।’ अपने शरीर में इन्द्रशक्ति का संचार यहाँसे होता है । इसको ‘पीनियल ग्लण्ड’ [इन्द्रग्रंथी] कहते हैं । योगसाधन करते हुए इस पर ध्यान करनेसे यह ग्रन्थी उत्तेजित होती है, जिससे अनेक लाभ होते हैं । इस विषयमें ‘इन्द्रशक्तिका विकास’ नामक पुस्तक अवश्य देखिये ।

इन्द्रके विषयमें ब्राह्मणग्रंथोंमें निम्नलिखित पञ्चन मिलते हैं । वे अब देखिये—

ब्राह्मणग्रन्थोंमें इन्द्रका अर्थ ।

(१) इंधो वै नाम एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषः न वा एतं इंधं संतं इंद्र इत्याचक्षते ।

[श० ब्रा० १।४।१।१२]

(२) अस्मिन् वा इदमिन्द्रियं प्रत्यस्थादिति तर्दिद्रस्य इंद्रत्वम् । [तै० ब्रा० २।२।१।०।७]

(३) इंद्रस्य इंद्रियेणाभिपिञ्चामि । [गि० ब्रा० ८।७]

(४) इंद्र [एवैनं] इंद्रियेण [अवति] [तै० ब्रा० १।७।६।१।६]

(५) दधातु इंद्र इंद्रियम् । [तां० ब्रा० १।३।५]

(६) मयि इंद्र इंद्रियं दधातु । [श० ब्रा० १।८।१।४२]

(७) इंद्र इति होतं आचक्षते य एषः [सूर्यः] तपति । [श० ब्रा० ४।६।७।११]

(८) एष वै शुक्रो य एष तपति एष उ एवेन्द्रः ।

[श० ब्रा० ४।५।५।७; ४।५।९।४]

(९) स यः स इंद्र एष एव स य एष तपति ।

[जै० ब्रा० उ० १।२।८।२; १।३।५]

(१०) यः स इंद्रोऽसौ स आदित्यः । [श० ब्रा० ८।५।३।२]

(११) अथ यत्रैतत्प्रदीप्तो भवति । उच्चैर्धूमः परमया जूत्या बल्यलीति तर्हि हैष [अग्निः] भवतीन्द्रः ।

[श० ब्रा० २।३।२।११]

(१२) इंद्रो वाग् इत्यु वाऽआहुः [श० ब्रा० १।४।५।४]

(१३) तस्मादाहुस्त्रिन्द्रो वागिति [श० ब्रा० १।१।६।१।८]

(१४) अथ य इंद्रः सा वाक् । [जै० ब्रा० उ० १।३।३।२]

(१५) वाग्वा इंद्रः । [कौ० ब्रा० २।७; १।३।५]

(१६) वागिन्द्रः । [श० ब्रा० ८।७।२।६]

(१७) यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः [श० ब्रा० ४।१।३।१९]

(१८) योऽयं चक्षुषि पुरुष एष इन्द्रः । [जै० ब्रा० उ० १।४।३।१०]

(१९) ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः । [श० ब्रा० १।४।३।१।९]

(२०) प्राण एवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।४]

प्राण इन्द्रः । [श० ब्रा० ६।१।२।२८]

(२१) हृदयमेवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।५]

(२२) यन्मनः स इंद्रः । [गो० ब्रा० उ० ४।११]

(२३) मन एवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।३]

(२४) इंद्रो वै यजमानः । [श० ब्रा० २।१।२।११; ३।३।३।१०।४।५।४।८।५।१।३।४; ८।५।३।८]

(२५) द्वयेन वा एष इंद्रो भवति यश्च क्षत्रियो यदु च यजमानः । [श० ब्रा० ५।३।५।२७]

(२६) ऐंद्रो वै राजन्यः । [तै० ब्रा० ३।८।२।३।२]

(२७) इंद्रः क्षत्रम् । [श० ब्रा० १।०।४।१।५; कौ० ब्रा० १।२।८; श० ब्रा० २।५।२।२७-२।५।४।८; ३।९।१।१६; ४।३।३।६]

(२८) यदशनिर्दिन्द्रः । [कौ० ब्रा० ६।९]

(२९) स्तनयित्तुरेवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।१।६।३।९]

(३०) इन्द्रो ब्रह्मेति । [कौ० ब्रा० ६।१४]

(३१) प्रजापतिर्वा स इन्द्रः । [श० ब्रा० २।३।१।७]

(३२) देवलोको वा इन्द्रः । [कौ० ब्रा० १।६।८]

(३३) इन्द्रो बलं बलपतिः । [श० ब्रा० १।१।४।३।१२; तै० ब्रा० २।५।७।४]

(३४) वीर्यं वा इन्द्रः । [तां० ब्रा० ९।७।५, ८।गौ० ब्रा० उ० ६।७]

(३५) इन्द्रियं वीर्यं इन्द्रः । [श० ब्रा० २।५।४।८; ३।९।१।१५; ५।३।३।१८]

(३६) शिस्नमिन्द्रः । [श० ब्रा० १२।१।११६]

(३७) रेत इन्द्रः । [श० ब्रा० १२।५।११७]

(३८) अर्जुनो ह वै नाम इन्द्रः । [श० ब्रा० २।१२।११; ५।४।३।७]

(३९) इन्द्रो आहवनीयः । [श० ब्रा० २।५।१।२८; २।३।२।२]

(४०) इन्द्र एष यदुद्राता । [जै० ब्रा० ७०।१२।२।२]

(४१) इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठो देवतानाम् । [तै० ब्रा० २।५।१।३]

(४२) इन्द्रः सर्वा देवता, इन्द्रश्रेष्ठो देवाः । [श० ब्रा० ३।४।२।२; १।५।३।२०]

(४३) ततो वा इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत् । [तै० ब्रा० २।२।१।०।३]

(४४) इन्द्रो वै देवानामाजिष्ठो बलिष्ठः सहिष्ठः सत्तमः, पारयिष्णुतम । [ऐ० ब्रा० ७।१६, ८।१०]

(४५) इन्द्रो वै देवानां ओजिष्ठो बलिष्ठः । [कौ० ब्रा० ६।४; गो० ब्रा० ७।१।१]

(४६) इन्द्र ओजसां पते । [तै० ब्रा० २।१।१।४।२]

(४७) इन्द्राय अहोमुचे । [तै० ब्रा० १।१।३।७]

(४८) इन्द्राय सुव्राणे । [तै० ब्रा० १।१।३।७]

(४९) ओकः कारी हैवैषामिन्द्रो भवति । [गो० ब्रा० ६।४, ५।१५, ऐ० ब्रा० ७।१७, २०]

(५०) इन्द्रो यज्ञस्यात्मा, इन्द्रो देवता । [श० ब्रा० १।५।१।३३]

(५१) ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी । [ऐ० ब्रा० २।२४; तै० ब्रा० १।६।१।५]

(५२) इन्द्रस्य हरी बृहद्रथंतरे । [ता० ब्रा० १।४।८]

(५३) सेना इन्द्रस्य पत्नी । [गो० ब्रा० २।९]

(५४) ऐन्द्राः पशवः । [ऐ० ब्रा० ६।२५]

(५५) एतद्वा इन्द्रस्य रूपं यदपभः । [श० ब्रा० २।५।३।१८]

(५६) इन्द्रो वा अश्वः । [कौ० ब्रा० १।५।४]

(५७) ऐन्द्रो वै माध्यंदिनः । [गो० ब्रा० ७।१२३, ६।१। कौ० ब्रा० ५।५, २२।७; ऐ० ब्रा० ६।३०]

(५८) इन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्र इति । [कौ० ब्रा० १।४।१]

(५९) यत् शुक्लं तदैन्द्रम् । [श० ब्रा० १।२।१।१।२]

इतने ब्राह्मणग्रन्थोंके वचनों में 'इन्द्र' के जो अर्थ दिये हैं, वे ये हैं—[१] दक्षिण नेत्रमें जो पुरुष है, वह इन्द्र है, [२] इन्द्रियकी शक्तिसे इन्द्र का बोध होता है, [३] इन्द्र

इन्द्रियसे रक्षा करता है, [४] सूर्य ही इन्द्र है, [५] अग्नि जो बलसे जलता है, जिसका धूम ऊपर जाता है वह इन्द्र है, [६] वाणी ही इन्द्र है, [७] वायुही इन्द्र है, प्राण इन्द्र है, [८] हृदय, मन ये इन्द्र हैं, [९] यजमान इन्द्र है, [१०] क्षत्रिय, राजन्य इन्द्र है, [११] क्षात्र तेज इन्द्र है, [१२] मेघस्थानीय विद्युत् इन्द्र है, [१३] ब्रह्मा इन्द्र है, [१४] प्रजापति, देवलोक, ये इन्द्र हैं, [१५] बल और बलवान् दोनों इन्द्र हैं, [१६] वीर्य इन्द्र है, [१७] शिस्न और रेत इन्द्रिय हैं, [१८] अर्जुन इन्द्र है (इन्द्र पुत्र होनेसे), [१९] आहवनीय अग्नि इन्द्र है, [२०] उद्राता इन्द्र है, [२१] देवोंमें श्रेष्ठ देव इन्द्र है, सब देवताही इन्द्र हैं, देवोंका राजा इन्द्र है । [२२] जो देवोंमें बलिष्ठ, ओजिष्ठ, सहिष्ठ और संकटोंसे पार ले जानेवाला है, वह इन्द्र है, [२३] पापसे छुड़ानेवाला, रक्षा करनेवाला इन्द्र है, [२४] घर बनानेवाला इन्द्र है, [२५] यज्ञ का आत्मा, यज्ञ का देवता इन्द्र है, [२६] बैल इन्द्र का रूप है, अश्व इन्द्र है, [२७] ज्योति इन्द्र है, जो श्वेत तेज है, वह इन्द्र है, [२८] ऋचा व साम, बृहत् और रथन्तर ये इन्द्रके घोड़े हैं । [२९] सेना इन्द्रकी पत्नी है ।

इन इन्द्रके अर्थों या स्वरूपों को देखनेसे केवल मेघ-स्थानीय विद्युत् ही इन्द्र है, ऐसा कहना योग्य नहीं हो सकता ।

शरीरमें इन्द्र= आंखकी पुतली, इन्द्रिय, हृदय, मन, प्राण, आत्मा, वाणी, बल, ओज, सह, गौरवर्ण, शिस्न, रेत ये शरीरमें इन्द्रके रूप हैं ।

मानवोंमें इन्द्र= यजमान, ब्रह्मा, उद्राता, राजा, क्षत्रिय, वीर, बलिष्ठ, ओजिष्ठ, इन्द्रिष्ठ, दुःखोंके पार ले जानेवाला, वक्ता, घर बनानेवाला इन्द्र है ।

देवोंमें इन्द्र= सब देवता, देवोंका राजा, सूर्य, आदित्य, अग्नि, तेज, विद्युत्, मेघस्थानीय बिजुली इन्द्र हैं ।

पशुओंमें इन्द्र= बैल और अश्व ये पशुओंमें इन्द्र हैं । इस तरह इन्द्रके रूप विविध स्थानोंमें हैं । 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते' [ऋ० ६।४।१८] इन्द्र अपनी शक्तियोंसे नाना रूप धारण करता है, यह इस तरह उनके नाना रूप हैं । सब विश्वही उसका रूप है और विश्वान्तर्गत हर एक रूप इन्द्रका ही रूप है ।

इस तरह इन्द्र की महिमा देखनेयोग्य है । अब वेदोंमें जो नाम इन्द्रके लिये आये हैं, उनका विचार करते हैं—

वेदमें इन्द्रके विशेषण ।

परमेश्वर का ही नाम 'इन्द्र' है, ऐसा स्पष्ट दर्शानेवाले कई पद वेदके मंत्रोंमें है देखिये—[अनूनः] किसी स्थानपर न्यून्य नहीं, सब स्थानोंमें एक जैसा भरा है, सर्व व्यापक [दिवि-क्षाः द्युक्षः] द्युलोकमें, आकाशमें रहनेवाला [स्वर्पति] द्युलोक अथवा आकाशका स्वामी, [विश्वतस्पृथुः] विश्वके चारों ओर भरपूर विश्वसे भी अधिक व्यापक, [अन्तरिक्षप्रा] अन्तरिक्षमें, वाचके अवकाशमें परिपूर्ण होकर रहनेवाला, [विभुः] व्यापक, विश्वव्यापक, [विश्वभूः] विश्वमें भरपूर, विश्वभरमें रहनेवाला, [दिविस्पृश] आकाशमें व्यापक ये शब्द इन्द्रदेव विश्वभरमें परिपूर्ण-तया व्यापक है, यह भाव बताते हैं कि सर्वव्यापक परमेश्वर ही इन्द्र है, यह बात इन शब्दोंसे सिद्ध होती है ।

[विश्वकर्मा] सब विश्वकी रचना करनेवाला, विश्वरूप कर्म करनेवाला [लोककृत्] सब सूर्यादि लोकोंका निर्माण करनेवाला [विश्वमनाः] विश्व जितना जिसका व्यापक मन है, [विश्ववेदाः] विश्वको यथावत् जाननेवाला ये पदभी इन्द्र परमात्माही हैं, ऐसा बताते हैं । ये पद वेदमंत्रों में इन्द्रके गुण बताते हैं । विश्वकी रचना करनेवाला और विश्वको जाननेवाला इन्द्र निःसन्देह परमेश्वर है ।

[विश्वरूपः] विश्व ही जिसका रूप है, विश्वमें जो जो वस्तु है, वह सब इन्द्रकाही रूप है । इन्द्रही नाना रूप धारण कर विश्वमें रहता है । भगवद्गीता का ११वाँ अध्याय इसी 'विश्वरूपदर्शन' नामका है । वही भाव दर्शानेवाला इन्द्रवाचक यह शब्द वेदमंत्रमें है । [विश्व-देवः] सब देव जिसके अश हैं । विश्वरूपी परमेश्वरकाही यह वर्णन है । सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, आदि सब देवताएं जिसके शरीरके अंग प्रत्यग हैं । परमात्मा ही इन्द्र है, यह आशय इन्द्रवाचक इन शब्दोंसे व्यक्त होता है ।

(ईशानकृत्) स्वामियोंको बनानेवाला अर्थात् राजाओंका भी जो राजा है, प्रभुका भी प्रभु, [बृहत्पतिः] इस बड़े विश्व का एकमात्र पालन करनेवाला, [वास्तोष्पति] सब वस्तुओंका पालक, [ज्येष्ठ राजः] सब राजाओंमें जो सबसे श्रेष्ठ राजा है, [ज्येष्ठतमः] श्रेष्ठोंमें जो श्रेष्ठ है, [देवतमः] सब देवोंमें जो श्रेष्ठ देव है, [द्युमत्तमः] प्रकाशवानोंमें जो सबसे अधिक प्रकाशमान है, [पितृतमः]

पिताओंका भी जो पिता है, [शिवतमः, शंतमः, शंभूः] कल्याण करनेवालोंमें जो सबसे अधिक कल्याण करनेवाला है, [असमः] जिसके समान कोई नहीं है, ये सब इन्द्र-वाचक पद परमेश्वरका ही बोध कराते हैं ।

[स्वरोचि] उसका अपना निज तेज है, किसी दूसरेके तेजसे वह तेजस्वी नहीं बना, अपने तेजसेही वह सदा प्रकाशता रहता है, [बृहद्भानुः] उसका तेज बड़ा भारी है, उससे बड़ा किसीका भी तेज नहीं है, [चित्रभानुः] उसका तेज चित्रविचित्र है । वह स्वयं ज्योति है । ये शब्द परमेश्वरका स्वयं तेजस्वी होना बताते हैं । इन्द्रके लिये ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं । अपने तेजसे सब विश्वको सुंदर रूप देता है, यह भाव [सुरूपकृत्] पदसे व्यक्त होता है ।

यह [अमर्त्य] अमर है, [अजरः] अजर है । [अजुर्यः, अजुर्यः, अजुर्यत्] क्षीण होनेवाला नहीं है, सबका [पूर्वजाः] पूर्वज है, सबका आदि है, सब धर्मोंका निर्माणकर्ता [धर्मकृत्] है, [विधर्ता] सबका आधार है, ये पद इन्द्रके लिये प्रयुक्त हुए हैं और ये स्पष्टताके साथ ईश्वरके वाचक प्रतीत होते हैं । [अनपच्युत्] इसको स्वस्थानसे कोई हिला नहीं सकता, यह अपने स्थानमें सदा रहता है ।

[विश्वचर्षणि] सर्व मनुष्यसमाजही परमेश्वरका रूप है, जनता-जनार्दन ही उसको कहते हैं, [पाञ्चजन्यः] पञ्च जन अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ये पांच प्रकारके लोग उसका स्वरूप है, [विश्वानर] सब मानवजातिही ईश्वरका स्वरूप है । 'ब्राह्मण इस ईश्वरकी सिर है, क्षत्रिय इसके बाहु है, वैश्य इसका उदर है और शूद्र इसके पांव हैं । [ऋ० १०।१०।१२] इस वेदोक्त वर्णन के अनुसार ये पद निःसन्देह परमात्मवाचक हैं ।

ये पद किस मन्त्रमें प्रयुक्त हुए हैं, यह पाठक इन सूचियों में देख सकते हैं और इनके मन्त्रभी देख सकते हैं । पर ये सब शब्द इन्द्रवाचक हैं और ये सब शब्द परमात्माके ही वाचक हैं । अर्थात् 'इन्द्र' परमात्माही है । इस वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि, जो इन्द्र को केवल मेघ-स्थानीय विद्युत् ही मानते हैं, वे इन्द्रके इस परमेश्वरीय भाव को नहीं जान सकते ।

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति ।

अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः ॥ [ऋ० १।१६।४६]

“एकही सत् है, जिसका वर्णन विद्वान् लोक अनेक प्रकार से करते हैं, उसको अग्नि, यम, मातरिश्वा, वायु, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि कहते हैं।” इस तरह उस ‘एकं सत्’ को इन्द्रपद से वर्णन किया। अतः इन्द्र आत्मा है अथवा ‘एकं-सत्’ ही है। अब इस विषयके कुछ मन्त्र यहां देखते हैं—

सबका एक राजा ।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च
शृंगिणो वज्रबाहुः । सेदु राजा क्षयति चर्य-
णीनां अरात्र नेमिः परि ता बभूव ॥

(७२९ ऋ० १३२-१५)

इंद्र (यातः अवसितस्य राजा) जगम और स्थावर पदार्थमात्र का राजा है, वही (वज्रबाहु) वज्र के समान जिसके बाहु हैं, ऐसा इन्द्र (शमस्य च शृंगिणः) शान्त और सींगवालों का अर्थात् शान्त और क्रूरों का भी राजा है। वही (चर्यणीनां राजा) सब प्रजाजनों का राजा है। जिस तरह (अरात्र नेमिः) अरों को चक्र की लोहपट्टि घेरती है, उस तरह (ताः परि बभूव) इन सब को वही घेरता है।

सब का एकमात्र प्रभु है, वह सब को घेरता है, वह सब के चारों ओर है। सर्वव्यापक है। सब स्थावर जंगम का एकमात्र प्रभु है। तथा और देखिए—

य एकश्चर्यणीनां वसूनां इरज्यति ।

इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ (३६ ऋ० १-७-९)

“इन्द्र ही पञ्चजनों का, और सब प्रजाजनों का तथा (वसूनां) सब धनों का एकमात्र स्वामी है।”

स्थावरजंगम का एक ही प्रभु है। इस विश्व के अनेक ईश्वर नहीं हैं, यही सब का एकमात्र एक ही प्रभु है। मनुष्यों, पशुओं और सब अन्य वस्तुओं का अधिष्ठाता यही है। इसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन कर नहीं सकता। यह ब्रह्मलोक से भी बड़ा है। इस विषय में आगे का मंत्र देखिए—

ब्रह्मलोक से बड़ा ।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मत्ता
पृथिवी च न प्रति । भीमस्तुविष्मान् चर्य-
णिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग ॥

(७९७ ऋ० १-५५-१)

ब्रह्मलोक से भी (अस्य वरिमा) इस इन्द्र का महिमा

बहुत बड़ा है। पृथ्वी से भी बहुत बड़ा है। वह इन्द्र (भीमः) भयंकर (तुर्विष्मान्) बलवान् और (चर्य-
णिभ्यः आतपः) लोगों के लिये प्रकाश देनेवाला है। (वंसगः) बैल जैसा वह वीर (तेजसे वज्रं शिशीते) तीक्ष्ण करने के लिये शूर के वज्र को तेज करता है।

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रञ्चना दिवि ।

न त्वावाँ इंद्र कश्चन न जानो न जनिष्यते
अति विश्वं ववक्षिथ ॥ (९२० ऋ० १-८१-५)

इन्द्र ने (पार्थिव रजः पप्रौ) पृथ्वी और अन्तरिक्ष को व्यापा है, उसने (दिवि रोजना बद्धधे) ब्रह्मलोक में तेजस्वी तारागण रखे हैं। तेरे समान दूसरा कोई नहीं है, न कोई है और न होगा। (विश्व अति ववक्षिथ) तू विश्व से बढकर है।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋषायमाणमिन्वतः ।

जेपः स्वर्वतर्गिपः सं गा अस्मभ्यं धनुहि ॥

(६५ ऋ० १-१०-८)

हे इन्द्र ! (उभे रोदसी) ब्रह्मलोक और पृथिवी ये दोनों (त्वा न इन्वतः) तुझ को अपने अन्दर समा नहीं सकते। तू (ऋषायमाण) शत्रुओं का नाश करनेवाला है। (स्वर्वती अपः जेष) तेजस्वी उदको का जय करके वह उदक और (गाः) गौवे (अस्मभ्यं सं धनुहि) हम सब के लिये दो।

इन्द्र पृथ्वी और ब्रह्मलोक से भी बढकर है। सर्वत्र व्याप कर रहनेवाला वह है और वह हमसे भी अधिक व्यापक है, अर्थात् वह जहां नहीं, ऐसा स्थान नहीं है।

त्वमस्य पांर रजसो व्योमनः स्वभृत्योजा
अवसे धृपन्मन । चकृपे भूमि प्रतिमानमो-
जसोऽपः स्व परिभृग्न्या दिवम ॥

(७७१ ऋ० १-५२-१२)

(त्वं अस्य रजस व्योमनः पारे) तूने हम अन्तरिक्ष और आकाश के परे रहकर (भूमिं चकृपे) भूमि का निर्माण किया। (स्वभृत्योजा धृपन्मन) तू अपने सामर्थ्य से युक्त और शत्रुका धर्षण करनेवाला है, अतः हमारी (अवसे) रक्षा करने के लिये यह सय (ओजसः प्रतिमान) अपने बल के योग्य कर्म करता है। तू (स्वः दिव अपः परिभूः एषि) ब्रह्मलोक, अन्तरिक्ष और अपोलोक को घेर कर रहता है।

त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।

न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रि-
णम् । अमादिदस्य तिविविषे समोजसः ॥

(३११ ऋ० ८-१२-२४)

(य वज्रिण) जिम इन्द्र को (रोदसी) घुलोक और पृथ्वी तथा (अन्तरिक्षाणि) अन्तरिक्ष (न विविक्तः) अपने से पृथक् कर नहीं सकते । उस इन्द्र के (भोजसः) बल से सब कुछ (तिविविषे) प्रकाशित होता है ।

कुछ भी दूर नहीं है ।

न ते दूरे परमा चिद् रजांसि आ तु प्र याहि
हरिवो हरिभ्याम् । स्थिराय वृष्ण सवना
कृतमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥

(१२३९ ऋ० ३-३८-२)

(परमा रजांसि) दूर रजोलोक भी तेरे लिये (न ते दूरे) दूर नहीं है, हे (हरिव) अध्युक्त इन्द्र ! (हरिभ्याम्) अपने दानो घाड़ों के साथ (आ प्र याहि) आओ, (स्थिराय वृष्ण) तुज जैसे स्थिर बलवान् वीर के लिये ये सवन किये हैं और अग्नि प्रज्वलित करके (ग्रावाणः युक्ताः) रस निकालने के लिये गावों को लगा दिया है ।

घुलोक का उत्पादक इन्द्र ।

जनिता दिवो जनिता पृथिव्या पिवा सोमं
मदाय कं शतक्रतो । यं ते भागमधारयन्
विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समस्तुजित
मरुत्या इन्द्र सन्पते ॥ (१७७२ ऋ० ८-३६-४)

इन्द्र, घुलोक और पृथ्वीका उत्पादक करनेवाला है । तू सोमका पान कर, आनन्द प्राप्त कर । सब देव जो भाग तेरे लिए निश्चित करते हैं, वह यह है । मरु (पृतनाः) अन्त्य का पराभव करनेवाला तू है और (अप्सु जित्) जलमें अथवा अन्तरिक्षमें विजय करनेवाला भी तू ही है ।

पृथ्वी और जल का उत्पादक ।

स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदरो दासीरैर्यद्
वि । अजनयन् मनवे क्षां अपश्च सत्रा शंसं
यजमानस्य तृतात ॥ (१२१४ ऋ० २ २०-७)

“ वह वृत्र का नाश करनेवाला और (पुरन्दरः) शत्रु के नगरों का भेदन करनेवाला इन्द्र (कृष्णयोनीः

दासी) काळे दासों अर्थात् शत्रुओं को (विप्रेर्यत्) भगा देता है । उसने मनुष्योंके लिए (क्षां अपः च) पृथ्वी और जल उत्पन्न किया । वह इन्द्र यज्ञ करनेवालों की प्रशंसा की वृद्धि करे ।

‘ कृष्णयोनी ’ शब्द का अर्थ कृष्ण कृष्य करनेवाले दुष्ट शत्रु हैं । ऐसे शत्रुओं को इन्द्र भगा देता है ।

आकाश खड़ा करनेवाला ।

अवंशे वामस्तभायद् बृहन्तं आ रोदसी अपृ-
णदन्तरिक्षम् । न धारयत् पृथिवी पप्रथञ्च
सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ सन्नेव प्राचो वि-
मिमाय मानैः वज्रेण खान्यत्पृणत् नदीनाम् ।
वृथास्तृजत् पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता
मद इन्द्रश्चकार (११६३-६४ ऋ० २।१।५।२-३)

(अवंशे) आधाररहित आकाश में (बृहन्तं घां अस्त-भायत्) बड़े आकाश को स्थिर किया और (रोदसी) पृथ्वी और आकाश को तथा (अन्तरिक्ष) अन्तरिक्ष को (आ अपृणत्) भर दिया । उसने पृथ्वी का धारण किया और बढ़ाया ।

(मानैः) नाप लेकर (प्राचः सञ्च इव) जैसा मकान बनाते हैं, वैसा (नदीनां खानि अतृणत्) वज्रसे नदियोंके मार्ग बना दिये (दीर्घयाथैः पथिभिः) दीर्घ मार्गों से जानेवाली नदियां उसने सहजी उत्पन्न की हैं ।

विश्वकी रचना करनेका यह अपूर्व वर्णन है । सब लोक-लोकांतर निराधार अन्तराल में रखे हैं, यह प्रभु का अद्भुत सामर्थ्य है । और देखिए—

नक्षत्र स्थिर किये ।

इन्द्रेण रोचना दिवो दृढहानि दंहितानि च ।
स्थिराणि न पराणुदे ॥ (३६२ ऋ० ८-१४-९)

इन्द्रने आकाशमें तेजस्वी तारागण स्थिर और सुदृढ़ किए । उन स्थिरोंको कोई (न पराणुदे) हिला नहीं सकता ।

नक्षत्र स्थिर हैं, यह यहाँ कहा है । नक्षत्रों को स्थिर करनेवाला यही इन्द्र है । अतः इसकी शक्ति अगाध है, सब उसके सामने काँपते हैं—

स्थावर, जंगम कांपते हैं ।

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।
त्वष्टा चित्त तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया
अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ (९१३ क्र० १-८०-१४)

हे (अद्रिवः) इन्द्र ! (ते अभिष्टने) तेरे गर्जन से जो
स्थावर, जंगम है, वह सब (रेजते) कांपने लगता है, (तव
मन्यवे) तेरा क्रोध होनेपर त्वष्टा भी (भिया वेविज्यते)
डर से कांपता है । ऐसा तेरा प्रभाव है, अतः स्वराज्य की
अर्चना कर ।

तव त्विषो जनिमन् रेजत यौ रेजद् भूमिर्भि-
यसा स्वस्य मन्यो । ऋघायन्त सुभ्यः पर्व
तास आर्दन् धन्वानि सरयन्त आपः ॥२॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौर्गिन्द्रस्य कर्ता
स्वपस्तमोभूत् । य ई जजान स्वयं सुवज्रं
अनपच्युतं सदसो न भूम ॥४॥ य एक इच्छ्या-
घयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहत इन्द्र ।
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रार्ति देवस्य गृणतो
मघोनः ॥५॥ (१४८९, ९१-९२ क्र. ४।१७। २, ४, ५।)

(तव त्विष जनिमन्) तेरे जन्मके समय तेरे तेजसे
(यौ रेजत) बुलोक कांपने लगा, (भूमि रेजत) भूमी भी
कांपने लगी, (स्वस्य मन्योः भियसा) तेरे क्रोध के भयसे
ये भयभीत हुए, (पर्वतापः सुभ्यः ऋघायन्तः) उत्तम
पर्वत फट गए, (धन्वानि आर्दन्) शुष्क देश गीले हुए,
और (आपः सरयन्त) जल बहने लगा ।

(ते जनिता यौ सुवीरः भमन्यत्) तेरा जनक पिता
बुलोक उत्तम पुत्र से युक्त अपने आपको मानने लगा,
(इन्द्रस्य कर्ता) वह इन्द्र का प्रकट करनेवाला था और वह
(सु-अप-तम) बड़े कर्मों का कर्ता हुआ । उसने (सुवज्र)
उत्तम वज्रवारी (अनपच्युतं) न गिरनेवाले (स्वयं) तेजस्वी
इन्द्र को उत्पन्न किया ।

वह एक ही वीर (भूमा व्यावयति) बड़े शत्रुको हटात,
है, वही स्तुत्य इन्द्र (कृष्टीनां राजा) प्रजाओंका एकमात्र राजा
है । वह इन्द्र उपासक को धन देता है, इसलिये सब
संसार (विश्वे एनं सत्यं अनुमदन्ति) इस सच्चे वीर का
अनुमोदन करता है ।

सब का वश करनेवाला इन्द्र ।

अर्चा शक्राय शाकिने शर्चावते शृण्वन्तमिन्द्रं
महयज्ञमि पृष्टि । यां शृणुनाः शयसा गेदस्मी
उभे वृषा वृषन्वा वृषभो न्युञ्जते ॥

(७८७ क्र. १।५४।२)

उम शक्तिमान् और बुद्धिमान् इन्द्र की स्तुति करो कि,
जो अपने (शृणुना शयसा) धर्पणशील बल से दोनों
द्यावापृथिवी को अपने वश में करता है । जैसा (वृषभ)
वीर्यशाली वीर अपने सामर्थ्य से स्त्री को वश करता है ।

सब विश्व जिस के सामने कांपता है, भयभीत होता
है, जिस की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता । अतः
प्रभु सब को वश करनेवाला है ।

इंद्र का असीम सामर्थ्य ।

असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा
भन्तु नेमे । ये त इन्द्र उदृषो वर्धयन्ति मर्हि क्षत्रं
मर्थविरं वृण्यं च ॥ (७९३ क्र. १।५४।८)

(अ-सम क्षत्र) इन्द्र का क्षात्र तेज असीम है, उस
की (मनीषा असमा) बुद्धि भी असीम है । (नेमे) ये
याजक (अपसा प्र सन्तु) अपने कर्म से उत्कर्ष को प्राप्त
हों । क्योंकि जो लोक तेरी वधाई करते हैं, वे (मर्हि
स्थविर वृण्यं क्षत्र) बड़ा विशाल, पौरुषयुक्त क्षात्र तेज
प्राप्त करने हैं ।

इतना असीम सामर्थ्य है, इसीलिये सब पर उस का
प्रभुत्व चल रहा है, सब को वश में वह रखता है । उस
पर कोई हुकूमत नहीं कर सकता, पर सब पर उसी को
हुकूमत चलती है । देखिये—

मन्यमिन् तन्न त्वाचां अन्यो अस्तीन्द्र देवा न
मन्यो ज्यायान । अहन्नहि परिशयानमर्णोऽवा-
सृजो अपो अच्छा समुद्रम् ॥ (१०७१ क्र. ६।३०।४)

हे इन्द्र ! यह सत्य है कि, तेरे जैसा न कोई देव है
और (न मर्त्यः) न मानव है । तेरे से (ज्यायान्) बड़ा
तो कोई नहीं है । (अर्णः परिशयानं अद्रि अहन्) जल का
प्रतिबध करनेवाले शत्रु का वध कर के तूने (अप समुद्र
अवासृजः) जल खुला किया, जो समुद्र तक बहता रहा ।

इस एक वस्तुमात्र में प्रभु का सामर्थ्य दीखता है । क्या
जल में, क्या वनरपति में, क्या अन्य पदार्थों में, उस का

सामर्थ्य विश्वभर में ओतप्रोत भरा है। अतः सब पर उस का प्रभुत्व स्थिर है और उस की आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता, इस विषय में देखिये—

तेरे मार्ग का अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।

दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्व-
प्रसूता । सं यदानलध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं
कृणुते तत् त्वस्य ॥ (१२४९ ऋ. ३।३०।१२)

(प्रदिष्टाः दिशः) निश्चित किये दिशाओं को जो कि,
(हर्यश्व-प्रसूता) इन्द्रने निश्चित किये है, (सूर्य न
मिनाति) सूर्य नहीं छोड़ता । (अश्वैः यद् अध्वनः
आनट्) घोड़ा से जब वह मार्गपर से चला जाता है,
तब [विमोचनं कृणुते] विमोचन करता है । यह इसी
का कार्य है ।

इस तरह अनेक मन्त्र पाठक इन सूक्तों में परमेश्वर के
वाचन देख सकते हैं, तथा पूर्वस्थान में जो विशेषण के
शब्द ईश्वरवाचक करके बताये हैं, उन पदों का भाव
पाठक इन मंत्रों में देख सकते हैं और अनुभव कर सकते
हैं कि, इन्द्रदेवता के मंत्रों में ईश्वरविषयक वर्णन का
अच्छा स्थान है ।

***मैं इन्द्र हूँ = इन्द्रका साक्षात्कार ।**

प्रसुस्तोमं भर्त वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि
सत्यमस्ति । नन्द्रेऽस्तीति नेम उ त्व आह क
ई ददर्श कमभि ण्वाम ॥ ३ ॥ अयमस्मि
जग्निः पश्य मेह विश्वा जानान्यभ्यस्मि महा ।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति आदिर्दिगे भुव-
ना ददर्गमि ॥४॥ (१९३-१४ ऋ० ८।१००।३-४)

यदि इन्द्र (सत्यं अस्ति) सचमुक्त है, तब तो उस
की (स्तोमं भर्त) स्तुति करो, पर नेमने (आह) कहा
कि (न इन्द्रः अस्ति) इन्द्र नहीं है, (क ई ददर्श)
किसने उसे देखा ? और हम (कं अभि स्तवामः) किस-
की स्तुति करें ?

इन्द्रने उत्तर दिया— हे (जग्निः) स्तोता ! (अयं
अस्मि) यह मैं हूँ (इह मा पश्य) यहाँ मुझे देख ।
(महा विश्वा जानानि अभि अस्मि) अपने महत्त्व से सब
वस्तुओं पर मैं ही प्रभाव करता हूँ ! अतः (ऋतस्य

प्रदिशः) सत्य को बतानेवाले (मा वर्धयन्ति) मुझे ही
बढ़ाते हैं । (आ दिर्दिगे) वरुद्ध होने पर मैं [भुवना
ददर्गमि] सब भुवनों का नाश करता हूँ ।

भक्त को इन्द्र प्रत्यक्ष दर्शन देता है, यह बात यहाँ
दर्शायी है । ईश्वरसाक्षात्कार होता है । ईश्वर साक्षात्
होकर ' मैं हूँ ' ऐसा कहता है । जिसका भाग्य हो, उस
को यह दर्शन होगा ।

इस तरह ईश्वरवर्णनपरक मंत्रों का नमूना देखने के
बाद हम वीरत्वविषयक वर्णन का नमूना देखना
चाहते हैं । ऊपर के स्थान में जहाँ ब्राह्मणग्रंथों के वचन
दिये हैं, वहाँ ' राजा, क्षत्रिय, वीर, शूर ' आदि का
वाचक (इन्द्र) पद आया है । इन्द्र के इस भाव का अब
विचार करना है—

क्षत्रिय वीर इन्द्र ।

अब हम क्षत्रिय पराक्रमी वीर इन्द्र का विचार करते
हैं । इन्द्रदेवता के जो मन्त्र वेद में हैं, उन में उसके
पराक्रम के मंत्र ही बहुत हैं । अर्थात् क्षत्र भाव इन्द्र में
विशेष प्रकट है । शत्रु का हनन यह भाव इसमें मुख्य
है । इस भाव के वाचक शब्द इन्द्र के नामों में ये हैं—

(असुरहा) असुरों का नाश करनेवाला, (अहिहा)
अहि नामक शत्रु का वध करनेवाला, (दस्युहा)
शत्रुओंका नाश करनेवाला, (वृत्रहा, वृत्रहन्ता) वृत्र
का वध करनेवाला, (अचहन्ता) सब प्रकार से वैरियों
का नाश करनेवाला, (विहन्ता) विशेष रीति से दुष्टों
का वध करनेवाला, (सत्राहा) मित्रदल को इकट्ठा कर
के शत्रु का नाश करनेवाला, (महावधः) बड़ी कत्तल
करनेवाला, ये इन्द्र के वाचक शब्द शत्रुवध करने का
उस का स्वभाव बताते हैं ।

शत्रु का हमला होने पर उसको सहकर अपने स्थान
में सुस्थिर रहने का भाव निम्नलिखित शब्दोंद्वारा व्यक्त
होता है— (अभिमातिपाह, अभिमातिहा) शत्रु को
सहना, (चर्षणीसहः) शत्रुसेना के आक्रमण को सहने-
वाला, (जनं सह, नृपहः) जनताकी चढ़ाईको सहने-
वाला, (प्रसहः) विशेष प्रकारकी चढ़ाई को सहनेवाला,
(पृतनापाह्) शत्रु की सेना के हमले को सहनेवाला,
(तुगापाह्) शत्रु के साथ शत्रु के हमले को सहनेवाला,

(विश्वाषाह्) सब प्रकारके शत्रु को सहनेवाला, (सत्रा-षाह्) मिलकर अनेक शत्रु हमला करते हुए आ गये, तो उसको सहनेवाला, (प्राशुषाह्) अति शीघ्रता के साथ शत्रु के हमले को सहने की तैयारी करनेवाला, इन्द्र है । शत्रु को सहने का अर्थ अपनी वीरता से, अपने बल से, अपनी शक्ति से शत्रु के हमले को सहना है । शत्रु का हमला होने पर अपना स्थान न छोड़ना, अपने स्थान पर रहते हुए शत्रु को पराजय देकर भगा देने का नाम है, शत्रु को सहना । स्वयं शत्रु को सहना और स्वयं शत्रु को असह्य होना, यह द्विविध वैदिक युद्ध-कौशल्य है ।

इस तरह शत्रु को असह्य बनाने के लिये उत्तम वीर बनना आवश्यक है । यह भाव इन्द्रवाचक निम्नलिखित शब्दों में देखना उचित है- (सुवीरः) उत्तम वीर होना, (महावीरः, प्रवीरः, एकवीरः) सब से बड़ा वीर होना, बलवान् और वीर्यवान् होना, अजिंक्य वीर होना, (अभिवीरः, पुरुवीरः) सब प्रकार का वीरत्व अपने पास रखना, अपनी सेना में सब वीर ऐसे रखने कि, जो उक्त प्रकार वीर्य दिखा सके, (वीरतरः वीरतमः) वीरों में उत्तम वीर बनना, (अभिभूतरः) शत्रुका पराभव करना, विशेष प्रवीण बनना, (अवाजित्) रक्षणशक्ति के साथ शत्रु को जीतना (संसृष्टजित्, सत्राजित्, सजित्वानः) सब शत्रुओं को जीतनेवाला, विजय प्राप्त करने की शक्ति से युक्त, ये इन्द्रवाचक शब्द बताते हैं कि, इन्द्र किस तरह के वीर का नाम है ।

(अपराजितः) कभी जो पराभूत नहीं होता, (धनंजयः) युद्ध में शत्रु के धन को जीतनेवाला, युद्ध में विजयी, (पूर्मित् पूर्मित्तमः) शत्रु के नगरों और कीलों का नाश करनेवाला, (पुरंदरः) शत्रु के नगरों का भेदन करके अन्दर प्रवेश करनेवाला, (अभिभूः) सब प्रकार से शत्रु का पराभव करनेवाला (अभीरुः, विभीषणः) जिस को स्वयं कभी भय नहीं होता, पर जो शत्रु को भयंकर मालूम होता है, (वीर्य्युः) जो वीरों को अपने पास रखता है, वीरों को वीरोचित कार्यों में जो लगाता रहता है, (आजिकृत् रणकृत्) जो युद्ध करने में परम कुशल है, (आजितुरः) जो युद्ध में ररा से अपने कर्म करता

है, अतः जो (आजिपतिः) युद्ध का स्वामी कहलाता है, ये इन्द्र के शब्द इन्द्र का रणकौशल्य बता रहे हैं ।

(वाजिनीवगुः) सेना ही जिसका धन है, सेना को ही जो अपना धन मानता है, (महाव्रातः) बड़े सेनासमुदायों को जो युद्धों में चलाता है, बड़ी से बड़ी सेना का संचालन करने में जो कभी प्रमाद नहीं करता, (मेना-नीः) जो बड़ी कुशलता से सेना को चलाता है, (वल्विज्ञाय, सवलः) बल के लिये, चतुरंगबल के लिये जिसकी सर्वत्र प्रसिद्धि है, (मत्यगुप्ता) जिसका बल मत्य है, अर्थात् सदा विजय पाने में निश्चित सामर्थ्य से जो युक्त है, जो (पुरोहितः, पुरःस्थाता, पुरण्णा) अपनी सेना के अग्रभाग में रहता है, तथा शत्रु के ऊपर हमला करने में जो सदा आगे बढ़ता है ।

(रथयुः, रथितमः) रथयुद्ध में जो प्रवीण है, जिसके पास बहुत रथ हैं, रथसेना के संचालन में जो प्रवीण है, (उरुक्रमः) शत्रुपर जो बड़े आक्रमण करता है, (वृपरथ, सुखरथः) बैलों के रथ और सुख देनेवाले रथ जिसके पास हैं, (रथेष्टाः) रथपर जो रहता है, (वन्धुग्रेष्टाः) रथमें विशेष स्थानपर जो बैठता है । ये शब्द इन्द्र का रथयुद्ध-कौशल्य बतानेवाले हैं ।

(शवसः सूनुः, संहसः सूनुः) बलका पुत्र ये शब्द इसके असीम बलके सूचक हैं । (महाहस्ती) इस से उस के बड़े हाथ, बड़े बलवाले हाथ हैं, अथवा उस-के पास बड़े हाथी हैं, यह भाव व्यक्त होता है । (उग्र-धन्वा) बड़े प्रखर मनुष्य को बर्तनेवाला, (इणुहस्तः) हाथ में बाण लेनेवाला, (वज्रहस्त, वज्रभृत्,) हाथ में वज्र लेनेवाला, वज्र का धारण करनेवाला, (वज्रबाहु, सुबाहुः, उग्रबाहुः, सुपाणिः) उत्तम बाहु, वज्र जैसे कठोर बाहु, बलवान् बाहु और हाथों से युक्त इन्द्र है, (तिग्मायुधः) जिस के शस्त्र अति तीक्ष्ण हैं ।

इस की शक्ति के विषय में निम्नलिखित शब्द देखिये- (अभिभृत्योजा) शत्रु का पराभव करनेवाला जिस का सामर्थ्य है, (अमितौजाः) जिस के बल की सीमा नहीं है, (अस्ममात्योजाः धृष्णु-ओजाः) जिस का सामर्थ्य शत्रु का ध्वंस करने में प्रकट होता है, (स्वधृत्योजाः, स्वौजाः, विश्वौजाः) सब प्रकार का सामर्थ्य जिस के

पास सदा तैयार रहता है । (बाहु-ओजा.) जिस का बाहुबल बहुत ही बड़ा है । (सहस्वान, तवीयान्) जिस का बल बड़ा है । ये शब्द इंद्र का बल बता रहे हैं । (पुरुवर्पा) शब्द उस का शरीर विशाल है, यह भाव बताता है । यह भी उस के बड़े सामर्थ्य का सूचक है ।

(हरिष्ठाः) इन्द्र घोड़े पर सवार होता है, (पर्वतेष्ठाः) पर्वत पर अथवा पर्वत के कीले में रहकर शत्रु से लड़ता है, वह ऐसा युद्ध करता है कि इस का युद्धकौशल देखकर शत्रु भी इसकी प्रशंसा करते हैं, यह भाव (अग्नि-पुत्र) इस शब्द से व्यक्त होता है ।

(पुरुमायः) वह शत्रु के साथ लड़ने में कष्ट भी करता है, (वामनीतिः) वह शत्रु के साथ (सुनीति, सुनीथ) अच्छी नीति भी बरतता है और बुद्धि भी । (शतनीथ, सहस्रनीथः) सैकड़ों और सहस्रों प्रकार की युक्तियाँ उस के पास रहती हैं, इसलिए वह (अच्युत्, अनपच्युत्) अपने स्थान से च्युत नहीं होता, (दुश्च्यवनः) उसको अपने स्थान से भ्रष्ट करना अशक्य है, पर वह ऐसा है कि, वह दूसरे बड़े बड़े शत्रुओं को (अच्युतच्युत्) उनके स्थानों से हटा देता है, जो अपने स्थानों पर स्थिर हुए शत्रु है, उनको परास्त करके हटा देता है, (अद्रव्या, अद्राभ्यः) वह शत्रुओं से कभी न डरनेवाला है, कभी न डबनेवाला और कभी दबाया न जानेवाला है । (सचेताः, प्रचेताः, विचेता, सहस्रचेताः) वह अनन्त प्रकार की कुशल बुद्धियों से युक्त है, इसलिए अपने बल को शत्रु के नाश करने में उत्तम रीति से लगाता है और विजय प्राप्त करता है ।

इंद्र (प्रमति) विशेष बुद्धिमान् है, (विप्रतम, कवितमः) विशेष ज्ञानी, (सुवेदा, सुविद्वान्) उत्तम ज्ञानी है, (सुमनाः) उत्तम मनवाला है, (अजात-शत्रु, अशत्रुः) स्वयं किसी की शत्रुता नहीं करता, (विश्वतो-धीः) उस की बुद्धि चारों ओर पहुँचनेवाली है, सब ओर वह खुली आँखों से देखता है, अतएव किसी शत्रु के द्वारा (अनाधृष्यः, अधृष्य) उस का पराभव या धर्षण नहीं होता, अतः (अप्रतिधृष्टावाः) उसको सदा विजयी बलवाला कहा गया जाता है ।

इंद्र [एकराट्, संराट्, स्वराट्] उत्तम राजा है, ऐसा कहते हैं, (नृपाता) मानवों की रक्षा वह उत्तम

रीति से करता है । उसको (उर्वरापतिः) भूमि का सच्चा पालन करनेवाला कहते हैं । (गणपतिः) सब गणों का पालन करता है, एक एक कार्य करनेवालों के संघों को गण कहते हैं । इन गणों का उत्तम रीति से पालन इंद्र करता है, क्योंकि (कारुधायाः) कारीगरों का पोषण करने का कार्य वह करता है । कारीगरों के पोषण से राष्ट्र में सुस्थिति रहती है । (नृपतिः, विशस्पतिः, विस्पतिः) मानवों की पालना वह करता है, (मित्रपति, सन्पति) सज्जनों का पालन करता है, मित्रजनों का, मित्रदलों का पालन करता है, (रयि-पति, रायस्पति, वसुपति) वह धन का पालन और संग्रह करता है । यह इंद्र (गोपाः, शुचिपाः, व्रनपाः, चर्याणिप्राः, संवनन) अर्थात् सब प्रजाओं का, पशुओं का, प्रजा के सब कर्मों का रक्षण करता है, इस से उस के राष्ट्र का उदय होता है । (प्राविता) इसीलिये उसको सच्चा रक्षक कहते हैं और यह रक्षण वह (शवसस्पतिः) सब के बल का रक्षण करता हुआ करता है । यही उस की बुद्धिमत्ता है ।

इंद्र का पशुपालन रूप कर्तव्य बतानेवाले शब्द ये हैं— (संभृताश्च) उत्तम अश्वों को पास रखनेवाला, (स्वश्वः) उत्तम घोड़े जिस के पास हैं, (हर्यश्वः) शीघ्रगामी घोड़े जिस के पास हैं, अथवा हरिद्वर्ण घोड़े जिस के पास हैं, (स्वश्वयुः) उत्तम घोड़े जिस के रथ को जोड़े जाते हैं, (अश्वपति) जो घोड़ों की पालना उत्तम करता है, (गवां पति, गोपतिः) गोपालन करता है, (गव्युः, भृगुः) जिस के पास बहुत गौवं रहती है, (शाचिगु, अधिगु) जो उत्तम गौवों से युक्त है । ये शब्द इंद्र के पशुपालन का भाव बता रहे हैं ।

प्रजाजनों के लिये उस की रक्षा कैसी मिलती है, यह बात निम्नलिखित इंद्रवाचक शब्दों से ज्ञात होती है, (अक्षिनोतिः) जिस का संरक्षण का सामर्थ्य कभी कम नहीं होता, (ऊर्वी-ऊतिः) जिस की रक्षण करने की शक्ति बड़ी भारी है, (शतमृतिः, सहस्रोतिः) सैकड़ों और हजारों साधनों से जो प्रजा की रक्षा करता है, (भद्रकृत्) वह सब का कल्याण करता है ।

उसकी शक्ति [अपारः] अपार है, पर वह सुगमता से

शत्रु के (सुपारः) पार होता है ।

इस तरह इन्द्र के वाचक, गुणबोधक अनेक शब्द हैं, जो वेदमंत्रों में प्रयुक्त हुए हैं और इन्द्र के गुण, कर्म, स्वभाव बताते हैं । इन्द्र राजा, वीर, शूर, बली, विजयी है और उसका शासन प्रजा का कल्याण करनेवाला है, हत्यादि भाव इन शब्दों से स्पष्ट प्रतीत होते हैं ।

यदि पाठक इन्द्र के वर्णन के सब पदों का इस तरह अभ्यास करेंगे, तो इन्द्र का स्वरूप सहजी से ज्ञात हो सकता है । और इन्द्र के मन्त्रोंद्वारा शौर्यवीर्यादि गुणों का संवर्धन करने का जो कार्य वेद को अभीष्ट है वह भी पाठकोंके अन्तःकरणमें प्रकट हो सकता है ।

जो इन्द्र के पराक्रम इन शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, उनका वर्णन पाठक अब मन्त्रोंद्वारा देखें । अब हम ऐसे मन्त्र देते हैं, जिनमें पूर्वोक्त स्थान में जो इन्द्र के गुण शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, वे ही मन्त्रों के वर्णनों से प्रकट होंगे ।

आर्य के लिये प्रकाश दें ।

धिष्वा शव शूर येन वृत्रमवाभिन्द दानुमौ-
र्णवाभम् । अपावृणो ज्योतिरायाय नि सव्यत-
सादि दस्युरिन्द्र ॥ मनम ये त ऊतिभिस्त-
रन्तो विश्वाः स्पृध आयेण दस्यून् । अस्मभ्यं
तत् त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्ध्रयः साख्यस्य
त्रिताय ॥ (१११८-१९ क्र० २-११-१८/१९)

हे शूर इन्द्र ! (शव धिष्वा) तू बल धारण कर (येन वृत्रं दानु अवाभिन्दत्) जिससे शत्रु का नाश हो जाय । (आर्याय ज्योतिः अपावृणा) आर्य के लिये प्रकाश की ज्योति बताओ । (सव्यतः दस्यु नि सादि) सीधी और शत्रु को दबा दो ।

(ये ते ऊतिभिः तरन्त) जो तेरी रक्षाओं से शत्रु के शर हो जाते हैं । (आयेण विश्वा स्पृधः दस्यून्) आर्य के द्वारा स्पर्धा करनेवाले दस्युओं का नाश करता है । (अस्मभ्यं) हम सब के लिये उस विश्वरूपी त्वष्टृपुत्र का नाश कर । शत्रु का पूर्णता से नाश कर ।

यहां (आर्याय ज्योतिः अपावृणा) आर्यों के लिये प्रकाश कर, ऐसा स्पष्ट कहा है । आर्यों का मार्ग विश्वभरमें खुला रहे, किसी स्थान पर आर्यों को रोकठोक या प्रति-

बध न हो, यहाँ यहाँ तात्पर्य है । आर्य सर्वत्र विजयी होते हुए अपना और विश्व की उन्नति करते जाय, यही यहाँ तात्पर्य है ।

धार्मिकों का हितकर्ता ।

अनुव्रताय रन्ध्रयन्त्रपव्रता नाभृभिरिन्द्रः श्रथयन्न-
नाभुवः । वृद्धस्य चिद्धर्थतो धामिनक्षत स्तवानो
वम्रो वि जघान संदिह ॥ (७५३ क्र० १/५१/९)
(अनुव्रताय) धर्मव्रत का पालन करनेवालोंका हित करनेके लिए (अपव्रतान् रन्ध्रयन्) व्रतहीनोंका नाश करता हुआ इन्द्र (आ-भृभि) उपासकों के साथ रहकर (अनु-आभुवः श्रथयन्) अभक्तों का नाश करता है । (वृद्धस्य चित् वर्धतः) इन्द्र प्रथम से ही बड़ा है पर वह और भी बढता भी है और (धां इनक्षत) शत्रुओं तक पहुँचता है । ऐसे इन्द्र की (स्तवानः) स्तुति करनेवाला (वम्रः संदिहः विजघान) संदेह दूर करता है, अर्थात् इन्द्र का महत्त्व जानता है ।

यहां (अनुव्रत) और (अपव्रत) ये दो शब्द बड़े बोधप्रद हैं । वर्मानुकूल चलनेवाले अनुव्रत कहलाते हैं और अधर्म में प्रवृत्ति होना अपव्रतियोंका लक्षण है । इन्द्र का यहाँ कर्तव्य है कि वह अधार्मिकों का नाश करे और धार्मिक सत्यव्रतियों की उन्नति करने में सहायक हो ।

‘ पन्त्रिणाणाय साधूनां विनाशाय च दुःकृताम ।
(गीता ४/८)

यह वचन हम मन्त्रके साथ देखनेसे बड़ा बोध मिलता है ।

पंचजनों का रक्षक ।

विश्वेदनु रोधना अस्य पांस्यं ददुरस्सं धिरे
कृन्वे धनम् । पलस्तभ्ना विष्टिः पञ्च संदश
परि परो अभव सास्युकथ्य (११४६ क्र० २/११/१०)
सबने इसके बल की वृद्धि की है । इसके पराक्रम के लिए सबने धन दिया है । पृथ्वी के (पट् त्रिस्थिरः अस्तभ्ना) छः भाग स्थिर किए हैं । (पञ्च संदश) पंच जनों का विजय करनेवाला तू ही है, अतः तू (उक्थ्य अमि) प्रशंसनीय हो । तथा-

आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिश्रुगा रथे हिरण्ये
रथेष्टाः । आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोः आध्वन्न-
श्वासो वृषणो युजानाः ॥ (१०६३ क्र० ६/१२/२)

(यस्मिन् हस्ते) जिस इन्द्र के जिस हाथ में (नयां मिमिक्षु) मनुष्यों के हितके लिए ही सब धन है और जो सुवर्ण के रथमें बैठकर सब को धन देता है, जिसके (स्थूययोः) स्थूल हाथ में रथके लगाम हैं, जो अपने रथको घोड़े जोतता है और जो घोड़े सरल मार्ग से चलते हैं । वह इन्द्र है । तथा—

एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि
यशसं जनेषु । तं मे जगृभ्र आशसो नविष्टं
दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥

(१७१५ क्र० ५।३२।११)

इन्द्र ही एक (सत्पति) सब का उत्तम पालनकर्ता है और (पाञ्चजन्यं) पञ्चजनों का हित करनेवाला है, तू हि (जनेषु) लोगों में यशस्वी है, ऐसा मैं (शृणोमि) सुनता हूँ । उपासक लोग दिनरात तेरा ही स्वीकार करें । तथा—

लोकहितार्थ युद्ध ।

स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म
ओजसा जनेभ्यः । अधा चन श्रद् दधति
त्विषीमते इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥

(८०१ क्र० १।५५।५)

(स युध्म.) वह इन्द्र बड़ा योद्धा है, वह (जनेभ्यः) जनों के हित के लिये (ओजसा महानि समिथानि कृणोति) अपने सामर्थ्य से बड़े युद्ध करता है । अतः सब लोग (वधं वज्रं निघनिघ्नते) शत्रु पर मारक शास्त्र का प्रहार करनेवाले (त्विषीमते इन्द्राय) तेजस्वी इन्द्र के विषय में (श्रद् दधति) श्रद्धा रखते हैं ।

सब जनता के हित करने के लिये युद्ध किया जावे, यह सूचना यहां मिलती है । जनता के हित करने के लिये क्या करना चाहिये, इस का दर्शन भगले मन्त्र में पाठक करें—

दस्युको दण्ड और आर्योकी उन्नति करो ।

वि जानीहि आर्यान् ये च दस्यवो यर्हिष्मते
रंधया शासद्व्रतान् । शाकी भव यजमानस्य
चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ।

(७५२ क्र० १-५१-८)

हे इन्द्र ! (आर्यान् विजानीहि) आर्य कौन हैं, यह तू जान, और (ये च दस्यवः) जो दस्यु या शत्रु हैं, उनको

भी तू जान । (यर्हिष्मते) यज्ञकर्ता के हित के लिये (भवतान् शासत्) व्रतहीन शत्रुओं को दण्ड देकर (रन्धय) नष्टप्रष्ट कर । (शाकी भव) समर्थ होकर रह (यजमानस्य चोदिता) यजमान को प्रेरणा दे । (सध-मादेषु) साथ साथ मिलजुल कर जहां सत्कर्म किये जाते हैं, ऐसे यज्ञों में (ते ता विश्वा हत्) तेरे वे सब सत्कर्म प्रशंसा-योग्य होते हैं ।

शत्रु को दण्ड देना और सज्जनों की उन्नति करना ही राजा का कर्तव्य इस मन्त्र से प्रकट होता है । प्रजा के रक्षण करने के लिये क्षत्रिय को सदैव तत्पर रहना चाहिये, यह सूचना भगला मन्त्र देता है—

रक्षण के लिये खड़ा रहो ।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ।

सं अन्येषु ब्रवावहै ॥ (७०४ क्र० १-३०-६)

हे शतक्रतो ! (अस्मिन् वाजे) इस युद्ध में (नः ऊतये) हमारा रक्षण करने के लिये (ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्धमें सुसज्ज होकर खड़ा रह । (अन्येषु सं ब्रवावहै) अन्य प्रसंगों में हम मिलकर बात करेंगे कि, वहां क्या करना चाहिये ।

आ घा गमद् यदि श्रवत् सहस्त्रिणीभिरुतिभिः ।

वाजेभिरुप नो हवम् । (७०६ क्र० १।३०।८)

(यदि श्रवत्) यदि इन्द्रने हमारी पुकार सुनी, तो वह (सहस्त्रिणीभिः उतिभिः वाजेभिः) सहस्रों सामर्थ्यों और बलों के साथ (नः हवं) हमारी पुकार के स्थान के प्रति (आगमत्) अवश्य दौड़ते हुए आ जायगा ।

यहां (वाजे ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्ध में उठकर खड़ा रह, ऐसा कहा है । राष्ट्र में क्षत्रियों को प्रजारक्षणार्थ ऐसा ही खड़ा रहना चाहिये । दुष्टों का नाश करने के विषय में वेद का आदेश स्पष्ट है—

दुष्टों का नाश कर ।

उद् बृह रक्ष सहमूलं इन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं
शृणीहि । आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्माद्विषे
तपुषि हेतिमस्य ॥ (१२५४ क्र० ३।३०।१७)

हे इन्द्र ! (रक्षः) राक्षसों को जड़के साथ (उद् बृह) उखाड़ दो, (मध्यं वृश्वा) उनका मध्य काट दो और (अग्रं

प्रति शृणीहि) उनका अन्तभाग काट दो । (कीवतः सल-
ल्लकं आचकथं) दुष्टोंको दूर कर और ज्ञान का द्वेष करनेवाले
दुष्टपर तपा शस्त्र (अस्य) फेंक ।

यह मन्त्र दुष्टोंको उखाड़ देनेके लिये विशेष स्पष्टतापूर्वक
उपदेश देता है । वृत्र शत्रु का नाम है । इन्द्रसे वृत्र का वैर
प्रसिद्ध है । इस वृत्र का वध इन्द्रने किया है । इस वर्णनके
संकड़ों मंत्र वेदमें हैं । उनसेसे कुछ देखिये —

वृत्रवध ।

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जह्ने महावीरं तुविबाधं
ऋजीपम् । नातारीदस्य समृति वधानां स
रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रु ॥ अपादहस्तो
अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रं अधिसानौ जघान ।
वृष्णो वध्निः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रां
अशायद् व्यस्तः ॥ [७२०-२९, ऋ० १।३।६-७]

[अ-योद्धा इव] अब मेरे साथ युद्ध करनेयोग्य कोई
नहीं रहा, ऐसा माननेवाला वह [दुर्मदः] दुष्टबुद्धि शत्रु
[महावीर] बड़े शूर [तुविबाधं] बहुतोंका पराभव करने-
वाले [ऋजीप] अदम्य इन्द्रको [आजह्ने] अपने सम्मुख
आह्वान करने लगा । परन्तु वह [इन्द्रशत्रु] इन्द्र का शत्रु
[वधानां समृति न अतारीत्] इन्द्रके शस्त्रके घावों को
सहन न कर सका । अन्तमें [रुजानाः स पिपिष] छिन्नभिन्न
होकर चूर्ण हुआ ।

पश्चात् उस [अपाद-हस्तः] पांव और हाथसे विहीन
[अ-पृतन्यत्] सेनारहित वृत्रने [इन्द्रं वज्र अधिसानौ
जघान] इन्द्रपर उसकी गर्दनमें शस्त्र मारा, पर[वध्निः वृष्णो
प्रतिमानं बुभूषन्] नपुंसक का सामना जैसा वीर्यवान्से
होता है, वैसी उसकी अवस्था हुई और [पुरुत्रा व्यस्तः]
अनेक स्थानोंमें फेंका जाकर [अशायत्] गिर पड़ा ।

तथा और देखिये—

वज्रको नचाया ।

त्वं गोत्रं अङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोतात्रये शतदुरेषु
गातुवित् । ससेन चिद् विमदायावहो वसु आज्ञा-
वर्धि वावसानस्य नर्तयन् ॥ [७४७; ऋ० १।४।१३]

हे इन्द्र ! तूने अंगिरोंके लिये [गोत्र अप अङ्गणोः] गौके
स्थान को खुला कर दिया, अग्नि के लिये [शतदुरेषु गातु-

वित्] सौ द्वारोंवाले स्थानसे गमनका मार्ग बताया, विमद
के लिये [ससेन वसु अवहः] धान्यके द्वारा धन दिया और
वावसान के लिये [अग्नि नर्तयन्] अपने वज्र को नचाया,
अर्थात् वज्र से शत्रुको मारा । तथा—

युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप
तंतमिद्धत वज्रेण तंतमिद्धतम् । दृग् चत्ताय
छन्सद् गहनं यदिनशत् । अस्माकं शत्रून् परि शू
विश्वतो दर्मा दर्पीष्ट विश्वत [१०३२ऋ० १।१२।८]

[पुरोयुधा] आगे होकर युद्ध करनेवाले तुम [यः नः
पृतन्यात्] जो हमपर मैन्ससे चढाई करे, उसका वध करो,
उसका [वज्रेण त हत] वज्रसे वध करो । [दृग् चत्ताय दूर
रहनेवाले पर भी जो वज्र हमला करता है वह गहन स्थान
में भी जा सकता है । [अस्माकं शत्रून्] हमारे शत्रुओंको
[विश्वतः परि] चारों ओरसे घेरो और [विश्वत दर्मा दर्पीष्ट]
चारों ओरसे विदारण करो ।

सेना लेकर हमपर हमला करनेवाला तथा अन्य प्रकार
से सतानेवाला ये सब शत्रु ही हैं और शत्रु को दूर करना
ही इन्द्र का कर्तव्य है । क्योंकि शत्रु वध्यही है—

शत्रु वध्य हैं ।

इन्द्र दृष्ट्य यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिश्न
गृणते सखिभ्यः । दुर्मायवां दुग्वा मर्त्यानां
निपद्भिणो रिपवो हन्त्वास [१०५२, ऋ० १।३०।१४]
हे इन्द्र ! [दृष्ट्य] प्रबल बन । [याम-कोशा अभूवन्]
कोशोंको प्रतिबध हो रहा है । [यज्ञाय गृणते सखिभ्य]
यज्ञकर्म, उपासना और मित्रोंको [शिश्न] शिक्षा दे । [दुः-
मायव] दुष्ट, कपटी, [दुः एवा.] दुश्चरित्र, [निपद्भिणो मर्त्यास
रिपवः] तर्कस लिये शत्रुरूप मानव है, वे [हन्त्वास] हनन
करनेयोग्य हैं ।

शस्त्रास्त्र लिये शत्रु हमारे चारों ओर खड़े हैं, उनका
वध होनेके बिना मानवों को सुख प्राप्त नहीं हो सकता ।
इसलिये शत्रुको दूर करना योग्य है—

स्वर्जेंपे भर आप्रस्य वक्मन्युपर्वुधः स्वस्मिन्न-
ञ्जसि क्राणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि । अहन्निद्रो
यथा विदे ग्रीष्णांशीष्णांपवाच्यः । अस्मत्ता ते
सध्यक् संतु रातयोः भद्रा भद्रस्य रातयः ॥

[१०२९, ऋ० १।१३।२]

[स्वजेयं] सुख देनेवाले युद्धमें [उपबुधः] प्रातःकालमें जाग्रत होनेवाले वीर ! आक्रमण करनेवाले शत्रुको तू पराजित करता है । और उसका वध करता है । [त रातयः अस्त्रा मध्यक] तेर दान हमारे पास इच्छे हों, तेर दान कल्याण-कारक हों ।

शत्रुको परास्त करके विजय संपादन करना आवश्यक है इस विषयमें देखिये—

युद्धोंमें विजयी ।

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयाम शतक्रतो ।

धनानामिन्द्र स्नातये । [१२, ऋ० १।४।९]

धनोर्का हमें प्राप्ति होनेके लिये, हे सैकड़ों कर्म करने-वाले इन्द्र ! [वाजेषु] युद्धोंमें [त्वा वाजिन वाजयाम.] युद्धोंमें लड़नेवाले तुझ वीर को बड़ाते है, [बलिष्ठ करते है, युद्धमें भेजते है ।]

सैकड़ों पराक्रम करनेवाले वीरको शतक्रतु कहते है। युद्धोंमें अपने नेता वीरका बल बढ़ानेयोग्य कर्म उसके अनुयायिकोंको करने चाहिये। कभी ऐसा कर्म करना नहीं चाहिये, जिससे अपने नेताकी शक्ति कम या क्षीण हो । तथा—

शश्वद्विद्रः पोप्रथद्विर्जिगाय नानदद्विः शाश्व-
स्नाद्विः धनानि । स नो हिंण्यरथं दंसनावान्
त्स नः स्मनिता स्मनये स नोऽदान् ॥

[५१४, ऋ० १।३०।१२]

इन्द्रने [पोप्रथद्विः] स्फुरण जिनमें दीखता है, [नानदद्विः] जो हिनहिनाते हैं, [शाश्वद्विः] जिनका जोरसे आसो-च्छ्वास हो रहा है, ऐसे घोड़ोंके साथ [धनानि जिगाय] धन देनेवाले युद्धोंमें विजय प्राप्त किया । उसने [नः हिंण्य-रथ दंसनावान्] हमें सुवर्णका रथ दिया, और उसने हमें [स्मनये अदात्] दान कर दिया ।

इन्द्र युद्धोंमें हिनहिनानेवाले घोड़ोंके साथ जाता है और विजय प्राप्त करता है । तथा—

कपटी शत्रुका नाश ।

गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु अपीवृतं मायिनं
क्षियन्तम् । उतो अपो द्यां तस्तर्भांसं अहन्नाहिं
शूर वीर्येण ॥ [११०५, ऋ० २।११।५]

[गुहा हितं] गुहामें रहनेवाले, [गुह्यं] गुप्त [अप्सु गूळहं]

पानीमें गुप्त रहनेवाले [अपीवृतं मायिनं] कपटी शत्रुको [क्षियन्तम्] अपने कीलेमें रखनेवाले [द्यां अपो तस्तर्भांसं] जलोंको बंद करनेवाले [अहिं] शत्रुको अपने [वीर्येण अहन्] पराक्रमसे नष्ट कर दिया है ।

शत्रु जलको प्रतिबधमें रखता है, क्योंकि जल न मिलनेसे सैनिक हँरान होते हैं और शीघ्र वश होते हैं । आजभी युद्धमें यही हम देखते है । जल जिसके पास है, वह जिसके पास जल नहीं है उसको, अपने काबू करता है । वही हम इन्द्र और वृत्रके युद्धमें देखते है । वृत्र प्रथम जलपर कब्जा करता है, इस कारण इन्द्रके अनुयायी हराण होते हैं, पश्चात् इन्द्र शत्रुका वध करके जलके स्रोत खुले करता है, तब जनता आनंदित होती है । इन्द्र-वृत्रके युद्धमें यह वर्णन स्थानस्थानपर है—

जल सुप्राप्य करना ।

दासपत्नीरहिगोपा अतिघ्नन् निरुद्धा आपः पणिनेव
गावः । अपां विलं अपिहितं यदासीत् वृत्रं जघन्वां
अप तद्वार । [७२५, ऋ० १।३२।११]

[दास-पत्नी. अहिगोपा आप अतिघ्नन्] दास शत्रुने अपने आधीन किये जल [निरुद्धाः] रोके हुए थे, जैसे [पणिना इव गावः] बनिया गौबोंको रोकता है । इन जलोका द्वार [अपिहितं आसीत्] ढका हुआ था । पर इन्द्रने [वृत्रं जघन्वान्] वृत्रको मारा और [तत् अप ववार] वह द्वार खोल दिया ।

शत्रुने जलका अपने आधीन किया था, उस शत्रुको परास्त करके जल सबको मिलनेयोग्य खुला कर दिया । यह युद्धनीति है । युद्धयमान एक पक्ष दूसरेका जल बंद करता है, जिससे उसके सैनिक जलके बिना तड़पने लगते है । फिर वह इस शत्रुको परास्त करता और जलको सुप्राप्य बनाता है । इसी तरह अन्न, वस्त्र, तथा स्थानके विषयमें जानना योग्य है ।

जंता नृभिः इन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमा-
नस्य कारोः । प्रभर्ता रथं दाशुष उपाक उद्यंता गिरो
यदि च त्मना भूत् ॥ [१०९८, ऋ० १।१७८।३]

[शूरः इन्द्रः] शूर इन्द्र [नृभिः] अपने वीरोंके साथ [पृत्सु] युद्धोंमें [जंता] विजय करता है । [नाधमानस्य कारोः]

हर्ष श्रोता] नाथ होनेकी इच्छा करनेवाले कारीगरका कहना सुनता है । [दाशुषः रथ उपाके प्रभर्ता] दाताके रथ को वित्तके पास पहुँचाता है । [यदि त्मना भूत] यदि उसमें इच्छा हुई, तो वह [गिरः उद्यन्ता] वाणियों को भी प्रेरणा करता है ।

वीर अपने अनुयायियोंको युद्धमें जानेकी प्रेरणा करता है । इसकी प्रेरणासे प्रेरित हुए वीर युद्ध करते और जीजयी होते हैं ।

शत्रुको जंजिरोंसे बांधकर कारागारमें रखना ।

स तुर्वणिर्महान् अणु पांमे गिर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः । येन शुष्णं मायिनं आयसो मदे दुध आभूषु गमयन्नि दामनि ॥ [८० १; ऋ० १।५६।३]

[सः] इन्द्र[तुर्-वनिः] त्वरासे कार्य करता है, इसलिये [महान्] बड़ा है । उसका [तुजा शवः अणु] हिसक बल निर्मल है, स्वच्छ है, वह [पांमे] पौरुष दिखानेके युद्धमें [गिरः भृष्टिः न भ्राजते] पर्वतके शिखरके समान चमकता है । [मदे] आनन्दमें [दुध] रहता हुआ वह इन्द्र [मायिनं शुष्ण] कपटी शोषक शत्रुको [आयसः आभूषु दामनि] लोहेके कारागृहमें जंजिरोंसे [नि गमयन्] रख देता है ।

शत्रु जब पकड़ा जाता है, तब उसको प्रतिबधमें रखना योग्य ही है—

फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।

त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना भृपता शंयं भिनत् । यन्मायिनो वन्दिना मन्दिना भृपन् शितां गभस्ति अशनिं पृतन्यसि । [८० १; ऋ० १।५४।४]

[मन्दिना पृतन्] आनन्ददायक रामसे उत्साहयुक्त बना हुआ [शितां गभस्ति अशनिं] तीक्ष्ण वज्रको हाथमें लेकर [मायिनः पृतन्यसि] कपटी शत्रुसे जिस समय तू युद्ध करता है, उस समय [बृहतः दिवः सानु कोपयः] बड़े छलोक के शिखरको तू हिला देता है और शंबर राक्षस को अपने बलसे [अव भिनत्] छिन्न भिन्न करता है ।

शत्रुके शस्त्रास्त्रोंकी अपेक्षा अपने शस्त्र अधिक प्रखर रहने चाहिये । तब नि संदेह विजय होता है । इन्द्रका मुख्य शस्त्र वज्र है । यह फौलाद का अति तीक्ष्ण शस्त्र है । इन्द्रके पास अन्य भी अस्त्र बहुत होते हैं । शत्रुसे ये शस्त्रास्त्र अच्छे होते हैं, इसलिये इन्द्र विजयी होता है—

जघन्वां उ हरिभिः संभृतक्रनो इन्द्र वृत्रं मनुपे गातुयन्नपः । अयच्छथा बाहोर्वज्रमायसं आधारयो दिव्या सूर्यं दशे ॥ [८६ ५; ऋ० १।७२।८]

हे [संभृतक्रनो इन्द्र] सपूर्ण बलसे युक्त इन्द्र ! [मनुपे अप गातुयन्] मानवोंकी ओर जलके प्रवाह भेजनेके लिये [हरिभिः वृत्र जघन्वां] घोड़ोंको साथ लेकर तूने वृत्रको मार डाला, उस समय तूने [आयसं वज्र आधारयः] फौलादका वज्र धारण किया था और [दिवि दशे सूर्य] आकाशमें सर्वत्र प्रकाश होनेके लिये सूर्यको स्थापन किया था ।

इन्द्र कपटी शत्रुओंसे कपट करता है, सीधे शत्रुओंसे सीधा बर्ताव करता है । कपटी शत्रुओंके कपटजालमें कभी फँसता नहीं । यह यहाँ विशेष रीतिसे देगना चाहिये ।

कपट करनेवालोंसे कपट ।

त्वं मायाभिर्गप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अथि गुमाचजुह्वत । त्वं पिप्रोर्नृमण प्रावृजः पुरः प्र क्रजिश्चानं दस्युहृत्येषु आविथ ॥

[८८ १; ऋ० १।७१।७]

हे इन्द्र ! जो [स्वधाभिः शुता अधि अजुह्वत] जो अपने ही मुखमें अन्नोंका हवन करत है अर्थात् जो स्वयं भोग भोगते है, उन [मायिनः] कपटियोंको तूने [मायाभि अप अधमः] कपटोंसे ही नीचे गिराया, [त्वं नृमण पिप्रो पुर प्रावृजः] तूने धनेच्छु पिप्रु नामक शत्रुके नगरोंको तोड़ दिया, और तूने [क्रजिश्चानं] क्रजिश्चाको [दस्युहृत्येषु प्राविथ] शत्रुओंका वध करनेके समयमें बचाया ।

[मायाभिः मायिनः अप अधमः] कपटोंसे कपटी शत्रुओंको दवाना योग्य है । सर्वत्र यही न्याय है, जो वेदने बताया है । शत्रुके नगर, कीले, देश आदि जलाना, तोड़ना नष्ट करना, यह भी एक युद्ध की नीति ही है, देखिये—

शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।

अभि सिध्मो अजिगादस्य शस्त्रं वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् । सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिद्रः प्र म्वां मतिं अतिरच्छाशदान् । [८८ २; ऋ० १।३३।१३]

[अस्य सिध्मः शस्त्रं अभि अजिगात्] इस इन्द्रका यशस्वी वज्र शस्त्रपर जा गिरा, इसने [तिग्मेन पुरः विभेत्] तीक्ष्ण शस्त्रसे नगरोंको तोड़ डाला । इन्द्रने [वृत्र वज्रेण स असृजत्] वृत्रपर वज्र फेंक दिया और [शाशदानः स्वः]

मत्ति अतिरत्] प्रशंसित हुआ, वह इन्द्र अपनी बुद्धिके अनुसार विजयको प्राप्त कर सकता है ।

त्वं करञ्जमुत पर्णय वधी तेजिष्ठयातिथिग्वस्य
वर्तनी । त्व शता वंगृदस्याभिनत् पुरोऽ-
नानुद् परिपूता अजिष्विना ॥ [७८२; ऋ० १।५।३।८]
अतिथिर राजाके तेजस्वी चक्रसे तू करज और पर्णय
शत्रुओंका वध किया व ऋजिष्ठवाने घेर हुए [शता पुरः
अभिनत्] शत्रुके सौ कीलो अथवा नगरोंको तोड़ दिया ।

आ यद्धरी इंद्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता
बाहोर्धात् । येनाविहृत्यतक्रतो अभिन्नान् पुर
इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः ॥ [८८६; ऋ० १।६।३।२]

[यत् । जब हे इन्द्र ! तेरे [हरी] घोड़े [विव्रता वेः]
इधर, उधर भटकते थे, उनको तूने [आ] पास लाकर रथ-
को जोड़ दिया, तब [ते बाहोः वज्र] तेरे बाहुमें वज्र
[जरिता आधात्] स्तोताने रख दिया । हे [अ-वि-हृत्यत
क्रतो] हे अजिक्व वीर ! हे [पुरुहूत] बहुतों द्वारा प्रश-
सित ! तू [अभिन्नान् पूर्वी पुरः] शत्रुओंको और उनके
बहुतसे नगरोंको [इष्णामि] नाश करनेकी इच्छा करता है ।

शत्रुके सैंकड़ों कीलोंका नाश ।

अध्वर्यवो यः शतं शवरस्य पुरो बिभेदाश्वनेव
पूर्वीः । यो वर्चिनः शतमिन्द्र सहस्र अपाव-
पद् भग्ना सोममस्मै ॥ [११५५; ऋ० २।१८।१६]

जिमने शबरके [शतं पुर बिभेद] सौ कीले तोड़ दिये,
[शत सहस्र अपावत्] जिसने लाखों सैनिकोंका नाश
किया, उस इन्द्रको सोम अर्पण करो ।

न्याविध्यदिलीविशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणं अभि-
नच्छुणमिद्र । यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण
शत्रुं अवधीः पृतन्युम् ॥ [७४९; ऋ० १।३।३।१२]

[दिलिविशस्य दृळः न्याविध्यत] शत्रुके सुदृढ कीलोंको
तोड़ दिया । [शृङ्गिण शुण्य वि अभिनत्] सींगवाले शुण्य
को छिन्नभिन्न किया । हे इन्द्र ! त्वरासे और बलसे तूने
[पृतन्य शत्रु वज्रेण अवधीः] युद्धकी इच्छा करनेवाले
शत्रुका वज्रसे वध किया ।

प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः । याभिः
काण्वस्येण वर्हिंरासदं यासद् वज्री भिनत्पुरः ॥

[२४; ऋ० ८।१।८]

उसके लिये गायत्र सामका गायन करो, जो [पुरंदरः]
शत्रुके नगरोंको तोड़नेवाला सबको पूज्य है, जो कण्वके
यज्ञमें जाता है और जो वज्रधारी [पुरः भिनत्] शत्रुके
कीले तोड़ता है ।

शत्रुके कीले अथवा नगर जलाकर, तोड़ कर जो शत्रुका
नाश करता है वह वीर इन्द्र है । कण्व नाम ज्ञानी का है ।
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत । इन्द्रो वि-
श्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ [७३; ऋ० १।१।४]

इन्द्र [पुरां भिन्दु] शत्रुके कीलोंका या नगरोंका
भेदन करनेवाला, [युवा कवि] तरुण कवि, [अमित भोजा]
अत्यंत बलवान् [वज्री] वज्रादि शस्त्र धारण करनेवाला,
[विश्वस्य कर्मणो धर्ता] सब कर्मोंका धारण करनेवाला
अर्थात् सब कर्मोंको निभानेवाला होनेके कारण [पुरुष्टुतः]
अनेकों द्वारा प्रशंसित [अजायत] हुआ है ।

इस तरह के शस्त्र के कारण वह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते ।

वृह माया अनानतः ॥ [२०६८; ऋ० ६।४।१९]

हे वज्रधारी शचीपते इन्द्र ! शत्रुके [दृळ्हानि] सदृढ
कीले भी [विवह] तोड़ दो ।

बनावटी कीलोंका नाश ।

स हि श्रवस्यु सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओज-
सा विनाशयन् । ज्योतीषि कृण्वन्नवृकानि यज्यवेऽ-
व सुक्रतु सतैवा अप सृजत ॥ [८०२; ऋ० १।५।५।६]

[स श्रवस्युः] वह कीर्तिकी इच्छा करनेवाला इन्द्र
[ओजसा वृधान नः] अपने पराक्रमसे बढ़नेवाला [क्षमया
कृत्रिमा सदनानि] शत्रुके भूमिके साथ रहनेवाले बनावटी
कीलोंका [विनाशयत्] नाश करता है । [यज्यवे] याजकके हित
के लिये [अवृकानि ज्योतीषि कृण्वन्] तेजोंको खुड़ा करने-
वाला वह [सक्रतुः] उत्तम कर्म करनेवाला इन्द्र [अपः सतैवै
अव सृजत] जलोंको प्रवाह बनानेके लिये उत्पन्न करता है ।

बनावटी कीले वे होते हैं [कृत्रिमा सदान्] कि जो
सेना अपनी रक्षार्थ थोड़ेसे परिश्रमसे तैयार करती है ।
ये भी इन्द्र तोड़ता है और शत्रुको परास्त करता है ।

बीस राजोंसे युद्ध ।

त्वमेतान् जनराज्ञो त्रिदशाऽबंधुना सुश्रवसो-
पजग्मुषः । पण्टि सहस्रा नवर्ति नव श्रुतो नि
चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ [७८३; ऋ० १।५।३।९]

[अबन्धुना] सहायता के बिना [सुश्रवसा] सुश्रव अर्थात् कीर्तिमान् राजाने जिन [द्विः दश जनराज] बीस जनराजोंके ऊपर हमला किया था, उनके ६०००० रथोंसे युक्त दुर्धर्ष सेनाको अपने चक्रसे तूने [नि वृगक] नष्ट कर दिया॥

सेनामें ६०००० रथों के लिये छः लाख सैनिक आवश्यक हैं । इतनी बड़ी सेनाके साथ यह युद्ध हुआ, ऐसा वर्णन यहां है । यह वर्णन काल्पनिक या रूपकभी माना जाय, तो भी बड़ी सेनाका संचालन यहां दीखता है, वह विचार के योग्य है ।

इन्द्रके रथके घोड़े ।

आ द्वाभ्यां हरिभ्यां इंद्र याहि आ चतुर्भिर्ग
पद्भिर्हयमानः । आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं
सुतः सुमुख मा मृधस्कः ॥ ४ ॥ आ विंशत्या
त्रिंशता याह्यर्वाडा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।
आपञ्चाशता सुग्धेभिरिंद्रा ऽऽ पृथ्या सप्तत्या
सोमपेयम् ॥ ५ ॥ आशीत्या नवत्या याह्यर्वाडा
शतेन हरिभिरुह्यमान । अयं हि ते शुनहोत्रेषु
सोम इंद्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ ६ ॥

[११९३-००५; क्र० ११८।४-६]

हे इन्द्र 'दो, चार, छः, आठ, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, असी, नब्बे, अथवा सौ घोड़ों को जोते हुए रथमें बैठकर यहां आ और इस सोमका ग्रहण करो ।

इन्द्रके घोड़ोंका यह वर्णन है । इस समय राष्ट्रपतिका जलम् पचास या साठ घोड़ोंके रथमें बिठलाकर निकालनेका वर्णन देखते हैं । इससे १०० घोड़ोंके रथमें इन्द्रका जलम् निकालना, विजयी वीरका जलम् ऐसा बड़ा निकालना संभव तो हो सकता है । इसमें कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती ।

शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र ।

इंद्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रतस्तुविकृ-
मिर्क्रधावान् । यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क
त्या त्पे वृषभ वीर्याणि॥ त्वं हि ष्मा च्यावयन्न-
च्युतानि एको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः । तव
द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमितेव
तस्थुः ॥ [१२४०-४१; क्र० ३१३०।३-४]

हे [वृषभ] बलवान् इन्द्र । तू [सु-शिप्रः] उत्तम शिर-
स्त्राण धारण किया हुआ, [मघ-त्रा] धनवान् [तरुत्रः] स्वरासे

संरक्षण करनेवाला, [महाव्रतः] महासेनाको चढानेवाला,
[तुवि-कृमिः] महापराक्रमी, [क्रधावान्] समृद्धिवान् और
[उग्रः] बड़ा पराक्रमी है । तू [मर्त्येषु बाधित] मानवोंमें
जो पराक्रम किये, वे तेरे पराक्रम [क] कहां हुए हैं ?

तू [एकः] अकेलाही [अच्युतानि च्यावयन्] स्थिरों को
हिलानेवाला है, तू [वृत्रा जिघ्रमानः] शत्रुओंका वध करता
हे । तेरे [अनुव्रताय] अनुकूल कार्य करनेके लिये षुलोक,
भूलोक और सब पर्वत [निमिता इव तस्थुः] स्थिर जैसे
रहे हैं ।

बड़ा पादत्राण ।

अभिल्लग्या चिदद्विवः शीर्षा यातुमतीनाम् ।
छिन्धि बृहृरिणा पदा महावृहृरिणा पदा ॥२॥
अवासां मघवज्रहि शर्धो यातुमतीनाम् ।
वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥३॥

[१०२५-३०; क्र० ११९३२]

हे [अद्विवः] वज्रधारी ' [अभिल्लग्या] डूँड डूँडकर [यातु-
मतीनां शीर्षा] दुष्टोंके शिर [बृहृरिणा पदा छिन्धि] पादत्राण-
युक्त पावसे तोड़, बड़े पादत्राणयुक्त पावसे तोड़, दुष्टोंको
[भव जहि] बड़े स्मशानमें नष्ट कर ।

शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।

हृदं न हि त्वा न्यृपन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीद्र तव यानि
वर्धना । त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवः ततश्च
वज्रं अभिभूत्योजसा ॥ [५६६, क्र० ११५२।५]
जिस तरह [उर्मयः हृदं] जलप्रवाह जलाशय को भर
देते हैं, उस तरह [ब्रह्माणि तव वर्धना] ये स्तोत्र तेरी
बधाई को भर देते हैं, वर्णन करते हैं । त्वष्टाने [युज्यं शवः]
तेरे योग्य बल [वावृधे] बढ़ाया और [अभिभूति-भोजसा
वज्र ततश्च] शत्रुका पराभव करनेकी शक्तिके साथ तेरे
लिये वज्रभी बनाया ।

इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।

त्वमेतान रुदतां जक्षतश्च अयोधयो रजस इंद्र
पारे । अवादहो दिव आ दस्युमुष्ठा प्र सुन्वतः
स्तुवतः शंसमाव ॥७॥ चक्राणासः परीणहं
पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुंभमानाः । न
हिन्वानासस्तिनिरुस्त इंद्रं परि स्पशो अदधान् ।
सूर्येण ॥ ८ ॥ [५३६-३७; क्र० ११३१।१-८]

हे इन्द्र ! तूने इन [रुद्रतः जक्षतः च] रौनेवाले और भोग भोगनेवाले शत्रुओंको (अयोधयः रजसः पारे) युद्ध करके अन्तरिक्षके पार भगा दिया । (दस्युं भदहः) तूने शत्रुको जला दिया और [दिवः अव] गुलोकसे उसको नीचे गिरा दिया । तथा [शंसं आवः] याजकोंकी स्तुतियोंको उच्च स्थानमें स्थिर किया है ।

सोनेके आभूषणोंसे सुशोभित हुए वे शत्रु [पृथिव्याः परीणहं चक्राणाम्] पृथ्वीके परिघमें भ्रमण करते थे, वेभी (स्पृशः) शत्रुके दूत [इन्द्र हिन्वानामः न तितिरु] इन्द्रको परीजित न कर सके । पर [सूर्येण परि अदधात्] उसने ही शत्रुओंको सूर्यप्रकाशसे आच्छादित किया ।

यह युद्ध नि सन्देह पृथ्वीके ऊपरका नहीं है । यह आकाशमें होनेवाला युद्ध है अथवा यह रूपक भी होगा ।

शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् । जहि प्रतीचो अनूचः पगाचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ [१०८३, ऋ० ३।२०।६]

हे इन्द्र ! [ते] तेरा रथ दो घोड़ोंके द्वारा शीघ्र यहाँ आवे [ते वज्र] तेरा वज्र [शत्रून् प्रमृणन् प्र एतु] शत्रुओं का वध करता हुआ चले । [प्रतीच.] हमला करनेवाले शत्रुओंको, [अनूच] दोनों ओरसे आनेवाले शत्रुओं को, तथा [पगाचः] भागनेवाले शत्रुओंको तू नष्ट कर, [विश्वं सत्यं कृणुहि] विश्वमें सत्यका प्रचार कर और वह सर्वत्र [विष्टमस्तु] प्रविष्ट हो कर रहे ।

आगे बढ़ ।

प्रेहि अभिहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।

इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो अर्चन्नु स्वराज्यम् ॥ [१००, ऋ० १।८०।३]

हे इन्द्र [प्रेहि] शत्रुपर चढ़ाई कर, [अभिहि] शत्रुका नाश कर, [धृष्णुहि] शत्रुको परास्त कर । [ते वज्रः न नियंसते] तेरे वज्रका प्रतिकार कोई कर नहीं सकता । हे इन्द्र ' [ते शवः नृम्णं] तेरा बल विजयकारी है, अतः [वृत्र हनः] शत्रुका नाश कर, [अपः जय] जलोको प्राप्त कर, [स्वराज्य अर्चन् अनु] स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

नव्वे नदियाँ ।

वि ते वज्रासो अस्थिरन् नवतिं नाध्यारे अनु । महत् त इन्द्र वीर्यं बाहोस्ते बलं हितं अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ [१०७, ऋ० १।८०।८]

हे इन्द्र ! [ते वज्रासः] तेरे वज्र [नवतिं नाध्यारे अनु] नौकाएँ जिनमें चलती है, ऐसे नव्वे नदियोंके पास [वि अस्थिरन्] पहुँचे हैं । तेरा पराक्रम बहुत बड़ा है, तेरे बाहुओंमें बहुत बल है, स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।

तमिन्महत्स्वाजिपूतमभे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽवियन् ॥ [११६, ऋ० १।८१।१]

[वृत्रहा इन्द्रः] शत्रुनाशक इन्द्र [मदाय शवसे] आनन्द और बल बढ़ानेके लिये [नृभिः वावृधे] मनुष्योंने बढ़ाया है, मनुष्योंने उसकी बधाई की है । [तं महत्सु आजिपु] उसको हम बड़े संग्रामोंमें तथा [अभे हवामहे] भयानक युद्धमें बुलाते हैं । वह हमें [वाजेषु अविषत्] युद्धोंमें बचावे ।

युद्धके समय इन्द्र की सहायता मांगी जाती है । क्योंकि इन्द्रही वीर्य बढ़ाता है ।

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पदाददिः ।

असिदभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्तसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ [११७, ऋ० १।८१।२]

हे वीर ! तू [सेन्यः असि] सेना अपने पास रखनेवाला वीर है । शत्रुओंका [भूरि पदाददिः] परास्त करनेवाला है, [दभ्रस्य वृधः] छोटोंको तू बढ़ानेवाला है, तू यजमान को शान सिखाता है [ते भूरि वसु सुन्वते] तेरा बहुत धन यज्ञ करनेवाले के लिये ही है ।

अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो

निर्जूचात् । नि मायिनो दानवस्य माया अपा-

दयत् पपिवान्तुसुतस्य ॥ [११९, ऋ० २।११।१०]

[मानुषः] मनुष्यका हित करनेवाले इन्द्रने जब [अमानुषं] अमानुष शत्रुका वध किया, तब इसका वज्र [अरोरवीत्] गर्जना करने लगा । सोम रस पीनेवाले इन्द्रने [मायिनः दानवस्य मायाः निः अपादयत्] कपटी शत्रुके सब कपटोंका नाश किया ।

न क्षोणीभ्यां परिभवे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्व-
तैरिन्द्र ते रथः । न ते वज्रमन्यश्नोति कश्चन यदा-
शुभिः पतसि योजना पुरु॥ [११७४, ऋ० २।१६।३]

[त इन्द्रिय] तेरा सामर्थ्य आकाशपृथिवी [न परिभवे] कम नहीं कर सकते, समुद्रों और पर्वतोंसे तेरे रथको प्रतिषेध नहीं होता, तेरे वज्रको कोई पराभन नहीं कर सकता, ऐसा तू अपने सत्वर चलानेवाले घोड़ोंसे बहुत योजन तक [पतसि] दूर जाता है ।

अधाकृणाः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रं ब्रह्मणा
शुष्ममैर्यः । रथेष्टेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीर्यः
सिस्वते सध्यक पृथक् ॥ [११८८, ऋ० २।१७।३]

हे इन्द्र ' तू प्रथम बड़ा पराक्रम करने लगा, उस समय ज्ञानके साथ बड़ा बल तूने प्रकट किया । रथमें बैठ इन्द्रने [विच्युताः] अपने स्थानसे भ्रष्ट किये शत्रु [सध्यक] इकट्ठे मिलकर तथा [पृथक्] अलग अलग रहकर भी [प्रसिस्वते] भागते रहते हैं ।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजिते
उर्वराजिते । अश्वजिते गोजिते अग्निजिते भर्-
द्राय सोमं यजताय हर्यतम् ॥ १ ॥ अभिभुवं-
ऽभिभंगाय वन्वतेऽपाळहाय सहमानाय
वेधसे । तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे
नम इन्द्राय वोचत ॥२॥ [१२१७-१८, ऋ० २।२१]

[विश्वजिते] विश्वविजयी, [धनजिते] धनको जीतनेवाले, [स्वर्जिते] तेजस्विता प्राप्त करनेवाले, [सत्राजिते] साथ साथ जीतनेवाले, [नृजिते] मानवी शत्रुको जीतनेवाले, [उर्वरा-जिते] उपजाऊ भूमिको जीतनेवाले, [अश्वजिते] घोड़ोंको जीतनेवाले, [गोजिते] गौओंको जीतनेवाले, [अग्निजिते] जलको जीतनेवाले, [अभिभुवं] सामनेसे शत्रुका पराभव करनेवाले, [अभिभंगाय] शत्रुका नाश करनेवाले [अपाळहाय] जिसका प्रताप शत्रुको सहन नहीं होता, [सहमानाय] पर शत्रुका हमला सहन करनेवाले, [वेधसे] शत्रुका वेध करने-वाले, अग्नि जैसे तेजस्वी, [दुष्टरीतवे] जिसका पार करना अशक्य है, ऐसे [सत्रासाहे] मिलकर हमला करनेपर भी जो अपने स्थानपर स्थिर रहता है, ऐसे इन्द्रका स्तोत्र हम गाते हैं ।

यहाँ इकट्ठे इन्द्रके बहुतसे कर्म बताये हैं, ये देखनेयोग्य हैं-

सर्व कर्मोंमें अग्रसर ।

त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य
धर्मणामिरज्यसि । प्र वीर्येण देवताति चेकिने
विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥

[७९९, ऋ० १।५।३]

हे इन्द्र ' तू [महो नृम्णस्य] बड़े धनका आँर [धर्मणां धर्मणामिरज्यसि] धर्मोंका अधिपति है । तू अपने पराक्रमसे देवता-ओंमें प्रतिष्ठा पाता है, क्योंकि तू [विश्वस्मा कर्मणे] सब कर्मोंमें [उग्रः पुरोहितः] प्रचंड अग्रगामी वीर है ।

पुरोहित का अर्थ यहाँ नेता है, जो कर्म करने के लिये आगे होता है ।

बलशाली धन ।

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम् ।

यस्मिन् विश्वानि पांस्या ॥ [२०, ऋ० १।५।९]

[यस्मिन् विश्वानि पांस्या] जिसमें सब प्रकारके बल है, ऐसी शक्ति इन्द्र हमें देवे, क्योंकि [इन्द्र. अ-क्षित-उतिः] इन्द्रके रक्षण करनेके सामर्थ्य अनंत है ।

हमें धन चाहिये, पर वह ऐसा चाहिये कि, जिसके साथ हमारे पास सब प्रकारके सामर्थ्य भी प्राप्त हो । ऐसा धन हमें नहीं चाहिये कि, जो हमें कमजोर बनावे ।

गन्द्र सानसिं रथि सर्जित्वानं सदासहम् ।

वर्षिष्ठमूतये भर ॥ [३८, ऋ० १।८।१]

हे इन्द्र । [स-जित्वानं] सदा जयशाली, [सदा-सहं] सदा शत्रुका नाश करनेमें समर्थ और [वर्षिष्ठ] सदा बढ़नेवाला और कभी न घटनेवाला ऐसा [सानसिं रथि] सुख देनेवाला धन [ऊतये आभर] हमारी रक्षाके लिये हमारे पास भर कर ले आ ।

हमें धन ऐसा चाहिये कि, जिससे हमारा सदा जय होता रहे, शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य हमारे पास रहे, हमारे महत्कार्योंमें जितना धन हमें आवश्यक हो, उतना सदा मिलता रहे, धनके अभावके कारण हमारे पुरुषार्थ रुक न रहे, तथा हमारी रक्षा होती रहे । अर्थात् हमें ऐसा धन नहीं चाहिये, जिस धनमें फंस कर हमारा पराभव होता रहे, जिससे हम शत्रुका नाश करनेमें असमर्थ हो जाय, जो आवश्यक कर्तव्योंके लिये न्यून हो जाय और जिससे हम अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ सिद्ध हो जाय ।

हमें धन मिले ।

सं गोमादिन्द्र वाजवदस्से पृथु श्रवो बृहत् । विश्वा-
धर्ह्यक्षितम् ॥ अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसा-
तमम् । इन्द्र ता रथिनीरिपः ॥ [५.८.५५, ऋ० ११.९।७-८]

हे इन्द्र ! हमें ऐसा धन मिले, जिसके साथ [गोमन्]
बहुत गौवं हों, [वाजवत्] बहुत घोड़े अर्थात् वाहन हों,
[अ-क्षित] जो नाश न होनेवाला हो जो [विश्व-आयु]
सब प्रकारसे आयुष्य बढ़ानेवाला हो, [पृथु-बृहत् श्रवः]
जो विपुल तथा श्रेष्ठ प्रकारके यशसे युक्त हो । हे इन्द्र !
हमें [सहस्र-सातमं] सहस्रों प्रकारका [बृहत् द्युम्न श्रवः]
विपुल और तेजस्वी धन हो । [ता-रथिनी रिप] तथा
अस्मै ऐसा हो कि, जो अनेक गाड़ियोंमें भरकर लाया जा सके।

हमारे घरमें गाँव, घाँडे, वाहन, गाड़ियाँ, रथ, धन भरपूर
हो, किसी तरह न्यूनता न रहे । अस्मभी बहुत हमें प्राप्त
हो । हमसे इस धनका उत्तम उपयोग हों, जिससे हमारा
यश चारों दिशाओंमें फैले । इस तरहका धन हमें चाहिये ।

इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।

मा नो अति ख्यः ॥ [८, ऋ० ११.८।३]

' तेरी गुह्य सुमतियां हमें मालूम हों, हमारे शत्रु उनका
न जान सकें । '

' अन्तम सुमति ' वह है, जो राज्यशासन करनेवाले
वीरोंके पास ही रहती है । गुह्य सलाह या मसलत, गुप्त
मन्त्रणा इन्द्रके पास रहती है, क्योंकि यह इन्द्र सब
विश्वका साम्राज्य चलाता है । हम उसके अनुयायी हैं,
इसलिये वह मन्त्रणा हमें ही मालूम हों, पर शत्रुओं को
उनका पता न लगे ।

घुटनं जाडकर प्रार्थना ।

स वह्निभिः ऋक्भिः गांषु शश्वन मितजुभिः

पुरुकृत्वा जिगाय । पुरः पुराहा सखिभिः

सखीयन् दृळ्हा हरोज कविभिः कविः सन् ।

[२०.१३; ऋ० ६।३२।३]

[सः] उस इन्द्रने [मितजुभिः] घुटने जाडकर प्रार्थना
करनेवालोंके लिये [पुरुकृत्वा जिगाय] बारबार विजय
किया । उस इन्द्रने अनेक मित्रोंके साथ शत्रुके [दृळ्हा
पुरः] सुदृढ नगर तोड़ दिये ।

इन्द्र और माताका संवाद ।

जज्ञानो नु शतक्रतुः वि पृच्छदिति मातरम् ।

क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ १॥

आदीं शवस्यब्रवीत् और्णवाभं अहीशुवम् ।

ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥ २॥

समिन् तान् वृत्रहास्विदत् स्व अराँ इव खेदया ।

प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥ ३॥ [६.८०-४२; ऋ० ८।७७]

इन्द्र उत्पन्न होते ही अपनी मातासे पूछने लगा कि,
कौन शूर है और कौन प्रसिद्ध वीर हैं ? वह माता उससे
बोली कि और्णवाभ और अहीशुव ये वीर हैं । हे पुत्र ! इन
का निःपात करना उचित है । इन्द्रने उनको खींच लिया
और नाश किया, इससे वह बड़ा हुआ ।

माता अपने पुत्रको वीरताकी शिक्षा कैसी देवे, यह इन
मन्त्रोंमें है । माताएँ इस का मनन करें । बचपनसे इस
तरह माताएँ बोध देती रहेगी, तो पुत्र वीर ही बनेंगे, इस
में सदेह नहीं है ।

अन्तिम निवेदन ।

इन्द्रदेवता के विषयमें इतना मनन यहाँ पर्याप्त है ।
इन्द्र आत्मा अथवा परमात्मा है, यह प्रथम बताया है
और उत्तर विभागमें इन्द्र क्षत्रिय शूर वीर है, यह भाव
बताया है । इन्द्रकी अन्यान्य विभूतियों मन्त्रोंका मनन
करनेके बाद पाठक स्वयं जान सकते हैं ।

इस स्थानपर जो इन्द्रवाचक पद दिये हैं, वे किस
मन्त्रमें कहाँ हैं, यह पाठक इन सूचियोंसे जान सकते हैं ।
तथा इन सूचियोंका उपयोग करनेपर पाठकोंको इसी तरह
अन्यान्य शब्द मिल सकते हैं कि, जिनसे इन्द्र का ठीक
ठीक स्वरूप जाना जा सकता है ।

अग्निकी अपेक्षा इन्द्रकी सूचियाँ अधिक हैं । तथा
इसमें उत्तरपदसूची भी विशेष उपयोगी है ।

धन्यवाद ।

इन्द्रकी विशेषण, उपमा, तथा अन्य सूचियाँ बनानेका
बड़े परिश्रमका कार्य श्री पं० अनन्त दिनकर रास्ते, पूना-
निवासीने किया है । इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य
हैं । अग्निकी सूचियाँ भी इन्हींकी बनायी है ।

अन्तमें पाठकोंसे प्रार्थना यही है कि, वे इस दैवत-
संहिता से जितना अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, उतना
प्राप्त करें और वेदके सत्य सिद्धान्त के पास पहुँचनेका
आनन्द प्राप्त करें ।

औध, जि० सातारा

संपादक

माघ वष सं० १९९८ श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

इन्द्रदेवता का परिचय ।

भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ मेघस्थानीय विद्युत् ।	३	३८ शत्रुको जजिगेंसे बांधकर कारागार में रखना ।	१९
२ इन्द्रिय=इन्द्रकी शक्ति ।	"	३९ फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।	"
३ इन्द्र के इन्द्रिय ।	"	४० कपट करनेवालोंसे कपट ।	"
४ विश्वसृष्टि ।	४	४१ शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।	"
५ व्यक्तिसृष्टि ।	"	४२ शत्रुके सैकड़ों कीलों का नाश ।	२०
६ निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।	"	४३ बनावटी कीलोंका नाश ।	"
७ उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।	५	४४ बीस राजों से युद्ध ।	"
८ मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।	६	४५ इन्द्रके रथके घोड़े ।	२१
९ ब्राह्मणग्रन्थोंमें इन्द्रका अर्थ ।	"	४६ शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र ।	"
१० वेदमें इन्द्रके विशेषण ।	८	४७ बड़ा पादत्राण ।	"
११ सबका एक राजा ।	९	४८ शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।	"
१२ ध्रुलोक से बड़ा ।	"	४९ इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।	"
१३ त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।	१०	५० शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।	२२
१४ कुछ भी दूर नहीं है ।	"	५१ आग बढ ।	"
१५ ध्रुलोक का उत्पादक इन्द्र ।	"	५२ नन्वे नदियाँ ।	"
१६ पृथ्वी और जल का उत्पादक ।	"	५३ सर्व कमोंमें अग्रेसर ।	२३
१७ आकाश खड़ा करनेवाला ।	"	५४ बलशाली धन ।	"
१८ नक्षत्र स्थिर किये ।	"	५५ हमें धन मिले ।	२४
१९ स्थावर, जंगम कांपते हैं ।	११	५६ इन्द्रकी गुप्त मन्त्रणा ।	"
२० सब का वश करनेवाला इन्द्र ।	"	५७ घुटने जोड़कर प्रार्थना ।	"
२१ इन्द्र का असीम सामर्थ्य ।	"	५८ इन्द्र और माताका संवाद ।	"
२२ तेरे मार्गका अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।	१२	५९ अन्तिम निवेदन ।	"
२३ मैं इन्द्र हूँ= इन्द्र का साक्षात्कार ।	"	६० धन्यवाद ।	"
२४ क्षत्रिय वीर इन्द्र ।	"	इन्द्रदेवताकी सूचियाँ ।	
२५ आर्य के लिये प्रकाश दो ।	१५	१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची ।	पृ० २२०-२६१
२६ धार्मिकों का हितकर्ता ।	"	प्रथम मण्डल ।	२२०-२२८
२७ पञ्चजनों का रक्षक ।	"	द्वितीय "	२२८-२२९
२८ लोकहितार्थ युद्ध ।	१६	तृतीय "	२२९-२३१
२९ दशुको दण्ड और आर्योंकी उन्नति करो ।	"	चतुर्थ "	२३१-२३६
३० रक्षण के लिये खड़ा रहो ।	"	पञ्चम "	२३६-२३९
३१ दुष्टों का नाश कर ।	"	षष्ठ "	२३९-२४०
३२ वृत्रवध ।	१७	सप्तम "	२४०-२४८
३३ वज्र को नचाया ।	"	अष्टम "	२४८-२५१
३४ शत्रु वध है ।	"	दशम "	२५१-२६१
३५ युद्धों में विजयी ।	१८	२ उपमासूची ।	२६२-२६९
३६ कपटी शत्रु का नाश ।	"	३ मन्त्राणां अकारानुक्रमसूची ।	२७०-२९५
३७ जल सुप्राप्य करना ।	"	४ (विशेषण) गुणबोधकपदसूची ।	२९८-३३५
		५ गुणबोधक-सामासिक-पदानां	
		उत्तर-पदसूची ।	३३८-३४८

इन्द्रमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) इन्द्रः ।

ऋषिः	मन्त्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषिः	मन्त्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्र	१-६९	१	नोधा गौतमः	८५६-९९	४६
जेता मधुच्छन्दसः	७०-७७	४	गौतमो राष्ट्रगणः	९००-५६	५०
मेधातिथिः काण्वः	७८-८६	"	वार्षागिराः ऋजाश्वाऽम्बरिषः	९५७-७५	५४
प्रगाथो (घौर) काण्वः	८७-८८	७	सहदेव-भयमान-मुराधमः		
मेधातिथिः-मेधातिथी काण्वः	८९-११५	७	रेभः काश्यपः	९७६-९०	५५
मेधातिथिः काण्वः (आङ्गिरसः प्रियमेधश्च) ११६-१५५		"	नेमो भार्गवः	९९१-९३, ९९६-९९	५६
देवातिथिः काण्वः	२२९-४२	१३	इन्द्र	९९४-९५	"
वत्स काण्वः	२४३-८७	१४	परुच्छेपो देवोदासि	१०००-१०४१	५७
पर्वतः काण्वः	२८८-३२०	१५	अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	१०४२-११००	६१
नारदः काण्वः	३२१-५३	१७	गृत्समदो भार्गवः शौनक	११०१-१२३७	६५
गोपूक्ष्यश्चसूक्तिनौ काण्वायनौ	३५४-८१	१८	गाथिनो विश्वामित्रः	१२३८-१४३६	७५
इरिम्बिठिः काण्वः	३८२-४०८	१९	कुशिक ऐषीरथिः	१२६०-१२८१	७७
सोमरिः काण्वः	४०९-२४	२०	वामदेवो गौतमः	१४६७-१६६६	९०
नीपातिथिः काण्वः	४२५-३९	२१	गौरिवीतिः शाकल्यः	१६६७-८१	१०३
सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरस	४४०-४२	"	बभ्रुरात्रेय	१६८२-९२	१०४
त्रिशोकः काण्वः	४४३-८४	२२	भवस्युरात्रेयः १६९३-१७०४, गातुरात्रेयः १७०५-१६		१०५
प्रस्कण्वः काण्वः	४८५-९४	२३	प्राजापत्यः संवरणः	१७१७-३५	१०६
पुष्टिगुः काण्वः	४९५-५०४	२४	प्रभूवसुराङ्गिरसः १७३६-४९, भौमोऽत्रिः १७५०-६८		१०८
श्रुष्टिगुः काण्वः	५०५-१४	२५	इषावाश्च आत्रेयः	१७६९-८२	११०
आयुः काण्वः	५१५-२४	"	आत्रेयी अपाला	१७८३-८९	१११
मेध्यः काण्वः	५२५-३२	२६	विश्वमना वैयश्वः	१७९०-१८१६	"
मातरिश्वा काण्वः	५३३-३८	२७	वशोऽश्व्यः	१८१७-४०	११२
कृशः काण्वः	५३९-४३	"	बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	१८४१-२००५	११४
पृषध्नः काण्वः	५४४-४७	"	सुहोत्रो भारद्वाजः	२००६-१५	१२५
अर्गः प्रागाथः	५४८-६५	२८	शुनहोत्रो भारद्वाजः	२०१६-२५	१२६
प्रगाथो घौरः काण्वः	५६६-७७	२९	नरो भारद्वाजः	२०२६-३५	१२७
प्रगाथः काण्वः	५७८-६१२	३०	वायुर्बार्हस्पत्यः	२०३६-२१०३	१२८
कलिः प्रागाथः	६१३-२७	३१	गर्गो भारद्वाजः	२१०४-१८	१३२
कुरुसुतिः काण्वः	६२८-६०	३२	मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	२११९-२२९०	१३३
इक्ष्वाक्यनौघसः ६६१-६९; कुसीदी काण्वः ६७०-८७		३४	प्रियमेध आङ्गिरसः	२२९१-२३२०	१४५
आजीगर्तिः शुनः शेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	६८८-७१४	३५	पुरुहन्मा आङ्गिरसः	२३२१-३५	१४६
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	७१५-४४	३६	तिरश्चराराङ्गिरसः	२३३६-६३	१४७
सव्य आङ्गिरसः	७४५-८१६	३८	द्युतानो वा मारुतः	२३४५-६३	१४८
कुरुस आङ्गिरसः	८१७-५५	४४	नृमेध आङ्गिरसः	२३६४-८३	१४९
			नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ	२३८४-९६	१५०

श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः	२३९७-२४२९	१५१
सुकक्ष आङ्गिरसः	२४३०-६२	१५३
त्रिशिरास्वाष्ट	२४६३-६५	१५४
ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, } वासुको वसुकृद्वा	२४६६-९०	"
ऐन्द्रो वसुकृ	२४९१-२५२९	१५६
कवष ऐल्लष	२५३०-४०	१५९
मुत्कवानिन्द्रः	२५४१-४५	१६०
कृष्णः आङ्गिरसः	२५४६-७८	"
वैकुण्ठ इन्द्र	२५७९-२६०७	१६२
बृहदुक्थो वामदेव्य.	२६०८-२१	१६५
बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुगोपायनाः	२६२२	१६६
गौरीवीतिः शाक्य	२६२३-३९	"
इन्द्र , ऐन्द्रो वृषाकपि , इन्द्राणी	२६४०-६२	१६७
रेणुवैश्वामित्रः	२६६३-७९	१६९
वज्रो वैश्वानसः	२६८०-९१	१७०
ऐन्द्रोऽप्रतिरथः	२६९२-२७०२	१७१
अष्टको वैश्वामित्रः	२७०३-१३	१७२
कौत्सो दुमित्रः सुमित्रो वा	२७१४-२४	"
वैरूपाऽष्टादंष्ट्रः	२७२५-३४	१७३
वैरूपा नभःप्रभेदन	२७३५-४४	१७४
वैरूप शतप्रभेदन	२७४५-५४	"
स्थौरोऽभियुतः स्थौरोऽभियूपो वा	२७५५-६३	१७५
आथर्वणो बृहद्विषः	२७६४-७२	१७६
सुकीर्तिः काक्षीवतः	२७७३-७७	१७७
सुदाः पैजवनः	२७७८-८४	"
मान्नाता यौवनाश्वः, गोधा ऋषिका	२७८५-९१	१७८
अङ्ग औरवः	२७९२-९७	"
तार्क्ष्यः सुपर्ण , यामायन } ऊर्ध्वकृशनो वा	२७९८-२८०३	१७९
सुवेदाः शैरीषिः	२८०४-८	"
पृथुर्ऋष्यः २८०९-१३, शासो भारद्वाजः	२८१४-१८	१८०
देवजामय इन्द्रमातरः	२८१९-२३	"
पूरणो वैश्वामित्रः	२८२४-२८	१८१
विश्वामित्र-जमदग्नी २८२९-३१, हटो भागर्वः	२८३२-३५	"
विश्विरीक्षीनरः, काशिराजः } प्रतर्दनः, रौहिदश्चो वसुमनाः }	२८३६-३८	"
जष ऐन्द्रः २८३९-४१, सहगुराङ्गिरसः	२८४२-४९	१८२
ऐन्द्रो लवः	२८५०-६२	"
शृगुराथर्वणः २८६३-६६, मृगारः	२८६७-७३	१८३
कण्वः २८७४-८६, जाटिकायनः	२८८७-८९	१८४

अथर्वा	२८९०-९५; २९०२-४;	१८५
"	२९१५-१६	१८६
कबन्धः २८९६-९८, भगः २८९९-२९०१		१८५
भृग्वह्निराः	२९०५, २९१३	१८६
अङ्गिराः (कितववधकामः)	२९०६-११	"
भृगुः २९१२; अप्रतिरथ.	२९१४	"
गुत्समदो मेधातिथिर्वा	२९१७	"
विश्वस्वानृषिः	२९१८-७४	१८७
वामदेवो गौतमः	२९७५-७८	१९१
" " २९९१-८५ २९९३-९६		"
विश्वामित्रो गाथिन	२९७९	"
विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद } उदत्तो वा }	२९८०	"
त्रसदस्यु	२९८६-८९	१९२
बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च	२९९०	"
क्रमेण गोपायना लौपायना }		"
कवष ऐल्लष	२९९१	"
वमिष्ठो मैत्रावरुणि-	२९९२	"

इन्द्रसहचारी देवगणः ।

(१) इन्द्राग्नी ।

मेधातिथिः काण्वः	३००२-७	१९३
कुत्स आङ्गिरसः	३००८-२८	१९४
परुच्छेपो देवोदासिः	३०२९	१९५
गाथिनो विश्वामित्र	३०३०-३८	"
त्रैवृष्णस्वरुणः, पौरुक्कुत्स- क्षसदस्यु, भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिर्भौम इति केचित्)	३०३९	१९६
भौमोऽग्निः	३०४०-४५	"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३०४६-७०	"
मैत्रावरुणिर्वमिष्ठः	३०७१-९०	१९७
इयावाश्व आत्रेयः	३०९१-३१००	१९८
नाभाकः काण्वः	३१०१-१२	१९९
प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, } राजयक्ष्मघ्नं वा }	३११३-१७	२००
विश्वस्वानृषिः	३११८-१९	"
अथर्वा	३१२०-२७	"
प्रशोचनः ३१२८-३०; भृगुः	३१३१-३३	२०१

(२) इन्द्रावरुणौ ।

मेधातिथिः काण्वः	३१३५-४२	"
गाथिनो विश्वामित्रः	३१४३-४५	२०२

वामदेवो गौतमः	३१४६-५६	२०२
असदस्युः पौरुषस्य	३१५७-६०	२०३
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३१६१-७१	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३१७२-३२०३	२०४
सुपर्ण काण्वः	३२०२-८	२०६
विवस्वानृषिः	३२०९	२०७

(३) इन्द्राय ।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्र	३२१०-१२	"
मेधातिथि काण्व	३२१३-१४	"
परुच्छेपो देवोदासिः	३२१५-१९	"
गृत्समदः शौनक	३२२०	२०८
वामदेवो गौतम	३२२१-२९	"
स्वस्त्यामेयः	३२३०-३२	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३२३३-४२	"
विवस्वानृषिः	३२४३	२०९
वसिष्ठः	३२४४	"

(४) इन्द्र-मरुतश्च ।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२४५-४६	"
-------------------------	---------	---

(५) मरुत्वानिन्द्रः ।

मेधातिथिः काण्वः	३२४७-४९	२१०
इन्द्रः	३२५०-५१, ३२५३, ३२५५,	"
	३२५७, ३२५९-६१	"
मरुतः	३२५२, ३२५४, ३२५६, ३२५९	"
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३२६२-६८	"

(६) इन्द्रामरुतौ ।

तिरश्चीराङ्गिरसो, घुतानो वा मारुतः	३२६९	२११
------------------------------------	------	-----

(७) इन्द्रासोमौ ।

गृत्समदः शौनकः	३२७०	"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३२७१-७५	"
रेणुवैश्वामित्रः	३२७६	२१२
ऋषिः	३२७७	"
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः (चातनः)	३२७८-३३०२	"

(८) इन्द्राविष्णु ।

दीर्घतमा औचथ्यः	३३०३-५	२१४
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३०६-१३	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३१४-१६	२१५

(९) इन्द्राबृहस्पती ।

वामदेवो गौतमः	३३१७-२४	"
---------------	---------	---

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३२५	२१६
तिरश्चीराङ्गिरसो घुतानो वा मारुतः	३३२६	"

(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

गर्गो भारद्वाजः	३३२७	"
अङ्गिराः	३३२८-२९	"

(११) इन्द्रापूषणौ ।

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३३०-३५	"
अथर्वा	३३३६	"

(१२) ऋणश्चयेन्द्रौ ।

बभ्रुरात्रेय	३३३७-४०	२१७
--------------	---------	-----

(१३) इन्द्र-ऋभवश्च ।

विश्वामित्रो गाथिनः	३३४१-४३	"
---------------------	---------	---

(१४) इन्द्रोषसौ ।

वामदेवो गौतमः	३३४५-४७	"
---------------	---------	---

(१५) इन्द्राश्वौ ।

वामदेवो गौतमः	३३४८-४९	"
---------------	---------	---

(१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।

गृत्समदः शौनकः	३३५०-५१	२१८
----------------	---------	-----

(१७) इन्द्रो गावश्च ।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	३३५२-५३	"
-----------------------	---------	---

(१८) इन्द्राकुत्सौ ।

अवस्तुरात्रेयः	३३५४	"
----------------	------	---

(१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः ।

बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः	३३५५	"
---	------	---

(२०) इन्द्रापर्वतौ ।

गाथिनो विश्वामित्रः	३३५६	"
---------------------	------	---

(२१) इन्द्रः सोमो ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।

मेधातिथिः काण्वः	३३५७-५८	"
------------------	---------	---

(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।

गृत्समदः शौनकः	३३५९	२१९
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३६०-६१	"

(२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।

गर्गो भारद्वाजः	३३६२	"
-----------------	------	---

(२४) इन्द्रसूर्यादयः ।

ब्रह्मा	३३६३	"
---------	------	---



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारं सगृह्य निर्मिता ।)

२ इन्द्रदेवता ।

(१-६९) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३।४-६)

इन्द्रा याहि चित्रभानो	सुता इमे त्वायवः ।	अण्वीमिस्तना पूतासः	४	१
इन्द्रा याहि धियेषितो	विप्रजूतः सुतावतः ।	उप ब्रह्माणि वाघतः	५	
इन्द्रा याहि तूतुजान	उप ब्रह्माणि हरिवः ।	सुते दधिष्व नश्चनः	६	

॥ २ ॥ (ऋ० १।४।१-१०)

सुरूपकृत्नुमूतये	सुदुधामिव गोदुहे	। जुहुमसि द्यविद्यवि	१	
उप नः सवना गहि	सोमस्य सोमपाः पिब	। गोदा इद रेवतो मदः	२	५
अथा ते अन्तमानां	विद्याम सुमतीनाम्	। मा नो अतिं ख्य आ गहि	३	
परेहि विश्वमस्तृत	मिदं पृच्छा विप्रश्चित्तम्	। यस्ते सखिभ्य आ वरम्	४	
उत ब्रुवन्तु नो निदो	निरन्यतश्चिदारत	। दधाना इन्द्र इद दुवः	५	
उत नः सुभगाँ अरि	र्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः	। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मेणि	६	
एमाशुमाशवे भर	यजुभियं नूमावदन्म	। पतयन् मन्दुयत्सखम्	७	१०
अस्य पीत्वा शतक्रतो	घनो वृत्राणामभवः	। प्रावो वाजेषु वाजिनम्	८	
तं त्वा वाजेषु वाजिनं	वाजयामः शतक्रतो	। धर्नानामिन्द्र सातये	९	
यो रायोर्द्वानिर्मुहान्	त्सुपारः सुन्वतः सखा ।	तस्मा इन्द्राय गायत	१०	

॥ ३ ॥ (ऋ० १।५।१-१०)

आ त्वेता नि पीवते—न्द्रमभि प्र गायत	। सखायः स्तोमवाहसः	१	
पुरुतमं पुरुणा—मीशानं वार्याणाम्	। इन्द्रं सोमे सचा सुते	२	१५
स चानां योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम्	। गमद्राजेभिरा स नः	३	
यस्य संस्थे न वृण्वते हरीं समत्सु शत्रवः	। तस्मा इन्द्राय गायत	४	
सुतपात्रे सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये	। सोमासो दध्याशिरः	५	
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः	। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुकतो	६	
आ त्वां विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः	। शं ते सन्तु प्रचेतसे	७	१०
त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो	। त्वां वर्धन्तु नो गिरः	८	
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्	। यस्मिन् विश्वानि पौंस्या	९	
मा नो मर्ता अभि दुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः	। ईशानां यवया वधम	१०	

॥ ४ ॥ (ऋ० १।६।१-३, १०)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुपं चरन्तं परि तस्थुषः	। रोचन्ते रोचना विवि	१	
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे	। शोणा धृष्ण नृवाहसा	२	१५
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे	। समुपन्द्रिरजायथाः	३	
इतो वा सातिमीमहे किवो वा पार्थिवादधि	। इन्द्रं महो वा रजसः	१०	

॥ ५ ॥ (ऋ० १।७।१-१०)

इन्द्रमिद्राथिनो बृह—दिन्द्रमर्केभिरर्किणः	। इन्द्रं वाणीरनूषत	१	
इन्द्र इन्द्रयोः सचा संमिश्र आ वचोयुजा	। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः	२	
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य रोहयद् किवि	। वि गोभिरद्रिमैरयत्	३	३०
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च	। उग्र उग्राभिरूतिभिः	४	
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे	। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्	५	
स नो वृषन्नमुं चरं सत्रादावन्नपा वृधि	। अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः	६	
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः	। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्	७	
वृषा यूथेव वंसंगः कृष्टीरियत्योजसा	। ईशानो अप्रतिष्कृतः	८	३५
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति	। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम्	९	
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः	। अस्माकमस्तु केवलः	१०	

॥ ६ ॥ (ऋ० १।८।१-१०)

एन्द्रं सानसिं रयिं सजित्वानं सव्वासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर	१
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहे । त्वोतासो न्यर्वता	२
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः	३ ४०
वयं शूरेभिरस्तृभि—रिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः	४
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना शवः	५
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ । विप्रसो वा धियायवः	६
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः	७
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही । पक्वा शाखा न दाशुषे	८ ४१
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित सन्ति दाशुषे	९
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या । इन्द्राय सोमपीतये	१०

॥ ७ ॥ (ऋ० १।९।१-१०)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महौ अभिष्टिरोजसा	१
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये	२
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु सर्वनेष्वा	३ ५०
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत । अजोषा वृषभं पतिम्	४
सं चोदय चित्रमर्वाग राध इन्द्र वरेण्यम् । असदित ते विभु प्रभु	५
अस्मान्सु तत्र चोदये—न्द्र राये रभस्वतः । तुर्विद्युम्न यशस्वतः	६
सं गोमदिन्द्र वाजव—दुस्मे पृथु श्रवो बृहत । विश्वायुर्धेद्यक्षितम्	७
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिपः	८ ५१
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतयं	९
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एवुरिः । इन्द्राय शूषमर्चति	१०

॥ ८ ॥ (ऋ० १।१०।१-१०) अनुष्टुप् ।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्युर्कमर्किणः । ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतु उद् वंशमिव येमिं	१
यत् सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्तव्यम् । तदिन्द्रो अर्थं चेतति युथेन वृष्णिरेजाति	२
युक्त्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा । अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर	३ ६०
एहि स्तोमौ अभि स्वरा ऽभि गृणीह्या रुव । ब्रह्म च नो वसो सचे—न्द्र यज्ञं च वर्धय	४

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिषिधे । शक्रो यथा सुतेषु णो शरणं सख्येषु च ५
 तमित सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये । स शक्र उत नः शक्र—दिन्द्रो वसु दयमानः ६
 सुविवृतं सुनिरज—मिन्द्र त्वादातमिद्यशः । गवामपे व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ७
 नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषः सर्व्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ८ ६५
 आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्वाधिष्व मे गिरः । इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजांश्चिदन्तरम् ९
 विद्वा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् । वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसार्तमाम् १०
 आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब । नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ११
 परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः १२ ६९

॥ ९ ॥ (ऋ० १।१।१-८)

(७०-७७) जेता माधुच्छन्दसः । अनुष्टुप् ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् त्समुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् १ ७०
 सख्ये तं इन्द्र वाजिनो मा भैम शवसस्पते । त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् २
 पूर्वारिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्युतयः । यद्वी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ३
 पुरां भिन्दुर्युवा क्वि—रमितौजा अजायत । इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ४
 त्वं बलस्य गोमतो ऽपावरद्रिवो बिलम् । त्वां देवा अबिभ्युषस् तुज्यमानास आत्रिषुः ५
 तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् । उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ६ ७५
 मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः । विदुष्टे तस्य मेधिरास् तेषां श्रवांस्युत्तिर ७
 इन्द्रमीशानमोजसा—भि स्तोमा अनृषत । सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ८ ७७

॥ १० ॥ (१।१।१-९)

(७८-९३९) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसः १
 इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे २
 इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं सोमस्य पीतये ३ ८०
 उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ४
 सेमं नः स्तोममा ग—ह्युपेदं सर्वनं सुतम् । गौरो न तृषितः पिब ५
 इमे सोमास इन्द्रवः सुतासो अधि बर्हिषि । तां इन्द्र सहसे पिब ६
 अयं ते स्तोमो अग्रियो हविस्पृगस्तु शन्तमः । अथा सोमं सुतं पिब ७

विश्वमित् सर्वनं सुत—मिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ८ ८५
 सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो । स्तवाम त्वा स्वाध्यः ९

॥ ६१ ॥ (ऋ० ८।१।१-२९)

[प्रगाथो (घोरः) काण्वः; ३-२९ मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ ।] १-४ प्रगाथः=
 (विषमा बृहती. समा सतोबृहती), ५-२९ बृहती ।

मा चिद्वन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
 इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुर्बुक्था च शंसत १
 अवक्क्षिणं वृषभं यथाजुं गां न चर्षणीसहम् ।
 विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् २
 यच्चिन्द्रि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।
 अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु ते ऽहा विश्वा च वर्धनम् ३
 वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् ।
 उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ४ ९०
 महे चन त्वामद्रिवः परां शुल्काय देयाम् ।
 न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शतार्य शतामघ ५
 वर्या इन्द्रासि मे पितु—रुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
 माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ६
 क्रैयथ केदसि पुरुत्रा चिन्द्रि ते मनः ।
 अलर्षि युधम खजकृत् पुरंदर प्र गायत्रा अंगासिषुः ७
 प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदुरः ।
 याभिः काण्वस्योप बर्हिःसदं यासद् वज्री भिनत पुरः ८
 ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।
 अश्वासो ये ते वृषणो रघुद्रुव—स्तेभिर्नस्तूयमा गहि ९ ९५
 आ त्वद्य संबर्हुषां हुवे गायत्रवेपसम् ।
 इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिष—मुरुधारामरंकृतम् १०
 यत् तुदत् सूर एतशं वङ्क वातस्य पर्णिना ।
 बहत् कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुः त्सरद् गन्धर्वमस्तृतम् ११

य ऋते चिदभिधिषः पुरा जन्तुभ्य आतृदः ।		
संधाता संधिं मघवा पुरुवसु—रिष्कर्ता विहृतं पुनः	१२	
मा भूम निष्टया इवेन्द्र त्वदरणा इव ।		
वनानि न प्रजहितान्यद्विवो दुरोषासो अमन्महि	१३	
अमन्महीदनाशवो ऽनुग्रासश्च वृत्रहन् ।		
सकृत् सु ते महता शूर राधसा ऽनु स्तोमं मुदीमहि	१४	१००
यद्वि स्तोमं मम श्रव—दुस्माकमिन्द्रमिन्दवः ।		
तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तुष्टयावृधः	१५	
आ त्वष्ट्य सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि ।		
उपस्तुतिर्मघोनां प्र त्वाव—त्वधा ते वरिम सुष्टुतिम्	१६	
सोता हि सोममद्रिभि—रेमेनमप्सु धावत ।		
गव्या वस्त्रेव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन् वक्षणाभ्यः	१७	
अध उमो अध वा द्विवो बृहतो रोचनादधि ।		
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा ऽऽ जाता सुक्रतो पृण	१८	
इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् ।		
शक्र एणं पीपयद् विश्वया धिया हिन्वानं न वाजयुम्	१९	१०५
मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं गिरा ।		
भूणिं मृगं न सर्वनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत	२०	
मदेनेषितं मद—मुग्रमुग्रेण शर्वसा ।		
विश्वेषां तरुतारं मवुच्युतं मदे हि ष्मा ददाति नः	२१	
शेवारि वार्या पुरु देवो मर्तीय वाशुषे ।		
स सुन्वते च स्तुवते च रासते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः	२२	
एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा ।		
सरो न प्रास्युदरं सपीतिभि—रा सोमेभिरुरु स्फुरम्	२३	
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।		
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये	२४	११०
आ त्वा रथे हिरण्यये हरीं मयूरशेप्या ।		
शितिपुष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये	२५	

पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव ।	
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुति—श्चारुर्मदाय पत्यंत	२६
य एको अस्ति कुंसना महौ उग्रो अभि व्रतैः ।	
गमत् स शिप्री न स योषदा गम—द्भवं न परि वर्जति	२७
त्वं पुरं चरिष्णवं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।	
त्वं भा अनु चरो अर्ध द्विता यद्विन्द्र हव्यो भुवः	२८
मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने विवः ।	
मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वस—वा स्तोमासो अवृत्सत	२९. ११५

॥ १२ ॥ (ऋ० ८।१।१-४०)

[मेधातिथिः काण्वः, (आङ्गिरसः प्रियमेधश्च)] । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।	अनाभयिन् ररिमा ते १	
नृभिर्धृतः सुतो अश्रै—रव्यो वारैः परिपूतः ।	अश्वो न निकतो नदीषु २	
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुर्मकर्म श्रीणन्तः ।	इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ३	
इन्द्र इत् सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः ।	अन्तर्वैवान् मर्त्याश्च ४	
न यं शुक्रो न दुराशी—र्न तृपा उरुव्यचसम् ।	अपस्पृण्वते सुहार्दम् ५	१२०
गोभिर्यदीमन्ये अस्मन् मृगं न वा मृगयन्ते ।	अभित्सरन्ति धेनुभिः ६	
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य ।	स्वे क्षये सुतपात्रः ७	
त्रयः कोशासः श्रोतन्ति तिस्रश्चम्बः सुपूर्णाः ।	समाने अधि भार्मन् ८	
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः क्षीरैर्मध्यत आशीर्तः ।	वृक्षा मन्दिष्ठः शूरस्य ९	
इमे तं इन्द्र सोमा—स्तीवा अस्मे सुतासः ।	शुक्रा आशिरं याचन्ते १०	१२५
तां आशिरं पुरोळाश—मिन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि ।	रेवन्तं हि त्वां शुणोमि ११	
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।	ऊधर्न नग्ना जरन्ते १२	
रेवा इद रेवतः स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः ।	प्रेदु हरिवः श्रुतस्य १३	
उक्थं चन शस्यमान—मगोररिरा चिकेत ।	न गायत्रं गीयमानं १४	
मा न इन्द्र पीयूतवे मा शर्धते परा दाः ।	शिक्षा शचीवः शर्चीभिः १५	१३०

वयमु त्वा तदिदं	इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थंभिर्जरन्तः	१६	
न धमन्यदा पपन	वज्रिन्नपसो नविण्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत	१७	
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	न स्वप्राय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादुमर्तन्दाः	१८	
ओ पु प्र याहि वाजेभिर्मा हृणीथा अभ्यस्मान् । महो इव युवजानिः		१९	
मो ष्वद्य दुर्हणावान्	त्सायं करद्वारे अस्मत । अश्रीर इव जामाता	२०	१३५
विद्वा ह्यस्य वीरस्य	भूगिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि	२१	
आ तू षिञ्च कण्वमन्तं	न घा विद्म शवसानात । यशस्तरं शतमूतेः	२२	
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय	सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नयाय	२३	
यो वेदिष्ठो अव्यथि	ष्वश्वान्तं जगितुभ्यः । वाजं स्तोतुभ्यो गोमन्तम्	२४	
पन्यपन्यमित् सोतार	आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय	२५	१४०
पाता वृत्रहा सुतमा	घा गमन्नारे अस्मत । नि यमेते शतमूतिः	२६	
एह हरीं ब्रह्मयुजां	श्रमा वक्षतः सखायम् । गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम्	२७	
स्वादवः सोमा आ याहि	श्रीताः सोमा आ याहि ।		
शिप्रिन्वृषीवः शचीवो	नायमच्छा सधुमादम्	२८	
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	महे राधसे नृम्णाय । इन्द्रं कारिणं बुधन्तः	२९	
गिरश्च यास्ते गिर्वाह	उक्था च तुभ्यं तानि । सत्रा दधिरे शवांसि	३०	१४५
एवेवेष तुविकूर्मिर्वाजाँ	एको वज्रहस्तः । सनादमृक्तो दयते	३१	
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः	पुरु पुरुहूतः । महान् महीभिः शचीभिः	३२	
यस्मिन् विश्वाश्रूणय	उत च्यौत्ना ज्रयांसि च । अनु घेन्मन्दी मघोनः	३३	
एष एतानि चकारेन्द्रो विश्वा	योऽति शृण्वे । वाजदावा मघोनाम्	३४	
प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाच्चिद्	यमवति । इनो वसु स हि वोळ्हा	३५	१५०
सनिता विप्रो अर्वन्दिर्हन्ता वृत्रं	नृभिः शूरः । सत्योऽविता विधन्तम्	३६	
यजध्वैनं प्रियमेधा	इन्द्रं सत्राचा मनसा । यो भूत् सोमैः सत्यमद्वा	३७	
गाथश्रवसं सत्पतिं	श्रवस्कामं पुरुत्मानम् । कण्वासो गात वाजिनम्	३८	
य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो	दात् सखा नृभ्यः शचीवान् । ये अस्मिन् काममश्रियन्	३९	
इत्था धीवन्तमद्विवः	काण्वं मेध्यातिथिम् । मेघो भूतोऽऽमि यन्नयः	४०	१५५

॥ १३ ॥ (ऋ० ८।३।१-२४)

[मेध्यातिथिः काण्वः] । प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती), २१ अनुष्टुप्, २२-२३ गायत्री, २४ बृहती ।

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।

अपिर्नो बोधि सधमाद्यो वृधेऽऽस्माँ अवन्तु ते धियः १

भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये ।

अस्माञ्चित्राभिरवतादुभिष्टिभिरा नः सुज्ञेषु यामय २

इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽभि स्तोमैरनूषत ३

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ४

इन्द्रमिदं देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ५

इन्द्रो मत्वा रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।

इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर् इन्द्रे सुवानास इन्द्रवः ६

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।

समीचीनासं ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ७

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।

अद्या तमस्य महिमानमायवो ऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ८

तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये ।

येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ९

येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।

सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे १०

शग्धी न इन्द्र यत् त्वा रयिं यामि सुवीर्यम् ।

शग्धि वाजाय प्रथमं सिषासते शग्धि स्तोमाय पूर्व्य ११

शग्धी नो अस्य यन्द्र पौरमाविथ धियं इन्द्र सिषासतः ।

शग्धि यथा रुशमं श्यावकं कृपमिन्द्र प्रावः स्वर्णरम् १२

कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।

नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गुणन्त आनशुः १३

कदु स्तुवन्त क्रतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।

कदा हव मघवान्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः १४

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।		
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव	१५	१७०
कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद धीतमानशुः ।		
इन्द्रं स्तोमैभिर्मह्यन्त आयवः प्रियमैधासो अस्वरन्	१६	
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम् हरीं इन्द्र परावतः ।		
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋग्वेभिरा गंहि	१७	
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसांतये ।		
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम्	१८	
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।		
निरबुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः	१९	
निरग्रयो रुरुचुनिर्ह सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।		
निरन्तरिक्षादधमो महामाहि कृपे तदिन्द्र पौंस्यम् ।	२०	१७५
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।		
विश्वेषां तमना शोभिष्ठ मुपेव विवि धावमानम्	२१	
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।		
अदाद् रायो विबोधनम्	२२	
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।		
अस्तं वयो न तुग्र्यम्	२३	
आत्मा पितुस्तनूर्वास ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।		
तुरीयमिद रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं द्रातारमब्रवम्	२४	

॥ १४ ॥ (ऋ० ८।३१।१-३०)

[मेधातिथिः काण्वः] । गायत्री ।

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गार्थया । मत्रे सोमस्य वोचत	१	१८०
यः सृबिन्दुमनर्शनिं पिप्रे द्वासमहीशुवम् । वर्धीदुग्रो रिणन्नपः	२	
न्यबुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहत्स्तिर । कृपे तदिन्द्र पौंस्यम्	३	
प्रति श्रुताय वो ध्रुवत् तूर्णांशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमृतये	४	
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्दानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्शसि	५	
यदि मे राणाः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गंहि	६	१८५
वयं घा ते अपि ष्मासि स्तोतारं इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः	७	

उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन् भूरिं ते वसु ८	
उत नो गोमंतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ९	
बुबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्रमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे १०	
यः संस्थे चिच्छतक्रतु—रादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरुवसुः ११	१९०
स नः शक्रश्चिदा शक्रद् दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरुतिभिः १२	
यो रायोऽवनिर्महान् त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमभि गायत १३	
आयन्तारं महिं स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा १४	
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतां नाम् । नकिर्वक्ता न द्वादिति १५	
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे १६	१९५
पन्य इदुपं गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् १७	
पन्य आ दर्दिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः । इन्द्रो यो यज्वनो बृधः १८	
वि षू चर स्वधा अनु कृष्णीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् १९	
पिब स्वधैनवाना—मुत यस्तुग्ये सचा । उतायमिन्द्र यस्तव २०	
अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब २१	२००
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् २२	
सूर्यो रश्मि यथा सृजा ऽऽ त्वा यच्छन्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्यक् २३	
अध्वर्यवा तु हि पित्र सोमं वीराय शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये २४	
य उन्नः फलिगं भिन—न्ययक् सिन्धूरवासृजत् । यो गोषु पक्कं धारयत् २५	
अहन् वृत्रमृचीषम और्णवाभर्महीशुवम् । हिमेनाविध्यदबुदम् २६	२०५
प्र व उग्राय निष्टुरे ऽषाळ्हाय प्रसक्षिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत २७	
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो देवेषु चेतति २८	
इह त्या संधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम् २९	
अर्वाञ्च त्वा पुरुषुत प्रियमैधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ३०	

॥ १५ ॥ (ऋ० ८।३३।१-१९)

[मेध्यातिथिः काण्वः] । बृहती, १६-१८ गायत्री, १९ अनुष्टुप् ।

वयं घ त्वा सुतार्धन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।	
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परिं स्तोतार आसते १	२१०
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।	
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम् इन्द्र स्वब्दीव वंसंगः २	

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दधिं सहस्रिणाम् ।		
पिशङ्गंरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे	३	
णाहि गायान्धसो मदु इन्द्राय मेध्यातिथे ।		
यः संमिश्रलो हर्योर्यः सुते सचा वज्री रथो हिरण्ययः	४	
यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे ।		
य आकरः सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः	५	
यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।		
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुषुतः कत्वा गौरिव शाकिनः	६	११५
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे ।		
अयं यः पुरो विभिनच्योर्जसा मन्दानः शिष्यन्धसः	७	
द्वाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।		
नकिष्ठा नि यमदा सुते गमो महोश्चरस्योर्जसा	८	
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।		
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्भवं नेन्द्रो योषत्या गमत	९	
सत्यमिथा वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः		
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अवावति श्रुतः	१०	
वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।		
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो	११	१२०
वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीपिन्ना भर ।		
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम्	१२	
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।		
नायमच्छा मघवा शृणवद् गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः	१३	
वहन्तु त्वा रथेष्ठा—मा हरयो रथयुजः ।		
तिरश्चिदुर्य सर्वनानि वृत्रह—न्नन्येषां या शतक्रतो	१४	
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।		
अस्माकं ते सर्वना सन्तु शंतमा मदाय द्युक्ष सोमपाः	१५	
नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान् वीर आनयत्	१६	१२५
इन्द्रश्चिद् घा तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः । उतो अह क्रतुं रघुम्	१७	
सतीं चिद् घा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद् धूर्वृष्ण उत्तरा	१८	

अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादुकौ हर ।

मा ते कशप्लुकौ दृशन् त्वी हि ब्रह्मा बभूविथ

१९

॥ १६ ॥ (ऋ० ८।४।१-१४)

[देवातिथिः काण्वः] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।

सिमा पुरु नृषूतो अस्यानवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशं

१

यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।

कण्वांसस्त्वा ब्रह्माभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि

२

२३०

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।

आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब

३

मन्दन्तु त्वा मघवान्निन्देन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।

आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः

४

प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।

विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षा इव येमिरे

५

सहस्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् ।

पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्यं द्वाश्रोति नमउक्तिभिः

६

मा भेम मा श्रमिष्मो—ग्रस्ये सस्ये तव ।

महत ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम्

७

२३५

सन्ध्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।

मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब

८

अश्वी रथी सुरुप इद गोमाँ इदिन्द्र ते सखा ।

श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप

९

ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु ।

निमेघमानो मघवन् विवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः

१०

अध्वर्यो द्वावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।

उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा

११

स्वयं चित् स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तुम्पसि ।

इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब

१२

२४०

रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।

अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो वाश्वध्वरम् १३

उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः ।

अर्वाञ्च त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप १४

॥ १७ ॥ (ऋ० ८।१।१-४५)

[वत्सः काण्वः] । गायत्री ।

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे १

प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा २

कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य सार्धनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ३

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कूटयः । समुद्रायेव सिन्धवः ४

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मैव रोदसी ५

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ६

इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न विद्युतः ७

गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ८

प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ९

अहमिन्द्रि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभं । अहं सूर्य इवाजनि १०

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद वृधे ११

ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः १२

यदस्य मन्युरध्वनीद् वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् १३

नि शुष्णं इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि । वृषा ह्युग्र शृण्विषे १४

न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः १५

यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्रथः १६

य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः १७

य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः । ममेदुग्र श्रुधी हवम् १८

इमास्त इन्द्र पृथ्वयो घृतं दुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः १९

या इन्द्र प्रस्वस्त्वा ऽऽसा गर्भमचक्रिन् । परि धर्मैव सूर्यम् २०

त्वामिच्छेवसरपते कण्वा उक्थेन वावृधुः । त्वां सुतास इन्द्रवः २१

तवेदिन्द्र प्रणीतिषु त प्रशस्तिरद्विवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः २२

आ न इन्द्र महीमिषं पुरं न दर्षि गोमतीम् । उत प्रजां सुवीर्यम् २३

२४५

२५०

२५५

२६०

२६५

उत त्यक्वाश्वश्वयं यदिन्द्र नाहुषीष्वा	। अग्ने विश्व प्रदीदयत् २४	
अभि व्रजं न तन्निषे सूर उपाकचक्षसम्	। यदिन्द्र मूळयासि नः २५	
यदृङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः	। महां अपार ओजसा २६	
तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये	। उरुज्यसमिन्दुभिः २७	
उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्	। धिया विप्रो अजायत २८	२७०
अतः समुद्रमुद्रतश्चिकित्वा अव पश्यति	। यतो विषान एजति २९	
आदित प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम्	। परो यद्विध्यते दिवा ३०	
कण्वांस इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम्	। उतो शविष्ठ वृण्यम् ३१	
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव	। उत प्र वर्धया मतिम् ३२	
उत ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः	। विप्रो अतक्षम जीवसे ३३	२७५
अभि कण्वा अनूषताऽऽपो न प्रवता यतीः	। इन्द्रं वनन्वती मतिः ३४	
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः	। अनुत्तमन्युमजरम् ३५	
आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम्	। इममिन्द्र सुतं पिब ३६	
त्वामिद वृत्रहन्तम् जनांसो वृक्तबर्हिषः	। हवन्ते वाजसातये ३७	
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम्	। अनु सुवानास इन्द्रवः ३८	२८०
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति	। मत्स्वा विवस्वतो मती ३९	
वावुधान उप द्यवि वृषा वज्र्यरोरवीत्	। वृत्रहा सोमपातमः ४०	
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा	। इन्द्रं चोष्क्यसे वसु ४१	
अस्माकं त्वा सुता उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः	। शतं वहन्तु हरयः ४२	
इमां सु पूण्यां धियं मधोघृतस्य पिप्युषीम्	। कण्वा उक्थेन वावृधुः ४३	२८५
इन्द्रमिद विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः	। इन्द्रं सनिप्युरुतये ४४	
अर्वाञ्च त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरीं	। सोमपेयाय वक्षतः ४५	

॥ १८ ॥ (ऋ० ८।१२।१-३३)

[पर्वतः काण्वः] । उष्णिक्. ३३ शंकुमती (पिंगलमतेन) ।

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति	। येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे १	
येना दशग्वमधिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम्	। येना समुद्रमाविथा तमीमहे २	
येन सिन्धुं महीरपो रथा इव प्रचोदयः	। पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ३	२९०
इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्विवः	। येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ४	
इमं जुषस्व गिर्वणः समुद्र इव पिन्वते	। इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ५	

यो नो देवः परावतः साखित्वनाय मामहे ।	दिवो न वृष्टिं प्रथयन् ववक्षिथ	६
ववक्षुरस्य केतव उत वज्रो गर्भस्त्योः ।	यत् सूर्यो न रोदसी अवर्धयत्	७
यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः ।	आदित् तं इन्द्रियं महि प्र वावृधे	८ १९५
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यर्शसानमोषति ।	अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे	९
इयं तं ऋत्विषावती धीतिरेति नवीयसी ।	सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत्	१०
गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक् ।	स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत्	११
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये ।	प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत्	१२
यं विप्रा उक्थवाहसो ऽभिप्रमन्दुरायवः ।	घृतं न पिप्य आसन्युतस्य यत्	१३ ३००
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् ।	पुरुप्रशस्तमूतयं क्रतस्य यत्	१४
अभि वह्नय ऊतये ऽनूषत् प्रशस्तये ।	न देव विव्रता हरीं क्रतस्य यत्	१५
यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद् वा घ त्रित आप्तये ।	यद् वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः	१६
यद् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।	अस्माकमित् सुते रणा समिन्दुभिः	१७
यद् वासिं सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।	उक्थे वा यस्य रणयसि समिन्दुभिः	१८ ३०५
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि ।	अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः	१९
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् ।	होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः	२०
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वोरुत प्रशस्तयः ।	विश्वा वसूनि दाशुषे व्यानशुः	२१
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः ।	इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे	२२
महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् ।	अर्कैरभि प्र णोनुमः समोजसे	२३ ३१०
न थं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।	अमादिदस्य तित्विषे समोजसः	२४
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२५
यदा वृत्रं नदीवृतं शर्वसा वज्रिन्नवधीः ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२६
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२७
यदा ते हर्यता हरीं वावृधाते द्विदेद्वे ।	आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	२८ ३१५
यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे ।	आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	२९
यदा सूर्यममुं विवि शुक्रं ज्योतिरधारयः ।	आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	३०
इमां तं इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयति धीतिभिः ।	जामिं पदेव पिप्रीतीं प्राध्वरे	३१
यदस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् ।	नाभा यज्ञस्य क्रोहना प्राध्वरे	३२
सुवीर्यं स्वश्वं सुगव्यमिन्द्र वद्वि नः ।	होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे	३३ ३१०

॥ १९ ॥ (ऋ० ८।१३।१-३३)

[नारदः काण्वः] । उष्णिक् ।

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	क्रतुं पुनीत उक्थ्यम्	। विदे वृधस्य दक्षसो महान् हि पः	१
स प्रथमे व्योमनि	देवानां सवने वृधः	। सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित	२
तमह्वे वाजसातय	इन्द्रं भराय शुष्मिणम्	। भवा नः सुप्ते अन्तमः सखा वृधे	३
इयं तं इन्द्र गर्वणो	रातिः क्षरति सुन्वतः	। मन्वानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	४
नूनं तदिन्द्र दद्धि नो	यत् त्वा सुन्वन्त ईमहे	। रयिं नश्चित्रमा भरा स्वाविंदम	५ ३२५
स्तोता यत् ते विचर्षणि	रतिप्रशर्धयद् गिरः	। वया इवानु रोहन्त जुपन्त यत्	६
प्रत्नवज्जनया गिरः	शृणुधी जरिर्हवम्	। मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वन	७
क्रीळन्त्यस्य सूनुता	आपो न प्रवता यतीः	। अया धिया य उच्यते पतिर्विवः	८
उतो पतिर्य उच्यते	कृष्टीनामेक इद् वशी	। तमोवृधैरवस्युभिः सुते रण	९
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं	हरी यस्य प्रसक्षिणां	। गन्तारा वृशुषो गृहं नमस्विनः	१० ३३०
तुतुजानो महेमते	ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः	। आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते	११
इन्द्रं शविष्ठ सत्पते	रयिं गुणत्सु धारय	। श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम	१२
हवे त्वा सूर उदिते	हवे मध्यंदिने विवः	। जुपाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि	१३
आ तू गहि प्र तु द्रव	मत्स्वा सुतस्य गोमतः	। तन्तुं तनुष्व पूर्य यथा विदे	१४
यच्छक्रासि परावति	यदवावति वृत्रहन्	। यद् वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि	१५ ३३५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	इन्द्रं सुतास इन्दवः	। इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिपुः	१६
तमिद् विप्रा अवस्यवः	प्रवत्वातीभिरुतिभिः	। इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन् वया इव	१७
त्रिकवृकेषु चेतनं	देवासो यज्ञमन्नत	। तमिद् वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम्	१८
स्तोता यत् ते अनुव्रत	उक्थान्यृतुथा वृधे	। शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः	१९
तदिद् रुद्रस्य चेतति	यहं प्रत्नेषु धामसु	। मनो यत्रा वि तद् वृधुर्विचेतसः	२० ३४०
यदि मे सख्यमावर	इमस्य पाह्यन्धसः	। येन विश्वा अति द्विषो अतारिम	२१
कदा तं इन्द्र गर्वणः	स्तोता भवाति शंतमः	। कदा नो गव्ये अश्व्ये वसो दधः	२२
उत ते सुष्टुता हरी	वृषणा वहतो रथम्	। अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे	२३
तमीमहे पुरुष्टुतं	यहं प्रत्नाभिरुतिभिः	। नि बर्हिषि प्रिये सवृद्ध द्विता	२४
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	ऋषिष्टुताभिरुतिभिः	। धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः	२५ ३४५
इन्द्र त्वमवितेदसी	त्था स्तुवतो अद्रिवः	। ऋतादियमि ते धियं मनोयुजम्	२६
इह त्या सधमाद्या	युजानः सोमपीतये	। हरी इन्द्र प्रतद्वसु अभि स्वर	२७

अभि स्वरन्तु ये तव	रुद्रासः सक्षत श्रियम्	। उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः	२८
इमा अस्य प्रतूर्तयः	पदं जुषन्त यद् द्विवि	। नामा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे	२९
अयं दीर्घाय चक्षसे	प्राचिं प्रयत्यध्वरे	। मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्य	३० ३५०
वृषायमिन्द्र ते रथं	उतो ते वृषणा हरीं	। वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः	३१
वृषा ग्रावा वृषा मरुतो	वृषा सोमो अयं सुतः	। वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः	३२
वृषा त्वा वृषणं हुवे	वज्रिश्चित्राभिरुतिभिः	। वावन्थ हि प्रतिष्ठुतिं वृषा हवः	३३

॥ २० ॥ (ऋ० ८।१४।१-१५)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ] । गायत्री ।

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्	। स्तोता मे गोषखा स्यात्	१
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे	। यदहं गोपतिः स्याम्	२ ३५५
धेनुष्ट इन्द्र सूनता यजमानाय सुन्वते	। गामश्वं पिप्युषी दुहे	३
न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः	। यद् दित्ससि स्तुतो मघम्	४
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत्	। चक्राण ओपशं द्विवि	५
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः	। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे	६
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना	। इन्द्रो यदभिनद् वलम्	७ ३६०
उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहां सतीः	। अर्वाञ्च नुनुदे वलम्	८
इन्द्रेण रोचना द्विवो हृळ्हानि दंहितानि च	। स्थिराणि न पराणुदे	९
अपामूर्मिमदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते	। वि ते मदा अराजिषुः	१०
त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः	। स्तोतृणामुत भद्रकृत्	११
इन्द्रमित केशिना हरीं सोमपेयाय वक्षतः	। उप यज्ञं सुरार्धसम्	१२ ३६५
अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः	। विश्वा यदजयः स्पृधः	१३
मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः	। अव दस्यूरधूनुथाः	१४
असुन्वामिन्द्र संसद्वं विषूचीं व्यनाशयः	। सोमपा उत्तरो भवन्	१५

॥ २१ ॥ (ऋ० ८।१५।१-१३)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ] । उणिक् ।

तम्बुभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं	। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत	१
यस्य द्विबर्हसो बृहत् सहो दाधार रोदसी	। गिरिरञ्जो अपः स्ववृषत्वना	२ ३७०
स राजसि पुरुष्टुतं एको वृत्राणि जिघ्रसे	। इन्द्र जैत्रा श्वस्या च यन्तवे	३
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पुत्सु सांसहिम्	। उ लोककृत्नुमद्विवो हरिश्रियम्	४

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ	। मन्वानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	५
तदुद्या चित् त उक्थिनो ऽनुं ध्रुवन्ति पूर्वथा	। वृषपत्नीरपो जया द्विवेदिवे	६
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् तव शुष्ममुत क्रतुम्	। वज्रं शिशति धिषणा वरेण्यम्	७ ३७५
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः	। त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे	८
त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः	। त्वां शर्धो मकुत्यनु मारुतम्	९
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे	। सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे	१०
सत्रा त्वं पुरुषुत एको वृत्राणि तोशसे	। नान्य इन्द्रात् करणं भूय इन्वाति	११
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतये	। अस्माकंभिर्नृभिस्त्रा स्वर्जय	१२ ३८०
अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन्	। इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम्	१३

॥ २२ ॥ (ऋ० ८।१६।१-१२)

[इरिम्बिठिः काण्वः] । गायत्री ।

प्र सत्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः	। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्	१
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या	। अपामवो न समुद्रे	२
तं सुष्ठुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम्	। महो वाजिनं सनिभ्यः	३
यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तर्कत्राः	। हर्षुमन्तः शूरसातौ	४ ३८५
तमिद् धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते	। येषामिन्द्रस्ते जयन्ति	५
तमिच्छयौत्तरायन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः	। एष इन्द्रो वरिवस्कृत	६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः पुरु पुरुहूतः	। महान् महीभिः शचीभिः	७
सः स्तोम्यः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः	। एकश्चित् सत्राभिभूतिः	८
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः	। इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः	९ ३९०
प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु	। सामह्वासं युधामित्रान्	१०
स नः परिः पारयाति स्वास्ति नावा पुरुहूतः	। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः	११
स त्वं न इन्द्र वाजैभिर्दशस्या च गातुया च	। अच्छा च नः सुमं नैषि	१२

॥ २३ ॥ (ऋ० ८।१७।१-१५)

[इरिम्बिठिः काण्वः] । [१४ वास्तोष्पतिर्वा] । गायत्री, प्रगाथः= (१४ बृहती, १५ सतोबृहती) ।

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्	। एदं बर्हिः सद्रो मम	१
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना	। उप ब्रह्माणि नः शृणु	२ ३९५
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः	। सुतावन्तो हवामहे	३
आ नो याहि सुतावतो ऽस्माकं सुष्टुतीरुप	। पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः	४

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्यो—रनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वा मधु	५
स्वादुष्टे अस्तु संसुद्रे मधुमान् तन्वेद तव । सोमः शर्मस्तु ते हृदे	६
अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु	७ ४००
तुविश्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते	८
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहञ्जहि	९
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते	१०
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब	११
शाचिगो शाचिपूजना—स्य रणाय ते सुतः । आखण्डल प्र हूयसे	१२ ४०५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन् दध आ मनः	१३
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां—सत्रं सोम्यानाम् ।	
द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीना—मिन्द्रो मुनीनां सखा	१४
पृदाकुसानुर्यजतो गवेपण एकः सन्नाभि भूर्यसः ।	
भूर्णिमश्वं नयत् तुजा पुरो गृभे—न्द्रं सोमस्य पीतये	१५

॥ २४ ॥ (ऋ० ८।२।१-१६)

[सोभरिः काण्वः] । प्रगाथः— (विषमा ककुप् समा सतोवृहती) ।

वयमु त्वामपूर्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे	१
उप त्वा कर्मन्नृतये स नो युवो—ग्रश्चक्राम यो धूषत् ।	
त्वामिन्द्रचवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम	२ ४१०
आ याहीम इन्द्रवो ऽश्वपते गोपते उर्वरापते । सोमं सोमपते पिब	३
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम ।	
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये	४
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः	५
अच्छा च त्वैना नमसा वदाममि किं मुहुश्चिद् वि दीधयः ।	
सन्ति कामासो हरिवो दुदिङ्गं स्मो वयं सन्ति नो धियः	६
नूत्ना इदिन्द्र ते वय—मूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः । विद्या पुरा परीणसः	७ ४१५
विद्या सखित्वमुत शूर भोज्य—मा ते ता वज्रिन्नीमहे ।	
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति	८
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य अनिनाय तमु वः स्तुषे । सखाय इन्द्रमृतये	९
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।	
आ तु नः स वयति गव्यमश्वं स्तोतृभ्यो मघवा शतम्	१०

त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभं ब्रुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमतः	११
जयेम कारे पुरुहूत कारिणो ऽभि तिष्ठेम दूढ्यः ।	
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूश्रूयाम चा—ऽवेरिन्द्र प्र णो धियः	१२ ४२०
अभ्रातृव्यो अना त्व—मनापिरिन्द्र जनुषां सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे	१३
नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीर्यन्ति ते सुराश्वः ।	
यदा कृणोषि नदुर्नु समूहस्या—दित पितेव हूयसे	१४
मा ते अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचां सुते	१५
मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।	
हृव्हा चिद्वयः प्र मृशाभ्या भर न ते वामान आदभे	१६

॥ २५ ॥ (क्र० ८।३४।१-१८)

[नीपातिथिः काण्वः, १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः] । अनुष्टुप्, १६-१८ गायत्री ।

एन्द्र याहि हरिभि—रुप कण्वस्य सुष्टुतिम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१ ४२५
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	२
अत्रा वि नेमिरेषा—मुरां न धूनुते वृकः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	३
आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	४
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाप्यम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	५
स्मत्पुनन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	६ (४३०)
आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	७
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	८
आ त्वा मवृच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	९
आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१०
आ नो याह्युपश्रु—त्युक्थेषु रणया इह । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	११ (४३५)
सकृपैरा सु नो गहि संभृतैः संभृताश्वः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१२
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१३
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर दद्वहि । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१४
आ नः सहस्रशो भरा—ऽयुतानि शतानि च । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१५
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः । ओजिष्ठमश्व्यं पशुम्	१६ (४४०)
य ऋजा वातरहसो ऽरुषासो रघुव्यदः । भ्राजन्ते सूर्या इव	१७
पारावतस्य रातिषु इवचक्रेष्वशुषु । तिष्ठं वनस्य मध्य आ	१८

॥ २६ ॥ (ऋ० ८।४।१-४२)

[त्रिशोकः काण्वः] । [१ अग्नीन्द्रौ] । गायत्री ।

आ घा ये अग्निमिन्धते	स्तृणन्ति बहिरानुषक् ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	१
बृहन्निद्रिध्म एषां भूरिं शस्तं पृथुः स्वरुः	।	येषामिन्द्रो युवा सखा	२
अयुद्ध इद युधा वृतं शूर आर्जति सत्वभिः	।	येषामिन्द्रो युवा सखा	३ ४४५
आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद वि मातरम्	।	क उग्राः के ह शृण्वरे	४
प्रति त्वा शवसी वदद गिरावप्सो न योधिषत्	।	यस्ते शत्रुत्वमाचके	५
उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत्	।	यद् वीळयासि वीळु तत्	६
यदाजिं यात्याजिकृदिन्द्रः स्वश्वयुरुप	।	रथीतमो रथीनाम्	७
वि पु विश्वा अभियुजो वज्रिन् विष्वग्यथा बृह	।	भवा नः सुश्रवस्तमः	८ ४५०
अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये	।	न यं धूर्वन्ति धूर्तयः	९
वृज्याम ते परि द्विषो ऽरं ते शक्र दावने	।	गमेमेदिन्द्र गोमंतः	१०
शनैश्चिद यन्तो अद्रिवो ऽश्वावन्तः शतग्विनः	।	विवक्षणा अनेहसः	११
ऊर्ध्वा हि ते विवेदिवे सहस्रा सूनृतां शता	।	जरितृभ्यो विमंहते	१२
विद्वा हि त्वा धनंजयमिन्द्र हृळ्हा चिदारुजम्	।	आद्वारिणं यथा गर्यम्	१३ ४५५
ककुहं चित् त्वा कवे मन्दन्तु धृष्णविन्दवः	।	आ त्वा पणिं यदीमहे	१४
यस्ते रेवां अदाशुरिः प्रममर्षं मघत्तये	।	तस्य नो वेदु आ भर	१५
इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः	।	पुष्टार्वन्तो यथा पशुम्	१६
उत त्वावधिं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये	।	दूराविह हवामहे	१७
यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत	।	भवेरापिर्नो अन्तमः	१८ ४६०
यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि	।	गोदा इदिन्द्र बोधि नः	१९
आ त्वा रम्भं न जिर्वयो ररम्भा शवसस्पते	।	उश्मसिं त्वा सधस्थ आ	२०
स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने	।	नक्रियं वृण्वते युधि	२१
अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये	।	तृम्पा व्यश्रुही मदम्	२२
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्	।	माकीं ब्रह्मद्विषो वनः	२३ ४६५
इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे	।	सरो गौरो यथा पिब	२४
या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे	।	ता संसत्सु प्र वोचत	२५
अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे	।	अत्रादिदिष्ट पौंस्यम्	२६
सूत्यं तत् तुर्वशे यदौ विदानो अह्मवाप्यम्	।	व्यानद् तुर्वणे शमिं	२७

तरणिं वो जनानां त्रदं वार्जस्य गोमंतः ।	समानसु प्र शंसिषम्	२८ ४७०
ऋमुक्षणं न वर्तव उक्थेषु तुष्टयावृधम् ।	इन्द्रं सोमे सचा सुते	२९
यः कुन्तदिद वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम् ।	गोभ्यो गातुं निरेतवे	३०
यद् दधिषे मनस्यसि मन्वानः प्रेदियक्षसि ।	मा तत् करिन्द्र मूळ्य	३१
वृधं चिद्धि त्वावतः कृतं शृण्वे अधि क्षमि ।	जिगात्विन्द्र ते मनः	३२
तवेदु ताः सुकीर्तयो ऽसन्नुत प्रशस्तयः ।	यदिन्द्र मूळयासि नः	३३ ४७५
मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु ।	वधीर्मा शूर भूरिषु	३४
बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः ।	दुस्मादुहमृतीषहः	३५
मा सख्युः शूनमा विव्रे मा पुत्रस्य प्रभूवसो ।	आवृत्वद् भूतु ते मनः	३६
को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत् ।	जहा को अस्मदीषते	३७
एवारं वृषभा सुते ऽसिन्वन् भूर्यावयः ।	श्वघ्नीव निवता चरन्	३८ ४८०
आ त एता वचोयुजा हरीं गृभ्णे सुमद्रथा ।	यदी ब्रह्मभ्य इहदः	३९
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।	वसुं स्पार्हं तदा भर	४०
यद्रीळाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शानि पराभृतम् ।	वसुं स्पार्हं तदा भर	४१
यस्य ते विश्वमानुषो भूरेकुत्तस्य वेदति ।	वसुं स्पार्हं तदा भर	४२

॥ २७ ॥ (ऋ० ८।४९।१-१०)

[प्रस्कण्वः काण्वः] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोषुहती) ।

अभि प्र वः सुरार्धस—मिन्द्रमर्च यथा विदे ।		
यो जरितृभ्यो मघवा पुरुवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ।	१	४८५
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि द्वाशुषे ।		
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ।	२	
आ त्वा सुतास इन्द्रवो मवा य इन्द्र गिर्वणः ।		
आपो न वज्रिन्नन्वोक्थं सरः पूणान्ति शूर राधसे ।	३	
अनेहसं प्रतरणं विवक्ष्णं मध्वः स्वादिष्ठमीं पिब ।		
आ यथा मन्दसानः किरासि नः प्र क्षुदेव त्मना धूषत् ।	४	
आ नः स्तोममुप द्रव—द्वियानो अश्वो न सोतृभिः ।		
यं ते स्वधावन्स्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः ।	५	
उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम् विभूतिमक्षितावसुम् ।		
उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते क्षरन्तीन्द्र धीतयः ।	६	४९०

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।

अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गंहि ७

अजिरासो हरयो ये त आशवो वार्ता इव प्रसक्षिणः ।

येभिरपत्यं मनुषः परीर्यसे येभिर्विश्वं स्वर्हृशे ८

एतावतस्त ईमह इन्द्र सुन्नस्य गोर्मतः ।

यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने ९

यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशवजे ।

यथा गोशर्ये असिनोर्ऋजिष्वनीन्द्र गोमद्विरण्यवत् १०

॥ २८ ॥ (ऋ० ८।५०।१-१०)

[पुष्टिगुः काण्वः] । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

प्र सु श्रुतं सुरार्धसमर्चा शक्रमभिष्टये ।

यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहंत १ ४९५

शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।

गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदी सुता अमन्दिषुः २

यदी सुतास इन्द्रवो ऽभि प्रियममन्दिषुः ।

आपो न धायि सवनं म आ वसो दुधा इवोप दाशुषे ३

अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतयः ।

आ त्वा वसो हवमानास इन्द्रव उप स्तोत्रेषु दधिरे ४

आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते ।

यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तयः पौरे छन्दयसे हवम् ५

प्र वीरमुग्रं विविचिं धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः ।

उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ दाशुषे ६ ५००

यद्ध नूनं परावति यद् वा पृथिव्यां विवि ।

युजान इन्द्र हरिभिर्महेमत ऋण्व ऋण्वेभिरा गंहि ७

रथिरासो हरयो ये ते अस्त्रिध ओजो वार्तस्य पिप्रति ।

येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीर्यसे ८

एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः ।

यथा प्राव एतं कृत्वये धने यथा वशं दशवजे ९

यथा कण्वे मघवन् मेधे अध्वरे वीर्घनीथे दमूनसि ।

यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिभियम् १०

॥ २९ ॥ (ऋ० ८।५१।१-१०)

(५०५-५१४) श्रुष्टिगुः काण्वः । प्रगाथः- (विषमा बृहती; समा सतोबृहती) ।

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।

नीपातिथौ मघवन् मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा १

५०५

पार्षद्वाणः प्रस्कृण्वं समसादयच्छयानं जिविमुद्धितम् ।

सहस्राण्यसिपासद् गवामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः २

य उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः ।

इन्द्रं तमच्छा वदु नव्यस्या मृत्यरिण्यन्तं न भोजसे ३

यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानुचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे ।

स त्विमा विश्वा भुवनानि चिक्रदुदादिज्जनिष्ट पोंस्यम् ४

यो नो दाता वसूनामिन्द्रं तं हृमहे वयम् ।

विद्या ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ५

यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्रुते ।

तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ६

५१०

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्वसि दाशुषे ।

उपोषेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ७

प्र यो ननक्षे अभ्योजसा किवि वधैः शुष्णं निघोषयन् ।

यदेदस्तम्भीत् प्रथयन्नमं दिवमादिज्जनिष्ट पार्थिवः ८

यस्यायं विश्व आयो दासः श्रेवधिपा अरिः ।

तिरश्चिदुर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत सो अज्यते रयिः ९

तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्रुतं विप्रासो अर्कमानुचुः ।

अस्मे रयिः पप्रथे वृण्यं शवो ऽस्मे सुवानास इन्दवः १०

॥ ३० ॥ (ऋ० ८।५१।१-१०)

(५१५-५१४) आयुः काण्वः । प्रगाथः- (विषमा बृहती; समा सतोबृहती) ।

यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।

यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्यायौ मादयसे सचा १

५१५

पृषधे मेध्ये मातरिष्वनीन्द्र सुवाने अमन्दथाः ।

यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि २

य उक्था केवला वृधे यः सोमं धृषितापिबत ।

यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः ३

यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजे वाजिच्छतक्रतो ।

तं त्वा वयं सुदुष्कामिव गोदुहो जुहूमसि भवस्यवः

४

यो नो वृता स नः पिता मह्यो उग्र ईशानकृत् ।

अयामन्नग्रो मघवा पुरुवसु—गौरश्वस्य प्र दातु नः

५

यस्मै त्वं वंसो वृणाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।

वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे

६

५१०

कदा चन प्र युच्छस्यु—भे नि पांसि जन्मनी ।

तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रिय—मा तस्थावमृतं द्विवि

७

यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि वाशुषे ।

अस्माकं गिर उत सुष्टुतिं वंसो कण्ववच्छृणुधी हवम्

८

अस्तावि मन्म पुन्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।

पूर्वाकृतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत

९

समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।

सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः

१०

॥ ३१ ॥ (ऋ० ८।५३।१-८)

(५२५-५३२) मेध्यः काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।

पूर्भित्तमं मघवन्निन्द्र गोविदु—मीशानं राय ईमहे

१

५२५

य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो द्विवेदिवे ।

तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे

२

आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः ।

ये परावर्ति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः

३

विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।

शीष्टेषु चित् ते मक्रिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तुम्पसि

४

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।

आ शंतम् शंतमाभिरभिष्टिभि—रा स्वापि स्वापिभिः

५

आजितुरं सत्यं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वामगम् ।

प्र सू तिरा शचीभिर्ये त उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक्

६

५३०

यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते ।

यं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससवांसो मनामहे

७

अहं हि ते हरिवो ब्रह्म वाजयु—राजिं यामि सद्गोतिभिः ।

त्वामिवेव तममे समश्वयु—र्गङ्गुरग्रे मथीनाम्

८

॥ ३२ ॥ (ऋ० ८।५४।१-६)

(५३३-५३८) मातरिष्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

एतत् तं इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गुणन्ति कारवः ।

ते स्तोमन्त ऊर्जमावन् घृतश्रुतं पौरासो नक्षन् धीतिभिः

१

नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्दसे ।

यथा संवर्ते अमंदो यथा कुश एवास्मे इन्द्र मत्स्व

२

यदिन्द्र राधो अस्ति ते माघोनं मघवत्तम ।

तेन नो बोधि सधमाद्यो वृधे भगो वृत्रहन्

५

आजिपते नृपते त्वमिन्द्रि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो ।

वीती होत्राभिरुत देववीतिभिः ससवांसो वि शृण्विरे

६

सन्ति ह्यार्य आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।

अस्मान् नक्षस्व मघवन्नुपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्

७

वयं तं इन्द्र स्तोमैर्भिर्विधेम त्वमस्माकं शतक्रतो ।

महिं स्थूरं शशयं राधो अह्वयं प्रस्कण्वाय नि तोशय

८

॥ ३३ ॥ (ऋ० ८।५५।१-५)

(५३९-५४३) कुशः काण्वः । [प्रस्कण्वश्च] । गायत्री, ३, ५, अनुष्टुप् ।

भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं व्यस्यमभ्यारयति । राधस्ते दस्यवे वृक

१

शतं श्वेतासं उक्ष्णो विवि तारो न रोचन्ते । मृह्णा दिवं न तस्तभुः

२

शतं वेणूञ्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि ।

शतं मे बलवजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम्

३

सुदेवाः स्थ काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वांसो न चङ्क्रमत

४

आदित् साप्तस्य चर्किर—न्नानूनस्य महि श्रवः ।

इयावीरतिध्वसन् पथ—श्चक्षुषा च न संनशे

५

॥ ३४ ॥ (ऋ० ८।५६।१-४)

(५४४-५४७) पृषधः काण्वः । गायत्री ।

प्रति ते दस्यवे वृक राधो अवुश्यह्वयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः

१

दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्वायो अमंहत

२

शतं मे गर्वमानां शतमूर्णावितीनाम् । शतं दासो अति स्रजः

३

तत्रो अपि प्राणीयत पूतक्रतायै व्यक्ता । अश्वानामिन्न यूथ्याम् ४

॥ ३५ ॥ (क्र० ८।६।१-१८)

(५४८-५६५) भर्गः प्रगाथः । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ; १७ शंकुमती ।

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।		
सन्नाच्या मघवा सोमपीतये धिया शर्विष्ठ आ गमन्त	१	
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्ठतक्षतुः ।		
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः	२	
आ वृषस्व पुरुवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।		
विद्मा हि त्वा हरिवः पूतसु सासहि—मधृष्टं चिद् दधृष्यणिम	३	५५०
अप्रामिसत्य मघवन् तथेदस—दिन्द्र क्त्वा यथा वशः ।		
सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः	४	
शग्ध्युडुषु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।		
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदु—मनु शूर चरामसि	५	
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवाम—स्युत्सो देव हिरण्ययः ।		
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत त्वे यद्यद्यामि तदा भर्ग	६	
त्वं होहि चेरवे विदा भगं वसुतये ।		
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्ठय उदिन्द्राश्वमिष्ठय	७	
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।		
आ पुरंदुरं चक्रम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे	८	५५५
अविप्रो वा यदविध—द्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।		
स प्र ममन्दत् त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन	९	
उग्रबाहुर्भक्षकृत्वा पुरंदुरो यदि मे शृणवन्ध्रवभ ।		
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे	१०	
न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः ।		
यदिन्निवन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहे	११	
उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहि—मुणकातिमदाभ्यम् ।		
वेदा भूमं चित् सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदु नशत्	१२	
यत् इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।		
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभि—र्वि द्विपो वि मृधो जहि	१३	५६०

त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधुतः ।	
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे	१४
इन्द्रः स्पृष्टुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।	
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात् पातु नः पुरः	१५
त्वं नः पश्चाद्धरादुत्तरात् पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।	
आरे अस्मत् कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरेद्वीः	१६
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।	
विश्वा च नो जरितुन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः	१७
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्र्यो वीर्याय कम् ।	
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः	१८

५६५

॥ ३६ ॥ (क्र० ८१२१-१२)

(५६६-५७७) प्रगाथो घोरः काण्वः । पङ्क्तिः, ७-९ बृहती ।

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति ।	
उक्थेरिन्द्रस्य माहिं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	१
अयुजो असमो नृभिरेकः कृष्टीरयास्यः ।	
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः	२
अहितेन चिद्वता जीरदानुः सिषासति ।	
प्रवाच्यमिन्द्र तत् तव वीर्याणि करिष्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	३
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।	
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	४
धूषतश्चिद् धूषन्मनः कृणोषीन्द्र यत् त्वम् ।	
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	५
अव चष्ट ऋचीषमो ऽवता इव मानुषः ।	
जुष्टी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः	६
विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।	
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुन्दुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः	७
गुणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।	
यन्द्रंसि वृत्रमौजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	८
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।	
विदे तदिन्द्रश्चेतनमर्ध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	९

५७०

उज्जातमिन्द्र ते शब् उत त्वामुत तव क्रतुम् ।

भूरिगो भूरि वावृधु—मर्धवन् तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः १०

५७५

अहं च त्वं च वृत्रहन् त्सं युज्याव सनिभ्य आ ।

अरातीवा चिद्विवो ऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ११

सत्यमिद वा उ तं वय—मिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।

महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतीषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः १२

॥ ३७ ॥ (ऋ० ८।६३।१-११)

(५७८-६१२) प्रगाथः काण्वः । गायत्री; १, ४-५, ७ अनुष्टुप् ।

स पूर्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे १

दिवो मानं नोत्सदन् त्सोमपृष्ठासो अद्रयः । उक्था ब्रह्म च शंस्या २

स विद्रां अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदप । स्तुपे तदस्य पौंस्यम् ३ ५८०

स प्रलथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवो अर्कस्य होम—न्यस्मन्ना गन्त्ववसे ४

आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः । श्वात्रमर्का अनूपते—न्द्र गोत्रस्य द्वावने ५

इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्तानि च । यमर्का अध्वरं विदुः ६

यत् पाञ्चजन्यया विशे—न्द्रे घोषा असृक्षत । अस्तृणाद्बर्हणा विपोऽ ७र्यो मानस्य स क्षयः ७

इयमुं ते अनुष्टुति—श्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ८ ५८५

अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ ददे ९

तदधाना अवस्यवो युष्माभिर्वक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वुधे १०

बह्वृत्विर्वाय धाम्न ऋक्भिः शूर नोनुमः । जेषमिन्द्र त्वर्या युजा ११

॥ ३८ ॥ (ऋ० ८।६४।१-१२) गायत्री ।

उत त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि १

पदा पूर्णारधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति २

५९०

त्वमीशिषे सुताना—मिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ३

एहि प्रेहि क्षयो वि—व्याऽघोषश्चर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी ४

त्यं चित् पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणम् । वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ५

वयमुं त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ६

क्व॑ स्य वृषभो युवा तुविग्नीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं संपर्यति ७

५९५

कस्य स्वित् सर्वनं वृषा जुजुष्वँ अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ८

कं ते वृाना असक्षत वृत्रहन् कं सुवीर्या	। उक्थे क उ स्विदन्तमः	९	
अयं ते मानुषे जने सोमः पुरुषु सूयते	। तस्येहि प्र व्रवा पिब	१०	
अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः	। अर्जीकीये मदिन्तमः	११	
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये	। एहीमिन्द्र व्रवा पिब	१२	६००

॥ ३९ ॥ (ऋ० ८।६५।१-१२)

यदिन्द्र प्रागपागुदुङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः	। आ याहि तूयमाशुभिः	१	
यद्वा प्रस्रवणे विवो मादयासे स्वर्णरे	। यद्वा समुद्रे अन्धसः	२	
आ त्वा गीर्भिमहामुरुं हुवे गामिव भोजसे	। इन्द्र सोमस्य पीतये	३	
आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः	। रथे वहन्तु बिभ्रतः	४	
इन्द्रं गृणीष उ स्तुषे महौ उग्र ईशानकृत्	। एहि नः सुतं पिब	५	६०५
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे	। इदं नो बर्हिःसदे	६	
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्	। तं त्वा वयं हवामहे	७	
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः	। जुषाण इन्द्र तत् पिब	८	
विश्वौ अर्यो विपश्चितो ऽति स्तूयमा गहि	। अस्मे धेहि श्रवो बृहत्	९	
वृता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम्	। मा देवा मघवा रिषत्	१०	६१०
सहस्रे पृषतीनामधि श्रन्द्रं बृहत् पृथु	। शुक्रं हिरण्यमा ददे	११	
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुराधसः	। श्रवो देवेष्वक्रत	१२	

॥ ४० ॥ (ऋ० ८।६६।१-१५)

(६१३-६२७) कलिः प्रागाथः । प्रागाथः= (विषमा षृहती, समा सतोषृहती), १५ अनुष्टुप् ।

तरोभिर्वो विद्वद्भुसु—मिन्द्रं सबाध ऊतये ।

बृहद्भार्यन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् १

न यं बुधा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः ।

य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् २

यः शक्रो मुक्षो अश्वयो यो वा कीर्जो हिरण्ययः ।

स ऊर्ध्वस्य रेजयत्यपावृति—मिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ३

निखातं चिद्यः पुरुसंभूतं वसू—दिद्वर्पति वाशुषे ।

वञ्जी सुशिपो हयैश्च इत् कर—दिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत् ४

यद् वावन्थ पुरुहुत पुरा चिच्छूर नृणाम् ।

वयं तत् त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ५

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः ।	
त्वमिन्द्रि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्टः सुन्वते भुवः	६
वयमेनमिदा ह्यो ऽपीपेमेह वज्रिणाम् ।	
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा—ऽऽ नूनं भूषत श्रुते	७
वृकश्चिदस्य वारण उरामथि—रा वयुनेषु भूषति ।	
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गही—न्द्र प्र चित्रया धिया	८
कदू न्व—स्याकृत—मिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।	६२०
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा	९
कदू महीरधृष्टा अस्य तविपीः कदु वृत्रघ्नो अस्तृतम् ।	
इन्द्रो विश्वान् बेकनाटाँ अहर्हश उत क्रत्वा पणौरभि	१०
वयं घा ते अपूर्व्ये—न्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।	
पुरुतमांसः पुरुहूत वज्रिवो भूतिं न प्र भरामसि	११
पूर्वाश्चिद्वि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रांतर्यः ।	
तिरश्चिद्वर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम्	१२
वयं घा ते त्वे इ—द्विन्द्र विप्रा अपि ऋसि ।	
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्हिता	१३
त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽं ऽभिर्शस्तेरव स्पृधि ।	६२५
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित	१४
सोम इद्वः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन ।	
अपेक्षे धवस्मारयति स्वयं घैपो अपायति	१५

॥ ४१ ॥ (ऋ० ८।७६।१-१२)

(६२८-६६०) कुरुसुतिः काण्वः । गायत्री ।

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोर्जसा	। मरुत्वन्तं न वृत्रसे	१
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः	। वज्रेण शतपर्वणा	२
बावुधानो मरुत्सखे—न्द्रो वि वृत्रमैरयत्	। सृजन्तसमुद्रिया अपः	३
अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम्	। इन्द्रेण सोमपीतये	४
मरुत्वन्तमृजीषिण—मोर्जस्वन्तं विरप्तिनम्	। इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे	५
इन्द्रं प्रतेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे	। अस्य सोमस्य पीतये	६
मरुत्वो इन्द्र मीढुः पिबा सोमं शतक्रतो	। अस्मिन् यज्ञे पुरुषुत	७

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वन्ते सुताः सोमासो अद्विवः । हृदा हूयन्त उक्थिनः	८	६३५
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु । वज्रं शिशान् ओजसा	९	
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिषे अवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम्	१०	
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद् दस्युहार्भवः	११	
वाचमष्टापदीमहं नवसक्तिमुतस्पृशम् । इन्द्रात् परि तन्वं ममे	१२	

॥ ४२ ॥ (ऋ० ८।७।१-११)

[गायत्री, १०-११ प्रगाथः= (बृहती, सतोबृहती)]

जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे	१	६४०
आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम् । ते पुत्र सन्तु निष्ठुरः	२	
समित् तान् वृत्रहाखिवत् खे अरौ इव खेदया । प्रवृद्धो दस्युहार्भवत्	३	
एकया प्रतिधापिबत् साकं सरांसि त्रिंशतम् । इन्द्रः सोमस्य काणुका	४	
अभि गन्धर्वमतृणदबुधेषु रजःस्वा । इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद बुधे	५	
निराविध्यद् गिरिभ्य आ धारयत् एकमोदुनम् । इन्द्रो बुन्दं स्वाततम्	६	६४५
शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत् । यमिन्द्र चक्रुषे युजम्	७	
तेन स्तोतुभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे । सद्यो जात क्रमुष्ठिर	८	
एता च्यौलानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा । हृदा वीङ्गधारयः	९	
विश्वेत् ता विष्णुराभरदुरुक्रमस्त्वेषितः ।		
शतं महिषान् क्षीरपाकमोदुनं वराहमिन्द्र एमुषम्	१०	
तुविक्षं ते सुकृतं सुमयं धनुः साधुर्वन्दो हिरण्ययः ।		
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत क्रदूपे चिह्नवृधा	११	६५०

॥ ४३ ॥ (ऋ० ८।७।१-१०)

[गायत्री, १० बृहती ।]

पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर । शता च शूर गोनाम्	१	
आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम् । सचा मना हिरण्यया	२	
उत नः कर्णशोभना पुरुणि धृष्णवा भर । त्वं हि शृण्विषे वसो	३	
नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत । नान्यस्त्वच्छूर वाघतः	४	
नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे । विश्वं शृणोति पश्यति	५	६५५
स मन्युं मर्त्यानामदब्धो नि चिकीषते । पुरा निदश्चिकीषते	६	
क्रत्व इत् पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः । वृत्रघ्नः सोमपात्रः	७	

त्वे वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा । सुदात्वपरिहृता	८
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामश्वयुरेषते	९
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे ।	
विनम्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूरि यवस्य काशिना	१० ६६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० ८।८०।१-९)

(६६१-६६९) एकधूर्नोधसः । गायत्री ।

नह्यन्यं बळाकरं मडितारं शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय	१
यो नः शश्वत् पुराविथा—ऽसृधो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय	२
किमङ्ग रधचोदनः सुन्वानस्यावितेदासि । कुवित् स्विन्द्र णः शकः	३
इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित् सन्तमद्विवः । पुरस्तादेनं मे कृधि	४
हन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः	५ ६६५
अवा नो वाजयु रथं सुकरं ते किमित् परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि	६
इन्द्र दृष्टस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्कृत्वियावती	७
मा सीमवद्य आ भागु—वीं काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्नयः	८
तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित् पतिर्न ओहसे	९

॥ ४५ ॥ (ऋ० ८।८१।१-९)

(६७०-६८७) कुसीदी काण्वः ।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन	१ ६७०
विद्वा हि त्वा तुविकूमिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभिः	२
नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् । भीमं न गां वारयन्ते	३
एतो न्विन्द्रं स्तवामे—शानिं वस्वः स्वराजम् । न राधसा मधिषन्नः	४
प्र स्तोषदुषं गासिष—च्छवत् सामं गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत्	५
आ नो भर दक्षिणेना—ऽभि सव्येन प्र मृश । इन्द्र मा नो वसोर्निर्भाक्	६ ६७५
उषं क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम् । अदाशूष्टरस्य वेदः	७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सन्तित्वः । अस्माभिः सु तं संनुहि	८
सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः । वशैश्च मक्षू जरन्ते	९

॥ ४६ ॥ (ऋ० ८।८१।१-९)

आ प्र द्रव परावतो ऽर्वावतश्च वृत्रहन् । मध्वः प्रति प्रमर्मणि	१
तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा वृधुग्यथोच्चिषे	२ ६८०

इषा मन्वस्वावु ते	ऽरं वराय मन्यवे	। भुवत् त इन्द्र शं हृदे	३
आ त्वंशत्रवा गहि	न्युक्थानि च हूयसे	। उपमे रौचने विवः	४
तुभ्यायमाद्रिमिः सुतो	गोभिः श्रीतो मदाय कम्	। प्र सोम इन्द्र हूयते	५
इन्द्रं श्रुधि सु मे हव	मस्मे सुतस्य गोमंतः	। वि पीतिं तृप्तिमंश्रुहि	६
य इन्द्र चमसेष्वा	सोमश्चमूषु ते सुतः	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	७ ६८५
यो अप्सु चन्द्रमा इव	सोमश्चमूषु ददृशे	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	८
यं ते श्येनः पदामरत	तिरो रजांस्यस्पृतम्	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	९

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।१८।१-४)

(६८८-७१४) आजीमर्तिः शुनःशेपः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । अनुष्टुप् ।

यत्र ग्रावा पृथुबुध	ऊर्ध्वो भवति सोतवे	। उलूखलसुताना—मवेद्विन्द्र जलगुलः	१
यत्र द्वाविंश जघना	धिषवण्या कृता	। उलूखलसुताना—मवेद्विन्द्र जलगुलः	२
यत्र नार्यपच्यव	मुपच्यवं च शिक्षते	। उलूखलसुताना—मवेद्विन्द्र जलगुलः	३ ६९०
यत्र मन्थां विबभ्रते	रश्मीन् यमित्वा इव	। उलूखलसुताना—मवेद्विन्द्र जलगुलः	४

॥ ४८ ॥ (ऋ० १।१९।१-७) पंक्तिः ।

यच्चिद्धि संत्य सोमपा	अनाशस्ता इव स्मसि ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	१
शिप्रिन् वाजानां पते	शचीवस्तव वंसना ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	२
नि प्वापया मिथुदृशा	सस्तामबुध्यमाने ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	३
ससन्तु त्या अरातयो	बोधन्तु शूर रातयः ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	४ ६९५
समिन्द्र गर्दभं मृण	नुवन्तं पापयामुया ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	५
पताति कुण्डुणाच्या	दूरं वातो वनादधि ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	६
सर्वं परिक्रोशं जहि	जम्भया कृकवाश्वम् ।		
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ	७

॥ ४९ ॥ (ऋ० १।३०।१-१६)

१-१०, १२-१५ गायत्री, ११ पादनिष्ठगायत्री, १६ त्रिष्टुप् ।

आ व इन्द्रं क्विं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् ।	मंहिष्ठं सिञ्च इन्द्रुभिः	१	
शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम	एदुं निम्नं न रीयते	२	७००
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे	समुद्रो न व्यचो दुधे	३	
अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम	वचस्तच्चिन्न ओहसे	४	
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वीहो वीर यस्य ते	धिभूतिरस्तु सुनृता	५	
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऽस्मिन् वाजे शतक्रतो	समन्येषु बवावहै	६	
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे	सखाय इन्द्रमूतये	६	७०५
आ घा गमद्यादि श्रवत् सहस्रिणीभिः	वाजेभिरुप नो हवम्	८	
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रति नरम्	यं ते पूर्वं पिता हुवे	९	
तं त्वा वयं विश्ववारा ऽऽ शास्महे पुरुहूत	सखे वसो जरितृभ्यः	१०	
अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपात्राम्	सखे वज्रिन्तसखीनाम्	११	
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन् तथा कृणु	यथा त उश्मसीष्टये	१२	७१०
रेवतीर्नः सधमाद् इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः	क्षुमन्तो यामिर्मदेम	१३	
आ घ त्वावान् त्मनासः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः	ऋणोरक्षं न चक्रयोः	१४	
आ यद् दुवः शतक्रतुवा कामं जरितृणाम्	ऋणोरक्षं न शचीभिः	१५	
शश्वदिन्द्रः पोषुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि ।			
स नो हिरण्यरथं वृंसनावान् त्स नः सनिता सनये स नोऽदात्		१६	७१४

॥ ५० ॥ (ऋ० १।३१।१-१५)

(७१५-७४४) हिरण्यस्तूप आक्रिरसः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।		
अहन्नहिमन्वपस्तर्तु प्र वक्षणा अभिन्त पर्वतानाम्	१	७१५
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वयं ततक्ष ।		
वाश्वा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः	२	
वृषायमाणो ऽवृणीत सोमं त्रिकदुकेष्वपिबत् सुतस्य ।		
आ सार्यकं मघवाक्ष वज्रमहन्नेन प्रथमजामहीनाम्	३	
यद्विन्द्राहन् प्रथमजामहीनामान्मायिनामभिनाः प्रोत मायाः ।		
आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से	४	

अहन् वृत्रं वृत्रतरं व्यस—मिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।	
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णा—ऽहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः	५
अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।	
नातारीवस्य समृतिं वधानां सं रुजानां पिपिष इन्द्रशत्रुः	६ ७२०
अपावहस्तो अपृतन्यदिन्द्र—मास्य वज्रमधि सानौ जघान ।	
वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद् व्यस्तः	७
नदं न भिन्नममुया शयानं मनोरुहाणा अति युन्त्यापः ।	
याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत तासामहिः पत्सुतः शीबिभूव	८
नीचार्वया अभवद् वृत्रपुत्रे—न्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।	
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद् वानुः शये सहवत्सा न धेनुः	९
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् ।	
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम् आशयदिन्द्रशत्रुः	१०
वासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव गावः ।	
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद् ववार	११ ७२५
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सूके यत् त्वा प्रत्यहन् देव एकः ।	
अजयो गा अजयः शूर सोम—मवासृजः सतवे सप्त सिन्धून्	१२
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद् धादुनि च ।	
इन्द्रश्च यद् युयुधाते अहिश्चो—तापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये	१३
अहेर्यातारं कर्मपश्य इन्द्र हृदि यत् ते जघ्नुषो भीरगच्छत ।	
नव च यन्नवतिं च सर्वन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि	१४
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शर्मस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः ।	
सेदु राजा क्षयति चर्षणीना—मरान् न नेमिः परि ता बभूव	१५

॥ ५१ ॥ (ऋ० १।३।१-१५)

एतायामोषं गव्यन्त इन्द्र—मस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति ।	
अनामृणः कुविदावस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः	१ ७३०
उपेवृहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि ।	
इन्द्रं नमस्यन्नपमेभिरर्के—र्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन्	२
नि सर्वसेन इषुधीरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि ।	
षोष्क्यमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिभूरस्मदधि प्रवृद्ध	३

वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनै	एकश्चरन्नुपशाकेभिरिन्द्र ।	
धनोरधि विषुणक् ते व्याय	न्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः	४
परां चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रा	ऽयज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः ।	
प्र यद् द्विवो हरिवः स्थातरुग्र	निरव्रतां अधमो रोदस्योः	५
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेना	मयातयन्त क्षितयो नवंगवाः ।	
वृषायुधो न वधयो निरंष्टाः	प्रवद्भिरिन्द्राच्चितयन्त आयन्	६ ७३५
त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चा	योधयो रजस इन्द्र पारे ।	
अवाद्दहो द्विव आ दस्युमुच्चा	प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः	७
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या	हिरण्येन मणिना शुभ्रमानाः ।	
न हिंन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं	परि स्पशो अदधात् सूर्येण	८
परि यद्विन्द्र रोदसी उभे	अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम् ।	
अमन्यमानां अभि मन्यमानै	र्निब्रह्माभिरधमो दस्युमिन्द्र	९
न ये द्विवः पृथिव्या अन्तमापु	र्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन् ।	
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो	निज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्	१०
अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्या	ऽवर्धत् मध्य आ नाव्यानाम् ।	
सधीचीनेन मनसा तमिन्द्र	ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नाभि द्यून्	११ ७४०
न्याविध्यदिलीबिशस्य हृळ्हा	वि शृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः ।	
यावत्तरो मघवन् यावदोजो	वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम्	१२
अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून्	वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत ।	
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः	प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः	१३
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्	प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।	
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्या	मुच्चैर्व्रेयो नृषाह्याय तस्थौ	१४
आवः शमं वृषभं तुष्ट्यासु	क्षेत्रजेषे मघवज्जिह्वयं गाम् ।	
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्र	ञ्छन्नूयतामधरा वेदनाकः	१५

॥ ५२ ॥ (ऋ० १।५१।१-१५)

(७४५-८१६) सव्य आङ्गिरसः । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृगमि	मिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।	
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा	भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत	१ ७४५
अभीमवन्वन्स्वमिष्टिमूतयो	ऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।	
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मवुच्युतं	शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत	२

त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो—तात्रये शतदुरेषु गातुषित् ।	
ससेनं चिद् विमदायावहो वस्वा—जावद्विं वावसानस्य नर्तयन्	३
त्वमपामपिधानावृणोरपा—ऽधारयः पर्वते दानुमद् वसु ।	
वृत्रं यद्विन्दु शवसावधीरहि—मादित् सूर्यं दिव्यारोहयो हृशे ।	४
त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत ।	
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्चानं दस्युहृत्येष्वाविथ	५
त्वं कुत्सं शुष्णहृत्येष्वाविथा—ऽरन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम् ।	
महान्तं चिदबुद्धं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहृत्याय जज्ञिषे	६ ७१०
त्वे विश्वा तविषी सध्याग्निता तव राधः सोमपीथार्य हर्षते	
तव वज्रश्रिकिते बाहोर्हितो वृश्वा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या	७
वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद्व्रतान् ।	
शाकी भव यजमानस्य चोक्ता विश्वेत् ता ते सधमादेषु चाकन	८
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रता—नाभूभिर्निद्रः श्रथयन्ननाभुवः ।	
वृद्धस्य चिद् वर्धतो ध्यामिनेक्षतः स्तवानो वृत्रो वि जघान संदिहः	९
तक्षद् यत् त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्जना बाधते शवः ।	
आ त्वा वार्तस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः	१०
मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वङ्क वङ्कतराधि तिष्ठति ।	
उग्रो ययि निरपः स्रोतसासृजद् वि शुष्णस्य हंहिता ऐरयत् पुरः	११ ७५५
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।	
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनो ऽनुर्वाणं श्लोकमा रोहसे विवि	१२
अवृद्धा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।	
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत् ता ते सर्वनेषु प्रवाच्या	१३
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पञ्जेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।	
अश्वयुग्व्यू रथयुर्वसूयु—रिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता	१४
इदं नमो वृषभार्य स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि ।	
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत् सुरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम	१५

॥ ५३ ॥ (ऋ० १।५१।१-१५) जगती; १३; १५ त्रिष्टुप् ।

त्यं सु मेघं महया स्वर्विद् शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते ।

अत्यं न वार्जं हवनस्यदं रथ—मेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः

१ ७६०

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे ।	
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नवीवृतं—मुञ्जन्नणींसि जर्हृषाणो अन्धसा	२
स हि द्वरो द्वरिषु वव ऊर्धनि चन्द्रबुध्नो मर्ववृद्धो मनीषिभिः ।	
इन्द्रं तमहे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठराति स हि पप्रिरन्धसः	३
आ यं पुणन्ति दिवि सन्नबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः ।	
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरुतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहुतप्सवः	४
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रध्वीरिव प्रवणे संसुखतयः ।	
इन्द्रो यद् वज्री धूषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः	५
परीं धूणा चरति तित्विषे शवो ऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत ।	
वृत्रस्य यत् प्रवणे दुर्गमिष्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम्	६
हृदं न हि त्वा न्युषन्त्यर्मया ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना ।	
त्वष्टा चित् ते युज्यं वावृधे शर्व—स्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम्	७
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतु—विन्द्रं वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः ।	
अयच्छथा बाह्वेर्वज्रमायस—मधारयो विव्या सूर्यं हुशे	८
बृहत् स्वश्रन्ममवद् यदुक्थ्यः—मकृण्वत भियसा रोहणं विवः ।	
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नुषाचो मरुतोऽमदुन्ननु	९
द्यौश्चिदुस्यामवाँ अहेः स्वना—दयोयवीद् भियसा वज्र इन्द्र ते ।	
वृत्रस्य यद् बद्धधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिन्नच्छिरः	१०
यद्विष्विन्द्र पृथिवी दशभुजि—रहानि विश्वा ततनन्त कुष्टयः ।	
अत्राह ते मघवन् विश्रुतं सहो द्यामनु शर्वसा बर्हणा भुवत्	११
त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः ।	
चक्रुषे भूमिं प्रतिमानमोजसो ऽपः स्वः परिभूरेष्या विवम्	१२
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋण्ववीरस्य बृहतः पतिभूः ।	
विश्वमापा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमन्द्रा नकिरन्यस्त्वावान्	१३
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानुशुः ।	
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चक्रुषे विश्वमानुषक्	१४
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदुन्ननु त्वा ।	
वृत्रस्य यद् मृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं जघन्थ	१५

॥ ५४ ॥ (ऋ० १।५३।१-११) जगती. १०-११ शिष्टुप् ।

न्यू॒ष्टे॒ षु वाचं॑ प्र॒ महे भ॑रामहे॒ गिर॒ इन्द्रा॑य॒ स॒र्दने॒ वि॒वस्व॑तः ।		
नू॒ चि॒द्धि॒ रत्नं॑ स॒स॒तामि॒वावि॑दु—न्न दु॒ष्टुति॑र्द्र॒विणो॑दे॒षु श॑स्यते	१	७७५
दुरो॑ अ॒श्वस्य॑ दुर॒ इन्द्र॑ गो॒रसि॑ दुरो॑ य॒वस्य॑ वसु॒न इन॑स्पतिः ।		
शि॒क्षा॒नरः॑ प्र॒दि॒वो अ॒काम॑क॒र्शनः॑ स॒खा स॒खिभ्य॑स्त॒मिदं॑ गृ॒णीम॑सि	२	
श॒चीव॑ इन्द्र॒ पुरु॑कृद् द्यु॒मन्त॑म॒ तवे॒दि॒दम॑भित॒श्चेकि॑ते वसु॑ ।		
अतः॑ सं॒गृभ्या॑भिभूत॒ आ भ॑र॒ मा त्वा॑यतो ज॒रितुः॑ का॒ममू॑नयीः	३	
ए॒भिद्यु॑भिः सु॒मना॑ ए॒भिरि॑न्दु॒भि—नि॑रु॒न्धानो॑ अ॒म॒तिं गो॑भि॒रश्वि॑ना ।		
इन्द्रे॑ण द॒स्युं व॒रय॑न्त॒ इन्दु॑भि—र्युत॑द्वे॒षसः॑ स॒मिषा॑ र॒भेम॑हि	४	
स॒मिन्द्र॑ रा॒या स॒मिषा॑ र॒भेम॑हि सं वा॒जैभिः॑ पु॒रुश्च॑न्द्रै॒रभिद्यु॑भिः ।		
सं दे॒व्या प्र॑म॒त्या वी॒रशु॑ष्म॒या गो॑अ॒ग्रया॑श्वा॒वत्या॑ र॒भेम॑हि	५	
ते त्वा॑ म॒दा अ॑म॒द्वन् ता॑नि वृ॒ष्ण्या ते॑ सो॒मासो॑ वृ॒त्रह॑त्येषु स॒न्पते॑ ।		
यत् का॒रवे॑ द॒श वृ॒त्राण्य॑प्रति॒ ब॒र्हिष्म॑ते॒ नि स॒हस्रा॑णि ब॒र्हयः॑	६	७८०
यु॒धा यु॒धमु॑प॒ घेदे॑पि धृ॒ष्ण्या पु॒रा पु॒रं स॒मिदं॑ हंस्यो॒जसा॑ ।		
नभ्या॑ य॒दिन्द्र॑ स॒ख्या प॑रा॒वति॑ नि॒ब॒र्हयो॑ न॒मुचिं॑ ना॒म मा॒यिन॑म्	७	
त्वं क॑र॒ञ्ज॒मुत॑ पु॒र्णयं॑ व॒धी—स्तेजि॑ष्ठयातिथि॒ग्वस्य॑ वर्त॒नी ।		
त्वं श॒ता व॒द्धृद॑स्याभि॒नत् पु॑रो॒ ऽना॒नुदः॑ परि॒षृता॑ ऋ॒जिश्वा॑ना	८	
त्वमे॒ताञ्ज॑नरा॒जो द्वि॑र्द॒शा—ऽब्र॑न्धुना॑ सु॒श्रव॑सोप॒जग्मु॑षः ।		
ष॒ष्टिं स॒हस्रा॑ न॒वति॑ न॒व श्रु॑तो॒ नि च॒क्रेग॑ र॒थ्या दु॑ष्प॒दावृ॑ण॒कू	९	
त्वमा॑वि॒थ सु॒श्रव॑सं त॒वोति॑भि—स्त॒व त्राम॑भि॒रिन्द्र॑ तूर्व॒याण॑म् ।		
त्वम॑स्मै॒ कुत्स॑मतिथि॒ग्वमा॑युं॒ महे॑ रा॒जो यू॒ने अ॑र॒न्धना॑यः	१०	
य उ॒ह॒चीन्द्र॑ दे॒वगो॑पाः स॒खाय॑स्ते शि॒वत॑मा॒ असा॑म ।		
त्वां स्तो॑षाम॒ त्वया॑ सु॒वीरा॑ द्रा॒घी॒य आयुः॑ प्र॒तरं॑ द॒धानाः॑	११	७८५

॥ ५५ ॥ (ऋ० १।५४।१-११) जगती, ६, ८-९, ११ शिष्टुप् ।

मा नो॑ अ॒स्मिन् म॑घवन् पु॒त्स्व॑ह॒सि न॒हि ते॒ अन्तः॑ श॒वसः॑ प॒रीण॑शे ।		
अ॒क्रन्द॑यो न॒द्यो॒ष्टे रो॑रु॒वद् व॒ना क॒था न क्षो॑णी॒र्भिय॑सा॒ समा॑रत	१	
अ॒र्चा श॒क्राय॑ शा॒किने॑ श॒चीव॑ते शृ॒ण्वन्त॑मिन्द्रं॒ मह॑र॒यन्न॑भि णु॒हि ।		
यो धृ॒ष्णुना॑ श॒वसा॑ रो॒दसी॑ उ॒भे वृ॒षा वृ॒षत्वा॑ वृ॒षभो॑ न्यु॒ञ्जते॑	२	

अर्चां विवे बृहते शूण्यं वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः ।	
बृहच्छ्रुवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः	३
त्वं विवो बृहतः सानु कोपयो ऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत् ।	
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषच्छ्रितां गर्भस्तिमशानिं पृतन्यसिं	४
नि यद् वृणक्षिं श्वसनस्य मूर्धनि शूण्यस्य चिद् व्रन्दिनो रोरुवद् वना ।	
प्रार्चनेन मनसा बर्हणावता यदद्या चित् कृणवः कस्त्वा परि	५
त्वमाविथ नयं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीति वय्यं शतक्रतो ।	
त्वं रथमेतशं कृत्वये धने त्वं पुरो नवति दम्भया नव	६
स या राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति ।	
उक्था वा यो अभिगुणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः	७
असमं क्षत्रमयमा मनीषा प्र सोमपा अर्पसा सन्तु नेमे ।	
यं त इन्द्र द्रुदुपो वर्धयन्ति महिं क्षत्रं स्थविरं वृण्यं च	८
तुभ्येदंते बहुला अद्रिदुग्धा—श्रमूषदश्रमसा इन्द्रपानाः ।	
व्यंशुहि तर्पया काममेषा—मथा मनो वसुदेयाय कृण्व	९
अपामतिष्ठद्भरुणह्वरं तमो ऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः ।	
अभीमिन्द्रो नद्यो वविणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्रते	१०
स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मं महिं क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम् ।	
रक्षां च नो मघोनः पाहि सूरिन् राये च नः स्वपत्या इषे धाः	११

॥ ५६ ॥ (ऋ० १।५।१-८) जगती ।

द्विवाश्रिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मत्वा पृथिवी च न प्रति ।	
भीमस्तुविष्माश्रपणिभ्य आतपः शिशीति वज्रं तेजसे न वंसंगः	१
सो अर्णीवा न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः ।	
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात् स युध्म ओजसा पनस्यते	२
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि ।	
प्र वीर्येण देवतार्ति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः	३
स इद वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् ।	
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यद्विन्वति	४
स इन्महानिं समिथानिं मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।	
अधा च न श्रद् दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम्	५

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।

ज्योतींषि कुण्वन्नवृकाणि यज्यवे ऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत ६

वृणाय मनः सोमपावन्नस्तु ते ऽर्वाश्वा हरीं वन्दनश्रुदा कृधि ।

यमिष्ठासः सारथ्यो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ७

अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयो रषाळहं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।

आवृतासोऽवतासो न कर्तृभिस्तनूषु ते कर्तव इन्द्र भूरयः ८

॥ ५७ ॥ (ऋ० १।५६।१-६)

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिणो ऽत्यो न योषामुदयंस्त भुवर्णिः ।

दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम १

तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।

पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अर्धि रोह तेजसा २

स तुवर्णिर्महो अरेणु पौंस्ये गिरेर्भुष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।

येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध आभूषु रामयन्नि दामनि ३

देवी यद्वि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।

यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयति रेणुं बृहदहिरिष्वणिः ४

वि यत् तिरो धरुणमच्युतं रजो ऽतिष्ठिपो विव आतामु बहणा ।

स्वर्मिळहे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन् वृत्रं निरपामौजो अर्णवम् ५

त्वं विवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।

त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाप्यारुजः ६

॥ ५८ ॥ (ऋ० १।५७।१-६)

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्वये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।

अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् १

अध ते विश्वमनु हासद्विष्टय आपो निम्नेव सर्वना हविष्मतः ।

यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्रथिता हिरण्ययः २

अस्मै भीमाय नर्मसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।

यस्य धाम शवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ३

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसा ।

नहि त्वदून्यो गिर्वणो गिरः सवत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद् वचः ४

भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन् काममा पूण ।

अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ५

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकतिथ ।

अवासृजो निर्वृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः

६

॥ ५९ ॥ (ऋ० १।१०।१।-११)

(८१७-८५५) कुत्स आङ्गिरसः । (१ गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । जगती, ८-११ त्रिष्टुप् ।

प्र मन्दिने पितुमर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नुजिष्वना ।

अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

१

यो व्यंसं जाह्णपाणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन् पिप्रुमव्रतम् ।

इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ् मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

२

यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद् यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः ।

यस्येन्द्रस्य सिन्धुः सश्रति व्रतं मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

३

यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः ।

वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

४

८१०

यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् ।

इन्द्रो यो दस्यूरधरां अवातिरन् मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

५

यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्युभिः ।

इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदुधुर्मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

६

रुद्राणामेति प्रदिशां विचक्षणो रुद्रेभिर्योषां तनुते पृथु जयः ।

इन्द्रं मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सखायं हवामहे

७

यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद् वावमे वृजने मादयासे ।

अत आ याहाध्वरं नो अच्छां त्वाया हविश्चकृमा सत्यराधः

८

त्वायेन्द्र सोमं सुपुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चकृमा ब्रह्मवाहः ।

अधा नियुत्वः सर्गणो मरुद्भिर्रस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व

९

८१५

मादयस्व हरिभिर्यं त इन्द्र विष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने ।

आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तु शन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व

१०

मरुत्सतोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वाजम् ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

११

॥ ६० ॥ (ऋ० १।१०।१।-११) १-१० जगती, ११ त्रिष्टुप् ।

इमां ते धियं प्र भरे महो मही मस्य स्तोत्रे धिषणा यत् त आनजे ।

तमुत्सवे च प्रसवे च सासहि मिन्द्र देवासः शर्वसामवृज्जनु

१

अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः ।	
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कर्मिन्द्र चरतो वितर्तुरम्	२
तं स्मा रथं मघवन् प्रावं सातये जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे ।	
आजा न इन्द्र मनसा पुरुषुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः	३ ८३०
वयं जयेम त्वया युजा वृत्तमस्माक्रमंशमुदवा भरेभरे ।	
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्या रुज	४
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तर्वसा विपन्यवः ।	
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तवं	५
गोजिता बाहू अभितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजंकरः ।	
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसाऽथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः	६
उत् ते शतान्मघवन्नृच भूयस उत सहस्राद् रिरिचे कृष्टिषु श्रवः ।	
अमात्रं त्वा धिषणां तित्विषे म ह्यधा वृत्राणि जिघ्रसे पुरंदर	७
त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजसस्तिष्ठो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना ।	
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथाऽशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि	८ ८३५
त्वां कुवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः ।	
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिदुमिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः	९
त्वं जिगेथ न धनां रुरोधिताऽर्भेष्वाजा मघवन् महत्सु च ।	
त्वामुग्रमवसे सं शिशीमस्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय	१०
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिहृताः सनुयाम वाजम् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	११

॥ ६१ ॥ (ऋ० १।१०३।१-८) त्रिष्टुप् ।

तत् त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम् ।	
क्षमेदमन्यद् द्विव्यन्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः	१
स धारयत् पृथिवीं प्रथच्छ वज्रेण हत्वा निरपः संसर्ज ।	
अहन्नहिमर्भिनद्रौहिणं व्यहन् व्यंसं मघवा शचीभिः	२ ८४०
स जातूभर्मा श्रद्धधान ओजः पुरो विभिन्दन्नचरद् वि दासीः ।	
विद्वान् वज्रिन् दस्यवे हेतिमस्याऽऽयं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र	३
तद्वचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तन्यं मघवा नाम बिभ्रत् ।	
उपप्रयन् दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम वृधे	४

तदस्येदं पश्यता भूरिं पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय ।
 स गा अविन्दुत् सो अविन्दुदश्वान् त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ५
 भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् ।
 य आहृत्या परिपन्थीव शूरो ऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ६
 तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत् ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् ।
 अनु त्वा पत्नीर्हृषितं वयश्च विश्वे देवासो अमङ्गनु त्वा ७ ८४५
 शुष्णं पिप्पुं कुर्यं वृत्रमिन्द्र यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८

॥ ६२ ॥ (ऋ० १।१०४।१-९)

योनिष्ट इन्द्र निषेदं अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वी ।
 विमुच्या वयोऽवसायाश्वान् कुंषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे १
 ओ त्वे नर इन्द्रमूतये गु—नू चित् तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात ।
 देवासो मन्युं दासस्य श्रमन् ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् २
 अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन् ।
 क्षीरेण स्नातः कुर्यवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ३
 युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्टि शूरः ।
 अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिन्वाना उदभिर्भरन्ते ४ ८५०
 प्रति यत् स्या नीथादर्शि दस्यो—रोको नाच्छा सदनं जानती गात ।
 अध स्मा नो मघवश्चकुतादि—न्मा नो मघेव निष्पपी परा दाः ५
 स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अण्स्व—नागास्त्व आ भज जीवशंसे ।
 मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ६
 अधा मन्ये श्रत ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय ।
 मा नो अकृते पुरुहूत योना—विन्द्र क्षुध्यन्द्द्यो वयं आसुतिं दाः ७
 मा नो वधीरिन्द्र मा परा द्वा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः ।
 आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भे—न्मा नः पात्रा भेत सहजानुषाणि ८
 अर्वाडेहि सोमकामं त्वाहु—रयं सुतस्तस्य पिबा मदाय ।
 उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि ह्ययमानः ९ ८५५

॥ ६३ ॥ (ऋ० १।६१।१-१६)

[८५६-८९९] नोघा गौतमः ।

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।
 ऋचीषमायाधिगव ओह—मिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा १

अस्मा इदु प्रय इव प्र यंसि भराभ्याङ्गुषं बाधे सुवृक्ति ।	
इन्द्राय हुवा मनसा मनीषा प्रत्ताय पत्ये धियो मर्जयन्त	२
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा भराभ्याङ्गुषमास्येन ।	
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सुरिं वावृधधै	३
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।	
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय	४
अस्मा इदु सतिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वाऽ समंश्चे ।	
वीरं दानौकसं वन्दधै पुरां गूर्तश्रवसं दुर्माणम्	५ ८६०
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद् वज्रं स्वपस्तमं स्वयं रणाय ।	
वृत्रस्य चिद् विद् येन मम तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः	६
अस्येदु मातुः सर्वनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाश्चावन्ना ।	
मुषायद् विष्णुः पचत् सहीयान् विध्यद् वराहं तिरो अद्विमस्ता	७
अस्मा इदु ग्राश्चिद् देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ।	
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः	८
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं विवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।	
स्वराळिन्द्रो दम् आ विश्वगूर्तः स्वरिमन्त्रो ववक्षे रणाय	९
अस्येदेव शर्वसा शुषन्तं वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।	
गा न ब्राणा अवनीरिमुश्च वृभि श्रवो दावने सचेताः	१० ८६५
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद् वज्रेण सीमयच्छत् ।	
ईशानकृद् वाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः	११
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।	
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेऽप्यन्नणींस्यपां चरधै	१२
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।	
युधे यद्विष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून्	१३
अस्येदु भिया गिरयश्च हृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।	
उपो वेनस्य जोगुवान ओणि सद्यो भुवद् वीर्यय नोधाः	१४
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषा मेको यद् वज्रे भूरेरीशानः ।	
प्रेतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्ये सुर्विमावदिन्द्रः	१५ ८७०

एवा ते हरियोजना सुवृक्ती—न्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।

ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१६

॥ ६४ ॥ (ऋ० १।६२।१-१३)

प्र मन्महे शवसानाय शूष—माङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत ।

सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियाया—ऽर्चामार्कं नरे विश्रुताय

१

प्र वो महे महि नमो भरध्व—माङ्गूष्यं शवसानाय साम ।

येना नः पूर्वे पितरः पवृज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्

२

इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत सरमा तनयाय धासिम् ।

बृहस्पतिर्भिन्नदद्रि विदद् गाः समुस्त्रियाभिर्वावशन्त नरः

३

स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वयोर्योऽ नवग्वैः ।

सरण्युभिः फलिगामिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः

४

८७५

गुणानो अङ्गिनोभिर्दस्म वि व—रूपसा सूर्येण गोभिरन्धः ।

वि भूम्या अपथय इन्द्र सानुं दिवो रज उपरमस्तभायः

५

तद् प्रयक्षतममस्य कर्म वृस्मस्य चारुतममस्ति दंसः ।

उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन् मध्वर्णसो नद्यश्चतस्रः

६

द्विता वि ववे सनजा सनीले अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः ।

भगो न मेने परमे व्योम—न्नधारयद् रोदसी सुदंसाः

७

सनाद् दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः ।

कृष्णेभिर्क्तोषा रुशङ्गि—र्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या

८

सनेमि सख्यं स्वप्स्यमानः सूनुर्दाधार शवसा सुदंसाः ।

आमासु चिद् दधिषे पक्रमन्तः पर्यः कृष्णासु रुशद् रोहिणीषु

९

८८०

सनात् सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः ।

पुरु सहस्रा जनयो न पत्नी—र्दुवस्यन्ति स्वसारे अह्नयाणम्

१०

सनायुवो नमसा नव्यो अर्कै—र्वसूयवो मतयो दस्म दद्रुः

पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन् मनीषाः

११

सनादेव तव रायो गर्भस्तौ न क्षीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म ।

द्युमौ असि क्रतुमौ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः

१२

सनायते गोतम इन्द्र नव्य—मतक्षद् ब्रह्म हरियोजनाय ।

सुनीथार्य नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१३

॥ ६५ ॥ (ऋ० १।६३।१-९)

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मै—र्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः ।	
यद्ध ते विश्वा गिरयश्चिदभ्वा भिया हृळ्हासः किरणा नैजन्	१ ८८५
आ यद्धरीं इन्द्र विव्रता वे—रा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात् ।	
येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुरं इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः	२
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान् त्वमृभुक्षा नयस्त्वं षाट् ।	
त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन्	३
त्वं ह त्यदिन्द्र चोद्वीः सखा वृत्रं यद् वज्रिन् वृषकर्मन्नुभ्नाः ।	
यद्ध शूर वृषमणः पराचै—र्वि दस्यूर्योनावकृतो वृथाषाट्	४
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन् हृळ्हास्य चिन्मतीनामजुष्टौ ।	
व्य॑स्मदा काष्ठा अर्वते व—र्धनेव वज्रिज्झथिह्यमित्रान्	५
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ स्वर्मीळहे नरं आजा हवन्ते ।	
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या भूत्	६ ८९०
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन् पुरो वज्रिन् पुरुकुत्साय ददः ।	
बर्हिर्न यत् सुदासे वृथा व—र्गहो राजन् वरिवः पूरवे कः	७
त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रा—मिषमापो न पीपयः परिज्मन् ।	
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरं ध्यै	८
अकारि त इन्द्र गोतमेभि—र्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम् ।	
सुपेशंसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्	९

॥ ६६ ॥ (ऋ० ८।८८।१-६)

[प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।]

तं वो वृस्ममृतीषहं वसोर्मन्वानमन्धसः ।	
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नैवामहे	१
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।	
क्षुमन्तं वाजं शतिर्न सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे	२ ८९५
न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः ।	
यद् वित्ससि स्तुवते मावते वसु नकिष्टदा मिनाति ते	३
योद्धासि क्रत्वा शर्वसोत वंसना विश्वा जाताभि मज्मना	
आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन्	४

प्र हि रि॒रि॒क्ष ओज॑सा वि॒वो अन्ते॑भ्य॒स्परि॑
न त्वा॑ वि॒व्याच॑ रज॑ इन्द्र॒ पार्थि॑व—मनु॑ स्व॒धां वव॑क्षिथ ५
नकिः॑ परि॒ष्टिर्म॑घवन् म॒घस्य॑ ते यद् द्वा॒शुषे॑ द॒शस्य॑सि ।
अ॒स्माकं॑ बो॒ध्युच॑रथस्य चो॒दिता॑ मं॒हि॒ष्ठो वा॑ज॒सातये॑ ६

॥ ६७ ॥ (ऋ० १।८०।१-१६)

[१००-१५६] गोतमो राहृगणः । (अथर्वा, मनुः, दध्यङ् च) । पंक्तिः ।

इ॒त्या हि सोम॑ इन्मदे॑ ब्र॒ह्मा च॒कार॑ वर्ध॒नम् ।
शवि॑ष्ठ वज्रि॒न्नो॒जसा॑ पृथि॒व्या निः श॑शा अहि—म॒र्च॒न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् १ ९००
स त्वा॑मदुद् वृषा॑ म॒दुः सोमः॑ श्ये॒नाभृतः॑ सु॒तः ।
येना॑ वृ॒त्रं निर॑द्ध्यो जघ॒न्थ वज्रि॑न्नो॒जसा—ऽर्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् २
प्रेह्य॑भीहि धृ॒ष्णुहि न ते॑ वज्रो॒ नि यंस॑ते ।
इन्द्र॑ नृ॒म्णं हि ते॑ शवो॒ हनो॑ वृ॒त्रं जया॑ अपो ऽर्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ३
नि॒रिन्द्र॑ भू॒म्या अधि॑ वृ॒त्रं जघ॑न्थ निर्वि॒वः ।
सृ॒जा म॒रुत्व॑तीर॒व जी॒वध॑न्या इ॒मा अपो॑ ऽर्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ४
इन्द्रो॑ वृ॒त्रस्य॑ दो॒र्धतः॑ सा॒नुं वज्रे॑ण ही॒ळितः॑ ।
अ॒भिक॑म्या॒व जिघ्र॑ते ऽपः॑ स॒र्माय॑ चो॒दय—र्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ५
अधि॑ सा॒नो नि जिघ्र॑ते वज्रे॑ण श॒तप॑र्वणा ।
म॒न्दान॑ इन्द्रो॒ अन्ध॑सः सखि॑भ्यो गा॒तुमि॑च्छ—त्यर्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ६ ९०५
इन्द्र॑ तुभ्य॒मिदं॑द्विवो ऽनु॑त्तं वज्रिन् वी॒र्य॑म् ।
य॒द्ध त्वं मा॒यिनं॑ मृ॒गं तमु॑ त्वं मा॒यया॑वधी—र्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ७
वि ते॑ वज्रा॒सो अ॑स्थिर—न्न॒वातिं॑ ना॒व्याऽनु॑ ।
म॒हत् ते॑ इन्द्र॒ वीर्यं॑ बा॒होस्ते॒ बलं॑ हित—म॒र्च॒न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ८
स॒हस्रं॑ सा॒कर्म॑र्चत॒ परि॑ ष्ठो॒भत॑ वि॒ंशतिः॑ ।
श॒तैर्न॑मन्व॒नोनवु॑—रिन्द्रा॒य ब्र॒ह्मोद्य॑त—म॒र्च॒न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ९
इन्द्रो॑ वृ॒त्रस्य॑ तवि॒षीं नि॑र॒हन्त्सह॑सा स॒हः ।
म॒हत् तद॑स्य पौ॒ंस्यं वृ॒त्रं जघ॑न्वाँ अ॒सृज—र्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् १०
इ॒मे चि॑त तव॑ म॒न्यवे॑ वे॒पेते॑ मि॒यसा॑ म॒ही ।
यदि॑न्द्र वज्रि॒न्नो॒जसा वृ॒त्रं म॒रुत्वाँ॑ अव॒धी—र्च॑न्ननु॑ स्व॒राज्य॑म् ११ ९१०

न वेपसा न तन्यते—न्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।

अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १२

यद् वृत्रं तव चाशानि वज्रेण समयोधयः ।

अहिमिन्द्र जिघांसतो विवि ते बद्धधे शवो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १३

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।

त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १४

नहि नु यादधीमसी—न्द्रं को वीर्या परः ।

तस्मिन्नुष्णमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधु—र्चन्ननु स्वराज्यम् १५

यामथर्वा मनुष्पिता वृध्यङ् धियमन्नत ।

तस्मिन् बह्माणि पूर्वधे—न्द्र उक्था समग्मता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १६ ९१५

॥ ६८ ॥ (ऋ० १।८१।१-९)

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।

तमिन्महत्स्वाजिषू—तेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् १

असि हि वीर सेन्यो ऽसि भूरि परावृदिः ।

असि वृधस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु २

यद्वीरित आजयो धृष्णवे धीयते धना ।

युक्ष्वा मवृच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ३

क्रत्वा महौ अनुवृधं भीम आ वावृधे शवः ।

श्रिय ऋध उपाकयो—नि शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ४

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रोचना विवि ।

न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ऽति विश्वं ववक्षिथ ५ ९२०

यो अर्यो मर्तभोजनं पराददाति वृशुषे ।

इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु वि भजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः ६

मदेमदे हि नो वृदि—र्युथा गवामृजुक्रतुः ।

सं गृभाय पुरू शतो—भयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर ७

मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे ।

विद्या हि त्वा पुरूवसु—मुप कामान्तससृज्महे ऽथा नोऽविता भव ८

एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।

अन्तर्हि ख्यो जनाना—मर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर ९

॥ ६९ ॥ (ऋ० १।८२।१-६) पंक्तिः, ६ जगती ।

उपो षु शृणुही गिरो मघवन् मातथा इव ।

यदा नः सूनृतावतः कर आवृथयांस इद् योजा न्विन्द्र ते हरी १ ९२५

अक्षन्नमीमदन्त ह्य—व प्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नर्विण्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी २

सुसंद्दशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।

प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशां अनु योजा न्विन्द्र ते हरी ३

स घा तं वृषणं रथ—मधि तिष्ठाति गोविदम् ।

यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी ४

युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो ।

तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा न्विन्द्र ते हरी ५

युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे गर्भस्त्योः

उत् त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान् वज्रिन्तसमु पत्न्यामदः ६ ९३०

॥ ७० ॥ (ऋ० १।८३।१-६) जगती ।

अश्वावति प्रथमो गोपुं गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः ।

तमित पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः १

आपो न देवीरुपं यन्ति होत्रिय—मवः पश्यन्ति विततं यथा रजः ।

प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव २

अधि द्वयोरदधा उक्थयं वचो यतसुंचा मिथुना या संपर्यतः ।

असंयतो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ३

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वयं इन्द्राग्रयुः शम्या ये सुकृत्यया ।

सर्वं पुणेः समविन्दन्त भोजन—मश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ४

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।

आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ५ ९३५

बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय वृज्यते ऽर्को वा श्लोकमाघोषते विवि ।

शावा यत्र वदति कारुरुक्थय—स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ६

॥ ७१ ॥ (ऋ० १।८४।१-२०)

[१-६ अनुष्टुप्, ७-९ उष्णिक्, १०-१२ पंक्तिः, १३-१५ गायत्री, १६-१८ त्रिष्टुप्,

(प्रगाथः= १९ बृहती, २० सतोबृहती ।)]

असावि सोम इन्द्र ते शर्विण्ठ धृष्णवा गहि । आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः १

इन्द्रमिन्द्ररीं बहूतो ऽप्रतिधृष्टशवसम् । ऋषीणां च स्तुतीरुपं यज्ञं च मानुषाणाम् २
 आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी । अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ३
 इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् । शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारां क्रतस्य सादने ४ १४०
 इन्द्राय नूनमर्चतो—कथानि च ब्रवीतन । सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ५
 नकिङ्कद रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे । नकिङ्कानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे ६
 य एक इद् विदयते वसु मतीय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कृत इन्द्रो अङ्ग ७
 कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ८
 यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावां आविवांसति । उग्रं तत पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ९ १४५

स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।

या इन्द्रेण सयावरी—वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् १०

ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्रयः ।

प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सार्यकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ११

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।

व्रतान्यस्य सश्विरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् १२

इन्द्रो दधीचो अस्थभि—वृत्राण्यप्रतिष्कृतः । जघान नवतीर्नव १३

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद् विदच्छर्यणावति १४ १५०

अत्राह गोरमन्वत् नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे १५

को अद्य युक्ते धुरि गा क्रतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।

आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात् १६

क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति ।

कस्तोकाय क इभायोत राये ऽधि ब्रवत् तन्वेऽ को जनाय १७

को अग्निमीद्रे हविषा धृतेन सुचा यजाता क्रतुभिर्ध्रुवेभिः ।

कस्मै देवा आ वंहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः १८

त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।

न त्वदून्यो मघवन्नस्ति मर्दिते—न्द्र ब्रवीमि ते वचः १९ १५५

मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसो ऽस्मान् कदा चना दभन् ।

विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ २०

॥ ७२ ॥ (ऋ० १।१००।१-१९)

(९५७-९७५) वार्षागिराः ऋज्राश्वाऽम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः । त्रिष्टुप् ।

स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो विवः पृथिव्याश्च सम्राट् ।

सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १

यस्यानाप्तः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति ।

वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवै मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती २

विवो न यस्य रेतसो दुर्घानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः

तरद्वेषाः सासाहिः पौंस्येभि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ३

सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन् ।

ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ४ ९६०

स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋग्वा नृषाह्ये सासह्यो अमित्रान् ।

सनीलोभिः श्रवस्यानि तूर्वन मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ५

स मन्युमीः समर्दनस्य कर्ता ऽस्माकेभिर्नृभिः सूर्ये सनत् ।

अस्मिन्नहन्तस्त्पतिः पुरुहूतो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ६

तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम् ।

स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ७

तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय ।

सो अन्धे चित् तमसि ज्योतिर्विदन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ८

स सव्येन यमति वार्धतश्चित् स दक्षिणे संगृभीता कृतानि ।

स कीरिणां चित् सनिता धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ९ ९६५

स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्नृद्य ।

स पौंस्येभिरभिभूरशस्ती मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १०

स जामिभिर्यत् समजाति मीळहे ऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः ।

अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती ११

स वज्रभृद् दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋग्वा ।

चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १२

तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत् स्वर्षा विवो न त्वेषो र्वथः शिमीवान् ।

तं संचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती १३

यस्याजस्रं शर्वसा मानमुक्थं परिभुजद् रोदसी विश्वतः सीम् ।		
स पारिषत् क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१४	९७०
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शर्वसो अन्तमापुः ।		
स प्ररिक्वा त्वर्क्षसा क्षमो विवश्वं मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१५	
रोहिच्छयावा सुमदंशुर्लामी—र्युक्षा राय ऋज्राश्वस्य ।		
वृषण्वन्तं बिभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुपीषु विश्वु	१६	
एतत् त्यत् तं इन्द्र वृष्णा उक्थं वर्षागिरा अभि गृणन्ति राधः ।		
ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः	१७	
दस्युञ्जिष्ठम्यैश्च पुरुहूत एवं—हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।		
सनत् क्षेत्रं सखिभिः श्विन्येभिः सनत् सूर्यं सनदुपः सुवज्रः	१८	
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अ—स्त्वपरिहृताः सनुयाम वाजम् ।		
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१९	९७५

॥ ७३ ॥ (श्रु० ८।९७।१-१५)

(९७६-९९०) रेभः काश्यपः । बृहती, १०, १३ अतिजगती, ११-१२ उपरिष्ठाद्बृहती,
१४ त्रिष्टुप्, १५ जगती ।

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः		
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिपः	१	
यमिन्द्र दधिषे त्व—मश्वं गां भागमव्ययम् ।		
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पृणो	२	
य इन्द्र सस्त्यव्रतो ऽनुष्वापमदेवयुः ।		
स्वैः ष एवैर्मुमुरत् पोष्यं रयिं संनुतर्धेहि तं ततः	३	
यच्छक्रासिं परावति यदवावति वृत्रहन् ।		
अतस्त्वा गीर्मिद्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति	४	
यद्वासिं रोचने विवः समुद्रस्याधिं विष्टपि ।		
यत् पार्थिवे सदेने वृत्रहन्तम् यदुन्तरिक्ष आ गहि	५	९८०
स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते ।		
मादयस्व राधसा सूनृताविते—न्द्र राया परीणसा	६	
मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्यः ।		
त्वं न ऊती त्वमिह आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक्	७	

अस्मे इन्द्र सचा सुते नि पदा पीतये मधु ।	
कृधी जरित्रे मघवन्नवो मह—दस्मे इन्द्र सचा सुते	८
न त्वावेवास आशत न मर्त्यासो अद्विवः ।	
विश्वा जातानि शर्वसाभिभूरसि न त्वा वेवास आशत	९
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजू—स्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।	
क्रत्वा वरिष्ठं वरं आमुरिमुतो—ग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम	१० ९८५
समीं रेभासो अस्वर—न्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।	
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतवतो ह्योजसा समूतिभिः	११
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेघं विप्रा अभिस्वरा ।	
सुव्रीतयो वो अद्बुहो ऽपि कर्णे तरस्विनः समुक्त्रभिः	१२
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि ।	
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वञ्जी	१३
त्वं पुर इन्द्र चिकिर्वेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्वै ।	
त्वद् विश्वानि भुवनानि वञ्चिन् द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा	१४
तन्म क्रतमिन्द्र शूर चित्र पात्व—पो न वञ्चिन् दुरितातिं पषि भूरि ।	
कदा न इन्द्र राय आ दशस्ये—र्विश्वस्न्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन्	१५ ९९०

॥ ७४ ॥ (ऋ० ८।१००।१-९)

(९९१-९९९) नेमो भार्गवः, ४-५ इन्द्रः, ९ वज्रो वा । त्रिष्टुप्, ६ जगती, ७, ९ अनुष्टुप् ।

अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद् विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात् ।	
यदा मह्यं दीर्धरो भागमिन्द्रा—ऽऽदिन्मया कृणवो वीर्याणि	१
दधामि ते मधुनो भक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः ।	
असंश्च त्वं दक्षिणतः सखा मे ऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि	२
प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति ।	
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ई ददर्श कमभि ण्टवाम	३
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मृह्णा ।	
क्रतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्या—दर्विरो भुवना ददर्शमि	४
आ यन्मा वेना अरुहन्तस्यै एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे ।	
मनेश्चिन्मे हृद् आ प्रत्यवोच—दचिक्रवुञ्छिशुमन्तः सखायः	५ ९९५

विश्वेत् ता ते सर्वनेषु प्रवाच्या या चकर्थ मघवन्निन्द्र सुन्वते ।

पारावतं यत् पुरुसंभृतं व—स्वपावृणोः शरभाय ऋषिबन्धवे ६

प्र नूनं धावता पृथङ् नेह यो वो अवावरीत् ।

नि षीं वृत्रस्य मर्मेणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत् ७

समुद्रे अन्तः शयत उद्गा वज्रो अभीवृतः ।

मरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम् ९

सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे ।

हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धू—निन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः १२ ९९९

॥ ७९ ॥ (ऋ० १।१२९।१-११)

(१०००-१०४१) परच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ८-९, अतिशक्त्यो, ११ अष्टिः ।

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातये ऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि प्रानवद्य नयसि ।

सद्यश्चित् तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् ।

सास्मार्कमनवद्य तूतुजान वेधसा—मिमां वाचं न वेधसाम् १ १०००

स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद् दुक्षार्य इन्द्र भरहूतये नृभि—रसि प्रतूतये नृभिः ।

यः शूरैः स्वः सनिता यो विप्रैर्वाजं तरुता ।

तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम् २

कुस्मो हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद् यावीररुं शूर मर्त्यं परिवृणक्षि मर्त्यम् ।

इन्द्रोत तुभ्यं तद् दिवे तद् रुद्राय स्वयंशसे ।

मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः समृच्छीकाय सप्रथः ३

अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं युजं वाजेषु प्रासहं युजम् ।

अस्माकं ब्रह्मोतये ऽवा पृत्सुषु कासु चित् ।

नहि त्वा शत्रुः स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम् ४

नि षू नमार्तिमतिं कयस्य चित् तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोतिभि—रुग्राभिरुग्रातिभिः ।

नेषि णो यथा पुरा ऽनेनाः शूर मन्यसे ।

विश्वानि पूरोरपं पर्षि वह्निं—रासा वह्निर्नो अच्छ ५

प्र तद् वोचियं भव्यायेन्दवे हव्यो न य इषवान् मन्म रेजति रक्षोहा मन्म रेजति ।

स्वयं सो अस्मदा निदो वधैरजेत दुर्मतिम् ।

अथ सवेदुघशंसोऽवतर—मव क्षुद्रमिव सवेत् ६ १००५

दे० [इन्द्रः] ८

वनेम तद्भोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रणवं सन्तं सुवीर्यम् ।

दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि ।

आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्रहूतिभिर्—र्यजत्रं द्युम्रहूतिभिः ७

प्रपा वो अस्मे स्वयंशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां दरीमन् दुर्मतीनाम् ।

स्वयं सा रिषयधै या न उपेषे अत्रैः ।

हतेमसन्न वक्षति क्षिप्ता जूर्णिर्न वक्षति ८

त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा पुरो याह्यरक्षसा ।

सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।

पाहि नो दूराद्वारादुभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ९

त्वं न इन्द्र राया तरूषसो—ग्रं चित् त्वा महिमा संक्षदवसे महे मित्रं नावसे ।

ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।

अन्यमस्मद् रिषिषः कं चिदद्विवो रिरिक्षन्तं चिदद्विवः १०

पाहि न इन्द्र सुप्तुत सिधो ऽवयाता सकुमिद् दुर्मतीनां देवः सन् दुर्मतीनाम् ।

हन्ता पापस्य रक्षसं—स्त्राता विप्रस्य मावतः ।

अधा हि त्वां जनिता जीजनद् वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद् वसो ११ १०१०

॥ ७६ ॥ (ऋ० १।१३०।१-१०) अत्यष्टिः, १० त्रिष्टुप् ।

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पति—रस्तं राजेव सत्पतिः ।

हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ।

पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये १

पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वसंग—स्तातृषाणो न वसंगः ।

मदाय हर्यतार्य ते तुविष्टमाय धार्यसे ।

आ त्वा यच्छन्तु हरितो न सूर्य—महा विश्वेषु सूर्यम् २

अविन्दद् दिवो निहितं गुहा निधिं वेन गर्भं परिवीतमश्म—न्यनन्ते अन्तरश्मनि ।

व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्नङ्गिरस्तमः ।

अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषुः परीवृताः ३

दाहाणो वज्रमिन्द्रो गर्भस्त्योः क्षत्रेव तिग्ममसनाय सं श्य—दहिहत्याय सं श्यत् ।

संविव्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्जमा ।

तथैव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेषु नि वृश्चसि ४

त्वं वृथा नद्य इन्द्र सतवे ऽच्छा समुद्रमसृजो रथौ इव वाजयतो रथौ इव ।

इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।

धेनूरिव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः

५

१०१५

इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिपुः सुम्नाय त्वामतक्षिपुः ।

शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम् ।

अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये

६

भिनत पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महि वाशुषे नृतो वज्रेण वाशुषे नृतो ।

अतिथिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् ।

महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा

७

इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद विश्वेषु शतमृतिराजिषु स्वर्मीळहेष्वाजिषु ।

मनवे शासद्व्रतान् त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।

दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति

८

सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायती—शान आ मुषायति ।

उशाना यत् परावतो ऽर्जगन्नूतये कवे ।

सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणि—रहा विश्वेव तुर्वणिः

९

स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्त्रुक्थैः पुरो दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।

विबोवासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः

१०

१०२०

॥ ७७ ॥ (ऋ० १।१३१।१-७) अत्यष्टिः ।

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अर्नमन्ते—न्द्राय मही पृथिवी वरीमभि—द्युम्नसाता वरीमभिः ।

इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।

इन्द्राय विश्वा सर्वनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा

१

विश्वेषु हि त्वा सर्वनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिण्यवः पृथक् ।

तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।

इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः

२

वि त्वा ततस्त्रे मिथुना अवस्यवो ब्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।

यद् गव्यन्ता द्वा जना स्वयन्ता समूहसि ।

आविष्करिक्कद वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवं

३

विबुधे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यद्विन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः ।

शासस्तमिन्द्र मर्त्य—मर्यज्युं शवसरूपने ।

महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः

४

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मर्देषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ । .

चकर्थं कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।

ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत

५

१०१५

उतो नो अस्या उपसो जुषेत ह्यः—कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।

यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वद्विञ्चिकेतसि ।

आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः

६

त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयु—रमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण शूर मर्त्यम् ।

जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।

रिष्टं न यामन्नप भूत दुर्मति—विश्वार्प भूत दुर्मतिः

७

॥ ७८ ॥ (ऋ० १।१३१।१-६) [६ (अर्धर्चस्य) इन्द्रापर्वतो] ।

त्वया वयं मधवन् पूर्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।

नेदिष्ठे अस्मिन्नह—न्यधि वोचा नु सुन्वते ।

अस्मिन् यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम्

१

स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्म—न्युषुर्बुधः स्वास्मिन्नश्रंसि क्राणस्य स्वास्मिन्नश्रंसि ।

अहन्निन्द्रो यथा विदे शीष्णाशीष्णोपवाच्यः ।

अस्मन्ना ते सध्वयक् सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः

२

तत तु प्रयः प्रतथा ते शुशुक्वनं यस्मिन् यज्ञे वारमकृण्वत क्षय—मृतस्य वारसि क्षयम् ।

वि तद् वोचेरध द्विता—ऽन्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।

स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्भ्यो गवेषणः

३

१०३०

नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रज—मिन्द्र शिक्षन्नप व्रजम् ।

ऐभ्यः समान्या विशा ऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च ।

सुन्वद्भ्यो रन्धया कं चिद्व्रतं हृणायन्तं चिद्व्रतम्

४

सं यज्जनान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद् धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः ।

तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा ।

इन्द्र ओक्थं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः

५

युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं वज्रेण तंतमिद्धतम् ।

दूरे चत्तार्यं च्छन्तसद् गर्हनं यदिर्नक्षत् ।

अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो कुर्मा दर्षिष्ट विश्वतः

६

॥ ७९ ॥ (ऋ० १।१३३।१-७) १ त्रिष्टुप्, २-४ अनुष्टुप्, ५ गायत्री, ६ धृतिः, ७ अष्टिः ।

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन दुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः ।

अभिःलग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परिं तुळ्हा अशेरन् १

अभिःलग्या चिदद्विवः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि वंदूरिणा पदा महावंदूरिणा पदा २ १०३५

अवासां मघवश्चहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ३

यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिःलङ्गैरपावपः । तत सु ते मनायति तत सु ते मनायति ४

पिशङ्गभृष्टिमम्भूणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण । सर्वं रक्षो नि बर्हय ५

अवर्मह इन्द्र दाहहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषां अद्विवो घृणान्न भीषां अद्विवः ।

शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरियसे ।

अपूरुषघ्नो अप्रतीत शूर सत्त्वभिः खिस्रैः शूर सत्त्वभिः ६

वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः ।

सुन्वान इत् सिंषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।

सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ७ १०४०

॥ ८० ॥ (ऋ० १।१३९।६) अत्यष्टिः ।

वृषन्निन्द्र वृषपाणांस इन्देव इमे सुता अद्विषुतास उद्विक्स्तुभ्यं सुतास उद्विक्ः ।

ते त्वा मन्दन्तु द्रावने महे चित्राय राधसे ।

गीर्भिर्गिर्वाहः स्तवमान आ गंहि समृळीको न आ गंहि ६ १०४१

॥ ८१ ॥ (ऋ० १।१६७।१) (१०४२-११००) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः ।

सहस्रं रायो माद्वयधै सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः १

॥ ८२ ॥ (ऋ० १।१६९।१-८) त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा विराट् ।

महश्चित् त्वमिन्द्र यत एतान् महश्चिदसि त्यजसो वरुता ।

स नो वेधो मरुतां चिकित्वान् त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा १

अयुञ्जन्त इन्द्र विश्वकृष्टीर्विद्वानासो निषिधो मर्त्यत्रा ।

मरुतां पृतसुतिर्हासमाना स्वर्मिळहस्य प्रधनस्य सातौ २

अम्यक् सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभवं मरुतो जुनन्ति ।

अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्ता नापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ३ १०४५

त्वं तू न इन्द्र तं रयिं वा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम् ।

स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ४

त्वे रायं इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिद्वतायोः ।

ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ५

प्रति प्र याहीन्द्र मीळहुषो नृन् महः पार्थिवे सवने यतस्व ।

अध यदेषां पृथुबुधास एतां स्तीर्थे नार्यः पौंस्यानि तस्थुः ६

प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व आयतामुपब्धिः ।

ये मर्त्यं पृतनायन्तमूर्धैर्ऋणावानं न पतयन्त सर्गैः ७

त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्त्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः ।

स्तवानेभिः स्तवसे देव देवैर्विद्यामेघं वृजनं जीरदानुम ८

१०५०

॥ ८३ ॥ (ऋ० १।१७०।१-५)

[इन्द्रः, (४ अगस्त्यो वा), १, ५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः] । १ बृहती १-४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद् वेदु यदजुतम् ।

अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यं मुताधीतं वि नश्यति १

किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव । तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः २

किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नतिं मन्यसे । विद्वा हि ते यथा मनो ऽस्मभ्यमिन्न दिंत्ससि ३

अरं कृण्वन्तु वेदुं समग्निमिन्धतां पुरः । तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ४

त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः ।

इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वा ऽध प्राशानं क्रतुथा हवींषि ५

१०५५

॥ ८४ ॥ (ऋ० १।१७३।१-१३) त्रिष्टुप्, ४ विरादस्थाना विषमपदा वा ।

गायत्र सामं नभन्यं यथा वे रर्चाम तद् वावृधानं स्ववत् ।

गावो धेनवो बर्हिष्यदव्धा आ यत् सद्धानं दिव्यं विवासान् १

अर्चद् वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यैर्मृगो नाश्रो अति यज्जुगुर्यात् ।

प्र मन्दुयुर्मनां गूर्तं होता भरते मर्यो मिथुना यजत्रः २

नक्षत्रोता परि सन्नं मिता यन् भरद् गर्भमा शरदः पृथिव्याः ।

क्रन्वदश्वो नयमानो रुवद् गौ रन्तर्दूतो न रोदसी चरद् वाक् ३

ता कर्माषतरास्मै प्र च्यौत्तानि देवयन्तो भरन्ते ।

जुजोषदिन्द्रो वृस्मवर्चा नासत्येव सुग्म्यो रथेष्ठाः ४

तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथेष्ठाः ।

प्रतीचश्चिद् योधीयान् वृषण्वान् ववृषश्चित् तमसो विहन्ता ५

१०६०

प्र यद्वित्था महिना नृभ्यो अ स्त्यरं रोदसी कक्ष्येडं नास्मै ।

सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूमा भर्ति स्वधावा ओपशमिव द्याम् ६

समत्सु त्वा शूर सतामुराणं प्रपथिन्तमं परितंसयधै ।	
सजोषस इन्द्रं मदे क्षोणीः सूरिं चिद् ये अनुमदन्ति वाजैः	७
एवा हि ते शं सर्वना समुद्र आपो यत् त आसु मदन्ति देवीः ।	
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरिंश्चिद् यदि धिषा वेषि जनान्	८
असाम यथा सुषखाय एन स्वभिष्टयो नरां न शंसैः ।	
असद् यथा न इन्द्रो वन्दनेष्ठास्तुरो न कर्म नयमान उक्था	९
विष्पर्धसो नरां न शंसै रस्माकासदिन्द्रो वज्रहस्तः ।	
मित्रायुवो न पूर्पतिं सुशिष्टौ मध्यायुव उप शिक्षन्ति यज्ञेः	१०
यज्ञो हि घ्मेन्द्रं कश्चिद्वन्धः श्रुतुराणश्चिन्मनसा परियन् ।	१०६५
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोको दीर्घो न सिधमा कृणोत्यध्वा	११
मो पू ण इन्द्रात्र पृतसु देवै रस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।	
महश्चिद् यस्य मीळहुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः	१२
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे एतेन गातुं हरिवो विदो नः	
आ नो ववृत्याः सुविताय देव विद्यामेष वृजनं जीरदानुम्	१३

॥ ८५ ॥ (ऋ० १।१७४।१-१०) त्रिष्टुप् ।

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नृन् पाह्यसुर त्वमस्मान् ।	
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्र स्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः	१
दनो विश इन्द्र मृधवाचः सप्त यत् पुरः शर्म शारकुर्दित ।	
ऋणोरपो अनवद्याणा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय रन्धीः	२
अजा वृत इन्द्र शूरपत्नीर्या च येभिः पुरुहूत नूनम् ।	१०७०
रक्षो अग्निमशुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः	३
शेषन् नु त इन्द्र सस्मिन् योनौ प्रशस्तये पवीरवस्य महा ।	
सृजदणास्यव यद् युधा गा स्तिष्ठद्वरी धृषता मृष्ट वाजान्	४
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् तस्यमन्यू ऋज्वा वातस्याश्वा ।	
प्र सूरश्चक्रं वृहतावुभीके ऽभि स्पृधो यासिषद् वज्रबाहुः	५
जघन्वाँ इन्द्र मित्रेकः श्रुदप्रवृद्धो हरिवो अदाशून् ।	
प्र ये पश्यन्नयमणं सचायो स्त्वया शूर्ता वहमाना अपत्यम्	६
रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ क्षा वासायोपबर्हिणी कः ।	
करत् तिस्रो मघवा दानुचित्रा नि वुर्योणे कुर्यवाचं मूधि श्रेत्	७

सना ता त इन्द्र नव्या आगुः सहो नभोऽविरणाय पूर्वीः

भिनत् पुरो न भिको अदेवी नैनमो वधरदेवस्य पीयोः

८

त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती ऋणोरपः सीरा न सर्वन्तीः ।

प्र यत् समुद्रमतिं शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति

९

त्वमस्माकमिन्द्र विश्वधं स्या अवुक्तमो नरां नृपाता ।

स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्

१०

॥ ८६ ॥ (ऋ० १।१७।१-६) १ स्कन्धोग्रीवी बृहतीः २-५ अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः । वृषां ते वृष्णा इन्दुर्वाजी संहस्रसातमः १

आ नस्ते गन्तु मत्सरा वृषा मदो वरेण्यः । सहावां इन्द्र सानसिः पृतनाषाळमर्त्यः २ १०८०

त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् । सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ३

मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान् ओजसा । वह शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वैः ४

शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम् उत क्रतुः । वृत्रघ्ना वरिवोविदा मंसीष्ठा अश्वसातमः ५

यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृप्यते बभूथ ।

तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्

६

॥ ८७ ॥ (ऋ० १।१७।१-६) अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्सि नो वस्यइष्टय इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश । ऋघायमाण इन्वसि शत्रुमन्ति न विन्दसि १ १०८५

तस्मिन्ना वैशया गिरो य एकश्चर्षणीनाम् । अनु स्वधा यमुप्यते यवं न चकृषद् वृषा २

यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु । स्पाशयस्व यो अस्मधुग् दिव्येवाशनिर्जहि ३

असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः । अस्मभ्यमस्य वेदनं वृद्धि सूरिश्रिदोहते ४

आवो यस्य द्विर्हसो ऽर्केषु सानुपगसत् । आजविन्द्रस्येन्द्रो प्रावो वाजेषु वाजिनम् ५

यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृप्यते बभूथ ।

तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्

६ १०९०

॥ ८८ ॥ (ऋ० १।१७।१-६) त्रिष्टुप् ।

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।

स्तुतः श्रवस्यन्नवसोर्प मद्रिग् युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ्

१

ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र बह्वयुजो वृषरथासो अत्याः ।

तां आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् हवामहे त्वा सुत इन्द्र सोमै

२

आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषां ते सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।

युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोर्प मद्रिक्

३

अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः ।
 स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह
 ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वा—दुप ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः ।
 विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्

४

५ १०९५

॥ ८९ ॥ (ऋ० १।१७८।१-५)

यन्द्र स्या त इन्द्र श्रुण्तिरस्ति यया बभूथ जरितृभ्य ऊती ।
 मा नः कामं महयन्तमा धग विश्वा ते अस्यां पर्याप आयोः
 न घा राजेन्द्र आ दभन्नो या नु स्वसारा कृणवन्त योनौ ।
 आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन् गमन्न इन्द्रः सख्या वयश्च
 जेता नृभिरिन्द्रः पुत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः ।
 प्रभर्ता रथं वाशुष उपाक उद्यन्ता गिरा यदि च त्मना भूत
 एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पृक्षो अभि मित्रिणो भूत ।
 समर्य इषः स्तवते विवाचि सत्राकरो यजमानस्य शंसः
 त्वया वयं मधवन्निन्द्र शत्रू—नभि प्याम महतो मन्यमानान् ।
 त्वं ज्ञाता त्वमु नो बुधे भू—विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्

१

२

३

४

५ ११००

॥ ९० ॥ (ऋ० २।११।१-२१)

(११०१-१२३७) गृत्समद (आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । विराट्स्थाना, २१ त्रिष्टुप् ।

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते द्वावने वसूनाम् ।
 इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः
 सूजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिण्विता अहिना शूर पूर्वाः ।
 अमर्त्यं चिद् वासं मन्यमान—मवाभिनदुक्थैर्वावृधानः
 उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन् तस्तोमेष्विन्द्र रुद्रीयेषु च ।
 तुभ्येदेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिस्रते न शुभ्राः
 शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः ।
 शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सद्याः
 गुहा हितं गुह्यं गूळहमस्व—पीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।
 उतो अपो द्यां तस्तभ्वांस—महन्नहिं शूर वीर्येण
 स्तवा नु त इन्द्र पूर्वा महा—न्युत स्तवाम नूतना कृतानि ।
 स्तवा वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू

१

२

३

४

५ ११०५

६

हरी नु ते इन्द्र वाजयन्ता घृतश्चुतं स्वारमस्वाष्टाम् ।	
वि समना भूमिरप्रथिष्टा—ऽरंस्त पर्वतश्चित् सख्यन्	७
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।	
दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रेषितां धमनिं पप्रथन् नि	८
इन्द्रो महां सिन्धुमाशयानं मायाविनीं वृत्रमस्फुरन्निः ।	
अरेजेतां रोदसी भियाने कर्निकदतो वृष्णो अस्य वज्रात्	९
अरोरवीद वृष्णो अस्य वज्रा ऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् ।	
नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्सुतस्य	१० १११०
पिवापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।	
पूणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्ति—त्वा सुतः पौर इन्द्रमाव	११
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम क्रतया सर्पन्तः ।	
अवस्यवो धीमहि प्रशीस्ति सद्यस्ते रायो दावने स्याम	१२
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्तः ।	
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवा—ऽस्मे रयिं रासि वीरवन्तम्	१३
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्ध इन्द्र मारुतं नः ।	
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्त्यग्रणीतिम्	१४
व्यन्तिवन्तु येषु मन्दसान—स्तुपत सोमं पाहि इन्द्रादिन्द्र ।	
अस्मान्तु पृत्स्वा तरुत्रा—ऽवर्धयो द्यां बृहद्विरकैः	१५ १११५
बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रो—कथेभिर्वा सुम्रमाविवासान् ।	
स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत त्वोता इदिन्द्र वाजमगमन्	१६
उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसान—स्त्रिकदुकेषु पाहि सोममिन्द्र ।	
प्रदोधुवच्छ्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्	१७
धिष्वा शर्वः शूर येन वृत्र—मवाभिन्द दानुमौर्णवाभम् ।	
अपावृणोज्योतिरार्याय नि संव्यतः सावि दस्युरिन्द्र	१८
सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।	
अस्मभ्यं तत त्वाप्त्रं विश्वरूप—मरन्धयः साख्यस्य त्रिताय	१९
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः ।	
अवर्तयन् सूर्यो न चक्रं भिनद् वलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान्	२० १११०

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।	
शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	२१
॥ ९१ ॥ (ऋ० २।१२।१-१५) त्रिष्टुप् ।	
यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ।	
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृमणस्य महा स जनास इन्द्रः	१
ग्रः पृथिवीं व्यथमानामहंहद् यः पर्वतान् प्रकुपितो अरम्णात् ।	
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः	२
यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपथा वलस्य ।	
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः	३
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।	
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाद्वर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः	४ ११२५
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम ।	
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः	५
यो रधस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरिः ।	
युक्तग्राण्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः	६
यस्याश्वासः प्रादिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।	
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः	७
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः ।	
समानं चिद् रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः	८
यस्मान्न क्रते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।	
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः	९ ११३०
यः शश्वतो महेनो दधाना नमन्यमानाञ्छवीं जघान ।	
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः	१०
यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।	
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः	११
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुर्विष्मा नवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून् ।	
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्धामारोहन्तं स जनास इन्द्रः	१२
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।	
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः	१३

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।		
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः	१४	११३५
यः सुन्वते पचते दुध आ चिद् वाजं दर्दपि स किलासि सत्यः ।		
वयं तं इन्द्र विश्वहं प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम	१५	

॥ ९२ ॥ (क्र० २।१३।१-१३) जगती. १३ त्रिष्टुप ।

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्पतिं मक्षू जात आविशद् यासु वर्धते ।		
तदाहना अभवत् पिप्युषी पयोऽशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम्	१	
सधीमा यन्ति परि विभ्रतीः पयो विश्वप्स्न्याय प्र भरन्त भोजनम् ।		
समानो अधवा प्रवतामनुप्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	२	
अन्वेको वदति यद् ददाति तद् रूपा मिनन्तर्दपा एक ईयते ।		
विश्वा एकस्य विनुदस्ति तिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	३	
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभर्जन्त आसते रयिमिव पुष्टं प्रभवन्तमायते ।		
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरन्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	४	११४०
अधाकृणोः पृथिवीं संहशे द्विवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक् पथः ।		
तं त्वा स्तोमैर्भिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्तसास्युक्थ्यः	५	
यो भोजनं च दयसे च वर्धनं मार्दादा शुष्कं मधुमद् दुदोहिथ ।		
स शेवधिं नि दधिपे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः	६	
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणा ऽधि दाने व्यवनीरधारयः ।		
यश्चासमा अजनो दिद्युतो द्विव उरुर्वाँ अभितः सास्युक्थ्यः	७	
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चावहः ।		
ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्य मुतैवाद्य पुरुकृत् सास्युक्थ्यः	८	
शतं वा यभ्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।		
अरज्जौ दस्यूनसमुनब्धभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः	९	११४५
विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं दुरुरस्मै दधिरे कृत्तवे धनम् ।		
पळस्तभ्रा विष्टिरः पञ्च संहशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः	१०	
सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु ।		
जातूष्टिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकथ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः	११	

अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च सुतिम् ।
नीचा सन्तमुदैनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थयः १२
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १३

॥ ९३ ॥ (ऋ० २।१४।१-१२) त्रिष्टुप् ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोम—मामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः ।
कामी हि वीरः सदर्मस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तादिदेष वृष्टि १ ११५०
अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्यैव वृक्षम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशाय एष इन्द्रो अर्हति पीतिर्मस्य २
अध्वर्यवो यो हृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वात—मिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ३
अध्वर्यवो य उरणं जघान नवं चस्वांसं नवतिं च बाहुन् ।
यो अबुद्धमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भूथे हिनोत ४
अध्वर्यवो यः स्वश्रं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम् ।
यः पिपुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहांत ५
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः ।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्र—मपावपद भरता सोममस्मै ६ ११५५
अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जन्वान् ।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग् भरता सोममस्मै ७
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तादिन्द्रे ।
गर्भस्तिपूतं भरत श्रुताये—न्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ८
अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिर्मस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मकुरिं जुहोत ९
अध्वर्यवः पयसोध्वयथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
वेदाहमस्य निभृतं म एतद् दित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत १०
अध्वर्यवो यो विव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।
तमूर्ध्वं न पृणता यवेने—न्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ११ ११६०
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १२

॥ ९४ ॥ (ऋ० २।१५।१-१०)

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम् ।

त्रिकटुकेष्वपिबत् सुतस्याऽस्य मदु अहिमिन्द्रो जघान १

अवंशे घामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम् ।

स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार २

समेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम् ।

वृथासृजत् पृथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ३

स प्रवोळ्ळहन् परिगत्या कुभीतिर्विश्वमधागायुधमिन्द्रे अग्नौ ।

सं गोभिरश्वैरसृजद् रथेभिः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ४ ११६५

स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्नातृनपारयत् स्वस्ति ।

त उत्स्राय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ५

सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान् उपसः सं पिपेप ।

अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन् त्सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ६

स विद्रो अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नदतिष्ठत् परावृक् ।

प्रति श्रोणः स्थाद् व्यनगचष्ट सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ७

मिनद् बलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत् ।

रिणग्रोधांसि कृत्रिमाणयेषां सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ८

स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र कुभीतिमावः

रम्भी चिदत्र विविदु हिरण्यं सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार ९ ११७०

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।

शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १०

॥ ९५ ॥ (ऋ० २।१६।१-९) जगतीः ९ त्रिष्टुप् ।

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे ।

इन्द्रमजुयं जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामहे १

यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभूताधि वीर्या ।

जठरे सोमं तन्वीः सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम् २

न क्षोणीभ्यां परिभवे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।

न ते वज्रमन्वश्रोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ३

विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्र्वते ।	
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना	४ ११७५
वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।	
वृषणाध्वर्यु वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति	५
वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरीं वृषभाण्यायुधा ।	
वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृष्णुहि	६
प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सर्वनेषु दाधृषिः ।	
कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिष दिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे	७
पुरा संबाधादुभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी ।	
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि	८
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।	
शिक्षा स्तोतृभ्यो मार्ति धग्भगो नो बृहद् वेदम विदथे सुवीराः	९ ११८०

॥ ९६ ॥ (अ० २।१७।१-९) जगती; ८-९ त्रिष्टुप् ।

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते ।	
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दंष्टितान्यैरयत्	१
स भूतु यो ह प्रथमाय धार्यस ओजो मिमानो महिमानमार्तिरत् ।	
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत	२
अर्धाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः ।	
रथेष्टेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्यक् पृथक्	३
अथा यो विश्वा भुवनाभि मज्मने शानकृत् प्रवया अभ्यवर्धत ।	
आद् रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत् सीव्यन् तमांसि दुर्धिता समव्ययत्	४
स प्राचीनान् पर्वतान् दृढदोर्जसा ऽधराचीनमकृणोवृषामपः ।	
अधारयत् पृथिवीं विश्वधार्यस मस्तभ्रान्मायया द्यामवस्रसः	५ ११८५
सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद् विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि ।	
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्वै वज्रेण हत्व्यवृणक् तुविष्वणिः	६
अमाजूरिव पित्रोः सर्चा सती समानादा सर्वसस्त्वामिये भगम् ।	
कृधि प्रकृतमुप मास्या भर दुद्धि भागं तन्वोऽ येन मामहः	७

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम वृद्धिं मिन्द्रापांसि वाजान् ।
 अविद्धीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः ८
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
 शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९७ ॥ (ऋ० २।१८।१-९) त्रिष्टुप ।

प्राता रथो नवो योजि सस्नि—श्चतुर्युगास्त्रिकशः सप्तारश्मिः ।
 दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत १ ११९०
 सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयं—मुतो तृतीयं मनुषः स होता ।
 अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा २
 हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योज—माये सूक्तेन वचसा नवेन ।
 मो पु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ३
 आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र या—ह्या चतुर्भिरा षड्भिर्ह्यमानः ।
 आप्ताभिर्कुशभिः सोमपेयं—मयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ४
 आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वा—डा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।
 आ पञ्चाशता सुरथैभिरिन्द्रा—ऽऽ षण्ठ्या सप्तत्या सोमपेयम् ५
 आशीत्या नवत्या याह्यर्वा—डा शतेन हरिभिरुह्यमानः ।
 अयं हि ते शुनहोत्रिषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ६ ११९५
 मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य ।
 पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथा—ऽस्मिञ्छूर सर्वने मादयस्व ७
 न म इन्द्रेण सख्यं वि योष—दुस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत ।
 उप ज्येष्ठे वरूथे गर्भस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम ८
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
 शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९८ ॥ (ऋ० २।१९।१-९)

अपायस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः ।
 यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको वृधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः १
 अस्य मन्वानो मध्वो वज्रहस्तो ऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत् ।
 प्र यद् वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चकृमन्त २ ११००

स माहि॑न इन्द्रो॑ अणो॑ अ॒पां प्रै॑रयदहिहाच्छा॑ समुद्रम् ।	
अ॒र्जन॑यत् सूर्यं॑ वि॒दद् गा अ॒क्तु॒नाह्वां॑ व॒युना॑नि साधत् ३	
सो अ॒प्रती॑नि मन॒वे पुरु॑णी—न्द्रो॑ दाशद् वाशुषे॑ हन्ति वृत्रम् ।	
सद्यो॑ यो नृ॒भ्यो अत॑साय्यो भूत् प॒स्प॒धाने॑भ्यः सूर्य॑स्य सा॒तौ ४	
स सु॒न्वत॑ इन्द्रः सूर्य॑मा—ऽऽ वे॒वो रि॑ण्ड्मर्त्याय॑ स्तवान् ।	
आ यद् र॒यिं गु॒हर्द॑वद्यमस्मै भ॒रदं॑शं नैत॑शो द॒शस्य॑न् ५	
स र॑न्धयत् स॒दिवः॑ सा॒रथ्ये॑ शु॒ष्णम॑शुषं कुर्य॑वं कुत्साय ।	
दिवो॑दासाय॑ नवतिं च नवे—न्द्रः पुरो॑ व्यैर॑च्छम्बर॑स्य ६	
ए॒वा तं॑ इन्द्रो॑च॒र्थम॑हेम श्रव॑स्या न त्मना॑ वाज॑र्यन्तः ।	
अ॒श्याम॑ तत् सा॒र्त्तमा॑शुषाणा न॒नमो॑ वध॒रदे॑वस्य पीयोः ७	१२०५
ए॒वा ते॑ गृ॒त्सम॑दाः शूर॑ मन्मा—ऽव॑स्यवो न व॒युना॑नि तक्षुः ।	
ब्र॒ह्मण्य॑न्त इन्द्र॑ ते नवी॑य इष॒मूर्जं॑ सु॒क्षितिं॑ सु॒म्नम॑शुः ८	
नूनं॑ सा ते प्र॒ति वरं॑ ज॒रित्रे॑ दु॒हीय॑दिन्द्र दक्षि॑णा म॒घोनी॑ ।	
शि॒क्षा स्तो॑तृ॒भ्यो मा॑तिं ध॒ग्मगो॑ नो बृ॒हद् व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑ ९	

॥ ९९ ॥ (ऋ० २।२०।१-९) त्रिण्डुप्, ३ विराङ्गरूपा ।

वयं॑ ते वयं॑ इन्द्र॑ वि॒द्धि षु णः॑ प्र भ॑रामहे वाज॒युर्न र॑थम् ।	
वि॒प॒न्यवो॑ दी॒र्ध्यतो॑ मनी॒षा सु॒म्नमि॑र्यक्षन्त॒स्त्वाव॑तो नृन् १	
त्वं न॑ इन्द्र॑ त्वाभि॑रूती त्वा॒यतो॑ अ॒भिष्टि॑पासि ज॒नान् ।	
त्वमि॑नो वाशुषो॑ वरू॒ते—त्था॑धी॒रभि॑ यो नक्ष॑ति त्वा २	
स नो॑ युवेन्द्रो॑ जो॒हूत्रः॑ सखा॑ शि॒वो न॒राम॑स्तु पा॒ता ।	
यः शंस॑न्तं यः श॑शमान॒मूती प॑च॒न्तं च॑ स्तु॒वन्तं॑ च प्र॒णेष॑त ३	१२१०
तमु॑ स्तुष॑ इन्द्रं॑ तं गृ॒णीषे॑ यस्मिन् पुरा॑ वा॒वृधुः॑ शा॒शदु॑श्च ।	
स व॑स्वः का॒मं पी॑परदि॒यानो ब्र॑ह्मण्यतो नू॒तन॑स्यायोः ४	
सो अ॒ङ्गिर॑सामु॒चथा॑ जुजु॒ष्वान् ब्र॑ह्मा तू॒तोदि॑न्द्रो ग॒ातु॑मि॒ष्णन् ।	
मु॒ष्णन्नु॑षसः सूर्ये॑ण स्त॒वान—श्र॑स्य चिच्छि॒श्रथ॑त् पू॒र्व्याणि॑ ५	
स ह॑ श्रुत इन्द्रो॑ नाम॑ वे॒व ऊ॒र्ध्वो भु॑वन्मनु॒षे वृ॑स्म॒तमः॑ ।	
अव॑ प्रियम॑र्श॒सान॑स्य सा॒ह्या—ञि॒छरो॑ भरद् वा॒सस्य॑ स्व॒धावा॑न् ६	
स वृ॒त्रहे॑न्द्रः कृ॒ष्णयो॑नीः पुर॑व॒रो दा॑सीरैर॒यद् वि॑ ।	
अ॒र्जन॑यन् मन॒वे क्षा॑मपश्च॑ स॒न्ना शंसं॑ यज॒मान॑स्य तू॒तोत् ७	

तस्मै तवस्य मनु दायि सत्रेन्द्राय कुवेभिरर्णसातो ।

प्रति यदस्य वज्रं बाहोर्धु—हृत्वी दस्युन् पुर आर्यसीर्नि तारीत

८

१२१५

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रं दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।

शिक्षां स्तोतृभ्यो मार्तिं धग्भर्गो नो बृहद् वेदेम विदथे सुवीराः

९

॥ १०० ॥ (क्र० २।२१।१-६) जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजिते उर्वराजिते ।

अश्वजिते गोजिते अजिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम्

१

अभिभुवेऽभिभङ्गाय वन्वते ऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसे ।

तविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत

२

सत्रासाहो जनभक्षो जनसह—श्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः ।

वृत्तचयः सहुरिविश्वाहित इन्द्रस्य वोचं प्र कुतानि वीर्या

३

अनानुदो वृषभो दोर्धतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः ।

रघचोदः श्वथनो वीळितस्पृथु—रिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत

४

१२१०

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्विरे धियो हिन्वाना उशिजां मनीषिणः ।

अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत

५

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मै ।

पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्भानं वाचः सुदिनत्वमहाम्

६

॥ १०१ ॥ (क्र० २।२२।१-४) १ अष्टिः, २-३ अतिशकरी, ४ अष्टिः अनिशकरी वा ।

त्रिकंठकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्म—स्तृपत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशत् ।

स ईं ममादु महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः १

अध त्विषीमो अभ्योजसा क्रिबिं युधाभव—दा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।

अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्वद् देवा देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः २

साकं जातः कर्तुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः ।

दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ३ १२१५

तव त्यन्नयं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्यं द्विवि प्रवाच्यं कृतम् ।

यद् देवस्य शर्वसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः ।

भुवद् विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूजं शतकर्तुर्विदादिषम्

४

॥ १०२ ॥ (क्र० २।२०।१-५; ७-८; १०) [८ पूर्वाऽर्धस्य सरस्वती] । त्रिष्टुप् ।

ऋतं देवाय कृण्वते संवित्र इन्द्रायाहिमे न रमन्त आपः ।

अहरहयात्यक्षुरपां कियत्या प्रथमः सर्ग आसाम्

१

यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत् प्र तं जनित्री विदुष उवाच ।	
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै द्विवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम्	२
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे ऽर्धा वृत्राय प्र वधं जभार ।	
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत् तिग्मार्युधो अजयच्छत्रमिन्द्रः	३
बृहस्पते तपुषाश्वेव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ।	
यथा जघन्थ धृषता पुरा चि—देवा जहि शत्रुमस्माकमिन्द्र	४
अव क्षिप विवो अश्मानमुच्चा येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वाः ।	१२३०
तोकर्य सातो तनयस्य भूरे—रस्मा अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम्	५
न मा तमन्न श्रमन्नोन तन्द्र—न्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम् ।	
यो मे पूणाद् यो ददुद् यो निबोधाद् यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत	७
सरस्वति त्वमस्माँ अविद्धि मरुत्वती धृषती जैषि शत्रून् ।	
त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाण—मिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम	८
अस्माकैभिः सत्वभिः शूर शूरे—वीर्यां कृधि यानि ते कर्त्त्वानि ।	
ज्योगभूवन्ननुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि	१०

॥ १०३ ॥ (ऋ० २।४१।१०-१२) गायत्री ।

इन्द्रो अङ्ग महद् भय—मभी षट्प चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः	१०	१२३५
इन्द्रश्च मूळयाति नो न नः पश्चादुद्यं नशत । भद्रं भवाति नः पुरः	११	
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत । जेता शत्रून् विचर्षणिः	१२	१२३७

॥ १०४ ॥ (ऋ० ३।३०।१-२२) (१२३८-१४६६) गायिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इच्छन्ति त्वा सोम्यासुः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।	
तितिक्षन्ते अभिशस्ति जनाना—मिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रक्रेतः	१
न ते दूरे परमा चिद् रजां—स्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।	
स्थिराय वृष्णे सर्वना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्रौ	२
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महावातस्तुविकुर्मिर्कघावान् ।	
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु कर्त्तुं त्या ते वृषभ वीर्याणि	३
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता—न्येको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः ।	
तव द्यावापृथिवी पर्वतासो ऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः	४
उताभये पुरुहूत श्रवोभि—रेको हृव्हमवदो वृत्रहा सन् ।	
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत संगृभ्णा मघवन काशिरित ते	५

प्र सू तं इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमूणन्नेतु शत्रून् ।		
जहि प्रतीचो अनुचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु	६	
यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाऽभक्तं चिद् भजते गेह्यं सः ।		
भद्रा तं इन्द्र सुमतिघृताचीं सहस्रदाना पुरुहूत रातिः	७	
सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तं महस्तमिन्द्र सं पिणक् कुणारुम् ।		
अभि वृत्रं वर्धमानं पियारु मपादमिन्द्र तवसा जघन्थ	८	१२४५
नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदाने ससत्थ ।		
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्ष मर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः	९	
अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो वयार ।		
सुगान् पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन् वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः	१०	
एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम् ।		
उतान्तरिक्षाकुभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान्	११	
दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा विवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः ।		
सं यदानलध्वन आदिदध्वै विमोचनं कृणुते तत् त्वस्य	१२	
दिदक्षन्त उषसो यामन्नक्तो विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् ।		
विश्वे जानन्ति महिना यदागा दिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि	१३	१२५०
महि ज्योतिर्निहितं वक्षणा स्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः ।		
विश्वं स्वाङ्ग संभृतमुस्त्रियायां यत् सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय	१४	
इन्द्र दृष्टं यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः ।		
दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्किणो रिपवो हन्त्वांसः	१५	
सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वाशनिं तपिष्ठाम् ।		
वृश्चेमधस्ताद् वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन् रन्धयस्व	१६	
उद् वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि ।		
आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्माद्विषे तपुषि हेतिमस्य	१७	
स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः ।		
रायो वन्तारो बृहतः स्यामाऽस्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान्	१८	१२५५
आ नो भर भगमिन्द्र द्युमन्तं नि ते वृष्णस्य धीमहि प्ररेके ।		
ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम्	१९	
इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।		
स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कृशिकासो अक्रन्	२०	

आ नो गोत्रा दृढहि गोपते गाः समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः ।
 विवक्षा असि वृषभ सत्यशुष्मो ऽस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः २१
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रमतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् २२

॥ १०५ ॥ (क्र० ३१३१।१-२२) कुशिक ऐषीगधिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा ।

शासद् वह्निर्दुहितुर्नप्यं गाद् विद्राँ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन् ।
 पिता यत्र दुहितुः सेकमञ्जन् त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे १ १२६०
 न जामये तान्वो रिक्थमरिक् चकार गर्भं सनितुर्निधानम् ।
 यदीं मातरो जनयन्त वह्नि—मन्यः कर्ता सुकृतोरन्य क्रन्धन् २
 अग्निर्जज्ञे जुह्वां रेजमानो महस्पृत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे ।
 महान् गर्भो मह्या जातमेषां मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः ३
 अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं महि ज्योतिस्तमसो निरजानन् ।
 तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः ४
 वीळौ सतीरभि धीरां अतृन्दन् प्राचाहिन्वन् मनसा सप्त विप्राः ।
 विश्वामविन्दन् पथ्यामृतस्य प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश ५
 विदद् यदीं सरमा रुग्णमद्वे—र्महि पार्थः पूर्यं सध्यक्कः ।
 अग्रं नयत् सुपद्यक्षराणा—मच्छा रवं प्रथमा जानती गात् ६ १२६५
 अगच्छदु विप्रतमः सखीय—न्नसूदयत् सुकृते गर्भमद्रिः ।
 ससान मर्यो युवभिर्मखस्य—न्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन् ७
 सतःसतः प्रतिमानं पुरोभू—र्विश्वा वेवु जनिमा हन्ति शुष्णम् ।
 प्र णो द्विवः पद्वीर्गव्युरर्चन् त्सखा सखीरमुञ्चन्निरवद्यात् ८
 नि गव्यता मनसा सेदुरकैः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् ९
 इदं चिन्तु सदनं भूर्येषां येन मासाँ असिषासन्नृतेन ९
 संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं पर्यः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः ।
 वि रोदसी अतपद् घोष एषां जाते निःप्टामदधुर्गोषु वीरान् १०
 स जातेभिर्वृत्रहा सेदु हव्यै—रुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अकैः ।
 उरुह्यस्मै घृतवद् भरन्ती मधु स्वाद्य दुदुहे जेन्या गौः ११ १२७०
 पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै महि त्विषीमत सुकृतो वि हि ख्यन् ।
 विष्कभ्रन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन् १२

मही यदि धिषणां शिश्रथे धातु सद्योवृधं विभ्वं रोदस्योः ।	
गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीचीं विश्वा इन्द्राय तविषीरनुताः	१३
महा ते सख्यं वंश्मि शक्तीरा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः ।	
महिं स्तोत्रमव आगन्म सूरैरस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः	१४
महि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं विविद्रा नादितु सखिभ्यश्चरथं समैरत ।	
इन्द्रो नृभिरजनद् दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम्	१५
अपश्चिदेष विभ्वोऽदमूनाः प्र सधीचीरसृजद् विश्वश्चन्द्राः ।	
मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रैर्युभिर्हिन्वत्यक्तुभिर्धनुत्रीः	१६
अनु कृष्णे वसुधिते जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।	
परि यत् ते महिमानं वृजध्ये सखाय इन्द्र काम्यां क्रजिष्याः	१७
पतिर्भव वृत्रहन्तसूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः ।	
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान् महीभिरुतिभिः सरण्यन्	१८
तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन् नव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् ।	
द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्सातये धाः	१९
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन् त्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।	
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्ष्मक्षू कृणुहि गोजितो नः	२०
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णो अरूपैर्धर्मभिर्गति ।	
प्र सूनृतां दिशमानं क्रतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः	२१
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	२२

॥ १०६ ॥ (ऋ० ३।३२।१-१७)

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सर्वनं चारु यत् ते ।	
प्रपुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीपिन् विमुच्या हरीं इह मादयस्व	१
गवांशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदाय ।	
ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व	२
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः ।	
माध्यंदिने सर्वने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सर्गणः सुशिप्र	३
त इन्द्रस्य मधुमद् विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन् ।	
येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदाऽमर्मणो मन्यमानस्य मर्म	४

मनुष्यादिन्द्र सवनं जुषाणः पिबा सोमं शश्वते वीर्यीय ।	
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सर्णयुभिर्णपो अर्णा सिसर्षि	५
त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अत्यौ इव प्रासृजः सर्तवार्ज ।	
शयानमिन्द्र चरता वधेन वव्रिवांसं परि देवीरदेवम्	६
यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमृध्वमजरं युवानम् ।	
यस्य प्रिये ममर्तुर्यज्ञिर्यस्य न रोदसी महिमानं ममाते	७
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे ।	
वाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः	८
अद्वोध सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यज्जातो अपिबो ह सोमम् ।	
न द्याव इन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त	९ १२९०
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन ।	
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशी रथाभवः पूर्यः कारुधायाः	१०
अहन्नहिं परिशयानमर्णं ओजायमानं तुविजात तव्यान् ।	
न ते महित्वमनु भूदध द्यौ र्यवन्यया स्फिग्याः क्षामवस्थाः	११
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूदुत प्रियः सुतसोमो मियेधः ।	
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन् यज्ञस्ते वज्रमहित्य आवत	१२
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वा गैनं सुन्नाय नव्यसे ववृत्याम् ।	
यः स्तोमेभिर्वावुधे पूर्येभि र्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः	१३
विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमहः ।	
अहंसो यत्र पीपरद् यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते	१४ १२९५
आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तैव कोशं सिसिचे पिबध्ये ।	
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदुभि सोमांस इन्द्रम्	१५
न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धु र्नाद्रयः परि षन्तो वरन्त ।	
इत्था सखिभ्य इषितो यकिन्द्रा ऽऽहृहं चिदरुजो गव्यमूर्धम्	१६
शूनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वार्जसातौ ।	
शूणवन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१७

॥ १०७ ॥ (ऋ० ३/३१६-७)

इन्द्रो अस्माँ अरवुद् वज्रबाहु रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।
 देवोऽनयत् सविता सुपाणि स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विबुध्वत् ।
वि वज्रेण परिषदो जघानाऽऽयन्नापोऽयनमिच्छमानाः

७

१३००

॥ १०८ ॥ (ऋ० ३।३।१-११)

इन्द्रः पुभिर्दातिरद दासमर्कैर्विदद वसुर्वयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजुतस्तन्वा वावृधानो भूरिदान आपृणद रोदसी उभे
मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमिर्यमि वाचममृताय भूषन् ।
इन्द्रं क्षितीनामसि मानुषीणां विशां देवीनामुत पूर्वयावा
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद वर्पणीतिः ।

१

२

३

४

अहन व्यंसमुशधग्वनेप्वाविधेना अकृणोद राभ्याणाम्
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्ना मविन्दुज्ज्योतिर्बृहते रणाय

५

१३०५

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद दधानो नर्या पुरुणि ।
अचेतयद धिर्य इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम्
महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि ।
वृजनेन वृजिनान्तं पिपेष मायाभिर्दस्यूरभिभूत्योजाः
युधेन्द्रो म्हा वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः ।
विवस्वतः सदाने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति
सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां संसवांसं स्वरपश्च देवीः ।

७

८

९

ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमा मिन्द्रं मकुन्त्यनु धीरणासः
ससानात्यो उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।
हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दुस्युन् प्रार्य वर्णमावत
इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीरसनोदन्तरिक्षम् ।
बिभेद वलं नुनुदे विवाचो ऽथाभवद दमिताभिकृतूनाम्
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शूण्वन्तमुग्रभूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

१०

१३१०

११

॥ १०९ ॥ (ऋ० ३।३।१-११)

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।
पिबास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय
उपाजिरा पुरुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्वा युनज्मि ।
द्ववद यथा संभृतं विश्वतश्चिदुपेमं यज्ञमा वहात इन्द्रम्

१

२

उपो नयस्व वृषणा तपुष्पो—तेमव त्वं वृषभ स्वधावः ।		
ग्रसेतामश्वा वि मुचेह शोणा द्विवेदिवे सदृशीरन्द्रि धानाः ।	३	
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू ।		
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्राँ उप याहि सोमम्	४	१३१५
मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।		
अत्यायाहि शश्वतो वयं ते ऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः	५	
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि ।		
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र	६	
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम् ।		
तदौकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं गता हवींषि	७	
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन् ।		
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन् विद्वान् पथ्याऽ अनु स्वाः	८	
याँ आर्भजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नर्भवन् गणस्ते ।		
तेभिरेतं सजोषा वावशानोऽ ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र	९	१३२०
इन्द्र पिब स्वधया चित् सुतस्या—ऽग्नेवाँ पाहि जिह्वया यजत्र ।		
अध्वर्योवाँ प्रयतं शक्र हस्ता—न्द्रोतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व	१०	
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	११	

॥ ११० ॥ (ऋ० ३।३६।१-११) [१० घोर आङ्गिरसः ।]

इमाम् षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वद्वृतिभिर्यादमानः ।		
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभि—र्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत्	१	
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विद्वाना ऋभुर्येभिर्वृषपवाँ विहायाः ।		
प्रयम्यमानान् प्रति षू गृभाये—न्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः	२	
पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे ।		
यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्योँ अद्या नवीयान्	३	१३२५
महाँ अमत्रो वृजने विरप्दयु—ग्रं शवः पत्यते धूष्णवोजः ।		
नाहं विव्याच पृथिवी चनेनं यत् सोमासो हर्यश्चममन्दन्	४	
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समार्चके वृषभः काव्येन ।		
इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः	५	

प्र यत् सिन्धवः प्रसवं यथाय—ज्ञापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः ।	
अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान यवीं सोमः पुणतिं दुग्धो अंशुः	६
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः ।	
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः	७
हृदा इव कुक्षयः सोमधानाः समीं विव्याच सर्वना पुरुणि ।	
अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्	८
आ तू भरं मार्किरतत परिं ष्ठाद् विद्या हि त्वा वसुपतिं वसूनाम् ।	१३३०
इन्द्र यत् ते मार्हिन् दत्तम्—स्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्च प्र यन्धि	९
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषि—न्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरः ।	
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिपिन्	१०
शुनं हुवेम मघवानिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वार्जसातौ ।	
शूण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धर्नानाम्	११

॥ १११ ॥ (ऋ० ३।३७।१-११) गायत्री, ११ अनुष्टुप् ।

वात्रंहत्याय शर्वसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि	१
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्रं कृण्वन्तु वाघतः	२
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीभिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये	३
पुरुष्टुतस्य धार्मभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः	४
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वार्जसातये	५
वार्जेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्रं वृत्राय हन्तव	६
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृतसूतुषु श्रवःसु च । इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु	७
शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो	८
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे	९
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत ते शुष्मं तिरामसि	१०
अर्वावतो न आ ग—ह्यथो शक्र परावतः ।	
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत् आ गहि	११

॥ ११२ ॥ (ऋ० ३।२८।१-१०)

[प्रजापतिर्विश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाक्यो वा; तावुभावपि वा नाथिनो विश्वामित्रो वा ।] त्रिष्टुप् ।

अभि तष्टेव दीधया मनीषा—मत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः ।	
अभि प्रियाणि मर्मज्ञात् पराणि कुर्वीरिच्छामि संहशं सुमेधाः	१
	१३४५

इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम् ।	
इमा उ ते प्रणयोऽवर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मेणि गमन्	२
नि धीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन् ।	
सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मही समृते धार्यसे धुः	३
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूष—डिह्यो वसानश्चरति स्वरोचिः ।	
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा—ऽऽ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ	४
असूत पूर्वी वृषभो ज्याया—निमा अस्य शुरुभः सन्ति पूर्वीः ।	
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाथे	५
त्रीणि राजाना विदथे पुरुणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि ।	
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वा अपि वायुकेशान्	६
तदिन्वस्य वृषभस्य धेनो—रा नार्मभिर्ममिरे सक्म्यं गोः ।	६३५०
अन्यदन्यदसूर्यं वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्	७
तदिन्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्नत् ।	
आ सुण्डुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि ववे	८
युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद् दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् ।	
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि	९
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१०

॥ ११३ ॥ (ऋ० ३।३९।१-९)

इन्द्रं मतिर्हृद् आ वच्यमाना ऽच्छा पतिं स्तोमंतष्टा जिगाति ।	
या जागृविर्विदथे शस्यमाने—न्द्र यत् ते जायते विद्धि तस्य	१
विवश्चिदा पूर्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना ।	६३५५
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः	२
यमा चिदत्र यमसूरत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात ।	
वपूषि जाता मिथुना संचेते तमोहना तपुषो बुध एतां	३
नकिरेषां निन्विता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः ।	
इन्द्रं एषां हंहिता माहिनावा—नुद् गोत्राणि ससृजे कुंसनावान्	४
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वै—रभिज्ञा सत्वभिर्गा अनुगमन् ।	
सत्यं तदिन्द्रो वृशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेदु तमांसि क्षियन्तम्	५

इन्द्रो मधु संभृतमुस्त्रियायां पद्भद विवेद शफवन्नमे गोः ।
 गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्
 ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञान-ज्ञारे स्याम दुरिताकुभीके ।
 इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः
 ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु प्या-द्वारे स्याम दुरितस्य भूरैः ।
 भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो ब्रह्णावत्
 शुनं हुवेम मधवानमिन्द्र-मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रभूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

६

१३६०

७

८

९

॥ ११४ ॥ (ऋ० ३।४०।१-९) गायत्री ।

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः
 इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्युत । पिबा वृषस्व तातृपिम्
 इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विश्पते
 इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्द्रवः
 दुधिष्वा जठरं सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तव द्युक्षास इन्द्रवः
 गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद यशः
 अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे
 अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः
 यदन्तरा परावत-मर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत् आ गहि

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१३६५

१३७०

॥ ११५ ॥ (ऋ० ३।४१।१-९)

आ तू न इन्द्र मद्य-ग्धुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्यद्विवः
 सत्तो होता न ऋत्विय-स्तिस्तिरे बर्हिर्गानुषक् । अयुञ्जन् प्रातरद्रयः
 इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम्
 रारन्धि सर्वनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः
 मर्त्यः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्र वत्सं न मातरः
 स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः
 वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो
 मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियावाङ् याहि । इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह
 अर्वाञ्च त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिरासदे

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१३७५

१३८०

॥ ११६ ॥ (ऋ० ३।४१।१-९)

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिग्म् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः

१

तमिन्द्र मद्रुमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावाभिः सुतम् । कुविद्रवस्य तृष्णवः	२	
इन्द्रमिथा गिरो ममा—ऽच्छागुरिषिता इतः । आवृते सोमपीतये	३	
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविद्रागमंत	४	१३८५
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो	५	
विद्रा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधुषं कवे । अधा ते सुम्रमीमहे	६	
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम्	७	
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्येऽ सोमं चोदामि पीतयं । एष रारन्तु ते हृदि	८	
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे । कुशिकासो अवस्यवः	९	१३९०

॥ ११७ ॥ (ऋ० ३।४३।१-८) त्रिष्टुप् ।

आ याह्यर्वाङ्गुप वन्धुरेष्ठा—स्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम् ।		
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हि—स्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते	१	
आ याहि पूर्वीरति चर्षणीरां अर्य आशिष उप नो हरिभ्याम् ।		
इमा हि त्वा मतयः स्तोमंतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः	२	
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूर्यम् ।		
अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमाद्वे मधूनाम्	३	
आ च त्वामेता वृषणा वहतो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा ।		
धानावदिन्द्रः सर्वं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद् वन्दनानि	४	
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन् ।		
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः	५	१३९५
आ त्वा ब्रुहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु ।		
प्र ये द्विता विव ऋत्नन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः	६	
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार ।		
यस्य मदे च्यावयसि प्र कुण्टी—र्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ	७	
शुनं हुवेम मघवानामिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	८	

॥ ११८ ॥ (ऋ० ३।४४।१-५) बृहती ।

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः ।		
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ ग—ह्या तिष्ठ हरितं रथम्	१	
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्य हर्यन्नरोचयः ।		
विद्रांश्चिकित्वान् हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अग्नि श्रियः	२	१४००

द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्षसम् ।	
अधारयद्भरितोभूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्	३
जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।	
हर्यश्चो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं बाह्वोर्हरिम्	४
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुकैरभिवृतम् ।	
अपावृणोद्भरिभिरद्रिभिः सुतमुद् गा हरिभिराजत	५

॥ ११९ ॥ (ऋ० ३।४।१-५)

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्—र्याहि मयूररोमभिः ।	
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनो ऽति धन्वेव तां इहि	१
वृत्रखादो वलरुजः पुरां कुर्मो अपामजः ।	
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो हृव्हा चिदारुजः	२ १४०५
गम्भीरां उवृधूरिव क्रतुं पुण्यसि गा इव ।	
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा हृदं कुल्या ड्वाशत	३
आ नस्तुजं गयिं भरां—ऽशं न प्रतिजानते ।	
वृक्षं पक्वं फलमङ्गीव धूनुहीन्द्र संपारणं वसु	४
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्विष्टिः स्वयंशस्तरः ।	
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः	५

॥ १२० ॥ (ऋ० ३।४।१-५) त्रिष्टुप ।

युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृण्वेः ।	
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्याङ्गीन्द्र श्रुतस्य महतो महानि	१
महौ असि महिष वृण्येभिर्धनस्पृहृग्र सहमानो अन्यान् ।	
एको विश्वस्य भुवन्स्य राजा स योधया च क्षयया च जनान्	२ १४१०
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।	
प्र मज्मनां विव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी	३
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवृतं मतीनाम् ।	
इन्द्रं सोमासः प्रादिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति	४
यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभ्रतस्त्वाया ।	
तं ते हिन्वन्ति तर्मु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पातवा उ	५

॥ १२१ ॥ (ऋ० ३।४७।१-५)

मरुत्वौ इन्द्र वृषभो रणाय पिब सोममनुष्वधं मदाय ।
 आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मि त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् १
 सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
 जहि शत्रूँष मृधो नुक्स्वा—ऽथाभयं कृणुहि विश्वतो नः २ १४१५
 उत क्रतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोम—मिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
 यौ आभजो मरुतो ये त्वा ऽन्वहन् वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ३
 ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन् ये शाम्बरे हरिवो ये गर्विष्ठौ ।
 ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ४
 मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान—मकवारिं विव्यं शासमिन्द्रम् ।
 विश्वासाहमवसे नूतनायो—ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ५

॥ १२२ ॥ (ऋ० ३।४८।१-५)

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।
 साधोः पिब प्रतिक्रामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य १
 यज्जायथास्तदहरस्य कामे—ऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।
 तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे २ १४२०
 उपस्थाय मातरमन्नमैष्ट तिग्ममपश्यद्वाभि सोममूर्धः ।
 प्रयावयन्नचरद् गृत्सो अन्त्यान् महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ३
 उग्रस्तुराषाल्लभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
 त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूया—ऽऽमुष्या सोममपिबच्चमूषु ४
 शुनं हुवेम मघवानिमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शूण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२३ ॥ (ऋ० ३।४९।१-५)

शंसा महामिन्द्रं यस्मिन् विश्वा आ कृष्टयः सोमपाः काममर्चयन् ।
 यं सुक्रतुं धिषणे विश्वतष्टं घ्नं वृत्राणां जनयन्त देवाः १
 यं नु नक्रिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् ।
 इततमः सत्त्वभिर्यो ह शूषैः पृथुज्या अमिनादायुर्दस्योः २ १४२५
 सहावा पुत्सु तरणिर्नावा व्यानशी रोदसी मेहनावान् ।
 भगो न कारे हव्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ३

धृतां विवां रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वां रथां न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् ।

क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ४

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२४ ॥ (ऋ० ३।५०।१-५)

इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सामं आगत्या तुम्रो वृषभो मरुत्वान् ।

ओरुव्यचाः पृणतामेभिरन्ने—रास्यं हविस्तन्वः काममृध्याः १

आ ते सपर्यु जवसे युनजिम ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः ।

इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वस्य सुपुतस्य चारोः २ १४३०

गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपार—मिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धार्यसे गृणानाः ।

मन्दानः सोमं पपिवां क्रजीषिन् त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ३

इमं कामं मन्दया गोभिरश्वं—श्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।

स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ४

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२५ ॥ (ऋ० ३।५१।१-१२) त्रिष्टुप्, १-३ जगती, १०-११ गायत्री ।

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य—मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।

वावृधानं पुरुद्वृतं सुवृक्तिभि—रमर्त्यं जरमाणं द्विवेदिवे १

शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यन्ति विश्वतः ।

वाजसनिं पूभिदं तूणिमप्लुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम २ १४३५

आकरे वसोर्जरिता पनस्यते ऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति ।

विवस्वतः सदन आ हि पिप्रियं सत्रासाहमाभिमातिहनं स्तुहि ३

नृणामु त्वा नृतमं गीभिर्कथै—रभि प्र वीरमर्चता सबाधः ।

सं सहसे पुरुमायो जिहीति नमो अस्य प्रदिव एक ईशे ४

पूर्वीरस्य निष्पिधो मर्त्येषु पुरु वसूनि पृथिवी विभर्ति ।

इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि ५

तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व ।

बोध्याऽपिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वर्यो धाः ६

इन्द्रं मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य ।

तव प्रणीती तव शूर शर्म—न्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः ७ १४४०

स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः ।

जातं यत् त्वा परि देवा अभूषन् महे भराय पुरुहूत विश्वे ८

अप्तर्ये मरुत आपिरेषो ऽमन्दुन्निन्द्रमनु दातिवाराः ।

तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं वाशुषः स्वे सधस्थे ९

इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते । पिबा त्वस्य गिर्वणः १०

यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् । स त्वा ममत्तु सोम्यम् ११

प्र ते अश्रोतु कुक्षयोः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः । प्र बाहू शूर राधसे १२ १४४५

॥ १२६ ॥ (ऋ० ३।५२।१-८) त्रिष्टुप्, १-४ गायत्री, ६ जगती ।

धानावन्तं करम्भिणामपूषवन्तमुक्थिनम् । इन्द्रं प्रातर्जुषस्व नः १

पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च । तुभ्यं हव्यानिं सिस्रते २

पुरोळाशं च नो घसो जोषयासि गिरश्च नः । वधूयुस्वि योषणाम् ३

पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते ब्रूहन् ४

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृण्वेह चारुम् ।

प्र यत् स्तोता जरिता तूर्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरिष्टे ५ १४५०

तृतीयं धानाः सर्वने पुरुण्डुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः ।

ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः ६

पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः ।

अपूपमद्भिः सर्गणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ७

प्रति धाना भरत तूर्यमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम् ।

दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ८

॥ १२७ ॥ (ऋ० ३।५३।१-१४) त्रिष्टुप् १० जगती, १२ अनुष्टुप्, १३ गायत्री ।

तिष्ठा सु कै मघवन् मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि ।

पितुर्न पुत्रः सित्रमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः २

शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् ।

एवं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ऽथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ३ १४५५

जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनिस्तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।

यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्ठा दूतो धन्वात्यच्छ ४

परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम् ।

यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं बाजिनो रासभस्य ५

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते ।	
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्	६
इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा द्विस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।	
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः	७
रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम् ।	
त्रिर्यद् द्विः परि मुहूर्तमागात् स्वैर्मन्त्रैरनुतुपा कृतावा	८ १४६०
महो ऋषिर्देवजा देवजूतो ऽस्तभ्नात् सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः ।	
विश्वामित्रो यदवहत् सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः	९
हंसा इव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा ।	
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु	१०
उप प्रेतं कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः ।	
राजा वृत्रं जङ्घनत् प्रागपागुदुग्धा यजाते वर आ पृथिव्याः	११
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम् ।	
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्	१२
विश्वामित्रा अरासत् ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । करदिन्नः सुरार्धसः	१३ १४६५
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गात्रो नाशिरं दुहे न तपन्ति घर्मम् ।	
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः	१४ १४६६

॥ १२८ ॥ (क्र० ४।१६।१-२१) (१४६७-१६६६) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

आ सत्यो यातु मघवां ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः ।	
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः	१
अव स्य शूराध्वनो नान्ते ऽस्मिन् नो अद्य सर्वने मन्दध्वै ।	
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म	२
कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चीत् ।	
द्विव इत्था जीजनत् सप्त कारूनह्ना चिच्चकुर्वयुना गृणन्तः	३
स्वर्यद् वेदिं सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योतीं रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ।	
अन्धा तमांसि दुर्धिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ	४ १४७०
ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीप्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।	
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यमि यो विश्वा भुवना बभूव	५

विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्रा—नपो रिरिच सखिभिर्निकामैः ।	
अश्मानं चिद् ये बिभिदुर्वचोभि—र्ब्रजं गोमन्तमुशिजो वि ववुः	६
अपो वृत्रं वविवांसं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।	
प्राणांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो	७
अपो यदद्रिं पुरुहूत ददं—गविर्भुवत् सरमा पूर्य ते ।	
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरि गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः	८
अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मधवन्नाधमानम ।	
ऊतिभिस्तमिषणो द्युम्रहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त	९ १४७१
आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः ।	
स्वे योनौ नि षदत् सख्ये वि वां चिकित्सद्वतचिन्द्र नारी	१०
यासि कुत्सेन स्रथमवस्यु—स्तोदो वारस्य हर्योरीशानः ।	
ऋज्वा वाजं न गध्यं युयूपन् कविर्यदहन् पार्याय भूषात्	११
कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अहः कुर्यवं सहस्रा ।	
सद्यो दस्युन् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहतादुभीके	१२
त्वं पिपुं मृगयं शूशुवांसं—मृजिष्वने वैदथिनाय रन्धीः ।	
पञ्चाशत् कृष्णा नि वपः सहस्रा ऽत्कं न पुरो जरिमा वि ददः	१३
सूर उपाके तन्वं१ दधानो वि यत् ते चेत्यमृतस्य वपः ।	
मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत	१४ १४८०
इन्द्रं कामा वसूयन्तो अगमन् त्स्वर्मीळहे न सवने चक्रानाः ।	
श्रवस्यवः शशमानास उक्थै—रोको न रणवा सुहृशीव पुष्टिः	१५
तमिद् व इन्द्रं सुहवै हुवेम यस्ता चकार नर्या पुरूणि ।	
यो मावते जरित्रे गध्यं चि—न्मक्षु वाजं भरति स्पर्हाराधाः	१६
तिग्मा यदुन्तरशनिः पताति कस्मिञ्चिच्छूर मुहुके जनानाम् ।	
घोरा यदर्यं समृतिर्भवा—त्यधं स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः	१७
भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ ।	
त्वामनु प्रमतिमा जगन्मो—रुशंसो जरित्रे विश्वधं स्याः	१८
एभिर्नृभिर्निन्द्र त्वायुभिश्चा मधवन्निर्मधवन् विश्व आजौ ।	
द्यावो न द्युन्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः	१९ १४८५

एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।	
नू चिद् यथा नः सख्या वियोष—दसन्न उग्रोऽविता तनूपाः	२०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१

॥ १२९ ॥ (क्र० ४।१७।१-२१) त्रिष्टुप्, १५ एकपदा विराट् ।

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः ।	
त्वं वृत्रं शर्वसा जघन्वान् त्सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानान्	१
तव त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः ।	
ऋघायन्तं सुभ्वः पर्वतास आर्कुन् धन्वानि सरयन्त आपः	२
भिनद् गिरिं शर्वसा वज्रमिष्ण—न्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः ।	
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जर्वसा हतवृष्णीः	३ १४९०
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौ—रिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत् ।	
य ईं जजान स्वयं सुवज्र—मनपच्युतं सदासो न भूम	४
य एक इच्छ्यावर्यति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः	
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः	५
सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः	
सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः	६
त्वमधं प्रथमं जायमानो ऽमे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ।	
त्वं प्रति प्रवत आशयान्—महिं वज्रेण मघवन् वि वृश्चः	७
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।	
हन्ता यो वृत्रं सनितो न वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः	८ १४९५
अयं वृत्श्चातयते समीची—र्य आजिषु मघवा शृण्व एकः ।	
अयं वाजं भरति यं सनोत्य—स्य प्रियासः सख्ये स्याम	९
अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्न—न्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः ।	
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात्	१०
समिन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः ।	
एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः	११
कियत् स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर्जनितुर्यो जजान ।	
यो अरय शुष्मं मुहुकैरियति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभैः	१२

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोती—र्यति रेणुं मघवां समोहम् ।		
विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौ—रुत स्तोतारं मघवा वसौ धात्	१३	१५००
अयं चक्रमिषणत् सूर्यस्य न्येतशं रीरमत ससृमाणम् ।		
आ कृष्ण ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्रे रजसो अस्य योनौ	१४	
असिक्न्यां यजमानो न होता	१५	
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।		
जनीयन्तो जनिदामक्षितोति—मा च्यावयामोऽवते न कोशम्	१६	
त्राता नो बोधि दृष्टान आपि—रभिख्याता मडिता सोम्यानाम् ।		
सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोकमुंशते वयोधाः	१७	
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः ।		
वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र	१८	१५०५
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति ।		
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्म—न्नकिर्वेवा वारयन्ते न मतीः	१९	
एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत् सत्या चर्षणीधृदन्वा ।		
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे	२०	
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इधं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।		
अकारि ते हरिवो बह्य नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१	

॥ १३० ॥ (ऋ० ४।१८।१-१३)

[१३ वामदेवो गौतमः, १ इन्द्रः, ४ (उत्तरार्धस्य), ५-७ अदितिः] ।

[१, ४ उत्तरार्धस्य, ५, ६, ७ वामदेवः, २, ३, ४ पूर्वार्धस्य, ८-१३ इन्द्रः ।] त्रिष्टुप ।

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो वेवा उदजायन्त विश्वे ।		
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः	१	
नाहमतो निरया दुर्गहैतत् तिरश्चता पार्श्वाग्निर्गमाणि ।		
बहूनि मे अकृता कर्त्वाणि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै	२	१५१०
परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गर्मानि ।		
त्वष्टुर्गृहे अपिबत् सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्बोः सुतस्य	३	
किं स ऋधक् कृणवद् यं सहस्रं मासो जभारं शरदश्च पूर्वीः ।		
नही न्वस्य प्रतिमानम्—स्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः	४	

अवद्यमिव मन्यमाना गुहाक—रिन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम् ।

अथोदस्थात् स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः

५

एता अर्षन्त्यललाभर्वन्ती—ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः ।

एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति

६

किमुं प्विदस्मै निविदो भनन्ते—न्द्रस्यावद्यं दिधिपन्त आपः ।

ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वां असृजद् वि सिन्धून्

७

१५१५

ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुपवा जगार ।

ममच्चिदापः शिशवे ममृड्यु—ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत

८

ममच्चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वां अप हनू जघान ।

अधा निविन्द्र उत्तरो बभूवा—जिह्वो दासस्य सं पिणग्वधेन

९

गृष्टिः संसूव स्थविरं तवागा—मनाधूप्यं वृषभं तुष्टमिन्द्रम् ।

अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वं दृच्छमानम्

१०

उत माता महिषमन्वेन—दुमी त्वा जहति पुत्र देवाः ।

अथाब्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन् त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व

११

कस्ते मातरं विधवामचक्र—च्छयुं कस्त्वामजिघांसचरन्तम् ।

कस्ते देवो अधि मर्डीक आसीद् यत् प्राक्षिणाः पितरं पावुगृह्य

१२

१५२०

अवर्त्या शुनं आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् ।

अपश्यं जायाममहीयमाना—मधा मे श्येनो मध्वा जभार

१३

॥ १३१ ॥ (ऋ० ४।१९।१-११)

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः ।

महामुभे रोदसी वृद्धमुष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये

१

अवासृजन्त जिब्र्यो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः ।

अहन्नाहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीरदो विश्वधेनाः

२

अनुत्पुण्वन्तं वियतमबुध्य—मबुध्यमानं सुपुषाणामिन्द्र ।

सप्त प्रतिं प्रवत आशयान—महिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन्

३

अक्षोदयच्छवसा क्षाम बुध्नं वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः ।

हृह्वान्यौभ्रादुशमान ओजो ऽवाभिनत् ककुभः पर्वतानाम्

४

१५२५

अभि प्र ददुर्जनयो न गर्भं रथा इव प्र ययुः साकमद्रयः ।

अतर्पयो विसृत उज्ज ऊर्मीन् त्वं वृतां अग्निणा इन्द्र सिन्धून्

५

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वृष्याय क्षरन्तीम् ।	
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणां अकृणोरिन्द्र सिन्धून्	६
प्राग्वो नमन्वोऽं न वक्त्रा ध्वसा अपिन्वद् युवतीर्कृतज्ञाः ।	
धन्वान्यज्रां अपृणक् तृषाणां अधोगिन्द्रः स्तर्योऽं दंसुपत्नीः	७
पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वां असृजद् वि सिन्धून् ।	
परिष्ठाता अतृणद् बद्धधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या	८
वृषीभिः पुत्रमग्नवो अद्वानं निवेशनान्दरिव आ जभर्थ ।	
व्युन्धो अख्यदहिमादवानो निर्भूदुखच्छित् समरन्त पवं	९ १५३०
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्रा—ऽऽविद्वां आह विदुषे करांसि ।	
यथायथा वृष्यानि स्वगूर्ता ऽपांसि राजन् नर्याविवेपीः	१०
नू णुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३२ ॥ (क्र० ४२०१२-११)

आ न इन्द्रो दुरादा न आसा—दभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।	
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वाणिः पृतन्यून	१
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छा—ऽर्वाचीनोऽवसे राधसे च ।	
तिष्ठति वज्री मघवा विरप्शी—मं यज्ञमनु नो वाजसातो	२
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत सनिष्यसि क्रतुं नः ।	
श्वघ्नीव वज्रिन्स नये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम	३ १५३५
उशान्तु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुपुतस्य स्वधावः ।	
पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन	४
वि यो ररुश क्रपिभिर्नवैभि—र्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता ।	
मर्यो न योषामभि मन्यमानो ऽच्छां विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्	५
गिरिर्न यः स्वतवां क्रुष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः ।	
आर्दता वज्रं स्थाविरं न भीम उद्वेव कोशं वसुना न्यृण्टम्	६
न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।	
उद्गावृषाणस्तविषीव उग्रा—ऽस्मभ्यं दद्धि पुरुहूत गायः	७
ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीना—मृत वज्रमपवर्तासि गोनाम् ।	
शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम्	८ १५४०

कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिह्नवः ।	
पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहो ऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे	९
मा नो मर्धिरा भरा वृद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत् ते ।	
नव्ये वृष्णे शस्ते अस्मिन् तं उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः	१०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३३ ॥ (ऋ० ४।२।१-११)

आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः ।	
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वी—द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुण्यात्	१
तस्येद्विह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युन्नस्य तुविरार्धसो नृन् ।	
यस्य क्रतुर्विदुथ्योऽं न सम्राट् साह्वान तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः	२ १५४५
आ यात्विन्द्रो विव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात् ।	
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदर्नाहृतस्य	३
स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेज्विन्द्रम् ।	
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ	४
उप यो नमो नमसि स्तभाय—न्निर्यति वाचं जनयन् यजध्वै ।	
ऋक्षसानः पुरुवार उक्थे—रेन्द्रं कृण्वीत सदर्नेषु होता	५
धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान् त्सदर्न्तो अद्रिमौशिशस्य गोहे ।	
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्तसंवरणेषु वह्निः	६
सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय ।	
गुहा यदीमौशिशस्य गोहे प्र यद् धिये प्रायसे मदाय	७ १५५०
वि यद् वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि ।	
विदद् गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्योऽं वहन्ति	८
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारां स्तुवते राध इन्द्र ।	
का ते निषक्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ	९
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्रा—ङ्कन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः ।	
पुरुषुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य	१०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३४ ॥ (ऋ० ४।२२।२-२२)

यज्ञ इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान् करति शुष्मया चित् ।

ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्त्वा यो अश्मानं शर्वसा बिभ्रदेति १

१५५५

वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान् ।

श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णा यस्याः पर्वाणि सग्याय विव्ये २

यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुर्मः

दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत् प्र भूमं ३

विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वी-द्यौर्ऋष्वज्जनिमन् रेजत क्षाः ।

आ मातरा भरति शुष्मया गो-नूवत् परिज्मन् नोनुवन्त वाताः ४

ता तू तं इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित् सर्वनेषु प्रवाच्या ।

यच्छूर धृष्णो धृषता दधुष्वा-नहिं वज्रेण शवसाविंवेपीः ५

ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊर्ध्वः ।

अर्धा ह त्वद् वृषमाणो भियानाः प्र सिन्धवो जर्वसा चक्रमन्त ६

१५६०

अत्राह ते हरिवस्ता उ देवी-रवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः ।

यत् सीमनु प्र मुचो बद्धधाना वीर्यामनु प्रसितिं स्यन्वुयध्यं ७

पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धु-रा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः ।

अस्मद्वाक् शुशुचानस्य यस्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः ८

अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि ।

अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ९

अस्माकमिह सु गृणुहि त्वमिन्द्रा-ऽस्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान् ।

अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधी-रस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः १०

नू षुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।

अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११

१५६५

॥ १३५ ॥ (ऋ० ४।२३।१-२२) ८-१० ऋतं वा ।

कथा महामवृधत् कस्य होतु-र्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः ।

पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय १

को अस्य वीरः सधमार्दमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य ।

कदस्य चित्रं चिकिते कद्वती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः २

कथा शृणोति ह्यमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद ।	
का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैर्नमाहुः पपुंरिं जरित्रे	३
कथा सबाधः शशमानो अस्य नशकुभि द्रविणं दीध्यानः ।	
देवो भुवन्नवदा म क्रतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज्जुजोषत	४
कथा कदुरया उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष ।	
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्त्रे	५
किमादमर्त्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम ।	
श्रिये सुहृशो वपुस्स्य सर्गाः स्वर्णं चित्रतममिष आ गोः	६
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका ।	
क्रणा चिद् यत्र क्रणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे	७
क्रतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वी—क्रतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति ।	
क्रतस्य श्लोको बधिरा ततर्दु कर्णा बुधानः शुचमान आयोः	८
क्रतस्य हृव्हा धरुणानि सन्ति पुरुणि चन्द्रा वपुषे वपूषि ।	
क्रतेन दीर्घमिषणन्त पृक्षं क्रतेन गाव क्रतमा विवेशुः	९
क्रतं येमान क्रतमिद् वनो—त्युतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः ।	
क्रताय पृथ्वी बहुले गभीरे क्रताय धेनू परमे दुहाते	१०
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नन्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३६ ॥ (४।२४।१-११) त्रिष्टुप्, १० अनुष्टुप् ।

का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्र—मर्वाचीनं राधस आ ववर्तत् ।	
दुदिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्पिधां नो जनासः	१
रा वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्युः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः ।	
स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात	२
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिकांसस्तन्वः कृणवत् त्राम् ।	
मिथो यत् त्यागमुभयांसो अगमन् नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ	३
क्रतुयन्ति क्षितयो योग उग्रा—ऽऽशुषाणासो मिथो अर्णसातौ ।	
सं यद् विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके	४
आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित् पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् ।	
आदित् सोमो वि पृच्यादसुष्वी—नादिज्जुजोष वृषभं यजधै	५

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति ।	
सधीचीनेन मनसाविवेनन् तमित सखायं कृणुते समत्सु	६
य इन्द्राय सुनवत् सोममद्य पचात् पक्तीरुत भुज्जाति धानाः ।	
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः	७
यदा समर्य व्यचेद्वधावा दीर्घं यद्वाजिमभ्यस्यदुर्यः ।	
अचिक्रवद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्धिः	८
भूर्यसा वस्नमचरत् कनीयो ऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् ।	
स भूर्यसा कनीयो नारिरेचीद् वीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम	९
क इमं दुशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः ।	
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्	१०
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो बह्व नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३७ ॥ (क्र० ४१५१७-८) त्रिष्टुप् ।

को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष ।	
को वा महेऽवसे पायाय समिन्द्रे अग्नौ सुतसोम ईडे	१
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वा भवति वस्त उसाः ।	
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती	२
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्यो अदितिं ज्योतिरीडे ।	
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यां ऽशोः पिबन्ति मनसाविवेनम्	३
तस्मा अग्निर्भरतः शर्म यंस ज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।	
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्	४
न तं जिनन्ति बहवो न दुभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।	
प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी	५
सुप्राव्यः प्राशुषाळेष् वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः ।	
नासुष्वेषापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः	६
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते ।	
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्रं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत्	७
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।	
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते	८

॥ १३८ ॥ (ऋ० ४।२६।१-३) [१-३ इन्द्रो वा] । [१-३ आत्मा वा] ।

अहं मनुरभवं सूर्यश्चा—ऽहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः ।
 अहं कुत्समार्जुनेयं न्यूञ्जे ऽहं कविरुशना पश्यता मा १
 अहं भूमिमददामार्याया—ऽहं वृष्टिं द्वाशुषे मर्त्याय ।
 अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन् २
 अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नवं साकं नवतीः शम्बरस्य ।
 शततमं वेद्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम् ३

॥ १३९ ॥ (ऋ० ४।२८।१-५) [इन्द्रासोमो वा ।]

त्वा युजा तव तत् सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सभुतस्कः ।
 अहन्नहिमरिणात सप्त सिन्धू—नपावृणोदपिहितेव खानि १
 त्वा युजा नि खिदुत् सूर्यस्ये—न्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्द्रो ।
 अधि ण्णुना बृहता वर्तमानं महो दुहो अपं विश्वायुं धायि २
 अहन्नन्द्रो अर्दहदुग्निरिन्द्रो पुरा दस्यून् मध्यदिनादुभीके ।
 दुर्गे दुरोणे कृत्वा न यातां पुरु सहस्रा शर्वा नि बर्हीत् ३
 विश्वस्मात् सीमधमाँ इन्द्र दस्यून् विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः ।
 अबाधित्याममृणतं नि शत्रू—नविन्देत्यामपचितिं वधत्रैः ४
 एवा सत्यं मघवाना युवं त—दिन्द्रश्च सोमोर्वमश्यं गोः ।
 आदर्हतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित् ततृवाना ५

॥ १४० ॥ (ऋ० ४।२९।१-५)

आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः ।
 तिरश्चिद्वयः सर्वना पुरुण्या—ङ्गुषेभिर्गृणानः सत्यराधाः १
 आ हि ण्मा याति नर्यश्चिकित्वान् हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम् ।
 स्वश्चो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः २
 श्रावयेदस्य कर्णा वाजयधै जुष्टामनु प्र दिशं मन्द्वयधै ।
 उद्धावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च ३
 अच्छा यो गन्ता नार्धमानमृती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम् ।
 उप त्मनि दधानो धुर्यांश्शून् त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ४
 त्वोतासो मघवानिन्द्र विप्रं वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः ।
 भेजानासां बृहद्विवस्य राय आक्रायस्य दावने पुरुक्षोः ५

१६००

१६०५

॥ १४१ ॥ (क्र० ४३०११-८, १२-२४) गायत्री; ८, २४ अनुष्टुप् ।

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायँ अस्ति वृत्रहन् । नकिरेवा यथा त्वम् १	
सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः २	१६१०
विश्वे चनेवृता त्वा देवास इन्द्र युयुधुः । यदहा नक्तमातिरः ३	
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुपाय इन्द्र सूर्यम् ४	
यत्र देवाँ क्रघायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत । त्वमिन्द्र वनूरहन् ५	
यत्रोत मर्त्याय क—मरिणा इन्द्र सूर्यम् । प्रावः शचीभिरेतेशम् ६	
किमादुतासि वृत्रहन् मयवन् मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ७	१६१५
एतद् घेदुत वीर्यं—मिन्द्र चकर्थ पौंस्यम् । स्त्रियं यद् दुर्हणायुवं वर्धीदुहितरं विवः ८	
उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षामि । परि ण्ठा इन्द्र मायया १२	
उत शुष्णस्य धृष्ण्या प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य संपिणक् १३	
उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् १४	
उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि ज्ञातावधीः । अधि पञ्च प्रधीरिव १५	१६२०
उत त्वं पुत्रमगुवः परावृक्तं ज्ञातकृतुः । उक्थेष्विन्द्र आभजत १६	
उत त्या त्वं शायद्वं अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वो अपारयत १७	
उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः । अर्णाचित्ररथावधीः १८	
अनु द्वा जहिता नयो ऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत् ते सुममष्टवे १९	
ज्ञातमश्मन्मर्यानां पुरामिन्द्रो व्यास्यत । दिवोदासाय दाशुपे २०	१६२५
अस्वापयद् वृभीतयं सहस्रा त्रिंशतं हर्थः । दासानामिन्द्रो मायया २१	
स घेदुतासि वृत्रहन् त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युपे २२	
उत नूनं यदिन्द्रियं करिण्या इन्द्र पौंस्यम् । अद्या नकिष्टदा मिनत २३	
वामंवामं त आदुरे देवो ददात्वयमा । वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करुळती २४	

॥ १४२ ॥ (४३१११ १५) गायत्री, ३ पादनिचृत् ।

कया नश्चित्र आ भुव—दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता १	१६३०
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । हृळ्हा चिक्वारुजे वसु २	
अभी षु णः सखीना—मविता जरितृणाम् । ज्ञातं भवास्यूतिभिः ३	
अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमवतः । नियुद्धिश्चर्षणीनाम् ४	
प्रवता हि क्रतूना—मा हा पदेव गच्छसि । अभक्षि सूर्यं सचा ५	
सं यत् ते इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे । अध त्वे अध सूर्य ६	१६३५

उत स्मा हि त्वामाहुरि—न्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम् ७	
उत स्मा सद्य इत् परि शशमानाय सुन्वते । पुरु चिन्महसे वसु ८	
नहि प्मा ते शतं च न राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्तानि करिष्यतः ९	
अस्माँ अवन्तु ते शत—मस्मान्त्सहस्रमृतयः । अस्मान् विश्वा अभिष्टयः १०	
अस्माँ इहा वृणीष्व सखायं स्वस्तये । महो राये द्विविम्बते ११	१६४०
अस्माँ अविद्धि विश्वहे—न्द्र राया परिणसा । अस्मान् विश्वाभिरुतिभिः १२	
अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमंतः । नवाभिरिन्द्रोतिभिः १३	
अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते १४	
अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य । वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि १५	

॥ १४३ ॥ (ऋ० ४।३२।१-२२) गायत्री ।

आ तू न इन्द्र वृत्रह—न्स्माकमर्धमा गहि । महान् महीभिरुतिभिः १	१६४५
भूमिश्चिद् घासि तूतुजि—रा चित्र चित्रिणीष्व । चित्रं कृणोष्युतये २	
दुभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि वार्धन्तमोजसा । सखिभिर्धे त्वे सचा ३	
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः । अस्माँ अस्माँ इदुद्व ४	
स नश्चित्राभिरद्विवो ऽनवद्याभिरुतिभिः । अनाधृष्टाभिरा गहि ५	
भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमंतः । युजो वाजाय घृष्वये ६	१६५०
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमंतः । स नो यन्धि महीमिषम् ७	
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद् दित्समि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ८	
अभि त्वा गोतमा गिरा ऽनूषत् प्र दावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये ९	
प्र ते वोचाम वीर्याँ या मन्दसान आरुजः । पुरो दासीरभीत्यं १०	
ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या । सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ११	१६५५
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः । ऐषु धा वीरवद् यशः १२	
यच्चिद्धि शश्वतामसी—न्द्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे १३	
अर्वाचीनो वसो भवा—ऽस्मे सु मत्स्वान्धसः । सोमानामिन्द्र सोमपाः १४	
अस्माकं त्वा मतीना—मा स्तोम इन्द्र यच्छतु । अर्वागा वर्तया हरीं १५	
पुरोळाशं च नो घसो जोपयांसि गिरिश्च नः । वधूयुरिव योषणाम् १६	१६६०
सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे । शतं सोमस्य खार्थः १७	
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि । अस्मत्रा राध एतु ते १८	
दश ते कुलशानां हिरण्यानामपीमहि । भूरिदा अमि वृत्रहन् १९	

भूरि॑दा भूरि॑ देहि नो मा वृ॒भ्रं भूर्या॑ भर । भूरि॑ घेदिन्द्र॑ दि॒त्ससि २०
 भूरि॑दा ह्यसि॑ श्रुतः पु॒रुत्रा॑ शूर वृ॒त्रहन् । आ नो॑ भजस्व॒ राध॑सि २१ १६६५
 प्र ते॑ ब॒भू वि॑चक्षण॒ शंसा॑मि गोषणो नपात् । माभ्यां॑ गा अनु॑ शिश्रथः २२ १६६६

॥ १४४ ॥ (ऋ० ५ २९।१-१५)

(१६६७-१६८१) गौर्वीतिः शाक्यः । [९ (प्रथमपादस्य) उशना वा] । त्रिष्टुप ।

अ॒र्य॒मा म॑नुषो दे॒वता॑ता त्री रो॑चना दि॒व्या धा॑रयन्त ।
 अ॒र्चन्ति॑ त्वा म॒रुतः॑ पू॒तद॑क्षा—स्त्वमे॒षामृषि॑रिन्द्रा॒सि धी॑रः १
 अनु॑ यदी॑ म॒रुतो॑ म॒न्दसान॑—मार्च॑न्निन्द्रं प॒पिवा॑सं सु॒तस्य॑ ।
 आद॑त्त व॒ज्रम॑भि यद॒हिं ह—न्न॑पो य॒ह्वीर॑मृज॒त् स॒र्त॒वा उ॑ २
 उ॒त ब्र॑ह्म॒णो म॑रुतो मे अ॒स्ये—न्द्रः सोम॑स्य सु॒षुत॑स्य पे॒याः ।
 तद्वि॑ ह॒व्यं म॑नुषे गा अ॒विन्दु॑—दह॒न्नहि॑ं प॒पिवा॑ इन्द्रो॑ अ॒स्य ३
 आद् रो॑दसी वि॒तरं वि॑ ष्क॒भाय॑त संवि॒व्यान॑श्चिद् भि॒यसे॑ मृ॒गं कः॑
 जि॒र्गति॑मिन्द्रो॑ अ॒पज॑र्गुरा॒णः प्र॑ति श्व॒सन्त॑म॒व दान॑वं ह॒न् ४ १६७०
 अध॑ क॒त्वा म॑घवन् तुभ्यं दे॒वा अनु॑ विश्वे॑ अ॒द॒दुः सोम॑पेयम् ।
 यत॑ सूर्य॑स्य ह॒रिः प॑त॒न्तीः पु॑रः स॒तीरु॑प॒रा ए॒तञ्च॑ कः ५
 नव॑ यद॑स्य नव॒तिं च॑ भो॒गान् त्सा॑कं व॒ज्रेण॑ म॒घवा॑ विवृ॒श्चत॑ ।
 अ॒र्चन्ती॑न्द्रं म॒रुतः॑ स॒धस्थे॑ त्रे॒ष्टुभे॑न व॒चसा॑ बाध॒त द्याम् ६
 सखा॑ स॒ख्ये अप॑च॒त् तूर्य॑मग्नि—रस्य क॒त्वा म॑हिषा त्री श॒तानि॑ ।
 त्री सा॒कमिन्द्रो॑ म॒नुषः॑ स॒रांसि॑ सु॒तं पि॑बद् वृ॒त्रह॑त्याय॒ सोम॑म् ७
 त्री य॒च्छता॑ म॒हिषा॑णाम॒घो मा—स्त्री स॒रांसि॑ म॒घवा॑ सो॒म्यापाः॑ ।
 का॒रं न॑ विश्वे॑ अ॒हन्त॑ दे॒वा भ॑र॒मिन्द्रा॑य यद॒हिं ज॒घान॑ ८
 उ॒शना॑ यत् स॒हस्यै॑र॒यातं॑ गृ॒हमिन्द्र॑ जू॒जुवा॑नेभि॒रश्वैः॑ ।
 व॒न्वा॒नो अ॒त्र स॒रथं॑ ययाथ॒ कुत्से॑न दे॒वैर॑व॒नोर्ह॑ शु॒ष्णम् ९ १६७५
 प्रा॒न्यच्च॑क्रम॒वृहः॑ सूर्य॑स्य कु॒त्सा॑यान्यद् वरि॒वो या॑त॒वेऽकः॑ ।
 अ॒नासो॑ द॒स्यैर॑मृ॒णो व॒धेन॑ नि दु॒र्यो॑ण आ॒वृण॑ङ् मू॒धवा॑चः १०
 स्तोमा॑सस्त्वा गौर्वि॒तीर॑व॒ध—न्न॑र॒न्धयो॑ वैद॒धिना॑य पि॒प्रुम् ।
 आ त्वा॑मु॒जिश्वा॑ स॒ख्याय॑ च॒क्रे प॑च॒न् प॒त्की॑रपि॒बः सोम॑मस्य ११
 नव॑ग्वासः सु॒तसो॑मा॒स इन्द्रं॑ द॒शग्वा॑सो अ॒भ्यर्च॑न्त्य॒कैः ।
 ग॒व्यं चि॑दूर्वम॒पि॒धान॑व॒न्तं तं चि॑न्नरः श॒शमा॑ना अ॒प व॑न् १२

कथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्यां मघवन् या चुकथं ।		
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम	१३	
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्य—परीतो जनुषां वीर्येण ।		
या चिन्नु वज्रिन् कृणवो दधृव्वान् न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः	१४	१६८०
इन्द्र बह्व क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म ।		
वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूय रथं न धीरः स्वपां अतक्षम्	१५	१६८१

॥ १४५ ॥ (ऋ० ५।३०।१-११) (१६८२-१६९२) बभ्रुरात्रेयः ।

क्रास्य वीरः को अपश्यदिदं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम् ।		
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन् तदोको गन्ता पुरुहुत ऊती	१	
अवाचचक्षं पदमस्य सस्व—रुग्रं निधातुस्त्वायमिच्छन् ।		
अपृच्छमन्याँ उत ते म आहु—रिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम	२	
प्र नु वयं सुते या ते कृतानी—न्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः ।		
वेवृदविद्वान्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः	३	
स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूर्यसश्रित ।		
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्त्रियाणाम्	४	१६८५
परो यत् त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ।		
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद् वासपत्नीः	५	
तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः ।		
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः	६	
वि पू मृधो जनुषा दानमिन्व—न्नहन् गवां मघवन्त्संचक्रानः ।		
अत्रा वासस्य नमुचेः शिरो य—दवर्तयो मनवे गातुमिच्छन्	७	
युजं हि मामक्रथा आदिदिन्द्र शिरो वासस्य नमुचेर्मथायन् ।		
अश्मानं चित् स्वर्यं वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः	८	
स्त्रियो हि वास आयुधानि चक्रे किं मां करन्नबला अस्य सेनाः ।		
अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद् युधये दस्युमिन्द्रः	९	१६९०
समत्र गावोऽभितोऽनवन्ते—हेह वत्सैर्वियुता यदासन् ।		
सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकै—र्यद्रीं सोमासः सुषुता अमन्दन्	१०	
यद्रीं सोमा बभ्रुधूता अमन्व—न्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु ।		
पुरंदुरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्त्रियाणाम्	११	१६९२

॥ १४६ ॥ (५१३११ ८, १०-१३) (१६९३-१७०४) अवस्युर्गात्रेयः, (८ तृतीयपादस्य कुत्सो वा, चतुर्थपादस्य उशना वा) ।

इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् ।		
युथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्ठो याति प्रथमः सिपासन	१	
आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व ।		
नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्य मेनोश्चिज्जनिवतश्चकथ	२	
उद्यत सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा ।		
प्राचोदयत् सुदुघा ववे अन्त वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमोऽवः	३	१६९५
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वयं पुरुहूत द्युमन्तम् ।		
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्के रवर्धयन्नहये हन्तवा उ	४	
वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कमर्चा निन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोपाः ।		
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेपिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्	५	
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकथ ।		
शक्तीवो यद् विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनव दानुचित्राः	६	
तदिन्नु ते करणं दस्म विप्रा ऽहिं यद् घ्नन्तोऽत्रात्रामिमीथाः ।		
शुष्णस्य चित् परि माया अंगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूरसंधः	७	
त्वमपो यदवे तुर्वशाया ऽरमयः सुदुघाः पार इन्द्र ।		
उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद् वामुशनारन्त देवाः	८	१७००
वातस्य युक्तान्तस्युजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः ।		
विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्	१०	
सूरश्चिद् रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवासंम् ।		
भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं नः	११	
आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन् ।		
वदन् ग्रावाव वेदिं भियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति	१२	
ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मती अमृत मो ते अंह आरन् ।		
वावन्धि यज्यूरुत तेषु धेह्यो जो जनेषु येषु ते स्याम	१३	१७०४

॥ १४७ ॥ (क्र० ५१३११-१२) (१७०५-१७१६) गातुर्गात्रेयः ।

अर्द्वरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानो अरम्णाः ।		
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्	१	१७०५

त्वमुत्सां ऋतुभिर्बद्धधानौ अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् । अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वा इन्द्र तविषीमधत्थाः ।	२	
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वर्धर्जघान तविषीभिरिन्द्रः । य एक इदं प्रतिर्मन्यमान आदस्मावुन्यो अजनिष्ट तव्यान्	३	
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् । वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम्	४	
त्यं चिदस्य ऋतुभिर्निषत्तम—मर्मणो विददिदस्य मर्म । यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्य धाः	५	
त्यं चिद्विथा कृत्पयं शयान—मसुर्यं तमसि वावृधानम् । तं चिन्मन्वानो वृषभः सुतस्यो—चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान	६	१७१०
उद यदिन्द्रो महते दानवाय वर्धर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम् । यदीं वज्रस्य प्रभृतौ वृदाभ विश्वस्य जन्तोर्धमं चकार	७	
त्यं चिदणीं मधुपं शयान—मसिन्वं व्रं मह्यादुग्रः । अपादमंत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृधवाचम्	८	
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात् एको धनां भरते अप्रतीतः । इमे चिदस्य जयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते	९	
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे । सं यदोजो युवते विश्वमाभि—रनु स्वधात्रे क्षितयो नमन्त	१०	
एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु । तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठ वृषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्	११	१७१५
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि । किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निवृधुः काममिन्द्र	१२	१७१६

॥ १४८ ॥ (ऋ० ५।३३।१-१०) (१७१७-१७३५) प्राजापत्य. संवरणः ।

महिं मेहे तवसे दीध्ये नृ—निन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान् । यो अस्मै सुमतिं वार्जसाती स्तुतो जने समर्यश्चिकेत	१	
स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्के—हरीणां वृषन् योक्त्रमश्रेः । या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः सक्षि जनान्	२	
न ते तं इन्द्राभ्यस्मृत्वा—ऽयुक्तासो अब्रह्मता यदसन् । तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता—ऽऽरुहिं देव यमसे स्वश्वः	३	

पुरु यत् त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकथोर्वरासु युध्यन् ।		
तत्क्षे सूर्याय चिदोर्कसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्	४	१७२०
वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः ।		
आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभूथेषु चारुः	५	
पपूक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः ।		
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्	६	
एवा न इन्द्रोतिभिर्व पाहि गृणतः शूर कारुन् ।		
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुधुतस्य चारोः	७	
उत त्वे मा पौरुकुत्स्यस्य सुरे—स्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः ।		
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु संश्चे	८	
उत त्वे मा मारुताश्वस्य शोणाः कत्वामघासो विदथस्य रातां ।		
सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत	९	१७२५
उत त्वे मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः ।		
मह्ना रायः संवरणस्य क्रपे—र्वजं न गावः प्रयता अपि गमन्	१०	

॥१४९॥ (ऋ० १३४।१-९) जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

अजातशत्रुमजरा स्वर्व—त्यनु स्वधार्मिता वृस्ममीयते ।		
सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन	१	
आ यः सोमेन जठरमपिप्रता—ऽमन्दत मघवा मध्वो अन्धसः ।		
यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत्	२	
यो अस्मै घ्नस उत वा य ऊर्धनि सोमं सुनोति भवति द्युमो अह ।		
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः	३	
यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते ।		
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकरः	४	१७३०
न पञ्चभिर्वृशभिर्वष्टचारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन ।		
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनि—रा देवयुं भजति गोमति व्रजे	५	
वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजो ऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः ।		
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः	६	
समीं पुणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु ।		
दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुकुधत	७	

सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसा—ववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभिषु ।

युजं ह्यन्यमकृत प्रवेप—न्युदीं गव्यं सृजते सत्वाभिर्धुनिः

८

सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमघ उपमां केतुमर्यः ।

तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रममवत त्वेपमस्तु

९

१७३५

॥ १५० ॥ (५१३५१-८) (१७३६-१७४९) प्रभवसुराङ्गिरसः । अनुष्टुप्, ८ पङ्क्तिः ।

यस्तं साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर । अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्ति वाजेषु दुष्टरम् १

यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूरं सन्ति तिस्रः । यद् वा पञ्च क्षितीना—मवस्तत् सु न आ भर २

आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे । वृषजूतिर्हि जजिष आभूभिर्निन्द्र तुर्वणिः ३

वृषा ह्यसि राधसे जजिषे वृष्णि ते शवः । स्वक्षत्रं ते धूषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम् ४

त्वं तमिन्द्र मर्त्यं—ममित्रयन्तमद्विवः । सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते ५ १७४०

त्वामिद् वृत्रहन्तम् जनसो वृक्तबर्हिषः । उग्रं पूर्वाषु पूर्य हवन्ते वाजसातये ६

अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु । सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम् ७

अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या ।

वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे

८

॥ १५१ ॥ (ऋ० ५१३६१-६) त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

स आ रमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद् दातुं दामनो रयीणाम् ।

धन्वचरो न वंसगस्तृपाण—श्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम् १

आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत् सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे ।

अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे २

१७४५

चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदं द्विवः ।

रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोपमघवन् पुरुवसुः ३

एष ग्रावेव जरिता तं इन्द्रे—यति वाचं बृहदांशुपाणः ।

प्र सव्येन मघवन् यसिं रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः ४

वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौ—वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम् ।

स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः ५

यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान् त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट ।

यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया ६

१७४९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ५१३७१-५) (१७५०-१७६८) भौमोऽत्रि । त्रिष्टुप् ।

सं भानुना यतते सूर्यस्या—ऽऽजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वश्वाः ।

तस्मा अमृधा उपसो व्युच्छान् य इन्द्राय मुनवामेत्याह १

१७५०

समिन्द्राग्निर्वनवत् स्तीर्णबर्हि—युक्तग्रावा सुतसोमो जराते ।
 ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्य—यदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् २
 वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ई वहति महिषीमिषिराम् ।
 आस्यं श्रवस्याद् रथ आ च घोषात् पुरु सहस्रा परि वर्तयाते ३
 न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्र—स्तीवं सोमं पिबति गोसखायम् ।
 आ सत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुण्यन् ४
 पुण्यात् क्षेमे अभि योगे भवा—त्युभे वृता संयती सं जयाति ।
 प्रियः सूर्यं प्रियो अग्रा भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ५

॥ १५३ ॥ (ऋ० ५।३८।१-५) अनुष्टुप् ।

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभी रातिः शतक्रतो । अधा नो विश्वचर्पणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय १ १७५५
 यदीमिन्द्र श्रवाय्य—मिपं शविष्ठ दधिषे । पप्रथे दीर्घश्रुतं हिरण्यवर्णं दुष्टरम् २
 शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः । उभा देवावभिष्टये द्विवश्च गमश्च राजथः ३
 उतो नो अस्य कस्य चिद् दक्षस्य तव वृत्रहन् । अस्मभ्यं नृम्णमा भरा—ऽस्मभ्यं नृमणस्यसे ४
 नू त आभिरभिष्टिभि—स्तव शर्मञ्छतक्रतो । इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ५

॥ १५४ ॥ (ऋ० ५।३९।१-५) अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

यदिन्द्र चित्र मेहना ऽस्ति त्वादातमद्विवः । राधस्तन्नो विद्वस उभयाहस्त्या भर १ १७६०
 यन्मन्यसे वरेण्य—मिन्द्र द्युक्षं तदा भर । विद्याम तस्य ते वय—मकूपारस्य क्वावने २
 यत् ते वित्तु प्रराध्य मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । तेन हृब्हा चिदाद्विव आ वाजं दधि सातये ३
 महिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्पणीनाम् । इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ४
 अस्मा इत् काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ।
 तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ५

॥ १५५ ॥ (ऋ० ५।४०।१-४) उणिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

आ याह्याद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब । वृषान्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् १ १७६५
 वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषान्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् २
 वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरुतिभिः । वृषान्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् ३
 ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाद्—छुप्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।
 युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदुर्वाङ् माध्यंदिने सर्वने मत्सदिन्द्रः ४ १७६८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८।३६।१-७)

(१७६९ - १७८२) इयावाश्व आत्रेयः । शकरी, ७ महापङ्क्तिः ।

अवितासि सुन्वतो वृक्तबर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते १

प्राव स्तोतारं मधवन्नव त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते २ १७७०

ऊर्जा देवा अवस्यो जसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते ३

जनिता द्विवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते ४

जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते ५

अत्रीणां स्तोममद्रिवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समं सुजिन्मरुत्वा इन्द्र सत्पते ६

इयावाश्वस्य सुन्वतस्तस्था शृणु यथाशृणो रत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।

प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्द्रपाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन्

७ १७७५

॥ १५७ ॥ (ऋ० ८।३७।१-७) महापङ्क्तिः, १ अतिजगती ।

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

१

सेहान उग्र पृतना अभि द्रुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

२

एकरात्रस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

३

सस्थार्वाणा यवयसि त्वमेक इच्छंतीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

४

क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

५

१७८०

क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः

६

इयावाश्वस्य रेभत—स्तथा शृणु यथाशृणो—रत्रः कर्माणि कृण्वतः ।

प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इच्छुषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन्

७

१७८०

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८।९।१-७)

(१७८३-१७८९) आत्रेयी अपाला । अनुष्टुप्, १-२ पङ्क्तिः ।

कन्याऽ वारवायती सोममपि सुताविदत ।

अस्तं भरन्त्यब्रवी—दिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा

१

असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचारकशत ।

इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिण—मपूषवन्तमुक्थिनम

२

आ चन त्वा चिकित्सामो ऽधि चन त्वा नेमसि ।

शनैरिव शनकैरिवे—न्द्रायेन्द्रो परि स्रव

३

१७८१

कुविच्छकत् कुवित् करत् कुविन्नो वस्यसस्करत् ।

कुवित् पतिद्विषो यती—रिन्द्रेण संगमामहे

४

इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ।

शिरस्ततस्योर्वरा—माविदं म उपोदरे

५

असौ च या न उर्वरा—दिमां तन्वं मम

अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि

६

खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।

अपालामिन्द्र त्रिष्णू—त्यकृणोः सूर्यत्वचम्

७

१७८२

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८।२४।१-२७)

(१७९०-१८१६) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । स्तुष ऊ पु वो नृतमाय धृष्णवं

१ १७९०

शर्वसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा । मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि

२

स नः स्तवान आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम् । निरंके चिद् यो हरिवो वसुर्वदिः

३

आ निरेकमुत प्रिय—मिन्द्र दधि जनानाम् । धृषता धृष्णो स्तवमान आ भर

४

न ते सुव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः । न परिबाधो हरिवो गर्विष्टिषु

५

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिक्रणोम्यद्विवः । आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण

६ १७९१

विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम । उग्रं प्रणेतरेधि पू वसो गहि

७

वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्यामं शूर नव्यसः । वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः

८

इन्द्र यथा ह्यस्ति ते ऽपरीतं नृतो शवः । अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे

९

आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे	। हृळहश्चिद् दृष्ट मघवन मघत्तये	१०
नू अन्यत्रा चिद्विष्व-स्त्वन्नो जग्मुराशसः	। मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः	११ १८००
नह्यङ्ग नृतो त्व-दुन्यं विन्दामि राधसे	। राये द्युम्नाय शर्वसे च गिर्वणः	१२
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबति सोम्यं मधु	। प्र राधसा चोदयाते महित्वना	१३
उपो हरीणां पतिं दक्षं पुश्चन्तमब्रवम्	। नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्वयस्य	१४
नह्यङ्ग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत	। नकीं राया नैवथा न भन्दना	१५
एदु मध्वो मदन्तिरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः	। एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः	१६ १८०५
इन्द्रं स्थातर्हरीणां नर्किष्टे पूर्यस्तुतिम्	। उदानंश शर्वसा न भन्दना	१७
तं वो वाजानां पति-महूमहि श्रवस्यवः	। अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम्	१८
एतो न्विद्वं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्	। कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत	१९
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः	। घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत	२०
यस्यामितानि वीर्याः न राधः पर्येतवे	। ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा	२१ १८१०
स्तुहीन्द्रं व्यश्वव-दूर्मि वाजिनं यमम्	। अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे	२२
एवा नूनमुप स्तुहि वैर्यश्च दशमं नवम्	। सुविद्वांसं चकृत्यं चरणीनाम्	२३
वेत्था हि निर्कृतीनां वज्रहस्त परिवृजम्	। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव	२४
तविन्द्राव आ भर येना दंसिष्ट कृत्वांने	। द्विता कुत्साय शिश्रथो नि चोदय	२५
तमु त्वा नूनमीमहे नय्यं दंसिष्ट सन्यसे	। स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः	२६ १८१५
य ऋक्षादंहसो मुचद् यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु	। वधर्दासस्य तुविनृम्णा नीनमः	२७ १८१६

॥ १६० ॥ (ऋ० ८।४६।१-२० २९-३१;३३)

(१८१७-१८४०) वशोऽश्वयः । गायत्री, १ पादनिचृत्, ५ ककुप्, ७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ९ सतोबृहती, ११-१२ विपरीतोत्तरः प्रगाथः=(बृहती, विपरीता), १३ द्विपदा जगती, १४ बृहती पिपीलिकमध्या, १५ ककुभ्यंकुशिरा, १६ विराद्, १७ जगती, १८ उपरिष्ठाद् बृहती, १९ बृहती, २० विषमपदा बृहती, ३० द्विपदा विराद्, ३१ उष्णिक् ।

त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः	। स्मसिं स्थातर्हरीणाम्	१
त्वां हि सत्यमद्रिवो विद्म दातारमिषाम्	। विद्म दातारं रयीणाम्	२
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो	। गीभिर्गृणान्ति कारवः	३
सुनीथो घा स मर्यो यं मरुतो यमर्यमा	। मित्रः पान्त्यद्रुहः	४ १८१०
दधानो गोमदश्ववत् सुवीर्यमादित्यजूत एधते	। सदा राया पुरुस्पृहा	५
तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्	। ईशानं राय ईमहे	६

तस्मिन् हि सन्त्युतयो विश्वा अभीरिवः सचा ।	
तमा वहन्तु सप्तयः पुरुवसुं मदाय हरयः सुतम	१७
यस्ते मवो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।	
य आवुदिः स्वर्नृभिर्—र्यः पृतनासु दुष्टरः	८
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाप्यो वाजेष्वस्ति तरुता ।	
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे	९ १८२५
गव्यो षु णो यथा पुरा ऽश्वयोत रथ्या । वरिवस्य महामह	१०
नहि ते शूर राधसो ऽन्तं विन्दाभिं सत्रा ।	
दुशस्या नो मघवन्नू चिददिवो धियो वाजैभिराविथ	११
य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत स वेदुं जनिमा पुरुष्टुतः ।	
तं विश्वे मानुषा युगे—न्द्रं हवन्ते तविषं यतसुचः	१२
स नो वाजेष्वविता पुरुवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत	१३
अभि वो वीरमन्धसो मंदेषु गाय गिरा महा विचेतसम ।	
इन्द्रं नाम श्रुत्यंशाकिनं वचो यथा	१४ १८३०
वृदी रेक्णस्तन्वे वृदिर्वसु वृदिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम् । नूनमथ	१५
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सासह्रांसं चिदस्य वर्षसः । कृपयतो नूनमत्यथ	१६
महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळहुषं अरंगमाय जग्मये ।	
यज्ञेभिर्गीर्भिर्विश्वमनुषां मरुता—मियक्षसि गायं त्वा नमसा गिरा	१७
ये पातर्यन्ते अजमभि—गिरीणां स्नुभिरेषाम ।	
यज्ञं महिष्वणीनां सुम्रं तुविष्वणीनां प्राध्वरे	१८
प्रभङ्गः दुर्मतीना—मिन्द्र शविष्ठा भर ।	
रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते	१९ १८३५
सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत ।	
प्रासहा सभ्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्युं वाजेषु पूर्यम	२०
अध प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम् । अश्वानामिन्न वृष्णाम्	२१
गावो न यूथमुप यन्ति वध्रय उप मा यन्ति वध्रयः	३०
अध यच्चारथे गणे शतमुष्ट्रं अचिक्रदत् । अध श्विक्तेषु विंशतिं शता	३१
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्व्यम् । अधिरुक्मा वि नीयते	३३ १८४०

॥ १६१ ॥ (ऋ० ६।१७।१-१५)

(१८४१-२००५) बार्हस्पत्यो भरद्वाज । त्रिष्टुप्; १५ छिपदा त्रिष्टुप् ।

पिबाम् सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महिं गृणान इन्द्र ।	
वि यो धृष्णो वधिपो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः	१
स ईपाहि य ऋजीपी तरुत्रो यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनाम् ।	
यो गोत्रभिद वज्रभृद् यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्रा अभि तृन्धि वाजान्	२
एवा पाहि प्रतथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।	
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूरभि गा इन्द्र तृन्धि	३
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम् ।	
महामनूने तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हणन्त प्रसाहम्	४
यैभिः सूर्यमुपसं मन्दसानो ऽवासयोऽप हृळ्हानि दद्रेत् ।	
महामर्द्धिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदस्सपरि स्वात्	५ १८४५
तव क्रत्वा तव तद् वृंसनाभि रामासु पक्वं शच्या नि दीधः ।	
और्णोर्दुर उस्त्रियाभ्यो वि हृळ्हो दुर्वाद् गा असृजो अङ्गिरस्वान्	६
प्रपाथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुष द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः ।	
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यही ऋतस्य	७
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भरीय ।	
अदंवेो यदुभ्यौहिष्ट देवान् त्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र	८
अध द्यौश्चित् ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद् भियसा स्वस्य मन्योः ।	
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद् विश्वायुः शयथे जघान	९
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम ।	
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीपिन्	१० १८५०
वर्धान् यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषां इन्द्र तुभ्यम् ।	
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन् वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै	११
आ क्षोवो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम् ।	
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रादयो नीचीरपसः समुद्रम्	१२
एवा ता विश्वा चक्रुवांसमिन्द्रं महामुग्रमंजुर्यं संहोदाम् ।	
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्	१३
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान् ।	
भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन् द्विवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र	१४

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः

१५

१८५५

॥ १६२ ॥ (ऋ० ६।१८।१-१५)

तमुं ष्णुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः ।

अषाब्धमुग्रं सहमानमाभिर्गीभिर्वेधं वृषभं चर्षणीनाम्

१

स युध्मः सत्वां खजकृत् समद्रां तुविभ्रक्षो नदनुमो कृजीषी ।

बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणां मेकः कृष्टीनामभवत् सहावां

२

त्वं ह नु त्यददमायो दस्यूरेकः कृष्टीरवनोरार्याय ।

अस्ति स्विन्नो वीर्यं तत् त इन्द्र न स्विदस्ति तदंतुथा वि वोचः

३

सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य ।

उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयो ऽरधस्य रधतुरो बभूव

४

तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः ।

हन्नच्युतच्युद् दस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः

५

१८६०

स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्यं ।

स लोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत् समत्भु

६

स मज्मना जनिम मानुषाणां ममर्त्येन नाम्नाति प्र सस्रं ।

स द्युन्नेन स शर्वसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः

७

स यो न मुहे न मिथू जनो भूत् सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च ।

वृणक् पिपुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्तायं शयथाय नू चित

८

उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ ।

धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्रा ऽभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः

९

अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा ।

गम्भीरय ऋष्वया यो रुरोजा ऽध्वानयद् दुरिता दम्भयच्च

१०

१८६५

आ सहस्रं पथिभिर्निन्द्र राया तुविद्युन्न तुविवाजेभिर्वाक् ।

याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः

११

प्र तुविद्युन्नस्य स्थविरस्य घृष्वे दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः ।

नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः

१२

प्र तत् ते अद्या करणं कृतं भूत् कुत्सं यद्वायुमतिथिग्वमस्मै ।

पुरु सहस्रा नि शिशा अभि क्षा मुत् तृवयाणं धृषता निनेथ

१३

अनु त्वाहिधेन अध देव देवा मदनु विश्वे कवितमं कवीनाम् ।

करो यत्र वरिवो बाधिताय द्विवे जनाय तन्वे गृणानः १४

अनु द्यावापृथिवी तत् त ओजो ऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः

कृष्वा कृतो अकृतं यत् ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः १५ १८७०

॥ १६३ ॥ (क्र० ६।१९।१-१३)

महो इन्द्रो नृवदा चर्षणिषा उत द्विर्वा अमिनः सहोभिः ।

अस्मद्यग्वावृधे वीर्यायो—रुः पृथुः सुकृतः कर्तुभिर्भूत् १

इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद बृहन्तमृष्वमजरं युवानम ।

अपाळहेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद् यो वावृधे असांमि २

पृथू करसा बहुला गर्भस्ती अस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांमि ।

युथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्मां इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजी ३

तं व इन्द्रं चतिनमस्य शकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम ।

यथा चित पूर्वे जरितार आसु—रनेद्या अनवद्या अरिष्टाः ४

धृतवतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः ।

सं जग्मिरे पथ्याऽ रायो अस्मिन् त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ५ १८७५

शर्विष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम् ।

विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणा—मस्मभ्यं दा हरिवो मादुयध्यै ६

यस्ते मदः पृतनापाळमृध इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम् ।

येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः ७

आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।

येन वंसां पृतनासु शत्रून् तवोतिभिरुत जामीरजामीन् ८

आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्वा—दोत्तरादधरादा पुरस्तात ।

आ विश्वतो अभि समेत्वर्वा—डिन्द्र द्युम्नं स्वर्वन्द्रेह्यस्मे ९

नृवत तं इन्द्र नृतमाभिरुती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः ।

ईक्षे हि वस्वं उभयस्य राजन् धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम् १० १८८०

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान—मकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।

विश्वासाहमवसे नूतनायो—ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ११

जनं वज्रिन् महि चिन्मन्यमान—मेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि ।

अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु १२

वयं तं एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोः शत्रोरुत्तर इत् स्याम ।

घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वाताः

१३

॥ १६४ ॥ (ऋ० ६।२०।१-१३) त्रिष्टुप्, ७ विराट् ।

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्य—स्तस्थौ रयिः शर्वसा पुत्सु जनान् ।

तं नः सहस्रभरमुर्वरासां वृद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम्

१

दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रा ऽसुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम् ।

अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्त्रं जीपिन् विष्णुना सचानः

२

१८८५

तूर्वन्नोजीयान् तव सस्तवीयान् कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः ।

राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत् पुरां दुर्नुमावत्

३

शतैरपद्रन् पणयं इन्द्रात्र दशोणये कवये ऽर्कसातौ ।

वधैः शुष्णास्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत् किं चन प्र

४

महो द्रुहो अप विश्वायुं धायि वज्रस्य यत् पतने पादु शुष्णः ।

उरु ष सरथं सारथये क—रिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ

५

प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथ्रायन् ।

प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पूणग्राया समिषा सं स्वस्ति

६

वि पिप्रोरहिमायस्य हृळ्हाः पुरां वज्रिच्छर्वसा न ददः ।

सुदामन् तद् रेक्णो अप्रमृष्य—मृजिष्वने दात्रं दाशुषे दाः

७

१८९०

स वेतुमुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वमिष्टिसुम्नः ।

आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुषं सृजा इयध्वै

८

स ई स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद् वज्रं वृत्रहणं गर्भस्तौ ।

तिष्ठद्वरी अध्यस्तेव गते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम्

९

सनेम तेऽवसा नव्यं इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः

सप्त यत् पुरः शर्म शारद्वीर्द—र्द्धन् दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन्

१०

त्वं वृध इन्द्र पूर्यो भू—वर्षिष्यन्नशने काव्याय ।

परा नर्ववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम

११

त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती—र्कणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।

प्र यत् समुद्रमति शूर पषिं पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति

१२

१८९५

तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप् ।

वृदिदयदित् तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन् कुभीतिरिधमभृतिः पक्थ्यं किं

१३

॥ १६५ ॥ (ऋ० ६।२।१-८, १०, १२)

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारो—हव्यं वीर हव्या हवन्ते ।	
धियो रथेष्ठाभजं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या	१
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् ।	
यस्य दिवमर्ति मन्हा पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम्	२
स इत् तमोऽवयुनं ततन्वत् सूर्येण वयुनवच्चकार ।	
कदा ते मर्ता अमृतस्य धामे—यक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः	३
यस्ता चकार स कुहं स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कामुं विश्व ।	
कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता	४ १९००
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत सखायः ।	
ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि	५
तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना तं इन्द्र श्रुत्यानु येमुः ।	
अर्चामसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात् त्वा महान्तम्	६
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महिं जज्ञानमभि तत् सु तिष्ठ ।	
तव प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व	७
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः ।	
त्वं ह्याऽपिः प्रदिवि पितृणां शश्वद् बभूय सुहव एष्टौ	८
इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।	
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावो अन्यो अमृत त्वदस्ति	१० १९०५
स नो बोधि पुरेता सुगेषू—त दुर्गेषु पथिकृद् विदानः ।	
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठा—स्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्	१२

॥ १६६ ॥ (६।२।१-११)

य एक इन्द्र्यश्चर्षणीना—मिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः ।	
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् तस्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्	१
तमु नः पूर्वं पितरो नवगवाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।	
नक्षद्वाभं ततुरिं पर्वतेष्ठा—मद्रोघवाचं मतिभिः शर्विष्ठम्	२
तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नूवतः पुरुक्षोः ।	
यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो माकृयध्वं	३

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिञ्जितार आनशुः सुममिन्द्र ।	
कस्ते भागः किं वयो दुध खिद्रः पुरुहूत पुरुवसोऽसुरघ्नः	४ १९२०
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठा—मिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः ।	
तुविग्रभं तुविकूर्मि रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ	५
अया ह त्वं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन ।	
अच्युता चिद् वीळिता स्वोजो रुजो वि हृळ्हा धृषता विरग्निन	६
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयधै ।	
स नो वक्षदनिमानः सुवह्मं—द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि	७
आ जनाय द्रुहणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽतरिक्षा ।	
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्व	८
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंहक् ।	
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः	९ १९२१
आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृधाम्	
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि	१०
स नो नियुद्धिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्या ।	
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्रद्यद्रिक्	११

॥ १६७ ॥ (ऋ० ६.२३.१-१०)

सुत इत् त्वं निर्मिश्र इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्माणि शस्यमान उक्थे ।	
यद् वा युक्ताभ्यां मघवन् हरिभ्यां बिभ्रद् वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासिं	१
यद् वा द्विवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ ।	
यद् वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्य—दरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून्	२
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती ।	
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित्	३ १९२०
गन्तेयान्ति सर्वना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं दृदिर्गाः ।	
कर्ता वीरं नयं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः	४
अस्मै वयं यद् वावान तद् विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः ।	
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थे—न्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्	५
ब्रह्माणि हि चंकुषे वर्धनानि तावत् त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः ।	
सुते सोमे सुतपाः शंतमानि रान्द्र्या क्रियास्म वक्ष्णानि यज्ञैः	६

स नो बोधि पुरोळाशं रराणः पिबा तु सोमं गोक्रजीकमिन्द्र ।
 एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदो—रुं कृधि त्वायत उ लोकम्
 स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे अश्रुवन्तु ।
 प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः
 तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमेभिर्गिं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
 कुवित तस्मा असति नो भराय न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति
 एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमे भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः ।
 असद् यथा जरित्र उत सूरि—रिद्रो रायो विश्ववारस्य दाता

७

८

१९१५

९

१०

॥ १६८ ॥ (ऋ० ६।२४।१-१०)

वृषा मदु इंद्रे श्लोक उक्था सचा सोमेषु सुतपा क्रजीषी ।
 अर्चत्रयो मघवा नृभ्य उक्थे—द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः
 ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः ।
 वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम्
 अक्षो न चक्रयोः शूर बृहन् प्र ते मृहा रिरिचे रोदस्योः ।
 वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्युत्तयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः
 शर्चीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव सुतयः संचरणीः ।
 वत्सानां न तंतयस्त इंद्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन्
 अन्यदुद्य कर्वरमन्यदु श्वो ऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिन्द्रः ।
 मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषा ऽर्यो वशस्य पर्येतास्ति
 वि त्वदापो न पर्वतस्य पूष्ठा—दुक्थेभिरिन्द्रानयंत यज्ञैः ।
 तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयंत आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः
 न यं जरति शरदो न मासा न द्याव इंद्रमवकृशयंति ।
 वृद्धस्य चिद् वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना
 न वीळ्वे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान् ।
 अज्ञा इंद्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद् भवति गाधमस्मै
 गम्भीरेण न उरुणामत्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन् वाजान् ।
 स्था ऊ पु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्य—न्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम्
 सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः ।
 अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः

१

२

३

१९३०

४

५

६

७

८

१९३५

९

१०

॥ १६९ ॥ (ऋ० ६।२।१-०)

या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति ।	
तामैरू पु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वार्जमहान् न उग्र	१
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्यन्नमित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र ।	
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरायां विशोऽव तारीर्दासीः	२
इन्द्र जामय उत येऽजामयो ऽर्वाचीनासो वनुषो युयुजे ।	
त्वमेषां विशुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः	३
शूरो वा शूरं वनते शरीरैस्तनूरुचा तरुषि यत् कृण्वैते ।	
तोके वा गोषु तनये यदुप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवते	४
नहि त्वा शूरो न तुरो न धूष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयाध ।	
इन्द्र नकिंष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि	५
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयो यदी वेधसः समिथे हवन्ते ।	
वृत्रे वा महो नुवति क्षये वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसंतं	६
अध स्मा ते चर्षणयो यदेजा निन्द्र त्रातोत भवा वरुता ।	
अस्माकासो ये नृत्मासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः	७
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये ।	
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषहो	८ १९४१
एवा नः स्पृधः समजा सम त्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः ।	
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्	९

॥ १७० ॥ (ऋ० ६।२।१-८)

श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वार्जस्य सातो वावृषाणाः	
सं यद् विशोऽर्यन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः	१
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वार्जस्य गर्धस्य सातो ।	
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चण्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्	२
त्वं कविं चौदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं द्वाशुषे वर्क ।	
त्वं शिरो अमर्मणः पराह न्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्	३
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्व मावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।	
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन् त्वं तुर्जि गृणन्तमिन्द्र तूतोः	४ १९५०

त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि ।	
अव गिरेर्दासं शम्बरं हन् प्रावो दिवोदासं चित्राभिरुती	५
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमैर्कुभीतये चुमुरिमिन्द्र सिष्वप् ।	
त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन् षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन्	६
अहं चन तत् सूरिभिरानश्यां तव ज्याय इन्द्र सुम्रमोजः ।	
त्वया यत् स्तवन्ते सधवीर वीगस्त्रिवरूथेन नहुषा शविष्ठ	७
वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्रहूतौ सखायः स्याम महिन् प्रेष्ठाः ।	
प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम्	८

॥ १७१ ॥ (ऋ० ६।२७।१-७)

किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।	
रणा वा ये निषद्वि किं ते अस्य पुरा विविद्वे किमु नूतनासः	१ १९५५
सदस्य मदे सद्दरय पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार ।	
रणा वा ये निषद्वि सत् ते अस्य पुरा विविद्वे सद् नूतनासः	२
नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन् मघवत्त्वस्य विद्व ।	
न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते	३
एतत् त्यत् त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः ।	
वज्रस्य यत् ते निहतस्य शुष्मात् स्वनाच्चिदिन्द्र परमो वुदार	४
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषो ऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् ।	
वृचीवतो यद्धरियूपीयां हन् पूर्वे अर्धं भियसापरो दत्	५
त्रिंशच्छतं वर्मिण इन्द्र साकं युव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या ।	
वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दुाना न्यथान्यायन्	६ १९६०
यस्य गावावरूपा स्रूयवसू अन्तरू पु चरतो रेरिहाणा ।	
स सृञ्जयाय त्वर्षं परादाद् वृचीवतो देववाताय शिक्षन्	७

॥ १७२ ॥ (ऋ० ६।२९।१-६)

इन्द्रं वा नरः सख्याय सेपुर्महो यन्तः सुमतये चक्रानाः ।	
महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामु रण्वमवसे यजध्वम्	१
आ यस्मिन् हस्ते नया मिमिक्षु रा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः ।	
आ रश्मयो गर्भस्त्योः स्थूरयो राध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः	२

श्रिये ते पादुा दुव आ मिमिक्षु—धृष्णुर्वज्री शर्वसा दक्षिणावान् ।

वसानो अत्कं सुरभिं हृशे कं स्वर्णं नृतविषिरो बभूथ

३

स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद् यस्मिन् प्रक्तिः पच्यते सन्ति धानाः ।

इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः

४

१९६५

न ते अन्तः शर्वसो धायस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा ।

आ ता सूरिः पृणति तृतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती

५

एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तू—ती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा ।

एवा हि जातो असमात्योजाः पुरु च वृत्रा हनति नि दस्यून्

६

॥ १७३ ॥ (ऋ० ६।३०।१-५)

भूय इद् वावृधे वीर्यायै एको अजुर्यो दयते वसूनि ।

प्र रिरिचे विव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे

१

अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति ।

दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद् वि सन्नान्युर्विया सुकतुर्धात्

२

अद्या चिन्न चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र ।

नि पर्वता अन्नसदो न सेदु—स्त्वया हृळ्हानि सुकतो रजांसि

३

१९७०

सत्यमित् तन्न त्वावां अन्यो अस्ती—न्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान् ।

अहन्नहिं परिशयानमर्णो ऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम्

४

त्वमपो वि दुरो विषूची—रिन्द्र हृळ्हमरुजः पर्वतस्य ।

राजाभवो जगतश्चर्वणीनां साकं सूर्यं जनयन् द्यामुपासम्

५

॥ १७४ ॥ (ऋ० ६।३७।१-५)

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रे—न्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु ।

कीरिश्विन्द्रि त्वा हवते स्वर्वा—नृधीमहिं सधमादस्ते अद्य

१

प्रो द्रोणे हरयः कर्मागमन् पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन् ।

इन्द्रो नो अस्य पूर्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा

२

आसस्राणासः शवसानमच्छे—न्द्र सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः ।

अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयु—नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत

३

१९७५

वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्ती—न्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः ।

यया वज्रिवः परियास्यहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन्

४

इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दाते—न्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहाः ।

इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ऽऽ ता सूरिः पृणति तृतुजानः

५

॥ १७५ ॥ (ऋ० ६।३८।१-५)

अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम् ।

पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य याम—अनस्य रातिं वनते सुदानुः १

दुराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ।

एयमेनं देवहूतिर्ववृत्त्या—न्मद्य॥ गिन्द्रमियमुच्यमाना २

तं वो धिया परमया पुराजा—मजरमिन्द्रमभ्यनूयकैः ।

ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन् महाँश्च स्तोमो अधि वर्धादिन्द्रे ३ १९८०

वर्धाद् यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म ।

वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तो—वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम ४

एवा जज्ञानं सहसे असांमि वावृधानं राधसे च श्रुताय ।

महामुध्रमवसे विप्र नून—मा विवासेम वृत्रतूर्येषु ५

॥ १७६ ॥ (ऋ० ६।३९।१-५)

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वहे—विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः ।

अपा नस्तस्य सचनस्य देवे—वो युवस्व गृणते गोअघ्राः १

अयमुज्ञानः पर्यद्रिमुस्त्रा कृतधीतिभिर्कृतयुग्युज्ञानः ।

रुजदरुणं वि वलस्य सानुं पर्णीर्विचोभिर्भि योधादिन्द्रः २

अयं द्योतयद्व्युतो व्य॥क्तून् दोषा वस्तोः शरदु इन्दुरिन्द्र ।

इमं केतुमदधुनू चिदह्नां शुचिजन्मन उपसश्चकार ३ १९८५

अयं रोचयदुरुचो रुचानोऽ—ऽयं वासयद् व्य॥तेन पूर्वीः ।

अयमीयत क्रतयुग्भिर्भ्रुवैः स्वर्विदु नाभिना चर्षणिप्राः ४

नू गृणानो गृणते प्रत राज—न्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः ।

अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नृनृचसे रिरिहि ५

॥ १७७ ॥ (ऋ० ६।४०।१-५)

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदाया—ऽव स्य हरी वि मुचा सखाया ।

उत प्र गाय गण आ निषद्या—ऽथा यज्ञाय गृणते वयो धाः १

अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरग्निन् ।

तमु ते गावो नर आपो अद्वि—रिन्दुं समह्यन् पीतये समस्मै २

समिन्द्रे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः ।

त्वायता मनसा जोहवीमी—न्द्रा याहि सुविताय महे नः ३ १९९०

आ याहि शश्वदुशता ययाथे—न्द्र महा मनसा सोमपेयम् ।
उप ब्रह्माणि शृणव इमा नो ऽथा ते यज्ञस्तन्वे३ वयो धातु ४
यदिन्द्र विवि पार्ये यदधग् यद् वा स्वे सदेने यत्र वासि ।
अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान् त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः ५

॥ १७८ ॥ (ऋ० ६।४१।१-५)

अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्द्रवः सुतासः ।
गावो न वज्रिन्स्वमोको अच्छे—न्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् १
या ते काकुत् सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत पिबसि मध्व ऊर्मिम ।
तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः २
एष द्वप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्राय वृष्णे समकारि सोमः
एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् ३ १९९५
सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्या—नयं श्रेयाश्चिकितुषे रणांय ।
एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व ४
ह्वयामसि त्वेन्द्र याह्यवा—डरं ते सोमस्तन्वे भवाति ।
शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्मो अव पृतनासु प्र विश्व ५

॥ १७९ ॥ (ऋ० ६।४१।१-४) अनुष्टुप् , ४ बृहती ।

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । अरंगमाय जग्मये ऽपश्वाद्दध्वने नरे १
एमेनं प्रयेतन सोमेभिः सोमपातमम् । अमत्रेभिर्ऋजीषिण—मिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः २
यदीं सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूर्पथ । वेदा विश्वस्य मेधिंरा धृषत तंतमिदेषंत ३ २०००
अस्माअस्मा इदन्धसो ऽध्वर्यो प्र भेरा सुतं । कुवित् संमस्य जेन्यस्य शर्धतो ऽभिर्शस्तेग्वस्परंत ४

॥ १८० ॥ (ऋ० ६।४३।१-४) उष्णिक् ।

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब १
यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब २
यस्य गा अन्तरश्मनो मदे हृळ्हा अवासृजः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ३
यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनि दधिषे शवः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ४ २००५

॥ १८१ ॥ (ऋ० ६।३१।१-५)

(२००६-२०१५) सुदोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् , ४ शकरी ।

अभूरेको रयिपते रयीणा—मा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः ।
वि तोके अप्सु तनये च सूरि ऽवाचन्त चर्पणयो विवाचः १

त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वा ऽच्युता चिच्छयावयन्ते रजांसि ।

द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं हृळ्हं भयते अज्मन्ना ते २

त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्रा—ऽशुषं युध्य कुर्यवं गविष्ठौ ।

दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि ३

त्वं ज्ञतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः ।

अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतके भरद्वाजाय गृणते वसूनि ४

स सत्यसत्वन महते रणाय स्थमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम् ।

याहि प्रपथिन्नवसोप मदिक प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः ५ २०१०

॥ १८२ ॥ (ऋ० ६।३२।१-५)

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।

विरिप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचास्यासा स्थविराय तक्षम् १

स मातरा सूर्येणा कवीना—मवासयद् रुजदद्रिं गृणानः ।

स्वाधीभिर्कृकभिर्वावज्ञान उदुस्रियाणामसृजन्निदानम् २

स वह्निभिर्कृकभिर्गोषु शश्वन् मितजुभिः पुरुकृत्वा जिगाय ।

पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन् हृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ३

स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महन्दिश्च शुष्मैः ।

पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीना—मा गिर्वणः सुविताय प्र याहि ४

स सर्गेण शर्वसा तक्तो अत्यै—रप इन्द्रो दक्षिणतस्तुरापाह ।

इत्था सृजाना अनपावृद्धं द्विवेदिवे विविपुरप्रमृण्यम् ५ २०१५

॥ १८३ ॥ (ऋ० ६।३३।१-५)

(२०१६-२०२५) शुनहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो वृा मदी वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान् ।

सौवश्व्यं यो वनवत् स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहवृमित्रान् १

त्वां हीडन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ।

त्वं विप्रभिर्वि पुणीरंशाय—स्त्वोत इत् सनिता वाजमवी २

त्वं तां इन्द्रोभयो अमित्रान् दासा वृत्राण्यायां च शूर ।

वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कै—रा पूत्सु दर्षि नृणां नृतम ३

स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः ।

स्वर्पाता यदध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पूत्सु शूर ४

नूनं न इन्द्रापुराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टा ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् द्विवि प्याम पायं गोषतमाः

५ २०२०

॥ १८४ ॥ (ऋ० ६।३४।१-५)

सं च त्वे जग्मुर्गिरं इन्द्र पूर्वीर्वि च त्वद् यन्ति विभ्वो मनीषाः ।

पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध इन्द्रे अद्युक्थाका

१

पुरुद्वृतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः ।

रथो न महे शर्वसे युजानोऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत्

२

न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीवृभि वर्धयन्तीः ।

यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं गृणन्ति गिर्विणसं शं तदस्मै

३

अस्मा एतद् दिव्यं चैवं मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः ।

जनं न धन्वन्नाभि सं यदार्पः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः

४

अस्मा एतन्मह्याङ्गुषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि ।

असद् यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च

५ २०२५

॥ १८५ ॥ (ऋ० ६।३५।१-५)

(२०२६-२०३५) नरो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

कदा भुवन् रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः ।

कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजर्त्ताः

१

कर्हि स्वित्र तदिन्द्र यन्नृभिर्नृन् वीरैर्वीरान् नीळयासे जयाजीन् ।

त्रिधातु गा अर्धि जयासि गोष्विन्द्रं द्युम्नं सर्व्वद् धेह्यस्मे

२

कर्हि स्वित्र तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ ।

कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः

३

स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अर्धि धेहि पृक्षः ।

पीपिहीषः सुदुर्धामिन्द्र धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः

४

तमा नूनं वृजनमन्यथा चिच्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे ।

मा निररं शुक्रदुर्घस्य धेनोराङ्गिरसान् ब्रह्मणा विप्र जिन्व

५ २०३०

॥ १८६ ॥ (ऋ० ६।३६।१-५)

सत्रा मदासस्तव विश्वर्जन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः ।

सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद् देवेषु धारयथा असुर्यम्

१

अनु प्र येजे जन आजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय ।	
स्युमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृञ्जहत्ये	२
तं सधीचीरूतयो वृण्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम् ।	
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशान्ति	३
स रायस्वामुषं सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः ।	
पतिर्बभूवासमो जनानां मेको विश्वस्य भुवनस्य राजा	४
स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयु—द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः ।	
असो यथा नः शर्वसा चक्रानो युगेयुगे वयसा चेकितानः	५ २०३५

॥ १८७ ॥ (ऋ० ६।४४।१-२४)

(२०३६-२१०३) शंयुर्वाहस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १-६ अनुष्टुप्, ७-९ (८ वा) विराट् ।

यो रयिवां रयितमो यां द्युमैद्युम्वत्तमः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	१
यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो वामा मतीनाम् । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	२
येन वृद्धो न शर्वसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	३
त्यमुं वो अप्रहणं गृणीषे शर्वसस्पतिम् । इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम्	४
यं वर्धयेतीद् गिरः पतिं तुरस्य राधंसः । तमिन्द्रस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः	५ २०४०
तद् व उक्थस्य बर्हणे—न्द्रायोपस्तुणीषणि ।	
विपो न यस्योतयो वि यद् रोहंति सक्षितः	६
अविद्द दक्षं मित्रो नवीयान् पपानो देवेभ्यो वस्यो अचेत ।	
ससवान्स्तोलाभिर्धौतरीभि—रुह्या पायुरभवत् सखिभ्यः	७
ऋतस्य पृथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन ।	
दधानो नाम महो वचोभि—र्वपुर्हृशये वेन्यो व्यावः	८
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः ।	
वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभि—र्धनस्य सातावस्माँ अविद्धि	९
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिषो मा वि वेनः ।	
नकिंरापिदंष्ट्रशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रभ्रचोर्दनं त्वाहुः	१० २०४५
मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम ।	
पूर्वीष्ट इन्द्र निष्पिधो जनेषु जह्यसुष्वीन् प्र वृहापृणतः	११
उदुभ्राणीव स्तनयन्नियुती—न्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या ।	
त्वमांसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वाद्दामान आ दभन् मघोनः	१२

अध्वर्यो वीर प्र महे सुताना—मिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा ।	
यः पूर्याभिरुत नूतनाभि—र्गीभिर्वीवृधे गृणतामृषीणाम्	१३
अस्य मदे पुरु वर्षासि विद्रा—निन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।	
तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्ये	१४
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।	
गन्ता यज्ञं पंगवतश्चिदच्छा वसुधीनामविता कारुधायाः	१५ २०५०

इदं त्यत पात्रमिन्द्रपान—मिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि ।	
मत्सद् यथा सौमनसाय देवं व्य॑स्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः	१६
एना मँवानो जहि शूर शत्रू—श्नामिमर्जामि मघवन्नमित्रान् ।	
अभिषेणो अभ्या॑देदिशानान् परा॑च इंद्र प्र मृणा जही च	१७
आसु प्मा॑ णो मघवन्निद्र पू—त्स्व॑स्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।	
अपां तोकस्य तनयस्य जेष इंद्र॑ सूरिन् कृणुहि स्मा॑ नो अर्धम्	१८
आ त्वा हर॑यो वृषणो युजाना वृष॑रथासो वृष॑रश्मयोऽत्याः ।	
अस्मत्रा॑श्चो वृषणो वज्र॑वाहो वृ॒ष्णे मदा॑य सुयुजो॑ वहन्तु	१९
आ ते वृषन् वृष॑णो द्रोण॑मस्थु—धृत॑प्रपो नोर्मयो मदन्तः ।	
इन्द्र प्र तुभ्यं वृष॑भिः सुतानां वृ॒ष्णे भर॑न्ति वृष॑भाय सोमम्	२० २०५५
वृषा॑सि द्विवो वृष॑भः पृथि॑व्या वृषा॑ सिन्धू॑नां वृष॑भः स्तिर्या॑नाम् ।	
वृ॒ष्णे त इन्द्रु॑वृष॑भ पीपाय स्वा॑दू रसो॑ मधुपेयो॑ वरा॑य	२१
अयं दे॒वः सह॑सा जाय॑मान इन्द्रे॑ण युजा॑ पृणिमस्तभाय॑त ।	
अयं स्वस्य॑ पितुरायु॑धानी—न्दुरमु॑ष्णादशिवस्य॑ मायाः	२२
अयम॑कृणोदुष॑सः सुप॑त्नी—रयं सूर्ये॑ अदधा॑ज्ज्योतिर॑न्तः ।	
अयं त्रिधातु॑ द्विवि रौच॑नेषु त्रि॑तेषु विन्दु॑मृतं निगू॑ळहम्	२३
अयं द्यावा॑पृथि॒वी वि प्क॑भाय—द्वयं रथ॑मयुनक् स॒प्तर्शिम॑म् ।	
अयं गोषु॑ शर्च्या॑ पक्कम॑न्तः सोमो॑ दा॒धार द॑शयन्त्रमु॑त्स॑म्	२४

॥ १८८ ॥ (ऋ० ६।४।५।१-३०) गायत्री, २९ अतिनिवृत्त ।

य आनय॑त् परा॒वतः सुनी॑ती तुर्व॒शं यदु॑म् । इन्द्रः स नो यु॒वा सखा॑	१ २०६०
अ॒विप्रे चि॒द् वयो॑ दध—दना॑शुना॒ चिद॑र्वता । इन्द्रो जेता॑ हितं धन॑म्	२

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः	। नास्य क्षीयन्त ऊतयः	३	
सखायो ब्रह्मवाहसे ऽर्चत प्र च गायत	। स हि नः प्रमतिर्मही	४	
त्वमेकस्य वृत्रह—ब्रविता द्वयोगसि	। उतेदृशे यथा वयम्	५	
नयसीद्वति द्विषः कृणोप्युक्थशंसिनः	। नृभिः सुवीर उच्यसे	६	२०६५
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीभिः सखायमृगमियम्	। गां न द्रोहसे हुवे	७	
यस्य विश्वानि हस्तयो—रुचुर्वसूनि नि द्विता	। वीरस्य पृतनापहः	८	
वि हृळ्हानि चिद्विवो जनानां शचीपते	। बृह माया अनानत	९	
तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते	। अहूमहि श्रवस्यवः	१०	
तमु त्वा यः पुगमिथ्र यो वा नूनं हिते धने	। हव्यः स श्रुधी हवम्	११	२०७०
धीभिरवद्भिरवतो वार्जो इन्द्र श्रवायान्	। त्वया जेष्म हितं धनम्	१२	
अभूरु वीर गिर्वणो महो इन्द्र धने हिते	। भरे वितन्तसाय्यः	१३	
या त ऊतिरमित्रहन् मक्षूजवस्तमासति	। तया नो हिनुही रथम्	१४	
स रथेन रथीतमो ऽस्माकेनाभियुग्वना	। जेपि जिष्णो हितं धनम्	१५	
य एक इत तमु प्नुहि कृष्णीनां विचर्षणिः	। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः	१६	२०७५
यो गृणतामिदासिंथा—ऽऽपिरुती शिवः सखा	। स त्वं न इन्द्र मुळय	१७	
धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः	। सामहीष्ठा अभि स्पृधः	१८	
प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम्	। ब्रह्मवाहस्तमं हुवे	१९	
स हि विश्वानि पार्थिवा एको वसूनि पत्यते	। गिर्वणन्तमो अधिगुः	२०	
स नो नियुद्धिरा पृण कामं वार्जेभिरश्विभिः	। गोमद्भिर्गोपते धृषत्	२१	२०८०
तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्त्वे	। शं यद् गवे न शाकिने	२२	
न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमंतः	। यत् सीमुप श्रवद् गिरः	२३	
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्	। शचीभिरप नो वरत्	२४	
इमा उ त्वा शतक्रतो ऽभि प्र णोनुवुगिरः	। इन्द्र वत्सं न मातरः	२५	
दृणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते	। अश्वो अश्वायते भव	२६	२०८५
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे	। न स्तोतारं निदे करः	२७	
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः	। वत्सं गावो न धेनवः	२८	
पुरुतमं पुरुणां स्तोतृणां विवाचि	। वार्जेभिर्वाजयताम्	२९	
अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान् राये महे हिनु		३०	

॥ १८९ ॥ (ऋ० ६।४६।१-१४) प्रगाथः (= विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिन्द्रि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।

त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नर-स्त्वां काष्ठास्वर्वतः

१

२०९०

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः ।

गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे

२

यः सत्राहा विचर्षणि-रिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।

सहस्रमुक्क तुर्विन्मृण सत्पते भवां समत्सु नो वृधे

३

बाधसे जनान् वृष्टभेवं मन्युना वृषीं मीळ्ह कचीपम ।

अस्माकं बोध्यविता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये

४

इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पपुरि श्रवः ।

येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः

५

त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् कुवेपुं हूमहे ।

विश्वा सु नो विथुरा पिबुना वसां ऽमित्रान्सुपहान् कृधि

६

२०९५

यदिन्द्र नाहुषीष्वां ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।

यद् वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या

७

यद् वा तृक्षो मघवन् द्रुह्यावा जने यत् पूरो कच्च वृष्ण्यम् ।

अस्मभ्यं तद् रिरीहि सं नृपाह्ये ऽमित्रान् पृत्सु तुर्वणे

८

इन्द्रं त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत ।

छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावयां दिद्युमेभ्यः

९

ये गव्यता मनसा शत्रुमाद्भु-रभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।

अर्धं स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वण-स्तनृपा अन्तमो भव

१०

अर्धं स्मा नो वृधे भवे-न्द्रं नायमवा युधि ।

यदुन्तरिक्षे पतर्यन्ति पर्णिनो दिद्युर्वस्तिग्ममूर्धानः

११

२१००

यत्र शूरांसस्तन्वो विनन्वते प्रिया शर्म पितृणाम् ।

अर्धं स्मा यच्छ तन्वेऽं तने च छर्दि-रचितं यावय द्वेषः

१२

यदिन्द्र सर्गे अर्वत-श्चोदयासे महाधने ।

असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनो इव श्रवस्यतः ।

१३

सिन्धूरिव प्रवण आशुया यतो यद्वि क्लोशमनु प्वणि ।

आ ये वयो न वर्वृत्यामिपि गृभीता ब्राह्मोर्गवि

१४

२१०३

॥ १९० ॥ (ऋ० ६।४७।६-१९; २१) (२१०४-२११८) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्; १९ बृहती ।

धूषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।		
माध्यंदिने सर्वन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि	६	
इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छे ।		
भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः	७	२१०५
उरुं नो लोकमनु नेपि विद्वान् त्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वास्ति ।		
ऋष्व त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता	८	
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरा ।		
इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन् रायो अर्यः	९	
इन्द्र मूळ मह्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् ।		
यत् किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्	१०	
ज्ञातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।		
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः	११	
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववृद्धाः ।		
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम	१२	२११०
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।		
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोतु	१३	
अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोमि गिरिं ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते ।		
उरु न राधः सर्वना पुरुष्यपो गा वज्रिन् युवसे समिन्द्रन्	१४	
क ई स्तवत् कः पृणात् को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत ।		
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः	१५	
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः ।		
एधमानद्विष्टुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान्	१६	
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरोभिरेति ।		
अनानुभूतीस्वधून्वानः पूर्वोरिन्द्रः शरदस्तर्तीति	१७	२११५
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।		
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश	१८	
युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति ।		
को विश्वाहा द्विष्टतः पक्ष आसत उतासीनेषु सूरिषु	१९	

विवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सद्गनो जाः ।

अहन् वृषा वृषभो वस्नयन्तो—दवजे वर्चिनं शम्बरं च

२१

२११८

॥ १९१ ॥ (ऋ० ७।१।१-२१) (२११९-२२९२) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप ।

त्वे ह यत् पितरंश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन ।

त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वा—स्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः

१

राजैव हि जनिभिः क्षेप्येवा—ऽव द्युभिरभि विदुष्कविः सन ।

पिशा गिरो मघवन गोभिरश्वै—स्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान्

२

२१२०

इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः ।

अर्वाचीं ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन्

३

धेनुं न त्वा स्यवसे दुर्दक्ष—क्षुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः ।

त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा ऽऽ न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ

४

अणींसि चित् पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत सुपारा ।

शर्धन्तं शिष्यमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः

५

पुरोळा इत् तुर्वशो यक्षुरासीद् राये मत्स्यांसो निशिता अपीव ।

श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद् विषूचोः

६

आ पक्थासो भलानसो भनन्ता ऽलिनासो विपाणिनः शिवासः ।

आ योऽनयत् सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन् युधा नृन्

७

२१२५

दुराध्योऽ आदितिं सेवयन्तो ऽचेतसो वि जगृध्रे परुष्णीम् ।

मह्माविष्यक् पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः

८

इयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णी—माशुश्चनेदभिपित्वं जगाम ।

सुदास इन्द्रः सुतुक्कां अमित्रा—नरन्धयन्मानुषे वाधिवाचः

९

इयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।

पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च

१०

एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान् राजा न्यस्तः ।

कुस्मो न सद्गन् नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम्

११

अर्धं श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्व—नु द्रुह्यं नि वृणग्वज्रबाहुः ।

वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदुन्ननु त्वा

१२

२१३०

वि सद्यो विश्वा हंहितान्येषा—मिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः ।

व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग जेष्मं पूरं विदथे मृधवाचम

१३

नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च पण्डिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा । पण्डिर्वीरासो अधि पद् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि	१४
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेर्विपाणा आपो न सृष्टा अध्वन्त नीचीः । दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वा नि भोजना सुदासे	१५
अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम् । इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः	१६
आध्रेण चित् तद्वेकं चकार सिंध्यं चित् पेत्येना जघान । अव सक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद् विश्वा भोजना सुदासे	१७
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टं भेदस्य चिच्छर्धनो विन्दु रन्धिम् । मर्ता एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन् नि जहि वज्रमिन्द्र	१८
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्रं भेदं सर्वताता मुषायत । अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीपाणि जभ्रुरश्व्यानि	१९
न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उपसो न नूताः । देवकं चिन्मान्यमानं जघन्था—ऽव त्मना बृहतः शम्बरं भेत	२०
प्र ये गूहादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः । न तं भोजस्य सख्यं मृषन्ता—ऽधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान्	२१

॥ १९२ ॥ (क्र० ७।१९।१-११)

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः । यः शश्वन्तो अदाशुपो गर्यस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः	१	११४०
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्यं । दासं यच्छुष्णं कुर्यवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्	२	
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरुतिभिः सुदासम् । प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्	३	
त्वं नृभिर्नमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि । त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चा—ऽस्वापयो दृभीतयं सुहन्तु	४	
तव च्यौत्तानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सद्यः । निवेशने शततमाविवेपी—रहश्च वृत्रं नमुचिमुताहन्	५	
सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुपे सुदासे । वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक् वाजम्	६	११४५

मा ते अस्यां सहसावन् परिण्टा—वचाय भूम हरिवः परादे ।
 त्रायस्व नोऽवुकेभिर्वरुथै—स्तव प्रियासः सूरिषु स्याम ७
 प्रियास इत् ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।
 नि तुर्वशं नि याद्वं शिशी—ह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् ८
 सद्यश्चिन्तु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशासं उक्थ्या ।
 ये ते हवोभिर्वि पर्णीरदाश—न्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै ९
 एते स्तोमा नरां नृतम् तुभ्य—मस्मद्यश्चो ददतो मघानि ।
 तेषामिन्द्र वृत्रहये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम १०
 नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजतस्तन्वा वावृधस्व ।
 उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११

२१५०

॥ १९३ ॥ (ऋ० ७।२०।२-२०)

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावा—श्चक्रिरपो नर्या यत् करिष्यन् ।
 जग्मिर्युवा नृपदन्मवोभि—स्त्राता न इन्द्र एनसो महाश्वित १
 हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती ।
 कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुपे भूत् २
 युध्मो अनर्वा खजकृत् समद्वा शूरः सत्रापाद् जनुषेमपाळहः ।
 व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान ३
 उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा ऽऽ पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः ।
 नि वज्रमिन्द्रो हरिवान् मिमिक्षन् त्समन्धसा मदेपु वा उवाच ४
 वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव ।
 प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्ती—नः सत्वा गवेर्षणः स धृष्णुः ५
 नू चित् स भ्रेषते जनो न रेषन् मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।
 यज्ञेय इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत् स राय क्रतुपा क्रतेजाः ६
 यदिन्द्र पूर्वी अपराय शिक्ष—न्नयज्जयायान् कनीयसो देष्णम् ।
 अमृत इत् पर्यासीत दूर—मा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः ७
 यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाश—दसन्निरेके अद्विवः सखा ते ।
 वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्टाः स्याम वरुथे अघ्नतो नृपीतौ ८
 एष स्तोमो अचिक्रवुद् वृषां त उत स्तामुर्मघवन्नक्रापिष्ट ।
 रायस्कामो जरितारं त आगन् त्वमङ्गः शक्र वस्व आ शक्रो नः ९

२१५१

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी पु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१६०

॥ १९४ ॥ (ऋ० ७।२।१-१०)

असावि देवं गोर्कजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्दो जनुषमुवोच ।

बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञे—बोधो नः स्तोममन्धसो मदेषु

१

प्र यन्ति यज्ञं विपर्यन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुधवाचः ।

न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपव्दो वृषणो नृपाचः

२

त्वमिन्द्र सवित्वा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वाः ।

त्वद वाक्के रथ्योऽ न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा

३

भीमो विवेपायुधेभिरेषा—मपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् ।

इन्द्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूधोत वि वज्रहस्तो महिना जघान

४

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वंदना शविष्ठ वेद्याभिः ।

स शर्धदुर्यो विषुणस्य जंतो—र्मा शिश्रदेवा अपि गुर्कतं नः

५

२१६५

अभि क्रत्वंद्र भूरध जमन् न ते विव्यङ् महिमानं रजांसि ।

स्वेना हि वृत्रं शर्वसा जघथ न शत्रुरतं विविदद् युधा ते

६

देवाश्चित् ते असुर्याय पूर्वे ऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।

इन्द्रो मघानि दयते विपहो—द्रं वाजस्य जोहुवंत सातो

७

कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावे—शानमिन्द्र सोमगस्य भूरः ।

अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता

८

सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।

वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके—ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि

९

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।

वस्वी पु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१७०

॥ १९५ ॥ (ऋ० ७।२।१-९) विराट्, ९ त्रिष्टुप् ।

पिबा सोममिन्द्र मंदतु त्वा यं ते सुपाव हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नावी

१

यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु

२

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व

३

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्वे—बोधो विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा

४

न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि

५ २१७५

भूरि हि ते सर्वना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित । मारे अस्मन्मघवञ्जयोक् कः ६
 तुभ्येक्षिमा सर्वना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ७
 नू चिन्तु ते मन्यमानस्य दुस्मो—दंश्रुवन्ति महिमानमुग्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ८
 ये च पूर्व ऋषयो ये च नूना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
 अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥ १९६ ॥ (ऋ० ७।२३।१-६)

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्ये—न्द्रं समर्थे महया वसिष्ठ ।
 आ यो विश्वानि शर्वसा ततानो—पश्रोता म ईवतो वचांसि १ २१८०
 अयामि घोष इन्द्र देवजामि—रिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
 नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्णस्मान् २
 युजे रथं गवेषणं हरिभ्या—मुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।
 वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वे—न्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ३
 आपश्चित् पिप्युः स्तर्यो— न गावो नक्षत्रतं जरितारस्त इन्द्र ।
 याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ४
 ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
 एको देवत्रा दयसे हि मती—नस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ५
 एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठसो अभ्यर्चन्त्यर्केः ।
 स नः स्तुतो वीरवद् धातु गोमद यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ २१८५

॥ १९७ ॥ (ऋ० ७।२४।१-६)

योनिष्ट इन्द्र सवने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
 असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः १
 गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हीः सुतः सोमः परिपिक्ता मधूनि ।
 विसृष्टधेना भरते सुवृक्ति—रियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा २
 आ नो द्विव आ पृथिव्या ऋजीषि—न्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि ।
 वहन्तु त्वा हरयो मद्यश्च—माङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ३
 आ नो विश्वाभिरुतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्च याहि ।
 वरीवृजत् स्थविरोभिः सुशिप्रा—ऽस्मे दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्र ४
 एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी—इवात्यो न वाजयन्नधायि ।
 इन्द्र त्वायमर्क ईडे वसूनां द्विवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ५ २१९०

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूधिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।
इयं पिन्व मघवन्त्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

६

॥ १९८ ॥ (ऋ० ७।२५।१-६)

आ ते मह इन्द्रोत्पुंशु समन्यवो यत् समरन्त सेनाः ।
पताति द्युन्नयस्य बाह्वो—र्मा ते मनो विप्रव्यग्रं ग्वि चरीत
नि दुर्ग इन्द्र श्रथिह्यमित्रा—नभि ये नो मतीसो अमन्ति ।
अरे तं शंसं कृणुहि निनिस्सो—रा नो भर संभरणं वसूनाम्
शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु ।
जहि वर्ध्वनुषो मर्त्यस्या—ऽस्मे द्युममधि रत्नं च धेहि
त्वावतो हीन्द्र कत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रं ओकः कृणुष्व हग्वो न मर्धीः
कुत्सा एते हर्यश्वाय शूष—मिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम्
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूधिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।
इयं पिन्व मघवन्त्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

४

११९५

५

६

॥ १९९ ॥ (ऋ० ७।२६।१-५)

न सोम इन्द्रमसुतो ममादु नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः ।
तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोष—नृवन्नवीयः शृणवद् यथा नः
उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः ।
यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते
चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु ।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः
एवा तमाहूत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् ।
मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वी—रस्मे भद्राणि सश्रत प्रियाणि
एवा वसिष्ठ इन्द्रमृतये नृन् कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

१२००

४

५

॥ २०० ॥ (ऋ० ७।२७।१-५)

इन्द्रं नरो नेमर्धिता हवन्ते यत् पार्या युनजते धियस्ताः ।
शूरो नृपाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः

१

य इन्द्र शुष्मो मघवन् ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः ।

त्वं हि हृळ्हा मघवन् विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः २

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरुपं यदस्ति ।

ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदुद राध उपस्तुतश्चिदुर्वाक् ३ २२०५

नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहृती वानो वाजं नि यमते न ऊती ।

अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिर्वीता सखिभ्यः ४

नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय ।

गोमदश्वावद् रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७।२८।१-५)

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्रा नर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः ।

विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मती अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व १

हवं त इन्द्र महिमा व्यानइ ब्रह्म यत् पासि शवसिन्नृपीणाम् ।

आ यद् वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन् क्रत्वा जनिष्ठा अपाळ्हः २

तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् त्सं यन्नृन् न रोदसी निनेथ ।

महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञे ऽतुतुजिं चित् तूतुजिरशिश्नत् ३ २२१०

एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते ।

प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात् ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७।२९।१-५)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिस्तदोकाः ।

पित्रा त्वस्य सुपुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवान्नियानः १

ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणो ऽर्वाचीनो हरिर्भिर्याहि तूर्यम् ।

अस्मिन्न षु सर्वने मादयस्वो ब्रह्माणि शृणव इमा नः २

का ते अस्त्यरकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन् दाशेम ।

विश्वा मतीरा ततने त्वाया ऽधा म इन्द्र शृणवो हवेमा ३ २२१५

उतो घा ते पुरुष्याइ इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्क्षीणाम् ।

अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७।३०।१-५)

आ नो देव शर्वसा याहि शुष्मिन् भवा वृध इन्द्र रायो अस्य ।

महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर १

हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ ।

त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु २

अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् दधो यत् केतुमुपमं समत्सु ।

न्यग्निः सीदुदसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान् ३ २२२०

वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि ।

यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्रवन्त ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०४ ॥ (ऋ० ७।३१।१-१२) गायत्री, १०-१२ विराट् ।

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपात्रे १

शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चक्रुमा सत्यराधसे २

त्वं न इन्द्र वाजयु—स्त्वं गव्युः शतक्रतो । त्वं हिरण्ययुर्वसो ३ २२२५

वयमिन्द्र त्वायवो ऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विन्द्री त्वस्य नो वसो ४

मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीररावणे । त्वे अपि क्रतुर्मम ५

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा ६

महाँ उतामि यस्य ते ऽनु स्वधावरी सहः । नम्राते इन्द्र रोदसी ७

तं त्वा मरुत्वती परि भुवद् वाणी स्यावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः ८ २२३०

ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन् दुस्ममुप द्यवि । सं ते नमन्त कृष्टयः ९

प्र वो महे महिवृधं भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम । विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः १०

उरुव्यचसे महिने सुवृक्ति—मिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । तस्य वतानि न मिनन्ति धीराः ११

इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सूत्रा राजानं दधिरे सहधै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन् १२

॥ २०५ ॥ (ऋ० ७।३२।१-२७) २६ पूर्वार्धचर्चस्य शक्तिर्वासिष्टो वा (शाक्यायने ब्राह्मणे); २६-२७

शक्तिर्वासिष्टो वा (ताण्डके ब्राह्मणे) । प्रगाथः— (बृहती, सतोबृहती), ३ द्विपदा विराट् ।

मो पु त्वा वाघर्तश्चना—ऽऽरे अस्मन्नि रीरमन् ।

आरात्ताञ्चित सधमादं न आ गही—ह वा सन्नपु श्रुधि १ २२३५

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधो न मक्ष आसते ।

इन्द्रे कामं जग्निर्गो वसूयवो रथे न पावुमा दधुः २

रायस्का॑मो वज्र॑हस्तं सु॒दक्षिणं पु॒त्रो न पि॒तरं हुवे	३	
इ॒म इन्द्रा॑य सु॒न्विरे सोमा॑सो द॒ध्याशिरः ।		
ताँ आ मदा॑य वज्र॑हस्त पी॒तये ह॒रि॒भ्यां या॒ह्योक् आ	४	
श्रव॑च्छ्रु॒त्कर्ण॑ ई॒यते वसू॑नां नू चि॒न्नो म॒र्धिष॑द् गिरः ।		
स॒द्यश्चि॑द् यः स॒हस्रा॑णि श॒ता द॒दु-न्नकि॑र्दित्सन्त॒मा मि॑नत्	५	
स वी॒रो अ॒प्रति॑कु॒त इन्द्रे॑ण शू॒शुवे नृ॑भिः ।		
यस्ते॑ ग॒भीरा॑ सर्व॒नानि॑ वृ॒त्रहन् त्सु॑नो॒त्या च धा॑वति	६	२२४०
भवा॑ वरू॒थं म॒घवन् म॒घोनां॑ यत॒ सम॑जा॒सि श॑र्धतः ।		
वि त्वा॑ह॒तस्य॑ वे॒दनं॑ भजे॒म-ह्या॑ दू॒णाशो॑ भ॒रा ग॑य॒म	७	
सु॒नोता॑ सोम॒पात्रे सोम॑मिन्द्रा॑य व॒ज्रिणे॑ ।		
प॒च॒ता प॒क्तीर॑व॒से कृ॒णु॒ध्वमि॑त् पू॒णन्नित॑ पृ॒णते॑ मयः	८	
मा स्ने॑ध॒त सोमि॑नो दक्ष॒ता म॒हे कृ॒णु॒ध्वं रा॒य आ॑तु॒जे ।		
त॒रणि॑रि॒ज्जय॑ति क्षेति पु॒ष्यति॑ न दे॒वासः क॒व॒त्तवे॑	९	
नकिः॑ सु॒दासो॑ रथं॒ पर्या॑स॒ न री॑र॒मत ।		
इन्द्रो॑ यस्या॒विता॑ यस्य॒ मरु॑तो॒ ग॒म॒त् स गो॑म॒ति ब्र॑जे	१०	
ग॒म॒द् वाजं॑ वा॒जया॑न्निन्द्र॒ मर्त्यो॑ यस्य॒ त्वम॑वि॒ता भुवः॑ ।		
अ॒स्माकं॑ चो॒ध्यवि॑ता रथाना॒म॒स्माकं॑ शूर॒ नृ॒णाम॑	११	२२४५
उ॒दि॒ह्वस्य॑ रि॒च्यते॑-ऽशो॒ धनं॑ न जि॒ग्युषः॑ ।		
य इन्द्रो॑ ह॒रि॒वान् न द॑भ॒न्ति तं रि॑पो दक्षं दधाति सोमि॒नि	१२	
मन्त्र॑म॒खर्वं॑ सु॒धितं॑ सु॒पेश॑सं दधा॒त य॒जिये॑ष्वा ।		
पूर्वी॑श्च॒न प्र॑सि॒तय॑स्तर॒न्ति तं य इन्द्रे॑ कर्म॒णा भुव॑त	१३	
कस्तमि॑न्द्र॒ त्वाव॑सु॒मा मर्त्यो॑ दध॒र्षति॑ ।		
श्र॒द्धा इ॒त् ते म॒घवन् पा॑र्ये॒ द्विवि॑ वा॒जी वाजं॑ सि॒पास॑ति	१४	
म॒घोनः॑ स्म वृ॒त्रह॑त्येषु चोद॒य ये द॑दति प्रि॒या वसु॑ ।		
तव॑ प्रणी॒ती ह॑र्यश्च॒ सूरि॑भिर्वि॒श्वा तरे॑म दु॒रिता॑	१५	
तवे॒दिन्द्रा॑व॒मं वसु॑ त्वं पु॒ष्यसि॑ म॒ध्यम॑म् ।		
स॒त्रा वि॒श्वस्य॑ पर॒मस्य॑ राज॒सि नकि॑ष्वा गो॒षु वृ॑ण्वते	१६	२२५०
त्वं वि॒श्वस्य॑ धन॒दा असि॑ श्रु॒तो य ई॑ भव॒न्त्या॒जयः॑ ।		
तवा॑यं वि॒श्वः पुरु॑हू॒त पा॑रि॒थिवो॑ ऽव॒स्युर्नाम॑ भि॒क्षते॑	१७	

यदिन्द्र यावत्स्त्वमेतावद्ब्रह्मीशीय ।

स्तोतारमिदं दिधिषेयं रदावसो न पापत्वाय रासीय १८

शिक्षेयमिन्महयते विवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।

नहि त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन १९

तरणिरित् सिंघासति वाजं पुरंध्या युजा ।

आ व इंद्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तप्तेव सुद्वम् २०

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्नेधन्तं रयिर्नशत् ।

सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते वेष्णं यत् पार्थं विवि २१

११५५

अभि त्वां शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।

ईशानमस्य जगतः स्वर्हेशमीशानमिन्द्र तस्थुषः २२

न त्वावां अन्यो विव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।

अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे २३

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कर्नीयसः ।

पुरुवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः २४

परां णुदस्व मघवन्नमित्रान् त्सुवेदां नो वसू कृधि ।

अस्माकं बोध्यविता महाधने भवां वृधः सखीनाम् २५

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

शिक्षां णो अस्मिन् पुरुहूतं यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि २६

११६०

मा नो अज्ञाता वृजना दुराधोऽहं माशिवासो अव क्रमुः ।

त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपो ऽति शूर तरामसि २७

॥ २०६ ॥ (क्र० ७।३३।१-९) १-९ वसिष्ठपुत्राः इन्द्रो वा । त्रिष्टुप् ।

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।

उत्तिष्ठन् वोचे परि बर्हिषो नृन् न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः १

दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।

पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात् सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् २

एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततरेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।

एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ३

जुष्टीं नरो ब्रह्मणा वः पितृणा मक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।

यच्छक्रीपु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममर्दधाता वसिष्ठाः ४

११६५

उद् द्यामिवेत् तृष्णजो नाथितासो ऽशीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।	
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रो—दुरं तृप्तुभ्यो अकृणोदु लोकम्	५
वृण्डा इवेद् गोअर्जनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।	
अभवच्च पुरेता वसिष्ठ आदितृ तृप्सूनां विशो अप्रथन्त	६
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेत—स्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।	
त्रयो घर्मासं उपसं सचन्ते सर्वा इत तां अनु विदुर्वसिष्ठाः	७
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।	
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः	८
त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्गमभि सं चरन्ति ।	
यमेन ततं परिधिं वर्यन्तो ऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः	९

२२७०

॥ २०७ ॥ (ऋ० ७।५।१२-८) (प्रस्वापिनी उपनिषद्) । २-४ उपरिष्ठाद्बृहती, ५-८ अनुष्टुप् ।

यदर्जुन सारमेय वृतः पिशङ्ग यच्छसे ।	
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्तेषु बप्सतो नि पु स्वप	२
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर ।	
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि पु स्वप	३
त्वं सूकरस्य दर्दहि तव दर्दतु सूकरः ।	
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि पु स्वप	४
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विष्पतिः ।	
ससन्तु सर्वे जातयः सस्त्वयमभितो जनः	५
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।	
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा	६
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।	
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि	७
प्रोष्ठेशया बह्येशया नारीर्यास्तल्पशीबरीः ।	
स्त्रियो याः पुण्यगन्धा—स्ताः सर्वाः स्वापयामसि	८

२२७५

॥ २०८ ॥ (ऋ० ७।९।१) त्रिष्टुप् ।

यज्ञे विवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।	
इन्द्राय यत्र सर्वनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वयंश्च	१

॥ २०९ ॥ (ऋ० ७।९।१-६)

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतेन वृषभाय क्षितीनाम् । गौराद् वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद् याति सुतसोममिच्छन्	१	
यद् दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं द्विवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि । उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान्	२	२१८०
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच । एन्द्र पपाथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकथ	३	
यद् योधया महतो मन्यमानान् त्साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान् । यद् वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम	४	
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार । यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत् केवलः सोमो अस्य	५	
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत् पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य । गवामसि गोपतिरेकं इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः	६	

॥ २१० ॥ (ऋ० ७।१०।८, १६, १९-२२) । त्रिष्टुप् २१ जगती ।

यो मा पाकेन मनसा चरतमभिचण्टे अनृतेभिर्वचोभिः । आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता	८	२१८५
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तं हंतु महता वधेन विश्वस्य जन्तोर्धमस्पदीष्ट	१६	
प्र वर्तय द्विवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्सं शिशधि । प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्ताकुभि जहि रक्षसः पर्वतेन	१९	
एत उ त्वे पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति द्विप्सवोऽदाभ्यम् । शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदुशनिं यातुमद्भ्यः	२०	
इन्द्रो यातूनार्मभवत् पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्सत एति रक्षसः	२१	
उलूकयातुं शुश्रूलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं हृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र	२२	२१९०

॥ २११ ॥ (ऋ० ८।६८।१-१३)

(२२९१-२३२०) प्रियमेध आङ्गिरसः । गायत्री, अनुष्टुम्बुखः प्रगाथः=

(अनुष्टुप्+गायत्र्यौ) ; १, ४, ७, १० अनुष्टुप् ।

आ त्वा रथं यथोतये सुम्राय वर्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीपह—मिन्द्र शर्विष्ठ सत्पते १
 तुविंशुष्म तुविंक्तो शर्चीवो विश्वया मते । आ पंप्राथ महित्वना २
 यस्य ते महिना महः । परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ३
 विश्वानरस्य वस्पति—मनानतस्य शर्वसः । एवैश्च चर्षणीना—मूती हुवे रथानाम् ४
 अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळेषु यं नरः । नाना हवन्त ऊतये ५ २२९५
 परोमात्रमृचीषम्—मिन्द्रमुग्रं सुरार्धसम् । ईशानं चिद्वसूनाम् ६
 तंतमिद्रार्धसे मह इन्द्रं चोदामि पीतये । यः पूर्व्यामनुष्टुति—मीशं कृष्टीनां नृतुः ७
 न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः । नक्तिः शवांसि ते नशत् ८
 त्वोतासस्त्वा युजा ऽप्सु सूर्ये महद्भनम् । जयेम पृत्सु वज्रिवः ९
 तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गिर्वणस्तम ।
 इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् १० २३००
 यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्विवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः ११
 उरु णस्तन्वेऽ तन उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यन्धि जीवसे १२
 उरुं नृभ्य उरुं गर्व उरुं रथाय पन्थाम् । देववीति मनामहे १३

॥ २१२ ॥ (ऋ० ८।६९।१-१०, [११ पूर्वार्धः], १३-१८)

अनुष्टुप्, २ उणिक्, ४-६ गायत्री, १६ पङ्क्ति, १७-१८ बृहती ।

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे । धिया वो मेधसातये पुरंध्या विवासति १
 नदं व ओर्दतीनां नदं योयुवतीनाम् । पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यासि २ २३०५
 ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
 जन्मन् कुवानां विश—स्त्रिष्वा रोचने द्विवः ३
 अभि प्र गोपतिं गिरे—न्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ४
 आ हरयः ससृजिरे ऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ५
 इन्द्राय गाव आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु । यत् सीमुपहरे विदत् ६
 उद्यद्भ्रस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।

मध्वः पीत्वा संचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ७ २३१०
 अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धुष्णवर्चत ८

अव' स्वराति गर्गरो गोधा परि' सनिष्वणत् ।

पिङ्गा परि' चनिष्कदु—दिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम्

९

आ यत् पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः । अपस्फुरं गृभायत् सोममिन्द्राय पातवे १०

अपादिन्द्रो अपादुग्नि—विश्वे देवा अमत्सत । (पूर्वार्धः)

११

यो व्यतीरफाणयत् सुयुक्तो उप दाशुषे । तक्रो नेता तदिद्रुपु—रुपमा यो अमुच्यत १३ १३१५

अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।

भिनत् कनीन ओदुनं पच्यमानं परो गिरा

१४

अर्भको न कुमारको ऽधि तिष्ठन् नवं रथम् । स पक्षन्माहिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्तुम् १५

आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।

अर्ध द्युक्षं संचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम्

१६

तं धेमिस्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।

अथै चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति द्वावने

१७

अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।

पूर्वामनु प्रयति वृक्तर्वाहिणो हितप्रयस आशत

१८

२३२०

॥ २१३ ॥ (क्र० ८७०१-१५)

(२३२१-२३३५) पुरुहन्मा आङ्गिरसः । बृहती. १-६ प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती),

१२ शंकुमती, १३ उष्णिक्, १४ अनुष्टुप्, १५ पुरुषोष्णिक् ।

यो राजा चर्पणीनां याता रथेभिरधिगुः ।

विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गूणे

१

इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्त्रवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।

हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो द्विवे न सूर्यः

२

नकिष्टं कर्मणा नश—द्यश्चकार सदावृधम् ।

इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वस—मधृष्टं धूष्णवोजसम्

३

अपाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महीरुरुज्रयः ।

स धेनवो जायमाने अनोनवु—द्यावः क्षामो अनोनवुः

४

यद्वाव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।

न त्वा वज्रिन्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी

५

२३२५

आ पंप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शर्वसा ।

अम्मां अव मघवन् गोमति वृजे वज्रिञ्चित्राभिरुतिभिः

६

न सीमदेव आप—दिषं दीर्घायो मर्त्यः ।

एतंग्वा चिद्य एतंशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते ७

तं वो महो महाय्य—मिन्द्रं वानायं सक्षणिम् ।

यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वास्ति हव्यः ८

उदू षु णो वसो महे मृशरवं शूर राधसे ।

उदू षु महौ मघवन् मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ९

त्वं न इन्द्र क्रतयु—स्त्वानिद्रो नि तृम्पसि ।

मध्ये वसिष्व तुविनुम्णोर्वो—र्नि दासं शिश्रथो हर्थः १० २३३०

अन्यव्रतममानुष—मयज्वानमदेवयुम् ।

अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुग्राय दस्युं पर्वतः ११

त्वं न इन्द्रासां हस्ते शविष्ठ दावने । धानानां न सं गृभायास्मयु—र्द्धिः सं गृभायास्मयुः १२

सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य । उपस्तुतिं भोजः सूरियो अह्वयः १३

भूरिभिः समह क्रषिभि—र्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।

यद्वित्थमेकमेकमि—च्छरं वत्सान् पंगददः १४

कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् । अजां सूर्गिर्न धातवे १५ २३३५

॥ २१४ ॥ (क्र० ८।९।१-९) (२३३६-२३६५) तिग्मश्चीराङ्गिरस । अनुष्टुप् ।

आ त्वा गिरो रथीरिवा—ऽस्थुः सुतेषु गिर्वणः ।

अभि त्वा समनूषते—न्द्रं वत्सं न मातरः १

आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतासं इन्द्र गिर्वणः ।

पिबा त्वस्यान्धस इन्द्र विश्वांसु ते हितम् २

पिबा सोमं मदाय क—मिन्द्रं श्येनाभृतं सुतम् ।

त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि ३

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।

सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूधिं मह्यं असि ४

इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।

चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ५ २३४०

तमुं ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।

पुरुष्यस्य पौस्या सिर्षासन्तो वनामहे ६

एतो न्विन्द्रं स्तवाम् शुद्धं शुद्धेन साक्षा ।	
शुद्धैरुक्थैर्वीवृध्वासं शुद्ध आशीर्वीन् ममत्तु	७
इन्द्रं शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरुतिभिः ।	
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममाद्धि सोम्यः	८
इन्द्रं शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि द्वाशुपे ।	
शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे शुद्धो वाजं सिपाससि	९

॥ २१५ ॥ (ऋ० ८।९६।१-१३, १६-२१)

[द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप्, ४ विराट्, २१ पुरस्ताज्ज्योतिः ।]

अस्मा उपास आतिरन्त याम—मिन्द्राय नक्तमूर्ध्याः सुवाचः ।	
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थु—र्तुभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः	१ २३४५
अतिविद्धा विथुरेणां चिदध्ना त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् ।	
न तद्देवा न मर्त्यस्तुतुर्या—द्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकार	२
इन्द्रस्य वज्रं आयसो निर्मिश्र इन्द्रस्य बाहोर्भूयिष्ठमोजः ।	
शीर्षन्निन्द्रस्य कर्तवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके	३
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियांनां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम् ।	
मन्ये त्वा सत्वरनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम्	४
आ यद्वज्रं बाहोरिन्द्र धत्से मरुच्युतमर्हये हन्तवा उ ।	
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणां अभिनक्षन्त इन्द्रम्	५
तमु प्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।	
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भि—रूपो नमोभिर्वृषभं विशेम	६ २३५०
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।	
मरुद्भिर्निन्द्र सख्यं ते अस्त्व—थेमा विश्वाः पृतना जयासि	७
त्रिः पण्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्मा इव राशयो यज्ञियांसः ।	
उप त्वेमः कृधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम	८
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्त इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष ।	
अनायुधासो असुरा अदेवा—श्चक्रेण तां अप वप ऋजीपिन्	९
मह उग्राय तवसे सुवृक्षित प्रेरय शिवर्तमाय पश्वः ।	
गिर्वाहसे गिर इन्द्राय पूर्वी—र्धेहि तन्वे कृविदुङ्ग वेदत	१०

उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां वृणा न पारमीरया नदीनाम् ।		
नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदुङ्ग वेदत्	११	२३५५
तद्विविद्धि यत् त इन्द्रो जुजोषत् स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास ।		
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदुङ्ग वेदत्	१२	
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठ—दियानः कृष्णो दुशभिः सहस्रः ।		
आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्त—मप स्नेहितीर्नमणा अधत्त	१३	
त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।		
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः	१६	
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ ।		
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रै—स्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः	१७	
त्वं ह त्यदृषभ चर्षणीनां वनो वृत्राणां तविषो बभूथ ।		
त्वं सिन्धूरसृजस्तस्तभानान् त्वमपो अजयो दासपत्नीः	१८	२३६०
स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्व—नुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् ।		
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदुन्यमाहुः	१९	
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत् तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम ।		
स प्राविता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता	२०	
स वृत्रहेन्द्रं क्रभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।		
कृण्वन्नपांसि नर्या पुरुणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः	२१	२३६३

॥ २१६ ॥ (ऋ० ८ ९८।१-१२)

(२३६४-२३८३) नृमेध आङ्गिरसः । उष्णिक्, ७, १०-११ ककुप, ९, १० पुरउष्णिक् ।

इन्द्राय सामं गायत् विप्राय बृहते बृहत । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे	१	
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वेदेवो महो असि	२	२३६५
विभ्राजस्योतिषा स्व—रगच्छो रोचनं दिवः । देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे	३	
एन्द्रं नो गाधि प्रियः सत्राजिदगोहाः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः	४	
अभि हि संत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः	५	
त्वं हि शश्वतीना—मिद्रं कृता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः	६	
अधा हीन्द्रं गर्विण उप त्वा कामान् महः संसृज्महे । उदेव यन्त उदभिः	७	२३७०
वार्य त्वा यव्याभि—र्वधन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वासं चिदद्विवो दिवेदिवे	८	

युञ्जन्ति हरीं इषिरस्य गार्थयो—रौ रथं उरुयुगे । इन्द्रवाहा वचोयुजां	९	
त्वं न इन्द्रा भर् ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनाषहम्	१०	
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्रमीमहे	११	
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्त—मुपं ब्रुवे शतक्रतो । स नो रास्व सुवीर्यम्	१२	२३७५

॥ २१७ ॥ (ऋ० ८।९९।१-८) प्रगाथ = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।		
स इन्द्र स्तोमवाहसामिह श्रुध्यु—प स्वसरमा गहि	१	
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूषन्ति वेधसः ।		
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः	२	
श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।		
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम	३	
अनर्शरातिं वसुदामुपं स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।		
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो वानाय चोदयन्	४	
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्व—भि विश्वा असि स्पृधः ।		
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुण्यतः	५	२३८०
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।		
विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि	६	
इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।		
आशुं जेतारं हेतारं रथीतम्—मर्तुतं तुऽयावृधम्	७	
इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूर्तिं शतक्रतुम् ।		
समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम्	८	२३८३

॥ २१८ ॥ (ऋ० ८।८९।१-७)

(२२८४-२३९६) नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । १-४ प्रगाथ = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ५-६ अनुष्टुप्, ७ बृहती ।

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहंतमम् ।		
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि	१	
अपाधमदुभिर्शस्तीरशस्तिहा ऽथेन्द्रो द्युमन्याभवत् ।		
देवास्त इन्द्र सखाय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण	२	२३८५

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चित ।	
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा	३
अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित् ते असद्वृहत् ।	
अर्षन्त्वापो जर्वसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः	४
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय ।	
तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्रा उत द्याम्	५
तत् ते यज्ञो अजायत तदुर्क उत हस्कृतिः ।	
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्	६
आमासु पक्रमैरय आ सूर्य रोहयो द्विवि ।	
घमं न सामन् तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत्	७ २३२०

॥ २१९ ॥ (ऋ० ८।९०।१-६) प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोवृहती) ।

आ नो विश्वासु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु ।	
उप ब्रह्माणि सर्वनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः	१
त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् ।	
तुविद्युन्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शर्वसो महः	२
ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिभ्रुता ।	
इमा जुषस्व हर्यश्च योजनेन्द्र या ते अमन्महि	३
त्वं हि सत्यो मघवन्नानतो वृत्रा भूरि न्यूञ्जसे ।	
स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषे सर्वाश्च रयिमा कृधि	४
त्वमिन्द्र यशा अस्य जीषी शवसस्पते ।	
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता	५ २३२५
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।	
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्रवन्	६ २३२६

॥ २२० ॥ (८।९०।१-३३)

(२३२७-२४२९) श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री, ? अनुष्टुप् ।

पान्तमा वो अंधस इन्द्रमभि प्र गायत । विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ?	
पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं सनश्नुतम् । इन्द्र इति ब्रवीतन	२
इन्द्र इन्द्रो महानां दाता वाजानां नतुः । महौ अभिज्ञा यमत	३
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इन्द्रोरिन्द्रो यवाशिरः	४ २४००

तम्बभि प्राचते—न्द्रं सोमस्य पीतये	। तदिन्द्रस्य वर्धनम्	५
अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा	। विश्वाभि भुवना भुवत्	६
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्धार्यतम्	। आ च्यावयस्युतये	७
युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्	। नरमवार्यकृतम्	८
शिक्षां ण इन्द्र राय आ पुरु विद्रां ऋचीषम	। अवां नः पार्ये धने	९ २४०५
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ऽऽ याहि शतवाजया	। इषा सहस्रवाजया	१०
अयाम् धीवतो धियो ऽर्वाङ्घ्रिः शक्र गोदरे	। जयेम पूत्सु वज्रिवः	११
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा	। उक्थेषु रणयामसि	१२
विश्वा हि मन्यत्वेना ऽनुकामा शतक्रतो	। अगन्म वज्रिन्नाशसः	१३
त्वे सु पुत्र शवसो ऽवृत्रन् कामकातयः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	१४ २४१०
स नो वृषन्त्सनिष्ठया सं घोरया द्रवित्वा	। धियाविङ्कि पुरंध्या	१५
यस्ते नूनं शतक्रतु—विन्द्र द्युम्नितमो मदः	। तेन नूनं मदे मदेः	१६
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः	। य ओजोदातमो मदः	१७
विद्वा हि यस्ते अद्रिव—स्त्वादत्तः सत्य सोमपाः	। विश्वासु दस्म कृष्टिषु	१८
इन्द्राय मद्रने सुतं परि णोभन्तु नो गिरः	। अर्कमर्चन्तु कारवः	१९ २४१५
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणान्ति सप्त संसदः	। इद्रं सुते हवामहे	२०
त्रिकंठुकेषु चेतनं देवासो यजमन्तत	। तमिद्रधन्तु नो गिरः	२१
आ त्वा विशन्तिवन्दवः समुद्रमिव सिधवः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	२२
विव्यक्थ महिना वृषन् भक्षं सोमस्य जागृवे	। य इन्द्र जठरेषु ते	२३
अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्	। अरं धामभ्य इद्वः	२४ २४१०
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे	। अरमिन्द्रस्य धाम्ने	२५
अरं हि ण्मा सुतेषु णः सोमेष्विद्र भूषसि	। अरं ते शक्र वावने	२६
पराकात्ताचिदद्रिव—स्त्वां नक्षन्त नो गिरः	। अरं गमाम ते वयम्	२७
एवा ह्यासिं वीर्यु—रेवा शूर उत स्थिरः	। एवा ते राध्यं मनः	२८
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वैर्भिर्धायि धातुभिः	। अधा चिदिद्र मे सचा	२९ २४१५
मो पु ब्रह्मेव तन्द्रयु—र्भुवो वाजानां पते	। मत्स्वा सुतस्य गोमतः	३०
मा न इन्द्राभ्याइदिशः सूरौ अक्तुष्वा यमन्	। त्वा युजा वनेम तत्	३१
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रतिं ब्रुवीमहि स्पृधः	। त्वमस्माकं तव स्मसि	३२
त्वामिद्धि त्वायवो ऽनुनोनुवत्श्वरान्	। सखाय इन्द्र कारवः	३३ २४१९

॥ २२१ ॥ (ऋ० ८।९।१-३३)

(२४३०-२४६२) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

उद्धेदुभि श्रुतामघं वृषभं नयीपसम् । अस्तारमेषि सूर्य	१	२४३०
नव यो नवति पुरो बिभेद बाह्वोजसा । अहिं च वृत्रहावधीत	२	
स न इन्द्रः शिवः सखा ऽश्वावद्गोमयवमत् । उरुधरिव दोहते	३	
यदुद्य कच्च वृत्रह—क्षुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे	४	
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत् सत्यमित् तव	५	
ये सोमासः परावति ये अवावति सुन्विरे । सर्वास्तौ इन्द्र गच्छसि	६	२४३५
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत्	७	
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः	८	
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋषो अस्तृतः	९	
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः । त्वं च मघवन् वशः	१०	
यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम् । न देवो नाधिगुर्जनः	११	२४४०
अधा ते अप्रतिष्कृतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी	१२	
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत पर्यः	१३	
वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य तौ अमः	१४	
आदु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम् । अजातशत्रुरस्तृतः	१५	
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शधै चर्षणीनाम् । आ शुषे राधसे महे	१६	२४४५
अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत । यत् सोमेसोम आमवः	१७	
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूयीसुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम्	१८	
कया त्वं न ऊत्या ऽभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर	१९	
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान् वृषभोरणत् । वृत्रहा सोमपीतये	२०	
अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्रिणम् । प्रयन्ता बोधि दाशुषे	२१	२४५०
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिर्निचुम्पुणः	२२	
इष्टा होत्रा असृक्षते—न्द्रं वृधासो अध्वरे । अच्छावभूथमोजसा	२३	
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम्	२४	
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बहिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह	२५	
आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत	२६	२४५५
आ ते दधामीन्द्रिय—मुक्था विश्वा शतक्रतो । स्तोतृभ्य इन्द्र मूळय	२७	

भद्रंभद्रं न आ भरे—षूमर्जं शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयांसि नः	२८	
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो । यदिन्द्र मृळयांसि नः	२९	
त्वामिद् वृत्रहन्तम् सुतार्वन्तो हवामहे । यदिन्द्र मृळयांसि नः	३०	
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते । उप नो हरिभिः सुतम्	३१	१४६०
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद् इन्द्रः शतक्रतुः । उप नो हरिभिः सुतम्	३२	
त्वं हि वृत्रहन्तेषां पाता सोमानामसि । उप नो हरिभिः सुतम्	३३	१४६१

॥ २२२ ॥ (क्र० १०८।७-९)

(१४६३-१४६५) त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः । त्रिष्टुप् ।

अस्य त्रितः क्रतुना ववे अन्त—रिच्छन् धीतिं पितुरेवैः परस्य ।		
सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति	७	
स पित्र्याण्यायुधानि विद्रा—निन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत् ।		
त्रिशिर्षाणं सप्तर्शिमं जघन्वान् त्वाष्ट्रस्य चिन्निः संसृजे त्रितो गाः	८	
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजो ऽवाभिन्त सत्पतिर्मन्यमानम् ।		
त्वाष्ट्रस्य चिद् विश्वरूपस्य गोना—माचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क	९	१४६५

॥ २२३ ॥ (क्र० १०।२२।१-१५)

(१४६६-१४९०) ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । पुरस्ताद्बृहती,
५, ७, ९ अनुष्टुप्, १५ त्रिष्टुप् ।

कुहं श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नय जने मित्रो न श्रूयते ।		
ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चकृषे गिरा	१	
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवे वज्रयुचीषमः ।		
मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या	२	
महो यस्पतिः शर्वसो असाम्या महो नृम्णस्य तूतुजिः ।		
भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम्	३	
युजानो अश्वा वातस्य धुनी देवो देवस्य वज्रिवः ।		
स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः	४	
त्वं त्या चिद् वातस्याश्वागा क्रज्जा त्मना बहध्वै ।		
ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नर्किर्विदार्यः	५	१४७०
अध गमन्तोशना पृच्छते वां कर्दथा न आ गृहम् ।		
आ जंगमथुः पराकाद् विवश्च गमश्च मर्त्यम्	६	

आ न इन्द्र पृक्षसे ऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् ।

तत् त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम् ७

अकृमा दस्युरभि नो अमन्तु रन्यवतो अमानुषः ।

त्वं तस्यामित्रहन् वर्धकांसस्य दम्भय ८

त्वं न इन्द्र शूर शूरैरुत त्वोतासो बर्हणा ।

पुरुत्रा ते वि पुतयो नवन्त क्षोणयो यथा ९

त्वं तान् वृत्रहत्ये चोदयो नृन् कार्पाणे शूर वज्रिवः ।

गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम् १०

२४७५

मक्षू ता त इन्द्र वानाप्रस आक्षणे शूर वज्रिवः ।

यद्ध शुष्णस्य कृम्भयो जातं विश्वं सयावभिः ११

माकुर्धगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः ।

व्यव्यं त आसां सुम्ने स्याम वज्रिवः १२

अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्या ऽहिंसन्तीरुपस्पृशः ।

विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः १३

अहस्ता यदुपकी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् ।

शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्रथः १४

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान वसुः सन् ।

उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः १५

२४८०

॥ २२४ ॥ (ऋ० १०।२३।१-७) जगती; १, ७ त्रिष्टुप्, ५ अभिसारिणी ।

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् ।

प्र इमश्रु दोधुवदूर्ध्वथा भूद् वि सेनाभिर्दयमानो वि राधसा १

हरी न्वस्य या वने विदे वस्विन्द्रो मघैर्मघवा वृत्रहा भुवत ।

ऋभुर्वाज ऋभुक्षाः पत्यते शवो ऽव क्षणौमि दासस्य नाम चित् २

यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।

आ तिष्ठति मघवा सनश्चुत इन्द्रो वाजस्य वीर्धश्चवसस्पतिः ३

सो चिन्नु वृष्टिर्यथाऽ स्वा सचा इन्द्रः इमश्रूणि हरिताभि पुष्णुते ।

अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूनोति वातो यथा वनम् ४

यो वाचा विवाचो मृधवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान ।

तत्तदिवस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ५

२४८५

स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजन—न्नपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे ।
 विद्या ह्यस्य भोजनमिनस्य य—दा पशुं न गोपाः करामहे ६
 मार्किर्न एना सख्या वि योषु—स्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः ।
 विद्या हि ते प्रमतिं देव जामिव—दुस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ७

॥ २२५ ॥ (ऋ० १०।२४।१-३) आस्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्र सोममिमं पिबु मधुमन्तं चमू सुतम् ।
 अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहास्रिणं पुरुवसो विवक्षसे १
 त्वां यज्ञेभिरुक्थै—रुप हव्येभिरीमहे ।
 शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे २
 यस्पतिर्वार्याणा—मसि रधस्य चोदिता ।
 इन्द्र स्तोतृणामविता वि वो मदे द्विपो नः पाह्यहसो विवक्षसे ३ २४९०

॥ २२६ ॥ (ऋ० १०।२७।१-२४) (२४९१-२५२९) पेन्द्रो वसुक्रः । त्रिष्टुप् ।

असत् सु मे जरितः साभिवेगो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
 अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता संत्यध्वतं वृजिनायन्तमाभुम् १
 यदीदृहं युधये संनया—न्यदेवयून् तन्वा३ शूशुजानान् ।
 अमा ते तुम्रं वृषभं पंचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि पिश्रम् २
 नाहं तं वेदु य इति ब्रवी—त्यदेवयून्त्समरणे जघन्वान् ।
 यदावाख्यतं समरणमृधाव—दादिद्ध मे वृषभा प्र ब्रुवन्ति ३
 यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन् ।
 जिनामि वेत् क्षेम आ सन्तमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादुगृह्य ४
 न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदृहं मनस्ये ।
 मम स्वनात कृधुकर्णो भयात् एवेदन् यून् किरणः समेजात ५ २४९५
 दर्शन्वत्र शृतपां अनिन्द्रान् बाहुक्षदुः शरवे पत्यमानान् ।
 घृषुं वा ये निनिदुः सखाय—मध्यु न्वेषु पवयो ववृत्युः ६
 अभूर्वोक्षीर्व्यु१ आयुरानङ् दर्पन्तु पूर्वा अपरो नु दर्षत ।
 द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष ७
 गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन् ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः ।
 हवा इदुर्यो अभितः समायन् कियदासु स्वपतिश्छन्दयाने ८

सं यद्वयं यवसादो जनानां—महं यवाद उर्वज्रे अन्तः ।		
अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छा—दथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान्	९	
अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात् संसृजानि ।		
स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्या—दयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः	१०	२५००
यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्रां अभि मन्याते अन्धाम् ।		
कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ई वहति य ई वा वरेयात्	११	
कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण ।		
भद्रा वधूर्भवाति यत् सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्	१२	
पत्तो जंगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरूथम् ।		
आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम्	१३	
बृहन्नच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भः ।		
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः	१४	
सप्त वीरासो अधरादुदाय—ब्रूणोत्तरात्तात् समजग्मिरन्ते ।		
नव पश्चातात् स्थिविमन्त आयन् दश प्राक् सानु वि तिरन्त्यश्रः	१५	२५०५
दुशानामेकं कपिलं समानं तं हिंन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।		
गर्भं माता सुधितं वक्षणा—स्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति	१६	
पीवानं मेघमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु द्वीव आसन् ।		
द्वा धनुं बृहतीमप्स्वन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता	१७	
वि क्रौशनासो विष्वश्च आयन् पचाति नेमो नहि पक्षदुर्धः ।		
अयं मे देवः सविता तदाह द्वेन इद्वनवत् सर्पिरन्नः	१८	
अपश्यं ग्रामं वहमानमारा—दचक्रया स्वधया वर्तमानम् ।		
सिषक्त्ययः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्वा प्रमिनानो नवीयान्	१९	
एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो पु प्र संधीमुद्गुरिन्ममन्धि ।		
आपश्चिदस्य वि नश्नत्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान्	२०	२५१०
अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तो ऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीपात् ।		
श्रव इद्वेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति	२१	
वृक्षेवृक्षे निर्यता मीमयद्वौ—स्ततौ वयः प्र पतान् पूरुपादः ।		
अथेदं विश्वं भुवनं भयात् इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत्	२२	
देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन् कून्तत्रादिषामुपरा उदायन ।		
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीषम्	२३	

सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्थे ।
आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते २४

॥ २२७ ॥ (ऋ० १०।२९।१-८) ।

वने न वा यो न्यधायि चाक—ज्जुचिर्वा स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् १ २५१५
प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन् नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् २
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद् दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ३
कदु द्युन्नमिन्द्र त्वावतो नृन् कया धिया कर्से कन्न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भूत्या अन्नै समस्य यदसन् मनीषाः ४
प्रेरय सूरौ अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव गमन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वी—नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ५
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्वान् भवन्तु पीतये मधूनि ६ २५२०
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्र—मिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्त्रा पृथिव्या अभि क्त्वा नर्यः पौंस्यैश्च ७
व्यानल्लिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सग्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं मद्रया सुमत्या चोदयासे ८

॥ २२८ ॥ (१०।२८।१, ३-५, ७, ९, ११)

[१ इन्द्रस्तुषा वसुकपली ऋषिका; ३-५, ७, ९, ११ पेन्द्रो वसुक ऋषिः ।]

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम ।
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात् स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् १
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान् त्सुन्वन्ति सोमान् पिबसि त्वमेषाम् ।
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन् हूयमानः ३
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति ।
लोपाशः सिंहं प्रत्यश्र्वमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ४ २५२५
कथा त एतद्वहमा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम् ।
त्वं नो विद्धाँ क्रतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन् क्षेम्या धूः ५

एवा हि मां तवसं जजुरुग्रं कर्मन्कर्मन् वृषणमिन्द्र देवाः ।	
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ऽप व्रजं महिना दाशुषे वम्	७
शशः क्षुरं प्रत्यश्वं जगारा—ऽद्रिं लोकेन व्यभेदमारात् ।	
ब्रूहंतं चिद्वहते रंधयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः	९
तेभ्यो गोधा अयथं कर्ष्वेत—द्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः ।	
सिम उक्ष्णोऽवसृष्टौ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः	११ २५२९

॥ २२९ ॥ (क्र० १०।३२।१-९)

(२५३०-२५४०) कवष ऐलूषः । जगती, ६-९ त्रिष्टुप् ।

प्र सु गमन्ता धियसानस्य सक्षणि वरेभिर्वरा अभि पु प्रसीदतः ।	
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत् सोम्यस्यान्धसो बुबोधति	१ २५३०
वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुषुत ।	
ये त्वा वहन्ति मुहुरध्वराँ उप ते सु वन्वन्तु वग्वनाँ अराधसः	२
तदिमे छन्तसद्वपुषो वपुष्टरं पुत्रो यज्जानं पित्रोरधीयति ।	
जाया पतिं वहति वग्वनुना सुमत् पुंस इन्द्रो वहतुः परिष्कृतः	३
तदित सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छासन् वहतुं न धेनवः ।	
माता यन्मन्तुर्यूथस्य पूर्या ऽभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः	४
प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुष्पद—मेको रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः ।	
जरा वा येष्वमृतेषु दावने परि व ऊमेभ्यः सिञ्चता मधु	५
निधीयमानमपगूळहमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।	
इन्द्रो विद्रौ अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्रे अनुशिष्ट आगाम्	६ २५३५
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं ह्यप्राट् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः ।	
एतद्वै भद्रमनुशासनस्यो—त सुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम्	७
अद्येदु प्राणीदममन्निमाहा ऽपीवृतो अधयन्मातुरुधः ।	
एमेनमाप जरिमा युवान—महेळन् वसुः सुमना बभूव	८
एतानि भद्रा कलश क्रियाम् कुरुश्रवण ददतो मघानि ।	
वान इद्वो मघवानः सो अ—स्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि	९

॥ २३० ॥ (क्र० १०।३३।२-३) प्रगाथः = (१ बृहती, ३ सतोबृहती)

सं मां तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।

नि बाधते अमतिर्नग्नता जसु—र्वेन वैवीयते मतिः

२

मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ।

सकृत सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाऽर्धा पितेव नो भव

३

२५४०

॥ २३१ ॥ (ऋ० १०।३८।१-५) (२५४१-२५४५) मुष्कवानिन्द्रः । जगती ।

अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये ।

यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक् पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये

१

स नः क्षुमन्तं सदेने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाप्यम् ।

स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि

२

यो नो दास आर्यो वा पुरुषुताऽदेव इन्द्र युधये चिकेतति ।

अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान् वनुयाम संगमे

३

यो दुभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिः र्यो अभीके वरिवोविन्नृषाह्ये ।

तं विखादे सस्मिद्य श्रुतं नरं मर्वाश्चमिन्द्रमवसे करामहे

४

स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवा नानुदं वृषभ रधचोदनम् ।

प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान् मुष्कयोर्बद्ध आसते

५

२५४५

॥ २३२ ॥ (ऋ० १०।४२।१-११)

(२५४६-२५७८) कृष्ण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप ।

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।

वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम्

१

दोहेन गामुषं शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।

कोशं न पूर्णं वसुना न्यूष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम्

२

किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मां शिशयं त्वां शृणोमि ।

अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः

३

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।

अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् नासुन्वता सख्यं वृष्टि शूरः

४

धनं न स्पन्दं बहुलं यो अस्मै तीवान्त्सोमा आसुनोति प्रयस्वान् ।

तस्मै शत्रून्त्सुतुकान् प्रातरहो नि स्वप्टान् युवति हन्ति वृत्रम्

५

२५५०

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिक्षाय मघवा काममस्मे ।

आराच्चित् सन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम्

६

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्भः पुरुहूत तेन ।

अस्मे धेहि यवमद्वोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम्

७

प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन् तीवाः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम् ।
 नाहं दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम् ८
 उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले ।
 यो देवकामो न धना रुणद्धि समित् तं राया सृजति स्वधावान् ९
 गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
 वयं राजभिः प्रथमा धना न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १० २५५५
 बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
 इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३३ ॥ (ऋ० १०।४३।१-११) जगती, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वविदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूपत ।
 परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मयं न शुन्ध्युं मघवानमूतये १
 न घा त्वद्विगर्ष वेति मे मनस्त्वे इत कामं पुरुहूत शिश्रय ।
 राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते २
 विष्वदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।
 तस्येद्विमे प्रवणे सप्त सिंधवो वयो वर्धति वृषभस्य शुष्मिणः ३
 वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन् त्सोमास इन्द्रं मंदिनश्चमूपदः ।
 प्रैषामनीकं शर्वसा दविद्युतद्विदत् स्वर्गमनवे ज्योतिरार्यम् ४ २५६०
 कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत् ।
 न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शक्नोति पुराणो मघवन् नोत नूतनः ५
 विशांविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकेशद् वृषा ।
 यस्याहं शक्रः सर्वनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ६
 आपो न सिंधुमभि यत् समक्षरन् त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव हृदम् ।
 वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सार्दने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ७
 वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोद्विमा अपः ।
 स सुन्वते मघवा जीरदानवे ऽविन्दुज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ८
 उज्जायतां परशुज्योतिषा सह भूया क्रतस्य सुदुघा पुराणवत् ।
 वि रौचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्गं शुकं शुशुचीत् सत्पतिः ९ २५६५
 गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
 वयं राजभिः प्रथमा धना न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।

इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३४ ॥ (क्र० १०१४४।१-११) जगती, १-३, १०-११ त्रिष्टुप् ।

आ याव्विद्वः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।

प्रत्वक्षाणां अति विश्वा सहांस्य—पारणं महता वृष्णयेन १

सुष्ठामा रथः सुयमा हरीं ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गर्भस्तौ ।

शीर्भं राजन्तमुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पपुषे वृष्ण्यानि २

एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रवाहु—मुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् ।

प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्म—मेमस्मत्रा सधमादो वहन्तु ३ २५७०

एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतस—मूर्जः स्क्रमभं धरुण आ वृषायसे ।

ओजः कृष्व सं गृभाय त्व अप्य—सो यथा केनिपानामिनो वृधे ४

गर्भस्त्रस्मे वसून्त्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।

त्वमीशिषे सास्मिन्ना संत्सि बर्हिष्य—नाधूष्या तव पात्राणि धर्मणा ५

पृथक् प्रार्यन् प्रथमा देवहूतयो ऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।

न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुह—मीर्भैव ते न्यविशन्त केपयः ६

एवैवापागपरं संतु दूह्यो ऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुजे ।

इत्था ये प्रागुपरं संति दावने पुरुणि यत्र वयुनानि भोजना ७

गिरीरज्जान् रेजमानां आधारयद् द्यौः क्रन्ददुन्तरिक्षाणि कोपयत् ।

समीचीने धिपणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मदं उक्थानि शंसति ८ २५७५

इमं धिभमि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवच्छफारुजः ।

अस्मिन्सु ते सर्वने अस्त्वोक्थं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभंगः ९

गोभिष्टरमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।

वयं राजभिः प्रथमा धना—न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।

इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११ २५७८

॥ २३५ ॥ (क्र० १०१४८।१-११)

(२५७९-२६०७) वैकुण्ठ इंद्रः । जगती, ७, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पति—रहं धनानि सं जयामि शश्वतः ।

मां हवन्ते पितरं न जंतवो ऽहं दाशुषे वि भंजामि भोजनम् १

अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वण—स्त्रिताय गा अंजनयमहेरधि ।	
अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन् दधीचे मातरिष्वने	२ २५८०
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम् ।	
ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च	३
अहमेतं गव्ययमश्वयं पुशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम् ।	
पुरू सहस्रा नि शिक्षामि दाशुषे यन्मा सोमांस उक्थिनो अमन्दिपुः	४
अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन ।	
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिपाथन	५
अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वे—न्दं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत ।	
आह्वयमानां अव हन्मनाहनं हृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः	६
अभीः दमेकमेको अस्मि निष्पा—ळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति ।	
खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं मा निदन्ति शत्रवोऽनिद्राः	७ २५८१
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वमिष्कर—मिषं न वृत्रतुरं विश्व धारयम् ।	
यत् पर्णयघ्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि	८
प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद् गवामपे सख्या कृणुत द्विता ।	
द्विद्युं यदस्य समिधेषु मंहय—मादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम्	९
प्र नेमस्मिन् ददृशे सोमो अन्त—र्गोपा नेममाविरस्था कृणोति ।	
स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन् द्रुहस्तस्थौ बहुले वृद्धो अन्तः	१०
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम ।	
ते मा मद्राय शर्वसे ततक्षु—रपराजितमस्तृतमपाळ्हम्	११

॥ २३६ ॥ (क्र० १०४९।१-११) जगती; २, ११ त्रिष्टुप् ।

अहं दां गृणते पूर्यं वस्व—हं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।	
अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ऽयंज्वनः साक्षि विश्वस्मिन् भरं	१ २५९०
मां धुरिन्द्रं नाम देवतां द्विवश्च गमश्चापां च जन्तवः ।	
अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शर्वसे धृष्णवा ददे	२
अहमर्कं कवये शिक्षथं हर्थे—रहं कुत्समावमाभिरूतिभिः ।	
अहं शुष्णस्य श्रथिता वर्धयमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे	३
अहं पितेर्व वेतमूरमिष्टये तुष्टं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम् ।	
अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे	४

अहं रंधयं मृगयं श्रुतवर्णे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक् ।	
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पङ्क्तिभिरन्धयम्	५
अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् ।	
यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषम् दूरे पारे रजसो रोचनाकरम्	६ २५९५
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा ।	
यन्मा सावो मनुष आहं निर्णिजि ऋधक् कृषे दासं कृत्वयं हथैः	७
अहं सप्तहा नहुषो नहुण्टरः प्राश्नावयं शर्वसा त्वंशं यदुम् ।	
अहं न्यूनं सहसा सहस्करं नव वाधतो नवति च वक्षयम्	८
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्वं पृथिव्यां सीरा अधि ।	
अहमणीसि वि तिरामि सुक्रतुर्धुधा विदुं मनदे गातुमिष्टये	९
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्च न त्वष्टाधारयद्रुशत् ।	
स्पर्हं गवामूधःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्रयं सोममाशिरम्	१०
एवा देवा इन्द्रो विव्ये नृन् प्र च्यौत्तेन मघवा सत्यराधाः ।	
विश्वेत् ता ते हरिवः शचीवो ऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति	११ २६००

॥ २३७ ॥ (ऋ० १०।५०।१-७) जगती, ३, ४ अभिसारिणी, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र वो महे मन्दमानायान्धसो ऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे ।	
इन्द्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः	१
सो चिन्नु सख्या नयं इनः स्तुतश्चर्कृत्य इन्द्रो मावते नरं ।	
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्वभि शूर मंदसे	२
के ते नर इन्द्र ये ते इषे ये ते सुम्रं सधन्यमिर्यक्षान् ।	
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वासु पौंस्यं	३
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा महान् भुवो विश्वेषु सर्वनेषु यज्ञियः ।	
भुवो नृश्चर्यान्तो विश्वस्मिन् भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे	४
अवा नु कं ज्यायान् यज्वनसो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः ।	
असो नु कमजरो वर्धाश्च विश्वेदेता सर्वना तूतुमा कृषे	५ २६०५
एता विश्वा सर्वना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहसो यानि दधिपे ।	
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः	६
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च द्वावने ।	
प्र ते सुम्रस्य मनसा पथा भुवन् मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः	७ २६०७

॥ २३८ ॥ (क्र० १०१५४।१-६)

(२६०८-२६२१) बृहदुक्त्यो वामदेव्यः । त्रिष्टुप् ।

तां सु ते कीर्तिं मघवन् महित्वा यत् त्वां भीते रोदसी अह्वयेताम् ।
 प्रावो देवाँ आतिरो दासमोजः प्रजयै त्वस्यै यदशिक्ष इन्द्र १
 यदचरस्तन्वां वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु ।
 मायेत् सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से २
 क उ नु ते महिमनः समस्याऽस्मत पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः ।
 यन्मातरं च पितरं च साकमर्जनयथास्तन्वः स्वायाः ३ २६१०
 चत्वारिं ते असुर्याणि नामाऽदाभ्यानि महिषस्य सन्ति ।
 त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवश्चकथं ४
 त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि ।
 काममिन्मे मघवन् मा वि तारीस्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि वृता ५
 यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन्मधुना सं मधूनि ।
 अध प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्त्वादवाचि ६

॥ २३९ ॥ (क्र० १०१५५।१-८)

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत् त्वां भीते अह्वयेतां वयोधै ।
 उदस्तभ्राः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान् मघवन् तित्विषाणः १
 महत् तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग् येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।
 प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च २ २६१५
 आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ क्रतुशः सप्तसप्त ।
 चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चण्डे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ३
 यदुष औच्छ्रः प्रथमा विभानामर्जनयो येन पुष्टस्य पुष्टम् ।
 यत् ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ४
 विधुं दद्व्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
 देवस्य पश्य काव्यं महित्वा ऽद्या ममार स ह्यः समान ५
 शाकमेना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः ।
 यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघं वसुं स्पार्हमुत जेतोत दाता ६
 ऐभिर्द्वे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।
 ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह क्रतेकर्ममुदजायन्त देवाः ७ २६२०

युजा कर्माणि जनयन् विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट् ।
पीत्वी सोमस्य दिव आ वृधानः शूरो निर्युधार्धमद् दस्यून्

८ २६२१

॥ २४० ॥ (ऋ० १०।६०।५) (२६२२) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः गायत्री ।

इन्द्रं क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं हृशे

५ २६२२

॥ २४१ ॥ (ऋ० १०।७३।१-११)

(२६२३-२६३९) गौरिवातिः शाकल्यः । त्रिष्टुप् ।

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुरगं मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।

अवर्धन्निन्द्रं मरुतंश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्वनिष्ठा

१

द्रुहो निपता पृशनी चिदेवः पुरु शंसन वावृधुष्ट इन्द्रम् ।

अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः

२

कृष्वा ते पादा प्र यजिगा—स्यवर्धन् वाजा उत ये चिदत्र ।

त्वमिन्द्र सालावृकान्तसहस्रमासन् दधिषे अश्विना ववृत्याः

३

२६२५

समना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि ।

वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राः अश्विना शूर ददतुर्मघानि

४

मन्दमान क्रतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम् ।

आभिर्हि माया उप दस्युमागा—न्मिहः प्र तम्रा अवपत तमांसि

५

सनामाना चिद् ध्वस्यो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उपसो यथानः ।

कृष्वैरगच्छः सखिभिर्निकाभिः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ

६

त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान कर्षये विमायम् ।

त्वं चकर्थ मनवे स्योनान् पथो देवत्राअसेव यानान्

७

त्वमतानि पप्रिषे वि नामे—शान इन्द्र दधिषे गर्भस्तौ ।

अनु त्वा देवाः शर्वसा मद—न्त्युपरिबुधान् वनिनश्चकर्थ

८

२६३०

चक्रं यदस्याप्स्वा निपत्त—मुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।

पृथिव्यामतिपितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु

९

अश्वादियायेति यद्वद्व—न्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् ।

मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद

१०

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा कर्षयो नाधमानाः ।

अप ध्वान्तमूर्णुहि पृथिं चक्षु—र्मुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान्

११

॥ २४२ ॥ (ऋ० १०।७४।१-६)

वसूनां वा चकृष इयक्षन् धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः ।	
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः	१
हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निसत क्षाम् ।	
चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारोभिः कृणवन्त स्वैः	२ २६३५
इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृणवन्त रत्नम् ।	
धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि	३
आ तत् त इन्द्रायवः पनन्ताऽभि य ऊर्व गोमन्तं तितृत्सान् ।	
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्	४
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून ।	
ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नयं पुरुक्षुः	५
यद्वावानं पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः ।	
अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान् यदीमुश्मसि कर्तवे करत तत्	६ २६३९

॥ २४३ ॥ (ऋ० १०।८६।१-२३)

(२६४०-२६६२) इन्द्रः, ७, १३, २३ पेन्द्रो वृषाकपिः २-६, ९-१०, ११-१८ इन्द्राणी । पङ्क्तिः ।

वि हि सोतोःसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।	
यत्रामदद् वृषाकपि—रयः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१ २६४०
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।	
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	२
किमयं त्वां वृषाकपि—श्चकार हरितो मृगः ।	
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	३
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षासि ।	
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयु—विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	४
प्रिया तष्टानि मे कपि—व्यक्ता व्यदूषत ।	
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	५
न मत् स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।	
न मत् प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	६ २६४५
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।	
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	७

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुङ्गो पृथुजाघने ।

किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ८

अवीरोमिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।

उताहर्मस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ९

संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति ।

वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १०

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगा महमश्रवम् ।

नह्यस्या अपरं च न जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ११ २६५०

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेक्षते ।

यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १२

वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुपे ।

घसंत त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १३

उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचंति विंशतिम् ।

उताहर्मस्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १४

वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऽन्तर्युथेषु रोरुवत् ।

मंथस्तं इन्द्रं शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १५

न सेज्ञे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्याऽऽ कपृत् ।

सेदीज्ञे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १६ २६५५

न सेज्ञे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।

सेदीज्ञे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्याऽऽ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १७

अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।

असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १८

अयमेमि विचारकशद् विचिन्वन् दासमार्यम् ।

पिबामि पाकसुत्वन्नो ऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १९

धन्वं च यत् कृन्तत्रं च कति स्वित्र ता वि योजना ।

नेदीयसो वृषाकपे ऽस्तमेहिं गृह्णा उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २०

पुनरेहिं वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।

य एष स्वप्ननंशनो ऽस्तमेषिं पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २१ २६६०

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।

क्र१ स्य पुल्वघो मृगः कर्मगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २२

पशुर्हि नाम मानवी साकं संसूव विंशतिम् ।

मद्रं भलं त्यस्या अभूद् यस्या उदरमामयद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २३

२६६०

॥ २४४ ॥ (२६६३-२६७९) (क्र० १०।८९।१-४, ६-१८) रेणुवैश्वामित्रः । त्रिष्टुप ।

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य महा विबवाधे रोचना वि ज्मो अन्तान् ।

आ यः प्रपौ चर्षणीधृद्रोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा ?

स सूर्यः पर्युरु वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा ।

अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान २

समानमस्मा अनपावृद्वक्षमया दिवो असमं ब्रह्म नव्यम् ।

वि यः पृष्ठेव जनिमान्यय इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे ३

इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सगरस्य बुध्नात् ।

यो अक्षेणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक् तस्तम्भं पृथिवीमुत द्याम् ४

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः ।

यदस्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि ६

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदृन्न सिन्धून् ।

बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः ७

त्वं ह त्यह्णया इन्द्र धीरो ऽसिर्न पर्व वृजिना शृणासि ।

प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जनां मिनन्ति मित्रम् ८

प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र संगिरः प्र वरुणं मिनन्ति ।

न्यमित्रेषु वधमिन्द्र तुभ्रं वृषन् वृषाणमरुषं शिशिहि ९

२६७०

इन्द्रो विव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम् ।

इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिंराणां मिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः १०

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात् प्र समुद्रस्य धासेः ।

प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात् प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः ११

प्र शोशुचत्या उषसो न केतुं रसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।

अश्मेव विध्य विव आ सृजानस्तपिष्ठेन हर्षसा द्रोघमित्रान् १२

अन्वह मासा अन्विद्वानान्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।

अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो अजिहत जायमानम् १३

कहिं स्वित्र सा त इन्द्र चेत्यास—कुघस्य यद् भिनवो रक्ष एषत् ।		
मित्रकुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते	१४	२६७५
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततसे महि वार्धन्त ओगुणास इन्द्र ।		
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्तां अभि व्युः	१५	
पुरुणि हि त्वा सर्वना जनानां ब्रह्माणि मन्दन् गृणतामृषीणाम् ।		
इमामाघोषन्नवसा सहति तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ्	१६	
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।		
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत ते इन्द्र नूनम्	१७	
शुनं हुवम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातो ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१८	२६७९
॥२४५॥ (क्र० १०।९।१-१२) (२६८०-२६९१) वज्रो वैखानसः ।		
कं नश्चित्रमिषण्यसि चिकित्वान् पृथुग्मानं वाश्रं वावृधध्यै ।		
कत् तस्य दातु शर्वसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत्	१	२६८०
स हि द्युता विद्युता वेति सामं पृथुं योनिमसुरत्वा संसाद ।		
स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न क्रते सप्तथस्य मायाः	२	
स वाजं यातापदुष्पदा यन् त्ववर्षाता परि षदत् सनिष्यन् ।		
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घञ्जिह्वदेवाँ अभि वर्षसा भूत्	३	
स यद्वयोऽवनीर्गोष्वर्वा ऽऽ जुहोति प्रधन्यासु सन्निः ।		
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः	४	
स रुद्रेभिरशस्तवार क्रभ्वा हित्वी गर्यमारेअवद्य आगात् ।		
वश्रस्य मन्ये मिथुना विवर्वा अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन्	५	
स इद् दासं तुवीरवं पतिर्दन् पल्लक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत ।		
अस्य त्रितो न्वोर्जसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन्	६	२६८५
स द्रुहणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्शसानाय शरम् ।		
स नृतमो नहृषोऽस्मत् सुजातः पुरोऽभिनदर्हन् दस्युहत्यै	७	
सो अभ्रियो न यवस उदुन्यन् क्षयाय गातुं विदन्नो अस्मे ।		
उप यत् सीदुदिन्दुं शरीरैः श्येनोऽयोपाष्टिर्हन्ति दस्यून्	८	
स वार्धतः शवसानेभिरस्य कुत्साय शुष्णं कृपणे परादात् ।		
अयं कविर्मनयच्छस्यमान—मत्कं यो अस्य सन्तितो नृणाम्	९	

अयं दंशस्यन् नर्येभिरस्य वृस्मो देवेभिर्वरुणो न मायी ।		
अयं कनीनं क्रतुपा अवेद्यमिमीतारुं यश्चतुष्पात्	१०	
अस्य स्तोमैभिरौशिज क्रजिश्वा व्रजं द्रयद् वृषभेण पिप्राः ।		
सुत्वा यद् यजतो व्रीदयद्रीः पुरं इयानो अभि वर्षसा भृत	११	२६९०
एवा महो असुर वक्षथाय वस्रकः पद्भिरुप सर्पदिन्द्रम् ।		
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इयमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः	१२	२६९१

॥ २४६ ॥ (ऋ० १०।१०३।१-३, ५-११, १३)

(२६९२-२७०२) गेंद्रोऽप्रतिरथः । [१३ मरुतो वा] । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।		
संकन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः	१	
संकन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।		
तदिन्द्रेण जयत् तत् सहध्वं युधो न इषुहस्तेन वृष्णा	२	
स इषुहस्तैः स निषङ्गिर्भिवशी संघ्मं स युध इन्द्रो गणेन ।		
संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्धुः—ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता	३	
बलविजायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।		
अभिर्वीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्	५	२६९२
गोत्रभिर्दे गोविवं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रभूणन्तमोजसा ।		
इमं संजाता अनु वीरयध्व—मिन्द्रं सखायां अनु सं रभध्वम्	६	
अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो ऽद्वयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।		
दुश्च्यवनः पृतनाधाल्युधयोऽऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु	७	
इन्द्र आसां नेता बृहस्पति—र्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।		
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्	८	
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आकित्यानां मरुतां शर्धं उग्रम् ।		
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्	९	
उद्धर्षय मघवन्नायुधा—न्युत् सत्वंनां मामकानां मनांसि ।		
उद्धृत्रहन् वाजिनां वाजिना—न्युदथानां जयतां यन्तु घोषाः	१०	२७०३
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजे—वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।		
अस्माकं वीरा उत्तरे भव—न्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु	११	

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।

उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽनाधृष्या यथासंथ

१३

२७०२

॥ २४७ ॥ (ऋ० १०।१०४।१-११)

(२७०२-२७१३) अष्टको वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां यज्ञमुप याहि तूयम् ।

तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य

१

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।

मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वधस्व मदमुक्थवाहः

२

प्रोग्रां पीतिं वृष्णा इयमि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।

इन्द्र धेनाभिग्रिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्यां गृणानः

३

२७०५

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज क्रतुज्ञाः ।

प्रजार्वादिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गुणतः सधमाद्यासः

४

प्रणीतिमिष्टे हर्यश्व सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुरुचो जनासः ।

मंहिष्ठाभूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इन्द्र तव सूनृताभिः

५

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य ।

इन्द्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानङ्ग दाश्वो अस्यध्वरस्य प्रकेतः

६

सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।

उप भूपन्ति गिरो अप्रतीतमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त

७

सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पुर्भित ।

नवतिं स्रोत्या नव च सर्वन्ती देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः

८

२७१०

अपो महीरभिः शस्तेरमुश्रो ऽजागरास्वधि देव एकः ।

इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकथ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः

९

वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीदृ

आदयद् वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः

१०

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शृण्वन्तमग्रमतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

११

२७१३

॥ २४८ ॥ (ऋ० १०।१०५।१-११)

(२७१४-२७२४) कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा । उष्णिक्, १ गायत्री वा, २, ७ पिपीलिकमध्या, ११ त्रिष्टुप् ।

कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आव श्मशा रुधद्वाः । वीर्यं सतं वाताप्याय १

हरी यस्य सुयुजा विव्रता वे—रुवन्तानु शेपा । उभा रजी न केशिना पतिर्दन्	२	२७१५
अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो विभीवान् । शुभे यद्युयुजे तविषीवान्	३	
सचायोरिन्द्रश्चकृष आ उपांसः सपर्यन् । नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः	४	
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै । वनोति शिप्राभ्यां शिपिणीवान्	५	
प्रास्तौहृष्वौजा ऋग्वेभिस्ततश्च शूरः शर्वसा । ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा	६	
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यव हिरीमशो हिरीमान् । अरुतहनुरद्धतं न रजः	७	२७२०
अव नो वृजिना शिशी ह्युचा वनेमानृचः । नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे	८	
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी भूद् यज्ञस्य धूपु सन्नन् । सजूर्नावं स्वयंशसं सचायोः	९	
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भू—च्छ्रिये दर्विररेपाः । यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत	१०	
शतं वा यदस्युयं प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौद् दुर्मित्र इत्थास्तौत ।		
आवो यदस्युहत्ये कुत्सपुत्रं प्रावो यदस्युहत्ये कुत्सवत्सम्	११	२७२४

॥ २४९ ॥ (क्र० १०।१११।१-१०)

(२७२५-२७३४) वैरूपोऽष्टादंष्ट्र । शिष्टुष ।

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम् ।		
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः	१	२७२५
ऋतस्य हि सदर्सो धीतिरद्यौत् सं गर्हियो वृषभो गोभिरानट् ।		
उदतिष्ठत् तविषेणा रवेण महान्ति चित् सं विव्याचा रजांसि	२	
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद स हि जिष्णुः पथिकृत सूर्याय ।		
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्भोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः	३	
इन्द्रो म्हा महतो अर्णवस्य वतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः ।		
पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि द्वाधार यो धरुणं सत्यताता	४	
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद सर्वना हन्ति शुष्णम् ।		
महीं चिद् द्यामातनोत् सूर्येण चास्कम्भं चित् कम्भनेन स्कर्मीयान्	५	
वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्त—रदेवस्य शूशुवानस्य मायाः ।		
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्था—ऽथाभवो मघवन् ब्राह्मजाः	६	२७३०
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।		
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरन्द्वा नु वेद	७	
दूरं किल प्रथमा जग्मुरासा—मिन्द्रस्य याः प्रसवे ससुरारपः ।		
कं स्विदश्रं कं बुध्न आसा—मापो मध्यं कं वो नूनमन्तः	८	

सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविञ्चे जवेन ।

मुमुक्षमाणा उत या मुमुञ्चे ऽधेदेता न रमन्ते नितिकाः ९

संधीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन् त्सनाज्जार अरितः पूभिदासाम् ।

अस्तमा ते पार्थिवा वसू—न्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः १० २७३४

॥ २५० ॥ (ऋ० १०।११२।१-१०) (२७३५-२७४४) वैरूपो नभःप्रभेदनः ।

इन्द्र पिबं प्रतिक्रामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः ।

हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रू—नुक्थेभिष्टे वीर्याँ प्र ब्रवाम १ २७३५

यस्ते रथो मनसो जवीया—नेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि ।

तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः २

हर्षित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपास्तन्वं स्पर्शयस्व ।

अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः संधीचीनो मादयस्वा निषद्य ३

यस्य त्यत् ते महिमानं मदे—ष्विमे मही रोदसी नाविंविक्ताम् ।

तदोक्त आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ ४

यस्य शश्वत् पण्विँ इन्द्र शत्रू—ननानुकृत्या रण्या चकथ ।

स ते पुरंधिं तविंषीमियति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः ५

इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिब सोममेना शतक्रतो ।

पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदंभिर्हर्यन्ति देवाः ६ २७४०

वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते ।

अस्माकं ते मधुमत्तमानी—मा भुवन्त्सर्वना तेषु हर्य ७

प्र त इन्द्र पूर्याणि प्र नूनं वीर्याँ वोचं प्रथमा कृतानि ।

सतीनमन्युरश्रथायो आद्रिं सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ८

नि षु सीदं गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् ।

न क्रते त्वत् क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवाञ्चित्रमर्च ९

अभिख्या नो मघवन् नाधमानान् त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम् ।

रणं कृधि रणकृत् सत्यशृण्मा ऽभक्ते चिदा भजा राये अस्मान् १० २७४४

॥ २५१ ॥ (ऋ० १०।११३।१-१०) (२७४५-२७५४) वैरूपः शतप्रभेदनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम् ।

यदैत कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवधत १ २७४५

तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसां—ऽशुं दधन्वान् मधुनो वि रंशते ।	
देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभि—वृत्रं जघन्वा अभवद् वरेण्यः	२
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा युधये शंसमाविदे ।	
विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मना ऽवर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम्	३
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद् वीरो अभि पौंस्यं रणम् ।	
अवृश्चदद्विमव सस्यदः सृज—दस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम्	४
आदिन्द्रः सत्रा तविषीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत ।	
अवाभरद्भूषितो वज्रमायसं शेवं मित्राय वरुणाय द्वाशुषे	५
इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरिञ्चिनं ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवं ।	
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसा ऽपो बिभ्रतं तमसा परीवृतम्	६
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वा महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः ।	
ध्वान्तं तमोऽव दध्वसे हत इन्द्रो महा पूर्वहृतावपत्यत	७
विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि ते ऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया ।	
रुद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मना ऽग्निर्न जम्भैस्तृष्वन्नमावयत्	८
भूरि दक्षेभिर्वचनेभिर्ऋक्भिः सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत ।	
इन्द्रो धुनि च चुमुरि च कुम्भय—ऊहृद्दामनस्या गृणुते कुभीतये	९
त्वं पुरुण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मसै निवचनानि शंसन् ।	
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु ण उर्विया गाधमद्य	१०

२७५०

२७५४

॥ २५२ ॥ (ऋ० १०।११६।१-९)

(२७५५-२७६३) स्थारोऽग्नियुत स्थारोऽग्नियुपो वा । त्रिष्टुप् ।

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ ।	
पिब राये शर्वसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व	१
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्ये—न्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य ।	
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वा—ऽवाचीनो रेवते सौभगाय	२
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु ।	
ममत्तु येन वरिवश्चकथं ममत्तु येन निरिणासि शत्रून्	३
आ द्विर्वा अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः ।	
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व	४

२७५५

नि तिग्मानि भ्राशयन् भ्राश्या—न्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून् विगृहेषु वृश्च ५

व्ययं इन्द्र तनुहि श्रवांस्यो—जः स्थिरेव धन्वन्नोऽभिमातीः ।

अस्मद्गवावृधानः सहोभि—रनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ६

२७६०

इदं हविर्मघवन् तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहृणानो गृभाय ।

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ—ऽद्धीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य ७

अद्धीद्रिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम् ।

प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ८

प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियमिं सिंघाविव प्रेरयं नावमर्कैः ।

अया इव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनदा उद्भिदश्च ९

२७६३

॥ २५३ ॥ (ऋ० १०।१२०।१-२,)

(२७६४-२७७२) आथर्वणो बृहद्विवः ।

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।

सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रू—ननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः १

वावृधानः शर्वसा भूर्योजाः शत्रुर्वासाय भियसं दधाति ।

अव्यनच्च व्यनच्च सस्ति सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु २

२७६५

त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।

स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा स—मदः सु मधु मधुनाभि योधीः ३

इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदमदे अनुमदन्ति विप्राः ।

ओर्जीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् यातुधाना दुरेवाः ४

त्वया वयं शाश्वद्गहे रणेपु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।

चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ५

स्तुषेय्यं पुरुवर्षसमृभ्व—मिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम् ।

आ दर्षते शर्वसा सप्त दानून् प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ६

नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।

आ मातरां स्थापयसे जिगत्सू अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ७

२७७०

इमा ब्रह्म बृहद्विवो विवक्ती—न्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः ।

महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ८

एवा महान् बृहद्विबो अथर्वा ऽवोचत् स्वां तन्वमिन्द्रमिव ।

स्वसारो मातरिभ्वरीररिप्रा हिन्वन्ति च शर्वसा वर्धयन्ति च

९

२७७२

॥ २५४ ॥ (ऋ० १०।१३।१-३, ६-७) (२७७३-२७७७) सुकीर्तिः काशीवन ।

अप प्राच इन्द्र विश्वाँ अमित्रा—नपापाचो अभिभूते नुदस्व ।

अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन् मदेम

१

कुविदृङ्ग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।

इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः

२

नहि स्थूर्युतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।

गृष्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायंतो वृषणं वाजयन्तः

३

२७७५

इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।

बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम

६

तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्या—ऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।

स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराचिच्द् द्वेषः सनुतयुयोतु

७

२७७७

॥ २५५ ॥ (१०।१३।१-७)

(२७७८-२७८४) सुदाः पैजवनः । शकरी, ४-६ महापङ्क्ति, ७ त्रिष्टुप् ।

प्रो ष्वस्मै पुरोरथ—मिन्द्राय शूषमर्चत ।

अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा ऽस्माकं बोधि चोद्विता

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

१

त्वं सिधूँरवासृजो ऽधराचो अहन्नहिम् ।

अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

२

वि षु विश्वा अरातयो ऽर्यो नशंत नो धियः ।

अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिकृदिर्वसु

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

३

२७८०

यो न इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।

अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो असि सासहि—नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

४

यो न इन्द्रामिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः ।

अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

५

वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।

ऋतस्य नः पथा नया—ऽति विश्वानि दुरिता नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ६

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।

अच्छिद्रोधी पीपयद् यथा नः सहस्रधारा पर्यसा मही गौः

७ २७८४

॥ २५६ ॥ (ऋ० १०।१३४।१-७)

(२७८५-२७९१) १-६ (पूर्वार्धस्य) मान्धाता यौवनाश्वः, ६ (उत्तरार्धस्य)-७ गोधा ऋषिका ।

महापङ्क्ति, ७ पंक्तिः ।

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।

महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् १ २७८५

अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।

अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्मां आदिदेशति देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् २

अव त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् ।

शचीभिः शक्र धनुही—न्द्र विश्वाभिरुतिभि—देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ३

अव यत् त्वं शतक्रतु—विन्द्र विश्वानि धनुषे ।

रायिं न सुन्वते सचा सहस्रिणीभिरुतिभि—देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ४

अव स्वदा इवाभितो विष्वक् पतन्तु द्विद्यवः ।

दूर्वाया इव तंतवो व्यस्मदेतु दुर्मति—देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ५

दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं विभर्षि मंतुमः ।

पूर्वेण मघवन् पदा ऽजो वयां यथा यमो देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ६ २७९०

नर्किर्देवा मिनीमसि नक्रिरा योपयामसि मंत्रश्रुत्यं चरामसि ।

पक्षोभिरपिकक्षेभि—रत्राभि सं रभामहे

७ २७९१

॥ २५७ ॥ (ऋ० १०।१३८।१-६) (२७९२-२७९७) अङ्ग औरव । जगती ।

तव त्य ईन्द्र मुख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदार्दिरुर्वलम् ।

यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्त्रह्यश्च दुंसयः १

अवांसृजः प्रस्वः श्वश्रयो गिरी—नुदाज उस्मा अपिबो मधु प्रियम् ।

अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्यं ऋतजातया गिरा २

वि सूर्यो मध्ये अमुचद् रथं द्विवो विद् वासाय प्रतिमानमार्यः ।

हव्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकुवाँ ऋजिश्वना ३

अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्य—त्रिधीरदेवाँ अमृणतुयास्यः ।

मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शन्नैरशृणाद्विरुक्मता
अयुद्धसेनो बिम्बा विभिन्दता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।

४ २७९५

इन्द्रस्य वज्रादविभेदमिश्रथः प्राक्रामच्छुन्धूरजहादुषा अनः

५

एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम् ।

मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधि पिता

६ २७९७

॥ २५८ ॥ (क्र० १०१४४।१-६)

(२७९८-२८०३) तार्क्ष्यः सुपर्णः, यामायन ऊर्ध्वकृशना वा ।

गायत्री, २ बृहती, ५ सतोबृहती, ६ विष्टारपञ्क्तिः ।

अयं हि ते अमर्त्य इंदुरत्यो न पत्यते । दक्षो विश्वार्युर्वधसे

१

अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते ।

अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मद—मृभुर्न कृत्वयं मदम्

२

घृषुः श्येनाय कृत्वन् आसु स्वासु वंसंगः । अव दीधेदहीशुर्वः

३

यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत् । शतचक्रं योऽह्यो वर्तनिः

४

यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभर—दरुणं मानमन्धसः ।

एना वयो वि तार्यार्युर्जीवस एना जागार बंधुता

५

एवा तदिन्द्र इंदुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः ।

कृत्वा वयो वि तार्यार्युः सुक्रतो कृत्वायमस्मदा सुतः

६

॥ २५९ ॥ (क्र० १०१४७।१-५)

(२८०४-२८०८) सुवेदाः शैरीषिः । जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

श्रत् ते दधामि प्रथमार्य मन्यवे ऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः ।

उभे यत त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः

१

त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।

त्वामिन्नरो वृणते गर्विष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु

२

ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुमघम् ।

अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमहये धनं

३

स इन्द्र रायः सुभृतस्य चाकन—न्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति ।

त्वार्धो मघवन् वृश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः

४

त्वं शर्धीय महिना गृणान उरु कृधि मघवच्छग्धि रायः ।

त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता

५

२८०८

॥ २६० ॥ (ऋ० १०।१४।१-५) (२८०९-२८१३) पृथुर्वैन्यः । त्रिष्टुप् ।

सुप्वाणासं इन्द्रं स्तुमसि त्वा ससवांसश्च तुविनुम्ण वाजम् ।		
आ नो भर सुवितं यस्य चाकन् त्मना तनां सनुयाम त्वोताः	१	
क्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः ।		
गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु बिभ्रुमसि प्रसवणे न सोमम्	२	२८१०
अर्यो वा गिरो अर्भ्यर्च विद्रा नृपीणां विप्रः सुमतिं चक्रानः ।		
ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः	३	
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः ।		
तेभिर्भव सकृत्तुर्येषु चाकञ्चुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन्	४	
श्रुधी हवामिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्याकैः ।		
आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वा रुमिर्न निमैर्द्रवयन्त वक्ताः	५	२८१३

॥ २६१ ॥ (ऋ० १०।१५।१-५) (२८१४-२८१८) शासो मारुद्वाजः । अनुष्टुप् ।

शास इत्था महौ अस्य मित्रखादो अद्भुतः ।		
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन	१	
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।		
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः	२	२८१५
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।		
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्मित्रस्याभिदासतः	३	
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।		
यो अस्मां अभिदासत्यधरं गमया तमः	४	
अपेन्द्र द्विष्टो मनो ऽप जिज्यासतो वधम् ।		
वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वधम्	५	२८१८

॥ २६२ ॥ (ऋ० १०।१५।१-५) (२८१९-२८२३) देवजामय इन्द्रमातरः । गायत्री ।

ईङ्क्ष्वन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम्	१	
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन् वृषेदसि	२	२८२०
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमातिरः । उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा	३	
त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः । वज्रं शिशान ओजसा	४	
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः	५	२८२३

॥ २६३ ॥ (१०।१६०।१-५) (२८२४-२८२८) पूरणो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

तीव्रस्याभिर्वयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरीं इह मुञ्च ।
 इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन् तुभ्यमिमे सुतासः १
 तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वांस—स्त्वां गिरः श्वाज्या आ ह्वयन्ति ।
 इन्द्रेदमद्य सर्वं जुषाणो विश्वस्य विद्रां इह पाहि सोमम् २ १८२५
 य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकांमः सुनोति ।
 न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति ३
 अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम् ।
 निररन्तौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः ४
 अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ ।
 आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम ५ १८२८

॥ २६४ ॥ (ऋ० १०।१६७।१-२, ४) (२८२९-२८३१) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

तुभ्येदमिन्द्र परि पिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि ।
 त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः १
 स्वर्जितं महि मन्द्वानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुतो उप ।
 इमं नो यजमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे २ १८३०
 प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे ।
 सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दधे ४ १८३१

॥ २६५ ॥ (ऋ० १०।१७१।१-४) (२८३२-२८३५) इटो भार्गवः । गायत्री ।

त्वं त्यमिटतो रथ—मिन्द्र प्रावः सुतावतः । अशृणोः सोमिनो हवम् १
 त्वं मखस्य दोर्धतः शिरोऽव त्वचो भरः । अगच्छः सोमिनो गृहम् २
 त्वं त्यमिन्द्र मर्त्य—मास्त्रबुधाय वेन्यम् । मुहुः श्रधा मनस्यवे ३
 त्वं त्यमिन्द्र सूर्य पश्चा संतं पुरस्कृधि । देवानां चित् तिरो वशम् ४ १८३५

॥ २६६ ॥ (ऋ० १०।१७९।१-३)

(२८३६-२८३८) क्रमेण शिबिरौशीनरः, काशिराजः प्रतर्दनः, रौहिदश्वो वसुमनाः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

उत् तिष्ठताव पश्यते—न्द्रस्य भागमृत्वियम् ।
 यदि भ्रातो जुहोत न यद्यभ्रातो ममत्तनं १
 भ्रातं हविरो ध्विद्र प्र याहि जगाम सूरौ अध्वनो विमध्यम् ।
 परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न ब्राजपतिं चरंतम् २

श्रातं मन्य ऊर्ध्वनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तदृतं नवीयः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य दुधः पिबेन्द्र वज्रिन् पुरुकृज्जुषाणः

३

२८३८

॥ २६७ ॥ (ऋ० १०।१८०।१-३) (२८३९-२८४१) जय ऐन्द्रः । त्रिष्टुप् ।

प्र संसाहिषे पुरुहूत शत्रू—उज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु ।

इन्द्रा भर दक्षिणेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम्

१

मृगो न भीमः कुचरो गिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।

सूक्तं संशायं पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताळिह वि मृधो नुदस्व

२

२८४०

इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजो ऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।

अपानुदो जनममित्रयन्त—मुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम्

३

२८४१

॥ २६८ ॥ (ऋ० १०।४७।१-८) (२८४२-२८४९) सप्तगुगंगिरसः । [वैकुण्ठ इन्द्रः] ।

जग्भूमा ते दक्षिणमिद्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।

विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोना—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

१

स्वायुधं स्वर्वसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम् ।

चकृत्यं शंस्यं भूरिवार—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

२

सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्त—मुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र ।

श्रुतकषिमुग्रमभिमातिपाह—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

३

सनद्राजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।

दृस्युहनं पूभिदमिन्द्र सत्य—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

४

२८४५

अश्वावंतं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वार्जमिन्द्र ।

भद्रव्रातं विप्रवीरं स्वर्पा—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

५

प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति ।

य आङ्गिरसो नमसोपसद्यो ऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

६

वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः ।

हृविस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

७

यत् त्वा यामिं दुद्धि तन्न इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम् ।

अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीता—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

८

२८४९

॥ २६९ ॥ (ऋ० १०।११९।१-१३)

(२८५०-२८६२) ऐन्द्रो लवः । [आत्मा (इन्द्रः)] । गायत्री ।

इति वा इति मे मनो गामध्वं सनुयामिति

। कुवित सोमस्यापामिति

१

२८५०

प्र वाता इव दोधत उन्मा पीता अयंसत । कुवित सोमस्यापामिति	२
उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः । कुवित सोमस्यापामिति	३
उर्प मा मतिरस्थित वाश्वा पुत्रमिव प्रियम् । कुवित सोमस्यापामिति	४
अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित सोमस्यापामिति	५
नहि मे अक्षिपच्चना—ऽच्छान्तसुः पञ्च कुण्टयः । कुवित सोमस्यापामिति	६ २८५५
नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित सोमस्यापामिति	७
अभि द्यां महिना भुव—मभीऽमां पृथिवीं महीम् । कुवित सोमस्यापामिति	८
हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित सोमस्यापामिति	९
ओषमित् पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित सोमस्यापामिति	१०
द्विवि मे अन्यः पक्षोऽधो अन्यमचीकृपम् । कुवित सोमस्यापामिति	११ २८६०
अहमस्मि महामहो ऽभिनभ्यमुदीषितः । कुवित सोमस्यापामिति	१२
गृहो ग्राम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः । कुवित सोमस्यापामिति	१३ २८६२

॥ २७० ॥ (अथर्व० २।५।१-४)

(२८६३-२८६६) भृगुराथर्वणः । १ उपरिष्ठाच्चिद्वृहती, २ उपरिष्ठाद् विराड्वृहती,
३ विरादपथ्या वृहती, ४ जगती पुरोविराद् ।

इन्द्रं जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिभ्याम् ।	
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्चकानश्चारुमदाय	१
इन्द्रं जठरं नव्यो न पूणस्व मधोर्द्विवो न ।	
अस्य सुतस्य स्वर्णोप त्वा मदाः सुवाचो अगुः	२
इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो वृत्रं यो जघान यतीर्न ।	
बिभेद वलं भृगुर्न संसहे शत्रून्मदे सोमस्य	३ २८६५
आ त्वा विशन्तु सुतासं इन्द्र पूणस्व कुक्षी विद्धि शक्र धियेह्या नः ।	
श्रुधी हवं गिरी मे जुषस्वेन्द्र स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय	४ + २८६६

॥ २७१ ॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

(२८६७-२८७३) मृगारः । त्रिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उर्प मेम आगुः ।	
यो व्राशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः	१
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुर्यो दानवानां बलमारुरोज ।	
येन जिताः सिधवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः	२

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।

यस्याध्वरः सप्तहोता मर्दिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः ३

यस्य वशासं ऋषभासं उक्ष्णो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे ।

यस्मै शुक्रः पर्वते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः ४ १८७०

यस्य जुष्टं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्ठौ ।

यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः ५

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः ६

यः संग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।

स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः ७ १८७३

॥ २७२ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३) (२८७४-२८८६) कण्वः । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती । ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति १

अस्येन्द्रं कुमारस्य क्रिमीन्धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम २ १८७५

यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति । कृतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि ३

सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ । बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः ४

ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः । ये के च विश्वरूपास्तान्क्रिमीन्जम्भयामसि ५

उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा । दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन्क्रिमीन् + ६

येवाषासः कर्कषास एजत्काः शिपवित्नुकाः । दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिं—रुतादृष्टश्च हन्यताम् ७ १८८०

हता येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वान्नि मण्मषाकरं दृषद्वा खल्वौ इव ८

त्रिशीर्षाणं त्रिकुटुं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पुष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ९

अत्रिवद्रः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् । अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनण्म्यहं क्रिमीन् १०

हतो राजा क्रिमीणां—मुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिं—हतभ्राता हतस्वसा ११

हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः । अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः १२ १८८५

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् । भिनन्नचर्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् १३ १८८६

॥ २७३ ॥ (अथर्व० ६।३३।१-३) (२८८७-२८८९) जाटिकायनः । गायत्री, २ अनुष्टुप् ।

यस्येदमा रजो युज—स्तुजे जना वनं स्वर्गः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत १

नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शर्वः । पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शर्वः २

स नो ददातु तां रयि—मुरुं पिशङ्गसंहशम् । इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ३ १८८९

॥ २७४ ॥ (अथर्व० ६।६१।१-३) (२८९०-२८९५) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ त्रिष्टुप् ।

निर्हस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् ।

समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविन्द्रः

१ २८९०

आतन्वाना आयच्छन्तो ऽस्यन्तो ये च धावन्थ ।

निर्हस्ताः शत्रवः स्थनेन्द्रो वोऽद्य पराशरीत्

२

निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो ऽङ्गैर्पां म्लापयामसि ।

अथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भजामहे

३

॥ २७५ ॥ (अथर्व० ६।६१।१-३) अनुष्टुप् ।

परि वर्त्मानि सर्वत इन्द्रः पृषा च सम्रतुः । मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम् १

मूढा अमित्राश्चरता—शीर्षाण इवाहयः । तेषां वा अग्निमूढाना—मिन्द्रो हन्तु वरं यरम् २

ऐषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि । पराङ्गमित्र एष—त्वर्वाची गौरुपेषतु ३ २८९५

॥ २७६ ॥ (अथर्व० ६।७५।१-३) (२८९६-२८९८) कवन्ध । अनुष्टुप्, ३ पद्यदा जगती ।

निरमुं नुक् ओकसः सपत्नो यः पृतन्यति । नेर्वाध्येन हविषेन्द्र एनं पराशरीत् १

परमां तं परावत्—मिन्द्रो नुदतु वृत्रहा । यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः २

एतु तिस्रः परावत् एतु पञ्च जना अति ।

एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्या यावत्सूर्या असद्विवि ३ २८९८

॥ २७७ ॥ (अथर्व० ६।८२।१-३) (२८९९-२९०१) मग । अनुष्टुप् ।

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः । इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः १

येन सूर्या सावित्री—मश्विनोहतुः पथा । तेन मामववीन्द्रगो जायामा वहतादिति २ २९००

यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः । तेना जनीयते जायां मद्य धेहि शचीपते ३ २९०१

॥ २७८ ॥ (अथर्व० ६।९८।१-३) (२९०२-२९०४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ बृहतीगर्भास्तारपञ्क्तिः ।

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै ।

चकृत्य ईड्यो वन्द्यश्चो—पसद्यो नमस्यो भवेह

१

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्यु—स्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।

त्वं दैवीर्विश इमा वि राजा ऽऽयुष्मत्क्षत्रमजरं ते अस्तु

२

प्राच्या विशस्त्वमिन्द्रासि राजो—तोदीच्या विशो वृत्रहन्वृहोसि ।

यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं ते दक्षिणतो वृषभ एपि हव्यः

३

२९०४

॥ २७९ ॥ (अथर्व० ७।३१।१) (२९०५) भृग्वङ्गिराः । भुरिक त्रिष्टुप् ।

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छृण्वाभिर्मघवन्धूर जिन्व ।

यो नो द्वेष्ट्यधरः सस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु

१

२९०५

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।५।१-३, ५, ८-९)

(२९०६ २९११) अङ्गिराः (कितववधकामः) । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

यथा वृक्षमशनिर्विश्वाहा हन्यप्रति । एवाहमद्य कित्वा नक्षैर्वध्यासमप्रति १
 तुराणामतुराणां विशामवर्जुपीणाम् । समैतु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम २
 इदं अग्निं स्यावसुं नमोभिर्हि प्रसक्तो वि चयत्कृतं नः ।

रथैग्वि प्र भैर वाजयन्धिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम् ३ +
 अजैपं त्वा संनिखितमजैपमुत संरुधम् । अविं वृको यथा मथ देवा मथनामि ते कृतम् ५
 कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।

गोजिद्ध्यासमश्वजिद्धनंजयो हिरण्यजित ८ २९१०

अश्वाः फलवतीं युवं वृत्त गां क्षीरिणीमिव ।

सं मा कृतस्य धारया धनुः स्रात्रेव नह्यत ९ २९११

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ७।५।१) (२९१२) भृगुः । विराद् परोष्णिक् ।

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः । तेभिः सुमनया धेहि नो वसो १ २९१२

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ७।९।१) (२९१३) भृग्वङ्गिराः । गायत्री ।

इन्द्रेण मन्युना वयमभि प्याम पृतन्यतः । घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति १ २९१३

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १९।१३।१) (२९१४) अप्रतिरथः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य बाहू स्थविर्ग वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ परयिष्णू ।

तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितमसुराणां स्वर्यत १ × २९१४

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १९।१।२-३) (२९१५-२९१६) अथर्वी । त्रिष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्ति ।

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहे ऽनु गध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा ।

मा नः सेना अरुणीरुप गुर्विषूचीरिन्द्र द्रुहो वि नाशय २ ✽ २९१५

इन्द्रं स्थातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः ।

स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान्नो अस्तु ३ २९१६

॥ २८५ ॥ (अथर्व० २०।२।३) (२९१७) मृत्समदो मेघान्तिथिर्वा । आच्युष्णिक् ।

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्काद्वितुना सोमं पिबतु ३ २९१७

+ अथर्व० ७।५।४, ६-७, ऋ० १।१०।१४, १०।४२।९-१०, १०।४३-४४।१०, दै० [इन्द्रः] ८३०, २५५४-५५, २५६६, २५७७ ।

× अथर्व० १९।१३।२-७, ९-११, ऋ० १०।१०३।१-३, ५-११, १३, दै० [इन्द्र] २६९२-२७०२ ।

✽ अथर्व० १९।१।१, ४; ऋ० ८।६।११३, ६।४७।८; दै० [इन्द्रः] ५६०, २१०६ ।

॥ २८६ ॥ (वा० य० १।४)

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।

इन्द्रस्य त्वा भागः सोमेनातनचिम् विष्णो हव्यः रक्ष

४ २९१८

॥ २८७ ॥ (वा० य० ३।४९-५०)

पूर्णां दर्वि परां पत सुपूर्णा पुनरापत ।

वस्नेव विक्रीणावहा ऽइष्टमूर्जः शतक्रतो

४९ +

वेहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।

निहारं च हरांसि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा

५० २९२०

॥ २८८ ॥ (वा० य० ५।२८, ३०)

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतनं प्रजयां पशुभिर्भूयात् ।

घृतेन द्यावापृथिवी पूर्यथामिन्द्रस्य छेदिरासि विश्वजनस्य द्याया

२८ x

इन्द्रस्य सूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमासि वैश्वदेवमासि

३० २९२०

॥ २८९ ॥ (वा० य० ७।४, १४-१५, २५)

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् । उरुण्य राय ऽ एषो यजस्व ४

अच्छिन्नस्थ ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य दक्षितारः स्याम ।

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो ऽ अग्निः १४

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वास्तस्मा ऽ इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तृप्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाहुतीन् १५ २९२१

ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवनयामि ।

अथा न ऽ इन्द्र इद्विशो ऽ सपत्नाः समनसस्करंत २५ २९२२

॥ २९० ॥ (वा० य० ८।३२, ३६)

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ३२ ::

यस्मान्न जातः परो ऽ अन्यो ऽ अस्ति य ऽ आविवेश भुवनानि विश्वा ।

प्रजापतिः प्रजयां सः सराणस्त्रीणि ज्योतींश्च सचते स पंडुशी ३६ २९२८

+ वा० य० ३।५१-५२; ऋ० १।८२।२-३; अथर्व० ३।७।१०, १८।४।६१; दे० सं० [इन्द्रः] ९२६-२७ ।

x वा० य० ५।२९, ऋ० १।१०।१२; दे० सं० [इन्द्रः] ६९ ।

* वा० य० ७।२५; ऋ० १०।१७।३।६, अथर्व० ७।९४।१ ।

:: वा० य० ८।३३-३५; ऋ० १।१०।३, १।८४।२-३; साम० १०२९-३०, १३४६; दे० सं० [इन्द्रः] ६०, ९३८-३९ ।

॥ २९१ ॥ (वा० य० १२।६६)

निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचण्टे शचीभिः ।

देव ऽ इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्

६६ [] २९२९

॥ २९२ ॥ (वा० य० १३।१४)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपाः रेतोऽसि जिन्वति १४ + २९३०

॥ २९३ ॥ (वा० १७।२३, ३६, ४४-४५, ५१.६३)

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमृतये मनोजुवं वाजं ऽ अद्या हुवेम ।

स नो विश्वानि हव्नानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुर्कर्मा

२३ ×

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्रोऽपवाधमानः ।

प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्त्रस्माकमेध्यविता रथानाम्

३६ *

अमीषां चित्तं प्रतिहोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्ये परेहि ।

अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोके रन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्

४४

अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मस शिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ४५

इन्द्रे मं प्रतरां नय सजातानामसद्वशी । समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदाऽअसंत ५१ २९३५

वाजस्य मा प्रसव उद्ग्राभेणोदग्रभीत । अधा सपत्नानिन्द्रो मं निग्राभेणाधरोऽकः ६३ २९३६

॥ २९४ ॥ (वा० य० १९।३२, ८०-९५)

सुरावन्तं बार्हिपदः सुवीरं यज्ञं हिंन्वन्ति महिषा नमोभिः ।

दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः

३२ ::

ससिन् तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।

अश्विना यज्ञं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिपज्यन्

८०

तदस्य रूपममृतं शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः सः सराणाः ।

लोमानि शर्पैर्वहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य माः समभवन्न लाजाः

८१

तदश्विना भिपजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो ऽ अन्तरम् ।

अस्थि मज्जानं मासरेः कारो तरेण दधतो गवां त्वाचि

८२ २९४०

[] क्र० १०।१३९।३ अथर्व० १०।८।४२

+ क्र० ८४४।१६, साम० २७, १५३०, दे० सं० [अग्निः] १३५८ ।

× क्र० १०।८१।७

. वा० य० १७।३३-४५, ५१, ६३; क्र० १०।१०३।१-१२, ६।७५।१६, साम० १८४९-१८६१, १८६३; अथर्व० ३।२।५,

१९।६।८, ६।५।२, ६।१७।३, ८।५।२, १०।१३।२-११, दे० सं० [इन्द्रः] २६०, २-२७०१ ।

. वा० य० १९।७१; क्र० ८।१४।१३; साम० २११, अथर्व० २०।२९।३; दे० सं० [इन्द्रः] ३६६ ।

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।	
रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहृर्धूरुस्तसरं न वेमं	८३
पर्यसा शुक्रममृतं जनित्रः सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः ।	
अपामर्तिं दुर्मतिं बार्धमाना ऊर्वध्यं वार्तः सच्चं तद्वारात्	८४
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान ।	
यकृत् क्लोमानं वरुणो भिषज्यन् मर्तस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्	८५
आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।	
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभि—रासन्दी नाभिरुदरं न माता	८६
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभि—र्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो ऽ अन्तः ।	
प्लाशिव्यक्तः शतधारः ऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः	८७ २९४५
मुखः सदस्य शिरः ऽ इत सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्तसरस्वती ।	
चयं न पायुर्भिपगस्य वालो वस्तिर्न शेषो हरसा तरस्वी	८८
अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा शूतेन ।	
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते	८९
अविर्न मेषो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्थाः ऽ अमृतो ग्रहाभ्याम् ।	
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान	९०
इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्याः श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।	
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धुं जज्ञे मधुं सारघं मुखात्	९१
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोमं मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम ।	
केशा न शीर्षन्यशंसे श्रियै शिखा सि—हस्य लोमं त्विषिरिन्द्रियाणि	९२ २९५०
अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विना—त्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती ।	
इन्द्रस्य रूपः शतमानमायु—श्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः	९३
सरस्वती योन्यां गर्भमन्त—रश्विभ्यां प्रत्नी सुकृतं बिभर्ति ।	
अपाः रसेन वरुणो न साम्ने—न्द्रः श्रियै जनयन्नप्सु राजा	९४
तेजः पशूनाः हविरिन्द्रियावत् परिस्रुता पर्यसा सारघं मधु ।	
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोमः ऽ इन्दुः	९५ २९५३

॥२९५॥ (वा० य० २०।३१, ७१-७७, ८०, ९०)

अध्वर्यो ऽ अद्रिभिः सुतः सोमं पवित्रः ऽ आ नय । पुनाहीन्द्राय पातवे ३१ +

सविता वरुणो दधद् यजमानाय दाशुषे । आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ७१ २९५५
 वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् । सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमांशत ७२
 अश्विना गोभिरिन्द्रियं मश्वंभिर्वीर्यं बलम् । हविषेन्द्रः सरस्वती यजमानमवर्धयन् ७३
 ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा । सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोऽवत ७४
 ता भिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती । स वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ७५
 युवः सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ७६ २९६०
 पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावधुः काव्यैर्दुः सनाभिः ।

यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नाभिष्णक्

७७

अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ८०

अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा ।

इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुपन्ताः सोम्यं मधु

९० । २९६३

॥ २९६ ॥ (वा० य० २६।४-५, १०)

इन्द्र गोमन्निहा याहि पिबा सोमं शतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम्

४

इन्द्रा याहि वृत्रहन् पिबा सोमं शतक्रतो । गोमन्निर्ग्रावभिः सुतम्

५

२९६५

महँर ऽ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि १० ॥ २९६६

॥ २९७ ॥ (वा० य० २९।५७)

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमह्नुभिर्वावदीति ।

समश्वपणश्वरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु

५७ : २९६७

॥ २९८ ॥ (वा० य० ३३।२७, ७८-७९, ९०)

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं तं ऽ इत्था ।

सं पृच्छसे समराणः शुभान्नैर्वोचेस्तन्नां हरिवो यत्ते ऽ अस्मे

२७ \$

ब्रह्माणि मे मतयः शः सुतासः शुष्मं ऽ इयति प्रभृतो मे ऽ अद्रिः ।

आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो ऽ अच्छ

७८

॥ वा० य० २०।७६ ७७, क० १०।१३१।४-५, अथर्व० २०।१२५।४-५ ।

१ वा० य० २०।८७-८९, क० १।३।४-६, साम० ११।४६-४८, अथर्व० २०।८४।१-३, वै० सं० [इन्द्र.] १-३ ।

२ वा० य० २६।११।२३, क० ८।८।१, ३।३।५।६; साम० २३।६, ६८।५, अथर्व० २०।९।१, ४९।४, वै० सं० [इन्द्र.] ८९४, १३१७ ।

३ वा० य० २९।५७, क० ६।४७।३१; अथर्व० ६।१२।५।६ ।

४ वा० य० ३३।१८।२९; क० १।९।१, १०।१।१, १६।५।३-४, ९; ३।३।४।३; ३८, ४, ७।२३।४; ६।४, ८।४।५।९; ८।७२।१२-१३, १०।५।१।१, ७४।४; साम० ११।७, १८०, १३३९, १३५१, १४८०, १६०२; अथर्व० ४।८।३, ७।२३।४, २०।१।१.२, ७१।७, वै० सं० [इन्द्र.] २१८३; १३४८, २६०१, ४४४, ४८, १३०३, ८२८, २६३७, वै० सं० [अग्नि] १४३५-३६

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावोर ऽ अस्ति देवता विदानः ।

न जायमानो नशते न जातो यानि कर्ण्या कृणुहि प्रवृद्ध ७९ २९७०

चन्द्रमा ऽ अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कर्निकदत्त ९० २९७१

॥ २९९ ॥ (वा० य० ३५।१८)

परीमे गामनेपत पर्यग्निमहपत । देवेष्वकृत श्रवः क ऽ इमोर ऽ आ दधर्षति १८ × २९७२

॥ ३०० ॥ (वा० य० ३६।८)

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो ऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ८ २९७३

॥ ३०१ ॥ (वा० य० ३८।२६)

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितम्यिरे ।

तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् २६ * २९७४

॥ ३०२ ॥ (साम० १९०)

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात् । स नो वसून्वा भरात् १९० २९७५

॥ ३०३ ॥ (साम० १९६)

सदा व इन्द्रश्चकृषदा उपो नु स सपयन् । न देवो वृतः शूर इन्द्रः १९६ २९७६

॥ ३०४ ॥ (साम० २०९, २१२)

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः । अरं शक्र परमाणि २०९ २९७७

इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः । तेषां मत्स्व प्रभूवसो २१२ २९७८

॥ ३०५ ॥ (साम० २२६, २३१)

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः । हरिवान्सुतानां सखा २२६

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्मृष्णं तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौंस्यम् २३१ २९८०

॥ ३०६ ॥ (साम० २९४, २९८)

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।

मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः २९४

॥ वा० य० ३३।५९, ६३-६७, ९५-९६; ऋ० ३।३१६; ४७४, ४।३२।१, ८।८९।२-३; ९९।५-६, साम० १८१, २५७, ३११, १६३७-३८, दै० सं० [इन्द्रः] १२६५, १४१७, १६४५, २३८०-८१, २३८५-८६, २६२३ ।

× वा० य० ३५।१८, ऋ० १०।१५।५; अथर्व० ६।२८।२ ।

× वा० य० ३६।४-७, ऋ० ४।३१।१-३, ८।९३।१९; साम० १६२, ६८२-८४, १५८६; अथर्व० २०।१२४।१-३, दै० सं० [इन्द्रः] १६३०-३२, २४४८ ।

* वा० य० ३८।२६, अथर्व० ४।६।२

^{१ २ ३} यदिन्द्र ^{१ २} शासो ^{३ ३} अव्रतं ^{३ २ ३} च्यावया ^{१ २ ३ १ २} सदसस्पति ।

^{३ १ २ ३ १} अस्माकमंशुं ^{३ १ २} मघवन् ^{३ २ ३} पुरुस्पृहं ^{१ २} वसव्ये ^{१ २} अधि बहंय

२९८

२९८१

॥ ३०७ ॥ (साम० ३२७)

^{३ १} मेडिं ^{२ ३ १ २} न त्वा ^{३ १ २} वज्रिणं ^{३ १ २} भृष्टिमन्तं ^{३ १ २} पुरुधस्मानं ^{३ १ २} वृषभं ^{३ १ २} स्थिरप्सुम् ।

^{३ २ १} करोष्ययस्तरुपीर्दुवस्यु- ^{२ ३ १ २} रिन्द्र ^{२ ३ १ २} द्युक्षं ^{२ ३ १ २} वृत्रहणं ^{२ ३ १ २} गृणीषे

३२७

२९८३

॥ ३०८ ॥ (साम० ३३६, ३३७)

^{१ २} यो नो ^{३ १ २} वनुष्यन्नभिदाति ^{२ ३} मर्तं ^{१ २} उगणा ^{३ १ २} वा मन्यमानस्तुरो ^{३ १ २} वा ।

^{३ २} क्षिधी ^{३ १} युधा ^{२ ३} शवसा ^{३ १ २} वा तमिन्द्रा- ^{३ १} भी ^२ प्याम ^{३ १ २} वृषमणस्त्वोताः

३३६

^{२ ३ १ २} यं वृत्रेषु ^{३ २ ३} क्षितिय ^{१ २} स्पर्धमाना ^{३ २} यं युक्तेषु ^{३ १ २} तुरयन्तो ^{३ १ २} हवन्ते ।

^{१ २} यं शूरसातो ^{२ ३ १} यमपामुपज्म- ^{२ ३} न्यं ^{१ २} विप्रासो ^{३ १ २} वाजयन्तं ^{१ २} स इन्द्रः

३३७

२९८५

॥ ३०९ ॥ (साम० ४३८, १७६८, ४४४-४४६, १११३-१५)

^{३ २} एष ^{३ २ ३} ब्रह्मा ^{२ ३} य ^{१ २} कृत्विय ^{३ २} इन्द्रो ^{३ २} नाम ^{३ २} श्रुतो ^{३ २} गृणे

४३८

^{१ २} उप ^{३ १} प्रक्षे ^{२ ३} मधुमति ^{३ २} क्षियन्तः ^{१ २} पुष्येम ^{३ १} रायिं ^{३ १} धीमहे ^{३ १} त इन्द्र

४४४

^{१ २} अर्चन्त्यकं ^{३ १} मरुतः ^{३ १} स्वर्का ^{३ १} आ ^{३ १} स्तामति ^{३ १} श्रुतो ^{३ १} युवा ^{३ १} स इन्द्रः

४४५

^{२ ३} प्र व ^{३ १} इन्द्राय ^{३ १} वृत्रहन्तमाय ^{३ १} विप्राय ^{३ १} गार्थं ^{३ १} गायत ^{३ १} यं ^{३ १} जुजोषते

४४६

२९८९

॥ ३१० ॥ (साम० ४४९, ४५३, ४५६, १७७०)

^{२ ३} भगो न ^{३ २} चित्रो ^{३ १} अग्नि- ^{३ २}र्महोनां ^{३ २} दधाति ^{३ २} रत्नम्

४४९

२९९०

^{२ ३ २ ३} वि सुतयो ^{१ २} यथा ^{३ २} पथा ^{३ १} इन्द्र ^{३ १} त्वद्यन्तु ^{३ १} रातयः

४५३

^{२ ३} इन्द्रो ^{३ १} विश्वस्य ^{३ १} राजति

४५६

२९९२

॥ ३११ ॥ (साम० ५८८)

^{२ ३ २ ३} यस्येदमा ^{२ ३ १ २} रजोयुज- ^{३ २ ३}स्तुजे ^{३ २ ३} जने ^{३ २ ३} वनं ^{३ २ ३} स्वः । ^{३ २ ३} इन्द्रस्य ^{३ २ ३} रन्त्यं ^{३ २ ३} बृहत्

५८८

२९९३

॥ ३१२ ॥ (साम० ६२३-६२५)

^{१ २} हरी त ^{३ १ २} इन्द्र ^{३ १} श्मशू- ^{३ १}ण्युतो ^{३ १} ते ^{३ १} हरितौ ^{३ १} हरी ।

^{१ २} तं त्वा ^{३ १ २} स्तुवन्ति ^{३ १ २} कवयः ^{३ १ २} पुरुषासो ^{३ १ २} वनर्गवः

६२३

यद्वाचो^{२३ ३ १२ ३ २ ३ १ २ ३ २} हिरण्यस्य^{३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} यद्वा^{३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वर्चो^{३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} गवामुत ।

सत्यस्य^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ब्रह्मणो^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वर्चस्तेन^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मा^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} संसृजामसि^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ६२४

सहस्तन्न^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} इन्द्र^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} दन्द्र्योज^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ईशे^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ह्यस्य^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} महतो^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} विरिग्निन् ।

क्रतुं^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} न नृम्णं^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} स्थविरं^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} च वाजं^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वृत्रेषु^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शत्रून्सहना^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} कृधी नः^{२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ६२५ २९९६

॥ ३१३ ॥ (साम० ९५२-९५४)

इन्द्र^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} जुषस्व^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} प्र वहा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} याहि^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शूर^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} हरिह ।

पिबा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सुतस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मतिर्न^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मधोश्चकानश्चारुमदाय^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ९५२ २९९७

इन्द्र^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} जठरं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} नव्यं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} न पृणस्व^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मधोर्दिवो^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} न ।

अस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सुतस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} स्वाश्नीप^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} त्वा मदाः^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सुवाचो^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} अस्थुः^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ९५३

इन्द्रस्तुरापाणिमत्री^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} न जघान^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वृत्रं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} यतिर्न ।

बिभेद^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वलं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} भृगुर्न^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ससाहे^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शत्रून्मदे^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सोमस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ९५४ २९९९

॥ ३१४ ॥ (साम० १८६९)

इन्द्रस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} बाहू^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} स्थविरौ^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} युवाना^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वनाधृष्यौ^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सुप्रतीकावसह्यौ ।

तौ युञ्जीत^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} प्रथमौ^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} योग आगते^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} याभ्यां^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} जितमसुराणां^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सहो महत् १८६९ ३०००

॥ ३१५ ॥ (साम० १८७१)

अन्धा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} अमित्रा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} भवता^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शीर्षाणोऽह्य इव ।

तेषां^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} वो अग्निनुन्नाना^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मिन्द्रो^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} हन्तु वरंवरम् १८७१ ३००१

इन्द्रसहचारी-देवगणः ।

(१) इन्द्राग्नी ।

॥ ३१६ ॥ (क्र० ११२१।१-६)

(३००२-३००७) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

इहेन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} उप ह्वये^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} तयोरित्^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} स्तोमंमुश्मसि^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} । ता सोमं सोमपातेमा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} १

ता यज्ञेषु^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} प्र शंसते^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} इन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शुम्भता^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} नरः । ता गायत्रेषु^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} गायत^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} २

ता मित्रस्य^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} प्रशस्तय^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} इन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ता हवामहे^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} । सोमपा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सोमपीतये^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ३

उग्रा^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सन्ता^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} हवामह^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} उपेदं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सर्वनं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सुतम् । इन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} एह गच्छताम् ४ ३००५

ता महान्ता^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सदृस्पती^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} इन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} रक्ष उज्जतम् । अप्रजाः^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सन्त्वत्रिणः^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} ५

तेन^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} सत्येन^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} जागृत^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} मधिं^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} प्रचेतुर्ने^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} पदे । इन्द्राग्नी^{१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३} शर्म यच्छतम् ६ ३००७

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।१०८।१-१३)

(३००८-३०२८) कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वा—मभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

तेना यातं सरथं तस्थिवांसा—था सोमस्य पिबतं सुतस्य १

यावद्विदं भुवनं विश्वम—स्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम् ।

तावो अयं पातवे सोमो अ—स्त्वरमिन्द्राग्नी मनसे युवभ्याम् २

चक्राथे हि सध्य इन्द्रां भद्रं संधीचीना वृत्रहणा उत स्थः ।

ताविन्द्राग्नी सध्यश्चा निषद्या वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ३ ३०१०

समिद्धेवृग्निष्वाज्ञाना यतस्तुचा बर्हिर् तस्तिराणा ।

तीव्रेः सोमैः परिपिक्तेभिर्वा—गेन्द्राग्नी सोमनसाय यातम् ४

यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रूपाण्युत वृष्ण्यानि ।

या वो प्रत्नानि सग्या शिवानि तेभिः सोमस्य पिबतं सुतस्य ५

यदब्रवं प्रथमं वो वृष्णानोऽयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः ।

तां सत्यां श्रद्धामभ्या हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ६

यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे यद् ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा ।

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ७

यदिन्द्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद् द्रुह्युष्वनुषु पूरुषु स्थः ।

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ८ ३०१५

यदिन्द्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ९

यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यामवमस्यामुत स्थः ।

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य १०

यदिन्द्राग्नी द्विवि ष्ठो यत् पृथिव्यां यत् पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ११

यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।

अतः परि वृष्णावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य १२

एवेन्द्राग्नी पविवांसा सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः १३ ३०२०

॥ ३१८ ॥ (ऋ० १।१०९।१-८)

वि ह्यख्यं मनसा वस्य इच्छ—	इन्द्राग्नी ज्ञास उत वा सजातान् ।	
नान्या युवत् प्रमतिरस्ति मह्यं	स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम्	१
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां	विजामातुरुत वां घा स्यालात् ।	
अथा सोमस्य प्रयती युवभ्या—	मिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम्	२
मा च्छेन्न रश्मौरिति नार्धमानाः	पितृणां शक्तीरनुयच्छमानाः ।	
इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति	ता ह्यदीं धिषणाया उपस्थे	३
युवाभ्यां देवी धिषणा मदाये—	न्द्राग्नी सोममुशती सुनोति ।	
तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी	आ धावतं मधुना पृङ्गमप्सु	४
युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे	तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये ।	
तावासद्यां बर्हिषि यज्ञे अस्मिन्	प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य	५ ३०२५
प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु	प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च ।	
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा	प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या	६
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू	अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः ।	
इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य	येभिः सपित्वं पितरो न आसन्	७
पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्ता—	स्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—	मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	८ ३०२८

॥ ३१९ ॥ (ऋ० १।१३९।९) (३०२९) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

वृध्यङ् ह मे जनुषं पूर्वे अङ्गिराः प्रियमेधः कण्ठो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते मे पूर्वे मनुर्विदुः ।
तेषां देवेष्वायति—रस्माकं तेषु नार्भयः । तेषां पदेन मह्या नमे गिरे—न्द्राग्नी आ नभे गिरा ९, ३०२९

॥ ३२० ॥ (ऋ० ३।१२।१-९) (३०३०-३०३८) गायत्रिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं	गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेपिता	१ ३०३०
इन्द्राग्नी जरितुः सचा	यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम्	२
इन्द्रमग्निं कविच्छदा	यज्ञस्य जूत्या वृणे । ता सोमस्येह तुम्पताम्	३
तोशा वृत्रहणा हुवे	सजित्वानापर्राजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा	४
प्र वामचन्त्युक्थिनो	नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे	५
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो	वासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा	६ ३०३५
इन्द्राग्नी अपसस्पर्यु—	प प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पृथ्याऽनु	७
इन्द्राग्नी तविषाणि वां	सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम्	८

इन्द्राग्नी रोचना द्विवः परि वाजेषु भूपथः । तद् वां चेति प्र वीर्यम् ९ ३०३८

॥ ३२१ ॥ (ऋ० ५।२७।६)

(३०३९) त्रैवृष्णस्यरुणः, पौरुकुत्सस्त्रसदस्युः, भारतेऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिभौम इति केचित्) । अनुष्टुप् ।
इन्द्राग्नी शतदात्रय—श्वमेधे सुवीर्यम् । क्षत्रं धारयतं बृहद् द्विवि सूर्यमिवाजरम् ६ ३०३९

॥ ३२२ ॥ (ऋ० ५।८६।१-६) (३०४०-३०४५) भौमोऽत्रिः । अनुष्टुप्, ६ विराट्पूर्वा ।

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम् । हृच्छा चित् स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः १ ३०४०
या पृतनास् दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या । या पश्च चर्षणीरभी—न्द्राग्नी ता हवामहे २
तयोरिदमवच्छव—स्तिग्मा द्विद्युन्मघोनोः । प्रति दुणा गर्भस्त्यो—र्गवां वृत्रघ्न एषते ३
ता यामेषे रथाना—मिन्द्राग्नी हवामहे । पतीं तुरस्य राधसो विद्रांसा गिर्वणस्तमा ४
ता वृधन्तावनु द्यून् मतीय देवावदभा । अर्हन्ता चित् पुरो दधे—ऽशेव देवावर्षते ५
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः ।

ता सूरिषु श्रवां बृहद् रयिं गृणत्सु दिधृत—मिषं गृणत्सु दिधृतम् ६ ३०४५

॥ ३२३ ॥ (ऋ० ६।५२।१-१०) (३०४६-३०७०) वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । बृहती, ७-१० अनुष्टुप् ।

प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्याऽ यानि चक्रथुः ।

हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम् १

बलित्था महिमा वा—मिन्द्राग्नी पनिष्ठ आ ।

समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा २

ओक्निवांसा सुते सचां अश्वा सती इवादने ।

इन्द्रा न्वग्नी अवमेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ३

य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत् तत्पृतावृधा ।

जोषवाकं वदतः पञ्चहोपिणा न देवा भसर्थश्चन ४

इन्द्राग्नी को अस्य वां देवो मतीश्चिकेतति ।

विषूचो अश्वान् युयुजान ईयत् एकः समान आ रथे ५ ३०५०

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । हित्वी शिरो जिह्वया वावदुच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ६

इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः । मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्क्त गविंष्टिबु ७

इन्द्राग्नी तपन्ति मा—ऽद्या अर्यो अरातयः । अप द्वेषास्या कृतं युयुतं सूर्यादधि ८

इन्द्राग्नी युवोरपि वसुं दिव्यानि पार्थिवा । आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम् ९

इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीभिरा गत—मस्य सोमस्य पीतये १० ३०५५

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ६।६०।१-१५) गायत्री, १-३, १३ त्रिष्टुप्, १४ वृहती, १५ अनुष्टुप् ।

अथद् वृत्रमुत सनोति वाज—मिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् ।

इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता १

ता योधिष्ठमभि गा इन्द्र नून—मपः स्वरूपसो अग्न ऊळहाः ।

दिशः स्वरूपस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान् २

आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मै—रिन्द्र यात नमोभिरग्ने अर्वाक् ।

युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्रा—ऽग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः ३

ता हुवे ययोरिदं पग्ने विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः ४

उग्रा विघनिना मृधं इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळ्यात ईदृशे ५ ३०६०

हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पती । हतो विश्वा अप द्विषः ६

इन्द्राग्नी युवामिमे—ऽभि स्तोमा अनूपत । पिबतं शंभुवा सुतम् ७

या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषं नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ८

ताभिरा गच्छतं नरो—पेदं सर्वनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमपतये ९

तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया १० ३०६५

य इन्द्र आविवांसति सुम्नामिन्द्रस्य मर्त्यः । युम्नाय सुतरा अपः ११

ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळहवे १२

उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधंसः सह माद्वयध्वं ।

उभा दाताराविषां रयीणा—मुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् १३

आ नो गव्येभिरश्व्यै—र्वसव्यै—रूपं गच्छतम् ।

सखायौ देवौ सखायं शंभुवे—न्द्राग्नी ता हवामहे १४

इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः । वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधुं १५ ३०७०

॥ ३२५ ॥ (ऋ० ७।९३।१-८) (३०७१-३०९०) मंत्रावरुणिर्वसिष्ठ । त्रिष्टुप् ।

शुचिं नु स्तोमं नवजातमध्ये—न्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् ।

उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा १

ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा ।

क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरः पूङ्कं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः २

उपो ह यद् विदथं वाजिनो गु—र्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।

अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नस्ते ३

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान इडे रायिं यशसं पूर्वभाजम् ।	
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः	४
सं यन्मही मिथ्यती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते ।	
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन	५ ३०७५
इमाम् पु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सोमनसाय यातम् ।	
नू चिद्धि परिमन्नाथे अस्मान्ना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः	६
सो अग्न एना नमसा समिद्धो ऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः ।	
यत् सीमागंश्चकृमा तत् सु मृळ तदयमादितिः शिश्रथन्तु	७
एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।	
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	८

॥ ३२६ ॥ (क्र० ७।९४।१-१२) गायत्री, १२ अनुष्टुप् ।

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्यस्तुतिः	। अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि	१
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः	। ईशाना पिप्यतं धियः	२ ३०८०
मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिःस्तये	। मा नो रीरधतं निदे	३
इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिभेरयामहे	। धिया धेना अवस्यवः	४
ता हि शश्वन्त इळत इत्था विप्रांस ऊतये	। सबाधो वाजसातये	५
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वतो हवामहे	। मेधसाता सनिप्यवः	६
इन्द्राग्नी अवसा गतमस्मभ्यं चर्षणीसहा	। मा नो दुःशंस ईशत	७ ३०८५
मा कस्य नो अररुपो धूर्तिः प्रणङ्गार्थस्य	। इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम्	८
गोमद्भिरण्यवद् वसु यद् वामश्वावदीमहे	। इन्द्राग्नी तद् वनेमहि	९
यत् सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजांहवुः	। सप्तीवन्ता सपर्यवः	१०
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा	। आङ्गपैराविवांसतः	११
ताविद् दुःशंस मर्त्य दुर्विद्वांस रक्षस्विनम् । आभोगं हन्मना हतमुकुधिं हन्मना हतम्		१२ ३०९०

॥ ३२७ ॥ (क्र० ८।३८।१-१०) (३०९१-३१००) श्यावाश्व आत्रेयः । गायत्री ।

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	१
तोशासा रथ्यावाना वृत्रहणार्पराजिता । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	२
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	३
जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इन्द्राग्नी आ गतं नरा	४
इमा जुषेथां सर्वना येभिर्हव्यान्यूहथुः । इन्द्राग्नी आ गतं नरा	५ ३०९५

इमां गायत्रवर्तनि जुपेथां सुष्टुतिं मम	। इन्द्राग्नी आ गतं नरा	६
प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जन्यावसू	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	७
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ऽत्रीणां शृणुतं हवम्	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	८
एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	९
आहं सरस्वतीवतो—रिन्द्राग्न्योरवो वृणे	। याभ्यां गायत्रमूच्यते	१० ३१००

॥ ३२८ ॥ (क्र० ८१४०१-१२)

(३१०१-३११२) नाभाकः काण्वः । महापंक्तिः, २ शकरी, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम् ।

येन हृत्वा समस्वा वीळु चित साहिपीमह्य—ग्निरवनेव वात इ—न्नभन्तामन्यके समे १
नहि वां ववयामहे ऽथेन्द्रमिदं यजामहे शर्विष्ठं नृणां नरम् ।

स नः कदा चिद्वता गमदा वार्जसातये गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे २
ता हि मध्यं भराणा—मिन्द्राग्नी अधिक्षितः ।

ता उ कवित्वना कवी पृच्छयमाना सखीयते सं धीतमश्रुतं नरा नभन्तामन्यके समे ३
अभ्यर्च नभाकव—दिन्द्राग्नी यजसा गिरा ।

ययोर्विश्वमिदं जग—दियं द्यौः पृथिवी मह्यु—पस्थे बिभृतो वसु नभन्तामन्यके समे ४
प्र ब्रह्माणि नभाकव—दिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत ।

या सप्तबुधमर्णवं जिह्वारमपोर्णुत इन्द्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे ५ ३१०५
अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुप्तिता—मोजो दासस्य दम्भय ।

वयं तदस्य संभृतं वस्विद्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे ६
यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना गिरा ।

अस्माकैभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ७
या नु श्वेताववो द्विव उच्चरात उप द्युभिः ।

इन्द्राग्न्योरनु व्रत—मुहाना यन्ति सिधवो यान्त्सीं बंधादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ८
पूर्वीष्टं इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो हिन्वस्य हरिवः ।

वस्वो वीरस्यापृचो या नु सार्धन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ९
तं शिशीता सुवृक्तिभि—स्त्वेषं सत्वानमृगमियम् ।

उतो नु चिद् य ओजसा शृष्णास्याण्डानि भेदति जेषत् स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे १० ३११०
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम् ।

उतो नु चिद् य ओहत आण्डा शृष्णस्य भेद—त्यजेः स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ११

एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मंधातुवदङ्गिरस्वदवाचि ।

त्रिधातुना शर्मणा पातमस्मान् वयं स्याम पतयो रयीणाम्

१२ ३११२

॥ ३२९ ॥ (ऋ० १०।१६।११-५)

(३११३-३११७) प्राजापत्यो यक्षमनाशनः, राजयक्षमघ्नं वा । त्रिष्टुप्, ५ अनुष्टुप् ।

मुश्चामि त्वा हविषा जीवनाय क—मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।

ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्

१

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।

तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्था—दस्पर्षमेनं शतशारदाय

२

सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहर्षमेनम् ।

शतं यथेमं शरदो नयाती—दो विश्वस्य दुरितस्य पारम्

३

३११५

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान् ।

शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः

४

आहार्षि त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ५ ३११७

॥ ३३० ॥ (वा० य० १४।११)

इन्द्राग्नी अव्यथमाना—मिष्टकां दृ० हतं युवम् । पृष्ठेन द्यावापृथिवी अंतरिक्षं च विवाधसे ११+३११८

॥ ३३१ ॥ (वा० य० १७।६४)

उद्गमं च निग्राभं च ब्रह्म देवा अवीवृधन् । अधा सपत्नानिन्द्राग्नी मे विपूचीनान्व्यस्यताम् ६४+३११९

॥ ३३२ ॥ (अथर्व० ७।९७।१-८)

(३१२०-३१२७) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ५ त्रिपदार्पी भुरिग्गायत्री, ६ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती,

७ त्रिपदा साम्नी भुरिग्जगती, ८ उपरिग्राद्बृहती ।

यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश्चिकित्वन्नवृणीमहीह ।

ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम्

१

३१२०

समिन्द्र नो मनसा नेप गोभिः सं सूरिभिर्हरिवृत्सं स्वस्त्या ।

सं ब्रह्मणा देवाहितं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञिर्यानाम्

२

यानावह उशतो देव देवां—स्तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे ।

जक्षिवांसः पपिवांसो मधून्य—स्मै धत्त वसवो वसूनि

३

+ वा० य० ३।१३; ७।३१, ऋ० ६।६०।१३; ३।१२।१, सा० ६६९, दे० सं० [इन्द्रः] ३०३३, ३०७१ ।

× वा० य० ३३।६१, ७६, ९३; ऋ० ६।५९।६; ६।६०।५; ७।९४।११; सा० ८५४, २८१; दे० सं० [इन्द्रः] ३०५४, ३०६३, ३०९२ ।

सुगा वो देवाः सदेना अकर्म य आजग्म सर्वने मा जुषाणाः ।

वहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि वसुं घर्म दिवमा रोहतानु ४

यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ । स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ५

एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः । सुवीर्यः स्वाहा ६ ३१२५

वषट्कुतेभ्यो वषट्कुतेभ्यः । देवा गातुषिदो गातुं विच्चा गातुमित ७

मनेसस्पत इमं नो द्विवि देवेषु यज्ञम् ।

स्वाहा द्विवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा ८ ३१२७

॥३३३॥ (अथर्व० ६।१०४।१-३) (३१२८-३१३०) प्रशोचनः । ३ सोम इन्द्रश्च । अनुष्टुप् ।

आदानेन सदानेना—अमित्राना द्यामसि । अपाना ये चैषां प्राणा असुनासून्तस्मच्छिदन् १

इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम् । अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्र आ द्या त्वम् २

ऐनान्द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ ।

इन्द्रो मरुत्वानादानममित्रेभ्यः कृणोतु नः ३ ३१३०

॥३३४॥ (अथर्व० ७।११०।१-३) (३१३१-३१३३) भृगुः । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

अग्र इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति । उभा हि वृत्रहन्तमा १

याभ्यामजयन्स्वर्ग्य एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा ।

प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् २

उप त्वा देवो अग्रभी—चमसेन बृहस्पतिः ।

इन्द्रं गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते ३ ३१३३

(२) इन्द्रावरुणौ ।

॥ ३३५ ॥ (ऋ० १।१७।१-९) ।

(३१३४-३१४२) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री, ४-५ पादनिचृत् (५ हस्यिसी वा) गायत्री ।

इन्द्रावरुणयोरुहं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे १

गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः । धर्तारा चर्षणीनाम् २ ३१३५

अनुकामं तर्पयेथा—मिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ३

युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम् । भूयाम वाजदात्राम् ४

इन्द्रः सहस्रदात्रां वरुणः शंस्यानाम् । क्रतुर्भवत्युक्थ्यः ५

तयोरिद्वसा वयं सनेम नि च धीमहि । स्यादुत प्ररेचनम् ६

इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय रार्धसे । अस्मान्सु जिग्युषस्कृतम् ७ ३१४०

इन्द्रावरुण नू नुं वां सिपांसन्तीषु धीष्वा । अस्मभ्यं शर्मं यच्छतम् ८
प्र वामश्रोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामुधार्थे सधस्तुतिम् ९

३१४९

॥ ३३६ ॥ (ऋ० ३।६२।१-३)

(३१४३-३१४३) गाथिनो विश्वामित्रः । १-३ त्रिष्टुप् ।

इमा उ वां भूमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् ।
क्रत्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः १

अयमु वां पुरुतमो रयीय—उच्छ्वन्नममवसे जोहवीति ।
सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्धि—र्द्धिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे २

अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु प्या—दुस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः ।
अस्मान् वरून्त्रीः शरणैरव—न्त्वस्मान् होत्रा भारती दक्षिणाभिः ३

३१४५

॥ ३३७ ॥ (ऋ० ४।४१।१-११)

(३१४६-३१५६) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रा को वां वरुणा सुम्रमाप स्तोमो हविष्मां अमृतो न होता ।
यो वां हृदि क्रतुमां अस्मदुक्तः पस्पशीदिन्द्रावरुणा नमस्वान् १

इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान् ।
स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रू—नवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे २

इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्टे—त्था नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता ।
यद्री सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसां मादयते ३

इन्द्रा युवं वरुणा द्विद्युमस्मि—न्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्ठं वज्रम् ।
यो नो दुरेवो वृकतिर्दुभीति—स्तस्मिन् मिमाथामभिभूत्योर्जः ४

इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः ।
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ५

३१५०

तोके हिते तनय उर्वरासु सूरौ दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।
इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्याता—मवोभिर्दुस्मा परितक्म्यायाम् ६

युवामिन्द्रयवसे पूर्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी ।
वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरैव शंभू ७

ता वां धियोऽवसे वाजयन्ती—राजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू ।
श्रिये न गाव उप सोममस्थु—रिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ८

इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अगमन्नुप द्रविणमिच्छमानाः ।
उपेमस्थुर्जोष्टार इव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः ९

अश्वस्य तमना रथस्य पुष्टे—नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।

ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभि—रस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम्

१०

३१५५

आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ ।

यद् विद्यवः पृतनासु प्रकीळान् तस्य वां स्याम सनितारं आजेः

११

३१५६

॥ ३३८ ॥ (ऋ० ४।४२।७-१०)

(३१५७-३१६०) त्रसदस्युः पौरुकुन्त्यः । त्रिष्टुप् ।

विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः ।

त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्

७

अस्माकमत्र पितरस्त आसन् त्सत ऋषयो दौर्गहे बध्यमानि ।

त आर्यजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्

८

पुरुकुत्सानी हि वामदाश—न्द्रव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम्

९

राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।

तां धेनुभिर्न्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्

१०

३१६०

॥ ३३९ ॥ (ऋ० ६।६८।१-११) (३५६१-३१७१) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ९-१० जगती ।

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्वे ।

आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुमार्य मह आववर्तत

१

ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम् ।

मघोनां मंहिष्ठा तुविशुम् क्रतेन वृत्रतुरा सर्वसेना

२

ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चक्राना ।

वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः

३

ग्राश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः ।

प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतगुर्वी

४

स इत् सुदानुः स्ववाँ क्रतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन् ।

इषा स द्विषस्तेर्दे वास्वान् वंसद् रयिं रयिवर्तश्च जनान्

५

३१६५

यं युवं वृश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।

अस्मे स इन्द्रावरुणावपि प्यात् प्र यो मनक्ति वनुषामशस्तीः

६

उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः प्यात् ।

येषां शुम्भः पृतनासु साह्वान् प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः

७

नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पूङ्गं रयिं सौश्रवसाय देवा ।		
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धो ऽपो न नावा दुरिता तरेम	८	
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रिय—मर्च देवाय वरुणाय सप्रथः ।		
अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा	९	
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता ।		
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये	१०	३१७०
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णाः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।		
इदं वामन्धः परिपिक्तमस्मे आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम्	११	३१७१

॥३४०॥ (ऋ० ७।८२।१-१०) (३१७२-३२०१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।		
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु द्रुह्यः	१	
सम्राळ्यः स्वराळ्य उच्यते वा महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू ।		
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः	२	
अन्वपां खान्यतुन्तमोजसा सूर्यमैरयतं विवि प्रभुम् ।		
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनो ऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः	३	
युवामिद् युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः ।		
ईशाना वस्व उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवां हवामहे	४	३१७५
इन्द्रावरुणा यद्विमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्मना ।		
क्षमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते	५	
महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत् स्वम् ।		
अजामिमन्यः श्रथयन्तमार्तिरद् दुभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः	६	
न तमहो न दुरितानि मर्त्य—मिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन ।		
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिहृतिः	७	
अवाङ्मना दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोपथः ।		
युवोर्हि सरुयमुत वा यदाप्यं मर्डीकमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम्	८	
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्ट्योजसा ।		
यद् वा हवन्त उभये अध स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु	९	३१८०
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।		
अवधं ज्योतिरदितेऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०	

• ॥३४१॥ (ऋ० ७।८३।१-१०)

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुपशीवो ययुः ।	
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम्	१
यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं च न प्रियम् ।	
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्हश्-स्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम्	२
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा अहक्षते-न्द्रावरुणा द्विवि घोष आरुहत ।	
अस्थुर्जनानामुप मामरातयो ऽर्वागवसा हवनश्रुता गतम्	३
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।	
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत् पुरोहितिः	४
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्यर्यो वनुषामरातयः ।	
युवं हि वस्व उभयस्य राजथो ऽध स्मा नोऽवतं पार्यं द्विवि	५
युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।	
यत्र राजभिर्दशभिर्निवाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह	६
दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।	
सत्या नृणामन्नसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन् देवहूतिषु	७
काशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।	
श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपदिनो धिया धीवन्तो असंपन्त तृत्सवः	८
वृत्राण्यन्यः समिधेषु जिघ्रते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।	
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिर्-रस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम्	९
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।	
अवधं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०

॥ ३४२ ॥ (ऋ० ७।८४।१-५) त्रिष्टुप् ।

आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।	
प्र वां घृताचीं बाह्वोर्दधाना परि त्मना विषुरुपा जिगाति	१
युवो सष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।	
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम्	२
कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।	
उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम्	३
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।	
प्र य आदित्यो अनृता मिना-त्यमिता शूरो दयते वसूनि	४

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ३४३ ॥ (ऋ० ७।८।५।१-५)

पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।
घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्त्रुरूप्यतामभीके १
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।
युवं तां इन्द्रावरुणावमित्रान् हतं पराचः शर्वा विषूचः २
आर्षश्चिद्वि स्वयंशसः सदाःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।
कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ३
स सुक्रतुर्कृतचिदस्तु होता य आदित्य शर्वसा वां नमस्वान् ।
आववर्तदवसे वां हविष्मान्नसदित स सुविताय प्रयस्वान् ४
इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ३४४ ॥ (ऋ० ८।५९।१-७)

(३२०२-३२०८) सुपर्णः काण्वः । जगती ।

इमानि वां भागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् ।
यज्ञेयज्ञे ह सर्वना भुरण्यथो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षथः १
निष्पिध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।
या सिस्रतु रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते २
सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्वं ऊर्मिं दुहते सप्त वाणीः ।
ताभिर्दुर्वाश्वासमवतं शुभस्पती यो वामदधो अभि पाति चित्तिभिः ३
घृतप्रपः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन क्रतस्य ।
या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम् ४
अवोचाम महते सौमगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् ।
अस्मान् त्विन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती ५
इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे ।
यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम् ६
इन्द्रावरुणा सौमनसमहंसं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।
प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः ७

३२००

३२०१

३२०५

३२०८

॥ ३४५ ॥ (वा० य० ८।३७) त्रिष्टुप् यजुन्ता ।

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रऽएतम् ।

तयोरुहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ॥ ३७ ॥ ३०९

(३) इन्द्र-वायू ।

॥ ३४६ ॥ (ऋ० १।२।४-६) (३२१०-३२१२) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् ।

इन्द्रवो वामुशान्ति हि

४

३२१०

वायुविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू ।

तावा यातमुप द्रवत्

५

वायुविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम् ।

मक्षिवत्था धिया नरा

६

३२१२

॥ ३४७ ॥ (ऋ० १।२।२-३) (३२१३-३२१४) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।

अस्य सोमस्य पीतये

२

३२१३

इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये ।

सहस्राक्षा धियस्पती

३

३२१४

॥ ३४८ ॥ (ऋ० १।२।५ ४-८) (३२१५ ३२१९) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः, ७-८ अष्टिः ।

आ वां रथो नियुत्वान् वक्षदक्से ऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो हव्यानि वीतये ।

पिबन्तं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् ।

वायवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम्

४

३२१५

आ वां धियो ववृत्युरध्वरा उपेममिन्दुं मर्मजन्त वाजिनमाशुमत्यं न वाजिनम् ।

तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या ।

इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम्

५

इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत ।

एते वामभ्यंसृक्षत तिरः पवित्रमाश्वः ।

युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया

६

अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

वि सूनृता ददंशे रीयते घृतमा पूर्णया नियुता याथो अध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ७

अत्राह तद् वह्ने मध्व आहुतिं यमश्चत्थमुपतिष्ठन्त जायवो ऽस्मे ते सन्तु जायवः ।
साकं गावः सुवते पच्यते यवो न ते वायु उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ८ ३२१९

॥ ३४९ ॥ (क्र० २।४१।३)

(३२२०) गृन्समदः शौनकः । गायत्री ।

शुक्रस्याद्य गवांशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ३ ३२२०

॥ ३५० ॥ (क्र० ४।४६।२-७)

(३२२१-३२२९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वा इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् २
आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ३
रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरम् । आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ४
रथेन पृथुपार्जसा द्वाश्वांसमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ५
इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोषसा । पिबतं द्वाशुषो गृहे ६ ३२२५
इह प्रयानमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ७

॥ ३५१ ॥ (क्र० ४।४७।२-४) अनुष्टुप् ।

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिर्महथः ।
युवां हि यन्तीन्द्रवो निम्नमापो न सध्वक् २
वायुविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ३
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो द्वाशुषे नरा ।
अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम् ४ ३२२९

॥ ३५२ ॥ (क्र० ५।५१।४, ६-७)

(३२३०-३२३२) स्वस्त्यात्रेयः । गायत्री, (६, ७) उष्णिक् ।

अयं सोमश्चमू सुतो ऽमत्रे परि पिच्यते । प्रिय इन्द्राय वायवे ४ ३२३०
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिर्महथः । ताश्नुषेथामरेपसावभि प्रयः ६
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः । निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ७ ३२३२

॥ ३५३ ॥ (क्र० ७।९०।५-७) (३२३३-३२४२) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशानयोर्भि पृक्षः सचन्ते ५ ३२३३
ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुर्वद्विर्वीरैः पृतनासु सद्युः ६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२३५

॥ ३५४ ॥ (ऋ० ७।९।२, ४-७)

उशन्ता दूता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः ।

इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वामिना माङ्गीकमीद्वे सुवितं च नव्यम्

२

यावत् तरस्तन्वोऽ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः ।

शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदातं बर्हिरेदम्

४

नियुवाना नियुतः स्पर्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक् ।

इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमध प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे

५

या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते ।

आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक् पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः

६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।

वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२४०

॥ ३५५ ॥ (ऋ० ७।९।२, ४)

प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात् सोममिन्द्राय वायवे पिबध्वै ।

प्र यद् वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः

२

ये वायवं इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः ।

घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः प्याम सासद्वांसो युधा नृभिरमित्रान्

४

३२४२

॥ ३५६ ॥ (वा० य० ३३।८६)

इन्द्रवायू सुसन्दशा सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वेऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत् ॥ ८६ ॥ x

३२४३

॥ ३५७ ॥ (अथर्व० ३।२०।६) वसिष्ठः । पथ्यापङ्क्तिः ।

इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वे इज्जनः संगत्यां सुमना असहानकामश्च नो भुवत्

६

३२४४

(४) इन्द्र-मरुतश्च ।

॥ ३५८ ॥ (ऋ० १।६।५, ७) (३२४५-३२४६) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

वीलु चिदारुजन्तुभिर्गुहां चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्त्रिया अनु

५

३२४५

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा । मन्द्रु समानवर्चसा

७

३२४६

x [वा० य० ७।८; ३३, ५६, ८६, ऋ० १।२।४, १०।१४।१४, अथर्व० ३।२०।६,] द्वै० स० [इन्द्र.] ३२१५ ।

द्वै० [इन्द्र.] २७

(५) मरुत्वानिन्द्रः ।

॥ ३५९ ॥ (ऋ० १।२३।७-९) (३२४७-३२४०) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये । सजूर्गणेन तृम्पतु ७
 इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूर्परातयः । विश्वे मर्म श्रुता हवम् ८
 हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो दुःशंस ईशत ९ ३२४९

॥ ३६० ॥ (ऋ० १।२६।१-१५)

(३२५०-३२६४) इन्द्रः, ३, ५, ७, ९, मरुतः, १३-१५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

कया शुभा सर्वयसः सनीळाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः ।
 कया मनी कुत एतास एते ऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया १ ३२५०
 कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ वर्वत ।
 श्येनां इव ध्रजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम २
 कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था ।
 सं पृच्छसे समराणः शुभानि वोचेस्तन्नो हरिवो यत् ते अस्मे ३
 ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयति प्रभृतो मे अद्रिः ।
 आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थे मा हरी वहतस्ता नो अच्छ ४
 अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुभमानाः ।
 महोभिरेता उप युज्महे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ ५
 कः स्या वो मरुतः स्वधासीद् यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये ।
 अहं ह्युग्रस्तविपस्तुविष्मान् विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः ६ ३२५५
 भूरि चकथ युज्येभिरस्मे समानेभिवृषभ पौंस्येभिः ।
 भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठन्द्र कत्वा मरुतो यद् वशाम ७
 वधी वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान् ।
 अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ८
 अनुत्तमा ते मधवन्नकिनु न त्वावा अस्ति देवता विदानः ।
 न जार्यमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ९
 एकस्य चिन्म विभवस्त्वोजो या नु दधुष्वान् कृणव मनीषा ।
 अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम् १०
 अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र ।
 इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः ११ ३२६०

एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः ।	
संचक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे हृदयाथा च नूनम्	१२
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीरच्छा सखायः ।	
मन्मानि चित्रा अपिवातर्यन्त एषां भूत नवेदा म क्रतानाम्	१३
आ यद् दुवस्याद् दुवसे न कारु—रस्माश्चक्रे मान्यस्य मेधा ।	
ओ पु वर्त मरुतो विप्रमच्छे—मा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत्	१४
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी—मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१५ ३०६४

॥ ३६१ ॥ (क्र० ११७१३-६) (३२६५-३२६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तु—त स्तुतो मघवा शंभविष्ठः ।	
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वना—न्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा	३ ३०६५
अस्माद्वहं तविषादीपमाण इन्द्राद् भिया मरुतो रेजमानः ।	
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन् तान्यारे चक्रुमा मृळता नः	४
येन मानासश्चितर्यन्त उस्मा व्युष्टिषु शवसा शश्वतीनाम् ।	
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः	५
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नृन् भवा मरुद्भिरवयातहेळाः ।	
सुप्रकृतेभिः सासहिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	६ ३०६८

(६) इन्द्रामरुतौ ।

॥ ३६२ ॥ (क्र० ८१९६।१४)

(३२६९) तिरश्चीराङ्गिरसो, गुतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

द्वप्समपश्यं विषुणे चरन्त—मुपहरे नद्यो अंशुमत्याः ।	
नभो न कृष्णमवतस्थिवांस—मिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ	१४ ३०६९

(७) इन्द्रासोमौ ।

॥ ३६३ ॥ (क्र० २।३०।६) (३२७०) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ ।	
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्ट—मस्मिन् भयस्थे कृणुतमु लोकम्	६ ३०७०

॥ ३६४ ॥ (क्र० ६।७२।१-५) (३२७१-३२७५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रासोमा महि तद् वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।	
युवं सूर्यं विविदथ्युवं स्व—र्विश्वा तमांस्यहतं निदश्च	१

इन्द्रासोमा वासयथ उपास—मुत् सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।

उप द्यां स्कम्भयुः स्कम्भनेना—ऽप्रथतं पृथिवीं मातरं वि २

इन्द्रासोमावाहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।

प्राणींस्यैरयतं नदीना—मा संमुद्राणि पप्रथुः पुरुणि ३

इन्द्रासोमा पक्रमामास्वन्त—र्नि गवानिद् दधथुर्वक्षणासु ।

जगृभथुर्नपिनद्धमामु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ४

इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्र—मपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।

युवं शुष्मं नयं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनापाहमुश्रा ५

३२७५

॥ ३६५ ॥ (क्र० १८१८९।५) (३२७६) रेणुर्वेश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आपान्तमन्युस्तृपलेप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी ।

सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वाग्निन्द्रं प्रतिमानानि देभुः ५

३२७६

॥ ३६६ ॥ (क्र० १८१२४।९) (३२७७) अग्निः (सोमेन्द्रौ) । त्रिष्टुप् ।

बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहु—रपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् ।

अनुष्टुभमनु चर्चूर्यमाण—मिन्द्रं नि चिक्वुः कवयो मनीषा ९

३२७७

॥ ३६७ ॥ (अथर्व० ८।४।१-२५)

(३२७८-३३०२) चाननः । जगती, ८-१४, १६-१७, १९, २२, २४ त्रिष्टुप्, २०; २३ भुरिक्, २५ अनुष्टुप् ।

इन्द्रासोमा तपंतं रक्षं उव्जतं न्यर्पयितं वृषणा तमोवृधः ।

परां शृणीतमचितो न्योषितं हतं नुदथां नि शिशीतमत्त्रिणः १

इन्द्रासोमा समघशंसमभ्य१घं तपुर्ययस्तु चरुरग्निमाँ इव ।

ब्रह्मद्विषं क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने २

इन्द्रासोमा दुष्कृतो ववे अन्त—रनारम्भणे तममि प्र विध्यतम् ।

यतो नैषां पुनरेकंश्चनोदयत तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ३

३२८०

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हेणम् ।

उत्तक्षतं स्वर्ध१ पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ४

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्य—ग्रितसेभिर्युवमश्महन्मभिः ।

तपुर्वधेभिरजरेभिरत्त्रिणो नि पर्शानि विध्यतं यन्तु निस्वरम् ५

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वतं इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना ।

यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधये—मा ब्रह्माणि नृपती इव जिन्वतम् ६

प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवै—हंतं द्रुहो रक्षसो भङ्गरावतः ।	
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो मा कदा चिदभिदासति द्रुहुः	७
यो मा पाकेन मनसा चरन्त—मभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।	
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता	८ ३२८५
ये पाकशंसं विहरन्त एवै—र्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधामिः ।	
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्रक्तेरुपस्थे	९
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम् ।	
रिपु स्तेन स्तेयकृद्भ्रमेतु नि प हीयतां तन्वाऽ तनां च	१०
परः सो अस्तु तन्वाऽ तनां च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।	
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्	११
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाति ।	
तथोर्यत्सत्यं यतरहजीय—स्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत	१२
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथ्रया धारयन्तम् ।	
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्रदन्त—मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयात	१३ ३२९०
यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवो अप्युहे अग्ने ।	
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषि द्रोघवाचस्ते निर्रक्तं संचन्ताम्	१४
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यद्वि वायुस्ततप पूरुषस्य ।	
अधा स वीरैर्दुशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह	१५
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।	
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोर्धमस्पृदीष्ट	१६
प्र या जिगाति खर्गलेव नक्त—मप द्रुहस्तन्वं१ गूहमाना ।	
वव्रमनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः	१७
वि तिष्ठध्वं मरुतो विश्वीऽच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।	
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभि—र्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे	१८ ३२९५
प्र वर्तय द्विवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि ।	
प्राक्तो अपाक्तो अधरादुदुक्तोऽ अभि जहि रक्षसः पर्वतेन	१९
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति द्विप्सवोऽदाभ्यम् ।	
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदुशनिं यातुमज्याः	२०

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्सत एतु रक्षसः उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं हृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावदपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः । पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् इन्द्रं जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् । विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्तसूर्यमुच्चरन्तम् प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् । रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमज्यः	२१ २२ २३ २४ २५ ×	३३०० ३३०२
---	------------------------------	--------------

(८) इन्द्राविष्णू ।

॥ ३६८ ॥ (ऋ० १।१५।१-३)

(३३०३-३३०५) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत । या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना त्वेपमित्था समरणं शिमीवतोऽन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति । या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित् कृशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः ता ईं वर्धन्ति महास्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे । दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः	१ २ ३	३३०५
---	-------------	------

॥ ३६९ ॥ (ऋ० ६।६९।१-८) (३३०६-३३१३) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

सं वां कर्मणा समिषा हिंनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य । जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पृथिभिः पारयन्ता या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कुलशा सोमधाना । प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना । सं वामञ्जन्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः आ वामश्वांसो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु । जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे	१ २ ३ ४
--	------------------

इन्द्राविष्णू तत् पनयाय्यं वां सोमस्य मदं उरु चक्रमाथे ।		
अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयो ऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि	५	३३१०
इन्द्राविष्णू हविषा वावृधाना ऽग्राद्वाना नमसा रातहव्या ।		
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः	६	
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्त्रा जठरं पृणेत्याम् ।		
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मं	७	
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः ।		
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्	८	३३१३

॥ ३७० ॥ (ऋ० ७।९९।४-६) (३३१४-३३१६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः त्रिष्टुप् ।

उरुं यज्ञाय जक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् ।		
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु	४	
इन्द्राविष्णू हंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्रथिष्टम्		
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान्	५	
इयं मनीषा बृहती बृहन्तो रुक्रमा तवसा वर्धयन्ती ।		
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिबन्तमिषो वृजनेष्विन्द्र	६	३३१६

(९) इन्द्राबृहस्पती ।

॥ ३७१ ॥ (ऋ० ४।४९।१-६) (३३१७ ३३२४) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

इवं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती । उक्थं मदश्च शस्यते	१	
अयं वां परि पिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती । चारुर्मदाय पीतये	२	
आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये	३	
अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणाम्	४	३३२०
इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये	५	
सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं वृशुषो गृहे । मादयेथां तदोक्सा	६	

॥ ३७२ ॥ (४।५०।१०-११) त्रिष्टुप्, १० जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।		
आ वां विशन्तिवन्दवः स्वाभुवो ऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्	१०	
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिभूत्वस्मे ।		
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः	११	३३२४

॥ ३७३ ॥ (ऋ० ७।९७-९८।१०, ७) (३३२५) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।
 बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
 धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ३३२५

॥ ३७४ ॥ (ऋ० ८।९६।१५)
 (३३२६) तिरश्चीरगङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

अधं द्रुप्सा अंशुमत्या उपस्थे धारयत तन्वं तिविषाणः ।
 विशां अदेवीरभ्याऽचरन्ती बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे १५ ३३२६

(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

॥ ३७५ ॥ (ऋ० ६।४७।२०) (३३२७) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।
 अगव्यति क्षत्रमार्गन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ।
 बृहस्पते प्र चिकित्सा गर्विष्ठा वित्था मते जरित्र इन्द्र पन्थाम् २० ३३२७
 ॥ ३७६ ॥ (अथर्व- ७।५१।१) (३३२८) अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
 इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु १ ३३२८
 ॥ ३७७ ॥ (अथर्व० २०।१३।१) (३३२९) जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।
 आ वां विशन्तिवन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १ ३३२९

(११) इन्द्रापूषणौ ।

॥ ३७८ ॥ (ऋ० ६।५७।१-६) (३३३०-३३३५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री ।
 इन्द्रा नु पूषणा वयं सखायं स्वस्तये । हुवेम वाजसातये १ ३३३०
 सोममन्य उपासदुत पातवे चम्बोः सुतम् । करम्भमन्य ईच्छति २
 अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य संभृता । ताभ्यां वृत्राणि जिघ्रते ३
 यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत् सचा ४
 तां पूषणः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ५
 उत पूषणं युवामहे ऽभीशूरिव सारथिः । मद्या इन्द्रं स्वस्तये ६ ३३३५
 ॥ ३७९ ॥ (अथर्व० ६।३।१) (३३३६) अथर्वी । पथ्या बृहती ।

पातं न इन्द्रापूषणा ऽदितिः पान्तु मरुतः । अपां नपात्सिंधवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः १३३६

(१२) ऋणंचयेन्द्रौ ।

॥३८०॥ (ऋ० ५।३०।१२-१५) (३३३७-३३४०) वभ्रुरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा ।	
ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्	१२
सुपेशंसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रं रुशमासो अग्ने ।	
तीवा इदमममन्दुः सुतासो ऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः	१३
औच्छ्रत् सा राज्ञी परितक्म्या यो ऋणंचये राजनि रुशमानाम् ।	
अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा	१४
चतुः सहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वाग्ने ।	
धर्मश्चित् ततः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्बादाम् विप्राः	१५ ३३४०

(१३) इन्द्र ऋभवश्च ।

॥३८१॥ (ऋ० ३।६०।५-७) (३३४१-३३४३) विश्वामित्रो गायनिनः । जगती ।

इन्द्रं ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गर्भस्त्योः ।	
धियेषितो मघवन् दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः	५
इन्द्रं ऋभुमान् वाजवान् मत्स्वेह नो ऽस्मिन् त्सर्वने शच्या पुरुष्टुत ।	
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः	६
इन्द्रं ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम् ।	
शतं केतैरिभिरिषिरेभिरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमनि	७ ३३४३

॥३८२॥ (ऋ० ८।९३।३४) (३३४४) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

इन्द्रं इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम्	३४ ३३४४
---	---------

(१४) इन्द्रोषसौ ।

॥३८३॥ (ऋ० ४।३०।९-११) (३३४५-३३४७) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

द्विवश्चिद् वा दुहितरं महान् महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक्	९ ३३४५
अपोषा अनसः सरत् संपिष्टादहं विभ्युषी । नि यत् सीं शिश्रथद् वृषा	१०
एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या । ससारं सीं परावतः	११ ३३४७

(१५) इन्द्राश्वौ ।

॥३८४॥ (ऋ० ४।३२।२३-२४) (३३४८-३३४९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

कनीनकेव विदधे नवे वृषदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते	२३
अरं म उग्रयाम्णे ऽरमुग्रयाम्णे । बभ्रू यामेष्वसिधा	२४ ३३४९

(१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।

॥३८५॥ (ऋ० २।३२।२-३) (३३५०-३३५१) गृत्समदः शौनकः । जगती ।

मा नो गुह्या रिपं आथोर्हन् दभन् मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः ।

मा नो वि र्याः सखा विद्धि तस्य नः सुम्नायता मनसा तत् त्वेमहं २ ३३५०

अहेळता मनसा श्रुष्टिमा वह दुहानां धेनुं पिष्युषीमसश्चतम् ।

पद्याभिगशु वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्वहा ३ ३३५१

(१७) इन्द्रो गावश्च ।

॥३८६॥ (ऋ० ६।२८।२,८) (३३५२-३३५३) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । जगती, ८ अनुष्टुप् ।

इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्ष—त्युपेद दधाति न स्वं मुषायति ।

भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धय—न्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् २

उपेदमुपपचन—मासु गोपूषं पृच्यताम् । उपं ऋषभस्य रेत—स्युपेन्द्र तव वीर्यं ८ ३३५३

(१८) इन्द्राकुत्सौ ।

॥३८७॥ (ऋ० ५।३१।९) (३३५४) अवस्युरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना—ऽऽ वामत्या अपि कर्णे वहन्तु ।

निः पीमज्ज्यो धर्मथो निः पृथस्था—न्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि ९ ३३५४

(१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः ।

॥३८८॥ (ऋ० १०।५२।१०) (३३५५) बन्धुःश्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायनाः । त्रिष्टुप् (पंक्युत्तरा) ।

समिन्द्रेण गार्मनङ्गाहं य आवहदुशीनराण्या अनः ।

भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मा पु ते किं चनाममत् १० ३३५५

(२०) इन्द्रापर्वतौ ।

॥३८९॥ (ऋ० ३।५३।१) (३३५६) गाधिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।

वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिळ्या मदन्ता १ ३३५६

(२१) इन्द्रः, सोमो, ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।

॥३९०॥ (ऋ० १।१८।४-५) (३३५७-३३५८) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

स घां वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः । सोमो हिनोति मर्त्यम् ४

त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम् । दक्षिणा पात्वंहसः ५ ३३५८

(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।

॥३०१॥ (ऋ० २।२४।१२) (३३५९) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदा—पंचन प्र भिनन्ति व्रतं वाम् ।

अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नो ऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् १२ ३३५०.

॥३०२॥ (ऋ० ७।९७।३,९) (३३६०-३३६१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

तम् ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे ।

इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ३ ३३६०

इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्ति—ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे अकारि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुंरंधी—जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ९ ३३६१

(२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।

॥३०३॥ (ऋ० ६।४७।३१) (३३६२) गगो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीति ।

समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरा ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ३१ ३३६०

(२४) इन्द्रसूर्यादयः ।

॥३०४॥ (अथर्व० १९।७०।१) (३३६३) ब्रह्मा । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ ३३६३

इन्द्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [३] १।३।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
उन्द्रा यदि तनुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।
सुते दधिष्व नश्चन ।
(२७०८) १०।१०४।६ (अष्टको वैश्वामित्र । उन्द्र)
उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि
पातये सुतस्य ।
- [४] १।४।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
सुदुषामिव गोदुहे ।
जुहूमसि ।
(५१८) ८।५२ (बालमिन्य ४) । ४ (आयु काण्व । उन्द्र)
सुदुषामिव गोदुहे जुहूमसि ।
- [६] १।४।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
विद्याम सुमतीनाम् ।
(२६७८) १०।८९।१७ (गणुवश्वामित्र । उन्द्र)
विद्याम सुमतीना नवानाम् ।
- [७] १।४।४ यन्ते सन्विभ्य आ वरम् ।
९।४।५२ (अयस्य आक्षिप्तम् । पवमान सोम)
देवान् सन्विभ्य आ वरम् ।
- [९] १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
स्यामदिन्द्रस्य शर्मणि ।
८।४७।५ (त्रित आण्व । आदिन्या)
- [११] १।४।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
प्रावो वाजषु वाजिनम् ।
(१०८९) १।१७६।५ (अमरलो मन्त्रावरुण । उन्द्र)
- [१३] १।४।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तस्मा इन्द्राय गायत ।
(१९७) ८।३२।१३ (मेवाविति काण्व । उन्द्र)
यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वतः सखा ।
तमिन्द्रमभि गायत ।
(१७) १।५।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
तस्मा इन्द्राय गायत ।
- [१४] १।५।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
इन्द्रमभि प्र गायत ।
(२३९७) ८।९२।१ (धृतकक्ष मुकक्षो वा आक्षिप्तम् । उन्द्र)

- [१५] १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
पुरुतम पुरुणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्र सोमे सचा सुते ।
(२०८८) ६।४।२९ (अयुर्बाहस्पत्य । उन्द्र)
पुरुतम पुरुणा ।
१।२४।३ (शुन अप आजार्गति कृत्रिमो देवगतो
वैश्वामित्रो वा । गबिता)
ईशान वार्याणाम् ।
(अग्नि १४२२) ८।७१।१३ (मुर्दाति-पुरुमीकहावाक्षि-
रग्नौ, तयोर्वा अन्यतर । अग्नि)
ईशे यो वार्याणाम् ।
१०।९।५ (त्रिशिरागन्वाष्टु मिन्वुष्टाप आम्बरीषो वा । आपः)
ईशाना वार्याणां ।
(४७१) ८।४।२९ (त्रिणोक काण्व । उन्द्र)
इन्द्र सोमे सचा सुते ।
- [१७] १।५।४ (१३) १।४।१०
- [१८] १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये
सोमासो दध्याशिरः ।
(२४५१) ८।२३।२२ (मुकक्ष आक्षिप्तम् । उन्द्र)
सुता इम उयन्तो यन्ति वीतये ।
१।१३७।२ (पञ्चोष्ठो देवोदाभि । मित्रावरुणां)
सोमासो दध्याशिरः ।
५।५।१७ (स्वग्यात्रेय । विश्वेदेवा)
सोमासो दध्याशिरः ।
(२२३८) ७।३२।४ (वमिष्टो मन्त्रावरुण । उन्द्र)
९।२२।३ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम)
९।६३।१५ (निधुवि काश्यप । पवमानः सोम)
९।१०१।१२ (मनु सावरुण । पवमानः सोम)
- [२१] १।५।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
त्वां सोमा अवीत्रधन्स्वामुक्था यतकनो ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।
(अग्नि १३६१) ८।४४।१९ (विरूप आक्षिप्तम् । अग्नि)
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्रिभि ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।

- [२३] १।५।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
ईशानो यवया वधम् ।
(२८१८) १०।१५२।५ (शासो भारद्वाज । उन्द्र)
वरीयो यवया वधम् ।
- [३०] १।७।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
आ सूर्य रोहयद्विवि ।
... ऐरयत् ।
(२३९०) ८।८९।७ (नमेष-पुरुमेधावादिगो । उन्द्र)
ऐरय आ सूर्य रोहयो दिवि ।
९।१०७।७ (समर्पयः । पवमान गोमः)
आ सूर्य रोहयो दिवि ।
(अग्निः १७०६) १०।१५६।४ (नेतुराग्रेयः । अग्नि)
आ सूर्य रोहयो दिवि ।
- [३१] १।७।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
उग्र उग्रामिरूतिभिः ।
(१००४) १।१०९।५ (पञ्चल्लपो देवोदाणि । उन्द्र)
उग्रामिरूतिभिः ।
- [३५] १।७।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
(९४३) १।८४।७ (गौतमो राहगण । उन्द्र)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
- [३६] १।७।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
य एवाश्र्वर्षीनां ।
(१०८६) १।१७६।२ (अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । उन्द्र)
- [३७] १।७।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
हवामहे जनेभ्यः ।
अस्माकमस्तु केवल ।
(अग्नि १९१५) १।१३।१० (मेधातिथि काण्व । उन्द्र)
ह्वये ।
अस्माकमस्तु केवलः ।
- [४१] १।८।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र)
सासह्याम पृतन्यतः ।
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्व । उन्द्राग्नी)
सासह्याम पृतन्यतो ।
९।६१।२९ (अमहीयुराक्षिरसः । पवमान गोम)
- [४२] १।८।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
द्यौर्न प्रथिना शव ।
(५४४) ८।५६। (वालग्विन्यं ८) । १ (पृषयः काण्व । उन्द्र)
- [४४] १।८।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
समुद्र इव विन्वते ।

- (२९२) ८।१२।५ (पर्वतः काण्वः । उन्द्र)
- [५०] १।९।३ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।
(अग्निः ८६५) ५।१४।६ (सतभर आत्रेय । अग्नि)
स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।
- [५३] १।९।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
राये रमस्वतः ।
तुविद्युन्न यशश्चत ।
(अग्नि ५९९) ३।१६।६ (उत्कीलः काण्व । अग्नि)
यं राया भयमा गज मयौभुना तुविद्युन्न यशस्वता ।
- [५५] १।९।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
अस्मे धेहि श्रवो वृद्ध ।
(अग्निः ८७) १।४४।२ (पश्यन् काण्व । अग्नि अधिना, उपा)
(६०९) ८।६५।९ (पगाय काण्व । उन्द्र)
- [५७] १।९।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
इन्द्राय श्रवमर्चति ।
१०।९६।२ (पश्यन् काण्व । अग्नि अधिना, उपा)
इन्द्राय श्रव इविवन्तमर्चति ।
(२७७८) १०।१३३।१ (मदा पेजवन । उन्द्र)
- [६१] १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
ब्रह्म च नो वगो संनन्द यज्ञ च वर्धय ।
१०।१४।१६ (अग्निस्त्वापमः । विद्योत्वाः)
ब्रह्म यज्ञ च वर्धय ।
- [६२] १।१०।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
उक्थमिन्द्राय शस्य ।
(१७६४) ५।३९।५ (आत्रिमोम । उन्द्र)
- [६४] १।१०।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
इन्द्र त्वादातमिच्छशः ।
कृणुष्व राधो अद्विव ।
(१३६९) ३।४०।६ (विद्यामित्रो गार्ग्यन । उन्द्र)
इन्द्र त्वादातमिच्छशः ।
(५८९) ८।६४।१ (प्रगाय काण्व । उन्द्र)
कृणुष्व . . .
- [६५] १।१०।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र)
ऋचायमाणमिन्वतः ।
जेष स्वर्वतीरपः ।
(१०८५) १।१७६।१ (अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । उन्द्र)
ऋचायमाण इन्वमि ।
(३११०) ८।४०।१० (नाभाकः काण्व । उन्द्राग्नी)
तं शिशीता मृत्कमिन्वेष सत्त्वानमृगिमयम् ।

उतो नु चिच्च ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति
जेषस्त्वर्वातीरपो नभन्तामन्यके समे ॥

(३१११) ८।४०।११ (नामाक. काण्व. । उन्द्राग्नी)
तं शिशीता स्व वर सत्यं सत्वानमृन्वियम् ।

उतो नु चिच्च ओहन आपडा शुष्णस्य भेदत्यज्ञैः
स्वर्वातीरपो नभन्तामन्यके समे ॥

[६७] १।१०।१० (मयुच्छन्दा वेधामित्रः । उन्द्र)

वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं ।

(१७३८) ५।३५।३ (प्रभवसुराक्षिणः । उन्द्र)

वृषन्तमस्य हूमहे ।

[७०] १।११।१ (जेता माधुच्छन्दासः । उन्द्र)

रथीतमं रथीनां ।

(४४९) ८।४५।७ (त्रिषोक्त. काण्व. । उन्द्र)

रथीतमो रथीनाम् ।

[७१] १।११।२ (जेता माधुच्छन्दासः । उन्द्र)

जेतारमपराजितम् ।

(अग्निः ९१६) ५।२५।६ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)

१।११।८ (जेता माधुच्छन्दासः । उन्द्र)

इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनृषत ।

(६२८) ८।७६।१ (कुरुमुनि काण्वः । उन्द्र)

इन्द्रमीशानमोजसा ।

(३०६२) ६।६०।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी)

युवामिमेऽभि स्तोमा अनृषत ।

१।१५।१ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र. [ऋतुदेवता])

त्वा विशन्विन्द्वं ।

(२४१८) ८।९०।२२ (श्रुतकक्षः सकक्षो वा
आक्षिणः । उन्द्र)

आ त्वा ... ।

[८०] १।१६।३ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्र सोमस्य पीतये ।

(१६०) ८।३।५ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

इन्द्रमिदेवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्रं गर्भके वनिनो हवामह इन्द्रं वनस्य सातये ।

(१३८५) ३।४२।४ (विश्वामित्रो गार्ग्यिनः । उन्द्र)

इन्द्र सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे ।

(४०८) ८।१७।१५ (हरिभ्यन्ति काण्वः । उन्द्र)

इन्द्र सोमस्य पीतये ।

(२४०१) ८।९०।५ (श्रुतकक्षः सकक्षो वा आक्षिणः । उन्द्र)

इन्द्र सोमस्य पीतये ।

(९८६) ८।९७।१२ (रेभः काश्यपः । उन्द्र)

इन्द्र सोमस्य पीतये ।

९।१२।२ (अमिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

इन्द्र सोमस्य पीतये ।

[८१] १।१६।४ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र ।

(१३८२) ३।४०।१ (विश्वामित्रो गार्ग्यिनः । उन्द्र)

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाक्षिणम् ।

हरिभ्यां ।

१।७१।३ (जाह्नवः काश्यपः । मित्रावरुणौ)

उप न सुतमा गत ।

[८२] १।१६।५ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

आ गच्छपेद सवन सुतम् ।

(३००५) १।२१।४ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्राग्नी)

उपेद सवन सुतम् ।

इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।

(३०६४) ६।६०।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी)

आ गच्छत नरोपेद सवनं सुतम् ।

इन्द्राग्नी ।

[८३] १।१६।६ उम सोमास इन्द्रव ।

९।४६।३ (अयस्य आक्षिणः । पवमानः सोमः)

एते सोमास इन्द्रवः ।

[८५] १।१६।८ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

वृत्रहा सोमपीतये ।

(२४४९) ८।९३।२० (मुक्तक्ष आक्षिणः । उन्द्र)

[८६] १।१६।९ (मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र)

मेमं न काममा पृण ।

(५९४) ८।६४।६ (प्रगावः काण्व. । उन्द्र)

अगमाकं काममा पृण ।

[६८८-६९१] १।२८।१-४ शुन शेप आजीगर्तिः स कृत्रिमौ

विश्वामित्रो देवगतः । उन्द्र)

उल्लुखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्लुलः ।

[६९२] १।२९।१ (शुन. शेप आजीगर्तिः । उन्द्र)

अनाशस्ताह्व स्मसि ।

आ तू न इन्द्र शंसय ।

१।४१।१६ (शुन्मदः शौनकः । सरस्वती)

अप्रशास्ताह्व स्मसि प्रशस्तिम् ।

[६९३] १।२९।२ (शुन शेप आजीगर्तिः । उन्द्र)

शिप्रिन् वाजानां पते ।

आ तू न इन्द्र शंसय ।

- (२०६९) ६।४।१० (द्रुग्वर्णन्यः । इन्द्रः)
इन्द्र वाजानां पते ।
- [७०५] १।३०।७ (युन शेष आजार्गतिः । इन्द्रः)
सखाय इन्द्रमृतये ।
- (४१७) ८।२१।९ (सोमार्गः काण्वः । इन्द्रः)
- [७०६] १।३०।८ (युन शेष आजार्गतिः । इन्द्रः)
सहस्रिणीभिरुतिभिः ।
- (२७८८) १०।१३४।४ (पर्वार्गः) मानवानां योवनाद्यः । इन्द्रः)
- [७०७] १।३०।९ (युन शेष आजार्गतिः । इन्द्रः)
अनु प्रन्त्यस्यौकसो । य ते पूर्व ॥
- (२३२०) ८।६९।१८ (प्रियमन आर्गिः । इन्द्रः)
अनु प्रन्त्यस्यौकसः । पूर्वा ।
- [७०८] १।३०।१० (युन शेष आजार्गतिः । इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यः ।
- (१४३९) ३।५।१६ (विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ।
- (अग्नि १४१७) ८।७१।९ (मुदार्गि-पुर्मन्त्रावादिग्या
नयार्गन्यतरः । अग्निः)
- [७१५] १।३२।१ (हिग्वर्णन्यः आर्गिः । इन्द्रः)
इन्द्रस्य तु वीर्याणि प्र बोच ।
- (१२१९) २।२१।३ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
इन्द्रस्य बोचं प्र कृतानि वीर्या ।
- [७१७] १।३२।३ (हिग्वर्णन्यः आर्गिः । इन्द्रः)
त्रिकटुकेष्वपिबस्सुतस्य ।
अहर्जेनं प्रथमजामहीनाम् ।
- (११६२) २।१५।१ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
त्रिकटुकेष्वपिबस्सुतरयाय्य मंद अहिमित्रो जघान ।
- [७१८] १।३२।४ आसूर्य जनयन्वामुषास ।
(१९७२) ६।३०।५ साक सूर्य -- ।
- [७१९] १।३२।५ अहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ।
(२६७५) १०।८९।१४ पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते ।
- [७२६] १।३२।१२ (हिग्वर्णन्यः आर्गिः । इन्द्रः)
अवासृजः सर्तवे सप्त मिन्धून् ।
(११३३) २।१२।१२ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अवासृजत् सर्तवे -- ।
- [७२९] १।३२।१५ अराक्ष नेमिः परि ता बभूव ।
(अग्निः ३१३) १।१४।१९ (दर्पतमा ओचल्यः । अग्निः)
अराक्ष नेमिः परिभर्जायथा ।
- [७३४] १।३३।५ प्र यद्वो हरिवः स्थातरुम् ।
(१९९५) ६।४।३ एतं पिब हरिवः स्थातरुम् ।

- [७४१] १।३३।१२ (हिग्वर्णन्यः आर्गिः । इन्द्रः)
यावत्तरो मघवन यावदोजो ।
(३२३७) ७।९।४ (नमिष्टा मन्त्रार्गिः । इन्द्रवाय)
यावत्तरस्तन्वोऽ यावदोजो ।
- [७४३] १।३३।१४ (हिग्वर्णन्यः आर्गिः । इन्द्रः)
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिन्नाकन् प्रावो युध्यन्त
वृषभ दशद्युम् ।
(१०७३) १।१७४।५ (अगर्गो मन्त्रार्गिः । इन्द्रः)
वह कुत्समिन्द्र यस्मिन्नाकन् ।
(१९५०) ६।२६।४ (मन्त्रार्गो वार्गिः । इन्द्रः)
आवो युध्यन्तं वृषभ दशद्युम् ।
- [७४७] १।५।१३ (मघ्व आर्गिः । इन्द्रः)
त्व गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोत् ।
९।८६।२३ (पृथिव्याऽग्रा । पवमानः गोमः)
गोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
- [७५०] १।५।१६ अग्न्ययोऽतिथिगवाय शम्बरम् ।
(१०१७) १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बरम् ।
- [७५२] १।५।१८ गार्गी मय यजमानस्य चोदिता ।
(२५९०) १०।४९।१ (वेनुष्ठ इन्द्रः । इन्द्रः)
अह भुव यजमानस्य चोदिता ।
- [७५७] १।५।१३ (मघ्व आर्गिः । इन्द्रः)
-- सुन्वते ।
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या ।
(९९६) ८।१००।६ (नेमा गार्गिः । इन्द्रः)
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या सुन्वते ।
१०।३९।४ (घोषा काश्चावता । अग्निना)
विश्वेत्ता वा सवनेषु प्रवाच्या ।
- [७६०] १।५।११ इन्द्र ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ।
१।१६।८।१ (अगर्गो मन्त्रार्गिः । मन्त्रः)
मह ववृत्यामवसे -- ।
- [७६१] १।५।२।२ इन्द्रा यद्वृत्रमवधीक्षदीवृतम् ।
(३१३) ८।१२।२६ यदा वृत्रनदीवृतं शवसा वार्त्रिजवधी ।
- [७६४, ७७३] १।५।१५।१४ अग्नि (१४ नोत) स्ववृष्टि मदे
अस्य युध्यतो ।
- [७७४] १।५।१५ (मघ्व आर्गिः । इन्द्रः)
विश्वे देवासो अमदक्षन्तु त्वा ।
(८४५) १।१०३।७ (कुम्भ आर्गिः । इन्द्रः)
[७८५] १।५।११ (मघ्व आर्गिः । इन्द्रः)
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्रावीय आयुः
प्रतरं दधानाः ।

- (अग्नि १६७३।१०।११५।८ (उपस्तुतो वाष्टिहव्य । अग्नि)
 [७८८] १।५४।३ स्वक्षत्र यस्य उपतो धृषन्मनः ।
 (१७३९) ५।३५ ४ स्वक्षत्र न धृषन्मनः ।
 [७८९] १।५४।४ (गव्य आदित्यः । इन्द्रः)
 त्व मित्रो बृहत् सानु कोपयो ऽव त्मना धृषता
 शम्बरं भिनत् ।
 (२१३८) ७ १८।२० (वर्गणे मन्त्रावरुणः । इन्द्रः)
 आय त्मना बृहत् शम्बर भेत् ।
 [७९६] १।५४।११ (गव्य आदित्यः । इन्द्रः)
 रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरिन् राये ।
 १०।६१।२२ (नागानां दष्टो मानवः । विन्देवा)
 — सूरिन् ।
 [७९८] १।५५।२ (गव्य आदित्यः । इन्द्रः)
 इन्द्रः सोमस्य पीतये रूपायते ।
 (२९९) ८।१०।१० (पर्वत वण्य । इन्द्रः)
 इन्द्रः सोमस्य पीतये ।
 [८०३] १।५६।२ (गव्य आदित्यः । इन्द्रः)
 समुद्र न सचरणे सनिप्यवः ।
 ४।५५।६ (वामदेवो गौतमः । विन्देवाः)
 [८०८] १।५६।४ इन्द्र मिषकयुषस न सूर्यः ।
 ९।८४।२ (प्रजापतिर्वाक्यः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रः मिषकयुषस न सूर्यः ।
 [८०९] १।५६।५ (गव्य आदित्यः । इन्द्रः)
 अहन् वृत्र निरपामौवजो अर्णवम् ।
 १।८५।९ (गौतमो राहूगणः । मन्तः)
 अहन् वृत्र निरपामौवजदर्णवम् ।
 [८६०] १।६१।५ अग्ना इऽ ससिमिव श्रवस्या ।
 ९।९६।१६ (पर्वतनो देवोदादि । पवमानः सोमः)
 अग्नि वाज ससिरिव श्रवस्या ।
 [८७३] १।६२।२ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो आदित्यसो
 गा अविन्दन् ।
 ९।९७।३९ (पराशरः शाकल्यः । पवमानः सोमः)
 येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा स्वाविदो अग्नि
 गा अद्विमुष्णन् ।
 [८७४] १।६२।३ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 बृहस्पतिर्भिनदद्भि विदद्भाः ।
 १०।६८।११ (अयस्य आदित्यः । बृहस्पति)
 [८८३] १।६२।१२ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 शिक्षा शचीस्तव नः शचीवभिः ।

- (१३०) ८।२।१५ (मधार्निथिः काण्वः
 प्रियमेधश्चादित्यः । इन्द्रः)
 शिक्षा शचीवः शचीभिः ।
 [८९१] १।६३।७ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 यदो राजन वरिवः पूरवे कः ।
 (१५५३) ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 सम्राडदन्ता वृत्र वरिवः पूरवे कः ।
 [९००-९१६] १।८०।१-१६ अर्चन्ननु स्वराज्यम् ।
 [९०५] १।८०।६ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 जिघ्रते वज्रेण शतपर्वणा ।
 (२४८) ८।६।६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 वज्रेण शतपर्वणा । शिरो विभद ॥
 (६२९) ८।७६।२ (कुरुमतिः काण्वः । इन्द्रः)
 आभिर्नाच्छरः ।
 वज्रेण शतपर्वणा ।
 (२३८६) ८।८९।३ (नृमध-पुष्पेधार्वादिग्या । इन्द्रः)
 वृत्र हनति वृत्रा शतकर्तुर्वज्रेण शतपर्वणा ।
 [९०७] १।८०।८ महत् इन्द्र वीर्य ।
 (५३९) ८।५५। (वाल ७) १ भर्गदिन्द्रस्य वीर्यम् ।
 [९०८] १।८०।९ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।
 (२३१२) ८।६९।९ (प्रियमेध आदित्यः । इन्द्रः)
 [९०९] १।८०।१० महत्तदस्य पौंस्य ।
 (५८०) ८।६३।२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 मनुषे तदस्य पौंस्यम् ।
 [] १।८०।१० (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 वृत्र जघन्वो असृजद् ।
 (१५१५) ४।१८।७ (वामदेवो गौतमः अदितिः
 ऋषिका । इन्द्रः, वामदेवः)
 ... असृजद्भि सिन्धून् ।
 (१५२९) ४।१९।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 [९२०] १।८१।५ आ पप्रौ पार्थिवं रजो ।
 ६।६१।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती)
 आपमुषी पार्थिवान्युर रजो अन्तरिक्षम् ।
 ['] १।८१।५ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 न त्वावो इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ।
 (२२५७) ७।३२।२३ (वसिष्ठो मन्त्रावरुणः । इन्द्रः)
 न त्वावो अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो
 न जनिष्यते ।

- [९२०] १।८१।५ अति विश्व ववक्षिथ ।
(८३५) १।१०२।८ अतीदं विश्व भुवन ववक्षिथ ।
[९२३] १।८१।८ अया नोऽविता भव ।
१।९१।९ (गौतमो गृह्यगणः । गोमः)
तामिनोऽविता भव ।
[९२४] १।८१।९ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
अदाशुषां नेषा नो वेद आ भर ।
(आमिः ८०६) ५।६।३ (वसुश्चत आत्रेयः । आम)
विश्व —
(२७७९) १०।१३३।२ (मुदा. पैजवन । इन्द्र)
विश्वं पुष्यसि वार्यम् ।
(४५७) ८।४५।१५ (त्रिगोक. काण्व । इन्द्र)
अदाशुरि ... ।
तस्य नो वेद आ भर ।
[९२५-२९] १।८२।१-५ योजा त्विन्द्र ते हरी ।
[९२६] १।८२।२ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
विप्रा नविष्टया मती ।
८।२५।२४ (विश्वमना वेपथुः । मित्रावरुणा)
[९२७] १।८२।३ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
सुमंद्वा त्वा वयं ।
१०।१५८।५ (चक्षु गोथ । मर्य)
[९३१] १।८३।१ अध्वावनि प्रथमो गोषु गच्छति ।
१।२५।४ (गन्धमद. शानकः । ब्रह्मणर्मणिः)
ग सन्वाभि प्रथमो गोषु गच्छति ।
[९३८] १।८४।२ कर्षणा च स्तुतीरुप ।
(३९७) ८।१७।४ (उर्मिभठिः काण्व. । इन्द्र)
अस्माकं सुष्टुतीरुप ।
[९३९] १।८४।३ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
अर्वाचीनं सु ते मनो प्रावा कृणोतु वसुना ।
(१३३५) ३।३७।२ (विश्वामित्रो गार्ग्यन । इन्द्र)
अर्वाचीनं सु ते मन ।
इन्द्र कृणवन्तु ... ।
[९४०] १।८४।४ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
हममिन्द्र सुतं पिब ।
(२७८) ८।६।३६ (वन्मः काण्व । इन्द्र)
[९४३] १।८४।७ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
वसु मर्ताथ दाशुषे ।
९।९८।४ (अम्बरीषो वार्षागिरिः ऋजिश्वा भारद्वाजश्च ।
पवमानः गोम)
दै० [इन्द्रः] २९

- [९४३] १।८४।७ ईशानो अप्रतिष्कृत उन्ने अरुग ।
(३५) १।७।८ (मधुच्छन्ता वश्वामित्र । इन्द्र)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
[९४५] १।८४।९ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
सुतावो आविवासति ।
(९७९) ८।९७।४ (रेम. मययाः । इन्द्र)
सुतावो आ विवासति ।
[९४६ ९४८] १।८४।१०-१२ वस्वीरनु स्वराज्यम् ।
[९४७] १।८४।११ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
ता अस्य पृथनायुव. सोमं श्रीणन्ति पृथय ।
(२३०६) ८।६९।३ (पियमेव आश्वगण । इन्द्र)
ता अस्य सन्दीपय सोमं श्रीणन्ति पृथय ।
[९४९] १।८४।१३ जघान नवतीर्नव ।
९।६१।१ (अमरायुर्गाङ्गायम् । पवमान गोम)
अवाहन्नवतीर्नव ।
[९५०] १।८४।१४ (गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः)
पर्वतेष्वपश्रितम् ।
५।६१।१९ (श्यावाय आत्रेयः । गन्तामानः)
[९५५] १।८४।१९ न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्दिता ।
(६२५) ८।६६।१३ (जाल पागाय । इन्द्रः)
नहि त्वदन्य पुष्टत कश्चन मघवन्नस्ति मर्दिता ।
[९५७-९७१] १।१००।१-१५ (वार्षागिरि ऋक्षाश्चाङ्म्वराप-
गृहदेव-अथमान-गर्गायम् । इन्द्रः)
मरत्वाजो भवमिन्द्र ऊती ।
[९६७] १।१००।११ (ऋक्षाश्चाङ्म्वराप० । इन्द्रः)
अपा तोकस्य तनयस्य जेषे ।
(२०५३) ६।४४।१८ (शयुर्वाहपत्नः । इन्द्रः)
[९६८] १।१००।१२ (ऋक्षाश्चाङ्म्वराप० । इन्द्रः)
सहस्रचेताः शतनीथ ऋम्वा ।
(आमिः १६३१) १०।६९।७ (गमित्रो वा पथः । आमि)
सहस्रन्तगा. शतनीथ ऋम्वा ।
[९७१] १।१००।१५ आपश्चन शवसो अन्नमापु ।
१।१६७।९ (अगम्या मेत्रावरुणः । मरुत)
आरात्ताश्चिच्छवसो अन्नमापु ।
[९७५] १।१००।१९ (ऋक्षाश्चाङ्म्वराप० । इन्द्रः)
(८३८) १।१०२।११ (कुन्य आत्रेय । इन्द्र)
विश्वहेन्द्रो अधिवक्ता नो अम्बपरिहृता.
सनुयाम वार्जम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः
पृथिवी उत द्यौ ॥

- [८२३] १।१०१।१-७ मरुत्वन्त सख्याय हवामहे ।
 [८२४ २५] १।१०१।८-९ त्वाया इविभ्रुकुमा गत्यगधः ।
 (९ ब्रह्मवाहः)
 [८३१] १।१०२।४ (कुम्भ आक्षिप्तम् । इन्द्रः)
 भस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र अत्रणा
 मघवन् वृण्या रुज ।
 (२०५३) ६।४४।१८ (अयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 मघवस्मिन्द्र प्रत्यः स्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।
 [८३५] १।१०२।८ अतीव विश्व भुवन ववाक्षिथ ।
 (९२०) १।८१।५ (गोनमो गहृगणः । इन्द्रः)
 अति विश्वं ववाक्षिथ ।
 ['] १।१०२।८ (कुम्भ आक्षिप्तम् । इन्द्रः)
 भशत्रुस्मिन्द्र जनुषा सनादसि ।
 (४२१) ८।२१।१३ (मोभर्गि काण्वः । इन्द्रः)
 अनापिरिन्द्र— ।
 (२७७९) १०।१३३।२ (सुदाः पजघनः । इन्द्रः)
 अशत्रुस्मिन्द्र जज्ञिषे ।
 [८३८] १।१०२।११ = (९७५) १।१००।१९
 [८४०] १।१०३।२ (कुम्भ आक्षिप्तम् । इन्द्रः)
 स धारयत् पृथिवीं पप्रथश्च ।
 (११६३) २।१५।२ (गुत्समदः गौतमः । इन्द्रः)
 [८४५] १।१०३।७ = (७७४) १।५२।१५
 [८४७] १।१०४।१ (कुम्भ आक्षिप्तम् । इन्द्रः)
 योनिष्ठ इन्द्र निषेदे भकारि तमा ।
 (२१८६) ७।२४।१ (वर्गिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)
 — इन्द्र मरुते भकारि तमा ।
 [८५४] १।१०४।८ (कुम्भ आक्षिप्तम् । इन्द्रः)
 मा नो वधीस्मिन्द्र मा परा दा मा ।
 ७।४६।४ (वर्गिष्ठो मैत्रावरुणिः । रुद्रः)
 मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ।
 [८५५] १।१०४।९ उरुव्यचा जठर आ वृषस्व ।
 १०.९६।१३ (बरुगाक्षिप्तम् ; सर्वहरिवो तेन्द्रः । हरि)
 मत्रा वृषजठर आ वृषस्व
 [१००६] १।१२९।२ पृक्षमस्यं न वाजिरम् ।
 (३२१६) १।१३५।५ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रवायुः)
 आजुमस्य— ।
 [१००७] १।१२९।३ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृलीकाय
 सप्रथः ।

- १।१३६।६ (परच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृलीकाय मीळहुषे ।
 [१००४] १।१२९।५ उग्रामिह्रुमोतिभिः । पश्य— (३१) १।७४
 [१००८] १।१२९।९ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
 अभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ।
 (१६४१) ४।३१।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 एन्द्र राया परीणसा ।
 (९८१) ८।९७।६ (रभः कादयपः । इन्द्रः)
 १०।९३।११ (तान्वः पार्थः । विधेदेवा)
 अभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।
 [१०११] १।१३०।१ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 महिष्ठ वाजसातये ।
 ८।४।१८ (देवार्तिथिः काण्वः । पृषा)
 भस्माकं — भव महिष्ठो वाजसातये ।
 (८९९) ८।८८।६ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)
 [१०१६] १।१३०।६ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 — वाच — रथं न धीरः स्वपा भतक्षिषुः ।
 (अग्निः ७७७) ५।२।११ (कुमार आत्रेयः, वृषो वा
 जान उभौ वा, २ वृषो जानः । अग्निः)
 — स्तोमं — रथं न धीरः स्वपा भतक्षम् ।
 (१६८१) ५।२९।१५ (गौर्विवातिः शाक्यः । इन्द्रः)
 ब्रह्मा ।
 रथं न धीरः स्वपा भतक्षम् ।
 [१०१७] १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बर ।
 पश्य— (७५०) १।५१।६
 [१०१८] १।१३०।८ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 न्यक्षोसानमोषति ।
 (२९६) ८।१२।९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 [१०१९] १।१३०।९ (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः)
 उशना यत् परावतो ।
 ८।७।२६ (पुनर्वन्मः काण्वः । मरुत)
 [१०२१] १।१३१।१ = (३०९) ८।१२।२२
 देवासो दधिरे पुरः ।
 (अग्निः ८७१) ५।१६।१ (पुरुगत्रेयः । अग्निः)
 मर्तासो दधिरे पुरः ।
 (३१२) ८।१२।२५ देवास्त्वा दधिरे पुरः ।
 [१०२४] १।१३१।४ पुरो यद्वि शारदीरवातिरः ।
 (१०७०) १।१७४।२ = (१८९३) ६।२०।१०
 सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्वर्त ।

- [१०२८] १।१३२।१ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)
इन्द्रस्वोता सासङ्ग्राम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
सासङ्ग्राम— ।
[१०३१] १।१३२।४ यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजम् ।
(७४७) १।५१।३ त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
[१०३२] १।१३२।५ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)
धीतयो देवा अच्छा न धीतयः ।
१।१३२।१ (परुच्छेपो देवोदासि । विश्वेदेवा)
[१०४०] १।१३३।७ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)
सहस्रा वाज्यवृत्तः ।
(१९७) ८।३२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
[१०४१] १।१३२।६ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)
सुमृत्कीको न आ गहि ।
१।९।११ (गोतमो राहुगण । गोमः)
सुमृत्कीको न आ विग ।
[१०४२] १।१६७।१ सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः ।
(२२०२) ७।२६।५ —नो माहि वाजान् ।
[१०४७] १।१६७।५ ते पु णो मरुतो मृलयन्तु ।
(३२६५) १।१७।१३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
मरुत्वानिन्द्रः)
स्तुतासो नो मरुतो मृलयन्तु ।
[१०५५] १।१७०।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
स्वमीशिषे वसुपते वसुनां ।
(अग्निः १४१६) ८।७।१८ (मुदीनि-पुरुमीळहावाङ्गिर्मौ,
तयोर्वाग्न्यतरः । अग्निः)
स्वमीशिषे वसुनाम् ।
[१०७०] १।१७४।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
मघवाच सप्त यत्पुः शर्म शारदीर्द्वत् ।
(१८९३) ६।२०।१० (भगद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सप्त यत्पुः शर्म शारदीर्द्वत् दामी. पुरुकुत्स्याय ।
[१०७३] १।१७४।५ = (७४३) १।३३।१४
[] १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
प्र सुरश्चक्रं बृहतादभीके ।
(१४७८) ४।१६।१२ (वामदेवो गोतमः । इन्द्रः)
[१०७६] १।१७४।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
ननमो वधरदेवस्य पीयोः ।
(१२०५) २।१९।७ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
[१०७७] १।१७४।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
(१८९५) ६।२०।१२ (भगद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

- स्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्कणोरपः सीरा न स्रवंतीः ।
प्र यत्समुद्रमति शूर पशि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्मि ॥
[१०८०] १।१७५।२ वृषा मदो वरेण्यः ।
(१८२४) ८।४६।८ यत्ने मदो वरेण्यः ।
[१०८१] १।१७५।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
महावान दस्युमघ्नतम् ।
९।४।१२ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः गोमः)
साहस्यो दस्युमघ्नतम् ।
[१०८३] १।१७५।५ शुग्मिन्तमो हि ते मदो बुग्मिन्तम उत क्रतु
(अग्निः २८०) १।२७।९ (परुच्छेपो देवोदासि । अग्निः)
[१०८४] १।१७५।६ =
(१०९०) १।१७६।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यथा पूर्वो यो जरितृभ्य इन्द्र मयद्वापो न
तृप्यते बभूय । तामनु स्वा निविद् जोहवीमि
विद्यामेष वृजनं जीरदानुम् ॥
[१०८५] १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः ।)
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ।
९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः गोमः)
[] १।१७६।१ ऋचायमाण इन्वति ।
(६५) १।१०।८ —मिन्वतः ।
[१०८६] १।१७६।२ = (३६) १।७।९
[] १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यवं न चर्षकृद् वृषा ।
१।२३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । पृषा)
[१०८७] १।१७६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
यस्य विश्वानि हस्तयोः ।
(२०६७) ६।४५।८ (अयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
[१०८९] १।१७६।५ = (११) १।४।८
[१०९०] १।१७६।६ = (१०८४) १।१७५।६
[१०९१] १।१७७।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
राजा कृष्टीनां पुरुहन् इन्द्रः ।
(१४९२) ४।१७।५ (वामदेवो गोतमः । इन्द्रः)
[] १।१७७।१ युक्त्वा हरी वपणा याव्यर्वाङ् ।
(१७६८) ५।४०।४ युक्त्वा हरिभ्यामुप यागर्वाङ् ।
[१०९३] १।१७७।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
सुतः सामः परिषिक्ता मधूनि ।
(२१८७) ७।२४।२ (वामिष्टो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
[१०९५] १।१७७।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।

(१९४६) ६।२५।९ (भग्नहाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

एवा इन्द्र ।

विशाम . . . ।

(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)

एवा . . . इन्द्र ।

विशाम . . . ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[११००] २।१।२ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

सजो मर्दिगिद्र परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वा ।

(२१६३) ७।२१।३ (वरिणो मन्त्रावरणिः । इन्द्रः)

सोवन्वा अपम्बः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वा ।

[११०४-५] २।१।४-५ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

दासीर्विशः सूर्येण सखाः ॥४॥

गृहा हित गृह्य गृहहमसु ॥५॥

(१३६०) ३।३९।६ (विश्वामित्रो गांविनः । इन्द्रः)

गृहा हिते— ।

(२८१०) १०।१४।८ (प्रयुचन्त्यः । इन्द्रः)

दासी— ।

गृहा— ।

[११११] २।१।११ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

पिवापिबेदिन्द्र शूर सोम ।

(२४८०) १०।२२।१५ (विभद ऐन्द्रः पाजापत्यो वा

यमुकृद्धा वामुकः । इन्द्रः)

['] २।१।११ मन्तु त्वा मन्दिनः सुताम ।

१।१३४।२ (परुच्छिपो देवादाभिः । वायुः)

मन्तु त्वा मन्दिनो वार्यविन्दवो ।

[११२१] २।१।२१-१।१७।१-१।१५।१०-१।१८।९

-१।१८।९ २।१७।९ = १।१९।८ २।१८।९

= १।२०।६ २।१९।९ = १।२१।६ २।२०।९

(गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

नून मा ते प्रति वर जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा

मघोनी ।

शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वेदेम

विदधे सुवीराः ॥

[११२४] २।१२।३ यो हन्वाहिमरिणान सप्त सिन्धून् ।

(१५९९) ४।२८।१=१०।६७।१२ (अयाम्य आगिरगः ।

बृहस्पतिः)

अहन्नहिम ।

[११३३] २।१२।१० य गत रश्मिर्बृषभस्तुविष्मान् ।

(अग्निः १७६०) ४।५।३ (वागदेवो गातमः । वैश्वानरोऽग्निः)

सह्येता बृषभस्तुविष्मान् ।

['] २।१२।१० - (७२६) १।३०।१०

[११३५] २।१२।१४ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

पचन्त यः शसन्त यः शशमानमूती ।

(१२१०) २।२०।३ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

य शसन्त यः शशमानमूती पचन्त ।

[११३६] २।१२।१५ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

वय न इन्द्र विश्वह प्रियास ।

८।४८।१४ (प्रगाथो घोरः काण्वः । गोमः)

वय सोमस्य विश्वह प्रियास ।

[] २।१२।१५ सुवीरामो विदधमा वदेम ।

१।११७।२५ (कक्षावान आग्निजो दर्धनमगः । अश्विनो)

[११३८-४०] २।१३।२-४ यस्ताकृणोः प्रथम सास्युक्थ्यः ।

[११४५] २।१३।९ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

एकस्य श्रुणो यद्ध चोदमाविथ ।

(१६७) ८।३।१२ (मे यातिभिः काण्वः । इन्द्रः)

अग्नौ नो अस्य यद्ध पौरमाविथ ।

[११४९] २।१३।१३ =

(११६१) २।१४।१२ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

अस्मभ्य तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते

वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु यन् बृहद्वेदेम

विदधे सुवीराः ॥

[११५०] २।१४।१ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

अध्वर्यवो भग्नेन्द्राय सोमम् ।

१०।३०।१५ (कवप ऐन्द्रः । आपः अपानपान वा)

अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोमम् ।

[११५१] २।१४।२ (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

अध्वर्यवो — ।

तस्मा एत भरत तद्वशाय ।

२।३७।१ (गृत्समदः शानकः । द्रविणेता कृतवन्धः)

— अ वर्धवः — ।

तस्मा एत भरत तद्वशो ददि ।

[११५९] २।१४।१० (गृत्समदः शानकः । इन्द्रः)

सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।

— दिव्यन्तम् ॥

(१९०६) ६।२३।९ (भग्नहाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

सोमे— । — सुविम ॥

[११६१] २।१४।२ = (११४९) २।१३।१३
 [११६२] २।१।१ = (७१७) १।३।३
 [११६३] २।१।२ = (८४०) १।१०।२
 [११६३-७०] २।१।२-९ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ।
 [११७१] २।१।१० = (११२१) २।११।२१
 [११८०] २।१।९ = (११२१) २।११।२१
 [११८४] २।१।४ (गुणमदः शानकः । इन्द्रः)
 अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्जन्मना ।
 रोदसी ।
 ९।११०।९ (अयमण्यत्राणं वगदग्गु, पास्कुम्भ्य ।
 पवमान सोमः)
 अध रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्जन्मना ।
 [११८६] २।१।६ - (११२१) २।११।२१
 [११९२] २।१।३ (गुणमदः शानकः । इन्द्रः)
 हरी ।
 सो बहवो नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
 (१३१६) ३।३।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 मा हरी नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
 यन्त्रता ।
 [११९६] २।१।७ (गुणमदः शानकः । इन्द्रः)
 ब्रह्मा हरी ... ।
 अस्मिन्नु सवने मादयस्व ।

(२१८४) ७।२३।५ (वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 अस्मिन् ... ।
 (२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 ब्रह्मकृति हरिभिः ... ।
 अस्मिन्नु सवने मादयस्वोप प्रदाणि ।
 [११९८] २।१।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२०५] २।१।७ = (११७६) १।१७।८
 [१२०७] २।१।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२१०] २।२०।३ = (११३५) २।१२।१४
 [१२१२] २।२०।५ (गुणमदः शानकः । इन्द्रः)
 अश्वस्य चिच्छिन्नयन् पूर्व्याणि ।
 (अग्नि ९७३) ६।४।३ (मरुद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 [१२१६] २।२०।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२१८] २।२।२ (गुणमदः शानकः । इन्द्रः)
 अषाढहाय सहमानाय बेधसे ।
 ७।४६।१ (वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 अषाढहाय — ।
 [१२१९] २।२।३ = (७१५) १।३।२।२
 [१२२३-२५] २।२।१-३ सैन सश्वदेवो देव सत्यमिन्द्र
 सत्य इन्दुः ।
 [१२२६] २।२।४ दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
 १।१०।१।६ (जित आच्यः, कुम्भ आदिगम्भो वा । विश्वेदेवाः)
 दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[१२३२] ३।३।२ अयिगथ वृष्णे सवना कृतेमा ।
 (अग्नि ४६६) ३।१।२० (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा ।
 [१२५०] ३।३।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि ।
 (१२८९) ३।३।८ = (१३०६) ३।३।६
 [१२५४] ३।३।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 ब्रह्मद्विषे तपुषि हतिमस्य ।
 ६।५।३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 [१२५७] ३।३।२० = (१४३२) ३।५।४
 (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इमं काम मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राक्षसा पप्रथश्वा
 स्वयं चो मतिभिस्तुभ्य विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकामो
 अकन ।

[१२५८] ३।३।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
 (१२७३) ३।३।१४ (कुशिको भारद्वाजः विश्वामित्रो
 गाथिनो वा । इन्द्रः)
 अस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः ।
 (१५६४) ४।२२।१० (वामदेवो गाथिनः । इन्द्रः)
 अस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
 [१२५९] ३।३।२२ = (१२८१) ३।३।२२ = (१२९८)
 ३।३।१७ = (१३११) ३।३।११ = (१३२२)
 ३।३।११ = (१३३३) ३।३।११ = (१३५४)
 ३।३।१० = (१३६३) ३।३।९ = (१३९८)
 ३।३।८ = (१४२३) ३।४।५ = (१४२८)
 ३।४।५ = (१४३३) ३।५।५ = (२६७९)
 १०।८९।१८

= (२७१३) ३०१०४।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं
वाजसातौ ।

भृग्वन्तमुग्रमूतये समस्तु मन्तं वृत्राणि संजितं
धनानाम् ॥

[१२६७] ३।३।१८ (कुणिक णेपीरगि विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
इन्द्रः)

प्रतिमानं विश्वावेदं जनिमा हन्ति शुष्णम् ।

(२७२९) १०।११।५ (अष्टादशो वैरूप । इन्द्रः)

प्रतिमानं विश्वावेदं सवना हन्ति शुष्णम् ।

[१२६८] ३।३।१९ = (अग्निः २०३) १।७२।९
(पराशर शाक्यः । अग्निः)

[१२७३] ३।३।१४ = (१२५८) ३।३०।२१

[१२७५] ३।३।१६ = (अग्निः ४५१) ३।१।५
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१२७६] ३।३।१७ (कुणिक णेपीरगि विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
इन्द्रः)

अनु कृष्णे वसुधितौ जिहति ।

४।४८।३ (वामदेवो गौतम । वायुः)

वसुधितौ येमते ।

[१२७७] ३।३।१८ = (अग्निः ४६५) ३।१।१९
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१२८०] ३।३।२१ (कुणिक णेपीरगि विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
इन्द्रः)

गोपति ।

दुरश्च विश्वा भवृणोदप स्वाः ।

(२७७१) १०।१२०।८ (वृष्टिर्व आपवर्षण । इन्द्रः)

गोत्रस्य दुरश्च ।

[१२८१] ३।३।२२ = (१२५९) ३।३०।२२

[१२८५] ३।३।२४ अमर्मणो मन्यमानस्य मर्म ।

(१७०९) ५।३२।५ अमर्मणो विद्विदस्य मर्म ।

[१२८८] ३।३।२७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

इन्द्रं बृहन्तमृत्वमजरं युवानम् ।

(१८७२) ६।१९।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

इन्द्रं बृहन्त ।

६।४९।१० (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः)

बृहन्तमृत्वमजरं सुपुत्रम् — ।

[१२८९] ३।३।२८ = (१२५०) ३।३०।२३

["] ३।३।२८ दाधार यः पृथिवीं यासुतेमाम् ।

(१३०८) ३।३।२८ समान यः ।

[१२९२] ३।३।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

अहन्नहिं परिशयानमर्मणः ।

(१५२३) ४।१९।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

अवासृजन्त ।

अहन्नहिं ।

(१९७१) ६।३०।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

अहन्नहिं परिशयानमर्मणोऽवासृजो ।

[१२९८] ३।३।१७ = (१२५९) ३।३०।२२

[१३०२] ३।३।२ = (अग्निः १७१९) १।५९।५

(नोधा गौतम । अग्निर्वैश्वानरः)

[१३०५] ३।३।५ = (अग्निः १९५) १।७२।१
(पराशर शाक्यः । अग्निः)

[१३०६] ३।३।६ = (१२५०) ३।३०।२३

[१३०७] ३।३।७ = (अग्निः १७२१) १।५९।५

[१३०८] ३।३।८ = (अग्निः २५१) १।७९।८
(गौतमो राहृगणः । अग्निः)

["] ३।३।८ = (१२८९) ३।३।८

[१३११] ३।३।११ = (१२५९) ३।३०।२२

[१३१२] ३।३।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।

... इन्द्र ... ।

(२१८३) ७।२३।४ (वमिष्टो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)

इन्द्र ।

याहि ... ।

[१३१५] ३।३।४ = (अग्निः ५७३) ३।२९।१६
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१३१६] ३।३।५ = (११९२) २।१८।३

[१३१७] ३।३।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या ।

१०।१४।५ (यमो वैवस्वतः । यमः)

... निषद्या ।

[१३२२] ३।३।११ = (१२५९) ३।३०।२२

[१३२४] ३।३।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

इन्द्रं पिव वृषधूतस्य वृष्णः ।

(१३९७) ३।४३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

[१३२९] ३।३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं
सुषुतं भरन्तः ।

(१८७५) ६।१९।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ।

- १०३०।१३ (कषण ऐल्मः । आपः अपानपात्वा)
 इन्द्राय सोमं सुषुतं भरमती ।
 [१३३३] ३।३०।११ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३३५] ३।३०।२ = (९३९) १।८४।३
 [१३३८] ३।३०।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
 (३०९) ८।११।२२ (पवन काण्वः । इन्द्रः)
 ९।६।१२२ (अमहीयुगाङ्गिरसः । पवमान सोमः)
 [१३४१] ३।३०।८ पाहि । इन्द्र सोमं शतक्रतो ।
 (६३४) ८।७६।७ इन्द्र ... पिबा सोमं ।
 [१३४४] ३।३०।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अर्वावतो न आ गच्छथो शक्र परावत ।
 इन्द्रेह तत आ गहि ।
 (१३७१) ३।४०।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन ।
 (१३७२) ३।४०।९
 परावतमर्वावतम् ।
 इन्द्रेह तत आ गहि ।
 [१३५२] ३।३८।८ हिरण्ययाममति यामशिश्नेत् ।
 ७।३८।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता)
 [१३५४] ३।३८।१० = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३६०] ३।३९।६ = (११०५) २।११।५
 [१३६३] ३।३९।९ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३६७] ३।४०।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्र सोमा. सुता इमे ।
 (१३८६) ३।४०।५ इन्द्र सोमाः सुता इमे ।
 [१३६९] ३।४०।६ = (६४) १।१०।७
 [१३७१] ३।४०।८ = (१३४४) ३।३०।११
 [१३७२] ३।४०।९ = (१३४४) ३।३०।११
 [१३७४] ३।४१।२ = (अमि. १९१०) १।१३।५
 [१३७८] ३।४१।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः) =
 (२०८६) ६।४५।२७ (शंयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
 स मन्द्रस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे ।
 न स्तोतारं निदे कर. ।
 [१३७९] ३।४१।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र स्वायवो । वसो ।
 (२२६६) ७।३१।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र स्वायवो । वसो ।
 (२७८३) १०।१३३।६ (सुदाः पैजवन । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र स्वायवः ।

- [१३८१] ३।४१।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 वहतामिन्द्र केशिना ।
 (३९५) ८।१७।२ (हरिम्बिर्वाठः काण्वः । इन्द्रः)
 [१३८२] ३।४२।१ = (८१) १।१६।४
 [१३८५] ३।४२।४ = (८०) १।१६।३
 [१३८६] ३।४२।५ = (१३६७) ३।४०।४
 [१३८७] ३।४२।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 विष्ठा हि त्वा धनजय ।
 अधा ते सुस्रमीमहे ।
 (४५५) ८।४५।१३ (त्रिशोक काण्वः । इन्द्रः)
 विष्ठा .. ।
 (अमिः १३८८) ८।७५।१६ (विष्प आङ्गिरसः । अमिः)
 विष्ठा हि .. ।
 अधा ते सुस्रमीमहे ।
 (२३७४) ८।९८।११ (वृमव आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [१३८९] ३।४२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 सोमं चोदामि पीतये ।
 (२२९७) ८।६८।७ (पियमेष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 इन्द्रं चोदामि पीतये ।
 [१३९३] ३।४३।३ इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।
 (२२१४) ७।२९।२ अर्वावानो हरिभिः— ।
 [१३९६] ३।४३।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 आ त्वा ब्रह्मन्तो हरयो युजाना वहन्तु ।
 (२०५४) ६।४४।१९ (शयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
 आ त्वा हरयो वृषणो युजाना ।
 वहन्तु ।
 [१३९७] ३।४३।७ = (१३२४) ३।३६।२
 [१३९८] ३।४३।८ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३९९] ३।४४।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 जुषाण इन्द्रं हर्गभिर्न आ गहि ।
 ८।१३।१३ (नागद काण्वः । इन्द्रः)
 इन्द्रं सप्तिभिर्न ।
 [१४०२] ३।४४।४ = १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषा)
 [१४१०] ३।४६।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 एको विश्वस्य भुवनस्य राजा जनान् ।
 (२०३४) ६।३६।४ (नरा भारद्वाजः । इन्द्रः)
 जनानामेको— ।
 [१४१५] ३।४७।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 सजोषा इन्द्रं सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा
 शूर विद्वान् ।

- (१४५२) ३।५२।७ अपपमद्भिः सगणो मरुद्भिः ।
 [१४१६] ३।४७।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
 (१४४१) ३।५१।८ पाहि सोमं मरुद्भिर्दिन्द्र सखिभिः
 सुत नः ।
 [१४१८] ३।४७।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः) =
 (१८८१) ६।१९।११ (भग्नराजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 मरुत्वन्तं वृषभ वावृधानमकवारि दिव्य शासमिन्द्रम् ।
 विश्वासाहमवसे नूतनाथोम सहोदामिह त हुवेम ॥
 [१४२२] ३।४८।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 यथावशं तन्व चक्र एषः ।
 ७।१०।१३ (वसिष्ठो मेधावर्णः । [व्राष्टकामः]
 कुमार आम्नयो वा । पञ्चन्यः)
 [१४२३] ३।४८।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४२८] ३।४९।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४३०] ३।५०।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 हरयः सर्गिष पिबा त्व१स्य सुपुतस्य चारोः ।
 (२२१३) ७।२९।१ (वसिष्ठो मेधावर्णः । इन्द्रः)
 . हरिषः ।
 पिबा ।
 [१४३२] ३।५०।४ = (१२५७) ३।३०।२०
 [१४३३] ३।५०।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४३८] ३।५१।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 पूर्वाग्न्य निषिधो मत्स्येषु ।
 (२०४६) ६।४४।११ (जयबोहस्पत्यः । इन्द्रः)
 पूर्वाष्ट इन्द्र निषिधो जनेषु ।
 [१४३९] ३।५१।६ = (७०८) १।३०।१०
 [१४४१] ३।५१।८ = (१४१६) ३।४७।३
 [१४४३] ३।५१।१० (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 सुतं . ।
 पिबा त्व१स्य गिर्वणः ।
 (११२) ८।१।२६ (मेधातिथि-मेधातिथ्या काण्वः । इन्द्रः)
 पिबा त्व१स्य गिर्वणः सुतस्य ।
 [१४४६] ३।५२।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

- धानावन्त करम्भिनमपूपवन्तमुक्थिनम् ।
 (१७८४) ८।९।१२ (अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)
 [१४४८] ३।५२।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 (१६६०) ४।३२।१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 जोषयासे गिरश्च न । वधूयुरिव योषणाम् ।
 ३।६२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पृषा)
 जुषस्व गिरं । वधूयुरिव योषणाम् ।
 [१४५२] ३।५२।७ = (१४१५) ३।४७।२
 [१४५५] ३।५३।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 एदं बर्हिर्ह्यजमानस्य सीदा ।
 (१२२४) ६।२३।७ (भग्नराजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 [१४५७-५८] ३।५३।५-६ यत्रा रथस्य बृहतो निधानः ।
 [१४५९] ३।५३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 .. अंगिरसो ... दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
 ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।
 १०।६७।२ (अयाम्य आगिरम् । बृहस्पतिः)
 दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
 अंगिरसो
 ७।१०।१० (वसिष्ठो मेधावर्णः । मण्डकाः । पञ्चन्यस्तुति-
 मष्टा)
 ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।
 [१४६४] ३।५३।१२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 य इमे रोदसी उभे ।
 (२५२) ८।६।१७ (वन्य काण्वः । इन्द्रः)
 रोदसी मही ।
 ९।१८।५ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः गौतमः)
 रोदसी मही ।
 [१४६५] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
 (१७९०) ८।२४।१ (विश्वमना वेथवः । इन्द्रः)
 [] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 करदिवः सुराधसः ।
 १।२३।६ (मेधातिथि काण्वः । मित्रावरुणो)
 करतां न. सुराधसः ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थ मण्डलम् ।

- [१४७१] ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 उभे आ पशौ रोदसी महिष्वा ।
 ३।५४।१५ (प्रजापतिर्विश्वामित्रः, प्रजापतिवान्यो वा ।
 विश्वेदेवाः)

- [१४७२] ४।१६।६ विश्वानि शक्रा नर्याणि विद्वान् ।
 (२१६४) ७।२१।४ अपाग्नि विश्वा ।
 ['] ४।१६।६ = (अग्निः ६४१) ४।१।१५
 (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

- [१४७८] ४।१६।१२ = (१०७३) १।१७४।५
 [१४८६] ४।१६।२० ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।
 १०।३९।१४ (घोषा काक्षावता । अरिवर्ना)
 अतक्षाम भृगवो ... ।
 [१४८७] ४।१६।२१ = (१५०८) ४।१७।२१
 (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.) =
 (१५३२) ४।१९।११ = (१५४३) ४।२०।११ =
 (१५५४) ४।२१।११ = (१५६५) ४।२२।११ =
 (१५७६) ४।२३।११ = (१५८७) ४।२४।११
 नृ द्युत इन्द्र नू गृणान इष जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।
 अकारिते हरिवो ब्रह्म नव्य धिया स्याम रथ्यः सदासाः ।
 ४।५६।४ (वामदेवो गौतमः । यावापृथिवी)
 नृ ।
 धिया स्याम रथ्य सदासाः ।
 [१४८८] ४।१७।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 सृजः सिन्धूरहिना जम्बसानान् ।
 (२७३३) १०।११।१९ (अष्टादशो वैष्णवः । इन्द्र.)
 [१४९०] ४।१७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 वधीद् वृषं वज्रेण मन्दमानः ।
 (२५२७) १०।२८।७ (वसुक्र कृषिः । इन्द्र.)
 वधी वृष वज्रेण मन्दमानः ।
 [१४९२] ४।१७।५ = (१०९१) १।१७७।१
 [१४९४] ४।१७।७ त्व प्रति प्रवत आशयानमहि वज्रेण
 मघवन् वि वृश्च ।
 (१५२४) ४।१९।३ सत प्रति प्रवत आशयानमहि
 वज्रेण वि रिणा अपर्वन ।
 [१५०१] ४।१७।१४ त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
 (अग्निः ६३७) ४।१।११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः.)
 महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
 [१५०३] ४।१७।१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 गव्यन्त इन्द्र सख्याय विप्रा अश्वान्तो वृषण वाजयन्त ।
 (२७७५) १०।१३।३ (सुकान्तिः काक्षावत । इन्द्र.)
 [१५०८] ४।१७।२१ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५१२] ४।१८।४ नही न्वस्य प्रतिमानमस्ति ।
 (१८६७) ६।१८।१२ नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति ।
 [१५१३] ४।१८।५ आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
 (अग्निः ४८१) ३।६।२ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः.)
 आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
 [१५१५] ४।१८।७ = (९०९) १।८०।१०
 [१५१९] ४।१८।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 दे० [इन्द्रः] ३०

- वृत्रमित्रो.. हनिष्यन्मस्ये विष्णो वितर वि क्रमस्व ।
 (९९९) ८।१००।१२ (नेमो भार्गव । इन्द्र.)
 सखे विष्णो वितर वि क्रमस्व ।
 हनाव वृत्र... ।
 [१५२३] ४।१९।२ = (१२९२) ३।३०।११
 [१५२४] ४।१९।३ = (१४९४) ४।१७।७
 [१५२६] ४।१९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 त्व वृत्रो अरिणा इन्द्र मिन्धुन् ।
 (३१५७) ४।४२।७ (त्रमदग्य पौनिकुम्य । इन्द्रा इम्णा)
 [१५२९] ४।१९।८ = (९०९) १।८०।१०
 [१५३२] ४।१९।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५३५] ४।२०।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 पुरो दधत सनिष्यमि क्रतु न ।
 (१७०२) ५।३१।११ (अवगुगुत्रयः । इन्द्र.)
 [१५३८] ४।२०।६ उद्व कोश वसुना न्यृष्टम् ।
 (२५४७) १०।४२।२ कोश न पर्ण वसुना ।
 [१५४३] ४।२०।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५५३] ४।२१।१० = (८९१) १।६३।७
 [] ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 भक्षीय तं वसो दैव्यस्य ।
 ५।५७।७ (ग्यावाश्व आत्रेय । मरुतः.)
 भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ।
 [१५५४] ४।२१।११ = (१५४३) ४।२०।११
 [१५५७] ४।२१।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुक्रैः ।
 (२०१४) ६।३०।४ (सुतेत्रो भार्गवः । इन्द्र.)
 [१५५९] ४।२१।५ = (७५७) १।५१।१३
 [१५६३] ४।२१।९ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ।
 (२१९४) ७।२५।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 [१५६४] ४।२१।१० = (१२५८) ३।३०।११
 [१५६५] ४।२१।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५६८] ४।२३।४ = (३२६२) १।१६।५३
 [१५७६] ४।२३।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५७९] ४।२४।३ रिक्त्रिवांसस्तन्त्रः कृण्वत ग्राम ।
 (अग्निः १९९) १।७०।५ (पराशर आक. ५. ५. अग्निः.)
 कृण्वत स्थाः ।
 ["] ४।२४।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र.)
 वि ह्यन्ते यमाके ।
 उभयासो नरस्तोकस्य तनयस्य सासौ ।

(३१८०) ७।८२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रावरुणौ)
हवन्त उभये स्पृष्टि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ।

[१५८७] ४।२४।११ = (१४८७) ४।१६।२१

[१५९१] ४।२५।४ (वामदेवो गौतम । इन्द्रः)

ज्योक्पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।

य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।

६।५२।५ (ऋजिदेवा भारद्वाजः । विश्वेदेवः)

पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

(३३०१) ७।१०४।२४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः ।

(रक्षोहर्णा) इन्द्रासो मो)

मा ते दशन्सूर्यमुच्चरन्तम् ।

१०।५९।४ (वन्धुः श्रुतवन्धुर्विप्रवन्धुगोपायना ।

निर्ऋतिः सोमश्च)

पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।

१०।५९।६ (वन्धुः श्रुतवन्धुर्विप्रवन्धुगोपायना ।
अमुनातिः)

ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ।

(१७५०) ५।३७।१ (अग्निर्भोमः । इन्द्रः)

य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।

[१५९२] ४।२५।५ उर्वम्मा अदितिः शर्म यंसत् ।

१।१०७।२ (कुन्स आङ्गिरसः । विश्वेदेवाः)

आङ्गिरसा अदिति शर्म यंसत् ।

१५९७] ४।२६।२ सम देवासो अनु केतमायन् ।

(अग्निः १५२६) १०।६।७ (त्रित आन्यः । अग्निः)

न ते देवासो ।

१६०४] ४।२९।१ (वामदेवो गौतम । इन्द्रः)

तिरश्चिदर्यः सवना पुन्यि ।

(६०४) ८।६६।१२ (कलि पागायः । इन्द्रः)

तिरश्चिदर्यः सवना वसो गहि ।

[१६२५] ४।३०।२० (वामदेवो गौतम । इन्द्रः)

शतममन पुराम् ... ।

दिवोदासाय दाशुषे ।

(अग्निः १०४६) ६।१६।५ (भारद्वाजो बार्हगपत्यः । अग्निः)

दिवोदासाय सुन्वते ।

... दाशुषे ।

(२००९) ६।३१।४ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)

शतानि .. पुरो... ।

दिवोदामाय सुन्वते सुनके ।

[१६२६] ४।३०।२१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

अस्वापयद्भीतये... हयैः ।

(२१४३) ७।१९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)

अस्वापयो दभीतये सुहन्तु ।

[१६२८] ४।३०।२३ करिष्या इन्द्र पौंस्यम् ।

(१७५) ८।३।२० = (१८२) ८।३२।३ कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।

[१६३३] ४।३१।४ अभी न आ ववृत्स्व ।

१०।८३।६ (मन्युस्तापसः । मन्युः)

मन्यो वज्रिज्जभि मामा ववृत्स्व ।

[१६४०] ४।३१।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

सख्याय स्वस्तये ।

(३३३०) ६।५७।१ (भारद्वाजो बार्हगपत्यः । इन्द्राप्रुषणो)

[१६४१] ४।३१।१२ = (१००८) १।१२९।९

[१६४५] ४।३२।१ महान् महीभिरुतिभि ।

(अग्निः ४६५) ३।१।१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[१६५२] ४।३२।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्विस्ससि स्तुतो मघम् ।

स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ।

(३५७) ८।१४।४ (गोपृत्तयश्चसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

न ते वर्तासि ।

यद्विस्ससि स्तुतो मघम् ।

(१८६) ८।३२।७ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।

[१६५३] ४।३२।९ अभि त्वा गोतमा गिरा ।

(अग्निः २३९) ०।७८।१ (गौतमो गृह्मणः । अग्निः)

[१६५५] ४।३२।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

वेधसो ... ।

सुतोष्विन्द्र गिर्वणः ।

(२३७७) ८।९९।२ (तृमध आगिरसः । इन्द्रः)

वेधसः ।

सुतोष्विन्द्र गिर्वणः ।

[१६५६] ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

पेषु धा वीरवयशः ।

५।७९।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उषा)

[१६५७] ४।३२।१३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

(६०७) ८।६५।७ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् ।

तं त्वा वयं हवामहे ।

(अग्निः १३३२) ८।४३।२३ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)

तं त्वा वयं हवामहे ।

[१६६०] ४।३२।१६ = (१४४८) ३।५२।३

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[१६६७] ५।२९।१ श्री रोचना दिव्या धारयन्त ।

२।२७।९ (कूर्मो गार्ग्यमदो, गृत्समदो वा । आदित्यः)

[१६६९] ५।२९।३ अहन्नहि पवित्रो इन्द्रो अस्य ।

(१६९२) ५।३०।११ पुग्दरः पवित्रो इन्द्रो अस्य ।

[१६७५] ५।२९।१० (गौरिवीति आक्यः । इन्द्रः)

नि दुर्योण आवृणङ् मृधवाचः ।

(१७१२) ५।३१।८ (गातुरात्रेयः । इन्द्रः)

—मृधवाचम् ।

[१६७८] ५ २९।१२ दशगवांसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।

६।५०।१५ (ऋजिवा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)

भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।

[१६७९] ५।२९।१३ वीर्या मघवन्त्या चकर्थ ।

(१६९८) ५।३१।६ प्र नूतना मघवन्त्या चकर्थ ।

[१६८९] ५।३०।८ (बभ्रुगत्रेयः । इन्द्रः)

शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।

(१८८९) ६।२०।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[१६९२] ५।३०।११ = (१६६९) ५।२९।३

[३३३८] ५।३०।१३ (बभ्रुगत्रेयः । ऋणचयेन्द्रो)

अकतोऽयुष्टौ परितकम्यायाः ।

(१९३६) ६।२४।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

— परितकम्यायाम् ।

[१६९५] ५।३१।३ = (अग्निः ६३९) ४।१।१३

(वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[१६९६] ५।३१।४ अवर्धयन्नहये हन्तवा उ ।

(२३४९) ८।९६।५ मरुच्युतमहये हन्तवा उ ।

[१६९८] ५।३१।६ (अवस्युगत्रेयः । इन्द्रः)

प्र ते पूर्वाणि करणानि वोच प्र नूतना मघवन्त्या चकर्थ ।

(२२८३) ७।९८।५ (वसिष्ठो मेधावर्णिः । इन्द्रः)

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।

[१७०२] ५ ३१।११ = १।१२।१३ (कक्षीवान् आंगिजो

दैधतमसः । विश्वेदेवा इन्द्रो वा)

["] ५।३१।११ = (१५३५) ४।२०।३

[१७०९] ५।३२।५ = (१२८५) ३।३२।४

[१७११] ५।३२।७ (गातुरात्रेयः । इन्द्रः)

इन्द्रो ..महते ..वधः । विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ।

(२२८६) ७ १०४।१६ (वसिष्ठो मेधावर्णिः । इन्द्रः)

इन्द्रः... महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधममाद्रीष्ट ।

[१७१२] ५।३०।८ = (१६७६) ५।२९।१०

[१७२१] ५।३३।५ (सवर्णः प्राजापत्यः । इन्द्रः)

वय ते त इन्द्र ये च नर ।

(२२२१) ७।३०।४ (वसिष्ठो मेधावर्णिः । इन्द्रः)

—ये च देव ।

[१७३३] ५।३४।७ वि दागुं भजति सूनर वसु ।

१।४०।४ (कण्वो घोरः । ब्रह्मणस्पतिः)

[१७३६] ५।३५।१ (प्रभवसुगाक्षिगः । इन्द्रः)

यस्ते साधिष्ठोऽवस ।

अस्मभ्य चर्षणीसहम् ।

(५३१) ८।५३ (बालः) ७ (मे य काण्वः । इन्द्रः)

यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।

(३०८५) ७।९४।७ (वसिष्ठो मेधावर्णिः । इन्द्राग्नी)

अस्मभ्य चर्षणीसहा ।

[१७३७] ५।३५।२ (प्रभवसुगाक्षिगः । इन्द्रः)

यदिन्द्र ।

यद्वा पञ्च क्षितीनाम् आ भर ।

(२०९६) ६।४६।७ (अयुर्वोहस्पत्यः । इन्द्रः)

यदिन्द्र ... ।

यद्वा पञ्च क्षितीनां युष्मभा भर ।

[१७३८] ५ ३५।३ = (६७) १।१०।१०

[१७३९] ५ ३५।४ = (७८८) १।५४।३

[१७४०] ५।३५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।

(२८३४) १०।१७।३ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।

[१७४१] ५।३५।६ (प्रभवसुगाक्षिगः । इन्द्रः)

त्वमिद् वृत्रघ्नतम जनासो वृत्तवर्हिष ।

हवन्ते वाजसातये ।

(२७९) ८।६३।७ (वसु काण्वः । इन्द्रः)

त्वमिद् ।

हवन्ते ... ।

(४२८) ८।३४।४ (नीपानिधिः काण्वः । इन्द्रः)

हवन्ते ।

(३३३०) ६।५७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)

हवेम वाजसातये ।

८।९।१३ (शशकर्मः काण्वः । अश्विनो)

हवेय वाजसातये ।

["] ५।३५।६ = ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)

- [१७४०] ५।३५।७ (प्रभवमुरागिरसः । इन्द्र)
पुरोयावानमाजिषु ।
वाजयन्तम् ।
(अग्नि १४६१) ८।८४।८ (उग्रना काव्य । अग्नि)
पुरो ।
... ..वाजिनम् ।
[१७५०] ५।३७।१ = (१५९१) ४।२५।४
[१७५४] ५।३७।५ (अग्निभोमः । इन्द्र)
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
(अग्नि १५९८) १०।४५।१० (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
प्रिय सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
[१७५७] ५।३८।३ = १।२५।२० (शुन जेप आर्जागर्ति । वरुणः)
[१७६०] ५।३९।३ आ वाज दधि सातये ।
१।६८।७ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
नृमिर्यतो वाजमा दधि ... ।
[१७६३] ५।३९।४ महिष्ठ यो मघोना ।
- ८।११।२० (आसन्न ण्योगिः । आसन्न)

- महिष्ठामो मघोनाम् ।
[१७६४] ५।३९।४ = (६२) १।१०।५
["] ५।३९।५ = (अग्निः ९०२) ५।२१।४
(विश्वामासा आत्रेय । अग्नि)
[१७६५] ५।४०।१ (अग्निभोमः । इन्द्र)
आ याहि सोमं सोमपते पिब ।
(४११) ८।२१।३ (सोमरिः काण्वः । इन्द्रः)
आ याहीम ।
सोमं सोमपते पिब ।
["] ५।४०।१-३ वृषाभिन्द्र वृषाभिर्वृत्रहन्तम् ।
[१७६६-६७] ५।४०।२-३ (अग्निभोमः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अय सुतः ॥३॥
वृषा त्वा वृषण हुवे वज्रिस्त्रिभिरुतिभिः ॥४॥
(३५२-५३) ८।१३।३२-३३ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा ॥३२॥
वृषा त्वा ॥३३॥
[१७६८] ५।४०।४ = (१०९१) १।१७।१

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [१८५७] ६।१८।२ (भग्नाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
स युध्म मत्वा खजकृत्समद्वा ।
(२१५३) ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्र)
युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा ।
[१८६७] ६।१८।२ = (१५१२) ४।१८।४
[१८७१] ६।१९।१ (भग्नाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
उरः पृथुः सुकृतः कर्तुमिभूत् ।
७।६२।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । सूर्यः)
कत्वा कृतः सुकृतः कर्तुमिभूत् ।
[१८७२] ६।१९।२ = (१२८८) ३।३२।७
[१८७३] ६।१९।३ = ३।५४।२२ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वान्यो वा । विश्वेदेवा)
[१८७५] ६।१९।५ = (१३२९) ३।३६।७
[१८७७] ६।१९।७ = (१५७९) ४।२४।३
[१८७८] ६।१९।८ (भग्नाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
वृषणं ... धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
येन वंसाम पृतनासु शदून् ।
(२८४५) १।०४।७४ (सप्तगुरागिरसः । इन्द्रो वैवृणः)
धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
.. वृषणं ।

- (अग्निः १४००) ८।६०।१२ (भर्गः प्रागाधः । अग्निः)
येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।
[१८७९] ६।१९।९ (भग्नाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्रं युञ्जं स्वर्बद्धेह्यस्मे ।
(२०२७) ६।३५।२ (नरो भग्नाजः । इन्द्रः)
[१८८१] ६।१९।११ = (१४१८) ३।४७।५
[१८८८] ६।२०।५ = (१६००) ४।२८।२
[१८८९] ६।२०।६ = (१६८९) ५।३०।८
[१८९३] ६।२०।१० = (१०७०) १।१७।२
[१८९५] ६।२०।१२ = (१०७७) १।१७।९
[१९०५] ६।२१।१० जरितारे अभ्यर्चन्त्यकैः ।
६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवा)
भग्नाजो अभ्यर्चन्त्यकैः ।
[१९०८] ६।२२।२ = (अग्निः ९७९) ६।५।१ (भारद्वाजो
बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[१९२०] ६।२३।३ (भग्नाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमम् ।
... .. कीरये ।
(२०५०) ६।४४।१५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता .. । ... कारुधायाः ।

- [१९२०] दार३।३ दाता वमु स्तुवते कीरये यत् ।
(३३२५) ७।९७।१० धत्तं रयि स्तुवते कीरये चित ।
- [१९२४] दार३।७ = (१४५५) ३।५३।३
[१९२६] दार३।९ = (११५९) २।१४।१०
[१९३६] दार३।९ = (३३३८) ५।३०।१३
[१९४१] दार५ ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
तोके वा गोषु तनये यदाम् ।
दा६।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मन्तः)
यमाम् ।
- [१९४६] दार५।९ = (१०९५) १।१७७।५
["] दार५।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
एवा नः ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त
इन्द्र नूनम् ।
(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुश्चामित्रः । इन्द्रः)
एवा ते ।
गृणन्तो विश्वामित्रा उत ... ।
- [१९४८] दार६।२ = (अग्निः ९९९) दार१०।६ (भरद्वाजो
बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
- [१९४९] दार६।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अतिथिगत्राय शस्य करिष्यन् ।
(२१४७) ७।१९।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
- [१९५०] दार६।४ = (७४३) १।३३।१४
[१९५५-५६] दार७ १-२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमस्य मदे किमस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।
णा वा ये निषदि किते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनास ॥१
सदस्य सदस्य ... सदस्य ... ।
... सन् सदु ... ॥२॥
- [१९५७] दार७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
नहि नु ते महिमानः समस्य ।
(२६१०) १०।५४।३ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः)
क उ नु ते महिमानः समस्य ।
- [१९६४] दार९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वसानो अत्कं सुरभिं हसो कं स्वर्णं नृतविषिणे वभथ ।
१०।१२३।७ (वेनो भार्गवः । वेनः)
स्वर्णं नाम जनत प्रियाणि ।
- [१९७१] दार१०।४ = (१२९२) ३।३२।११
[१९७२] दार१०।५ = (७१८) १।३२।४
२००९] दार११।४ = (१६२५) ४।३०।२०
२०११] दार१२।१ मेहे वीराय तवसे तुराय ।

- दा१४९।१२ (ऋजिस्वा भारद्वाजः । विधेदेवाः)
प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।
- [२०१४] दार१२।४ = (१५५७) ४।२२।३
[२०१७] दार१२।२ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
त्वोत ह्रस्वनिता वाजमर्वा ।
७।५६।२३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
मरुद्विरिस्वनिता वाजमर्वा ।
- [२०२०] दार१३।५ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
ननं न इन्द्रः ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् ।
(३१६८) दार१६।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
नून इन्द्र ... ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् ।
- [२०३४] दार१६।४ = (१४१०) ३।४६।२
[१९९१] दार१७।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
याहि ।
उप ब्रह्माणि शृगव हमा नः ।
(२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
याहि ।
उप — ।
- [१९९२] दार१७।५ = ४।३४।७ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
[१९९५] दार१७।३ = (७३४) १।३३।५
[१९९९] दार१७।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सोमेभिः सोमपातमम् ।
(३०७) ८।१२।२० (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
- [२००२-५] दार१८।१-४ अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ।
[२०३६-३८] दार१८।१-३ सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति
स्वधापते मद् ।
- [२०४०] दार१८।५ = (३०४३) ५।८६।४
["] दार१८।५ (शत्रुबार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
रोदसी देवी शुण्मं सपर्यतः ।
(२४४१) ८।९३।१२ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
देवी शुण्मं सपर्यतः ।
रोदसी ।
- [२०४४] दार१८।९ = १।११०।९ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)
[२०४५] दार१८।१० शत्रुबार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमङ्ग रश्चोदनं त्वाहुः ।
(६६३) ८।८०।३ (एकधूनौषसः । इन्द्रः)
किमङ्ग रश्चोदनः ।
- [२०४६] दार१८।११ = (१४३८) ३।५१।५

- [२०४९] द्वा४४।१४ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 इन्द्रो वृत्राण्यप्रतो जघान ।
 सोमं वीराय शिषिणे पिबन्त्यै ।
 (२१८२) ७।२३।३ (वमिष्टो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 इन्द्रो वृत्राण्यप्रतो जघन्वान् ।
 (२०३) ८।३२।२४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 सोम वीराय शिषिणे ।
 [२०५०] द्वा४४।१५ = (१९२०) द्वा२३।३
 ["] द्वा४४।१५ = (१४९०) ४।१७।३
 [२०५१] द्वा४४।१६ = २।३३।२ (गृन्ममदः औनकः । इन्द्रः)
 [२०५२] द्वा४४।१७ एना मन्दानो जहि शूर शत्रून् ।
 (२७३५) १०।११२।१ हृषस्व इन्तवे शूर शत्रून् ।
 [२०५३] द्वा४४।१८ = (८३१) १।१०।४
 ["] द्वा४४।१८ = (९६७) १।१००।११
 [२०५४] द्वा४४।१९ = (१३९६) ३।४३।६
 [२०५५] द्वा४४।२० घृतपुषो नोर्मयो मदन्तः ।
 १०।६८।१ (अयाम्य आक्षिप्तः । वृहस्पतिः)
 गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तः ।
 [२०५६] द्वा४४।२१ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 वराय ॥
 (अग्निः १७९५) ७।५।२ (वमिष्टो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 वरेण ।
 [२०५८] द्वा४४।२३ अयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।
 (२६१३) १०।५४।६ यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तः
 [२०६१] द्वा४५।३ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 महीरस्य प्रणीतयः पूर्वैरुत प्रशस्तयः ।
 (३०८) ८।१२।२१ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 (३१०९) ८।४०।९ (नामाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
 पूर्वैरुतः प्रशस्तयः ।
 [२०६७] द्वा४५।८ = (१०८७) १।१७।३
 [२०६९] द्वा४५।१० = (६९३) १।२९।२
 ["] द्वा४५।१० (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 तम् वाजानां पते ।
 अहूमहि श्रवस्यवः ।
 (१८०७) ८।२४।१८ (विश्वमना वैयस्यः । इन्द्रः)
 तं ... वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
 [२०७६] द्वा४५।१७ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 स त्व न इन्द्र मृक्य ।

- (६६२) ८।८०।२ (एकयुर्नोधसः । इन्द्रः)
 [२०७९] द्वा४५।२० = (अग्निः १०६१) द्वा१६।२०
 (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 [२०८१] द्वा४५।२२ पुरुहताय सस्वने ।
 (४६३) ८।४५।२१ पुरुहताय सस्वने ।
 [२०८४] द्वा४५।२५ इमा उ त्वा शतक्रतो ।
 (२४०८) ८।९२।१२ वयमु त्वा शतक्रतो ।
 ["] द्वा४५।२५ = (१३७७) ३।४१।५ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 ... णोनुवृर्गिरः ।
 इन्द्र वत्सं न मातरः ।
 [२०८६] द्वा४५।२७ = (१३७८) २।४१।६
 [२०८७] द्वा४५।२८ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 वत्सं गावो न येनवः ।
 ९।१२।२ (अमित्रः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 गावो वत्सं न मातरः ।
 [२०८८] द्वा४५।२९ = (१५) १।५।२
 [२०८९] द्वा४५।३० (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 अस्माकं भूतु ..स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
 ८।५।१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 अस्माकं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
 भूतु ।
 [२०९२] द्वा४६।३ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 इन्द्र तं हूमहे वयम् ।
 (५०९) ८।५१ (वाल०३) ५ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
 ["] द्वा४६।३ = (अग्निः ८३४) ५।९।७ (गय आत्रेयः । अग्निः)
 [२०९३] द्वा४६।४ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 बायमे जनान् ।
 अस्माकं ध्यविता महाधने ।
 (२२५९) ७।३२।२५ (वमिष्टो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 णुदस्व ... अमित्रान् ।
 अस्माकं बोध्यविता महाधने ।
 [२०९६] द्वा४६।७ (अंयुर्बाह्स्पत्यः । इन्द्रः)
 यदिन्द्र नाहुषीष्वा कृष्टिषु ।
 (२६६) ८।६।२४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 यदिन्द्र नाहुषीष्वा ।
 ... विक्षु ।
 ["] द्वा४६।७ = (१७३७) ५।३५।२
 [२०९८] द्वा४६।९ छर्दियच्छ मघवस्यश्च मघं च ।
 ९।३२।६ (शावाश्च आत्रेयः । पवमानः सोमः)
 मघवस्यश्च मघं च ।

- [२१०५] द१४७।७ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः)
 प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
 (अग्निः १५९७) १०।४५।९ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
 प्र त नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
 (अग्निः १४१४) ८।७१।६ मुर्दातिः पुरुमीकहावागिरमो
 तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
 प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
- [२११०] द१४७।१२ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः)
 (२७७६) १०।१३१।६ (मुर्कातिः काष्ठावतः । इन्द्रः)
 इन्द्रः सुत्रामा स्वर्वा अवोभिः सुसुलीको भवतु विश्ववेदाः ।
 बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्वाम ॥
- ['] द१४७।१२ = (२७७६) १०।१३१।६ = (अग्निः ६४६)
 ४।१।२० (वामदेवो गौतमः अग्निः)
- ['] द१४७।१२ = (२७७६) १०।१३१।६ = ४।५१।१०
 . (वामदेवो गौतमः । उपाः)

- [२१११] द१४७।१३ = (२७७७) १०।१३१।७ = (अग्निः ४६७)
 ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
- ['] द१४७।१३ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः) =
 (२७७७) १०।१३१।७ (मुर्कातिः काष्ठावतः इन्द्रः)
 तस्य वय सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्वाम ।
 स सुत्रामा स्वर्वा इन्द्रो अस्मे आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोत ।
 ७।५८६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मरुतः)
 आराचिद् द्वेषो वृष्णो युयोत ।
 १०७७।६ (ग्युमर्गमर्भागवः । मरुतः)
 आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोत ।
- [३३२७] द१४७।२० = १।९१।२३ (गौतमो राहुगणः । सोमः)
 द१४७।२८ (गगो भारद्वाजः । रयः)
 देव रथ प्रति हव्या गृभाय ।
 १।९१।१४ (गौतमो राहुगणः । सोमः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [२१३०] ७।१८।१२ त्वायन्तो ये भमदञ्जनु त्वा ।
 (७७४) १।५२।१५ (सव्य आगिरमः । इन्द्रः)
 विश्वे देवासो भमदञ्जनु त्वा ।
- [२१३८] ७।१८।२० = (७८९) १।५४।४
 (८४५) १।१०३।७ (कुत्स आह्निरसः । इन्द्रः)
- [२१४३] ७।१९।४ भूराणि वृत्रा हर्यश्च हंसिः ।
 (२१७२) ७।२२।२ येन वृत्राणि हर्यश्च हंसि ।
- ['] ७।१९।४ = (१६२६) ४।३०।२१
- [२१४७] ७।१९।८ = (१९४९) ६।२६।३
- [२१५३] ७।२०।३ = (१८५७) ६।१८।२
- ['] ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा ।
 (२५२२) १०।२९।८ (वसुक्तेन्द्रः । इन्द्रः)
 व्यानकिन्द्रः पृतनाः स्वोजाः ।
- [२१६०] ७।२०।१० = (२१७०) ७।२१।१० (वसिष्ठो
 मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 स न इन्द्र त्वयताया इषे धार मना च ये मघवानो जुनन्ति ।
 वसवींषु ते जज्ञिरे अस्तु शक्तिर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः
- [२१६३] ७।२१।३ = (११०२) २।११।२
- [२१६४] ७।२१।४ = (१४७२) ४।१६।६
- [२१७०] ७।२१।१० = (२१६०) ७।२०।१०
- [२१७२] ७।२२।२ = (२१४३) ७।१९।४

- [२१७९] ७।२२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
 (२४८७) १०।२३।७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा
 वसुकृष्ण वामुक्तेन्द्रः । इन्द्रः)
- [२१८२] ७।२३।३ = (२०४९) ६।४४।१४
- [२१८३] ७।२३।४ = (१३१२) ३।३५।१
- [२१८४] ७।२३।५ = (११९६) २।१८।७
- [२१८५] ७।२३।६ यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
 ९।९७।३, ६ (इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
- ['] ७।२३।६ = ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वदेवाः)
- ['] ७।२३।६ = १।१९०।८ (अगम्यो मैत्रावरुणः । बृहस्पतिः)
- [२१८६] ७।२४।१ = (८४७) १।१०४।१
- [२१८७] ७।२४।२ = (१०९३) १।१७७।३
- [२१८८] ७।२४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीविन् ।
 ८७९।४ (कृन्तुर्भागवः । सोमः)
 दिव आ ।
- [२१८९] ७।२४।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 आ नो विश्वाभिरुतिभिः ।
 ८।८।१ = ८।८।१८ (सध्वंगः काण्वः । अध्वनी)
 आ वां विश्वाभिरुतिभिः ।

८।८७।३ (कृष्ण आङ्गिरसो युक्ताको वा वासिष्ठः
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अध्विनो)

आवां विश्वामिरुतिभिः ।

[२१९१] ७।२४।६ = (२१९७) ७।२५।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

एवान इन्द्र वार्यस्य पृथिं प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम ।

इषं पिन्व मघवस्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

[२१९४] ७।२५।३ = (१५६३) ४।२२।९

[२१९७] ७।२५।६ = (२१९९) ७।२४।६

[२२०२] ७।२६।५ = (१०४२) १।१६७।१

[२२१२] ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५ =

(२२२२) ७।३०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

वोचेमेदिन्द्र मघवानमेन महो रायो राधसो यदक्षः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[२२१३] ७।२९।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

अयं सोम इन्द्र तुभ्य सुन्वे ।

९८८।१ (उग्रना काव्यः । पवमानः सोमः)

["] ७।२९।१ = (१४३०) ३।५०।२

[२२१४] ७।२९।२ = (१३९३) ३।४३।३

["] ७।२९।२ = (११९६) २।१८।७

["] ७।२९।२ = (१९९१) ६।४०।४

[२२१७] ७।२९।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२२२) ७।३०।५

[२२२१] ७।३०।४ = (१७२१) ५।३३।५

[२२२२] ७।३०।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५

[२२२६] ७।३१।४ = (१३७७) ३।४१।७

[२२३४] ७।३१।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

इन्द्र वाणीरनुत्तमन्युमव ।

(३०९) ८।२१।२२ (पवतः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्र वाणीरनुत्तमन्युमव ।

[२२३६] ७।३१।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा ।

(२६०७) १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः ... ।

[२२३८] ७।३१।४ = (१८) १।५।५

[२२४०] ७।३१।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

सुनोता च धावति ।

८।३१।५ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)

सुनुत आ च धावतः ।

[२२४२] ७।३१।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

सुनोता ... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।

९।३०।६ (बिदुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

९।५१।२ (उच्चव्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।

... सुनोता ... ।

[२२४४] ७।३१।१० = १।८६।३ (गीतमो राहूगण । मरुतः)

[२२४५] ७।३१।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

अस्माकं बोध्यविता रथानाम् ।

१०।१०३।४ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । बृहरपतिः)

अस्माकमेध्यविता रथानाम् ।

[२२५६] ७।३१।२२ अभि त्वा यूग नोनुमः ।

... इन्द्र ... ।

(१३०) ८।२१।५ अभि त्वां इन्द्र नोनुमः ।

[२२५७] ७।३१।२३ = (९२०) १।८१।५

[२२५९] ७।३१।२५ अमित्रान्सुवेदा नो वसू कृषि ।

६।४८।१५ (संयुर्वाहरपत्यः । मरुतः)

करसुवेदा नो वसू करत् ।

[२२७८] ७।९७।१ नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।

१।१५४।५ (दार्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)

नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।

[२२७९] ७।९८।१ जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।

(अग्निः १७११) १०।१८७।१ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)

वृषभाय क्षितीनाम् ।

[२२८१] ७।९८।३ = (अग्निः १७२१) १।५९।५ (नोधा

गीतमः वैश्वानरोऽग्निः)

[२२८३] ७।९८।५ = (१६९८) ५।३१।६

[३३२५] ७।९८।१० = (३३२५) ७।९७।२०

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्त्रो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।

धत्त रथिं स्तुवते कीरथे विथय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

[२२८६] ७।१०४।१६ = (१७११) ५।३२।७

[२२८७] ७।१०४।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

प्राक्कादपाक्कादधरादुदक्काद् ।

(अग्नि १८४८) १०।८७।२१ (पायुर्भारद्वाजः ।

रक्षोहग्निः)

पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्कात् ।

[२२८८] ३२९७] ७।१०४।२० नूनं सृजदशनिं यातुमन्यः ।

(३३०२) ७।१०४।२५ अशनिं यातुमन्यः ।

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[८९] ८।१।३ (मेधातिथि-मेधातिथी काण्वः । इन्द्रः)

नाना हवन्त ऊतये ।

अस्माकं .. ।

(३८०) ८।१५।१२ (गोधूत्यथसूक्तिनो काण्वान्यो ।

इन्द्रः)

नाना ... अस्माकेभिः स्वर्जय ।

(२२९५) ८६८५ (प्रियमेध आदिरसः । इन्द्रः)

स्वर्मांकेषु ।

नाना ... ।

[९०] ८।१।४ (मेधातिथि-मेधार्थार्थी काण्वः । इन्द्रः)

उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमृतये ।

(अग्निः १४०६) ८।६०।१८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)

इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं — ।

[९८] ८।१।१२ (मेधातिथि-मेधार्थार्थी काण्वः । इन्द्रः)

इष्कर्ता विहृतं पुनः ।

८।२० २६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)

[१०३] ८।१।१७ सोता हि सोममद्विभिः ।

९।३४।३ (त्रित आप्य । पवमान सोमः)

सुन्वन्ति सोममद्विभिः ।

[१०८] ८।१।२२ = (अग्निः १०७) १।४५।८

(प्रस्कण्व काण्वः । अग्निः)

[११०] ८।१।२४ = (३२२२) ४।४६।३ (वामदेवो गान्तमः ।

इन्द्रवायः)

[१११] ८।१।२५ (मेधातिथि-मेधार्थार्थी काण्वः । इन्द्रः)

विवक्षणस्य पीतये ।

८।३५।२३ (श्यावाश्च आत्रेयः । अश्विनौ)

[११२] ८।१।२६ = (१४४३) ३।५१।१०

[१३०] ८।२।१५ = (८८३) १।६२।२२

[१४७] ८।२।३२ (मेधातिथि काण्वः, प्रियमेधश्चादिरसः । इन्द्रः)

इन्द्रः पुरु पुरुहूतः ।

महान् महीभिः शचीभिः ।

(३८८) ८।१६।७ (इरिस्त्रिभिः काण्वः । इन्द्रः)

[१५६] ८।३।१ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)

आपिनो बोधि सधमाद्यो वृधे ।

(५३५) ८।५४ (वाल० ६) । ५ (मार्तरिश्वा काण्वः ।

इन्द्रः)

तेन नो बोधि— ।

[१५९] ८।३।४ समुद्र इव पप्रथे ।

१०।६२।९ (नाभानेदिष्टो मानवः । सावणेर्दानस्तुतिः)

वि सिन्धुरिव पप्रथे ।

[१६०] ८।३।५ = (८०) १।१६।३

[१६१] ८।३।६ इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे ।

(३१५-१७) ८।१२।२८-३० आदिने विश्वा— ।

९।८६।३० (पृथिव्योऽजा । पवमानः सोमः)

तुभ्येमा विश्वा— ।

१०।५६।५ (बृहदुक्तो वामदेव्यः । विदेवेदेवाः)

दै० [इन्द्रः] ३१

तनृषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।

[१६२] ८।३।७ = (अग्निः २४४६) १।६९।९

(मेधातिथि काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)

['] ८।३।७ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

समीचीनास ऋभवः समस्वरन् ।

(३१९) ८।१२।३२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)

समीचीनासो अस्वरन् ।

[१६३] ८।३।८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

अनु ध्रुवन्ति पूर्वथा ।

(३७४) ८।१५।६ (गोपकल्यश्चर्मकनो काण्वायना । इन्द्रः)

[१६७] ८।३।१२ = (११४५) २।१३।९

[१७०] ८।३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

गिरः स्तोमास ईरते ।

वाजयन्तो रथाइव ।

(आसः १३१०) ८।४३।१ (विरूप आदिरसः । आसः)

गिरः— ।

९।६७।१७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

वाजयन्तो— ।

[१७२] ८।३।१७ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)

युक्त्वा... हरीः परावतः ।

उग्र ऋषेभिरा गहि ।

(४९१) ८।४९ (वाल० १) । ७ (प्रस्कण्व काण्वः । इन्द्रः)

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।

..महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ।

(५०१) ८।५० (वाल० २) । ७ (पूर्वाशु काण्वः । इन्द्रः)

यद्ध नूनं परावति यद्वा पृथिव्या दिवि ।

युजान हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ।

[१७५] ८।३।२० (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

कृषे तदिन्द्र पौरुषम् ।

(१८२) ८।३२।३ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)

[२२९] ८।४।१ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

यदिन्द्र प्रागप्रागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।

(६०१) ८।६५।१ (प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)

[२३०] ८।४।२ इन्द्र मादयसे सचा ।

(५१५) ८।५२ (वाल० ४) । १ आयो मादयसे सचा ।

[२४०] ८।४।१२ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

यत्रा सोमस्य नृस्पति ।

तस्येहि प्र ब्रवा पिब ।

(५२८) ८।५३ (वाल० ५) । ४ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)

यत्रा— ।

(५९८) ८।६।१० (प्रगायः काण्वः । इन्द्र)

तस्थहि— ।

[२४०] ८।६।१४ अर्वाञ्च त्वा ससयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप

१।४७।८ (प्रक्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)

अर्वाञ्च वा ससयोऽध्वरश्रियो ।

[२४३] ८।६।१ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

पजन्यो वृष्टिमोहव ।

२।२।९ (मेधातिथि काण्वः । पवमानः सोमः)

[२४५] ८।६।३ = (आभ ९६) १।४४।११

(प्रक्कण्वः काण्वः । अश्विनः)

[२४६] ८।६।४ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

समुद्रायैव सिन्धवः ।

(आर्गन १३६७) ८।४४।२५ (विरूप आर्गन्यः । अश्विनः)

[२४८] ८।६।६ = (९०५) १।८०।६

[२५१] ८।६।९ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

रथि गोमन्तमश्विनम् ।

९।६२।१० (नमर्दभिर्भाग्यः । पवमानः सोमः)

९।६३।१२ (निरुक्वि काश्यपः । पवमानः सोमः)

[२५५] ८।६।१३ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

वृत्र पर्वशो रजन ।

८।७।२३ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः)

वि वृत्र पर्वशो ययु ।

[२५६] ८।६।१४ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

वृत्रा ह्यम शृण्वेषः ।

(२२९) ८।३३।१० (मे गार्ताथिः काण्वः । इन्द्रः)

वृत्रा ह्यम शृण्वेष परावतः ।

[२५७] ८।६।१५ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

यव नान्तरिक्षणि वज्रिणम् ।

विश्व्यचन्तः भूमय ।

(३११) ८।१२।२४ (पर्वत काण्वः । इन्द्रः)

विविक्तो रोदसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।

[२५९] ८।६।१७ = (१४६४) ३।५३।१२

[२६१] ८।६।१९ घृत दुहत आशिरम् ।

१।१३४।६ (परुच्छेपो देवोदासिः । वायुः)

घृत दुहत आशिरम् ।

[२६३] ८।६।२१ कण्वा उक्थेन वावृधु ।

(२८५) ८।६।४३ कण्वा उक्थेनः ।

[२६५] ८।६।२३ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

आ न इन्द्र महीमिषम् ।

९।६५।१३ (मृगुर्वारुणर्जमदभिर्भाग्यो वा ।

पवमानः सोमः)

आ न इन्द्रो महीमिषम् ।

[२६६] ८।६।२४ = (अग्निः ८१०) ५।६।१०

(वसुधृत आत्रेयः । अश्विनः)

["] ८।६।२४ = (२०९६) ६।४६।७

[२६७] ८।६।२५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)

यदिन्द्र मृळयासि न ।

(४७५) ८।४५।३३ (त्रिगोकः काण्वः । इन्द्रः)

[२६८] ८।६।२६ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

यदङ्ग तविषीयस ।

८।७।२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

यदङ्ग तविषीयवो ।

[२७१] ८।६।२९ चिकिन्वो अव पश्यति ।

१।२५।११ (शुन रोप आजार्गतिः । वरुणः)

चिकिन्वो आभ पश्यति ।

[२७४] ८।६।३२ इमा म इन्द्र सुधुतिम् ।

(३१८) ८।१२।३१ इमां न इन्द्र...

[२७६] ८।६।३४ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)

भापो न प्रवता यतीः ।

(३१८) ८।१३।८ (नागदः काण्वः । इन्द्रः)

९।२४।२ (आसितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

[२७७] ८।६।३५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्रमुकथानि वावृधु समुद्रमिव सिन्धवः ।

(२३४१) ८।९।५६ (निरुक्थारार्गतिः । इन्द्रः)

इन्द्रमुकथानि वावृधुः ।

(२४१८) ८।९।२२ (धृतकक्षः मुकक्षो वा आर्दिरगः ।

इन्द्रः)

समुद्रमिव सिन्धवः ।

९।१०।१६ (शक्तिर्वारुण्यः । पवमानः सोमः)

समुद्रमिव सिन्धवः ।

[२७८] ८।६।३६ = (९४०) १।८४।४

[२७९] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६

["] ८।६।३७ = ३।५९।९ (विश्वामित्रो गार्थिनः । मित्रः)

["] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६ =

(४२८) ८।३४।४ हवन्त वाजसातये ।

(३३३०) ६।५७।१ हुवेम वाजसातये ।

८।९।१३ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)

हुवेय वाजसातये ।

- [२८०] ८।६।३८ (वत्सः काण्वः । इन्द्र)
 अनु त्वा रोदसी उभे ।
 (६३८) ८।७।११ (कुरुमुनिः काण्वः । इन्द्र)
 [२८१] ८।६।३९ मन्दस्वा सु स्वर्णरे ।
 (६०२) ८।६।५२ मादयासे स्वर्णरे ।
 (अग्निः २४४७) ८।१०।३।१४ (सोमार्गः काण्वः । अग्रामरुतः)
 मादयस्व स्वर्णरे ।
 [२८३] ८।६।४१ ईशान ओजसा ।
 (३१०५) ८।४।०।५ इन्द्र ईशान ओजसा ।
 [२८७] ८।६।४५ (वत्स काण्वः । इन्द्र) =
 (२०९) ८।३।२।३० (मेघानिधिः काण्वः । इन्द्र)
 अवाञ्छ त्वा पुरुषु प्रियमेधन्तुता हरी ।
 सोमपेयाय वक्षतः ।
 (३६५) ८।१४।१२ (गोपुक्यश्वसक्तिनो काण्वायनो । इन्द्रः)
 [२९१] ८।१२।४ = (३०४।५) ५।८।६।६
 [२९२] ८।१२।५ = (४४) १।८।७
 ["] ८।१२।५ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र)
 इन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्ववक्षिय ।
 (१९१) ८।३।२।१२ (मेघानिधिः काण्वः । इन्द्रः)
 इन्द्रो विश्वाभिरुतिभिः ।
 (५५२) ८।६।१।५ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
 इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
 (२७८७) १०।१३।४।३ (मान्वाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)
 यचीभि शक्र इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
 [२९५] ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ससपते ।
 (२४३४) ८।९।३।५ यद्वा प्रवृद्ध ससपते ।
 [२९६] ८।१२।९ = (१०१८) १।१३।०।८
 [२९७] ८।१२।१० इयं त ऋत्विगावती ।
 (६६७) ८।८०।७ इयं यीर्कृत्विगावती ।
 [२९८] ८।१२।११ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र)
 ऋतु पुनीत आनुषक् ।
 (५३०) ८।५।३ (वाल० ५) ।६ (मे यः काण्वः । इन्द्र)
 ऋतु पुनत आनुषक् ।
 [२९९] ८।१२।१२ = (७९८) १।५।५ २
 [३०१] ८।१२।१४ उत स्वराजे अदिति ।
 ७।६।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
 ["] ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 पुरुप्रशस्तमृतय ऋतस्य यत ।
 (अग्निः १४१८) ८।७।१।१० (मुदीति-पुरुमीळ्हावाङ्गिरस्यौ
 तयोर्वान्यतरः । अग्निः)

- पुरुप्रशस्तमृतये ।
 [३०६] ८।१२।१९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 देवदेवं वोऽवम इन्द्रमिन्द्र गुणार्पणि ।
 ८।२७।१३ (मनुववस्वतः । विश्वेदेवाः)
 . वोऽवसे देव देवममिन्द्रये ।
 गुणन्तो ।
 [३०७] ८।१२।२० = (१९९९) ६।४।२०
 [३०८] ८।१२।२१ = (२०६२) ६।४।५।२
 [३०९] ८।१२।२२ = (१३३८) ३।३।७।५
 ["] ८।१२।२२ = (१००१) १।६।३।१
 ["] ८।१२।२२ = (२२३४) ७।३।१।२
 [३१०] ८।१२।२३ = (३०५५) ६।५।९।२०
 [३११] ८।१२।२४ = (२५७) ८।६।१।५
 [३१२] ८।१२।२५ = (३०९) ८।६।२।०
 [३१२-३१४] ८।१२।२५-२७ आदिते हर्यता हरी यवक्षतुः ।
 [३१३] ८।१२।२६ = (७६१) ६।५।२।०
 [३१४] ८।१२।२७ = १।२।२।१८ (मेघानिधि काण्वः । रिणिण)
 त्रीणि पदा वि चक्रमे ।
 [३१५] ८।१२।२८ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र)
 वावृधाते दिवेदिवे ।
 (५२६) ८।५।३ (वाल० ५) ।० (मे यः काण्वः । इन्द्र)
 वावृधानो दिवेदिवे ।
 [३१५-३१७] ८।१२।२८-३० आदिते विश्वा भुगतापि
 यमिर ।
 [३१८] ८।१२।३१ = (२७४) ८।६।३।०
 [३१९] ८।१२।३२ = (१६२) ८।३।७
 [३२०] ८।१२।३३ = (अग्नि १७५५) ३।०।६।३ (विश्वामिनो
 गाथिनः । वेत्तानगोऽग्निः)
 सुवीर्यं स्वश्रयं ।
 [३२१] ८।१३।१ = (२९८) ८।१२।११
 [३२४] ८।१३।४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
 मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ।
 (३७३) ८।१५।५ (गोपुक्यश्वसक्तिनो काण्वायनो । इन्द्रः)
 [३२६] ८।१३।६ = २।५।४
 [३२७] ८।१३।७ = (३०८०) ७।९।४।०
 [३२८] ८।१३।८ = (२७३) ८।६।३।४
 [३३०] ८।१३।१० = ८।५।५ (ब्रह्मानिधिः काण्वः । अश्विनो)
 गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
 [३३१] ८।१३।११ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
 अश्वेभिः प्रुषितासुभिः ।

८।८७।५ (कृष्ण आङ्गिरसो, शुम्भिको वा वासिष्ठः प्रियमेध
आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)

[३३०] ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्र शविष्ठ सस्वते ।

(२०९१) ८।६८।१ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

["] ८।१३।१२ (३०४५) ५।८६।६

["] ८।१३।१२ = ७।८१।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषा)

श्रवः सुभिभ्यो अमृतं वसुध्वनम् ।

[३३३] ८।१३।१३ = (१३९९) ३।४४।१

[३३४] ८।१३।१४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

मस्त्वा सुतस्य गोमतः ।

(२४२६) ८।९२।३० (श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।

इन्द्रः)

["] ८।१३।१४ = (अग्नि १९१८) १।१४।२।१ (दीर्घतमा
औचथ्यः । आप्रीसक्तं [इभः समिद्धोऽग्निवो])

तन्तु तनुष्व पुर्य ।

[३३५] ८।१३।१५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

यच्छक्रासि परावति यदवावति वृत्रहन् ।

(९७९) ८।९७।४ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)

[३३७] ८।१३।१८ तमिद्विप्रा अवस्ववः ।

९।१७।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

धीभिर्विप्रा अवस्ववः ।

९।६३।२० (निःर्त्तवः काश्यपः । पवमानः सोमः)

[३३८] ८।१३।१८ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

(२४१७) ८।९२।२१ (श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।

इन्द्रः)

त्रिकटुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमस्तत ।

तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ।

९।६१।१४ (अमर्हयुराङ्गिरसः पवमानः सोमः)

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो ।

[३३९] ८।१३।१९ शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ।

(अग्निः १९२०) १।१४।२।३ (दीर्घतमा औचथ्यः ।

आप्रीसक्तं [नराशंसः])

शुचिः पावको अद्भुतः ।

[३४५] ८।१३।२५ धुक्षस्व विप्युषीमिषम् ।

८।७।३ (पुनर्वस्य काण्वः । मरुतः)

धुक्षन्त ... ।

[३४७] ८।१३।२७ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

इह त्या सधमाया ।

(२०८) ८।३२।२९ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

(२४५३) ८।९३।२४ (सुकभ आङ्गिरसः । इन्द्रः)

[३५१] ८।१३।३१ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)

वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।

वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ।

(२२०) ८।३३।११ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

वृषा रथो मघवन वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ।

[३५२] ८।१३।३२ = (१७६६) ५।४०।२

[३५३] ८।१३।३३ = (१७६७) ५।४०।३

[३५६] ८।१४।३ = (अग्नि ९२४) ५।२६।५ (वस्यव
आत्रेयाः । अग्निः)

[३५७] ८।१४।४ = (१६५२) ४।३२।८

[३५९] ८।१४।६ (गोप्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

ते वय विश्वा धनानि जिग्युषः ।

ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ।

९।६५।९ (भृगुवर्षारुणिर्जमदग्निर्भागीवो वा । पवमानः सोमः)

ते.... वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।

सखित्वमा वृणीमहे ।

[३६०] ८।१४।७ (गोप्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

व्यश्नन्तरिक्षमतिरन् ।

(२८२१) १०।१५।३ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)

व्यश्नन्तरिक्षमतिरः ।

[३६५] ८।१४।१२ = (२८७) ८।६।४५

[३६९] ८।१५।१ (गोप्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

तम्बभि प्र गायन पुरुहूतं पुरुहूतं ।

इन्द्रं... ..॥

(२४०१) ८।९२।५ (श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।

इन्द्रः)

तम्बभि प्रार्चतेन्द्रं . ।

(२३९८) ८।९२।२ पुरुहूतं पुरुहूतं ।

इन्द्रं ... ।

[३७१] ८।१५।३ एको वृत्राणि जिहसे ।

(२३४४) ८।९५।९ शुद्धो वृत्राणि जिहसे ।

[३७३] ८।१५।५ = (३२४) ८।१३।४

[३७४] ८।१५।६ = (१६३) ८।३।८

[३८०] ८।१५।१२ = (८९) ८।१।३

[३८१] ८।१५।१३ = ७।५५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोष्पतिः)

विश्वा रूपाण्याविशन् ।

["] ८।१५।१३ (गोप्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ।

९।११।३ (अनानतः पारुच्छेपिः । पवमानः सोमः)

इन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।

- [३८२] ८१६।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
(२७८५) १०।१३४।१ (मान्धाता यौवनाश्व । उन्द्रः)
सन्नाजं चर्षणीनाम् ।
- [३८८] ८।१६७ = (१४७) ८।२।३२
[३९२] ८।१६।११ (इरिम्बिठिः काण्वः । उन्द्रः)
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
(२३१६) ८।६९।१४ (प्रियमेध आग्निग्म । उन्द्रः)
[३९४] ८।१७।१ एवं बर्हि सद्यो मम ।
(अग्निः ५२९) ३।२४।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
[३९५] ८।१७।२ = (१३८१) ३।४।१९
[३९६] ८।१७।३ (इरिम्बिठि काण्वः । उन्द्रः)
सुतावन्तो हवामहे ।
(५१०) ८।५१(वाल० २)।६ (श्रुष्टिगुः काण्व । उन्द्रः)
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । उन्द्रः)
(२४५९) ८।९३।३० (सुकक्ष आग्निग्मः । उन्द्रः)
- [३९७] ८।१७।४ अस्माकं मुष्टीरूप ।
(९३८) १।८४।२ ऋषीणा च स्तुतीरूप ।
[४०१] ८।१७।८ = ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते ।
[४०३] ८।१७।१० = (३५६) ८।१४।३ =
(अग्निः ९२४) ५।२६।५ (वस्यव आत्रेयाः । अग्निः)
(३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इंद्राग्नी)
[४०४] ८।१७।११ (इरिम्बिठि काण्व । उन्द्रः)
एहीमस्य द्रवा पिब ।
(६००) ८।६४।१२ (प्रागाथ काण्व । उन्द्रः)
एहीमिन्द्र द्रवा पिब ।
[४०८] ८।१७।१५ = (८०) १।१६।३
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[४११] ८।२१।३ = (१७६५) ५।४०।१
[४१२] ८।२१।४ = १।१४।१ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वेदेवाः)
[४१३] ८।२१।५ = (२२५६) ७।३२।२२
[४१७] ८।२१।९ = (७०५) १।३०।७
[४१९] ८।२१।११ (सोमरिः काण्व । उन्द्रः)
त्वया ह स्विष्टुजा वयं ।
(अग्निः १४६५) ८।१०२।३ (प्रयोगो भार्गव पावको-
ऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ-
ऽन्यतरो वा । अग्निः)
- [४२१] ८।२१।१३ = (८३५) १।१०२।८
[१७९०] ८।२४।१ = (१४६५) ३।५३।१३

- [१७९२] ८।२४।३ = (अग्निः २०) १।१२।११
(मेधातिथि काण्वः । अग्निः)
[१७९७] ८।२४।८ (विश्वमना वैयश्वः । उन्द्रः)
विषाम शूर नश्यसः ।
वसो ।
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ (पुष्टिगु काण्वः । उन्द्रः)
वसो विश्वाम ।
- [१८०२] ८।२४।१३ = (३०७०) ६।६०।१५
[१८०७] ८।२४।१८ = (२०६९) ६।४५।१०
[१८०८] ८।२४।१९ (विश्वमना वैयश्वः । उन्द्रः)
एतो निवन्तं स्वाम ।
(६७३) ८।८१।४ (कुर्मादी काण्व । उन्द्रः)
(२३४२) ८।९५।७ (तिर्यशीरग्निग्मः । उन्द्रः)
- [१८१] ८।३२।२ (मेधातिथि काण्वः । उन्द्रः)
वधीदुग्धो रिणन्नपः ।
९।१०९।२२ (अग्रयो धिण्या तेश्वरा । पवमान सोमः)
श्रीणन्नुग्धो रिणन्नपः ।
- [१८२] ८।३२।३ = (१७५) ८।३।२०
[१८६] ८।३२।७ = (१६५२) ४।३२।८
[१९१] ८।३२।१२ = (२९२) ८।१२।५
[१९२] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१०
["] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१० = (१७) १।५।४
[१९७] ८।३२।१८ = (१०४०) १।१३३।७
[२०१] ८।३२।२२ धेना इन्द्रावचाकशात् ।
(२५६२) १०।४३।६ जनाना धेना भवचाकशाद् वृवा ।
[२०२] ८।३२।२३ = (३२२७) ४।४७।२
(वामदेवो गौतमः । उन्द्रवायू)
- [२०३] ८।३२।२४ = (२०४९) ६।४४।१४
(शंयुर्बार्हस्पत्यः । उन्द्रः)
- [२०६] ८।३२।२७ = १।३७।४ (काण्वो घौरः । मरुतः)
[२०८] ८।३२।२९ (मेधातिथिः काण्वः । उन्द्रः) =
(२४५३) ८।९३।२४ (सुकक्ष आग्निग्मः । उन्द्रः)
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेशा ।
बोळशमभि प्रयो हितम् ॥
- ["] ८।३२।२९ = (२४५३) ८।९३।२४
= (३४७) ८।१३।२७
- [२०९] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
["] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
= (३६५) ८।१४।१२

- [२१२] ८३३।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मक्षू गोमन्तभीमहे ।
(८९५) ८८८।२ (नोधाः गौतमः । इन्द्रः)
[२१९] ८३३।१० (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सत्यमिन्धा वृषेदसि ।
९।६४।२ (वदयपो मारुतः । पवमानः सोमः)
सत्य वपन वृषेदसि ।
[२२०] ८३३।११ = (३५१) ८।१३।३१
[२२४] ८३३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मदाय युक्ष सोमपा ।
(६१८) ८।६६।३ (कलिः प्रागाथ । इन्द्रः)
[४२५-३९] ८।३४।१-१५ दिवो अमुष्य शामतो दिव
यय दिवावसो ।
[४२८] ८।३४।४ = (१७४१) ५।३५।६
[४३१] ८।३४।७ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सहस्रोत्ते शतामघ ।
९।६१।१४ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
सहस्रोत्तिः शतामघो ।
[४३२] ८।३४।८ आ त्वा होता मनुहितः ।
(अग्निः १९०९) १।१३।४ (मेधातिथिः काण्वः ।
आर्षास्त्वं [टळ])
असि होता ।
१।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विध्वेदेवाः)
त्वं होता ... ।
(अग्निः १०५०) ६।१६।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[४३५] ८।३४।११ आ नो याद्युपश्रुति ... ।
८।८।५ (सर्वसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
[४३७] ८।३४।१३ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
समुद्रस्याधि विष्टप ।
(९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
..... विष्टपि ।
९।१२।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
... विष्टपि ।
९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
... विष्टपि मनीषिणो ।
[१७६९-७४] ८।३६।१-६ पिबा सोमं मदाय कं शतक्रनो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहान् । पृतना
उरु जयः समस्तुजिन्मरूवाँ इन्द्र सरपते ।
[१७७२] ८।३६।४ (श्यावाश्व आत्रेय । इन्द्रः)

- जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
९।९६।५ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
[१७७५] ८।३६।७ = (१७८२) ८।३७।७
(श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः)
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा [८।३७।७ रेभस्तथा]
शृणु यथाश्वगोरन्नेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र असदस्युमाविथ स्वमेक इन्द्रवाह्य इन्द्र ब्रह्माणि ।
[८।३७।७ क्षत्राणि] वर्धयन् ।
(३०९८) ८।३८।८ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राभी)
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ।
[१७७६-८१] ८।३७।१-६ इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ।
[१७८२] ८।३७।७ = (१७७५) ८।३६।७
["] ८।३७।७ = (१७७५) ८।३६।७
= (३०९८) ८।३८।८
[४४६] ८।४५।४ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
जान पृच्छद्भि मातरम् ।
क उग्राः के ह शृण्वरे ।
(६४०) ८।७७।१ (कुरुमतिः काण्वः । इन्द्रः)
जजानो... वि पृच्छदिति मातरम् ।
क ।
[४४९] ८।४५।७ = (७०) १।११।१
[४५२] ८।४५।१० (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
अरं ते शक्र दावने ।
(२४२२) ८।९२।२६ (मुतकक्ष मुकक्षो वा आक्षिप्तः । इन्द्रः)
[४५३] ८।४५।११ अनेश्चिन्तो आद्रिवः ।
(५५१) ८।६१।४ मक्षू चिचिन्तो... ।
[४५५] ८।४५।१३ = (१३८७) ३।४२।६
[४५७] ८।४५।१५ = (९२४) १।८१।९
[४६३] ८।४५।२१ स्तोत्रमिन्द्राय गायत ।
(२३८४) ८।८९।१ बृहदिन्द्राय गायत ।
["] ८।४५।२१ = (२०८१) ६।४५।२२
[४७१] ८।४५।२९ = (१५) १।५।२
[४७५] ८।४५।३३ = (२६७) ८।६।२५
[४८२-८४] ८।४५।४०-४२ वसु र्पाहं तदा भर ।
[१८१९] ८।४६।३ (वयोऽश्व्यः । इन्द्रः)
शतमूले शतक्रनो ।
गीर्भिमृणन्ति कारवः ।
(२३८३) ८।९९।८ (वृमेध आक्षिप्तः । इन्द्रः)
शतमूर्तिं शतक्रनुम् ।

(५३३) ८।५४ (बाल० ६)।१ (मानसिवा काण्व । इन्द्रः)
गोभिः ।

[१८२२] ८।४६।६ = ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पषा)
ईशान राय ईमहे ।

[१८२४] ८।४६।८ (वशोऽऽव्य । इन्द्रः)

यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।

९।६१।१९ (अमर्हायुर्गार्गमः । पवमानः सोमः)

यस्ते मदो वरेण्य ।

(२४१३) ८।९२।१७ (श्रुतकल मुकक्षो वा आर्गमः ।
इन्द्रः)

यस्ते य इन्द्रवृत्रहन्तम ।

य मद ।

[१८२५] ८।४६।९ (वशोऽऽव्यः । इन्द्रः)

गमम गोमति व्रजे ।

(५०९) ८।५१ (बाल० ३)।५ (श्रुष्टिगु काण्व । इन्द्रः)

[१८२९] ८।४६।१३ पुरः स्याता मघवा वृत्रहा भुवन् ।

(२४८२) १०।२३।२ इन्द्रो मघैर्मघवा ।

[१८३६] ८।४६।२० = ८।२२।२ (गोमतिः काण्वः । अश्विनः)

भुज्यु वाजेषु पूर्यम् ।

[४८५] ८।४९ (बाल० १)।१ (प्रस्कण्व काण्व । इन्द्रः)

अभि प्र ... इन्द्रमर्च यथा विदे ।

(२३०७) ८।६९।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

अभि प्र ... इन्द्रमर्च यथा विदे ।

[४८९] ८।४९ (बाल० १)।५ (प्रस्कण्वः काण्व । इन्द्रः)

आ नः धियानो अश्वो ।

यं ते स्वदावन्स्वदयन्ति धेनव ।

(४९९) ८।५० (बाल० २)।५ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

आ नः ... इयानो अश्वो ।

यं ते स्वदावन्स्वदन्ति गर्तय ।

[४९०] ८।४९।(बाल० १)।६ (प्रस्कण्वः काण्व । इन्द्रः)

उग्रं वीरं ... विभूतिम् ।

उग्रीव वज्रिज्वतो न सिञ्चते ।

(५००) ८।५० (बाल० २)।६ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

वीरमुग्र ... विभूतिम् ।

उग्रीव वज्रिज्वतो वसुतना ।

[४९१] ८।४९ (बाल० १)।७ = (१७२) ८।३।१७

[४९३] ८।४९ (बाल० १)।९ (प्रस्कण्व काण्व । इन्द्रः)

एतावतस्त ... ।

यथा प्रावो मघवन् मेऽयातिथि यथा ।

(५०३) ८।५० (बाल० २)।९ (श्रुष्टिगुः काण्व । इन्द्रः)

एतावतस्त ... ।

यथा प्राव एतन् कृन्व्य धेन यथा ।

[४९४] ८।४९ (बाल० १)।१० (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)

यथा कण्वे मघवन् व्रमदस्यवि ।

यथा गोशर्ये अग्नोर्ऋजिश्चनि ... गोमद ।

(५०४) ८।५०।(बाल० २)।१० (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

यथा कण्वे मघवन् मेधे अवरं ।

यथा गोशर्ये अग्निषामो अद्विवो गात्र ।

[४९९] ८।५० (बाल० २)।५ = (४८९) ८।४९ (बाल० १)।५

[५००] ८।५० (बाल० २)।६ = (४९०) ८।४९ (बाल० १)।६

[५०१] ८।५० (बाल० २)।७ = (१७२) ८।३।१७

[५०३] ८।५० (बाल० २)।९ = (१७९७) ८।२४।८

["] ८।५० (बाल० २)।९ =

(४९३) ८।४९ (बाल० १)।९

[५०४] ८।५० (बाल० २)।१० =

(४९४) ८।४९ (बाल० १)।१०

[५०५] ८।५१ (बाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः ।
इन्द्रः)

यथा मनो सावर्णो सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।

(५१५) ८।५२ (बाल० ४)।१ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)

यथा मनो विवस्वति सोम शक्रापिबः सुतम् ।

[५०९] ८।५१ (बाल० ३)।५ = (२०९२) ६।४६।३

["] ८।५१ (बाल० ३)।५ = (१८२५) ८।४६।९

[५१०] ८।५१ (बाल० ३)।६ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

यस्मै त्वं वसो दानाय शिश्रिभि स रायस्पोषमश्नुतं ।

तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ।

(५२०) ८।५२ (बाल० ४)।६ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)

यस्मै त्वं वसो दानाय मंहये स रायस्पोषमिन्वति ।

(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)

तं त्वा वयं.....।

["] ८।५१ (बाल० ३)।६ = (५६१) ८।६१।१४

= (३९६) ८।१७।३

[५१५] ८।५२ (बाल० ४)।१ यथा मनो . . सोमं शक्रापिब सुतम् ।

. . इन्द्र... सचा ।

(५०५) ८।५१ (बाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

यथा मनो . . सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।

मघवन् सचा ।

["] ८।५२ (बाल० ४)।१ = (२३०) ८।४।२

[५१७] ८।५२ (बाल० ४)।३

विष्णुस्त्रीणि पदा वि चक्रम ।

१।२२।१८ (मेधातिथि काण्व । विष्णु)

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णु ।

[५१८] ८।५।२ (वाल० ४) । ४ जुहूमसि श्रवस्यवः ।

(४) १।४।१ जुहूमसि यविद्यावि ।

[५१९] ८।५।२ (वाल० ४) । ५ (आयुः काण्वः । इन्द्र)

महो उग्र ईशानकृत् ।

(६०५) ८।६।५ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

[५२०] ८।५।२ (वा० ४) । ६

यस्मै त्व वसो दानाय महसे स रायस्पोषमिन्वाति ।

(५१०) ८।५।२ (वाल० ३) । ६

... दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमिन्नुते ।

["] ८।५।२ (वाल० ४) । ६ (आयुः काण्व । इन्द्रः)

वस्यवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।

(५५७) ८।६।१० (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)

[५२४] ८।५।२ (वाल० ४) । १० सं क्षोणी समु सूर्यम् ।

८।७।२२ (पुनर्वसुः काण्वः । मरुतः)

[५२५] ८।५।३ (वाल० ५) । १ ईशानं राय ईमहे ।

८।५।४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)

[५२६] ८।५।३ (वा० ५) । २ = (३१५) ८।१।२८

["] ८।५।३ (वाल० ५) । २ वाजयन्तो हवामहे ।

(अग्निः १२२२) ८।१।९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)

[५२७] ८।५।३ (वाल० ५) । ३ ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये

अर्वावतीन्दवः ।

(२४३५) ८।९।३।६ ये सोमाम परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।

९।६।२२ (ऋग्वार्हणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)

[५२८] ८।५।३ (वाल० ५) । ४ = (२४०) ८।४।१२

यत्रा सोमस्य तृणसि ।

[५३०] ८।५।३ (वाल० ५) । ६ = (२९८) ८।१।११

क्रतुं पुन (नी) त आनुषक् ।

[५३१] ८।५।३ (वाल० ५) । ७ = (१७३६) ५।३।५।२

यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।

[५३३] ८।५।४ (वाल० ६) । १ = (१८१९) ८।४।३

गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।

[५३५] ८।५।४ (वाल० ६) । ५ = (१५६) ८।३।१

नो बोधि सधमाधो वृधे ।

[५३६] ८।५।४ (वाल० ६) । ६ ससर्वांसो वि ऋग्वरे ।

(अग्निः ७०९) ४।८।६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[५३७] ८।५।४ (वाल० ६) । ७ धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।

८।७।३ (पुनर्वसुः काण्वः । मरुतः)

धुक्षन्तः ।

[५३८] ८।५।४ (वाल० ६) । ८ वयं त इन्द्र स्तोमैर्विधिमे ।

(अग्निः ७९६) ५।४।७ (वसुरहत आत्रेयः । अग्निः)

वयं ते अग्न उक्थैर्विधिमे ।

(अग्निः ११७५) ७।१।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

वयं ते अग्ने समिधा विधिमे ।

[५४४] ८।५।६ (वा० ८) । १ = (४२) १।८।५

द्यौर्न प्रथिता शवः ।

[५५१] ८।६।१४ मक्ष् चिद् यन्तो भद्रिवः ।

(४५३) ८।४।११ शनैश्चिद् यन्तो भद्रिवः ।

[५५२] ८।६।५ = (२९२) ८।१।५ इन्द्र विश्वामिहृतिभिः ।

[५५३] ८।६।६ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)

उत्सो देव हिरण्ययः ।

९।१०७।४ (सप्तर्षयः पवमान सोमः)

[५५७] ८।६।१० = (५२०) ८।५।२ (वाल० ४) । ६

स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।

[५६०] ८।६।१३ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)

वि द्विषो वि मृधो जहि ।

(२८१६) १०।५।२।३ (शांसा भारद्वाजः । इन्द्रः)

वि रक्षो वि मृधो जहि ।

[५६१] ८।६।१४ = (३९६) ८।१।३ सुतावन्तो हवामहे ।

[५६६-७७] ८।६।१-१२ भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।

[५६९] ८।६।४ इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।

५।७।१० (पार आत्रेयः । अध्विनी)

इमा ब्रह्माणि.. ।

[५७९] ८।६।२ उक्था ब्रह्म च शंस्या ।

(४७) १।८।१० स्तोम उक्थं च शंस्या ।

[५८०] ८।६।३ = (९०९) १।८।१०

[५८३] ८।६।६ कृतानि कर्त्तव्यानि च ।

१।२।५।१ (शुनः शेष आर्जगतिः । वरुणः)

कृतानि या च कर्त्तव्या ।

[५८६] ८।६।९ उरु क्रमिष्ट जीवसे ।

१।१।५।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)

[५८९] ८।६।१ = (६४) १।१०।७

[५९२] ८।६।४ ओमे पृणासि रोदसी ।

(अग्निः १६८५) १०।१४।२ (पावकोऽग्निः । अग्निः)

पृणासि रोदसी उमे ।

[५९४] ८।६।६ = (८६) १।१६।९

[५९५] ८।६४।७ ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ।

८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

ब्रह्मा को वः सपर्यति ।

[५९८] ८।६४।१० = (२४०) ८।४।१२

[६००] ८।६४।१२ = (४०४) ८।१७।११

[६०१] ८।६५।१ = (२२९) ८।४।१

[६०२] ८।६५।२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

नादयासे स्पर्णरे ।

(अग्निः २४४७) ८।१०३।१४ (सोमार्गः काण्वः ।

अमामरुतः)

मादयस्व स्पर्णरे ।

[६०३] ८।६५।३ = (८०) १।२६।३

[६०५] ८।६५।५ = (५१९) ८।५२ (वाल् ० ०) ५

[६०६] ८।६५।६ प्रयस्वन्तो हवामहे ।

(अग्नि ८९३) ५।२०।३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अमिः)

["] ८।६५।६ इदं नो बहिरासदे ।

(अमि १९१२) १।१३।७ (मेधातिथि काण्वः ।

आग्नीसूक्तं = [उषामानक्ता])

[६०७] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३

तं स्वा वयं हवामहे ।

["] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३ = (अमि १३३२)

८।४३।२३ (विरुप आगिरसः । अमिः)

[६०८] ८।६५।८ इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्विभिर्नरः ।

(३०९३) ८।३८।३ (शावाश्च आत्रेयः । इन्द्रार्मा)

इदं वा मदिंरं मध्वधुक्ष० ।

[६०९] ८।६५।९ = (५५) १।९।८

अस्से धेहि श्रवो बृहत् ।

[६१०] ८।६५।१२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)

श्रवो देवेव्यक्रन ।

१०।६२।७ (नाभानेदिष्टो मानवः । विश्वेदेवाः)

[६१८] ८।६६।६ = (२२४) ८।३३।१५

मदाय युक्ष सोमपाः ।

[६२०] ८।६६।८ सेमं नः स्तोमं जुजुषाण भा गहि ।

(८२) १।१६।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

[६२४] ८।६६।१२ = (१६०४) ४।२९।१

[६२५] ८।६६।१३ = (९५५) १।८४।१९

[२२९१] ८।६८।१ = (३३२) ८।१३।१२

इन्द्र शविष्ठ सपते ।

[२२९५] ८।६८।५ = (८९) ८।१।३ नाना हवन्त ऊतये ।

[२२९७] ८।६८।७ = (१३८९) ३।४२।८

दे० [इन्द्रः] ३२

इन्द्रं (सोम) चोदामि पीतये ।

[२२९९] ८।६८।९ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः)

जयेम पृथु वज्रिवः ।

(२४०७) ८।९१।११ (श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आगिरसः ।

इन्द्रः)

[२३०४] ८।६९।१ प्र वज्रिष्टुभनिप ।

८।७।१ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

प्र यद्वज्रिष्टुभनिपं ।

[२३०६] ८।६९।३ = (९४७) १।८४।११

ता अस्य ... सोमं श्रीणन्ति पृथयः ।

["] ८।६९।३ त्रिषत्रा रोचने दिवः ।

१।१०५।५ (त्रित आत्यः, कुन्य आगिरसो वा । विश्वेदेवाः)

[२३०७] ८।६९।४ = (४८५) ८।४९ (वाल् ० १) ११

इन्द्रमर्चं यथा विदे ।

[२३०९] ८।६९।६ दुदुहे वज्रिणे मधु ।

८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

[२३१०] ८।६९।७ = (३२१८) १।१३।५७

(परच्छेपां देवोदामिः । इन्द्रयात्र)

[२३१२] ८।६९।९ = (९०८) १।८०।९ इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।

[२३१३] ८।६९।१० = ९।१।९ (मधुच्छन्दा वेधामित्रः ।

पवमानः सोमः)

सोममिन्द्राय पातवे ।

९।४।४ (हिरण्यस्तुप आगिरसः । पवमानः सोमः)

९।२४।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमेन्द्राय पातवे ।

[२३१६] ८।६९।१४ = (३९२) ८।१६।११

इन्द्रो विश्वा भति द्विपः ।

[२३१७] ८।६९।१५ अर्भको न कुमारकः ।

८।३०।१ (मनुर्ववस्वतः । विश्वेदेवाः)

[२३१८] ८।६९।१६ स्वस्तिगामनेहसम् ।

६।५१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)

[२३१९] ८।६९।१७ तं घेमिस्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।

(अमि ७४) १।३६।७ (कण्वो घोरः । अमिः)

[२३२०] ८।६९।१८ = (७०७) १।३०।९ अनु प्रत्यस्यकसः ।

[२३२३] ८।७०।३ न किष्टं कर्मणा नशत् ।

८।३१।१७ (मनुर्ववस्वतः । दम्पत्याशिपः)

[२३२८] ८।७०।१ = (७७) १।११।८ इन्द्रमीशानमोजया ।

[२३२९] ८।७०।२ = (९०५) १।८०।६ वज्रेण शतपर्वणा ।

[२३३२] ८।७०।५ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)

इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ।

- (८९४) ८।८८।१ (नोधा गौतम । इन्द्रः)
इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ।
[६३३] ८।७६।६ मरुत्वन्तं हवामहे ।
(३२४७) १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वान्द्रः)
[] ८।७६।६ = १।२२।१
[६३४] ८।७६।७ पिबा सोमं शतक्रनो ।
(१३४१) ३।३७।८ इन्द्र सोमं शतक्रनो !
[६३६] ८।७६।९ सुतं सोम दिविष्टिषु ।
१।८६।४ (गोतमो गङ्गागणः । मरुतः)
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
[,] ८।७६।९ (कुरुगुति काण्वः । इन्द्रः)
यत्र शिक्षान भोजसा ।
(२८२२) १०।१५।४ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
[६३८] ८।७६।११ = (२८०) ८।६।३८ अनुत्वा रोदसी उभे ।
[६४०] ८।७७।१ = (४४६) ८।४५।४ क उग्रा के ह शृण्वरे ।
[६४७] ८।७७।८ तेन स्तोत्रभ्य आ भर ।
(आग्निः ८०१-१०) ५।६।१-१० (नमुद्रुत आत्रेयः । आग्निः)
द्वय स्तोत्रभ्य आ भर ।
[६५८] ८।७८।८ (कुरुगुति काण्वः । इन्द्रः)
विश्वा च सोम सौभगा ।
९।४।२ (त्रिण्यतरूप आक्षिरगः । पवमानः सोमः)
९।५।१ (अवन्गार काश्यपः । पवमानः सोमः)
सोम विश्वा च सौभगा ।
[६६१-६७] ८।८०।१-२ = (२०७६) ६।४५।१७
स त्व न इन्द्र मृलय ।
[६६३] ८।८०।३ = (२०४५) ६।४४।१०
किमङ्ग रथबोदनः (०००) ।
[६६७] ८।८०।७ = (२९७) ८।१२।१०
इय री (त) कृत्विष्यावती ।
[३७३] ८।८१।४ = (१८०८) ८।२४।१९ एतो न्विन्द्रं स्ववाम
[६८०] ८।८२।२ तीव्राः सोमाम आ गहि ।
१।२३।१ (मेधातिथिः काण्वः । वायुः)
[६८१] ८।८२।३ भुवा त इन्द्र श हदे ।
(२६५४) १०।८६।१५ (इन्द्राणां । इन्द्रः)
मंथस्त इन्द्र श हदे ।
[६८३] ८।८२।५ तुभ्यायमद्विभिः सुता ।
१।१३।२ (परच्छेपो देवोदासिः । वायुः)
तुभ्यायं सोम परिपृतो अद्विभिः ।
[६८५-८७] ८।८२।७-९ पिबेदस्य त्वमीशिषे ।
[६८७] ८।८२।९ (कुमीदी काण्वः । इन्द्रः)

- तिरो रजांस्यस्पृतम् ।
९।३।८ (शुनःशेष आजीगतिः, स देवरातः
कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
तिरो रजांस्यस्पृतः ।
[८९४] ८।८८।१ अभि वरसं न स्वसरेषु धेनवः ।
(अग्निः ३८६) २।२।२ (गुत्समदः शौनकः । अग्निः)
अग्ने वरसं न स्वसरेषु धेनवः ।
["] ८।८८।१ = (६३२) ८।७६।५
इन्द्रं गीर्भिर्न (०००) वामहे ।
[८९५] ८।८८।२ = (२१२) ८।३३।३ मधू गोमन्तमीमहे ।
[८९९] ८।८८।६ = (१०११) १।१३।१
मंहिष्ठो (०४) वाजसातये ।
[२३८४] ८।८९।१ = (४६३) ८।४५।२१
बृद्धि (स्तोत्रमि) न्द्राय गायत ।
[२३८५] ८।८९।२ (नृमेध-पुरुमेधावाक्षिरसौ । इन्द्रः)
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
(२३६६) ८।९८।३ (नृमेध आक्षिरसः । इन्द्रः)
[२३८६] ८।८९।३ = (९०५) १।८०।६ वज्रेण शतपर्बणा ।
[२३९०] ८।८९।७ = (३०) १।७।३
आ सूर्य रोहयो (रोहयद्) दिवि ।
[२३९५] ८।९०।५ त्वमिन्द्र यशा असि ।
(आग्निः १२९९) ८।२३।३० (विश्वमना वैयथः । आग्निः)
अग्ने एवं यशा असि ।
[१७८४] ८।९१।२ = (१४४६) ३।५२।१
धानावन्तं कर्मिभणमपूपवन्तमुक्थिनम् ।
[१७८५] ८।९१।३ (अपाला आत्रेयाः । इन्द्रः)
इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव ।
९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
[२३९७] ८।९२।१ = (१४) १।५।१
इन्द्रमभि प्र गायत ।
(३६९) ८।१५।१ तम्वभि प्र गायत ।
[२३९८] ८।९२।२ = (३६९) ८।१५।१
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ।
[२४०१] ८।९२।५ तम्वभि प्र गायत ।
(३६९) ८।१५।१ तम्वभि प्रार्चत ।
["] ८।९२।५ = (८०) १।१६।३
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[२४०२] ८।९२।६ (धृतकक्षो सुकक्षो वा आक्षिरसः । इन्द्रः)
अस्य पीत्वा मदानाम् ।

९।२३।७ (असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

[२४०७] ९।२३।११ = (२२९९) ८।६८।९

जयेम वृत्सु बज्रिवः ।

[२४०८] ८।९२।२२ = (२०८४) ६।४५।२६

वयमु (इमा उ) स्वा शतक्रतो ।

["] ८।९२।२२ गावो न यवसेत्वा ।

१।९१।१३ (गौतमो राहगणः । सोम)

[२४१०, २४१८] ८।९२।१४, २२ न त्वामिन्द्राति रिच्यते ।

[२४१३] ८।९२।१७ = (१८२४) ८।४६।८

य इन्द्र वृत्रहन्तम् ।

[२४१६] ८।९२।२० यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो ।

१।१३९।३ (परुच्छेपो देवोदामि । अश्विनो)

युवोर्विश्वा ।

[२४१७] ८।९२।२१ = (३३८) ८।१३।१८

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमस्तत ।

तमिन्द्रधन्तु नो गिरः (सदावृषम्) ॥

९।६१।१४ (अमहीयुरागिरसः । पवमानः सोमः)

[२४१८] ८।९२।२२ आ स्वा विशन्विन्दवः ।

१।१५।१ (मेधातिथिः काण्वः । ऋतव [इन्द्र])

["] ८।९२।२२ = (२७७) ८।६।३५ समुद्रमिव सिन्धवः ।

[२४२१] ८।९२।२५ (धृतकक्षः मुकक्षो वा आगिरसः । इन्द्र)

अरमिन्द्रस्य धाम्ने ।

९।२४।५ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

[२४२२] ८।९२।२६ (४५२) ८।४५।१० अरंते शक्र दावने ।

[२४२६] ८।९२।३० = (३३४) ८।१३।१४

मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।

[२४३२] ८।९३।३ (मुकक्ष आगिरसः । इन्द्रः)

अश्ववद्गोमघवमत् ।

९।६९।८ (हिरण्यस्तूप आगिरसः । पवमानः सोमः)

अश्ववद्गोमघवमत् सुवीर्यम् ।

[२४३४] ८।९३।५ यद्वा प्रवृद्ध सप्तते ।

(२९५) ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ... ।

[२४३५] ८।९३।६ (मुकक्ष आगिरसः । इन्द्रः)

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।

९।६५।२२ (ऋगुर्वारुणिर्जमदभिर्गर्गो वा ।

पवमानः सोमः)

[२४४०] ८।९३।११ न मिनन्ति स्वराज्यम् ।

५।८२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)

[२४४१] ८।९३।१२ = (२०४०) ६।४४।५

देवी शुष्म सपर्यतः ।

[२४४८] ८।९३।१९ कथा स्तोतृभ्य आ भर ।

(अग्निः ८०१-१०) ५।६।१-१० (वसुधुन आत्रेयः । अग्निः)

[२४४९] ८।९३।२० = (८५) १।१६।८ वृत्रहा सोमपीतये ।

एषं स्तोतृभ्य आ भर ।

[२४५१] ८।९३।२२ उग्रन्तो यन्ति वीतये ।

(१८) १।५।५ शुचयो यन्ति ... ।

[२४५३] ८।९३।२४ = (२०८) ८।२२।२९

बोळहामभि प्रयो हितम् ।

["] ८।९३।२४ = (२०८) ८।३२।२९ = (३४७) ८।१३।२७

इह त्या सधमाद्या ।

[२४५४] ८।९३।२५ = (१३६७) ३।४०।४

तुभ्य (इन्द्र) सोमा सुता इमे ।

[२४५५] ८।९३।२६ दधद्रत्ना वि दाशुषे ।

(अग्निः ७५१) ४।१५।३ (वामदेवो गोतमः । अग्निः)

दधद्रत्नानि दाशुषे ।

९।३।६ (अन्नः शेष आजीगर्तिः स देवगानः । कृत्रिमो वंश्वा-

मित्रः । पवमानः सोमः)

[२४५७-५९] ८।९३।२८-३० = (२६७) ८।६।२५

यदिन्द्र मृळयासि नः ।

[२४५८] ८।९३।२९ स नो विश्वान्या भर ।

(अग्निः १७१६) १०।१९।१ (संवनन आगिरसः । अग्निः)

स नो वसून्वा भर ।

[२४५९] ८।९३।३० = (३९६) ८।१७।३

सुतावन्तो हवामहे ।

[२४६०-६२] ८।९३।३१-३२ उप नो हरिमिः सुतम् ।

[२४६६] ८।९५।१ = (२०८४) ६।४५।२५ इन्द्र वन्म न मातर ।

[२४६७] ८।९५।२ सुतास इन्द्र गिर्वेणः ।

(१६५५) ४।३२।११ सुतेष्विन्द्र ... ।

[२४६८] ८।९५।३ (निरश्वीगाङ्गिरसः । इन्द्रः)

इन्द्र ।

एवं हि शश्वतीनां पत्नी ।

(२३६९) ८।९८।६ (तुमेव आगिरसः । इन्द्रः)

... शश्वतीनामिन्द्र ।

... पतिः ।

[२४६९] ८।९५।६ = (२७७) ८।६।३५ इन्द्रमुक्त्वा नि वावृषुः ।

["] ८।९५।६ (निरश्वीगाङ्गिरसः । इन्द्रः)

सिषासन्तो वनामहे ।

९।६१।११ (अमहीयुरागिरसः । पवमानः सोमः)

[२४७२] ८।९५।७ = (१८०८) ८।०४।१९

- [२३४३] ८।९।८ शुद्धो रथिं नि धारय ।
१।३।०।२२ (शुनः शेष आजीगर्तिः । उषा)
अन्मे रथिं . ।
- [२३४४] ८।९।९ = (३७१) ८।१।३
शुद्धो (एको) वृत्राणि जिघ्रसे ।
- ["] ८।९।९ शुद्धो वाजं सिषाससि ।
९।३।६ (काश्यपोऽमितो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्रो वाजं सिषाससि ।
- [२३४९] ८।९।५ = (१६९६) ५।३।१४ अहये हन्तवा उ ।
- [२३५१] ८।९।७ (निरश्वीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
अथेमा विश्वाः पृतना जयासि ।
१०।५।५ (अग्नि सौचीकः । विश्वे देवाः)
... जयाति ।
- [२३५६] ८।९।१२ स्तुहि सुष्टुति नमसा विवास ।
५।८।३।१ (सोमोऽग्नि । पर्जन्य)
स्तुहि पर्जन्यं नमसाविवास ।
- [२३६३] ८।९।२१ (निरश्वीराङ्गिरसो द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।
(अग्नि १५२६) १०।६।७ (त्रित आत्त्यः । अग्नि)
... बभूव ।
- [९७९] ८।९।४ = (३३५) ८।१३।१५
यच्छक्रासि परावति यदवावति वृत्रहन् ।
- ["] ८।९।४ = (९४५) १।८।९ सुतावो आ विवासति ।
- [९८०] ८।९।५ = (४३७) ८।३।१३
समुद्रस्याधि विष्टपि (०५) ।
- ["] ८।९।५ यदन्तरिक्ष आ गहि ।
५।७।३।१ (पार आत्रेयः । अश्विनौ)
... गतम् ।
- [९८१] ८।९।६ = (१६४१) ४।३।१२ = (१००८) १।१२९।९
त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
(१००९) १।१२९।१० त्वं न इन्द्र राया तरुण्य ।
- [९८२] ८।९।७, ७ मा न इन्द्र परा वृणक्त ।
- [९८३] ८।९।८ अस्मे इन्द्र सचा सुते ।

- [९८६] ८।९।११ = (८०) १।१६।३ इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
- [९९०] ८।९।१५ कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ।
७।३।७।५ (वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वेदेवाः)
- [२३६५] ८।९।२ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वामिन्द्राभिभूरसि ।
(२८२३) १०।१५३।५ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
- ["] ८।९।२ त्वं सूर्यमरोचयः ।
९।६।३।७ (निरश्विः काश्यपः । पवमानः सोमः)
यथा सूर्यमरोचयः ।
- [२३६६] ८।९।३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
विभ्राजओतिषा स्वशरगच्छो रोचनं दिवः ।
१०।१७।४ (विभ्राद् सौर्यः । सूर्यः)
- ["] ८।९।३ = (२३८५) ८।८।२
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
- [२३६९] ८।९।६ = (२३३८) ८।९।३
- [२३७४] ८।९।११ = (१३८७) ३।४२।६
अथा ते सुहृमीमहे ।
- [२३७५] ८।९।१२ स नो रास्व सुवीर्यम् ।
(अग्निः ८५८) ५।१३।५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
- [२३७७] ८।९।२ = (१६५५) ४।३।११
सुतेष्विन्द्र गिर्वेणः ।
- [२३८३] ८।९।८ = (१८१९) ८।४।३
- [९९२] ८।८०।२ (नेमो भार्गवः । इन्द्रः)
मधुनो भक्षमग्रे ।
दक्षिणतः.....मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ।
१०।८३।७ (मनुस्तापसः । मनुः)
दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ।
... मध्वो भग्नम् ।
- [९९४] ८।१००।४ विश्वा जानान्यभ्यासि मङ्गा ।
२।२८।१ (कुर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः)
विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मङ्गा ।
- [९९९] ८।१००।१२ = (१५१९) ४।१८।११
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [२४६७] १०।२२।२ यशश्चक्रे असाभ्या ।
१।२५।१५ (शुनः शेष आजीगर्तिः । वरुणः)
- [२४७३] १०।२२।८ वयर्दासस्य दम्भय ।
(३१०६) ८।४०।६ (नाभाकः काण्वः । इन्द्रार्मी)
ओजो दासस्य दम्भय ।

- [२४८०] १०।२२।१५ = (११११) २।११।११
पिबापिषेविन्द्र दूरं सोमं ।
- ["] १०।२२।१५ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्धा
वासुकः । इन्द्रः)
उत त्रायस्व गृणतो मधेनः ।

- (१८१२) १०।१४८।४ (पृथुर्वैन्यः । इन्द्रः)
—गृणत उत स्तीन् ।
- [१४८२] १०।१३।२ = (१८२९) ८।४६।१३
मघवा वृत्रहा भुवत् ।
- [१४८४] १०।१३।४ वातो यथा वनम् ।
५।७८।८ (सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)
- [१४८७] १०।१३।७ = (२१७९) ७।२२।९
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
- [१४८८] १०।१४।१ = (३२४) ८।१७।१
इन्द्र सोमं (पिबा) इमं पिब ।
- ["] १०।१४।१ अस्मे रयिं नि धारय ।
१।३०।२२ (शुनः शेष आजीर्गतिः । उषा)
- [१४८९] १०।१४।२ श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षमे ।
(अग्निः ६१९) ३।२१।२ (गाथी कौशिक । अग्निः)
श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ।
- [१४९१] १०।१७।१ यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
(३२०२) ८।५९ (वाल०११) । १ (सुपर्णः काण्वः ।
इन्द्रावरुणौ) ... यजमानाय शिक्षथ ।
- [१४९७] १०।१७।७ (वसुक ऐन्द्रः । इन्द्रः)
यो अस्य पारे रजसो विवेष ।
(अग्निः १७१५) १०।१८७।५ (वत्स आत्नेयः । अग्निः)
... रजसः ।
- [१५०३] १०।१७।१३ (वसुक ऐन्द्रः । इन्द्रः)
न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम् ।
(अग्निः १६९४) १०।१४२।५ (सारिमुक्कः । अग्निः)
.....न्वेति भूमिम् ।
- [१५०४] १०।१७।१४ अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया
भुवा नि दधे धेनुरुधः ।
३।५५।१३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वेदेवाः)
- [१५११] १०।१७।२१ श्रव इदेना परो अन्यदस्ति ।
१०।३१।८ (कवष ऐलषः । विश्वेदेवाः ।
नेतावदेना परो अन्यदस्ति ।
- [१५२७] १०।१८।७ वर्धो वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ।
(१४९०) ४।१७।३ वर्धो वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
- [१५२२] १०।१९।८ व्यानकिन्द्रः पृतनाः स्त्रोजा ।
(२१५३) ७।२०।३ व्यास इन्द्रः ... ।
- [१५३५] १०।३२।६ . प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वां अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्ने
अनुशिष्ट आगाम् ॥

- (अग्नि ७७४) ५।२।८ (कुमार आत्रेयः, वृशो वा
जानः, उभौ वा । अग्निः)
- [१५३९] १०।३३।२ सं मातपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्ववः ।
१।१०५।८ [प्रवार्धः] (त्रित आत्त्यः, कुत्स आगिरसो
वा । विश्वेदेवाः)
- [१५४०] १०।३३।३ मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं
ते शतक्रतो ... ।
१।१०५।८ [उत्तरार्धः] (त्रित आत्त्यः, कुत्स
आगिरसो वा । विश्वेदेवाः)
- [१५४२] १०।३८।२ रयमिन्द्र श्रवाय्यम् ।
९।६३।२३ (निरुविः काश्यप । पवमानः सोमः)
रयिं सोम श्रवाय्यम् ।
- [१५४४] १०।३८।४ अर्वाञ्जमिन्द्रमवसे करामहे ।
८।२२।३ (सोमार्ः काण्वः । अश्विनौ)
अर्वाञ्चीना स्ववसे करामहे ।
- [१५४७] १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना न्यूष्टम् ।
(१५३५) ४।४०।६ उद्व कोशं वसुना न्यूष्टम् ।
- [१५५३] १०।४२।८ सुन्वते वहति भूरि वामम् ।
१।१२४।१२ (कधीवात् औशिजो दैर्घतमसः । उषा)
स ते वहसि भूरि वामम् ।
- [१५५५] १०।४२।१० = (२५६६) १०।४३।१० =
(२५७७) १०।४४।१० (कृष्ण आगिरसः । इन्द्रः)
गोभिष्टेरमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभि प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजने ना जयेम ।
- [१५५६] १०।४२।११ = (२५६७) १०।४३।११ =
(२५७८) १०।४४।११ (कृष्ण आगिरसः । इन्द्रः)
वृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादवायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ।
- [१५६२] १०।४३।६ = (२०१) ८।३२।२२
धेना इन्द्रावचाकशत् ।
- [१५६६-६७] १०।४३।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
- [१५७७-७८] १०।४४।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
- [१५८२] १०।४८।४ पुरु सहस्रा नि शिक्षामि ।
१०।२८।६ (इन्द्र ऋषिः । वसुको देवता)
- ["] १०।४८।४ यन्मा सोमास उक्थिथनो अमन्दिषुः ।
४।४२।६ (त्रसदस्यु पौरकुत्स्यः । आत्मा)
यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्थ ।

[२५९०] १०।४९।१ अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ।
(७५२) १।५१।८ शक्ती भव यजमानस्य चोदिता ।

[२६०७] १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
(२२३६) ७।३९।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः ।

["] १०।५०।७ मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः ।
१०।९४।८ (अर्बुद. काद्रवेयः सर्पः । प्रावाणः)
त ऊ सुतस्य ... ।

[२६१०] १०।५४।३ = (१९५७) ६।२७।३
क उ (नहि) नु ते महिमनः समस्य ।

[२६१३] १०।५४।६ = (२०५८) ६।४४।२३

[२६१७] १०।५५।४ महन्महत्या असुरस्वमेकम् ।
३।५५।१-२३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वेदेवा)

महद्देवानामसुरस्वमेकम् ।

[२६३८] १०।७४।५ शचीव...अनानतं दमयन्तं पृतन्यून ।
(अग्निः१८०६) ७।६।४ (वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)

["] १०।७४।५ ऋभुक्षणं मघवानं सुबुक्तिम् ।
(२७०९) १०।१०४।७ सुतरेण मघवानं सुबुक्तिम् ।

[२६४०-६२] १०।८६।१-२३ विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।

[२६४४] १०।८६।५ न सुगं दुष्कृते भुव ।
(३२८४) ७।१०४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । (राक्षोघ्न).
इन्द्रासोमौ)

[२६५४] १०।८६।१५ = (६८१) ८।८२।३

[२६५५-५६] १०।८६।१६-१७ अन्तरा सक्थ्याः कपृत् ।

["] १०।८६।१६-१७ निवेदुषो विजृम्भते ।

[२६६४] १०।८९।२ कृष्णा तमांसि विद्या जघान ।
९।६६।२४ (गतं वैश्वानमाः । पवमानः सोम.)
कृष्णा तमांसि जघनत् ।

[२६६९] १०।८९।८ प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम . .
मिनन्ति मित्रम् ।

(अग्निः१७६१) ४।५।४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)

प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य ।

[२६७५] १०।८९।१४ = (७१९) १।३२।५

[२६७६] १०।८९।१५ शत्रूयन्तो अभि ये न तस्तस्मै ।
४।५०।२ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः)
बृहस्पते अभि ... ।

["] १०।८९।१५ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)

अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ता ।

१०।१०३।१२ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । अप्वा देवी)

[२६७८] १०।८९।१७ = (६) १।४।३ विद्याम सुमतीनाम् ।

["] १०।८९।१७ = (१९४६) ६।२५।९
विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो ।

[२६७९] १०।८९।१८ = (१२५९) ३।३०।२२

[२७०८] १०।१०४।६ उप ब्रह्माणि हरिवः ।
१।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वेदेवाः)

["] १०।१०४।६ दाशौ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।
(अग्निः११६६) ७।११।१ (वासिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
मर्हा अस्यध्वरस्य ।

[२७०९] १०।१०४।७ = (२६३८) १०।७४।५

[२७१३] १०।१०४।११ = (१२५९) ३।३०।२२

[२७२८] १०।११।४ इन्द्रो मङ्गा महतो अर्णवस्य ।
१०।६७।१२ (अयास्य आक्षिरस । बृहस्पतिः)

[२७२९] १०।११।५ = (१२६७) ३।३१।८
विश्वा वेद सवना (जनिमा) हन्ति शुष्णम् ।

[२७३३] १०।११।९ = (१४८८) ४।१७।१
सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानो (०नान्)

[२७३५] १०।११।१ = (२०५२) ६।४४।१७
हन्तवे (जहि) शूर शत्रून् ।

[२७४२] १०।११।८ = (१६९८) ५।३१।६

[२७५९] १०।११।५ अवस्थिरा तनुहि यातुजनाम् ।
.....शत्रून् ... ।

(अग्निः १८१७) ४।४।५ (वामदेवो गौतमः । राक्षोहाऽग्निः)
[२७६१] १०।११।७

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ... पिब... ।

२।३६।५ (गुत्समदः शौनकः । ऋतुदेवता

[इन्द्रोऽनभश्च])

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः... पिब ।

[२८५०-६२] १०।११।१-३ कुवित् सोमस्यापामिति ।

[२८५१-५२] १०।११।२-३ उन्मा पीता अयंसत ।

[२८६२] १०।११।१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।

(अग्निः ५०५) ३।९।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

देवेभ्यो हव्यवाहन ।

(अग्निः १८५७) १०।११।८।५ (उरुक्षय आमहीयवः ।
रक्षोहाऽग्निः)

(अग्निः१६९८) १०।१५०।१ (मृत्कीको वामिष्ठः । अग्निः)

[२७७५] १०।१३।१३ = (१५०३) ४।१७।१६

अश्वयन्तो वृषणं वाजयन्तः ।

[२७७६] १०।१३।१६ = (२११०) ६।४७।१२

["] १०।१३।१६ सुमृत्कीको मघवन् विश्व (जात) वेदाः ।
(अग्निः६४६) ४।१।२० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[२७७६] १०।१३१।६ सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
 ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
 ९।८९।७ (उशना काव्यः । पवमानः सोमः)
 ९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः)
 [२७७७] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३
 ["] १०।१३१।७ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे
 सौमनसे स्याम ।
 (अग्निः४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 = ३।५९।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
 = १०।१४।६ (यमो वैवस्वतः । अङ्गिरः पित्रथर्वसृगुसोमा)
 ["] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३
 आराशिद् द्वेषः सनुतयुंयोतु ।
 ७।५८।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
 आराशिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
 १०।७७।६ (स्यूमरश्मिर्भागवः । मरुतः)
 [२७७८] १०।१३३।१ = (५७) १।९।१० =
 १०।९६।२ (बरुहङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हारिः)
 [२७७८-८३] १०।१३३।१-६ नभन्तामन्यकेषां ज्याका
 अधि धन्वसु ।
 [२७७९] १०।१३३।२ = (८३५) १।१०२।८ = (४२१) ८।२१।१३
 ["] १०।१३३।२ विश्वं पुण्यसि वार्यम् ।
 (९२४) १।८१।९ विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।
 (अग्निः८०६) ५।६।६ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 [२७८०] १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धियः ।
 ९।७९।१ (कविर्भागवः । पवमानः सोमः)
 [२७८१] १०।१३३।४ (सुदा. पैजवनः । इन्द्रः)
 यो न.....आदिदेशति ।
 अधस्पदं तमी कृधि ।
 (२७८६) १०।१३४।२ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्र)
 अधस्पदं तमी कृधि यो अस्माँ आदिदेशति ।
 [२७८३] १०।१३३।६ = (१३७९) ३।४१।७ वयमिन्द्र त्वायवः ।
 ["] १०।१३३।६ सखित्वमा रभामहे ।
 ९।६१।४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सखित्वमा वृणीमहे ।
 ९।६५।९ (सृगुर्बार्हणर्जिमदग्निर्भागवो वा । पवमानः सोमः)
 [२७८४] १०।१३३।७ सहस्रधारा पयसा मही गौः ।
 १०।१०१।९ (बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग वा)
 [२७८५] १०।१३४।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१
 (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[२७८५-९०] १०।१३४।१-६ देवो जनिष्यजीजनद्वा
 जनिष्यजीजनत् ।
 [२७८६] १०।१३४।२ = (२७८१) १०।१३३।४
 ["] १०।१३४।२ यो अस्माँ आदिदेशति ।
 ९।५२।४ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [२७८७] १०।१३४।३ = (२९२) ८।१२।५ = (१९१) ८।३२।१२ =
 (१७७६) ८।३७।१ = (५५२) ८।६१।५
 [२७८८] १०।१३४।४ = (७०६) १।३०।८
 [२८०७] १०।१४७।४ मक्ष स वाजं भरते धना नृभिः ।
 १।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)
 अर्वाङ्गिर्वाजं भरते... ।
 २।२६।३ (गुत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
 पुत्रैर्वाजं भरते... ।
 [२८१०] १०।१४८।२ = (११०४) २।११।४
 दासीर्विंशः सूर्येण सहाः ।
 ["] १०।१४८।२ = (११०५) २।११।५
 गुहा हितं गुह्य गूळइमप्सु ।
 [२८१२] १०।१४८।४ = (२४८०) १०।२२।१५
 उत त्रायस्व गृणत (०णतो) ।
 [२८१६] १०।१५२।३ = (५६०) ८।६१।१३
 वि रक्षो (द्विषो) वि सृधो जहि ।
 [२८१८] १०।१५२।५ = (२३) १।५।१०
 वरीयो (ईशानो) यवया वधम् ।
 [२८२०] १०।१५३।२ = (२१९) ८।३३।१० =
 ९।६४।२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [२८२१] १०।१५३।३ = (३६०) ८।१४।७
 व्यन्तश्चक्ष्मतिर (०मतिरन्) ।
 [२८२२] १०।१५३।४ = (६३६) ८।७६।९
 वज्रं शिशान भोजसा ।
 [२८२३] १०।१५३।५ = (२३६५) ८।९८।२ त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
 [२८२४] १०।१६०।१ = (११९२) २।१८।३
 [२८२८] १०।१६०।५ अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो ।
 (१५०३) ४।१७।१६ = (२७७५) १०।१३३।३
 अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
 [२८३४] १०।१७१।३ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।
 (१७४०) ५।३५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।
 [२८४०] १०।१८०।२ सृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
 १।१५४।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
 [३३५७] १।१८।४ सोमो हिनेति मर्त्यम् ।
 (३३५८) सोम.. मर्त्यम् ।

- [३३५८] १।१८।५ सोम इन्द्रश्च मर्यम् ।
४।३७।६ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
यूयमिन्द्रश्च मर्यम् ।
- [३२४७] १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
मरुत्वन्तं हवामहे इन्द्रमा सोमपीतये ।
(६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये ।
- [३२४८] १।२३।८ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः) =
२।४१।१५ (गृत्समद शौनकः । विश्वेदेवा)
इन्द्रजेष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ।
- [३२४९] १।२३।९ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
... युजा ।
मा नो दुःशंस ईशत ।
२।२३।१० (गृत्समद शौनकः । बृहरपतिः)
... युजा । मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत ।
(३०८५) ७।९४७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राग्नी)
मा नो दुःशंस ईशत ।
१०।२५।७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्या वा वसु-
कृदा वासुकः । सोमः)
मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ।
- [३२३४] १।१७।१ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणा)
ता नो मृळात ईदशे ।
४।५७।१ (वामदेवो गौतमः । धेनुपतिः)
स नो मृळातीदशे ।
(३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
- [३२३५] १।१७।२ हवं विप्रस्य मावतः ।
(अग्निः १९१९) (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रासूक्तं
[तनूनपात्])
१।१४।२ यज्ञं विप्रस्य ... ।
- ["] १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणा)
धर्तारा चर्षणीनाम् ।
५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [३३०५] १।१५।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णू)
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ।
९।७५।२ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
दधाति पुत्रः पित्रोरपीभ्यः १ नाम ... ।
- [१५७५] ४।२३।१० ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ।
१०।१७८।२ (अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः । तार्क्ष्यः)

- उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे ।
- [३००४] १।२१।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
सोमपा सोमपीतये ।
(३०४१) ५।८६।२ (अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ताहवामहे ।
(३०६९) ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)
सोमपा सोमपीतये ।
- [३००५] १।२१।४ = (८९) १।१६।५
उपेदं सवनं सुतम् ।
- [३००६] १।२१।५ इन्द्राग्नी रक्ष उक्कजतम् ।
७।१०४।१ इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उक्कजत ।
- [३००७] १।२१।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ।
(३०८६) ७।९४।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
- [३००८] १।१०८।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
अभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।
७।६१।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
- [३००८] १।१०८।१ = (३०१३-१९)
१।१०८।६-१२ अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ।
(३०१२) १।१०८।५ तेभिः सोमस्य ... ।
- [३०१०] १।१०८।३ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेधाम् ।
(३१७१) ६।६८।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणा)
- [३०११] १।१०८।४ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।
(३०७६) ७।९३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
- [३०१४-१९] १।१०८।७-१२ अतः परि वृष्णावा हि यातम् ।
- [३०१९] १।१०८।१२ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
मप्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।
१०।१५।१४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
..... स्वधया मादयन्ते ।
- [३२१३] १।२३।२ उभा देवा दिविस्पृक्षा ।
१।२२।२ (मेधातिथिः काण्वः । अधिनौ)
- ["] १।२३।२ = १।२२।१ = (३३२१) ४।४९।५
= (३०५५) ६।५९।१०
= (६३३) ८।७६।६

अस्य सोमस्य पीतये ।

१।२२।१ (मेधातिथिः । काण्वः । अध्विनो)

५।७।१।३ (बाहुवक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)

८।९४।१०-१२ (बिन्दुः पूतदक्षो वा आत्रिरसः ।

मरुतः)

[३२१५] १।१३५।४ (परच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

अभि प्रयांसि सुधितानि वीतय वायो हव्यानि वीतये ।

(अग्निः १०८५) ६।१६।४४

(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

अभि प्रयांसि वीतये ।

["] १।१३५।४ वायवा चंद्रेण राधसा गतम् ।

४।४८।१-४ (वामदेवो गौतमः । वायुः ।)

वायवा चंद्रेण रथेन ।

[३२१६] १।१३५।५ आशुमलं न वाजिनम् ।

(१००१) १।१२९।२ पृथमलं ...।

[३२१७] १।१३५।६ (परच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

तिरः पवित्रमाशवः ।

९।६२।१ (जामदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

इन्द्रवस्तिरः.....।

५।६७।७ (गौतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)

इन्द्रवस्तिरः ...।

[३२१८] १।१३५।७ (परच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

(२३१०) ८।६९।७ (प्रियमेध आत्रिरसः । इन्द्रः)

गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।

[१५९९] ४।२८।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमो वा)

अहन्नहिमरिणात्सस सिन्धून् ।

१०।६७।१२ (अयास्य आत्रिरसः । वृहस्पतिः)

[१६००] ४।२८।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमो वा)

महो बृहो अप विश्वायु धायि ।

(१८८८) ६।२०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[३१५०] ४।४१।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

धिषः.... ।

सा नो बृहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ।

१०।१०।१।९ (बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग वा)

धिषम्.... ।

सा नो . ।

[३१५१] ४।४१।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

सूरो वृषीके वृषणश्च पौंस्ये ।

दे० [इन्द्रः] ३३

१०।९२।७ (शार्यातो मानवः । विश्वेदेवाः)

[३१५२] ४।४१।७ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

वृणीमहे सख्याय प्रियाय ।

९।६६।१८ (जन् वेखानमाः । पवमानः सोमः)

वृणीमहे सख्याय ।

[३१५५] ४।४१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।

(अग्निः ११४०) ७।४७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । अग्निः)

[३१५७] ४।४२।७=(१५२६) ४।१९।५

स्वं वृत्रो अरिणा इन्द्र सिन्धून् ।

[३१५९] ४।४२।९ हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।

१।१५३।१ (दाघतमा औच्यः । मित्रावरुणौ)

हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।

[३२२१] ४।४६।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

नियुत्वा इन्द्रसारथिः ।

४।४८।२ (वामदेवो गौतमः । वायुः)

[३२२२] ४।४६।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

सहस्रं हरय ।

वहन्तु सोमपीतये ।

(११०) ८।१।२४ (मेधातिथिः-मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

सहस्रं ।

हरय वहन्तु सोमपीतये ।

[३२२३] ४।४६।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

रथं हिरण्यवन्धुरम् ।

आ हि स्थायो दिविस्पृशम् ।

८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अध्विनो)

रथं . ।

आ ... ।

[३२२४] ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

रथेन पृथुपाजसा ।

८।५।२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अध्विनो)

["] ४।४६।५ दाश्रांसमुप गच्छतम् ।

१।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अध्विनो)

[३२२५] ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

पिबतं दाशुषो गृहे ।

(३३२२) ४।४९।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

८।२२।८ (सोमार् काण्वः । अध्विनो)

[३२२७] ४।४७।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।

मिन्नमापो न सध्वयक् ।

- (३२३१) ५।५१।६ (स्वस्त्यात्रेय । इन्द्रवायू)
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः ।
(२०२) ८।३२।२३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
निम्नमापो न सध्व्यक ।
[३२२८] ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
आ यातं सोमपीतये ।
८।२२।८ (गोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
[३२२९] ४।४७।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाक्षुषे नरा ।
(३०६३) ६।६०।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
[३२१७] ४।४९।१ उक्त्रं मदश्च शस्यते ।
१।८६।४ (गोतमो राहुगणः । मरुतः)
[३२१९] ४।४९।३ = (३२१८) १।१३।७
गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।
["] ४।४९।३ = (३००४) १।२१।३ सोमपा सोमपीतये ।
[३२२०] ४।४९।४ रथिं धत्ते वसुमन्तं शतग्विनम् ।
१।१५९।५ (दीर्घतमा आचक्ष्यः । यावापृथिवी)
[३२२१] ४।४९।५ = १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
अस्य सोमस्य पीतये ।
[३२२२] ४।४९।६ = (३२२५) ४।४६।६ पिबतं दाक्षुषो गृहे ।
८।२२।८ (गोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
[३२२४] ४।५०।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)
अविष्ट धियो जिगृतं पुरंधीर्जज्ञस्तमयो वनुषामराती ।
७।३४।५ = ७।६५।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।
(३३६१) ७।२७।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावृहस्पती)
[३२३१] ५।५१।६ सुतानां पीतिमर्हथः ।
१।३४।६ (परच्छेपो देवोदासिः । वायु)
सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि ।
(३२२७) ४।४७।२ सोमानां पीतिमर्हथः ।
[३२३२] ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेय । इन्द्रवायू)
सुता इन्द्राय वायवे ।
९।३३।३ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुत्यः ।
सोमा अर्षन्ति विष्णवे ।
९।३४।२ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
सुत... ..।
सोमो अर्षति... ..।
९।६५।२० (नृगुर्वारिणिर्जमदभिर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
अग्न्या इन्द्राय . . ।

- सोमो.... ।
[३२३२] ५।५१।७ = (१८) १।५।५ सोमासो दध्याशिरः ।
[३०४१] ५।८६।२ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
श्रवाटया ।
या पञ्च चर्षणीरभि ।
(अग्निः ११७८) ७।१५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
यः पञ्च चर्षणीरभि ।
९।१०१।९ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)
... श्रवाटयम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि ।
["] ५।८६।२ = (३००४) १।२१।३ इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
[३०४३] ५।८६।४ ता वामेषे रथानाम् ।
५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
["] ५।८६।४ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी हवामहे ।
पती तुरस्य राधसो ।
(३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी हवामहे ।
(२०४०) ६।४४।५ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पतिं तुरस्य राधसः ।
[३०४५] ५।८६।६ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
घृतं न पूतमद्विभि ।
सूरिषु श्रवो... ..रथिं गुणस्तु दिधृतम् ।
(२९१) ८।१२।४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
घृतं न पूतमद्विभिः ।
(३३२) ८।१३।१२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
रथिं गुणस्तु धारय ।
श्रवः सूरिभ्यो ...।
[३३३०] ६।५७।१ वयं सकृदाय स्वस्तये ।
(१६४०) ४।३१।११ अस्मो... ..सकृदाय स्वस्तये ।
["] ६।५७।१ = (१७४१) ५।३५।६
हुवेम (हवन्ते) वाजसातये ।
[३०४८] ६।५९।३ इन्द्रा न्वरग्नी अवसे ।
५।४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वेदेवाः)
[३०५२] ६।५९।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
मा नो अस्मिन् महाधने परा वक्तं गविष्टिषु ।
(अग्निः १३८४) ८।७५।१२ (विरूप आश्रितः । अग्निः)
—परा वग्भौरभृद्यथा ।
[३०५३] ६।५९।८ अथा अर्यो अरातयः ।
६।४८।१६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । नृणपाणिः । पूषा)

- [३०५४] ६।५९।९ रवि विश्वाद्युषोवसम् ।
(अभिः २५२) १।७९।९ (गोतमो राहूगणः । अभिः)
- [३०५५] ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
गोमिरा गतम् ।
८।८।७ (सम्बंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ . . गतम् ।
धिभिःस्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
(३१०) ८।१२।२३ (पर्वत काण्वः । उन्द्रः)
स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् ।
- ["] ६।५९।१० = १।२२।१ (मधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
- [३०६०] ६।६०।५ = (३०४३) ५।८६।४
- ["] ६।६०।५ = (३१३४) १।१७।१
- [३०६२] ६।६०।७ = (७७) १।११।८
- [३०६३] ६।६०।८ = (३२२९) ४।४७।४
- [३०६४] ६।६०।९ = (८२) १।१६।५
- ["] ६।६०।९ = (३०७७-७९) ८।३८।७-९
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
- [३०६९] ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
आ नो गव्येभिरश्वैर्वसवै ररुप गच्छतम् ।
८।७३।१४ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्विर्वा । अश्विनौ)
आ नो गव्येभिरश्वैः सहसैरुप गच्छतम् ।
- ["] ६।६०।१४ = (३००४) १।२१।३
- [३०७०] ६।६०।१५ = ६।५४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
- ["] ६।६०।१५ पिबतं सोम्यं मधु ।
७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । अश्विनौ)
८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
८।८।१ (सम्बंसः काण्वः । अश्विनौ)
८।३५।२२ (शावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
(१८०२) ८।२४।१३ पिबति सोम्यं मधु ।
- [३१६२] ६।६८।२ शरणां यविष्ठा ता हि भूतम् ।
(३०७२) ७।२३।२ ता सानसी शवसाना हि भूतं ।
- [३१६४] ६।६८।४ द्यौश्च पृथिवि भूतसुर्वी ।
१।०।९३।१ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवा)
महि यावापृथिवी भूतसुर्वी ।
- [३१६६] ६।६८।६ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
यावापृथिवी)
- [३१६८] ६।६८।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
अपो न नावा दुरिता तरेम ।
७।६५।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मित्रावरुणौ)

- [३१७१] ६।६८।११ = (३०१०) १।१०।८।३
["] ६।६८।११ = ६।५२।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः ।
विश्वेदेवाः)
- [३३०९, ३३१२] ६।६९।४, ७ उप ब्रह्माणि शृणुतं गिरे
(७ हवं) मे ।
- [३२७२] ६।७२।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी)
उत्सृज्यं नयथो ।
... अप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ।
१०।६२।३ (नामानेदिष्टो मानवः । विश्वेदेवा)
सूर्यमारोहयन् . अप्रथन् पृथिवीं मातरं वि ।
- [३२७४] ६।७२।४ उन्द्राग्नीमा पक्वमामास्वन्तः ।
२।४०।२ (गृत्समदः शौनकः । योमापुष्पणी)
आभ्यामिन्द्र पक्वमामास्वन्तः ।
- [३२७५] अपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।
१।११७।२३ (कक्षीवान् औगिजः दीर्घतमः । अश्विनौ)
रराथाम् ।
- [३१७२] ७।८२।१ विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
(अभिः २४७२) १।९३।८ (गोतमो राहूगणः । अर्गनापिमां)
- [३१७८] ७।८२।७ न तमंहो न दुरितानि ... कुतश्चन ।
२।२३।५ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
- [३१८०] ७।८२।९ = (१५७९) ४।२४।३
- [३१८१] ७।८२।१० = (३१९१) ७।८३।१०
(वसिष्ठो मैत्रावरुणः । उन्द्रावरुणौ)
अस्मे इन्द्रो बरुगो मित्रो अर्यमा युज्ञं यच्छन्तु महि
शर्म सप्रय ।
अबध उयोतिरदितेऋतावृधो देवस्य श्लोक सवितुर्मनामहे ॥
- [३१९२] ७।८४।१ = १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
मित्रावरुणौ)
- ["] ७।८४।१ दधाना परि त्मना विषुरुपा जिगानि ।
(अग्निः ८६९) ५।२५।४ (वरुण आगिर्ममः । अग्निः)
- [३१९३] ७।८४।२ परि नो हेळो बरुगस्य वृज्याः ।
२।३३।१४ (गृत्समदः शौनकः । रुद्र)
- [३१९४] ७।८४।३ = ७।५८।३
(वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मरुतः)
- [३१९५] ७।८४।४ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
यावापृथिवी)
- [३१९६] ७।८४।५ = (३२०१) ७।८५।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः ।
इन्द्रावरुणौ)
- इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना ।
सुरगनासो देववीति गमेम यूयं पात स्वन्तिभिः सदा नः ॥

[३१९६] ७।८४।५ तोके तनये तूतुजाना ।
 ७।६७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ)
 [३२३४] ७।९०।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रवायू)
 गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।
 १०।१०८।७ (पण्योऽमुराः । सग्मा देवता)
 गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्मृत्युः ।
 [३२३५] ७।९०।७=(३२४०) ७।९१।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 इन्द्रवायू)
 अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
 वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
 [३२३७] ७।९१।४=(७४१) १।३३।१२
 [३२४०] ७।९१।७=(३२३५) ७।९०।७
 [३०७२] ७।९३।२=(३१६२) ६।६८।२
 [३०७६] ७।९३।६=(३०११) १।१०८।४
 [३०७७] ७।९३।७=१।१७९।५ (अगस्त्यशिष्यः । रतिः)
 [३०७८] ७।९३।८=१।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)
 [३०८०] ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा)
 शृणुत जरितुर्हवम् ।
 (३२७) ८।१३।७ (नारद काण्व । इन्द्रः)
 शृणुषी जरितुर्हवम् ।
 ८।८५।४ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)
 ["] ७।९४।२ ईशाना पिप्यतं धिषः ।
 ५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 [३०८१] ७।९४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा)
 मा नो रीरधतं निदे ।
 ८।८।१३ (सन्वम. काण्वः । अश्विनौ)
 [३०८३] ७।९४।५=(अग्निः ८६२) ५।१४।३
 (मृतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 ["] ७।९४।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा)
 सबाधो वाजसातये ।
 (अग्निः १४५३) ८।७४।१२ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
 [३०८४] ७।९४।६=(अग्निः ८९३) ५।२०।३
 (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)
 [३०८५] ७।९४।७=(१७३६) ५।३५।१
 ["] ७।९४।७=(३२४९) १।२३।९
 [३०८६] ७।९४।८=१।१८।३ (मेधातिथिः काण्वः । ब्रह्मणस्पतिः)
 ["] ७।९४।८=(३००७) १।२१।६
 [३३६१] ७।९७।२=(३३२४) ४।५०।११
 [३३२५] ७।९७।१०=(३३२५) ७।९८।७
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राबृहस्पती)

बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्यो विद्यस्येशाये उत पार्थिवस्य ।
 धत्तं रयिं स्तुवते कीरये धिषूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
 [३३२५] ७।९७।१०=(१९२०) ६।२३।३
 [३३१४] ७।९९।४ उरु यज्ञाय चक्रधुरु लोकम् ।
 (अग्निः २४७०) १।९३।६ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमी)
 [३०९१-९३] ८।३८।१-३ इन्द्रार्मा तस्य बोधतम् ।
 [३०९२] ८।३८।२=(३०३३) ३।१२।४
 [३०९३] ८।३८।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रार्मा)
 इदं वा मदिरं मध्वधुक्षन्नाद्रिभिर्नरः ।
 (६०८) ८।६५।८ (प्रगाथ. काण्वः । इन्द्रः)
 इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नाद्रिभिर्नरः ।
 [३०९४] ८।३८।४=५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 [३०९४-९६] ८।३८।४-६ इन्द्रार्मा आ गतं नरा ।
 [३०९७] ८।३८।७=५।५१।३ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः)
 [३०९७-९९] ८।३८।७-९=(३०६४) ६।६०।९
 [३०९८] ८।३८।८=(१७७५) ८।३६।७
 [३०९९] ८।३८।९ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रार्मा)
 एवा वामद्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
 इन्द्रार्मा सोमपीतये ।
 ८।४२।६ (नाभाक. काण्वः अर्चनाना आत्रेयो वा । अश्विनौ)
 एवा ।
 नास्त्या सोमपीतये ।
 [३१००] ८।३८।१० इन्द्राग्न्योरवो वृणे ।
 ८।९४।८ (बिन्दुः पूतदधो वा, आङ्गिरसः । मरुतः)
 देवोनामवो वृणे ।
 [३१०५] ८।४०।५=(७७) १।११।८
 [३१०६] ८।४०।६ ओजो दासस्य दम्भय ।
 [३१०७] ८।४०।७=(१०) १।४।७
 ["] ८।४०।७=(१०२८) १।१३।१
 [३१०९] ८।४०।९=(२०६२) ६।४५।३
 [३११०-११] ८।४०।१०-११
 उतो न धिष ओजसा (११ ओहते)
 [३११०] ८।४०।१० क्षुण्णस्वाण्डानि भेदति ।
 (३१११) ८।४०।११ भाण्डा क्षुण्णस्य भेदति ।
 ["] ८।४०।१०=(६५) १।१०।८
 [३११२] ८।४०।१२ वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।
 ४।५०।६ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः)
 [५३९] ८।५५ (वाल्मीकि) १।१ (कृष्णः काण्वः । इन्द्रः प्रस्कण्वश्च)
 राधस्ते दस्यवे वृक ।

(५४४) ८।५६ (वाल०८) । १ (पृषधः काण्वः । इन्द्रः)
 प्रति ते दस्यवे वृक राधो ।
 [३२०२] ८।५९ (वाल०११) । १ (सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
 यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ।
 (२४९१) १०।२७।१ (वसुक् ऐन्द्रः । इन्द्रः)
 ... शिक्षम् ।
 [३२०३] ८।५९ (वाल०११) । २ = १।८५।२
 (गोतमो राहुगणः । मरुतः)
 [३२०४] ८।५९ (वाल०११) । ३ = १।४७।५
 (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 [३२०८] ८।५९ (वाल०११) । ७ (सुपर्णः काण्वः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।
 १०।१७।९ (देवधवा यामायनः । सरस्वती)
 ... धेहि ।
 (अग्निः १६८२) १०।१२२।८ (चित्रमहा वासिष्ठः ।
 अग्निः)
 धारय ।

[३३४४] ८।९३।३४ ऋभुक्षणसृभुं रयिम् ।
 ४।३७।५ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
 ऋभुसृक्षणो रयिं ।
 [३३२६] ८।९६।१५ विशो भदेवीरभ्यादे चरन्तीः ।
 ६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 विशा भदेवीरभ्यश्च ध्रुवाम् ।
 [२८४२-४९] १०।४७।१-८ अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ।
 [२८४५] १०।४७।४ = (१८७८) ६।१९।७
 [२६९१] १०।९९।१२ इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।
 (अग्निः १५८०) १०।२०।१० (विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो
 वा, वसुकृद्वा वसुकः । अग्निः)
 [२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१
 दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।
 [२७७२] १०।१२०।९ द्विन्वन्ति च शवसा वर्षयन्ति च ।
 (अग्निः ८४६) ५।११।५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 पृणन्ति शवसा ।

सूचना

पुनरुक्त-मन्त्रसूची को निम्नलिखित बिधिले देखना चाहिये—

(१) चतुष्कोण [] कंसमें जो अंक है वह मन्त्रोंका 'क्रमांक' है । उसके साथके अंक ऋग्वेदादिके विभागोंके दर्शक हैं ।

(२) गोल कंस () में पूर्व भाग्ये मन्त्रोंके क्रमांक हैं और उनके साथवाले अंक ऋग्वेदादिके दर्शक हैं ।

(३) जहाँ तहाँ आवश्यक पुनरुक्त मन्त्रभाग दिया है । एक बार दिया पुनः नहीं दिया है । पुनः पुनः पुनरुक्त मन्त्रभाग नहीं दिया, केवल उसके स्थानका ही निर्देश किया है— जैसा— [२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१ इसका अर्थ यह है कि यह मन्त्र क्रम "[१२८०] पृ० २३०" पर देखिये । इन दो मन्त्रोंमें " ...गोपति... दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः । " इतना मन्त्रभाग पुनरुक्त हुआ है, पर दूसरे मन्त्रमें 'गोत्र' शब्द है, 'गोपति' नहीं है । इस तरह सर्वत्र समझना चाहिये ।

इन्द्रमन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची ।

— १०९ —

अंशं न प्रतिजानते ३,४५,४; १४०७ रायि आभर ।
 अंशा इव ५,८६,५; ३०४४ अहं पुरः दधे ।
 अक्षः न चक्रगोः ६,२४,३; १२३० वृद्धन् मङ्गा रोदस्यो ।
 अक्षं न चक्रगोः १,३०,१४ ७१२ व आ क्रगोः ।
 अक्षं न शचीभिः १,३०,१५; ७१३ जरितृणां कामं आ ।
 अक्षेण इव चाक्रिया १०,८९,४; २६६६ शचीभिः विष्वक् ।
 अग्निः न जम्भैः १०,११३,८; २७५२ तृषु अक्षं आवयत् ।
 अग्निः वना इव ८,१२,९; २९६ अर्क्षसान नि ओषति ।
 अग्निः न शुष्कमनम् ६,१८,१०; १८६५ ह्रतिः रक्षः ।
 अग्निमान् चरुः इव ७,१०४,२; अथ ०८,४,६; ३२७९ तपुः ।
 अग्नौ इव हविः समिधाने २,१६,१; ११७२ ज्येष्ठ तमाय ।
 अंकी इव वृक्षं पक्षं फलम् ३,४५,४; १४०७ सं पारणं वसु ।
 अंकुशम् यथा हि दीर्घं १०,१३४,६; २७९० शक्तिं विमर्षि ।
 अंगिरस्वत् १,६२,१; ८७२ शूर्पं आंगुषं प्र मन्महे ।

” ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।
 अतथा इव १,८२,१; ९२५ मघवन् मा भूः ।
 अत्कं न ४,१६,१३; १४७९ पुरः विदर्दः ।
 अत्यः न ८,५०,५; ४९९ आ इयानः तोशते ।
 ” १०,१४४,१; २७९८ इन्द्रुः पत्यते ।
 अत्यः न घोषाम् १,५६,१; ८०५ पूर्वीः चञ्चिषः प्र भव ।
 अत्यः न वाजी ५,३०,१४; ३३३९ रघुः अज्यमानः ।
 अत्यः न ७,२४,५; २१९० वाजयन् अधायि ।
 अत्यः न वाजी सुधुरः ३,३८,१; १३४५ जिहानः प्रियाणि ।
 अत्यम् इव १,१३०,६; १०१६ शवसे सातये धना ।
 अत्यम् न वाजम् १,५२,१; ७६० हवनस्यदं रथं ।
 अत्यं न वाजिनम् १,१२९,२; १००१ पृक्षं वाजिनं इन्द्रं ।
 अत्यं न वाजिनम् १,१३५,५; ३२१६ आशुं वाजिनं ।
 अत्यान् इव आजौ ३,३२,६; १२८७ (अन्तरिक्षात् अपः) ।
 अत्रेः यथा कृण्वतः ८,३६,७; १७७५ सुन्वतः इवावाक्षस्य ।
 ” ८,३६,७; १७८९ रभतः इवावाक्षस्य ।
 अदुग्धा इव धेनवः ७,३२,२२; २२५६ त्वा अभि नोनुमः ।
 अद्भुतं न रजः १०,१०५,७; २७२० इन्द्रः अरुतहनुः ।
 अक्षस्यः न ६,३०,३; १९७० पर्वताः नि सेवुः ।

अध्वनः न अन्ते ४,१६,२; १४६८ सवने नः अवस्य ।
 अन्तरिक्षे न वातम् २,१४,३; ११५२ तस्मै सोमम् ... ।
 अतिष्ठन्तं अमस्यं न सर्गम् १०,८९,२; २६६४ कृष्णा नमोषि ।
 अपः न नावा ६,६८,८; ३१६८ दुरिता तरेम ।
 अपाम् इव प्रवणे १,५७,१; ८११ बलं दुर्धरम् ।
 अपाम् ऊर्मिः मदन् इव ८,१४,१०; ३६३ सोमः अजिरायते ।
 अपाम् अवः न समुद्रे ८,१६,२; ३८३ यस्मिन् ङक्थाने ।
 अपी इव योषा जनिमानि ३,३८,८; १३५२ रोदसी आ वमे ।
 अप्सः न ८,४५,५; ४४७ गिरौ योधिषत् ।
 अभीवृता इव महापदेन १०,७३,२; २६२४ गर्भाः इत् ।
 अभीशून् इव सारथिः ६,५७,६; ३३३५ इन्द्रं स्वस्तये ।
 अभाणि इव सानयन् ६,४४,१२; २००७ इन्द्रः उत् इयति ।
 अमाजूः इव पित्रोः २,१७,७ ११८७ त्वाम् भगम् आ इये ।
 अयम् (अग्निः सोमः वा) न १,१३०,१; १०११ परावतः ।
 अयसः न धाराम् ६,४७,१० २१०८ धियं चोदय ।
 अया इव १०,११६,९; २७६३ देवाः परिचरन्ति ।
 अरणा इव ८,१,१३; ९९ वयं मा भूम ।
 अरान् न नेमिः १,३२,१५; ७२९ राजा (चर्वणीः) परिबभूव ।
 अरान् इव खे खेदया ८,७७,३; ६४२ तान् इत् समस्विदत् ।
 अर्चा इव मासा दिवि ६,३४,४; २०२४ इन्द्रे सोमः मिमिक्षः ।
 अर्णवः न १,५५,२; ७९८ नद्यः प्रति गृह्णाति ।
 अर्थम् न झारः १०,२९,५; २५१९ नः पारं प्रेरय ।
 अर्भकः न कुमारकः ८,६९,१५; २३१७ नवं रथन् ।
 अर्वा न ३,४९,३; १४२६ पृथु सदावा तरणिः ।
 अर्वन्तः न ७,९०,७; ३२३५ ऋवसः भिक्षमाणाः ।
 ” ७,९१,७; ३२४० ”
 अर्वन्तः न काष्ठा ७,९३,३; ३०७३ नरः इन्द्राग्नी ।
 अर्वतः न ५,३६,२; १७४५ त्वा अनु वयं गीभिः हिन्वन् ।
 अर्वता इव साधुना १,१५,१; ३३०३ महः तस्थतुः ।
 अवते न कोशम् ४,१७,१६; १५०३ अक्षितोतिं आचया वयामः ।
 अवतासः न १,५५,८ ८०४ तनवः कर्तुभिः आकृतासः ।
 अवतम् न १,१३०,२; १०१२ सिकं सोमं पिब ।
 अवताम् इव मानुषः ८,६२,६; ५७१ ऋचीषमः भव चहे ।

अवस्यवः न वयुनानि २,१९,८; १२०६ गृहसमदाः मन्म ।
 अविता यथा नः ७,२४,१; २१८६ एवा नः वसुनि ददः ।
 अवीराम् इव १०,८६,९; २६४८ माम् अभिमन्यते ।
 अशनिः न ६,८,१०; १८६५ भीमा हेतिः ।
 अशनिः यथा अथ०७,५०,१; २९०६ कितवान् अप्रति ।
 अशन्या इव वृक्षम् २,१४,२; ११५१ वृत्रं जघान ।
 अशनिमान् इव द्यौः ४,१७,१३; १५०० समोहं रेणुं ह्यति ।
 अशीर्षाणः इव अथ. ६,६७,२; २८९४ अमित्रा. अहयः ।
 अशीर्षाणः अहयः साम १८७१; ३००१ अमित्राः अन्धाः ।
 अश्मा इव २,३०,४; १२३० वीरान् तपुषा विध्य ।
 अश्मा इव १०,८९,१२; २६७३ द्रोघ मित्रान् आविध्य ।
 अश्मना इव पूर्वाः २,१४,६; ११५५ शम्बरस्य पुरः बिभेद ।
 अश्वः न निक्तः ८,२,२; ११७ धूत सोमः वारैः परिपूतः ।
 अश्वः न हियातः ८,४९,५; ४७९ स्तोमम् उप आ द्रवत् ।
 अश्वा इव वाजिना ७,१०४,६; अथ. ८,४,६; ३२८३ मतिः ।
 अश्वासः न ८,५५,४; ५४२ यूयम् चङ्क्रमत ।
 अश्वः क्रन्दत(लुप्तोपमा) १,१७३,३; १०५८ अग्निः क्रन्दति ।
 अश्वीर इव जामाता ८,२,१०; १३५ अस्मत् आरे सायं ।
 असिः न पर्व १०,८९,८; २६६९ त्वम् वृजिना शृणासि ।
 अस्ता इव ४,३१,१३; १६४२ यजान् अपा वृधि ।
 अस्ता इव ६,२०,९; १८९२ हरी अधि तिष्ठत् ।
 अस्ता इव १०,४२,१; २५४६ सु प्रतरं लायं अस्पन् ।
 अह इव ८,९६,१९; २३६१ रेवान् ।
 अहा विश्वा इव सूर्यम् १,१३०,२; १०१२ ते मदाय त्वा ।
 अहोभिः इव द्यौः १,१३०,१०; १०२० दिवोदासेभिः ।
 आजि न अश्वाः ६,२४,६; १९३३ गिर्वाहः त्वा जग्मुः ।
 आजिम् न ४,४१,८; ३१५३ युवयूः धियः वां जग्मुः ।
 आपः न १,६३,८; ८९२ इषं परिउमन् पीपयः ।
 आपः न ८,३३,१; २१० वृक्षवर्हिष ।
 आपः न अनु ओक्यं सर ८,४९,३; ४८७ राधसे पृणन्ति ।
 आपः न तृष्यते १,१७५,६; १०८४ जरितृभ्यः मय इव बभूय ।
 " १,१७६,६; १०९० " " "
 आपः न देवीः १,८३,२; ९३२ होत्रियं देवासः उप यन्ति ।
 आपः न द्वीपम् १,१६९,३; १०४५ प्रयासि दधति ।
 आपः न निम्नम् ४,४७,२; ३२२७ इन्द्रवः युवाम् ।
 आपः न निम्नम् ८,३२,२३; २०२ मे गिरः त्वा यच्छन्तु ।
 आपः निम्नेव १,५७,२; ८१२ हविषमन्तः सवनासं वाजन्ते ।
 आपः न पर्वतस्य पृष्ठान् ६,२४,६; १९३३ उक्येभिः यज्ञैः ।
 आपः न प्रवताः ८,६,३४; २७६ इन्द्रं वनन्वती मतिः ।
 आपः न प्रवताः ८,१३,८; ३२८ सूनुताः यतीः क्रीकन्ति ।

आपः न सिन्धुम् १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रम् ।
 आपः न सृष्टाः ७,१८,१५; २१३३ तृसवः नीचीः ।
 आपः न उर्वीः काकुदः १,८,७; ४४ एवा इन्द्रस्य ।
 आपः इव काशिना ७,१०४,८; २२८५ असतः वक्ता असन्
 संगृभीता अथ. ८,४,८; ३२८५ अस्तु ।
 आपः न धायि ८,५०,३; ४९७ सवनं मे आ वसो ।
 आशु न रश्मिम् ४,२२,८; १५६२ शुशुचानस्य ।
 इन्द्रम् न ४,४२,८; ३१५८ वृत्रतुरम् आ अयजन्त ।
 इन्द्रं न चितयन्तः १,१३१,२; १०२२ आयवः यज्ञैः ।
 इषम् न १०,४८,८; २५८६ वृत्रतुरम् विश्व धारयम् ।
 उग्रं न वीरम् ८,४९,६; ४९० विभूतिं उपसेदिम ।
 उत्सम् न २,१६,७; ११७८ वयं इन्द्रं सिचामहे ।
 उदा इव यन्ता ८,९८,७; २३७० उप त्वा कामान् ।
 उद्रा इव कोशम् ४,२०,६; १५३८ वसुनान्यृष्टं वज्रं ।
 उदभिः नवाजिन्म् २,१३,५; ११४१ देवाः देवं स्तोमेभिः ।
 उदधीन् इव गर्भारान् ३,४५,३; १४०६ त्वं क्रतुं पुष्यसि ।
 उद्री इव ८,४९,६; ४९० अवतः न सिञ्चते ।
 उद्री इव अवतः ८,५०,६; ५०० वसुत्वना सदा पीपेथ ।
 उप इव दिवि ८,३२,११; १७६ धावमानम् विश्वेषां एमना ।
 उरा न वृकः ८,३४,३; ४२७ नेमिः एषां विधुनुते ।
 उरुधारा इव ८,९३,३; २४३२ इन्द्रः नः दोहते ।
 उशती इव ५,३२,१०; १७१४ गातुः इन्द्राय येमे ।
 उशतीः इव १०,१११,१०; २७३४ सध्रीचीः सिन्धुम् आषन् ।
 उशनाः इव ४,१६,२; १४६८ वेधाः असुयाय मन्मशंसति ।
 उषा इव १०,१३४,१; २७८५ रोदसी आपप्राथ ।
 उषसम् न ७,८५,१; ३१९७ पृतप्रतीकां देवीम् ।
 उषसम् न सूर्यः १,५६,४; ८०८ इन्द्रं देवी तविषी सिषकि ।
 उषसः न ७,१८,२०; २१३८ रायः सुमतयः न संक्षे ।
 उषसः न केतुः १०,८९,१२; २६७३ हेतिः असिन्वा वर्तताम् ।
 उत्वा इव राशयः ८,९६,८; २३५२ मरुतः त्वा वावृधानाः ।
 ऊधः न ८,२,१२; १२७ नम्राः जरन्ते ।
 ऊधः गोः पयसा यथा २,१४,१०; ११५९ इन्द्रं सोमेभिः ।
 ऊर्जं न विश्वध क्षरयै १,६३,८; ८९२ यया एमन्म् अस्मभ्यं ।
 ऊर्जरम् न यवेन २,१४,११; ११६० इन्द्रं सोमेभिः आपृणीत ।
 ऊर्वः इव ३,३०,१९; १२५६ अस्मे कामः पप्रथे ।
 ऋणावानं न १,१६९,७; १०४९ पृतनायन्तं सगैः पतयन्त ।
 ऋभुः न १०,१०५,६; २७१९ क्रतुभिः मातरिश्वा ।
 ऋष्यः न तृष्यन् ८,४,१०; २३८ अप पानम् आ गहि ।

ओकः न ४, १६, १५; १४८१ रणवः ।

ओकः न जानती १, १०४, ५, ८५१ दस्योः सदनं अच्छा गात् ।
ओपशम् इव १, १७३, ६; १०६१ इन्द्रः याम् भर्ति ।

कृष्णाः इव ८, ३, १६; १७१ इन्द्रं सोमेभिः महयन्ते ।

कनीनका इव ४, ३२, २३; ३३४८ कमनीयी ।

कविः न निण्यम् ४, १६, ३, १४६९ विदधानि साधन् ।

कारं न ५, २९, ८; १६७४ इन्द्राय भरं अहन्त ।

कारुः उक्थ्यः [इव] १८३, ६; ९३६ यत्र प्रावा वदति ।

किरणाः न १, ६३, १; ८८५ गिरयः अभवा दृढहासः ऐरयन् ।

कुलपाः न ब्राजपतिम् १०, १७९, २; २८३७ सखायः चरन्तं ।

कुल्याः इव हृदम् ३, ४५, ३; १४०६ सोमाः स्वाम्प्र आशत ।

" " " १०, ४३, ७; २५६३ सोमासः इन्द्रं अभि ।

कृतं न शमी देवने १०, ४३, ५, २५६१ संवर्गं यत् मघवा ।

कोशं न पूर्णं वसुना १०, ४२, २; २५४७ न्यृष्टं इन्द्रं ।

क्रिबिम् यथा १, ३०, १; ६२९ इन्द्रं इन्दुभिः आसिञ्चे ।

क्षप्र इव १, १३०, ४; १०१४ इन्द्रः वज्रं संदयत् ।

क्षाः न १, १३३, ६; १०३९ घोः भीषान् शुशोच ।

क्षुद्रम् इव १, १२९, ६; १००५ अवशंसः अवतरं अव स्वयेत् ।

क्षुम्पम् इव १, ८४, ८, ९४४ मत्तं पदा अस्फुरत् ।

क्षुल्लाकाः इव अथर्वं ५, २३, १२; २८८५ क्रिमयः हताः ।

क्षोणयः यथा १०, २२, ९; २४७४ पूर्वतः स्वां पुरुत्रा वि ।

क्षोणीः इव १, ५७, ४; ८१४ त्वं नः वचः हर्य ।

खले न पर्षान् १०, ४८, ७, २५८५ अहम् भूरि प्रति हन्मि ।

खर्गका इव ७, १०४, १७; ३२२४ तन्वं गूढमाना ।

अथ ०८, ४, १७;

गृधम् यथा ८, ४५, १३; ४५५ तथा स्वां वयं विप्र ।

गर्भं न माता ३, ४६, ५; १४१३ सोमं यावापृथिवी ।

गर्भधिम् इव कपोतः १, ३०, ४; ७०२ अयम् उ ते समतसि ।

गवे न आकिने ६, ४५, २२; १०८१ पुरुहूताय शम् गाय ।

गवां व्रजम् इव १, १३०, ३; १०१३ वज्री सोमं अविन्दत् ।

गवाम् इव स्तुतयः ६, २४, ४; १९३१ ते शाकाः संचरणीः ।

गावः न यवसात् ७, १८, १०; २१२८ चितासः मित्रम् ।

गावः न यूथम् ८, ४६, ३०; १८३८ वध्रयः मा उप यन्ति ।

गावः न यवसेषु ८, २२, १२; २४०८ स्वा उक्थेषु ।

गाम् न ८, १, २; ९० इन्द्रं शंसत ।

गाम् इव भोजसे ८, ६५, ३; ६०३ सोमस्य स्वा आ हुवे ।

गाम् न वोहसे ६, ४५, ७ २०६६ सखायं गीर्भिः हुवे ।

गाम् क्षीरिणाम् इव अथ ७, ५०, ९; २९११ कलवतीं युवं ।

गाः न १, ६१, १०; ८६५ इन्द्रः अवनीः अमुञ्चत् ।

गाः इव सुगोपाः ३, ४५, ३; १४०६ स्वम् कर्तुं पुण्यसि ।

गावः न ६, ४१, १; १९९३ स्वम् ओकः अच्छ आ गहि ।

गावः न धेनवः वत्सम् । ६, ४५, २८; २०८७ गिरः सुते ।

गिरिः न ४, २०, ६; १५३८ स्वतवान् ऋणः इन्द्रः ।

गिरिः न भुजम् ८, ५०, २; ४९६ मघवस्तु पिब्वते ।

गिरिः न विश्वतस्पतिः ८, ९८, ४ २३६७ विश्वतस्पृथुः ।

गिरिम् न ८, ८८, २; ८९५ इन्द्रं ईमहे ।

गिरिं न वेनाः १, ५६, २; ८०६ विदधस्य नू सदः ।

गिरेः इव ८, ४९, २; ४८६ अस्य रसाः प्र पिब्वरे ।

गोभिः इव व्रजम् ८, २४, ६; १७९५ स्वा गीर्भिः आ वृणोमि ।

गोः न १, ६१, १२; ८६७ पर्वं तिरश्चा वि रदा ।

गौः रुवत् (लुप्तोपमा) १, १७३, ३; १०५८ (अग्निः) ।

गौः इव ८, ३३, ६, २१५ पुरुहूतः ऋषा शाकिनः ।

गौरः न १, १६, ५; ८२ तृषितः (सोमं) पिब ।

गौरः यथा ८, ४५, २४; ४६६ तथा सरः पिब ।

गौरः यथा अपा कृतं ८, ४, ३, २३१ तथा आपिस्वे नः प्रपिस्वे ।

प्रावा इव ५, ३६, ४; १७४७ जरिता ते वाचं ह्यर्ति ।

घनेन इव १, ६३, ५; ८८९ अभित्रान् भयिहि ।

घर्मम् न सामम् ८, ८९, ७; २३२० जुष्टम् बृहत् तपत् ।

घृणात् न १, १३३, ६; १०३९ घोः भीषां शुशोच ।

घृतम् न ८, १२, ४; २९१ इमं स्तोत्रं अभिष्टये ।

घृतं न ८, १२, १३; ३०० ऋतस्य आसनि पिष्ये ।

घृतं न पूतं अत्रिभिः ५, ८६, ६; ३०४५ इन्द्राग्निभ्यां हव्यं ।

घृतप्रुषः न ऊर्मयः ६, ४४, २०; २०५५ वृषणः द्रोणं ।

चक्रं न वृत्तम् ४, ३१, ४; १६३३ अर्बतः नः चर्वणीनाम् ।

" " ५, ३६, ३; १७४६ मे मनः मिया वेपते ।

चक्रं न वर्ति एतशम् ८, ६, ३८, २८० रोदसी स्वा अनु ।

विश्वा चक्रा इव ४, ३०, २; १६१० कृष्टयः ते अनु सत्रा ।

चक्रिया इव ४, ३०, ८; १६८९ मरुत्यः रोदसी ।

चन्द्रमा इव अप्सु ८, ८२, ८; ६८६ सोमः चमूषु ददशे ।

चञ्जोषः न १, १००, १२; ९६८ शवसा पाञ्चजम्यः ।

चर्म इव ८, ६, ५; २४७ रोदसी समवर्तयत् ।

जघना इव द्वौ १, २८, २; ६८९ अधिषवण्या कृता ।

जघन्थ यथा धृषता २, ३०, ४; १२३० अस्माकं शत्रुं जहि ।

जवं न धन्वन् अभि ६, ३४, ४; २०२४ सत्रा वायुतुः ।

जनयः न १, ६२, १०; ८८९ स्वसारः पत्नीः दुवस्यन्ति ।

जनयः न गर्भम् ४, १९, ५; १५२६ अद्रवः अभि प्र वृद्धः ।

जनयः यथा पतिम् १०, ४३, १; २५५७ मघवान् मतवः ।

जनीः इव ८, १७, ७; ५१० सोमः त्वा अभि संवृतः ।
जनीः इव एकः पतिः ७, २६, ३; २२०० सर्वाः पुरः सुसमानः ।
जनिष्वा इव १०, २९, ५; २५१९ अस्य कामं गमन् ।
जामिवत् १०, २३, ७; २४८७ ते प्रमति विद्या हि ।
जिह्वयः न ४, १९, २; १५२३ देवाः त्वां अवास्तुजन्त ।
जुष्टां न इयेनः वसतिम् १, ३३, २; ७३१ इन्द्र उत इव ।
जृः न वस्त्रैः २, १४, ३; ११५२ इन्द्रं सोमैः आ ऊर्णुत ।
जेन्धम् यथा १, १३०, ६; १०१६ वाजिनं शुभ्रमन्त ।
जोष्टारः इव वस्त्र ४, ४१, ९; ३१५४ मनीषां इन्द्रं वरुणं ।
ज्योतिः न ८, २४, १; १८१० दक्षिणा विश्वं अभि ।
तष्टा इव ३, ३८, १; १३४५ मनीषां अभि दीधय ।

” १, ६१, ४; ८५९ अहं स्तोमं सं हिनोमि ।
तष्टा इव सुद्रवनेमिम् ७, ३२, २०; २२५४ इन्द्रं गिरा ।
तष्टा इव बन्धुरम् १०, ११९, ५; २९५४ अहं मतिं पर्यचामि ।
तीर्थे न अर्थः १, १६९, ६; १०४८ पृथुबुध्नासः एता ।
तीर्थे न तातृषाणम् ओकः १, १७३, ११; १०६६ यज्ञः कन्धन् ।
तुजये न १०, ४९, ४; २५९३ यजमानाय प्रिया प्र भरे ।
तूर्णाशं न गिरेः अधि ८, ३२, ४; १८३ हुवे सुशिप्रम् ।
त्वष्टा न वृष्टं वनिनः १, १३०, ४; १०१४ शवसा (शत्रून्) ।
दक्षिणया इव ओजिष्ठया १, १६९, ४; १०४६ वयं रातिं ।
दस्मः न सद्यन् ७, १८, ११; २१८९ इन्द्रं सर्गं अकृणात् ।
दिवः न १, १००, ३; ९५९ इन्द्रस्य पन्थासः दुधानाः ।
दिवः न १, १००, १३; ९६९ त्वेष शिमीवान् रवथः ।
दिवः न ६, २०, २; १८८५ असुर्यं विश्वं तुभ्यम् अनु ।
दिवः ,, अथर्व. २, ५, २; २८६४ मधोः पृणस्व ।
दिवः ,, साम. ९५३; २९९८ ,, ,,
दिवः न बृष्टिम् ८, १२, ६; २९३ प्रथयन् ववक्षिथ ।
दिवे न सूर्यः ८, ७०, २; २३२२ दर्शतः हस्ताय वज्रः ।
दिवि इव ७, २४, ५; २१९० याम् अधि नः श्रोमतं धा ।
दिवि इव सूर्यं वृक्षे १०, ६०, ५; २६२२ असमातिषु क्षत्र ।
दिवि तारः न ८, ५५, २; ५४० श्वेतासः उक्षणं रोचन्ते ।
दिष्ट्या इव अशनिः १, १७३, ३; १०८७ यः असाधुकु तं ।
दीर्घः न अध्वा मिधं १, १७३, ११; १०६६ यज्ञः जुहुराणः ।
दुघा इव ८, ५०, ३; ४९७ दाक्ष्ये उप ।
दुर्गे दुरोणे कृत्वान् ४, २८, ३; १६०१ यातां सहस्त्रा ।
दुर्मदासः न सुरायाम् ८, २, १२; १२७ ह्यसु पीतासः ।
दुर्यः न घूपः १, ५१, १४; ७५८ पञ्चेषु स्तोमः ।
दूतः न १, १७३, ३; १०५८ रोदसी अन्तः चरत् ।
दूर्वायाः इव तन्तवः १, १३४, ५; २७८९ दिघवः विघ्नक् ।

दे० [इन्द्रः] ३४

दुषदा इव ७, १०४, २२; अथ० ८, ४, २२; ३२९९ रसः प्रमृण ।
देव इव सावेता वा०य० १२, ६६; २९२९ सत्यधर्मा इन्द्रः ।
द्यौः न १, ८, ५; ४२ शवः प्रथिना [युज्यताम् ।]
द्यौः न ४, २१, १; १५४४ अभिभूति क्षत्रं पुण्यात् ।
द्यौ न ६, २०, १; १८८४ यः अभि भूम ।
द्यौः न ६, ३६, ५; २०३५ दुवोयुः अर्थः रायः अभिभूम ।
द्यौ न ८, ५६, १; ५४४ शवः प्रथिनः ।
द्यावः न १, ५१, १; ७४५ (कर्माणि) मानुषा विचरन्ति ।
द्यावः न धूम्रैः ४, १६, १९; १४०५ वयम् अर्थः मदेम ।
द्याम् इव उपरि वर्षिष्ठम् ३, ३१, १५; १६४४ देवेषु अस्माकं ।
दुणा न पारं नदीनाम् ८, ९६, ११; २३५५ उक्थ वाहसे विभ्वे ।
धनं न जिग्युषः ७, ३२, १२; २२९६ अस्य अंश उत रिच्यते ।
धनं न स्पन्दम् १०, ४२, ५; २५५० सोमान् बहुलं आ सुनोति ।
धन्वा इव ३, ४५, १; १४०४ तान् अति इहि ।
धन्वचर न वंसगः ५, ३६, १; १७४४ रयीणां दामन आगमन् ।
धर्म इव सूर्यम् ८, ६, २०; २६२ प्रस्व त्वा गर्भं अचक्रिन् ।
धानानाम् न ८, ७०, १२; २३३२ आसां हस्ते नः दावने ।
धिषणा इव ३, ४९, ४; १४२७ भागं वाजं विभक्त ।
धुरि इव ७, २४, ५; २१९० एष स्तोमः उग्राय अधायि ।
धेनु न वत्स यवसस्य पिप्युषी २, १६, ८; ११७९ सं बाधात् ।
धेनवः यथा यवसम् ३, ४५, ३; १४०६ तथा त्वं सोमान् ।
धेनवः संपृक्ता मध्वा सारघेण ८, ४, ८; २३६ न सोमा वर्तन्ते ।
धेनुं न सूर्यवसे ७, १८, ४; २१२२ ब्रह्माणि त्वा उप ससृजे ।
धेनुः इव मनवे १, १३०, ५; १०१५ अस्मदर्थे समानं ।
धेनूनां न [पयः] १०, २२, १३; २४७८ [स्तुतीनां] भुजः ।
नदं न भिजम् १, ३२, ८; ७२२ शयानं आपः अति यन्ति ।
नद्यः न ४, १६, २१; १४८७ जरित्रे ह्यं पीपे ।

,, ४, २४, ११-१५८७

(सूक्तान्ते अष्टवारं पुनरुक्तः) १४८७-१५८७

नभ न ८, ९६, १४; ३२६९ कृष्ण अवन्स्थिवांसं इष्ट्यामि ।
नभन्वान्वक्त्राः ४, १९, ७, १५२८ ध्वक्षाः युवती प्र अभिन्वत् ।
नरां न शंसैः १, १७३ ९; १०६४ स्मिष्टयः वयं असाम ।
नरां न विष्पधांसः १, १७३, १०; १०६५ अस्माकं शंसैः ।
नवं इत् न कुम्भम् १०, ८९, ७; २६६८ गिरि विभेद ।
नभ्यः न । अथ० २, ५, २; २८६४ इन्द्रं जठरं पृणस्व ।
नभ्यं न । साम० ९५३; २९९८ जठरं पृणस्व ।
नावम् न पर्वणिम् १, १३१, २; १०२२ इन्द्रं श्वस्य धुरि ।
नावम् न समने २, १६, ७; ११७८ वचस्पुवं सवनेषु ।
नावा इव यान्तम् ३, ३२, १४; १२९५ इन्द्रं उभये हवन्ते ।

नासत्या इव १,१७३,४; १०५९ सुगम्यः इन्द्रः ।
 निधया इव १०,७३,११; २६३३ अस्मान् सुसुगिध ।
 निम्नम् न १,३०,२; ७०० समाक्षिरां सहस्रं पदुरीयते ।
 निम्नम् न सिधव ५,५१,७; ३२३२ प्रयः युवाम् अभि ।
 निष्ठा इव ८,१,१३; ९९ वयं मा भूम ।
 नृपती इव ७,१०४,६; अथ ८,४,६; ३२८३ इमा ब्रह्माणि ।
 नृवत् ४,२२,४; १५५४ वाताः परिउमन् नो जुवन्त ।
 पक्षा इव श्वेतम् ८,३४,९; ४३३ मदयुता हरी त्वा ।
 पणिना इव गावः १,३२,११; ७२५ आपः निरुद्धाः ।
 पतिं न पत्नीः उशतीः १,६२,११; ८८२ मनीषा त्वा ।
 पत्नीभिः न वृषणः २,१६,८; ११७९ ते सुमतिभि ।
 पदा इव पिप्रतीं जामिम् ८,१२,३१; ३१८ विप्रः धीभिः ।
 पदा पूर्वेण अजः वयां यथा १०,१३४,६; २७९० तथा यम ।
 परशुः यथा वनम् ७,१०४,२१; अथ ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः ।
 परश्वा इव १,१३०,४; १०१४ (अस्मद् द्वेषिणः) निवृश्चसि ।
 परिधीन् इव श्रित १,५२,५; ७६४ बलस्य परिधीन् ।
 परिपन्थी इव १,१०३,६; ८४४ अयज्वनः वद विभजन् ।
 पर्जन्यः वृष्टिमान् इव ८,६,१; २४३ इन्द्रः ओजसा महान् ।
 पर्वतः न १,५२,२; ७६१ धरुणेषु अभ्युतः ।
 पशुं न गोषा १०,२३,६; २४८६ भोजनः (प्रासये) वयं ।
 पशुम् पुष्टीवन्तः यथा ८,४५,१६; ४५८ सोमिनः तथा ।
 पात्र न शोचिषा १,७५,३; १०८१ सहावान् दस्युं ।
 पात्रा भिन्दाना ६,२७,६; १९६० वृचीवन्तः न्यथानि ।
 पात्रा इव ७,१०४,२१; अ० ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः भिन्दन् ।
 पात्रस्य इव १,१७५,१; १०७९ (त्वया) महा अपायि ।
 पादौ इव ६,४७,१५; २११३ प्रहरन् अनयं कृणोति ।
 पितृवत् ८,४२,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।
 पिता इव १,१०४,९; ८५५ इन्द्र नः शृणुहि ।
 पिता इव ३,४९,३; १४२६ चारुः सुहवः च ।
 पिता इव ८,२१,१४; ४२२ त्वम् समूहस्य आत् इत् ।
 पिता इव ७,२९,४; २२१६ त्वं नः प्रमतिः असि ।
 पिता इव १०,२३,५; २४८५ यः तविषीं शवः वावृषे ।
 पिता इव १०,३३,३; २५४० इन्द्र त्वं नः भव ।
 पिता इव १०,४९,४; २५९३ अहम् वेतसून् अभिष्टये ।
 पिता यथा पुत्रेभ्यः ७,३२,२६; २२६० इन्द्र नः क्रतुम् ।
 पितरौ इव शम्भू ४,४१,७; ३६५२ युवां सख्याय ।
 पितरं न पुत्रासः १,१३०,१ १०११ वयं मंहिष्ठं त्वा ।
 पितरं न पुत्राः ७,२६,२; २१९९ सबाधः समान दक्षाः ।
 पितरं न १०,४८,१; २५७९ जन्तवः माम् हवन्ते ।

पुत्रः न पितरम् ७,३२,३; २२३७ रायस्कामः सुवक्षिणं हुवे ।
 पुत्रः न पितुः ३,५३,२; १४५४ सिचम् स्वादिष्टया गिरा ।
 पुत्रम् इव प्रियं पिता १०,२२,३; २४६८ इन्द्रः [नःभवत्] ।
 पुर एता इव ६,४७,७; २१०५ इन्द्र नः पश्य ।
 पुम् न ८,३२,५; १८४ अश्वस्य व्रजम् दर्शसि ।
 पुरम् न धृष्णु ८,६९,८; २३११ प्रियमेधासः इन्द्रं प्र अर्चत ।
 यथाचित् आविध वाजेषु ८,६८,१०; २३०० तथा माम् ।
 पूर्वथा १,८०,१६; ९१५ उक्था इन्द्रं समतात ।
 पूर्वपाः इव ८,१,२६; ११२ अस्य सुतस्य आ पिब ।
 पृष्ठा इव १०,८९,३; २६६५ इन्द्रः जनिमानि विचिकाय ।
 प्र इव १,१०३,७; ८४५ तत् वीर्यं चकर्थ ।
 प्रय न १,६१,१; ८५६ इमं स्तोमं प्रहर्षि ।
 प्रय इव १,६१,२; ८५७ अंस्ये आंगूषं भराभि ।
 प्रवतः न ऊर्मि ६,४७,१४; २११२ ब्रह्माणि त्वा अवधवन्ते ।
 ब्रहिं न १,६३,७; ८९१ सुदासे अंहो यत् वृथा वर्क ।
 ब्रह्मा इव तन्द्रयुः ८,९२,३०; २४२६ मा सु भवः ।
 भृगाः न १,६२,७; ८७८ मेने परमे व्योमन् ।
 भगः न ३,४९,३; १४२६ कारे मतीनां हव्य ।
 भगः न ५,३३,५; १७२१ हव्यः, चारुः ।
 भगम् न ८,६१,५; ५५२ वसुविदं त्वा अनुचरामसि ।
 भगं न कारिणम् ८,६६,१; ६१३ अध्वरे इन्द्रं हुवे ।
 भागम् इव ८,९०,६; २३९७ प्रचेतसं त्वा राधः ईमहे ।
 भीमं न गाम् ८,८१,३; ६७२ दिस्तमन् त्वा न वारयन्ते ।
 भूषत् इव १०,४२,१; २५४६ अस्मै स्तोमं आ भर ।
 भृगुः न । अथ ० २,५,३; २८६५ इन्द्रः बलं विभेद ।
 " सामं ९५४; २९९९ " ।
 भृगवः रथं न ४,२६,२०; १४८६ इन्द्राय ब्रह्म अकर्म ।
 भृतिं न ८,६६,११; ६२३ वयं ते ब्रह्माणि प्र भरामसि ।
 भृष्टिः न गिरेः १,५६,३; ८०७ इन्द्रस्य शवः पौंस्ये ।
 मघा इव निष्पपी १,१०४,५; ८५१ चर्कतात् हत् नः ।
 मधौ न मक्षः ७,३२,२; २२३६ इमे ब्रह्मकृतः सुते सखा ।
 मनुषा इव १,१३०,९; १०१९ विष्ठा सुमनानि तुर्वणिः ।
 मनुषवत् ६,६८,१; ३१६१ वृत्रवर्हिषः यजध्ये ।
 मंधातृवत् ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।
 मर्तः न १०,१०५,३; २७१६ शाभमाणः विभीवान् इन्द्रः ।
 मर्ताय [मर्ताविव] ५,८६,५ ३०४४ ता अनु धून् ।
 मर्यः न योषाम् । ४,२०,५; १५३७ इन्द्रं अश्ला ।
 मर्यं न शुम्भ्युम् १०,४३,१; २५५७ मघवान् मे ।

महान् इव युवजानिः ८, २, १९; १३४ अस्मान् मा अभि ।
 मही इव ८, ९०, ६; २३९६ ते कृत्तिः शरणा ।
 मही इव यौः १०, १३३, ५; २७८२ तस्य बलं भव तिर ।
 मातुः न सीम् ६, २०, ८; १८९१ उप सृज इयध्वै ।
 मासा इव सूर्यः १०, १३८, ४; २७९५ पुर्य वसु आ ददे ।
 मित्रः न १०, २२, १; २४६६ इन्द्रः जने भूयते ।
 मित्रः न १०, २२, २; २४६७ इन्द्रः जनेषु असाभ्या ।
 मित्रः न १०, २९, ४; २५१८ नः कत् भागन् ।
 मित्रः न । पाम, २५४, २९९९ इन्द्रः वृत्रं जघान ।
 मित्रायुवः न पूर्वतिम् १, १७३, १०; १०६५ मध्यायुवः ।
 मूषः न शिष्वा १०, ३३, ३; २५४० ते स्तोतारं मा आध्वः ।
 मृगः न १, १७३, २; १०५७ अश्वः (सन्) अति ।
 मृगः न कुचरः १०, १८०, २; २८४० इन्द्रः भीमः ।
 मृगः न वारणः दाना (नि) ८, ३३, ८; ३१७ त्वं पुरुषा ।
 मृगः न हस्ती ४, १६, १४; १४८० तविषीं उषाणः भीमः ।
 मृगं न प्राः ८, २, ६; १२१ यत् ईम् अस्वत् अन्ये मृगयन्ते ।
 मृगं न ८, १, २०; १०६ अहं गिरा भूर्णि त्वा मा चुकुषम् ।
 यथा मेधिरा आहुवन्त ८, ३८, ९; ३०२९ एवावाम् ।
 यजमानः न होता ४, १७, १५; १५०२ कृष्णः ईम् अजिघर्ति ।
 यतिः न । साम ० २५४; २९९९ इन्द्र वृत्रं जघान ।
 यतीः न । अध ० २, ५, ३; २८६५ " " " "
 यवम् न १, १७६, २; १०८६ इन्द्रः वृषा चक्रवत् ।
 यवं न पश्यः आ ददे ८, ६३, ९; ५८६ अस्य वृष्णः ओदने ।
 यवं न वृष्टिः १०, ४३, ७; २५६३ विप्राः अस्य मठः ।
 यवं यथा गोभिः श्रीणन्तः ८, २, ३; ११८ वयं तथा तं ।
 यवमन्तः यवं चित् यथा १०, १३१, २; २७७४ इह एषां ।
 युजं न २०, ८९, ८; २६६९ जना मित्रं प्र मिनन्ति ।
 युजा इव वाजिना अश्वं २, २४, १२; ३३५२ नः हविः ।
 यूथा इव वंसगः १, ७, ८; ३५ वृषा कृष्टाः ओजसा इयति ।
 यूथा इव पश्वः ५, ३१, १; १६९३ इन्द्र (शत्रुसैन्यानि) ।
 यूथा इव पश्वः पशुपा. ६, १९, ३; १८७३ दमूना वाजौ ।
 यूथा इव अप्सु ६, २९, ५; १९६६ समीजमानः ऊती ।
 हरीः इव प्रवणे १, ५२, ५; ७६४ ऊतयः स्ववृष्टिं ।
 हरीः इव अवसः ४, ४१, ९; ३१५४ प्रविणं इच्छमानाः ।
 हरी न १०, १०५, २; २७१५ यस्य हरी केशिना ।
 हयः न ३, ४२, ४; १४३७ वायुः रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वः ।
 हयः न महे ६, ३४, २; २०२२ इन्द्रः अनुमाद्यः ।
 हयाः इव ४, १९, ५; १५२६ अन्नयः साकं प्र ययुः ।
 हयाः इव वाजयन्तः ८, ३, १५; १७० अक्षितोतयः ।

रथं न १, ६१, ४; ८५९ अस्मे स्तोमं सं हिनोमि ।
 रथं न ५, २९, १५; १६८१ स्वपाः भद्रा सुकृता अतक्षम् ।
 रथं न पृतनासु १०, २९, ८; २५३२ अस्मान् आतिष्ठ ।
 रथं न धीरः १, १३०, ६; १०१६ आयवः ते इमां वाचं ।
 रथम् यथा ८, ६८, १; २२९१ तथा त्वाम् सुन्नाय आवर्त - ।
 रथम् इव अश्वः १०, ११९, ३; २८५२पीताः उत् मा अयं ।
 रथान् इव १, १३०, ५; १०१५ नद्यः समुद्रं असृजः ।
 रथान् इव ८, १२, ३; २९० येन सिन्धुम् प्रचोदयः ।
 रथान् इव वाजयतः १, १३०, ५; १०१५ नद्यः समुद्रं अश्रु ।
 रथैः इव । अथ. ७, ५०, ३; २९०८ वाजयज्ञिः प्र भेर सोमम् ।
 रथे न पादम् ७, ३२, २; २२३६ जरितारः इन्द्रे कामं दधुः ।
 रथीः इव ८, २५, १; २३३६ सुनेषु आ त्वा गिरः अस्थुः ।
 रथ्यः न धेनाः ७ २१, ३; २१६३ रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि ।
 रथ्या इव ३, ३६, ६; १३२८ आपः समुद्रं जग्मुः ।
 रथ्या चक्रा इव १०, ८९, २; २६६४ सूर्यः वरांसि उह ।
 रम्भं न जित्रयः ८ ४५, २०, ४६२ वय त्वा आ ररम्भा ।
 रयिम् न १०, १३४, ४; २७८८ सुन्वते सचा ऊतिभि ।
 रयिम् इव पृष्ठं प्रथवन्तं २, १३, ४; ११४० पुष्टिं प्रजाभ्यः ।
 रश्मीन् यमितवा इव १, २८, ४; ६९ यत्र मन्थां विवक्षते ।
 राजा इव १०, ४३, २; २५५८ बर्हिषि अधि निषद् ।
 राजा इव जनिभिः ७, १८, २; २१२० शुभिः त्वं क्षेपि ।
 राजा इव सत्पतिः १, १३०, १; १०११ विदधानि अच्छ ।
 रिष्टं न यामन् १, १३१, ७; १०२७ विश्वा दुर्मतिः अप भूत ।
 वंशम् इव १, १०, १; ५८ ब्रह्माणः त्वा उद् येमिरे ।
 वंसगः न १, ५५, १; ७९७ इन्द्रः वज्र शिशिरे ।
 वंसगः तातृषाणः १, १३०, २; १०१२ इन्द्र सोमं पिब ।
 वज्रः न संभृतः ८, ९३, ९; २४३८ सवलः अनपश्युतः ।
 वत्सं न मातरः ३, ४१, ५; १३७७ मतयः इन्द्रं रिहन्ति ।
 वत्सं न मातरः ६, ४५, २५, २०८४ गिरः त्वा अभि प्र णो नुमः ।
 वत्सं न मातरः ८, ९५, १; २३३६ गिरः त्वा समनृषत ।
 वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ८, ८८, १; ८९४ इन्द्रं गोभिः ।
 वत्सानां न तन्तयः ६, २४, ४; १९३१ ते दामन्वन्त ।
 वधूयुः इव ३, ५२, ३; १४४८ नः गिरः जोषयसे ।
 वधूयुः इव योषणाम् ४, ३२, १६; १६६० " "
 वना इव सुधितेभिः ६, ३३, ३; २०१८ प्रासु अश्वैः वधीः ।
 वना इव अग्निः ८, ४०, १; ३१०१ येन दृक्शः समस्तु ।
 वना इव स्वधितिः १०, ८९, ७; २६६८ इन्द्रः वृत्रं जघान ।
 वनानि न ८, १, १३; २९ प्रजहितानि अमन्महि ।
 वने न वायो न्यधायि १०, २९, १; २५१५ वां स्तोमः शुधिः ।
 वयः न स्वसराणि २, १९, २; १२०० नदीनां प्रयापि ।

वयः न वृद्धतति आमिवि ६,४६,१४, २१०३ बाह्योः गवि ।
 वयः न अस्तम् ८,३,२३; १७८ वक्ष्यः तुग्नं धुरं ।
 वयः यथा ८,२१,५, ४१३ तथा वयं मघौ सीदन्तः ।
 वयः न वृक्षं १०,४३,४, २५६० सोमासः इन्द्रं ।
 वया इव ८,१३,१७; ३३७ इन्द्र क्षोणीः अवर्धयन् ।
 वयाः इव ८,१३,६, ३२६ गिरः अनु रोहते ।
 वयाम् इव वृक्षस्य ६,५७,५, ३३३४ इन्द्रस्य सुमतिं ।
 वराः इव १,८३,२, २३२ देवासः ब्रह्मप्रियं जोषयन्ति ।
 वरुणः न १०,९९,१०, २६८९ दस्मः मायी ।
 वरुणः न १०,१४७,५, २८०९ दस्मः त्वं मायी ।
 वस्त्रा इव ५,२९,१५; १६८१ अहं भद्रा सुकृता अतक्षम् ।
 वस्त्रा इव गव्या ८,१,१७; १०३ वासयन्तः नरः ।
 वहतुं न धेनवः १०,३२,४, २५३३ सधस्थं अभिचारु ।
 वाचं न वेधसाम् १,१२९,१, १००० अस्माकं (हविः) ।
 वाजम् न जिग्युषे ६,४६,२; २०९१ रथ्य अश्व संकिर ।
 वानं न गध्यम् ४,१६,११; १४७७ ऋत्रा ।
 वाजयुः न रथम् २,२०,१, १२०८ ते वयः प्र अरामहे ।
 वाणीः इव त्रितः ५,८६,१, ३०४० स वृकहा चित् शुक्ला ।
 वातः न जूनः स्तनयद्भिः ४,१७,१२; १४९९ सः अस्य शुष्मं ।
 वातः यथा वनं १०,२३,४; २४८४ इन्द्रः सुते मधु उत् ।
 वाताः इव ८,४९,८, ४९२ प्रसक्षिणः हरयः ।
 वाताः इव प्रबोधतः १०,११९,२; २८५१ उत् मा पीता ।
 वायुः न नियुतः ३,३५,१; १३१२ रथे युज्यमाना हरी ।
 वायुः न नियुतः ७,२३,४; २१८३ नः अच्छा आ याहि ।
 वारं न वातः तत्रिषीभिः ४,१९,४; १५२५ इन्द्रः शवसा ।
 वासी इव प्राची सुन्वते ८,१२,१२, २९९ सनिः मित्रस्य ।
 वाश्राः इव धेनवः १,३२,२; ७१६ आपः समुद्रं अव जग्मुः ।
 वाश्रा पुत्र इव प्रियम् १०,११९,४; २८५३ मतिः मा उप ।
 विम् न पाशिनः ३,४५,१; १४०४ त्वां केचित् मा ।
 वितत यथा रजः १,८३,२; २३२ देवासः अब पश्यन्ति ।
 विदध्यः न सत्राद् ४,२१,२; १५४५ ऋतुः कृष्टीः अश्वस्ति ।
 विदे यथा ८,४९,१; ४८५ सुराधसम् इन्द्रम् अर्च ।
 विः इव १०,८६,७, २६४६ (मेपिता) हृष्यति ।
 विषः नः ६,४४,६; २०४१ यस्य ऊतयः ।
 बी इव आजन्तः ७,५५,२; २२७१ ऋधयः उप स्रक्षु ।
 वृकः यथा अविम् । अथ. ७,५०,५; २९१० एव ते कृतं ।
 वृक्षः न पकः ४,२०,५, १५३० नवेभिः ऋषिभिः ।
 वृक्षस्य तु वयाः ६,२४,३; १९३० ते ऊतयः वि रुरुहुः ।
 वृक्षाः इव ८,४,५; २३३ ते पृतनायवः नि येमिरे ।
 वृजनम् न १,१७३,६; १०६१ इन्द्रः भूमां संविद्ये ।

वृत्रः इव दासम् १०,४९,६; २५९५ प्रहम् वृहद्रथं ।
 वृषभः न भीमः तिग्मशृङ्गाः ७,१९,१; २१४० एकः विश्वाः ।
 वृषभः न १०,१०३,१; २६८२ भीमः इन्द्रः ।
 वृषभः न तिग्मशृङ्गाः १०,८६,१५; २६५४ मन्थः ते इन्द्र ।
 वृषभा इव धेनोः ४,४१,५; ३१५० अस्याः धियः युवा ।
 वृषभा इव ६,६४,४; २०९३ मन्थुना मनुष्यान् बाधसे ।
 वृषभं यथा अवक्रक्षिणम् ८,१,२, ९० तथा इन्द्रं शंसत ।
 वृषा न क्रुद्धः १०,४३,८; २५६४ इन्द्रः रज सु आपतयत् ।
 वृष्णे न ८,३४,५; ४२९ सुतानां ते पूर्वपाय्य दधामि ।
 वृषायुधः न वध्रयः १,३३,६; ७३५ निरष्टाः इन्द्रात् प्रवह्निः ।
 वृष्टिः इव अभात् ७,९४,१; ३०७९ पूर्वस्तुतिः मन्मनः ।
 वेः न १०,३३,२, २५३९ अमतिः नम्रता नि बाधते ।
 वेः न गर्भम् १,१३०,३; १०१३ इन्द्रः गुहा निहितं ।
 वेनः न ८,३,१८; १७३ हवं शृणु धी ।
 व्रजं न गावः ५,३३,१०, १७२६ रायः प्रयता अपि गमन् ।
 व्रततेः इव पुराणवत् ८,४०,६; ३१०६ अपि वृक्ष गुपितम् ।
 व्यथिः यथा । अथ. ६,३३,२; २८८८ इन्द्रस्य श्वः नाध्वे ।

शची इव १०,७४,५, २६३८ इन्द्रं अवसे कृणुध्वम् ।
 शतानीका इव ८,४९,२; ४८६ धृष्णुया प्र जिगाति ।
 शवः ते यथा अपरीतम् ८,२४,९; १७९८ तथा दाशुषे राति ।
 शसने न गावः १०,८९,१४; २६७५ पृथिव्याः आपृक् ।
 शाखा न पक्वा १,८,८; ४५ अस्य दाशुषे सन्वता ।
 शार्याते सुतस्य यथा अपिब. ३,५१,७; १४४० तथा इह ।
 शिशुम् न मातरा ८,९९,६; २३८१ क्षोणी तुरयन्तं अनु ।
 शुन्धुः परिपदाम् ८,२४,२४, १८१३ निर्झृतीनां परिवृजं ।
 शोचि न अग्ने ८,६,७, २४९ दिद्युतः धीतयः विपाम् ।
 शमशा (लुप्तोपमा) १०,१०५,१; २७१४ (अवरुध्यच) कदा ।
 श्वेतः न १,३२,१४, ७२८ स्रवन्तीः रजांसि अतिरः ।
 श्वेनान् इव श्वस्यतः ६,४६,१३; २१०२ महाधने सर्वे ।
 श्वेनान् इव अन्तरिक्षे १,१६५,२; ३२५१ महा मनसा ।
 श्रायन्तः इव सूर्यम् ८,९९,३; २३७८ विश्वा इत् इन्द्रस्य ।
 श्रियेन गावः सोमम् ४,४१,८; ३१५३ मे मनीषाः इन्द्रं ।
 श्वघ्नी इव ३,१२,४; ११२५ [इन्द्रः] लक्षं जिगीवान् ।
 श्वघ्नी इव ४,२०,३; १५३५ धनानां सनये आजि जयेम ।
 श्वघ्नी इव निवताचरन् ८,४५,३८; ४८० एवारे वृषभा ।

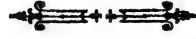
सुत्पतिः इव १,१३०,१; १०११ इन्द्र विदधानि आ याहि ।
 सदसो न भूम ४,१७,४; १४९१ य ईम् जजान अनपश्युतम् ।
 सध इव मानैः २,१५,३; ११६४ इन्द्रः प्राचः वि सिम्माय ।
 सपत्नीः इव १०,३३,२; २५३९ पर्वतः साम् अभितः ।

ससिम् इव १,६१,५; ८६० अस्मै अवस्था जुह्वा समजे ।
 ससी इव आदने ६,५९,३; ३०४८ ओकिवासा सुते सचा ।
 समना इव केतुः १,१०३,१; ८३९ अस्य अन्यत् इदम् ।
 समना इव वपुष्यतः ८,६२,९; ५७४ कृणवन् मानुषा युगा ।
 समुद्रः न १,३०,३; ७०१ अस्य वदरे व्यचः दधे ।
 समुद्रः इव १,८,७, ४४ अस्य सूनृता दाशुषे ।
 समुद्रः इव ८,३,४, १५९ सहस्रकृतः अयं पप्रथे ।
 " " ८,१२,५, २९२ विन्वते इमं जुषस्व ।
 समुद्रं न सिन्धवः ६,३६,३, २०३३ उक्थ शुष्मा गिरः ।
 समुद्रम् इव सिन्धवः ८,६,३५; २७६ उक्थानि इन्द्रं ।
 " " ८,९२,२२, २४१८ त्वा इन्द्रवः ।
 समुद्रं न स्रवतः ३,४६,४, १४१२ सोमासः इन्द्रं आविशन्ति ।
 समुद्रं न सुभ्रवः स्वाः १,५२,४; ७६३ सप्त बर्हिषः दिवि यम् ।
 समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः १,५६,२, ८०६ गूर्तयः परीणसः ।
 समुद्राय इव सिन्धवः ८,६,४; २४६ अस्य मन्यवे विशः ।
 समुद्रे न सिन्धवः ६,१९,५; १८७५ अस्मिन् पथाः रायः ।
 सरः न ८,१,२३, १०९ सोमेभिः उरु स्फिरं आ प्राप्ति ।
 ससताम् इव १,५३,१; ७७५ इन्द्रः नू चित् रत्नं अवियत् ।
 सहस्रता न धेनुः १,३२,९; ७२३ उत्तरासू अधरः पुत्रः ।
 सिंहः न १,१७४,३; १०७१ अपांसि वस्तोः रक्षः ।
 सिंहः न ४,१६,१४; १४८० आयुधानि बिभ्रत् भीमः त्वम् ।
 सिन्धवः न २,११,१; ११०१ वसुयवः त्वाम् ऊर्जं ।
 सिन्धुं यथा आपः अभितः १,८३,१; ९३१ भवीयसा वसुना ।
 सिन्धून् इव प्रवणे ६,४६,१४; २१०३ आश्रुया यतः यदि ।
 सिन्धौ इव नावम् १०,११६,९; २७६३ [अहम् इन्द्राग्नी] ।
 सीराः न स्रवन्तीः १,१७४,९; १०७७ धुनिः त्वं धुनिमतीः ।
 " " ६,२०,२; १८९५ " "
 सुतेषु यथा १,१०,५; ६२ तथा नः सख्येषु सुतेषु च ।
 सुदुषाम् इव गोदुहे १,४,१; ४ सुरूपकृतं ऊतये जुहूमसि ।
 सुदुषाम् इव गोदुहः ८,५२,४; ५१८ तं त्वा वयम् ।
 सुदृशी इव पुष्टिः ४,१६,१५; १४८१ रणवः (भवसि) ।
 सुयतः न अर्वा ७,२२,१; २१७१ सोतुः बाहुभ्यां यं ते ।
 सूनुभिः न १,१००,५; ९६१ रुद्रेभिः ऋत्वास इन्द्रः ।
 सूरिः न धातवे अजाम् ८,७०,१५, २३३५ मघवा वत्सं नः ।
 सूर्यः न २,११,२०; ११२० इन्द्रः चक्रं अवर्तयत् ।
 " " ८,१२,७; २९४ इन्द्रः रोदसी अवर्धयत् ।

सूर्यः इव ८,६,१०, २६२ अहम् अजनि ।
 सूर्यः रश्मिम् यथा ८,३२,२३, २०२ तथा मे गिरः त्वा ।
 सूर्यम् इव दिवि ५,२७,६; ३०३९ शतदाग्निं अश्वमेधे ।
 सूर्यस्य इव १,१००,२; ९५८ इन्द्रस्य यामः अनासः ।
 " " १०,४८,३, २५८१ मम अनीकं दुस्तरम् ।
 सूर्या इव ८,३,१६; १७१ भृगवः स्तोमेभिः महयन्ते ।
 " " ८,३४,१७, ४४१ रघुवदः आजन्ते ।
 सृण्यः न जेता ४,२०,५, १५३७ यः ऋषिभिः विररण्यो ।
 सेक्ता इव कोशम् ३,३२,१५; १२९६ सिसिचे पिबध्वै ।
 सोमः न पीतः ८,९६,२१; २३६३ नयां अपांसि कृणवन् ।
 सोमः न पृष्ठे पर्वतस्य ५,३६,२, १७४५ ते हनू शिमे ।
 स्कन्धामि इव कुविशेन १,३२,५, ७१९ इन्द्रः वज्रेण वृत्रं ।
 स्तनं न मध्वः १,१६९,४, १०४६ त्वां वाजैः पीपयन्त ।
 स्तर्धः न गावः ७,२३,४, २१८३ आप चित् पिप्युः ।
 स्थिरा इव धन्वनः १०,११६,६, २७६० अभिमातीः ओजः ।
 स्थूरं न कश्चित् ८,२१,१; ४०९ वयं त्वां वाजे चित्रं ।
 स्नात्वा इव धनुः । अथ ०७,५०,९, २९११ कृतस्य धारया ।
 स्वर्दी इव वंसग ८,३३,२, २११ सुतं तृषाणः ओकः ।
 स्वरं न ४,२३,६, १५७१ गो चित्रतमं वपुः आ इवे ।
 स्वरं न ६,२९,३; १९६४ इशे कं नृतो हविरः बभूव ।
 स्वरं न १०,४३,९, २५६५ शुक्रं शुशुचीत सप्तपतिः ।
 स्वरं न । अथ ०२,५,२, २८६४ उप त्वा मदाः सुवाचः अगुः ।
 स्वरं न । साम ०९,५३; २९९८ उप त्वा मदाः सुवाचः अरधुः ।
 स्वरं मीलदे न च ४,१६,१५, १४८१ तवने चकानाः ।
 स्वानः न अर्वा १,१०४,१, ८४७ तम् (योनिम्) ।
 स्वेदा इव १०,१३४,५, २७८९ दिद्यवः विष्वक् अभितः ।
 हंसा इव ३,५३,१०; १४६२ हे कुशिकाः श्लोकं कृणुय ।
 हरितः न १,५७,३, ८१३ यस्य ज्योतिः श्रवसे अकारि ।
 हरितः न सूर्यम् १,१३०,२, १०१२ त्वा (अन्धाः) आ ।
 हर्म्यम् यथा इदं ७,५५,६, २२७५ तथा तेषां अक्षणि ।
 हन्यः न १,१२९,६, १००५ इषवान् मन्म रेजति ।
 हिन्वानं न बाजयुम् ८,१,१९, १०५ शक्रं पुनं विश्व ।
 होता इव ८,१२,३३; ३२० पूर्वं चित्तये प्राध्वरे ।
 होता न अमृतः ४,४१,१, ३१४६ वां सुस्रम् कः सोमाः ।
 हृदा इव ३,२६,८; १३३० सोमधानाः कुक्षयः ।
 हृदं न ऊर्मयः १,५२,७; ७६६ ब्रह्माणि त्वां न्यवन्ति ।



दैवत-संहितान्तर्गत-- इन्द्रमन्त्राणां सूची ।



अकर्म दस्युरभि	२४७३	अतीहि मनुष्याविणं	२००	अथ स्या ते चर्वणयो	१९४४
अकारि त इन्द्र गोतमेभिः	८९३	अतृण्यन्त वियतमबुध्य०	१५२४	अथ स्या नो वृधे	२१००
अक्षन्मीमदन्त	९२६	अत्रा वि नेमिरेषामुरां	४२७	अथ स्या योषणा	१८४०
अक्षाः फलवतीं शुवं	२९११	अत्राह गोरमन्वत	९५१	अधाकृणोः पृथिवीं	११४१
अक्षितोतिः सनेदिमं	२२	अत्राह तद् वहेथे	३२१९	अधाकृणोः प्रथमं	११८३
अक्षेणवित् क्षेत्रविदं	२५३६	अत्राह ते हरिवस्ता	१५६१	अधा ते अप्रतिष्कृतं	२४४१
अक्षोदयच्छवसा	१५२५	अत्रिवद्वः क्रिययो	२८८३	अधा मन्ये बृहदसुर्यम्	१९६९
अक्षो न चक्रयोः	१९३०	अत्रीणां स्तोममद्रिवो	१७७४	अधा मन्ये श्रुत् ते	८५३
अगच्छदु विप्रतमः	१२६६	अत्रेदु मे मंससे	२५००	अधा यो विश्वा	११८४
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्	१३४३	अथा ते अन्तमानां	६	अधा हीन्द्र गिर्वेणः	२३७०
अगस्युति क्षेत्रमागन्म	३३२७	अददा अर्भा महते	७५७	अधि द्वयोरदधा	९३३
अगोरुधाय गविषे	१८०९	अदर्वरुस्तमसृजो	१७०५	अधि यस्तस्यौ केशवन्ता	२७१८
अग्न इन्द्रश्च दाशुषे	३१३१	अदेदिष्ट वृत्रहा	१२८०	अधि सानौ नि जिज्ञते	९०५
अग्निर्जज्ञे जुह्वा	१२६२	अद्वीदिन्द्र प्रस्थितेमा	२७६२	अध्वर्यवः कर्तना	११५८
अग्निर्न शुष्कं	१८६५	अद्या चिन्नु चित्	१९७०	अध्वर्यवः पयसोऽध्वर्यथा	११५९
अग्निर्मूर्धा दिवः	२९३०	अद्याद्या श्वःश्च इन्द्र	५६४	अध्वर्यवा तुहि विन्च	२०३
अग्नान्यात्मन् भिषजा	२९५१	अद्या सुरीय यदि	३२९२	अध्वर्यवो भरतेन्द्राय	११५०
अच्छा कविं नृमणो	१४७५	अद्येदु प्राणीदम०	२५३७	अध्वर्यवो य उरणं	११५३
अच्छा च स्वैना नमसा	४१४	अत्रिणा ते मन्दिनः	२५२४	अध्वर्यवो य शतं	११५५
अच्छा म इंद्रं मतयः	२५५७	अद्रोच सत्यं तव	१२९०	अध्वर्यवो यः शतमा	११५६
अच्छा यो गन्ता नाधमान	१६०७	अधः पश्यस्व मोपरि	२२८	अध्वर्यवो यः स्वभं	११५४
अच्छिन्नस्य ते देव	२९२४	अध क्रवा मघवन्	१६७१	अध्वर्यवो यन्नरः	११५७
अजा अन्यस्य बह्वयो	३३३२	अध गमन्तोशना पृच्छते	२४७१	अध्वर्यवो यो अपो	११५१
अजातशत्रुमजरा	१७२७	अध उमो अध वा दिवो	१०४	अध्वर्यवो यो दिव्यस्य	११६०
अजा ब्रूत इन्द्र	१०७१	अध ते विश्वमनु	८१२	अध्वर्यवो यो हमीकं	११५२
अजिरासो हरयो	४९२	अध स्वष्टा ते मह	१८५०	अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं	२२७९
अजैषं स्वा संक्लिषितम्	२९०९	अध स्वा विश्वे पुर	१८४८	अध्वर्यो अत्रिभिः	२९५४
अतः समुद्रमुद्धतश्चिकित्वाँ	२७१	अध त्विषीमाँ	१२२४	अध्वर्यो ब्रावया स्वं	२३९
अतश्चिदिन्द्र ण उपा	२४०६	अध यौक्षित् ते	१८४९	अध्वर्यो वीर प्र	२०४८
अति वायो ससतो याहि	३२१८	अध द्रव्यो अंशुमस्या	३३२६	अनर्हारातिं वसुशामुप	२३७९
अतिविद्धा दिधुरेणा	२३४६	अध प्रियमिषिराय	१८३७	अनवस्ते रथमन्वाय	१६९६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां	७२४	अध चक्षारये गणे	१८३९	अनाष्टहानि पृथितो	२७९५
अतीदु शक्र ओहत	२३१६	अध श्रुतं कवचं	२१३०	अनाजुदो वृषभो	१२२०

अनुकामं तर्पयेथाम्	३१३६	अपाटयस्यान्धसो मदाय	११९९	अभि सिन्धो अजिगादस्य	७४२
अनु कृष्णे वसुधितौ	१२७६	अपिबत् कहुवः सुतम्	४६८	अभि स्वरन्तु ये तव	३४८
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय	१९४५	अपि वृश्च पुराणवद्	३१०६	अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य	७६४
अनु ते शुद्धं तुरधन्तमीवतु	२३८१	अपूर्व्यां पुरुतमान्यस्मै	२०११	अभि हि सत्य सोमपा	२३६८
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्तु	२९७०	अपेन्द्र द्विपतो मनो	२८१८	अभी३दमेकमेको	२५८५
अनुत्तमा ते मघवन्	३२५८	अपो महीरभिज्ञस्तेः	२७११	अभी न आ ववुस्त्व	१६३३
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणं	६३८	अपो यदग्निं पुरुहूतं	१४७४	अभी मयन्वन्स्वभिष्टिमूतयो	७४६
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं	२८०	अपो वृत्रं वज्रिवांसं	१४७३	अभी धतस्तदा भरेन्द्र	२२५८
अनु त्वाहिमे अध देव	१८६९	अपोषा अनसः सरत्	३३४३	अभी पु णः सखीनाम्	१६३२
अनु द्यावापृथिवी	१८७०	अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो	१४४२	अभी पु णस्त्वं रयि	२४५०
अनु द्वा जहिता नयो	१६२४	अप्रक्षितं वसु विभर्षि	८०४	अभूरु वीर गिर्वणो	२०७२
अनु प्रत्नस्यौकस प्रिय०	२३२०	अप्रामिसत्य मघवन्	५५१	अभूरेको रयिपते	२००६
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे	७०७	अप्सु धूतस्य हरिवः	२७०४	अभूवौक्षीर्यु१ आयुरानइ	२४९७
अनु प्र येजे जन आजो	२०३२	अभि कण्वा अनुषत	२७६	अभ्यर्चं नभाकवद्	३१०४
अनु यदीं मरुतो	१६६८	अभि क्रवेन्द्र भूरध	२१६६	अभ्रातृयो अना त्वम्	४२१
अनुव्रताय रन्धयन्	७५३	अभिख्या नो मघवन्	२७४४	अमन्दन्मा मरुतः	३२६०
अनुस्पष्टो भवत्येषो	२८२७	अभि गन्धर्वमतृणद्	६४४	अमन्महीदनाशवो	१००
अनु स्वधामक्षरज्ञापो	७४०	अभि गोत्राणि सहसा	२६९७	अमाजूरिच पित्रोः	११८७
अनेहसं वो हवमानमूतये	४९८	अभि जैश्रीरसचन्त	१२६३	अमीषां चित्तं प्रति	२९३३
अनेहसं प्रतरणं	४८८	अभि तष्टेव दीधया	१३४५	अभ्यक् सा त इन्द्रः	१०४५
अन्धा अभिप्रा भवता	३००१	अभि त्वं मेघं पुरुहूतम्	७४५	अयं यज्ञो देवया	१०९४
अन्यदद्य कर्षरमन्यदु	१९३२	अभि त्वा गोतमा गिरा	१६५३	अयं यो वज्रः पुरुधा	२५११
अन्यव्रतममाजुषम्	२३३१	अभि त्वा पाजो रक्षसो	१९०३	अयं रोचयदरुचो	१९८६
अन्वपां स्नान्यतृन्तम्	३१७४	अभि त्वा पूर्वपीतय	१६२	अयं वां परि विच्यते	३३१८
अन्वह मासा अन्विह्नानि	२६७४	अभि त्वा वृषभा सुते	४६४	अयं वृत्श्चातयते	१४९६
अन्वेको वदति यद्	११३९	अभि त्वा शूर नोनोमो	२२५६	अयं शृण्वे अध	१४९७
अप प्राच इन्द्र विश्वाँ	२७७३	अभि द्यां महिना भुवम्	२८५७	अयं सहस्रमृषिभिः	१५९
अप योरिन्द्रः पापज	२७१६	अभि द्युन्नानि वनिन	१३७०	अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	२२१३
अपस्त्रिदेव विश्वो	१२७५	अभि प्र गोपतिं गिरा	२३०७	अयं सोमश्चमू सुनो	३२३०
अपश्यं ग्रामं वहमानम्	२५०९	अभि प्र दद्रुर्जनयो	१५२६	अयं ह येन वा इदं	६३१
अपाः सोममस्तमिन्द्र	१४५८	अभि प्र भर धृषता	२३८७	अयं हि ते अमर्त्य	२७९८
अपादहस्तो अपृतन्यद्	७२१	अभि प्र वः सुराधसम्	४८५	अयं चक्रमिषणत्	१५०१
अपादित उदु	१९७८	अभिभुवेऽभिभङ्गाय	१२१८	अयं त इन्द्र सोमो	४०४
अपादिन्द्रो अपादग्निः	२३१४	अभि वक्ष्य ऊतये	३०२	अयं त एमि तन्वा	९९१
अपाहु शिऽयन्धसः	२४००	अभि वो वीरमन्धसो	१८३०	अयं ते अस्तु हर्यतः	१३९९
अपाधमदभिज्ञास्तीः	२३८५	अभि व्रजं न तरिन्वे	२६७	अयं ते मानुषे जने	५९८
अपामतिष्ठद्वरुणङ्करं	७९५	अभिस्तरया चिद्विव.	१०३५	अयं ते शर्यणावति	५९९
अपामूर्मिर्मदजिव	३६३	अभिष्टने ते अद्रिवो	९१३	अयं ते स्तोमो अग्रियो	८४
अपां केनेन नमुचेः	३६६	अभिष्टये सदावृधं	२२९५	अयं दशस्यज्यैर्भिरस्य	२६८९

अयं दीर्घाय चक्षसे	३५०	अर्चा शक्राय शाकिने	७८७	अवासृजन्त जिमयो	१५२३
अयं देवः सहसा	२०५७	अर्णासि चित् पप्रयाना	२१२३	अवितासि सुन्वतो	१७६९
अयं द्यावापृथिवी	२०५९	अर्धं वीरस्य श्रुतपाम्	२१३४	अविदद् दक्षं	२०४२
अयं द्योतयद्युतो	१९८५	अभर्को न कुमारको	२३१७	अविन्दद् दिवो	१०१३
अयमकृणोदुषसः	२०५८	अर्यो वा गिरो अभ्यर्च	२८११	अविप्रे चिद् वयो	२०६१
अयमस्मासु काव्यः	२७९९	अर्वन्तो न श्रवसो	३२३५; ३२४०	अविप्रो वा यदविधद्विप्रो	५५६
अयमस्मि जरितः	९९४	अर्वाप्रथं विश्ववारं	१९७३	अविर्न मेषो नसि	२९४८
अयमिन्द्र वृषाकपिः	२६५७	अर्वाडेहि सोमकामं	८५५	अवीरामिव मामयं	२६४८
अयमिन्द्रो मरुत्सखा	६२९	अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा	३१७९	अवीवृधन्त गोतमा	१६५६
अयमु ते समतसि	७०२	अर्वाचीनं सु ते	१३३५	अवोचाम महते	३२०६
अयमु त्वा विचर्षणे	४००	अर्वाचीनो वसो	१६५८	अश्रवं हि भूरिदावत्तरा	३०२२
अयमु वां पुरुतमो	३१४४	अर्वाञ्च त्वा पुरुहूत	२०९; २८७	अश्वदियायेति	२६३२
अयमुशानः पर्यद्रिमुक्षा	१९८४	अर्वाञ्च त्वा सुखे	१३८१	अश्वायन्तो गव्यन्तो	२८२८
अयमेमि विचाकशद्	२६५८	अर्वावतो न आ गहि	१३७१	अश्ववति प्रथमो	९३१
अयं पन्था अनुवित्तः	१५०९	अर्वावतो न आ गह्यो	१३४४	अश्वान्तं रथिनं	२८४६
अया धिया च गव्यया	२४४६	अलानृणो वरु	१२४७	अश्विना गोभिरिन्द्रियं	२९५७
अयाम धीवतो धियो	२४०७	अवंशे द्यामस्तभायद्	११६३	अश्विना तेजसा	२९६२
अयामि घोष इन्द्र	२१८१	अवक्रक्षिणं वृषभं	८८	अश्विना पिबतां	२९६३
अया वाजं देवहितं	१८५५	अव क्षिप दिवो	१२३१	अश्विभ्यां चक्षुरमृतं	२९४७
अया ह त्वं मायया	१९१२	अव चष्ट ऋचीषमो	५७१	अश्वी रथी सुरूप इत्	२३७
अयुजो असमो नृभिरकः	५६७	अव त्मना भरते	८४९	अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र	७२६
अयुजन्त इन्द्र	१०४४	अव त्या वृहतीरिषो	२७८७	अश्व्यस्य त्मना	३१५५
अयुज् इद् युधा	४४५	अव त्वे इन्द्र प्रवतो	२११२	अषाढमुग्रं पृतनासु	२३२४
अयुद्धसेनो विभवा	२७९६	अवद्यमिव मन्यमाना	१५१३	असत् सु मे जरितः	२४९१
अयुयुत्सन्नवद्यस्य	७३५	अव द्रप्सो अंशुमती	२३५७	असम क्षत्रमसमा	७९३
अयोद्धेव दुर्मद	७२०	अव नो वृजिना	२७२१	असाम यथा सुवखाय	१०६४
अरं हि त्मा सुतेषु	२४२२	अव यत् त्वं शतक्रतविन्द्र	२७८८	असावि देवं गोक्रजीकं	२१६१
अरं कृण्वन्तु वेदि	१०५४	अवर्त्यो शुन आन्त्राणि	१५२१	असावि सोम इन्द्र	९३७
अरं क्षयाय नो महे	३८१	अवर्मह इन्द्र दादहि	१०३९	असावि सोमः पुरुहूत	२७०३
अरं त इन्द्र कुक्षये	२४२०	अवसृष्टा परा पत	२९३४	असिक्न्यां यजमानो	१५०२
अरं त इन्द्र श्रवसे	२९७७	अव स्य दुर्हणायतो	२७८६	असि हि वीर सेन्यो	९१७
अरमयः सरपस	११४८	अव स्य शूराध्वनो	१४६८	असुन्वन्तं समं	१०८८
अरमश्वाय गायति	२४२१	अव स्वराति गर्गरो	२३१२	असुन्वामिन्द्र संसदं	३६८
अरं म वृक्षयाग्ने	३३४९	अव स्वेदा इवाभितो	२७८९	असूत पूर्वा वृषभो	१३४९
अरोरवीद् वृणो	१११०	अवाचचक्षं पदमस्य	१६८३	असौ च या न	१७८८
अर्चत प्रार्थत प्रियमेधासो	२३११	अवा नु कं ज्यायान्	२६०५	असौ य एषि वीरको	१७८४
अर्चद् वृषा वृषभिः	१०५७	अवा नो वाजयुं रथं	६६६	असृग्रमिन्द्र ते	५१
अर्चन्त्यर्कं मरुतः	२९८८	अवातां मघवअहि	१०३६	अस्तावि मग्म पूर्यं	५२३
अर्चा दिवे बृहते	७८८	अवासृजः प्रस्वः	२७९३	अस्तेषु सु प्रतरं	२५४६

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र	२७८४	अस्मे हन्त्रावृहस्पती	३३२०	अहं तष्टेव वन्धुरं	२८५४
अस्मभ्यं तद वसो	११४९; ११६१	अस्मे हन्त्रावरुणा विश्वावरं	३१९५	अहं दां गृणते	२५९०
अस्मभ्यं तौ अपा	१६४२	अस्मे हन्त्रो वरुणो	३१८१, ३१९१	अहञ्जहि परिक्षायानम्	१२९२
अस्मा अस्मा इदन्धसो	२००१	अस्मे तदिन्द्रावरुणा	३१४५	अहञ्जहि पर्वते	७१६
अस्मा इत् काव्यं	१७६४	अस्मे ता त हन्त्र	२४७८	अहञ्जिन्द्रो अदददग्निः	१६०१
अस्मा इदु मादिषद्	८६३	अस्मे घेहि श्रवो बृहद्	५५	अहन् वृत्रं वृत्रतर	७१९
अस्मा इदु त्यदनु	८७०	अस्मे प्र यन्धि मघवन्	१३३२	अहन् वृत्रमृचीषम्	२०५
अस्मा इदु त्यमुपम	८५८	अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि	१५६३	अहमत्क कवये	२५९२
अस्मा इदु त्वष्टा	८६१	अस्मै भीमाय नमसा	८१३	अहमस्मि महामहो	२८६१
अस्मा इदु प्र तवसे	८५६	अस्मै वयं यद	१२२२	अहमिद्धि पितृप्परि	२५२
अस्मा इदु प्र भरा	८६७	अस्य त्रितः क्रतुना	२४६३	अहमिन्द्रो न परा	२५८३
अस्मा इदु प्र ष इव	८५७	अस्य पिब क्षुमत	२७५६	अहमिन्द्रो रोधो	२५८०
अस्मा इदु ससिमिव	८६०	अस्य पिब यस्य	१९८९	अहमेतं गव्ययमश्न्य	२५८२
अस्मा इदु स्तोम	८५९	अस्य पीत्वा मदानां	२४०२	अहमेताग्नाश्चमते	२५८४
अस्मा उपास आतिरन्त	२३४५	अस्य पीत्वा शतक्रानां	११	अहं पितेव वेतस्मै	२५९३
अस्मा एतद् दिव्यार्चैव	२०२४	अस्य मदे पुरु	२०४९	अहं पुरो मन्दमानो	१५९८
अस्मा एतन्महाङ्गूष	२०२५	अस्य मन्दानो मन्वो	१२००	अहं प्रत्नेन मञ्जता	२५३
अस्माक व हन्त्रम्	१००३	अस्य वृष्णो व्योदन	५८६	अहं भुवं वसुनः	२५७९
अस्माकं शिमिणीनां	७०९	अस्य श्रवो नद्य	८०९	अहं भूमिमदामार्थाय	१५९७
अस्माकं सु रथं पुर	४५१	अस्य सुवानस्य	११२०	अहं मनुमभं सूर्यश्चाहं	१५९६
अस्माकं त्वा मतीनाम्	१६५९	अस्य स्तोमेभिरौशिज	२६२०	अहस्ता यदपदी	२४७९
अस्माकं त्वा सुतां	२८४	अस्येदिन्द्रो वावृधे	१६३	अहा यदिन्द्र सुदिना	२२२०
अस्माकं पृष्ण्या	१६४३	अस्येदु त्वेषसा	८६६	अहितेन चिदर्वता	५१८
अस्माकमत्र पितर	३१५८	अस्येदु प्र बृहि	८६८	अहेलता मनसा श्रुष्टि	३३५१
अस्माकमयान्तम	२२४	अस्येदु भिया गिरयश्च	८६९	अहेलमान उप याहि	१९९३
अस्माकमित्सु शृणुहि	१५६४	अस्येदु मातु सवनेषु	८६२	अहेर्यातार कमपश्य	७०८
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु	२७०१	अस्येदेव प्र रिचि	८६४	आकरे वसोर्जिता	१४३६
अस्माकमिन्द्र भूतु	२०८९	अस्येदेव शवसा	८६५	आ ओदो महि वृत्तं	१८५२
अस्माकमिन्द्र दुष्टा	१७४२	अस्येन्द्र कुमारस्य	२८७५	आगच्छत आगतस्य	२८९९
अस्माकमिन्द्रावरुणा	३१८०	अस्त्रायद् दभीतये	१६२६	आ घ त्वावान् रमना	७१२
अस्माकमिन्द्रेहि	१७४३	अहं रन्ध्रं मृगं	२५९४	आ घा गमद्यदि श्रवत	७०६
अस्माकमुत्तमं कृधि	१६४४	अहं सस स्रवतो	२५९८	आ घा ये अग्निमिन्धते	४४३
अस्माकेभि सस्वभि.	१२३४	अहं ससहा नहुषो	२५९७	आ च त्वामेता वृषणा	१३९४
प्रस्मादहं तविषा०	३२६६	अहं स यो नववास्त्रं	२५९५	आ चन त्वा चिकिरामासो	१७८५
प्रस्माँ अवन्तु ते	१६३९	अहं सूर्यस्य परि	२५९६	आ चर्षणिप्रा वृषभो	१०९१
प्रस्माँ अविद्धि विश्वेन्द्र	१६४१	अहं हि ते हरिषो	५३२	आ जनाप वृक्षणे	१९१४
प्रस्माँ इहा वृणीष्व	१६४०	अहं गुह्यगुह्यो अतिथिरं	२५८६	आजितुरं सत्पति	५३०
प्रस्मान्सु तत्र चोदय	५३	अहं च त्वं च वृत्रहन्	५७६	आजिपते नृपते	५३६
प्रस्मिन् न हन्त्र पृथुतौ	२५४१	अहं चन तत् सूरिभि	१९५३	आ त इन्द्र महिमानं	६०४
प्रस्मै हन्त्र सचा सुते	९८३	अहं तदासु धारयं	२५९९		

आ त एता वचोयुजा	४८१	आ त्वा वहन्तु हरयो	७८	आ नो दिव आ पृथिव्या	२१८८
आ तत् त इन्द्रायवः	२६३७	आ त्वा विशन्तु सुतास	२८६६	आ नो देव शवसा	२२१८
आतन्वाना आयच्छतो	२८९१	आ त्वा विशन्त्वाशवः	२०	आ नो बृहन्ता	३१५६
आतिष्ठन्त परि विश्वे	१३४८	आ त्वा विशस्विन्दवः	२४१८	आ नो भर दक्षिणेनाग्नि	६७५
आ तिष्ठ रथ वृषण	१०९३	आ त्वा शुक्रा असुच्यवुः	२३३७	आ नो भर भगमिन्द्र	१२५६
आ तिष्ठ वृत्रहन्	९३९	आ त्वा सहस्रमा .	११०	आ नो भर वृषणं	१८७८
आ तू गहि प्र तु	३३४	आ त्वा सुतास इन्द्रो	४८७	आ नो भर व्यजनं	६५२
आ तू न इन्द्र कौशिक	६८	आ त्वा हरयो वृषणो	२०५४	आ नो यज्ञं नमोवृध	१३९३
आ तू न इन्द्र क्षुमन्त	६७०	आ त्वा होता मनुहितो	४३२	आ नो याहि परावतो	२७८
आ तू न इन्द्र मध्यग	१३७३	आ त्वेता नि षीदत	१४	आ नो याहि महेमते	४३१
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	१६४५	आदङ्गिराः प्रथमं	९३४	आ नो याहि सुतावतो	३९७
आ तू भर माकिरेतत्	१३३१	आ दस्युष्मा मनसा	१४७६	आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेपु	४३५
आ तू सुशिप्र दपते	२३१८	आदानेन संदानेन	३१२८	आ नो विश्वभिरुतमिः	२१८९
आ तू पिञ्च कण्वमतं	१३७	आदित् ने अस्य	१०२५	आ नो विश्वासु हव्य	२३९१
आ ते दक्षं वि रोचना	२४५५	आदित् प्रत्नस्य रेतसो	२७२	आ नो विश्वेषां	५२७
आ ते दधामीद्विषम्	२४५६	आदित्यानां वसूनां	२५८९	आन्त्राणि स्थालीर्मधु	२९४४
आ ते मह इन्द्रोऽयुम्	२१९२	आदित् सासस्य	५४३	आ पक्यासो भलानसो	२१२५
आ ते वृषन् वृषणो	२०५५	आदिद्ध नेम इद्रियं	१५८१	आ प्रमाथ महिना	२३२६
आ तेऽवो वरेण्य	१७३८	आदिन्द्र सत्रा तविषी	२७४९	आ प्रयौ पथिचं रजो	९२०
आ ते शुष्मो वृषभ	१८७९	आदीं शवस्यज्वीट	६४१	आपश्चित् पिप्यु स्तयां	२१८३
आ ते सूर्यं जवसे	१४३०	आहु मे निवरो	२४४४	आपश्चिद्धि स्वयशसः	३१९९
आ ते मिञ्चाभि कुक्षोरनु	३९८	आहु नु ते अनुक्रतु	५८२	आपान्तमन्युः	३२७६
आ ते हन् हग्विः	१७४५	आहु रोदसी वितर	१६७०	आपृगो अस्य कलशः	१२९६
आत्मनुपन्थेन	२९५०	आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र	११९३	आपो न देवीरुप	९३२
आत्मा पितुस्तनूर्वास	१७९	आ द्विर्वा अमिनो	२७५८	आपो न त्रिधुमभि	२५६३
आ त्वथ्य सवस्तुति	१०२	आध्रेण चित् तद्रेक	२१३५	आ प्र द्रव परावतो	६७९
आ त्वथ्य सवर्दुषां	९६	आ न इन्द्र पृथसे	२४७२	आ प्र द्रव हरिवो	१६९४
आ त्वशत्रवा गहि	६८२	आ न इन्द्र महीमिषं	२६५	आ बुन्द्रं वृत्रहा	४४६
आ त्वा कण्वा इहावसं	४२८	आ न इन्द्रावृहस्पती	३३१९	आ भरतं शिक्षतं	३०२७
आ त्वा गिरो रथीरिव	२३३६	आ न इन्द्रो दूरादा	१५३३	आभिः स्पृधो मिथती.	१९३९
आ त्वा गीर्भिर्महामुरु	६०३	आ न इन्द्रो हरिमिः	१५३४	आ मध्वो अस्मा	२५२१
आ त्वा गोभिरिव	१७९५	आ नः सहस्रशो	४३९	आ मन्द्रैरिन्द्र	१४०४
आ त्वा प्राया वदन्निह	४२६	आ नस्तुज रथि	१४०७	आमासु पक्रमरय	२३९०
आ त्वा वृद्धतो हरयो	१३९६	आ नस्ते गन्तु	१०८०	आमूरज प्रत्यावर्तयेमा. २९६७; ३३६२	
आ त्वा ब्रह्मयुजा	३९५	आ नः स्तुत उप	१६०४	आ य सोमेन जठरम्	१७२८
आ त्वा मदच्युता	४३३	आ नः स्तोममुप	४८९	आयं जना अभिचक्षे	१७०३
आ त्वा रथ यथोतये	२२९१	आ निरेकमुत	१७९३	आ यत् पतन्त्येन्यः	२३१३
आ त्वा रथे हिरण्यये	१११	आ नो गन्थान्यद्रथा	४३८	आ यदिन्द्रश्च दद्वहे	४४०
आ त्वा रम्भं न जिघ्रयो	४६२	आ नो गन्धेभिः	३०६९	आ यद् दुवः शतक्रतवा	७१३
		आ नो गोत्रा दद्वहि	१२५८	आ यद् दुवस्याद्	३२६३

आ यद्धरी इन्द्र	८८६	आ संयतमिन्द्र	१९१६	इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभि	३३४३
आ यद्ध्रं बाहोरिन्द्र	२३४९	आ सत्यो यातु मघवाँ	१४६७	इन्द्र ऋभुमान् वाजवान्	३३४२
आयन्तारं महि स्थिरं	१९३	आसस्त्राणासः शवसानम्	१९७५	इन्द्र ओषधीरसना	१३६०
आ यन्मा वेना	९९५	आ सहस्रं पथिभिर्दिन्द्र	१८६६	इन्द्रं वयं महाधन	३२
आ यं पृणन्ति दिवि	७६३	आसु ऋमा णो मघवन्निन्द्र	२०५३	इन्द्र वयमनूपाध	२९१५
आ यास्मिन् हस्ते नर्या	१९६३	आ स्म/ रथ वृषपाणेषु	७५६	इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	३३६
आ यस्य ते महिमान	१८१९	आहं सरस्वतीवत्	३१००	इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	२०३४
आ याविन्द्र स्वपति	२५६८	आ हरयः ससृजिरे	२३०८	इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्	७०
आ याविन्द्रो दिव आ	१५४६	आहार्यं स्वाविदं स्वा	३११७	इन्द्रं वृत्राय हन्तवे	३०९; १३३८
आ याविन्द्रोऽवम	१५४४	आ हि ऋमा याति	१६०५	इन्द्र वो नरः सखपाय	१९६२
आ याहि कृणवाम	५६९	इच्छन्ति त्वा सोम्यासः	१२३८	इन्द्र वो विश्वरूपरि	३७
आ याहि पर्वतेभ्यः	४३७	इच्छन्ति देवा सुमन्त्रं	१२३	इन्द्र गोमस्य पीतये	१३८५
आ याहि पूर्वैरिति	१३९२	इच्छन्ति श्वस्य यच्छिरः	९५०	इन्द्रं स्तत्रा नृतमं यस्य	२६६३
आ याहि शश्वदुगता	१९९१	इत उनी वो अजर	२३८२	इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य	२७२७
आ याहि सुवुमाहि	३९४	इति चिद्धि त्वा धना	२७६७	इन्द्रः पूर्वमिदानीत्	१२०१
आ याहीम इंदवो	४११	इति वा इति मे मनो	२८५०	इन्द्रः स दामने	२४३७
आ याह्यद्विभिः सुत	१७६५	इतो वा सातिमीमहे	२७	इन्द्रः समस्तु यजमानमा	१०१८
आ याह्यर्थ आ परि	४३४	इथा धीवन्नमद्रिव	१५५	इन्द्रः सहस्रदासां	३१३८
आ याह्यर्वावु	१३९१	इथा हि सोम इन्मेदे	९००	इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	३०१
आराच्छुमप बाधस्त्र	२५५२	इदं वसो सुतमन्धः	११६	इन्द्रः सुत्रामा स्वर्गो	२११०; २७७३
आ रोदसी अपृणादोन	२६१६	इदं वामास्ये हविः	३३१७	इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन	२९४३
आर्चन्मन्त्र मरुतः	७७४	इदं वां मदिरं मधु	३०९३	इन्द्रः सुशिपो मघवा	१२४०
आ व इन्द्रं क्रिषि	६९९	इदं सु मे जरितरा	२५२५	इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिः	२९६
आ वः कुलमिन्द्र	७४३	इद हविर्मघवन्	२७६१	इन्द्र स्पृष्टुन वृत्रहा	५६२
आ वः शमं वृषभं	७४४	इदं ह्यन्वोजसा सुत	१४४३	इन्द्रः स्वर्षा जनयन्	१३०४
आवदिन्द्रं यमुना	२१३७	इदं ते पात्रं सनवित्त	२७४०	इन्द्रः स्वाहा पिबतु	१४२९
आ वां रथो नियुक्तान्	३२१५	इदं ते सोम्यं मधु	६०८	इन्द्रं क्रतुं न आ भर	२२६०
आ वां राजानावध्वरे	३१९२	इदं त्वत् पात्रम्	२०५१	इन्द्रं क्रतुधिद सुत	१३६५
आ वां सहस्र हरय	३२२२	इदं नमो वृषभाय	७५९	इन्द्रं क्षत्रमभि वाममोजो	२८४१
आ वां धियो ववृयुः	३२१६	इदमादानमकरं	३१२९	इन्द्र क्षत्रापमातिषु	२६२२
आ वामश्वसो अभिमातिषाह	३३०९	इदा हि ते वेविषतः	१९०१	इन्द्र गोमन्निहा याहि	२९६४
आ विशत्या त्रिशता	११९४	इनोत पृच्छ जनिमा	१३४६	इन्द्रं गृणीष उ स्तुषे	६०५
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः	३०५८	इन्द्र आमां नेता वृत्रस्पतिः	२६९८	इन्द्रं कामा वसूयन्तो	१४८१
आ वृषस्व पुकवसो	५५०	इन्द्र आशाभ्यस्परि	१२३७	इन्द्रं जतरं नव्य	२९९८
आ वृषस्व महामह	१७९९	इन्द्र इत् सोमपा	११९	इन्द्रं जतरं नव्यो	२८३४
आत्रो यस्य द्विवर्हसो	१०८९	इन्द्र इक्ष्योः सचा	२९	इन्द्रं जहि पुमांसं वानुधान	३३०१
आशीत्या नवम्या	११९५	इन्द्र इक्ष्मा महानां	२३९९	इन्द्रं जामय उत	१९४०
आहुः शिशानो वृषभो	२६९२	इन्द्र इषे ददातुं न	३३४४	इन्द्र जीव सूर्य जीव	३३६३
आभृत्कणं श्रुषी हव	६६	इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिहो	२९७९	इन्द्रं जुषस्व प्र वरा	२८६३; २९९७
		इन्द्रं ऋभुभिर्वाजिभिः	३३४१		

इन्द्र ज्येष्ठ न आ	२०९४	इन्द्र यथा ह्यस्ति	१७९८	इन्द्राग्नी अन्यथमानाम्	३११८
इन्द्र ज्येष्ठा मरुद्गणा	३२४८	इन्द्र यस्ते नवीयसीं	२३४०	इन्द्राग्नी आ गतं	३०३०
इन्द्र तुभ्यमिदं विवो	९०६	इन्द्र वाजेषु नोऽव	३१	इन्द्राग्नी आ हि तन्वते	३०५२
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्	२०४५	इन्द्रवायू अयं	३२२५	इन्द्राग्नी उक्थवाहसा	३०५५
इन्द्र त्रिधातु शरण	२०९८	इन्द्रवायू इमे सुता	३२१०	इन्द्राग्नी जरितुः	३०३१
इन्द्र त्वयितेदंसीत्या	३४६	इन्द्रवायू उभावहि	३२४४	इन्द्राग्नी तपन्ति	३०५३
इन्द्र त्वा वृषभ वय	१३६४	इन्द्रवायू मनोजुवा	३२१४	इन्द्राग्नी तविषाणि	३०३७
इन्द्र त्वोत्तास आ वय	४०	इन्द्रवायू सुसन्दशा	३२४३	इन्द्राग्नी नवतिं	३०३५
इन्द्र दह्य यामकोशा	१२५२	इन्द्र शविष्ठ सत्पते	३३२	इन्द्राग्नी यमवथ	३०४०
इन्द्र दह्यस्व पूरमि	६६७	इन्द्र शुद्धो न आ	२३४३	इन्द्राग्नी युवं सु न	३१०१
इन्द्र नेदीय पृदिहि	५२९	इन्द्र शुद्धो हि नो	२३४४	इन्द्राग्नी युवामिमे	३०६२
इन्द्रं तं शुभं पुरुडन्	२३२२	इन्द्रश्च मृलयति नो	१२३६	इन्द्राग्नी युवारपि	३०५४
इन्द्र नरो नेमधिता	२२०३	इन्द्रश्च वायवेषां	३२२७, ३२३१	इन्द्राग्नी रोचना	३०३८
इन्द्र पिब तुभ्यं	१९८८	इन्द्रश्च रुन्नाड् वरुणश्च	३२०९	इन्द्राग्नी शतदात्रि	३०३९
इन्द्र पिब प्रतिकाम	२७३५	इन्द्रश्च सोमं पिबत	३३२३, ३३२९	इन्द्राग्नी शृणुतं	३०७०
इन्द्र पिब वृषभतम्य	१३९७	इन्द्रश्चिद् घा तदग्रवीत्	२२६	इन्द्राणीमासु नारिषु	२६५०
इन्द्र पिब म्वधया	१३२१	इन्द्र श्रुधि सु मे	६८४	इन्द्रा नु पृषणा वयं	३३३०
इन्द्र प्र णः पुरातेव	२१०५	इन्द्र अष्टानि द्रविणानि	१२२२	इन्द्रापर्वता बृहता	३३५६
इन्द्र प्र णो धितायानं	१३६६	इन्द्र सोम सोमपते	१२८२	इन्द्राबृहस्पती वयं	३३२१
इन्द्र प्र णो रथमव	६६४	इन्द्र सोममिम पिब	२४८८	इन्द्राय गाव आशिरं	२३०९
इन्द्र प्रेही पुरस् वं	४०२	इन्द्र सोमाः सुता इमे	१३६७, १३८६	इन्द्राय गिरो अनिशित	२६६६
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा	१६८१	इन्द्रस्तुजो बर्हणा	१३०५	इन्द्राय नूनमर्चंतोकथानि	९४१
इन्द्रमग्नि कविच्छदा	३०३२	इन्द्रस्तुराषामित्रो	२८६५, २९९९	इन्द्राय मद्गने सुतं	२४१५
इन्द्र मरुत्व इह	१४४०	इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा	२२१६	इन्द्राय साम गायत	२३६४
इन्द्रमिथा गिरो	१३८४	इन्द्र स्थातर्हरीणां	१८०६	इन्द्राय सु मन्त्रितमं	१०५
इन्द्रमिह केसिना	३६५	इन्द्रस्य कर्म सुकृता	१२८९	इन्द्राय सोमाः प्रदिवो	१३२४
इन्द्रमिद्राथिनो	२८	इन्द्रस्य नु वीर्याणि	७१५	इन्द्राय हि घौरसरो	१०२१
इन्द्रमिद् देवतातय	१६०	इन्द्रस्य बाहू स्थविरो	२९१४, ३०००	इन्द्रा याहि चित्रभानो	१
इन्द्रमिद्धरी वहतो	९३८	इन्द्रस्य मन्महे शश्वद्रिदु	२८६७	इन्द्रा याहि तूतुजान	३
इन्द्रमिद् विमहीनां	२८६	इन्द्रस्य रूपमृषभो	२९४९	इन्द्रा याहि धियेषितो	२
इन्द्रमीशानमोजसाभि	७७	इन्द्रस्य वज्र आयसो	२३४७	इन्द्रा याहि वृत्रवन्	२९६५
इन्द्रमुकथानि वावृधुः	२७७	इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	२६९९	इन्द्रा युव वरुणा	३१४९, ३१५०
इन्द्र मृक म्हा	२१०८	इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य	२९२२	इन्द्रावरुण नू नु	३१४१
इन्द्रमेव धिषणा	१८७२	इन्द्रस्याङ्गिरसां	८७४	इन्द्रावरुणयोरहं	३१३४
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमाम	१५९५	इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो	२७५०	इन्द्रावरुण वामहं	३१४०
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना	६३३	इन्द्राकुत्सा वहमाना	३३५४	इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य	३१७१
इन्द्रं प्रातर्हवामह	८०	इन्द्रा को वां वरुणा	३१४६	इन्द्रावरुणा यद्विमानि	३१७६
इन्द्रं मतिर्हृद आ	१३५५	इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप	३०३६	इन्द्रावरुणा यद्विभ्यो	३२०७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति	६७७	इन्द्राग्नी अपादियं	३०५१	इन्द्रावरुणा युवं	३१७२
		इन्द्राग्नी अवसा	३०८५		

इन्द्रावरुणा वधनाभि	३१८५	इन्द्रो ब्रह्मा बाह्यगात्	२९१७	इमा उ वां भृमयो	३१४३
इन्द्रावरुणावभ्या तपति	३१८६	इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः	३८८	इमो सुपूर्या धियं	२८५
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं	३१७७	इन्द्रो मदाय वावृधे	९१६	इमां गायत्रवर्तनिं	३०९६
इन्द्रावरुणा सौमनसं	३२०८	इन्द्रो मधु संभृतमुत्थियायां	१३६०	इमा जुषेधां सवना	३०९५
इन्द्राविष्णु तत् पनयायं	३३१०	इन्द्रो महां सिन्धुमाशया	११०९	इमा धाना घृतस्नुवो	७९
इन्द्राविष्णु दहिताः	३३१५	इन्द्रो मह्ना महतो	२७२८	इमानि ग्रीणि त्रिष्टपा	१७८७
इन्द्राविष्णु पिबतं	३३१२	इन्द्रो मह्ना रोदसी	१६१	इमानि वां भागधेयानि	३२०२
इन्द्राविष्णु मदपती	३३०८	इन्द्रो यज्वने पृणते	३३५२	इमां त इन्द्र सुष्टुतिं	३१८
इन्द्राविष्णु हविषा	३३११	इन्द्रो यातूनामभवत् २२८९	३२२८	इमां ते वियं प्र भरे	८२८
इन्द्रासोमा तपत्	३२७८	इन्द्रो यातोऽवसितस्य	७२९	इमां ते वाच वसूयंत	१०१६
इन्द्रासोमा दुष्कृतो	३२८०	इन्द्रो रथाय प्रवत्	१६९३	इमां म इन्द्र सुष्टुतिं	२७४
इन्द्रासोमा पक्वमासासु	३२७४	इन्द्रो राजा जगतः	२२०५	इमा ब्रह्म बृहद्विो	२७७१
इन्द्रासोमा परि वां	३२८३	इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य	१९७७	इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह.	१३७५
इन्द्रासोमा महि	३२७१	इन्द्रो विश्वस्य राजति २९७३; २९९२		इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं	२८१२
इन्द्रासोमा युवमङ्ग	३२७५	इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः	१३०३	इमासु पु सोमसुतिमुप	३०७६
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो	३२८१	इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं	९०९	इमाम् पु प्रभृतिं	१३२३
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्परि	३२८२	इन्द्रो वृत्रस्य दोधत्.	९०४	इमास्त इन्द्र पृथयो	२६१
इन्द्रासोमावहिमपः	३२७३	इन्द्रो हर्यतमर्जुनं	१४०३	इमे चित् तव मन्यवे	९१०
इन्द्रासोमा वासयथ	३२७२	इम इन्द्र मदाय ते	२९८१	इमे त इन्द्र ते वय	८१४
इन्द्रासोमा समधशंसं	३२७३	इम इन्द्राय सुन्निरे	२२३८	इमे त इन्द्र सोमाः	२९७८
इन्द्रा इ यो वरुणा	३१४७	इम उ त्वा पुरुशाक	१९०५	इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा	१२५
इन्द्रा इ रत्नं वरुणा	३१४८	इम उ त्वा वि चक्षते	४५८	इमे भोजा अङ्गिरसो	१४५९
इन्द्रियाणि शतक्रतो	१३४२	इमं यज्ञं स्वमस्माकमिन्द्र	१५३५	इमे वां सोमा आस्ता	३२१७
इन्द्रे अग्ना नमो	३०८२	इमं स्तोममभिष्टये	२९१	इमे सोमास्त इन्द्रवः	८३
इन्द्रेण मन्युना	२९१३	इम कामं मंदया १२५७; १४३२		इमे हि ते कारवो	१७३
इन्द्रेण रोचना दिवो	३६२	इमं जुषस्व गिर्वेणः	२९२	इमे हि ते ब्रह्मकृाः	०२३६
इन्द्रेण स हि दक्षसे	३२४६	इमं नरं पर्वतास्तुभ्यमाप	१३१९	इयं वामस्य मन्मन	३०७२
इन्द्रेणैते तृप्तवो	२१३३	इमं तु मायिनं हुव	६२८	इयं वां ब्रह्मगस्पते	३३६१
इन्द्रेमं प्रतरां नय	२९३५	इममिन्द्र गवाशिर	१३८८	इयं त इन्द्र गिर्वेणो	३२४
इन्द्रे विश्वानि वीर्यां	५८३	इममिन्द्र सुनं पिब	९४०	इयं त ऋत्विग्यावती	२९७
इन्द्रेहि मत्स्यंधसो	४८	इमं बिभर्मि सुकृतं	२५७६	इयमिन्द्रं वरुणमष्ट ३१९६; ३२०१	
इन्द्रो अङ्ग महद्	१२३५	इमा अभि प्र णोनुमो	२४९	इयमु ते अनुष्टुतिः	५८५
इन्द्रो अथायि	७५८	इमा अस्य प्रतूनयः	३४९	इयमेवाममृतानां	२६३६
इन्द्रो अस्मां अरदद्	१२२९	इमा इन्द्रं वरुण मे	३१५४	इयं मनीषा बृहती	३३१६
इन्द्रो जयाति न परा	२९०२	इमा उ त्वा पस्पृधानासो	२१२१	इवा मन्दस्त्रादु तेऽरं	६८१
इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो	२९०५	इमा उ त्वा पुरुतमस्य	१८९७	इष्कर्तारमनिष्कृतं	२३८३
इन्द्रो दधीचो अस्थभिः	९४९	इमा उ त्वा पुरुवसो	१५८	इष्टा होत्रा अश्वश्च	२४५२
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे	२६७१	इमा उ त्वा शतक्रतो	२०८४	इह त्या सधमाया युजानः	३४७
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं	२७२९	इमा उ त्वा सुतेसुते	२०८७	इह त्या सधमाया हरी२०८; २४५३	
इन्द्रो दीर्घाय चक्षम	३०				

इह त्वा गोपरीणसा	४६६	उत दासं कौलितरं	१६१९	उद्यत् सहः सहस	१६९५
इह प्रयाणमस्तु	३२२६	उत दासस्य वार्चिन	१६२०	उद्यद्विद्रो महते	१७११
इह श्रुत इद्रो अस्मे	२४६७	उत न कर्णशोभना	६५३	उद्यद्भक्षस्य विष्टपं	२३१०
इहि तिष्ठ परावत	२०१	उत न पितुमा भर	१८७	उद् बृह रक्षः	१२५४
इहेन्द्राग्नी उप ह्वये	३००२	उत न सुत्रात्रो देवगोपा	३१६७	उन्मा पीता अयंसत	२८५२
इक्षे रायः क्षयस्य	१५४०	उत न सुभगो	९	उप क्रमस्वा भर	६७६
इक्ष्वयंतीरपस्युव	२८१९	उत नूनं यदिन्द्रियं	१६२८	उप त्वा कर्मन्मृतये	४१०
इक्षे अग्नि स्वावसु	२९०८	उत नो गोमतस्कृधि	१८८	उप त्वा देवो अग्रभी०	३१३३
इयुरथं न न्यर्थ	२१२७	उत प्रहामतिदीव्या	२५५४	उप नः सवना	५
इयुर्गावो न यवसाद्	२१२८	उत ब्रह्मगया वयं	२७५	उप न सुतमा गहि सोम	१३८२
ईशानासो ये दधते	३२३४	उत ब्रह्माणो मस्तो	१६६९	उप नः सुतमा गहि हरिभि	८१
उक्थउक्थे सोम	२१९९	उत ब्रुवन्तु नो निवे	८	उप नो हरिभिः सुत	२४६०
उक्थं चन शस्यमानम्	१२९	उत माता महिषमन्ववेन	१५१९	उप प्रक्षे मधुमति	२९८७
उक्थमिन्द्राय शंस्यं	६२	उत शुष्णस्य धृष्णया	१६१८	उप प्रेन कुशिकाश्चनय	१४६३
उक्थवाहसे विभ्रे	२३५५	उत मिन्धु विबाहय	१६१७	उप ब्रह्म वावाता	२४२
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा	३०८९	उत स्मा सद्य इत्	१६३७	उप ब्रह्माणि हरिवो	२७०८
उक्थेदिवन्तु शू	११०३	उत स्मा हि त्वामाहु	१६३६	उपम त्वा मवोनां	५२५
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश	२६५३	उत स्वरात्रे अदितिः	३०१	उप मा मतिरस्थित	२८५३
उग्रं युयुज्म पृथनासु	५५९	उताभये पुरुहूत	१२४२	उपयामगृहीतोऽसि	२९२३
उग्रं न वीरं नमसोप	४९०	उतो घा ते पुरुष्याः	२२१६	उप यो नमो नमसि	१५४८
उग्रबाहुग्रंक्षृत्वा	५५७	उतो नो अस्व कस्य	१७५८	उपस्थाय मातरमज्ञ	१४२१
उग्रस्तुराषालभि	१४२२	उतो नो अस्या उषसो	१०२६	उपह्वो गिरीणां संगथे	२७०
उग्रो विघनिना मृथ	३०६०	उतो पतिर्य उच्यते	३२९	उपाजिरा पुरुहूताय	१३१३
उग्रो सन्ता हवामह	३००५	उत् तिष्ठताव पश्यत	२८३६	उपेदमुपपर्चनं	३३५३
उग्रेष्विन्तु शूर	१११७	उत् तिष्ठन्नोजसा सह	६३७	उपेदं धनदामप्रतीतं	७३१
उग्रो जज्ञे वीर्याय	२१५१	उत् ते शतान्मघवन्तुष	८३४	उपो नयस्व वृषणा	१३१४
उज्जातमिन्द्र ते शव	५७५	उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः	५८९	उपो षु शृणुहि गिरो	९२५
उज्जायतां परशुज्योतिषा	२५६५	उत्पुस्त्यासूर्य णति	२८७९	उपो ह यद् विदथ	३०७३
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः	१४१६	उत् पूषणं युवामहे	३३३५	उपो हरीणां पति	१८०३
उत ते सुष्टुता हरी	३४३	उद्भ्राणीव स्तनयन्	२०४७	उभयं शृगवन् न	५४८
उत त्वदाश्वभ्यं	२६६	उदावता त्वक्षसा	१८६४	उमा जिरयथुर्न परा	३३१३
उत त्वं पुत्रमग्रवः	१६२१	उदिन्वस्य रिच्यते	२२४६	उमा देवा दिविरुपृता	३२१३
उत त्वा तुर्बशायद्	१६२२	उदु त्वे मधुमत्तमा	१७०	उमा वामिन्द्राग्नी	३०६८
उत त्वा सद्य आर्या	१६२३	उदु ब्रह्माण्यैरत	२१८०	उमे चिद्विद्रोदसी	२१५४
उत त्वे मा धन्यस्य	१७२६	उदु षु णो वसो महे	२३२९	उमे पुनामि रोदसी	१०३४
उत त्वे मा पौरुक्ष्यस्य	१७२४	उद् गा आजदङ्गिरोभ्य	३६१	उमे यदिद्रोदसी	२७८५
उत त्वे मा मारुताश्चस्य	१७२५	उद्ग्रामं च निग्राम	३११९	उहं यज्ञाय चक्रधुर	३३१४
उत त्वं मघवऋतुणु	४४८	उद्देदभि श्रुतामनं	२४३०	उहं गभीरं जनुवाभ्युग्रं	१४१२
उत त्वा बधिरं वयं	४५९	उद्द्यामिवेत् तृणजो	२२६६	उह णस्तन्वे तन	२३०२
		उद्दपय मघवन्नायुषा०	२७००		

उरु नभ्य उरुं गत्र	२३०३	एतदस्या अनःशये	३३४७	एवा ता विश्वा	१८५३
उरुं नो लोकमनु	२१०६	एतद् घेदुत वीर्यमिन्द्र	१६१६	एवा ते गृत्समदाः	१२०६
उरुव्यचसे महिने	२२३३	एता अग्न आशुषाणास	३०७८	एवा ते वयमिन्द्र	२६७८
उरोष्ट इन्द्र राधसां	१७५५	एता अर्षत्यलला भवंती	१५१४	एवा ते हारियोजना	८७१
उल्लूकयातु शुशुलूकयातु	२२९०, ३२९९	एता च्यौत्नानि ते कृता	६४८	एवा त्वामिन्द्र वज्रिज्ञत्र	१५२२
उवे अग्न सुलाभिके	२६४६	एता त्या ते श्रुत्यानि	२७९७	एवा देवा इन्द्रो	२६००
उशना यत् सहस्यै.	१६७५	एतानि भद्रा कलश	२५३८	एवा न इन्द्र वार्यस्य	२१९१, २१९७
उशता कृता न	३२३६	एतायामोष गन्धत	७३०	एवा न इन्द्रोतिभिरव	१७२३
उशन्तु पु णः सुमना	१५३६	एतावतस्त ईमह	४९३	एवा न इन्द्रो मघवा	१५०७
ऊती शचीवस्तव	२७०६	एतावतस्ते वसो	५०३	एवा नः सृष्टवः समजा	१९४६
ऊर्जा देवा अवस्योजसा	१७७१	एता विश्वा चक्रवो	१६८०	एवा नूनमुप स्तुहि	१८१२
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	७०४	एता विश्वा सवना	२६०६	एवा नृभिदिन्द्रः	१०९९
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी	२७२२	एतु तिस्र परावत	२८९८	एवा पति द्रोणसाच	२५७१
ऊर्ध्वासस्त्वान्निन्द्रवा	२२३१	एत त इन्द्र जंतवो	९२४	एवा पाहि प्रन्था	१८४३
ऊर्ध्वा हि ते द्विवेदिवे	४५४	एते सोमा नरां नृतम	२१४०	एवा महान् बृहद्विवो	२७७२
ऊर्ध्वा ह्यस्थादध्यन्तरिक्षं	१२२९	एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्ध	२३४२	एवा महो असुर	२६९१
ऋजीषी वज्री वृषभः	१७६८	एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय	१८०८	एवा रातिस्तुवीमघ	२४२५
ऋतं येमान ऋतमिद्	१५७५	एतो न्विन्द्र स्तवामेशान	६७३	एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन्	४८०
ऋतं देवाय कृण्वते	१२२७	एतौ मे गावां प्रमरस्य	२५१०	एवा वसिष्ठ इन्द्रमृतये	२२०२
ऋतस्य दृढा धरुणानि	१५७४	एतु मध्वो मदिन्तं	१८०५	एवा वस्त्र इन्द्रः	१५५३
ऋतस्य पथि वेधा	२०४३	एना मंशानो जहि	२०५२	एवा वामह ऊतये	३०९९
ऋतस्य हि शुद्ध	१५७३	एन्दुमिन्द्राय सिद्धत	१८०२	एवा सत्यं मघवाना	१६०३
ऋतस्य हि सदसो	२७२६	एन्द्र नो गधि प्रियः	२३६७	एवा हि ते विभूतय	४६
ऋतुर्जनित्री तस्या	११३७	एन्द्र पृष्ठु कासु	२९८०	एवा हि तं शं सवना	१०६३
ऋभुक्षण न वर्तव	४७१	एन्द्र याहि पीतये	२२२	एवा हि त्वामृतुथा	१७१६
ऋश्यो न नृष्यन्नवपानमा	२३८	एन्द्र याहि मस्त्र	१०९	एवा हि मां तवस	२५२७
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक	२८३	एन्द्र याहि हरिभिरुप	४२५	एवा ह्यसि वीरपुरेवा	२४२४
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर	२८१०	एन्द्र याह्युप नः	१०११	एवा ह्यस्य काम्या	४७
ऋषवा ते पादा प्र	२६२५	एन्द्रवाहो नृपति	२५७०	एवा ह्यस्य सूनता	४५
एकं च यो विशन्ति	२१२९	एन्द्र सानसि रयि	३८	एवेदिन्द्रं वृषण	२१८५
एकं नु त्वा सन्पति	१७१५	एभिर्द्युभिः सुमना	७७८	एवेदिन्द्रः सुते	१९२७
एकया प्रतिधापिबत्	६४३	एभिर्नृभिर्दिन्द्र	१४८५	एवेदिन्द्र सुहव	१९३७
एकरालस्य भुवनस्य	१७७८	एमाशुमाशवे	१०	एवेदिन्द्राय वृषभाय	१४८६
एकस्य चिन्मं विभ्रवस्त्वोजः	३२५९	एमेन सृजता सुते	४९	एवेदेते प्रति मा	३२६१
एको द्वे वसुमती	१२४८	एमेनं प्रत्येतन	१९९९	एवेदेष्ट तुविकूर्मिर्वाजां	१४६
एत उ त्वे पतयन्ति	२२८८, ३२९७	एवा जज्ञानं सहसे	१९८२	एवेन्द्राग्निभ्यामहावि	३०४५
एतत् त इन्द्र वीर्यं	५३३	एवा त इन्द्रोचय महेम	१२०५	एवेन्द्राग्निभ्यां पितृव०	३११२
एतत् त्वत् त इन्द्र वृष्ण	९७३	एवा तदिन्द्र इंदुना	२८०३	एवेन्द्राग्नी पपिवांसा	३०२०
एतत् त्वत् त इन्द्रियमचेति	१९५८	एवा तमाहुस्त शृणव	२२०१	एवेन्नु कं सिन्धुमे०	२२६४

एवैवापागपरे संतु	२५७४	कथा शृणोति ह्यमान	१५६८	किं नो भ्रातरगस्य	१०५३
एष एतानि चकारेद्रो	१४९	कथा सबाधः शशमानो	१५६९	किमङ्गत्वा मघवन्	२५४८
एष मावेव जरिता	१७४७	कथो नु ते परि चराणि	१६७९	किमङ्ग रभचोदन	६६३
एष ते यज्ञो यज्ञपते	३१२५	कदा चन प्रयुच्छस्युभे	५२१	किमयं त्वां वृषाकपिः	२६४२
एष द्रप्सो वृषभो	१९९५	कदा चन स्तरीरसि	५११	किमस्य मदे किम्बस्य	१९५५
एष प्र पूर्वारिव तस्य	८०५	कदा त इन्द्र गिर्वण	३४२	किमादमत्रं सरुवं	१५७१
एष ब्रह्मा य ऋग्विय	२९८६	कदा भुवन् रथश्याणि	२०२६	किमादुतासि वृत्रहन्	१६१५
एष नः स्तोमो भरुत	३२६४	कदा मर्तमराधस	९४४	किमु प्विदस्यै निविदो	१५१५
एष स्तोम इन्द्र	१०६८	कदा वसो स्तोत्रं	२७१४	कियती योषा मर्यता	२५०२
एष स्तोमो अचिक्रद्	२१५२	कदु शुभ्रमिन्द्र	२५१८	कियत् स्विदिन्द्रो	१४९९
एष स्तोमो मह उमाय	२१९०	कदु स्तुवन्त ऋतयन्त	१६९	कीरिशिद्धि त्वाभवसे	२१६८
एह हरी ब्रह्मयुजा शरमा	१४२	कदू न्वस्याकृन्	६२१	कुतस्त्वामिन्द्र माहितः २९६८, ३२५२	२९६८, ३२५२
एहि प्रेहि क्षयो	५९२	कदू महीरष्टष्टा	६२२	कुत्सा एते हर्षश्याय	२१९६
एहि स्तोमो अभि स्वरा	६१	कनीनकेव विद्रधे	३३४८	कुत्साय शुष्णमशुषं	१४७८
ऐनान्यतामिद्राग्नी	३१३०	क ते दाना असक्षत	५९७	कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता	२९४५
ऐभिर्ददे वृषया	२६२०	कक्षयो अतसीनां	१६८	कुविच्छकत् कुवित्	१७८६
ऐषु चाकन्धि पुरुहुत	२८०६	कं नश्चित्रमिषण्यसि	२६८०	कुवित्सस्य प्र हि	२०८३
ऐषु नष्ट वृषाजिन	२८९५	कन्या वारवायती	१७८३	कुविद्रङ्ग यवमन्तो	२७७४
ओकिवांसा सुते	३०४८	कया तच्छृण्वे शत्र्या	१५४१	कुविन्मा गोपां करसे	१३९५
ओजस्तदस्य तिखिष	२४७	कया त्वं न ऊत्या	२४४८	कुह श्रुत इन्द्र. कस्मिन्नय	२४६६
ओते मे यावापृथिवी	२८७४	कया नश्चित्र आ	१६३०	कृणोत्यस्मै वरिवो	१५८२
ओ ये नर इन्द्रमृतये	८४८	कया शुभा सवयसः	३२५०	कृन् न श्रप्ती वि	२५६१
ओषमित् पृथिवीमहं	२८५९	कर्णगुह्या मघवा	२३३५	कृतं नो यज्ञ विद्येषु	३१९४
ओषु प्र याहि वाजंभिर्मा	१३४	कहिं स्वित् तदिन्द्र यजरित्रे	२०२८	कृन् मे दक्षिणे हस्ते	२९१०
ओ सुष्टु इन्द्र	१०९५	कहिं स्वित् तदिन्द्र यन्नुभिर्नृन् २०२७	२०२७	केतुं कृणवन्नकेतवे	२६
औच्छत् सा रात्री	३३३९	कहिं स्वित् सा त इन्द्र	२६७५	के ते नर इन्द्र ये	२६०३
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं	१५८६	कविर्न निषयं विदधानि	१४६९	को अग्निमीष्टे हविषा	९५४
क इमं नाहुषीष्वा	२९७५	कस्मिन्द्र त्वावसुमा	२२४८	को अद्य नर्यो देवकामः	१५८८
क इं वेद सुते सखा	२१६	कस्ते मद इन्द्र रत्यो	२५१७	को अद्य युङ्क्ते धुरि	९५२
क इं स्तवत् कः	२११३	कस्ते मातरं विधवामचक्र०	१५२०	को अस्य वीरः सधमा०	१५६७
क इषते तुज्यते	९५३	कस्त्वा सत्यो मदानां	१६३१	को अस्य शुष्मं तविषीं	१७१३
क उ नु ते महिमान.	२६१०	कस्य ब्रह्माणि जुनुष्युवा	३२५१	को देवानामवो अद्या	१५९०
ककुहं चित् त्वा कवे	४५६	कस्य वृषा सुते सखा	२४४९	को नानाम वचसा	१५८९
कषा इन्द्रं यदक्रन	२४५	कस्य स्वित् सवनं	५९६	को नु मर्यां अमिथित.	४७९
कषा इव शृगवः	१७१	का ते अस्त्ररंकृतिः	२२१५	को न्वभ्र मरुतो	३२६२
कषास इन्द्र ते	२७३	का सुष्टुतिः शवसः	१५७७	क्रतूयन्ति क्षितयो	१५८०
कषेभिर्धृष्णवा	२१२	कि स ऋधक् कृणवद्	१५१२	क्रव इत् पूर्णमुदरं	६५७
कथा कदस्या उषसो	१५७०	कि सुवाहो स्वर्गुरे	२६४७	क्रवा मह्यं अनुवधं	९१९
कथा त एतदहमा	२५२६	किं ते कृणवन्ति कीकटेषु	१४६६	कीलम्यस्य सूनता	३२८
कथा महामवृधत्	१५६६	कि न इन्द्र जिघांससि	१०५२		

कःस्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं	१६८२	गोभिर्यदीमन्ये	१२१	तं वो धिया नव्यस्या	१९१३
कःस्य वृषभो युवा	५२५	गोभिष्टरेमामतिं	२५५५, २५६६, २५७७	तं वो धिया परमया	१९८०
कःस्या वो मरुतः	३२५५	गोमद्विरपयवद्	३०८७	त वो महो महायः	२३२८
केयथ केदसि पुरुत्रा	९३	ग्राश्च यज्ञरश्च	३१६४	तं वो वाजानां पतिः	१८०७
क्षत्राय त्वमवसि	१७८१	घृतमुषः सौम्या	३२०५	तं शिशीता सुवृक्तिभिः	२११०
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं	१५००	घृषुः इयेनाय कृत्वन	२८००	त शिशीता स्वध्वर	३१११
क्षेमस्य च प्रयुजश्च	१७८०	चकार ता कृणवन्तूनमन्या	२२००	त सध्रीवीरूतयो	२०३३
खे रथस्य खेऽनसः	१७८२	चक्र यदस्याः स्वा	२६३१	तं सुष्ट्या विवासे	३८४
गन्तारा हि स्थोऽवसे	३१३५	चक्र न वृत्त पुरुहूत	१७४६	तं स्या रथं मघवन्	८३०
गन्तेयान्ति सवना	१९२१	चक्राणस परीणहं	७३७	त हि स्वराज्य वृषभ	५४९
गमद् वाजं वाजयन्निन्द्र	२२४५	चक्राथे हि सध्र्यः ङ्गनाम	३०१०	तक्षद् यत् त उशना	७५४
गमज्जस्ये वसुन्या	२५७२	चतु सहस्य गव्यस्य	३३४०	त गूर्तयो नेमन्निव	८०६
गम्भीरो उद्धीरिव	१४०६	चत्वारि ते असुर्याणि	२६११	त वेमिस्था नमस्विन	२३१९
गम्भीरण न	१९३६	चन्द्रमा ऽ अस्वन्तरा	२९७१	ततुर्वीरो नयो	१९२९
गभो यज्ञस्य देवयुः	२९८	चर्षणीष्टं मघवानः	१४३४	तत् त इन्द्रिय परम	८३९
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र	१२८३	जगुभमा ते दक्षिणमिद्र	२८४२	तत् तु प्रयः प्रन्थया	१०३०
गव्यं त इन्द्रं	१५०३	जघन्वा इन्द्र	१०७४	तत् ते यज्ञो अजायत	२३८९
गव्यो पु णो यथा	१८२६	जघन्वा उ हरिभिः	७६७	तत् त्वा यामि सुवीर्यं	१६४
गाथश्चवस सत्पति	१५३	जघान वृत्र स्वधिः	२६६८	तत्रो अपि प्राणीयत	५४७
गायत् साम नभन्यं	१०५६	जज्ञान एव व्यबाधत	२७४८	तथा तदस्तु सोमपा.	७१०
गायति त्वा गायत्रिणो	५८	जज्ञान. सोम सहसे	२२८१	तदद्या चित् त उक्थिनो	३७४
गावो न यूथमुप	१८३८	जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि	६४०	तदध्विना भिपजा	२९४०
गावो यवं प्रयुता	२४९८	जज्ञानो हरितो	१४०२	तदस्मै नव्यमङ्गिरः	११८१
गिरश्च यास्ते गिर्वाह	१४५	जनं वाजिन् महि	१८८२	तदस्य रूपममृत	२९३९
गिरा वज्रो न संभृतः	२४३८	जनिता दिवो जनिता	१७७२	तदस्येद पश्यता भूरि	८४३
गिरिर्न य. स्वतर्वा	१५३८	जनिताश्चानां जनिता	१७७३	तदिन् सधस्थमभि	२५३३
गिरीरज्जान् रेजमानो	२५७५	जनिष्ठा उग्र सहसे	२६२३	तदिदास भुवनेषु	२७६४
गिर्वेणः पाहि नः	१३६२	जयेम कारे पुरुहूत	४२०	तदिद् रुद्रस्य चेतति	३४०
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान	३०७४	जायेदस्त मघवन्-सेदु	१४५६	तदिन्द्र प्रेव वीर्यं	८४५
गुहा सतीरुष त्मना	२५०	जुष्टी नरो ब्रह्मगा व	२२६५	तदिन्द्राव आ भग	१८१४
गुहा हित गुह्यं	११०५	जुषेथां यज्ञमिष्टये	३०९४	तदिन्नु ते करण दस्म	१६९९
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्स	८७६	जंता नृभिरिन्द्रः	१०९८	तदिन्वस्य वृषभस्य	१३५१
गृणे तदिद् ते शव	५७३	ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय	१३८	तदिन्वस्य सवितुः	१३५२
गृभीतं ते मन इन्द्र	२१८७	ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी	१३६२	तदिन्मे छन्तसद्रुपो	२५३२
गृष्टिः सस्रुव स्थविर	१५१८	ज्योतिर्वृणीत तमसो	१३६१	तदु प्रयक्षतपमस्य	८७७
गृहो याम्यरंकृतो	२८६२	त इक्षिप्यं हृदयस्य	२२७०	तदूचुषे मानुषेमा	८४२
गोजिता बाहु अमितक्रतुः	८३३	त इन्वस्य मधुमद्	१२८५	तदधाना अवस्यवो	५८७
गोप्रभिद् गोविद्	२६९६	तं व इन्द्रं चतिनमस्य	१८७४	तद् व उक्थस्य	२०४१
गोभिर्मिमिक्षुं	१४३१	त वः सखायः	१९२६	तद् विविडिह यत्	२३५६
		तं वो दस्ममृतीषह	८९४	तद् वो गाय सुते सचा	२०८१

तंतमिद्राधसे मह	२२९७	तमु द्रुहि यो अभि०	१८५६	ता ईं वर्धन्ति मद्यस्य	३३०५
त ते मदं गुणीमसि	३७२	तमु द्रुहीत्रं यो	१०६०	तां सु ते कीर्तिं मघवन्	२६०८
तं ते यवं यथा गोभिः	११८	तमु स्तुष इन्द्रं त	१२११	ता कर्मावतरास्मै	१०५९
तं त्वा मरुत्वती	०२३०	तमु स्तुष इन्द्र यो	१८९८	ता गृणीहि नमस्येभिः	३१६३
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे	२३००	तमूतयो रणयञ्छुरसातौ	९६३	ता तू त इन्द्र महतो	१५५९
त त्वा विश्वगारा	७०८	तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं	१९११	ता तू ते सत्या तुविनृग्ण	१५६०
त त्वा वाजेषु वाजिन	१२	तं पृच्छन्तोऽवरासः	१९०२	ता ते गृणन्ति वेधसो	१६५५
तं त्वा हविष्मतीर्विश	२६९	तम्बभि प्र गायत	३६९	तां भाशिरं पुरोकाशभिर्द्रेमं	१२६
तज्जः प्रन रुख्यमस्तु	१८६०	तम्बभि प्रार्चतेन्द्रं	२४०१	ता नासत्या सुपेशसा	२९५८
तज्जो वि वोचो	१९१०	तयोरिदमवच्छव०	३०४२	ता नो वाजवतीरिष	३०६७
तन्म ऋतमिन्द्र शूर	९९०	तयोरिदवसा वयं	३१३९	ताभिरा गच्छतं	३०६४
तमङ्गिरस्वज्जमसा	१२७८	तरणि वो जनानां	४७०	ता भिषजा सुकर्मणा	२९५९
तमद्य राधसे महे	६००	तरणिरित् सिषासति	२२५४	ता महान्ता सदस्वती	३००६
तमप्सन्त शवस	९६४	तराभिवो विद्वंसुमिन्द्रं	६१३	ता मित्रस्य प्रशस्तय	३००४
तमर्केभिस्त सामभिस्तं	३९०	तव ऋवा तव तद्	१८४६	तां पूष्णः सुमतिं वय	३३३४
तमस्य द्यावापृथिवी	२७४५	तव व्योऽनानि वज्रहस्त	२१४४	ता यशेषु प्र शंसते०	३००३
तमस्य विष्णुर्महिमान०	२७४६	तव त्व इन्द्र सख्येषु	२७९२	ता योषिष्टमभि	३०५७
तमहे वाजसातय	३२३	तव त्वदिन्द्रियं बृहत्	३७५	ता वां गोभिर्विपन्यवः	३०८४
तमा नूनं वृजनमन्यथा	२०३०	तव त्यज्यं नृतोऽप	१२२६	ता वां धियोऽवसे	३१५३
तमिच्छ्योऽनैरायन्ति	३८७	तव त्विषो जनिमन्	१४८९	ता वामेषे रथाना०	३०४३
तमित् सखित्व ईमहे	६३	तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं	३७६	ताविद् दु शंसं मर्यं	३०९०
तमिद् धनेषु हितेषु	३८६	तव प्रणीतीन्द्र जोहुवा०	२२१०	ता वृधन्तावनु	३०४४
तमिद् व इन्द्रं सुहवं	१४८२	तव ह त्वदिन्द्र	१८९६	ता सानशी शवसाना	३०७२
तमिद् विप्रा भवस्यवः	३३७	तवायं सोमस्त्व०	१३१७	ता हि मध्यं भराणा०	३१०३
तमिन्द्रं जोहवीमि	९८८	तवाहं शूर रातिभिः	७५	ता हि शश्वन्त ईकत	३०८३
तमिन्द्र वाजयामसि	२४३६	तवेद विश्वमभितः	२२८४	ता हि श्रेष्ठा देवताता	३१६९
तमिन्द्र दानमीमहे	१८२२	तवेदिन्द्र प्रणीतिपूत	२६४	ता हुवे ययोरिदं	३०५९
तमिन्द्र मदमा	१३८३	तवेदिन्द्रावमं वसु	२२५०	तिग्ममायुधं मरुता०	२३५३
तमिन्नरो वि ह्वयंते	१५७९	तवेदिन्द्राहमाशसा	६६०	तिग्मा यदन्तरशनिः	१४८३
तमीळित्व यां अर्चिषा	३०६५	तवेदु ता. सुकीर्तयो	४७५	तिष्ठा सु कं मघवन्	१४५४
तमीमह इन्द्रमस्य	१९०९	तस्मा अग्निभौरितः शर्म	१५९१	तिष्ठा हरी रथ	१३१२
तमीमहे पुरुष्टुत	३४४	तस्मिन्ना वेशया	१०८६	तीव्रस्याभिवयसो	२८९४
तमु उपेष्टं नमसा	३३६०	तस्मिन् हि सन्त्यूयतो	१८२३	तीव्रा सोमास आ गहि	६८०
तमु त्वा नूनमसुर	२३९६	तस्मै तवस्यमनु	१२१५	तुजेतुजे य उत्तरे	३४
तमु त्वा नूनमीमहे	१८१५	तस्य वज्रः क्रन्दति	९६९	तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु	२८२५
तमु त्वा यः पुरासिथ	२०७०	तस्य वयं सुमतौ	२१११; २७७७	तुभ्यं सोमाः सुता इमे	२४५४
तमु त्वा सत्य सोमपा	२०६९	तस्येदिह स्तवध	१५४५	तुभ्यं ब्रह्माणि गिर	१४३९
तमु नः पूर्वे पितरो	१९०८	ता अस्य नमसा सहः	९४८	तुभ्यायमग्निभिः सुतो	६८३
तमु त्वाम य इमा	२३५०	ता अस्य पुशनायुवः	९४७	तुभ्येदमिन्द्र परि विष्यते	२८९९
तमु त्वाम यं गिरः	२३४१	ता अस्य सूदयोहसः	२३०६		

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते	६३५	त्रिंशच्छतं बर्मिण	१९६०	एव हि ष्मा च्यावयन्नच्युता०	१२४१
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये०	१३८९	त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो	२३५२	एवं हि सत्यो मघवन्	२३९४
तुभ्येदिमा सवना	२१७७	त्रिकद्वकेषु चेतनं	३३८, २४१७	एवं हि स्तोमवर्धन	३६४
तुभ्येदेते बहुला	७९४	त्रिकद्वकेषु महिषो	१२२३	एव ह्येक ईशिष इन्द्र	१६५१
तुभ्येदेते मरुतः	१६८७	त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजस०	८३५	एवं ह्यहि चरवे विदा	५५४
तुरण्यवो मधुमन्तं	५१४	त्रीशीर्षाणं त्रिककुदं	२८८२	एवं करजमुत पर्णय	७८२
तुराणामतुराणां	२९०७	त्रीणि राजाना विदये	१३५०	एवं कवि चोदयोऽर्कसातो	१९४९
तुरीयं नाम यज्ञियं	६६९	त्री यच्छता महिषाणामघो	१६७४	एवं कसं क्षुण्णहृदयेष्वाविथा०	७५०
तुविशं ते सुकृतं	६५०	त्र्ययमा मनुषो	१६६७	एव कुसेनाभि	२००८
तुविश्रीवो वपोदर०	४०१	एव रथ प्र भरो	१९५०	एव गोत्रमङ्गितोभ्योऽवृगोरपो	७४७
तुविश्रुप्तम तुविश्रुतो	२२९२	एव राजेन्द्र ये च	१०६९	एवं जघन्थ नमुचि	२६२९
तुतुजानो महेमते	३३१	एव वर्मासि सप्रथः	२२२८	एवं जिगेथ न धना	८३७
तूर्वजोजीयान् तवस०	१८८६	एव वलस्य गोमतो	७४	एवज्जियेन्द्र पार्थिवानि	२००७
तृतीये धानाः सवने	१४५१	एव विश्वस्य धनदा	२२५१	एवं तदुक्थमिन्द्र	१९५१
तेजःपशूनां हवि०	२९५३	एवं विश्वा दधिषे	२६१२	एवं तमिन्द्र पर्वत न	७९९
ते स्वा मदा भमदन्	७८०	एवं वृथा नद्य इन्द्र	१०१५	एव तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं	८१६
ते स्वा मदा इन्द्र	२१८४	एवं वृध इन्द्र पूषो	१८९४	एवं तमिन्द्र मर्य०	१७४०
ते स्वा मदा वृहविन्द्र	१८४४	एव वृषा जनानां	३७८	एव तमिन्द्र वावृषानो	१०२७
तेन सत्येन जागृत०	३००७	एव शतान्यव शम्बरस्य	२००९	एवं त ब्रह्मगस्पते सोम	३३५८
तेन स्तोतृभ्य आ भर	६४७	एवं शर्धाय महिना	२८०८	एवं तौ इन्द्रोभयो	२०१८
तेभ्यो गोधा अयथ	२५२९	एवं श्रद्धाभिर्मन्दसान	१९५२	एवं तान् वृत्रहृदये	२४७५
ते सत्येन मनसा	३२३३	एवं सत्य इन्द्र धृष्णुतान्	८८७	एवं तू न इन्द्र	१०४६
तोके हिते तनय	३१५१	एव सद्यो अपिषो	१२९१	एव त्यमिततो रथमिन्द्र	२८३२
तोशा वृत्रहणा	३०३३	एवं सिध्वावासृजो	२७७९	एवं त्यमिन्द्र मर्य०	२८३४
तोशासा रथयावाना	३०९२	एवं सुतस्य पीतये	१९	एवं त्यमिन्द्र सूर्यं	२८३५
एवं सु मेघं महया	७६०	एवं सूकरस्य दर्दहि	२२७३	एवं त्या चिद वातस्याश्वागा	२४७०
एवं विश्व पर्वत गिरि	५९३	एवं ह स्यन् ससभ्यो	२३५८	एवं त्यां न इन्द्र देव	८९२
एवं चिदर्ण मधुपं	१७१२	एवं ह स्यदप्रतिमानमोजो	२३५९	एवं दाता प्रथमो	२३९२
एवं चिदस्य ऋतुभि०	१७०९	एवं ह स्यदिन्द्र तुल्यमात्रः	२१४१	एवं दिवो धरुगं धिष	८१०
एवं चिदिस्था कल्पयं	१७१०	एवं ह स्यदिन्द्र चोदोः	८८८	एव दिवो वृहत्.	७८९
एवं चिदेषां स्वधया	१७०८	एवं ह स्यदिन्द्र सप्त	८९१	एवं धुनिरिन्द्र	१०७७, १८९५
एवमु वः सत्रासाहं	२४०३	एवं ह स्यदिन्द्रारिषण्यन्	८८९	एव धृणो धृता	२१४२
एवमु वो अप्रहण	२०३९	एव ह स्यदगया	२६६९	एवं न इन्द्र ऋतयु०	२३३०
एवस्य चिन्महतो	१७०७	एव ह स्यद वृषभ	२३६०	एवं न इन्द्र स्वाभिरुती	१२०९
अथ इन्द्रस्य सोमाः	१२२	एवं ह नु स्यदमायो	१८५८	एवं न इन्द्र राया तरुणसोमं	१००९
अथः कृणवन्ति भुवनेषु	२२६८	एवं हि न. पिता वसो	२३७४	एवं न इन्द्र राया परीणसा	१००८
अथः कोशासः श्रोतन्ति	१२३	एवं हि राधस्पते	५६१	एवं न इन्द्र वाजयुस्त्वं	२२२५
आता नो बोधि ददशान	१५०४	एवं हि वृत्रहृदयो	२४६२	एवं न इन्द्र शूर	२४७४
आतारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं	२१०९	एवं हि शश्वतीनामिन्द्र	२३६९	एवं न इन्द्रा भर	२३७३
		एवं हि शूरः सनिना	१०८१		

त्वं न इन्द्रासां हस्ते	२३३२	त्वं महौ इन्द्र तुभ्यं	१४४८	त्वे विश्वा तविषी	७५१
त्वं नः पश्चादधरादुत्तरान्	५६३	त्वं महौ इन्द्र यो ह	८८५	त्वेषमिथा समरणं	३३०४
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ	२१४३	त्वं महीमवनिं	१५२७	त्वे सु पुत्र शवसे	२४१०
त्वं नो अस्या अमनेरुत	६२६	त्वं मायाभिरनवद्य	२८०५	त्वे ह यत् पितरश्चिन्त	२११९
त्वमङ्ग प्र शसिषो	९५५	त्वं मायाभिरप	७४९	त्वोतासस्त्वा युजा	२२९९
त्वमद्य प्रथमं जायमानो	१४९४	त्वया वयं मघवन्निन्द्र	११००	त्वोतासां मघवन्निन्द्र	१६०८
त्वमपामपिधानावृणोरपा०	७४८	त्वया वयं मघवन् पूर्व	१०२८	दृण्डा इवेद् गोभजनास	२२६७
त्वमपो यद्वे तुर्वशाया०	१७००	त्वया वयं शाशग्रहे	२७६८	ददी रेक्णस्तन्वे	१८३१
त्वमपो यद्ध वृथ	१२८७	त्वया ह स्विद् युजा	४१९	दधानो गोमदश्ववत्	१८२१
त्वमपो वि दुरो	१९७२	त्वयेदिन्द्र युजा वयं	२४२८	दधामि ते मधुनो	९९२
त्वमस्याकमिन्द्र	१०७८	त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप	२४८९	दधामि ते सुतानां	४२९
त्वमस्य पारे रजसो	७७१	त्वां वाजी हवते	१९४८	दधिष्वा जठरे सुतं	१३६८
त्वं मानेभ्य इन्द्र	१०५०	त्वां विष्णुर्बृहन्	३७७	दध्यङ् ह मे जनुषं	३०२९
त्वमाविथ नर्य	७९१	त्वां शुष्मिन् पुरुहूत	२३७५	दनो विश इन्द्र	१०७०
त्वमाविथ सुश्रवसं	७८४	त्वां सुतस्य पीतये	१३९०	दध्म चिद्धि त्वावतः	४७४
त्वमिन्द्र प्रसूतिष्वभि	२३८०	त्वां स्तोमा अबीवृधन्	२१	दध्मेभिर्दिचच्छशीयां	१६४७
त्वमिन्द्र बलादधि	२८२०	त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ	८९०	दर्शन्वन्न श्रुतपां	२४९६
त्वमिन्द्र यशा अम्यृजीषी	२३९५	त्वां हि सत्यमाद्विवो	१८१८	दश ते कलशानां	१६६३
त्वमिन्द्र सजोषम०	२८२२	त्वां ईंश्द्रावसे	२०१७	दश महां पौतक्रतः	५४५
त्वमिन्द्र स्रजितवा	२१६३	त्वां जना ममसत्ये०	२५४९	दश राजानः समिता	३१८८
त्वमिन्द्राधिराज	२९०३	त्वां देवेषु प्रथमं	८३६	दशानामेकं कपिलं	२५०६
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा	२८२३	त्वामिच्छवसस्पते	२६३	दस्मो हि ण्मा वृषणं	१००२
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं	२३६५	त्वामिदा ह्यो नरो	२३७६	दस्यून्निष्ठस्यैश्च	९७४
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा	२८२१	त्वामिद्धि त्वायवो	२४२९	दाता मे पृषतीनाम	६१०
त्वमीशिषे वसुपते	१०५५	त्वामिद्धि हवामहे	२०९०	दादहाणो वज्रमिन्द्रो	१०१४
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	५९१	त्वामिद्यवयुर्मम	६५९	दाना मृगो न वारण	२१७
त्वमुत्सो ऋतुभि०	१७०६	त्वामिद् वृत्रहन्तम	२७९, १७४१	दानाय मनः सोमपावन्नस्तु	८०३
त्वमेकस्य वृत्रह०	२०६४	त्वमिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो	२४५९	दाशाराज्ञे परियत्ताय	३१८९
त्वमेतदधारयः कृष्णासु	२४४२	त्वामुग्रमवसे	२०९५	दासपरनीरहिगोपा	७२५
त्वमेताज्जनराज्ञो	७८३	त्वा युजा तव तत	१५९२	दिदक्षन्त उषसो	१२५०
त्वमेतान् रुदतो	७३६	त्वा युजा नि खिदत्	१६००	दिवश्चिदस्य वरिमा	७९७
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो	३२६८	त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा	८२५	दिवश्चिदा पूर्वा	१३५६
त्वं पिप्रं मृगयं	१४७९	त्वावतः पुरुवसो	१८१७	दिवश्चिद् वा दुहितरं	३३४५
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना	९८९	त्वावतो हीन्द्र क्रवे	२१९५	दिवि मे अन्यः पक्षोऽ	२८६०
त्वं पुरं चरिण्वं	११४	त्वे इन्द्राण्यभूय	१११२	दिवेदिवे सदशीरन्यमर्धं	२११८
त्वं पुरुण्या भरा	२७५४	त्वे ऋतुमपि वृज्जित	२७६६	दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र	१८८५
त्वं पुरु सहस्राणि	५५५	त्वमेतानि पमिषे	२६३०	दिवो न यस्य रेतसो	९५९
त्वं भुव प्रतिमान	७७२	त्वे राय इन्द्र तोशतमाः	१०४७	दिवो मानं नोत्सदन्	५७२
त्वं मघम्य दोधत	२८३३	त्वे वसुनि संगता	६५८	दिशः सूर्यो न मिनाति	१२४९

दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा	२७२०	धेनुं न त्वा सूर्यवसे	२१२१	न दुष्टुती मर्षीं विन्दते	२२५५
दीर्घस्ते अस्वङ्कुशो	४०३	धेनुष्ट इन्द्र सृनुता	३५६	न याव इन्द्रमोजसा	२५७
दुराध्वो अदिनि	२१२६	ध्रुवं ध्रुवेण मनसा	२९२६	न नूनमस्ति नो	१०५१
दुरो अश्वस्य दुर	७७६	ध्रुवासि ध्रुवोऽयं	२९२१	न नूनं ब्रह्मणामृणं	१९५
दुर्गे चित्र सुगं कृधि	२४३९	नकिः परिष्टिर्मघवन्	८९९	न पञ्चाभिर्दशभिर्वष्टयारभं	१७३१
दूणाशं सख्यं तव	२०८५	नकिः सुदासो रथं	२२४४	न पातो दुर्गहस्य	६१२
दूरं किल प्रथमा	२७३२	नकिरस्य शचीनां	१९४	न पापासो मनमहे	५५८
दूराच्चिद्रा वसतो	१९७९	नकिरिन्द्र स्वदुत्तरो	१६०९	न म इन्द्रेण सख्यं	११९७
दूरादिन्द्रमनयज्ञा	२२६३	नकिरेषां निन्दिता	१३५८	न मत् स्त्री सुभसत्तरा	२६४५
दूरे तन्नाम गुह्यं	२६१४	नकिर्देवा मिनीमसि	२७९१	न मा तमज्ञ	१२३२
देवदेवं वोऽवस	३०६	नकिष्ट कर्मणा नश०	२३२३	न यं विविक्तो रोदसी	३११
देवानां माने प्रथमा	२५१३	नकिष्टवद् रथीतरो	२४२	न यं शुक्रो न दुराशीर्न	१२०
देवाश्चिन ते असुर्याग	२१६७	नक्षद्वाता परि	१०५८	न यं हिंसन्ति धीतयो	२०२३
देवी यदि तविषी	८०८	नक्षन्त इन्द्रमवसे	५३४	न यं जरन्ति शरदो	१९३४
देहि मे ददामि ते	२९२०	न क्षोणीभ्यां परिभवे	११७४	न यं दुध्रा वरन्ते	६१४
दोहेन गामुप शिक्षा	२५४७	न कीं वृधीक इन्द्र ते	६५४	न यस्योदिति द्विष.	२०६५
द्यामिन्द्रो हरिधायमं	१४०१	न कीमिन्द्रो निकर्तये	६५५	न यस्य ते शवसान	२२९८
द्यावा चिदस्मै	११३४	न की रेवन्तं सख्याय	४२२	न यस्य देवा देवता	९७१
द्युक्षं सुदानु तविषीभिरावृत्तं	८९५	न घा त्वद्रिगप धेति	२५५८	न यस्य द्यावापृथिवी भनु	७७३
द्युमत्तमं दक्षं	२०४४	न घा राजेन्द्र आ	१०९७	न यस्य द्यावापृथिवी न	२६६७
द्युक्षेषु पृतनाज्ये	१३४०	न घा वसुर्नि यमते	२०८२	न यस्य वर्ता जनुषा	१५३९
द्यौर्न य इन्द्राभि	१८८४	न घेमन्यदा पपन	१३२	न यातव इन्द्र	२१६५
द्यौश्चिदस्यामर्वा	७६९	न जामये तान्वो	१२६१	न ये दिवः पृथिव्या	७३९
द्रप्समपश्यं विपुणे	३२६९	न त इन्द्र सुमतयो	२१३८	न रेवता पणिना	१५९४
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमानिन्द्रां	१५७२	न तं जिनन्ति बहवो	१५२२	न वरत्रायः सुतसोमाम	१६७८
द्रुहो निषत्ता पृशनी	२६२४	न तमंहो न दुरितानि	३१७८	न व यदस्य नवर्ति	१६७२
द्विता यो वृत्रहन्तमो	२४६१	न ते अंतः शवसो	१९६६	न व यो नवर्ति	२४३१
द्विता वि वज्रे सनजा	८७८	न ते गिरो अपि मृष्ये	२१७५	न वा उ मां वृजने	२४९५
धनं न स्पन्द बहुलं	२५५०	न ते त इन्द्राभ्य०	१७१९	न वा उ सोमो वृजिनं	३२९०
धन्व च यत् कृतत्रं	२६५९	न ते दूरे परमा	१२३९	न वीळवे नमते	१९३५
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट	१४२७	न ते वर्तास्ति राधस	३५७	न वेपसा न तन्यतेन्द्रं	९११
धानावन्तं करम्भिण०	१४४६	न ते सख्यं न दक्षिणं	१७९४	न स राजा व्यथते	१७५३
धिषा यदि धिषण्यतः	१५४९	न त्वा गभीरः	१२९७	न सीमदेव आपदिषं	२३२७
धिष्व वज्रं गभस्त्यो	२०७७	न त्वा देवाम आशत	९८४	न सेशे यस्य रम्बते	२६५५
धिष्व शवः शूर	१११८	न त्वा बुद्ध्यन्तो अत्रयो	८२६	न सेशे यस्य रोमशं	२६५६
धीभिरर्धद्विरर्धतो	२०७१	न त्वा वरन्ते अन्यथा	१६५२	स सोम इन्द्रमसुतो	२१९८
धृतव्रतो धनदाः	१८७५	न त्वावो अन्यो दिव्यो	२२५७	नहि ते शूर राधसो	१८२७
धृषतश्चिद् धृषन्मनः	५७०	नदं व ओदतीनां	२३०५	नहि त्वा रोदसी उभे	६५
धृषत् पिब कलशे	२१०४	नदं न भिन्नममुया	७२२	नहि त्वा शर देवा	६७२

नहि त्वा ज्ञासो न	१९४२	नि भीमिदन्न गुह्या	१३४७	पन्य आ दर्दिरच्छता	१९७
नहि तु ते महिमनः	१९५७	नि पु सीद गणपते	२७४३	पन्य इदुप गायत	१९६
नहि तु यादधीमसीदं	९१४	नि पू नमातिमतिं	१००४	पन्यं पन्यमित् सोतार	१४०
नहि मे अक्षिपक्ष्णा०	२८५५	नि प्वापया मिथूदशा	६९४	पपृक्षेयमिन्द्र	१७२२
नहि मे रोदसी उमे	२८५६	नि ष्वध्वरीरोषधीराप	३२०३	पप्राथ क्षां महि	१८४७
नहि वां वज्रयामहे	३१०२	नि सर्वसेन इगुधीरस	७३२	पयसा शुक्रममृतं	२९४२
नहि षस्तव नो मम	२२५	नि सामनामिषिरामिद्र	१२४६	परः सो अस्तु तन्वा	३२८८
नहि प्मा ते शतं चन	१६३८	नीचावया अभवद्	७२३	परमां तं परावत०	२८९७
नहि स्थूयंतुथा	२७७५	न अन्यत्रा चिदद्रिव०	१८००	पराकात्ताश्चिदद्रिवस्त्वां	२४२३
नह्यः क्त नृतो त्वदन्यं	१८०१	न हस्या ते पूर्वथा	१०३१	परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त	७३४
नह्यः क्त पुरा चन	१८०४	न ह्य राये वरीव०	२२०७	परा गुदस्व मघवन्नमित्रान्	२२५३
नह्यः न्यं बलाकरं	६६१	नू इन्द्र शूर स्वमान	२१५०	परा पूर्वेषां सख्या	२११५
नाष्टष आ दष्टषते	२८८८	नू गृणानो गृणते	१९८७	परायतीं मातर०	१५११
नाना हि त्वा हवमाना	८३२	नू चित् स श्रेषते	२१५६	परा याहि मघवन्ना	१४५७
नामानि ते शतक्रतो	१३३६	नू चिन्न इन्द्रो मघवा	२२०६	परा हीन्द्र धावलि	२६४१
नास्मै विष्णुश्च तन्यतु.	७२७	नू चिन्तु ते मन्यमानस्य	२१७८	परि त्वा गिर्वणो गिर	६२
नाहं तं वेद य इति	२४९३	नू त आभिरभिष्टिभि०	१७५९	परि यदिन्द्र रोदसी	७३८
नाहमतो निरया	१५१०	नूना इदिन्द्र ते	४१५	परि वत्मानि सर्वत	२८९३
नाहमिद्राणी रारण	२६५१	नू न इन्द्रावरुणा गुणाना	३१६८	परीं घृणा चरति	७६५
निष्ठातं चिद्यः पुरुसंभृतं	६१६	नूनं सा ते प्रति ११२१; ११७१; ११८०		परीमे गामनेषत	२९७२
नि गच्छता मनसा	१२६८	११८९; ११९८; १२०७; १२१६		परेहि विप्रमस्तृत०	७
नि गन्धर्वोऽनवो	२१३२	नूनं तदिन्द्र दक्षि	३२५	परोमात्रमृचीषम०	२२९६
नि तद्विषेऽवरं	२७७०	नूनं न इन्द्रापराय	२०२०	परो यत् त्वं परम	१६८६
नि तिग्मानि आशयन्	२७५९	नू द्रुत इन्द्र नू १४८७; १५०८; १५३२.		पहुंहे नाम मानवी	२६६१
नि दुर्ग इन्द्र अधि०	२१९३	१५४३; १५५४ १५६५ १५७६ १५८७		पात न इन्द्रावृणो०	३३३६
निधीयमानमपगू०	२५३५	नृणामु त्वा नृतमं	१४३७	पाता वृत्रहा सुतमा	१४१
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन्	११०८	नृभिर्धृतः सुतो	११७	पाता सुतमिन्द्रो अस्तु १९२०; २०५०	
नि यद् वृणक्षि	७९०	नृवत् त इन्द्र नृतमाभिरुती	१८८०	पान्तमा वो अंधस	२३९७
नियुवाना नियुतः	३२३८	नेमिं नमन्ति चक्षसा	९८७	पारावतस्य रातिषु	४४२
नि येन मुष्टिहव्या	३९	न्यर्जुदस्य विष्टं	१८२	पाषंदाणः प्रस्कण्वं समसादय	५०६
निरग्नयो रुचुर्निह	१७५	न्यस्मै देवी स्वधिति०	१७१४	पाहि गायान्धसो मद	२१३
निरसुं नुद ओकसः	२८९६	न्याविध्यदिलीबिशस्य	७४१	पाहि न इन्द्र सुष्टुत	१०१०
निराविध्यद् गिरिभ्य	६४५	न्यू षु वाचं प्र महे	७७५	पित्रे चिच्छकुः सदनं	१२७१
निरिन्द्र वृहतीभ्यो	१७४	पताति कुण्डणाद्यया	६९७	पिपीळे अंशुर्मद्यो	१५६२
निरिन्द्र भूम्या अधि	९०३	पतिर्भव वृत्रहन्सूनतानां	१२७७	पिब स्वधैनवानामुत	१९९
निर्हस्तः शत्रुरभिदास०	२८९०	पत्तो जगार प्रत्यञ्चमसि	२५०३	पिबा त्वः स्य गिर्वणः	११२
निर्हस्ताः संतु शत्रवो	२८९२	पत्नीवन्त सुता इम	२४५१	पिबापिबेदिन्द्र शूर	११११, २४८०
निवेशनः संगमनो	२९२९	पदा पणीरराधसो	५९०	पिबा वर्षस्व तव	१३२५
नि शुष्ण इन्द्र धर्णासिं	२५६			पिबा सुतस्य रसिनो	१५६

पिबा सोममभि	१८४१	पौरौ अश्वस्य पुरुकृद्	५५३	प्रभंगं दुर्मतीनामिन्द्र	१८३५
पिबा सोममिन्द्र मंदतु	२१७१	प्र कृतान्यृजीषिणः	१८०	प्रभङ्गी शूरो मघवा	५६५
पिबा सोममिन्द्र सुवान	१०१२	प्र घा न्वस्य महतो	११६२	प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाब्धि	१५०
पिबा सोमं मदाय	२३३८	प्र चक्रे सहसा सहो	२३३	प्र मेहिष्ठाय बृहते	८११
पिबा सोमं महत	२७५५	प्र चर्षणिभ्यः पृतना०	३०२६	प्र मन्दिने पितुमदर्चता	८१७
पिबेदिन्द्र मरुसखा	६३६	प्रजाभ्यः पुष्टिं	११४०	प्र मन्महे शवसानाय	८७२
पिषङ्गभृष्टिमन्भृणं	१०३८	प्रजामृतस्य पिप्रतः	२४४	प्र मात्राभी रिरिचं	१४११
पीवानं मेघमपचन्त	२५०७	प्रणीतिमिष्टे हर्यश्व	२७०७	प्र मे नमो साय	२५८७
पुत्रमिव पितरा०	२९६१	प्रणेतारं वस्यो भच्छा	३९१	प्र यत् सिन्धव	१३२८
पुनरेहि वृषाकपे	२६६०	प्र त इन्द्रः पुर्याणि	२७४२	प्र यद्विथा महिना	१०६१
पुनीषे वामरक्षसं	३१२७	प्र तन् ते अद्या करणं	१८६८	प्र यन्ति यज्ञ विप०	२१६२
पुरंदारा शिक्षतं	३०२८	प्र तद् वोचयं	१००५	प्र यमन्तर्ध्वसवासो	२५५३
पुरां भिन्दुर्युवा	७३	प्र तमिन्द्र नशीमहि	२५१	प्र या जिगाति खर्गलेव	३२९४
पुरा संवाधादभ्या	११७९	प्रति घोराणामेता०	१०४९	प्र ये गृहादममदुस्त्वाया	२१३९
पुरुकुत्सानी हि	३१५९	प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च	३३०२	प्र ये मित्रं प्रार्यमणं	२६७०
पुरुष्टुतस्य धामभिः	१३३७	प्रति ते दस्यवे वृक	५४४	प्र यो ननक्षे अभ्योजसा	५१२
पुरुहूतं पुरुष्टुतं	२३९८	प्रति त्वा शवसी	४४७	प्र व इन्द्राय बृहते	२३८६
पुरुहूतो यः पुरुगूर्तं	२०२२	प्रति धाना भरत	१४५३	प्र व इन्द्राय मादन	२२२३
पुरुणि हि त्वा सवना	२६७७	प्रति प्र याहीन्द्र	१०४८	प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय	२९८९
पुरुतमं पुरुणां स्तोतृणां	२०८८	प्रति यत् स्या नीथादर्शि	८५१	प्र व उग्राय निष्टुरे	२०६
पुरुतमं पुरुणामीशान	१५	प्रति श्रुताय वो धृषत्	१८३	प्र व पान्तमन्वसो	३३०३
पुरु यत् त इन्द्र सन्त्युक्था	१७२०	प्रति स्मरेथां तुजय०	३२८४	प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय	११७२
पुरोळा इत् तुर्वशो	२१२४	प्र तुविद्युन्नस्य	१८६७	प्रवता हि क्रतूनामा	१६३४
पुरोळाशं सनश्रुत	१४४९	प्र ते अभोतु कुक्षयोः	१४४५	प्र वर्तय दिवो अश्मा० २२८७, ३२९६	३२९६
पुरोळाशं च नो घसो	१४४८, १६६०	प्र ते अस्या उपसः	२५१६	प्रवाच्यं शशधरा	१३००
पुरोळाशं नो अन्धस	६५१	प्र ते नावं न समने	११७८	प्र वाता इव दोधत	२८५१
पुरोळाशं पचयं	१४४७	प्र ते पूर्वाणि करणानि	१५३१, १६९८	प्र वामर्चन्त्युक्थिनां	३०३४
पुष्यात् क्षेमे अभि	१७५४	प्र ते बभ्रू विचक्षण	१६६६	प्र वामभोतु सुष्टुति०	३१४२
पूर्णां दर्बि परा	२९१९	प्र ते वोचाम वीर्यां	१६५४	प्र वीरमुग्र विविचि	५००
पूर्वीरस्य निषिधो	१४३८	प्र त्स्नं रयीणां युजं	२०७८	प्र वोऽच्छा रिरिचे	२५३४
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो	७२	प्र त्नवजनया गिरः	३२७	प्र वो महे मन्दमाना०	२६०१
पूर्वीरुषसः शरदश्च	१५२९	प्र त्यस्मै पिपीषते	१९९८	प्र वो महे महि नमो	८७३
पूर्वीभिद्धि त्वे तुविकूर्मिजाशसो	६२४	प्र तु वयं सुते या	१६८४	प्र वो महे महिवृधे	२२३२
पूर्वींष्ट इन्द्रोपमातयः	३१०९	प्र तु वोचा सुतेषु वां	३०४६	प्र सप्तगुमृतधीतिं	२८४७
पूषण्वते ते चक्रमा	१४५२	प्र नूनं धावता	९९७	प्र सत्राजं चर्षणीनामिन्द्रं	३८२
पृथक् प्रायन् प्रथमा	२५७३	प्र नेमस्मिन् ददशे	२५८८	प्र सत्राजे बृहते मन्म	३१६९
पृथू करक्षा बहुला	१८७३	प्रम बक्षिष्टुभमिषं	२३०४	प्र ससाहिधे पुरुहूत	२८३९
पृथकुसालुर्ध्वजतो	४०८	प्रमा वो अस्मे	१००७	प्र सु गमन्ता धियसानस्य	२५३०
पृथग्ने मेध्ये मातरिभनीन्द्र	५१६	प्र ऋगाणि नभाकच०	३१०५	प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा	४९५

प्र सु स्तोमं भरत	९९३	वृषदुक्थं हवामहे	१८९	भूरिकर्मणे वृषभाय	८४४
प्र सू त इन्द्र प्रवता	१२४३	वृहत् स्वश्चन्द्रममवद्	७६८	भूरि चकर्थ युज्येभिरस्ते	३२५६
प्रसृतो भक्षमकर	२८३१	वृहदिन्द्राय गायत	२३८४	भूरिभिः समह	२३३४
प्र सोता जीरो अध्वरेषु	३२४१	वृहन्त इन्नु यं	१११६	भूरित इन्द्र वीर्यं	८१५
प्र स्तोषदुप गासिषच्छषत्	६७४	वृहत्तच्छायो अपलाशो	२५०४	भूरि दक्षेभिर्वचने०	२७५३
प्र हि क्रतुं वृहथो	३२७०	वृहत्तिदिधम एषां	४४४	भूरिदा भूरि देहि	१६६४
प्र हि रिरिक्ष भोजसा	८९८	वृहस्पत इन्द्र वर्धतं	३३२४	भूरिदा ह्यसि श्रुतः	१६६५
प्र शोशुचया उपसो	२६७३	वृहस्पतिर्नः परि	२५५६, २५६७; २५७८; ३३२८	भूरि हि ते सवना	२१७६
प्र श्वेनो न मदिमंशुमसै	१८८९	वृहस्पते तपुषाश्वेव	१२३०	भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त०	२४६५
प्राक्तभ्य इन्द्रः प्र	२६७२	वृहस्पते परिदीया	२९३२	भूरिदिन्द्रस्य वीर्यं	५३९
प्राग्भुवो नभन्वो	१५२८	वृहस्पते युवमिन्द्रश्च	३३२५	भूमिश्चिद् वासि	१६४६
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि	२९०४	बोधा सु मे मघवन्	२१७३	भोजं त्वामिन्द्र वयं	११८८
प्रातर्यावभिरा गतं	३०९७	बोधिन्मना इदस्तु	२४४७	मंहिष्ठं वो मघोनां	१७६३
प्राता रथो नवो	११९०	ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा	१३१५	मक्ष ता त इन्द्र दाना०	२४७६
प्रान्यच्चक्रमवृहः	१६७६	ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं	२२१४	मखस्य ते तविषस्य	१३०२
प्राव स्तोतारं मघवन्नव	१७७०	ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि	२२०८	मघोनः स वृत्रहल्पे	२२४९
प्रास्तौहवौजा ऋग्वेभि०	२७१९	ब्रह्माणं ब्रह्मबाहसं	२०६६	मतयः सोमपासुहं	१३७७
प्रासै गायत्रमर्चत	९४	ब्रह्माणस्त्वा वयं	३९६	मसि नो वस्यदृष्टय	१०८५
प्रिया तष्टानि मे	२६४४	ब्रह्माणि मे मतयः शं	२९६९; ३२५३	मत्स्यपायि ते महः	१०७९
प्रियास इत् ते	२१४७	ब्रह्माणि हि चकृषे	१९२३	मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः	५०
प्रेता जयता नर	२७०२	ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः	२३९३	मत्स्वा सुशिप्र हरि०	२३७७
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्यैस्त्वाविध	१७७६	भृगो न चित्रो अग्नि०	२९९०	मदेनेषितं मदमुग्रमुग्रेण	१०७
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा	२२८३	भद्रमिदं रुशमा	३३३७	मदेमदे हि नो ददिर्युथा	९२२
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवच०	२७६३	भद्रं भद्रं न आ भरेषमूर्जं	२४५७	मनसस्पत इमं नो	३१२७
प्रेरय सूर्यो अर्थ	२५१९	भद्रा ते हस्ता सुकृतोत	१५५२	मनीषिणः प्र भरध्व	२७२५
प्रेष्टभीहि ष्टण्णुहि	९०२	भवा वरुथं मघवन्	२२४१	मनुष्यदिन्द्र सवनं	१२८६
प्रो अस्मा उपस्तुतिं	५६६	भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र	१०१७	मन्त्रमखवं सुधित	२२४७
प्रोम्रां पीतिं वृष्ण	२७०५	भिनद् गिरि शवसा	१४९०	मन्द्न्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो	२३२
प्रो द्रोणे हरयः	१९७४	भिनद् वलमङ्गिरोभि०	११६९	मन्दमान क्रतादधि	२६२७
प्रोष्टेशया वष्टेशया	२२७७	भिन्धि विश्वा अप	४८२	मन्दस्वा सु स्वर्णर	२८१
प्रो ऽवस्यै पुरोरथ०	२७७८	भीमो विवेषायुधे०	२१६४	मन्दिष्ट यदुशने	७५५
ब्रह्मिस्था महिमा	३०४७	भुवस्त्वामिन्द्र ब्रह्मणा	२६०४	मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य	१९८३
ब्रह्मविषयाय धाम्न	५८८	भुवो जनस्य दिव्यस्य	१९१५	मन्ये त्वा यज्ञियं	२३४८
बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय	९३६	भुवोऽविता वामदेवस्य	१४८४	ममच्चन ते मघवन्	१५१७
बलविज्ञायः स्थविर	२६९५	भूय इद् वावृधे	१९६८	ममच्चन त्वा युवतिः	१५१६
बाधसे जनान् वृषभेव	२०९३	भूयसा वस्त्रमचरत्	१५८५	मम ब्रह्मेन्द्र	११९६
विभया हि त्वावत	४७७	भूयाम ते सुमती	१५७	ममत्तु त्वा दिव्यः	२७५७
बीभत्सुनां सयुजं	३२७७	भूयामो यु त्वावतः	१६५०	मम त्वा सूर उदिते	११५
				मरुवन्तं वृषभं	१४१८; १८८१

मरुत्वन्तं हवामह	३२४७	मा ते अस्यां सहसावन्	२१४६	मो सु ब्रह्मैव तन्द्रयु०	२४२६
मरुत्वन्तमृजीषिण०	६३२	मा ते गोदत्र निरराम	४२४	मो सु त्वा वावतश्चना०	२२३५
मरुत्वाँ इन्द्र मीद्वः	६३४	मा ते राधांसि मा त	९५६	मो पू ण इन्द्रात्र	१०६७
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो	१४१४	मा ते हरी वृषणा	१३१६	मो ष्वः घ दुर्हणावान्	१३५
मरुत्तोत्रस्य वृजनस्य	८२७	मा त्वा मूरा अविष्यवो	४६५	य आनयत् परावतः	२०६०
मह उग्राय तवसे	२३५४	मा त्वा सोमस्य गल्दया	१०६	य आयुं कुत्समतिथिगवर्दयो	५२६
महः सु वो अरमिषे	१८३३	मात्रे नु ते सुमिते	२५२०	य आस्ते यश्च चरति	२२७५
महत् तक्षाम गुह्य	२६१५	मादयस्व सुते सचा	९२३	य इद्ध आविवासति	३०६६
महश्चित् त्वमिन्द्र	१०४३	मादयस्व हरिभिर्ये	८२६	य इन्द्र चमसेष्वा	६८५
महाँ अमत्रो वृजने	१३२६	माध्यदिनस्य सवनस्य	१४५०	य इन्द्र यतयस्त्वा	२६०
महाँ असि महिष	१४१०	मा न इन्द्र पीयत्नवे	१३०	य इन्द्र शुष्मो मघवन्	२२०४
महाँ इन्द्र परश्च	४२	मा न इन्द्र परा	९८२	य इन्द्र सस्त्यवतो	९७८
महाँ इन्द्रो नृवदा	१८७१	मा न इन्द्राभ्यादिशः	२४२७	य इन्द्राय सुवनत्	१५८३
महाँ इन्द्रो य भोजना	२४३	मा न एकस्मिन्नागसि	४७६	य इन्द्र सोमपातमो	२८८
महाँ २ ऽ इन्द्रो वज्रहस्तः	२९६६	मा नो अज्ञाता वृजना	२२६१	य इन्द्राग्नी चित्रतमो	३००८
महाँ उग्रो वावृषे	१३२७	मा नो अस्मिन् मघवन्	७८६	य इन्द्राग्नी सुतेषु वां	३०४९
महाँ उतासि यस्य	२२२२	मा नो गुह्या रिप	३३५०	य इमे रोदसी उभे	१४६४
महाँ ऋषिर्देवजा	१४६१	मा नो निदे च वक्तवे	२२२७	य इमे रोदसी मही	२५९
महान्तं महिना वयं	३१०	मा नो मतां अभि	२३	य उकथा केवला दधे	५१७
महि क्षेत्रं पुरु	१२७४	मा नो मर्धारा भरा	१५४२	य उकथेभिर्न विन्धते	५०७
महि ज्योतिर्निहितं	१२५१	मा नो रक्षो अभि नञ्या०	३३००	य उग्र सन्ननिष्टृतः	२१८
महि महे तवसे	१७१७	मा नो वधीरिन्द्र मा	८५४	य उग्रीणासुप्रबाहुर्धुयुषी	२८६८
मही द्यौः पृथिवी च	२९९७	मां धुरिन्द्रं नाम	२५९१	य उदहीन्द्र देवगोपाः	७८५
मही यदि धिषणा	१२७२	मा पापस्वाय नो	३०८१	य उद्र फलिगं भिनन्त्यक्	२०४
महीरस्य प्रणीतयः	३०८; २०६२	मा भूम निष्टया इवेन्द्र	९९	य उशता मनसा सोममसौ	२८२६
महे चन त्वामद्रिवः	९१	मा भेम मा श्रमिणोप्रस्य	२३५	य ऋक्षादंहसो	१८१६
महे शुल्काय वरुणस्य	३१७७	मायाभिरिन्द्रमायिनं	७६	य ऋज्जा वातरंहसो	४४१
महो हुहो अप विश्वायु	१८८८	मायाभिरुत्सिसृप्तत	३६७	य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो	१५४
महोभिरेतां उप	३२५४	मारे अस्मद् वि मुमुचो	१३८०	य ऋते चिदभिप्रिषः	९८
महो महानि	१३०६	मा सख्युः शूनमा	४७८	य ऋतः श्रावयत्सखा	१८२८
महो यस्पतिः शवसो	२४६८	मा सोमवद्य आ भागुर्वी	६६८	य एक इच्छयावयति	१४९२
मह्यं त्वष्टा वज्रमत०	२५८१	मा स्नेधत सोमिनो	२२४३	य एक इत् तमु	२०७५
मह्या ते सख्यं वशिष	१२७३	मिहः पावकाः प्रतता	१२७९	य एक इद्धव्यश्रवणीना०	१९०७
मा कस्य नो अरुषो	३०८६	मुखं सदस्य शिर ऽ इत्	२९४६	य एक इद् विदयते	९४३
माकिर्न एना सख्या	२४८७	मुञ्चामि त्वा हविषा	३११३	य एकश्रवणीनां	३६
माकुड्यगिन्द्र शूर	२४७७	मुषाय सूर्य कवे	१०८२	य एको अस्ति	११३
मा चिदन्वद् वि शंसत	८७	मूढा अमित्राश्रता०	२८९४	य भोजिष्ठ इन्द्र तं सु	२०१६
मा षष्ठेय रश्मीरिति	३०२३	मूषो न शिखा व्यदन्ति	२५४०	यं युवं दाश्वध्वराय	३१६६
मा जस्वने वृषभ	२०४६	मृगो न भीमः कुचरो	२८४०	यं वर्धयंतीद्	२०४०
मा ते अमाजुरो यथा	४२३	मेहि न त्वा वज्रिणं	२९८३		

य विप्रा उक्थवाहसो०	३००	यज्ञे दिवो नृषदने	२२७८	यदाजिं यात्याजिकुदिन्द्रः	४४९
यं वृत्रेषु क्षितिय	२९८५	यज्ञेन गातुमन्तुरो	१२२१	यदा ते माहूतीर्विश०	३१६
य सुपर्णः परावत०	२८०१	यज्ञेनेन्द्रमवसा	१२९४	यदा ते विष्णुरोजसा	३१४
य सोममिन्द्र पृथिवी०	१४१३	यज्ञैरथर्वा प्रथमः	९३५	यदा ते हयंता हरी	३१५
यं स्मा पृच्छन्ति	११२६	यज्ञो हि त इन्द्र	१२९३	यदा वज्रं हिरण्यमिदधा	२४८३
यः कक्षिः सोमपातम	४४	यज्ञो हि मेन्द्रं	१०६६	यदा वृत्रं नदीवृतं	३१३
यः कृन्तदिद् वि	४७२	यत इन्द्र भयामहे	५६०	यदा समर्थं व्यचे०	१५८४
यः पुष्पिणीश्च	११४३	यत् तुदत् सूर	९७	यदा सूर्यमसु दिवि	३१७
यः पृथिवीं व्यथमानाम०	११२३	यत् ते दिक्षु प्रार्थ्यं	१७६२	यदि क्षितायुर्थदि	३११४
यः प्रथम कर्मकृत्याय	२८७२	यत् त्वा यामि दद्धि	२८४९	यदिन्द्र चित्र मेहना	१७६०
यः शक्रो मृक्षो अश्वयो	६१५	यत् पाञ्चजन्यया	५८४	यदिन्द्र ते चतस्रो	१७३७
यः शम्भस्तुविशम्भ	२०३७	यत्र ग्रावा पृथुबुध्न	६८८	यदिन्द्र दिवि पार्थे	१२९२
यः शम्बरं पर्वतेषु	११३२	यत्र देवां ऋघायतो	१६१३	यदिन्द्र नाहुषीव्रां	२०९६
यः शश्वतो मल्लोतो	११३१	यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या	६८९	यदिन्द्र पूर्वां अपराय	२१५७
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च	८२२	यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं	६९०	यदिन्द्र पृतनाजये	३१२
यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं	१९०	यत्र मन्थां विवक्षते	६९१	यदिन्द्र प्रागपागुदङ्	२२९; ६०१
यः संग्रामाज्ञयति	२८७३	यत्र शूरासस्तन्वो	२१०१	यदिन्द्र मल्लशस्त्राः	३८०
यः सप्तारश्मिर्बृषभ०	११३३	यत्रा नरः समयन्ते	३१८३	यदिन्द्र यावतस्त्र०	२२५२
यः सत्राहा विचर्षणि०	२०९२	यत्रोत बाधितेभ्य०	१६१२	यदिन्द्र राधो भस्ति	५३५
य सुन्वते पचते	११३६	यत्रोत मर्त्याय	१६१४	यदिन्द्र शासो भव्रतं	२९८२
यः सुन्वन्तमवति	११३५	यत् सानोः सानुमारुहद्	५९	यदिन्द्र सगैर् भवत०	२१०२
यः सुषव्यः सुदक्षिण	२१४	यत् सोम आ सुते	३०८८	यदिन्द्राग्नी अवमस्यां	३०१६
यः सुबिन्दमनर्शनि	१८१	यत् सोममिन्द्र	३०३	यदिन्द्राग्नी उदिता	३०१९
यं क्रन्दसी संयती	११२९	यथा कण्वे मघवन्	५०४	यदिन्द्राग्नी जना	३१०७
यच्चिद्धि ते अपि	४६१	यथा गौरो अपा कृतं	२३१	यदिन्द्राग्नी दिवि	३०१८
यच्चिद्धि त्वा जना	८९	यथा मनौ विवस्वति	५१५	यदिन्द्राग्नी परमस्यां	३०१७
यच्चिद्धि शश्वतामर्सान्द्र ६०७, १६५७		यथा मनौ सांवरणौ	५०५	यदिन्द्राग्नी मदधः	३०१४
यच्चिद्धि सत्य सोमपा	६९२	यथा वृक्षमशानि	२९०६	यदिन्द्राग्नी यदुषु	३०१५
यच्छक्रासि परावति	३३५; ९७९	यथा पूर्वैभ्यो जरितृभ्य १०८४; १०९०		यदिन्द्राहं यथा	३५४
यच्छुश्रूया इमं हवं	४६०	यथा प्रावो मघवन्	४९४	यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीना	७१८
यजध्वनं प्रियमेधा	१५२	यदङ्ग तविषीयस	२६८	यदिन्द्रो अनयद्रितो	३३३३
यजाम इक्षमसा	१२८८	यदचरस्तन्वा वावृधानो	२६०९	यदिक्षिन्द्र पृथिवी	७७०
यजामह इन्द्रं	२४८१	यदज्ञातेषु वृजनेवासां	२४९४	यदि प्रवृद्ध सत्यते	२९५
यजायथा अपूर्व्य	२३८८	यदद्य कक्ष वृत्रहन्नुदगा	२४३३	यदि मे रारणः सुत	१८५
यजायथास्तदहस्य	१४२०	यदद्य त्वा प्रयति	३१२०	यदि मे सख्यमावरं	३४१
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	३५८	यदन्तस परावत०	१३७२	यदि बाहमनृतदेवो	३२९१
यज्ञ यज्ञ गच्छ	३१२४	यद्वज्रं प्रथमं	३०१३	यदि स्तोमं मम	१०१
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा	३०९१	यद्वर्जुन सारमेय	२२७१	यदीं सुतास इन्द्रवो	४९७
यज्ञेभिर्जवाहसं	३०७	यदस्य धामनि प्रिये	३१९	यदीं सोमा बभूधता	१६९२
		यदस्य मन्थुरध्वनीद्	२५५	यदीदहं युषये संनया०	२४९२

यदीमिन्द्र अवाचयमिधं	१७५६	यस्त इन्द्र महीरपः	२५८	यस्य छावापृथिवी	८१९
यदी सुतेभिरिन्दुभिः	२०००	यस्ता चकार स	१९००	यस्य द्विबर्हसो	३७०
यदुदञ्चो वृषाकपे	२६६१	यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो	२१४०	यस्य मंदानो अन्धसो	२००५
यदुदीरत आजयो	२१८	यस्ते अनु स्वधामसत्	१४४४	यस्य वशास ऋषभास	२८७०
यदुष औष्ठः प्रथमा	२६१७	यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो	२९०१	यस्य विश्वानि हस्तयो	१०८७
यद् दधिषे प्रदिवि	२१८०	यस्ते चित्रश्रवस्तमो	२४१३	यस्य विश्वानि हस्तयोरुचु०	२०६७
यद् दधिषे मनस्यसि	४७३	यस्ते नूनं शतक्रत	२४१२	यस्य शश्वत् पपिवाँ	२७३९
यद् छाव इन्द्र ते	२३२५	यस्ते मदः पृतनाषाळमृध	१८७७	यस्य संस्थे न वृण्वते	१७
यद् नूनं परावति	५०१	यस्ते मदो युज्यश्चारुस्ति	२१७२	यस्याजस्त शवसा	९७०
यद् नूनं यद्वा यज्ञे	४९१	यस्ते मदो वरेण्यो	१८२४	यस्यानक्षा दुहिता	२५०१
यद् स्या त इन्द्र	१०९६	यस्ते रथो मनसो	२७३६	यस्यानासः सूर्यस्येव	९५८
यद् योधया महतो	२२८२	यस्ते रेवाँ अदाशुरिः	४५७	यस्यानूना गभीरा	३८५
यद्वाचो हिरण्यस्य	२९९५	यस्ते शृङ्गवृषो	४०६	यस्यामितानि वीर्याः	१८१०
यद्वा वृक्षौ मघवन्	२०९७	यस्ते साधिष्टोऽवस	१७३६	यस्यायं विश्व आयौ	५१३
यद्वा दक्षस्य विभ्युषो	१९१९	यस्ते साधिष्टोऽवसे	५३१	यस्यावधीत् पितरं	१७३०
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते	२४३४	यस्पतिर्वार्याणामसि	२४९०	यस्याश्वासः प्रदिशि	११२८
यद्वा प्रस्रवणे दिवो	६०२	यस्मा अन्ये दशप्रति	१७८	यस्येदमा रजो युज०	२८८७; २९९३
यद्वा मरुतः परमे	८२४	यस्मा अकं सप्तशीर्षाणमानुचु०	५०८	यौ आभजो	१३२०
यद्वा रुमे रुशमे	२३०	यस्मादिन्द्राद् बृहत	११७३	या इन्द्र प्रस्वस्वा	२६२
यद्वावन्ध पुरुष्टुत	६१७	यस्माज्ञ ऋते विजयन्ते	११३०	या इन्द्र भुज आभरः	९७६
यद्वावान पुरुतमं	२६३९	यस्माज्ञ जातः परो०	२९२८	या त ऊतिरमित्रहन्	२०७३
यद्वा शक्र परावति	३०४	यस्मिन्नुक्तानि रण्यन्ति	३८३	या त ऊतिरवमा	१९३८
यद्वासि रोचने दिवः	९८०	यस्मिन् वयं दधिमा	२५५१	या ते काकुत् सुकृता	१९२४
यद्वासि सुन्वतो वृधो	३०५	यस्मिन् विश्वा अधि	२४१६	यानावह उशतो देव	३१२२
यद्वाकाविन्द्र यत्	४८३	यस्मिन् विश्वाश्र्वर्षणय	१४८	यानीन्द्राग्नी चक्रधुर्वीर्याणि	३०१२
यद् वृत्रं तव आशानि	९१२	यस्मै त्व मघवर्जिद्र	५२२	या नु श्वेताववो	३१०८
यं ते इयेनः पदाभरत्	६८७	यस्मै त्वं वसो दानाय	५१०; ५२०	या पृतनासु दुष्टरा	३०४१
यं ते इयेनश्वा०	२८०२	यस्मै धायुरदधा	१२४४	याभ्यामजयन्स्व १२२	३१३२
यं ते स्वादावन्स्वदन्ति	४९९	यस्य गा अन्तरश्मनो	२००४	यामथर्वा मनुष्यिता	९१५
यं त्वं रथमिन्द्र	१०००	यस्य गावावरुषा	१९६१	यावती छावापृथिवी	२९७४
यज्ञ इन्द्रो जुजुषे	१५५५	यस्य जुष्टि सोमिनः	१८७१	यावत् तरस्तन्त्रो	३२३७
यं नु नकिः पृतनासु	१४२५	यस्य तीव्रसुतं	२००३	यावदिदं भुवन	३००२
यन्मन्वसे वरेण्यमिन्द्र	१७६१	यस्य ते नू चिदादिशं	२४४०	या वां सन्ति पुरुष्टुद्रो	३०६३, ३२२९
यमा चिदत्र	१३५७	यस्य ते महिना महः	२२९३	या वां शतं नियुतो	३२३९
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं	९७७	यस्य ते विश्वमानुषां	४८४	या विश्वासां जनितारा	३३०७
यमिमं त्वं वृषाकपिं	२६४३	यस्य ते स्वादु सख्यं	२३०१	या वीर्याणि प्रथमानि	२७५१
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः	१७६	यस्य त्वच्छम्बरं	२००२	या वृत्रहा परावति	४६७
यश्चैषिणो वृषभः	२८६९	यस्य त्वत् ते महिमानं	२७३८	यासां तिस्रः पञ्चाशतो	१०३७
यश्चिद्वि त्वा बहुभ्य	९४५	यस्य त्वमिन्द्र रथोमेधु	५१८	यामि कुत्सेन सरथ०	१४७७
यज्ञ इन्द्र मित्रो जनो	२१५८			युक्ते अस्तु वक्षिण	९२९

युक्ष्वा हि केशिना हरी	६०	येन ज्योतींष्यायवे	३७३	यो नो वनुष्यन्नाभिदाति	२९८४
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम	१७२	येन मानासश्चितयन्त	३२६७	यो भोजनं च दधसे	११४२
युजं हि मामकृथा	१६८९	येन वृद्धो न शवसा	२०३८	यो मा पाकेन मनसा २२८५; ३२८५	
युजा कर्माणि जनयन्	२६२१	येन सिन्धुं महीरपो	२९०	यो मायातुं यातुधाने० २२८६; ३२९३	
युजानो अश्वा वातस्य	२४६९	येन सूर्या सावित्री	२९००	यो रभस्य चोदिता	११२७
युजानो हरिता रथे	२११७	येना दशग्वमध्रिगुं	२८९	यो रथिबो रथिन्तमो	२०३६
युजे रथ गवेषण	२१८२	येना समुद्रमसृजो	१६५	यो राजा चर्षणीनां	२३२१
युज्जन्ति ब्रध्नमरुषं	२४	येनेमा विश्वा च्यवना	११२५	यो रायोऽवनिर्महान्	१३; १९२
युज्जन्ति हरी इषि	२३७२	ये पाकशंसं विहरन्त	३२८६	यो रोहितौ वाजिनौ	१७४९
युज्जन्त्यस्य काम्या	२५	ये पातयन्ते अजमभि०	१८३४	यो वाचा विवाचो	२४८५
युधा युधमुप घेदेषि	७८१	येभिः सूर्यमुषसं	१८४५	यो विश्वस्य जगत	८२१
युधेन्द्रो मङ्गा	१३०७	ये वायव इन्द्रमादनास	३२४२	यो विश्वान्यभि व्रता	२०७
युधं सन्तमनर्वाणं	२४०४	येवापास कष्कपास	२८८०	यो वृत्राय सिनमन्त्रा०	१२२८
युधमस्य ते वृषभस्य	१४०९	ये सोमासः परावति	२४३५	यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्वावन्तं	१३९
युधमो अनर्वा खज	२१५३	यो अक्षयौ परिसर्पति	२८७६	यो व्यंसं जाह्नवाणेन	८१८
युनजिमे ते ब्रह्मणा	९३०	यो अदधाज्ज्योतिषि	२६१३	यो व्यतीरफाणयत्	२३१५
युयोप नाभिरुपरस्यायोः	८५०	यो अप्सु चन्द्रमा इव	६८६	यो ह्रस्वाहिमरिणात्	११२४
युवं सुराममश्विना	२९६०	यो अर्यो मर्तभोजनं	९२१	रथ हिरण्यवन्धुर०	३२२३
युवं तमिद्रापर्वता	१०३३	यो अश्वानां यो गवां	८२०	रथिरासो हरयो	५०२
युवं प्रतनस्य साधथो	१३५३	यो अस्मै घ्नस उत	१७२९	रथेन पृथुपाजसा	३२२४
युवां हवन्त उभयास	३१८७	यो गृणतामिदासिथा०	२०७६	रथेष्टायाध्वर्यवः	२४१
युवाकु हि शचीनां	३१३७	योगेयोगे तवस्तरं	७०५	रपत् कविरिन्द्रार्कसाती	१०७५
युवां नरा पश्यमानास	३१८२	यो जात एव प्रथमो	११२२	राजैव हि जनिभिः	२१२०
युवामिन्द्रयवसे	३१५२	यो दध्नेभिर्हव्यो	२५४४	रायस्कामो वज्रहस्तं	२२३७
युवामिद्र युःसु	३१७५	यो दुष्टो विश्ववार	१८२५	राया वयं ससर्वांसो	३१६०
युवामिन्द्राभी वसुनो	३०२५	यो देवो देवतमो	१५५७	रारन्धि सवनेषु	१३७६
युवाभ्यां देवी	३०२४	योद्धासि ऋत्वा शवसोत	८९७	रासि श्रयं रासि	१११४
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति	३१९३	यो धृषितो योऽमृतो	२१५	रुद्राणामेति प्रदिशा	८२३
ये क्रिमयः शितिकक्षा	२८७८	यो न इदमिदं पुरा	४१७	रूपरूपं प्रतिरूपो	२११६
ये गव्यता मनसा	२८९९	यो न इन्द्राभितो	२७८१	रूपरूपं मघवा	१४६०
ये च पूर्व ऋषयो	२१७९	यो न इन्द्राभिदासति	२७८२	रेवतीर्नः सधमाद	७११
ये चाकनन्त चाकनन्त	१७०४	यो नः शश्वत् पुराविथा०	६६२	रेवो इद् रेवत	१२८
ये ते पन्थानोऽव	२९१२	यो नार्मरं सहवसुं	११४४	रोहिष्ठयावा	९७२
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः	२६०७	योनिष्ठ इन्द्र निषदे	८४७	रोहितं मे पाकस्यामा	१७७
ये ते वृषणो वृषभास	१०९२	योनिष्ठ इन्द्र सद्ने	२१८६	सृजं यश्चक्रे सुहनाय	२७२०
ये ते शुभं ये	१२८४	यो नो दाता वसूनामिन्द्रं	५०९	वज्रेण हि वृत्रहा	२७३०
ये ते सन्ति दशग्विनः	९५	यो नो दाता स नः	५१९	वधीं वृत्रं मरुत	३२५७
ये त्वामिन्द्र न	२५४	यो नो दास भार्यो वा	२५४३	वधीदिन्द्रो वरशिखस्य	१९५९
ये त्वाहिहव्ये मघवन्	१४१७	यो नो देवः परावतः	२९३	वधीर्हि वसुं धनिनं	७३३
		यो नो रसं दिप्तति	३२८७	वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति	१७५२

बनीवानो मम कृतास	२८४८	वस्या इन्द्रासि मे	९२	वि न इन्द्र मृधो जहि	२८१७
घने न वा यो न्यधाधि	२५१५	वह कुसमिन्द्र	१०७३	वि पिप्रोरहिमायस्य	१८९०
घनेम तद्धोत्रया	१००६	वहन्तु त्वा रथेष्ठामा	२२३	विभ्राजज्योतिषा	२३६६
घनोति हि सुन्वन्	१०४०	वाचमष्टापदीमहं	६३९	वि यद्देहेरध त्विषो	२४४३
घन्नीभिः पुत्रममुवो	१५३०	वाचस्पतिं विश्वकर्मा०	२९३१	वि यत् तिरो धरुणमच्युतं	८०९
वयं शूरेभिरस्तुभिः	४१	वाजस्य मा प्रसव	२९३६	वि यद् वरांसि पर्वतस्य	१५५१
वयं हित्वा बन्धुमन्तमबन्धवो	४१२	वाजेषु सासहिर्भव	१३३९	वि यो रराश ऋषिभिः	१५३७
वयः सुपर्णा उप सेदुः	२६३३	वातस्य युक्तान्सु०	१७०१	वि रक्षो वि मृधो	२८१६
वयं घ त्वा सुतावन्त	२१०	वामं वाम त आदुरे	१६२९	विवेष यन्मा धिषणा	१२९५
वयं घा ते अपिष्मसि	१८६	वायविन्द्रश्च चेतथ	३२११	विवक्ष्य महिना	२४१९
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र	६२३	वायविन्द्रश्च शुग्मिणा	३२२८	विशंविशं मघवा	२५६२
वयं घा ते त्वे हृद्विन्द्र	६२५	वायविन्द्रश्च सुन्वत	३२१२	विशं सत्यं मघवाना	३३५९
वयं जयेम स्वया	८३१	वार्णं त्वा यन्याभिः	२३७१	विश्वजिते धनजिते	१२१७
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम	५३८	वार्त्रहत्याय शवसे	१३३४	विश्वोमत् सवनं	८५
वयं त एभिः पुरुहूत	१८८३	वावृधान उप घात्रि	२८२	विश्वस्मात् सीमधमाँ	१६०२
वयं ते अस्य वृत्रहन्	१७९७	वावृधानः शवसा	२७६५	विश्वो अयो विपश्चितो	६०९
वयं ते अस्यामिन्द्र	१९५४	वावृधानस्य ते वयं	३५९	विश्वा पृतना अभिभूतरं	९८५
वयं ते त इन्द्र ये	१७२१, २२२१	वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो	६३०	विश्वा द्वेषांसि जहि	५२८
वयं ते वय इन्द्र	१२०८	वास्तोष्पते ध्रुवा	४०७	विश्वानरस्य वस्पति०	२२९४
वयमिन्द्र त्वे सचा	१६४८	वि क्रोशनासो विष्वक्त्र	२५०८	विश्वानि विश्वमनसो	१७९६
वयमिन्द्र त्वायवः	२७८३	वि चिद् वृत्रस्य दोधतो	२४८	विश्वानि शक्रो नर्याणि	१४७२
वयमिन्द्र त्वायवो	२२२६	वि जानीह्यार्यान् ये	७५२	विश्वामित्रा अरासत	१४६५
वयमु त्वा शतक्रनो	२४०८	वि तर्त्यन्ते मघवन्	९०	विश्वा रोधांसि	१५५८
वयमिन्द्र त्वायवो	१३७९	वि तिष्ठध्व मरुतो	३२९५	विश्वा हि मर्त्यस्वना	२४०९
वयमु त्वा तदिदधा	१३१	वि ते वज्रासो अस्थिरक्षवतिं	९०७	विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता	८३८, ९७५
वयमु त्वा दिवा सुते	५९४	वित्वक्षणः समृतौ	१७३२	विश्वे चनेदना त्वा	१६११
वयमु त्वा मपूर्यस्थूरं	४०९	वि त्वदापो न पर्वतस्य	१९३३	विश्वे त इन्द्र वीर्यं	५७२
वयमेनमिदा ह्यो	६१९	वि त्वा ततस्ते मिथुना	१०२३	विश्वेत् ता ते	९९६
वधो न वृक्षं सुपलाश०	२५६०	विद् यदी सरमा	१२६५	विश्वेत् ता विष्णुराभर	६४९
वरिष्ठे न इन्द्र	२१०७	विदुष्टे अस्य वीर्यस्य	१०२४	विश्वेदनु रोधना	११४६
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियतीन्द्रो	१९७६	विदुष्टे विश्वा भुवनानि	३१५७	विश्वे देवासो अध	२७५२
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं	२९५६	वि द्रुहानि चिद्विबो	२०६८	विश्वेषामिरज्यन्तं	१८३२
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	३४५	विद्या सखिस्वसुत	४१६	विश्वेषु हि त्वा	१०२२
वर्धोद् यं यज्ञ	१९८१	विद्या हि त्वा तुविकूर्मि	६७१	विश्वे ह्यस्मै यजताय	११७५
वर्धोन् यं विश्वे	१८५१	विद्या हि त्वा धनंजयं वाजेषु	१३८७	विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम	२५२३
ववक्ष इन्द्रो अमित०	१४७१	विद्या हि त्वा धनंजयमिन्द्र	४५५	वि पु विश्वा अभियुजो	४५०
ववक्षुरस्य केतव	२९४	विद्या हि त्वा वृषन्तमं	६७	वि पु विश्वा अरातयो	२७८०
ववक्षुतेभ्यो ववक्षुतेभ्यः	३१२६	विद्या हि यस्ते आद्रिव०	२४१४	वि पु चर स्वधा	१९८
वसुनां वा चर्कष	२६३४	विद्या ह्यस्य वीरस्य	१३६	विषूचो अश्वान्	३०५०
वसोरिन्द्रं वसुपतिं	५६	विधुं द्रवाणं ममने	२६१८		

वि पू मृधो जनुषा	१६८८	वेत्था हि निर्ऋतीनां	१८१३	शास इत्था महौ अस्य०	२८१४
विषूदिन्द्रो भमतेरुत	२५५२	वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं	२२१२; २२१७; २२२२	शासद् वाङ्मिद्विदुः	१२६०
विष्पधंसो नरां	१०६५	व्यन्तरिक्षमतिन्मदे	३६०	शिक्षा ण इन्द्र राय	२४०५
वि सद्यो विश्वा दंहिता०	२१३१	व्यन्तिवन्तु येषु	१११५	शिक्षेयमस्मै दिस्सेयं	३५५
वि सूर्यो मध्ये	२७९४	व्यथर्य इन्द्र तनुहि	२७६०	शिक्षेयमिन्महयते	२२५३
वि स्तुतयो यथा पथा	२९९१	व्यानलिन्द्रः पृतनाः	२५२२	शिभिन् वाजानां	६९३
वि हि त्वामिन्द्र	२७४१	शंसा महामिन्द्रं	१४२४	शुक्रस्याथ गवाशिर	३२२०
वि हि स्रोतोरसृक्षत	२६४०	शंसावाध्वर्यो प्रति	१४५५	शुचिं नु स्तोमं	३०७१
वि ह्यस्य मनसा	३०२१	शंसदुक्थं सुदानव	२२२४	शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः	१२४
वीन्द्र यासि दिव्यानि	२५३१	शग्धी न इन्द्र यत्	१६६	शुनं हुवेम मघवान० १२५९; १२८१;	
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्र	२७१२	शग्धी नो अस्य यद्ध	१६७	१२९८; १३११; १३२२; १३३३; १३५४;	
वीळु चिदारुजन्तुभि०	३२४५	शग्ध्युःषु शचीपत	५५२	१३६३; १३९८; १४२३; १४२८; १४३३;	
वीळी सतीरभि	१२६४	शचीव इन्द्र पुरुकृद्	७७७	२६७९; २७१३	
वृकश्चिदस्य वारण	६२०	शचीव इन्द्रमवसे	२६३८	शुभ्रं नु ते शुभ्रं	११०४
वृक्षेवृक्षे नियता	२५१२	शचीवतस्ते पुरुशाक	१९३१	शुष्णं पिप्पुं कुयवं	८४६
वृज्याम ते परि द्विषो	४५२	शतं वा यः शुचीनां	७००	शुष्मासो ये ते अद्रिवो	१७५७
वृत्रखादो वल्लरुजः	१४०५	शतं वा यस्य दश	११४५	शुष्मिन्तमं न ऊतये	१३४१
वृत्रस्य त्वा श्वसथा०	२३५१	शतं वा यदस्य	२७२४	शुष्मिन्तमो हि ते	१०८३
वृत्राण्यन्यः समिधेषु	३१९०	शतं वेणूळत शुनः	५४१	शूरो वा शूरं वनते	१९४१
वृत्रेण यदहिना	२७४७	शतं श्वेतास उक्षणी	५४०	शृणुतं जरितुर्हव०	३०८०
वृषणस्ते अभीशवो	२२०	शतक्रतुमर्णवं	१४३५	शृण्वे वीर उग्रमुग्रं	२११४
वृषभो न तिग्मशृङ्गो	२६५४	शतं जीव शरवो	३११६	शेवारे वार्या पुरु	१०८
वृषसिद्ध वृषपाणास	१०४१	शतेना नो अभिष्टि०	३२२१	शेषन् नु त इन्द्र	१०७२
वृषाकपायि रेवति	२६५२	शतं ते शिभिन्नूतयः	२१९४	अथद् वृत्रमुत	३०५६
वृषा प्रावा वृषा	३५२, १७६६	शतब्रह्म ह्युस्तव	६४६	इयावाश्वस्य रेभत०	१७८२
वृषा जजान वृषणं	२१५५	शतमश्मन्मयीनां	१६२५	इयावाश्वस्य सुन्वत०	१७७५
वृषा ते वज्र उत	११७७	शतं मे गर्दभानां	५४६	इयावाश्वस्य सुन्वतो	३०९८
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु	१७४८	शतानीका हेतयो	४९६	अत् ते दधामि प्रथमाय	२८०४
वृषा त्वा वृषणं हुवे	३५३; १७६७	शतानीकेव प्र	४८६	अवच्छृकर्णं ह्ययते	२२३९
वृषा न क्रुद्धः पतय०	२५६४	शतैरपद्रन् पणय	१८८७	आतं हविरो वित्रद्र	२८३७
वृषा मद इन्द्रे	१९२८	शत्रूयन्तो अभि ये	२६७६	आतं मन्य ऊधनि	२८३८
वृषायमाणोऽवृगीत	७१७	शनैश्चिद् यन्तो	४५३	आयन्त इव सूर्य	२३७८
वृषायमिन्द्र ते रथ	३५१	शवस्त ह्यसि श्रुतो	१७९१	आवयेदस्य कर्णा	१६०६
वृषा यूथेव वंसगः	३५	शविष्ठं न आ भर	१८७६	अथे ते पादा दुव	१९६४
वृषा वृषान्ध	१५५६	शशः क्षुरं प्रत्यङ्गं	२५२८	अथे ते पृभिरुपसेचनी	२७२३
वृषासि दिवो	२०५६	शश्वदिन्द्र पोप्रुधन्निर्जिगाय	७१४	श्रुतं वो वृत्रहन्तमं	२४४५
वृषा सोता सुनोतु	२२१	शश्वन्तो हि शन्नवो	२१३६	शुधी न इन्द्र ह्यवामसि	१९४७
वृषा ह्यमि राधसे	१७३९	शाकमना शाको अरुणः	२६१९	शुधी हवं विपिपान०	२१७४
वृष्णः कोश पवते	११७६	शाचिगो शाचिपूजनाऽयं	४०५	शुधी हवं तिरश्चया	२३३९
वृष्णे यत् ते वृषणो	१६९७			शुधी हवामिन्द्र	११०१; २८१३

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः	३१६१	स वेदुतासि वृत्रहन्	१६२७	सदिद्धि ते तुविजातस्य	१८५९
श्रित्यन्तो मा दक्षिणतः	२२६२	सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	५४	सद्येव प्राचो वि	११६४
स आ गमदिन्द्रो	१७४४	सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैः	१२५३	सद्यश्चिन्तु ते मघवन्	२१४८
स इत् तमोऽवयुनं	१८९९	सचन्त यदुषस	२७३१	सद्योजुवस्ते वाजा	६७८
स इत् सुदानुः स्ववाँ	३१६५	सचस्व नायमवसे	१९३७	सद्यो ह जातो	१४१९
स इद् दासं तुवीरवं	२६८५	सचायोदिन्द्रश्चकृष	२७१७	स द्रुहणे मनुष	२६८६
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते	८००	सचा सोमेषु पुरुहूत	६१८	स धारयत् पृथिवीं	८४०
स इन्दु रायः सुभृतस्य	२८०७	सं च स्वे जग्मुर्गिर	२०२१	सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्	२७३४
स इन्महाभि समिथानि	८०१	सं चोदय चित्रमवाङ्ग	५२	सध्रीमा यन्ति	११३८
स इषुहस्तैः स नि०	२६९४	स जातुभर्मा अद्धान	८४१	स न इन्द्रः शिवः	२४३२
स ईं पाहि य ऋजीषी	१८४२	स जातेभिर्वृत्रहा	१२७०	स न इन्द्र व्यताया २१६०, २१७०	२१७०
स ईं महीं धुनिमेतो०	११६६	स जामिभिर्यत्	९६७	स नः क्षुमन्तं सद्ने	२५४२
स ईं रृष्टो वनते	१८९२	सजोषा इन्द्र सगणो	१४१५	स नः पमिः पारयाति	३९२
सं यजनान् ऋतुभिः	१०३२	सतः सतः प्रतिमानं	१२६७	स नः शक्रश्चिदा	१९१
सं यजनौ सुधनौ	१७३४	स तुर्वणिर्महां अरेणु	८०७	स नः सोमेषु सोमपाः	९८१
सं यत् त इन्द्र मन्यवः	१६३५	स तु श्रुधि श्रुत्या	२०३५	स न स्तवान	१७९२
सं यद्वयं यवसादो	२४९९	स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य	१९०४	स नश्चित्राभिरद्विवो	१६४९
सं यन्मदाय शुष्मिण	७०१	सत्तो होता न ऋत्विग्य	१३७४	सनद्वाजं विप्रवीरं	२८४५
सं यन्मही मिथती	३०७५	सत्य तत् तुर्वशे	४६९	सना ता त इन्द्र भोजनानि	२१४५
सं वां कर्मणा समिषा	३३०६	सत्यं तदिन्द्रावस्त्रा	३२०४	सना ता त इन्द्र नव्या	१०७६
सं होत्रं स्म पुरा	२६४९	सत्यमित् तन्न	१९७१	सनात् सनीळा अवनीरवाता	८८१
सः स्तोम्यः स हव्यः	३८९	सत्यमिस्था वृषेदसि	२१९	सनादेव तव रायो	८८३
संक्रन्दनेनानिमिषेण	२६२३	सत्यमिद् वा उ तं वयमिन्द्रं	५७७	सनाद् दिवं परि	८७९
सखाय आ शिषामहि	१७९०	स त्वं न इन्द्र धियसानो	१७१८	सनामाना चिद् भवस्यो	२६२८
सखायः ऋतुमिच्छत	२३३३	स त्वं न इन्द्र वाजेभि०	३९३	सनायते गोतम	८८४
सखायस्त इद्र	२१६९	स त्वं न इन्द्र सूर्ये	८५२	सनायुवो नमसा०	८८२
सखायो ब्रह्मवाह से	२०६३	स त्वं न इन्द्राकवाभिरुती	२०१९	सनितः सुसनितरुप	१८३६
सखा सक्ये अपचत्	१६७३	स त्वं नश्चित्र	२०२१	सनिता विप्रो अर्वद्भिर्हन्ता	१५१
सखा ह यत्र सखिभि०	१३५९	स त्वामदद् वृषा	९०१	सनिर्मित्रस्य पप्रथ	२९९
सखीयतामविता	१५०५	सत्रा ते अनु कृष्टयो	१६१०	स नीव्याभिर्जैरितारमच्छा	२०१४
सखे विष्णो वितरं	९९९	सत्रा त्वं पुरुष्टुतं	३७९	सनेम तेऽवसा	१८९३
सक्ये त इन्द्र वाजिनो	७१	सत्रा मदासस्तव	२०३१	सनेम ये त	१११९
स गोमवा जरित्रे	२०२९	सत्रा यदां भार्वरस्य	१५५०	सनेमि सक्यं स्वपस्यमानः	८८०
स गोरश्वस्य वि व्रजं	१८४	सत्रासाहं वरेण्यं	१३०८	स नो ददातु तां रथि०	२८८९
स ग्रामेभिः सनिता	९६६	सत्रासाहो जनभक्षो	१२१९	स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुकथैः	१०२०
स घा तं वृषणं रथमभि	९२८	सत्रा सोमा अभवन्नस्य	१४९३	स नो नियुज्जिः पुरुहूत	१९१७
स घा नो योग आ	१६	सत्राहणं दाष्टिभि	१४९५	स नो नियुज्जिरा पृण	२०८०
स घा राजा सत्पतिः	७९२	सदस्य मदे सदस्य	१९५६	स नो बोधि पुराता	१९०६
स घा धीरो न रिष्यति	३३५७	सदा व इन्द्रश्चकृषदा	२९७६	स नो बोधि पुरोकाशं	१९२४

स नो युवेन्द्रो	१२१०	समिन्द्रेय गामनङ्वाह	३३५५	स वृत्रहेद्वश्रपणीष्टन्	२३६२
स नो वाजाय श्रवस	१८५४	समिन्द्रो गा अजयत्	१४९८	स वेतसुं दशमायं	१८९१
स नो वाजेष्वविता	१८२९	समिन्द्रो रायो	५२४	सव्यामनु स्फिग्यं	२३६
स नो विश्वान्या भर	२४५८	समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं	९८६	स ब्राधतः शवसाने०	२६८८
स नो वृषन्सनिष्ठया	२४११	समीं पणेरजति	१७३३	स शेवृधमधि धा	७९६
स नो वृषन्नमुं चरु	३३	समुद्रे अन्त शयत	९९८	स श्रुधि यः स्मा	१००१
सन्ति ह्यार्य आशिष	५३७	समुद्रेण सिन्धवो	१३२९	स सख्यसखन्	२०१०
स पश्यत उभयोर्नुमणमयोर्यदी	१९४३	समोहे वा य आशत	४३	ससन्तु त्या अरातयो	६९५
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः	७६१	संपश्यमाना अमदक्षमि	१२६९	स सर्गेण शवसा तक्तो	२०१५
स पित्र्याण्यायुधानि	२४६४	सं भातुना यतते	१७५०	स सव्येन यमति	९६५
स पूषो महानां वेनः	५७८	सं भूम्या अन्ताध्वसिरा	३१८४	ससानायां उत	१३०९
सप्त वीरासो अधरादुदाय	२५०५	सं मा तपन्त्यभित.	२५३९	स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु	३२००
ससापो देवीः सुरणा	२७१०	सम्राळन्य स्वराळन्य	३१७३	स सुक्रन् रणिता	२३६१
ससी चिद् वा मदच्युता	२२७	स यङ्गयोऽऽवनीर्गोष्वर्वा	२६८३	स सुन्वत इन्द्रः	१२०३
स प्रत्यथा कविवृध	५८१	स युध्मः सत्वा खजकृत्	१८५७	स सुष्टुभा स स्तुभा	८७५
स प्रथमे व्योमनि	३२२	स यो न मुहे	१८६३	स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋग्वा	९६१
स प्रथमो बृहस्पति०	२९२५	स यो वृषा वृष्ण्येभिः	९५७	स सूर्यः पर्युक्	२६६४
स प्रबोळहृन्	११६५	स रथेन रथीतमो	२०७४	स सोम भामिश्रुनमः	१९६५
स प्राचीनान्	११८५	स रन्धयत् सदिवः	१२०४	सस्तु माता सस्तु पिता	२२७४
स भूत यो ह प्रथमाय	११८२	सरस्वति त्वमस्माँ	१२३३	सस्थावाना यवयसि	१७७९
स मज्जना जनिम	१८६२	सरस्वती मनसा	२९४१	सहदानुं पुरुहूत	१२४५
समत्र गावोऽभितो०	१६९१	सरस्वती योन्यां	२९५२	स ह श्रुत इन्द्रो	१२१३
समस्तु त्वा शूर	१०६२	स राजसि पुरुष्टुत	३७१	सहस्रज इन्द्र	२९९६
समना तूर्णिरुप यासि	२६२६	स रायस्त्वामुप	२०३४	सहस्रं व्यतीनां	१६६१
समनेव वपुष्यतः	५७४	स रुद्रेभिरशस्तवार	२६८४	सहस्रं साकमर्चत	९०८
स मन्दस्वा ह्यनु	१९२५	सरूपैरा सु नो गहि	४३६	सहस्रं त इन्द्रोतयो	१०४२
स मन्दस्वा ह्यन्धसो	१३७८; २०८६	सरूपौ द्वौ विरूपौ	२८७७	सहस्रवाजमभिमातिषाहं	२७०९
स मन्युं मर्याना०	६५६	सर्वं परिक्रोशं जहि	६९८	सहस्रशृङ्गो वृषभो	२२७६
स मन्युमीः समदनस्य	९६२	सर्वेषां च क्रिमीणां	२८८६	सहस्रसामाग्निवाशि	१७३५
समस्य मन्यवे विशो	२४६	सं वज्रभृद् दस्युहा	९६८	सहस्राक्षेण शतस्तरदेन	३११५
स मातरा सूर्येणा	२०१२	स वङ्किभिर्ऋक्वभिर्गोषु	२०१३	सहस्रा ते शता	१६६२
समानमस्मा अनपा०	२६६५	स वाजं यातापदुष्पदा	२६८२	सहस्रेणैव सचते	२३४
स माहिन इन्द्रो	१२०१	स वावशान इह	१४४१	सहस्रे पृषतीनामधि	६११
समित् तान् वृत्रहाखिदत्	६४२	सविता वरुणो	२९५५	सहावा पृष्टु	१४२६
समिद्धाभिर्वनवत्	१७५१	स विद्धां अङ्गिरोभ्य	५८०	स हि धीभिर्हव्यो	१८६१
समिद्धे अग्नौ	१९९०	स विद्धां अपगोहं	११६८	स हि शुता विष्टुता	२६८१
समिद्धेष्वग्निष्वाजाना	३०११	स वीरो अप्रतिष्कृत	२२४०	स हि द्वरो द्वरिषु	७६२
समिन्द्र गर्दभं मृण	६९६	स वृत्रहस्ये हव्यः	१५७८	स हि विश्वानि पार्थिवौ	२०७९
समिन्द्र नो मनसा	३१२१	स वृत्रहेंद्र ऋभुक्षाः	२३६३	स हि श्रवस्यु सदनानि	८०२
समिन्द्र राया समिषा	७७९	स वृत्रहेंद्रः कृष्णयोनीः	१२१४	साकं जातः क्रतुना	१२२५

सा ते जीवातुरुह	२५१४	सेमं नः स्तोममा	८२	स्वयुरिन्द्र स्वराळसि	१४०८
सा विश्वायुः सा	२९१८	सेहान उग्र पृतना	१७७७	स्वरन्ति त्वा सुते नरो.	२११
सास्मा अर प्रथमं	११९१	सो अग्र एना नमसा	३०७७	स्वर्जित महि	२८३०
सास्मा अरं बाहुभ्यां	११८६	सो अङ्गिरसामुचथा	१२१२	स्वर्जेषे भर	१०२९
सिन्धूरिव प्रवण	२१०३	सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो	९६०	स्वार्थं वेदि सुहृदीक०	१४७०
सीदन्तस्ते वयो यथा	४१३	सो अप्रतीनि	१२०२	स्ववृज हि त्वामह०	२५४५
सीसेन तन्त्र मनसा	२९३८	सो अभ्रियो न यवस	२६८७	स्वस्तये वाजिभिश्च	१२५५
सुगा वो देवाः सदना	३१२३	सो अर्णवो न नद्यः	७९८	स्वास्तिश विशस्पाति	२८१५
सुत इत् त्वं निमिश्र	१९१८	सो चिन्नु वृष्टिर्यथा	२४८४	स्वादवः सोमा आ	१४३
सुत सोमो असुतादिन्द्र	१९९६	सो चिन्नु सख्या	२६०२	स्वादुष्टे अम्नु संसुदं	३९९
सुतपात्रे सुता इमे	१८	सोता हि सोममद्रिभि०	१०३	स्वादोरित्या विप्रवतो	९४६
सुता इन्द्राय वायवे	३२३२	सोदञ्च सिन्धुमरि०	११६७	स्वायुध स्ववम	२८४३
सुतावन्तस्त्वा	६०६	सोम इद्रः सुतो अस्तु	६२७	हंसा इव कृणुय	१४६२
सुतेसुते न्योकसे	५७	सोममन्य उपासदत	३३३१	हत वृत्र मुदानव	३२४९
सुदेवा स्थ काण्वायना	५४२	सोममिन्द्राबृहस्पती	३३२०	हतागो अस्य वेशसो	२८८५
सुनीथो घा स मर्यो	१८२०	स्तवा नु त इन्द्र	११०६	हतो यवापः क्रिमीणां	२८८१
सुनीता सोमपात्रे	२२४२	स्तीर्णं ते बहिः	१३१८	हतो राजा क्रिमीणा०	२८८४
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्त्रं	३३३८	स्तुत इन्द्रो मघवा	१५०६	हतो वृत्राण्यार्या	३०६१
सुप्रवाचनं तव	११४७	स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	१४४	हन्ता वृत्र दक्षिणेनेन्द्र.	१४७
सुप्राव्य प्राशुषाळेप	१५९३	स्तुतासो नो मरुतो	३२६५	हन्ता वृत्रमिन्द्र.	२१५२
सुप्रभाणं देववन्त	२८४४	स्तुषेयं पुरुवर्ष०	२७६२	हन्ताहं पृथिवीमिमां	२८५८
सुरावन्तं बर्हिषदं	२९३७	स्तुहि श्रुत विपश्चितं	३३०	हन्तो नु किमाससे	६६५
सुरूपकृन्नुमृतये	४	स्तुदीन्द्रं व्यश्वव०	१८११	हरित्वाता वर्चसा	२७३७
सुविज्ञानं चिकितुषे	३२८९	स्तेनं राय सारमेय	२२७२	हरी त इद्र इमश्रु०	२९९४
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र	६४	स्तोता यत् ते अनुव्रत	३३२	हरी नु क रथ	११९२
सुवीरस्ते जनिता	१४९१	स्तोता यत् ते विचर्षणि०	३२६	हरी नु त इद्र वाजयन्ता	११०७
सुवीर्यं स्वशयं	३२०	स्तोमं त इद्र	२४८६	हरी न्वस्य या वने	२४८२
सुहामा रथ सुयमा	२५६९	स्तोमासस्त्वा गौरिबीते	१६७७	हरी यस्य सुयुजा	२७१५
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि	२८०९	स्तोत्रं राधानां पते	७०३	हर्यन्नुषममर्चयः	१४००
सुसंहसं त्वा वयं	९२७	स्तोत्रमिन्द्राय गायत	४६३	हर्यश्वं सस्पतिं चर्षणीमह	४१८
सूर उपाके तन्वं१	१४८०	स्थियो हि दास आयुधानि	१६९०	हव एषामसुरो	२६३५
सूरश्चक्रं प्र बृहजात	१०१९	स्थिरं मनश्चकृषे	१६८५	हवं त इद्र महिमा	२००९
सूरश्चिद् रथं	१७०२	स्थूरस्य रायो बृहतो	१५४७	हवन्त उ त्वा हव्यं	२२१२
सूर्यस्तेव वक्षथो	२२६९	स्पर्धन्ते वा उ	३१९८	हवे त्वा सूर उदिते	३३३
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा	२०२	स्मपुरन्धिर्न आ	४३०	हसु पीतासो युध्यन्ते	१२७
सृजः सिन्धूरहिना	२७३३	स्याम ते त इद्र	१११३	हदं न हि त्वा	७६६
सृजो महीरिन्द्र	११०२	स्वमेनाभ्युप्या तुमुनि	११७०	हदा इव कुक्षय	१३३०
सेमं नः काममा पृण	८६	स्वयं चित् स मन्यते	२४०	ह्यामसि त्वेन्द्र	१९९७

दैवत-संहितान्तर्गत-इन्द्रदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंहरणा [भूमिः] ६, ४७, २०, ३३२७
अकल्पः १, १०२, ६; ८३३
अकवारिः ३, ४७, ५, १४१८ । ६, १९, ११; १८८१
अकामकर्शनः १, ५४, २, ७७६
अक्षिता [त] वसुः ८, ४९ ६; ४९०
अक्षितोतिः १, ५, ९, २२१४, १७, १६, १५०३। ६, २४, १; १९२८
अगोरुधः ८, २४, २०, १८०९
अगोह्यः ८, ९८, ४, २३६७
अगो अरिः ८, २, १४; १२२
अग्नि ५, ३४, ९, १७३५
अघ्नन् ७, २०, ८, २१५८
अङ्गिरस्तमः १, १३०, ३; १०१३
अङ्गिरस्तमः अङ्गिरोभिः १, १००, ४; ९६०
अङ्गिरस्तां उचथा जुजुष्वान् २, २०, ५, १२१२
अङ्गिरस्त्वान् २, ११, २०; ११२० । ६, १७, ६, १८४६
अङ्गिरोभिः गृणान् ४, १६, ८, १४७४
अच्युतः १०, १११, ३, २७२७
अच्युतच्युत् २, १२, ९; ११३० । ६, १८, ५; १८६०
अच्युतानि व्यावयन् ३, ३०, ४; १२४१
अच्युतानां च्यवनः ८, ९६, ४; २३४८
अजरः ३, ३२ ७, १२८८। ६, १९, २, १८७२। २१ १; १८९७।
२२, ३, १९०९ । ३८, ३, १९८० । ८, ६, ३५; २७७। ९९, ७;
२३८२ । १०, ५०, ५; २६०५ । [वरुणः] ६, ६८, ९; ३१६९
अजानशत्रु ५, ३४, १, १७२७ । ८, २३, १५; १४४४
अजुरः ८, १, २; ८८
अजुर्यः २, १६, १; ११७२। ६, १७, १३; १८५३ । २२, ९; १९१५।
३०, १; १९६८ । ८, १३, २३, ३४३
अजूर्यत् ३, ४६, १; १४०९
अतसाद्यः २, १९, ४; १२०२
अतिनेनीयमान अन्यं अन्यम् ६, ४७, १६; २११४
अतिपान्तम् (द्विती०) वैशन्तम् ७, ३३, २; २२६३
अतूर्त ८, ५, ७; २३८७
अत्कं वसानः ४, १८, ५; १५१३ । ६, २९, ३; १९६४

अदकधः ८, ७८, ६; ६५६
अदथा (यौ) [इन्द्राग्नी] ५, ८६, ५; ३०४४
अदयः १०, १०३, ७, २६९७
अदाभ्यः ७, १०४, २०; २२८८ । ८, ६१, १२; ५५९ । अथर्व०
८, ४, २०, ३२९७
अदृष्टहा । अथर्व० ५, २३, ६; २८७९
अद्भुतः ८, १३, १९; ३३९ । १०, १५२, १; २८१४
अद्विः ४, २१, ६; १५४२। ५, ३८, ३; १७५७। १, १०९, ३, ३०२३
अद्विवत् १, १०, ७, ६४ । ११, ५, ७४ । ८०, ७, ९०६। ८०,
१४; ९१३ । १२२, १०, १०, १००९, १००९ । १३३, २, ६, ६;
१०३५, १०३९-३९। ३, ३७, ११; १३४४। ४१, १; १३७३ ।
४, ३२, ५; १६४९ । ५, ३५, ५; १७४० । ३६, ३; १७४६ ।
३९, १, ३; १७६०, १७६२। ६, ४५, ९, २०६८। ४६, २, २०९१।
७, २०, ८; २१५८ । ८, १, ५, १३; ९१, ९९ । २, ४०, १५५ ।
६, २२, २६४। १२, ४; २९१ । १३, २६, ३४६ । १५, ४; ३७२ ।
२१, ७, ४१५ । २४, ६, ११, १७९५, १८०० । ३६, ६; १७७४ ।
४५, ११, ४५३। ४६, २, ११, १८१८, १८२७। ५०, १०, ५०४ ।
६१, ४, ५५१ । ६२, ११, ५७६ । ६४, १, ५८९ । ६८, ११;
२३०१ । ७६, ८, ६३५ । २२, १८, २४१४ । २७, २४२३ ।
९७, ९; ९८४ । ९८, ८, २३७१ । १०, १४७, १; २८०४
अद्रोघः ३, ३२, ९; १२९०
अद्रोघवाक् ६, २२, २; १९०८
अधिराजः । अथर्व० ६, ९८, १-२, २९०२-३
अधिवक्ता १, १००, १९; ९७५। १०२, ११, ८३८। ८, ९६, २०;
२३६२
अध्वः ८, ६१, ३; ५५० । ७०, ३; २३२३
अध्विगुः १, ६१, १; ८५६ । ६, ४५, २०; २०७९ । ८, ७०, १;
२३२१ । ९३, ११; २४४०
अध्वरः ८, ६३, ६; ५८३
अनपच्युतः ८, ९२, ८; २४०४ । ९३, ९; २४३८
अनर्वा ४, १७, २०, १५०७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, ९२, ८;
२४०४ । १०, ९९, ३, २६८२
अनर्वातिः ८, ९९, ४; २३७९

अनवद्यः १, १२९, १, १, १०००, १०००। १०, १४७, २, २८०५
 अनाधृष्यः ४, १८, १०, १५१८
 अनानतः ६, ४५, ९; २०६८। ८, ६४, ७, ५९५। ९०, ४;
 २३९४। १०, ७४, ५; २६३८
 अनानुदः २, २१, ४; १२२०। १०, ३८, ५, २५४५
 अनानुदिष्ट (महाद्विषः हन्ति) १०, १६०, ४, २८२७
 अनापिः जनुषा ८, २१, १३. ४२१
 अनामृणः १, ३३, १. ७३०
 अनाभयिन् (यी) ८, २, १. ११६
 अनिमृष्टः १०, ११६, ६. २७६०
 अनिमानः ६, २२, ७, १९१३
 अनिमिषः १०, १०३, १, २, २६९२-९३
 अनिष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३
 अनिष्टु (नि स्तुतः) ८, ३३, ९; २१८
 अनुत्तमन्युः ७, ३१, १२, २२३४। ८, ६, ३५, २७७
 अनुत्तमन्युः सुतेषु ८, ९६, १९ २३६१
 अनुमाद्यः ६, ३४, २, २०२२
 अनुस्पष्टः (अस्य य सोम सुनोति) १०, १६०, ४, २८२७
 अनूनः ६, १७, ४; १८४४
 अनूराधः। अथर्व० १९, १५, २. २९१५
 अनूर्मिः ८, २४, २२ १८११
 अनुतुषाः ३, ५३, ८, १४६०
 अनेद्य ८, ३७, १-६, १७७६-८१
 अन्तमः ६, ४६, १०; २०९९। ८, १३, ३ ३२३
 अन्तमः आपिः ८, ४५, १८, ४६०
 अन्तरा भरः ८, ३२, १२, १९१
 अन्तरिक्षमाः १, ५२, २; ७४६
 अपज्जगुराणः ५, २९, ४, १६७०
 अपबाधमान. अमित्रान् [वृहस्पतिः] य० १७, ३६, २९३२
 अपराजित १ ११, २ ७१। १०, ४८, ११; २५८९। [इन्द्राग्नी]
 ३, १२, ४, ३०३३। ८, ३८, २. ३०९२
 अपरीतः ५, २९, १४, १६८०
 अपः रिषत्-न् ८, ३२, २; १८१
 अपर्षता गोनाम् ४, २०, ८, १५४०
 अपासि कर्ता ८, ९६, १९; २३६१
 अपां जग्मि ८, ९३, २२, २४५१
 अपामजः ३ ४५, २, १४०५
 अपार. ४, १७, ८, १४९५। ८, ६, २६. २६८
 अपू(पु)रुषस्य १, १३३, ६. १०३९
 अपूर्वः ८, २१, १. ४०९। ६६, ११; ६२३। ८९, ५; २३८८

अप्सुर. ३, ५१, ३. १४३६
 अप्रति. ५, ३२, ३, १७०७
 अप्रतिघृष्टशवाः १, ८४, २, ९३८
 अप्रतिष्कुन १, ७, ६, ८. ३३ ३५। ८४, ७ ९४३। १३ ९४९।
 ८, ९७, १३, ९८८
 अप्रतीतः १, ३३, २ ७३१। १३३, ६ १०३९। ५, ३२, ९
 १७१३। ६, २०, ९, १८९२। १०, १०४, ७; २७०९।
 १११, ३; २७२७
 अप्रतीतः विश्वनः ३, ४६, ३, १४११
 अप्रमङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 अप्रहा-ह-न् ६, ४४, ४; २०३९
 अप्रहित ८, ९९, ७, २३८२
 अप्रामिसत्यः ८, ६१, ४, ५५१
 अप्सुजित् ८, १३, २, ३२२। ३६, १ ६, १७६६ ७४
 अबधिरः ८, ४५, १७. ४५९
 अबिभीवान् १, ६, ७, ३२४६
 अबिजत् २, २१, १. १२१७
 अभयंकर ८, १, २, ८८। १०, १५२, २; २८१५
 अभिख्याता ४, १७, १७, १५०४
 अभिगाहमान गोत्राणि सहसा १०, १०३, ७; २६९७
 अभिभङ्गः २, २१, २, १२१८
 अभिभू २, २१, २, १२१८। ८, ९७, ९. ९८४। ९८, २,
 २३६५। १०, १५३, ५; २८२३
 अभिभू विश्वम् ८, ९९, ६, २३८९.
 अभिभूतरः ८, ९७, १०; ९८५
 अभिभूतिः ६, १९, ६, १८७६। ८, १६, ८, ३८९। १०,
 १३१, १; २७७३
 अभिभूतिः जनानाम्। अथर्व० ६, ९८, २; २९०३
 अभिभूयोजाः ३, ३४, ६, १३०६। ४८, ४; १४२२। ६,
 १८, १; १८५६
 अभिभूयसः ८, १७, १५; ४०८
 अभिमातिषा-स-हः १०, ४७, ३, २८४४। १०, ४, ७;
 २७०९
 अभिमातिहन्-हा ३, ५१, ३; १४३६
 अभिवीर १०, १०३, ५; २६९५
 अभिषा-सा-चः ३, ५१, २, १४३५
 अभिष्टिः पृथनाः ३, ३४, ४; १३०४
 अभिष्टिः महान् १, ९, १; ४८
 अभिष्टिकृत् ४, २०, १; १५३३
 अभिष्टिषाः २, २०, २; १२०९

अभिसन्धः १०, १०३, ५, २६९५
 अभीष्टः ४, २९, २, १६०५
 अभीष्टः ८, ४६, ६, १८२२
 अभ्यासः ८, २१, १३; ४२१
 अभ्यस १, ६१, ९, ८६४
 अभ्यसः वृजने ३, ३६, ४, १३२६
 अभ्यसिन् (त्री) ६, २४, ९, १९३६
 अभ्यस्यः १, १२९, १०, १००९। १७५, २, १०८०। ३, ५१, १;
 १४३४
 अभितक्रुः १, १०२, ६, ८३३
 अभितोजाः १, ११४, ७३
 अभित्रखाद १०, १५०, १; २८१४
 अभित्रहन् (हा) ६, ४५, १४; २०७३। १०, २२, ८; २४७३।
 १३४, ३, २७८७
 अभिनः १०, ११६, १४, २७५८
 अभिनः सहोभि ६, १९, १; १८७१
 अभ्यक्तः सनात् ८, २, ३१, १४६
 अभ्युतः ५, ३१, १३, १७०४। ६, २१, १; १९०५। ७, २०, ७;
 २१५७
 अभ्युधः ८, ८०, २; ६६२
 अभ्यामन् ८, ५२, ५; ५१२
 अभ्यास्यः १, ६२, ७, ८७८। ८, ६२, २; ५६७
 अभ्युजः ८, ६२, २; ५६७
 अभ्युद्धसेनः १०, १३८, ५, २७९६
 अभ्युध्य १०, १०३, ७; २६९७
 अभ्योपाष्टिः १०, ०९, ८, २६८७
 अरक्त ८, १, ११ ९६
 अरक्तुतः १०, ११९, १३, २८६२
 अरगमः ६, ४२, १, १९९८। ८, ४६, १७; १८३३
 अरधः ६, १८, ४, १८५९
 अरि भगोः ८, १२, १४; १२९
 अरिषण्यन् दृढस्य चिन् १, ६३, ५; ८८९
 अरिष्टः ५, ३१, १; १६९३
 अरिष्ट-स्तु-तः ८, १, २२, १०८
 अरीढः ४, १८, १०, १५१८
 अरुणः १, १३०, ९, १०१९
 अरुतहनुः १०, १०५, ७, २७२०
 अरुहाहा १०, ११६, ४, २७५८
 अरुषः १, ६, १; २४। १०, ४३, ९; २५६५
 अरुषमौ [इन्द्रवायू] ५, ५१, ६; ३२३१
 अर्क १, १०, १; ५८

अर्चय ६, २४, १; १९२८
 अर्णवः ३, ५१, २, १४३५
 अर्भक [इन्द्राभ्यो] ४, ३२, २३; ३३४८
 अर्थ १, ३३, ३; ७३२। ८१, ९; ९२४। ३, ४३, २, १३९२।
 ४, १६, १७; १४८३। २४, ८, १५८४। २९, १, १६०४।
 ७, ३१, ५, २२२७। ८, २, २३, १३८। ३४, १०; ४३४।
 ५४, ७; ५३७। ६३, ७; ५८४। ६५, ९; ६०९। १०, ८९,
 ३, २६६५। ११६, ६; २७६०। १४८, ३; २८११
 अर्चन्-र्वा १०, २९, ४; २६८३
 अर्वाञ्च-र्वाक् ८, ४, १४, २४२। ६, ४५, २८७ ३२, ३०; २०९
 अर्वाचीन ४, २४, १; १५७७। ७, २९, २; २२१४। १०,
 ११६, २; २७५६
 अर्हस्विनि-एवणि १, ५६, ४; ८०८
 अर्हन्ता-(न्तो) [इन्द्राभ्यो] ५, ८६, ५; ३०४४
 अर्कक्षिन्-क्षी ८, १, २; ८८
 अवत्-न् ३, ४६, ४, १४१२
 अवधून्वानः अनानुभूतीः ६, ४७, १७; २११५
 अवनि रायः १, ४, १०; १३। ८, ३२, १३; १९२
 अवयातहेळाः [मरुत] १, १७१, ६, ३२६८
 अवयाता दुर्मतीनां सदमित् १, १२९, ११; १०१०
 अवस्युः ४, १६, ११; १४७७
 अवहन्ता दुष्प्राव्यः अवाच्यः ४, २५, ६; १५९३
 अवात ६, १८, १; १८५६
 अवार्थक्रु ८, ९२, ८, २४०४
 अविता १, १२९, २०; १००९। ६, ३३, ४, २०१९। ३४, ५,
 २०२५। ४७, ११ २१०९। ७, ३२, ११, २२४५। ३२, २५;
 २२५९। ८, १३, १५, २६; ३३५, ३४६। २१, २, ४१०
 अविता एकस्य द्वयो ६, ४५, ५, २०६४
 अविता कारुधायोः ६, ४४, १५; २०५०
 अविता जरितृणाम् ४, ३१, ३; १६३२
 अविता नृणाम् ७, १९, १०, २१४९
 अविता रथानाम् [वृद्धस्पतिः] य० १७, ३६; २९३२
 अविता वामदेवस्य धीनाम् ४, १६, १८, २०, १४८४, १४८६
 अविता वाजेषु ८, ४६, १३, १८२९
 अविता विधन्तम् ८, २, ३६; १५१
 अविता सखीयताम् ४, १७, १८; १५०५
 अविता सुन्वत वृक्तवर्हिषः ८, ३६, १; १७६९
 अविता स्तोतृणाम् १०, २४, ३; २४९०
 अविदीधयुः ४, ३१, ७, १६३६
 अविहर्षतक्रुः १, ६३, २ ८८६

अवृकः ४, १६, १८, १४८४
 अवृकतमः विश्वघ १, १७४, १०; १०७८
 अवृतः ८, ३२, १८; १९७ । ३३, ६, १०, २१५, २१९
 अशत्रुः १, १०२, ८, ८३५ । ८, ९२, ४; ६८२ । १०, १३३, २;
 २७७९
 अशस्तवारः १०, ९९, ५, २६८४
 अशस्तिहा ८, ८९, २; २३८५ । ९९, ५, २३८० । १०, ५५, ८;
 २६२१
 अश्मानं बिभ्रत् ४, २२, १, १५५५
 अश्वजित् २, २१, १; १२१७
 अश्वपतिः ८, २१, ३; ४११
 अश्वयु १, ५१, १४, ७५८
 अश्वसातमः १, १७५, ५; १०८३
 अश्वः भव अश्वयते ६, ४५, २६; २०८५
 अश्वानां जनिता ८, ३६, ५; १७७३
 अश्वानां पति १, १०१, ४ ८२०
 अश्ववान् १०, ४७, ५, २८४६
 अश्व्यः ८, ६६, ३; ६१५
 अषाढः २, २१, २, १२१८ । ६, १८, १, १८५६ । ७, २०, ३,
 २१५३ । २८, २, २२०९ । ८, ३२, २; २०६। ७०, ४, २३२४ ।
 १०, ४८, ११; २५८२
 असमः ६, ३६, ४; २०३४ । ८, ६२, २, ५६७
 असमष्ट काव्यः २, २१, ४; १२२०
 असमाख्योजाः ६, २९, ६; १९६७
 असुतानाम् ईशिषे ८, ६४ ३, ५९१
 असुन्वतः विषुगः ५, ३४, ६, १७३२
 असुरः १, ५५, ३, ७८८ । १७४, १, १०६९ । ३, ३८, ४; १३४८ ।
 ८, ९०, ६; २३९६ । १०, ९९, १२; २६२१
 असुरहा ६, २२, ४, १९१०
 असुर्यः ४, १६, २; १४६८ । ७, २२, ५; २१७५ । १०, १०५, ११,
 २७२४
 अस्कृधायु ६, २२, ३; १९०९
 अस्तु [-स्ता] ८, २३, १; २४३० । १०, १०३, ३, २६२४
 अस्ता अद्रिम् १, ६१, ७; ८६२
 अस्तृत १, ४, ४, ७८, ९३, ९, १५, २४३८, २४४४ । १०, ४८,
 ११; २५८९
 अस्त्रा ८, ६३, ४; ५८१
 अस्त्रयुः १, १३१ ७, १०२७, ३, ४१, ७; १३७९ । [इन्द्रवायू]
 १ १३५, ५; ३२१६
 अस्त्रिधा [इन्द्राश्चौ] ४, ३२, २४; ३३४९
 अहसनः ८ ६१, ९; ५५६

अहिहन् [हा] २, १९, ३; १२०१ । ३०, १; १२२७
 अहिलमानः ६, ४१, १; १९९३
 अह्मगान १०, ११६, ७, २७६१
 अहयः ८, ७०, १३; २३३३
 आकरः वस्त्र. ५, ३४, ४, १७३०
 आकरः सहात्रा ८, ३३, ५, २१४
 आकायः ४, २९, ५; १६०८
 आखंडलः ८, १७, १२, ४०५
 आजिकृत् ८, ४५, ७, ४४९
 आजितुरः ८, ५३, ६, ५३०
 आजिपतिः ८, ५४, ६, ५३६
 आज्ञाता १०, ५४, ५; २६१२
 आतपः चर्षणीनाम् १, ५६, १, ७९७
 आदारिन्-री ८, ४५, १३, ४५५
 आदित्यः [वरुणः] ७, ८४, ४; ३१९५ । ७, ८५, ४; ३२००
 आदुहिः ४, ३०, २४; १६२९
 आनजाना (नौ) [इन्द्राभौ] १, १०८, ४, ३०११
 आपान्तमन्युः [सोमः] १०, ८९, ५, ३२७६
 आपिः ३, ५१, ६; १४३९ । ५१, ९, १४४२ । ४, १७, १७,
 १५०४ । ६, २१, ८; १९०४ । ६, ४५, १७, २०७६ । ८, ३, १, १५६
 आपिः अन्तमः ८, ४५, १८, ४६०
 आपः आप्यानाम् १०, १२०, ६, २७६९
 आपुरिः ८, ९८, १०, ९८५
 आयतः विश्वासु गीर्षु ८, ९२, ७, २४०३
 आयन्ता ८, ३२, १४; १९३
 आयसः १, ५७, ३; ८०७
 आयुधा बिभ्रत् १०, ११३, ३; २७४७
 आरितः १, १०१, ४, ८२० । ८, ३३, ५, २१४ । १०, १११,
 १०, २७१४
 आरितः विष्णु २, २१, ३; १२१९
 आरुज् दळहा चित् ८, ४५, १३, ४५५
 आरुजस्तु [मरुत्] १, ६, ५; ३२४५
 आरे अवधः १०, ९९, ५; २६८४
 आर्यः ५, ३४, ६, १७३२
 आविष्कृणान ओजः ४, १७, ३; १४९०
 आशुः १, ४, ७, १० । ८, ९९, ७, २३८२ । १०, १०३, १, २६९२
 आश्रुकर्णः १, १०, ९, ६६
 आसीनः हर्यस्तस्य पृष्ठे ८, १००, ५; २९५
 आहुवः ८ ३२, १९; १९८

हृच्छन् सुतसोमम् ७,९८,१; २२७९
 हनः २,२०,२; १२०९ । ७,२०,५; २१५५ । ८,३३,५,
 २३४ । १०,५०,२, २६०२
 हनः वसुन १,५४,२; ७७६
 हनतम ३,४९,२; १४२५ । १०,१२०,६; २७६९
 हन्त्रज्येष्ठाः [मरुद्गणाः] १,२३,८, ३२४८
 हन्त्रसारथि [वायु.] ४,४६,२; ३२२१
 हन्त्रियः ४,२४,५; १५८१
 हन्त्रिय प्रबुवाणः जनेषु १,५६,४; ८००
 हन्वन् दानं गवा ५,३०,७, १६८८
 हथानः २,२०,४, १२११ । ७,२९,१; २२१३
 हरज्यन्त विश्वेषां वसूनाम् ८,४६,१६, १८३२
 हरज्यन्तम् भूरेः वसव्यस्य [हन्त्राप्ती] ६,६०,१; ३०५६
 हरज्यति एकः चर्षणीनाम् १,७,९, ३६
 हरज्यति एकः पञ्चक्षितीनाम् १,७,९, ३६
 हरज्यति एकः वसूनाम् १,७,९, ३६
 हृषां दाता ८,४६,२; १८१८
 हृषितः धिया ३,६०,५, ३३४१
 हृषिरः १,१२९,१, १०००
 हृषुमान् । अथर्व० ४,२४,५; २८७१
 हृषुः तव शतव्रजः सहस्रपणी एक हृष ८,७७,७, ६४६
 हृषुहस्तः १०,१०३,२; २६९३
 हृष्णानः आयुधानि १,६१,१६, ८६८
 हृक्षे वस्व. उभयस्य ६,१९,१०; १८८०
 हृष्य ४,२४,२, १५७८ । ८,३४,८; ४३२ । अथर्व०
 ६,९८,१; २९०२
 ईशानः १,५,१०; २३ । ७,८, ३५ । ११,८; ७७ । ६१,
 ६,१२,१५; ८६१,८६७,८७० । ८४,७; ९४३ । १७५,
 ४; १०८२ । १०,७३,८, २६३० । [हन्त्राप्ती] ७,२४,२,
 ३०८० । [हन्त्रवायु] ७,९०,५, ३२३३
 ईशानः अस्य जगत. ७,३२,२२; २२५६
 ईशानः एकः ओजसा ८,६,४१; १८३ । ७६,१; ६२८ ।
 ८,४०,५; ३१०५
 ईशान तस्त्रुषः ७,३२,२२; २२५६
 ईशानः भूरे ओजसा ८,३२,१४. १९३
 ईशानः राय. ८,४६,६; १८२२ । ५३,१; ५२५
 ईशानः वसूनाम् ८,६८,६, २२९९
 ईशानः वस्वः ८,८१,४; ६७३ । [हन्त्रावरुणौ] ७,८२,४;
 ३१७५
 ईशानः वार्याणां पुष्पणाम् १,५,२; १५

ईशानः विश्वस्य ओजसा ८,१७,९; ४०२
 ईशानः हयोः ४,१६,११; १४७७
 ईशानकृत् १,६१,११, ८६६ । २,१७,४; ११८४ । ६,
 १८,६, १८६१ । ८,५२,५; ५१९ । ६५,५, ६०५ । ९०,
 २. २३९२
 ईशिषे त्वम् १०,४४,५; २५७२
 ईशिषे असुतानाम् ८,६४,३; ५९१
 ईशिषे अस्य (सोमस्य) ८,८२,७,८,२; ६८५ ८६-८७
 ईशिषे क्षेमस्य प्रयुजश्च ८,३७,५; १७८०
 ईशिषे सुतानाम् ८,६४,३; ५९१
 ईशे कृष्टीनां पूर्या अनुष्टुतिम् ८,६८,७, २२९७
 ईशे दिव. पृथिव्याः अपाम् पर्वतानाम् वृधाम् मेधिराणाम्
 १०,८९,१०, २६७१
 ईशे विश्वस्य करणस्य एकः १,१००,७, ९६३
 ईशे स्थूरस्य रायः बृहत. ४,२१,४; १५४७
 ईशे वस्व. रायः १०,४३,३, २५५९

उक्थवर्धनः ८,१४,११, ३६४

उक्थवाहस्-हाः ८,९६,११.२३५५ । १०,१०४,२, २७०४ ।
 ६,५९,१०; ३०५५
 उक्थः २,१३,२,१२, ११३७, ११४८ । ३,५१,१, १४३४
 उक्थः शस्यानाम् [वरुणः] १,१७,५; ३१३८
 उक्षितः २,१६,१; ११७२
 उमः १,७,४; ३१ । ३३,५ ७३४ । ५१,११; ७५५ ।
 ५६,३, ७९९ । १००,१२, ९६८ । १०२,१०; ८३७ ।
 १२९,५, १००४ । १३०,७; १०१७ । ३,३०,३, २२;
 १२४०, १२५९ । ३१,२२, १२८१ । ३२,१७ १२९८ ।
 ३४,११, १३११ । ३५,११, १३२२ । ३६,११, १३३३ ।
 ३८,१०, १३५४ । ३९,५, १३२७ । ४०,१; १४०९ ।
 ४१,५; १४१८ । ४२,४; १४२२ । ४३,२; १४३३ । ४४,८;
 १४४८ । ४५,५, १४४८ । ४६,५, १४४८ । ४७,५;
 १४४८ । ४८,५, १४४८ । ४९,५, १४४८ । ५०,५;
 १४४८ । ५१,५, १४४८ । ५२,५, १४४८ । ५३,५, १४४८ ।
 ५४,५, १४४८ । ५५,५, १४४८ । ५६,५, १४४८ । ५७,५;
 १४४८ । ५८,५, १४४८ । ५९,५, १४४८ । ६०,५, १४४८ ।
 ६१,५, १४४८ । ६२,५, १४४८ । ६३,५, १४४८ । ६४,५;
 १४४८ । ६५,५, १४४८ । ६६,५, १४४८ । ६७,५, १४४८ ।
 ६८,५, १४४८ । ६९,५, १४४८ । ७०,५, १४४८ । ७१,५;
 १४४८ । ७२,५, १४४८ । ७३,५, १४४८ । ७४,५, १४४८ ।
 ७५,५, १४४८ । ७६,५, १४४८ । ७७,५, १४४८ । ७८,५;
 १४४८ । ७९,५, १४४८ । ८०,५, १४४८ । ८१,५, १४४८ ।
 ८२,५, १४४८ । ८३,५, १४४८ । ८४,५, १४४८ । ८५,५;
 १४४८ । ८६,५, १४४८ । ८७,५, १४४८ । ८८,५, १४४८ ।
 ८९,५, १४४८ । ९०,५, १४४८ । ९१,५, १४४८ । ९२,५;
 १४४८ । ९३,५, १४४८ । ९४,५, १४४८ । ९५,५, १४४८ ।
 ९६,५, १४४८ । ९७,५, १४४८ । ९८,५, १४४८ । ९९,५;
 १४४८ । १००,५, १४४८ । १०१,५, १४४८ । १०२,५, १४४८ ।
 १०३,५, १४४८ । १०४,५, १४४८ । १०५,५, १४४८ । १०६,५;
 १४४८ । १०७,५, १४४८ । १०८,५, १४४८ । १०९,५, १४४८ ।
 ११०,५, १४४८ । १११,५, १४४८ । ११२,५, १४४८ । ११३,५;
 १४४८ । ११४,५, १४४८ । ११५,५, १४४८ । ११६,५, १४४८ ।
 ११७,५, १४४८ । ११८,५, १४४८ । ११९,५, १४४८ । १२०,५;
 १४४८ । १२१,५, १४४८ । १२२,५, १४४८ । १२३,५, १४४८ ।
 १२४,५, १४४८ । १२५,५, १४४८ । १२६,५, १४४८ । १२७,५;
 १४४८ । १२८,५, १४४८ । १२९,५, १४४८ । १३०,५, १४४८ ।
 १३१,५, १४४८ । १३२,५, १४४८ । १३३,५, १४४८ । १३४,५;
 १४४८ । १३५,५, १४४८ । १३६,५, १४४८ । १३७,५, १४४८ ।
 १३८,५, १४४८ । १३९,५, १४४८ । १४०,५, १४४८ । १४१,५;
 १४४८ । १४२,५, १४४८ । १४३,५, १४४८ । १४४,५, १४४८ ।
 १४५,५, १४४८ । १४६,५, १४४८ । १४७,५, १४४८ । १४८,५;
 १४४८ । १४९,५, १४४८ । १५०,५, १४४८ । १५१,५, १४४८ ।
 १५२,५, १४४८ । १५३,५, १४४८ । १५४,५, १४४८ । १५५,५;
 १४४८ । १५६,५, १४४८ । १५७,५, १४४८ । १५८,५, १४४८ ।
 १५९,५, १४४८ । १६०,५, १४४८ । १६१,५, १४४८ । १६२,५;
 १४४८ । १६३,५, १४४८ । १६४,५, १४४८ । १६५,५, १४४८ ।
 १६६,५, १४४८ । १६७,५, १४४८ । १६८,५, १४४८ । १६९,५;
 १४४८ । १७०,५, १४४८ । १७१,५, १४४८ । १७२,५, १४४८ ।
 १७३,५, १४४८ । १७४,५, १४४८ । १७५,५, १४४८ । १७६,५;
 १४४८ । १७७,५, १४४८ । १७८,५, १४४८ । १७९,५, १४४८ ।
 १८०,५, १४४८ । १८१,५, १४४८ । १८२,५, १४४८ । १८३,५;
 १४४८ । १८४,५, १४४८ । १८५,५, १४४८ । १८६,५, १४४८ ।
 १८७,५, १४४८ । १८८,५, १४४८ । १८९,५, १४४८ । १९०,५;
 १४४८ । १९१,५, १४४८ । १९२,५, १४४८ । १९३,५, १४४८ ।
 १९४,५, १४४८ । १९५,५, १४४८ । १९६,५, १४४८ । १९७,५;
 १४४८ । १९८,५, १४४८ । १९९,५, १४४८ । २००,५, १४४८ ।
 २०१,५, १४४८ । २०२,५, १४४८ । २०३,५, १४४८ । २०४,५;
 १४४८ । २०५,५, १४४८ । २०६,५, १४४८ । २०७,५, १४४८ ।
 २०८,५, १४४८ । २०९,५, १४४८ । २१०,५, १४४८ । २११,५;
 १४४८ । २१२,५, १४४८ । २१३,५, १४४८ । २१४,५, १४४८ ।
 २१५,५, १४४८ । २१६,५, १४४८ । २१७,५, १४४८ । २१८,५;
 १४४८ । २१९,५, १४४८ । २२०,५, १४४८ । २२१,५, १४४८ ।
 २२२,५, १४४८ । २२३,५, १४४८ । २२४,५, १४४८ । २२५,५;
 १४४८ । २२६,५, १४४८ । २२७,५, १४४८ । २२८,५, १४४८ ।
 २२९,५, १४४८ । २३०,५, १४४८ । २३१,५, १४४८ । २३२,५;
 १४४८ । २३३,५, १४४८ । २३४,५, १४४८ । २३५,५, १४४८ ।
 २३६,५, १४४८ । २३७,५, १४४८ । २३८,५, १४४८ । २३९,५;
 १४४८ । २४०,५, १४४८ । २४१,५, १४४८ । २४२,५, १४४८ ।
 २४३,५, १४४८ । २४४,५, १४४८ । २४५,५, १४४८ । २४६,५;
 १४४८ । २४७,५, १४४८ । २४८,५, १४४८ । २४९,५, १४४८ ।
 २५०,५, १४४८ । २५१,५, १४४८ । २५२,५, १४४८ । २५३,५;
 १४४८ । २५४,५, १४४८ । २५५,५, १४४८ । २५६,५, १४४८ ।
 २५७,५, १४४८ । २५८,५, १४४८ । २५९,५, १४४८ । २६०,५;
 १४४८ । २६१,५, १४४८ । २६२,५, १४४८ । २६३,५, १४४८ ।
 २६४,५, १४४८ । २६५,५, १४४८ । २६६,५, १४४८ । २६७,५;
 १४४८ । २६८,५, १४४८ । २६९,५, १४४८ । २७०,५, १४४८ ।
 २७१,५, १४४८ । २७२,५, १४४८ । २७३,५, १४४८ । २७४,५;
 १४४८ । २७५,५, १४४८ । २७६,५, १४४८ । २७७,५, १४४८ ।
 २७८,५, १४४८ । २७९,५, १४४८ । २८०,५, १४४८ । २८१,५;
 १४४८ । २८२,५, १४४८ । २८३,५, १४४८ । २८४,५, १४४८ ।
 २८५,५, १४४८ । २८६,५, १४४८ । २८७,५, १४४८ । २८८,५;
 १४४८ । २८९,५, १४४८ । २९०,५, १४४८ । २९१,५, १४४८ ।
 २९२,५, १४४८ । २९३,५, १४४८ । २९४,५, १४४८ । २९५,५;
 १४४८ । २९६,५, १४४८ । २९७,५, १४४८ । २९८,५, १४४८ ।
 २९९,५, १४४८ । ३००,५, १४४८ । ३०१,५, १४४८ । ३०२,५;
 १४४८ । ३०३,५, १४४८ । ३०४,५, १४४८ । ३०५,५, १४४८ ।
 ३०६,५, १४४८ । ३०७,५, १४४८ । ३०८,५, १४४८ । ३०९,५;
 १४४८ । ३१०,५, १४४८ । ३११,५, १४४८ । ३१२,५, १४४८ ।
 ३१३,५, १४४८ । ३१४,५, १४४८ । ३१५,५, १४४८ । ३१६,५;
 १४४८ । ३१७,५, १४४८ । ३१८,५, १४४८ । ३१९,५, १४४८ ।
 ३२०,५, १४४८ । ३२१,५, १४४८ । ३२२,५, १४४८ । ३२३,५;
 १४४८ । ३२४,५, १४४८ । ३२५,५, १४४८ । ३२६,५, १४४८ ।
 ३२७,५, १४४८ । ३२८,५, १४४८ । ३२९,५, १४४८ । ३३०,५;
 १४४८ । ३३१,५, १४४८ । ३३२,५, १४४८ । ३३३,५, १४४८ ।
 ३३४,५, १४४८ । ३३५,५, १४४८ । ३३६,५, १४४८ । ३३७,५;
 १४४८ । ३३८,५, १४४८ । ३३९,५, १४४८ । ३४०,५, १४४८ ।
 ३४१,५, १४४८ । ३४२,५, १४४८ । ३४३,५, १४४८ । ३४४,५;
 १४४८ । ३४५,५, १४४८ । ३४६,५, १४४८ । ३४७,५, १४४८ ।
 ३४८,५, १४४८ । ३४९,५, १४४८ । ३५०,५, १४४८ । ३५१,५;
 १४४८ । ३५२,५, १४४८ । ३५३,५, १४४८ । ३५४,५, १४४८ ।
 ३५५,५, १४४८ । ३५६,५, १४४८ । ३५७,५, १४४८ । ३५८,५;
 १४४८ । ३५९,५, १४४८ । ३६०,५, १४४८ । ३६१,५, १४४८ ।
 ३६२,५, १४४८ । ३६३,५, १४४८ । ३६४,५, १४४८ । ३६५,५;
 १४४८ । ३६६,५, १४४८ । ३६७,५, १४४८ । ३६८,५, १४४८ ।
 ३६९,५, १४४८ । ३७०,५, १४४८ । ३७१,५, १४४८ । ३७२,५;
 १४४८ । ३७३,५, १४४८ । ३७४,५, १४४८ । ३७५,५, १४४८ ।
 ३७६,५, १४४८ । ३७७,५, १४४८ । ३७८,५, १४४८ । ३७९,५;
 १४४८ । ३८०,५, १४४८ । ३८१,५, १४४८ । ३८२,५, १४४८ ।
 ३८३,५, १४४८ । ३८४,५, १४४८ । ३८५,५, १४४८ । ३८६,५;
 १४४८ । ३८७,५, १४४८ । ३८८,५, १४४८ । ३८९,५, १४४८ ।
 ३९०,५, १४४८ । ३९१,५, १४४८ । ३९२,५, १४४८ । ३९३,५;
 १४४८ । ३९४,५, १४४८ । ३९५,५, १४४८ । ३९६,५, १४४८ ।
 ३९७,५, १४४८ । ३९८,५, १४४८ । ३९९,५, १४४८ । ४००,५;
 १४४८ । ४०१,५, १४४८ । ४०२,५, १४४८ । ४०३,५, १४४८ ।
 ४०४,५, १४४८ । ४०५,५, १४४८ । ४०६,५, १४४८ । ४०७,५;
 १४४८ । ४०८,५, १४४८ । ४०९,५, १४४८ । ४१०,५, १४४८ ।
 ४११,५, १४४८ । ४१२,५, १४४८ । ४१३,५, १४४८ । ४१४,५;
 १४४८ । ४१५,५, १४४८ । ४१६,५, १४४८ । ४१७,५, १४४८ ।
 ४१८,५, १४४८ । ४१९,५, १४४८ । ४२०,५, १४४८ । ४२१,५;
 १४४८ । ४२२,५, १४४८ । ४२३,५, १४४८ । ४२४,५, १४४८ ।
 ४२५,५, १४४८ । ४२६,५, १४४८ । ४२७,५, १४४८ । ४२८,५;
 १४४८ । ४२९,५, १४४८ । ४३०,५, १४४८ । ४३१,५, १४४८ ।
 ४३२,५, १४४८ । ४३३,५, १४४८ । ४३४,५, १४४८ । ४३५,५;
 १४४८ । ४३६,५, १४४८ । ४३७,५, १४४८ । ४३८,५, १४४८ ।
 ४३९,५, १४४८ । ४४०,५, १४४८ । ४४१,५, १४४८ । ४४२,५;
 १४४८ । ४४३,५, १४४८ । ४४४,५, १४४८ । ४४५,५, १४४८ ।
 ४४६,५, १४४८ । ४४७,५, १४४८ । ४४८,५, १४४८ । ४४९,५;
 १४४८ । ४५०,५, १४४८ । ४५१,५, १४४८ । ४५२,५, १४४८ ।
 ४५३,५, १४४८ । ४५४,५, १४४८ । ४५५,५, १४४८ । ४५६,५;
 १४४८ । ४५७,५, १४४८ । ४५८,५, १४४८ । ४५९,५, १४४८ ।

४, ७, २३५। ६, १४, १८, २५६, २६०। २१, २; ४१०। २४, ७;
१७९६। ३२, २, २७; १८१, २०६। ३३, ९; २१८। ३३, १०,
२१९। ३७, २; १७७७। ४५, ३५, ४७७। ४६, २०, १८३६।
४९, ७; ४९१। ५०, ६, ५००। ५२, ५, ५, ५१९, ५१९।
६१, १२, ५५९। ६५, ५; ६०५। ६८, ६, २२९६। ७०, ४,
२३२४। ९६, १०; २३५४। ९७, १०, १३; ९८५, ९८८।
१०, २९, ३; २५१७। ४४, ३, २५७०। ७३, १, २६२३।
८९, १८; २६७९। १०३, ५, २६९५। १०४, ११; २७१३।
११३, ३, ६; २७४७, २७५०। ११६, ५; २७५९। १२०, १,
२७६४। ४७, ३; २८४४। ७, ८२, ५, ३१७६। साम०
२३१, २९८०। [इन्द्रासौ] १, २१, ४, ३००५। ऋ०, ६०, ५,
३०६०। [इन्द्रः] ऋ० १, १६५, ६, १०, ३२५५, ३२५९।
१, १७१, ५; ३२६७। [इन्द्रासौ] ६, ७२, ५, ३२७५
उग्रः जनुषा ३ ४६, २, १४१०
उग्रधन्वा १०, १०३, ३; २६९४
उग्रबाहुः ८, ६१, १०; ५५७। अ० ४, २४, २, २८६८
उग्राः [मरुतः] १, १७१, ५; ३२६७
उत्तरः ८, १४, १५, ३६८
उत्तरः विश्वस्मात् १०, ८६, १, २३; २६४०, २६६२
उत्सः हिरण्यय ८, ६१, ६; ५५३
उद्यन्ता गिरः १, १७८, ३; १०९८
उद्वा-द्व-वृषाणः ४, २०, ७, १५३९। २९, ३; १६०६
उपदधानः आशून् धुरि ४, २९, ४, १६०७
उपमः मघोनाम् ८, ५३, १; ५२५
उपमानां प्रथमः ८, ६१, २; ५४९
उपसद्यः । अथर्व० ६, ९८, १; २९०२
उपस्तभायन् ४, २१, ५, १५४८
उभयस्य राजा ६, ४७, १६; २११४
उभयाविन्-वी ८, १, २, ८८
उराणः समस्तु सताम् १, १७३, ७; १०६२
उरुः २, १३, ७; ११४३। २२, १, १२१३। ३, ४१, ५,
१३७७। ४६, ४; १४१२। ६, १९, १; १८७१। ८, ६५, ३;
६०३। १०, ४७, ३, २८४४
उरुक्रमः ८, ७७, १०; ६४९। [इन्द्राविष्णु] ७, ९९, ६, ३३१६
उरुगायः १०, २९, ४; २५१८
उरुग्रायाः ८, ६, २७, २६९
उरुधारा ८, १, १०; ९६
उरुन्यक्ष-चाः १, १०४, ९, ८५५। ६, ३६, ३; २०३३।
७, ३१, ११; २२३३। ८, २, ५, १२०। ३, ५०, १, १४२९
उरुसंसाः ४, १६, १८; १४८४

उर्वराजित् २, २१, १; १२१७
उर्वरापतिः ८, २१, ३, ४११
उर्वा [भूमिः] ६, ४७, २०; ३३२७
उर्ध्वतिः ६, २४, २, १९२९
उशान् १, १०१, १०; ८२६। ३, ४३, ७; १३९७। ४, २०, ४,
१५३६
उशान् सोमम् सोमान् ४, २४, ६, १५८२। ७, ९८, २; २२८०
उशधक् ३, ३४, ३, १३०३
ऊर्ध्वः रथः न ३, ४९, ४, १४२७
ऊर्ध्वसानः ब्रह्मणे मनुषे १०, ९९, ७; २६८६
ऊर्गमी ऋग्मिभिः १, १००, ४, ९६०
ऋग्मिभ्यः १, ९, ९, ५६। ५१, १, ७९५। ६२, १; ८७२।
६, ४५, ७, २०६६। ८, ४०, १०, ३११०
ऋषायन् १०, ११३, ६, २७५०
ऋषायमाणः १, १०, ८, ६५। ६१, १३; ८६८। १७६, १, १०८५
ऋषावान् ३, ३०, ३; १२४०। ४, २४, ८; १५८४
ऋषीषमः १, ६१, १, ८५६। ६, ४६, ४; २०९३। ८, ३२, २६;
२०५। ६२, ६, ५७१। ६८, ६; २२९६। ९०, १; २३९१।
९२, ९; २४०५। १०, २२, २; २४६७
ऋजीषः १, ३२, ६, ७२०
ऋजीषिन्-षी ३, ३२, १; १२८२। ३६, १०; १३३२।
४३, ५; १३९५। ४६, ३, १४११। ५०, ३; १४३१।
४, १६, १, ५; १४६७, १४७१। ५, ४०, ४, १७६८
ऋजीषिन् ६, १७, २, १०, १८४२, ५०। १८, २; १८५७।
२०, २, १८८५। २४, १; १९२८। ४२, २, १९९९।
७, २४, ३; २१८८। ८, ३२, १; १८०। ३३, १२; २२१।
७६, ५, ६३२। ८, ९०, ५; २३९५। ९६, ९, २३५३।
[सोम] १०, ८९, ५; ३२७६
ऋजुक्रतुः १, ८१, ७, ९२२
ऋजसानः ४, २१, ५, १५४८
ऋणकातिः ८, ६१, १२, ५५९
ऋणयाः ४, २३, ७, १५७२
ऋतम् ४, २३, ८, १०; १५७३ ७४-७५। ८, ६, १०, २५२
ऋतं कृण्वन् २, ३०, १; १२२७
ऋतपाः ७, २०, ६; २१५६
ऋतस्य प्रजा ८, ६, २; २४४
ऋतयुः ८, ७०, १०; २३३०
ऋतावत्-वा ३, ५३, ८; १४६०
ऋतावृधा (धौ) [इन्द्रासौ] ६, ५९, ४; ३०४९। [सविता]
७, ८२, १०; ३१८१। ७, ८३, १०; ३१९१

अतीष-तिस-दः ८, ४५, ३५; ४७७ । ६८, १; २२९१ ।
 ८८, १, ८९४
 अतुपाः ३, ४७, ३; १४१६ । १०, ९९, १०; २६८९
 अतेजाः ७, २०, ६; २१५६
 अत्विजा [इन्द्राग्नी] ८, ३८, १; ३०९१
 अत्वियः ८, ६३, ११; ५८८ । ८, ४०, ११; ३१११
 अभुः १०, २३, २; २४८२ । १४४, २; २७९८
 अभुक्षाः १, ६३, ३; ८८७ । ८, ४५, २९; ४७१ । ९६, २१,
 २३८३ । १०, २३, २; २४८२ । ७४, ५; २६३८
 अभुमान् ३, ५२, ६; १४५१ । ६०, ६; ३३४२
 अभुष्टिरः ८, ७७, ८; ६४७
 अभवः १०, १२०, ६; २७६९
 अभवा १, १००, १२, ९६८ । ६, ३४, २; २०२२ । ८, ७०, ३,
 २३२३
 अभवा रुद्रेभिः १, १७०, ५; ९६१ । १०, ९९, ५; २६८४
 अभि ५, २९, १; १६६७ । ८, ६, ४१, २८३ । १६, ७; ३८८
 अभिचोदनः ८, ५१, ३; ५०८
 अभिबल-वान् ८, २, २८, १४३
 अभवः १, ८१, ४; २१९ । २, २१, ४, १२२१ । ३, ३२, ७;
 १२८८ । ३५, ८, १३१९ । ४, १९, १, १५२२ । २०, ६,
 ९; १५३८, १५४१ । २३, १; १५६६ । ३३, ३, १७१९ । ६,
 १९, २; १८७२ । २९, ६; १९६७ । ८, ४६, १२; १८२८ ।
 ५०, ७, ५०१ । ९३, ९; २४३८ । १०, १४८, २; २८१०
 अभवौजा १०, १०५, ६; २७१९
 एकः ५, ३२, ९, ११; १७१३, १७१५ । ६, १८, ३; १८५८ ।
 ८, २, ३१; १४६ । १०, १३८, ६; २७९७
 एकः आजिषु ४, १७, ९, १४९६
 एकः ईशानः ओजसा ८, ६, ४१, २८३
 एकः चर्षणीनाम् १, १७६, २; १०८६ । ३, ३०, ४-५; १२४१-४२
 एकराट् अस्य भुवनस्य ८, ३७, ३; १७७८
 एकवीरः १०, १०३, १; २६९२
 एधमानद्विर् ६, ४७, १६; २११४
 एनः १, १७३, ९; १०६४
 एवया त्वत् न ८, २४, १५; १८०४
 ओजः आविकृण्वानः ४, १७, ३; १४९०
 ओजः उशमानः ४, १९, ४; १५२५
 ओजसा एकः ईशानः ८, ६, ४१; २८३
 ओजसा महान् ८, ६, १, २६; २४३, २६८
 ओजसा सार्कं जातः २, २२, ३; १२२५

ओजस्वान् ८, ७६, ५; ६३२
 ओजः मिमान २, १७, २; ११८२
 ओजिष्ठः १, १२९, १०; १००९ । ८, ९३, ८; २४३७ । ९७,
 १०; ९८५ । १०, ७३, १, २६२३
 ओजीयान् ६, २०, ३; १८८१ । १०, १२०, ४, २७६७
 ओदतीनां नदः ८, ६९, २, २३०५
 ककुद्-प् ८, ४५, १४, ४५६
 ककुद् [अग्निः] वा० य० १३, १४; २९३०
 कण्वमत्-मान् ८, २, २२, १३७
 कनीन ३, ४८, १; १४१९ । ८, ६९, १४; २३१६ । १०,
 ९९, १०; २६८९
 कर्ता अपांसि ८, ९६, १९; २३६१
 कर्ता ज्योतिः समस्तु ८, १६, १०; ३९१
 कर्ता पितृणाम् ४, १७, १७; १५०४
 कर्ता वीर नयं सर्ववीरम् ६, २३, ४; १९२१
 कर्ता समदनस्य १, १००, ६; ९६२
 कर्ता सुदासे लोकम् ७, २०, २, २१५२
 कर्मणः धर्ता विश्वस्य १, ११, ४, ७३
 कवास्यः ५, ३४, ३, १७२९
 कविः १, ११, ४, ७३ । १७४, ७; १०७५ । १७५, ४; १०८२ ।
 ३, ४२, ६; १३८७ । ४, २५, २; १५८९ । ६, ३२, ३, २०१३ ।
 ७, १८, २, २१२० । ८, ४५, १४; ४५६ । १०, ९९, ९;
 २६८८ । ८, ४०, ३, ३१०३
 कविच्छदा (दौ) [इन्द्राग्नी] ३, १२, ३; ३०३२
 कविवृधः प्रानथा ८, ६३, ४, ५८१
 कवीनां कवितमः ६, १८, १४, १८६९
 कामी २, १४, १, ११५०
 कारुघायाः ३, ३२, १०; १२९१ । ६, २४, २; १९२९
 काव्यः १०, १४४, २; २७९८
 क्रियेधाः १, ६१, ६, १२; ८६१, ८६७
 कीज ८, ६६, ३, ६१५
 कीरिचोदनः ६, ४५, १९, २०७८
 कृणवत् मानुषायुगा ८, ६२, ९; ५७४
 कृणवन् पुरुणि नर्या अपांसि ८, ९६, २१; २३६३
 कृणवन् साधु ८, ३२, १०; १८९
 कृण्वानः मायाः ३, ५३, ८; १४६०
 कृतग्रहा ६, २०, ३, १८८१
 कृत्तुः ६, १८, १५; १८७० । ८, १६, ३; ३८४
 कृष्टीनां पतिः ६, ४५, १६; २०७५
 कृष्टीनां राजा १, १७७, १; १०९७ । ४, १७, ५, १४९२

केतुः सत्त्वनाम् ८, ९६, ४, २३४८
 केवलः १, ७, १०, ३७ । ४, २५, ७; १५२४
 कौशिकः १, १०, ११; ६८
 क्रतुः १०, १०४, १०, २७१२
 क्रतु शुक्लान्तमः ते १, १७५, ५, १०८३
 क्रतुः सहस्रदाह्याम् १, १७, ५, ३१३८
 क्रतुना साक जातः २, २२, ३, १२२५
 क्रतुमान् १, ६१, १२; ८८३ । १०, ११३, १; २७४५
 क्रतुम् शीर्षणि भरति २, १६, २; ११७३
 क्त्वा योद्धा ८८८, ४, ८९२
 क्षपावान् १०, २९, १, २५१५
 क्षपां वस्त्रा ३, ४९, ४, १४२७
 क्षममाणः १०, १०४, ६, २७०८
 क्षयः मानस्य ८, ६३, ७, ५८४
 क्षयत् मघोनः ६, २३, १०; १९२८
 क्षेमस्य त्राम् १, १००, ७; ९६३
 क्षोभणः चर्षणीनाम् १०, १०३, १, २६९०
 खजकृत् ६, १८, २; १८५७ । ७, २० २, १७२३ । ८, १, ७, ९३
 खजंकरः १, १०२, ६; ८३३
 गणपतिः १०, ११२, ९, २७४३
 गन्ता १, ९, ९, ५६
 गभीरः ३, ४६, ४, १४१२ । १०, ४७, ३; २८४४
 गम्भीरः २, २१, ४, १२२०
 गवां जनिता ८, ३६, ५, १७७३
 गवां पतिः १, १०१४; ८२० । ३, ३१, ४, १२६३
 गविषे (चतुः) ८, २४, २०, १८०९
 गवेषणः १, १३२, ३; १०३० । ७, २०, ५; २१५५ । २३, ३; २८१२ । ८, १७, १५; ४०८
 गव्युः १, ५१, १४; ७५८ । ७, ३६, ३, २२२५
 गाथश्रवाः ८, २, ३८; १५३
 गाथान्वः ८, ९२, २; २३९८
 गायत्रवेपस-पाः ८, १, १०; ९६
 गार्ह्यः १०, १११, २, २७२६
 गर्वणम्-णा १, ५, ७, १०, २०, २३ । १०, १२; ६९ । ११, ६, ७५ । ६२, १, ८७२ । ३, ४०, ६; १३६९ । ४१, ४, १३७६ । ५१, १०; १४४३ । ४, ३२, ८, ११; १६५२, १६५५ । ६, ३२, ४, २०१४ । ३४, ३; २०२३ । ४०, ५, १९९२ । ४५, १३, २०७२ । ४५, २८; २०८७ । ४६, १०; २०९९ । ८, १, २६, ११२२ । २, २, ७, १४२ । ३, १८, १७३ । १२, ५, ६० [हृद्-गुण] ३९

२९२ । १३, ४, २२, ३२४, ३४० । २४, १२, १८०१ । ३० ७; १८६ । ४९, ३, ४८७ । ५१, ६; ५१० । ५२, ८; ५२० । ६१, १४; ५६१ । ८२, ७; २३९० । ९०, ३; २३९३ । ९३, १०, २४३९ । ९५, १; २३३६ । ९५, २ २३३७ । ९८, ७; २३७० । ९९, २, २३७७ । साम० २९४, २०, ८१ गर्वणस्तमः ६, ४५, २०; २०७९ । ८, ६८, १०; २३०० । ५, ८६४; ३०४३
 गर्वणस्तुः १०, १११, १, २७०५
 गर्वाह्य-हा १, ३०, ५, ७०३ । ६१, ४, ८५२ । १३९, ६, १०४१ । ६, २१, २, १८०८ । २४, ६; १९३३ । ८, २, ३०, १४५ । ९६, १०, २३५४
 गीभिः श्रुत ८, २, २७, १४०
 गीर्णु आयत. विश्वासु ८, ९२ ७; २४०३
 गर्तः १, १७३, २ १०५७
 गर्तश्रवाः १, ६१, ५; ८६०
 गृणानः ६, ३२, २, २०१२ । ३६, ४; २०३४ । ८, ९३, १०, २४३९ । १०, १३८४, २७९५ । १४७, ५; २८०८
 गृणाना [हृद्गव्युः] ६, ६८, ८; ३१६८
 गृणान अंगिरोभिः २, १५, ८, ११६९ । ४, १६, ८ १४७४ । १०, १११, ४, २७२८
 गृणानः अंगुषेभिः ४, २९, १; १६०४
 गृणान. विश्वाभिः धीभि शच्या १०, १०४, ३, २७०५
 गुत्सः ३४८, ३, १४२१ । १०, २८, ५, २५०६
 गोजित २, २१, १; १२१७
 गोत्रभिद ६, १७, २; १८४२ । १०, १०३, ६, २६९६
 गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः १०, १०३, ७, २६९७
 गोदत्र. ८, २१, १६, ४२४
 गोदा. ३, ३०, २१, १२५८ । ४, २२, १०; १५६४
 गोनाम् अपवर्ता ४, २०, ८; १५४०
 गोपति. १, १०१, ४, ८२० । ३, ३०, २१, १२५८ ३१, २१, १२८० । ४, २४, १, १५७७ । ३०, २२, १६२७ । ६, ४५, २९; २०८० । ७, १८, ४; २१२२ । ८, २९, ३; ४११ । ६९ ४; २३०७ । १०, ४७, १; २८४२
 गोपति गवाम् एकः ७, ९८, ६; २०८४
 गोपतिः विश्वस्य ८, ६२, ७, ५७०
 गोपाः ३, ३१, १४, १२७३ । [हृद्गव्युः] ७, ९१, २, ३०३६
 गोमान् ४, ३२, ७; १६५१ । य० २६, ४; २९६४
 गोविद् ८, ५३, १, ५२५ । १०, १०३, ५-६, २६९५ ९६
 गोषणः [गोसनः] ४, ३२, २२, १६६६
 गौः गव्यते असि ६, ४५, २६, २०८५

गमन्ता अध १०, २२, ६, २४७१

घनः वृत्राणाम् १, ४, ८, ११। ३, ४९, १, १४२४। ८, ९६, १८, २३६०

घनाघन १०, १०३, १, २६९२

घृतासुती [इन्द्राधिष्णू] ६, ६९, ६, ३३११

घृष्टः १०, २७, ६, २४९६। १४४, ३, २८००

घृष्टिः ३, ४६, १, १४०९ ६, १८, १२, १८६७

घोर. ७, २८, २, २२०९

घ्नन् वृत्राणि ३, ३०, २२, १२५८। ३१, २०, १२८१। ३२, १७, १२९८। ३४, ११, १३११। ३५, ११, १३२०। ३६, ११, १३३३। ३८, १०, १३५४। ३९, ९, १३६३। ४३, ८, १३९८। ४८, ५, १४२३। ४९, ५, १४२८। ५०, ५, १४३३

चक्रमान ५, ३६, १, १७४४

चक्रानः शवसा ६, ३६, ५, २०३५। ७, २७, १, २००३

चक्रानः सुमतिम् १०, १४८, ३, २८११

चक्रवम् वान विश्वा ६, १७, १२, १८५३

चक्रमामजः ५, ३४, ६, १७३२

चक्राणा [इन्द्रावरुणौ] ४४०, १० ३१५५

चक्रिः १, ९, २, ४९

चचिनः ६, १९, ४, १८७४

चतु समुद्रः १०, ४७, २, २८४३

चन्द्रबुधः १, ५२, ३, ७६२

चन्द्रवर्णा [मरुतः] १, १६१, १२, ३०६१

चरन् १, ६, १ २४

चर्च्यमाणः अनुष्टुभम् अनु १०, १२४, ९, ३२७७

चक्रयः १०, ५०, २, २६०२। १७, २, २८४३। अथ० ६, ९८, १, २९०२

चक्रुत्य चरणीनाम् ८, २४, २३; १८१२

चर्षणी [इन्द्राग्नी] १, १०९, ५, ३०२५

चर्षणिप्रा. १, १७७, १, १०९१। ३, ३४, ७, १३०७। ६, १९, १, १८७१। ३९, ४, १९८६। ७, ३१, १०, २२३२। अ० ४, २४, ३, २८६९

चर्षणा नृत् ३, ३७, ४, १३३७। ५१, १, १४३४। ४, १७, २०, १५०७। ८, ९६, २०, २३६२। १०, ८९, १, २६६३

चर्षणीसहः ६, ४६, ६; २०९५। ८, १, २, ८८। २१, १०, ४१८। ७, ९४, ७, ३०८५

चर्षणीनाम् एकः १, १७६, २; १०८६

चर्षणीना धतारा [इन्द्रावरुणौ] १, १७, २ ३१३५

चर्षणीनां राजा ७, २३, ३; २२०५। ८, ७०, १, २३२१

चपणीनां वृषभः ६, १८, १, १८५६। ८, ९६, ४, १८, २३४८-६०

चर्षणीनां सम्राट् ८, १६, १; ३८२

चारुः ३, ४९, ३; १४२६

चिकित् ८, ५१, ३; ५०७

चिकित्त्रः साम० २९४ २९८१

चिकित्त्वान् १, १६०, १, १०४३। ३, ४४, २; १४००।

४, १६, २, १४६८। २९, २, १६०५। ८, ६, २९, २७१।

९५, ५, २४०। १०, ९९, १, २६८०। अथ० ७, ९७, १; ३१२०

चित्रः ४, ३१, १, १६३०। ३२, २; १६४६। ५, ३९, १;

१७६०। ६, ४६, २, ५, २०९१, २०९४। ७, २०, ७, २१५७।

८४६, २०; १८३६। ९७, १५, ९९०। [मरुतः] १, १६५, १३; ३०६२

चित्रतमः ६, ३८, १; १९७८

चित्रभानुः १, ३, ४; १

चेकितानः युगेयुगे वयसा ६, ३६, ५, २०३५

चेतिष्ठः ८, ४६, २०, १८३६

चोदप्रवृद्धः १, १७४, ६, १०७४

चोदिता रघस्य १०, २४, ३, २४९०

चोदौ रघस्य [इन्द्रासोमौ] २, ३०, ६, ३२७०

च्यवनः २, २१, ३; १२१९। ६, १८, २; १८५७

च्यवनः अच्युतानाम् ८, ९६, ४; २३४८

च्यवनः विभूतद्युम्नः ८, ३३, ६; २१५

च्यावयन् अच्युतानि ३, ३०, ४, १२४१

च्यौतन विश्वस्मिन् भरे नृन् १०, ५०, ४; २६०४

छन्दुः हर्यतः १, ५५, ४; ८००

जगिमः ६, ४२, १, १९२८। ७, २०, १, २१५१। ८, ४६, १७, १८३३

जनसहः २, २१, ३; १२१९

जनभक्षः २, २१, ३, १२१९

जनयोपनः १०, ८६, २२, १६६१

जनानां तरणिः ८४५, २८; ४७०

जनानां राजा ८, ६४, ३; ५९१

जनाषाट् १, ५४, ११, ७९६

जनिता १, १२९, ११; १०१०। ८, ९९, ५, २३८०

जनिता अश्वानाम् ८, ३६, ५; १७७३

जनिता गवाम् ८, ३६, ५; १७७३

जनिता दिवः ८, ३६, ४, १७७२

जनिता पृथिव्याः ८, ३६, ४, १७७२

जनिता सूर्यस्य ३, ४९, ४; १४२७

जनिता मतीनाम् [इन्द्राधिष्णू] ६, ६९, २; ३३०७

जनुषां राजा ४, १७, २०; १५०७
जज्ञान ३, ४४, ४; १४०२ । ६, ३८, ५; १९८२
जज्ञानः सद्यः ८, ९६, २१; २३६३
जयत्-न् १०, १०३, ६; २६९६
जयन् प्रमृणः [बृहस्पतिः] वा० य० १७ ३६, २९३२
जयन् धना १०, १२०, ४; २७६७
जयन् स्पृधः १०, १६७, २; २८३०
जरमाणः सुवृक्तिभिः दिवेदिवे ३, ५१, १; १४३४
जरयन् २, १६, १; ११७२
जरिता वसोः ३, ५१, ३; १४३६
जह्मबाण ७, २१, ४; २१६४
जामृवि ८, ९२, २३; २४१९
जातः ३, ५१, ८; १४४१
जातः सहसे सनादेव ४, २०, ६; १५३८
जातूभर्मा १, १०३, ३; ८४१
जायमान. प्रथमम् ४, १७, ७; १४९४
जायमान सन्तुभ्यः अशत्रुभ्यः ८, ९६, १६; २३५८
जारः १०, ४२, २; २५४७ । १०, १, १०; २७३४
जिह्ममान. वृत्रा ३, ३०, ४; १२४१
जिष्णुः ६, ४५, १५; २०७४ । १०, १११, ३; २७२७
जीरदानुः ८, ६२, ३; ५६८ [१०३, २; २६९३]
जुजुषाण ७, २३, ३; २१८९
जुजुषाणः स्तोमम् ८, ६३, ८; ६२०
जुजुष्वान् ८, ६४, ८; ५२६
जुषाणम् २, १४, ९; ११५८ । ८, १३, १३; ३३३ । १०, १७९, ३; २८३८
जुषाणः ब्रह्म ७, २४, ४; २१८९
जुषाणः ब्रह्मकृतिम् ७, २९, २; २२१४
जुषाणः सवनम् १०, १६०, २; २८२५
जुषाणः हृदा मनसा उत ७, ९८, २; २२८०
जुषाणः होतुः यज्ञम् ४, २३, १; १५६६
जुष्टतरः ८, ९६, ११; २३५५
जेता १, ११, २; ७१ । २, ४१, १२; १२३७ । ८, ९९, ७; २३८०
जेता पृथु १, १७८, ३; १०९८
जेन्यावस् [इन्द्राग्नी] ८, ३८, ७; ३०९७
जोहूत्रः २, २०, ३; १२१०
ज्यायस्-यान् ३, ३८, ५; १३४९ । १०, ५०, ५; २६०५
ज्येष्ठ. [ब्रह्मगस्वतिः] ७, ९७, ३; ३३६०
ज्येष्ठ. गातुभिः १, १००, ४; ९६०
ज्येष्ठः वृषभाणाम् ८, ५३, १; ५२५

ज्येष्ठतमः २, १६, १; ११७२
ज्येष्ठराजः ८, १६, ३; ३८४
ज्योतिषा विभ्राजत ८ ९८, ३ २३६६
तक्त. शवसा अग्न्यः ६, ३२, ५. २०१५
ततुरिः ६, २२, २; १९०८ । २४, २; १९२९.
ततृदान ४, २८, ५; १६०३
ततान आ विश्वानि शवसा ७, २३, १; २१८०
तत् [बर्हि] ओशाः ३, ३५, ७. १३१८
तत् [रथ] सिन १, ६१, ४, ८५९
तत् [सोम] कामः २, १४, २; ११५१
तनु ८, ९६, १०; २३५४
तनूयाः ४, १६, २०; १४८६ । ६, ४६, १०; २०९९.
तनूरुवा (चौ) [इन्द्राग्नी] ७, ९३, ५, ३०७५
तन्वे हृच्छमान ४, १८, १०. १५१८
तन्वं ८, ६८, ७; २२९७
तमसः विहन्ता वववुवाश्चिन् १, १७३, ५, १०६०
तरणिः ७, २६, ४; २२०१
तरणि जनानाम् ८, ४५, २८; ४७०
तरणि पृथु ३, ४९, ३; १४२६
तरद्वेषाः १, १००, ३; ९५९
तारस्वी ८, ९८, १०; ९८५
तरुणा पृतनाना विश्वामाम् ८, ७०, १; २३२१
तरुणा वाज्यम् १, १२९, २. १००१
तरुत्र १, १७४, १. १०६९ । २, ११, १५-१६. २१२५-१६ ।
३, ३०, ३; १२४० । ६, १७, २; १८४० । २६, २; १९४८ ।
१०, ४७, ४; २८४५
तरुत्रः महिना ७, २१, ९; २१६९
तरुण्यत ८, ९९, ५; २३८०
तवस्-से (चतु०) १, ५१, १५; ७५९ । ५८, १८; ११ ।
६१, १; ८५६ । ५, ३३, १; १७१७ । ६, १७, ४, ८; १८४४-
१८४८ । १८, ४; १८५९ । ३२, १; २०११ । ८, ९३, १०.
२३५४ । ९८, १०; ९८५ । १०, २५, ५; २५२६
तवसः तवीयान् ६, २०, ३; १८८६
तवस्तः १, ३०, ७; ७०५
तवस्तमा (मौ) [इन्द्राग्नी] १, १०९, ५, ३०२५
तवागा ४, १८, १०; १५१८
तविष ३, ३४ २; १३०२ । ८, १५, १; ३६९ । ४३, १२.
१८२८ । ९६, १८; २३६० । १, १६५, ६, ८; ३२५५,
३२५७ । १, १७१, ४; ३०६६

नविषीवान् ४,२०,७, १५३९ । ७,२५,४, २१९५ ।
 १०,१०५,३; २७१६
 नविषीमि आवृतः १,५१,२; ७४६ । ८,८८,२, ८९५
 नव्यान् ३,३२,११, १२९२
 तस्थिवम-वान् ३,३८,९, १३५३
 तिगमायुध. २,३०,३; १२२९
 तिनिषाण. १०,५५ १, २६१४
 तिमिराणा (णा) बहि [इन्द्राक्षी] १,१०८,४, ३०११
 तुग्यावृध ८,४५,२९, ४७१ । ८,९९,७ २३८०
 तुजत्-न १,६१,६; ८६१
 तुजा [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
 तुम्रः ३,५०,१ १४२९ । ४,१७,८, १४९५ । १८,१०,१५१८
 मुरः १,६१,१, १३, ८५६, ८६८ । ६,१८,४, १८५९ ।
 ३२,१; २०११ । ७,२२,५, २१७५ । ८,७८,७, ६५७
 तुग्न ६,१८,४, १८५९
 तुगापाट [साह] ३,४८,४, १४२२ । ५,४०,४, १७६८ ।
 ६,३२,५, २०१५ । १०,५५,८, २६२१ । अथ० २,५,३
 २८६५ । साम० ९५४, २९९९
 तुगीयादित्य ८,५२ ७; ५२१
 तुर्वणि १,५७,३; ८०७ । ६१,११, ८६६ । १३०,९,९,
 १०१९, १०१९ । ५,३५,३, १७३८ । १०,३२,५, २५३४
 तुर्वणि घृतन्मूत्र ४,२०,१; १५३३
 तुविकर्मि ३,३०,३, १२४० । ६,२२,५, १९११ । ८,२,३१,
 १४६ । १६,८; ३८९ । ६८,१, २२९९ । ८०,२; ६७१
 तुविकर्मिन-मी ८,६६,१२; ६२४
 तुविकर्मितम ६,३७,४; १९७६
 तुविक्रतु ८,६८,२, २२९२
 तुविमाम. ६,२२,५, १९११
 तुविमि २,२१,२, १२१८
 तुविम्राव. ८,१७,८, ४०१ । ६४,७ ५९५
 तुविजात. १,१३१,७; १०२७ । ३,३२,११ १२९२ ।
 ६,१८,४, १८५९ । १०,२९,५, २५१९
 तुविदेण ८,८१,२; ६७१
 तुविद्युम्नः १,९,६, ५३ । ४,२१,२; १५६५ । ६,१८,११-१२,
 १८६६-६७ । ८,९०,२; २३९२
 तुविनृमः ४,२२,६, १५६० । ६,३०,५; २०१० ।
 ६,४६,३, २०९२ । ८,२४,२७, १८१६ । ७०,१०, २३३० ।
 १०,१४८,१, २८०९
 तुविप्रतिः १,३०,९; ७०८
 तुविबाध १,३२,६; ७२०
 तुविमात्रः अयोमि ८,८१,२, ६७१

तुविमृक्षः ६,१८,२; १८५७
 तुविराधा ४,२१,२; १५४५
 तुविनाम ६,४४,२, २०३७
 तुविशुग्मः [इन्द्रावरुणौ] २,२२,१, १२२३ । ८,६८,२;
 २२९२ । ६,६८,२; ३१६२
 तुविष्टमः अथ० ६,३३,३; २८८९
 तुविष्मान् १,५५,१; ७९७ । २,१२,१२, ११३३ । ४,२९,
 ३; १६०६ । ७,२०,४; २१५४ । १०,४४,१, २५६८ ।
 ७४,६; २६३९ । १,१६५,६, ३२५५
 तुविषाणिः (स्वनिः) २,१७,६; ११८६
 तुवी [वि] मघ १,२९,१-७, ६९२ ९८ । ८,६१,१८;
 ५६५ । ८१,२; ६७१ । ९२,२९; २४२५
 तुतुजानः १,३,६, ३ । ६१,१२; ८६७ । ६,३७,५; १९७७ ।
 ८,१३,११; ३३१ । १०,४४,१, २५६८
 तुतुजिः ४,३२,२, १६४६ । १०,२२,३; २४६८
 तुर्णि ३,५१,२; १४३५
 तूर्यः ८,९९,५; २३८०
 तूर्वन् ६,२०,३; १८८६
 तूर्वन् श्रवस्यानि १,१००,५, ९६१
 तृपल प्रभर्मा [सोमः] १०,८९,५; ३२७६
 तृषत् २,२२,१ १२२३
 तृषाणः ५,३६,१, १७४४
 तोकसाता ६,१८,६, १८६१
 तोदः ४,१६,११, १४७७
 तोशा(शौ)[इन्द्राक्षी] ३,१२,४, ३०३३ । ८,३८,२, ३०९२
 त्यागः ४,२४,३, १५७९
 त्रदः ८,४५,२८, ४७०
 त्रा ४,२४,३; १५७६
 त्रा क्षेमस्य १,१००,७, ९६३
 त्राता १,१२९,१०, १००९ । १७८,४, ११०० । ६,२५,७;
 १९४४ । ६,४७,११; २१०९
 त्राता विप्रस्य मावन १,१२९,११; १०१० । ७,२०,१;
 २१५१ । ४,१७,१७; १५०४ । अथ० १९,१५,३; २९११
 त्रिससैः सत्त्वभिः [उपेतः] १,१३३,६; १०३९
 त्वष्टा ६,४७,१९, २११७
 त्वा प्रति कश्चन न ८,६४,२; ५९०
 त्विषीमान् १,५६,५; ८०१ । २,२२,२; १२२४
 त्वेषः १,१००,१३; ९६९ । ८,४०,१०, ३११०
 त्वेषनृम १०,१२०,१; २७६४
 त्वेषसंहक ६,२२,९; १९१५

दंसना ८,१,२७, ११३ । ८८,४; ८९७
 दसनावान् १,३०,१६, ७१४ । ३,३९,४, १३५८
 दक्षिणः ८,२४,२५-२६ । १८१४-१५
 दक्षं पृथ्वत् ८,२४,१४, १८०३
 दक्षाय भरहृतये प्रतूर्तये (च) १,१२९,२. १००१
 दक्षिणावान् ३,३९,६, १३६०
 दत्-न् १०,१०५,२, २७१५
 ददत् विप्रेभ्यः सघा ५,३२,१२, १७१६
 ददिः गाः ६,२३,४; १९२९
 ददशानः ४,१७,१७, १५०४
 दधन् पुरः ५,३१,११, १७००
 दधानः पुरुणि नयां ३,३४,५, १३०५
 दधानः सत्रा शवांसि ८,९७,१२, ९८७
 दधाना द्रविणः [इन्द्राविष्णू] ६,६९,३, ३३०८
 दधष बाजेषु ३,४२,६; १३८७
 दध्वणिः ८,६१,३, ५५०
 दध्वान् ४,२२,५; १५५९ । ५,२९,१४, १६८०
 दध्वन्-धा ६,४२,१; १९९८
 दमयन् पृतन्यून् १०,७४,५; २६३८
 दमायन् ६,४७,१६, २११४
 दमिता अभिक्तूनाम् ३,३४,१०, १३१०
 दमिता विश्वस्य ५,३४,६, १७३२
 दमूना ३,३१,१६; १५७५ । ६,१९,३, १८७३
 दम्पतिः ८,६९,१६, २३१८
 दम्भयन् पुनिम् १०,११३,९, २७५३
 दयते एकः देवत्रा मर्तान् ७,२३,५; २१८४
 दयमान महो धनानि १,१३०,७, १०१७
 दयमान सेनाभिः १०,२३,१; २४८१
 दरीमन् दुर्भतीनाम् १,१२९,८, १००७
 दर्ता पुराम् १,१३०,१०, १००० । ८,४,६, २३६९
 दर्भा पुराम् १,६१५, ८६० । १३०,६, १०३३ । ३४५,२;
 १४०५
 दशमः ८,२४,२३; १८१२
 दशस्यन् दाशुषे १,६१,११, ८६६
 दशम् १,६२,५-६, ११-१२, ८७६-७७, ८८२-८३; १२९,३,
 १००२ । ५३१,७, १६९९ । ३४,१, १७२७ । ६,१८,५,
 १८६० । ७,२२,८; २१७८ । ३१,९; २२३१ । ८,४५,३५;
 ४७७ । ८८,१; ८९४ । ९२,१८, २४१४ । १०,९९,१०;
 २६८९ । १४७,५; २८,८
 दक्षतमः २,२०,६; १२१३

दस्यवर्चाः १,१७३,४, १०५९
 दस्युहत्या उपमयन् १,१०३,४; ८४२
 दस्युहा १,१००,१२; ९६८ । ६,४५,२४, २०८३ । ८,७६,११;
 ६३८ । ७७,३, ६४२ । १०,४७,४, २८४५
 दस्योः हन्ता ८,९८,६; २३६९
 दस्रा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,७; ३३१२
 दाता ४,१,७, १६३६ । ६,२३,३, १९२० । ८,३३,८ २१७ ।
 ५२,५, ५१९ । १०,५४,५, २३१२
 दाता इषाम् ८,४६,२, १८४८ । ६,६०,१३ ३०६८
 दाता प्रथमः ८,९०,२ २३९२
 दाता मघानि ४,१७,८, १४९५
 दाता मह ६,२९,१ १९६२
 दाता महानां वाजानाम् ८,९२,३ २३९९
 दाता रथीणाम् ८,४६,२ १८५८ । ६,६०,१३, ३०६८
 दाता वसु दाशुषे ७,२०,२; २१५२
 दाता वसूनाम् ८,५१,५ ५०९
 दाता वाजस्य श्रवस्यस्य ८,९६,२०, २३६२
 दाता विश्ववारस्य रायः ६,२३,१० १९२७
 दाता स्तुवते काम्यं वसु २,२२,३, १२२५
 दाता स्थविरस्य वाजस्य ६,३७,५, १९७७
 दा [द] दृढाणः १,१३०,४ १०१४
 दाष्टि ४,१७,८, १४९५
 दानः ७,२७,४; २२०६
 दानवान् ८,३२,१२ १९१
 दामनः रथीणाम् ५,३६,१ १७४४
 दाशुषः अयर्वं ४,२४,१, २८६७
 दामने कृतः ८,९३,८, २४३७
 दाशत् १०,१३८,५; २७९६
 दाशान् ८,४९,२ ४८६ । १०,१०४,६; २७०८
 दिस्सत् ८,८१,३, ६७२
 दिवक्षा ३,३०,२१, १२५८
 दिवः अमुष्य शासतः ८,३४,१-१५, ४२५ ४३९
 दिवः जनिता ८,३६,४; १७७२
 दिवः दुहिता [उपाः] ४,३०,९, ३३४५
 दिवः पतिः ८,१३,८, ३९८ । ९८,४-६, २३६७-६९
 दिवः मूर्धा [अग्नि] वा० य० १३,१४, २९३०
 दिव मानः ८,६३,२; ५७९
 दिवा वसुः ८,३४,१ १५ ४२५-४३९
 दिविस्पृशा [इन्द्रवायु] १,२३,२; ३२१३
 दिवे (चतुर्धा सौः) १,५५,३, ७८८

दिव्यः ३,४७,५. १४१८ । ६,१९,११; १८८१
 दीर्घानः ३,३१,१५, १२७४
 दीर्घायु ८,७०,७. २३२७
 दुग्धः १,५७,३; ८०७ । २,१२,१५ ११३६
 दुरः अश्वस्य १,५४,२ ७७६
 दुरः गोः १,५४,२; ७७६
 दुरः यवस्य १,५४,२; ७७६
 दुरोषाः ४,२१,६; १५४९
 दुर्मतीनां प्रभङ्गः ८,४६,१९; १८३५
 दुर्हणावान् ८,२,२०; १३५
 दुःख्यवन. १०,१०३,२,७. २६९३, २६९७
 दुष्टरा (रौ) [इन्द्राश्वी] ५,८६,२, ३०४२
 दुष्टरीतुः २,२१,२, १२१८
 दुहिता दिवः [उपाः] ४,३०,९, ३३४५
 दृणाश. ७,३२,७; २२४१
 दृता उशन्ता [इन्द्रवायू] ७,९१,२; ३२३६
 दृढा ७,२७,२; २२०४
 दृढा चित् ८,२४,१०; १७९९
 दृढा चित् आरुज ३,४५,२, १४०५
 देवः १,६३,८; ८९२ । ८४,१९,९५५ । १२९,१०,१०१० ।
 १६९७, ८, १०५० । १७३, १३, १०६८ । २, ११, १३, १११३ ।
 १२, १, ११२२ । १३, ५, ११४१ । १९, ५, १२०३ ।
 २०, ६, १२१३ । २२, १-३, १२२३-२५ । ३, ३३, ६, १२९९ ।
 ४, १७, ५, १४९२ । २२, ३, १५५७ । २३, ४-५, १५६९-७० ।
 ५, ३३, ३, १७१९ । ६, १८, १४, १८६९ । ३९, १, १;
 १९८३, १९८३ । ७, ३०, ४, २०२१ । ८, १, २२-२३,
 १०८-९ । २, ७, १२२ । १२, ६, १५, १९. २९३, ३०२, ३०६ ।
 ५१, ७, ५११ । ६१, ६, ५५३ । ६५, ४, ६०४ । ९३, ११,
 २४४० । १०, २३, ७, २४८७ । ८६, १; २६४० । १०४, ९,
 २७११ । सामं १९६, २९७६ । ऋ० ५, ८६, ५, ३०४४ ।
 [इन्द्राश्वी] ६, ५९, ४-५; ३०४९-५० । ६, ६०, १४,
 ३०६९ । अथ० ७, ९७, ३; ३१२२
 देवः [वरुण.] ६, ६८, ९, ३१६९
 देवतमः ४, २२, ३, १५५७
 देवमा [अग्निः वि०] ८, ३४, ८, ४३२
 देवः देवस्य ८, ९२, ६, २४०२ । १०, २२, ४, २४६९
 देववत्-वान् १०, ४७, ३; २८४४
 देवा [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, २; ३१४७ । [इन्द्रावरुणौ] ३, ५३, १
 ३३५६ ।
 देव्य ३, ३०, १९; १२५६
 दोषतः वध २, २१, ४, १२००

दोधुवत् अमश्रु १०, २३, १, २४८१
 द्युक्ष ६, २४, १, १९२८ । ३७, २; १९७४ । ८, २४, २०;
 १८०९ । ६६, ६, ६१८ । ८८, २; ८९५
 द्युमत्-मान् १, ६२, १२, ८८३ । ६, १७, ४; १८४४ ।
 द्युमत्तमः १, ५४, ३; ७७७
 द्युम्नी ८, ८९, २, २३८५ । ९३, ८, २४३७
 द्रव्यः ८, १७, १४; ४०७
 द्रुपदे [इन्द्राश्वी] ४, ३२, २३ ३३४८
 द्रु द्रुपि १, ५२, ३; ७३२
 द्विर्द्वि-र्हाः ६, १९, १, १८७१ । ७, २४, २, २१८७ ।
 ८, १४, २; ३७० । १०, ११६, ४; २७५८
 धनजित् २, २१, १, १२९७
 धनजय ३, ४२, ६, १३८७ । ८, ४५, १३, ४५५
 धनदा. १, ३३, २; ७३१ । ६, १९, ५, १८७५
 धनदाः विश्वस्य-श्रुतः ७, ३२, १७; २२५१
 धनपतिः अथर्व० ५, २३, २, २८७५
 धनस्पृत् ३, ४६, २, १४१० । ८, ५०, ६, ५०० । १०, ४७, ४;
 २८४५
 धनातां सजित. ३, ३०, २२, १२५९ । ३१-३२, २२, १७,
 १२८१, १२९८ । ३४-३६, ११, १३११, १३२२, १३३३ ।
 ३८-३९, १०, ९; १३५४, १३६३ । ४३, ८, १३९८ ।
 ४८-५०, ५; १४२३, १४२८, १४३३ । १०, ८९, १८,
 २६७९ । १०४, ११, २७१३
 धनुः ते तुविश्वम् ८, ७७, ११, ६५०
 धरुण रयीणाम् १०, ४७, २; २८४३
 धर्तारा चर्षणीनाम् [इन्द्रावरुणौ] १, १७, २; ३१३५
 धर्ता धनानाम् १, १०३, ५, ८३२
 धर्ता दिवो रजस ३, ४९, ४; १४२७
 धर्ता विश्वस्य कर्मणः १, ११, ४ ७३
 धर्मकृत् ८, ९८, १; २३६४
 धामन् ८, ६३, ११; ५८८
 धामसाचः ३, ५१, २; १४३५
 धायु ३, ३०, ७; १२४४
 धियसानः नः ५, ३३, २, १७१८
 धियस्पती [इन्द्रवायू] १, २३, ३; ३२१४
 धीत ८, ३, १६; १७१
 धीति कृतस्य सदसः १०, १११, २, २७२६
 धीरः १, ६२, १२, ८८३५, ३९, १; १६६७, १०, ८९, ८, २६६९
 धुनि १, १७४, ९; १०७७ । ५, ३४, ५ ८; १७३१-३४ ।
 ६, २०, १२, १८९५ । [सोमः] १०, ८९, ५, ३०७६

धुनी वातस्य १०, २२, ४; २४६२
 धृतमतः [हन्द्वावरुणौ] ६, १९, ५; १८७५ । ८, ९७, ११,
 ९८६ । ६, ६८, १०, ३१७०
 धृषत् १, ५५, ३-४, ७८८-७८९ । ६, ४५, २१; २०७० ।
 ८, २१, २ ४१०
 धृषन्मना १, ५२, १२, ७७१ । ६२, ५, ५७० । ८, ८९, ४, २३८७
 धृषमाणः १, ५२, ५, ७६४
 धृषितः ८, ३३, ६ २१५ । ९६, १७, २३५९ । १०, ११३, ५,
 २७४२ । १३८, ४, २७९५
 धृष्णः ७, १९, ३; २१४०
 धृष्ण १, ३०, १४, ७१२ । ६३, ३; ८८७ । ८४, १, ९३७ ।
 २, १६, ४; ११७५ । ३, ५२, ८, १४५३ । ४, १६, ७, १४७३ ।
 २२, ५; १५५९ । ६, १७, १, १८४१ । २१, ७; १९०३ ।
 २९, ३, १९६४ । ३७, ४, १९७६ । ७, २०, ५, २१५५ ।
 ८, २४, १, ४, १७२०, १७९३ । ३३, ३, २१२ । ४५, १४;
 ४५६ । ७८, ३, ६५३ । ८१, ७, ६७६ । १०, १०३, ३,
 २६९३ । १११, ६, २७३० । १२०, ४; २७६७ ।
 धृष्णुया ४, ३०, १३, १६१८ । ६, ४६, २, २०९१
 धृष्णबोजा. ८, ७०, ३; २३२३
 धेनुः ८, १, १०, ९६
 धेनूनां भक्षयानां पति ८, ६९, २, २३००
 नक्षत्राभिः ६, २२, २, १९०८
 नदः ओदतीनाम् ८, ६९, २; २३०५
 नद योयुवतीनाम् ८, ६९, २; २३०५
 नदनुमान् ६, १८, २; १८५७
 नपात् ४, ३२, २२, १६६६
 नमस्यः । अथ० ६, ९८, १, २९०२
 नरः ३, ५१, २; १४३५ । ४, २५, ४; १५९१ । ६, ४४, ४;
 २०३२ । ८, ४०, २, ३१०२ । ८, १६, १, ३०२ । २७, १९;
 १८०८ । ९२, ८; २४०४
 नरा [हन्द्वाग्नी] ६, ६०, ८९; ३०६३-६४ । ७, २४, ३;
 ३०८१ । ८, ३८, ५-६, ३०९५-९६ । ८, ४०, ३, ३१०३ ।
 [हन्द्वावरुणौ] ७, ८२, ८, ३१७९ । ७, ८३, १, ३१८२ ।
 [हन्द्वावायू] ७, ९१, ६; ३२३९
 नरे (चतुर्थी) ६, ४२, १, १९९८
 नर्यः १, ६३, ३; ८८७ । ४, २५, ४; १५९१ । २९, २,
 १६०५ । २४, २, १९२९ । ७, २०, १; २१५१ । ५; २०५५ ।
 २५, १; २१२२ । १०, २९, १, २५१५ । ५०, २, २६०२ ।
 नर्यापसः ८, ९३, १, २४३०
 नर. [मरुतः] १, १६५, ११, ३२६०

नवः ८, २४, २३, १८१२ । [हन्द्वाग्नी] ४, ३२, २३; ३३४८
 नविष्टः ५, ३२, ११, १७१५
 नवीयम्-यान् २, १९, ८ १२०६ । ३, ३६, ३ १३२५ ।
 ६, २१, १, १८९७ । ६, ४४, ७, २०४२ । १०, २७, १९ २४०९
 नवेदाः ऋतानाम् ४, २३, ४, १५६९
 नव्यः ६, १७, १ १८५३ । ७, १८, ५, २१२३ । ८, १६, १
 ३८२ । २४, ८, २६, १७२७, १८१५
 नहुष नहुषः १०, ४९, ८ २५९७
 नाम बिभ्रत् श्रुत्यम् ५, ३०, ५; १६८६
 नामा ते चत्वारि असुर्याणि १०, ५४, ४; २६११
 निचुम्पुण ८, ९३, २२, २४५१
 निमेषमान दिवेदिवे ८, ४, १०; २३८
 नियन्ता सृष्टानां शचीनाम् ८, ३२, १५, १९४
 नियुक्त्वस्त्वान् १, १०१, ९, ८२५ । ६, ४०, ५ १९९२ ।
 ८, ९३, २०; २४४९ । ६, ६०, २, ३०५७ । [हन्द्वावायू]
 २, ४१, ३; ३२२० । [वायुं] ४, ४६, २, ३२२१ । ४, ४७, ३,
 ३२२८ । ७, ९१, ५; ३२३८
 नियुक्त्वान् वसुभिः ३, ४९, ४, १४२७
 निवरः ८, ९३, १५; २४४४
 निवेशनः [अग्नि] वा०य० १२, ६६; २९२९
 निशितः सोमसुद्धि ४, २४, ८, १५८४
 निष्टुर ८, ३२, २७ २०६
 नृजिन् २, २१, १, १२१७
 नृतम ३, ३०, २२ १२५२ । अयमम्रः द्वादशकृत् ३, ५०, ५;
 १४३३ । पुनरपि च १०, ८९, १८, २६७९ । १०४, ११, २७१३ ।
 इत्यादिस्थलेषु पुनरुक्तः । ३, ४९, २ १४२५ । ४, १७, ११,
 १४९८ । २२, २; १४५६ । ६, १८, ७; १८६२ । ८, २४,
 १-१०; १७९०-९९ । १०, २९, १ २; २५१५-१६ । ८९, १
 २६६३
 नृतमः नृणाम् ४, २५, ४, १५८९ । ६, ३३, ३; २०१८
 नृतम नराम् ७, १९, १० २१४९
 नृतमः शार्के ४, १७, ११; १७९८
 नृतुः २, २२, ४; १२२६ । ८, २४, १२, १८०१ । ६८, ७;
 २२९७ । ९२, ३; २३९९ । १, १३०, ७, १०१७
 नृपतिः १, १०२, ८, ८३५ । ४, २०, १, १५३३ । ७, ३०, १;
 २२१८ । ८, ५४, ६; ५३६ । १०, ४४, २३, २५६९ ७०
 नृपाता नराम् १, १७४, १०; १०७८
 नृमणः १, ५१, ५, १०, ७४२, ७५४ । ४, १६, ९, १ ६७५ ।
 ७, १९, ४; २१४३ । ८, ९६, १३; २३५७
 नृमणः २, १२, १, ११२२ । अथ० ४, २४, ३, २८६९

नृवत् वान् ६,२२,३, १९०९

नृषात्ता ७,२७,१, २२०३

नृषाह् ८,१६,१, ३८०

नेमिः ८,९७,१२ ९८७

न्यृष्टः वसुना १०,४२,२ २५४७

न्योकाः १,९,१०, ५७

पणि. ८,४५,१४; ४५६

पति. १,५४,२; ७७६ । ६१,२; ८५७ । ३,३९,१; १३५५ ।

४,१६,७. १४७३ । ८,१३,९ ३२०. । ८०,९; ६६९ ।

१०,७४,६, २६३९ । ९९,६, २६८५ । १०५,२, २७१५ ।

अथर्वं ६,३३,३, २८८९

पति. अघ्न्यानां धेनूनाम् ८,६९,२; २३०५

पति. कृष्टीनाम् ६,४५,१६, २०७५ । ८,१३,९, ३२९

पतिः जनानाम् ६,३४,४, २०३४

पतिः दिवः ८,१३,८; ३२८ । ९८,४,५,६; २३६७ ६८-६९ ।

१११,३, २७२७

पति. पृथिव्याः [अग्नि] वा० य० १३,१४; २९३०

पतिः राघस तरस्य ६,४४,५, २०४५ । ५,८६,४ ३०४३

पति. राधानाम् ३,५१,१०; १४४३

पतिः वाजरय दीर्घश्रवसः १०,२३,३; १४८३

पतिः वाजानाम् ६,४५,१०; २०६९ । ८,२४,८, १८०७ ।

९२,३, २४२६

पतिः वार्याणाम् १०,२४,३; २४९०

पतिः विश्वस्य जगतः प्राणत. १,१०१,५; ८०१

पतिः विश्वानरस्य अनानतस्य शवसः ८,६८,४; २०९४

पतिः शवसः मह. १०,२२,३, २४६८

पति. शश्वतीनाम् ८,९५,३, २३३८

पति सिन्धूनां रेवतीनाम् १०,१८०,१; २८३९

पतिः सूनुनां गिराम् ३,३१,१८, १२७७

पतिः सोमानाम् ८,९३,३३; २४६२

पतिः हरीणाम् ८,२४,१४; १८०३

पथिकृत् ६,२१,१२ १९०६

पथिकृत् सूर्याय १०,१११,३; २७२७

पनस्य ८,९८,१. २३६४

पनीयान् १,५८,३; ८१३

पन्य ३,३६,३; १३२५ । ८,३२,१७-१८. १९६ १९७

पपानः मधो साम० २९४; २९८१

पपिः सोमम् ६,२३,४; १९२१

पपिवान् ५,२९,३, १६६९

पपिवान् सुतस्य ५,२९,२, १६६८

पपुतिः ४,२३,३, १५६८

पप्रिः ८,१६,११; ३९२

पप्रिः अन्धसः १,५२,३; ७६२

परः १,८,५,४२ । २,१३,१०; ११४६ । ५,३०,५, १६८६ ।

८,६९,१४, २३१६ । १०,८,७, २४६३

परम. ५,३०,५; १६८६

परमज्या ८,९०,१, २३९९

परस्था ८,६१,१५, ५६२

परस्फानः अथ० १९,१५,३, २९१६

पराददिः १,८१,२, ९१७

पराशर. यातूनाम् ७,१०४,२१; २०८९

परिप्रीत. वार्येण पन्यसा १०,२७,१२, २५००

परुष्णीं ऊर्णाम् उषमाणः ४,२२,२ १५५६

परोमात्र ८,६८,६, २२९६

पर्वतेष्ठाः ६,२२,२; १९०८

पाञ्चजन्यः ५,३२,११, १७१५

पाञ्चजन्यः शवसा १,१००,१२; ९६८

पात् वैशन्तं पान्तम् (द्वि०) अति ७,३३,२, २२६३

पाता ८,२,२६; १४१

पाता नराम् २,२०,३, १२१०

पाता सुतम् ६,२३,३; १९२० । ४४,१५, २०५०

पादाः ते ऋष्या १०,७३,३; २६२५

पावकः ८,१३,१९; ३३९

पिता ३,३६,१२; १२७१ । ४,१७,१७, १५०४ । ८,६,१०;

२५२ । ५२,५, ५१९।९८,११. २३७४।१०,८,७ २४६३ ।

२२,३, २४६८

पितृतमः पितृणाम् ४,१७,१७; १५०४

पितृणा कर्ता ४,१७,१७; १५०४

पिपीषत् ६,४२,१, १९२८

पिशंगरातिः ५,३१,२; १६९४

पीत्वी सोमस्य १०,५५,८, २६२१ । ११३,१, २७४५

पुत्रः शवसः ८२०,२, २३९२

पुर. स्थाता ८,४६,१३, १८२९

पुर एता ६,२९,१२; १९०६

पुरन्दर १,१०२,७; ८३४ । २,२०,७; १२१४ । ५,३०,

११, १६८२ । ८,१७,८, ९३-९४। ६१,८,१०; ५५५,५५७

पुरन्दरा (रौ) [हन्द्राणी] १,१०९,८; ३०२८

पुरां भिन्दु. १,११,४; ७३

पुरां भेत्ता ८,१७,१४; ४०७

पुराजाः ३,३१,१९; १२७८ । ६,३८,३; १९८१

पुराषाट-साह १०, ७४, ६, २६३९
 पुरुकृत् १, ५४, ३, ७७७ । २, १३, ८, ११४४ । ६, २१, ५, १९०१ । ८, ६१, ६, ५५३ । १०, १७९, ३, २८३८
 पुरुक्षुः ४, २९, ५, १६०८ । ६, २२, ३, १९०९ । १०, ७४, ५, २६३८
 पुरुक्षुः वामरूप वसुन्त ६, १९, ५ १८७५
 पुरुगूर्त ६, ३४, २; २०२२
 पुरुणामन् नामन् ८, ९३, १७, २४४६
 पुरुतमः १, ५, २, १५ । ३, ३९, ७, १३६१
 पुरुमा ८, २, ३८; १५३
 पुरुत्रा ८, ३३, ८, २१७
 पुरुद्वयः ६, १८, ९; १८६४
 पुरुधर्मगीकः ३, ४८, ३; १४०१
 पुरुधर्मन् साम ३२७, २९८३
 पुरुनि. विष् १, १०, ५, ६२
 पुरुनृण ८, ४५, २१; ४६३
 पुरुप्रशस्तः ६, ३४, २, २०२२
 पुरुभोजाः ८, ८८, २; ८९५
 पुरुमायः ३, ५१, ४, १४३७ । ६, १८, १२; १८६७ । २१, ७ १८९८ । २२, १; १९०७
 पुरुकृत् १०, १०४, ५; २७०७
 पुरुवर्षस्-पाः १०, १२०, ६, २७६९
 पुरुवारः उक्तैः ४, २१, ५; १५४८
 पुरुवीर ६, २२, ३, १९०९
 पुरुशाकः ३, ३५, ७, १५१८ । ६, २१, १०, १९०५ । २४, ४; १९३१ । ७, १९९, ६, २१४५
 पुरुष्टु [स्तु] तः १, ११, ४; ७३ । ५८, ४; ८१४ । १०२, ३; ८३० । ३, ३७, ४, १३३७ । ४५, ५; १४०८ । ५२, ६, १४५१ । ४, २१, १०; १५५३ । ५, ३४, १, १७२७ । ८, १३, २४-२५ ३४४-४५ । १५, १, ३, ११; ३६९, ३७१, ३७९ । ३२, ३०; २०९ । ३३, ६; २१५ । ४६, १२, १८२८ । ६२, ७, ५७२ । ६६, ५; ६१७ । ७६, ७; ६३४ । ९२, २, २३२८ । ९३, १७, २४४६ । १०, ३२, २; २५३१ । ३८, ३; २५४३ । ३, ६०, ६, ३३४२ ।
 पुरुहूतः १, ३०, १०, ७०८ । ५१, १; ७४५ । ६३, २, ८८६ । १००, ६, ११, १८; २६२, ९६७, ९७४ । १०४, ७; ८५३ । ११४, ३; १०७१ । १७७, १; १०९१ । ३, ३०, ५, ७, ८, १०; १२४२, १२४४-४५, ४७ । ३२, १६, १२९७ । ३५ २; १३१३ । ३७, ५; १३३८ । ४०, २, १३६५ । ५१, १; १४३४ । ५१, ८; १४४८ । ४, १६, ८; १४७४ । १७, ५; १४९२ । २०, ५, ७.

कै० [इन्द्रः] ४०

१५३७, ३९ । ५, ३०, १; १६८२ । ३१, ४, १६९६ । ३६, २-३; १७४५-४६ । ६, १८, १, ११; १८५६, १८६६ । १९, १३, १८८३ । २१, ५, १२०१ । २२, ४, ११; १९१०, १७ । २३, ८; १९२५ । २४, ३; १९३० । २७, ६, १९६० । ३४, २, २०२२ । ४५, २२, २०८१ । ४७, ११ २१०९ । ७, २४, १, २१८६ । २५, ७, २२०४ । ३२, १७, २०, २६; २०५१, ५४, ६० । ८, १४, १; ३६९ । १६, ११, ३९२ । २१, १२, ४२० । २४, ८-९, १७९७-९८ । ४६, १५, १८३१ । १०, ४२, १०, २५५५ । ४३, २, १०; २५५८, २५६६ । ४४, १०, २५७७ । १०, ४, १, १०, २७०३, २७१२ । १४७, ३; २८०६ । १८०, १ २८३९ । ८, ६६, ६, ११, १३, ६१८, ६२३, ६२५ । ९०, २, २३९८ । ९८, १२, २३७५ । २, ३२, ३; ३३५१
 पुरुहूतः पुरु ८, २, ३२, १४७ । १६, ७, ३८८
 पुरुतमः पुरुणाम् ६, ४५, २२, २०८८
 पुरुवसुः १, ८१, ८, ९२३ । ६, २२, ४, १९१० । ८, १, १२; ९८ । ३, ३, १५८ । ३२, ११; १९० । ४६, १, ७ १३, १८१७, १८२३, १८२९, ४६, १३; १८२९ । ४९, १, ४८५ । ५२, ५, ५१९ । ६१, ३, ५५०
 पुरुवसु सनात ७, ३२, २४, २०५८
 पुरोभूः ३, ३१, ८; १२६७
 पुरोयुधः १, १३२, ६, १०३३
 पुरोयोधः ७, ३१, ६; २०२८ । [इन्द्रावरणा] ७, ८२, ९, ३१८०
 पुरोहा ६, ३२, ३, २०१३
 पुरोहितः विश्वस्मा कर्मण १, ५६, ३; ७९९
 पू. त्वम् असि ८, ८० ७ ६५७
 पूर्णबन्धुरः १, ८२, ३ ९२७
 पूर्मित ३, ३४, १; १३०१ । ५१, २ १४३५ । ८, ३३, ५, २१४ । १०, ४७, ४; २८४५ । १११, १०, २७३४ । १०४, ८; २७१०
 पूर्मित्तमः ८, ५३, १; ५२५
 पूर्वः ३, ३८, ५, १३४९
 पूर्वजा ८, ६, ४१, २८३
 पूर्वयावा क्षितीना मानुषीणां विशा दर्वानाम् ३, ३४, २ १३०२
 पूर्व्यः ३, ३२, १०, १२९१ । ५, ३५, ६; १७४१ । ६, २०, ११; १८९४ । ३७, २, १९७४ । ८, ३, ७, ११, १६२, १६६
 पूर्व्यः महानाम् ८, ६३, १, ५७८
 पूषणवान् ३, ५२, ७, १४५२ । १, ८२, ६, ९३०
 पूषणतयः [मरुद्गा.] १, २३, ८; ३२४८
 पूषवन् दक्षम् ८, २४, १४; १८०३
 पूनानां तरुता विश्वासाम् ८, ७०, १, १३२१

पृतनापाठ १,१७५,२; १०८० । ६,१९,७,१८७७ । ४५,८,
 २०६७ । १०,१०३,७, २६९७
 पृतनासु सासहि. ८,७०,४; २३२४
 पृथिव्या जनिता ८,३६,४, १७७०
 पृथिव्या पति. [अग्नि] वा० य० १३,१४, २९३०
 पृथु २,२१,४, १२२० । ६,१९,१ १८७१
 पृथुजवाः ३,४९,२, १४२५
 पृथुबुध १०,४७,३; २८४४
 पृदाकुमानु ८,१७,१५, ४०८
 पृष्ट ३,४९,४, १४२७
 पौर अश्वस्य ८,३१,६, ५५३
 प्रकृत अप्वरस्य १०,१०४,६, २७०८
 प्रखावः १,१७८,४ १०९८
 प्रचर्षणी [इन्द्राग्नी] अथ० ७,११०,२, ३१३२
 प्रचेता. ७,३१,१० २२३२ । ८,९०,६, २३९६
 प्रजा कृतस्य ८,६,२; २४४
 प्रजानन् ३,३५,४,८; १३१५,१३१९
 प्रणेता ३,३०,१८,१२५५ । ८,२४,७,१७९६ । ४६,१; १८१७
 प्रणेता वस्य. अल्ल ८,१६,१०; ३९६
 प्रणेनीः ६,२३,३ १०२०
 प्रतिमानम् ओजस. १,१०२,८ ८३५
 प्रतिमानम् सत. सत. ३,३१,८, १२६७
 प्रतः १,६१,२, ८५७ । ३,४२,९, १३९० । ६,२२,७,
 १९१३ । ३९,५ १९८७ । ४५,१९, २०७८ । ८,६,३०; २७२
 प्रवज्ञाण - श्वसम् [हिं०] १०,४४,१,२५६८ । ४४,३,२५७०
 प्रथम. ५,३१,१; १६९३
 प्रथम उपमानाम् ८,६१,२, ५४९
 प्रथमः जातः एव २,१२,१; ११२०
 प्रथमः दाता ८,९०,२, २३२०
 प्रथमः ब्रह्मणे १,१०१,५, ८२१
 प्रथमः यजियानाम् ६ ४१,१; १९९३
 प्रथम जायमानः ४,१७,७, १४२४
 प्रदिव. १,५४,२, ७७६ । ३,५१,४, १४३७ । ६,२३,५;
 १९२० । ४४,१२; २०४७
 प्रदिशमानः कृतेन ३,३१,२१; १२८०
 प्रपन्थितम् १,१७३,७, १०६२
 प्रद्युवाणः जनेषु बलानि १०,५४,२; २६०९
 प्रभङ्गः दुर्मतीनाम् ८,४६,१९; १८३५
 प्रभङ्गी ८,६१,१८, ५६५
 प्रभजन् मेनाः [बृहस्पतिः] वा० य० १७,३६; २९३२

प्रभती १,१७८,३, १०९८ । ८,२,३५; १५०
 प्रभूवसुः १,५८,४; ८१४ । ८,४५,३६; ४७८ । साम०
 २१२, २९७८
 प्रमतिः ४,१६,१८, १४८४ । ६,४५,४; २०६३ । ७,२९,
 ४; २२१६
 प्रमथिन् ६,३१,५; २०१०
 प्रमरः १०,२७ २०, २५१०
 प्रमिनातः १०,२७,१९; २५०९
 प्रमृणन् ओजसा १०,१०३,६ २६९६
 प्रयज्युः ६,२१,१०, १९०५ । २२,११; १९१७
 प्रयन्ता ८,२३,२१, २४५०
 प्रया[य] वयन् अयान् ३,४८,३; १४२१
 प्ररिका क्षमः दिवः च १,१००,१५, ९७१
 प्रवयाः २,१७,४, ११८४
 प्रविद्वान् अथर्व० ७,९७,१; ३१२०
 प्रवीरः १०,१०३,५, २६९५
 प्रवृद्धः १,३३,३. ७३२ । ८,६,३३; २७५ । १२,८; २९५।
 ७७,३, ६४२। ९३,५, २४२४। ९६,२; २३४६ । वा० य०
 ३३.७९; २९७० । ऋ० १,१६५,९; ३२५८
 प्रवेपनी ५,३४,८; १७३४
 प्रवर्धः ८,४,१, २२९
 प्रसन्निन् ८,३२,२७; २७६
 प्रसाहः ६,१७,४; १८४४
 प्रहावान् समिधेषु ४,२०,८; १५४०
 प्रहेतु-ता ८ ९९,७, २३८२
 प्रचामन्युः ८,६१,९, ५५६
 प्राविता ८,९६,२०; २३६२
 प्राशुषाट ४,२५,६; १५९३
 प्रासहः १,१२९,४,४। १००३,१००३ । १०,७४,६; २६३९।
 ८ ४६,२०; १८३६
 प्रिय ८,५०,३; ४९७ । ९८ ४; २३६७
 प्रेतारा (रौ) धिय. [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,५; ३१५०
 प्रीणाना [इन्द्रवायू] ७,९१,५; ३२३८
 ब्रधुमान् ८,२१,४; ४१२
 बभिः वज्रम् ६,२३,४; १९२१
 बभू [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३-२४; ३३४८-४९
 बर्हणा १,५५,३, ७८८ । ५७,५; ८०९
 बहिः ओकाः [तदोकाः] ३,३५ ७, १३१८
 बलविज्ञायः १०,१०३,५; २६९५
 बहुलाभिमानः १०,७३,१; २६२३

बाहुवर्ध १०, १०३, ३; २६९४
 बाह्वेगण्यौ संस्कृते ८, ७७, ११; ६५०
 बाह्वोजा १०, १११, ६; २७३०
 बह्वुक्थः ८, ३२, १०; १८९
 बह्व-न् १, ९, १०; ५७ । ५५, ३, ७८८ । ५८, १, ८११ ।
 २, १६, २; ११७३ । ३, ३२, ७, १२०८ । ४, १७, ६, १४९३ ।
 ६, १८, २; १८७२ । २४, ३; १९३० । ८, ८९, ३, २३८६ ।
 ९८, १; २३६४ । १०, ४७, ३, २८४४ । [हन्त्रावरुणौ]
 ४, ४१, १०; ३१५६ । [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९ ।
 [हन्त्राविष्णु] ७, ९९, ६; ३३१६
 बृहद्विषः ४, २९, ५; १६०८
 बृहज्जातुः ८, ८९, २; २३८५
 बृहद्विः-द्रव्ये (चतुः) १, ५७, १, ८११
 बृहद्वेणुः ६, १८, २; १८५७
 बृहच्छवाः १, ५४, ३; ७८८
 बृहत्स्रतिः २, ३०, ४ १२३०
 ब्रह्मः १, ६, १; २४
 ब्रह्मन्-ह्य ६, ४५, ७; २०६६ । ७, २९, २; २२१४ । ८,
 १६, ७; ३८८ । अथ २०, २, ३; २९१७
 ब्रह्मजुतः ३, ३४, १, १३०१ । ७, १९, ११; २१५०
 ब्रह्मवाहसु-ह्य १, १०१, ९, ८२५ । ५, ३४, १; १७२७ । ३९, ५,
 १७६४ । ६, २१, ६; १९०२ । ६, ४५, ४, ७; २०६३, २०६६
 ब्रह्मवाहस्तमः ६, ४५, १९, २०७८
 ब्रह्मपंशितः [ह्युः] वा० य० १७, ४५; २९३४
 भृगः २, ११, २१, ११२१ । १५, १० ११७१ । १६, ९;
 ११८० । १७, ७; ११८७ । १७, ९, ११८९ । १८, ९; ११९८ ।
 १९, ९; १२०७ । २०, ९; १२१६ । ३, ३६, ५; १३२७
 भद्रकृत् स्तोत्राणाम् ८, १४, ११, ३६४
 भद्रवातः १०, ४७, ५, २८४६
 भद्रहस्ता (स्त्री) [हन्त्राक्षी] १, १०९, ४, ३०२४
 भर्ता धृत्वाः वज्रस्य १०, २२, ३; २४६८
 भर्ता वज्रं नयम् १०, ७४, ५; २६३८
 भार्गवः ४, २१, १०; १५५०
 भिन्दुः पुराम् १, ११, ४, ७३
 भीमः १, ५६, १; २७ । ५८, ३, ८१३ । ८१, ४; ९१९ ।
 १००, १२, ९६८ । ४, २०, ६; १५३८ । ७, २१, ४; २१६४ ।
 १०, १८०, २; २८४०
 भुवर्णिः १, ५७, १; ८०५
 भुवनस्य पुरात् ८, ३७, ३; १७७८
 भूरिकर्मा १, १०३, ५; ८४३

भूरिगुः ८, ६२, १०; ५७५
 भूरिदाः ४, ३२, १९, २०, २१; १६६३-६४-६५
 भूरिदासः ३, ३४, १, १३९१
 भूरिदावत्तरौ [हन्त्राक्षी] १, १०९, ९; ३०२२
 भूरिवारः १०, २७, २; २८४३
 भूः ईशानः ८, ३३, १४ १९३
 भूर्गोसुतिः ८, ९३, १८, २४४०
 भूमि ४, ३२, २; १६४६
 भृष्टिमान् साम० ३२७; २९८३
 भेत्ता पुराम् ८, १७, १४, ४०७ ।
 भोजः २, १४, १०; ११५९ । २, १७, ८, ११८८ । ८, ७०, १३,
 २३३३ । १०, ४२, ३; २५४८
 भ्राता ३, ५३, ५ १४५७
 भ्रातरा (रौ) [हन्त्राक्षी] ६, ५९, २; ३०४७
 भ्रातृवन् तिग्मानि भ्रातृयानि १०, ११६, ५, २७५९
 मंहिष्ठः १, ३०, १, ९९९ । ५०, १, ७४५ । ५८, १ ८११ ।
 ६१, ३; ८५८ । १३०, १, १०११ । ६, ४४, ४, २०३९ ।
 ८, १, २, ८८ । १५, १० ३७८ । १६, १; ३८२ । ८८, ६,
 ८९९ । ९७, १३, ९८८ । [हन्त्रावरुणौ] ४, ४१, ७, ३१५२
 मंहिष्ठरातिः १, ५२, ३; ७६२
 मंहिष्ठ मघोनाम् ५, ३९ ४; १७६३ । [हन्त्रावरुणौ] ६, ६८, २,
 ३१६०
 मघवन १, ३२, ३, १३, ७१७, ७२७ । ३३, १२, १५; ७४१, ७४४ ।
 ५२, ११, ७०० । ५५, १; ७८६ ५६, ४, ८०० । ८२, १, ३;
 ९२५, ९२७ । ८४, १९; ९५५ । १०२, ३, ३-४, ७, १०,
 ८३०-३०-३१, ३४, ३७ । १०३, २, ४, ८४०, ४२ । १०४, ५, ८,
 ८५१, ५४ । १३२, १, १०२८ । १३३, ३; १०३६ । १७३, ५,
 १०६० । १७४, १, ७, १०६९, १०७५ । १७८, ५, ११०० ।
 ३, ३०, ३, ५, १६, २१, २२, १२४०, १२४०, १२५३, ५८, ५९ ।
 ३१, १४, १९, २२, १२७३, ७८, ८१ । ३२, १, १७, १२८२, ५८ ।
 ३४-३५, ११, १३११, १३२२ । ३६, १० ११; १३३२-३३ ।
 ३८, १०, १३५४ । ३९, ९, १३६३ । ४३, ५, ८; १३९५,
 १३९८ । ४७, ४, १४१७ । ४८-५०, ५; १४२३, १४२८,
 १४३३ । ५१, १; १४३४ । ५३, २, ४, ५, ८, ५४ १४५४,
 ५६, ५७, ६०, ६६ । ४, १६, १, ९, १२, १४६७, ७५, ८५ ।
 १७, ५, ७, ८, ९, ११, १३, १३, १९, २०; १४९२, ९४, ९५, ९६,
 १४९८, १५००, १५००, १५०६-७ । १८, ९; १५१७ ।
 २०, २; १५३४ । २२, १; १५५५ । २०; १५६४ ।
 ४, २४, २; १५७८ । २८, ५; १६०३ । २९, ५; १६०८ । ३०, ७;
 १६१५ । ३१, ७; १६३३ । ५, २९, ५-६, ८; १६७ १७२, ७४ ।

३०, ३, ७, १६८४, ८८ । ३१, १, ६; १६९३, ९८ । ३४, २-३;
 १७२८ २९ । ३६, ३, ४, १७४६-१७४७ । ६, १९, १,
 १८७१ । २१, ६; १९०० । २३, १ १९१८ । २४, १; १९२८ ।
 २७, ३; १९५७, ४४, १०, १७, १८, २०४५, ५२, ५३। ४६, ८, १०,
 २०७७, ९९ । ४७ ९, ११, १५, २१०७, ९, १३ । ७, १८, २,
 २१२० । १९, ८, ९, २१४७-४८ । २०, ९; २१५९। २२, ३, ६;
 २१७३, ७६। २६, १, २ २१९८-९९। २७, २, २, ४; २२०४, ४, ६ ।
 २८, ५, २२१२ । २९ १, ३, ४, ५, २२१३, १५, १६, १७। ३०, ५,
 २२२० । ३२, ७, १४, १५, २२४१, ४८, ४९। ३२, १९, २१, २३,
 २४, २५, २२५३, ५५, ५७, ५८, ५९। ३३, ५, २२८३, १०४, १०;
 २२८७ । ८, १, ४, १२, ९०, ९८। २, १३; १२८। ३, १४, १७, १८
 १६९, ७२, ७३। ४, ४, १०, २३२, ३८। २१, १०, ४१८। २४, १०,
 १६; १७९९, १८००। ३२, ८, १८७। ३३, ३, ९, ११, १३,
 २१२, १८, २०, २२। ३६, २ १७७० । ४५, ६ ४४८ ।
 ४६, ११, १३ १८२७, २९ । ४७, १, ९, १०, ४८५, ९३, ९४ ।
 ५०, १० ५०४ । ५१, १, ६, ७ ५०५, १०, ११। ५२, ५, ८;
 ५२९ २० । ५३, १, ५२५ । ५४, ७; ५३७ । ६१, १, ४, ७,
 १३, १४, १८, ५४८ ५१, ५४, ६०, ६१, ६५ । ६२, १०; ५७५ ।
 ६५, १०; ६१० । ६६, १३; ६२५ । ७०, ६, ९, १५; २३२६,
 २९, ३५ । ७८, १०; ६६० । ८८, ६, ८१९ । ८९, ५, २३८८ ।
 ९०, ४; २३९४ । ९३, १०; २४३९ । ९६, २० २३६२ ।
 ९७, १, ८, १३, ९७६, ८३, ८८ । १००, ६; ९९६ । १०, २३,
 २, ३, २४८२-८३ । २८, ३, २५२४ । ५; २५२६ ३३, ३;
 २५४० । ४२, ३, ८; २५४८, ५३ । ४३, १, ३, ५, ५, ६ ८;
 २५५७, ५९, ६१, ६१, ६२, ६४ । ४४, ९, ९; २५७६-७६ ।
 ४९ १६, २६०० ५४, १, ४, ५; २६०८, ११, १२ । ५५, १,
 २६१४ । ७४, ५; २६३८ । ८९, १८; २६७९ । १०३, १०;
 २७०० । १०४, ७, ११; २७०९, १३ । १११, ६; २७३० ।
 ११२, ९, १०; २७४३, २७४४ । ११३, २, २७४६ ।
 ११६, ७, ७, २७६१, २७६१ । १३४, ६; २७९० ।
 १०, १४७, ३; २८०६ । १४७, ४, ५, २८०७-८ । १६०, ४,
 २८२७ । १६७, २; २८३० । अथ० ७, ३१, १, २९०५ ।
 वा० य० ७, ४ २९२३ । २०, ७७; २९६१ । ३३, ७९;
 २९७० । साम० २९८, २९८२ । ऋ० ५ ८६, ३; ३०४२ ।
 १, १६५ ९; ३२५८ । १, १७१, ३, ३२६५ । अथर्व० ८, ४,
 १९; ३२९६ । ऋ० ३, ६०, ५, ३३४१ । [इन्द्राग्रहाण-
 म्यती] २, २४ १२, ३३५९
 मघवन्तम ८, ५४ ५, ५३५
 मघानां विभक्ता ७, २६ ४, २२०१
 मघानि दाता ४, १७, ८, ४९५

मघोनां उपम ८, ५३, १, ५२५
 मघोनां महिष्ठ. ५, ३९ ४, १७६३
 मतिः (ते- संबो०) ८, ६८, २; २२९२
 मत्वः ३, ३४, २, १३०२
 मथायन् नमुचेः शिरः ५, ३०, ८; १६८९
 मदः शुष्मिन्तमः ते १, १७५, ५, १०८३
 मदच्युत् १, ५१, २; ७४६
 मदपती मदानाम् [इन्द्राग्रिण्] ६, ६९, ३; ३३०८
 मदवृद्धः १, ५२, ३, ७६२
 मदिन्तमः ८, १३, २३; ३४३
 मदे हितः ८, ९३ ८, २४३७
 मद्य ८, २, २५; १४०
 मद्भने (चतुर्थी) ८, २२, १०, २४१५
 मनस्वान् २, १२, १; ११२२
 मनुर्हितः [अग्नि] ८, ३४, ८, ४३०
 मनोजुवः वा० य० १७, २३; २९३१ । [इन्द्रवायू]
 ऋ० १, २३, ३, ३२१४
 मनोः वृधः ८, ९८, ६, २३६९
 मन्तुमन् (म- सं) १०, १३४, ६, २७९०
 मन्त्रः १०, ५०, ४; २६०४
 मन्दङ्गीरः ८, ६९, १; २३०४
 मन्दमान १०, ५०, १, २६०१ । ७३, ५, २६२७ । ११२,
 २; २७३६
 मन्दमानः १, १०, ११; ६८ । १००, १४; ९७० । १३१, ४;
 १०२४। २, ११, ३, १५, १७, ११०३, १५, १७। ३०, ५; २२३१ ।
 ४, २६, ३; १५९८। २९, १, १६०४ । ४, ३२, १०; १६५४।
 ५, २९, २; १६६८ । ६, २६, ६; १९५२ । ४, १७, ३; १४९० ।
 ६, १७, ५, १८४१ । ६, ६४, १५, २०५० । ८, ४९, ४
 ४८८ । ९३, २१, २४५० । [इन्द्रावृहस्पती] ४, ५०, १०;
 ३३२३ । अथ० २०, १३, १, ३३२९
 मन्दमान सुस्वनिभिः ४, २९, २; १६०५
 मन्दानः १, ८०, ६; ९०५। ८२, ४, ९२९। २, १९, २, १२०० ।
 ३, ५०, ३, १४३१ । ५ ३२, ६, १७१० । ८, १३, ४; ३२४ ।
 १५, ५; ३७३ । ३२, ५, १८४ । ३३, ७; २१६ । ८८, १;
 ८९४ । ४५, ३१; ४७३ । १९, १६७, २; २८३० । ७, ९४,
 ११, ३०८९
 मन्द् [इन्द्रामरुतः] १, ६, ७ ३२४६
 मन्दिन्-न्दी १, ९, २, ४९
 मन्दिष्ठः साम० २२६; २९७९
 मन्द्रः १०, ७३, १, २६०३

मन्यमानः ७, २२, ८, २१७८
 मन्युः अथ० ७, ९३, १ २९१३
 मन्युमीः १, १००, ६, ९६२
 मरुतां वेधाः १, १६९, १; १०४३
 मरुत्वान् १, ९०, ११, ९१० । १००, १-१५, ९५७-९७१ ।
 १०१, १-७, ८; ८१७-८२३, ८२४ । ३, ३५ ७, १३१८ ।
 ४७, १, ५; १४१४, १८३, ५०, १; १४२९ । ५१ ७, १४४० ।
 ४, २१, ३; १५४६ । ६, १९, ११; १८८१ । ८, ३६, १-६;
 १७६९-१७७४ । ७६, १, ५-८, ६२८, ६३२ ६३५ । १, २३, ७;
 ३२४७
 मरुत्सत्त्वा ८, ७६, २, ३, ९, ६२९ ६३०, ६३६
 मर्हिता १, ८४, १९, ९५५ । ४, १७, १७; १५०४ । १८, १३,
 १५२१ । ८, ६६, १३; ६२५ । ८०, १, ६६१
 मर्यत् १०, २७, १२; २५०२
 महः १, १०२, १, ८२८ । ३, ३४, ६, १३०६ । ६, २९, १;
 १९६२ । ६, ४६, २; २०९१ । ८, १६, ३, ३८४ १०, २२, ३;
 २४६८ । ९९, १२; २६९१ । १२०, ८; २७७१
 महो (चतु०) १, ६२, २, ८७३ । ५, ३३, १; १७१७ ।
 ६, ३२, १; २०११ । ७, २४, ५; २१२० । ३१, १०; २२३२ ।
 ८ ९६, १०, २३५४ । १०, ५०, १; २६०१ [विष्णुः] १, १५५, १;
 ३३०३ ।
 महाम् [हि०] २, २२, १ १२२३ । ३, ४९ १ १४२४ ।
 ४, १७, ८; १४९५ । ४, १९, १; १५२२ । ६, १७, १३;
 १८५३ । ४, २३, १ १५६६ । ६, ३८, ५ १९८२ । ६, २९ १;
 १९६२ । ६, १७, ४, १८४४ । ८, ६५, ३ ६०३
 महान् १, ४, १०; १३ । ८, ५; ४२ । ५७, ३ ८०७ । ६३, १
 ८८५ । २, १५, १, ११६० । ३, ३१, १८ १२७७ । ३६, ४, ५
 १३२६-२७ । ४६, १, २ १४०९-१० । ४, १७, १ १४८८ ।
 २१, ६, १५४९ । २२, १, ५, १५५५, १५५९ । ४, ३०, ९
 ३३४५ । ४, ३२, १ १६४५ । ७, ३१, ७ २२२९ । ८, १, २७
 ११३ । ६, ४५, १३ २०७२ । ८, १३, १ ३२१ । ३२, १३,
 १९२ । ५२, ५, ५१९ । ६४, २ ५९० । ६५, ४ ६०५ ।
 ९२, ३, २३९९ । ९५, ४; २३३९ । ९८, २ २३६५ ।
 वा० य० २६, १०, २९६६ । १, २१, ५, ३००६ । [इन्द्रावरुणौ]
 ७, ८२, २ ३१७३
 महान् भोजसा ८, ६ १, २६ २४३, २६८ । ३३, ८ २१७
 महान् क्त्वा १, ८१, ४; ९१९
 महान् ब्रह्मणा १०, ५०, ४ २६०४
 महान् महिना ८, १२, २३ ३१०
 महान् महीभिः शचीभि ८, २, ३० १४७ । १६, ७, ३८८

महान् महीनाम् १०, १३४, १ २७८५
 महानां दाता ८, ९२, ३ २३९९
 महानां पति ८, ९३, ३१ २४६०
 मह दाता ६, २९, १ १९६२
 महः क्षयस्य ८, ६१, १४, ५६१
 महः धृष्ण्या ६, ४६, २ २०९१
 मह राघस्य ८, ६१, १४ ५६१
 महामहः ८, २४, १० १७९९ । ३३, १५ २०४ । ४६, १०,
 १८२६ । १०, ११९, १२, २७६१
 महायय. ८, ७०, ८, २३२८
 महावध. ५, ३४, २, १७२८
 महावत् [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, २; ३१७३
 महावीर १, ३२, ६, ७२०
 महाव्रातः ३, ३०, ३ १०४०
 महाहस्ती ८, ८१, १ ८७०
 महिः ८, १७, १४, ४०७ । १०, १६७, २, २८३० । ७, ९३, ५;
 ३०७५
 महित्वा सिन्धुभ्य रिरिचान १०, ८०, १ २६६३
 महिन. ६, २६, ८, १९५४
 महिने [चतुर्था] ७, ३१, ११, २२३३
 महिवृध् ७, ३१, १०, २२३२
 महिघ्नत [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९
 महिषः १०, ५४, ४, २६११
 महीयमाना [डषाः] ४, ३०, ९, ३३४५
 महमेते ८, १३, ११, ३३१ । ३४, ७ ४३१ । ४९, ७, ४९१ ।
 ५० ७, ५०१
 मातश्चिन्-आ १०, १०५, ६; २७१९
 माता त्वम् ८, ९८, ११; २३७४
 मानः दिवः ८, ६३, २, ५७९
 मानस्य क्षयः ८, ६३, ७; ५८४
 मानुषः १, १८४, २०; ९५६ । २, ११, १०; १११०
 मानुषीणाम् एक. ६, १८, २, १८५७
 मायाः कृण्वान ३, ५३, ८; १४६०
 मायी ७, २८, ४, २२११ । ८, ७६, १; ६२८ । १०, १४७,
 ५, २८०८
 माहिन १, ६१, १; ८५६ । २, १९, ३; १२०१ । वा० य०
 ३३, २७ २९६८ । १, १६५, ३, ३२५२
 माहिनावान् ३, ३९, ४; १३५८
 मित्रः ६, ४४, ७; २०४२ । अथर्व० २, ५, ३, २८६५
 मित्रपतिः १, १७०, ५, १०५५

मित्रस्यः सनिः ८, १२, १२; २९९
मिमान भोज. २, १७, २; ११८२
मिमिक्षुः ३, ५०, ३; १४३१
मीढवस्-इवान् ८, ४६, १७, १८३३ । ७६, ७ ६३४
मुनीनां सखा ८, १७, १४, ४०७
मुष्कयोः बद्धः १०, ३८, ५; २५४५
मूर्धा दिव -[अग्नि] वा० य० १३, १४; २९३०
मृक्षः ८, ६६, ३; ६१५
मृळीक ६, ३३, ९; २०२०
मेडिः साम० ३२७, २९८३
मेधिरः १, ६१, ४; ८५९ । ६, ४२, ३; २०००
मेषः १, ५१, १, ७४५ । ५२, १, ७६० । ८, ९७, १२, ९८७
मेषः भूतः ८, २, ४०, १५५
मेहनावान् ३, ४९, ३; १४२६
म्रक्षकृत्वा ८, ६१, १०, ५५७
युजतः २, १६, ४, ११७५ । २१, १ १३१७ । ८, १५, ४०८
यजत्रः १, १२९, ७, १००६ । ३, ३५, १०; १३२१ । ६, २५, ८; १९४५
यज्ञवाहम्-हाः ८, १२, २०, ३०७ । [इन्द्रवायु] ४, ४७, ४; ३२२९
यज्ञवृद्धः ६, २१, २; १८२८
यज्ञियः ३, ३२, ७, १२, १२८८, १२९३ । ६, ४७, १३, २१११ । ८, ९७, १३, ९८८
यज्ञिय विश्वेषु सवनेषु १०, ५०, ४, २६०४
यज्ञियानां यज्ञियः ८, ९६, ४, २३४८
यज्वन वृधः ८, ३२, १८; १९७
यतंकरः ५, ३४, ४; १७३०
यतस्तुचा (चौ) [इन्द्रामी] १, १०८, ४; ३०११
यमः ८, २४, २२; १८११
यमी [इन्द्रामी] ६, ५९, २, ३०४७
यशः ५, ३२, ११; १७१५ । ८, ६१, ५, ५५२ । ९०, ५, २३९५
यह्नः ८, १३, २४; ३४४
यातयन् ऋतुया ५, ३२, १२, १७१६
याता रथेभिः ८, ७०, १, २३२१
यादमानः शश्वत् शश्वत् उतिभिः ३, ३६, १; १३२३
युगा मानुषा कृण्वन् ८, ६२, ९; ५७४
युज १, ७, ५; ३२ । १२२, ४, ४; १००३, १००३
युजम् रथीणाम् (द्वि०) ६, ४५, १९; २०७८
युजानः अश्वा १०, २२, ४; २४६९
युजान हरिभिः ८, ५०, ७; ५०१
युजानः हरित. रथे ६, ४७, १९; २११७

युज (जा-वृत्ती०) १, २३, ९, ३२४९
युत्कार १०, १०३, २; २६९३
युधः १०, १०३, ३; २६९४
युधमः २, २१, ३, १२१९ । ३, ४६, १; १४०९ । ६, १८, १; १८५७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, १, ७, २३ । ९२, ८; २४०४
युवा १, ११, ४; ७३ । २, १६, १; ११७२ । २०, ३; १२१० । ३, ३२, ७, १२८८ । ४६, १, १४०९ । ६, १२, २, १८७२ । ४५, १; २०६० । ७, २०, १, २१५२ । ८, ४५, १, २, ३; ४४३-४४-४५ । ६४, ७; ५९५ । साम० ४४५; २९८८ ।
[मरुत] १, १६५, २, ३२५१
योद्धा कृत्वा ८, ८८, ४, ८९७
योद्धा शवसा ८, ८८, ४, ८९७
योधीयान् प्रतीचश्चित्र १, १७३, ५; १०६०
योजुवतीनां नद ८, ६९, २; २३०५
रक्षिता चरमत. मध्यतः पश्चात् पुरस्तात् अथ० १९, १५, ३;
२९१६
रक्षोहा [वृहस्पतिः] वा० य० १७, ३६; २९३२
रणकृत् १०, ११२, १०; २७४४
रणिता ८, ९६, १२; २३६१
रथः १, ५५, ३, ७८८
रथयावाना [इन्द्रामी] ८, ३८, २; ३०९२
रथयुः १, ५१, १४, ४५८
रथिन्-थी १०, ४७, ५; २८४६
रथिर ३, ३१, २०; १२७९
रथीतमः ६, ४५, १५ २०७४ । ८, ६१, १२; ५५९ । ८, ९९, ७;
२३८२
रथीतमः रथीनाम् १, ११, १; ७० । ८, ४५, ७; ४४९
रथेभिः याता ८, ७०, १; २३२१
रथेष्टाः १, १७३, ४, ५, १०५९-६० । ६, २१, १, १८९७ ।
२२, ५; १९११ । २९ २; १९६३ । ८, ४, १३; २४१ ।
३३, १४, २२३
रथोच्छा १०, १४८, २, २०११
रथ्यः हरीणाम् विवृतानाम् १०, २३, १; २४९०
रदावसुः ७, ३२, १८; २२५२
रधचोदः २, २१, ४; १२२०
रधचोदनः ६, ४४, १०; २०४५ । ८, ८०, ३; ६६३ ।
१०, ३८, ५, २५४५
रधस्य चोदिता १०, २४, ३; २४९०
रभसः ३, ३१, १२; १२७१
रथिपतिः ६, ३१, १; २००६

रथिवस्-वान् १,१२९,७; १००६ । ६,४४,१, २०३६
 रथीणां दाता ८,४६,२; १८१८
 रथीणां युज्-क् ६,४५,१९, २०७८
 रराणः ६,२३,७; १९२४ । ३९,५, १९८७
 रवथः १,१००,१३, ९६९
 राजसि विश्वस्य परमस्य ७,३२,१६; २२५०
 राजा १,६३,७, ८९१ । १७४,१, १०६९ । १७८,२,
 १०९,७ । ४,१९,१०,१५३१ । ५,३६,२; १७४५ । ४०,४,
 १७६८ । ६,१९,१०; १८८० । २४,१; १९२८ । ४६,६;
 २०९५ । ७,३१,१२; २२३४ । ८,९७,१५; ९९० ।
 १०,४४,२ २५६९ । [हृदयवर्णो] ७,८४,१, ३१९२ ।
 [वरुण] वा० य० ८,३७, ३२४९
 राजा अवसितस्य शवस्य शृङ्गिणः १,३२,१५; ७२९
 राजा उभयस्य ६,४७,१६, २१४
 राजा कृष्टीनाम् १,१७७,१, १०९१ । ४,१७,५, १४९२
 राजा क्षम्यस्य २,१४,११; ११६०
 राजा चर्षणीनाम् १,३२,१५, ७२९ । ५,३९,४; १७६३ ।
 ७,२७,३; २२०५ । ८,७०,१; २३२१
 राजा जगतः चर्षणीनाम् ६,३०,५, १९७२ । ७,२७,३; २२०५
 राजा जनानाम् ८,६४,३, ५९१
 राजा जनुषाम् ४,१७,२०; १५०७
 राजा दिव्यस्य वस्वः २,१४,११, ११६०
 राजा पार्थिवस्य २,१४,११; ११६० । ६,२२,९; १९१५
 राजा प्रदिशः सुतानाम् २,४७,१, १४१४
 राजा ब्रह्मण देवकृतस्य ७,९७,३, ३३६०
 राजा भुवः दिव्यस्य जनस्य ६,२२,९; १९१५
 राजा मदस्य सोम्यस्य ६,३७,२; १९७४
 राजा मधुनः सोम्यस्य ६,२०,३; १८८६
 राजा विशः अथ० ६,९८,२, २९०३
 राजा प्राच्याः दिशः अथ० ६,९८,३; २९०४
 राजा उदीच्या दिशः अथ० ६,९८,३, २९०४
 राजा विशाम् ८,९५,३; २३३८
 राजा विश्वस्य भुवनस्य एकः ३,४६,२; १४१० । ६,३४,४,
 २०३४
 राजा विश्वस्य स्पृहयाद्यस्य ८,९७,१५, ९९०
 राजा हिरण्ययीनाम् ८,६५,१०; ६१०
 रातिः सहस्रशाना [हृदयस्य] ३,३०,७, १२४४
 रातयः यस्य सहस्रम् १,११,८, ७७
 रातहृद्या नमसा [हृदयविष्णु] ६,६९,६, ३३११
 राधानां पतिः १,३०,५, ७०३ । ३, ५१,१०; १४४३

राया नकिः खत् ८,२४,१५; १८०४
 रायः अवनि ८,३२,१३, १९२
 रायः ईशानः ८,४६,६, १८२२ । ५३, १, ५२५
 रायः विभक्ता ४,१७,११; १४९८
 रायः वृधः ७,३०,१; २२१८
 रायस्वतिः ८,६१,१४; ५६१
 रिणन् अपः ८,३२,२, १८१
 रिरिचानः सिन्धुभ्यः महित्वा प्र १०,८९,१; २६६३
 रिरिचि अस्तुभ्यः दिवः अन्तरिक्षात् प्र १०,८९,११; २६७२
 रुवानः ६,३९,४, १९८६
 रुजन् गोत्राणि ४,१६,८, १४७३
 रेवत्-वान् १,४,२; ५ । ६,४४,११, २०४६ । ८,२,११,
 १२६ । ४५,१५, ४५७
 रोचना [नौ] दिवः [हृदयाम्] ३,१२,९, ३०३८
 रोचमानः ३,४६,३ १४११ । [मरुत] १,१६१,१२; ३२८१
 रोरुवत्-वना १,५४,५; ७९०
 र्लोककृत् १०,१३३,१, २७७८
 र्वमगः १,१३०,२ १०१२ । १०,१४४,३, २८००
 वक्ता नकिः न दात इति ८,३२,१५, १९४
 वक्षणि वाकस्य ८,६३,४, ५८१
 वज्रः दास्वने १०,१४४,२, २७९८
 वज्रं बाह्योः दधान ४,२२,३; १५५७
 वज्रं जिज्ञानः भोजसा ८,७६,९; ६३६
 वज्रम् [वज्रधारिणम्] १०,४८,६; २५८४
 वज्रं हस्ते भरति २,१६,२; ११७३
 वज्रदक्षिणः १, १०१,१, ८१७ । १०,२३,१; २४८१
 वज्रबाहु १, ३२, १५; ७२९ । १७४, ५; १०७३ ।
 २,१२,१२-१३; ११३३-३४ । ३,३३,६ १२९९ । ४,२०,१;
 १५३३ । २९,४, १६०७ । ८,१८,१२, २१३० । २३,६;
 २१८५ । १, १६५, ८; ३२५७ । १०, ४४, ३, २५७० ।
 १०३,६; २६२६ । [हृदयाम्] १,१०९,७; ३००७ [हृदयाम्]
 अथ० ७,११०,२; ३१३२
 वज्रभृत् १,१००,१२, ९६८ । ६,१७,२, १८४२
 वज्रहस्त १,१७३,१०; १०६५ । २,१२,१३; ११३४ ।
 १९, २, १२०० । ३,३२,३; १२८४ । ५,३३,३; १७१९ ।
 ६,१७,१, १८४१ । ६,२२,५, १९११ । २९,१; १९६२ ।
 ४६,५, २०९४ । ७,१९,५, २१४४ । २१,४; २१६४ ।
 ३२,३-४; २२३७-३८ । ८,२,३, १४६ । २४,२४; १८१३ ।
 ९०,४; २३९४ । १०,४७,१, २८४२ । वा० य० २६,१०;
 २९६६ । १,१०९,८; ३०२८

वज्रिन्-ज्री १,७,२,५,७. २९,३२,३४ । ८,५; ४२ ।
 ११,४, ७३ । ३०,११-१२, ७०९-१० । ३२,१; ७१५ ।
 ५२,५; ७६४ । ६३,४-५,७, ८८८८९,८९१ । ८०,
 १-२,७,११, ९००-१६,१० । ८२,६, ९३० । १०३,३,४;
 ८४१-४२ । १३०, ३; १०१३ । १३१, ६, १०२६ ।
 ३,४६,१ १४०९ । ५३,१३; १४६५ । ४,१९,१, १५२२ ।
 २०,२,३, १५३४-३५।५,२९,१४, १६८०।३०,१,१६८२ ।
 ३२,२,४, १७०६,८।३६,५. १७४८।४०,३,४; १७६७६८ ।
 ६,१८,६; १८६१ । १९,१२; १८८२ । २२,७; १८९० ।
 २२,१०; १९१६ । २९,३, १९६४ । ३२,१; २०११ ।
 ४१,१; १९९३ । ४७,१४, २११२ । ७,३२,८, २२४२ ।
 ८,१,८, ९४। २,१७, १३२।६,१५, २५७। ६,४०; २८२ ।
 १२,२४,२६; ३११,३१३ । १३,१३; ३५३।२१,८ ४१६ ।
 २४,१ १७९० । ३३,४; २१३ । ४५,८; ४५० । ४९,३,६;
 ४८७,४९० । ५०,६; ५०० । ६६,४,७ ६१६,६१९ ।
 ६९,६; २३०२ । ७०,५,६; २३२५-२६ । ९२,१३, २४०९ ।
 ९६,१७, २३५९ । २७,१३,१४,१५; ९८८-८९-९० ।
 ९९,१; २३७६ । १०,२२,२; २४६७ । ५५,७, २६२० ।
 १७९,३, २९३८ । ७,९७,९; ३३६१ । साम० ३२७.२९८३ ।
 ऋ० [इन्द्राग्नी] ६,५९,३, ३०४८
 वज्रिवस-वान् ८,३७,१-६; १७७६-८१ । ६६,६,११
 ६१८,६२३ । ६८,९, २२९९ । ९२,११, २४०७ । १०,२२,
 ४,१०,११,१२,१३; २४६२,२४७५-७६-७७-७८
 वध असुन्वतः वीळोश्चित १,१०१,४; ८२०
 वध दोधतः २,२१,४, १२२०
 वनिष्ठः ७,१८,१; २११९
 वन्दनश्रुत् १,५६,७, ८०३
 वन्दनेष्टा. १,१७३,९; १०६४
 वन्याः अथ० ६,९८,१, २९०२
 वन्धुरेष्टाः ३,४३,१; १३२१
 वन्वत्-न् २,२१,१२, १२१८ । ६,१८,१; १८५६
 वपुः ४,२३,९; १५७४
 वपोदरः ८,१७,८; ४०१
 वयोधाः ३,३१,१८; १२७७ । ४२,३. १४२६ । ४,१७,
 १७; १५०४
 वरः १०,२२,६ २५२०
 वरिवस्कृत् ८,१६,६. ३८७
 वरिवोचित १०,३८,४; २५०४
 वरिष्ठः ८,९७, १०; ९८५
 वरीयान् अलश्चित सदसः ३,३६,६; १३२८

वरुण [देवता] ७,२८,४, २२११
 वरुता २,२०,२; १२०९ । ६,२५,७; १२४४
 वरुथम् ७ ३२,७, २२४१
 वरेण्यः ३,३४,८,१३०८। ८,६१,१५,५६२। १०,११३,२,
 २७४६ । अथ० १९,१५,३; २९१६
 वर्णः १,१०४,२, ८४८
 वर्णपतिः ३,३४,३; १३०३
 वर्म त्वम् असि ७,३१,६, २२२८
 वलंरुजः ३,४५,२, १४०५
 वशः ८,९३,१०, २४३५
 वशिन्-शी १,१०१,४, ८२० । ८,१३,९; ३२९ ।
 १०,१०३,३, २६९४।१५२,२, २८१५। अथ० ४, २४, ७, २८७३
 वसवान् १,१७४,१; १०६९। ८,९९,८, २३८३। १०,२२,
 १५, २४८०
 वसिष्ठः ७,३३,१-९; २०६२-७०
 वसु १,१०,४; ६१। ३०,१०, ७०८ । ८४,२०; ९५६ ।
 १२९,११,११ १०१० १०। २,१३,१३, ११४९। १४,१२
 ११६१ । ३४१,७,१३७९ । ५१,६,१४३९ । ४,३२,१४,
 १५५८ । ६,२४,२ १९३९ । ४५,२३, २०८२ । ४६,६;
 २०९५ । ७,३१,३,४, २२२५-२६ । ८,१,६, २९, ९२, ११५ ।
 २,१, ११६ । २१,८, ४१६ । २४,७,८; १७२६-१७९७ ।
 ३३,२, २११ । ४६,९, १८२५ । ५०,३,४, ९; ४९७७ ९८, ५०३ ।
 ५१,६; ५१० । ५२,६,८, ५२०, ५२२; ६६,१२, ६२४ ।
 ७०,९; २३२९ । ७८,३; ६५२ । ९८,११, २३७४ ।
 १०,२२,१५, २४८० । ३८,२; २५४२ । १०५,१, २७१४ ।
 अथ० ७,५५,१, २९१२
 वसु दयमानः १,१०,६ ६३
 वसुदाः ८,९९,४; २३७९
 वसुनः पृथ्वी पतिः १०,४८,१; २५७९
 वसुपतिः १,९,९, ५६ । ३,३०,१९; १२५६ । ८,५२,६;
 ५२० । ६१,१०; ५५७ । १०,११२,१०; २७४४
 वसुपतिः वसुनाम् १,१७०,५,१०५५ । ३,३६,९; १३३१ ।
 ४,१७,६; १४९३ । १०,४७,१; २८४२
 वसुभिः नियुक्तान् ३,४९,४. १४२७
 वसुविद् ८,६१,५, ५५२
 वसूनां ईशानः ८,६८,६; २२९६
 वसूनां दाता ८,५१,५; ५०९
 वसूनां विश्वेषां इरज्यन् ८,४६,१६; १८३२
 वसूयुः १,५१,१४, ७५८ । ८,९९,८, २३८३ । १०,२७,१२;
 २५०२

वस्तु क्षपाम् ३, ४९, ४; १४२७
 वस्यः ७, ३२, १२; २२५३
 वस्यान् ८, १, ६; ९२
 वस्व. अर्णवः १, ५१, १ ७४५
 वस्वः आकर ५, ३४, ४; १७३०
 वस्वः ईशः ८, १४, १; ३५४
 वस्वः ईशान ८, ८१, ४; ६७३
 वस्व. सम्भर. ४, १७, ११, १७९८
 वस्वः सम्राट् ४, २१, १०, १५५३
 वह्निः २, २१, २; १२१८ । [मरुतः] १, ६, ५, ३२४५
 वह्निः संवरणेषु ४, २१ ६; १५४९
 वाकस्य वक्षणिः ८, ६३, ४; ५८१
 वाघत नान्यः एतत् ८, ७८ ४; ६५४
 वाचं जनयन् यजध्वं ४, २१, ५; १५४८
 वाचस्पति वा० य० १७, २३; २९३१
 वाज १०, २३, २, २४८२ । ४७ ५; २८४६
 वाजदा [इन्द्रवायु] १, १३५, ५; ३२१६
 वाजदावा मघोनाम् ८, २, ३४; १४९
 वाजपतिः साम० २२६; २९७२
 वाजयत् ८ ९८, १२, २३७५
 वाजयन्ता (तौ) ६, ६०, १, ३०५५
 वाजयुः ७, ३१, ३, २२२५
 वाजवान् ३, ५२, ६; १४५१ । ६०, ६, ३३४२
 वाजं सनिता ४, १७, ८, १४९५
 वाजमातमा (मौ) [इन्द्राग्नी] ३, १२, ४; ३०३३
 वाजानां पतिः १, ११, १; ७० । २९, २; ६९३।६, ४५, १०, २०६९ । ८, २४, १८, १८०७ । ९२, ३०, २४२६
 वाजिन्-जी १, ४, ९; १२ । १७६, ५; १०८९ । ६, २४, २; १२२९ । ८, ५२, ४, ५१८ । २, ३८; १५३।१४, ६; २५९ । १६, ३, ३८४ । २४, २२; १८११ । ३२, १८; १२७ । १०, १०३, ५; २६९५ । ८, २३, ३४; ३३४४।२.३२, ३; ३३५१ ।
 वाजिनीवसुः ३, ४२, ५, १३८६। [इन्द्रवायु] १, २, ५; ३२११।
 वाजेषु अविता ८, ४६, १३; १८२९
 वामनीतिः ६ ४७, ७; २१०५
 वार्याणां पति १०, २४, ३; २४९०
 वावशान ३, ५१, ८; १४४१ । ६, ३२, २; २०१२
 वावशानः सोमम् ३, ३५, ९; १३२०
 वावृधानः १, १३१, ७, १०२७। २, ११, ४, २०; ११०४.२० । १९, १; ११९९ । ४, २१, २; १५४४ । ३, ५१, १, १४३४ । ६, १९, ११; १८८१ । ३८, ५, १९८२ । ८, ६, ४०; २८२ ।
 वै० [इन्द्रः] ४१

७६, ३, ६३०
 वावृधान उक्थैः २, ११, २; ११०२
 वावृधानः ओजसा ३, ४५, ५; १४०८
 वावृधानः तन्वा ३, ३४, १, १३०१ । १०, ५४, २ २६०९
 वावृधान दिवेदिवे ८, ५३, १; ५२६
 वावृधान शवमा १०, १२०, २, २७६५
 वावृधानः सहोमि १०, ११६, ६; २७६०
 वावृधानः हविषा [इन्द्राविष्णू] ६, ६९, ६, ३३११
 वावृधेन्य ८, २४, १८ १८०७
 वावृधान् ८, ९५, ७, २३४२ । ९८, ८, २३७१
 वासयन्तः गव्या वस्त्रा इव [मरुतः] ८, १, १७; १०३
 वास्तोष्पतिः ८, १७, १४; ४०७
 विष्णु आरित २, २१, ३, १२१९
 विप्र. १, ४, ४ ७
 विघनिना (नौ) [इन्द्राग्नी] ६, ६०, ५, ३०६०
 वासवः अथ० ६, ८२, १; २८९९
 विचक्षणः १, १०१, ७, ८२३ । ४ ३२, २२, १६६६
 विचर्वणि २, २२, ३, १२२५। ४१, १०, १२; १२३५ १२३७ । ६, ४५, ६६, २०७५ । ४६, ३, २०९२ । ८, १७, ७, ४०० । ३२, ३, २१२ । ९८, १०; २३७३
 विचेता ६, २४, २; १९२९ ७, २७, २, २२०४ । ८, ४६, १४; १८३०
 विजानन् ३, ३२, ७, १३६१
 वितन्तमाययः ६, १८, ६; १८६१ । ४५, १३; २०७२
 वितर्तुराण. ६, ४७, १७, २११५
 विवक्षण. ५, ३४, ६, १७३०
 विद् १०, १३८, ३; २७९४
 विदथस्य पतिः १, ५७, २, ८०६
 विदयमानः ३, ३४, १ १३०१
 विद्वसु ३, ३४, १, १३०१।५, ३९, १, १७६०। ८, ६६, १, ६१३
 विदानः ६, २१, २, १२; १८९८, १९०६ । १०, १११, १, २७२५। वा० य० ३३, ७९, २९७०। ऋ० १, १६५, ९, १०; ३२५८, ३२५९
 विद्वधे [इन्द्राग्नी] ४, ३२, २३, ३३४८
 विद्वान् १, १०३, ३; ८४१ । २, ३०, २, १२२८ । ३, ३५, ४ १३१५ । ३, ३५, ८; १३१९ । ४४, २; १४०० । ४७, २, १४१५ । ५२, ७; १४५२। ४, ३०, १७, १६२२। ५, ३०, ३; १६८४। ६, ४७, ८; २१०६ । ७ ९८, १, २२०८ । ८, ३३, ३, ५८० । १०, ३२, ६; २५३५ । १४८, ३; २८११ । ५, ८६, ४; ३०४३

विद्वान् अपांनि विश्वा नर्याणि ७,२०,४; २१६४
 विद्वान् विश्वानि नर्याणि ४,१६,६; १४७२
 विद्वान् विश्वस्य १०,१६०,२, २८२५
 विद्वान् विश्वानि ६,४२,१; १९९८
 विद्वेषण ८,१२, ८८
 विधर्तु-तां ८,७०,२, २३२२
 विपश्चित् १,४४; ७ । ८,३३,१०, ३३० । ९८,१; २३६४
 विपानः ८,६,२९, २७१
 विप्रः १,५१,१, ७४५ । १३०,६; १०१६ । ४,१९ १०;
 १५३१ । ५,३१,७; १६९९ । ६ ३५,५; २०३० । ८,२,३६;
 १५१ । ६,२८, २७० । ९८,१, २३६४ । १०,५०,७;
 २६०७ । सामं ४४६, २९८९
 विप्रतमः ३,३१,७, १२६६
 विप्रतमः कवीनाम् १०,११२,९, २७४३
 विप्रवीरः १० ४७ ४,५, २८४५, २८४६
 विवाधः १०,१३३,४, २७८१
 विभक्ता भागं वाजंम् ३,४९,४, १४२७
 विभक्ता मघानाम् ७,२६,४; २२०१
 विभक्ता रायः ४,१७,११; १४९८
 विभन्जनुः ४,१७,१३, १५००
 विभावसु ८,९३,२५, २४५४
 विभीषणः ५,३४,६; १७३२
 विभुः (+वे-चतुं) ८,९६,११; २३५५
 विभूतिः ६,१७,४, ८४४ । ८४९,६, ४९० । ५०,६, ५००
 विभ्राजन् ज्योतिषा ८,९८,३, २३६६
 विभ्रतष्टः ३ ४९,१ १४२४
 विमृव १०,१५२,२, २८१५
 विरप्तिन् पत्नी ३,३६ ४; १३२६ । ४,१७,२०, १५०७ ।
 २०,२; १५३४ । ६,२२,६; १९१२ । ३२,१, २०११ ।
 ४०,२; १९८९ । ८ ७६ ५, ६३२ । १०,११३ ६; २७५० ।
 गामं ६२५, २९९६
 विविचि ८,५०,६; ५००
 विशस्पतिः १०,१५२,२, २८१५
 विशां राजा ८,९५,३; २३३८
 विशः राजा अथर्वं ६,९८,२; २९०३
 विशपतिः ३,४०,३, १३६६
 विश्रुतः १,६२,१; ८७२
 विश्व अभिभू जात जन्वम् ८,८९,६, २३८९
 विश्वः ८,३,१६; १७१
 विश्वकर्मा ८,९८,२; २३६५ । वा० य० १७,२३; २९३१

विश्वगूर्तः १,६१,९, ८६४ । ८,१,२२,१०८ । ७०,३; २३२३
 विश्वचर्वणिः १,९,३; ५० । ५,३८,१; १७५५ । ६,४४ ४;
 २०३९ । ८,५३,६; ५३० । १०,५०,४; २६०४
 विश्वजन्म्या १,१६९,८; १०५०
 विश्वजित् २,२१,१; १२१७
 विश्वतस्पृधुः ८,९८,४; २३६७
 विश्वतः ८,९९,५, २३८०
 विश्वतोषीः ८,३४,६; ४३०
 विश्वहृष्टः अथर्वं ५,२३,६; २८७९
 विश्वदेवः ८,९८,२, २३६५
 विश्वमनाः १०,५५,८; २६२१
 विश्वमिन्व ७,२८,१; २२०८
 विश्वरूपः ३,३८ ४, १३४८
 विश्ववारः १,३०,१०, ७०८ । ८,४६,९, १८२५
 विश्ववेदाः ६,४७,१२; २११० । १०,१३१,६; २७७६
 विश्वव्यचाः ३,४६,४; १४१२
 विश्वशम्भूः वा० य० १७,२३, २९३१
 विश्वस्य गोपतिः ८,९२,७; ५७२
 विश्वस्य विद्वान् १०,१६०,२; २८२५
 विश्वानरः १०,५०,१, २६०१
 विश्वाभूः १०,५०,१; २६०१
 विश्वायुः १,१२९,४; १००३ । ३,३१,१८, १२७७ ।
 ६,३३,४, २०१९ । ३४,५, २०२५ । ८,२,४, ११९
 विश्वासाहः ३,४७,५, १४१८ । ६,१९,११; १८८१ ।
 ४४,५; २०३९ । ८,९२,१; २३९७
 विश्वासु समस्तु हव्य ८,९०,१; २३९१
 विश्वौजा १०,५५,८; २६२१
 विशुणः असुन्वतः ५,३४,६, १७३२
 विष्णुः १ ६१,७; ८६२ । ८,१२,२७; ३१४ । ७७,१०;
 ६४९ । १००,१२, ९९९ । १०,१४८,३; २८११
 विहन्ता वज्रुषशित् तमसः १,१७३,५; १०६०
 विहव्यः पुरुषा २,१८,७; ११९६
 वीरः १,३०,५; ७०३ । ६१,५; ८६० । ८१,२; ९१७ ।
 २,१३,११; ११४७ । १४,१; ११५० । ३,५१,४, १४३७ ।
 ४,२४,१; १५७७ । २५,६; १५९३ । ५,३०,१, १६८२ ।
 ६,२१,१, १८९७ । २१,६; १९०२ । ३२,१, २०११ ।
 ४४,१४; २०४९ । २४,२; १९२९ । ४५,८, १३, २६;
 २०६७, ७२, ८५ । ४७,१६, २११४ । ७,२०,२, २१५२ ।
 २९,२; २२१४ । ८,२,२१, २३, २५; १३६, १३८, १४० ।
 ३२,२४, २०३ । ३३,१६; २२५ । ४६,१४, १८३० ।

५०,६; ५०० । १०,१०३,७; २६९७ । १११,१; २७२५ ।
 ११३,४; २७४८ । ८,४०,९; ३१०९
 वीरकः ८,९१,२; १७८४
 वीरतमः नृणाम् ३,५२,८; १४५३
 वीरतरः ८,२४,१५; १८१४
 वीरयु ८,९२,१८; २४२४
 वीरवत्-वान् १०,४७,५. २८४६
 वीरेण्यः १०,१०४,१०; २७१२
 वीर्याणि करिष्यन् ८,६२,३; ५६८
 वीर्यैः साकं वृद्धः २,२२,३, १२२५
 वीळितः २,२१,४, १२२०
 वीर्याणि विश्वानि यस्मिन् अधि संभृता [नि] २,१६,२, ११७३
 वृजनः १,१०१,११; ८२७
 वृत्तचयः २,२१,३, १२१९
 वृत्रह्वाद् ३,४५,२, १४०५
 वृत्रघ्नः अथ ४,२४ १, २८६७
 वृत्रहन्ता ४,२१,१०; १५५३ । १७,८; १४९५ । ८,२,
 ३२,३६, १४७,१५१
 वृत्रतुरा [हन्द्वावरुणौ] ६,६८,२, ३१६२
 वृत्रहन्-हा १,१६,८; ८५ । ८१,१; २१६ । ८४,३; ९३९ ।
 २,१२,७, १२१४ । ३,४०,८; १३७१ । ३०,५; १२४२ ।
 ३१,११,१४,१८,२१, १२७०, ७३, ७७, ८० । ४१,४;
 १३७६ । ४७,२; १४१५ । ५२,७, १४५२ । ४,३०,१,७,
 १६०९,१५ । ३२, १, १९, २१; १६४५, १६६३, ६५ ।
 ५,३८,४; १७५८ । ४०,४, १७६८ । ६,४५,५, २०६४ ।
 ४७,६; २०९४ । ७,३१,६, २२२८ । ३२,६, २२४० ।
 ८,१,१४, १०० । २,२६, १४१ । ४,११; २३९ । ६,४०;
 २८२ । १३,१५, ३३५ । १७,९, ४०२ । २४,८, १७९७ ।
 ३२,११; १९० । ३३,१,१४, २१०, २२३ । ३७,१-६;
 १७७६-१७८१ । ४५,४, २५, ४४६, ४६७ । ४६,१३ १८२९ ।
 ५४,५; ५३५ । ६१,१५, ५६२ । ६२,११; ५७६ । ६४,९;
 ५९७ । ६६,३ ११; ६१५, ६२३ । ७०,१; २३२१ ।
 ७७,३; ६४२ । ७८,७, ६५७ । ८२,१; ६७९ । ८९,३;
 २३८६ । ९०,१; २३९१ । ९२,२४; २४२० । ९३,२,
 ४,१५, १८, २०, ३३, २४३१, ३३, ४४, ४७, ४९, ६२ ।
 ९६,१०-२१, २३६१-६३ । ९७,४, ९७९ । १०, २३, २;
 २४८२ । ७४,६, २६३९ । १०३,१०, २७०० । १११,६,
 २७३० । १३३,१, २७७८ । १३८,५, २७९६ । १५२, २, ३;
 २८१५-१६ । १५३, ३, २८२२ । अथ ८, ७५, २; २८९७ ।
 ८२,१; २८९९ । ६,९८,३; २९०४ । १९,१५,३;

२९१६ । वा० य० २०, ७५; २९५९ । २०, ९०; २९६३ ।
 २६,५, २९६५ । साम० ३२७, २९८३ । [हन्द्वाग्नी]
 १,१०८,३; ३०१० । ३,१२,४; ३०३३ । ६,६०,३;
 ३०५८ । ७ ९३,१,४, ३०७१, ३०७४ । ७,९४,११,
 ३०८९ । ८,३८ २, ३०९२ । अथर्व ७, १३०, २; ३१३०
 वृत्रहा भरेभरे १,१०० २, ९५८
 वृत्रहा वृत्रहल्येन ८,२४, २, १७९१
 वृत्रहन्तमः ५, ३५, ६; १७४१ । ४०, १३, १७६५ ६७ ।
 साम० ४४६; २९८९
 वृत्रा जिघ्रमानः ३, ३०, ४, १२४१
 वृत्राणि घ्नन् ३, ३०, २२; १२५९ । ५०, ५, १४३३ ।
 द्वादशकृत्य पुनरुक्त मन्त्रः १०, ८९, १८; २६७९ ।
 १०४, ११, २७१३
 वृत्राणां घनः ८, ९६, १८; २३६०
 वृथाषाद् १, ६३, ४, ८८८
 वृद्धः ३, ३२, ७, १२८८ । ४, १९, १, १५२२ । ६, २४, ७; १९३४
 वृद्धमहाः ६, २०, ३, १८८६ । ३७, ५; १९७७
 वृद्धायुः १, १०, १२, ६९
 वृधः ६, ३४, ५, २०२५ । ७, ३२, २५, २०५९
 वृधः यजत्रनः ८, ३३, १८, १९७७
 वृधः मनोः ८, ९८, ६, २३६९
 वृधः प्र अक्नुभ्यः अहभ्यः अन्तरिक्षात् १०, ८९, ११; २६७२
 वृधन्ता (नौ) अनुद्यन् [हन्द्वाग्नी] ५, ८६, ५, ३०४४
 वृध रायः ७, ३०, १; २२१८
 वृध सुन्वतः ५, ३४, ६; १७३२ । ८, ९८, ५, २३६८
 वृधानः १, ५६, ६, ८०२ । १०, ५५, ८, २६२१
 वृषन्-वा १, ७, ६, ८; ३३, ३५ । १६, १, ७८ । ५४, २;
 ७८७ । ५५, ४; ८०० । १००, १, १७, ९५७, ९७३ । १०१, १,
 ८१७ । १०३, ६, ८४४ । १०४, ७, ८५३ । १३३, ५, ६,
 १०२५-२६ । १३२, ६; १०४१ । १७५, १; १०७९ ।
 १७६, २, १०८६ । २, ११, ९, १०, ११०९-१० । १४, १,
 ११५० । १७, ८, ११८८ । ३, ३०, २; १२३९ । ४, १६, ३, २०,
 १४६९, ८६ । १७, १६ १५०३ । २१, ७, १५५० । २२, २, ६,
 १५५६, १५६० । २४, ८, १५८४ । ४, ३०, १०; ३६४६ ।
 ५, ३१, ५, १६९७ । ३३, २; १७१८ । ३५, ४, १७३९ ।
 ३६ ५, ५, ५, १७४८-४८-४८-४८; ५ ४०, १, २, ३, ३, ३;
 १७६५-६७; ६, २२, ८; १९१४ । ३३, १; २०१६ ।
 ४४, २०, २१; २०५५-५६ । ७ १९, ६; २१४५ । २०, ५;
 २१५५ । २३, ६; २१८५ । ३१, ४; २२२६ । ८, १, १,
 ८७ । ४, ७, ८, २३५-३६ । ६, ४०, २८२ । १३, ३१-३३,

२५१-५३ । १५, १०, ३७८ । ३३, १०, ११, १२, १८;
 ३१९, २०, २१, २७ । ६१, ११, ५५८ । ६३, ९; ५८६ ।
 ६४, ८; ५९६ । ७०, ६, २३२६ । ९२, १५ २३, २४११,
 २४१९ । ९३, ७, १९, २०, २४३६, २४४८, २४४९ ।
 [इन्द्रावरुणौ] ६ ६८, ११; ३१७१ । ७, ८२, २; ३१७३ ।
 [मरुताः] १, १६५, १, ३२५० । [इन्द्रासोमौ] अथर्वं
 ८, ४, १; ३२७८ । १, १६५, ११, ३२६० । १० ४३, ६;
 २५६२ । ४९, ९ २५९८ । ८९, ९, २६७० । १०, १२३ २, ९;
 २६९३, ९२ । ११६, ४, २७५८ । १५३, २; २८२० ।
 १५२, २, २८१५ । [इन्द्राग्नी] १, १०८, ३; ३०२० । ७-१२,
 ३०१४-१९ । अथ० ७, ११०, २; ३१३२
 वृष इति परावति अर्वावति श्रुतः ८, ३३, १०, २१९
 वृषकर्मा १, ६३ ४, ८८८ । १३०, १०, १०२०
 वृषक्रतुः ५, ३६, ५; १७४८ । ६, ४५, १६; २०७५
 वृषजुतिः ५, ३५, ३, १७३८ । ८, ३३, १०; २१९
 वृषणवसू [इन्द्रावृःसती] ४, ५०, १०, ३३२३ । अथर्वं
 २०, १३, १; ३३२९
 वृषणवान् १, १७३, ५, १०६०
 वृषन्तम १, १०, १०, १०; ६७, ६७ । १००, २; ९५८ ।
 ५, ३५, ३, १७३८ । ६, ५७ ४, ३३३३
 वृषपर्वा ३, ३, २, १३२४
 वृषप्रभर्मा ५, ३२, ४, १७०८
 वृषमना १, ६३ ४, ८८८ । ४, २२, ६; १५६० ।
 वृषरथः ५, ३६, ५; १७४८
 वृषाकपिः १०, ८६, १-२३, २६४०-२६६२
 वृषायमाण १, ३२, ३, ७१७
 वृषिणः १, १०, २, ५९
 वृष्यावान् ६, २२, १; १९०७
 वृष्येभिः समोकाः १, १००, १; ९५७
 वृषा दिव ६, ४४, २१, २०५६
 वृषा वृषभिः १, १००, ४, ९६०
 वृषा सिन्धुताम् ६, ४४, २१; २०५६
 वृषभः १, ९, ४, ५१ । ३३, १०; ७३९ । ५१, १५; ७५९ ।
 ५५, २ ३; ७८७-८८ । १०३ ६, ८४४ । १७७, १; १०९३ ।
 २, १२, १२; ११३३ । १६, ४, ५, ५, ११७५ ११७६, ७६
 ७७ । २२, ४, १२२० । ३, ३०, ३ ९, २१; १२४०, ४६, ५८
 ३१, १८, १२७७ । ३५, ३; १३१४ । ३६, ५ १३२७ ।
 ३८, ५, ७; १३४९, ५१ । ४०, १; १३६४ । ४३ ६, १३९६ ।
 ४६, १, ५, १४०९, १३ । ४७, १, ५; १४१४, १४१८ । ४८, १,
 १४१९ । ५० १ १४२९ । ४, १६, २०; १४८१ । १७, ८; १४९५ ।

१८ १०; १५१८ । २४, ५ १५८१ । ३०, १९, २२, १६२४, २७ ।
 ५, ३०, ११; १६९२ । ३२, ६; १७१० । ४०, ४, १७६८ ।
 ६, १९, ११; १८८१ । २२, १; १९०७ । ३२, ४; २०१४ ।
 ४४, ११, २०-२१; २०४६, २०५५-५६ । ४७, २१; २११८ ।
 ७, २६, ५, २२०२ । ८, १, २; ८८ । २१, ४, ११; ४१२, ४१९ ।
 ४५, २२ ३८, ४६४, ४८० । ६१, २, ५४९ । ६४ ७, ५९५ ।
 ९३, १७, २०, २४३०, ३६, ४९ । ९६, २, ६; २३४६, २३५० ।
 १०, ३८, ५; २५४५ । ४३, ३, २५५९ । ४४, ३; २५७० ।
 ११२, ७, २७४१ । १३१, ३, २७७५ । अथर्वं ४, २४, ३;
 २८६९ । ६, ९८, ३; २९०४ । साम० ३२७; २९८३ । ऋ०
 १, १६५, ७; ३२५६ । १, १७१, ५; ३२६७
 वृषभः क्षितीनाम् ७, ९८ १; २२७९
 वृषभः चर्षणीनाम् ६, १८, १; १८५६ । ८, ९६, ४, १८;
 २३४८, २३६०
 वृषभः जनानाम् १, १७७, १; १०९१
 वृषभः पृथिव्याः ६, ४४, २१; २०५६
 वृषभः मतीनाम् ६, १७, २, १८४२ । १०, १८०, ३; २८४१
 वृषभः स्तियानाम् । ६, ४४, २१; २०५६
 वृषभाणां ज्यष्ठ ८, ५३ १; ५२५
 वृषभाजाः २, १६, ५; ११७६
 वेद विश्वा जनिमा ८ ४६, १२ १८२८
 वेदिष्ठः ८, २ २४; १३९
 वेदीयस्-वान् गौरात् अवपानम् ७, ९८, १; २२७९
 वेधाः २, २१, २, १२१८ । ६, २२, ११; १९१७ । १०, १४४, १;
 २७९८
 वेधाः मरुताम् १, १६२, १; १०४३
 वेनः ८, ६३, १; ५७८
 व्रतपा देवानाम् १०, ३२, ६; २५३५
 शंसः ६, २४, २, १९२९
 शंस्यः १०, ४७ २; २०४३
 शस्यानां उक्थ्य [वरुणः] १, १७ ५ ३१३८
 शक्तीवस्-वान् ५, ३१ ६; १६९८
 शक्र १, १०, ५ ६; ६२, ६३ । ५५ २; ७८७ । ६२, ४;
 ८७५ । १०४, ८, ८५४ । १७७, ४; १०९४ । ३, ३५, १०;
 १३२१ । ३७, ११, १३४४ । ४, १६, ६; १४७२ । ५, ३४, ३;
 १७२९ । ६, ३५, ५; २०३० । ४७, ११, २१०९ । ७, २०, २;
 २१५९ । ७ १०४, २०-२१, २२८८-८९ । ८, १, १९; १०५ ।
 २, २३; १३८ । १२, १७; ३०४ । १३, १५; ३३५ । ३२, १२;
 १९१ । ४५, १०, ४५२ । ५०, १; ४९५ । ५२, १; ५१५

द्वि, ३; द्वि, १५ । द्वि, १४; २३२६ । ७८, ५; द्वि, ५१, १, १७८३ । ९२, ११, २६; २४०७, २२ । ९३, १८; २२४७ । ९७, ४, १४; ९७९, ८९ । १०, ४३, ६; २५६२ । १०४, १०; २७१२ । १३४, ३; २७८७ । १६७, २; २८३० । अथर्वं २, ५, ४. २८६६ । ८, ४, २१. ३२९८ । सामं २०९; २९७७
 शशिष्ठ ४, २०, ९; १५४१
 शशीपतिः ४, ३०, १७, १६२२ । ३१, ७, १८३६ । द्वि, ४५, ९ २०६८ । ८, १४, २; ३५५ । १५, २३; ३८१ । ३७, १६; १७७६ १७८१ । द्वि, ५; ५५२ । द्वि, ८; ५७३ । १०, २४, २ २४८९ । अथर्वं द्वि, ८२, ३; २९०१
 शशीभिः महान् महीभि ८, १६, ७; ३८८ । २, ३२, १४७
 शशीवस्-वान् १, २९, २, ६९३ । ५४, ३; ७७७ । ५५, २; ७८७ । द्वि, १२, ८८३ । ३, ५३, २; १४५४ । ४, २२, २, १५५६ । द्वि, २४, ४, १९३१ । ३१, ४, २००९ । ८, २, १५, २८, ३९, १३०, १४३, १५४ । द्वि, २; २२९२ । १०, ४९, ११; २६०० । १०४, ४, २७०६
 शतक्रतुः १, ४, ८-९, ११-१२ । ५, ८; २१ । १०, १; ५८ । १६, ९, ८६ । ३०, १६, १५, ६९९, ७०४, १३ । ५१, २; ७४६ । ५५, ६; ७९१ । ८२, ५; ९२९ । २, १६, ८, ११७९ । २२, ४; १२२६ । ३, ३७, २, ३, ६ ८९; १३३५-३६, ३९, ४१, ४२ । ४२, ५; १३८६ । ५१, २; १४३५ । ४, ३०, १६; १६२ । ५, ३५, ५; १७४० । ३८, १, ५; ७५५, ५९ । द्वि, ४१, ५; १९९७ । ४५, २५, २०८४ । ७, ३१, ३; २२२५ । ८, १, ११; ९७ । ३२, ११; १९० । ३३, ११, १४, २२०, २३ । ३६, १-६; १७६९-७४ । ५२, ४, ६, ५१८, ५२० । ५३, २; ५२६ । ५४, ८; ५३८ । ६१, ९, १०, १८; ५५६, ५७, ६५ । ७६, ७; ६३४ । ७७, १; ६४० । ८०, १; ६६१ । ८९, ३, २३८६ । ९१, ७; १७८९ । ९२, १, १२, १३, १६; २३९७, २४०८-९, १२ । ९३ २७, २८, २९, ३०, २४५६-५७, ५८, ६१ । ९८, १०, ११, १२ २३७३-७४-७५ । ९९, ८; २३८३ । १० ३३, ३; २५४० । ११२, ६; २७४० । १३४, ४, २७८८ । अथर्वं द्वि, ८२, १; २८९९ । वा०यं ३, ४९. २२१९ । २०, ७५, २९५९ । २६, ४५ २९६४-६५
 शतनीथः १, १००, १२. ९६८
 शतमन्युः १०, १०३, ७, २६९७
 शतमूर्तिः १, १०२, ६; ८३३ । १३०, ८ १०१८ । ७, २१, ८, २१६८ । ८, २, २२, २६, १३७, १४१ । ९९, ८ २३८३
 शतामघः ८, १, ५; ९१ । ३३, ५, २१४ । ३४, ७, ४३१ । ४६, ३, १८१९
 शतावान् द्वि ४७, ९, २१०७

शतिन्-ती १०, ४७, ५; २८४६
 शत्रुः १०, १२०, २ २७६५
 शत्रुह अथर्वं द्वि, ९८, ३ २९०४
 शन्तमः ८, ३३, १५ २२४ । ५३, ५ ५२९
 शम्भविष्टः १, १७१, ३ ३०६५
 शम्भू [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ७ ३१५२
 शम्भुवा (वा) [इन्द्रामी] द्वि, ६०, ७, ३०६२ । १४, ३१६०.
 शरः ८, ७०, १३, १४ २३३३, २३३४
 शरव्यः [हयः] वा० यं १७, ४५; २९३४
 शरुमान् [सोमः] १०, ८९, ५ ३०७६
 शर्धनीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 शवस्-सा द्वि, २९, ३, १९६४ । ७, ३०, १, २२१८ । ८, १, २१ १०७ । १०, ७३, ८ २६३०
 शवसः पतिः १, ११, २; ७१ । १३१, ४, १०२४ । ३, ४१, ५; १३७७ । ५, ३५ ५, १७४० । द्वि, ४४, ४; २०३९ । ८, ६, २१; २६३ । ४५, २०, ४६२ । ९०, २, ५, २३९२, ९५ । ९२, १४; २४१० । ९७, ६, ९८१ । [इन्द्रवायू] ४, ४७ ३; ३२२८
 शवस सूनुः १ द्वि, ९; ८८० । ४, २४, १. १५७७
 शवसानः १ द्वि, १२, १३; ८७२, ७३, ८४ । द्वि, ३७, ३; १९७५ । ८, २, २२; १३७ । ४६, ६; १८२२ । द्वि, ८; २२९८ । ७, ९३, २ ३०७२
 शवसा चक्रानः ७, २७, १. २२०३
 शवसा योद्धा ८, ८८, ४; ८९७
 शवसा श्रुतः ८, २४, २; १७९१
 शवसावन् १, ६२, ११; ८८२
 शवमिन् ७, २८, २; २२०९
 शवसी [इन्द्रमाता] ८ ४५, ५, ४४७ । ७७, २; ६६१
 शविष्ठ १ ८०, १. ९०० । ८४, १, १९, ९३७, ९५५ । ५, २९, १३, १५; १६७९, ८१ । ३५, ८ १७४३ । ३८, २, १७५६ । ८, ४०, २, ३१०२ । [इन्द्रावरुणौ] द्वि, ६८, २; ३१६२ । द्वि, २२, २, ७, १९०८, १३ । २६, ७; १९४३ । ३५, ३; २०२८ । ७, २१, ५; २१६५ । ८, ६, ३१; २७३ । १२, १, २८८ । १३, १२, ३३२ । ३३, १३; २२२ । ४६, ९ १९; १८२५, ३५ । द्वि, १; ५४८ । द्वि, ४; ५६२ । द्वि, १२, १४; द्वि, ४, २६ । द्वि १, २२२१ । ७०, ६, १२; २३२६, ३२ । ९०, ४, २३९४ । ९७, १४, ९८९ । १०, ११६, १ २७५५ । १, १६५, ७; ३२५६ । अथ० ७, ९७, १; ३१२०
 शश्वतां साधारणः ४, ३२, १३; १६५७ । ८, ६५, ७; ६०७
 शश्वतीनां पतिः ८, २५, ३; २३३८
 शश्यमानः १०, ८९, ९; २६८८

शाकिन् - की १, ५१, ८; ७५२ । ५५, २; ७८७ । ३, ५१, २;
 १४३५ । ६, ४५, २२, २०८१ । ८, ४६, १४, १८३०
 शाचिगुः ८, १७, १२, ४०५
 शाचिपूजन ८, १७, १२; ४०५
 शाशदानः १, ३३, १३, ७४२
 शासः ३, ४७, ५; १४१८ । ६, १९, ११, १८८१
 शासत दिवः अमुष्य ८, ३४, १-१५; ४२५-४३९
 शिक्षानरः १, ५४, २; ७७६ । ४, २०, ८, १५४०
 शिप्रवान् ६, १७, २, १८२२
 शिप्रिन्-प्री १, २९, २; ६९३ । ८२, ४, ९१९ । ८, ३२, ७,
 २१६ । ६१, ४; ५५१ । ९२, ४, २४४०
 शिमिणीवान् १०, १०५, ५; २७१८
 शिमीवान् १, १००, १३, ९६९ । [लोमः] १०, ८९, ५; ३२७६
 शिवः २, २०, ३, १२१० । ६, ४५, १७; २०७६ । ८, ६३, ४,
 ५८१ । ९३, ३, २४३२
 शिवतमः ८, ९६, १०; २३५४
 शिशयः (यम्-द्वि०) १०, ४२, ३; २५४८
 शिशानः १०, १०३, १, २६९२
 शिशान. वज्रम् ८, ७६, ९; ६३६ । १०, १५३, ४; २८२२
 क्षीष्णाक्षीष्णोपवाच्यः १, १३२, २; १०२९
 शुचिः ८, १३, १९; ३३९ । १०, ४३, ९; २५६५
 शुचिषा [इन्द्रवायू] ७, ९१, ४, ३२३७
 शुद्ध ८, ९५, ७, ८, ९; २३४२-४३ ४४
 शुभ्युः १०, ४३, १, २५५७
 शुनः ३, ३०, २२; १२५९ । द्वादशकृतवः पुनरुक्तः
 ३, ५०, ५; १४३३ । १० ८९, १८; २६७९ । १०, ४, ११,
 २७१३ । १६०, ५; २८२८
 शुभस्वती [इन्द्रावरुणौ] ८, ५९, ३; ३२०४ । ५, ३२०६
 शुभः २, ११, ४; ११०४
 शुष्मः १, १००, २; ९५८
 शुष्म ज्येष्ठं ते १०, १८०, १, २८३९
 शुष्मिन्-ष्मी १, १७३, १२, १०६७ । ४, २२, १, ४, १५५५,
 ५८ । ५, ४०, ४; १७६८ । ६, २५, १; १९३८ । ७, ३०, १;
 २२१८ । ८, १३, ३; ३२३ । ९८, १२; २३७५ । १०, ४३, ३;
 २५५९ । [इन्द्रवायू] ४ ४७, ३; ३२२८
 शुष्मिन्तमः शुष्मिभिः १, १३३, ६, १०३९
 शूरः १, ११, ६; ७५ । २९, ४; ६९५ । ३२, १२, ७२६ ।
 ६३, ४, ८८८ । ८१ ८, ९२३ । १०३, ६; ८४४ । १२९,
 ३, ५; १००२, ४ । १३१, ७; १०२७ । १३२, ५, ६; १०३२,
 ३३ । १३३, ६, ६ १०३९, ३९ । १७३, ५; १०६० । १७६,

७, १०६२ । १७४, ९; १०७७ । १७५, ३, १०८१ । १७८,
 ३; १०९८ । २, ११, २, ३, ५, ११, १७, १८; ११०२, ३, ५,
 ११, १७, १८ । १७, २; ११८२ । १८, ७, ११९६ । १९, ८;
 १२०६ । ३० १०; १२३४ । ३, ३०, ११, १२४८ ।
 ४७, २; १४१५ । ५१, ७, १२, १४५५, ५२ । ४, १६, २, ७;
 १४६८, ७३ । २१, १, १५५४ । २२, ५; १५५९ ।
 ३२, २१; १६६५ । ५, ३५, २; १७३७ । ३६, २; १७४५ ।
 ३८, ५; १७५९ । ६, १९, ६, १३; १८७६, ८३ । २०, १२;
 १८९५ । २४, ३, १९३० । २६, ५; १९५१ । ३३, ३, ४;
 २०१८-१९ । ३५, ५, २०३० । ४४, १७, २०५२ ।
 ४७, ६, ११; २१०४, ९ । ७, १८, ११, २१२९ । १९, १०,
 ११, २१४९, ५० । २०, ३; २१५३ । २१, ३; २१६३ ।
 २२, ७; २१७७ । २३, ५; २१८४ । २५ ४, ५; २१९५,
 ९६ । २७, १; २२०३ । ३०, १४; २२१८, २१ । ३२,
 ११, २२, २७, २२४५, ५६, ६१ । ८, १, १४, १०० । २, ९,
 २५ ३६, १२४, ४०, ५१ । २१, ८; ४१६ । ४४, २, ८;
 ७९१, ९७ । ३२, ५; १८४ । ३४, १४, ४३८ । ४५, ३, ३४,
 ४४५, ७६ । ४६, २१, १८२७ । ४९, ३, ४८७ । ५०, ९;
 ५०३ । ६१, ५, १८, ५५२, ६५ । ६२, ११, ५७६ । ६३,
 ११; ५८८ । ६६, ५, ६१७ । ७०, ९, २३२९ । ७८, १, ४;
 ६५१, ५४; ८१, ३, ६७२ । ९२, २८, २४२४ । ९८ ८;
 २३७१ । ९७, १५ ९९० । १०, २२, ९, १०, ११, १२, १५;
 २४७४, ७५, ७६, ७७ ८० । ४२, २, ४, २५४७, ४९ । ५०, २;
 २६०२ । ५५, ८; २६२१ । ७३, ४; २६२६ । १०५, ४, ६;
 २७१७, १२ । ११२, १, २७३५ । १३१, १, २७७३ ।
 १४८ २, ४, ५, २८१० १२, १३ । ४७ १; २८४२ । अथर्वं
 ७ ३१ १; २९०५ । २, ५, १; २८६३ । सामं १२६,
 २९७६ । २०९, २९७७ । ९५२; २९२७ । ऋ० ४, ४१,
 ७; ३१५२

शूरः [वरुणः] ७ ८४ ४, ३१९५ । [विष्णुः] १, १५५, १; ३३०३
 शूरसाता [इन्द्राक्षी] ७, ९३, ५; ३०७५
 शूशुवम्-वांसम् (द्वि०) ६, १९, २; १८७२ । ७, २३, २; ३०७२
 शूशुवानः ७, २० २; २१५२ । १०, ४७, ४, २८४५
 शृंगवृषः नपात् ८, १७ १३; ४०६
 शृणु (स्तुतिम्) ३, ३०, २२; १२५९ । ३१, २२, १२८१ ।
 १०, १०४ ११; २७१३
 श्वथनः २, २१ ४; १२२०
 श्वश्रु ऊर्ध्वथा दोषुवत् १०, २३, ९, २४८१
 श्वधानः ओजः १, १०३, ३; ८४१
 श्वयन् २, १३, १२; ११४८

अवस्काम ८, २, ३८, १५३
 अवस्यन् १, १७७, १, १०९१
 अवस्युः १, ५६, ६, ८०२ । अथ० ६, ९८ २, २९०३
 अवाच्या (अवा) वाजेषु [इन्द्राग्नी] ५, ८६, २, ३०४१
 अवोजित् घृतनासु ८, ३२, १४; १९३
 आवयत्सखा ८, ४६, १२; १८२८
 अतः इमश्रुषु ८, ३३, ६; २१५
 अत्रयः वसानः ३, ३८, ४, १३४८
 अत्रि विद्याः यस्मिन् अधि ८, ९२, २०; २४१६
 अतः १, ५४, २; ७८३ । ५६ ८; ८०४ । २, २०, ६, १२१३ ।
 ३, ४६, १, १४०९ । ४, ३०, २, १६१० । ८, २, १३; १२८ ।
 १३, १०, ३३० । ५०, १, ४९५ । ६२, ९, ५७४ । ९६, १;
 २३५५ । १०, २२, १२, २४६६-६७ । ३८, ४, २५४४ ।
 साम० ४४५, २९८८
 अतः ऋषिः १०, ४७, ३; २८४४
 अतः गीर्भिः ८, २, २७, १४२
 अतः पुरुषा ४, ३२, २१; १६६५
 अतः शवसा ८, २४, २, १७९१
 अता [त] मवः ८, ९३, १, २४३०
 अत्कर्णः ७, ३२, ५, २२३९ । ८, ४५, १७, ४५९
 अत्यः ८, ४६, १४, १८३०
 अत्यं नाम बिभ्रत् ५, ३०, ४; १६८६
 अष्टा [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, २; ३१६२
 ओता ६, २३, ४; १९२१ । १४, २; १९२९
 ओकी ८, ९३, ८; २४३७
 ओनौ [इन्द्राग्नी] ८, ४०, ८, ३१०८
 षाट् १, ६३, ३; ८८७
 षोडशी-बिन् वा०य० २६, १०; २९६६
 स्मराराणः ८, ३२, ८, १८७
 संवनन ८, १, २, ८८
 संविद्यानः ओजसा शवोभिः १, १३०, ४, १०१४
 संसदः सप्त यस्मिन् रणन्ति ८, ९२, २०, २४१६
 संसृष्टजित् १०, १०३, ३; २६९४
 संस्कृतः रणाय ८, ३३, ९, २१८
 संस्त्रष्टा १०, १०३, ३; २६९४
 सक्तुः १०, १४८, ४; २८१२
 सक्षणिः ८, ७०, ८, २३२८
 सक्षणिः अभिमातीः ८, २४, २६, १८१५
 सखा १, ३०, १०, ११, १२; ७०८-९-१० । ५४, २; ७७६ ।

१२९, ४; १००३ । २, २०, ३; १२१० । ३, ३१, ८, १२६७ ।
 ३९, ५; १३५९ । ४३, ४; १३९४ । ५१, ६; १४३९ ।
 ४, १७, १८, १५०५ । ४, ३१, १, १६३० । ६, ३३, ४, २०१९ ।
 ४५, १, ७, १७, १९, २०६० ६६, ७६, ७८ । ७, १९, १०
 २१४९ । ८, २, २७, ४०; १४२, १५५ । १३, ३; ३२३ ।
 ६१, ११, ५५८ । ९३, ३, २०३२ । १००, १२; ९९९ ।
 १०, ४२, २, ११; २५४७, ५६ । ४३, ११; २५६७ । ४४, ११;
 २५७८ । ११२, १०; २७४४ । ६, ६०, १४; ३०६९
 सखाय. [मरुतः] १, १६५, ११, १३, ३२६०, ३२६२
 सखा मे ८, १००, २, ९९२
 सखा अवृक ४, १६, १८; १४८४
 सखा घृत् १०, २७, ६, २४९६
 सखा मुनीनाम् ८, १७, १४; ४०७
 सखा सखिभि १, ८४, ४; ९६०
 सखा सुतानाम् साम० २२६ २९७९
 सखा सुन्वतः १, ४, १०; १३ । ८, ३२, १३; १९२
 सखा सोम्यानाम् ४, १७, १७, १५०४
 सखीयन् अगिरोभिः ३, ३१ ७; १२६६
 सखीयताम् अविता ४, १७, १८; १५०५
 संक्रन्दन १०, १०३, १, २, २६९२-९३
 संगमनः वसूनाम् [अग्निः] वा० य० १२, ६६, २९२९
 सचेता १, ६१, १०, ८६५
 साजित्वाना (नौ) [इन्द्राग्नी] ३, १२, ४, ३०३३
 संचकानः ५, ३०, ७; १६८८
 सज्जगमानः [मरुद्गणः] १, ६, ७, ३२४६
 सत् (सन्) ८, ४५, १७ ४५९
 सत् सत् अतिमानम् ३, ३१, ८; १२६७
 सतीनमन्युः १०, ११२ ८, २७४२
 सतीनसत्वा १, १००, १, ९५७
 सत्पतिः १, ११, १, ७० । ५४, ६, ७८० । १००, ६, ९६२ ।
 १७४, १; १०६९ । ३, ३४, ७, १३०७ । ४०, ४; १३६७ ।
 ५, ३२, ११, १७१५ । ६, २६, २, १९४९ । ४६, १, ३;
 २०९०, ९२ । ८, २, ३८, १५३ । १२, ८, १८, २९५, ३०५ ।
 १३, १२, ३३२ । २१, १०, ४१८ । ३६, १-६, १७६९-७४ ।
 ५३, ६; ५३० । ६१, १७; ५६४ । ६८, १, २२९१ । ६९ ४;
 २३०७ । ९३, ५; २४३४ । १०, ८, ९, २३६५ । ४३, ९;
 २५६५ । ५०, २, २६०२ । वा०य० ३३, २७; २९६८ । ऋ०
 ६, ६०, ६; ३०६१ । १, १६५, ३, ३२५२
 सत्यः १, २९, १; ६९२ । ६३, ३; ८८७ । १७४, १, १०६९ ।
 २, १२, १५; ११३६ । १५, १; ११६२ । २२, १-३, १२२३-२५ ।

४, २१, १०; १५५३ । ६, २२, १; १९०७ । ४५, १०;
 २०६९ । ८२, ३६; १५१ । १६, ८, ३८९ । ९०, २, ४
 २३९२, ९४ । ९२, १८; २४१४ । ९८, ५; २३६८ । १०, ४७,
 ४, २८४५ । ८, ४०, १०; ३११०
 सत्यताता १०, १११, ४; २७२८
 सत्यधर्मा [अग्नि] वा० य० १२, ६६, २९२९
 सत्यमहा ८, २, ३७, १५२
 सत्ययोनिः ४, १९, २; १५२३
 सत्यराधस् धा. १, १०१, ८, ८२४ । ४, २४, २, १५७८ ।
 २९, १, १६०४ । ७, ३१, २; २२२४ । १०, २९, ७; २५२१ ।
 ४९, ११, २६००
 सत्यश्रुतः १, ५१, १५; ७५९ । ५८, १, ८११ । १०३, ६;
 ८४२ । ३, ३०, २१; १२५८ । १०, ४४, ३, २५७० । ११२,
 १०; २७४४
 सत्यसत्त्वन् ६, ३१, ५, २०१०
 सत्यस्य सन्तुः ८, ६९, ४; २३०७
 सत्राकरः १, १७८, ४, १०९९
 सत्राजित् २, २१, १; १२१७ । ८, ९८, ४, २३६७ । साम०
 २३१; २९८०
 सत्रादावन्त्वा १, ७, ६, ३३
 सत्रासाह-षाट् २, २१, २-३; १२१८-१९ । ३, ३४, ८; १३०८ ।
 ५१, ३; १४३६ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, ९२, ७, २४०३
 सत्राहन्त्वा । ४, १७, ८; १४९५ । ६, ४६, ३; २०९२
 सत्वन्त्वा १, १७३, ५; १०६० । ६, १८, २; १८५७ ।
 २२, १; १९०७ । २९, ६; १९६७ । ३७, ५; १९७७ । ४५,
 २२; २०८१ । ७, २०, ५, २१५५ । ८, १६, ८; ३८९ ।
 ४५, २१; ४६३ । ८, ४०, १०-११; ३११०-३१११
 सत्वनां केतुः ८, ९६, ४, २३४८
 सदस्पती [इन्द्राग्नी] १, २१, ५, ३००६
 सदावृधः ४, ३१, १; १६३० । ५, ३६, ३, १७४६ । ८, १३,
 १८; ३३८ । ६८, ५, २२९५ । ७०, ३; २३२३
 सदिवः २, १९, ६; १२०४
 सद्यो ज्ञानः हव्यः ८, ९६, २१; २३६३
 सद्यो जातः ८, ७७, ८, ६४७
 सद्यो ह जातः ३, ४८, १; १४१९
 सधमाद्यः ८, ३, १; १५६ । ५४, ५; ५३५ । ९७, ७; ९८२
 सधवीरः ६, २६, ७, १९५३
 सधस्तुती [इन्द्राग्नी] ८ ३८, ४; ३०२४
 सनजाः १०, १११, ३; २७२७
 सनहाजः १०, ४७, ४; २८४५

सन्श्रुतः ३, ५२, ४, १४४९ । ८, ९२, २, २३९८ । १०, २३, ३;
 २४८३
 सनात् २, १६, १; ११७२ । ८, २, ३१, १४६ । २१, १३; ४२१
 सनात् अमृक्तः ८, २, ३१, १४६
 सनात् पुरुवसु ७, ३२, २४, २२५८
 सनिमित्रस्य ८, १२, १२; २९९
 सनितृ-ता १, ३०, १६, ७१४ । १००, ९, १०, ९६५-६६ ।
 ८, २, ३६, १५२ । ४६, २०; १८३६ । ६१, १२; ५५९
 सनिता वाजम् ४, १७, ८; १४९५
 सनीळाः [मरुतः] १, १६५, १, ३२५०
 सन्धाता सन्धिम् ८, १, १२; ९८
 सपर्यन् १०, १०५, ४, -७१७
 ससरश्मिः २, १२, १२; ११३३
 ससहा १०, ४९, ८, २५९७
 सप्रथः ७, ३१, ६, २२२८
 सवर्धुषः [धेनुरूपाः इन्द्र] ८, १, १०; ९६
 सबलः ८, ९३, ९; २४३८
 समः ६, २७, ३, १९५७
 समत्-त् ७, २०, ३; २१५३
 समत्सु हव्य विश्वास्तु ८, ९०, १, ३९१
 समद्वन्द्वस्य कर्ता १, १०० ६; ९६२
 समराणः वा० य० ३३, २७, २९६८ । ऋ० १, १६५, ३; ३२५२
 समर्थ ५, ३३, १; १७१७
 समह (संबो) ८, ७०, १४; २३३४
 समानः १, १३१, २, १०३२ । ४, ३०, २२; १६२७ । ८, ९९, ८;
 २३८३ । ८, ४५, २८; ४७०
 समानवर्चसा [इन्द्रामरुतः] १, ६, ७, ३२४६
 समिधेषु प्रहावान् ४, २०, ८; १५४०
 समुद्रव्यचस्-चाः १, ११, १; ७०
 समुद्रिय १, ५६, २; ७९८
 सम्भरः वस्त्रः ४, १७, ११; १४९८
 सम्भृतक्रतुः १, ५२, ८, ७६७
 सम्भुताश्च ८, ३४, १२; ४३६
 संमिश्र ८, ६१, १८; ५६५
 सम्राट् ४, १९, २, १५२३ । ८, ४६, २०; १८३६ । १०, ११६ ७;
 २७६१ । वा० य० ८, ३७, ३२०९ [इन्द्रावरुणौ] १, १७, १;
 ३१३४ । [वरुणः] ६ ६८, ९, ३१६९ । ७, ८२, २; ३१७३
 सम्राट् वर्षणीनाम् ८, १६, १; ३८२
 सम्राट् महः दिवः पृथिव्याश्च १, १००, १, ९५७ । १०,
 १३४, १; २७८५

सञ्जाट् वस्त्रः ४,२१,१०; १५५३
 सरणयन् ३,३१,१८; १२७७
 सरस्वतीवन्तौ [हन्द्वाग्नी] ८,३८,१०; ३१००
 सर्वसेनः ५,३०,३; १८८४। [हन्द्वावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
 सवनं जुषाण. ३,३२,५; १२८६
 सवयसः (मरुतः) १,१६५,१; ३२५०
 सविता २,३०,१; १२२७। ३,३३,६; १२९९। ३८,८; १३५२
 सभ्यत् (ते-चतुर्थी) २,१६,४; ११७५
 ससवान् ६,४४,७; १०४२
 ससवान् देवीः अपः स्वः च ३,३४,८; १३०८
 ससहान् पश्य 'सासहान्' ।
 सस्त्रि १०,३८,४; २५४४ । [हन्द्वाग्नी] ८,३८,१; ३०९१
 सस्त्रिः १०,९९,४; २६८३
 सस्यावाना त्वं एक इत् यवयसि ८,३७,४; १७७९
 सहः १,५७,२; ८०६
 सहः दधिषे भोजिष्ठम् ८,४,१०. २३८
 सहः दधिषे उषेष्ठम् ८,४,४; २३२
 सहः महः तन्वी भरति २,१६,२; ११७३
 सहमान. २,२१,२; १२१८। ६,१८,१; १८५६ । १०,
 १०३,५; २६९५
 सहमानः वृण्वेभिः अन्यान् ३,४६,२; १४१०
 सहसान ४,१७,३; १४२०
 सहस सूनुः ६,१८,११; १८९६ । २०,१; १८८४ । १०,
 ५०,६; २६०६
 सहसावन् ७,१२,७; २१४६
 सहस्कृतः ८,९९,८; २३८३
 सहस्कृतः सहस्र ऋषिभि ८,३४, १५९
 सहस्रचेताः १,१००,१२; ९६३
 सहस्रणीयः ३,६०,७; ३३४३
 सहस्रदासां क्रतुः १,१७,५; ३१३८
 सहस्रमुक्कः ६,४६,३; २०९२
 सहस्रमूर्तिः १,५२,२; ७६१
 सहस्रवाजः १०,१०४,७; २७०९
 सहस्राक्षा [हन्द्वावायु] १,२३,३; ३२१४
 सहस्रिन्-स्त्री १०,४७,५; २८४६
 सहस्रोतिः ८,३४,७; ४३१
 सहस्रमा (मौ) [हन्द्वाग्नी] ६,६०,१; ३०५६
 सहावान् १,१७५,२,३; १०८०-८१ । ३,४२,३; १४२६ ।
 ६,१८,२; १८५७
 सहिष्ठः ६,१८,४; १८५९
 द्वै० [हन्द्वा] ४२

सहीयस्-यान् १,६१,७; ८६२
 सहुरिः २,२१,३; १२२१। ४,२२,९; १५६३। ६,६०,१; ३०५६
 सहोजाः १०,१०३,५; २६९५
 सहोदाः १,१७४,१.१०; १०६९.७८ । ३,३४,८; १३०८ ।
 ४७,५; १४१८ । ६,१७,१३; १८५३ । १९,११, १८८१ ।
 १,१७१,५; ३२६७
 सद्यु ६,१८,१२; १८६७
 साक जातः भोजसा २,२२,३; १२२५
 साक जातः क्रतुना २,२२,३; १२२५
 साकं वृधा (धौ) [हन्द्वाग्नी] ७ ९३,२; ३०७२
 साकं वृद्ध. वीर्यैः २,२२,३. १२२५
 साधारणः शश्वताम् ४,३२.१३; १६५७ । ८,६५,७; ६०७
 साधुकर्मा वा० य० १७,२३; २९३१
 साधु कृण्वन् ८,३२,१०. १८२
 सानसिः १,१७५ २, १०८०। २,१२,४१०। ७,९३,२; ३०७२
 सासहानः १,१३१,४; १०२४
 सासहिः १०,१३३,४. २७८१ । १,१७१.६; ३२६८
 सासहिः पृतनासु १,१०२,९; ८३६ । ८,६१,१२; ५५९ ।
 ७०,४; २३२४
 सासहिः पृसु ८,६१,३; ५५०
 सासहिः पौस्व्येभिः १,१००,३; २५९ । ३०२,१, ८२८ ।
 ८,१२,९. २९६
 सासहिः मृधः २,२२,३; १२२५
 सासहिः वाजेषु ३,३७,६; १३३९
 सासहान् ८,४६,१६; १८३२
 सासहान् वृषाद्ये भमित्रान् १,१००,५; ९६१
 सासहान् युधा भमित्रान् ८,१६,१०. ३९१
 साहान् २,१२,६; १२१३
 सिम १,१०२,६; ८३३
 सिषासन् १,१३०,३; १०१३ । ५,३१,१, १६९३
 सुकर्माणो [अग्निनी] वा० य० २०,७५, २२५९
 सुकृत् ३,३१,७; १२६६
 सुकृतः ६,१९,१; १८७१
 सुकृत १,५.६; १९ । ५१,१३; ७५७ । ५६६, ८०२ ।
 ३,४९,१; १४२४ । ६,३०,२,३; १९६९-७० । ८,१,१८;
 १०४ । ३३,५,१३; २१४,२२२
 सुकृत ८,५४ ६, ५३६ । ९६,१९, २३६१ । १०,४९,९,
 २५९८ । १४४,६; २८०३
 सुक्षत्रः ५,३२,५; १७०९ । ३८,१; १७५५
 सुखरथः ५,३०,१; १६८२

सुगम्यः १, १७३, ४, १०५९
 सुजातः १०, ९९, ७, २६८६
 सुतक्रि (क्र-मबो०) ६, ३१, ४, २००९
 सुतपाः ४, २५, ७, १५९४ । ६, २३, ६; १९२३ । २४, १;
 १९२८ । ८, २, ४, ११९ । [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, १०, ३१७०
 सुतपागान् ६, २४, ९, १९३६ । ८, २, ७, १२२
 सुतसोमम् इच्छन् ५, ३०, १; १६८२ । ७, ९८, १, २२७९
 सुतानाम् ईशधे ८, ६४, ३, ५९१
 सुतेरणः १०, १०४, ७, २७०९
 सुत्रामा ६, ४७, १२, १३, २११०-११ । १०, १३१, ६, ७,
 २७७६-७७ । १०, ५०, १९, ८५, २९४३ । २०, ७१, ७२
 ९०; २९५५, २९५६, २९६३
 सुदसा १, ६२, ७, ९, ८७८, ८० । ३, ३२, ८; १२८९
 सुदक्षः १, १०१, ९, ८२५ । १०, ४७, ४; २८४५
 सुदक्षिणः ७, ३२, ३, २२३७ । ८, ३३, ५; २१४
 सुदाः ८, ७८, ४, ६५४
 सुदानुः ६, ३८, १, १९७८ । ७, ३१, २, २२२४ । ८, ८८, २,
 ८९५ । [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ८, ३१५३ । [मरुद्गणाः] १, २३, २,
 ३२४९
 सुदामन्-मा ६, २०, ७; १८९०
 सुदुधा [धेनुरूप इन्द्र] ८, १, १०, ९६ । [सरस्वती] वा० य०
 २०, ७५, २९५२
 सुदृक् ४, २३, ६, १५७१
 सुनीतिः ६, ४७, ५; २१०५
 सुनीधः १०, ४७, ३; २८४३
 सुन्वतः वृधः ५, ३४, ६, १७३२
 सुन्वतः सखा ८, ३२, १३; १९२
 सुपाणिः ३, ३३, ६, १२९९
 सुपारः १, ४, १०, १३ । ३, ५०, ३; १४३१ । ६, ४७, ७,
 २१०५ । १, १०९, ४, ३०२४ । ८, १३, २, ३२२ । ३२, १३, १९२
 सुपेशसौ [अश्विनौ] वा० य० २०, ७४, २९५८
 सुषाव्य २, १३, ९, ११४५
 सुप्रकेताः [मरुतः] १, १७१, ६, ३२६८
 सुवाहुः ८, १७, ८, ४०१
 सुवह्ना १०, ४७, ३, २८४४
 सुमखः १, १६५, १०, ३२६०
 सुमतिं चकानः १०, १४८, ३, २८११
 सुमतिः भद्रा अस्य ३, ३०, ७, १२४४
 सुमनाः ३, ३५, ६, ८, १२१७ १९ । ४, २०, ४; १५३६
 सुमन्नुनामा ६, १८, ८; १८६३

सुमृतीक. १, १३९, ६; १०४१ । ६, ४७, १२; २११० ।
 १०, १३१, ६, २७७६
 सुयज्ञः २, २१, ४; १२२०
 सुगधा. ४, १७, ८; १४९५ । ८, १४, १२; ३६५ । ४९, १;
 ४८५ । ५०, १, ४९५
 सुरूपकृन्तुः १, ४, १, ४
 सु अः १, १००, १८, ९७४ । ४, १७, ८; १४९५ । ६, १७,
 १३; १८५३ । ७, ९३, ४; ३०७४ । ७, ३०, १; २२१८
 सुवह्ना ६, २२, ७; १९१३
 सुविद्वान् ८, २४, २३, १८१२
 सुवीरः ६, १७, १३; १८५३ । ४५, ६; २०६५
 सुवृक्तिः १०, ७४, ५; २६३८ । १४०, ७; २७०९
 सुवेदा. ७, ३३, २५, २२५९
 सुशस्त्रिः १०, १०४, १०, २७१२
 सुशिप्रः १, ९, ३, ५० । १०१, १०; ८२६ । २, १२, ६;
 ११२७ । ३, ३०, ३, १२४० । ३२, ३, १२८४ । ५०, २;
 १४३० । ५, ३६, ५, १७४८ । ६, ४६, ५; २०९४ । ७, २४,
 ४; २३८९ । ८, २१, ८; ४१६ । ३२, ४, १८३ । ६६, २, ४,
 ४, ६१४, १६, १६ । ६९, १६; २३१८ । १३, ३२; २४४१ ।
 ९९, २, २३७७
 सुशंवः [ब्रह्मणस्पतिः] ७, ९७, ३; ३३६०
 सुश्रवस्तमः १, १३१, ७; १०२७ । ३, ४५, ५; १४०८ । ८,
 १३, २; ३२२ । ४५, ८, ४५०
 सुश्रवस्यः १, १७८, ४; १०९९
 सुश्रुत ३, ३६, १; १३२३
 सुषव्यः ८, ३३, ५; २१४
 सुषाः ८, ७८, ४, ६५४
 सुषुम्नः १०, १०४, ५, २७०७
 सुष्टु १०, १०४, ५; २७०७
 सुष्टुतः १, १२९, ११; १०१० । १७७, ५; १०९५ । ४, २४,
 २; १५७८ । ८, ६, १२; २५४
 सुष्टुतिः ८, ९६, १२, २३५६
 सुष्टुभः ब्रह्मणात् अथर्व० २०, २, ३; २९१७
 सुमहशः १, ८२, ३; ९२७ । [इन्द्रवायू] वा० य० ३३, ८६;
 ३२४३
 सुमनिता ८, ४६, २०; १८३६
 सुहवः ३, ४९, ३; १४२६ । ४, १६, १६; १४८२ । ६, २१, ८;
 १९०४ । २९, ६; १९६७ । ४७, ११; २१०९ । [इन्द्राग्नी]
 ७, ९३, १, ३०७१ । [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, ४; ३१७५ । [इन्द्रवायू]
 वा० य० ३३, ८६; ३२४३ । अथर्व० ३, २०, ६; ३२४४

सुहार्दः ८, २, ५; १२०
 सुतुः १, १०३, ४; ८४२
 सुतुः सत्यस्य ८, ६९, ४; २३०७
 सुतुतः ८, ४६ २०, १८३६
 सुतुतानां गिरां पतिः ३, ३१, १८; १२७७
 सूरः ८, ६, २५; २६७
 सूरिः ६, २३, १०, १९२८ । ३७, ५; १९७७ । ८, ७०, १३; २३३३
 सूर्यः ४, ३१, १५; १६४४ । ८, ९३, १, ४, २४३०, ३३ । १०, ८९, २; २६६४
 सूर्यस्य जनिता ३, ४९, ४, १४२७ ।
 सृजानः अध्वनः १०, २२, ४; २३६९
 सृष्टकरस्तनः ८, ३२, १०, १८९
 सेनानी ७, २०, ५; २१५५
 सेन्यः १, ८१, २; ९१७
 सेन्यः विश्वेषु जनेषु ७, ३०, २; २२१९
 सेहानः अभिद्रुहः पृथना ८, ३७, २; १७७७
 सेहानः उरुज्ज्वलः ८, ३६, १-६, १७६९-१७७४
 सेहानः विश्वा पृथना ८, ३६, १-६, १७६९-१७७४
 सोमः ८, ७८, ८, ६५८
 सोमकाम १, १०४, ९; ८५५
 सोमपतिः ३, ३२, १; १२८२ । ५, ४०, १; १७६५ । ८, २१, ३; ४११
 सोमपाः १, १०, ३; ६० । २९, १, ६९२ । ३०, ११-१२; ७०९ १० । २, १२, १३; ११३४ । ३, ३९, ७; १३६१ । ४१, ५; १३७७ । ४, ३२, १४; १६५८ । ६, ४५, १०, २०६९ । ८, २, ४; ११९ । १४, १५, ३६८ । १७, ३; ३९६ । ३२, ७; १८६ । ३३, १५, २२४ । ६६, ६, ६१८ । ९, ८, १८; २४०४ १४ । ९७, ६. ९८१ । ९८, ५; २३६८ । १०, १०३, ३; २६९४ । १५२, २; २८१५ । [इन्द्रावृद्धस्वनी] ४, ४९, ३; ३३१९ ।
 सोमपातमः ६, ४२, २, १९९९ । ८, ६, ४०; २८२ । १२, १, २०; २८८, ३०७
 सोमम् जठरे भरति २, १६, २, ११७३
 सोमपावन्-वा १, ५६, ७, ८०३ । ५, ४०, ४; १७६८ । ७, ३१, १; २२२३ । ३२, ८; २२४२ । ८, ७८, ७, ६५७
 सोमम् उशान् ४, २४, ६; १५८२
 सोमवृद्धः ३, ३९, ७; १३६१ । ६, १९, ५; १८७५
 सोमस्य पीथी १०, ११३, १; २७४५
 सोमानी पाता ८, ९३, ३३; २४६२

सोमिन् ८, ६२, १; ५६६
 सोम्यः ४, २५, २; १५८८, ९३, ८; २४३७, ९५, ८; २३४३
 स्तवमानः ७, १९, ११. २१५० । ८, २४, ४. १७९३
 स्तवान् २, १९, ५; १२०३ । २०, ५; १२१२, २४, ८, १९३५
 स्तवान् ३, ४०, ३; १३६६, ६, ४६, २; २०९१, ८, २४, ३; १७९७
 स्तुतः ८, १४, ४; ३५७ । १०, ५०, २; २६०२
 स्तुषंठ्य १०, १२०, ६, २७६२
 स्तोतृणाम् आवता १०, २४, ३; २४९०
 स्तोत्र हयन् १०, १०५, १; २७१४
 स्तोमवर्धनः ८, १४, ११. ३६४
 स्तोमवाहाः ६, २३, ४; १९२१
 स्तोमं जुजुषाणः ८, ६६, ८. ६२०
 स्तोम्यः ८, १६, ८; ३८९ । २४, १९. १८०८
 स्थिरः ३, ४६, १, १४०९ । ४, १८, १०; १५१८ । ६, १८, १२; १८६७ । ३२, १; २०११ । ४७, ८, २०६ । १०, १०३, ५, २६९५ । १, १७१, ५; ३२६७
 स्थाता ६, ४१, ३; १९९५
 स्थाता रथस्य ३, ४५, २ १४०५
 स्थाता हरीणाम् ८, २४, १७, १८०६ । ३३, १२; २२१ । ४६, १, १८१७
 स्थिरः २, ४१, १०; १२३५ । ३, ३०, २; १२३९ । ८, ३३, ९; २१८ । ९२, २८, २४२४
 स्थिरः कर्मणि कर्मणि १, १०१, ४, ८२०
 स्थिरः पृथनासु ८, ३२, १४; १९३
 स्थिरास्तु साम ३२७, २९८३
 स्पष्ट ८, ६१, १५, ५६२
 स्पर्धमाने मिथती [इन्द्राणी] ७, ९३, ५. ३०७५
 स्पर्हः ८, २४, ८; १७२७
 स्पर्हाराधाः ४, १६, १६, १४८२
 स्पृधानः ३, ३१, ४, १२६३
 स्पृष्टगन्धि ८, ३४, ६, ४३०
 स्पृष्टिः ३, ४५, ५; १४०८
 स्यन्ता १०, २२, ४, २४६९
 स्वतव ६, २२, ६, १९१२
 स्वदावन् ८, ५०, ५; ४९९
 स्वधापतिः ६, ४४, १, २, ३; २०३६-३७-३८
 स्वधावान् १, ६३, ६; ८९० । १७३, ६; १०६१ । २, १२, ६; १२१३ । ३, ३५, ३; १३१४ । ४७, ८; १३८० । ४, २०, ४; १५३६ । ५, ३२, १०; १७१४ । ६, १७, ४, १८४४ ।

२१,३; १८९९ । ७,२०,१; २१५१ । ८,४९,५; ४८९ ।
 १०,४२,९; २५५४
 स्वपति १०,४४,१; २५६८
 स्वपस्यमानः १,६२,९; ८८०
 स्वभिष्टि १,५१,२; ७४६
 स्वभिष्टिसुम्नः ६,२०,८; १८९१
 स्वभूयोजाः १,५२,१२; ७७१
 स्वय गातुः ४,१८,१०; १५१८
 स्वयशस्तरः ३,४५,५; १४०८
 स्वयुः ३,४५,५; १४०८
 स्वराट् १,५१,१५, ७५९ । ६१,९, ८६४ । ३,४५,५, १४०८ ।
 ४६,१; १४०९ । ४९,२; १४२५ । ८,१२,४, ३०१ ।
 ६१,२; ५४९ । ६९,१७; २३१९ । ८१,४, ६७३ । ७,
 ८२,२; ३१७३
 स्वरिः १,६१,९; ८६४
 स्वरोचिः ३,३८,४; १३४८
 स्वजित् २ २१,१; १२१७ । १०,१६७,२; २८३०
 स्वर्हक् ७ ३२,२०, २२५६
 स्वर्पतिः ८,९,७,११; ९८६
 स्वर्वान् ६,२२,३; १९०२ । ८,९७,१; ९८६
 स्वर्विद् १,५२,१, ७६० । ३,५१,२; १४३५ । अथर्व० ४,
 २४,३,४, २८६९-२८७०
 स्वर्षा १,६१,३; ८५८ । १००,१३; ९६९
 स्वर जितं येन मरुत्वता ८,७६,४; ६३१
 स्ववसः १०,४७,२; २८४३
 स्ववान् ६,४७,१२,१३, २११०-११ । १०,१३१,६,७;
 १२७६-७७
 स्ववृज् १० ३८,५, २५४५
 स्वश्वः ४,२९,२; १६०५ । ५,३३,३; १७१९
 स्वश्वयु ८,४५,७; ४४९
 स्वस्तिदाः १०,११६,२; २७५६ । १५२,२; २८१५
 स्वापिः ८ ५३,५, ५२९
 स्वायुधः ६,१७,१३, १८५३ । १०,४७,२; २८४३
 स्वावसुः [अग्निः] अथ० ७,५०,३; २९०८
 स्वोजाः ६,२२,६, १२१२, ७,२०,३, २१५३ । १०,२९,८; २५२२
 हन्ता दस्योः ८,९८,६; २३६९
 हन्ता पापस्य रक्षसः १,१२९,११; १०१०
 हन्ता वृत्रम् ४,१७,८, १४९५ । २१,१०; १५५३ । ६,
 ४४,१५, २०५० । ७,२०,२, २१५२ । ८,२३,३६, १४७, १५१
 हरि ३,४४,३; १४०१

हरित ३ ४४,४ १४०२
 हरिवान्-वः [संबो] १,३,६; ३ । ८१४; ९१९ । १६७,
 १, १०४२ । १७३,१३, १०६८ । १७४,६; १०७४ ।
 १७५,१; १०७९ । ३,३०,२; १२३९ । ४७,४; १४१७ ।
 ५१,६; १४३९ । ५२,७, १४५२ । ४,१६,२१; १४८७ ।
 १९,९; १५३० । २२,७; १५६१ । ५,३१,२; १६९४ ।
 ३६,२,४; १७४५,४७ । ६,१९,६; १८७६ । २२,३, १९०९ ।
 ४१,३; १९९५ । ४४,१०, २०४५ । ७,१९,७; २१४६ ।
 २०,४; २१५४ । २५,४; २१९५ । २९,१; २२१३ । ३२,
 १२, २२४६ । ८,२,१३; १२८ । २१,६; ४१४ । २४,३,
 ५; १७९२, ९४ । ५३,८, ५३२ । ६१,३; ५५० । ९९,२;
 २३७७ । १०,४९,११; २६०० । १०४,२,६, २७०४, ८ ।
 वा० य० ३३,२७, २९६८ । साम० २२६, २९७९ । ऋ० ८,
 ४०,९; ३१०९ । अथ० ७,९७,२, ३१२१ । ऋ० १,१६५,
 ३; ३२५२
 हरिमियः ३,४१,८; १३८०
 हरिष्ठाः ३,४९,२; १४२५ । ६,१७,२; १८४२
 हरिभ्याम् ईयमान ५,३०,१, १६८२
 हरिभिः युजानः ८,५०,७, ५०१
 हयोः ईशानः ४,१६,११, १४७७
 हरीणां पतिः ८,२४,१४; १८०३
 हरीणां स्थाता ८,२४,१७; १८०६ । ३३,१२; २२१ ।
 ४६,१ १८१७
 हर्यत् ३,४४,२,२, १४००, १४००
 हर्यत् १,५८,२; ८१२
 हर्यत् स्तोत्रम् १०,१०५,१, २७१४
 हर्यश्वः ३,३१,३; १२६२ । ३२,५; १२८६ । ३६,४,९;
 १३२६, ३१ । ४४,२,४; १४००, २ । ५२,७; १४५२ ।
 ७,१९,४, २१४३ । २१,१, २१६१ । २२,१, २, २१७२ ७३ ।
 २४,४, २१८२ । २५,५; २१९६ । ३१,१, १२, २२२३, ३४ ।
 ३२,१५; २२४९ । ८,२१,१०; ४१८ । ५३,२; ५२६ ।
 ६६,४, ६१६ । ९० ३, २३९३ । १०, १०४, ३, ५, २७०५, ७
 हवनश्रुतः ८,१२, २३, ३१० । [इन्द्राग्नी] ६,५९,१०; ३०५५ ।
 [इन्द्रावरुणौ] ७,८३,३; ३१८४
 हवनश्रुतः वाजेषु १,१०,१०, ६७
 हवमानः अनेहसम् ८,५०,४; ४९८
 हविष्मती [सरस्वती] वा० य० २०,७४; २९५८
 हव्यः १,३३,२; ७३१ । १००,१; ९५७ । ८,१६,८, ३८९ ।
 ९६,२०-२१; २३६२-६३ । अथ० ६ ९८,३; २९०४
 हव्यः आरणेषु ८,७०,८; २३२८

हव्यः एकः इत् ६,२२,१; १९०७
हव्यः गाधेषु ८,७०,८, २३२८
हव्यः दन्त्रेभिः भूरिभि च १०,३८,४; २५४४
हव्यः धीभिः ६,१८,६; १८६१
हव्यः नृभिः विश्वधा ७,२२,७; २१७७
हव्यः भगो न ३,४९,३; १४२६
हव्यः भरेभरे ७,३२,२४; २२५८
हव्यः वाजेषु ८,७०,८, २३२८
हव्यः वृत्रहये ४,२४,२; १५७८
हव्यः शूरेभिः भीरुभिः च १,१०१,६; ८२२
हव्यः समस्तु विश्वासु ८,९०,१; २३९१
हव्यवाहनः देवेभ्य १०,११९,१३; २८६२
हिरण्ययः १,७,२; २९ । ८,६६,३; ६१५
हिरण्ययः उत्सः ८,६१,६; ५५३
हिरण्ययुः ७,३०,३; २२०५

हिरण्यवर्णः ५,३८,२; १७५६
हिरण्यवर्तनी [अश्विनौ] वा० य० २०,७४, २९५८
हिरण्ययीनी राजा ८,६५,१०, ६१०
हिरिशिप्रः ६,२९,६; १९६७
हिरीमशः १०,१०५,७; २७२०
हिरीमान् १०,१०५,७, २७२०
हुवानः अस्माभि साविभिः १०,११२,३; २७३७
हुवानः देवान् [अग्निः] ७,३०,३; २२२०
हूयते य धावद्भि जिग्युभिः च १,१०१,६; ८२२
हूयमानः १,१०४,९; ८५५ । १०,२८,३; २५२४ । ११६,१;
२७५५
हूयमानः सोतृभिः ४,२९,२; १६०५
होता ८,३४,८; ४३२ । २९,७, २३८२
होता असुरो न ७,३०,३; २२२०

(१) रथे-छाः । [इन्द्रस्य रथः ।]

अनपच्युतः ४,३१,१४, १६४३
अनेहाः ८,६९,१६; २३१८
अरुष ८,६९,१६, २३१८
अश्वयुः ४,३१,१४; १६४३
इष्टिभिः मतिभिः रथाः २,१८,१; ११९०
उरु ८,९८,९, २३७२
उरुयुगः ८,९८,९; २३७२
ऋभ्वसम् (द्वि०) १,५६,१; ८०५
गत्रेषण ७,२३,३, २१८२
गव्ययुः ४,३१,१४; १६४३
गोविद् १,८२,४, ९२८
चतुर्युगः २,१८,१; ११९०
चिकेतति यः हारियोजन पूर्ण पात्रम् १,८२,४; ९२८
चित्रतमः १ १०८,१; ३००८
जवीयान् मनसः १०,११२,२, २७३६
जैत्रः १,१०२,३; ८३०
त्रिकशः २,१८,१, १९९०
द्विविष्टृक् ४,४६,४, ३२२३
युमान् ४,३१,१४; १६४३
युक्षः ८,६९,१६, २३१८

द्रोणः ६,४४,२; २०५५
धृष्णुया [=धृष्णुः] ४,३१,१४, १६४३
नवः २,१८,१, ११९०
नाभिः ६,३९,४; १९८६
परिभवे न पर्वतैः समुद्रैः २,१७,३; ११७४
पृथुपाजम् ४,४६,५; ३२२४
प्रवता [तृतीया] १,१७७,३; १०९३
बृहन् ३,५३,५,६ १४५७-१४५८
भीमः ६,३१,५; २०१०
मतिभिः रथा २,१८,१; ११९०
मनसः जवीयान् १०,११२,२; २७३६
मनुष्यः २,१८,१; ११९०
युक्तः दक्षिणः उतसभ्य १,८२,५; ९२९
रथाः मतिभिः इष्टिभिः २,१८,१, ११९०
वज्री ८,३३,४; २१३
वन्धुरः ६,४७,९; २१०७
वरिष्ठः ६,४७,९; २१०७
विश्ववार ६,३७,१; १२७३
वीरवाहः ७,९०,५; ३२३३
वृषा १,८२,४; ९२८ । १७७,३; १०९३ । २,१६,६; ११७७

८, ३३, ११; २२०
 वृषभः १, ५४, ३; ७८८
 सप्तर्षिः २, १८, १; ११९०
 समुद्रैः न परित्रे २, १७, ३; ११७४
 संमिश्रः द्वयोः ८, ३३, ४; २१३
 सन्निः २, १८, १; ११९०
 सहस्रपाद ८, ६९, १६; २३१८
 सुखः ३, ३५, ४; १३१५ । ४१, ९; १३८१
 सुखतमः १, १६, २; ७९
 सुचक्र ६, ३७, ३; १९७५
 सुष्टा (स्था) मा १०, ४४, २; २५६९

स्थिरः ३, ३५, ४; १३१५
 स्वध्वरः ४, ४६, ४; ३२२३
 स्वविद् ६, ३९, ४; १९८६
 स्वर्षाः २, १८, १; ११९०
 स्वस्तिगा ८, ६९, १६; २३१८
 हरितः ३, ४४, १; १३९९
 हरियोगः १, ५६, १; ८०५
 द्वयोः (संमिश्र) ८, ३३, ४; २१३
 हिरण्ययः १, ५६, १; ८०५ । ६, २९, २; १९६३ । ८, १, २४, २५;
 ११०, १११ । ८, ३३, ४; २१३ । ६९, १६; २३१८
 हिरण्यवन्धुरः ४, ४६, ४; ३२२३

(२) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य वज्रम् ।]

अंकुशः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१
 अशनिम् तपिष्ठम् ३, ३०, १६; १२५३
 अश्मा ४, २२, १; १५५५
 आयसः १, ८०, १२, ९११ । ८१, ४, ९१९ । ८, ९६, ३ २३४७
 आयुधम् ३, ५४, ४; १४००
 आयुधानि ४, १६, १४; १४८०
 चक्रम् ८, ९६, ९; २३५३
 चतुराश्रिम् ४, २२, २; १५५६
 चरता युधेन ३, ३२, ६; १८०७
 तपिष्ठम् (अशनिम्) ३, ३०, १६; १२५३
 तपुविम् हेतिम् ३, ३०, १७; १२५४
 तिग्मम् १, १३०, ४; १०१४
 तूर्णं विश्वासां पुराम् ६, २०, ३; १८८६
 दर्शत ८, ७०, २; ३२२
 शुभन्तम् ५, ३१, ४; १६९६
 निमिश्रः ८, ९६, ३; २३४७
 न्यृष्टम् वसुना ४, २०, ६; १५३८
 पर्वतेन ६, २२, ६; १९१२
 प्रत्नेन ६, २१, ७; १९०३
 मन्व्युतम् ८, ९६, ५; २३४७
 मनोजुवा ६, २२, ६; १९१२
 महः ८, ७०, २; ३२२
 महता वधेन ५, ३२, ८; १७१२

युज्येन ६, २१, ७; १९०३
 वज्रासः १, ८०, ८; २०७
 वधम् १, ५५, ५ ८०१ । १७४, ८, १०७६ । ५, ३४, २; १७२८
 वधेन ४, १८, ९; १५१७
 वधेन चरता ३, ३२, ६; १८०७
 वधेन महता ५, ३२, ८; १७१२
 वसुना (न्यृष्टम्) ४, २०, ६; १५३८
 वसुदानः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१
 वृत्रहनम् ६, २०, ९; १८९२
 वृषा १, १३१, ३; १०२३
 वृषभिम् ४, २२, २; १५५६
 ज्ञातपर्वणा ८, ८९, ३; २३८६
 शताश्रिम् ६, १७, १०; १८५०
 श्रयिता १, ५७, २; ८१२
 सूक्या १, ८०, ६; ९०५ । ६, २१, ७; १९०३
 सत्वा भुवम् १, १३१, ३ १०२३
 सहस्रभृष्टिम् १, ८०, १२; ९११ । ५, ३४, २; १७२८ । ६,
 १७, १०, १८५०
 सायकम् १, ८४, ११; ९४७
 स्थविरम् ४, २०, ६; १५३८
 स्वपस्तमम् १, ६१, ६; ८६१
 स्वर्थम् १, ६१, ६; ८६१
 हृदिम् ३, ४४, ४; १४०२
 हरितम् ३, ४४, ४; १४०२

हर्यतः १,५७,२, ८१२

अथर्वं ६,८२,३, २९०१

हिरण्ययः १,५७,२, ८१२ । ८,६८,३, २२०३ । हेतिम् (तपुषिम्) ३,३०,१७, १२५४

(३) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य बाहु ।]

अनाष्टयौ साम० १८६९; ३०००

अमह्यौ साम० १८६९, ३०००

उपाकौ १,८१,४, ९१२

चित्रौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

गोजिता १,१०२,६, ८३३

पारयिष्णू अथर्वं १९,१३,१; २९१४

युवानौ साम० १८६९ ३०००

वृषभौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

वृषाणौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

सुप्रतीकौ साम० १८६९; ३०००

स्थविरौ अथ० १९,१३,१, २९१४ । साम० १८६९; ३०००

सद्येन यमति ग्राधतश्चित् दक्षिणे सगृभीता कृतानि १, १००,९; ९६५

(४) हर्यश्वः । [इन्द्रस्य अश्वौ ।]

अजिरा ३,३५,२, १३१३

अत्याः १,१७७,२; १०९२

अध्वरश्रियः ८,४,१४, २४२

अन्तमा. १,१६५,५, ३२५४

अभिमातिवाहः ६,६९,४; ३३०९

अर्वन्तः ८,९२,११; २४०७ । १०,७४,१; २६३४ । १०५,२; २७१५

अर्वाञ्चः १,५५,७; ८०३ । ७,१८,१; २२०८

अशीतिः २,१८,६; ११९५

अश्रमासः ६,२१,१२; १९०६

अश्वासः ६,२९,२, १९६३ । ८,१,९; ९५

अष्टौ २,१८,४, ११९३

अस्मन्नाः १०,४४,३; २५७०

अस्मन्नाञ्चः ६,४४,१९; २०५४

आशबः २,१६,३; ११७४ । ३,३५,४, १३१५ । ४,२९,४; १६०७ । १०,४९,७; २५९६

आसन्नाणासः ६,३७,३; १९७५

हृद्गवाहा (द्विव०) ८,९८,९; २३७२

तुमासः १०,४४,३, २५७०

उरवः ६,२१,१२, १९०६

ऋज्वन्तः ६,३७,२; १९७४

कज्रा [द्विवचनम्] १,१७४,५; १०७३

कतयुजः ६,३९,४; १९८६

एतग्वा [द्विव०] ८,७०,७; २३२७

एतशा । द्विव०] ८,७०,७, २३२७

काम्या [द्विव०] १,६,२, २५

केता [द्विव०] १,५५,७, ८०३

केतू सूर्यस्य २,११,६; ११०६

केशवन्ता [द्विव०] १०,१०५,५, २७१८

केशिनः १,८२,६; ९३० । ८,१,२४; ११०१ । १०,१०५,२, २७१५

गृभस्थयोः रश्मय ६,२९,२; १९६३

गावौ [द्विव०] १०,२७,२०; २५१०

घृतस्नु [द्विव०] ३,४१,९; १३८१

चत्वारः २,१८,४, ११९३

चत्वारिंशत् २,१८,५; ११९४

जूजुवानास ५,२९,९; १६७५

तपुष्या [पुःपा] ३,३५,३; १३१४

तविषासः १०,४४,३, २५७०

तौलाभिः [तृ० स्त्री०] ६,४४,७; २०४२

त्रिंशत् २,१८,५; ११९४

दश २,१३,९; ११४५ । १८,४; ११९३

दशग्विनः ८,१,९; ९५

दुर्युजः १०,४४,७, २५७४

शुभा [द्विव०] १,१००,१६; ९७२

द्वी २,१८,४; ११९३
 धुनी (वातस्य) १०,२२,४, २४६९
 धृष्ण [द्विव०] १,६,२, २५
 धौतरीभि. [स्त्री० तृ०] ६,४४,७; २०४२
 नदी १०,१०५,४; २७१७
 नवति: २,१८,६. ११९५
 नियुत: ६,२२,११, १९१७ । ३६,३, २०३३. ४५,२१,
 २०८० । ७,१८,१०; २१२८ । ९१,५,६; ३२३८-३२३९ ।
 ४,४७,४; ३२२९
 नृमण: वातस्य १,५१,१०, ७५४
 नृवाहसा [द्विव०] १,६,२, २५
 पञ्चाशत् २,१८,५, ११९४
 पर्णिना [द्विव०] ८,१,११, ९७
 पुनानास: ६,३७,२; १९७४
 पुरुस्पृह: ४,४७,४; ३२२९
 पृथ्निगाव: ७,१८,१०; २१२८
 पृथ्निनिषेवितास: ७,१८,१०; २१२८
 प्रिया [द्विव०] ३,४३,१; १३९१ । १० ११२,४; २७३८
 प्रियमेधस्तुता [द्विव०] ८,६,४५; २८७ । ३२,३०, २०९
 प्रैतशा: १०,४९,७; २५९६
 वृम्ह [द्विव०] ४,३२,२२, १६६२
 वृहन्त: ३,४३,६, १३९६
 मङ्गणायुक्ता [द्विव०] १,८४,३; ९३२
 मङ्गयुजा १,१७७,२; १०९२ । ३,३५,४; १३१५ । ८,१,
 २४; ११० । २,२७; १४२
 मङ्ग्युता [द्विव०] १,८१,३; ९१८
 मनोयुज १,५१,१०, ७५४
 मन्द्रा १,१००,१६; ९७२ । ३,४५,१, १४०४
 मयूरोमाण:-ममि: [तृ०] ३,४५,१, १४०४
 मयूरकोष्पा ८,१,२५; १११
 मरुत: सखाय: ५,३१,१०; १७०२
 मूरा: वृषभस्य ३,४३,६; १३९६
 युक्ता मङ्गणा [द्विव०] १,८४,३, ९३२
 युक्तास: ३,५३,४; १४५६ । ४,३२,१७; १६६१ । ६,
 २३,१, १९१८ । ६,३७,१, १९७३ । ७,२८,१; २२०८ ।
 १०,२७,२०; २५१० । ११२,४; २७३८
 युजाना: १,१७७,२; १०९२ । ३,४३,६; १३९६ । ६,
 २२,२; १९६३ । ४४,१२; २०५४
 रघू [द्विव०] १०,४९,२; २५९१

रघुदुव: ८,१,९; ९५
 रजी (न) (महान्ती) १०,१०५,२; २७१५
 रथ्यास ६,३७,३; १९७५
 रन्तय: ७,१८,१०; २१२८
 रयिमन्त: १०,७४,१; २६३४
 रश्मय: गभस्वयो: ६,२२,२; १९६३
 रामभ: ३,५३,५, १४५७
 रोहित: १,१००,१६; ९७२ । ५,३६,६ १७४९
 ललामी: [स्त्री०] १,१००,१६ ९७२
 वङ्क [द्विव०] १,५१,११; ७५५ । ८,१,११; ९७
 वङ्कतरा [द्विव०] १,५१,११, ७५५
 वचोयुजा [द्विव०] ६,२०,९; १८९२ । ८,९८,९; २३७२
 वहिष्ठा: ६,२१,१२; १९०६ । ४०,३; १९९० । ४७,९;
 २१०७
 वाजा: ३,५३,५-६; १४५७-५८ । ५,३६,६; १७४९ । ६,
 ४५,२१, २०८० । ८,२४,१८; १८०७
 वातस्य (समानवे गौ) १,१७४,५, १०७३
 वातस्य धुनी १०,२२,४; २४६९
 वातस्य नृमण: १,५१,१०; ७५४
 वातस्य पर्णिना ८,१,११; ९७
 वातस्य युक्ता: ५,३१,१०; १७०१
 वावाता ८,४,१४, २४२
 वाह: ३,५०,४; १४३२ । ५३,३, १४५५
 विंशति: २,१८,५; ११२४
 विमता (द्विव०) १,६३,२; ८८६ । १०,२३,१, २४८१ ।
 ४९,२, २५९१ । १०५,२,४; २७१५,२७१७
 विश्वा २,१८,७; ११९६
 विश्ववारा: ६,२२,११; १९१७ । ७,९१,६; ३२३९
 वीतपृष्ठा ८,६,४२; २८४ । ३,३५,५; १३१६
 वृषणा (द्विव०) १,१७७,१,३, १०९१,१०९३ । २,१६,
 ६; ११७७ । ३,३५,३,५; १३१४,१६ । ४३,४, १३९४ ।
 ५,३६,५, १७४८ । ६,२२,२, १९६३ । ४४,१९,१९;
 २०५४,५४ । ७ १९,६; २१४५ । ८,१,९; ९५ । ३३,११;
 २२० । ४,११, १४; २३९,२४२ । १०,४९,२, २५९१ ।
 ११२,२, २७३६
 वृषभास: १,१७७,२; १०९२
 वृषभस्य (मूरा:) ३,४३,६; १३९६
 वृषरथास: १,१७७,२; १०९२ । ६,४४,१९; २०५४
 वृषरश्मय: ६,४४,१९; २०५४
 वृषस्वन्ता १०,१०५,५; २७१८

व्यतीनाम् ४, ३२, १७; १३६१
 ज्ञानमा ८, २, २७; १४२
 शतम्-शतानि २, १८, ६; ११९५ । ४, २९, ४; १६०७ । ७,
 ९१, ६; ३२३९ । ८, १, २४; ११०
 शक्तिः ८, १, ९; ९५
 शितिपृष्ठा (द्विव०) ८, १, २५; १११
 शोषा १०, १०५, २; २७१५
 शोणा १, ६, १; २५ । ३, ३५, ३; १३१४ । ८, १, ९; ९५
 श्यावा १, १००, १६; ९७२
 षट् २, १८, ४; ११९३
 षष्टिः २, १८, ५; ११९४
 स्मृताया (द्विव०) ३, ३५, ४; १३१५ । ४३, १, ४, १३९१, ९४ ।
 ६, ४०, १; १९८८
 सचमानो मिमि शतैः ५, ३७, ६; १७४९
 सधमादः ३, ३५, ४; १३१५ । ४३, ६; १३९६ । ६, ३७, १,
 १ १९७३, १९७३ । ६९, ४; ३३०९ । १०, ४४, ३ २५७०
 सधमाद्या ८, ३२, २९. २०८ । ९३, २४, २४५३
 सप्ततिः २, १८, ५; ११९४
 सप्तयः सप्ती ८, ४, १४; २४२ । ३, ३५, २, १३१३ । ८,
 ४६, ७; १८२३
 सर्वरथा (द्विव०) १०, १६०, १; २८२४
 सहस्राः ५, २९, ९; १६७५
 सहस्रम्-स्राणि ४, २९, ४; १६०७ । ३२, १७, १६६१ ।
 ७, ९१, ६; ३२३९ । ८, १, २४, ११०

सहस्रिणः ८, १, ९; ९५
 सुधुरा (द्विव०) ३, ४३, ४, २३९४
 सुमदंष्ट्रः (खी०) १, १००, १६; ९७०
 सुयमा (द्विव०) १०, ४४, २; २५६९
 सुयुजः ५, ३१, १०; १७०१ । ६, ४४, १९, २०५४ । १०,
 १०५, २, २७१५
 सुरथाः २, १८, ५; ११९४
 सुविदग्धाः ७, ९१, ६, २०३९
 सुसंमृष्टासः ३, ४३, ६, १३९६
 स्थूय ६, २९, २; १९६३
 स्यूमन्यू १, १७४ ५, १०७३
 स्वज्ञा ३, ४३, ४, १३९४
 हरी-हरयः १, ५, ४, १७ । ६, २; २५ । ७, २, २९ । ५५,
 ७; ८०३ । १, १७४, ४. १०७२ । १७७, १, ३, ४ १०९१,
 ९३-९४ । २, ११, ६, १२०६ । १६, ६; ११७७ । १८, ३,
 ४, ११९२-९३ । ३, ३५, १; १३१२ । ८, १, २४, २५; ११०-
 १११ । २, २७, १४२ । ३३, २९, ३०; २०८-९ । ३३, ११,
 २२० । ४, ११, १४, २३९, २४२ । ६, ३६; २७८ । ६, ४२,
 २८४ । ६, ४५, २८७ । ९३, २४, २४५३ । २४, १७, १८०६
 हरिता [द्विव०] ६, ४७, १९; २११७
 हरितौ (द्विव०) साम० ६२३; २९९४
 हर्यती (द्विव०) ८, ६, ३६; २७८
 हिरण्यकेश्या (द्विव०) ८, ३२, २९, २०८ । ९३, २४, २४५३

(५) इन्द्राणी । [इन्द्रपत्नी ।]

इन्द्रपत्नी १०, ८६, ९; २६४८ । १०; २६४९
 इन्द्राणी १०, ८६, ११-१२; २६५०-२६५१
 ऋतस्य वेधाः १०, ८६, १०; २६४९
 पृथुजाघनिः १०, ८६, ८; २६४७
 पृथुष्टुः १०, ८६, ८; २६४७
 प्रतियवीयसि १०, ८६, ६; २६४५
 भावयुः १०, ८६, १५; २६५४
 रेवती १०, ८६, १३; २६५२
 वीरिणी १०, ८६, ९-१०, २६४८-२६४९
 वृषाकपायी १०, ८६, १३; २६५२
 द्वे० [इन्द्रः] ४३

ज्ञारपत्नी १०, ८६, ८; २६४७
 संहोत्रं समनं गच्छति १०, ८६, १०; २६४९
 सक्थि उद्यमीयसी १०, ८६, ६; २६४५
 सुवृत्रा १०, ८६, १३; २६५२
 सुबाहुः १०, ८६, ८; २६४७
 सुभगा १०, ८६, ११; २६५०
 सुभसत्तरा १०, ८६, ६; २६४५
 सुयाशुतरा १०, ८६, ६; २६४५
 सुलाभिका १०, ८६, ७; २६४६
 सुस्तुषा १०, ८६, १३; २६५२
 स्वङ्गुरा १०, ८६, ८; २६४७

इन्द्र-देवतायाः विभिन्नरूपत्वम् ।

अग्निरूपी १,६,१, २४
 अन्तरात्मा १०,२४,२४; २५१४
 अभयंकरः ८,६१,१३; ५६०
 आदित्यरूपी १,६,१; २५ । १,६,३; २६ । १०,२७,१३-
 १४. २५०३-२५०४
 कालात्मक १०,५५,५; २६१८
 कुयवालय-असुर-नाशकः १,१०४,३-४; ८४९-८५०
 ज्येष्ठः १०,५०,४, २६०४
 ज्ञाता ६,४७,११; २१०९ । ७,१९,७; २१४६
 नक्षत्ररूपी १,६,१, २४
 पञ्चन्यरूपी ८,६९,२; २३०५
 पुरोलाशाहः ३,५२,१-८ १४४६-१४५३
 वृषण्वान् १,८२,६; ९३०
 प्रजापतिरूपी १०,२७,१५; २५०५
 प्रदाता ८,१७,१०; ४०३ । ४,२१,९. १५५२
 भूरिदा ४,३२,१९-२१; १६६३-१६६५
 मरुत्वान् ८,६३,१०, ५८७ । १,१०१,१-११; ८१७ ८२७
 १,१००,१-१९, ९५७-९७५ । १,१२९,१; १००० । २,
 ११,१-२१, ११०१-११२१ । ३,३२-१-१७, १२८०-१२९८ ।

३,३५,१-११; १३१२-१३२२ । ३,४७,१-५, १४१४-१४१८ ।
 ३,५०,१-५; १४२९-१४३३ । ३,५१,७-९, १४४०-१४४२ ।
 ४,२१,३; १५४६ । ५,२९,१-१५; १६६७-१६८१ । ५,
 ३०,१-११; १६८२-१६९२ । ५,३१,१-१३; १६९३-१७०४ ।
 ८,६,१-७; १७६२-१७७५ । ६,१९,१-१३; १८७१-१८८३ ।
 ६,२०,१-१२; १८९७-१९०६ । ६,४०,५; १९९२ । ७,
 ३२,१०; २२४४ । ८,६८,१-१३; २२९१-२३०३ । १०,
 ७३,१-११; २६२३-२६३३
 मुष्कवान् १०,३८,१-५; २५४१-२५४५
 यज्ञमार्गानभिज्ञः १,१७३,११; १०६६
 रक्षोहा १,१२९,११; १०१० । ३,३०,१५-१७; १२५२-१२५४
 वायुरूपी १,६,१, २४
 सरस्वतीवन्तौ [इन्द्राग्नी] ८,३८,१० ३१००
 सुत्रामा ८,४७,१२,१३; २११०, २१११
 सुपर्णात्मकः १०,५५,६; २६१९
 सूर्यात्मा ८,६,२९,३०, २७१,२७२ । १,८३,५,९३५ ।
 ३,३९,७; १३६१ । ८,६९,२, २३०५ । १०,५५,३. २६१६ ।
 १०,१११,७; २७३१
 स्त्रीरूपी ८,३३,१९; २२८

इन्द्रदेवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

सहस्र - अक्षि [क्षा] १,२३,३, ३२१४
 अन् - अनुदः [अनानुद] २,२१,४. १२२०
 अन् - अनुदिष्टः [अनानुदिष्ट] १०,१६०,४ २८२७
 वृषभ - अन्न. २,१६,५, ११७६
 गाथा - अन्यः ८,९२,२, २३९८
 अन् - अपच्युतः ८,९२,८; २४०४
 नय - अपसः ८,९३,१; २४३०
 अयस् - अपाष्टिः [अयोपाष्टिः] १०,९९,८; २६८७
 बहुल - अभिमानः १०,७३,१, २६२३
 सु - अभिष्टिः १,५१,२; ७४६
 सु - अभिष्टिसुम्नः ६,२०,८; १८९१
 अ - कव-अग्निः ३,४७,५; १४१८
 सु - अग्निः १,६१,९; ८६४
 अन् - अर्वा ४,१७ २०; १५०७
 सु - अर्वा ६,२२,३; १९०९
 अन् - अर्शरातिः ८,९९ ४; २३७९
 सु - अर्-सन् [स्वर्षा] १,६१,३; ८५८

अन् - अवध. १,१२९,१; १०००
 सु - अवसः १०,५७,२; २८४३
 प्र - अविता ८,९६,२०, २३६२
 सु - प्र-अव्यः २,१३,९; ११४५
 समृत्त - अश्वः ८,३४,१२; ४३६
 सु - अश्वः ४,२९,२; १६०५
 हरि - अश्वः ३,३१,३; १२६०
 सु - अश्वयुः ८,४५,७; ४४९
 तव - आगस् ४,१८,१०; १५१८
 पर - आदविः १,८१,२; ९१७
 तुरीय - आदित्यः ८,५२,७, ५२१
 अन् - आष्टव्यः ४,१८,१०; १५१८
 अन् - आनतः ६,४५,९; २०६८
 अन् - आपिः ८,२१,१३; ४२१
 सु - आपिः ८,५३,५; ५२९
 अन् - आसृणः १,३३,१, ७३०
 अस्कृध - आयुः [अस्कृधोयुः] ६,२२,३; १९०९

दीर्घ - आयुः ८, ७०, ७; २३२७
 वृद्ध - आयुः १, १०, १२; ६९
 तिरम - आयुधः २, ३०, ३; १२२९
 सु - आयुधः ६, १७, १३; १८५३
 प्र - आशुषाद् ४, २५, ६; १५९३
 अन् - आभयी ८, २, १; ११६
 चक्रम् - आरूज ५, ३४, ६; १७३२
 घृत - आसुती ६, ६९, ६; ३३११
 भूरि - आसुतिः ८, ९३, १८; २४४०
 अ -- प्रति-इतः १, ३३, २; ७३१
 वेद -- इष्टः [वेदिष्टः] ८, २, २४; १३९
 शची -- इष्टः [शचिष्टः] ४, २०, ९; १५४२
 शवस् -- इष्टः [शविष्टः] १, ८०, १; २००
 शम्भू -- इष्टः [शम्भविष्टः] १, १७१, ३; ३२६५
 सहस् -- इष्टः [सहिष्टः] ६, १८, ४; १८५९
 प्रशस्य -- ईयस् [ज्यायस्-यान्] ३, ३८, ५; १३४९
 वृद्ध -- ईयस् [ज्यायस्-यान्] " " "
 तवस् -- ईयस् [तवीयस्-यान्] ६, २०, ३; १८८६
 वेद -- ईयस् [वेदीयस्-यान्] ७, ९८, १; २२७९
 सहस् -- ईयस् [सहीयस्-यान्] १, ६१, ७; ८६२
 वन -- इष्टः [वनिष्टः] ७, १८, १; १८१९
 वर -- इष्टः [वरिष्टः] ८, ९७, १०; ९८५
 वृषद् -- उक्थः ८, ३२, १०; १८९
 वपा - उद्धरः ८, १७, ८; ४०१
 अक्षित -- उतिः १, ५, ९; २२
 उर्वी -- उतिः ६, २४, २; १९२९
 शतम् -- उतिः १, १०२, ६; ८३३
 सहस्र -- उतिः ८, ३४, ७; ४३१
 सहस्रम् -- उतिः १, ५२, २; ७६१
 अन् -- ऊनः ६, १७, ४; १८४४
 अन् -- ऊर्मिः ८, २४, २२; १८११
 अन् -- ऋतुपाः ३, ५३, ८; १४६०
 श्रुत - ऋषिः १०, ४७, ३; २८४४
 नि - ऋष्टः १०, ४२, २; २५४७
 पुरस् - एता ६, २१, १२; १९०६
 तत् - (बर्हिः) - ओकस् ३, ३५, ७; १३१८
 नि - ओकस् १, ९, १०; ५७
 अभिभूति - ओजस् ३, ३४, ६; १३०६
 अमित - ओजस् १, ११, ४; ७३
 असमाति - ओजस् ६, २९, ६; १९६७
 वै० [इन्द्रः] ४३ ॐ

ऋष्व - ओजस् १०, १०५, ६; २७१९
 छण्ण - ओजस् ८, ७०, ३; २३२३
 बाहु - ओजस् १०, १११, ६; २७३०
 विश्व - ओजस् १०, ५५, ८; २६२१
 सु - ओजस् ६, २२, ६; १९१२
 स्वधृति - ओजस् १, ५२, १२; ७७१
 दूर् - ओषस् ४, २१, ६; १५४९
 रथ - ओळहा. १०, १४८, ३; २८११
 वृषा - कपिः १०, ८६, १; २६४०
 अभयम् - करः ८, १, २; ८८
 खजम् - करः १, १०२, ६; ८३३
 यतम् - करः ५, ३४, ४; १७३०
 सप्ता - करः १, १७८, ४; १०९९
 स्रुप्र - करस् ८, ३२, १०; १८९
 आश्रुत् - कर्ण १, १०, ९; ६६
 श्रुत् - कर्णः ७, ३२, ५; २२३९ । ८, ४५, १७; ४५९
 भूरि - कर्मन् [मां] ३, १०३, ५; ८४३
 विश्व - कर्मन् [मां] ८, ९८, २; २३६५
 वृष - कर्मन् [मां] १, ६३, ४; ८८८
 अकाम - कर्शनः १, ५४, २; ७७६
 अ - कल्प. १, १०२, ६; ८३३
 अ - कवारि ३, ४७, ५; १४१८
 अ - कामकर्शनः १, ५४, २; ७७६
 ऋण - कातिः ८, ६१, १२; ५५९
 तत् - (=सोम) - कामः २, १४, १; ११५०
 अवस् - कामः ८, २, ३८; २५३
 सोम - कामः १, १०४, ९; ८५५
 युत् - कारः १०, १०३, २; २६९३
 आ - काव्यः ४, २९, ५; १६०८
 अ-समष्ट - काव्यः २, २१, ४; १२२०
 अप्रति - कुतः [अप्रतिष्कुतः] १, ७, ६; ३३
 तुवि - कूर्मिः ३, ३०, ३; १२४०
 तुवि - कूर्मितमः ६, ३७, ४; १९७६
 अभिष्टि - कृत् ४, २०, १; १५३३
 अरम् - कृत् ८, १, ११; ९६
 आजि - कृत् ८, ४५, ७; ४४९
 ईशान - कृत् १, ६१, २१; ८६६
 स्रज - कृत् ६, १८, २; १८५७
 धर्म - कृत् ८, ९८, १; २३६४
 पथि - कृत् ६, २१, १२; १९०६

पुरु -- कृत् १,५४,३; ७७७
 भद्र -- कृत् ८,१४,११; ३६४
 रण -- कृत् १०,११२,१०; २७४४
 लोक -- कृत् १०,१३३,१; २७७८
 वरिषस् -- कृत् ८,१६,६; ३८७
 सु -- कृत् ३,३१,७; १२३६
 भ -- निस्-कृतः [निष्कृतः] ८,९९,८; २३८३
 अरम् -- कृतः १०,११९,१३; २८६२
 दामने -- कृतः ८,९३,८; २४३७
 सम् -- कृत [संस्कृतः] ८,३३,९; २१८
 सहस् -- कृतः ८,९९,८; २३८३
 सु -- कृतः ६,१९,१; १८७१
 सूरूप -- कृतः १,४,१; ४
 अक्ष -- कृतः ८,६१,१०; ५५७
 प्र -- केतः १०,१०४,६; २७०८
 सुप्र -- केता. १,१७१,६; ३२६८
 अमितः -- कृतः १,१०२,६; ८३३
 अवार्य -- कृतः ८,९२,८; २४०४
 अविहर्यत -- कृतः १,६३,२; ८८६
 क्रतु -- कृतः १,८१७, ९२२
 तुवि -- कृतः ८,६८,२; २२९२
 वृष -- कृतः ५,३६,५; १७४८
 शत -- कृतः १,४,८; ११
 स -- कृतः १०,१४८,४; २८१२
 सम्भृत -- कृतः १,५२,८; ७६८
 सु -- कृतः १,५,६; १९
 सम् -- कृतः १०,१०३,१; २६९२
 उरु -- कृतः ८,७७,१०; ६४९
 सुत -- कृतः ६,३१,४; २००९
 शु -- कृतः ६,२४,१; १९२८
 स -- कृतः ८,७०,८; २३२८
 सु -- कृतः ५,३२,५; १७०९
 क्रतु -- कृतः १,६३,३; ८८७
 दिव -- कृतः ३,३०,२१; १२५८
 अ -- कृतः १,५,९; २२
 अ -- कृतः ८,४९,६; ४९०
 पुरु -- कृतः ४,२९,५; १६०८
 अमित्र -- कृतः १०,१५२,१; २८१४
 प्र -- कृतः १,१७८,४; १०९८

वृष -- कृतः ३,४५,२; १४०५
 अभि -- कृतः ४,१७,१७; १५०४
 अरम् -- कृतः ६,४२,१; १९९८
 स्वयम् -- कृतः ४,१८,१०; १५१८
 उरु -- कृतः १०,२९,४; २५१८
 अभि -- गो [गु] १,६१,१; ८५६
 शक्ति -- गो [गु] ८,१७,१२; ४०५
 भूरि -- गो [गु] ८,६२,१०; ५७५
 पुरु -- कृतः ६,३४,२; २०२२
 विश्व -- कृतः १,६१,९; ८६४
 अ -- कृतः ८,९८,४; २३६७
 तुवि -- कृतः ६,२२,११; १९११
 तुवि -- कृतः २,२१,२; १२१८
 तुवि -- कृतः ८,१७,८; ४०१
 घन -- कृतः [घनाघनः] १०,१०३,१; २६९२
 अ -- कृतः ७,२०,८; २१५८
 अपूरुष -- कृतः १,१३३,६; १०३९
 सम् -- कृतः ५,३०,७; १६८८
 वि -- कृतः १,१०१,७; ८२३
 वृत्तम् -- कृतः २,२१,३; १२१९
 वि -- कृतः २,२२,३; १२२५
 विश्व -- कृतः १,९,३; ५०
 प्र -- कृतः ७,३१,१०; २२३२
 वि -- कृतः ६,२४,२; १९२९
 स -- कृतः १,६१,१०; ८६५
 सहस् -- कृतः १,१०,१२; ९६३
 रघु -- कृतः २,२१,४; १२२०
 कृषि -- कृतः ८,५१,३; ५०८
 कीरि -- कृतः ६,४५,१९; २०७८
 रघु -- कृतः ६,४४,१०; २०४५
 दुस् -- कृतः १०,१०३,२; २६९३
 अच्युत -- कृतः २,१२,९; ११३०
 मद -- कृतः १,५१,२; ७४६
 अ -- कृतः १०,१११,३; २७२७
 अनप -- कृतः ८,९२,८; २४०४
 कवि -- कृतः ३,१२,३; ३०३२
 सद्यः -- कृतः ८,९६,२१; २३६३
 पाञ्च -- कृतः ५,३२,११; १७१५
 विश्व -- कृतः १,१६९,८; १०५०
 धनम् -- कृतः ३,४२,६; १३८७

अ - जरः ३, ३२, ७; १२८८
 अप - जगुराणः ५, २९, ४; १६७०
 ऋते - जाः ७, २०, ६; २१५६
 पुरा - जाः ३, ३१, १९; १२७८
 पूर्वं - जाः ८, ६४१; २८३
 सन - जाः १०, १११, ३; २७२७
 सहस् - जाः १०, १०३, ५; २६९५
 तुवि - जातः १, १३१, ७; १०२७
 सद्यः - जातः ८, ७७, ८; ६४७
 सु - जातः १०, ९९, ७; २६८६
 म - जानन् ३, ३५, ४; १३१५
 वि - जानन् ३, ३९, ७; १३६१
 तुतु - जानः (तुतुजान) १, ३, ६; ३
 तुतु - जिः (तुतुजिः) ४, ३२, २; १६४६
 अपरा - जित् [ता] ३, १२, ४; ३०३३
 अप [ब्] - जित् २, २१, १; १२१७
 अप्सु - जित् ८, १३, २; ३२२
 अश्व - जित् २, २१, १; १२१७
 उर्वरा - जित् २, २१, १; १२१७
 गो - जित् २, २१, १; १२१७
 धन - जित् २, २१, १; १२१७
 नृ - जित् २, २१, १; १२१७
 विश्व - जित् २, २१, १; १२१७
 अवस् - जित् ८, ३२, १४; १९३
 संसृष्ट - जित् १०, १०३, ३; २६९४
 सत्रा - जित् २, २१, १; १२१७
 स्वर - जित् २, २१, १; १२१७
 स - जित्वा ३, १२, ४; ३०३३
 अ - जुगः ८, १, २; ८८
 अ - जुर्धः २, १६, १; ११७२
 मनः - जुवा १, २३, ३; ३२१४
 ऋक्ष - जूतः ३, ३४, १; १३०१
 वृष - जूतिः ५, ३५, ३; १७३८
 अ - जूर्ध्वत् ३, ४६, १; १४०९
 परम - ज्या ८, ९०, १; २३९९
 उरु - ज्याः ८, ६२७; २६९
 पृथु - ज्याः ३, ४९, २; १४२५
 इन्द्र - ज्येष्ठा १, २३, ८; ३२४८
 अङ्गिरस् - तमः १, २३०, ३; १०१३
 अचुक - तमः १, १७४, १०; १०७८

इन - तमः ३, ४९, २; १४२५
 कवि - तमः ६, १८, १४; १८६९
 गिर्वणस् - तमः ६, ४५, २०; २०७९
 चित्र - तमः ६, ३८, १; १९७८
 ज्येष्ठ - तमः २, १६, १; ११७२
 तवस् - तमा १, १०९, ५; ३०२५
 तुविकृमि - तमः ६, ३७, ४; १९७६
 दस् - तमः २, २०, ६; १२१३
 देव - तमः ४, २२, ३; १५५७
 धुमत् - तमः १, ५४, ३; ७७७
 पितृ - तमः ४, १७, १७; १५०४
 पुरु - तमः १, ५, २; १५
 मघवत् - तम ८, ५४, ५; ५३५
 मदिन् - तमः ८, १३, २३; ३४३
 रथी - तम ६, ४५, १५; २०७४
 वाजसा - तमा ३, १२, ४; ३०३३
 विप्र - तमः १०, ११२, ९; २७४३
 वीर - तमः ३, ५२, ८; १४५३
 वृषन् - तमः १, १०, १०; ६७
 शम् - तम ८, ३३, १५; २२४
 शिव - तम ८, ९६, १०; २३५४
 शुष्मिन् - तमः १, १३३, ६; १०३९
 सहस् - तमौ ६, ६०, १; ३०५६
 सुश्रवस् - तमः १, १३१, ७; १०२७
 सोमपा - तम ६, ४२, २; १९९९
 वृत्रहन् - तम ५, ३५, ६; १७४१
 अभिभू - तरः ८, ९७, १०; ९८५
 उत् - तरः ८, १४, १५; ३६८
 जुष्ट - तर ८, ९६, ११; २३५५
 तवस् - तरः १, ३०, ७; ७०५
 वीर - तरः ८, २४, १५; १८१४
 स्व यशम् - तरः ३, ४५, ५; १४०८
 दुस् (प्) - तरां (रौ) ५, ८६, २; ३०४१
 वि - तन्तसाद्यः ६, १८, ६; १८६
 सु - तपाः ४, २५, ७; १५९४
 दुस् - तपितु २, २१, २; १२१८
 वि - तर्तुराणः ६, ४७, १७; २११५
 स्व - तवः ६, २२, ६; १९१२
 विभु (भ्र) - तष्टः ३, ४९, १; १४२४
 सत्य - ताता १०, १११, ४; २७२८

अप - तुरः ३, ५१, ३, १४३६
 आजि - तुर ८, ५३, ६; ५३०
 निस् - तुरः [निष्ठुरः] ८, ३२, २७; २०६
 अ - तूर्तः ८, ५, ७; २३८७
 पुरु - त्मा ८, २, ३८; १५३
 भम - त्रः ३, ३६, ४; १३२६
 तरु - त्रः १, १७४, १, १०६२
 यज - त्रः १, १२९, ७, १००६
 देव - त्रा ८, ३४, ८; ४३२
 पुरु - त्रा ८, ३३, ८; २१७
 सु - त्रामन् ६, ४७, १२, २११०
 वि - त्वक्षणः ५, ३४, ६, १७३२
 प्र - त्वक्षणः १०, ४४, १; २५६८
 सु - दंसाः १, ६२, ७; ८७८
 सु - दक्षः १, १०१, ०, ८२५
 वज्र - दक्षिणः १, १०१, १; ८१७
 सु - दक्षिणः ७, ३२, ३, २२३७
 गो - दत्तः ८, २१, १६, ४२४
 पुरु - दत्तः ६, १८, ९, १८६४
 पर - आ ददि १, ८१, २; ९१७
 उप - दधानः ४, २९, ४; १६०७
 अ - दध ८, ७८, ६; ६५६
 अ - दभा [भौ] ५, ८६, ५, ३०४४
 अ - दयः १०, १०३, ७, २६९७
 वि - दयमान ३, ३४, १, १३०१
 पुरम् - दरः १, १०२, ७, ३४
 गो - दा ३, ३०, २१, १२५८
 धन - दा १, ३३, २, ७३१
 भूरि - दाः ४, ३२, १९, १६९३
 वसु - दाः ८, ९३, ४; २३७९
 वाज - दा १, १३५, ५; ३२१६
 सहस् - दाः १, १७४, १, १०६९
 सु - दा ८, ७८, १०; ६५४
 स्वस्ति - दाः १०, ११६, २; २७५६
 भूरि - दात्रः ३, ३४, १; १३९१
 जीर - दानु ८, ६२, ३; ५६८
 सु - दानुः ६, ३८, १; १९७८
 नक्षत् - दामः ६, २२, २; १९०८
 अ - दाम्यः ७, १०४, २०; २२८८
 सु - दामन् ६, २०, ७; १८९०

वाज - दावन् ८, २, ३४; १४९
 सत्रा - दावन् १, १७, ६; ३३
 स्व - दावन् ८, ५०, ५; ४९९
 प्र - दिवः १, ५४, २; ७७६
 बृहत् - दिवः ४, २९, ५; १६०८
 स - दिवः २, १९, ६; १२०४
 प्र - दिशमानः ३, ३१, २१; १२८०
 समत् - दिष्टिः ३, ४५, ५; १४०८
 अ - वि - दीधयुः ४, ३१, ७; १६३६
 सबर् - दुघः ८, १, १०; ९६
 सु - दुवा ८, १, १०; ९६
 भा - दुरिः ४, ३०, २४; १६२९
 सु - दक् ४, २३, ६; १५७१
 स्वर - दक् ७, ३२, २२; २२५६
 विश्व - देवः ८, ९८, २, २३६५
 तुवि - देणः ८, ८१, २; ६७१
 तुवि - द्युमनः १, ९, ६; ५३
 अ - द्रोघः ३, ३२, ९; १२९०
 अ - द्रोघवाक् ६, २२, २; १२०८
 पृथमान - द्विट् ६, ४७, १६; २११४
 तरन् - द्वेष १, १००, ३; ९५९
 वि - द्वेषणः ८, १, २; ८८
 उग्र - धन्वा १०, १०३, ३; २६९४
 वि - धर्ता ८, ७०, २; २३२२
 वयस् - धाः ३, ३१, १८; १२७७
 सम् - धाता ८, १, १२; ९८
 कारु - धायाः ३, ३२, १०; १२९१
 उरु - धार ८, १, १०; ९६
 विश्वतम् - धीः ८, ३४, ६; ४३०
 अव - धून्वानः ६, ४७, १७; २११५
 वर्षणी - धृत् ३, ३७, ४; १३३७
 अ - धृष्ट ८, ६१, ३; ५५०
 अन् - आ - धृष्य ४, १८, १०, १५१८
 अ - ध्वर ८, ६३, ६; ५८३
 दुर - नशः (वृणाशः) ७, ३२, ७; २२४१
 अन् - आ - नतः ६, ४५, ९; २०६८
 शृगवृषो - नपात् ८, १७, १३; ४०६
 विश्व [श्वा] - नरः १०, ५०, १; २६०१
 शिक्षा - नरः १, ५४, २; ७७६
 पुरु - ना [णा] मन् ८, ९३, १७; २४४६

अ — निभृष्टः १०, ११६, ६; २७६०
 अ — निमिषः १० १०३, १, २; १६९२-२३
 अ — निष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३
 अ — निःस्मृत [निष्मृत] ८, ३३, ९; २१८
 पुरु — निषिषधः १, १०, ५; ६२
 सेना — नी ७, २०, ५; २१५५
 वर्ष — नीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 वाम — नीतिः ६, ४७, ७; २१०५
 शर्ध — नीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 सु — नीतिः ६, ४७, ५; २१०५
 शत — नीध १, १००, १२; ९६८
 सहस्र — नी [णी]थः ३, ६०, ७, ३३४३
 सु — नीधः १०, ४७, २, २८४३
 स — नीळाः १, १६५, १; ३२५०
 तुवि — नृम्णः ४, २२, ६; १५६०
 त्वेष — नृम्णः १०, १२०, १; २७६४
 पुरु — नृम्णः ८, ४५, २१, ४६३
 प्र — ने[णे]ता ३, ३०, १८; १२५५
 अ — नेष्टः ८, ३७, १-६; १७७६-१७८१
 प्र — ने[णे]नीः ६, २३, ३; १९२०
 अति — नेनीयमानः ६, ४७, १६; २११४
 अश्व — पतिः ८, २१, ३; ४११
 आजि — पतिः ८, ५४, ६; ५३६
 उर्वरा — पति ८, २१, ३; ४११
 गण — पतिः १०, ११२, ९; २७४३
 गवाम् — पतिः १, १०१, ४, ८२०
 गो — पतिः १, १०१, ४; ८२०
 दम् — पतिः ८, ६९, १६; २३१८
 धियः — पती १, २३, ३; ३२१४
 नृ — पतिः १, १०२, ८; ८३५
 वृहत् — पतिः [वृहस्पतिः] १, ३०, ४; १२३०
 मित्र — पतिः १, १७०, ५, १०५५
 रयि — पतिः ६, ३१, १; २००६
 रायस् — पतिः ८, ६१, १४; ५६१
 मद — पती ६, ६९, ३; ३३०८
 वसु — पतिः १, ९, ९; ५६
 बाह्योस् — पति ८, १७, १४; ४०७
 विशस् — पतिः १०, १५२, २; २८१५
 विश् — पतिः ३, ४०, ३; १३६६
 शची — पतिः ४, ३०, १७; १६२२
 शबसस् — पतिः १, ११, २, ७१

सत् — पतिः १, ११, १, ७०
 सोम — पतिः ३, ३२, १; १२८२
 स्वधा — पतिः ६, ४४, १; २०३६
 स्व — पतिः १०, ४४, १; २५६८
 स्वर — पतिः ८ ९८, ११; २८६
 प्र — पन्थितमः १, १७३, ७; १०६२
 अ — पराजितः १, ११, ६; ७१
 अ — परीतः ५, २९, १४; १६८०
 वृष — पर्वा ३, ३६, २; १३२४
 अभिष्टि — पाः २, २०, २; १२०९
 अन्र — ऋतुः पाः ३, ५३, ८; १४६०
 ऋत — पाः ७, २०, ६; २१५६
 ऋतु — पाः ३, ४७, ३; १४१६
 गो — पाः ३, ३१, १४; १२७३
 तनु [नृ] — पा ४, १६, २०; १४८६
 परस् — पाः ८, ६१, १५, ५६२
 व्रत — पाः १०, ३२, ६; २५३५
 शुचि — पा ७, ९१, ४; ३२३७
 सोम — पाः १, १०, ३; ६०
 सु — पाणि ३, ३३, ६; १२९९
 सोम — पातमः ६, ४२, २, १९९९
 नृ — पाता १, १७४, १०; १०७८
 अति — पान् [नाम् द्वि०] ७, ३३, २; २२६३
 अ — पारः ४, १७, ८; १४२५
 सु — पारः १, ४, १०; १३
 सुत — पावन् ६, २४, ९, १९३६
 सोम — पावन् १, ५६, ७; ८०३
 स्मत् — पुरन्धिः ८, ३३, ६; ४३०
 शाचि — पूजनः ८, १७, १२; ४०५
 अ — पूरुषज्ञः १, १३३, ६; १०३९
 अ — पूर्यः ८, २१, १; ४०९
 निचान्त — पृणः [निचुम्पुणः] ८, ९३, २२; २४५१
 विश्वतस् — पृथुः ८, ९८, ४; २३६७
 वृष — प्रभर्मा ५, ३२, ४; १७०८
 अ — प्रतिः ५, ३२, ३; १७०७
 तुवि — प्रतिः १, ३०, ९; ७०८
 अ — प्रतिष्टशवाः १, ८४, २; ९३८
 अ — प्रतिष्कृतः १, ७, ६; ३३
 पुरुष — प्रतीकः ३, ४८, ३; १४२१
 अ — प्रतीत १, ३३, २; ७३१
 सु — प्रकेताः १, १७१, ६; ३२६८

स - प्रथः ७, ३१, ६; २२२८
 भ - प्रभङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 तृपल - प्रभर्मा १०, ८९, ५; ३२७६
 चोद - प्रबुद्धः १, १७४, ६; १०७४
 पुरु - प्रशस्तः ६, ३४, २; २०२२
 भ - प्रहन् ६, ४४, ४; २०३९
 भ - प्रहित ८, ९९, ७; २३८२
 भन्तरिक्ष - प्राः १, ५२, २; ७४६
 अर्षणि - प्राः १, १७७, १; १०९१
 भ - प्रामि-सत्यः ८, ६१, ४; ५५१
 सु - प्राव्यः २, १३, ९; ११४५
 हरि - प्रियः ३, ४१, ८; १३८०
 भ - बधिरः ८, ४५, १७; ४५९
 पूर्ण - बन्धुरः १, ८२, ३; ९२७
 द्वि - बहोः ६, १९, १; १८७१
 स - बलः ८, ९३, ९; २४३८
 तुवि - बाध १, ३२, ६; ७२०
 वि - बाध १०, १३३, ४; २७८१
 उग्र - बाहुः ८, ६१, १०; ५५७
 वज्र - बाहुः १, ३२, १५; ७२९
 सु - बाहुः ८, १७, ८; ४०१
 भ - बिभीवान् १, ६, ७; ३२४७
 चन्द्र - बुध्नः १, ५२, ३; ७६२
 पृथु - बुध्नः १०, ४७, ३; २८४४
 कृत - ब्रह्मा ६, २०, ३; १८८१
 सु - ब्रह्मा १०, ४७, ३; २८४४
 प्र - ब्रुवाणः १०, ५४, २; २६०९
 वि - भक्ता ३, ४९, ४; १४२७
 जम - भक्षः २, २१, ३; १२१९
 भभि - भङ्गः २, २१, २; १२१८
 प्र - भङ्गः ८, ४६, १९; १८३५
 भ-प्र - भङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 प्र - भङ्गी ८, ६१, १८; ५६५
 वि - भञ्जनुः ४, १७, ३; १५००
 भ - भयङ्करः ८, १, २; ८८
 भन्तरा - भरः ८, ३२, १२; १९१
 सम - भरः ४, १७, ११; ४९८
 प्र - भर्ता १, १७८, ३; १०९८
 जात् - भर्मा १, १०३, ३; ८४१
 वृष-प्र - भर्मा ५, ३२, ४; १७०८
 बिज - भातुः १, ३, ४; १

बृहत् - भातुः ८, ८९, २; २३८५
 गोत्र - भित् ६, १७, २; १८४२
 पुर [पुर] - भित् ३, ३४, १; १३०१
 पुर [पुर] - भित्तमः ८, ५३, १८; ५२५
 भ - भीरुः ४, २९, २; १६०५
 भ - भीर्वः ८, ४६, ६; १८२२
 वि - भीषणः ५, ३४, ६; १७३२
 वि - भुः ८, ९६, ११; २३५५
 भद् - भुतः ८, १३, १९; ३३९
 भभि - भूः २, २१, २; १२१८
 पुरस् - भूः ३, ३१, ८; १२६७
 विश्व [श्वा] - भूः १०, ५०, १; २६०१
 शम् - भूः (वौ) ६, ६०, ७; ३०६२
 भभि - भूतरः ८, ९७, १०; २८५
 भभि - भूतिः ६, १९, ६; १८७६
 वि - भूतिः ६, १७, ४; १८४४
 भभि - भूत्योजाः ३, ३४, ६; १३०६
 स्व - भूत्योजाः १, ५२, १२; ७७१
 भभि - भूयस ८, १७, १५; ४०८
 प्र - भवसुः १, ५८, ४; ८१४
 वज्र - भृत् १, १००, १२; ९६८
 सम - भृतकृतः १, ५२, ८; ७६७
 सम - भूताश्वः ८, ३४, १२; ४३६
 पुरु - भोजाः ८, ८८, २; ८९५
 वि - भ्राजत् ८, ९८, ३; २३६६
 भ - भ्रातृव्यः ८, २१, १३; ४२१
 सु - मखः १, १६५, ११; ३२६०
 तुवि [वी] - मघः १, २९, १; ६९२
 शत [ता] - मघः ८, १, ५; ९१
 श्रुत [ता] - मघः ८, ९३, १; २४३०
 प्र - मतिः ४, १६, १८; १४८४
 महे - मतिः ८, १३, ११; ३३१
 भ - मन्त्रिन् ६, २४, ९; १९३६
 प्र - मथिन् ६, ३१, ५; २०१०
 स - मद् ७, २०, ३; २१५३
 सत्य - मद्गन् ८, २, ३७; १५२
 नृ - मनः [णः] १, ५१, ५; ७४९
 विश्व - मनाः १०, ५५, ८; २६२१
 वृष - मनाः १, ६३, ४; ८८८
 सु - मनाः ३, ३५, ६; १२१७

अनुत्त - मन्थुः ७,३१,१२; २२३४
 आपान्त - मन्थुः १०,८९,५; ३२७६
 प्राचा - मन्थुः ८,६१,९; ५५६
 शत - मन्थुः १०,१०३,७; २६९७
 सतीन - मन्थुः १०,११२,८; २७४२
 प्र - मरः १०,२७,२०; २५१०
 भ - मर्यः १,१२९,१०; १००९
 स - मर्यः ५,३३,१; १७१७
 महा - महः ८,२४,१०; १७९९
 बृद्ध - महाः ६,२०,३; १८८६
 स - महः ८,७०,१४; २३३४
 अभि - मातिषाहं १०,४७,३; २८४४
 अभि - मातिहन्-हा ३,५१,३; १४३६
 परस् - मात्रः ८,६८,६; २२९६
 तुवि - मात्रः ८,८१,२; ६७१
 अनु - माद्यः ६,३४,२; २०२२
 सध - माद्यः ८,३,१; १५६
 प्रति - मानम् १,१०२,८; ८३५
 अनि - मान ६,२२,७; १९१३
 पुरु - मायः ३,५१,४; १४३७
 भ - मित्रकतुः १,१०२,६; ८३३
 भ - मिलौजाः १,११,४; ७३
 भ - मित्रलाहः १०,१५२,१; २८१४
 भ - मित्रहन्-हा ६,४५,१४; २०७३
 भ - मिनः १०,११६,१४; २७५८
 प्र - मिनानः १०,२७,१९; २५०९
 विश्व - मिन्व ७,२८,१; २२०८
 सम् - मिष्ठः ८,६१,१८; ५६५
 मन्थु - मी १,१००,६; ९६२
 सहस्र - मुक्तः ६,४६,३; २०९२
 भ - मृक्तः ८,२,३१; १४६
 तुवि - मृक्षः ६,१८,२; १८५७
 प्र - मृणन् १०,१०३,६; २६९६
 भ - मृतः ५,३१,१३; १७०४
 भ - मृधः ८,८०,२; ६६२
 वि - मृधः १,१५२,२; २८१५
 सु - मृळीकः १,१३९,६; १०४१
 सु - यज्ञः २,२१,४; १२२०
 प्र - यज्युः ६,२१,१०; १९०५
 उद् - यन्ता १,१७८,३; १०९८

प्र - यन्ता ८,९३,२१; २४५०
 प्र - य [या] वयन् ३,४८,३; १४२१
 स्व - यशस्तरः ३,४५,५; १४०८
 ऋण - या ४,२३,७; १५७२
 भव - याता १,१२९,११; १०१०
 भ - वामन् ८,५२,५; ५१९
 पूर्व - यावा ३,३४,२; १३०२
 रथ - यावाना ८,३८,२; ३०९२
 भ - यास्यः १,६२,७; ८७८
 भवस् - युः ४,१६,११; १४७७
 भश्च - युः १,५१,१४; ७५८
 भस्म - युः १,१३१,७; १०२७
 ऋत - युः ८,७०,१०; २३३४
 गिर्वणस् - युः १०,१११,१; २७२५
 गो [गव्] - युः १,५१,१४; ७५८
 रथ - युः १,५१,१४; ७५८
 वसु [सु] - युः १,५१,१४; ७५८
 वाज - युः ७,३१,३; २२२५
 विश्व [श्वा] - युः १,१२९,४; १००३
 वीर - युः ८,२२,२८; २४२४
 श्रवस् - यु १,५६,६; ८०२
 स्व - युः ३,४५,५; १४०८
 सु भश्च - यु ८,४५,७; ४४९
 हिरण्य - युः ७,३०,३; २२२५
 भ - युजः ८,६२,२; ५६७
 पुरस् - युधः १,१३२,६; १०३३
 भ - युद्धसेनः १०,१३८,५; २७९६
 भ - युध्यः १०,१०३,७; २६९७
 सत्य - योनिः ४,१२,२; १५२३
 पुरस् - योधः ७,३१,६; २२२८
 सुते - रणः १०,१०४,७; २७०९
 वृष - रथ ५,३६,५; १७४८
 सुल - रथः ५,३०,१; १६८२
 भ - रधः ६,१८,४; १८५९
 वि - रक्षिन् ३,३६,४; १३२६
 सम् - रराणः ८,३२,८; १८७
 सप्त - रक्षिः २,१२,१२; ११३३
 एक - राज् - ट् ८,३७,३; १७७८
 सम् - राज् - ट् ४,१९,२; १५२३

स्व - राज - ८, १५१, १५; ७५९
 ज्येष्ठ - राज: ८, १६, ३; ३८४
 अनर्श - राति: ८, ९९, ४; २३७९
 पिशाङ्ग - राति: ५, ३१, २; १६९४
 मेहिष्ठ - राति: १, ५२, ३, ७६२
 पूष - रातय: १, २३, ८; ३२४८
 सत्य - राध: १, १०१, ८; ८२४
 तुवि - राधा: ४, २१, २, १५४५
 सु - राधा ४, १७, ८; १४९५
 स्पार्ह - राधा: ४, १६, १६; १४८२
 बृहत् - रि: १, ५८, १; ८११
 प्र - रिक्का १, १००, १५; ९७१
 अ - रिष्ट: ५, ३१, १, १६९३
 अ - रीळ्ह: ४, १८, १०, १५१८
 पुरु - रुच १०, १०४, ४; २७०७
 तनू - रुचा (चौ) ७, ९३, ५; ३०७५
 वलं - रुज: ३, ४५, २ १४०५
 अ - रुतहनु: १०, १०५, २७; २७२०
 अ - रुष: १, ६, १, २४
 विश्व - रूप: ३, ३८, ४; १३४८
 सु - रूपकृतु: १, ४, १; ४
 बृहत् - रेणु ६, १८, २; १८५७
 स्व - रोचि ३, ३८, ४; १३४८
 अ - रेपसौ ५, ५१, ६; ३२३१
 अधि - वक्ता १, १००, १९, ९७५
 सु - वज्र: १, १००, १; ९७४
 अन् - अ - वध: १, १२९, १; १०००
 महा - वध: ५, ३४, २, १७२८
 सम - वनन ८, १, २; ८८
 प्र - वया २, १७, ४; ११८४
 स - वयस १, १६५, १; ३२५०
 नि - वर. ८, ९३, १५; २४४४
 वरुम - वर्चा: १, १७३, ४; १०५९
 समान - वर्चसा १, ६, ७; ३२४६
 हिरण्य - वर्ण: ५, ६८, २, १७५६
 चन्द्र - वर्णा: १, १६१, १२; ३२६१
 अप - वर्ता (गोनाम्) ४, २०, ८, १५४०
 उक्थ - वर्धन: ८, १४, ११; ३६४
 स्तोम - वर्धन. ८, १४, ११; ३६४
 पुरु - वर्षा: १०, १२०, ६; २७६९

उद् - व [वा] वृषाण: ४, २०, ७; १५३९
 भक्षित - वसु: ८, ४९, ६, ४२०
 दिवा - वसु: ८, ३४, १; ४२५
 पुरु [क] - वसु: १, ८१, ८; ९२३
 रद [दा] - वसु: ७, ३२, १८; १२५२
 वाजिनी - वसु: ३, ४२, ५; २३८६
 विदद् - वसु: ३, ३४, १; १३०१
 विभा - वसु: ८, ९३, २५; २४५४
 वृषन् - वसु ४, ५०, १०; ३३२३
 सु - वसा ६, २२, ७; १९१३
 भद्रोघ - वाक् ६, २२, २; १९०८
 सनात्[नत्] - वाज: १०, ४७, ४, २८४५
 सहस्र - वाजा: १०, १०४, ७; २७०९
 अ - वात: ६, १८, १, १८५६
 भद्र - वात: १०, ४७, ५, २८४६
 अ-शस्त - वार. १०, ९९, ५; २६८४
 पुरु - वार: ४, २१, ५; १५४८
 भूरि - वार. १०, २७, २, २८४३
 विश्व - वार: १, ३०, १०, ७०८
 अ - वार्यकृतु: ८, ९२, ८; २४०४
 हव्य - वाहन: १०, ११९, १३; २८६२
 ब्रह्म - वाहस्-हा: १, १०१, ९; ८२५
 यज्ञ - वाहस्-हा: ८, १२, २०; ३०७
 स्तोम - वाहस्-हा: ६, २३, ४; १९२१
 ब्रह्म - वाहस्तम: ६, ४५, १९; २०७८
 उक्थ - वाहस् ८, २६, ११; २३५५
 गिर - वाहस् १, ३०, ५; ७०३
 बल - विज्ञाय: १०, १०३, ५, २६९५
 गो - विद् ८, ५३, १; ५२५
 वरिवस् - विद् १०, ३८, ४; २५०४
 वसु - विद् ८, ६१, ५; ५५२
 स्वर - विद् १, ५२, १; ७६०
 अ - विदीधयु: ४, ३१, ७, १६३६
 सु - विद्वान् ८, २४, २३; १८१२
 सम - विद्यान: १, १३०, ४; १०१४
 अ - विहर्षकृतु: १, ६३, २; ८८६
 अभि - वीर: १०, १०३, ५, २६९५
 एक - वीर: १०, १०३, १; २६९२
 पुरु - वीर: ६, २२, ३; १९०९
 प्र - वीर: १०, १०३, ५; २६९५

मन्दन् - वीरः ८, ६९, १; २३०४
 महा - वीरः १, ३२, ६; ७२०
 विप्र - वीरः १०, ४७, ४; २८४५
 मध - वीरः ६, २६, ७; १९५५
 सु - वीरः ६, १७, १३; १८५३
 सु - वृक्तिः १०, ७४, ५; २६३८
 अ - वृकः ४, १६, १८; १४८४
 अ - वृकतम १, १७४, १०; १०७८
 स्व - वृज् १०, ३८, ५; २५४५
 अ - वृतः ८, ३२, १८; १९७
 महि - वृध ७, ३१, १०; २२३२
 कवि - वृधः ८, ६३, ४; ५८१
 तुष्ट्य - वृधः [इया] ८, ४५, २; ४७१
 सधा - वृधः ४ ३१, १; १६३०
 माकम् - वृधा (धौ) ७, ९३, २; ३०७०
 प्र - वृद्ध १, ३३, ३; ७३२
 मद - वृद्धः १, ५२, ३; ७६२
 यज्ञ - वृद्धः ६, २१, २; १८९८
 मोम - वृद्धः ३, ३९, ७; १३६१
 शृंग - वृषो नपान ८, १७ १३, ४०६
 न - वेदाः ४, २३, ४ १५६९
 विश्व - वेदाः ६, ४७, १२; २११०
 सु - वेदाः ७, ३३, २५ २२५९
 प्र - वेपनी ५, ३४, ८; १७३४
 गायत्र - वेपाः ८, १, १०; ९६
 उरु - व्यचाः ३, ५०, १; १४२९
 विश्व - व्यचा ३, ४६, ४; १४१२
 समुद्र - व्यचाः १, ११, १; ७०
 धृत - व्रतः ६, १९, ५; १८७५
 महा - व्रातः ३ ३०, ३; १२४०
 उरु - शंसः ४, १६, १८; १४८४
 तुवि - शग्मः ६, ४४, २; २०३७
 अजान - शत्रुः ५, ३४, १; १७२७
 अ - शत्रुः १, १०२, ८; ८३५
 प्र - शर्षः ८, ४, १; २२९
 बाहु - शर्षी १०, १३०, ३; २६९४
 अप्रतिष्ठ - शवाः १, ८४, २; ९३८
 अ - शस्तवारः १०, ९९, ५; २६८४
 अ - शस्त्रिहा ८, ८९, २; २३८५
 सु - शस्त्रिः १०, १०४, १०; २७१२

पुरु - शाकः ३, ३५, ७; १५१८
 सु - शिप्रः १, ९, ३; ५०
 हिरि - शिप्रः ६, २९, ६; १९६७
 तुवि - शुष्मः २ २२, १; १२२३
 सन्ध - शुष्मः १, ५१, १५ ७५९
 गाध - श्रवाः ८, २, ३८ १५३
 गूर्त - श्रवा १, ६१, ५, ८६०
 बृहन - श्रवाः १, ५४, ३; ७८८
 सु - श्रवस्ममः १, १३१, ७, १०२७
 सु - श्रवस्यः १, १७८, ४; १०९९
 वन्दन - श्रुत् १, ५६, ७, ८०३
 वि - श्रुत १, ६२, १; ८७२
 मन - श्रुतः ३, ५२, ४; १४४९
 सु - श्रुतः ३, ३६, १; १३२३
 हवन - श्रुत ८, १२, २३, ३१०
 आ - श्रुत्कर्णः १, १०, ९; ६६
 प्र - सक्षिन् ८, ३२, २७; २७६
 कव [वा] - सगः ५, ३४, ३ १७२९
 मरुत् - सखा ८, ७६, २; ६२९
 श्रावयन - सखा ८, ४६, १०; १८२८
 अप्रामि - सन्ध ८, ६१, ४, ५५१
 अभि - सत्त्वः १०, १०३, ५, २६९५
 सतीन - सत्त्वा १, १००, १; ९५७
 सन्ध - सत्त्व ६, ३१, ५; २०१०
 गो - मन [गोषण ४, ३२, २०; १६६६
 सु - मनिता ८, ४६, २०. १८३६
 त्वेष - सटक् ६, २२, ९; १९१५
 सु - सटश. १, ८२, ३; २२७
 अ - समः ६, ३६, ४; २०३४
 अ - समाति ओजा ६, २९, ६. १९६७
 चतुः - समुद्रः १०, ४७, २; २८४३
 सु - स-[ष]-व्यः ८, ३३, ५; २१४
 अभिमाति - सहं [पाह] १०, १०४, ७; २७०९
 ऋति - सहः [ऋतीषह] ८, ४५, ३५; ४७७
 चर्पणी - सहः ६, ४६, ६; २०९५
 जनम् - सहः २, १, २३, १२१९
 नृ - सहः [नृषाहः] ८, १६, १; ३८२
 प्र - सहः [प्रसाहः] ८, १७, ४; १८४४
 प्रा - सहः १, १२९, ४- १००३
 विश्व - सहः [विश्वासाह] ३, ४७, ५; १४१८
 तुरा - साह [तुराषाट] ३, ४८, ४; १४२२

पुरा - साह [पुराषाट्] १०,७४,६; २६३९
 पृतना - साह [पृतनाषाट्] १,१७५,२; १०८०
 प्र-भाशु - साह [षाट्] ४,२५,६; २५९३
 वृथा - साह [षाट्] १,६३,४; ८८८
 सत्रा - साह [षाट्] २,२१,२,३; १०१८-७९
 अभि - सा [षा] २,५१,२; १४३५
 धाम - साधः ३,५१,२; १४३५
 अश्व - सातमः १,१७५,५ १०८३
 लोक - साता ६,१८,६; १८६१
 नृ - साता ७,२७,१; २२०३
 शूर - साता ७,९३,५; ३०७५
 ऊर्ध्व - सान १०,९०,७ २६८६
 ऋज - सानः ४,२१,५; १५४८
 पृक्वाकु - सातुः ८,१७,१५; ४०८
 मन्द - सानः १,१०,११; ३८
 सु - साः [षाः] ८,७८,४; ६५४
 इन्द्र - सारथि ४ ४६,२; ३२२१
 पुरु - निम्न-सि [षि] ३ १,१०,५; ६२
 अ - सोढ [अषाढः] २,२१,२; १०१८
 सु - सु [षु] मन् १०,१०४,५; २७०७
 सु-अभिष्टि - सुमनः ६ २०८, १८९१
 अ - सुर १,५५,३ ७८८
 शवस - सतुः १,६२,९; ८८०
 सहस - सतुः ६,१८,११; १८९६
 सम - सृष्टजित् १०,१०३,२; २६९४
 अयुद्ध - सेन १०,१३८,५; २७९६
 सर्व - सेनः ५,३०,३; १६८४
 सु - स्तु [ष्टु] १०,१०४,५; २७०७
 अरि - स्तु [ष्टु] तः ८,११,२२; १०८
 पुरु - स्तु [ष्टु] तः १,११,४; ७३
 सु - स्तु [ष्टु] तः १,१२९,११; १०१०
 सध - स्तुती ८,३८,४; ३०९४
 सु - स्तु [ष्टु] ति ८,९६,१२; २३५६
 अ - निस्-स्तु [ष्टु] तः ८,३३,९; २१८
 अ - स्तुतः १,४,४; ७
 पर्वते - स्था [ष्टाः] ६,२२,२; १९०८
 रथे - स्थाः [ष्टाः] १,१७३,४; १०५९
 वन्दने - स्था [ष्टाः] १,१७३,९; १०६४
 वम्बुरे - स्थाः [ष्टाः] ३,४३,१; १३९१
 हरि - स्था. [ष्टाः] ३,४९,१; १४२५
 पुरस् - स्थाता ८,४६,१३; १८२९

ऋभु - स्थि [ष्टि] रः ८,७७,८; ६४७
 अनु - स्पष्ट १०,१६०,४; २८२७
 धन - स्पृत् ३, ४६,२; १४०६
 दिवि - स्पृशा १,२३,२; ३२१३
 यम् - स्रष्टा १०,१०३,३; २६९४
 यत - सुचा [चौ] १,१०८,४; ३०११
 अर्हति - स्व [व] निः [णिः] १,५६,४; ८०८
 तुवि - स्व [व] नि [णिः] २,१७,६; ११८३
 अ-प्र - हन् [हा] ६,४४,४; २०३९
 अरुण - हन् [हा] १०,११६,४; २७५८
 अशस्ति - हन् [हा] ८,८९,२; २३८५
 असुर - हन् [हा] ६,२२,४; १९१०
 अहि - हन् [हा] २,१९,३; १२०१
 दस्यु - हन् [हा] १,१००,१२; ९६८
 पुरः - हन् [हा] ६,३२,३; २०१३
 वृत्र - हन् [हा] १,१६,८; ८५
 सत्रा - हन् [हा] ४,१७,८; १४९५
 सप्त - हन् [हा] १०,४९,८; २५९७
 अरुत - हनुः १०,१०५,७; २७२०
 अव - हन्ता ४,२५,६; १५९३
 वि - हन्ता १,१७३,५; १०६०
 वृत्र - हन्ता ४,२१,१०; १५५३
 वृत्र - हन्तमः ५,३५,६; १७४१
 अर - हरिस्वनिः १,५६,४; ८०८
 सु - हवः ३,४९,३; १४२६
 वि - हव्यः २,१८,७; ११२६
 रात - हव्याद, ६९,६; ३३११
 इषु - हस्ता १०,१०३,२ २६९३
 वज्र - हस्ता १,१७३,१०; १०६५
 भद्र - हस्ता १,१०९,४; ३०२४
 महा - हस्ती ८,८१,१; ८७०
 सु - हार्दः ८,२,५; १२०
 प्र - हावान् ४,२०,८; १५४०
 अ-प्र - हितः ८,९९,७; २३८२
 पुरस् - हितः १,५६,३; ७९९
 पुरु - हूतः १,३०,१०; ७०८
 अ - हृणानः १०,११६,७; २७११
 प्र - हेता ८,९७,७; २३८२
 अवयात - हेकाः १,१७१,६; ३२६८
 अ - हेकमानः ६,४१,१; १९९३
 अ - हवः ८,७०,१३; २३३३



दैवत-संहिता ।

(३)

सोमदेवता ।



सम्पादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)



संवत् १९९९, शके १८६४, सन् १९४९



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, भौध (जि० सावारा)

सोमदेवता का परिचय ।



अमरकोश में सोम ।

सोम के नाम अमरकोश में निम्नलिखित दिये हैं—

हिमांशुः चन्द्रमाः चन्द्रः इन्दुः कुमुदबान्धवः १३
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुः ओषधीशः निशापतिः ।
अब्जः जैवातृकः सोमः ग्लौः मृगांकः कलानिधिः १४
द्विजराजः शशधरः नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

(अमरकोश १।३)

ये बीस नाम सोम के अर्थात् 'चांद' के दिये हैं । तथा इसी कोश में 'वत्सादिनी, छिन्नरुद्धा, गुडूची, तंत्रिका, अमृता, जीवंतिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी' (अमर० २।४।८३) ये नौ नाम सोमवल्ली के दिये हैं । पर ये गुडूची नामक वल्ली जो वृक्षोंपर उगती और बढ़ती है, उस वल्ली के हैं । इसको मराठी में 'गुल्ल-वेल' और हिंदी में 'गुडूच' बोलते हैं ।

इन नामों में 'जीवंतिका, अमृता' ये नाम इसमें जीवनीय गुण हैं, इस बात के सूचक हैं । यह गुण सोम में है, इसलिये सोम के और इन के अर्थ समान हैं । सोम के ऊपर दिये नामों में 'जैवातृकः' में दीर्घ जीवन का भाव है और 'सुधांशु' (सुधा-अंशु) अमृत किरणवाला इसमें अमृत का भाव है । इस तरह गुडूच के ये नाम और सोम के—चांद के ये नाम सदृशार्थक हैं ।

इन नामों में अमरकोश में दिये नाम चन्द्रमा के (चांद के) हैं, सोम औषधि के नहीं, तथा जो सोमवल्ली के नाम अमरकोश में हैं, वे भी सोम औषधि के नहीं । अर्थात् अमरकोश के समय सोम औषधि का कोई महत्त्व नहीं रहा था । अथवा वह सोमवल्ली मिलती नहीं होगी । सोम का महत्त्व चरक सुश्रुत के समय था । क्योंकि चरक सुश्रुत में सोम औषधिका अच्छा वर्णन है, पर उस वल्ली के लिये अमरकोश में स्थान भी नहीं है ।

जो चन्द्रमा के नाम (चांद के नाम) अमरकोश में हैं, वे साक्षात् अथवा भावार्थ से वेद में आये सोमवल्ली के

नामों के समान ही अर्थवाले हैं । यह एक बड़ा भारी विचार करनेयोग्य विषय है, जिसे हम यहां संक्षेप से देते हैं । अमरकोश में दिये चांद के नाम वेद में सोम-वल्ली के लिये प्रयुक्त हुए नाम ही हैं—

१ सोम—यह नाम वेद में सोम औषधि के लिये है जैसा—

‘सोमो वीरुधामधिपतिः ।’

(अथर्व. ५।-४।७)

‘अपाम सोमं०’ । (ऋ. ८।४।८।३)

२ इन्दुः—यह नाम वेद में सोमवल्लीका है, जैसा—
‘इन्द्राय इन्दो परिस्त्रव ।’

(ऋ० ९।११२-११३)

‘इन्दुः पुनानः ।’ (ऋ० ९।१०९।३)

‘सोम’ और ‘इन्दु’ ये दो नाम अनेक बार सोम-वर्णन में वेद में प्रयुक्त हुए हैं । वैसे अन्य नाम नहीं, पर अन्य नाम भी अर्थ के द्वारा वेद में हैं—

३. द्विजराजः—‘सोमराजानो ब्राह्मणाः ।’

(तै० ब्रा० १।७।४।२; १।७।६।७)

‘सोमो अस्माकं ब्राह्मणानां राजा ।’

(वा. यजु. ९।१०; १०।१८; श. ब्रा. ५।४।२।३)

ब्राह्मणों का (द्विजों का) राजा सोम है । इस तरह द्विजराज शब्द यजुर्वेद वाज० सहिता के तथा ब्राह्मणों के वर्णन से सिद्ध होता है ।

४. अंशु—उक्त शब्दों में ‘हिमांशु, सुधांशु’, शुभ्रांशुः’ में ‘अंशुः’ शब्द है, वेद में यह ‘अंशु’ पद सोम औषधि का वाचक है । उदाहरण—‘अंशुं दुहन्ति’ (ऋ० ५। ७।२।६) ‘अंशुं दुहन्ति उक्ष्णं गिरिष्ठा’

(ऋ० १।००।१४)

५ चन्द्रः- ऋग्वेद में 'पवमानस्य जंघतो हरेः चन्द्रा अस्तुक्षत' (ऋ० १।६६।२५) में 'चन्द्र' पद सोमवाचक है। (पवमानस्य हरेः) छानने जानेवाले हरे रग के सोम के (चन्द्रा) चमकनेवाले प्रवाह प्रवाहित होते हैं। यह सोम का वर्णन है। सोम की धाराएँ चमकती हैं, यह वर्णन सोम का है और वह 'चन्द्र' शब्द से हुआ है।

६ ओषधीशः- ऋग्वेद में १।११।१२ में इस अर्थ का वर्णन है। 'सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिः। यहाँ के 'वीरुधां पतिः' और 'ओषधीश' का अर्थ एक ही है। 'वीरुधां अधिपतिः' (अथर्व० ५।२४।७)

७ अञ्जः- ऋ. १६१।७ में सोमको 'सिन्धुमातर' कहा है। सिन्धु के 'जल से उत्पन्न' यह इसका अर्थ है और वही 'अञ्ज' पद का अर्थ है। ऋ० १।६२।४ में 'अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः' कहा है। पर्वत पर जलस्थान में बलवर्धक सोम रहता है, ऐसा वर्णन है। तथा ऋ० १।८५।१० में 'अप्सु द्रुप्सं वावृधानं' अर्थात् 'जलोंमें बढने-वाला सोम है' ऐसा कहा है। इस तरह का वर्णन 'अञ्ज' पद का भाव ही बताता है।

८ जैवातृकः- इस पद का अर्थ 'जीवनवर्धक' है। जो दीर्घ जीवन बनाता है। यह भाव 'जीवसे' शब्द से सोम के वर्णन में वेद में है- (ऋ. १।६६।३० में) 'यस्य ते युञ्जवन् पयः पवमान आभृतं दिवः। तेन नो मृड जीवसे ॥' सोमका तेजस्वी रस स्वर्ग से (आकाश से, पहाड़ की चोटी से) लाया है, उससे (नः जीवसे) हमारा दीर्घ जीवन कर और हमें (मृड) सुखी कर। 'यहाँ सोम का जीवनीय गुण

बताया है। ऋ. १।११।११ में 'इन्दुः वयोधाः' सोमरस दीर्घ आयु देनेवाला है, ऐसा कहा है। इस वर्णन में जीवनीय भाव स्पष्ट है।

९ कलानिधिः- यह भाव 'इन्दु' का (ऋ. १।११।२) सूक्त के चारों मंत्रों में है। यह बात इसी भूमिका के अन्त में बतायी है। वहाँ पाठक अवश्य देखें।

१० सुधांशुः- 'सुधा' का अर्थ 'अमृत' है। यह अमृत शब्द वेद में सोम के लिये आता है। 'दिवः पीयूषं सोमं' (ऋ. १।५।१२, १।११।०८) यहाँ पीयूष शब्द सोमके लिये आया है, जो अमृत और सुधा का वाचक है। ऋ. १।९७।३२ में 'शुक्रो भासि अमृतस्य धाम' मंत्र में सोम को 'अमृत का धाम' कहा है। 'अमृत' सुधावाचक ही पद है, वैसा ही 'पीयूष' भी है।

११ शुभ्रांशुः- ऋ १।६६।२६ में 'पवमानः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः' कहा है। ऋ. १।६३।२६ में 'शुभ्राः अस्त्रमिन्दवः' तथा ऋ. १।६२।५ में 'शुभ्रं अधः' ये सोम के वर्णन हैं। इनमें यह सोम 'शुभ्र' है, ऐसा ही कहा है। वही भाव 'शुभ्रांशु' पद का है।

१२ मृगांकः- सोम को मृग की उपमा ऋग्वेद १।३२।४ में 'मृगो न तक्तो' और १।९२।६ में 'मृगो न महिषो वनेषु।' इन मंत्रों में दी है। मृग के साथ साम्य यहाँ बताया है। वही साम्य चन्द्र पर के मृगचिह्न में है।

इस तरह अमरकोश के लौकिक संस्कृतमें आये 'चांद' वाचक बीस नामों में से तीन नाम तो स्पष्ट ही वेद में सोमऔषधिवाचक हैं और नौ नाम अर्थ की अथवा उपमा की दृष्टि से आये हैं, यह बात ऊपर बतायी है।

शेष नामों में 'हिम, कुमदबांधव, विधु, निशापति, लौ, चाशधर, नक्षत्रेश, क्षपाकर' इन आठ नामों का

सम्बन्ध वेद में देखने में हमें अभी तक सफलता नहीं हुई । तथापि इन में से चारपाँच नामों का सम्बन्ध वेद में दोख सकता है, ऐसी हमें आशा है । अब अन्यान्य कोशों में चान्द के अन्यान्य जो नाम आते हैं, उनका विचार करते हैं—

शाशी, हिमश्रुतिः (शब्दार्णव) ये नाम अधिक हैं, पर इन का भाव पूर्व नामों में है । तथा संस्कृत भाषा की रचना ऐसी है कि, और भी नाम बनाये जा सकते हैं । अतः इस तरह बनाये जानेवाले नामों का विचार करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है ।

निघण्टु में सोम ।

निघण्टु में 'पद' नामों में (४-२ में) सोमो अक्षाः, (४-३ में) सोमानम्, (५-५ में) सोमः, ये तीन नाम दिए हैं । 'पद' नामों में ये नाम रखे गए हैं, इसलिए निघण्टुकार इन का अर्थ कुछ भी नहीं देते हैं । अतः निघण्टु में 'सोम' का अर्थ निश्चित नहीं है । निघण्टु के इन पदों के अर्थ निरुक्त में दिए हैं, अतः हम अब इनका निरुक्त देखते हैं । निरुक्तकार इस तरह कहते हैं—

निरुक्तमें सोम ।

'आ तु पिञ्च हरिमीद्रोरुपस्थे वाशीभिस्त-
क्षताश्मन्मयीभिः ॥ (ऋ० १०।१०।१०)

'आसिञ्च हरिं द्रोरोपस्थे द्रुममयस्य । हरिः
सोमो हरितवर्णः । अयमर्पीतरो हगिरेत्स्मा-
देव । वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः, वाशीभि-
रश्ममयीभिरिति वा, वाग्भिरिति वा ।'

(निरु० नै० ४।३।१९)

'(ई हरि) इस सोम को (द्रो. उपस्थे आसिञ्च)
लकड़ी के बर्तन में सिञ्चित करो, (अश्मन्मयीभि वाशीभिः
नक्षत) और पाषाण से निर्मित खरल से उसको कूटो ।'

यहाँ हरि पद सोम औषधि का वाचक है, क्योंकि यह औषधि हरे रंग की होती है । इस तरह निरुक्तकार सोम का नाम 'हरि' है, ऐसा कहकर, वह औषधि हरे रंग की है, ऐसा भी कहते हैं । वह सोम वनस्पति लकड़ी के फटेपर रखकर पत्थरों से कूटी जाती है, ऐसा भी यहाँ कहा है । और भी देखिए—

'न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं
नाद्रयः सोमो अक्षाः ।' (ऋ० १०।८।१६)
अश्रोतेरित्येवमेक । 'अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः ।
सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।' (ऋ० १।१०।७।९)
क्षियतिनिगमः पूर्व, क्षरतिनिगम उत्तर-
इत्येके । अनूपे गोमान् गोभिर्यदा क्षियत्यथ
सोमो दुग्धाभ्यः क्षरति । सर्वे क्षियतिनिगमा
इति शाकपूणिः ॥ (निरु० ५।१।३)

'जिसके पास द्युलोक, पृथ्वी, मरुदेश, अन्तरिक्ष अथवा पर्वत नहीं पहुँच सकते, पर सोम ही (अक्षाः) पहुँचता है । यहाँ 'अक्षा' रूप 'अश्' (अश्रोति) का है, ऐसा कई कहते हैं । (अनूपे) उत्तम जलवाले देश में (गोमान् गोभिः अक्षाः) गौओका स्वामी गौओके साथ जाकर निवास करता है और (सोम) सोमरस (दुग्धाभिः अक्षाः) दुही हुई गौओ के दूध के साथ मिला दिया जाता है । यहाँ पहिली 'अक्षा' क्रिया 'क्षि (निवासे)' इस धातु से बनी है और दूसरी 'क्षर (सचलने)' धातु से बनी है । जलपूर्ण देश में गौरक्षक जब रहता है, तब सोम गोदुग्धके साथ मिलाया जाता है । शाकपूणि ऋषिके मत से 'अक्षाः' क्रियाका सर्वत्र अर्थ निवास करना ही है ।

यहाँ गोदुग्ध के साथ साथ सोम मिलाया जाता है, यह बात कही है । और देखिए—

'सोमानं' का अर्थ 'सातारं' अर्थात् 'सोमका रस निकालनेवाला' बताया है । (निरुक्त० नै० ६।३।१०) आगे निरुक्त में

'ओषधिः सोमः सुनन्तेः यदेनमभिषुण्वन्ति ।'

(निरु० १।१।२)

'सोम औषधि है, जिस का रस निकाला जाता है । निरुक्त में सोम का इतना ही आशय दिया है । सोम का अर्थ चन्द्र आदि जो निरुक्त ने बताया है, वह अन्यत्र भी है । निघण्टु में जो सोमवाचक तीन पद दिए हैं, उन के अर्थ जो निरुक्तकारने दिये हैं, वे ये हैं । अब हम ब्राह्मण-ग्रन्थों में दिए सोम के अर्थ देखते हैं—

ब्राह्मण-ग्रन्थों में सोम ।

स्वा वे म एषेति तस्मात्सोमो नाम ।

(षा० ब्रा० ३।१।४।२२)

ज्योतिः सोमः ।

(श. ब्रा. ५।१।२।१०, ५।१।५।२८)

श्रीर्वै सोमः । (श. ब्रा. ४।१।३।९)

सोम राज्यः । (श. ब्रा. १।१।३।३३)

राजा वै सोमः । (श. ब्रा. १।४।१।३।१२)

सोमो राजा राजपतिः । (तै. ब्रा. २।५।७।३)

सोमो राजा चंद्रमाः ॥ (कौ. ब्रा. ४।४; ७।१०, १०।४।२।१)

वृत्रो वै सोम आसीत् । (श. ब्रा. ३।४।३।१३; ३।९।४।२, ४।२।५।१।५)

पितृलोकः सोमः । (कौ. ब्रा. १।६।५)

पितृदेवत्यो वै सोमः । (श. ब्रा. २।४।२।१२; ३।२।३।१७, ४।४।२।२)

संवत्सरो वै सोमः पितृमान् । (तै. ब्रा. १।६।८।२; १।६।१।५)

संवत्सरो वै सोमो राजा । (कौ. ब्रा. ७।१०)

ऋतवो वै सोमस्य राज्ञो राजभ्रातरः ।

(ऐ. ब्रा. १।१३)

सोमो हि प्रजापतिः । (श. ब्रा. ५।१।५।२६; ५।१।३।७)

इयेनोऽसीति सोमं आह । (गो. पू. ५।१२)

सोमो राजा अस्सरसो विशः ।

(श. ब्रा. १।३।४।३।८)

विष्णुः सोमः । (श. ब्रा. ३।३।४।२।१, ३।६।३।१९)

वायुः...सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।१)

सम्राडसीति सोमं...आह । (गो. पू. ५।१३)

सोमः सर्वा देवताः । (श. ब्रा. १।६।३।२।१; ऐ. ब्रा. २।३)

सोमो वा इन्द्रः । (श. ब्रा. २।२।३।२३; ७।५।२।१९)

सोमो रात्रिः । (श. ब्रा. ३।४।४।१।५)

सोमो वै पर्णः । (श. ब्रा. ६।५।१।१)

सोमो वै पलाशः । (कौ. ब्रा. २।२; श. ब्रा. ६।६।३।७)

पशुः वै...सोमः । (श. ब्रा. ५।१।३।७; १२।७।२।२)

सोमो वै दधि । (कौ. ब्रा. ८।९)

स्वरोऽसीति सोमं आह । (गो. पू. ५।१४)

यजमानः...सोमः । (तै. ब्रा. १।३।३।५)

वर्चः सोमः । (श. ब्रा. ५।२।५।१०-११)

सोमो वै भ्रातृ । (श. ब्रा. ३।२।४।९)

क्षत्रं सोमः । (ऐ. ब्रा. २।३।८, कौ. ब्रा. ७।१०, ९।५; १०।५, १२।८; श. ब्रा. ३।४।१।१०, ३।९।३।३।७; ५।३।५।८)

यशो वै सोमः । (श. ब्रा. ४।२।४।९, ऐ. ब्रा. १।१३; तै. ब्रा. २।२।८।८)

यशो वै सोमो राजा अन्नाद्यम् । (कौ. ९।६)

प्रजापतेर्वा एते अन्धसी यत्सोमश्च सुरा च ।
(श. ब्रा. ५।१।२।१०)

अन्नं सोमः । कौ. ब्रा. ९।६, श. ब्रा. ३।३।४।२८; तां ब्रा. ६।६।१; श. ब्रा. ३।९।१।८ ७।२।२।११, तै. ब्रा. १।३।३।२)

हविर्वै देवानां सोमः । (श. ब्रा. ३।५।३।२)

हरिः...सोमः । (श. ब्रा. १।२।८।२।१२)

प्राणः सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।२, ४५. तां. ब्रा. ९।९।१-५, कौ. ब्रा. ९।६)

रेतः सोमः । (कौ. ब्रा. १।३।७; तै. ब्रा. २।७।४।१, श. ब्रा. ३।३।२।१, ३।३।४।२८; ३।४।३।११)

सोमस्य प्रिया तनूः सुवर्णः ।

(तै. ब्रा. १।४।७।४-५)

शत्रुः सोमः । (तां. ब्रा. ६।६।९)

सोम इव गंधेन (भूयासं) । (म. ब्रा. २।४।१४)

रसः सोमः । (श. ब्रा. ७।३।१।३)

सर्वं हि सोमः । (श. ब्रा. ५।५।४।११)

गिरिषु हि सोमः । (श. ब्रा. ३।३।४।७)

सोमो वै राजौषधीनाम् । (कौ. ब्रा. ४।१२; तै. ब्रा. ३।९।१७।१)

सोमराजानो ब्राह्मणाः । (तै. १।७।४।२; १।७।१।७)

सोमो वै ब्राह्मणः । (तां. ब्रा. २।३।१६।५)

प्रतीची दिक् । सोमो देवता । (तै. ब्रा. ३।१।१।५।२)

उत्तरा ह वै सोमो राजा । (ऐ. ब्रा. १।८)

सोमः पयः । (श. ब्रा. १।२।७।३।१३)

आपः सोमः सुतः । (श. ब्रा. ७।१।१।२२)

आपो हि...सोमस्य लोकः (श. ब्रा. ४।४।५।२१)
वैराजः सोमः । (यौ. ब्रा. १।६; श. ब्रा. ३।३।२।१७
३।१।४।१९)

पुमान् वै सोमः स्त्री सुरा । (तै. ब्रा. १।३।३।४)
सौमायनो बुध । (ता. ब्रा. २।४।१।८।६)

प्रजापति सौमाय राक्षे दुहितरं प्रायच्छत्
सूर्यो सावित्रीम् । (ऐ. ब्रा. ४७)

दीक्षा सोमस्य राज्ञः पत्नी । (गो. उ. २।९)

पूर्वलिखित ब्राह्मणग्रन्थों के वचनों से सोम के ये अर्थ
दीखते हैं— ज्योति, श्री, राज्य, राजा, राजपति, चन्द्रमा,
वृत्र, पितृलोक, पितृदेवता, सवस्सर, प्रजापति, इषेन, विष्णु,
वायु, सम्राट्, संपदेवता, इन्दु, रात्री, पर्ण (पत्ता),
पलाश, पशु, दही, स्वर, यजमान, वर्च (तेज), आट्
(तेज, प्रकाश), क्षत्र, यज्ञ, अन्न, हवि, प्राण, रेत,
सुवर्ण, शुक्र, रस, सर्व (सब कुछ), ब्राह्मण, दूध, जल ये
इतने सोम के अर्थ हैं ।

इसके अतिरिक्त सोमके विषय में निम्नलिखित बातें
उक्त वचनों में कहीं हैं— (१) ऋतु सोम के भाई है,
(२) सोम राजा है और उसकी प्रजाएं अस्सराए हैं, (३)
सोम ओषधियोंका राजा है, (४) ब्राह्मणों का राजा
सोम है, (५) सोम ब्राह्मण ही है, (६) आप् (जल)
सोम का स्थान है, (७) सोम और सुरा भाईबहिन
हैं, (८) बुध सोम का पुत्र है, (९) प्रजापतिने सोम-
राजा को अपनी पुत्री सूर्योसावित्री दी थी, (१०) सोम
की पत्नी दीक्षा है । (११) उत्तर दिशा का सोम राजा
है, (१२) पश्चिम दिशा सोम की दिशा है । (१३)
सोम का राज्य वैराज्य है । इत्यादि बातें यहां कही हैं ।
इन का संबंध और आशय ब्राह्मणग्रंथों को देखकर और
विचार कर ढूंढकर निकालना चाहिए ।

सोम का अर्थ ' स + उमा ' (उमया ब्रह्मविद्या
सहितः सोमः) विद्या, ब्रह्मविद्या से जो युक्त, इन विद्याओं
में जो प्रवीण है, वह सोम कहलाता है । यह भी एक
सोम है । इस सोम का ज्ञानरस विद्यार्थी या ब्रह्मचारी
प्राप्त करते और वे ही सेवन करते हैं ।

सोम परमात्मा है, उससे अमृतस प्राप्त होता है, जो जीव-
न्मुक्त अथवा मुक्त होते हैं, वे इस सोमरसका सेवन करते हैं ।

इस तरह अन्यान्य अर्थ विचार करनेवाले पाठक स्वयं
जान सकते हैं, इन अर्थों का बतानेवाला मंत्रभाग सोम के
इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं ।

उक्त सप्त अर्थों में मुख्य अर्थ और गौण अर्थ इस तरह
भेद करना चाहिए । सोमरस अन्न है, वह वीर्यवर्धक, रेत
बढानेवाला, बल, ओज, तेज की वृद्धि करनेवाला है, इस
तरह इनकी सगति लगायी जा सकती है । दूध और दहीके
साथ मिलाकर यह सोम पिया जा सकता है, इत्यादि
बातें इस सगति से मालूम होंगी ।

सोम के उत्पत्तिस्थान ।

पर्वतों पर के जलयुक्त स्थलों में शायद सोम की पैदा-
इश होती होगी । इसी कारण से उसे ' पर्वतावृध्,
गिरिष्ठा ' कहते थे । मौजवत्, शर्यणावत्, आर्जी-
कीया, सुपोमा तथा सिन्धु स्थानों में सोम की उत्पत्ति
होती थी ।

साधारण रूप से यो उल्लेख पाया जाता है कि, उपरि-
निर्दिष्ट स्थलोंमें सोम का जन्म हुआ करता है, परन्तु यद्यपि
सभी स्थानों के बारे में निश्चिन रूप से नहीं कहा जा
सकता है, तो भी निस्सन्देह बहुतसी जगह पर्वतों एवं
नदियों से निगडित है । हिमालय का ही एक विभाग
' मूजवान् ' नाम से विभूत है और तैत्तिरीय आरण्यक
में दी हुई ' शर्यणावत् ' की चहारदीवारी से ज्ञात
होता है कि, हिमालय की तराई में तथा कुहक्षेत्र के ऊपरी
विभाग में शर्यणावत् नामक एक झील विद्यमान था ।
' आर्जीकीया ' तथा ' सुपोमा ' तो स्पष्टतया नदियाँ
हैं । ये भी पंजाब के पार्वतीय प्रान्त में ही थीं । कह नहीं
सकते कि, वर्तमानकाल में ये नदियाँ किम नाम से
विख्यात हैं ।

धुलोक तथा सोम ।

धुलोक से पर्जन्यद्वारा सोम भूलोकपर आता है, ऐसा
वर्णन बहुधा दीख पडता है और इस का अर्थ अनेक
स्थलोंपर यों किया जाता है कि, ऊँची जगह लटका कर
रखी हुई छलनी से सोम धाराप्रवाही रूप में नीचे आ
गिरता है । सोम के विषय में कहा है कि, प्रारभ में वह
धुलोक में था और पश्चात् वह भूमिपर उतर आया (९-

६१-१०) दिव पुत्र- दिवः शिशुः नाम उसे दिया गया है । एक जगह उसे पर्जन्यपुत्र कहा है (९-८२-३) । सच पूछा जाय, तो सोम का शुलोक से संबंध उस का पर्वत की चोटी पर होना सिद्ध करता है । पर्वत की चोटी आकाश में होती है, वहां से यह लाया जाता है ।

सोम का स्थान ।

सोम पर्वत पर होता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षा ।

(ऋ० ९।१८।१)

‘ (गिरि-स्थाः) पर्वत पर रहनेवाले सोमका रस छानने के लिए (पवित्र) छाननी पर रक्ता है । ’

यहां ‘ गिरि-स्थाः ’ यह सोम का विशेषण बताता है कि सोम पर्वत पर रहता है । हिमवान् के मौजवान् पर्वत पर सोमवल्ली उगती है, इसलिए ‘ मौजवान् सोम ’ कहते हैं ।

एतं उ त्वं दश क्षिपो मृजन्ति सिंधुमातरं ॥

(ऋ० ९।६१।७)

‘ उस (सिंधु-मातरं) सिंधुनदी के पुत्र सोम को दश अंगुलियों पीस कर रस निकालती हैं । ’ इस मन्त्र से पता लगता है कि, सिंधु के पाम सोमवल्ली का स्थान है ।

असावि अंशुः मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।

(ऋ ९।६२।८)

‘ पर्वत पर रहनेवाला सोम (दक्ष) बलवर्धक है, वह (अप्सु) जलस्थान में भी होता है, यह (मदाय) हर्ष बढ़ाता है । इस (अंशु) सोम का (असावि) रस निकालते हैं । ’ तथा-

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं । (ऋ ९।७१।४)

‘ यहां सोम को (पर्वत-वृधं) पर्वत पर उगनेवाला और (द्यु-क्षं) आकाश में रहनेवाला कहा है । ’ अर्थात् ऊंची से ऊंची पहाड़ की चोटी पर जो सोम उगता है, वह श्रेष्ठ है । हिमालय की १६००० फीट से ऊंचे स्थान पर जो सोम मिलता है, वह उत्तम है, १२००० फीट से ऊंचे स्थान पर जो मिलता है, वह मध्यम और इससे कम ऊंचाई पर मिलनेवाला कनिष्ठ समझा जाता है । आज भी यह सोम

मिलता है, इसकी इसी तरह उत्कृष्टता समझी जाती है ।

राजा सिन्धूनां अवसिष्ट वासः । (ऋ. ९।८९।२)

‘ सिन्धुओं का वस्त्र (राजा) सोम राजाने परिधान किया है । ’ यहां सपूर्ण सिन्धुसरितों के मध्य प्रदेश में अर्थात् पहाड़ों पर सोम होता है, ऐसा आशय कदाचित् होना संभव है ।

शर्यणावति सोमं इन्द्रः पिबतु वृत्रहा ॥ १ ॥

आर्जीकात् सोम मीदव ॥ २ ॥

(ऋ. ९।११३।१-२)

शर्यणावती नदी के पाम, तथा ऋजीक के स्थान के पास ‘ सोम ’ होता है । यहां विचार करना चाहिये कि, क्या सोम के स्थान का निर्णय करने के लिये ये दो पद सहायक हो सकते हैं ?

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः । (अथर्व. ३।२७।४)

‘ उत्तरदिशा का अधिपति सोम है ’ इससे सोम उत्तर दिशा में है, ऐसा प्रतीत होता है । उत्तरदिशा में हिमालय में सोम है ।

पर्वत पर सोम ।

यह सोम पहाड़ पर होता है, इस विषयमें कहा है-

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमः ।

(ऋ ९।१८।१)

असावि अंशुर्मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।

(ऋ. ९।६२।४)

वेना दुहन्ति उक्ष्णं गिरिष्ठां । अप्सु द्रप्सं ॥

(ऋ. ९।८५।१०)

अंशं दुहन्ति उक्ष्णं गिरिष्ठां । (ऋ. ९।९५।४)

यह सोमवल्ली (गिरि-स्थः) पहाड़ों पर होती है, उसको पर्वत में लाकर उसका रस निकालते हैं, तथा-

पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या

गिरिषु क्षयं दधे । (ऋ. ९।८२।३)

‘ इस (महिषस्य पर्णिनः) पत्नीवाले बलशाली सोम का पिता पर्जन्य है और (गिरिषु क्षयं) पर्वतों पर इस का निवास है । ’ इससे सोम पर्वतों पर होता है, यह सिद्ध है और इसको ‘ दिव्य ’ कहा है, इसलिये कि यह ऊंचे पर्वतों के शिखरों पर होता है ।

पत्नों के साथ सोम ।

सोमवल्ली पत्नों के साथ होती है, ऐसा वर्णन कई मंत्रों में दीखता है—

सोमो वीरुधां अधिपति । (अथर्व ५।२४।७)
 दिव्याः सुपर्णाः मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः
 परि कोशमासते । (ऋ. ९।८६।१)
 दिवः सुपर्णो अव्यथिर्भरत् ॥ (ऋ. ९।४८।३)
 दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः (ऋ. ९।७१।९,
 नाके सुपर्ण उपपत्तिवांसं ॥ (ऋ. ९।८५।११)
 युजान इन्दो हरितः सुपर्णः ॥ (ऋ. ९।८६।३७)
 दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम ॥ (ऋ. ९।९७।३३)
 सोमस्य पर्ण सह उग्रं आगन् । (अथर्व. ३।५।४)

इतने मंत्रों में यह (सोमः इन्दुः) सोमवल्ली (हरितः सुपर्ण) हरे रंगवाली सुन्दर पत्नोंवाली होती है, तथा यह (दिव्यः = दिवि भव) पहाड़की चोटीपर, जैसी कि स्वर्ग में होने के समान उच्च गिरिशिखरपर, होती है, ऐसा कहा है ।

सोम का वर्ण ।

कुछ कुछ हरा, तनिक सौवला और लालिमायुक्त ऐसा भौंति भौंति का वर्णन किया हुआ है, तथा उसे सुपर्ण नाम भी दिया गया है, जिस से अनुमान किया जा सकता है कि, वह अच्छे पत्नों से युक्त होगा । उसी प्रकार ऐसा भी बखान किया है कि, वह तिनकों से पूर्ण रहता है । हरित शब्द से बहुधा उस के रंग का वर्णन किया हुआ है ।

सोम में विद्यमान गुण ।

सोम की सराहना करते समय बतलाया है कि, उस में भौंति भौंति के गुण छिपे पड़े हैं । इन सब गुणों में उत्साह एवं उमंग बढ़ाने की उस की शक्ति प्रमुखतया प्रेक्षणीय है । युद्धों में अनिवार्यतया उस का उपयोग किया जाता था । एक बार सोमरस का सेवन कर चुकनेपर इन्द्र को किसी से भी परास्त होने की संभावना नहीं रहा करती थी । अन्य देवतागण भी यथोचित सोमरस का पान करते थे । साधारणतया वर्णन पढ़ने से प्रतीत होता है कि सोमरस का पान करना, वैदिक समय अतिसामान्य बात

थी । विशेषतया युद्ध के अवसरपर आवेश एवं जोशीला भाव पैदा करने के लिए सोम का प्रमुख उपयोग किया जाता था । सोमरस में बुद्धि बढ़ाने की भी क्षमता थी, इस का यत्रतत्र वर्णन किया हुआ पाया जाता है । सोम का पान कर लेनेपर उमंग एवं उत्साह की मात्रा बढ जाती थी और प्रतिभा का नवनवोन्मेष प्रतिपल प्रस्फुटित हुआ करता था । वक्तृता एवं स्तुतिपाठ में मानो बाढसी आती थी । अनेक स्थानोंपर कहा है कि, सोम आनन्द बढ़ाने में सर्वोपरि है । ' कुविन्सोमस्यापामिति ' (ऋ० १०-११९) आदि सूक्त पढ़ने से पता लगता है कि, सोम में उत्साहकता का अंश कहाँ तक था । इसके अतिरिक्त ऐसा भी दर्शाया है कि, वैदिक देवता तथा ऋषि सोम के बारे में अतीव लोलुप थे ।

उसी प्रकार उस में साधारण रोग हटाने की भी योग्यता होगी । परन्तु उसके प्रमुख आलोचनाय गुण बुद्धि बढ़ाना और उत्साहित कर देना है, क्योंकि ऐसी प्रभावशालिता के न रहते उस विषयमें इतनी आसक्ति होना, अमभव है ।

स्वर्गीय अमृत ।

दिवः पीयूषं उत्तमं सोमं इन्द्राय पातवे ।
 सुनोता मधुमन्तमम् । (ऋ. ९।५१।२)
 दिव पीयूषं पूर्वं । (ऋ. ९।११।०।८)

‘ इन्द्र के पान करने के लिये मधुर सोमरस निकाल दें । यह (दिवः उत्तम पीयूषं) स्वर्ग का उत्तम अमृत-रस है । ’ तथा—

त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ।

(ऋ. ९।१०६।८)

‘ सब देव (अमृताय) अमृतलाभ के लिये आनन्द से (पपुः) पीते हैं ।

वीर्यवर्धक सोम ।

(सोम) प्रजावत् रेत आभर । (ऋ. ९।६०।४)
 ‘ हे सोम ! तू (प्रजावत् रेत.) जिमसे प्रजा उत्पन्न हो सकती है, जिमसे सतान उत्पन्न हो सकता है, ऐसा वीर्य हमारे शरीरमें (आभर) भर दे । ’
 इस वर्णन में सोम का वीर्यवर्धक गुण बताया है ।

महां असि सोम ज्येष्ठ उग्राणां इन्द्र ओजिष्ठः ।

(ऋ १।६६।१६)

‘हे सोम ! तू वीरोंमें श्रेष्ठ और बड़ा बलवान् वीर है ।’

सोमरस पीनेसे वीर्य बढ़ता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

(सोमा-) वर्धन्तो अस्य वीर्यम् । (ऋ १।८।१)

सोम तारुण्य देता है ।

सोम तारुण्य (जवानी) देता है, इस विषय में कहा है-

महे युवानं आ दधु । इन्द्रं० (ऋ १।९।५)

‘(इन्द्र) सोम (युवान) तारुण्य देनेवाला है, इस-
लिये (महे आ दधु) बड़े कार्य के लिये उस सोम का
हम धारण करते हैं ।’

बल की वृद्धि ।

सोम बल की वृद्धि करता है, इस विषय में कहा है-

सहो नं सोम पृत्सु धाः । (ऋ. १।८।८)

‘हे सोम ! तू (पृत्सु) युद्धप्रसंगों में (न) हमारे
अन्दर का (सहः धा.) सामर्थ्य बढ़ाओ ।’

सोम का विद्युत्तेज ।

आ यो गोभिः सृज्यते ओषधीष्वा देवानां सुस्र
इषयन्नुपावसुः । आ विद्युता पवते धारया
सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ॥

(ऋ १।८।३)

‘(य-) जो सोम (गोभिः) गोदुग्धके साथ (ओष-
धीषु आ सृज्यते) ओषधियों के रसों में उण्डेला जाता है,
जो (उपावसुः) धन के साथ देवों को सुख देता है तथा
(इन्द्र) इन्द्र को और (दैव्य जन) दिव्य मानव को
(मादयन्) हर्षयुक्त करता है, वह (सुतः) सोमरस
(विद्युता धारया) बिजली जैसी चमकीली धारा से
(आ पवते) छाना जाता है, शुद्ध किया जाता है ।’

सोमरस की धारा अंधरे में बिजली के समान चमकती
है । यह इस रस की विशेषता है । अनेक ओषधिरसों से
इसका मिश्रण भी करते हैं, इसी को मसालेदार सोमरस
बोलते हैं । गोदुग्ध तो इस में मिलाया जाता है ।

सोम से सबको लाभ ।

स न पवस्व, शं गवे, शं जनाय, शं अर्वतं ।

शं राजन् ओषधीभ्यः ॥ (ऋ. १।१।३)

‘सोमरस से हमारा, गौओं का, लोगों का, घोड़ों का
और ओषधियों का (शं) कल्याण होता है ।’ अर्थात्
सोम से ओषधियां वीर्यवती होती हैं, मनुष्य हृष्टपुष्ट
होते हैं तथा गौवं और घोड़े भी आरोग्यसंपन्न होते हैं ।

यहां गौओं के खाने में सोम आता था, यह बात स्पष्ट
है । जो गौ सोम खाती है, उसके दूध में सोमरस के गुण
आते हैं, यह बात स्मरण रखनेयोग्य है । इस तरह सोम
का सेवन बड़ा लाभदायी है ।

सोम की रुचि ।

साधारण ढंग से सोम जिह्वा को कैसे लगता था, इस-
का स्पष्ट बखान करना अति कठिन जान पड़ता है । कारण
यही है कि, इस भौति की वस्तुओं की साधारण रुचि
नहीं बतलायी जाती है, अपितु उस वस्तु की ओर जो
अति तीव्र आकर्षण अपने अतस्तल में उत्पन्न होता है,
उसी के अनुसार वर्णन का सिलसिला प्रचलित होता है !

सोम का वर्णन यो किया है कि-

‘स्वादुः किलायं मधुमानुतायं तीव्रः किलायं’

(ऋ० ६-४७-१)

तो भी यह कुछ कुछ तीखी, स्वादवाली वस्तु हो । उस
में दूध, शहद आदि चीजों की मिलावट करके ही विशेष
ढंग की मधुरिमा से युक्त कर देते थे ।

सोम तथा सुरा ।

ऋग्वेदकाल में भी सोम सुरा से सुतरां विभिन्न वस्तु
थी, ऐसा प्रतिपादन करने के लिए पर्याप्त आधार है ।

ऋत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायां ।

(ऋ० ८।२।१२)

यहाँपर सेवन की हुई सुरा से दुर्मद होते हैं, ऐसा
वर्णन है और कहा है कि, मद्यसेवन से जो नशा मालूम
पड़ता है, वह दुर्मद है ।

सुरा मन्युर्विभीदको अचित्ति ॥ (ऋ० ७-८६-६)

‘मद्य, क्रोध तथा घूतक्रीडा के साधन पाप की ओर ले

चलनेवाले हैं ।' जैसे वर्णन सुराका यहाँपर किया गया है, वैसे सोम का बखान कहीं भी नहीं किया है, उल्टे सभी जगह इस के विपरीत चित्रण किया है ।

अतः ऐसा कह सकते हैं कि, उस समय सोम तथा सुरा दोनों ही अत्यंत विभिन्न वस्तुएँ थी और मद्य के द्वारा उत्पादित मतवालेपन में बहुत ही बुरे गुण थे । इस के सिवा, भाग चलकर वाङ्मय में एवं सौत्रामणियाग में मद्य की विभिन्न प्रणाली बतलाई है । अतः ऐसा कहने में कोई आपत्ति नहीं उठाई जा सकती है कि, सोम सुरासे विभिन्न एवं पृथक् अन्य कोई आनन्ददायक वस्तु थी ।

सोम तैयार करने की प्रणाली ।

प्रारम्भ में ब्राह्मण से यज्ञशाला के बाहर सोमवल्ली खरीद लेनी चाहिए और उसे यज्ञशाला ले जाकर उस पर पानी का छिड़काव कर चुकने पर ठीक प्रकार से रखना चाहिए, ताकि वह सूखने न पाय । इस के पश्चात् फलक पर सोम रखा जाय । सोम कूटने के दो तख्ते, जो कि ३६ अंगुलियों लम्बाई में और १८ अंगुल चौड़ाई में रहे, 'अभिषवण फलक' नाम से ज्ञात हैं, अर्थात् यदि दोनों समीप समीप रखे जाय, तो 'समभुज चतुष्कोण' की निर्मिति होती है, जिसकी प्रत्येक रेखा ३६ अंगुलियों से परिमित हो जाती है । उस पर सोमवल्ली रखी जाय । पश्चात् ग्रावासे उसे कूटना प्रारम्भ करे । यह ग्रावा पथर की बनी रहती है और इस का ऊपरी हिस्सा पतला तथा निम्नविभाग मोटा रहता है । कूटते समय मंत्र पढ़ते पढ़ते कुछ थोड़ा जल डालना पड़ता है । तदुपरान्त कूटी हुई वह सोमवल्ली आधवनीय नामक वर्तन में, जो अनुकूलता के अनुसार मिट्टी का या धातु का बनाया जाता है, डालनी चाहिए । यथेष्ट जल डाल कर उसे अच्छी तरह रगड़ कर जलमें मिला दे । पानी में जब सोमवल्ली का रस मिश्रित हो जाय, तब निचोड़कर अवशिष्ट अशको बाहर निकाल दे, जिसे ऋजीष नाम दिया गया है । अब छानने के लिए अधिषवण पर रंगरेज के यहाँ की तिपाईं जैसे एक चौकी रख कर उस पर 'दशापवित्र' नामक एक छानने का वस्त्र बाँधकर रखना चाहिए, यही छाननी है । जलमिश्रित सोम अब आधवनीय पात्र में से उस पर ऊँटेलना चाहिए । पवित्र के नीचे एक छोटासा छेद बना-

कर उसमें से ऊनी धागा इस तरह डाला जाय कि, पनली धारा गिरने लगे । अब सोम टपकने लगता है, जिसे पात्र में ले लिया जाय । 'ग्रह, चमस' ये नाम पात्रों के हैं । उस सोम को विभिन्न देवताओं को लक्ष्यमें रखकर अग्निमें आहुति के रूप में डाल चुकने पर, सभामण्डप में होम करनेवाले एवं वषट्कार कहनेवाले, उद्गाता, यजमान, ब्रह्मा तथा अन्य सदस्य क्रमशः सोमरस का पान करे ।

इस सोमरस में देवताभेद के अनुसार दुग्ध, तधि, स्वर्णधूलि एवं घृत डालकर अर्पण करने की प्रथा है ।

आश्वलायन श्रौतसूत्र ६-८-५ में कहा है कि, सोमवल्ली न मिलने की दशामे 'पूतिक' अथवा 'फाल्गुन' नामक वनस्पति का उपयोग करना चाहिए । 'अनधिगमं पूतिकान् फाल्गुनानि ।'

वर्तमानकाल में कहीं कहीं होनेवाले सोमयाग के सोम की यह दशा या कृति है ।

हिरण्यकेशीय श्रौतसूत्र में भी लगभग इसी तरह की प्रणाली बखानी गयी है, (देखिए ८-३-४) । सोम कूटते समय ग्रावा से कितने आघात दिये जाय, फलक कैसे रखा जाय, आदि बातें भी बारीकी से बतलायी गई हैं ।

छलनी कैसे रहे ?

'दशापवित्र' या 'पवित्र' शब्द से सोम का विशुद्ध करना सर्वत्र निर्दिष्ट किया हुआ है । अवि, अम्य, अविमय जैसे विशेषणोंसे ज्ञात होता है कि, वह छलनी भेड़ के ऊन से बनायी जाती थी । निश्चित रूप से कह नहीं सकते कि, वह धुनी गयी थी या नहीं, परन्तु एक स्थान पर कहा गया है कि, उस का वर्ण श्वेत था । आधुनिक सोमयाग में ऊन की बनायी छलनी नहीं रहती है, केवल स्वच्छ, सुफेद कपड़ा रहता है, जिस पर तनिक ऊन केवल शास्त्रविधि के लिए लगाया जाता है । 'ह्यरांसि' पद से दीख पड़ता है, उस के अंचल लटकते थे ।

सोमरस की छाननी ।

सोमरस छानने की छाननी बकरी के ऊनकी की जाती थी । इस का नाम 'पवित्र' होता था । इस का वर्णन ऐसा आता है-

अव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः॥

(ऋ. १।१२।४)

रसो । अव्यो वारं वि पवमान धावति ।

(ऋ. १।७४।९)

‘ (अव्य वारे) बहरी के उनकी छाननी पर सोम महत्त्व का स्थान प्राप्त करता है । ’ यह सोम यज्ञको संपन्न करनेवाला और काव्य की स्फूर्ति बढ़ाता है ।

वि वारं अव्यं आशवः । (ऋ. १।१३।६)

‘ (अव्यं वार) बकरी के उनकी छाननीसे (आशवः) शीघ्र प्रवाहित होनेवाले सोमरस नीचे चूने है, नीचे के पात्र में प्रवाहित होते हैं । ’ तथा—

वि वारं अव्यं अर्षति । (ऋ. १।६१।१७)

‘ बकरी के उनकी छाननी पर सोम रखते हैं । ’

(असितः काश्यपो देवलः । गायत्री ।)

ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतं आदिशे ।

शुक्राः पवध्वं अर्णसा ॥ (ऋ. १।२१।६)

‘ (ऋभु) कारीगर जैसा नवीन (रथ्यं) रथको जोतने-वाले घांड़े को सिखाता है, वैसा (आदिशे केतं दधात) धर्म का आदेश देने के लिये ज्ञान दीजिये और हे सोम की रसधाराओं ! तुम बड़े वेगसे स्वच्छ हो । ’ अर्थात् छाननी से शुद्ध हो ।

शुम्भमान क्रतायुभिः मृज्यमानो गभस्त्योः ।

पवते वारे अव्यये । (ऋ. १।३६।४; १।६४।५)

असृग्रं वारे अव्यये ॥ (ऋ. १।६६।११)

‘ (ऋत-आयुभिः) सत्य धर्म पालन करनेवाले याज-कोने शुद्ध किया, किरणों से पवित्र बना (अव्यये वारे) बकरी की छाननी से (पवते) अर्थात् पवित्र होता है, छाना जाता है । ’

स न ऊर्जे वि अव्ययं पवित्रं धाव धारया ।

(ऋ. १।४९।४)

प्र मुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् ।

(ऋ. १।६६।२८)

पवित्रं अति गाहते । रक्षोहा वारं अव्ययम् ।

(ऋ. १।६७।२०)

पवस्य सोम अव्यो वारे परिधाव । (ऋ. १।८६।४८)

‘ यह सोमरस (अव्यय पवित्र) बकरी के उनसे बनी

छाननी के पास (धारया विधाव) रस की धारा के साथ जाता है । ’

रोमाण्यव्या समया वि धावति । (ऋ. १।७५।४)

सो अर्ष इन्द्राय पीतये तिरो रोमाणि अव्यया ।

(ऋ. १।६२।८)

अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । (ऋ. १।६५।४)

‘ इन्द्र के पीने के लिये उस रस को छानने के लिये (अव्यया) बकरी के (रोमाणि तिरः) बाल तिरछे रखने चाहिये और उस छाननी से रस छानना चाहिये । ’

उन एक दूसरे पर ऐसी रखना चाहिये, जिस से वह छाननीसी बने । अथवा उन का बुना कपड़ा कम्बल जैसा लेना चाहिये । तिरछे बाल हों, ऐसी छाननी बने ।

तीन छाननियाँ ।

सोम छानने के लिये एक के ऊपर एक ऐसी कुल तीन छाननियाँ होती थीं, ऐसा निम्न लिखित मंत्र से दीखता है—

सं त्री पवित्रा विततानि पेषि अनु एकं धावसि

पूयमानः । (ऋ. १।९७।५५)

‘ (त्री पवित्रा विततानि) तीन छाननियाँ फैली रखी हैं, उनमें से क्रमपूर्वक (एकं अनु धावसि) एक के पीछे एक पर सोम दौड़ता है, ’ अर्थात् तीनों में से क्रमपूर्वक छाना जाता है ।

ये तीन छाननियाँ एक दर्भ की, एक उनकी और तीसरी (दशा-पवित्र) कबल की होगी, ऐसा हमारा अनुमान है, अथवा तीनों उनकी ही होंगी । इस विषय में निश्चय करने के लिये अधिक खोज की आवश्यकता है ।

अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।

(ऋ. १।१०।१।६)

अव्यो वारेभिः पवते । (ऋ. १।१०।८।५)

‘ सोमरस (गव्ये त्वचि अधि) गौके चर्म पर (अव्यः वारेभिः) बकरी के उनकी छाननियों से (पवते) छाना जाता है ।

नूनं पुनानो अबिभिः परिस्रव अदग्धः सुरभितरः ।

सुते चित् त्वा अप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो

गोभिस्तृत्तरम् । (ऋ. १।१०।७।२)

‘ सोम रस को (भविभि. पुनानः) बकरी के उनकी छाननी से छानते हैं, तब यह (सुरभितरः) अधिक सुधास-से पूर्ण बनता है। रस (सुते) निकालते ही (अप्सु) पानी में स्वच्छ करते हैं, (उत्तरं) पश्चात् (गोभि श्रीणन्तः) गौके दूध के साथ मिलाते हैं। इस (अन्धसा मदाम) अन्न से हम आनन्दित होते हैं । ’

यहां ‘ अवि ’ शब्द बकरी के उनकी छाननी के लिये और ‘ गो ’ पद दूध के लिये आया है ।

(असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री ।)

यं अत्यं इव वाजिनं मृजन्ति योषणां दश ।

वने क्रीळन्तं अत्यविम् ॥ (ऋ १।६।५)

‘ (वने) वन के काष्ठ से निर्मित पात्र में (अत्यवि क्रीळन्त) छाननी से खेलनेवाले जैसे सोम को (अत्यं वाजिन इव) घुड़दौड़ के घोड़े की सेवा करने के समान (दश योषणः) दस स्त्रियां अर्थात् दस अंगुलियां (मृजन्ति) शुद्ध करती हैं । ’

दस अंगुलियां सोमरस निकालती हैं और उसको छाननी पर रख कर स्वच्छ करती हैं। यहां (वाजिन दश योषणः मृजन्ति) किसी घुड़सवार-अश्ववीर-को दस स्त्रियां स्नानादि से सेवा करती है, वैसे सोम की सेवा दस अंगुलियां करती हैं, यह उपमा है ।

गौका चर्म ।

एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः ॥२९॥

यस्य ते शुभ्रवत्पय पवमानाभृतं दिवः ॥३०॥

(ऋ १।६६)

शुभ्रन्तं शुभ्रं उत्तमं । (ऋ १।६७।३)

‘ यह सोम (गवां त्वचि) गौके चमड़े पर (अद्रिभिः क्रीडति) पत्थरों के साथ खेलता है । इस सोम का तेजस्वी चमकीला दूध जैसा रस स्वर्ग से ही लाया है, ऐसा प्रतीत होता है । ’

गौके अथवा बैल के किवा गधे के चमड़े पर फलक रखकर, उस फलक पर सोमवल्ली पत्थरो से कूट कर रस निकालते हैं । और वह कूटा हुआ सोम दस अंगुलियो से, दोनों हाथों से निचाँडकर उनकी छाननी से छाना जाता है । यह रस स्वयं (शुभ्रन्त) चमकीला श्वेतसा रहता है । यह वनस्पति भी रात में चमकती है । इस से अनुमान

होता है कि, इसमें कुछ विशेषता है । तथा—

आ योनिः सोमः सुकृतं निर्षीदति

गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी ॥ (ऋ १।७०।७)

‘ सोम अपने स्थान पर रहता है, अर्थात् छाना जानेके समय छाननी पर बैठता है । वहां (गव्ययी त्वक्) गवय का चर्म तथा (अव्ययी) बकरी का चर्म उसके ढक्कन होते हैं । ’ तथा—

अद्र्यस्त्वा वासति गोरधि त्वचि अप्सु त्वा

हस्तैर्दुदुर्मुनीपिणः ॥ (ऋ १।७१।४)

‘ सोम को हाथों से (अप्सु) पानी में रखकर हिला-कर धोते हैं, और (गो त्वचि अधि) गाय के चर्म पर रखकर (अद्र्य) पत्थर कूटते हैं । ’

इससे स्पष्ट हो जाता है कि, सोमवल्ली लाते ही पर्याप्त जल में वह रखकर हिला हिलाकर अच्छी तरह धोते हैं । इसके बाद चमड़े पर फलक रखकर उस पर वह सोम-वल्ली रखकर पत्थरो से कूटते हैं । रस निचाँडने योग्य होते ही उनकी छाननी पर रखकर दसो अंगुलियों से दबाते हैं, जिस से सब रस बर्तन में इकट्ठा होता है ।

सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ ।

सोम तैयार करते समय उसमें दूध, दधि, घृत, मधु, जल एवं भूने सत्तु या गेहूँ का भाटा डालते थे। इसीलिए उसे ‘ यवाशिर, गवाशिर, ज्याशिर ’ आदि नाम प्राप्त हुए। सम्भवतः इस भाँति मिलावट होने के फलस्वरूप उसमें अतिरिक्त मिठास पैदा होती होगी । कई स्थानों पर सोम को मधु, मधुवत्, पीयूष संबोधित किया गया है ।

सोम में दूध आदि मिलाया जाता था, इसका वर्णन पाठक निम्नलिखित मंत्रों में देख सकते हैं—

सोम में दूध मिला दो ।

(असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री ।)

तं गोभिर्बृषणं रसं मदाय देववीतये ।

सुतं भ्राय सं सृज ॥ (ऋ १।६।६)

‘ वह सोमरस (मदाय) हर्ष उत्पन्न करनेवाला बनने के लिये (देववीतये) देवों के अर्पण के लिये तथा (भ्राय) पोषक अन्न बनने के लिये (गोभि. सं सृज)

गौओं के दूध के साथ मिला दो, जिस से वह (वृषण) वीर्यवर्धक, बलवर्धक बनेगा ।'

‘यहां (गोभि स सृज) गौओंके साथ इसे छोड़ दो, ’ ऐसा कहा है । इसका अर्थ ‘गौका दूध सोममें मिलाओ ’ ऐसा है । यह लुप्तनद्धित प्रक्रिया पाठक अवश्य देखें ।

‘गौ’ का ही अर्थ दूध, दही, मखन, घृत, छाछ आदि गोविकार है । इन में से दूध, दही और घी सोमरस में मिलाते हैं ।

(असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री ।)

राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिः अजते ।

(ऋ १।१०।३)

आ यो गोभिः सृज्यते ओषधीषु । (ऋ. १।८४।२)

‘राजाजोग जैसे (प्रशस्तिभिः) स्तुतियों से उत्साहित होते हैं, वैसा ही (सोमास.) सोमरस (गोभिः) गौओं के दूधसे (अजते) शोभित होते हैं ।’

यहां ‘गौ’ का अर्थ ‘गोदुग्ध’ है । तथा—

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिथ्रियुः ।

देवं देवाय देवयु ॥ (ऋ १।११।२)

‘(अथर्वाणः) अथर्वविधि से यज्ञ करनेवाले याजक एक (देव) ईश्वर की प्राप्ति की इच्छा से (मधुना) मधुर सोमरस के साथ (पय) गौका दूध (अभि अशिथ्रियु.) मिला देते हैं ।’

यहां सोमरस के साथ, दूध और मधु-शहद मिलाने की विधि है ।

सोमरस में शहद मिलाओ ।

सोमरस के साथ शहद मिलाने के विषय में निम्न-लिखित मंत्र देखो—

हस्तच्युतेभिः अद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन ।

मधौ आ धावता मधु ॥ ५ ॥

नमसेत् उप सीदत दधेत् अभि श्रीर्णातन ॥ ६ ॥

(ऋ. १।११)

‘हाथोंसे पत्थरोंद्वारा कूट कर सोमरस निकाल कर उस को (पुनीतन) छानो । उस में (मधु) शहद (आ धावता) मिलाओ । तथा (दध्ना इत्) दही के साथ (अभि श्रीणीतन) मिला दो ।’

जिन्वन् कोशं मधुभृतम् । (ऋ १।१२।६)

‘शहद से युक्त रस का खजाना सोमरस है ।’

अस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत ।

यदी गोभिर्वसायते ॥ (ऋ. १।१४।३)

यद् गोभिर्वासयिष्यसे (ऋ. १।६६।१३)

‘(शुष्मिणः रसे) बल बढ़ानेवाले सोमरस में जब (गोभि. वसायते) गौओं का दूध मिलाया जाता है, तब वह पेय सब देवों को आनन्द देनेवाला बनता है ।’

गा कृण्वानो निर्णिजम् । (ऋ. १।१४।५)

‘गौका दूध उस सोमरस को (निर्णिज) उत्तम सुंदर रूप देता है ।’ तथा—

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगाति अण्वया ।

(ऋ १।१४।६)

‘(अण्वया) सूक्ष्म छिद्रवाली छाननी से (तिरश्चता) तिरछा होकर (गव्या जिगाति) गौके दूध के साथ मिश्रित होने के लिये जाता है ।’ अर्थात् छाना जाने के बाद उस में गोदुग्ध मिलाया जाता है ।

सोममें दहि मिला दो ।

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

विपा व्यानशुः धिया ॥ (ऋ १।२२।३)

‘ये पवित्र शुद्ध हुए सोमरस (दधि-आशिर) दही के साथ मिलाये जाते हैं । ज्ञान के साथ बुद्धिको बढ़ाते हैं ।’ यहां सोमरस का दही के साथ मिश्रण बताया है ।

अभि गावो अधन्विषुः । पुनानाः ० ॥ २ ॥

इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि ॥ ५ ॥

शुचिः पावक उच्यसे सोमः सुतस्य मध्वः ।

देवावीः अघशंसहा ॥ ७ ॥ (ऋ १।२४)

‘सोमरस छाना जानेके बाद (गाव) गौका दूध उस में मिलाते हैं । पहिले पत्थरों से कूट कर रस निकालते हैं, पश्चात् छानते हैं । यह रस (देवावी) देवत्व देनेवाला और (अघ-शंस-हा) पापप्रवृत्ति का विनाशक है ।’

अत्यो न गोभिः अज्यतं । (ऋ. १।३२।३)

‘जिस तरह घोड़ा घुड़दौड़में जाता है, उस तरह सोमरस (गोभिः अज्यते) गौओं के साथ अर्थात् गोदुग्ध के साथ जाता है, अर्थात् मिलता है ।’ यथा—

अभि गावो अनूषत योषा जारं इव प्रियम् ।

अगन् आर्जि यथा हितम् ॥ (ऋ. १।३२।५)

‘जिम तरह (योषा) न्नी (प्रिय जारं) प्रिय के पास जाने की इच्छा करती है, अथवा जिस तरह (हितं आजि) हितकारी युद्ध में वीर योद्धा (अगन्) जाते हैं, उस तरह सोमरस के पास (गाव. अभि अनूरत) गौत्रे अर्थात् गो-दुग्ध जाता है । ’

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः ॥

(ऋ. १।४३।१)

‘जो सोम (अत्य. इव) चपल घोड़े के समान वेगसे (गोभिः) गौत्रों के साथ (मृज्यते) मिलाया जाता है, शुद्ध करके मिश्रित किया जाता है । ’ तथा-

आ धावत सुहृन्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना ।
गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥ (ऋ. १।४६।४)

‘ (सुहृन्त्यः) कुशल लोग यहां भावें, मन्थनपात्र में सोमरस को रखे और उस के साथ (गोभिः श्रीणीत) गो-दुग्ध मिला दे । ’

स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अकतुभिः ।

(ऋ. १।५०।५)

‘वह हर्षवर्धक सोमरस (गोभिः अञ्जान) गौत्रे दूध के साथ मिलता है, मिश्रित होता है । ’

यहां ‘गौ’ पद का अर्थ ‘दूध, दहि, घी’ आदि हैं, यह बात भूलना नहीं चाहिये ।

उपो षु जातं अप्त्तुरम् । गोभिर्भंगं परिष्कृतम् ।

(ऋ. १।६१।१३)

‘ (अप्त्तुरं) जल के पास त्वरा से जानेवाला सोमरस (गोभिः भंगं) गौत्रों के दूध के साथ मिलाया जाता है और वह (परिष्कृतं) परिशुद्ध किया गया है । ’

यहां गोदुग्ध के साथ सोमका मिलान होनेका वर्णन है और उसके पूर्व जलके साथ मिलनेका भी है, अर्थात् सोम के साथ प्रथम जल मिलाकर छाना जाता है और पश्चात् दूध मिलाकर पिया जाता है ।

शुभ्रं अन्धः देववातं अप्सु धूतः नृभिः सुतः ।

स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ (ऋ. १।६२।५)

‘देवोंके लिए प्रिय यह सोमरस (शुभ्रं अन्धः) शुभ्रवर्ण का अन्न है । (अप्सु धूतः) जलों से प्रथम धोकर रस निकालते हैं और पश्चात् (गावः पयोभिः स्वदन्ति) गौत्रों

अपने दूध से उस का स्वाद बढ़ा देती है । ’

अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षति ।

(ऋ. १।६२।२३)

‘सोमरस (गव्यानि वीतये) गौत्रे दूध, दही आदि गौत्रों से उत्पन्न पदार्थों के साथ मिलकर पौरुष बढ़ाता हुआ, स्वयं पवित्र हुआ प्रवाहित होता है । ’

यहां ‘गव्यानि’ शब्द है । गौ से उत्पन्न दूध, दही, छाछ, मखन, घृत आदि पदार्थ गव्य कहलाते हैं । ये सोमरस के साथ मिलाए जाते हैं । मखन मिलाने का उल्लेख किसी जगह नहीं है । ‘गवाशिरः’ और ‘दध्याशिरः’ इन शब्दों से दूध और दही के साथ सोम मिलाया जाता था, यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

सोमा शुक्रा गवाशिरः । (ऋ. १।६४।४८)

‘सोमरस वीर्यवर्धक है, जब वह गौत्रे दूध के साथ पिया जाता है । ’

अद्रिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुत । पुनान इन्दुः ॥

(ऋ. १।६७।९)

‘ (अद्रिभिः सुतः) पत्थरों से कूट कर निकाला हुआ (सुत इन्दुः) सोमरस (पुनानः) पवित्र बनता हुआ, छाननी से छाना जाकर (अद्रिः) जलों से तथा (गोभिः) गौत्रोंके दूध से मिश्रित किया जाता है । ’

त्रिः अस्मै सप्त धेनवो दुदुहे सत्यां आशिरं ।

(ऋ. १।७०।१)

अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते ।

(ऋ. १।७६।२१)

‘इक्कीस गौत्रोंका दूध इस सोमके लिए निकाला जाता है ।’ इक्कीस गौत्रोंका दूध कितने सोम में मिलाया जाता था, इस का पता नहीं चलता । पर यज्ञ में १८ ऋत्विज, ३३ देव और कुछ सदस्य इतने पीनेवाले हैं । इक्कीस गौत्रोंका दूध २०० सेर होगा । इस में कितना सोम होगा, इस का प्रमाण निश्चित नहीं है । अन्य वचनों के विचार से इस विषय में निर्णय करना चाहिए ।

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिंचन्ति
हर्म्यस्य सक्षणिम् । आ यस्मिन् गावः सुहुताद
ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्ति अत्रियं वरीमभिः ॥

(ऋ. १।७१।४)

‘ (सु-क्षं पर्वता-वृध) सुलोकमें रहनेवाला, पहाड़ोंपर उगनेवाला (सहसः मध्वः) बलवर्धक मधु जिसमें मिला है, उस सोममें (सुहुतादः गाव) उत्तम भक्ष्य खानेवाली गौवे (ऊधनि) अपने दुग्धाशयमें स्थित दूधसे (श्रीणन्ति) मिश्रण करती है, अर्थात् सोममें दूध मिलाया जाता है । ’

यहां सोममे दूध मिलाने का वर्णन स्पष्ट है ।

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभि कलशे
सोमो अज्यते ॥ (ऋ० १।७२।१)

‘ (हरिं) हरे रंग का सोम कूटकर उसका रस निकाला जाता है और (कलशे सोम) बर्तन में वह सोमरस रखकर (धेनुभि सं अज्यते) गौओंके दूध से मिश्रण किया जाता है । ’

प्र सोमस्य पवमानस्य ऊर्मयः इन्द्रस्य यन्ति
जठरं सुपेशसः । दध्ना यदी उर्न्नीता यशसा
गवां दानाय शूरं उदमन्दिषु सुताः ॥

(ऋ० १।८१।१)

‘ सोमरस की छान्नी जानेवाली लहरियां सुन्दर इन्द्रके पेटमें (जठरं यन्ति) जाती हैं । जब (गवां दध्ना) गौवों के दही से सोमरस मिश्रित होता है, तब वह रस शूर को अधिक उत्तेजित करता है । ’ तथा-

अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति ।

(ऋ० १।८४।५)

‘ (गाव) गौवे उस (पयोवृध सोम) दूध से बढाये जानेवाले सोमरस को (अभि श्रीणन्ति) अच्छी तरह मिला देती है । ’

सोमरस के साथ दूध अच्छी तरह मिलाया जाता है, पश्चात् हवन करते और नतर पीते हैं ।

रसाय्यः पयसा पिन्वमानः ईरयन्नेषि मधु-
मन्तं अंशुम् । (ऋ १।९७।१४)

‘ रसवाला सोम दूध के साथ मिला हुआ मधुर बनता है । ’ तथा-

अभि श्रीणन् पयः पयसाभि गोनां ।

(ऋ १।९७।४३)

‘ सोम का (पयः) दूध अर्थात् रस (गोनां पयसा) गौओं के दूध के साथ मिलाया जाता है । ’

एते सोमा विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

(ऋ १।१०१।१२)

‘ यह सोमरस दही के साथ मिलाया है । ’

गोभिष्टे वर्णं अभि वासयामसि । (ऋ. १।१०४।४)

‘ (गोभि) गौके दूध से सोम के रंग का पोषण करते हैं । ’ यहां (Dressing) अन्न सिद्ध करना यह अर्थ ‘ अभिवासयामसि ’ का है । मसाले वगैरह डालकर सिद्ध करते हैं ।

मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिः उत्तरं ॥ २ ॥

अनृपे गोमान् गोभिरक्षाः, सोमो दुग्धाभिरक्षाः ९

अंशाः पयसा मदिरा न जागृविः

अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १२ ॥

अपो वसानः परि गोभिः उत्तरः ॥ १८ ॥

देवानां सोम पवमान निष्कृतं

गोभिः अज्जानो अर्षसि ॥ २२ ॥

गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥

(ऋ. १।१०७)

गौके दूध के साथ सोमरस का मिलान होता है । यह भाव इन सब मंत्रों में है । यहां ‘ गौ ’ शब्द ही ‘ दूध ’ के लिये आया है ।

पिबन्ति अस्य विश्वेदेवासो गोभिः श्रितस्य

नृभिः सुतस्य । अद्भिः मृजानः गोभि श्रीणानः ।

(ऋ. १।१०९।१५-१६)

‘ सब देव सोम ऐसा पीते हैं कि, जो अच्छी तरह छाना है और दूध के साथ मिलाया है । ’ सोम ‘ उग्र ’ (ऋ. १।१०९।२२) है, इसलिये दूध के साथ मिलाकर उसकी उग्रता कम की जाती है । उसकी उग्रता के कारण सोमरस दूध, दही की मिलावट के बिना पिया नहीं जा सकता ।

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः ।

(ऋ. १।११।१८)

‘ सोमरस के साथ दूध मिला जावे, तथा (वाजाः) अन्न भी मिलाया जावे । ’ सत्तु का आटा अथवा अन्य कोई खाद्य हो, वह सोम के साथ मिलाकर खाया जावे ।

अभि त्वं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति
मतिभिः स्वर्विदम् । धनंजयः पवते कृत्वो रसो
विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥ (ऋ. १।८।४।५)

(त्वं पयोवृधं) उस दूध से बढ़ाये जानेवाले और
(मतिभिः स्वर्विदं) बुद्धियों से स्वर्ग को प्राप्त करनेवाले
(सोमं) सोम को (गावः पयसा अभिश्रीणन्ति) गौवें
दूध के साथ मिला देती है । वह (रसः) सोमरस धन
को जीतनेवाला, (कृत्वः) कर्म की शक्ति बढ़ानेवाला,
ज्ञान बढ़ानेवाला, काव्य की स्फूर्ति देनेवाला (स्वर्चनाः)
अपने प्रकाशको (पवते) छाना जाने के समय बढ़ाता है ।

सोमरस दूध से बढ़ाया जाता है । इस से बुद्धि बढ़ती
है, उत्साह बढ़ता है । और कर्मशक्ति भी बढ़ती है । जो
कहते हैं कि सोम मद्य है, वे यहां देखें कि, सोम का
रस छाना जाने के बाद ही उसमें दूध मिलाया जाता है
और हवन होते ही पीया जाता है । इसलिये इसका मद्य
बन जाने की संभावना ही नहीं है ।

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।)

इमं अघ्न्या श्रीणन्ति धेनवः सोमम् । (ऋ. १।१।९)

‘ इस सोम के साथ अवध्य गौवें (अपने दूध को)
मिलाती हैं । ’ यहां ‘ धेनु ’ शब्द का ही अर्थ ‘ धेनु का
दूध ’ है । यह वेद की भाषा की पद्धति है । इसी तरह
गोवाचक शब्द गौसे उत्पन्न दूध, दही आदि के लिये
प्रयुक्त होते हैं । लौकिक संस्कृत में ऐसे प्रयोग नहीं होते,
यह बात ध्यान में धारण के योग्य है ।

(मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।)

महान्तं त्वा महीनां आपो अर्षन्ति सिधवः ।

यद् गोभिः वासयिष्यसे ॥ (ऋ. १।२।४)

‘ (यत्) जब (गोभिः) गौके दूध के साथ (वास-
यिष्यसे) मिलाया जाता है, तब हे सोम ! (त्वा) तेरे
साथ (सिधवः आपः) नदियों के जल (अर्षन्ति) मिलते
हैं । ’ अर्थात् सोम के साथ जल भी मिलाया जाता है
और दूध भी मिलते हैं । यह दूध गौका ही दूध है ।

सोम औषधि से रस निकालने के समय थोड़ा पानी
उसमें मिलाते हैं, जिस से अच्छा रस निकल आता है ।
जब रस निकल आता है तब उस के साथ गौओं का दूध
मिलाया जाता है । तब वह पीनेयोग्य होता है ।

इतने मंत्रों के विचार से निश्चित होता है कि, सोम
रस में किन वस्तुओं का मिलान होता है ?

वैद्यशास्त्र में सोम ।

वैद्यशास्त्र की अत्यन्त प्राचीन मानी हुई सुश्रुत संहिता
में सोमरसायन के विषय में एक अध्याय पाया जाता है ।
इस में सोमवल्ली का वर्णन किया है । ईसा के पूर्व पांच
से ले, दसवीं शतब्दी तक के काल में सुश्रुत का अस्तित्व
माना गया है । इतने प्राचीन काल के ग्रंथ में सोम का जो
वर्णन दिया गया है, उस के सहारे उस काल में भी सोम
की जानकारी कितनी विद्यमान थी, इस का स्पष्टीकरण
बहुत कुछ हो सकता है ।

ब्रह्मादयोऽसृजन् पूर्वममृतं सोमसंज्ञितम् ।

जरासृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते ॥ ३ ॥

एक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृति-
वीर्यविशेषैश्चतुर्विंशतिधा भिद्यते ॥ ४ ॥

“ बुढ़ापा और मौत को नष्ट करने के लिए पहले ब्रह्मा
आदिकोंने अमृत बना डाला, जिसे सोम कहते हैं । इसी
के बारे में अब कहा जायगा । ”

“ यद्यपि सोम एक ही है, तो भी जगह, नाम, शकल
सुरत एवं विशिष्ट शक्तियों में विभिन्नता होने से २४
प्रकारों में विभक्त हुआ, ऐसा प्रतीत होता है । ”

१ २ ३ ४
अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः ।

५ ६ ७ ८
दूर्वासोमः कनीयांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः ॥ ५ ॥

९ १० ११ १२
प्रतानवान् तालवृन्तः करवीरोंऽश्वानपि ।

१३ १४ १५
स्वयंप्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहृतः ॥ ६ ॥

१६ १७ १८ १९ २०
गायत्र्यस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शांकरस्तथा ।

२१ २२
अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः ॥ ७ ॥

२३ २४
गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोदुपतिरुच्यते ।

एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैर्नामभिः शुभैः ॥ ८ ॥

सर्वेषामेव चैतपामेको विधिरुपासने ।

सर्वे तुल्यगुणाश्चैव विधानं तेषु वक्ष्यते ॥९॥

“अशुमान से ले, उडुपति तक के सोम वेद में कहे हुए अच्छे नामों से विख्यात है । इन सबों के गुण समान हैं और तैयार करने का ढंग भी एकसा है ।”

अतोऽन्यतमं सोममुपयुयुधुः सर्वोपकरण
परिचारकोपेतः प्रशस्तदेशे त्रिवृतमागारं कार-
यित्वा हृतदोषः प्रतिसंस्पृभक्तः प्रशस्तेषु
तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु अंशुमन्तमादाया-
ध्वरकल्पेनाहतमभिपुतमभिहुतं, चान्तरागारे
कृतमंगलः सोमकंदं सुवर्णसूच्या विदार्य,
पयो गृह्णीयात् सौवर्णे पात्रेऽञ्जलि मात्रं,
ततः सकृदेवोपयुञ्जीत..... ॥१०॥

पश्चात् इस के परिणाम का वर्णन किया है और सोम का लक्षण कहा है ।

सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पंच च ।
तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च ॥
एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा ।
शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत् पंचदशच्छदः ॥११॥
शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः ।
कृष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला ॥१२॥

१ २ ३ ४
अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः ।
५ ६ ७
कदल्याकारकन्दस्तु मुंजवांल्लग्नच्छदः ॥१३॥
८ ९
चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरति सर्वदा ।

१० ११
गरुडाहतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ ॥१४॥
सर्पनिर्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलंबिनौ ।
तथान्यैर्मण्डलैश्चित्रैश्चित्रिता इव भान्ति ते ।
सर्वे एव तु विज्ञेया सोमाः पंचदशच्छदाः ।
क्षारिकन्दलतावन्तः पत्रैर्नानाविधैः स्मृताः ॥१५॥

(सुश्रुतसं० अ० २९)

“सभी सोमों के पंद्रह पत्तियों होती हैं, जो शुक्लपक्ष में बढ़कर कृष्णपक्ष में गिर जाती है । गिर चुकने पर प्रति दिन

एक एक पत्ता उत्पन्न होता है और पूर्णिमा के दिन सोम-लता पंद्रह पत्तियों से युक्त होती है । पश्चात् प्रतिदिन एक एक पत्ती झड़ने लगती है और अमावास्या के दिन निरी लता ही शेष रहती है । ये सभी सोम भौतिक भौतिक रहने पर भी १५ पत्तियों से युक्त रहते हैं और सभी में दूधरा रस, कन्द, लता और विविध पत्तियों पाई जाती हैं ।”

सोम की उत्पत्ति के स्थानों का भी वर्णन वहाँ पर किया है ।

हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रमलये तथा ।

श्रीपर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा ॥२७॥

पारियात्रे च विन्ध्ये देवसुन्दे-हृदे तथा ।

उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धा ये महीधराः ॥२८॥

पंच तेषामधो मध्ये सिन्धुनामा महानदः ।

हठवन् प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः ॥२९॥

तस्योद्देशेण चाप्यस्ति मुंजवानंशुमानपि ।

काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसं ॥३०॥

गायत्र्यस्त्रैष्टुभ पांक्तो जागतः शांकरस्तथा ।

अत्र सन्त्यपरे चापि सोमाः सोमसमप्रभाः ॥३१॥

(सुश्रुतसंहिता अ० २९)

“नीचे लिखे हुए स्थलों में सोम की उत्पत्ति होती है— हिमवान्, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत देवगिरी, देवसह, पारियात्र, विन्ध्य, देवसुन्द तालाब, वितस्ता नदी के उत्तर में जो बड़ेबड़े पहाड़ हैं । सिन्धुनद में और काश्मीर में जो क्षुद्रक मानस नामक सुन्दर झील है, वहाँ पर अन्य कई सोम जो चांद के समान चमकीले हैं, पाये जाते हैं ।

यहाँ पर सोम के चौबीस प्रकार होते हैं, ऐसा कह कर वे सभी नाम वेदविहित हैं, ऐसा प्रतिपादन किया है, पर स्वयं ऋग्वेद में ही वास्तव में दो और पर्याय के ढंग से पांच नाम पाये जाते हैं ।

ध्यान में रखनेयोग्य विशेष उल्लेख है कि, सोम कन्द के रूप में पाया जाता है, और केले के कन्दवत् कन्दस्वरूप सोम यह वर्णन नया और सोम के स्वरूप को समझने के लिए अधिक उपयुक्त है ।

उसी प्रकार सभी सोमवल्लियों को पद्रह पत्तियाँ रहती हैं और चंद्र की क्षयवृद्धिके समान एक एक पत्ती क्रम से घटती और बढ़ती जाती है । प्रत्येक प्रकार का सोम पद्रह पत्तियों से युक्त रहता है और वह गोंद, कन्द तथा वल्लिके रूप में प्रकट होता है ।

सोम के जन्मस्थानों का वर्णन करते समय सभी प्रांतों के स्थलों का उल्लेख किया है । पानीपर तेरनेवाला, वृक्षसे लटकनेवाले और भूमिपर उगनेवाला सोम बतलाया है ।

सुश्रुतसंहिता में यह कल्पना कि, चन्द्रमा की कलाओं के समान ही घटबढ़नेवाली पत्तियों से युक्त सोमवल्ली रहती है, हमें देखने मिलती है । सोमरस के लिए सुवर्ण का बर्तन और सोमकंद को फोड़ने के लिए सोने की सूई ये बातें भी ऋग्वेद में सोम तथा सुवर्ण का जो संबंध प्रस्थापित हुआ, पाया जाता है, उस पर प्रकाश डालने-वाली हैं । इससे शका होती है कि, उन दिनों में भी क्या सोम इतनी दुर्लभ वस्तु थी । हाँ, ऋग्वेद में कई जगह सोमलता का स्पष्ट निर्देश किया गया है । सोमलता के सभी विशेष गुण चन्द्रमा में पाये जाते हैं । चन्द्रमा की बढ़ोतरी मन हर्षित हो उठता है, उमंग की मात्रा बढ़ जाती है, समुद्र के जल की तरंग कीसी उठान होती है, विषयवासना उद्दीप्त हो जाती है, निद्रा अच्छी तरह आती है, वनस्पतियाँ बढ़ने लगती हैं, मानव के दिल को हराभरा कर वह उसे युद्धादि कार्यों को अधिक सुचारु रूप से निभाने में प्रवृत्त करता है । चन्द्रमा एवं सोमलता में उपर्युक्त सभी बातें समान रूप से पाई जाती हैं । इन सब बातों को ध्यान में रखकर चन्द्रमा तथा सोमवनस्पति के मध्य अभिन्न एकता मानने की ओर प्रवृत्त होना अत्यंत स्वाभाविक जान पड़ता है ।

स्वर्ग से जब इथेन सोम को ले आ रहा था, तब धनु-धारी कृशानु नामक एक गन्धर्व ने उसे एक बाण मारा ।

(ऋ० ४-२७)

पुराणों में अमृत लाने के संबंध में कथा पाई जाती है, ऋग्वेद में अनेक जगह उल्लेख मिलता है कि, इथेन अर्थात् बाजपक्षी स्वर्गसे सोम को भूमिपर लाया ।

(देखो ऋग्वेद ३-४३-७, ४-२६-६; ८-९५-३)

ॐ

कुछ स्थानोंपर ऋग्वेद में सोम को इथेनाभृत भी कहा है (ऋ० १-८०-२, ८-९५-३) । पर काव्यमय भाषामे अभि एवं इन्द्र के लिए भी इथेन शब्द प्रयुक्त हुआ है ।

चन्द्रमा तथा सोम ।

अर्वाचीन साहित्य में सोम से चन्द्रमा का बोध हुआ करता है, परन्तु ऋग्वेद में सोम का अर्थ चन्द्रमा करनेके लिये बहुत उपयुक्त स्थान पाये जाते हैं । चन्द्रमा प्रतिदिन घटता जाता है और देवतागण उसकी कलाओं का भक्षण करते हैं । पश्चात् वह फिर बढ़ता है, जब कि उसे सूर्य की सहायता प्राप्त होती है । छान्दोग्य उपनिषद् (५।१०।१), ऐतरेय ब्राह्मण (७।११) तथा शतपथ ब्राह्मण (१।६।४।५) में सोम का अर्थ किया है चन्द्र । कौपीतकी ब्राह्मण के कथनानुसार (७।४०।४।४) यज्ञ में जिस लता या रस का ग्रहण करना हो, वह चन्द्रदेवता का प्रतीक है, ऐसा समझना चाहिए । ब्राह्मणग्रंथों में सभी जगह यों कहा है कि, पितर एवं देवतागण भक्षण करने में प्रवृत्त होते हैं, इसलिए चन्द्रमा का क्षय या घटाव होता है । ऋग्वेद के सूर्याविवाहसूक्त (१०।८५) से स्पष्ट है, सोम तथा चन्द्रमा की अभिन्नता से लोग परिचित थे और इसी सूक्त में उल्लेख पाया जाता है, नक्षत्रों के मध्य में सोम बैठा हुआ है । आगे चलकर कहा है कि, जो सोम ब्राह्मणों को ज्ञात है, उसे कोई नहीं ख्याता है और जिसे वे निचो-उते हैं, वह अन्य ही है । चन्द्रमा का सोमत्व केवल ब्राह्मणों को ही ज्ञात है, इससे ज्ञात होता है, यह धारणा उन दिनों रूढ़ नहीं थी ।

इस के सिवा ऐसा भी उल्लेख पाया जाता है कि, सोम के कारण समुद्रमें जल चढ़ आता है । उसी के कारण रात्रियों का निर्माण होता है । इस से ज्ञात होता है, सोमलता एवं चन्द्रमा की अभिन्नता चित्रित की गयी हो ।

ब्राह्मणसदृश ग्रन्थों में और आगे दी हुई संहितानर्गत आख्यायिका में सोम का अर्थ स्पष्टतया चन्द्रमा ऐसा किया है ।

ऋग्वेद के अष्टम मंडल के ९१ सूक्त में वृद्ध कुमारी अपाला के जो मन्त्र हैं, उन से प्रतीत होता है, इन्द्र सोम को पाने के लिए कितना लालायित रहा करता था ।

सोम किस समय विनष्ट हुआ होगा ?

अब यह एक जटिल समस्या उठ खड़ी होती है कि, यह इतना सुपरिचित सोम कब और कैसे विलुप्त हुआ होगा ? जिम सोम का सदैव उपयोग किया जाता था, जो हिमालयके मूजवत् पर्वतशिखर पर उत्पन्न होता था, तथा हिमाचल की तराइयों में विद्यमान शर्यणावत झील में पैदा होता था, वही सुतरां अलभ्य हो, यहाँ तक कि, उस के सम्बन्ध में सामान्य कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, इतना ही नहीं, अपितु ब्राह्मणग्रंथों में उस के प्रतिनिधि की योजना करनी पड़ी। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक एवं विचारणीय घटना है।

शतपथ ब्राह्मण में (४-५-१०, १ से ६) स्पष्ट शब्दों में सोम के प्रतिनिधि का निर्देश किया हुआ है। परन्तु ऐतरेय ब्राह्मण (३५-३७) तथा तैत्तिरीय संहिता में उस के अलभ्यपन की सूचना मिलती है। सोम मोल लेने के अवसरपर उसे पाने के लिए छीनाझपटी करनी पड़ती थी, आदि बातों से साफ साफ पता चलता है कि, ब्राह्मणकाल में ही सोम दुर्लभ एवं अप्राप्य बन बैठा था।

यज्ञ के अतिरिक्त सोम का पान न किया जाय, यदि यज्ञ में सोम की त्रुटि प्रतीयमान हो, तो क्या किया जाय, उस के चुरा लेने पर क्या करना चाहिए, इत्यादि तैत्तिरीय ब्राह्मण में जो चर्चा की गयी है, उस से पता चलता है कि, सोम उस काल में प्रचुर मात्रा में नहीं उपलब्ध होता था।

यद्यपि ऋग्वेद में उल्लेख पाया जाता है कि, प्रतिदिन तीन बार सोम का त्रिपुलतया उपयोग किया जाता था।

सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ।

अर्वाचीन युग में सोम के बारे में भौतिभौति की धारणाएँ प्रचलित हैं। तैत्तिरीय संहिता के आग्निभाषानुवाद में ए. बी. कीथ महोदय सोम को सुरासदृश पदार्थ समझते हैं। वाट महोदय के कथनानुसार अफगानिस्थान के दाख का आसव ही सोमरस है। रायस की धारणा है कि, गन्ने का रसही सोमरस है। हिल ब्रण्ड्ट कहता है, सोम एक तरह का शहद है। मधुरता के लिए जैसे अमृत, सुन्दरता का ज्यों कामदेव और सुख का प्रतीक जिस प्रकार

स्वर्ग माना जाता है, उसी प्रकार सर्वोपरि पीनेयोग्य वस्तु का प्रतीक सोम है, ऐसी कुछ लोगों की राय है।

शतपथ ब्राह्मण में सोमके प्रतिनिधिके रूपमें दूर्वादलका उल्लेख किया है, (४. ५. १० १ से ६) पर सुश्रुतसंहिता में उसे सोमके ही एक प्रकार के रूप में निर्दिष्ट किया है।

सोम तैयार करते समय उसमें सुवर्ण की धूलि डालते हैं। नवम मडल में भी सोम एवं कांचन का संबंध प्रदर्शित किया है। सायणाचार्यजीने उसका विभिन्न अर्थ प्रस्तुत कर दिखाया है— हिरण्मये कोशे, तस्य हिरण्मयत्वं हिरण्यपाणिरभिषुणाति इति हिरण्यसंबंधात् (९-१-२, ९-७५-३)। सुश्रुत-संहितामें सोमविषयक जो अवतरण दिया जा चुका है, उस में सोम कन्द को तोड़ने के लिए सोने की सूई और सोमरस को रखने के लिए सुवर्ण का बना हुआ बर्तन सूचित किया है।

पञ्चजनों को प्रिय सोम।

गिरा यदी सवन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः।

परिष्कृण्वन्ति धर्णासिम् ॥ (ऋ ९।१।४२)

(सवन्धवः) आपस में भाई भाई के समान बर्तनेवाले (पंच व्राताः) चार वर्ण और पांचवाँ निषाद ये पांच प्रकार के लोग (धर्णासि) सब के भारक सोम को (गिरा परिष्कृण्वन्ति) स्तुति से शोभित करते हैं।

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । गायत्री)

रक्षोहा विश्वचर्षणिः अभि योनिं अयोहतं।

द्रुणा सधस्थं आसदत् ॥ (ऋ ९।१।२)

यह सोम (रक्षो-हा) राक्षसों का नाश करनेवाला, (विश्व-चर्षणिः) सब मानवों का हितकारी है। वह सोम (अयोहत) लोहे की कूटनी से कूटने के अथवा (द्रुणा) लकड़ी के दण्डे से कूटने के (सधस्थं योनिं) अपने निज स्थान के पास अथवा अपने खरल में (अभि-आ-सदत्) प्राप्त हुआ है।

यहां सोम को ' रक्षो-हा ' कहा है। सोम औषधि है। औषधि से जिन राक्षसों का नाश होता है, वे राक्षस रोगों के उत्पादक कृमि हैं। इस विषय में ' वैदिक चिकित्साशास्त्र ' नामक पुस्तक में तथा ' औषधि '

देवता के मंत्रों के विवरण में पाठक विस्तार से देख सकते हैं ।

यह सोम ' विश्व-वर्षणि ' है, सब मानवों का हितकारी है । क्योंकि रोगनिवारण और बलवर्धन करके दीर्घायु और उत्साह बढ़ाने के गुण इस औषधि में है और सब मानवों का हित करनेवाले है ।

यह खरल में रखकर प्रथम लोहे की कुटणी से अथवा लकड़ी के दण्डे से कूटा जाता है । यहां ' अयः ' का अर्थ ' सुवर्ण ' मान कर कई लोग सुवर्ण से कूटा हुआ सोम अर्थात् सुवर्ण के आभूषण हाथ में धारण करके कूटा हुआ सोम ऐसा इसका अर्थ करते हैं । इसी तरह ' द्रुणा ' का अर्थ भी दूसरा ही करते हैं, पर वह दूर का सम्बन्ध होता है ।

यह सोम रोगोत्पादक कृमियों का नाशक है, यह चिकित्सा की बात यहां स्पष्ट कही है ।

वीर सोम ।

(अवतारः काश्यपः । गायत्री)

यो जिनाति, न जीयते हन्ति शत्रुं अभीत्य ।

स पवस्व सहस्रजित् ॥ (ऋ. १।५।४)

जो सोम शत्रु को जीतता है, पर कभी शत्रुओं से पराभूत नहीं होता, यह सोम शत्रु का नाश करता है, वह सहस्रों शत्रुओं को जीतनेवाला है, वह स्वयं पवित्र होता है ।

यहां सोम की ' वीर ' विभूति का वर्णन है, तथा-
पवस्व गोजित् अश्वजित् विश्वजित् सोम
रण्यजित् । प्रजावत् रत्न आभर ॥ (ऋ. १।५।१)

हे सोम वीर ! तू गौंको, घोड़ों को, सब शत्रु को, युद्ध को जीतनेवाला है । तू विजय करके प्रजा के साथ रत्न हमें का दे ।

(गोतमो राहूगणः । त्रिष्टुप्)

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तं आशुं सोमो वीरं
कर्मण्यं ददाति । सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ-
श्रवणं यो ददाशत् अस्मै ॥ २० ॥

अषाळहं युत्सु पृतनासु परिं स्वर्षामप्सां वृज-
नस्य गोपाम् । भरेपुजां सुक्षितिं सुश्रवसं
जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥ २१ ॥

(ऋ. १।५।१)

सोन गौ, चपल घोड़े, वीर और (कर्मण्यं) पुरुषार्थी (सादन्य) घर का यश बढ़ानेवाले, (विदथ्यं) युद्ध में प्रवीण, (सभेय) सभा में संमान प्राप्त करनेयोग्य, (पितृ-श्रवण) पिता की कीर्ति बढ़ानेवाले पुत्र को (ददाति) देता है ।

(अ-साळह) युद्ध में अजिब, (पृतनासु परिं) सम्राजों में से पार पहुंचानेवाला, (स्वर्षां अप्सां) जलों को प्राप्त करनेवाला, (वृजनस्य गोपां) पाप से बचाने-वाला (भरेपुजां) सपत्तियों में उत्पन्न हुआ (सु-क्षितिं) उत्तम घरों से युक्त, (सुश्रवस) यशस्वी (जयन्तं) विजयी तुझ को देखकर, हे सोम ! हम आनन्दित होंगे ।

सर्वविजयी ।

गोजिघ्रः सोमो रथजित् हिरण्यजित् स्वर्जिद-
ब्जित् पवते सहस्रजित् । यं देवासश्चक्रिरे
पीतये मदं स्वादिष्टं द्रप्सं अरुणं मयोभुवम् ॥

(ऋ. १।७।४)

यह सोम गौ, रथ, सुवर्ण, स्वर्ग, जल और सहस्रों पदार्थों को जीतनेवाला है, यह सोम (पवते) छाना जा रहा है । इस स्वादु (मद) आनन्दवर्धक (अरुण मयो-भुवम्) लाल वर्णवाले सुखकारक (द्रप्सं) प्रवाही पेय को देवोंने (पीतये) पीने के लिये अपना पेय बनाया । इस तरह का यह उत्तम पेय है ।

प्रभावी वीर ।

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व
सनिता धनानि । तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समस्तु
अषाळहः साहान् पृतनासु शत्रून् ॥

(ऋ. १।९।३)

(शूरग्राम) शूरो के संघों का चालक, (सर्ववीरः) सर्व धीरों को पास रखनेवाला, (सहावान्) शक्तिमान्, (जेता) विजयी, (धनानि सनिता) धनों को जीत कर

बांटनेवाला, (तिग्म-आयुधः) तीक्ष्ण शस्त्रों को पास रखनेवाला, (क्षिप्र-धन्या) धनुष्य को शीघ्र सज्ज करने-वाला (समस्तु असाह्यः) युद्धों में शत्रु को असह्य होने-वाला (साह्यान्) शत्रु के हमले होने पर अपने स्थान को न छोड़नेवाला यह वीर है ।

सोमरस का सेवन करनेवाला वीर कैसा प्रभावी होता है, यह हम मंत्र में कहा है ।

शूर वीर ।

प्र सेनानीः शूरो अग्रे स्थानां गव्यन्नेति हर्षते
अस्य सेना । भद्रान्कृण्वन्निद्रहवान् सखिभ्य
आ सोमो वस्त्रा रभसानि धत्ते ॥ (ऋ० १।९६।१)

(सेनानी. शूरः) सेना चलानेवाला शूर वीर (गव्यन्) गौवों की प्राप्ति की इच्छा करके (स्थानां अग्रे प्र एति) रथों के अग्रभाग में जाता है, तब (अस्य सेना हर्षते) इसकी सेना आनंदित होती है । (सखिभ्यः) अपने मित्रों के लिए (भद्रान् कृण्वन्) कल्याणकारक कर्म करता हुआ यह वीर (रभसानि वस्त्रानि आ धत्ते) पक्के रंगके वस्त्र धारण करता है ।

जो वीर सेनाके भागे चलता है, उसपर सैनिक सतुष्ट रहते हैं । यह अपने लोगों को आनन्द देता है और पक्के वस्त्र धारण करता है ।

(अमहीयुगंगिरस । गायत्री)

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।

अवाहन् नवतीर्नव ॥ (ऋ० १।६१।१)

हे सोम ! तू इस तरह प्रवाहयुक्त (परिस्त्रव) हो । तेरे आनन्द से आनंदित होकर इन्द्रने असुरोंके (नवती नव) न्यायवे नगर तोड़ डाले (अर्थात् असुरों के कीलों का नाश किया ।

(असितः काश्यपः । गायत्री)

पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदसि ।

यदीं ऋण्वन्ति वेधसः (ऋ० १।७।५)

‘ (पवमानः) शुद्ध होनेवाला सोम (विश. राजा इव) प्रजाओं में जैसा राजा बैठता है, वैसा अपने (स्पृध) स्पर्धा करनेवालों के ऊपर (अभि सीदसि) बैठता है, जब (वेधस) ज्ञानी लोग (ऋण्वन्ति) उसे ऊपर लाते हैं । ’

जिस तरह राजा उच्च स्थानपर विराजता है और अन्य लोग नीचे बैठते हैं, और शत्रुओं को भगाया जाता है, उस तरह सोम छाननी के ऊपर विराजता है और उस का रस नीचे जाता है ।

(हिरण्यस्तूप आंगिरस । गायत्री)

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रव ॥०॥ १

सना ज्योतिः सना हवः विश्वा च सोम
सौभगा ॥ ० ॥ २

सना दक्षं उत क्रतुं अप सोम मृधो जहि ॥०

अथा नो वस्यसकृधि ॥ ३ ॥ (ऋ० १।१।१-३)

‘ हे सोम ! हमारे लिए (महिश्रवः) बड़ा यश (जेषि) जय करके प्राप्त कराओ । हमें प्रकाश, आत्मबल, और (विश्वा सौभगा) सब प्रकार के सौभाग्य दो । तथा हमें (दक्षं) चातुर्य, (क्रतु) कर्तृत्व दो और (मृध. अप जहि) शत्रुओं का नाश कर हमें (वस्यस. कृधि) श्रेय से युक्त कर ।

(अजीगतिः शुनःशेपः । गायत्री)

एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सस्वभिः ।

पवमानः सिषासति ॥ (ऋ० १।३।४)

‘ (शूरः सस्वभि यन् इव) वीर अपने सैनिकों के साथ शत्रुपर हमला करने के लिए जाने के समान यह (पवमानः) शुद्ध होनेवाला सोम (विश्वानि वार्या) सब स्वीकार करनेयोग्य धन (सिषासति) जीत कर प्राप्त करता है ।

(मेधातिथिः काण्व । गायत्री ।)

गोषा इन्दो नृपा असि अश्वसा वाजसा उत ।

आत्मा यज्ञस्य पूर्यः ॥ (ऋ० १।२।१०)

‘ हे (इन्दो) सोम ! तू (पूर्यः यज्ञस्य आत्मा) तू यज्ञ का पुरातन आत्मा है, वह तू (गो-षा) गौ देनेवाला, (नृ-पा) वीर पुरुष देनेवाला, (अश्व-सा) घोड़े देने-वाला और (वाज-सा) अश्व अथवा बल देनेवाला है । ’

शत्रुनाश ।

सोम राक्षसों, असुरों, द्वेषियों और शत्रुओं को दूर करता है, इस विषय में कहा है—

जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो ! (ऋ. ९.८-७)

‘ हे सोम ! तू सब द्वेषियों का नाश कर । ’

एवमान ! विश्वा अप द्विषो जहि ।

(ऋ. ९-१३-७)

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुरूप ।

एवमान विदा रयिम् ॥ ६ ॥

नि शत्रोः सोम वृण्यं नि शुभं नि वयः तिर ।

दूरे वा सतो अन्ति वा ॥७॥ (ऋ. ९-१९)

(अप-तस्थुषः) जो दूर है, वे हमारे (उपशिक्ष) पास आ जाय, हमारे मित्र बने, शत्रुओं में (भियस आ धेहि) भय बड़े, क्योंकि हे सोम ! तू (रयि विद) धन देनेवाला, विजय देनेवाला तू ही है । (शत्रोः वृण्यं) शत्रु का बल घटाओ, (शुभं नि) शत्रु सामर्थ्य नष्ट कर, (वयः नितिर) शत्रु का आयु तथा उत्साह दूर कर, फिर वे शत्रु हम से दूर हों वा पास हो ।

सोम पवित्रे अर्षति

निघ्नन् रक्षांसि देवयुः । (ऋ. ९-१७-३; ९-५६-१)

सोम (पवित्रे) छाननी पर पहुंचता है और (रक्षांसि) राक्षसों का (निघ्नन्) नाश करता है और (देव-युः) देवता के साथ सम्बन्ध जोड़ता है । तथा-

यत् ते शुष्मासः अस्थू रक्षो भिन्दन्तः अद्रिवः ।

नुदस्व या परिस्पृधः । (ऋ. ९-५३-१)

जो सोम के (शुष्मास) बल है, वे (रक्षः भिन्दन्तः) राक्षसों का नाश करते हैं और (परि-स्पृध) स्पर्धा करनेवाले शत्रुओं को (नुदस्व) दूर भगाते हैं ।

अपघ्नन् पर्वते मृधो अप सोमो अरावणः ।

(ऋ. ९-६१-२५)

यह सोम (मृधः) शत्रुओं का और (अ-रावणः) खानेवालों का, दूसरों को न देते हुए स्वयं भोगियों का नाश करता है ।

वेति द्रुहो, रक्षसः पाति, जागृविः ।

(ऋ. ९-७१-१)

‘ द्रोही शत्रुओं को भगाता है और राक्षसों से रक्षा करता है, ऐसा प्रभाववान् जागृत सोम यह है ।

सोम सुषुतः परिस्त्रव अप भमीवा भवतु रक्षसा सह ॥

(ऋ. ९-८५-१)

‘ सोमरस निकाला है । यह (भमीवा) आमजन्य रोगबीज (रक्षसा सह अप) रोगकृमियों के साथ दूर करता है ।

यहां ‘ रक्षस ’ का अर्थ ‘ रोगबीजरूप सूक्ष्म कृमि ’ यह निश्चित हुआ, क्योंकि ये राक्षस (भमीवा) आमसे उत्पन्न हुए रोगबीजों के साथ दूर होते हैं । इसलिये आमजन्य रोगबीज और रोगकृमिरूप राक्षस साथ रहनेवाले रोगोत्पादक सूक्ष्म बीज है ।

रुजा दळ्हा चित् रक्षस सदांसि ।

(ऋ. ९-९१-४)

“ राक्षसों के सुदृढ स्थानों का नाश कर ” यह वर्णन चिकित्सा की दृष्टि से स्थायी रोगबीजों के नाश का भाव बताता है ।

सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कंचिदत्रिणम् ।

अपादेवं द्रयुं अंहो युयोधि नः (ऋ. ९।१०४-६)

सनेमि त्वमस्मादां अदेवं कंचिदत्रिणम् ।

साह्वां इन्दो परिबाधो अप द्रयुम् ॥

(ऋ. ९-१०५-६)

(अत्रिण रक्षसं) खानेवाले राक्षस अर्थात् रोगबीज को (अ-देवं) इंद्रियों के घातक (द्रयु अंहः) शत्रु की सहायक होनेवाले पापी को (नः युयोधि) हम से दूर कर । सोम यह सब करता है ।

यहां ‘ अत्रिन् ’ का अर्थ रुधिर अथवा मांस खानेवाले रोगबीजरूपी कृमि है, ‘ रक्षम् ’ भी वैसे ही रोग बढ़ानेवाले है, (अ-देवं) देव इंद्रियां हैं, उन की क्षीणता करनेवाले रोगबीज हैं, (अंहः) पाप से होनेवाले रोगबीज हैं, (द्रयुः) दोनों घातक साधनों का समान प्रयोग करनेवाले रोगबीज हैं । इन का नाश सोमरस करता है ।

(दृढच्युत आगस्थः गायत्री)

विश्वा रूपाणि आविशन् पुनानः याति हर्यतः ।

यत्र अमृतास आसते ॥ (ऋ. ९-२५-४)

यह सोम (पुनानः) छाना जाने के बाद अनेक रूपों में प्रविष्ट होता है, जहां अमर देव रहते हैं ।

अमर देवताओं के अश सब अवयवों और इन्द्रिय-स्थानों में रहते हैं । सोमरस पीने के बाद वह उन इंद्रियों में पहुंचता है और उनको उत्तेजित करता है । यही भाव निम्नलिखित मंत्र में है—

एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः ।

विश्वा धामानि विश्वचित् ॥ (९-२८-५)

यह सोमरस विशेष स्फूर्ति देनेवाला है, उसने सूर्य को प्रकाशित किया और सब धामों को उत्तेजित किया है । देवों के जो जो स्थान-इन्द्रियस्थान हमारे शरीर में है, वहां जाकर यह उत्तेजना देता है । शरीर में सूर्य नेत्रस्थान में है । उसे इस की उत्तेजना मिलती है ।

सोमरस वज्र जैसा है ।

आत् सोम इन्द्रियो रसः वज्रः सहस्रसा भुवत् ॥

(ऋ. ९-४७-३)

यह सोमरस (इन्द्रियः) इंद्र के लिये अथवा इन्द्रियों की शक्ति बढ़ाने के लिये है, यह सहस्र शक्तिवाले वज्र जैसा सामर्थ्य बढ़ानेवाला है ।

कलावान् सोम ।

नानानं वा उ नो धियो, वि व्रतानि जनानाम् ।
तक्षा रिष्टं, रुतं भिषक्, ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति॥१॥
जरतीभिः ओषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।
कर्मारो अश्मभिः द्युभिः, हिरण्यवन्तं इच्छति॥२॥
कारुः अहं, ततो भिषक्, उपलप्रक्षिणी नना ।
नानाधियो वसूयवो, अनु गा इव तस्थिम० ॥३॥
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं, हसनां उपमन्त्रिणः ।
शेषो रोमण्वन्तौ भेदौ, वार इन्मण्डूक इच्छति ।
इन्द्राय इन्दो परिस्त्रव ॥ ४ ॥ (ऋ. ९-११२)

(नः धियः नानानं) हमारी बुद्धियां विविध हैं, तथा (जनानां व्रतानि वि) लोगों के कर्म भी विभिन्न हैं । (तक्षा रिष्टं) तरवाण साफ लकड़ी चाहता है, (भिषक् रुतं) वैद्य रोगी को द्रवता है, (ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति) याजक यज्ञकर्ता की इच्छा करता है ॥१॥ (जरतीभिः ओषधीभिः) परिपक्व औषधियों के साथ वैद्य, (शकुनानां पर्णेभिः) पक्षियों के विविध रंगों के पंखों के साथ कारी-

गर, (द्युभिः अश्मभिः कर्मारः) चमकीले रत्नों के साथ सुनार (हिरण्यवन्तं इच्छति) धनिक को चाहता है ॥२॥ मैं स्वयं (कारुः अहं) कारीगर हूं, (ततः भिषक्) मेरा पिता वैद्य है, (नना उपलप्रक्षिणी) मेरी माता चक्की पीसती है, हम सब (नानाधियः) विविध प्रकार की बुद्धियों से युक्त हैं, पर सब (वसूयवः) धन कमाने के इच्छुक हैं, (गाः इव अनुतस्थिम) गौओं के समान अनुकूलता से इकट्ठे रहते हैं और अपने काम का अनुष्ठान करते हैं ॥३॥ (वोळ्हा अश्वः) रथ खींचनेवाला घोड़ा (सुखं रथ) सुख से खींचा जानेवाला रथ चाहता है, (उपमन्त्रिण हसनां) साथ काम करनेवाले हंसी खेल करना चाहते हैं, (शेषः रोमण्वन्तौ भेदौ) तरुण तरुणी को चाहता है, (मण्डूकः वार इच्छति) मेढक जल चाहता है । हे (सोम) कलावान् पुरुष ! (इन्द्राय) परम ऐश्वर्यवान् के लिये ही (परिस्त्रव) चारों ओर से अपने कलारम का प्रवाह पहुंचाओ ।

‘ सोम, इन्दु ’ का पर्याय ‘ कलानिधि, कलावान् ’ है । जो कलाओं से (Arts & Crafts) युक्त होता है, वह कलावान् अर्थात् कारीगर कहलाता है । सोम का यह कलावान् (Artist) अर्थ यहां लेना चाहिये । हे इंद्रो, सोम=कलानिधि कारीगर ! तू (इन्द्राय) इंद्र के लिये अर्थात् (इन्द्र परमैश्वर्य) परम ऐश्वर्यवान् के लिये उस परम धनी के उपयोग में आनेवाले पदार्थ निर्माण करने के हेतु से अपनी कला का प्रवाह (परिस्त्रव) प्रवाहित करो ।

इस अर्थ को लेकर पूर्वोक्त चारों मंत्रों का अर्थ किया जाय, तो अर्थ की ठीक संगति लगती है । सब युरोपीयन पंडित लिखते हैं कि, यह मंत्रभाग ‘ इन्द्रायेन्दो परिस्त्रव ’ यह इन चार मंत्रों में अप्रासंगिक है । देखिये—

The hymn appears to be an old popular song transformed into an address to soma, by attaching to each stanza a refrain which has no connection with the subject of the song. (R. T. H. Griffith, Rig Veda Vol. II, Page 380)

इसी तरह मराठी अनुवादकर्ता श्री सिद्धेश्वरशास्त्री

चित्रावजीने भी यह मन्त्रभाग प्रसंगहीन है, ऐसा लिखा है । ये सब विद्वान् इन चार मंत्रों के इस मन्त्रभाग को अप्रासंगिक कहते हैं । पर हमारा विश्वास है कि, 'सोम' के श्लेष अर्थ से यह मन्त्रभाग यहाँ सुसंगत है । तर्वाण, सुनार, लुहार, वैद्य, विद्वान्, तथा अन्यान्य लोग अपनी कारीगरी का प्रवाह ऐश्वर्यवान् के पास पहुंचा देवे ।

जब 'कारिगर' ही सोम होगा, तो उसका सोमरस कारीगरी अथवा 'कुशलता' होगी, ब्रह्मा जब सोम कहलायेगा, तब उसका सोमरस 'ब्रह्मज्ञान' होगा । जब वैद्य सोम होगा, तब उसका सोमरस 'चिकित्सा' होगा । इस तरह अन्यान्य श्लेषार्थों के विषय में जानना चाहिये ।

आशा है कि, पाठक इस तरह इन सोमसूक्तों में जो अन्यान्य श्लेषादि अर्थ हैं, उनका विचार करे और ज्ञान प्राप्त करे ।

पुरातन पिता ।

पवित्रवन्तः परिवाचं आसते पितृणां प्रन्नो
अभिरक्षति व्रतम् । महः समुद्रं वरुणस्तिरो
दधे धीरा इत् छेकुर्धरुणेष्वाभम् ॥

(ऋ. १।७३।३)

(पवित्रवन्त वाचं परि आसते) सोम को छाननेवाले स्तुति करते हुए बैठते हैं, इस समय (एषां प्रन्नः पिता) इनका पुरातन पिता (व्रत अभिरक्षति) यज्ञ की रक्षा करता है । (वरुण) वरुणने (मह समुद्र तिरो दधे) बड़े अन्तरिक्षरूपी महासागर को ढांक दिया है, अर्थात् उसने सब आकाश व्याप लिया है, (धीराः इत् शेकु) बुद्धिमान् ज्ञानीहि समर्थ हुए और उन्होंने ने (धरुणेषु आरभं) आधाराँ पर सोमरस छानने का कार्य किया है ।

यज्ञ में ऋत्विज सोमरस छानते हैं, वेदमंत्रों से स्तुति होती रहती है । सर्वव्यापक ईश्वर की भक्ति चलती है । ऐसे समय सोमरस छाना जाकर तैयार होता है ।

प्रभु के गुप्त दूत ।

सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधु-
जिह्वा असञ्चतः । अस्य स्पशो न निमिषन्ति
भूर्णयः पदे पदे पाशिनः सन्ति सेतव ॥

(ऋ. १।७३।४)

(ते असञ्चत. मधुजिह्वाः) वे रस पृथक् होकर तथा मधुर बनकर (सहस्रधारे अव समस्वरन्) हजारों धाराओं द्वारा नाद करते हुए नीचे चूते थे ! (अस्य भूर्णयः स्पश) इसके पार्थिव सेवक (न निमिषन्ति) कभी आंख बंद करके चुप नहीं रहते, प्रत्युत (पदे पदे) प्रतिपद में (पाशिनः) हाथ में पाश लिये (सेतवः सन्ति) मर्यादा बांधकर रहने हैं ।

सोमरस की धाराएं छाननी के नीचे सहस्रों धाराओं से गिरती हैं । मानो ये परमेश्वर की मधु जिह्वाये ही हैं । इसी प्रभु के हजारों गुप्त दूत हाथ में पाश लिये, दुष्टों को पकड़ने के लिये, आख न बंद करते हुए चारों ओर पद-पद में खड़े हैं, इन्होंने अपनी मर्यादा निश्चित की है, उसके बाहर जो जाना है, उसे वे अपने पाशों से बांध देते हैं ।

तप का महत्त्व ।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि
विश्वत । अतस्तनूर्न तदामो अश्नुते शृतास
इद् वहन्तस्तत् समासत ॥ (ऋ. १।८३।१)

हे (ब्रह्मणस्पते) ज्ञान के स्वामिन् ! (ते पवित्र वितत) तेरा पवित्रता का साधन फैला है । तू सब का (प्रभु) स्वामी, प्रभु, होकर (गात्राणि विश्वत. परि एषि) सब अवयवों, सब वस्तुओं में व्यापक होता है । (अ-तस्तनूः) जिसने तप नहीं किया, वे (तत् आमः न अश्नुते) उस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते, पर (शृतासः इत्) जो परिपक्व हुए हैं, वे सत्पुरुष (वहन्तः तत्) उसे धारण करते हुए (स आसत) मिलकर बैठते हैं, अर्थात् वे ही आनन्द लाभ करते हैं ।

प्रभु परमेश्वर सर्वत्र है, उसका पवित्रता का साधन सर्वत्र है । पर जो तप नहीं करते, वे उसे प्राप्त नहीं कर सकते, जो तप करके परिपक्व बनते हैं, वे उसको अच्छी तरह धारण करते हैं ।

त्रिभुवनों का अधिष्ठाता ।

आ य तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः
परि तान्यर्षति ।

कृण्वन् संचृतं विचृतं अभिष्टय इन्दुः सिषक्ति
उपसं न सूर्य ॥ (ऋ. १।८४।२)

(य. सोम) जो सोम (विश्वानि भुवनानि) सब भुवनो का (आ तस्यौ) अधिष्ठाता हुआ है, वह (अमर्त्यः) अमर सोम (तानि परि अर्षति) उन भुवनों के चारों ओर रहता है। यह प्रभु सब के (अभिष्टये) हित के लिये (सच्चतं विचूत कृण्वन्) संयोग और वियोग करता है, वही जैसा सूर्य उपाके साथ आता है, वैसा वह भी सब के साथ रहता है ।

यहां सर्वव्यापक प्रभुको सोम कहा है, क्योंकि जैसा इस सोमवल्ली के रम पीने से आनन्द प्राप्त होता है, उसी तरह प्रभुका भक्तिरस पीनेसे परम आनन्द प्राप्त होता है ।

देवों के गुह्य नाम ।

हरिः सृजानः पथ्यां क्रतस्य इयति वाचं अरि-
तेष नावम् ।

देवो देवानां गुह्यानि नामा आविष्कृणोति
वर्हिषे प्रवाचे ॥ (ऋ. ९-९५-२)

(अरिता नाव इव) मछाह नौका को चलाता है, (वैया (हरिः सृजान) हरे रंग के पत्तोंवाला सोम (क्रतस्य पथ्यां) सत्य के मार्ग को प्रेरित करनेवाले (वाच इयति) सन्देशवाणी को चलाता है । यह देवों के सब गुप्त नामों का (वर्हिषे प्रवाचे) यज्ञ में प्रवक्ता के लिये (आविष्कृणोति) प्रकट करता है ।

सोम से सोमयाग सिद्ध होता है, जो सत्यधर्म का प्रवर्तक है । देवों की गुह्य शक्तियां उन के नामों से प्रकट कर के वह सोम इस यज्ञद्वारा गुप्त ज्ञान का आविष्कार करता है ।

उन्नति की इच्छा ।

अजीतये अहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये
बृहते । तदुशन्ति विश्व इमे सखायः तदहं
वश्मि पवमान सोम ॥ ४ ॥ (ऋ. ९.९६)

(अ-जीतये) पराभव न होने के लिये अर्थात् विजय के लिये (अ-हतये) अमरपन के लिये, (स्वस्तये) कल्याण के लिये, (सर्वतातये) सर्वत्र फैलने के लिये (बृहते) महत्त्व के लिये (इमे विश्वे सखायः) ये सब मित्र (उशन्ति) इच्छा करते हैं, (तत् अहं वश्मि) मैं भी यही चाहता हूँ ।

सब लोग अपना विजय, अमरपन, कल्याण, विस्तार और महत्त्व चाहे । कभी इस के विपरीत, हीन अवस्था न चाहे ।

(२.११.११)

सहस्रों का नेता ।

ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रणीथः
पदवीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषा-
सन् त्सोमो विराजं अनु राजति घृप् ॥

(ऋ. ९-९६-१८)

(ऋषि-मनाः) ऋषि के समान मनवाला, (ऋषिकृत्) ऋषियों का निर्माण करनेवाला, (स्वर्षा) तेजस्वी (सहस्र-नीथः) हजारों का नेता, (कवीनां पद-वी) कवियों का मार्गदर्शक है, वह (तृतीयं धाम सिषासन्) तृतीय धाम में विराजने की इच्छा करता हुआ (महिषः) महनीय होकर वह सोमवीर (विराजं अनुराजति) विशेष तेजस्वी होने के लिये प्रकाशता है ।

सरलता, सत्य और श्रद्धा ।

क्रतं वदन् क्रतद्युम्न सत्यं वदन् सत्यकर्मन् ।

श्रद्धां वदन् सोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृतः ॥

(ऋ. ९-११३-४)

हे (क्रत-द्युम्न) सत्य के तेज से युक्त ! तू सरल बोलता है, (हे सत्य-कर्मन्) तत्त्व कर्म करनेवाले ! तू सत्य बोलता है, हे सोम राजन् ! तू श्रद्धायुक्त भाषण करता है, हे सोम ! (धात्रा) धाताने तुझे (परिष्कृतः) सुसंस्कृत बनाया है ।

इस मंत्रमें सरलता, सत्य और श्रद्धा का महत्त्व कहा है ।

यम का राज्य ।

यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।

यत्रामूर्यद्वारापः तत्र माममृतं कृधि ॥

(ऋ. ९-११३-८)

जहां विवस्वान का पुत्र (यम) राज्य करता है, जहां (दिवः अवरोधनं) शुलोक का न दीखनेवाला स्थान है, जहां ये पानी के प्रवाह चलते हैं, वहां (मां अमृतं कृधि) मुझे अमर कर ।

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिविधे दिवः ।

लोका यत्र ज्योतिष्मन्तः तत्र माममृतं कृधि ॥

(ऋ. ९.११३.९)

(दिवः त्रिनाके त्रिदिवे) शुलोक के तीसरे विभाग में (यत्र) जहां (अनुकामं चरणं) इच्छा के अनुसार गमन किया जा सकता है, जहां (ज्योतिष्मन्तः लोकाः) तेजस्वी लोक हैं, वहां मुझे अमर कर ।

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रह्मस्य विष्टपम् ।
स्वधा यत्र च तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधि ॥
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यज्ञासाः कामाः तत्रमाममृतं कृधि ॥

(ऋ. १.११३।१०-११)

(यत्र) जहां (कामा निकामाः) सकाम कर्म करनेवाले और निष्काम कर्म करनेवाले, (यत्र ब्रह्मस्य विष्टपं) जहां मूल आधार का स्थान है, जहां (स्वधा) अपनी धारक शक्ति और अपनी तृप्ति प्रकट होती है, वहां मुझे अमर कर ।
जहां आनन्द, उल्हास, हर्ष और प्रमोद होते हैं, जहां (कामस्य कामाः आसाः) वासना के भी सब काम सफल होते हैं, वहां मुझे अमर कर ।

अनेक सूर्य हैं ।

सप्त दिशो नाना सूर्याः सप्त होतारो ऋत्विजः ।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष नः ।

(ऋ. १.११४।२)

(सप्त दिशः) सातों दिशाओं में नाना सूर्य हैं, यज्ञ में सात ऋत्विज हैं, आदित्य देव भी सात हैं, हे सोम ! इन सब से हमारी रक्षा कर ।

(प्रगाथो घौरः । ऋष्टुपः ।)

अपाम सोमं अमृता अभूम अगन्म ज्योतिः ।
अविदाम देवान् । किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः
किमु धूर्तिः अमृत मर्त्यस्य ॥ (ऋ. ८।४८।३)

(सोमं अपाम) हमने सोमरस पीया है, (अमृता अभूम) हम अमर हुए हैं, (ज्योतिः अगन्म) हमने प्रकाश प्राप्त किया है, (देवान् अविदाम) हमने देवों को जान लिया है, अब (अराति किं नु कृणवत्) शत्रु हमारा क्या करेगा? (धूर्ति किं उ) धूर्त भी हमारा क्या करेगा ?

सोमकी कथाएँ ।

सोम के संबंध में कुछ कथाएँ नीचे बानगी के तौर पर दी जाती हैं—

(१) सोम का क्षय से पीड़ित होना ।

तैत्तिरीय संहिता में निम्नलिखित प्रकार यह कथा दीखती है—

प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशद् दुहितर आसन्, ताः सोमाय राक्षेऽददात्, तासां रोहिणीमुपैत्, ता ईष्यन्तीः पुनरगच्छन्, ता अन्वैत्, ता पुनरयाचत, ता अस्मै न पुनरदात्, सोऽब्रवीत्, ऋतमपीप्सु यथा समवच्छ, उपैष्यामि, अथ ते पुनः दास्यामि इति, स ऋतमामीत्, ता अस्मै पुनरदात्, तासां रोहिणीमेवोपैत्, तं यक्ष्म आच्छेत्, राजानं यक्ष्म आरदिति, तद्राजयक्ष्मस्य जन्म । . वरं वृणामहे, समावच्छ एव न उपाय इति, तस्मा एतमादित्यं चरुं निरवपन् तेनैवैनं पापात् स्नामादमुञ्चन् ॥ (तै० सं० २।३.५)

प्रजापति की तैत्तीस कन्याओं का व्याह सोमराजा से निष्पन्न हुआ, पर सोम रोहिणी से अधिक प्रेम करने लगे, जिस के फलस्वरूप अन्य बहनें क्रुद्ध हो, पिता के निकट चली गयीं । जब सोम शपथ खा चुका कि, मैं अब सब पर समान रूप से प्रेम करूँगा, तभी प्रजापति ने उन्हें सोमके निकट लौट जाने दिया । सोम का स्वभाव उषों का त्यो रहा और अतिविषयलंपटता के कारण राजयक्ष्मा नामक दुर्धर रोग से वह पीड़ित हो गया । अब सोम अन्य स्त्रियों से क्षमा की याचना करने लगा । उन्होंने ने उसे प्रणवज्जु करा के रोग हटाने के लिए आदित्य को आहुतियाँ दे दीं जिस पर आदित्य ने उसे रोगमुक्त कर दिया ।

(२) शंड, मर्क एवं सोम ।

बृहस्पतिर्देवानां पुरोहित आसीत्, शण्डामर्कां असुराणां, ब्रह्मण्वन्तो देवा आसन्, ब्रह्मण्वन्तो असुराः, ते अन्योन्यं नाशक्नुवन्नभिभविन्तु, ते देवाः शण्डामर्कावुपामन्त्रयन्त, तावब्रूतां, वरं वृणावहे, ग्रहावेव नावशापि गृह्यतामिति, ताभ्यामेतौ शुक्रामन्थिनौ अगृह्णन्, ततो देवा अभवन् पराऽसुरा ॥ (तै सं. ६।४।१०)

जिस प्रकार देवताओं के बृहस्पति उसी प्रकार असुरों के बुद्धिमान् पुरोहित शंड एवं मर्क नामक थे । जब दोनों दलों में एक भी परास्त न हो रहा था, तो देवताओं ने

सोम का प्रलोभन देकर शङ तथा मर्क को अपने दल में मिला लिया । अब असुरों की हार हुई । आगे चलकर जब देवों ने यज्ञ का प्रारम्भ किया, तब पूर्वपचनानुसार शुक्र तथा मांथी नामक बर्तनों में रखा हुआ सोमरस पीने को मिलेगा, इस भाशा से शङ तथा मर्क उस यज्ञ भूमि में आ उपस्थित हुए । पर जो देव उन विश्वासघातियों को प्रवेश देने के विरुद्ध थे, उन्होंने दोनों को अपमानित कर वहाँ से हटाया । (तै स ६-४-१०)

(३) सावित्री का सोम से व्याह ।

सोम को पैदा कर चुकने पर प्रजापति ने तीनों वेदों का सृजन किया, पर सोमने वे वेद अपनी हथेलीमें ढक दिये । प्रजापति की दुहिता सावित्री चाहती थी कि, सोम उसका पति बने । पर सोम श्रद्धानामक प्रजापति की अन्य कन्या पर मुरब्ध हुआ । अपने पिता के निकट चले जाकर सावित्री ने सोम से पाणिग्रहण करने की अपनी अभिलाषा व्यक्त कर दी । प्रजापति भली भौंति जानते थे कि, सोम किस पर आसक्त है । अतः उसने वशीकरणप्रयोग करने की इच्छा से स्थागरवनस्पति के सौरभपूर्ण चूर्ण को अभिमन्त्रित कर उसके साथे पर निलक के रूप में अंकित किया । सावित्री के सोम के निकट चले जाने पर उसे देख कर सोम मंत्रमुग्ध हो, उससे चाटुकारिता की बात करने लगा । सोम के सच्चे प्रेम की ठीक ठीक जाँच करवाने के हेतु उसने सोम से कहा कि, यदि वह एकनिष्ठ रहेगा और अपनी मुष्टि में छिपायी वस्तु को उसे साफ साफ बतलायेगा, तो ही वह उसके निकट आयेगी । सोम प्रेम से पागल बन चुका था, इसलिये ये सारी बातें उसने चुपचाप मान लीं और अपने हाथ में विद्यमान तीनों वेद सहर्ष उसे प्रदान किये । दोनों का विवाह पूर्ण हुआ और वे सुखपूर्वक जीवन बिताने लगे । जो स्त्रियाँ चतुर हों, उनकी दशा सावित्री जैसे हुआ करती है । (तै. ब्राह्मण २-३-११)

(४) गायत्री सोम लायी थी ।

सोमो वै राजा गन्धर्वेषु आसीत्, तं देवाश्च ऋषयश्चाभ्यध्यायन्, कथमयमस्मान्सोमो राजागच्छेदिति ? सा वागव्रीत्, स्त्रीकामा वै गन्धर्वा, मयैव स्त्रीभृतया एणध्वमिति । नेति देवा अब्रुवन्, कथं वयं त्वदने स्यामेति ?

साव्रवात्कीणीतैव, यर्हि वाव वो मयार्थो भविता, तर्ह्येव वोऽहं पुनरागन्तासीति, तथेति । गन्धर्वेषु हि तर्हि वाग्भवति.... ० ॥

(ऐ. ब्रा १।२७)

सभी देवता तथा ऋषि आदि सोचने लगे कि, किस भौंति सोम अपने यज्ञमें उपस्थित किया जाय, क्योंकि वह गन्धर्वों में रहता था । सोमरस पाने के लिए देवता अत्यधिक लालायित हो उठे थे, अतः वे खूब प्रयत्न करने लगे । उन्हें विदित हुआ कि गन्धर्व नारियों को बहुत चाहते हैं । उन्होंने वाणी को गन्धर्वों के निकट भेज दिया । वह गायत्रीसदृश छन्दों के रूप में पहुँचकर और पंछी का रूप धारण कर वहाँ से सोम लायी । इयेनपंछी पैर में रख सोम लाया आदि कथाएँ, इसी तरह की हैं । अतः सोमाहरणविषयक सूक्तों को सौपर्णसूक्त कहने की प्रणाली है । (ऐतरेय ब्रा० १.२७; ३.२५, २-२५; १.१२)

(५) सोम के लिए घुडदौड़ ।

देवा वै सोमस्य राज्ञोऽग्रपेये न समपादयन्, अहं प्रथमः पिबेयं, अहं प्रथमः पिबेयं, इत्येवाकामयन्त । ते संपादयन्तोऽब्रुवन्, हन्ताजिमयाम, स यो न उज्जेप्यति, स प्रथमः सोमस्य पास्यतीति, तथेति । त आजिमयुः, तेषामार्जियतामभिसृष्टानां वायुमुखं प्रथमः प्रत्यपद्यत, अथेन्द्रोऽथ मित्रावरुणावदिवनौ । सो वेदिन्द्रो वायुमुद्वेजयतीति, तमनुपरापतत्, ते एवामेते यथाजितं भक्षा इन्द्रवाय्योः प्रथमोऽय मित्रावरुणयोरथादिवनो स एव इन्द्रतुरीयो ग्रहो गृह्यते० (ऐ० ब्रा० २।२५)

एक समय यज्ञमें सोमरसके सेवनार्थ देवतागणमें प्रतिद्वन्द्वता होने लगी । उन्होंने ठान लिया कि, घुडदौड़ में जिसे सफलता मिलेगी, वही सोमपान करे । अन्तमें इन्द्र एवं वायु प्रथम श्रेणीमें आये, पश्चात् मित्रावरुण इत्यादि वर्णन है । ईशान्य दिशा सोमापहरण के लिए अच्छी, क्योंकि उसी दिशा में देवतागण असुरोंपर विजयी हुआ ।

(ऐ० ब्रा० २-२५)

(६) विश्वन्तर का सोमयज्ञ ।

ऐतरेय ब्राह्मण में (१५-२७) सोम के बारेमें एक

अमृतमृत्युजनक कथा है, जिसमें चार वर्णों के लिए चार विभिन्न सोमों का प्रतिपादन किया है । संक्षेप में वह यों हैं—

विश्वंतरो ह सौषमनः श्यापर्णान् परिच-
क्षाणो विश्यापर्णं यज्ञमाजन्हे, तद्धानुबुध्य
श्यापर्णास्तं यज्ञमाजग्मुस्ते ह तदन्तर्वेद्यासां
चक्रिरे । तान्ह दृष्ट्वावाच, पापस्य वा इमे
कर्मणः कर्तार आसतेऽपूतार्यै वाचो वदितारो
यच्छ्यापर्णा इमानुत्थापयते मेऽन्तर्वेदि-
मासिषतेति, तथेति, तानुत्थापयांचकुस्ते
होथाप्यमाना रुरुविरे; ये तेभ्यो भूतवी-
रेभ्यः .. कस्वित्सोऽस्माकास्ति वीरो य
इमं सोमपीथमभिजेप्यतीति, अयमहमस्मि
वो वीर इति होवाच रामो भार्गवेयो
तेषां होत्तिष्ठतामुवाचापि नु राजन्निथं विदं
वेदेरुत्थापयन्तीति यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्म-
बन्धविति ॥

यत्रेन्द्रं देवताः पर्यवृञ्जन् .. तत्रेन्द्रः सोम-
पीथेन व्याधृतं, इन्द्रस्यानु क्षत्रं सोमपीथेन
व्याधृतं.. तद्व्यद्धमेवाचापि क्षत्रं सोमपीथेन,
स यस्तं भक्षं विद्याद्यः क्षत्रस्य सोमपीथेन
व्युद्धस्य, येन क्षत्रं समृध्यते, कथं तं वेदेरुत्था-
पयन्तीति, वेत्थ ब्राह्मण त्वं तं भक्षाम् । वेद-
हीति तं वै नो ब्राह्मण ब्रहीति तस्मै वै ते
राजन्निति होवाच । यदि सोमं ब्राह्मणानां
स भक्षो ब्राह्मणांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि
ब्राह्मणकल्पस्ते प्रजायामाजनिष्यत आदाय्या-
पाय्यावसायी यथाकामप्रयाप्यो यदा वै क्षत्रि-
याय पापं भवति.. ईश्वरो हास्माद्वितीयो वा

अथ यदि दधि वैश्यानां स भक्षो वैश्यांस्तेन
भक्षेण जिन्विष्यसि, . यद्यपः शूद्राणां स
भक्षः शूद्रांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि... अथा-
स्यैष स्वो भक्षो न्यग्रोधस्यावरोधाश्च फलानि
चादुम्बराण्याश्चत्थानि... श्यापर्ण उ मे यज्ञ
इति एतमु हैव प्रोवाच ॥

(ऐ० ब्रा० ७।२७-३४)

यज्ञमें श्यापर्णों की ओर ध्यान न देकर विश्वन्तरने
विश्यापर्णों को बुलवाया, पर यज्ञ का समाचार पाकर

श्यापर्ण भी अनाहूत होते हुए भी वहाँ जा बैठे । जब
नरेश उन्हें हटाने लगा, तो खलबली मचने लगी । श्यापर्ण
ने प्रश्न उठाया, क्या कोई उनमें शूर वीर नहीं, जो राजा को
अपने अधीन कर लेगा । राम भार्गवेय नामक एक नव-
युवक आगे बढ़कर राजा से पूछने लगा—

“ क्या तू मुझ जैसे ज्ञानी का भी तिरस्कार करता है ?

“ अरे पागल ! भला तू क्या जानता है ?

“ लेकिन क्या तू सुननेयोग्य दशा में है ?

“ सुननेयोग्य कौनसी बात तुम्हारे समीप है ?

“ बिना सुने कैसे वह समझ में आयेगी ?

“ क्या तू जानता है, इन्द्र को सोम देना निषिद्ध हुआ
है ?

“ नहींजी । इन्द्र को सोम देना क्यों रोक दिया ?

“ उसने पाँच अपराध किये हैं इसलिए ।

“ यदि इन्द्रको सोम नहीं, तो उसके अनुयायी-क्षत्रि-
योंको वह कैसे भला मिल सकता है ?

“ हाँ, बिलकुल ठीक । अब आगे किसी को सोम
नहीं ।

“ पर इन्द्र जैसा वीर बिना सोम पिये कैसे रहेगा ?
वह यज्ञ में बलात् घुसकर सोम पी जाता है ।

“ महाराज ! हम क्षत्रिय भला उस योग्यता को क्या
जाने ?

“ पर बिना सोम के क्षत्रियों को स्फूर्ति कैसे आयेगी ?

“ क्षत्रियों के बल को बढ़ानेवाला सोम मुझे विदित है ।

“ कहिए श्रीमन् ! हम क्षत्रियों का उद्धार कीजिए ।

“ सोमवल्ली केवल ब्राह्मणों के उपयोग के लिए ही है ।

यदि तुम सोमवल्ली का उपयोग करने लगोगे, तो तुम्हारी
प्रजा ब्राह्मणों के समान दानप्रतिग्रह लेनेवाली, घूमने-
वाली, गरीब तथा युद्धकार्य के लिए अत्यंत निरूपयुक्त बन
जायगी ।

“ फिर क्षत्रियों का बड़प्पन अक्षुण्ण कैसे रहेगा ?

“ वैश्यों का सोम दधि है । उसे खाने से क्या वैश्य
जैसी सन्तान होगी ?

“ इस भाँति दुर्बलता, परमात्मा करे, हमारी संतान
को कभी न आ जाय ।

“ शूद्र जाति के लिए जल ही सोम है । उस का उप-
योग करनेपर दासमनोवृत्ति एवं चाटुकारिता से पूर्ण

प्रजा का उत्पादन होगा ।

“ छी छी । ऐसा पतन हमारा कभी न होवे ! !

“ यदि सच्चा क्षत्रिय उत्पन्न हो, ससारपर उसे अपनी धाक जमाकर बैगानी हो, तो बड़की शाखाएँ, औदुंबर, पिप्पल या लक्षपेटों से यज्ञ किया जाय । आया समझ में ?

“ महाराज ! यह कहकर आपने क्षत्रियजातिपर बड़ा भारी उपकार किया है । अब आप श्यापर्णसहित मेरे यज्ञ में आ जायें और उसे यथावत् पूरा कर लेंगे ।

पश्चात् श्यापर्ण यज्ञ में आएँ और उन्होंने यज्ञकी पूर्णता निष्पन्न कर दी ।

इस कथा से भी सोम के बारे में उस समय क्या दशा थी, इसपर अच्छा प्रकाश पड़ता है ।

सोम की कथाओं का मनन ।

ऊपर सोम की छः कथाएँ दी हैं । पर ये सब सोम-वल्ली की नहीं हैं । पहिली कथा सोम की अर्थात् चन्द्रमा की है । यह एक लाक्षणिक कथा है । बहु स्त्रीसेवन से क्षयरोग होने की सम्भावना होती है । इत्यादि भाव इस कथा से मिलता है । सूर्यप्रकाश क्षयरोग का निवारण करता है, यह भी इस में तात्पर्य है । अर्थात् यह कथा सोमवल्ली की नहीं है ।

दूसरी ‘ शण्ड-मर्क ’ की कथा है । असुरों में जब तक ब्रह्मविद्या थी, (ब्रह्मण्वन्तः) तबतक वे परास्त नहीं हुए, जब असुरोंने ब्रह्मविद्या-वेदविद्या का त्याग किया, यज्ञ करना छोड़ दिया, तब देवोंने असुरों को परास्त किया । इस से ब्रह्मविद्या, वेदविद्या, यज्ञविद्या, और सोमविद्या से विजय प्राप्त हो सकता है, यह सिद्ध किया है ।

इन विद्याओं में विजय की बातें हैं, इनको यथावत् जानने से और योग्य अनुष्ठान से विजय प्राप्त हो सकता है । विजय के इच्छुक इस का अवश्य विचार करें ।

तीसरी कथा सावित्री के विवाह की है । सावित्री सविता की पुत्री सोम से अर्थात् चन्द्रमा से ब्याही है । यह सूर्यासावित्री के विवाह का कथाभाग ऋ० १०।८५ और अथर्व. १४।१ में है । पर इसमें और इस तै० ब्रा० की कथा में थोड़ासा हेरफेर है । वास्तव में यह कथा केवल रूपकात्मक है । प्रेमपूर्वक विवाह किस तरह करना चाहिये, इस का उपदेश इस कथा से मिलता है । यह सोम चन्द्रमा है और इस सोम का सोम-औषधि से कोई

सम्बन्ध नहीं है ।

चतुर्थ कथा गायत्री सोम लायी, यह है । यहां गायत्री छंद के मंत्र सोमको यज्ञशाला में लाने के समय पढ़े जाते हैं, इस विधि पर यह कथा रची है । यत्न कर के धार्मिक इष्ट की प्राप्ति करनी चाहिये, यही उपदेश इस कथा से मिलता है ।

पांचवी कथा घुडदौड़ में प्रथम आनेवालों को सोम पीने के लिये दिया जाता है । इस भाव की है । बड़े परिश्रम होने पर पीनेयोग्य सोमपान है, यह इस से सिद्ध होता है । श्रमपरिहार करनेवाला पेय सोमपान है ।

छठी कथा में क्षत्रियों की उन्नति का विचार किया है । ब्राह्मणों जैसे नरम मनवाले क्षत्रिय न हों, प्रत्युत क्षत्रिय वीरवृत्तिवाले स्वराज्य बढ़ानेवाले बने । यह इस कथा का आशय स्पष्ट है । सोमपान ऐसे क्षत्रिय करें कि, जो वीरक्षत्रिय हैं । उक्त कथाओंमें इससे अधिक कुछ उपदेश होंगे, तो उस का आविष्कार खोजपूर्वक करना चाहिये । सोमसावित्री के विवाह का मूल वेद में हमें मिला है । अन्य कथाओं का मूल वेद के मंत्रभाग में कहाँ है और उस का वहां आशय क्या, यह देखना चाहिये । अन्य कथाओं का मूल संहिता के मंत्रों में आवश्य होगा, ऐसा हमारा ख्याल है । यह एक खोज करनेयोग्य विषय है ।

आगे का कर्तव्य ।

सोम के विषय में ये संहिता के मंत्र हमने पाठकों के सामने रखे हैं । भूमिका में कुछ वक्तव्य जो इस समय रखनेयोग्य प्रतीत हुआ, वह इस लेखद्वारा पाठकों के सन्मुख रख दिया है ।

मंत्रों के अर्थों की परिपूर्ण संगति लगाने के बाद और जो वक्तव्य होगा, वह विस्तारपूर्वक पाठकों के सन्मुख रखा जायगा । वेदका विषय बहुत ही खोज होनेके बाद सुव्यवस्था से पाठकों के सन्मुख प्रकट होगा, तब तक जितना व्यक्त हो रहा है, उतना ही हम प्रकट कर रहे हैं ।

यहां जो वेदविद्या के विषय में प्रेम रखते हैं, उन पर एक बड़ी भारी जिम्मेवारी है, वह यह है कि, वे एक ४।५ औषधिविद्याविशारद विद्वानों का मण्डल कायम करें कि, जो सोम की खोज करें । यह खोज घर में बैठते हुए नहीं हो सकती है । इस के लिये कई वर्ष हिमालय में गुजारने होंगे । मूँजवान् आदि पर्वतशिखरों पर जाकर सुश्रुत में

कहे चिन्हों से युक्त २४ प्रकार के सोम का पता लगाना चाहिये । कई क्षुद्र सोम तो अन्य पर्वतों पर भी मिल सकते हैं । जो मुख्य और श्रेष्ठ सोम है, वह हिमालय की उंची से उंची चोटी पर प्राप्त होगा । इस कार्य के लिये सहस्रों रु० का व्यय हो जाय, तो कोई अधिक नहीं है । हमने इस व्यय का अदाजा लगाया नहीं है, पर पांच औषधिशालाञ्ज अच्छे उत्साही पुरुष पांच वर्ष खोज करते रहे और अविरत परिश्रम करते रहे, तो दस हजार रु. से कम व्यय नहीं होगा । संभव है कि, प्रथम वर्ष ही इस औषधि का पता लगे और अधिक व्यय करना न पड़े । पर करना पड़े तो उस व्यय के प्रबन्ध का विचार पहिले से ही करके रखना चाहिये ।

वेद की मुख्य वस्तु 'सोम औषधि' है । यह शत-पथ, ऐतरेय के समय से दुष्प्राप्य हुई थी । तब से इतने राजा, महाराजा सनातनधर्म में हुए, पर किसी ने दस-बीस हजार रु. इस खोज के लिये खर्च नहीं किये । इस समय बड़े बड़े पुरंधर वैद्य भारत में विद्यमान हैं, वे आर्य-वैद्यक के औषध बनाते और लाखों रु. कमाते भी हैं । पर आर्यवैद्यक में जो जीवनीय औषध है, उनमें से बहुत से औषध दुष्प्राप्य मानकर ही वे च्यवनप्राश आदि पाक बनाते हैं और भोले लोग उन का सेवन करते हैं । पर सामूहिक रूप से उक्त औषधियों को प्राप्त करने का यत्न ये वैद्य नहीं करते । यदि करेंगे, तो हिमालय उक्त औषधियाँ उनको अवश्य प्रदान करेगा ।

सोम औषधि के कई प्रकार हैं । सुश्रुत ने तो २४ प्रकार के सोम बताये हैं । पत्तों का रस और कंद का रस या दुग्ध लेने की विधि ऊपर बताई है । सोमरस में सुवर्ण का वर्ण या बारीक चूर्ण जो रस के साथ मिल सकता है, सेवन करने की विधि पूर्वस्थान में बताई है । सोम कूटनेके समय कूटनीके नीचे लोहे की कूटनी पर सोने का आवरण होना चाहिये, ऐसा प्रतीत होता है । यह विधि अन्वेष्टव्य है, पर इतनी बात सत्य है कि, सोमरस के साथ अल्प अंश से सुवर्ण का सेवन होता था ।

सोम के कन्द का रस निकालने के लिये सोने की सुई लेनी है और उस से कन्द में सुराख निकाल कर वह दूध या रस सुवर्ण के पात्र में लेने का है । यह दूध के

साथ तथा शहद के साथ सेवन करना होता है । यहां सुवर्ण का प्रयोग विशेष महत्त्व का है । निरर्थक नहीं ।

यह सोमरस दीर्घायु, बल, आरोग्य, भोज, उत्साह, रोगदूरीकरण की शक्ति, वीर्यवृद्धि, शुक्र-शोणित वृद्धि करके नवजीवन देनेवाला है । वेद जो कई नई बातें बताता है, उनमें से सोम औषधि का स्थान बड़ा प्रमुख है । इस सोम पर इतना बड़ा काव्य वेद में मिलता है, वेदमंत्रों की पूर्ण सख्या के करीब दसवा भाग अकेले सोमदेवता के लिये वेद में रखा है । वेद की दृष्टि से इस का इतना महत्त्व है । अतः इस औषधि की खोज होना अत्यंत आवश्यक है ।

इस खोज के लिये जो भी धन लगे, वैदिकधर्मियों को लगाना चाहिये और सोम वनस्पति की प्राप्ति अवश्य करनी चाहिये । हिमालयमें तथा जहां जहां सोम मिलता है, ऐसा आर्थग्रंथोंमें लिखा है, वहां जाकर खोज करनेसे पांच-दस वर्षोंके यत्नसे निःसंदेह यह औषधि प्राप्त होगी ।

इस समय जर्मनों ने तथा अन्यान्य खोजकर्ताओं ने एक प्रकार की सोम करके वनस्पति प्राप्त की है और वह सैकड़ों मन प्रतिवर्ष हिमालय से यूरोप में जाती भी है । इसका सत् निकाल कर वह बाजारों में बहुत ही मूल्य से बिकता है । इस विषय में हम चाहते हैं कि, निश्चित रूप से हमें ज्ञान हो, पर इस समय वह हमें नहीं मिल सकता, जब उस ज्ञान की प्राप्ति होनेयोग्य समय आवेगा, उस समय हम इस संबंध का संपूर्ण ज्ञान पाठकोंके सम्मुख रखेंगे । यह यूरोप में भेजी जानेवाली वनस्पति काश्मीर से लेकर ब्रह्मदेश तक व्यापनेवाले हिमालय की चोटी से प्राप्त होती है और इसका गुण भी नष्टारुण्य देना है, अर्थात् जीवनीय गुण इसमें है ।

यदि यूरोपीयन लोग ऐसी वनस्पतियों की खोज हिमालय में कर सकते हैं, तो वेद को अपना धर्मग्रंथ माननेवाले भारतीय विद्वान् क्यों नहीं कर सकते ? यह उत्तरदायित्व भारतीयों पर है, इतना पाठकों से निवेदन करके इस भूमिका की समाप्ति करते हैं ।

औध, (जि. सातारा)

निवेदनकर्ता

ता २२/७/४२.

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,
अध्यक्ष - स्वाध्याय-मंडल, औध



सोम-देवता का परिचय।

१ अमरकोश में सोम ।	पृष्ठांक ३	३४ वीर सोम ।	पृष्ठांक २१
२ निषण्डु में सोम ।	५	३५ सर्वविजयी ।	॥
३ निरुक्त में सोम ।	॥	३६ प्रभावी वीर ।	॥
४ ब्राह्मण ग्रंथों में सोम ।	॥	३७ शूर वीर ।	२२
५ सोम के उत्पत्ति-स्थान ।	७	३८ शत्रुनाश ।	॥
६ सुलोक तथा सोम ।	॥	३९ सोमरस वज्र जैसा है ।	२४
७ सोम का स्थान ।	८	४० कलावान् सोम ।	॥
८ पर्वत पर सोम ।	॥	४१ पुरातन पिता ।	२५
९ पत्नों के साथ सोम ।	९	४२ प्रभु के गुप्त दूत ।	॥
१० सोम का वर्ण ।	॥	४३ तप का महत्त्व ।	॥
११ सोम में विद्यमान गुण ।	॥	४४ त्रिभुवनों का अधिष्ठाता ।	॥
१२ स्वर्गीय अमृत ।	॥	४५ देवों के गृह्य नाम ।	२६
१३ वीर्यवर्धक सोम ।	॥	४६ उन्नति की इच्छा ।	॥
१४ सोम तारुण्य देता है ।	१०	४७ सहस्रों का नेता ।	॥
१५ बल की वृद्धि ।	॥	४८ सरलता, सत्य और श्रद्धा ।	॥
१६ सोम का विद्युत्तेज ।	॥	४९ यम का राज्य ।	॥
१७ सोम से सबको लाभ ।	॥	५० अनेक सूर्य हैं ।	२७
१८ सोम की रुचि ।	॥	५१ सोम की कथाएं ।	॥
१९ सोम तथा सुरा ।	॥	५२ सोम का क्षय से पीड़ित होना ।	॥
२० सोम तैयार करने की प्रणाली ।	११	५३ शंड, मर्क एवं सोम ।	॥
२१ छलनी कैसे रहे ?	॥	५४ सावित्री का सोम से ब्याह ।	२८
२२ सोमरस की छाननी ।	॥	५५ गायत्री सोम लायी थी !	२९
२३ तीन छाननियाँ ।	१२	५६ सोम के लिये घुड़दौड़ ।	॥
२४ गौका चर्म ।	१३	५७ विश्वन्तर का सोमयज्ञ ।	॥
२५ सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ ।	॥	५८ सोम की कथाओं का मनन ।	३०
२६ सोम में दूध मिला दो ।	॥	५९ भागे का कर्तव्य	॥
२७ सोम में शहद मिला दो ।	१४	सोम-देवता के मंत्र ।	
२८ सोम में दही मिला दो ।	॥	१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृष्ठ ७७-९५
२९ वैद्यशास्त्र में सोम ।	१७	२ उपमा-सूची ।	९६-९९
३० चन्द्रमा तथा सोम ।	१९	३ वर्णानुक्रम-सूची ।	१००-११०
३१ सोम किस समय बिनष्ट हुआ होगा ?	२०	४ गुणबोधक-पदसूची ।	१११-१३४
३२ सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ ।	॥	५ निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची ।	१३४-१३५
३३ पञ्च जनों को प्रिय सोम ।	॥	६ ऋग्वेदीय-सर्वांशानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची	१३६

सोमदेवता-मंत्रों की ऋषिसूची ।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । १-१० ।
 रेणुर्वैश्वामित्र । ६२०-२९ । ऋषभो वैश्वामित्रः । ६३०-३८ ।
 प्रजापतिवैश्वामित्रो वाच्यो वा । २५६-५९ ।
 विश्वामित्रो गायिनः । ५८०-८२; ११२४-२६ ।
 विश्वामित्र-जमदग्नी । १२३९ । मेघातिथिः काण्वः । ११-२० ।
 मेघातिथिः काण्वः । २९०-३०७ ।
 कण्वो घौरः । ८२३-२७; १०९८-११०० ।
 प्रगाथो घौर काण्व । ११३५ ४९ । प्रस्कण्वः काण्व ८२८-३० ।
 पर्वतनारदो काण्वो । ९७४-८५ ।
 शुनः शेष आजीगतिः, कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । २१-३० ।
 हिरण्यस्तूप आंगिरस । ३१४० । ६१०-१९ ।
 नृमेघ आंगिरसः । २०६-११; २१८-२३ ।
 म्रियमेघ आंगिरसः । २१२-१७ । बिंदुरांगिरसः । २२४-२९ ।
 प्रभूवसुरांगिरसः । २५४-६५ । रहुगण आंगिरस । २६६-७७ ।
 बृहन्मतिरांगिरसः । २७८-८९ । अयास्य आंगिरसः ३०८-३२५ ।
 उच्चथ्य आंगिरसः । ३४१-५५ । अमहीयुरांगिरसः । ३८८-४१७ ।
 पवित्र आंगिरसः । ५८९-९९, ६४८-५६; ७०६-१० ।
 हरिमंत आंगिरसः । ६३९-४७ । कुस आंगिरसः । १०१-१४ ।
 उरुरांगिरसः । १०२९-३० । ऊर्ध्वसया आंगिरसः । १०३३-३४ ।
 कृतयशा आंगिरसः । १०३५-३६ । क्षिप्रुरांगिरसः । १०७९-८२ ।
 गृत्समद आंगिरसः । १२१७-२२ ।
 असित काश्यपो देवलो वा । ४१-१९३ ।
 दळ्हच्युत भागस्यः । ३९४-९९ ।
 इध्मवाहो दार्वच्युत । २००-२०५ ।
 गोतमो राहुगणः । २३०-३५; ५७४-७६; ११०१-२३ ।
 श्यावाश्व आश्विनः । २३६-४१ ।
 श्रित आप्यः । २४२-५३; ९६०-६७ ।
 द्वित ,, । ९६८-७३ ।
 कविर्भागवः । ३२६-४०; ६६६-२० ।
 जमदग्निर्भागवः । ४१८-४७, ५८३-८५, ११५९ ।
 बेनो भागवः । ७१६-२७ । कृन्तुर्भागवः । ११५०-५८ ।
 अवत्सारः काश्यपः । ३५६-८७ । निधुविः काश्यपः । ४४८-७७ ।
 काश्यपो मारीचः । ४७८-५०७, ५७१-७३; ८०६-१७ ।
 १०८३-२७ । रेभसून् काश्यपौ । ९२७-४३ ।
 ऋगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा । ५०८-३७ ।
 क्षांत वैखानसाः । ५३८-५५, ५५९-६७ ।
 अग्निः पवमानः । ५५६-५८ । अग्निर्भौमः । ५७७-७९ ।
 भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । ५६८-७०; १२२३-२६ ।

वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । ५८६-८८; ८००-८०५, ८५७-५९;
 ११३२-३४, १२२९ । वासिष्ठ इन्द्रप्रमतिः । ८६०-६२ ।
 वासिष्ठो वृषगणः । ८६३-६५ । वासिष्ठो मन्युः । ८६६-६८ ।
 वासिष्ठ उपमन्यु । ८६९-७१ । वासिष्ठो व्याघ्रपादः ८७२-७४ ।
 वासिष्ठः शक्तिः ८७५-७७; १०२८; १०३९-४१ ।
 वासिष्ठः कर्णश्रुद् । ८७८-८० । वासिष्ठो मृळीक । ८८१-८३ ।
 वासिष्ठो वसुक । ८८४-८६ । वसुप्रिर्भालदनः । ६००-६०९ ।
 कक्षीवान्देघतमसः । ६५७-६५ । वसुर्भारद्वाजः । ६९१-७०५ ।
 ऋजिश्वा भारद्वाजः । १०३१-३२ । गर्गो भारद्वाजः । ११२७-३१ ।
 पायुर्भारद्वाजः । १२२७-२८ । वाच्यः प्रजापतिः । ७११-१५ ।
 अकृष्टा माषा । ७२८-७३७ । अकृष्टामाषाद्यस्त्रयः । ७५८-६७ ।
 सिकता निवावरी । ७३८-४७ । पृथिव्योऽजा । ७४८-५७ ।
 भौमोऽग्निः । ७६८-७२ । गृत्समदः शौनकः ७७३-७५ ।
 उशना काश्यः । ७७६-९९ । नोधा गौतम । ८१८-२२ ।
 दैवोदासिः प्रतर्दन । ८३३-५६ । दैवोदासि परच्छेपः । १२१६ ।
 पराशरः शाकल्यः । ८८७-९०० । गौरवीतिः शाकल्यः । १०२६-२७ ।
 अम्बरीषो वार्षांगिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । ९१५-२६ ।
 अन्धीगुः श्यावाश्वि । ९४४-४६ ।
 ययातिर्नाहुषः । ९४७-४९ । नहुषो मानवः । ९५०-५२ ।
 चक्षुर्मानवः । ९८९-९१ । मनुः सांवरणः । ९५३-५५ ।
 मनुगप्सवः । ९९२-९९४ ।
 अग्निश्चाक्षुषः । ९८६-८८, ९९५-९९ ।
 सप्तर्षयः (१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ काश्यपो मारीचः,
 ३ गोतमो राहुगणः, ४ भौमोऽग्निः, ५ विश्वामित्रो गायिनः,
 ६ जमदग्निर्भागवः ७ मैत्रावरुणिवसिष्ठः) १०००-१०२५ ।
 ऋणंचयो राजर्षिः । १०३७-३८ ।
 अग्नयो धिण्या ऐश्वरयः । १०४२-६३ ।
 त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः त्रसदस्यु पौरुकुस्यः । १०६४-७५ ।
 अनानतः पारुच्छेपिः । १०७६-७८ । ब्रह्मा ११८९ ।
 ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा । ११६०-७० ।
 सूर्यो सावित्री ऋषिका । ११७१-७५; १२३८ ।
 अथर्वा । ११७६-८६; ११९०; १२४४-६० ।
 बृहद्विदोऽथर्वा । ११८७ । शुक्र । ११८८ । बृहत्सुक्रः १२६१ ।
 वैवस्वतो यमः । १२३० । देवश्रवा यामायन । १२३१ ।
 मथितो यामायनः, ऋगुर्वारुणिर्वा, भार्गवश्च यमो
 वा । १२३४ । पतिवेदनः । १२३५; १२४३ ।
 बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायना । १२३६-३७ ।
 चातनः । १२४०-४१ । श्रुवंगिराः । १२४२ ।



दैवत-संहिता ।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणा संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण सम्यग् निर्मिताः ।]

३ सोमदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ ९ । १ । १- १०)

(१—१०) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

स्वादिष्टया मदिष्टया	पर्वस्व सोम धारया	। इन्द्राय पातवे सुतः	१
रक्षोहा विश्वचर्षणि	रभि योनिमयोहतम्	। द्रुणां सधस्थमासदत्	२
वरिवोधातमो भव	मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः	। पर्षि राधो मघोनाम्	३
अभ्यर्ष महानां	देवानां वीतिमन्धसा	। अभि वाजमुत श्रवः	४
त्वामच्छा चरामसि	तदिदर्थं दिवेदिवे	। इन्द्रो त्वे न आशसः	५
पुनार्ति ते परिस्रुतं	सोमं सूर्यस्य दुहिता	। वारंण शश्वता तनां	६
तमीमर्षीः समर्य आ	गृभ्णन्ति योषणो दश	। स्वसारः पार्यं दिवि	७
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो	धमन्ति बाकुरं दतिम्	। त्रिधातुं वारणं मधुं	८
अभीक्ष्णममघ्या उत	श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्	। सोममिन्द्राय पातवे	९
अस्पेदिन्द्रो मदेष्वा	विश्वा वृत्राणि जिघ्रते	। शूरा मघा च मंहते	१०

॥ २ ॥ (ऋ ९ । २ । १—१०)

(११—२०) मध्यातिथिः काण्व ।

पर्वस्व देववीरति	पवित्रं सोम रंघा	। इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश	१
आ वच्यस्व महि प्सरो	वृषेन्दो द्युम्रवत्तमः	। आ योनिं धर्णासिः सदः	२
अधुक्षत प्रियं मधु	धारां सुतस्य वेधसः	। अपो वमिष्ट सुक्रतुः	३
महान्तं त्वा महीर	न्वापो अर्षन्ति सिन्धवः	। यद्रोभिर्वासयिष्यसे	४
समुद्रो अप्सु मामृजे	विष्टम्भो धरुणो दिवः	। सोमः पवित्रं अस्मयुः	५
अचिक्रदद् वृषा हरि	र्महान् मित्रो न दर्शतः	। सं सूर्येण रोचते	६
गिरस्त इन्दु ओजसा	मर्ज्यन्ते अपस्युवः	। याभिर्मदाय शुम्भसे	७

तं त्वा मदीय धृष्य उ लोककृन्तुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः	८
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यां वृष्टिमाँ इव	९
गोपा इन्द्रो नृपा अस्यश्चसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्यः	१० २०

॥ ३ ॥ (ऋ ९।३।१—१०)

(२१—३०) आजीमर्तिः शुनःशेपः कृन्त्रिमाँ वैश्वामित्रो देवरात ।

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम्	१
एष देवो विषा कृतो ऽति हरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः	२
एष देवो विपन्युभिः पवमान क्रतायुभिः । हर्गिवाजाय मृज्यते	३
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति	४
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम्	५ २५
एष विप्रंरभिष्टुतो ऽपो देवो वि गाहते । दधद् रत्नानि दाशुषं	६
एष दिवं वि धावति तिरो रजांमि धारया । पवमानः कनिकदत्	७
एष दिवं व्यासरत तिरो रजांस्यस्पृतः । पवमानः स्वध्वरः	८
एष प्रलेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति	९
एष उ स्य पुंरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः	१० ३०

॥ ४ ॥ (ऋ ९।४।१—१०)

(३१—४०) हिरण्यस्तप आङ्गिरसः ।

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि	१
सना ज्योतिः सना स्वर्गो विश्वा च सोम सौमगा । अथा नो वस्यसस्कृधि	२
मना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि	३
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि	४
त्वं सूर्ये न आ मज तव क्रत्वा तवोतिभिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	५ ३५
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	६
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विर्हसं रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	७
अभ्यर्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	८
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि । अथा नो वस्यसस्कृधि	९
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि	१० ४०

॥ ५ ॥ (क्र ९ । ६ । १-९)

(४१-१९३) अस्मिन् काश्यपो देवलो वा ।

मन्द्रया सोम धारया	वृषा पवस्व देवयुः	। अच्यो वारं पवस्मयुः	१
अभि त्वं मद्यं मदु-	मिन्दुविन्द्र इति क्षर	। अभि वाजिनो अबेतः	२
अभि त्वं पृथ्व्य मदै	सुवानो अर्ष पवित्र आ	। अभि वाजमृत श्रवः	३
अनु द्रप्सास इन्द्रव	आपो न प्रवतासग्न	। पुनाना इन्द्रमाशत	४
यमन्यमिव वाजिनं	मृजन्ति योषणो दश	। वने क्रीळन्तमन्यविम्	५
तं गोभिर्वृषणं रसं	मदाय देववीतये	। सुतं भगाय सं मृज	६
देवो देवाय धारये-	न्द्राय पवते सुतः	। पयो यदस्य पीपयन्	७
आत्मा यज्ञस्य रंहा	सुष्वाणः पवते सुतः	। प्रलं नि पाति काच्यम्	८
एवा पुनान इन्द्रयु-	मदै मदिष्ट वीतये	। गुहां चिद दधिपे गिरः	९

॥ ६ ॥ (क्र ९ । ७ । १-९)

अमृग्रमिन्देवः पथा	धर्मन्तस्य सुश्रियः	। विदाना अस्य योजनम्	१
प्र धारा मध्वो अग्रियो	महीरपो वि गाहते	। हविर्हविष्पु वन्त्रः	२
प्र युजो वाचो अग्रियो	वृषाव चक्रदुद् वने	। सन्नाभि सन्त्यो अध्वरः	३
परि यत् काच्या कवि-	नृम्णा वमानो अर्पति	। स्वर्वाजी मिषामति	४
पवमानो अभि स्पृधो	विशो राजैव सीदति	। यदीमुषवन्ति वेधमः	५
अच्यो वारे परि प्रियो	हरिर्वनेषु सीदति	। रभो वनुष्यते मती	६
स वायुमिन्द्रमश्विना	साकं मदेन गच्छति	। रणा यो अस्य धर्मभिः	७
आ मित्रावरुणा भगं	मध्वः पवन्त ऊर्मयः	। विदाना अस्य शक्मभिः	८
अम्भ्य रोदमी गयिं	मध्वो वाजस्य मातये	। श्रवो वरुनि सं जितम्	९

॥ ७ ॥ (क्र ९ । ८ । १-९)

एते सोमा अभि प्रिय-	मिन्द्रस्य काममक्षग्न	। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्	१
पुनानासंश्चमूषदो	गच्छन्तो वायुमश्विना	। ते नो धान्तु सुवीर्यम्	२
इन्द्रस्य सोम राधसे	पुनानो हार्दि चोदय	। क्रतस्य योनिमासदम्	३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	हिन्वन्ति सप्त धीतयः	। अनु विप्रा अमादिषुः	४
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं	सृजानमति मेण्यः	। सं गोभिर्वासयामसि	५

पुनानः कलशेषा वस्त्राण्यरुषो हरिः । परि गव्यान्व्यव्यत	६	
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो सखायमा विश	७	६५
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि । सहो नः सोम पुत्सु धाः	८	
नृचक्ष्रमं त्वा वय—मिन्द्रपीतं स्वर्विदम् । भक्षीमहि प्रजामिषम्	९	

॥ ८ ॥ (ऋ ९ । ९ । १—९)

परि प्रिया दिवः कवि—र्वयांसि नृप्त्योर्हितः । सुवानो याति कविक्रतुः	१	
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहं । वीत्यर्प चनिष्ठया	२	
स सनुर्मातरा शुचि—र्जातो जाते अरोचयत् । महान् मही क्रतावृधा	३	७०
स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः । या एकमक्षि वावृधुः	४	
ता अभि सन्तममृतं महे युवानमा दधुः । इन्दुमिन्द्र तव व्रते	५	
अभि वह्निर्मर्त्यः सप्त पश्यति वार्वहिः । क्रिविर्देवीरतर्पयत्	६	
अवा कल्पेषु नः पुम—स्तमामि सोम योध्या । तानि पुनान जङ्घनः	७	
नू नव्यमे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः । प्रत्नवद् रोचया रुचः	८	७५
पवमान महि श्रवो गामश्च रासि वीरवत् । सना मेधां सना स्वः	९	

॥ ९ ॥ (ऋ ९ । १० । १—९)

प्र स्वानासो रथा इवा—र्वन्तो न श्रवस्यवः । सोमासो राये अक्रमुः	१	
हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गर्भस्त्योः । भरांसः कारिणामिव	२	
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमामो गोभिरञ्जते । यज्ञो न सप्त धातृभिः	३	
परि सुवानाम इन्दवो मदाय वर्हणा गिरा । सुता अर्पन्ति धारया	४	८०
आपानासो विवस्वतो जनन्त उपसो भगम् । स्ररा अण्वं वि तन्वते	५	
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः । वृष्णो हरस आयवः	६	
समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः । पदमेकस्य पिप्रतः	७	
नाभा नाभि न आ ददे चक्षुश्चित् सूर्ये सचा । कवेरपत्यमा दुहे	८	
अभि प्रिया दिवस्पद—मध्वर्युभिर्गुहाहितम् । सूरः पश्यति चक्षसा	९	८५

॥ १० ॥ (ऋ ९ । ११ । १—९)

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवा इयक्षते	१	
अभि ते मधुना पयो ऽथर्वाणो अशिश्नयुः । देवं देवाय देवयु	२	
स नः पवस्व शं गत्रे शं जनाय शमवते । शं राजन्नाषधीभ्यः	३	८८

बभ्रवे नु स्वतवसे ऽरुणाय दिविस्पृशे	। सोमाय गाथमर्चत	४	
हस्तंच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन	। मधावा धावता मधुं	५	९०
नमसेदुर्प सीदत दुधेदुभि श्रीणीतन	। इन्दुमिन्द्रे दधातन	६	
अमित्रहा विचर्षणिः पर्वस्व सोमं शं गवे	। देवेभ्यो अनुकामकृत्	७	
इन्द्राय सोमं पातवे मदाय परि पिच्यमे	। मनश्चिन्मनसस्पतिः	८	
पर्वमान सुवीर्यं रयिं सोमं रिरिहि नः	। इन्द्राविन्द्रेण नो युजा	९	

॥ ११ ॥ (ऋ ९ । १० । १-९)

सोमो असुग्रमिन्दवः सुता क्रतस्य मादने	। इन्द्राय मधुमत्तमाः	१	९५
अभि विप्रा अनृपत गावो वत्सं न मातरः	। इन्द्रे सोमस्य पीतये	२	
मदच्युत् क्षेति सादने मिन्धोरुर्मा विपश्चित्	। सोमो गौरी अधि श्रितः	३	
दिवो नाभा विचक्षुणो ऽव्यो वारे महीयते	। सोमो यः सुकृतः कविः	४	
यः सोमः कलशेषाँ अन्तः पवित्र आहितः	। तमिन्दुः परि षस्वजे	५	
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि	। जिन्वन् कोशं मधुश्रुतम्	६	१००
नित्यंस्तोत्रो वनस्पतिर्धर्मात्मन्तः सर्वर्षः	। हिन्वानो मानुषा युगा	७	
अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्पति	। विप्रस्य धारया कविः	८	
आ पर्वमान धारय रयिं महस्त्वर्चसम्	। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्	९	

॥ १२ ॥ (ऋ ९ । १३ । १-९)

सोमः पुनानो अर्पति सहस्रधारो अन्यविः	। वायोरिन्द्रेण निष्कृतम्	१	
पर्वमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गांयत	। सुष्वाणं देववीतये	२	१०५
पर्वन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः	। गृणाना देववीतये	३	
उत नो वाजसातये पर्वस्व बृहतीरिषः	। क्षुमदिन्दो सुवीर्यम्	४	
ते नः सहस्रिणं रयिं पर्वन्तामा सुवीर्यम्	। सुवाना देवास इन्दवः	५	
अत्या हियाना न हेतुभि रमृग्रं वाजसातये	। वि वारमव्यमाशवः	६	
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽभि वत्सं न धेनवः	। दुधन्विरे गर्भस्त्योः	७	११०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पर्वमान कनिकदन्	। विश्वा अप द्विषो जहि	८	
अपघ्नन्ता अराव्णः पर्वमानाः स्पर्द्धशः	। योनावृतस्य मीदत	९	

॥ १३ ॥ (ऋ ९ । १४ । १-८)

परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरुर्मावधि श्रितः	। कारं विभ्रत् पुरुस्पृहम्	१	
गिरा यदी सर्वन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः	। परिष्कृण्वन्ति धर्णमिम्	२	११४

आदस्य शुष्मिणो रसे	विश्वे देवा अमन्सत	। यदी गोभिर्वसायते	३	११५
निरिणानो वि धावति	जहच्छयीणि तान्वा	। अत्रा सं जिघ्रते युजा	४	
नमीभिर्यो विवस्वतः	शुभ्रो न मामृजे युवा	। गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	५	
अतिं श्रिती तिरश्चता	गव्या जिगात्यण्व्या	। वग्नुर्मियति यं विदे	६	
अभि क्षिपः समग्मत	मर्जयन्तीरिपस्पतिम्	। पृष्ठा गृण्णत वाजिनः	७	
परि दिव्यानि मर्मेशद	विश्वानि सोम पार्थिवा	। वसूनि याह्यस्मयुः	८	१२०

॥ १४ ॥ (क ९ । १५ । १८)

एष धिया यान्यण्व्या	शरो रथेभिराशुभिः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	१	
एष पुरू धियायते	बृहते देवतातये	। यत्रामृतास आमते	२	
एष हितो वि नीयते	ऽन्तः शुभ्रावता पथा	। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः	३	
एष शृङ्गाणि दोधुव	च्छिशीते यृध्वोऽं वृषा	। नृम्णा दधान ओजमा	४	
एष रुक्मिभिरीयते	वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः	। पतिः सिन्धेनां भवन्	५	१२५
एष वसूनि पिबुना	परुषा ययिवा अति	। अव शार्देषु गच्छति	६	
एतं मृजन्ति मर्ज्य	मुष द्रोणेष्वायवः	। प्रचक्राणं महीरिपः	७	
एतमु न्यं दश क्षिपो	मृजन्ति सप्त धीतयः	। स्वायुधं मदिन्तमम्	८	

॥ १५ ॥ (क ९ । १६ । १—८)

प्र ते सोतारं ओण्योऽं	रसं मदाय घृष्वये	। मर्गो न तक्त्येतशः	१	
क्रत्वा दक्षस्य रथ्य	मपो वमानमन्धसा	। गोषामर्गेषु सश्विम	२	१३०
अनस्रमसु दुष्टरं	सोमं पवित्र आ मृज	। पुनीहीन्द्राय पार्तवे	३	
प्र पुनानस्य चेतसा	सोमः पवित्रे अर्षति	। क्रत्वा सधस्थमासदत्	४	
प्र त्वा नमोभिरिन्द्रव	इन्द्र सोमा असृक्षत	। महे भराय कारिणः	५	
पुनानो रूपे अव्यये	विश्वार् अर्षन्नभि श्रियः	। शरो न गोषु तिष्ठति	६	
दिवो न सानु पिप्युषी	धारा सुतस्य वेधसः	। वृथा पवित्रे अर्षति	७	१३५
त्वं सोम विपश्चितं	तना पुनान आयुषं	। अव्यो वारं वि धावमि	८	

॥ १६ ॥ (क. ९ । १७ । १—८)

प्र निम्नेनैव सिन्धवो	घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः	। सोमा असृग्रमाश्वः	१	
अभि सुवानास इन्द्रवो	वृष्टयः पृथिवीमिव	। इन्द्रं सोमासो अक्षरन्	२	१३८

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदुः	सोमः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षासि देवयुः	३	
आ कलशेषु घावति	पवित्रे परि पिच्यते	। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते	४	१४०
अति त्री सोम रोचना	रोहन् न भ्राजसे दिवम्	। इष्णन्त्स्यं न चोदयः	५	
अभि विप्रा अनपत	मूर्धन् यज्ञस्य कारवः	। दधानाश्चक्ष्मि प्रियम्	६	
तमु त्वा वाजिनं नरो	धीभिर्विप्रा अवस्यवः	। मृजन्ति देवतातये	७	
मधोर्धारागमु क्षर	तीव्रः सधस्थमासदः	। चारुर्कृताय पीतये	८	

॥ १७ ॥ (ऋ ९ । १८ । १-७)

परि सुवानो गिरिष्ठाः	पवित्रे सोमो अक्षाः	। मदेपु सर्वधा असि	१	१४१
त्वं विप्रस्त्वं कवि—र्मधु	प्र जातमन्धसः	। मदेपु सर्वधा असि	२	
तव विश्वे सजोषमो	देवामः पीतिमाशत	। मदेपु सर्वधा असि	३	
आ यो विश्वानि वार्या	वसूनि हस्तयोर्दधे	। मदेपु सर्वधा असि	४	
य इमे रोदसी मही	सं मातरं दोहते	। मदेपु सर्वधा असि	५	
परि यो रोदसी उभे	सद्यो वाजैभिरर्पति	। मदेपु सर्वधा असि	६	१४२
स शुष्मी कलशेषा	पुनानो अचिक्रदत्	। मदेपु सर्वधा असि	७	

॥ १८ ॥ (ऋ ९ । १९ । १-७)

यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	दिव्यं पार्थिवं वसु	। तन्नः पुनान आ भर	१	
युवं हि स्थः स्वर्पती	इन्द्रश्च सोम गोपती	। ईशाना पिप्यतं धियः	२	
वृषा पुनान आयुषु	स्तनयन्नार्धि बर्हिषि	। हरिः सन् योनिमासदत्	३	
अवावशन्त धीतयो	वृषभस्याधि रेतसि	। सूनोर्वत्सस्य मातरः	४	१४५
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः	पुनानो गर्भमादधत्	। याः शुक्रं दुहते पयः	५	
उप शिक्षापतुस्थुषां	भियसमा धेहि शत्रुषु	। पवमान विदा रयिम्	६	
नि शत्रोः सोम वृण्यं	नि शुष्मं नि वयस्तिग्	। दूरे वा सतो अन्ति वा	७	

॥ १९ ॥ (ऋ ९ । २० । १-७)

प्र कविर्देवर्षितये	ऽव्यो वारंभिरर्पति	। माह्वान विश्वा अभि स्पृधः	१	
स हि ष्मा जरितृभ्य आ	वाजं गोमन्तमिन्वति	। पवमानः सहस्रिणम्	२	१६०
परि विश्वानि चेतसा	मृशमे पवसे मती	। स नः सोम श्रवां विदः	३	
अभ्यर्ष बृहद् यशो	मघर्वद्भ्यो ध्रुवं रयिम्	। इषं स्तोतृभ्य आ भर	४	१६२

त्वं राजेव सुव्रतो	गिरः सोमा विवेशिथ	। पुनानो वह्ने अद्भुत	५
स वहिरप्सु दुष्टरां	मुज्यमानो गर्भस्त्योः	। सोमश्चमूषु सीदति	६
क्रीळर्मखो न मेहयुः	पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	७ १६५

॥ २० ॥ (ऋ. ९।२१। १-७)

एते धावन्तीन्दवः	सोमा इन्द्राय घृष्वयः	। मत्सरासः स्वविदः	१
प्रवृण्वन्तो अभियुजः	सुष्वये वरिवोविदः	। स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः	२
वृथा क्रीळन्त इन्दवः	सधस्थमभ्येकमिह	। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरन्	३
एते विश्वानि वार्या	पवमानास आशत	। हिता न मत्स्यो रथे	४
आसिन् पिशङ्गमिन्दवो	दधाता वेनमादिशे	। यो अस्मभ्यमरावा	५ १७०
ऋधुर्न रथ्यं नवं	दधाता केतमादिशे	। शुक्राः पवध्वमर्णसा	६
एत उ त्वे अवीवशन्	काष्ठां वाजिनो अकृत	। मतः प्रासाविषुर्मतिम्	७

॥ २१ ॥ (ऋ. ९।२२। १-७)

एतं सोमास आशवो	रथा इव प्र वाजिनः	। सर्गाः सृष्टा अहेषत	१
एते वाता इवोरवः	पर्जन्यस्येव वृष्टयः	। अग्रेरिव भ्रमा वृथा	२
एते पूता विपश्चितः	सोमासो दध्याशिरः	। विषा व्यानशुर्धियः	३ १७५
एते मृष्टा अमर्न्याः	ससुवांसो न शश्रमुः	। इयक्षन्तः पथो रजः	४
एते पृष्ठानि रोदसो	विप्रयन्तो व्यानशुः	। उतेदमुत्तमं रजः	५
तन्तुं तन्वानमुत्तम	मनु प्रवत आशत	। उतेदमुत्तमार्थम्	६
त्वं सोम पणिभ्य आ	वसु गव्यानि धारयः	। ततं तन्तुमचिक्रदः	७

॥ २२ ॥ (ऋ. ९।२३। १-७)

सोमा असृग्रमाशवो	मधोर्मदस्य धारया	। अभि विश्वानि काव्या	१ १८०
अनु प्रत्तास आयवः	पदं नवीयो अक्रमुः	। रुचे जनन्त सूर्यम्	२
आ पवमान नो भरा	ऽर्यो अदाशुषो गयम्	। कृधि प्रजावतीरिषः	३
अभि सोमास आयवः	पवन्ते मद्यं मदम्	। अभि कोशं मधुश्रुतम्	४
सोमो अर्षति धर्णसि	र्दधान इन्द्रियं रसम्	। सुवीरो अभिशस्तिपाः	५
इन्द्राय सोम पवसे	देवेभ्यः सधमाद्यः	। इन्द्रो वाजं सिषाससि	६ १८५
अस्य पीत्वा मदाना	मिन्द्रो वृत्राण्यप्रति	। जघान जघनञ्च नु	७ १८६

॥ २३ ॥ (ऋ ९ । २४ । १-७)

प्र सोमासो अधन्विषुः पर्वमानास इन्द्रवः । श्रीणाना अप्सु मृज्जत	१
अभि गावो अधन्विषु—रापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत	२
प्र पर्वमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे । नृभिर्यतो वि नीयसे	३
त्वं सोम नृमादनुः पर्वस्व चर्षणीसहे । सस्त्रियो अनुमाद्यः	४ १९०
इन्द्रो यदाद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि । अरमिन्द्रस्य धाम्ने	५
पर्वस्व वृत्रहन्तमो—कथेभिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः	६
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः । देवावीरघशंसहा	७ १९३

॥ २४ ॥ (ऋ ९ । २५ । १-६) (१९४—१९९) दृळ्हच्युत आगस्त्यः ।

पर्वस्व दक्षसार्धनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः	१
पर्वमान धिया हितोऽभि योनिं कर्निक्रदत् । धर्मेणा वायुमा विश	२ १९५
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः	३
विश्वा रूपाण्याविशन् पुनानो याति हर्यतः । यत्रामृतास आसते	४
अरुषो जनयन् गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन् कविक्रतुः	५
आ पर्वस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम्	६ १९९

॥ २५ ॥ (ऋ ९ । २६ । १-६) (२००—२०५) इधमवाहो दार्ढ्यच्युतः ।

तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि । विप्रासो अण्व्यां धिया	१ २००
तं गावो अभ्यनृषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्द्रं धर्तारमा दिवः	२
तं वेधां मेधयाह्यन् पर्वमानमधि दधि । धर्णासि भरिधायसम्	३
तमह्यन् भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः । पतिं वाचो अदाभ्यम्	४
तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । हर्यतं भूरिचक्षसम्	५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पर्वमान गिरावृधम् । इन्दुविन्द्राय मत्सरम्	६ २०५

॥ २६ ॥ (ऋ ९ । २७ । १-६) (२०६—२११) नृमेध आङ्गिरसः ।

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते । पुनानो मन्त्रप सिधः	१
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि पिच्यते । पवित्रे दक्षसार्धनः	२
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः । सोमो वनेषु विश्ववित्	३
एष गव्युरचिक्रदत् पर्वमानो हिरण्ययुः । इन्द्रः सत्राजिदस्तुतः	४ २०९

एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि	। पवित्रे मत्सरो मदः	५	२१०
एष शुष्मसिष्यद—दन्तरिक्षे वृषा हरिः	। पुनान इन्दुरिन्द्रमा	६	२११

॥ २७ ॥ (ऋ ९ । २८ । १—६) (२१२—२१७) प्रियमेध आङ्गिरसः ।

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः	। अव्यो वारं वि धावति	१	
एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः	। विश्वा धामान्याविशन्	२	
एष देवः शुभायते अधि योनावमर्त्यः	। वृत्रहा देववीतमः	३	
एष वृषा कर्तिक्रदद् दुशभिर्जामिभिर्भृतः	। अभि द्रोणानि धावति	४	२१५
एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः	। विश्वा धामानि विश्ववित्	५	
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति	। देवावीरघशंसहा	६	२१७

॥ २८ ॥ (ऋ ९ । २९ । १—६) (२१८—२२३) नृमेध आङ्गिरसः ।

प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसा	। देवा अनु प्रभूषतः	१	
मसि मृजन्ति वेधयो गृणन्तः कारवो गिरा	। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्	२	
सुपहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो	। वर्धा समुद्रमुक्थ्यम्	३	२२०
विश्वा वसूनि संजयन् पवस्व सोम धारया	। इनु द्वेषांसि सध्र्यक्	४	
रक्षा सु नो अररुषः स्वनान् समस्य कस्य चित्	। निदो यत्र मुमुन्महे	५	
एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया	। द्युमन्तं शुष्ममा भर	६	२२३

॥ २९ ॥ (ऋ ९ । ३० । १—६) (२२४—२२९) विन्दुराङ्गिरसः ।

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन्	। पुनानो वाचमिष्यति	१	
इन्दुर्हियानः सोतुभिर्मृज्यमानः कर्तिक्रदत्	। इयति वशुभिन्द्रियम्	२	२२५
आ नः शुष्मं नृपाद्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम्	। पवस्व सोम धारया	३	
प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत्	। अभि द्रोणान्यासदम्	४	
अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दविन्द्राय पीतये	५	
सुनाना मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणं	। चारुं शर्षाय मत्सरम्	६	२२९

॥ ३० ॥ (ऋ ९ । ३१ । १—६) (२३०—२३५) गोतमो राहूगणः ।

प्र सोमांसः स्वाध्यः पवमानासो अक्रमुः	। रयिं कृण्वन्ति चेतनम्	१	२३०
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युमन्वर्धनः	। भवा वाजानां पतिः	२	
तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	। सोम वर्धन्ति ते महः	३	२३२

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ४
 तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुदुहे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सानवि ५
 स्वायुधस्य ते मतो भुवनस्य पते वयम् । इन्द्रो सखित्वमुश्ममि ६ २३५

॥ ३१ ॥ (क ९ । ३२।१-६) (२३६—२४१) इयावाश्व आत्रेयः ।

प्र सोमांसो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः । सुता विदथे अक्रमुः १
 आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वत्याद्रिभिः । इन्द्रमिन्द्राय पीतये २
 आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अन्थो न गोभिर्गज्यते ३
 उभे सोमावचाकशन् मृगो न तक्तो अर्पमि । मीदन्मृतस्य योनिमा ४
 अभि गावो अनपत् योषां जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम् ५ २४०
 अस्मे धेहि धुमद् यशो मघवञ्जश्च मघ्यं च । सनिं मेधामुत श्रवः ६ २४१

॥ ३२ ॥ (क ९ । ३३।१-६) (२४२—२५३) त्रित आत्रेयः ।

प्र सोमांसो विपश्चितो ऽपां न यन्त्यूर्मयः । वनानि महिषा इव १
 अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा क्रतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् २
 सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्पन्ति विष्णवे ३
 तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिंरतिं कनिक्रदत् ४ २४५
 अभि ब्रह्मीरनूपत यद्हीर्कृतस्य मातरः । मर्मज्यन्ते दिवः शिशुम् ५
 रायः समुद्रांश्चतुरो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व महस्मिणः ६

॥ ३३ ॥ (क ९ । ३४।१-६)

प्र सुत्रानो धारया तनं—न्दुहिन्वानो अर्पति । रुजद् दृक्का व्योजमा १
 सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्पति विष्णवे २
 वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शकम्ना पयः ३ २५०
 भुवत् त्रितस्य मज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः । स रूर्परज्यते हरिः ४
 अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारुं प्रियतमं हविः ५
 समैनमहुता इमा गिरो अर्पन्ति मस्रुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशन् ६ २५३

॥ ३४ ॥ (क ९ । ३५।१-६) (२५४—२६५) प्रभूवसुगाङ्गिरसः ।

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदासि नः १
 इन्द्रो समुद्रमीङ्क्षय पवस्व विश्वमेजय । रायो धर्ता न ओजमा २ २५५

त्वया वीरेण वीरवो	ऽभि ष्याम पृतन्यतः	। क्षरा णो अभि वार्यम्	३
प्र वाजमिन्दुरिष्यति	सिषासन् वाजसा ऋषिः	। व्रता विद्वान आयुधा	४
तं गीर्भिर्वाचमीङ्ख्यं	पुनानं वासयामसि	। सोमं जनस्य गोपतिम्	५
विश्वो यस्य व्रते जनो	दाधार धर्मेणस्पतेः	। पुनानस्य प्रभूवसोः	६

॥ ३५ ॥ (ऋ ९ । ३६ । १—६)

असर्जि रथ्यो यथा	पवित्रे चम्बोः सुतः	। काष्मिन् वाजी न्यक्रमीत्	१	२६०
स वह्निः सोम जागृविः	पर्वस्व देववीरति	। अभि कोशं मधुश्रुतम्	२	
स नो ज्योतीषि पूर्य	पर्वमान वि रोचय	। क्रत्वे दक्षाय नो हिनु	३	
शुम्भमान क्रतायुभिः	मृज्यमानो गर्भस्त्योः	। पर्वते वरि अव्यये	४	
स विश्वा दाशुषे वसु	सोमो दिव्यानि पार्थिवा	। पर्वतामान्तरिक्ष्या	५	
आ दिवस्पृष्टमध्वयुः	सोम रोहसि	। वीरयुः श्वसस्पते	६	२६५

॥ ३६ ॥ (ऋ ९ । ३७ । १—६) (२६६—२७७) रङ्गगण आङ्गिरसः ।

स सुतः पीतये वृषा	सोमः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	१	
स पवित्रे विचक्षणो	हरिरर्पति घर्णसिः	। अभि योनिं कनिकदत्	२	
स वाजी रोचना दिवः	पर्वमानो वि धावति	। रक्षोहा वारमव्ययम्	३	
स त्रितस्याधि सानवि	पर्वमानो अरोचयत्	। जामिभिः सूर्य सह	४	
स वृत्रहा वृषा सुतो	वरिवोविददाभ्यः	। सोमो वाजमिवासरत्	५	२७०
स देवः कविर्नेपितोऽ	ऽभि द्रोणानि धावति	। इन्दुरिन्द्राय मंहना	६	

॥ ३७ ॥ (ऋ ९ । ३८ । १—६)

एष उ स्य वृषा रथो	ऽव्यो वारिभिरर्पति	। गच्छन् वाजं सहस्रिणम्	१	
एतं त्रितस्य योषणो	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दुमिन्द्राय पीतये	२	
एतं त्यं हरितो दश	मर्मज्यन्ते अपस्युवः	। याभिर्मदाय शुम्भते	३	
एष स्य मानुषीष्वा	श्येनो न विक्षु सीदति	। गच्छेच्चारो न योषितम्	४	२७५
एष स्य मद्यो रसो	ऽव चष्टे दिवः शिशुः	। य इन्दुर्वारमाविशत्	५	
एष स्य पीतये सुतो	हरिरर्पति घर्णसिः	। क्रन्दन् योनिमभि प्रियम्	६	२७७

॥ ३८ ॥ (ऋ ९ । ३९ । १—६) (२७८—२८९) बृहन्मतिराङ्गिरसः ।

आशुरर्ष बृहन्मते	परि प्रियेण धाम्ना	। यत्र देवा इति ब्रवन्	१	
परिष्कृष्वन्निकृतं	जनाय यातयन्निषः	। वृष्टिं दिवः परि स्रव	२	२७९

सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा । विचक्षाणो विरोचयन्	३	२८०
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ । सिन्धोरूमा व्यक्षरत्	४	
आविवांसन् परावतो अथौ अर्वावतः सुतः । इन्द्राय सिच्यते मधु	५	
समीचीना अनूषत् हरिं हिन्वन्त्याद्रिभिः । योनावृतस्य सीदत	६	

॥ ३९ ॥ (ऋ. ९ । ४० । १-६)

पुनानो अक्रमीदुभि विश्वा मृधो विचर्षणिः । शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः	१	
आ योनिमरुणो रुहद् गमदिन्द्रं वृषा सुतः । ध्रुवे सदसि सीदति	२	२८५
नू नो रयिं महामिन्द्रो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम्	३	
विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दुवा भर । विदाः सहस्रिणीरिषः	४	
स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् । जरितुर्वधया गिरः	५	
पुनान इन्दुवा भर सोम द्विर्वहसं रयिम् । वृषन्निन्दो न उक्थ्यम्	६	२८९

॥ ४० ॥ (ऋ. ९ । ४१ । १-६) (२९०-३०७) मेध्यातिथि काण्व ।

प्र ये गात्रो न भूर्णय-स्त्वेपा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्	१	२९०
सुवितस्य मनामहे ऽति सेतुं दुराव्यम् । साह्यांसो दस्युमव्रतम्	२	
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः । चरन्ति विद्युतो दिवि	३	
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् । अश्वाद् वाजवत् सुतः	४	
स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण । उपाः सूर्यो न रश्मिभिः	५	
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः । सरा रसेव विष्टपम्	६	२९५

॥ ४१ ॥ (ऋ. ९ । ४२ । १-६)

जनयन् रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम् । वसानो गा अपो हरिः	१	
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि । धारया पवते सुतः	२	
बावृधानाय तूर्वेये पवन्त वाजसातये । सोमाः सहस्रपाजसः	३	
दुहानः प्रलामित् पर्यः पवित्रे परिं पिच्यते । क्रन्दन् देवां अजीजनत्	४	
अभि विश्वानि वार्या ऽभि देवां क्रतावृधः । सोमः पुनानो अर्षति	५	३००
गोमन्नः सोम वीरव-दश्वावद् वाजवत् सुतः । पवस्व बृहतीरिषः	६	

॥ ४२ ॥ (ऋ. ९ । ४३ । १-६)

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः । तं गीर्भिर्वीसयामसि	१	
तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा । इन्द्रमिन्द्राय पीतये	२	३०३

पुनानो याति हृतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः । विप्रस्य मेध्यातिथेः	३	
पर्वमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम्	४	३०५
इन्दुरत्यो न वाजसृत् कर्निक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षरति देवयुः	५	
पर्वस्व वाजमातये विप्रस्य गृणतो वृधे । सोम रास्व सुवीर्यम्	६	३०७

॥ ४३ ॥ (क ९ । ४४ । १—६) (३०८—३१५) अयास्य आङ्गिरस ।

प्र ण इन्दो महे तर्न ऊर्भि न विभ्रदर्पमि । अभि देवा अयास्यः	१	
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः	२	
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः	३	३१०
स नः पवस्व वाजयु—श्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्मो आ विवासति	४	
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वायमत्	५	
स नो अद्य वसुन्तये क्रतुविद् गातुवित्तमः । वाजं जेपि श्रवो बृहत	६	

॥ ४४ ॥ (क ९ । ४५ । १—६)

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दुविन्द्राय पीतये	१	
स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशमे । देवान्त्सग्विभ्य आ वरम्	२	३१५
उत त्वामरुणं वयं गोभिरङ्गमो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि	३	
अत्यु पवित्रमकमीद् वाजी धुरं न यामनि । इन्दुदेवेषु पत्यते	४	
समी सखायो अस्वरन् वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनृषत	५	
तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षमे । इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम्	६	

॥ ४५ ॥ (क ९ । ४६ । १—६)

असृग्रन् देववीतये स्त्यासः कृत्व्या इव । क्षरन्तः पर्वतावृधः	१	३२०
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती । वायुं सोमो असृक्षत	२	
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्माभिः	३	
आ धावता सहस्तयः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना । गोभिः श्रीणीत मत्सरम्	४	
स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित्	५	
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पर्वमानं दश क्षिपः । इन्द्राय मत्सरं मदम्	६	३२५

॥ ४६ ॥ (क ९ । ४७ । १—५) (३२६—३४०) कविर्भागवः ।

अया सोमः सुकृत्यया महाश्रिदुभ्यवर्धत । मन्द्रान उद् वृषायते	१	
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा । ऋणा च धृष्णुश्चयते	२	३२७

आत् सोमं इन्द्रियो रसो	वन्नः सहस्रसा भुवत् ।	उक्थं यदस्य जायते	३
स्वयं कविर्विधतरि	विप्राय रत्नमिच्छति ।	यदी मर्मज्यते धियः	४
सिषासतू रयीणां	वाजेष्वर्षितामिव ।	भरेषु जिग्युषामसि	५ ३३०

॥ ४७ ॥ (ऋ ९।४८।१-५)

तं त्वा नृम्णानि विभ्रतं	सधस्थेषु महो दिवः ।	चारुं सुकृत्ययंमहे	१
संवृक्तधृष्णमुक्थयं	महामहित्रतं मदम् ।	शतं पुरो रुरुक्षणिम्	२
अतस्त्वा रयिमभि	राजानं सुकृतो दिवः ।	सुपर्णा अव्यथिर्भरत्	३
विश्वस्मा इत् स्वर्हृशे	साधारणं रजस्तुग्म् ।	गोषामृतस्य विर्भरत्	४
अधा हिन्वान इन्द्रियं	ज्यायो महित्वमानशे ।	अभिष्टिकृद् विचर्षणिः	५ ३३५

॥ ४८ ॥ (ऋ ९।४९।१-५)

पवस्व वृष्टिमा सु नो	ऽपामूर्मि दिवस्परि	अयक्ष्मा बृहतीरिषः	१
तया पवस्व धारया	यया गावं इहागमन्	जन्यास उप नो गृहम्	२
घृतं पवस्व धारया	यज्ञेषु देववीतमः ।	अस्मभ्यं वृष्टिमा पव	३
स न ऊर्जे व्यध्वययं	पवित्रं धाव धारया	देवासः शृणवन् हि कम्	४
पवमानो असिष्यदुद्	रक्षांस्यपजङ्घनत् ।	प्रत्नवद् रोचयन् रुचः	५ ३४०

॥ ४९ ॥ (ऋ ९।५०।१-५) (३४१ ३५५) उचथ्य आङ्गिरसः ।

उत् ते शुष्मास ईरते	सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः ।	वाणस्य चोदया पविम्	१
प्रसवे त उदीरते	निस्त्रो वाचो मखस्युवः ।	यदव्य एपि सान्वि	२
अव्यो वारे परि प्रियं	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।	पवमानं मधुश्रुतम्	३
आ पवस्व मदिन्तम	पवित्रं धारया कवं ।	अर्कस्य योनिमासदम्	४
स पवस्व मदिन्तम	गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।	इन्द्रविन्द्राय पीतये	५ ३४५

॥ ५० ॥ (ऋ ९।५१।१-५)

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	सोमं पवित्र आ सृज	पुनीहीन्द्राय पातवे	१
दिवः पीयूषमुत्तमं	सोममिन्द्राय वज्रिणे	सुनोता मधुमत्तमम्	२
तव त्य इन्द्रो अन्धसो	देवा मधोर्व्यश्रते ।	पवमानस्य मरुतः	३
त्वं हि सोम वर्धयन्तसुतो	मदाय भूर्णये ।	वृषन्तस्तोतारमृतये	४
अभ्यर्ष विचक्षण	पवित्रं धारया सुतः ।	अभि वाजमुत श्रवः	५ ३५०

॥ ५१ ॥ (ऋ ९ । ५२ । १—५)

परिं द्युक्षः सनद्रंयि—भरद्वाजै नो अन्धसा	। सुवानो अर्ष पवित्र आ	१
तव प्रलेभिरध्वभि—रव्यो वारे परिं प्रियः	। सहस्रधारो यात् तना	२
चरुर्न यस्तमीङ्खये—न्दो न दानमीङ्खय	। वधैर्वधस्नवीङ्खय	३
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्	। यो अस्माँ आदिदेशति	४
शतं न इन्द्र अतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम्	। पवस्व मंहयद्रयिः	५ ३५५

॥ ५२ ॥ (ऋ ९ । ५३ । १—४) (३५६—३८७) अवन्सारः काश्यपः ।

उत् ते शुष्मासो अस्थ रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः	। नुदस्व याः परिस्पृधः	१
अया निजग्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते	। स्तवा अर्बिभ्युषा हृदा	२
अस्य व्रतानि नाधृपे पर्वमानस्य दूढ्या	। रुज यस्त्वा पृतन्यति	३
तं हिंन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्	। इन्द्रुमिन्द्राय मत्सरम्	४

॥ ५३ ॥ (ऋ ९ । ५४ । १—४)

अस्य प्रतामनु द्युतं शुक्रं दुदुहे अहयः	। पयः सहस्रसामृषिम्	१ ३६०
अयं सूर्य इवोपट—गयं सरांसि धावति	। सप्त प्रवत् आ दिवम्	२
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि	। सोमो देवो न सूर्यः	३
परिं णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः	। पुनान इन्द्रविन्द्रयुः	४

॥ ५४ ॥ (ऋ ९ । ५५ । १—४)

यवैयवं नो अन्धसा पुष्टं पुष्टं परिं स्रव	। सोम विश्वा च सौभगा	१
इन्द्रो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः	। नि बर्हिषि प्रिये संदः	२ ३६५
उत नो गोविदश्चवित् पवस्व सोमान्धसा	। मक्षूतमेभिरहभिः	३
यो जिनाति न जीर्यते हन्ति शत्रुमभीत्यं	। स पवस्व सहस्रजित्	४

॥ ५५ ॥ (ऋ ९ । ५६ । १—४)

परि सोम क्रतुं बृह—दाशुः पवित्रे अर्षति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	१
यत् सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः	। इन्द्रस्य सख्यमाविशन्	२
अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानुषत	। मृज्यसे सोम सातये	३ ३७०
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्द्रो परिं स्रव	। नृन्स्तोतृन् पाहंसः	४ ३७१

॥ ५६ ॥ (ऋ. ९ । ५७ । १-४)

प्र ते धारा असञ्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम्	१	
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुज्ञान आयुधा	२	
स मर्मज्ञान आयुभि—रिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसं पीदति	३	
स नो विश्वा दिवो वसू—तो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दुवा भर	४	३७५

॥ ५७ ॥ (ऋ. ९ । ५८ । १-४)

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत् स मन्दी धावति	१	
उस्त्रा वेदु वस्त्रनां मर्तस्य देव्यवसः । तरत् स मन्दी धावति	२	
ध्वस्त्रयोः पुरुषन्त्यो—रा सहस्राणि दग्धहे । तरत् स मन्दी धावति	३	
आ ययौस्त्रिशतं तना सहस्राणि च दग्धहे । तरत् स मन्दी धावति	४	

॥ ५८ ॥ (ऋ. ९ । ५९ । १-४)

पर्वस्व गोजिदंश्चजिद् विश्वजित् सोम रण्यजित् । प्रजावद् रत्नमा भर	१	३८०
पर्वस्वाञ्जो अदाभ्युः पर्वस्वांषधीभ्यः । पर्वस्व धिपर्णाभ्यः	२	
त्वं सोम पर्वमानो विश्वानि दुरिता तर । कविः सीदु नि बर्हिषि	३	
पर्वमानु स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् । इन्दो विश्वा अभीदसि	४	

॥ ५९ ॥ (ऋ. ९ । ६० । १-४) गायत्री, ३ पुरउष्णिक् ।

प्र गायत्रेण गायत पर्वमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम्	१	
तं त्वा सहस्रचक्षस—मथो सहस्रभर्णसम् । अति वारंमपाविषुः	२	३८५
अति वारान् पर्वमानो असिष्यदत् कलशां अभि धावति । इन्द्रस्य हार्द्याविशन्	३	
इन्द्रस्य सोम राधसे शं पर्वस्व विचर्षणे । प्रजावद् रेत आ भर	४	३८७

॥ ६० ॥ (ऋ. ९ । ६१ । १-३०) (३८८—४१७) अमहीयुराङ्गिरस ।

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन् नवतीर्नवं	१	
पुरः सद्य इत्थार्धिये दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्वं तुर्वशं यदुम्	२	
परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत् । क्षरा सहस्रिणीरिषः	३	३९०
पर्वमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दुतः । सखित्वमा वृणीमहे	४	
ये ते पवित्रमूर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । तेभिर्नः सोम मृळय	५	
स नः पुनान आ भर रयि वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः	६	
एतमु त्वं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत	७	३९४

३० [सोमः] ३

समिन्द्रेणोत वायुना	सुत एति पवित्र आ	। सं सूर्यस्य रुश्मिभिः	८	३९५
स नो भगाय वायवे	पूष्णे पवस्व मधुमान्	। चारुमित्रे वरुणे च	९	
उच्चा ते जातमन्धसो	दिवि षड्म्या ददे	। उग्रं शर्म महि श्रवः	१०	
एना विश्वान्यर्य आ	द्युम्नानि मानुषाणाम्	। सिषासन्तो वनामहे	११	
स न इन्द्राय यज्यवे	वरुणाय मरुद्भ्यः	। वरिवोवित् परिं सव	१२	
उपो षु जातमप्तुरं	गोभिर्भेङ्गं परिष्कृतम्	। इन्दुं देवा अयासिषुः	१३	४००
तामिद् वर्धन्तु नो गिरो	वत्सं संशिश्वरीरिव	। य इन्द्रस्य हृदंसनिः	१४	
अपीं णः सोमं शं गवे	धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्	। वर्धा समुद्रमुक्थ्यम्	१५	
पवमानो अजीजनद्	दिवश्चित्रं न तन्यतुम्	। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्	१६	
पवमानस्य ते रमो	मदो राजन्नदुच्छुनः	। वि वारमव्यमर्षति	१७	
पवमान रसस्तव	दक्षो वि राजति द्युमान्	। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दुशे	१८	४०५
यस्ते मदो वरेण्य-	स्तेना पवस्वान्धसा	। देवावीरघशंसहा	१९	
जग्निर्वृत्रममित्रियं	सस्तिर्वाजं दिवेदिवे	। गोषा उ अश्वसा असि	२०	
संमिश्रो अरुषो भव	सूपस्थाभिर्न धेनुभिः	। सीदच्छयेनो न योनिमा	२१	
स पवस्व य आविथे-	न्द्रं वृत्राय हन्तवे	। वत्रिवांसं महीरपः	२२	
सुवीरासो वयं धना	जयेम सोम मीदवः	। पुनानो वर्ध नो गिरः	२३	४१०
त्वोनामस्तवावमा	स्याम वन्वन्त आसुरः	। सोमं व्रतेषु जागृहि	२४	
अपघ्नन् पवते मृधो	ऽप सोमो अराव्णः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	२५	
महो नो राय आ भर	पवमान जही मृधः	। रास्वेन्दो वीरवद् यशः	२६	
न त्वा शतं चन हृतो	राधो दित्सन्तमा भिनन्	। यत् पुनानो मखस्यसे	२७	
पवस्वेन्दो वृषा सुतः	कृधी नो यशसो जने	। विश्वा अप द्विषो जहि	२८	४१५
अस्य ते सख्ये वयं	तवेन्दो द्युम्न उत्तमे	। सासह्याम पृतन्यतः	२९	
या ते भीमान्यायुधा	तिग्मानि सन्ति धूर्वणे	। रक्षां समस्य नो निदः	३०	४१७

॥ ६१ ॥ (क्र ९ । ६० । १-३०) (४१८-४७) जमदग्निर्भागवः ।

एते असृगमिन्दव-	स्तिरः पवित्रमाशवः	। विश्वान्यभि सौभगा	१	
विघ्नन्तो दुरिता पुरु	सुगा तोकाय वाजिनः	। तना कृण्वन्तो अर्वते	२	
कृण्वन्तो वरिवो गवे	ऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्	। इळामस्मभ्यं संयतम्	३	४२०
असाव्यं शुर्मदाया-	ऽप्सु दक्षो गिरिष्ठाः	। श्येनो न योनिमासदत्	४	४२१

शुभ्रमन्धो देववात—मप्सु धूतो नृभिः सुतः	। स्वदान्ति गावः पयोभिः	५
आदीमश्वं न हेतारो ऽशूशुभन्नमृताय	। मध्वो रसं सधमादे	६
यास्ते धारा मधुश्रुतो ऽसृग्रमिन्द ऊतये	। ताभिः पवित्रमासदः	७
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया	। सीदन् योनावनेष्वा	८ ४०५
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः	। वरिवोविद् घृतं पर्यः	९
अयं विचर्षणिर्हितः पर्वमानः स चैतति	। हिन्वान आप्यं बृहत्	१०
एष वृषा वर्षव्रतः पर्वमानो अशस्तिहा	। कर्द् वसन्ति दाशुर्ष	११
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्	। पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम्	१२
एष स्य परि पिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः	। उरुगायः कृविकंतुः	१३ ४०६
सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः	। इन्द्राय पवते मर्दः	१४
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते	। विर्योना वसताविव	१५
पर्वमानः सुतो नृभिः सोमो वार्जमिवासरत्	। चमृषु शकमनासदम्	१६
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे	। ऋषीणां सप्त धीतिभिः	१७
तं सौतारो धनस्पृत—माशुं वाजाय यातवे	। हरिं हिनोत वाजिनम्	१८ ४०७
आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्पन्नाभि श्रियः	। शूरो न गोपु तिष्ठति	१९
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः	। देवा देवेभ्यो मधु	२०
आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम्	। देवेभ्यो देवश्रुत्तमम्	२१
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे	। मदिन्तमस्य धारया	२२
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि	। सनद्वाजः परि भव	२३ ४०८
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः	। गृणानो जमदग्निना	२४
पर्वस्व वाचो अग्रियः सोमं चित्राभिरूतिभिः	। अभि विश्वानि काव्या	२५
त्वं समुद्रिया अपो ऽग्रियो वाच ईरयन्	। पर्वस्व विश्वमेजय	२६
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिर	। तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	२७
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्वतः	। अभि शुक्रामुपस्तिरम्	२८ ४०९
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो—ग्रं दक्षाय सार्धनम्	। ईशानं वीतिराधसम्	२९
पर्वमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत्	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	३० ४१०

॥ ६२ ॥ (क्र. ९ । ६३ । १-३०) (४४८-४७७) निधुविः काश्यपः ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । अस्मे श्रवांसि धारय	१	
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि	२	
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे	३	४५०
एते असृग्रमाश्रवो ऽति ह्वरांसि बभ्रवः । सोमां क्रतस्य धारया	४	
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अरावणः	५	
सुता अनु स्वमा रजो ऽभ्यर्पन्ति बभ्रवः । इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः	६	
अथा पवस्व धारया यथा सूर्यमरोचयः । हिनवानो मानुषीरपः	७	
अयुक्त सूर एतंशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे	८	४५५
उत त्या हरितो दश सूर्यो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्	९	
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत	१०	
पवमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता	११	
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । अभि वाजमुत श्रवः	१२	
सोमो देवो न सूर्यो ऽर्द्रिभिः पवते सुतः । दधानः कलशे रसम्	१३	४६०
एते धामान्यार्या शुक्रा क्रतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन्	१४	
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमोसो दध्याशिरः । पवित्रमत्यक्षरन्	१५	
प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मद्रो यो देववीतमः	१६	
तमीं मृजन्त्यायवो हरिं नदीपु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्	१७	
आ पवस्व हिरण्यव—दश्वावत् सोम वीरवत् । वाजं गोमन्तमा भर	१८	४६५
परि वाजे न वाजयु—मव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम्	१९	
कृविं मृजन्ति मज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः । वृषा कर्निकदर्पति	२०	
वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन्	२१	
पवस्व देवायुष—गिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मेणा	२२	
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाण्यम् । प्रियः समुद्रमा विश	२३	४७०
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादैवयुं जनम्	२४	
पवमाना असृक्षत् सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या	२५	
पवमानास आश्रवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः	२६	
पवमाना दिवस्प—र्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सानवि	२७	४७४

पुनानः सोम धारये—न्दो विश्वा अप सिधः । जहि रक्षांसि सुक्रतो	२८	४७५
अपघ्नन्त्सोम रक्षसो ऽभ्यर्ष कनिकदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	२९	
अस्मे वस्त्रनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा । इन्दो विश्वानि वार्या	३०	४७७

॥ ६३ ॥ (ऋ ९ । ६४ । १-३०) (४७८—५०७) कश्यपो मारीचः ।

वृषा सोम द्युमाँ अस्मि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे	१	
वृष्णास्ते वृष्ण्यं शत्रो वृषा वनं वृषा मदः । सत्यं वृषन् वृषेदसि	२	
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि	३	४८०
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाशवः	४	
शुष्ममाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गर्भस्त्योः । पर्वन्ते वारो अव्यये	५	
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । पर्वन्तामान्तरिक्ष्या	६	
पर्वमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा अमृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः	७	
केतुं कृण्वन् दिवस्पति विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे	८	४८५
हिन्वानो वार्चमिष्यसि पर्वमान विधर्मणि । अक्रान् देवो न सूर्यः	९	
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती । सृजदश्च रथीरिव	१०	
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत् । सीदन्नृतस्य योनिमा	११	
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दुविन्द्राय पीतये	१२	
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि	१३	४९०
पुनानो वरिवस्कुध्यूर्ज जनाय गिर्वणः । हरे सृजान आशिरम्	१४	
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्घृतः	१५	
प्र हिन्वानास इन्दुवो ऽच्छा समुद्रमाशवः । धिया जूता असृक्षत	१६	
मर्मजानास आयत्रो वृथा समुद्रमिन्दवः । अगमन्नृतस्य योनिमा	१७	
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा । पाहि नः शर्म वीरवत्	१८	४९५
मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्भिः । प्र यत् समुद्र आहितः	१९	
आ यद् योनिं हिरण्ययमाशुर्कृतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः	२०	
अभि वेना अनूषते यक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्याविचेतसः	२१	
इन्द्रायेन्दो मरुत्वन्ते पवस्व मधुमत्तमः । ऋतस्य योनिमासदम्	२२	
तं त्वा विप्रा वचोविदुः परिष्कृण्वन्ति वेधसः । सं त्वा मृजन्त्यायवः	२३	५००

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे	। पर्वमानस्य मरुतः	२४
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वार्चमिष्यसि	। इन्दो सहस्रभर्णसम्	२५
उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युर्वम्	। पुनान इन्दुवा भर	२६
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्	। प्रियः समुद्रमा विश	२७
दर्विद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा	। सोमाः शुक्रा गवांशिरः	२८ ५०५
हिन्वानो हेतुभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रीत	। सीदन्तो वनुषो यथा	२९
ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः	। पर्वस्व सूर्यो दृशे	३० ५०७

॥ ६४ ॥ (ऋ ९ । ६५ । १—३०) (५०८—५३७) भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।

हिन्वन्ति सूरमुत्तयः स्वसारो जामयस्पतिम्	। महामिन्दुं महीयुवः	१
पर्वमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि	। विश्वा वसून्या विश	२
आ पर्वमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः	। इषे पर्वस्व संयतम्	३ ५१०
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे	। पर्वमान स्वाध्यः	४
आ पर्वस्व सुवीर्य मन्दमानः स्वायुध	। इहो ष्विन्दुवा गहि	५
यदाङ्गिः परिषिच्यसे मृज्यामानो गर्भस्त्योः	। द्रुणां सधस्थमश्रुषे	६
प्र सोमाय व्यश्ववत् पर्वमानाय गायत	। महे सहस्रचक्षसे	७
यस्य वर्णं मधुश्चतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दुमिन्द्राय पीतये	८ ५१५
तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः	। सखित्वमा वृणीमहे	९
वृषा पर्वस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः	। विश्वा दधान ओर्जसा	१०
तं त्वा धर्तारमोण्योऽः पर्वमान स्वर्दृशम्	। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्	११
अया चित्तो विपानया हरिः पर्वस्व धारया	। युजं वाजेषु चोदय	१२
आ न इन्दो महीमिषं पर्वस्व विश्वदर्शतः	। अस्मभ्यं सोम गातुवित्	१३ ५२०
आ कलशा अनृषते इन्दो धाराभिरोर्जसा	। एन्द्रस्य पीतये विश	१४
यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः	। स पर्वस्वाभिमातिहा	१५
राजा मेधाभिरीयते पर्वमानो मनावधि	। अन्तरिक्षेण यातवे	१६
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वद्व्यम्	। वहा भगन्तिमूतये	१७
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर	। सुष्वाणो देववीतये	१८ ५२५
अर्षा सोम द्युमन्तमो ऽभि द्रोणानि रोरुवत्	। सीदन्त्येनो न योनिमा	१९ ५२६

अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे २०	
इषं तोकाय नो दधे दुसभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् २१	
ये सोमांसः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति २२	
य आर्जिकेषु कृत्वंसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । ये वा जनेषु पञ्चसु २३ ५३०	
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पर्वन्तामा सुवीर्यम् । सुवाना देवास इन्दवः २४	
पर्वते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना । हिन्वानो गोरधि त्वचि २५	
प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न समयः । श्रीणाना अप्सु मृज्जत २६	
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतांतये । स पवस्वानया रुचा २७	
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् २८ ५३५	
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् । पान्तमा पुरुस्पृहम् २९	
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनुष्वा । पान्तमा पुरुस्पृहम् ३० ५३७	

॥ ६५ ॥ (ऋ ९ । ६६ । १—३०)

(५३८-५६७) शत वैखान ॥ १९-२१ अग्निः पवमानः । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

पवस्व विश्वर्चणे ऽभि विश्वानि काव्या । सखा सखिभ्य ईडयः १	
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी । प्रतीची सोम तस्थतुः २	
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः । पवमान क्रतुभिः कवे ३ ५४०	
पवस्व जनयन्निषो ऽभि विश्वानि वार्या । सखा सखिभ्य ऊतये ४	
तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्टे वि तन्वते । पवित्रं सोम धामभिः ५	
तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिन्धते । तुभ्यं धावन्ति धेनवः ६	
प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः । दधानो अक्षिति श्रवः ७	
समु त्वा धीभिरस्वरन् हिन्वतीः सप्त जामयः । विप्रमाजा विवस्वतः ८ ५४५	
मृजन्ति त्वा समग्रवो ऽव्ये जीरावधि ष्वणि । रेभो यदुज्यसे वने ९	
पवमानस्य ते कवे वाजिन्तसर्गा अमृक्षत । अर्वन्तो न श्रवस्यवः १०	
अच्छा कोशं मधुश्रुतमसृग्रं वारं अव्यये । अवावशन्त धीतयः ११	
अच्छा समुद्रमिन्दुवो ऽस्तं गावो न धेनवः । अगमन्नृतस्य योनिमा १२	
प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः । यद् गोभिर्वासयिष्यसे १३ ५५०	
अस्य ते सख्ये वयमियक्षन्तस्त्वोतयः । इन्दो सखित्वमुदमसि १४	
आ पवस्व गर्विष्ठये महे सोम नृचक्षसे । एन्द्रस्य जुठरं विश १५ ५५२	

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्दु ओजिष्ठः। युध्वा सञ्ज्वज्जिगेथ	१६	
य उग्रेभ्यश्चिदोजीया—ञ्छूरैभ्यश्चिच्छूरतरः । भुरिदाभ्यश्चिन्महीयान्	१७	
त्वं सोम सूर एष—स्तोकस्य माता तनूनाम् । वृणीमहे सखायं वृणीमहे युज्याय	५५५	
अग्न आयूषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम्	१९	
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम्	२०	
अग्ने पवस्व स्वर्षा असे वर्चः सुवीर्यम् । दधद् रयि मयि पोषम्	२१	
पवमानो अति स्त्रिधो ऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् । सूरौ न विश्वदर्शतः	२२	
स मर्मज्ञान आयुभिः प्रयस्वान् प्रयसे हितः। इन्दुरत्यो विचक्षणः	२३	५६०
पवमान ऋतं बृह—च्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमीमि जङ्घनत्	२४	
पवमानस्य जङ्घतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः	२५	
पवमानो रथीतमः शुभ्रोभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः	२६	
पवमानो व्यश्रवद् रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	२७	
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् । पुनान इन्दुरिन्द्रमा	२८	५६५
एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः। इन्द्रं मदाय जोहुवत्	२९	
यस्य ते द्युमन्वत् पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे	३०	५६७

॥ ६६ ॥ (ऋ. ९ । ६७ । १—३०)

(५६८—५९९) १ - ३ भरद्वाजो बार्हस्पत्य , ४-६ कश्यपो मारीचः, ७-९ गोतमो राह्वगणः, १०-१९ अत्रिभौमः, १३-१५ विश्वामित्रो गाथिन , १६—१८ जमदग्निभार्गवः, १९-२१ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः, २२—३२ पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा। पवमानः सोमः, १०—१२ पवमानः पूषा वा, २३—२७ पवमानोऽग्निः, २५ पवमानः सविता वा, २६ पवमानाग्निसवितारः, २७ विश्वे देवा वा, ३१—३२ पावमान्यध्येता । गायत्री, १६—१८ नित्यद्विपदा गायत्री, ३० पुरउष्णिक्, २७, ३१, ३२, अनुष्टुप् ।

त्वं सोमासि धारयु—र्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः	१	
त्वं सुतो नृमार्दनो दधन्वान् मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा	२	
त्वं सुञ्वाणो अद्रिभि—रभ्यर्ष कर्निकदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	३	५७०
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत्	४	
इन्द्रो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांभि वि सौमगा । वि वाजान्तसोम गोमंतः	५	
आ न इन्द्रो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम्	६	
पवमानासु इन्द्रव—स्तिरः पवित्रमाश्वः । इन्द्रं यामेभिराशत	७	५७४

ककुहः सोम्यो रस	इन्दुरिन्द्राय पृथ्वः	। आयुः पवत आयवे	८	५७५
हिन्वन्ति सूरमुत्स्रयः	पर्वमानं मधुश्चुतम्	। अभि गिरा समस्वरन्	९	
अविता नो अजाश्वः	पृषा यामनियामनि	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१०	
अयं सोमः कपर्दिने	घृतं न पवते मधु	। आ भक्षत् कन्यासु नः	११	
अयं ते आघृणे सुतो	घृतं न पवते शुचि	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१२	
वाचो जन्तुः कवीनां	पर्वस्व सोम धारया	। देवेषु रत्नधा असि	१३	५८०
आ कलशेषु धावति	श्येनो वर्म वि गाहते	। अभि द्रोणा कर्निकदत्	१४	
परि प्र सोम ते रसो	ऽसर्जि कलशे सुतः	। श्येनो न तक्तां अर्षति	१५	
पर्वस्व सोम मन्दय	न्निन्द्राय मधुमत्तमः		१६	
असृग्रन् देववीतये	वाजयन्तो रथा इव		१७	
ते सुतासो मदिन्तमाः	शुक्रा वायुमसृक्षत		१८	५८५
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः	पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	१९	
एष तुन्नो अभिष्टुतः	पवित्रमति गाहते	। रक्षोहा वारमव्ययम्	२०	
यदन्ति यच्च दूरके	भयं विन्दति मामिह	। पर्वमान वि तज्जहि	२१	
पर्वमानः सो अद्य नः	पवित्रेण विचर्षणिः	। यः पोता स पुनातु नः	२२	
यत् ते पवित्रमर्चिष्य	ग्रे विततमन्तरा	। ब्रह्म तेन पुनीहि नः	२३	५९०
यत् ते पवित्रमर्चिव	दग्ने तेन पुनीहि नः	। ब्रह्ममवेः पुनीहि नः	२४	
उभाभ्यां देव सवितः	पवित्रेण सवेन च	। मां पुनीहि विश्वतः	२५	
त्रिभिर्द्वं देव सवित	वर्षिष्ठैः सोम धामाभिः	। अग्ने दक्षः पुनीहि नः	२६	
पुनन्तु मां देवजनाः	पुनन्तु वसवो धिया ।			
विश्वे देवाः पुनीत मा	जातवेदः पुनीहि मां		२७	
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व	सोम विश्वेभिरंशुभिः	। देवेभ्य उत्तमं हविः	२८	५९५
उप प्रियं पनिप्रतं	युवानमाहुतीवृधम्	। अगन्म विभ्रतो नमः	२९	
अलाय्यस्य परशुर्ननाश	तमा पवस्व देव सोम	। आखुं चिदेव देव सोम	३०	
यः पावमानिरध्ये	त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।			
सर्वं स पूतमश्नाति	स्वदितं मातरिश्वाना		३१	५९८

पावमानीर्यो अध्ये—त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।

तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदुकम्

३२ ५९९

॥ ६७ ॥ (ऋ ९ । ६८ । १—१०) (६००—६०९) वत्सप्रिर्भालन्दनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दुवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।

बर्हिषदो वचनावन्त ऊर्धभिः परिस्रुतमुस्त्रिया निर्णिजै धिरे

१ ६००

स रोरुवद्वाभि पूर्वा अचिक्रद—दुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।

तिरः पवित्रं परियन्तुरु जगो नि शर्याणि दधते देव आ वरम्

२

वि यो ममे यस्या संयती मदः साकंवृधा पर्यसा पिन्वदक्षिता ।

मही अपारे रजसी विवेविद—दभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे

३

स मातरा विचरन् वाजयन्तपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।

अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः

४

सं दक्षेण मनसा जायते कवि—ऋतस्य गर्भो निर्हितो यमा परः ।

यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतु—गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम्

५

मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्यनो यदन्धो अभरत् परावतः ।

तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वा उशन्तमंशुं परियन्तमृगिमयम्

६ ६०५

त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धातिभिर्हितम् ।

अव्यो वारोभिरुत देवहंतिभि—नृभिर्यतो वाजमा दपि सातये

७

परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनृषत स्तुभः ।

यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयति वाचं रयिषाळमर्त्यः

८

अयं दिव इयति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।

अङ्गिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत् प्रियम्

९

एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।

अद्रेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्

१० ६०९

॥ ६८ ॥ (ऋ ९ । ६९ । १—१०) (६१०—६१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती, ९-१० त्रिष्टुप् ।

इषुर्न धन्वन् प्रति धीयते मति—वत्सो न मातुरुषं सज्यधनि ।

उरुधारेव दुहे अग्र आय—त्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते

१ ६१०

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।

पवमानः संतुनिः प्रमृतामिव मधुमान् द्रुप्तः परि वारमर्षति

२ ६११

अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रुतीते नप्तीरदितेऋतं यते ।
 हरिरक्रान् यजतः सैयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते ३
 उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुपं यन्ति निष्कृतम् ।
 अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ४
 अमृक्तेन रुशता वासमा हरिरमत्यो निर्णिजानः परि व्यत ।
 दिवस्पृष्ठं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्बोर्नभस्मयम् ५
 सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्वो मत्सरासः प्रसुपः साकमीरते ।
 तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ६ ६१०
 सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमांशत ।
 शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदे ऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ७
 आ नः पवस्व वसुमद्विरण्यवदश्वावद् गोमद् यवमत् सुवीर्यम् ।
 यूयं हि सोम पितरो मम स्थनं दिवो मूर्धानुः प्रस्थिता वयस्कृतः ८
 एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथा इव प्र ययुः सातिमच्छ ।
 सुताः पवित्रमतिं यन्त्यव्यं हित्वी वविं हरितो वृष्टिमच्छ ९
 इन्दुविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः ।
 भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः १० ६१९

॥ ६९ ॥ (ऋ ९ । ७० । १-१०) (६२०-६२९) रेणुर्वैश्वामित्रः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुहे सत्यामाशिरं पूव्यं व्यामनि ।
 चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारुणि चक्रे यदृतैरवर्धत १ ६२०
 स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे
 तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदां विदुः २
 ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवो ऽदाभ्यासो जनुषां उभे अनु ।
 येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद् राजानं मनना अगृम्णत ३
 स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा ।
 व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ ४
 स मर्मजान इन्द्रियाय धार्यस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः ।
 वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मती रादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः ५ ६२४

स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः ।
 जानन्नृतं प्रथमं यत् स्वर्णरं प्रशस्तये कर्मवृणीत सुक्रतुः ६ ६२५
 रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः ।
 आ योनिं सोमः सुक्रतं नि षीदति गव्ययी त्वग् भवति निर्णिगव्ययी ७
 शुचिः पुनानस्तन्वमरेपस—मव्ये हरिन्यधाविष्ट सानेवि ।
 जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्माभिः ८
 पवस्व सोम देववीतये वृषे—न्द्रस्य हादिं सोमधानमा विश
 पुरा नो बाधाद् दुरितातिं पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विष्टच्छते ९
 हितो न सप्तिराभि वाजमर्षे—न्द्रस्येन्द्रो जठरमा पवस्व
 नावा न सिन्धुमति पपि विद्धा—च्छरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः १० ६२९

॥ ७० ॥ (क ९ । ७१ । १—९) (६३०—६३८) ऋषभो वैश्वामित्रः । जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्याऽसदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः ।
 हरिणोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्बोऽब्रह्म निर्णिजे १ ६३०
 प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुव—दसुर्यं वर्ण नि रिणीते अस्य तम् ।
 जहाति वत्रि पितुरेति निष्कृत—मुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना २
 अद्रिभिः मुतः पवते गभस्तयो—वृषायते नभसा वेपते मती ।
 म मोदते नसते साधते गिरा नैनिके अप्सु यजते परीमणि ३
 परं युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् ।
 आ यस्मिन् गावः सुहुताद् ऊर्ध्वनि मूर्धच्छीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ४
 समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ ।
 जिगादुप जयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन् ५
 श्येनो न योनिं सदने धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति ।
 ए रिणन्ति बहिषि प्रियं गिरा ऽश्वो न देवा अप्येति यज्ञियः ६ ६३५
 परा व्यक्तो अरुषो दिवः कवि—वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि ।
 सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुपसो वि राजति ७
 त्वेष रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत् समृता सेधति स्निधः ।
 अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनुं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया ८ ६३७

- उक्षेव यूथा परियन्मरावी—दधि त्विषीरधित् सूर्यस्य ।
 दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः ९ ६३८
- ॥ ७१ ॥ (क्र. ९ । ७२ । १-९) (६३९-६४७) हरिमन्त आङ्गिरस । जगती ।
 हरिं मृजन्त्यरूपो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ।
 उद् वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित् परिप्रियः १
 साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहः ।
 यदी मृजन्ति सुगमस्तयो नरः मनीषाभिर्दशभिः काम्यं मधु २ ६४०
 अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम् ।
 अन्वस्मै जोषमभग्द् विनंगुसः सं द्रयीभिः स्वमृभिः क्षेति जामिभिः ३
 नृधूतो अद्रिषुतो बहिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्कृत्वियः ।
 पुरंधिवान् मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ४
 नृबाहुभ्यां चोदितो धारया मुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।
 आप्राः क्रतून्तसमजैरध्वरे मती—वेन द्रुपच्चम्बोऽङ्गरासद्वरिः ५
 अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कवि कवयोऽपसो मनीषिणः ।
 समी गावो मतयो यन्ति मयतं क्रतस्य योना सदाने पुनर्धुवः ६
 नामा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूमो सिन्धुष्वन्तरिक्षितः ।
 इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ७ ६४५
 स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाध्वन्वते च सुक्रतो ।
 मा नो निर्भाग् वसुनः सादनस्पृशो रथि पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ८
 आ तू न इन्दो शतदात्वश्यं सहस्रदातु पशुमद्विरण्यवत् ।
 उप मास्व बृहती रेवतीरिषोऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ९ ६४७
- ॥ ७२ ॥ (क्र. ९ । ७३ । १-९) (६४८-६५६) पवित्र आङ्गिरसः ।
 सक्वे द्रुप्तस्य धमतः समस्वर—नृतस्य योना समरन्त नाभङ्गः ।
 त्रीन्तस मूर्धो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नाभः सुक्रतमपीपरन् १
 सम्यक् सस्यश्चो महिषा अहेपत् सिन्धोरूमावधि वेना अवीविपन् ।
 मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित् प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् २ ६४९

पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितृषां प्रलो अभि रक्षति व्रतम् ।	
महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छैर्कुर्धरुणेष्वारभम्	३ ४५०
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।	
अस्य स्पशो न नि मिषान्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः	४
पितुर्मातुरध्या ये समस्वर—अत्रा शोचन्तः संदहन्तो अव्रतान् ।	
इन्द्रं द्विष्टामर्षं धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं भूमनो दिवस्परि	५
प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वर—च्छ्लोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः ।	
अपानक्षामो बधिरा अहासत क्रतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः	६
सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ।	
रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वश्चः सुदृशो नृचक्षसः	७
क्रतस्य गोपा न दभाय सुक्रतु—स्त्री ष पवित्रा दृद्यन्तरा दधे ।	
विद्वान्त्स विद्या भुवनाभि पश्य—त्यवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्	८ ४५५
क्रतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया ।	
धीराश्चित् तत् समिनेक्षन्त आशता—ऽत्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः	९ ४५६

॥ ७३ ॥ (क ९ । ७४ । १—९) (६५७—६६५) कक्षीवान् वैर्धतमसः । जगती, ८ त्रिष्टुप् ।

शिशुर्न जातोऽव चक्रदुद् वने स्वर्ग्युर्द वाज्यरुषः सिषांसति ।	
दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः	१
दिवो यः स्कम्भो धरुणः स्वातत आपूर्णो अंशुः पर्येति विश्वतः	
सेमे मही रोदमी यक्षदावृता समीचीने दाधार समिषः कविः	२
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधू—र्वा गव्यूतिरदितेर्कृतं यते ।	
ईशे यो वृष्टेरित उस्त्रियो वृषा ऽपां नेता य इतर्कतिर्कर्मियः	३
आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पयः क्रतस्य नाभिरमृतं वि जायते ।	
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति परेवः	४ ६६०
अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।	
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे	५
सहस्रधारेऽव ता असश्चत—स्तृतीयं सन्तु रजसि प्रजावतीः ।	
चतस्रो नाभो निर्हिता अवो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतधृतः	६ ६६१

श्वेतं रूपं कृणुते यत् सिषासति सोमो मीद्वो असुरो वेद भूमनः ।
 धिया शमी सचते सेमभि प्रवद् दिवस्कर्त्तव्यमव दर्षदुद्रिणम् ७
 अध श्वेतं कलशं गोभिरुक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यक्रमीत् ससवान् ।
 आ हिंन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम् ८
 अङ्घ्रिः सोम पपृचानस्य ते रसो ऽव्यो वारं वि पवमान धावति ।
 स मृज्यमानः कविभिर्मदिन्तम् स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ९ ६६५

॥ ७४ ॥ (ऋ ९ । ७५ । १-५) (६६६-६९०) कविर्भागवः । जगती ।
 अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यद्वा अधि येषु वर्धते ।
 आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वश्चमरुहद् विचक्षणः १
 ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
 दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः २
 अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदु—भृभिर्यमानः कोश आ हिरण्यये ।
 अभीमृतस्य दोहनां अनूषता—ऽधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ३
 अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचिः ।
 रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ४
 परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।
 ये ते मदा आहनसो विहायस—स्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मधम् ५ ६७०

॥ ७५ ॥ (ऋ ९ । ७६ । १-५)

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
 हरिः सृजानो अत्यो न सत्त्वभि—वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा १
 शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वपुः सिषासन् रथिरो गर्विष्ठिषु ।
 इन्द्रस्य शुष्ममीर्यन्नपस्युभि—रिन्दुहिंन्वानो अज्यते मनीषिभिः २
 इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणां तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।
 प्र णः पिन्व विद्युदुभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ३
 विश्वस्य राजा पवते स्वर्दश ऋतस्य धीतिर्मृषिषाळवीवशत् ।
 यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ४
 वृषेव युथा परि कोशमर्ष—स्यपामुपस्थे वृषभः कर्निक्रदत् ।
 स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम सभिथे त्वोतथः ५ ६७५

॥ ७६ ॥ (ऋ ९ । ७७ । १—५)

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रदु—दिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।
 अभीमृतस्य सुदुर्घा घृतश्रुतो वाश्रा अर्षन्ति पर्यसेव धेनवः १
 स पूर्यः पवते यं दिवस्परि श्वेनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।
 स मध्व आ युवते वेर्विजान इत् कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा २
 ते नः पूर्वास उपरास इन्द्रवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।
 ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्विः ३
 अयं नो विद्वान् वनवद् वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।
 इनस्य यः सदेने गर्भमादधे गवामुरुज्जमभ्यर्षेति व्रजम् ४
 चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महौ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।
 असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियो ऽत्यो न यूथे वृषयुः कर्निक्रदत् ५ ६८०

॥ ७७ ॥ (ऋ ९ । ७८ । १—५)

प्र राजा वाचं जनयन्नासिष्यद—दुपो वसानो अभि गा इयक्षति ।
 गृभ्णार्ति रिप्रमर्विरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् १
 इन्द्राय सोम परि पिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने ।
 पूर्वीर्हि ते सुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः २
 समुद्रिया अप्सरसो मनीषिण—मासीना अन्तराभि सोममक्षरन् ।
 ता ई हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम् ३
 गोजिन्नः सोमो रथजिद्विरण्यजित् स्वर्जिदुब्जित् पवते सहस्रजित् ।
 यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम् ४
 एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन् द्रविणान्यर्षसि ।
 जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वी गव्यूतिमभयं च नस्कृधि ५ ६८५

॥ ७८ ॥ (ऋ ९ । ७९ । १—५)

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्विवेषु हरयः ।
 वि च नशन् न इषो अरातयो ऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः १
 प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि ।
 तिरो मर्तस्य कस्य चित् परिहृतिं वयं धनानि विश्वधा मरेमहि २ ६८७

उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः ।

धन्वन् न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोमं जहि पवमान दुराध्यः ३

दिवि ते नामा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सान्वि क्षिपः

अद्रयस्त्वा वप्सति गोरधि त्वच्यप्सु त्वा हस्तैर्दुर्दुर्मनीषिणः ४

एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुज्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः ।

निर्दनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मां भवतु प्रियो मदः ५ ३९०

॥ ७९ ॥ (ऋ ९ । ८० । १-५) (६९१-७०५) वसुभारम्भाजः ।

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान् हवते दिवस्परि ।

बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते ममुद्रामो न सर्वनानि विव्यचुः १

यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषताऽयोहतं योनिमा रोहसि द्युमान् ।

मघोनामार्युः प्रतिरन् महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः २

एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्ज वसानः श्रवसे सुमङ्गलः ।

प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन् हरिर्गर्त्यः स्यन्दते वृषा ३

तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः

नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावाभिः सुतो विश्वान् देवा आ पवस्वा सहस्रजित् ४

तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तुमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः ।

इन्द्रं सोम मादयन् दैव्यं जनं सिन्धोरिवोमिः पवमानो अर्षसि ५ ३९१

॥ ८० ॥ (ऋ. ९ । ८१ । १-५) जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः ।

दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शरमुदमन्दिषुः सुताः १

अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यदुदत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा ।

अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्रोत्यमुत इतश्च यत् २

आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भवं मघवा राधसो महः ।

शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गर्यमारे अस्मत् परा सिचः ३

आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः ।

बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ४

उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता ।

भगो नृशंस उर्वरन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त ५ ७००

॥ ८१ ॥ (ऋ ९ । ८२ । १—५) जगती ।

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दुस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
 पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं इयेनो न योनिं घृतवन्तमासदम् १
 कविर्वेधस्या पर्येषि माहिन्—मत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
 अपमेधन् दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् २
 पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे ।
 स्वसार आपो अभि गा उतासरन् त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे ३
 जयेव पत्यावधि शेवं मंहसे पञ्चाया गर्भं शृणुहि ब्रवीमि ते ।
 अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसे ऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ४
 यथा पूर्वैभ्यः शतसा अमृधः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो ।
 एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तवं व्रतमन्वापः सचन्ते ५ ७०५

॥ ८२ ॥ (ऋ. ९।८३।१—५) (७०६—७१०) पवित्र आङ्गिरसः ।

पुवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
 अतप्ततनुर्न तदामो अश्रुते श्रुतास इद् वहन्तस्तत् समाशत १
 तपोष्पुवित्रं विततं दिवस्पदे शोचतो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
 अवन्त्यस्य पञ्चितारमाशवा दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा २
 अरुरुचदुपसः पृश्निरग्रिय उक्षा विभर्ति भुवनानि वाजयुः ।
 मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ३
 गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पार्ति देवानां जनिमान्यद्भुतः ।
 गुम्भाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ४
 हविर्हविष्मो महि सन्न दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् ।
 राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ५ ७१०

॥ ८३ ॥ (ऋ ९ । ८४ । १—५) (७११—७१५) वाच्य प्रजापतिः ।

पवस्व देवमार्दनो विचर्षणि—रप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
 कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिम—दुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् १
 आ यस्तुस्थौ भुवनान्यमत्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।
 कृण्वन्तसंचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः २ ७११

आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वो देवानां सुम्न इष्यन्नुपावसुः ।
 आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ३
 एष स्य सोमः पवते सहस्रजि—द्विन्त्र्यानो वाचमिपिरामुषवृधम् ।
 इन्दुः समुद्रमुदियति वायुभि—रेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु मीदति ४
 अभि त्वं गात्रः पर्यसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वविदम् ।
 धनंजयः पवते कृत्वो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ५ ७१५

॥ ८४ ॥ (ऋ ९ । ८५ । १—१२) (७१६—७२७) वेनो भार्गवः । जगती. ११—१२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्राय सोम सुपुतः परि स्रवा—ऽपामीवा भवतु रक्षमा सह ।
 मा ते रसस्य मत्सत द्रवाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्तिवन्दवः १
 अस्मान्तर्मये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः ।
 जहि शत्रूरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि २
 अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवमि ध्यासिरुत्तमः ।
 अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निसते ३
 सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु ।
 जयन् क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्क्षप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीदवः ४
 कनिकदत् कलशे गोभिरज्यसे व्ययै समया वारमर्षसि ।
 मर्मज्यमानो अत्यो न सानसि—रिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ५ ७२०
 स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने ।
 स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमो अदाभ्यः ६
 अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते ।
 पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुति—मेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ७
 पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्य—सुर्वी गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः ।
 मार्किनो अस्य परिष्पतिरीशते—न्दो जयेम त्वया धनं धनम् ८
 अधि द्यामस्थाद् वृषभो विचक्षणो ऽरुरुचद् वि दिवो रंचना कविः ।
 राजा पवित्रमत्येति रोरुवद् दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ९
 दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
 अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ १० ७२५

नाकै सुपर्णमुपपत्तिवासं गिरी वेनानामकृपन्त पूर्वाः ।

शिशुं रिहन्ति मतयः पनिम्रतं हिरण्ययं शकुनं क्षामाणि स्थाम् ११

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाकै अस्थाद् विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य ।

भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत् प्रारुरुचद् रोदसी मातरा शुचिः १२ ७२७

॥ ८५ ॥ (ऋ ९ । ८६ । १—४८)

(७२८—७७५) १—१० अकृष्टा मापा, ११—२० सिकता निवावरी, २१—३० पृश्नियोऽजाः,

३१—४० अकृष्टामाषादयस्त्रयः, ४१—४५ भौमोऽग्निः, ४६—४८ गृत्समदः शौनकः । जगती ।

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना ।

दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते १

प्र ते मदासो मदिरास आशवो ऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् ।

धेनुर्न वत्सं पर्यसाभि वज्रिण—मिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः २

अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित् कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।

वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ३ ७३०

प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन् पर्यसा धरीमणि ।

प्रान्तर्कषयः स्थाविररिसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिपाण वेधसः ४

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः ।

व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ५

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।

यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ६

यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।

सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ७

राजा समुद्रं नद्योर् वि गाहते ऽपामूर्मि संचते सिन्धुषु श्रितः ।

अध्यस्थात् सानु पवमानो अव्ययं नामा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ८ ७३५

दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद् द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।

इन्द्रस्य मुख्यं पवते विवेविदत् सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ९

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।

दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः १० ७३७

- अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
हरिर्भिन्नस्य सदनं पु सीदति मर्मज्ञानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ११
- अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्ष-त्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतुभिः पयते वृषा १२
- अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितो ऽर्घ्ये मसार पवमान ऊमिणा ।
तव कृत्वा रोदसी अन्तरा कञ्च शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते १३ ७४०
- द्रापि वसानो यजतो दिविस्पृश-मन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वापितः ।
स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत् प्रलमस्य पितरमा विवासति १४
- सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे ।
पदं यदस्य परमे व्योमन् यतो विश्वा अभि सं याति संयतः १५
- प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं मखा सग्युर्न प्र मिनाति संगिरम् ।
मर्ये इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशं शतयाज्ञा पथा १६
- प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः ।
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभो ऽभि धेनवः पर्यसेमशिथ्रयुः १७
- आ नः सोम संयन्तं पिप्युषीमिष-मिन्द्रो पवस्व पवमानो अस्त्रिधम् ।
या नो दोहते त्रिरहन्नसंश्रुषी क्षुमद् वाजवन्मधुमत् सुवीर्यम् १८ ७४५
- वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः ।
क्राणा सिन्धूनां कलशं अवीवश-दिन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः १९
- मनीषिभिः पवते पूर्यः कवि-नृभिर्यतः परि कोशा अचिक्रदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षर-दिन्द्रस्य वायोः मख्याय कर्तवे २०
- अयं पुनान उषसो वि रौचय-द्वयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः २१
- पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्द्रो कलशं पवित्र आ ।
सीदुभिन्द्रस्य जठरे कनिक्रद-नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि २२
- अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आ इन्द्रविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन् ।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप २३ ७५०

त्वां सोमं पवमानं स्वाध्यो ऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।	
त्वां सुपर्ण आभरद् दिवस्परी-न्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम्	२४
अव्यै पुनानं परि वारं ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः ।	
अपामुपस्थे अध्यायवः कवि-मृतस्य योना महिषा अहेषत	२५
इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।	
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कवि-रत्यो न क्रीळन् परि वारंमर्षति	२६
असञ्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदुन्युवः ।	
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः	२७
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतस-स्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि ।	
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि	२८ ७५५
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ।	
त्वं द्यां च पृथिव्यां चार्ति जग्निषे तव ज्योतीषि पवमान सूर्यः	२९
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।	
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे	३०
प्र रेभ एत्यति वारंमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रदुद्धरिः	
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतम्	३१
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे ।	
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम्	३२
राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव क्रतस्य याति पथिभिः कर्निक्रदत् ।	
सहस्रधारः परि पिच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः	३३ ७६०
पवमान महर्णो वि धावसि सरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया ।	
गर्भस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि	३४
इपमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।	
इन्द्राय मद्रा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः	३५
सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् ।	
अपां गन्धर्व दिव्यं नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे	३६
ईशान इमा भुवनानि वीर्यसे युजान इन्दो हरितः सुपर्णः ।	
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पय-स्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्यः	३७ ७६४

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पर्वमान वृषभ ता वि धावसि ।	
स नः पवस्व वसुमद्विरण्यवद् वयं स्याम भुवनेषु जीवसे	३८ ७६५
गोवित् पवस्व वसुद्विरण्यविद् रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।	
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते	३९
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिप—दपो वसानो महिषो वि गाहते ।	
राजा पवित्ररथो वाजमारुहत् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवां बृहत्	४०
स भन्दना उदियति प्रजावती विश्वायुर्विश्वाः मुभरा अहर्दिवि ।	
ब्रह्म प्रजावद् रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दुविन्द्रमम्मभ्यं याचतात्	४१
सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः ।	
द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि	४२
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।	
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृभ्णते	४३ ७७०
विपश्चिते पर्वमानाय गायत मही न धागत्यन्धो अर्षति ।	
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वच—मत्स्यो न क्रीळन्नसरद् वृषा हरिः	४४
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।	
हरिर्धृतस्तुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते गाय ओक्यः	४५
असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति ।	
अंशुं रिहन्ति मतयः परिमत्तं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः	४६
प्र ते धारा अत्यण्वानि मेघ्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः ।	
यद् गोभिरिन्दो चम्बोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि	४७
पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्यो ऽव्यो वारे परि धाव मधुं प्रियम् ।	
जहि विश्वान् रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	४८ ७७५
॥ ८६ ॥ (ऋ ९ । ८७ । १-९) (७७६—७९९) उशना काव्यः । त्रिष्टुप् ।	
प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।	
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो ऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति	१
स्वायुधः पवते देव इन्दु—रशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः ।	
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः	२ ७७७

ऋषिर्विप्रः पुरेता जनाना—मृधुर्धार उशना काव्येन ।	
स चिद् विवेदु निहितं यदासा—मपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्	३
एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः ।	
सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बहिरा वाज्यस्थात्	४
एते सोमा अभि गव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि ।	
पवित्रेभिः पर्वमाना असृग्र—ञ्छवस्यवो न पृतनाजो अत्याः	५ ७८०
परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासं भोजना पूयमानः ।	
अथा भर श्येनभृत प्रयांसि रथं तुञ्जानो अभि वाजर्मर्ष	६
एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सगो न सृष्टो अदधावदवी ।	
तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्मभि शूरो न सत्वा	७
एषा ययौ परमादन्तरद्रेः कूचित् सतीरुर्वे गा विवेद ।	
दिवो न विद्युत् स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा	८
उत स्म राशिं परि यासि गोना—मिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः ।	
पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत्	९

॥ ८७ ॥ (ऋ ९ । ८८ । १—८)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।	
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्द्रं मदाय युज्याय सोमम्	१ ७८५
स ई रथो न भूरिषाळयोजि महः पुरुणि सातये वसन्ति ।	
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त	२
वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्ट्यामा नासत्येव हव आ शंभविष्ठः ।	
विश्ववारो द्रविणोदा इव तमन् पूषेव धीजवनोऽसि सोम	३
इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रि—हन्ता वृत्राणामसि सोम पूभित् ।	
पैदो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः	४
अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु ।	
जनो न युध्वा महत् उपब्धि—रियति सोमः पर्वमान ऊर्मिम्	५
एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः ।	
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन्	६ ७९०

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वा—ऽनभिश्स्ता दिव्या यथा विट् ।
 आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनापाण यज्ञः ७
 राज्ञो जु ते वरुणस्य व्रतानि बृहदभीरं तव सोम धाम ।
 शुचिद्वमसि प्रियो न मित्रो दुक्षार्यो अर्यमेवांसि सोम ८

॥ ८८ ॥ (ऋ ९ । ८९ । १—७)

प्रो स्य वह्निः पृथ्याभिरस्यान् दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः ।
 सहस्रधारो असदुक्ष्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः १
 राजा सिन्धूनामवसिष्ठ वासं क्रतम्य नावमारुहद् रजिष्ठाम् ।
 अप्सु द्रप्सो वावृषे श्येनजृता दुह ई पिता दुह ई पितुर्जाम् २
 सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् ।
 शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्युक्षा ३ ७९०
 मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथं युञ्जन्त्युरुचक्रं कृण्वम् ।
 स्वसार ई जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ४
 चतस्र ई घृतदुहः सचन्त समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः ।
 ता ईमर्षन्ति नमसा पुनाना—स्ता ई विश्वतः परि पन्ति पृथीः ५
 विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य ।
 असत् त उत्सो गृणते नियुत्वान् मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ६
 बन्वन्नवातो अभि देववीति—मिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व ।
 शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ७ ७९१

॥ ८९ ॥ (ऋ ९ । ९० । १—६) (८००—८०५) वासिष्ठो मैत्रावरुणि ।

प्र हिंन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत् ।
 इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः १ ८००
 अभि त्रिपुष्टं वृषणं वयोधा—माङ्गुषाणामवावशन्त वाणीः ।
 वना वसानो वरुणो न सिन्धून् वि रत्नधा दयते वार्याणि २
 शूरग्रामः सर्ववीरः सहात्रा—जेता पवस्व सनिता धनानि ।
 त्रिमायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्व—षाळहः साह्वान् पृतनास शत्रून् ३
 उरुगव्यूतिरभयानि कृण्व—न्तसर्माचीने आ पवस्वा पुरंधी ।
 अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ४ ८०३

मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्द्रो पवमान विष्णुम् ।

मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि महामिन्द्रमिन्द्रो मदाय ५

एवा राजैव क्रतुमां अमेन विश्वा घनिघ्नद् दुस्ता पवस्व ।

इन्द्रो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः ६ ८०५

॥ ९० ॥ (ऋ ९ । ९१ । १-६) (८०६—८१७) कश्यपो मारीच ।

असर्जि वक्त्रा रथ्ये यथाजौ धिया मनोतां प्रथमो मनीषी ।

दश स्वसारो अधि सानो अव्ये ऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ १

वीती जनस्य दिव्यस्य कव्यै—रधिं सुवानो नहुष्यैभिरिन्दुः ।

प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभि—र्मृजानोऽविभिर्गोभिरुद्भिः २

वृषा वृष्णे रोहवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पथो गोः ।

सहस्रमृका पथिभिर्वचावि—दध्वस्मभिः सरो अण्वं वि याति ३

रुजा दृब्धा चिद् रक्षमः सदांसि पुनान इन्द्र ऊर्णुहि वि वाजान् ।

वृश्चोपरिष्ठात् तुजता वधेन ये अन्ति दुरादुपनायमेषाम् ४

स प्रतनवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः ।

ये दुष्पहांसो वनुषा बृहन्त—स्तोस्ते अश्याम पुरुकृत् पुरुक्षो ५ ८१०

एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यै तोका तनयानि भूरि ।

शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतीषि सोम ज्योङ्गनः सूर्यं दृश्ये रिरिहि ६

॥ ९१ ॥ (ऋ ९ । ९२ । १-६)

परि सुवानो हरिरिंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः ।

आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत् प्रयोभिः १

अच्छा नृचक्षा असरत् पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ ।

सीदन् होतवु सदाने चमूष—पेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः २

प्र सुमेधा गातुविद् विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् ।

भुवद् विश्वेषु काव्येषु रन्ता ऽनु जनान् यतते पञ्च धीरः ३

तव त्वे सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।

दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यद्हीः ४ ८१५

तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त ।

ज्योतिर्यदह्ने अकृणोद् लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम् ५ ८१६

परि सन्नैव पशुमान्ति होता राजा न मृत्यः समितीरियानः ।

सोमः पुनानः कलशो अयासीत् सीदन् मृगो न महिषो वनेषु

६ ८१७

॥ ९२ ॥ (ऋ. ९।९३।१-५) (८१८-८२२) नोधा गीतमः ।

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारे दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।

हरिः पर्यद्रवजाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अन्यो न वाजी

१

सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अङ्घ्रिः ।

मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्मं गच्छते कलश उम्रियाभिः

२

उत प्र पिप्य ऊधरधन्याया इन्दुर्धागाभिः मचते सुमेधाः ।

मूर्धानं गावः पर्यसा चमूष्वाभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः

३

८२०

स नो देवेभिः पवमान रुदेन्दो रयिमश्विनै वावशानः ।

रथिरायतामुशती पुण्धि-रस्मय्यगा दावने वसूनाम्

४

न नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम् ।

प्र वेन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यान्

५

८२०

॥ ९३ ॥ (ऋ. ९।९४।१-५) (८२३-८२७) कण्वो त्रौरः ।

अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।

अपो वृणानः पवते कवीयन् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म

१

द्विता व्यूर्ध्वमृतस्य धाम स्वविदे भुवनानि प्रथन्त ।

धिर्यः पिन्वानाः स्वसरे न गावः कृतायन्तारिभि पावश्च इन्दुम्

२

परि यत् कविः काव्या भरते शरो न रथो भुवनानि विश्वा ।

देवेषु यशो मर्तीय भूषन् दक्षाय रायः पुरुभूप नव्यः

३

८२५

श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वर्यो जरितृभ्यो दधाति ।

श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ

४

इषमूर्जैर्मभ्यर्षाश्च गा-मुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् ।

विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रन्

५

८२७

॥ ९४ ॥ (ऋ. ९।९५।१-५) (८२८-८३२) प्रस्कण्वः काण्वः ।

कर्निक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः ।

नृभिर्धृतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः

१

८२८

हरिः सृजानः पृथ्यामृतस्ये—यतिं वाचमरितेव नावम् ।	
देवो देवानां गुह्यानि नामा—ऽऽविष्कृणोति बृहिषि प्रवाचे	२
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।	
नमस्यन्तीरुषं च यन्ति सं चा—ऽऽ च विशन्त्युशतीरुशन्तम्	३ ८३०
तं मर्मजानं महिषं न साना—वंशं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।	
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे	४
इष्यन् वाचमुपवक्तेव हातुः पुनान इन्द्रो वि प्या मनीषाम्	
इन्द्रश्च यत् क्षयथः मौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम	५ ८३२
॥ ९५ ॥ (ऋ. ९ । ९६ । १—२४) (८३३—८५६) दैवादासिः प्रतर्दन ।	
प्र मैनानीः शरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।	
भद्रान् कृष्वन्निन्द्रहवान्तसखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते	१
ममस्य हरिं हरयो मृजन्त्य—श्चहयैरनिशितं नमोभिः ।	
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वो एना सुमतिं यात्यच्छ	२
स नो देव देवताते पवस्व महे सोम पसरस इन्द्रपानः ।	
कृष्वन्नपो वर्षयन् द्यामुतेमा—मुरोग नो वरिवस्या पुनानः	३ ८३५
अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।	
तदृशन्ति विश्व इमे सखाय—स्तदुहं वग्मि पवमान सोम	४
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।	
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितो विष्णोः	५
ब्रह्मा देवानां पदुवीः कवीना—मृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।	
इयेनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	६
प्रावीविषद्राच ऊर्मि न सिन्धु—गिरः सोमः पवमानो मनीषाः ।	
अन्तः पश्यन् वृजनेमावरा—ण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्	७
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष ।	
इन्द्रायेन्द्रो पवमानो मनी—प्यंशोरूर्मिमीरय गा इष्यन्	८ ८४०
परि प्रियः कलशं देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ।	
सहस्रधारः शतवाज इन्दु—वीजी न समिः समना जिगाति	९ ८४१

स पूर्यो वसुविज्ञायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ । अभिश्स्तिपा भुवनस्य राजा विदद् गातुं ब्रह्मणे पूयमानः	१०
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः वन्वन्नवातः परिधीरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवानः	११
यथार्पवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वग्विविद्धविष्मान् । एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयार्युधानि	१२
पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावा ऽपो वसानो अधि सानो अव्ये । अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः	१३ ८४५
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्दुववीतौ । सं मिन्धुभिः कलशै वावशानः समुस्त्रियाभिः प्रतिग्न न आयुः	१४
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानो ऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः । पयो न दुग्धमर्दितेरिषिर—मुर्विव गातुः सुयमो न वोऽहं	१५
स्वायुधः सोतुभिः पूयमानो ऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम । अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्या ऽभि वायुमभि गा देव सोम	१६
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन । कविर्गीभिः काव्येना कविः सन् त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	१७
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्पाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो विराजमनु राजति षुप्	१८ ८५०
चमृषच्छद्येनः शकुनो विभ्रत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि विभ्रन् । अपामूर्मि सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति	१९
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानो ऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् । वृषेव यूथा परि कोशमर्षन् कर्निकदच्चम्बोऽरा विवेश	२०
पवस्वेन्द्रो पवमानो महोभिः कर्निकदत् परि वाराण्यर्ष । क्रीळञ्चम्बोऽरा विंश पूयमान इन्द्रै ते रसो मदिरा ममत्तु	२१
प्रास्य धारा बृहतीरसुग्र—न्नक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश । सामं कृष्वन्त्सामन्यो विपश्चित् क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम्	२२
अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून् प्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः । सीदन् वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता	२३ ८५५

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः ।

हरिरानीतः पुरुवारो अप्सवचिक्रदत् कलशं देवयूनाम्

२४ ८५६

॥ ९६ ॥ (ऋ ९ । ९७ । १—५८)

(८५७—९१४) १—३ मैत्रावरुणिर्धसिष्ठः, ४—६ वासिष्ठ इन्द्रप्रमति, ७—९ वासिष्ठो वृषगणः, १०—१२ वासिष्ठो मन्युः, १३—१५ वासिष्ठ उपमन्युः, १६—१८ वासिष्ठो व्याघ्रपाद्, १९—२१ वासिष्ठः शक्तिः, २२—२४ वासिष्ठः कर्णश्रुद्, २५—२७ वासिष्ठो मृत्लीकः, २८—३० वासिष्ठो वसुक्रः, ३१—४४ पराशर शाक्यः, ४५—५८ कुत्स आङ्गिरसः ।

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।

सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सन्नं पशुमान्ति होता १

भद्रा वस्त्रा समन्याइ वसानो महान् कविर्निवर्चनानि शंसन् ।

आ वच्यस्व चम्बोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ २

समु प्रियो मृज्यते सानो अच्ये यशस्त्रो यशसां क्षैतो अस्मे ।

अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३

प्र गायताभ्यर्चाम देवान् त्सोमं हिनोत महते धनाय ।

स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुनः ४ ८६०

इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन् त्सहस्रधारः पवते मदाय ।

नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निद्रं महते सौभगाय ५

स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदी गच्छतु ते भराय ।

देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

प्र काव्यमुशनैव बुवाणो देवो देवानां जनिमा विवाक्ति ।

महित्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ७

प्र हुंसासस्तृपलं मन्युमच्छमादस्तं वर्षगणा अयासुः ।

आङ्गुष्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ८

स रैहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः ।

परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृजः ९ ८६५

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।

हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा १०

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोमं पवते अद्रिदुग्धः ।

इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ११ ८६७

अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् । इन्द्रुर्धर्माण्युतथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये	१२
वृषा शोणो अभिकर्निकदुद् गा नदयन्नेति पृथिवीमुत घाम् । इन्द्रस्येव वयुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम्	१३
रसाय्यः पर्यसा पिन्वमान इरयन्नेपि मधुमन्तमंशुम् । पवमानः संतनिर्मेभि कृण्व—निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः	१४ ८७०
एवा पवस्व मदिरो मदायो—दग्राभस्य नमयन् वधस्तः । परि वर्ण भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः	१५
जुष्टी न इन्दो सुपथा सुगा—न्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् । घनेव विष्वग् दुरितानि विघ्न—न्नाधि ण्णुना धन्व सानो अव्ये	१६
वृष्टि नो अर्ष दिव्यां जिगत्नु—मिळावतीं शंगयीं जीरदानुम् । स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् बन्धूरिमो अवरा इन्दो वायुन्	१७
ग्रन्थि न वि प्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम । अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मयीं देव धन्व पस्त्यावान्	१८
जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ण्णुना धन्व सानो अव्ये । सहस्रधारः सुरभिरदन्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये	१९ ८७५
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न संसृजानास आजौ । एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवामस्तां उप याता पिबध्वं	२०
एवा न इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु । सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददात वीरवन्तमुग्रम्	२१
तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य वा धर्मेणि क्षोरनीके । आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्	२२
प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः । धर्मा भुवद् वृजिन्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूम	२३
पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम् । द्विता भुवद् रयिपती रयीणा—मृतं भरत् सुभृतं चार्विन्दुः	२४ ८८०
अवीं इव श्रवसे सातिमच्छे—न्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष । स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित् पुनानः	२५ ८८१

देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः	क्षयं सुवीरं धन्वन्तु सोमाः ।	
आयज्यवः सुमति विश्ववारा	होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः	२६
एवा देव देवताते पवस्व	महे सोम पसरसे देवपानः ।	
महश्चिद्धि ममि हिताः समर्ये	कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः	२७
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः	मिहो न भीमो मनसो जवीयान् ।	
अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा	आ पवस्व सौमनसं न इन्द्रो	२८
शतं धारा देवजाता असृग्रन्	त्सहस्रमेनाः क्वयो मृजन्ति ।	
इन्द्रो सनित्रं दिव आ पवस्व	पुरएतामि महतो धनस्य	२९ ८८५
दिवो न सर्गा अससृग्रमह्नां	गजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः ।	
पितुर्न पुत्रः क्रतुंभिर्यतान	आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम्	३०
प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्	वारान् यत् पृतो अत्येष्यव्यान् ।	
पवमान पवसे धाम गोनां	जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अकं:	३१
कर्निकदुदनु पन्थामृतस्य	शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।	
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्	हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम्	३२
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम	पिन्वन् धाराः कर्मणा देववीतौ ।	
एन्द्रो विश कलशं सोमधानं	क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम्	३३
तिस्रो वाच ईरयति प्र वहि	ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।	
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः	सोमं यन्ति मतयो वावशानाः	३४ ८९०
सोमं गावो धेनवो वावशानाः	सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।	
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः	सोमं अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते	३५
एवा नः सोम परिषिच्यमान	आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।	
इन्द्रमा विश बृहता रवेण	वर्धया वाचं जनया पुरंधिम्	३६
आ जागृविर्विप्रं क्रता मतीनां	सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।	
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा	अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः	३७
स पुनान उप सरे न धातो	भे अप्रा रोदसी वि ष आवः ।	
प्रिया चिद् यस्य प्रियसासं ऊती	स तू धनं कारिणे न प्र यंसत्	३८
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः	सोमो मीद्वान् अभि नो ज्योतिषावीत् ।	
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः	स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन्	३९ ८९५

अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे विधर्म—ञ्जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा । वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे सुवान इन्दुः मुहत् तत् सोमो महिषश्चकारा—ऽपां यद् गर्भोऽवृणीत देवान् । अदघादिन्द्रे पर्वमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः । मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्ता ऽपामीवां बाधमानो मृधश्च । अभिश्चीणन् पयः पर्यसाभि गोना—मिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः मध्वः स्रद्धं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च । स्वदुस्वेन्द्राय पर्वमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात् सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा मिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः । आ योनिं वन्यमसदत् पुनानः समिन्दुर्गोभिंसरत् समद्भिः एष स्य तै पवत इन्द्र सोम—श्चमूषु धीरं उशते तवस्वान् । स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि एष प्रत्नेन वर्यसा पुनान—स्तिरो वर्षासि दुहितुर्दधानः । वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन् न नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्बोः पूयमानः । अप्सु स्वादिष्टो मधुमां ऋतावा देवो न यः संविता सत्यमन्मा अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः । अभी नरं धीजवनं रथेष्ठा—मभीन्द्रं वृषणं वज्रवाहुम् अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षा—ऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः । अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्चान् रथिनो देव सोम अभी नो अर्ष दिव्या वस्त्र—न्याभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः अभि येन द्रविणमश्रवामा—ऽभ्यार्षियं जमदग्निवक्त्रः अया एवा पवस्वैना वस्त्रनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व । ब्रह्माश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित् तर्कवे नरं दात् उत न एना पवया पवस्वा—ऽधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे । षष्टिं सहस्रा नैगुतो वस्त्रनि वृक्षं न पक्कं धूनवद् रणाय	४० ४१ ४२ ४३ ४४ ९०० ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ९०५ ५० ५१ ५२ ५३ ९०९
---	--

महामि अस्य वृषनामं शुषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।

अस्वापयन्निगुतः स्नेहयन्चा—ऽपामित्राँ अपाचितो अचेतः

५४ ९१०

सं त्री पवित्रा विततान्येष्य—न्वेकं धावसि पूयमानः ।

असि भगो असि दात्रस्य दाता ऽसि मधवा मधवञ्जय इन्दो

५५

एष विश्ववित् पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा ।

द्रुप्सो इरयन् विदथेऽप्विन्दु—वि वारुमव्यं समयाति याति

५६

इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः ।

हिन्वान्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन

५७

त्वया व्यं पर्वमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

५८ ९१४

॥ ९७ ॥ (क्र ९ । ९८ । १-१२)

(९१५-९२६) अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । अनुष्टुप्, ११ बृहती ।

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम् । इन्दो सहस्रभर्णमं तुविद्युमं विम्बासहम् १ ९१५

परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत । इन्दुराभि द्रुणां हितो हियानो धाराभिरक्षाः २

परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः । धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ३

स हि त्वं देव शश्वते वमु मतीय दाशुषे । इन्दो सहस्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ४

वयं ते अस्य वृत्रहन् वमो वस्वः पुरुस्पृहः । नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुमनस्याग्निगो ५

द्विर्य पञ्च स्वयंशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् । प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्तापयन्त्यूमिणम् ६ ९२०

परि त्यं हर्यतं हरिं वभ्रुं पुनन्ति वारेण । यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ७

अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसाधनम् । यः सूरिषु श्रवो बृहद् दधे स्वर्णं हर्यतः ८

स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ठ रोदसी । देवो देवी गिरिष्ठा अस्त्रेधन् तं तुविष्वाणि ९

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि विच्यसे । नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे १०

ते प्रत्नामो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् । अपप्रोथन्तः सनुतर्हुराश्रितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ११ ९२५

तं सखायः पुरोरुचै ययं व्यं च सूरयः । अद्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् १२ ९२६

॥ ९८ ॥ (क्र ९ । ९९ । १-८) (९२७-९३४) रेभसून् काश्यपौ । अनुष्टुप्, १ बृहती ।

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् । शुक्रां वयन्त्यसुराय निणिजै विषामग्रे महीयुवः १

अघं क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते । यदीं विवस्वतो धियो हरिं हिन्वान्ति यातवे २

तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः । यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ३

तं गार्थया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत । उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ४ ९३०

तमुक्षमाणमव्यये वारं पुनन्ति धर्णसिम् । दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ५
 स पुनानो मदन्तिमः सोमश्चमूषु सीदति । पशौ न रेत आदधत् पतिर्वचस्यते धियः ६
 स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः । विदे यदासु संददिर्महीरपो वि गाहते ७
 सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयमे । इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूषा नि पीदसि ८ ९३४

॥ ९९ ॥ (ऋ. ९ । १०० । १-९) (९३५-९४३) रेभसन् काश्यपौ । अनुष्टुप् ।

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः १ ९३५
 पुनान इन्द्रवा भर सोमं द्विर्वहसं रयिम् । त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषां गृहे २
 त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः । त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यमि ३
 परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति । रहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानमिः ४
 क्रत्वे दक्षाय नः कवे पर्वस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ५
 पर्वस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः । इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ६ ९४०
 त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रं अद्रुहः । वत्सं जातं न धेनवः पर्वमान विधर्मणि ७
 पर्वमान महि श्रवंश्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्रसे विश्वानि दाशुषां गृहे ८
 त्वं द्यां च महिषत पृथिवीं चार्तिं जभ्रिये । प्रति द्रापिममुञ्चथाः पर्वमान महित्वना ९ ९४३

॥ १०० ॥ (ऋ. ९ । १०१ । १-१६)

(९४४-९५९) १-३ अन्धीगुः इयावाश्वि, ४-६ ययातिनीहुषः, ७-९ नहुषो मानवः, १०-१२

मनुः सांवरणः, १३-१६ वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापति । अनुष्टुप्, ९-३ गायत्री ।

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयिष्वे । अप श्वानं श्रथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम् १
 यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्वो न कृत्व्यः २ ९४५
 तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यजं हिन्वन्त्याद्रिभिः ३
 सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ४
 इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् । वाचस्पतिर्मवस्यते विश्वस्येशान् ओजसा ५
 सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीड्स्वयः । सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ६
 अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यव्ययद् रोदसी उभे ७ ९५०
 समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः । सोमांसः कृण्वते पथः पर्वमानास इन्दवः ८
 य ओजिष्ठस्तमा भर पर्वमान श्रवायम् । यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे ९
 सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वविदः १०
 सुव्राणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधिं त्वचि । इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ११ ९५४

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्तवो ध्रुवा घृते १२ ९५५
 प्र सुन्वानस्यान्धमो मतो न वृतं तद् वचः । अपश्चानमराधसं हता मुखं न भृगवः १३
 आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः । सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् १४
 स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तुस्तम्भ रोदसी । हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् १५
 अव्यो वारंभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि । कर्निकदुद वृषा हरि—ग्निद्रस्याभ्येति निष्कृतम् ९५९

॥ १०१ ॥ (ऋ ९ । १०२ । १—८) (९६०—९६७) त्रित आप्त्यः उष्णिक् ।

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् । विश्वा परि प्रिया भुवदधं द्विता १ ९६०
 उप त्रितस्य पाण्योरे—रभक्तं यद् गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरधं प्रियम् २
 त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेरेया रयिम् । मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ३
 जज्ञानं सप्त मातरां वेधामशासत श्रिये । अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ४
 अस्य व्रते सजोषसो विश्वं देवासो अद्रुहः । स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ५
 यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् । कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ६ ९६५
 समीचीने अभि त्मना यद्वाही क्रतस्य मातरा । तन्वाना यज्ञमानुषम् यदञ्जते ७
 कत्वां शुक्रेभिरक्षभि—र्ऋणोरपं व्रजं दिवः । हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ८ ९६७

॥ १०२ ॥ (ऋ ९ । १०३ । १—६) (९६८—९७३) द्वित आप्त्यः ।

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् । भूतिं न भरा मतिभिर्जुजौषते १
 परि वाराण्यव्यया गोभिरज्जानो अर्षति । त्री पथस्था पुनानः कृणुते हरिः २
 परि कोशं मधुश्रुत—मव्यये वारं अर्षति । अभि वाणीर्ऋषीणां सप्त नृषत ३ ९७०
 परि णेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः । सोमः पुनानश्चम्वोर्विशद्वरिः ४
 परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् । पुनानो वाघद् वाघद्विरमर्त्यः ५
 परि सप्तिर्न वाजयु—देवो देवेभ्यः सुतः । व्यानाशिः पवमानो वि धावति ६ ९७३

॥ १०३ ॥ (ऋ ९ । १०४ । १—६) (९७४—९८५) पर्वतनारदो काण्वो, काश्यपो शिखण्डिन्यावत्सरसौ वा ।

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये १
 समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् । देवाव्यं मदमभि द्विशवसम् २ ९७५
 पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये । यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ३
 अस्मभ्यं त्वा वसुविदं—मभि वाणीरनृषत । गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ४
 स नो मदानां पत इन्द्रो देवप्सरा असि । सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव ५
 सनेमि कृष्यस्मदा रक्षसं कं चिद्विणम् । अपादेवं द्वयुमंहो युयोधि नः ६ ९७९

॥ १०४ ॥ (क्र ९। १०५। १-६)

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः १ ९८०
 सं वत्स इव मातृभि—रिन्दुर्हिन्वानो अज्जते । देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः २
 अयं दक्षाय सार्धनो ऽयं शर्धाय वीतये । अयं देवभ्यो मधुमत्तमः सुतः ३
 गोमन्त्र इन्द्रो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धन्व । शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ४
 स नो हरीणां पतु इन्द्रो देवप्सरस्तमः । सखैव सख्ये नयो रुचे भव ५
 सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् । साह्यो इन्द्रो परि बाधो अपं द्रयुम् ६ ९८५

॥ १०५ ॥ (क्र ९। १०६। १-१४) (९८६-९९९) १-३, १०-१४ अग्निश्चाश्रुपः, ४-६ चक्षुर्मानव ७-९ मनुराप्सव ।

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टी जातास इन्द्रवः स्वविदः १
 अयं भराय सानसि—रिन्द्राय पवते सुतः । सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे २
 अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृष्णीत सानसिम् । वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ३
 प्र धन्वा सोम जागृवि—रिन्द्रायेन्द्रो परि सव । द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वविदम् ४
 इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः । सहस्रयामा पथिकृद् विचक्षणः ५ ९९०
 अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवभ्यो मधुमत्तमः । सहस्रं याहि पथिभिः कर्निकदत् ६
 पवस्व देववीतय इन्द्रो धाराभिरोजसा । आ कलशं मधुमान्सोम नः सदः ७
 तव द्रप्सा उदग्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः । त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ८
 आ नः सुतास इन्द्रवः पुनाना धावता रयिम् । वृष्टिद्यात्रो रीत्यापः स्वविदः ९
 सोमः पुनान ऊर्मिणा ऽव्यो वारं वि धावति । अग्रे वाचः पवमानः कर्निकदत् १० ९९५
 धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम् । अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ११
 असर्जि कलशाँ अभि मीळहे सप्तिर्न वाजयुः । पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् १२
 पवते हर्यतो हरि—रति ह्वरांसि रंहा । अभ्यर्षन्तस्तोतृभ्यो वीरवद् यशः १३
 अया पवस्व देवयु—र्मधोर्धारां असृक्षत । रेभन् पवित्रं पयंषि विश्वतः १४ ९९९

॥ १०६ ॥ (क्र ९। १०७। १-२६)

(१०००—१०२५) सप्तर्षयः (१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ कश्यपो मारीचः, ३ गोतमो राङ्गण, ४ भौमोऽजि, ५ विश्वामित्रो गाथिनः, ६ जमदग्निर्भार्गवः, ७ मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः) । प्रगाथः = (१, ४, ६, ८—१०, १२, १४, १७ बृहती, २, ५, ७, ११, १३, १५, १८ सतोबृहती) ; ३, १६ छिपदा विराट्, १९—२६ प्रगाथः = विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

परीतो विश्वता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।

दधन्वाँ यो नयो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः

१ १०००

नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवा—ऽदब्धः सुरभिर्तरः ।	
सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम्	२
परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः	३
पुनानः सोम धारया ऽपो वर्मानो अर्षसि ।	
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदु—स्युत्सो देव हिरण्ययः	४
दुहान ऊर्ध्वर्द्व्यं मधु प्रियं प्रतं सधस्थमासदत् ।	
आपृच्छयं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धृतो विचक्षणः	५
पुनानः सोम जागृवि—रव्यो वारे परि प्रियः ।	
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः	६ १००५
सोमो मीढ्वान् पवते गातुविचम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः ।	
त्वं कविरभवो देववीतम् आ सूर्यं रोहयो द्विवि	७
सोम उ पुत्राणः सोतुभि—रधि णुभिरवीनाम् ।	
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया	८
अनुपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।	
समुद्रं न संवरणान्यगमन् मन्दी मदाय तोशते	९
आ सोम सुवानो अद्रिभि—स्तिरो वाराण्यव्यया ।	
जनो न पुरि चम्बोर्विशद्वरिः सदो वनेषु दधिषे	१०
स मामृजे तिरो अण्वानि मेण्यो मीळहे समिर्न वाज्युः ।	
अनुमाद्यः पर्वमानो मनीषिभिः सोमो विप्रैर्भिरक्रकभिः	११ १०१०
प्र सोम देववीतगे सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।	
अंशोः पर्यसा मद्विरो न जागृवि—रच्छा कोशं मधुश्रुतम्	१२
आ हर्षतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सुनुर्न मर्ज्यः ।	
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गर्भस्त्योः	१३
अभि सोमास आयवः पर्वन्ते मद्यं मदम् ।	
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वविदः	१४
तरत् समुद्रं पर्वमान ऊर्मिणा राजा देव क्रतुं बृहत् ।	
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान क्रतुं बृहत्	१५
नृभिर्येमानो हर्षतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः	१६ १०१५

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वन्ते सुतः ।	
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः	१७
पुनानश्चमू जनयन् मति कविः सोमो देवेषु रण्यति ।	
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन् वनेष्वव्यत	१८
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।	
पुरुणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीरति ताँ ईहि	१९
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊर्धनि ।	
घृणा तपन्तमति सूर्य परः शकुना इव पप्तिम	२०
मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वासि ।	
रथि पिशङ्ग बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि	२१ १०२०
मृजानो वारे पवमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वनं ।	
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि	२२
पवस्व वाजसातये ऽभि विश्वानि काव्या ।	
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सरः	२३
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः ।	
त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः	२४
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।	
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च	२५
अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतर्भिः ।	
जनयङ्क्योतिर्मन्दना अवीवशद् गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	२६ १०२५

॥ १०७ ॥ (ऋ. ९ । १०८ । १—१६)

(१०२६—१०४१) १—२ गौरिवीति शाक्यः, ३, १४—१६ शक्तिर्वासिष्ठ, ४—५ ऊरुराङ्गिरस, ६—७

ऋजिष्वा भारद्वाजः, ८—९ ऊर्ध्वसन्ना आङ्गिरस, १०—११ कृतयशा आङ्गिरसः, १२—१३

ऋणचयो राजपिं. । काकुभ. प्रगाथः = (विपमा ककुप्, समा सतोबृहती),

१३ यवमध्या गायत्री ।

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः	१
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते ऽस्य पीता स्वर्विदः ।	
स सुप्रकेतो अभ्यर्कपीदिषो ऽच्छा वाजं नैतशः	२
त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वाय घोषयः	३ १०२८

येना नवग्वो दुध्यङ्ङपोर्णते	येन विप्रास आपिरं ।	
देवानां सुप्ते अमृतस्य चारुणो	येन श्रवास्यानशुः	४
एष स्य धारया सुतो ऽव्यो वारोभिः पवते मदिन्तमः ।	क्रीळन्मूर्मिरपामिव	५ १०३०
य उस्त्रिया अप्या अन्तरश्मनो	निर्गा अकृन्तदोजसा ।	
अभि व्रजं तत्तिषे गव्यमदव्यं	वर्माव धृष्णवा रुज	६
आ सोता परि पिञ्चता—ऽश्चं न स्तोमममुरं रजस्तुरम् ।	वनक्रक्षमुदुप्रतम्	७
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं	प्रियं देवाय जन्मने ।	
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे	राजा देव ऋतं बृहत्	८
अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः ।	वि कोशं मध्यमं युव	९
आ वच्यस्व सुदक्ष चग्राः सुतो	विशां वह्निर्न विस्पतिः ।	
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां	जिन्वा गविष्टये धियः	१० १०३५
एतमु त्थं मदुच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः ।	विश्वा वसूनि विभ्रतम्	११
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः	प्रतपञ्ज्योतिषा तमः ।	
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे	त्रिधात्वस्य दंससा	१२
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता	य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम्	१३
यस्य न इन्द्रः पिबाद् यस्य मरुता	यस्य वार्यमणा भगः ।	
आ येन मित्रावरुणा करामह	एन्द्रमवसे महे	१४
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः	स्वायुधो मदिन्तमः । पवस्व मधुमत्तमः	१५ १०४०
इन्द्रस्य हार्दिं सोमधानमा विश	समुद्रमिव सिन्धवः ।	
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे	दिवो विष्टम्भ उत्तमः	१६ १०४१
॥ १०८ ॥ (क्र. ९ । १०९ । १—२२) (१०४२—१०६३) अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वरय । द्विपदा विराट् ।		
परि प्र धुन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय		१
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः	ऋत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः	॥१॥ २
एवामृताय महे क्षयाय	स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः	३
पवस्व सोम महान्तसमुद्रः	पिता देवानां विश्वाभि धाम	॥२॥ ४ १०४५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम	दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै	५
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः	सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व	॥३॥ ६
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो	महामवीनामनु पूर्यः	७ १०४८

नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः	क्षरद् विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित्	॥४॥ ८
इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः	करद् विश्वानि द्रविणानि नः	९ १०५०
पर्वस्व सोम क्रत्वे दक्षायाऽश्वो न निकतो वाजी धनाय		॥५॥ १०
तं ते सोतारो रमं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय		११
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्		॥६॥ १२
इन्दुः पविष्ट चारुमदायाऽपामुपस्थे कविर्मगाय		१३
बिभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम येन विश्वानि वृत्रा जघानं		॥७॥ १४ १०५५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो गोभिः श्रीतस्य नृभिः सुतस्य		१५
प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्		॥८॥ १६
स वाज्यक्षाः सहस्रेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः		१७
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्भिभिः सुतः		॥९॥ १८
असर्जि वाजी तिरः पवित्रमिन्द्राय सोमः सहस्रधारः		१९ १०६०
अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेनेन्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय		॥१०॥ २०
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ऽपो वमानं हरिं मृजन्ति		२१
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते श्रीणक्षुग्रो रिणक्षपः		॥११॥ २२ १०६३

॥ १०९ ॥ (क ९ । ११० । १-१२ ।

(१०६४ - १०७५) ऽयरुणस्त्रैवृष्णः, असदस्युः पौरुकुत्स्यः॥ १-३ पिपीलिकमध्या अनुष्टुप्.

४-९ ऊर्ध्वबृहती, १०-१२ विराट् ।

पर्यु षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।	
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे	१
अनु हि त्वा सुतं सोमं मदामसि महे समर्यराज्ये ।	
वाजां अभि पवमान प्र गाहसे	२ १०६५
अजीजनो हि पवमान सूर्ये विधारं शकर्मना पयः ।	
गोजीरया रंहमाणः पुरंध्या	३
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वं ऋतस्य धर्मममृतस्य चारुणः ।	
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्	४
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।	
शर्याभिर्न भरमाणो गर्भस्त्योः	५ १०६८

आर्दीं के चित् पश्यमानासु आप्यं वसुरुचौ दिव्या अभ्यनूषत ।	
वारं न देवः संविता व्यूर्णते	६
त्वे सोम प्रमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।	
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय	७ १०७०
दिवः पीयूषं पूर्य्य यदुक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ निरधुक्षत ।	
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्	८
अथ यदिमे पवमानु रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।	
यूथे न निष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे	९
सोमः पुनानो अव्यये वारं शिशुर्न क्रीळन् पवमानो अक्षाः ।	
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः	१०
एष पुनानो मधुमां क्रतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरुर्मिः ।	
वाजसर्निर्वरिवोविद् वयोधाः	११
स पवस्व सहमानः पृतन्यून् तसेधन् रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।	
स्वायुधः सासह्वान्तसोम शत्रून्	१२ १०७५

॥ ११० ॥ (ऋ ९ । १११ । १—३) (१०७६—१०७८ अनानतः पारुच्छेपिः । अत्यष्टिः ।

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः सरो न स्वयुग्वभिः ।	
धारां सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।	
विश्वा यद् रूपा परिण्यतृक्कभिः सप्तास्येभिर्ऋक्कभिः	१
त्वं त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयासि स्व आ दमं क्रतस्य धीतिभिर्दमे ।	
परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतर्यः ।	
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे	२
पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर्मर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।	
अगमन्नकथानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।	
वज्रश्च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता	३ १०७८

॥ १११ ॥ (ऋ ९ । ११२ । १—४) (१०७९—१०८२) शिशुराक्षिरसः । पङ्क्तिः ।

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।	
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग् ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्द्रो परि स्रव	१ १०७९

जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।

कामरौ अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव २ १०८०

कारुरहं ततो भिषगुपलप्राक्षिणीं नृना ।

नानाधियो वसुयवो ऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ३

अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।

शेषो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूकं इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ४ १०८१

॥ ११२ ॥ (ऋ ९ । ११३ । १—११) (१०८३-१०९७) कश्यपो मारीचः ।

शूर्यणावन्ति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।

बलं दधान आत्मनि करिष्यन् वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव १

आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात् सोम मीद्वः ।

ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव २

पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।

तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन् तं सोम रसमादधु—रिन्द्रायेन्दो परि स्रव ३ १०८५

ऋतं वदन्नतद्युम्न सत्यं वदन्तसत्यकर्मन् ।

श्रद्धां वदन्तसोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ४

सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।

सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ५

यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यांश्च वाचं वदन् ।

ग्राव्णा सोमं महीयते सोमैरानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ६

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन् लोके स्वरहितम् ।

तस्मिन् मां धेहि पवमाना—ऽमृतं लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ७

यत्र राजा वैवस्वतो यत्राविरोधनं दिवः ।

यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ८ १०९०

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।

लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ९

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् ।

स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव १०

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।

कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ११ १०९३

॥ ११३ ॥ (ऋ. ९ । ११४ । १-४)

य इन्द्रोः पवमानस्या—ऽनु धामान्यक्रमीत् ।

तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमार्विधन्मन इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव १

ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्धयन् गिरः ।

सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पति—रिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव २ १०९५

सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।

देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ३

यत् ते राजञ्छृतं हवि—स्तेन सोमाभि रक्ष नः ।

अरातीवा मा नस्तारी—न्मो च नः किं चनामम—दिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ४ १०९७

॥ ११४ ॥ (ऋ. १ । ४३ । ७-९)

(१०९८—११००) कण्वो घांगः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ७

मा नः सोमपरिवाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्द्रो वाजं भज ८

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्मृतस्य ।

मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ९ ११००

॥ ११५ ॥ (ऋ. १ । ९१ । ६-२३)

(११०१—११२३) गोतमो राहगणः । त्रिष्टुप्; ५—१६ गायत्री; १७ उष्णिक् ।

त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् ।

तव प्रणीती पितरो न इन्द्रो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः १

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भू—स्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः ।

त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युमन्यभवो नृचक्षाः २

राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम ।

शुचिद्वर्षसि प्रियो न मित्रो दक्षायो अर्यमेवासि सोम ३

या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वसु ।

तेभिर्ना विश्वैः सुमना अहेलन् राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय ४

त्वं सोमासि सत्पति—स्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असि क्रतुः ५ ११०५

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६ ११०६

त्वं सोमं महे भगं त्वं यूनां ऋतायते । दक्षं दधासि जीवसे ७	
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षां राजन्नघायतः । न रिष्येत् त्वावतः सखा ८	
सोम यास्ते मयोभुव उतयः सन्ति दाशुषे । तामिनींऽविता भव ९	
हमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव १० १११०	
सोम गीभिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः । सुमृळीको न आ विश ११	
गयस्फानो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव १२	
सोम रारन्धि नो हृदि गात्रो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये १३	
यः सोम सख्ये तव रारणद् देव मर्त्यः । तं दक्षः मचते कविः १४	
उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहमः । सखा सुशेव एधि नः १५ १११५	
आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे १६	
आ प्यायस्व मदन्तम् सोम विश्वेभिरंशुभिः । भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे १७	
सं ते पयांसि मम यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।	
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व १८	
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।	
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो ऽवरिहा प्र चरा सोम दुर्यान् १९	
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्य ददाति ।	
सादुन्यं विदुष्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै २० ११२०	
अषाळ्हं युत्सु पृतनासु पप्रि स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।	
भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम २१	
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वा—स्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।	
त्वमा ततन्थोर्वृन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ २२	
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागं सहसावन्नभि युष्य ।	
मा त्वा तनदीशिषे वर्यस्यो—भयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ २३ ११२३	

॥ ११६ ॥ (ऋ ३ ८६२ । १३—१५)

(११२४—११२६) गाथिनो विश्वामित्र । गायत्री ।

सोमो जिगाति गातुविद् देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम् १३	
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत् १४ ११२५	
अस्माकमायुर्वर्धय—अभिमातीः सहमानः । सोमः सधस्थमासदत् १५ ११२६	

॥ ११७ ॥ (ऋ ६ । ४७ । १—५)

(११२७—११३१) गगो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्वा॒दु॒क्किला॒यं मधु॑माँ उ॒तायं ती॒व्रः किला॒यं रस॑वाँ उ॒तायम् ।

उ॒तो न्व॑स्य प॒पिवांस॑मिन्द्रं न कश्च॒न स॑हत आ॒हवे॑षु १

अ॒यं स्वा॒दुरि॑ह म॒दिष्ठ आ॒स यस्येन्द्रो॑ वृ॒त्रह॑त्यै म॒माद॑ ।

पु॒रूणि यश्च्यो॑त्ता श॒म्बर॑स्य वि न॒वति॑ न॒व च दे॒ह्यं ३ ह॒न् २

अ॒यं मे पी॒त उ॒दि॒यति॑ वाच॒—म॒यं म॒नीषा॑मु॒शती॑म॒जीगः ।

अ॒यं प॒ळुर्वी॑रमिमी॒त धी॒रो न या॒भ्यो भु॒वन् क॑च्च॒नारे ३

अ॒यं स यो ध॑रि॒माणं पृ॒थिव्या वृ॒ष्माणं॑ दि॒वो अ॒कृ॒णोद॑यं सः ।

अ॒यं पी॒यूषं॑ ति॒सृषु॑ प्र॒वत्सु॑ सोमो॑ दा॒धारे॑र्व॒न्तरि॑क्षम् ४ ११३०

अ॒यं वि॒दच्चि॒दृ॒दृशी॑कि॒मर्णः॑ शु॒क्रस॑न्न॒नामु॒पसा॑मनी॒के ।

अ॒यं म॒हान् म॒हता॑ स्क॒म्भेन॑—नो॒द् द्या॑म॒स्तभ्ना॑द् वृष॒भो म॒रुत्वा॑न् ५ ११३१

॥ ११८ ॥ (ऋ ७ । १०४ । ९, १२—१३)

(११३२—११३४) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ ।

ये पा॒कशंसं॑ वि॒हर॑न्त ए॒वै—र्ये वा॑ भ॒द्रं दू॒षय॑न्ति स्व॒धाभिः॑ ।

अ॒हये॑ वा॒ तान् प्र॒ददा॑तु सोम॒ आ वा॑ द॒धातु॑ निर्॒कृते॑रु॒पस्थे॑ ९

सु॒वि॒ज्ञानं॑ चि॒कित॑पे जना॒य स॒च्चास॑च्च वच॒मी प॑स्प॒धाते॑ ।

तयो॑र्यत् स॒त्यं य॑तर॒दृजी॑य—स्तदि॒त् सोमो॑ऽव॒ति ह॑न्त्यास॒त् १२

न वा उ॒ सोमो॑ वृ॒जिनं॑ हि॒नोति॑ न क्ष॒त्रियं॑ मिथु॒या धा॑रय॒न्तम् ।

ह॒न्ति र॒क्षो ह॑न्त्यास॒द् वद॑न्त—मु॒भावि॑न्द्र॒स्य प्र॑सि॒तौ श॑याते १३ ११३४

॥ ११९ ॥ (ऋ ८ । ४८ । १—१५)

(११३५—११४९) प्रगाथो घोरः काण्वः । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

स्वा॒दोर्भ॑क्षि वय॑सः सु॒मे॒धा स्वा॒ध्यो वरि॑वो॒वित्तर॑स्य ।

वि॒श्वे यं दे॒वा उ॒त म॒र्त्यासो॑ मधु॒न्ब्रु॑वन्तो॑ अ॒भि स॑न्चर॒न्ति १ ११३५

अ॒न्तश्च॑ प्रा॒गा अ॒दि॒तिर्भ॑वास्य—व॒याता॑ ह॒रसो॑ दै॒व्यस्य॑ ।

इ॒न्दुवि॑न्द्र॒स्य स॒ख्यं जु॑षा॒णः श्रौ॑ष्टी॒व धु॑र॒मनु॑ रा॒य क्र॑ध्याः २

अ॒पाम् सोम॑म॒मृता॑ अ॒भूमा—ग॑न्म॒ ज्योति॑रवि॒दाम॑ दे॒वान् ।

किं नून॑म॒स्मान् कृ॑णव॒दरा॑निः कि॒मु धूर्ति॑र॒मृत॑ म॒र्त्यस्य॑ ३ ११३७

शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेवं सोम सूनवे सुशेवं ।	
सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जीवसे सोम तारीः	४
इमे मा पीता यशसं उरुग्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु ।	
ते मा रक्षन्तु विस्रसंश्चरित्रा दुत मा भामाद् यवयन्तिवन्देवः	५
अग्निं न मा मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसां नः ।	
अथा हि ते मद आ सोम मन्ये रेवा इव प्र चरा पुष्टिमच्छ	६ ११४०
इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः ।	
सोमं राजन् प्र ण आयुषि तारी रहानीव सूर्यो वासगणि	७
सोमं राजन् मृळ्या नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्याइस्तस्य विद्धि ।	
अलंति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अयो अनुकामं परा दाः	८ ११४१
त्वं हि नस्तुन्वं सोम गोपा गात्रेगात्रे निपसत्था नृचक्षाः ।	
यत् ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुपत्वा देव वस्यः	९
ऋदुदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्वर्यश्च पीतः ।	
अयं यः सोमो न्यधायस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरेमेभ्यायुः	१०
अप त्या अस्थुरनिग अमीवा निरत्रसन् तमिषीचिरभैषुः ।	
आ सोमो अस्मा अरुहद् विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः	११ ११४५
यो न इन्दुः पितरो हत्सु पीता ऽमर्त्यो मर्त्यो आविवेश ।	
तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम	१२
त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ ।	
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्	१३
व्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।	
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरांसो विदथमा वदेम	१४
त्वं नः सोम विश्वतो वयोधा स्त्वं स्वविदा विंशा नृचक्षाः ।	
त्वं न इन्द्र ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात्	१५ ११४९

॥ १२० ॥ (ऋ ८ । ७९ । १-९)

(११५०-११५८) कृत्तुर्भार्गवः । गायत्री, ९ अनुष्टुप ।

अयं कृत्तुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित् सोमः । ऋषिर्विप्रः काव्येन	१ ११५०
अभ्यूर्णोति यन्नमं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम् । प्रेमन्धः ख्याभिः श्रोणो भूत	२ ११५१

त्वं सोम तनूकृद्भयो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः । उरु यन्तासि वरूथम् ३
 त्वं चित्ती तव दक्षे—र्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद् द्वेषः ४
 अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद् दुदुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ५
 विदद् यत् पूर्य नष्ट—सुदीमृतायुमीरयत् । प्रमायुस्तारीदतीर्णम् ६ ११५५
 सुशेवो नो मृळयाकु—रदस्रकतुरवातः । भवो नः सोम शं हृदे ७
 मा नः सोम सं वीविजो मा वि वीभिषथा राजन् । मा नो हार्दिं त्विषा वधीः ८
 अव यत् स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरिक्षे ।
 राजन्नप द्विषः सेध मीद्वो अप सिधः सेध ९ ११५८

॥ ११५९ ॥ (ऋ. ८ । १०१ । १४)

(११५९) जमदग्निर्भागवः । त्रिष्टुप ।

प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयु—न्यून्या अर्कमाभितो विविश्रे ।
 बृहद्रे तस्थौ भुवनेध्वन्तः पर्वमानो हरित आ विवेश १ ११५९

॥ ११६० ॥ (ऋ. १० । २५ । १-११)

(११६०-११७०) ऐन्द्रो विमद , प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकुडा । आस्तारपङ्क्तिः ।

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत कर्तुम् ।
 अधा ते सूर्ये अन्धसो वि वो मदे रणन् गावो न यवसे विवक्षसे १ ११६०
 हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु ।
 अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसुयवो वीवक्षसे २
 उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाक्या ।
 अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो अभि चिद् वधाद् विवक्षसे ३
 समु प्र यन्ति धीतयः सर्गीसोऽवतां इव ।
 कर्तुं नः सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसां इव विवक्षसे ४
 तव त्ये सोम शक्तिभि—र्निकामासो व्यृण्विरे ।
 गृत्संस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तमश्विनं विवक्षसे ५
 पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्टितं जगत् ।
 समाकृणोपि जीवसे वि वो मदे विश्वा संपश्यन् भुवना विवक्षसे ६ ११६५
 त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव ।
 सेध राजन्नप सिधो वि वो मदे मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ७ ११६६

त्वं नः सोम सुकृतुर्वयोधेयाय जागृहि ।
 क्षेत्रवित्तो मनुषो वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यहंसो विवक्षसे ८
 त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः सखा ।
 यत् सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकमातो विवक्षसे ९
 अयं व स तुरो मदु इन्द्रस्य वर्धत प्रियः ।
 अयं कक्षीर्वतो महो वि वो मदे मतिं विप्रस्य वर्धयद् विवक्षसे १०
 अयं विप्राय दाशुषे वाजा इयति गोमतः ।
 अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिपद् विवक्षसे ११ ११७०

॥ १२३ ॥ (ऋ. १० । ८५ । १ । ५)

(११७१-११७५) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप ।

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः ।
 ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अर्धं श्रितः १
 सोमेनादित्या बलिनुः सोमेन पृथिवी मही ।
 अथो नक्षत्राणामेषा मुपस्थे सोम आहितः २
 सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिपन्त्योषधिम् ।
 सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ३
 आच्छद् विधानैर्गुपितो बर्हितैः सोम रक्षितः ।
 ग्राव्णामिच्छुष्वन् तिष्ठमि न ते अश्नाति पार्थिवः ४
 यत् त्वा देव प्रपिबन्ति तत् आ प्यायसे पुनः ।
 वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः ५ ११७५

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ३ । ५ । १-८)

(११७६-११८६) अथर्वा । अनुष्टुप, १ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्, ४ त्रिष्टुप्, ८ विराडुरोबृहती ।

आयमगन् पर्णमणिर्बली बलेन प्रमृणन्तसपत्नान् ।
 ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन् १
 मयि क्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद् रयिम् ।
 अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः २
 यं निदधुर्वनस्पतौ गुह्यं देवाः प्रियं मणिम् ।
 तमस्मभ्यं सहायुषा देवा ददतु भर्तवे ३ ११७८

सोमस्य पूर्णः सह उग्रमाग—भिन्द्रेण दुत्तो वरुणेन शिष्टः ।

तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वार्य शतशारदाय

४

आ मारुक्षत् पर्णमणि—र्मह्या अरिष्टतातये ।

यथाहमुत्तरोऽसा—न्यर्यम्ण उत संविदः

५ ११८०

ये धीवानो रथकाराः कर्मार ये मनीषिणः ।

उपस्तीन् पर्णं मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान्

६

ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये ।

उपस्तीन् पर्णं मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान्

७

पूर्णोऽसि तनुपानः सयोनिरवीरो वीरेण मया ।

संवत्सरस्य तेजसा तेन बभामि त्वा मणे

८ ११८३

॥ १२५ ॥ (अथर्व० ५ । २४ । ७) अतिशक्नी ।

सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां

चित्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

७ ११८४

॥ १२६ ॥ (अथर्व० ६ । ६ । २—३) अनुष्टुप् ।

यो नः सोम सुशंसितो दुःशंस आदिदैशति ।

वज्रेणास्य मुखे जहि स संपिष्टो अपायति

२ ११८५

यो नः सोमाभिदासति सनाभिर्यश्च निष्टयः ।

अप तस्य बलं तिर महीव द्यौर्विधत्मना

४ ११८६

॥ १२७ ॥ (अथर्व० ५ । ३ । ७) (११८७) बृहद्विवोऽथर्वा । त्रिष्टुप् ।

तिस्रो देवीर्महि नः शर्म यच्छत प्रजायै नस्तन्वेरे यच्च पुष्टम् ।

मा हास्महि प्रजया मा तनूभि—र्मा रंधाम द्विषते सोम राजन्

७ ११८७

॥ १२८ ॥ (अथर्व० ४ । ४० । ४) (११८८) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।

य उत्तरतो जुह्वति जातवेद उदीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।

सोममृत्वा ते पराश्चो व्यथन्तां प्रत्यगैनान् प्रतिसरेण हन्मि

४ ११८८

॥ १२९ ॥ (अथर्व० ५ । २६ । १०) (११८९) ब्रह्मा । द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

सोमो युनक्तु बहुधा पर्या—स्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा

१० ११८९

॥ १३० ॥ (अथर्व० ६ । ८९ । १) (११९०) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

इदं यत् प्रेण्यः शिरो दुत्तं सोमेन वृण्यम् ।

ततः परि प्रजातेन हार्दिं ते शोचयामसि

१ ११९०

॥ १३१ ॥ (११९१-११९३) (वा० यजु० ४ । १६ उत्तरार्धः, २४, २७)

रास्वेयत् सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् १६

एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमाय
ब्रूतादेष ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूतच्छन्दोनामानां॑ साम्राज्यं गच्छति
मे सोमाय ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा विचिन्यन्तु २४

मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तं॑ स्योनः स्योनम् ।

स्वान् आजङ्घारि बम्भारि हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्

रक्षध्वं मा वो दभन्

२७ ११९३

॥ १३२ ॥ (११९४) (वा० यजु० ५ । ७)

अ॒थ॒शुर॑थ॒शुष्टे॑ देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।

आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।

आप्याययास्मान्तसखीन्तसन्त्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।

एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

७ ११९४

॥ १३३ ॥ (११९५-१२००) (वा० यजु० ६ । २५-२६, ३०-३३, ३५-३६)

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।

ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ

२५ ११९५

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।

श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं॑ शृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा २६

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्राय त्वादित्यवत इन्द्राय त्वाभिमातिमे ।

इयेनाय त्वा सोमभृतेऽग्रये त्वा रायस्पोषदे

३२

यत् ते सोम दिवि ज्योतिर्यत् पृथिव्यां यदुरावन्तरिक्षे ।

तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वाचः

३३

मा भर्मा संविकथा ऊर्जी धत्स्व धिषणे वीड्वी सती वीड्वेथामूर्जं दधाथाम् ।

पाप्मा हतो न सोमः

३५ ११९९

प्रागपागुदगधराक् सर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु ।

अम्ब निष्पर समरीर्षिदाम

३६ १२००

॥ १३४ ॥ (१२०१) (वा० यजु० ७ । १४)

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

मा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा म प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः

१४ १२०१

॥ १३५ ॥ (१२०२—१२०८) (वा० य० ८ । १, ९, २५-२६, ४८—५०)

उपयामगृहीतोऽम्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णं उरुगायैष ते सोमस्तथ रक्षस्व मा त्वा दभन्

१

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त

इन्द्रोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहोऽरु ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादहमवस्ताद् यदुन्तरिक्षं तद् मे पिताभूत् ।

अहं सूर्यमुभयतो ददर्श—ऽहं देवानां परमं गुहा यन्

९

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्ता नमोवाके विधेम यत् स्वाहा

२५

देवीराप एष वो गर्भस्तथ सुप्रातथ सुभृतं विभृत ।

देव सोमैष ते लोकस्तस्मि—च्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व

२६ १२०५

ब्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि भृन्दनानां त्वा

पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि

शुक्रं त्वा शुक्र आधूनो—म्यहो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु

४८

ककुभं रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः ।

यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा॥४९

उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपी-

ह्यस्मत्सत्त्वा त्वं देव सोम विश्वेषां देवानां प्रियं पाथोऽपीहि

५० १२०८

॥ १३६ ॥ (१२०९) (वा० य० १९ । ७२)

सोमो राजामृतं सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पथोऽमृतं मधु७२ १२०९

॥ १३७ ॥ (१२१०) (वा० य० २० । १९)

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि
यं च वयं द्विष्मः

१९ १२१०

॥ १३८ ॥ (१२११-१२१४) साम० १३००-१३०३)

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुधा हि घृतश्चुतः ।

ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥

१३००

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथा अमुम् ।

कामान्तसमर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥

१३०१

येन देवाः पार्वत्रेणा—ऽऽत्मानं पुनते सदा ।

तेन सहस्रधारेण—पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥

१३०२

पावमानीः स्वस्त्ययनी—स्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।

पुण्याश्च भक्षान् भक्षय—न्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥

१३०३ १२१४

॥ १३९ ॥ (ऋ १० । १२४ । ६) (१२१५) अग्नि-वरुण-सोमाः । त्रिष्टुप् ।

इदं स्वरिदमिदांस वाम—मयं प्रकाश उर्वरान्तरिक्षम् ।

हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्टवा सन्तं हविषा यजाम

६ १२१५

सोमसहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यरोदसीमित्रवरुणरुद्रेन्द्राग्न्यर्यमभगसोमाः ।

॥ १४० ॥ (ऋ १ । १३६ । ६) (१२१६) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टि ।

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकाय मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग् जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि

६ १२१६

(२) सोमापूषणौ, ६ (अन्त्योऽर्धर्चस्य) अदितिः ।

॥ १४१ ॥ (ऋ. २ । ४० । १-६)

(१२१७-१२२२) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गव शौनकः । त्रिष्टुप् ।

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।	
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्	१
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्ते—मौ तमांसि गूहतामजुष्टा ।	
आभ्यामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः सोमापूषभ्यां जनदुस्त्रियासु	२
सोमापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।	
विष्वृत्तं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम्	३
दिव्यैर्न्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे ।	
तावत्सभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं रायस्पोषं विष्यतां नाभिस्मे	४ १२२०
विश्वान्यन्यो भुवना जजान विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।	
सोमापूषणावर्तं धियं मे युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम	५
धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु ।	
अवतु देव्यदितिरनुर्वा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	६ १२२२

(३) सोमारुद्रौ ।

॥ १४२ ॥ (ऋ. ६ । ७४ । १-४)

(१२२३-२६) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं प्र वामिष्टयोऽरमभुवन्तु ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे	१
सोमारुद्रा वि बृहत् विष्वची—ममीवा या नो गर्यमाविवेश ।	
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचै—रस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु	२
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।	
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्सत्	३ १२२५
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः ।	
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद् गोपायतं नः सुमनस्यमाना	४ १२२६

(४) ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावापृथिवी-पूषाणः ।

॥ १४३ ॥ (ऋ ६ । ७५ । १०)

(१२२७) पायुर्भरिद्वाजः । जगती ।

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा मार्किर्नो अघशंस ईशत

१० १२२७

(५) वर्म-सोम-वरुणाः ।

॥ १४४ ॥ (१२२८) (ऋ ६ । ७५ । १८) पायुर्भरिद्वाज । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु

१८ १२२८

(६) अग्नीद्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः ।

॥ १४५ ॥ (ऋ ७ । ४१ । १)

(१२२९) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम

१ १२२९

(७) अङ्गिरःपित्रथर्वभृगुसोमाः ।

॥ १४६ ॥ (ऋ १० । १४ । ६)

(१२३०) वैवस्वतो यम । त्रिष्टुप् ।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।
तेषां वयं सुमृतौ यज्ञियांनामपि भद्रे सौमनसे स्वाम

६ १२३०

(८) आपः सोमो वा ।

॥ १४७ ॥ (ऋ १० । १७ । ११-१३)

(१२३१-१२३३) देवश्चवा यामायनः । त्रिष्टुप् १३ अनुष्टुप् पुरस्ताद्बृहती वा ।

द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु धूनिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

११ १२३१

यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशु—र्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।
 अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वर्षत्कृतम् १२
 यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशु—रवश्च यः परः सुचा ।
 अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ १२३३

(९) अग्नीषोमौ ।

॥ १४८ ॥ (ऋ० १० । १९ । १ उत्तरार्धः)
 (१२३४) मथितो यामायनः, भृगुर्वाणिर्वा, भार्गवश्चयवनो वा । अनुष्टुप् ।
 अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् । १ १२३४
 ॥ १४९ ॥ (अथर्व २ । ३३ । ३)
 (१२३५) पतिवेदनः । त्रिष्टुप् ।
 इयमग्ने नारी पतिं विदेष्टु सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
 सुवाना पुत्रान् महिषी भवति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २ १२३५

(१०) निष्कृतिसोमौ ।

॥ १५० ॥ (ऋ० १० । ५९ । ४)
 (१२३६) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायनाः । त्रिष्टुप् ।
 मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निष्कृतिर्जिहीताम् ३ १२३६

(११) पृथिवीद्वयन्तरिक्षसोमपूषपथ्यास्वस्तयः ।

॥ १५१ ॥ (ऋ० १० । ५९ । ७)
 (१२३७) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायना । त्रिष्टुप् ।
 पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।
 पुनर्नः सोमस्तन्वँ ददातु पुनः पूषा पथ्यांश्च या स्वस्तिः ७ १२३७

(१२) सोमार्कौ ।

॥ १५२ ॥ (ऋ० १० । ८५ । १८)
 (१२३८) सूर्या सावित्री ऋषिका । जगती ।
 पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशु क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।
 विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट क्रतूरन्यो विदधजायते पुनः १८ १२३८

(१३) सोम-वरुण-बृहस्पति-अनुमति-मघवत्-धातु-विधातारः ।

॥ १५३ ॥ (ऋ १० । १६७ । ३)

(१२३९) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि ।
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातुर्विधातः कलशो अभक्षयम्

३ १२३९

(१४) बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च ।

॥ १५४ ॥ (अथर्व० १ । ८ । १-२ ,

(१२४०-१२४१) चातनः । अनुष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा वहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकं—रिह स स्तुवतां जनः

१ १२४०

अयं स्तुवान आगमं—दिमं स्म प्रति हयत ।

बृहस्पते वशे लब्ध्वा अग्नीषोमा वि विध्यतम्

२ १२४१

(१५) अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः ।

॥ १५५ ॥ (अथर्व० २ । १० । २)

(१२४२) भृग्वङ्गिराः । सप्तपदाष्टिः ।

शं ते अग्निः सहाङ्गिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रिया—भिर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥२॥ १२४२

(१६) सोमः, अर्यमा, धाता ।

॥ १५६ ॥ (अथर्व० २ । ३६ । २)

(१२४३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं—मर्यम्णा संभृतं भगम् ।

धातुर्देवस्य सत्येन कृणोमि पतिवेदनम्

२ १२४३

(१७) वरुणः, सोमः, इन्द्रः ।

॥ १५७ ॥ (अथर्व० ३।३।३)

(१२४४-१२६०) अथर्वा । चतुष्पदा भुरिक्पङ्क्ति ।

अ॒ज्यस्त्वा॒ राजा॒ वरु॑णो ह्ययतु सोम॑स्त्वा ह्ययतु पर्व॑तेभ्यः ।

इन्द्र॑स्त्वा ह्ययतु वि॒ड्भ्य आ॒भ्यः इये॒नो भू॒त्वा वि॒श आ प॑तेमाः

३ १२४४

(१८) सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः ।

॥ १५८ ॥

(१२४५) (अथर्व० ३ । ८ । ३) जिष्टुप् ।

हुवे सोमं स॒वितारं॑ नमो॒भिर्वि॒श्वाना॑दित्यो॒ अहमु॑त्तरत्वे ।

अ॒यम॒ग्निर्दी॑दायद् दी॒र्घमे॒व स॒जातै॑रिन्द्रोऽप्रति॒ब्रुवा॑द्भिः

३ १२४५

(१९) सोमः, स्वजः, अशनिः ।

॥ १५९ ॥

(१२४६) (अथर्व० ३।२७।४) पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।

उदी॑ची दिक् सोमोऽधि॑पतिः स्व॒जो र॑क्षिताशनिरिष॑वः ।

तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पतिभ्यो॒ नमो र॑क्षित॒भ्यो नम॑ इषु॒भ्यो नम॑ ए॒भ्यो अस्तु॑ ।

यो॒रे॒सान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्वि॒ष्मस्तं वो॒ जम्भे॑ दध्मः

४ १२४६

(२०) आपः, सोमः ।

॥ १६० ॥ (१२४७) (अथर्व० ४ । ४ । ५) अनुष्टुप् ।

अ॒पां रसः॑ प्रथम॒जो ऽथो॒ वन॑स्पती॒नाम् ।

उ॒त सोम॑स्य॒ भ्राता॑—ऽस्यु॒तार्श॑मसि वृ॒ण्यम्

५ १२४७

(२१) सोमः, वनस्पतिः ।

॥ १६१ ॥ (१२४८-१२४९) (अथर्व० ६ । २ । १-२) परोष्णिक् ।

इन्द्रा॑य सोममृ॒त्विजः सु॒नोता॑ च धावत ।

स्तो॒तुर्यो वचः॑ शृण्व॒द्भव॑ च मे

१

आ यं वि॒शन्तीन्द्र॑वो वयो न वृ॒क्षम॑न्धसः ।

वि॒र॒प्तिन् वि मृ॒धो जहि॑ र॒क्षस्वि॑नीः

२ १२४९

(२२) द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः ।

॥१६२॥ (१२५०) (अथर्व० ६।३।२) जगती ।

पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।

पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः २ १२५०

(२३) सोमः, अदितिः ।

॥१६३॥ (१२५१-१२५२) (अथर्व० ६।७।१-२) १ निष्कृत्, २ गायत्री ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः ।

तेना नोऽवसा गहि

१

येन सोम साहन्त्या—सुरान् रन्धयामि नः ।

तेना नो अधि वोचत

२ १२५२

(२४) द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः ।

॥१६४॥ (१२५३) (अथर्व० ६।४०।१) जगती ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।

अभयं नोऽस्तूर्वाऽन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु

१ १२५३

(२५) अग्निः, इन्द्रः, सोमः ।

॥१६५॥ (१२५४) (अथर्व० ६।५८।३) । अनुष्टुप् ।

यशा इन्द्रो यशा अग्नि—र्यशाः सोमो अजायत ।

यशा विश्वस्य भूतस्या—ऽहमसि यशस्तमः

३ १२५४

(२६) सविता, सोमः, वरुणः ।

॥१६६॥ (१२५५) (अथर्व० ६।६८।३) अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

येनार्वपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्

तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्चवानयमस्तु प्रजावान्

३ १२५५

(२७) सांमनस्यम्, वरुणसोमोऽग्निर्वृहस्पतिवसवः ।

॥१६७॥ (१२५६—१२५७) (अथर्व० ६ । ७३ । १—२) १ भुरिक् २ जिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्नि—वृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रियमुपसंयातु सर्वं उग्रस्य चेतुः संमनसः सजाताः १

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तरा—ऽऽकृतिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।

तान्तमीवयामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २ १२५७

(२८) इन्द्रः, सोमः, सविता च ।

॥१६८॥ (१२५८—१२६०) (अथर्व० ६ । ९९ । १—३) अनुष्टुप्, ३ भुरिवृहती ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहरुणादुवे ।

ह्यम्युग्रं चेतारं पुरुर्णामानमेकजम् १

यो अद्य सेन्यो बधो जिघांसन्न उदीरते ।

इन्द्रस्य तत्र बाहू संमन्तं परि दद्वः २

परि दद्व इन्द्रस्य बाहू संमन्तं त्रातुस्त्रायतां नः ।

देव सवितः सोम राजन् त्मुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३ १२६०

(२९) द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता ।

॥१६९॥ (१२६१) (अथर्व० ६ । ५३ । १) बृहच्छुक्रः । जगती ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अनु स्वधा चिकित्तां सोमो अग्नि—र्वायुर्नः पातु सविता भगश्च १ १२६१

सोमदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।



ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलम् ।

[१] ९।१।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

पवस्व सोम धारया ।

इन्द्राय पातवे सुतः ।

(२२१)९।२।४ (नृमेध आदिरगः । पवमानः सोमः)

पवस्व ।

(२२६)९।३।३ (विन्द्रादिरगः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

(५८०)९।६।१३ (विश्वामित्रो गायिनः । पवमानः सोमः)

पवस्व... ।

(९३९)९।१०।५ (रेभसन् काश्यपोः । पवमानः सोमः)

इन्द्राय ।

[३] ९।१।३ = (अभिः १२६३) ८।१०३।७

पर्षि राधो मघोनाम् ।

[४] ९।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष... ।

अभि वाजमुत श्रवः ।

(४३)९।६।३ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

अभि . अर्ष ।

अभि ।

(३५०)९।५।५ (उच्चय आदिरगः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष... ।

अभि ।

(४५९)९।६।१२ (निरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्ष । अभि... ।

[१०] ९।१।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ।

(९८८)९।१०।३ (अमिदचाक्षुषः । पवमानः सोमः)

[१६] ९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व देववीरति ।

(२६१)९।३।२ (प्रभूवसुराक्षिगः । पवमानः सोमः)

[१.] ९।२।१ = (इन्द्र १०८५) १।१७६।१

(अगस्त्यो मेधावस्तिः । इन्द्रः)

इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश ।

[१३] ९।२।३ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

धारा सुतस्य वेधसः ।

(१३५)९।१६।७ (अमितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

[१४] ९।२।४ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

आपो अर्पन्ति सिन्धवः ।

यज्ञोभिर्वासयिष्यसे ।

(५५०)९।६।१३ (शतं वैश्वानगा । पवमानः सोमः)

[१६] ९।२।६ अचिक्रदद् वृषा हरिः ।

(९५९)९।१०।१६ कनिकदद् वृषा हरिः ।

[११] ९।२।६ सं सूर्येण रोचते ।

८।९।१८ (शशकृष्णः काण्वः । अश्विनोः)

[१७] ९।२।७ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।

यामिर्मदाय शुभसे ।

(२७४)९।३।३ (रुद्रगण आदिरगः । पवमानः सोमः)

मर्मृ ।

शुभसे ।

[१९] ९।२।९ = (इन्द्र २४३) ८।६।१

पर्जन्यो वृष्टिर्मा इव ।

[२०] ९।२।१० अस्यश्वसा वाजसा उत ।

६।२।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । प्रपाः)

धियमश्वसां वाजसामुत ।

[११] ९।२।१० आत्मा यज्ञस्य पूर्यः ।

(अभिः ५२०) ३।११।३ केतुयज्ञस्य पूर्यः ।

[२१] ९।३।१ (शुनः शेष आजीपतिः, स देवगणः कृत्रिभो

वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अभि द्रोणान्यासदम् ।

(२२७) ९।३०।४ (विन्दुरात्रगिरसः । पवमानः सोमः)

[२६] ९।३।६ = (अग्निः ७५१) ४।१५।३

दधद्रत्नानि दाशुषे ।

[२७] ९।३।७ (शुनःअप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

पवमानः कनिकदन् ।

(१११) ९।१३।८ (अग्निः कश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)

[२८] ९।३।८ व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः ।

(अत्रः ६८७) ८।८२।९ पदाभरत्तिरो रजांस्यस्पृतम् ।

[२९] ९।३।९ (शुनःअप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।

(२९७) ९।४२।२ (मे यानति काण्व ।
पवमानः सोमः)

एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।

(९३३) ९।९९।७ (रेभसन् काश्यपो । पवमानः सोमः)

देवो देवेभ्यः सुतः ।

(९७३) ९।१०३।६ (द्वित आत्त्य । पवमानः सोमः)

देवो देवेभ्यः सुतः ।

[३०] ९।३।१० (शुनःअप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

धारया पवते सुतः ।

(२९७) ९।४२।२ (मे यानति काण्व । पवमानः सोमः)

[३१] ९।४।१ (हिरण्यस्तूप आत्रगिरसः । पवमानः सोमः)

सना . पवमान महि श्रवः ।

(७६) ९।९।९ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवमानः ।

सना ।

(९४२) ९।१००।८ (रेभसन् काश्यपो । पवमानः सोमः)

पवमानः... ।

३१-४०] ९।४।१-१० अथा नो वस्यमस्कृधि ।

३२] ९।४।२ सना ज्योतिः सना स्वः ।

(७६) ९।९।९ सना मेधं सना स्वः ।

„] ९।४।२ = (इन्द्रः ६५८) ८।७८।८

विभ्रा च सोम सौभगा ।

[३३] ९।४।३ सना दक्षमुत क्रतुम् ।

(११६०) १।०।२५।१ मनो दक्षमुत क्रतुम् ।

[३४] ९।४।४ = (९) ९।१।९ सोममिन्द्राय पातवे ।

[३५-३६] ९।४।५-६ तव कृत्वा तवोतिभिः ।

[३७] ९।४।७ (हिरण्यस्तूप आत्रगिरसः । पवमानः सोमः)

सोम द्विर्वहसं रयिम् ।

(२८९) ९।४०।६ (बृहन्मतिरात्रगिरसः । पवमानः सोमः)

(९३६) ९।१००।२ (रेभसन् काश्यपो । पवमानः सोमः)

[३९] ९।४।९ (हिरण्यस्तूप आत्रगिरसः । पवमानः सोमः)

पवमान विधर्मणि ।

(४८६) ९।६४।९ (काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

(९४१) ९।१००।७ (रेभसन् काश्यपो । पवमानः सोमः)

(अग्निः १९८३ ९।५।३ रयिर्वि राजति द्युमान् ।

(४०५) ९।६१।१८ दक्षो वि राजति द्युमान् ।

(अग्निः १९८४) ९।५।४ = (अग्निः १९३४) १।१८८।४

(अग्निः १९८८) ९।५।८ = (अग्निः १९७०) ५।५।७

[४२-४३] ९।६।२-३ अभि त्वं मयं (रेपूर्व्यं) मदम् ।

[४३] ९।६।३ = (४) ९।१।४ अभि वाजमुत श्रवः ।

[.] ९।६।३ (आग्नेतः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सुवानो अर्प पवित्र आ ।

(३५१) ९।५२।१ (उच्चथ आत्रगिरसः । पवमानः सोमः)

[४४] ९।६।४ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

आपो न प्रवतासग्नः ।

पुनाना इन्द्रमाशतः ।

(१८८) ९।२४।२ (अग्निः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

आपो न प्रवता यतीः ।

पुनाना . ।

[४५] ९।६।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

वने श्रील्लन्तमस्यविम् ।

(३१८) ९।४५।५ (अयास्य आत्रगिरसः । पवमानः सोमः)

अस्वरज वने ।

(९९६) ९।१०६।११ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)

वने... ।

अस्वरज् . ।

[४७] ९।६।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

इन्द्राय पवते सुतः ।

- (४३१)९।६२।१४ (जमदग्निर्भागवः । पवमान सोमः)
 .. मद् ।
 (९८७)९।१०६।२ (अभिनश्वाश्रुषः । पवमान सोमः)
 (१०१६)९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)
 ...मद् ।
 [५१]९।७।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 महिरपो वि गाहते ।
 (९३३)९।९९।७ (रेभसृन् काश्यपो । पवमान सोमः)
 [५२]९।७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 वृषाव चक्रदद् वने ।
 (१०२१)९।१०७।२० (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)
 ...चक्रदो वने ।
 [५३]९।७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 नृम्णा वसानो अर्षति ।
 स्वर्वाजी सिषासति ।
 (४४०)९।६२।२३ (जमदग्निर्भागवः । पवमान सोमः)
 नृम्णा पुनानो अर्षति ।
 (६५७)९।७४।१ (कर्षावान्दर्धतमसः । पवमान सोमः)
 स्वर्ग्यहाज्यरूप सिषासति ।
 [५५]९।७।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
 अय्यो वारे परि प्रियो ।
 (३४३)९।५०।३ (उच्चथ्य आङ्गिरसः । पवमान सोमः)
 प्रियम् ।
 (३५२)९।५२।२ (उच्चथ्य आङ्गिरसः । पवमान सोमः)
 (१००५)९।१०७।६ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)
 [६१]९।८।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
 इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ।
 (३८७)९।६०।४ (अवत्सार काश्यपः । पवमान सोमः)
 राधसे पवस्व ।
 [.,]९।८।३=(११२४)३।६२।१३ ऋतस्य योनिमासदस ।
 [६७]९।८।९ = ७।९६।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । सरस्वान्)
 [७६]९।९।९ = (३१)९।४।१ भक्षीमहि प्रजामिषम् ।
 [.,]९।९।९ = (३२)९।४।२
 [७७]९।१०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
 अर्धन्तो न श्रवस्यच ।
 (५४७)९।६६।२० (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 [७८]९।१०।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 दधन्विरे गभस्त्यो ।

- (११०)९।१३।७ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [९३]९।११।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
 इन्द्राय सोम पातवे परि पिच्यसे ।
 (९२४)९।९८।१० (अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा
 गारहाज्यः । पवमानः सोमः)
 (१०४०)९।१०८।१५ (अर्कित्वीगिरः । पवमानः सोमः)
 [.,]९।११।८ मर्ताध्वन्मनसस्पतिः ।
 (२१२)९।२८।१ विश्वविन्मनसस्पतिः
 [९५]९।१२।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 इन्द्राय मधुमत्तमाः ।
 (४६६)९।६३।१९ (नितर्कवः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 ..मधुमत्तमम् ।
 (५८३)९।६७।१६ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 ..मधुमत्तमः ।
 [९६]९।१२।२ = (इन्द्र २०८४)६।४५।२५
 = (इन्द्र १३७७)३।४१।५
 गावो वत्सं न मातर ।
 (इन्द्र २०८७)६।४५।२८ वत्स गावो न धेनव ।
 [.,]९।१२।२ = (इन्द्र ८०)१।१६।३ = (इन्द्र १३८५)३।४२।४
 = (इन्द्र ४०८)८।१७।१५ = (इन्द्र २४०१)८।९२।५
 = (इन्द्र ९८६)८।९७।११
 इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
 [१००]९।१२।६ (अभिन काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 प्र वाचमिन्दुरिष्यति ।
 (२५७)९।३५।४ (प्रभृमसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 प्र वाजमिन्दुरिष्यति ।
 [.,]९।१२।६ (इन्द्र ४३७)८।३४।१३
 समुद्रस्याधि विष्टपि (०५.) ।
 [१०१]९।१२।७ = (११०६)१।९१।६
 नित्य (प्रियं) स्तोत्रो वनस्पति ।
 [१०२]९।१२।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 सोमो हिन्वानो अर्षति ।
 विप्रस्य धारया कविः ।
 (३०९)९।४४।२ (अयाग्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सोमो हिन्वं परावति । विप्रस्य ।
 [१०४]९।१३।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 सोमः पुनानो अर्षति ।

(२१७)१।२८।६ (प्रियमेध आङ्गिरस ।
पवमानः सोमः)
(३००)१।४२।५ (मेन्यातिथिः काण्वः । पवमान सोमः)
(९५०)१।१०१।७ (नहुषो मानव । पवमान सोमः)
[१०५]१।१३।२ सुष्वाणं देववीतये ।
(५२५)१।६५।१८ सुष्वाणो देववीतये ।
[१०६]१।१३।३ (असित काश्यपो देवलो वा ।
पवमान सोमः)
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
(२९८)१।४२।३ (मेन्यातिथि काण्वः । पवमान सोमः)
पवन्ते वाजसातये ।
सोमा ... ।
(३०७)१।४३।६ (मेन्यातिथि काण्वः । पवमान सोमः)
पवस्व वाजसातये ।
(९४०)१।१००।६ (रभसुनू काश्यपो । पवमान सोमः)
पवस्व वाजसातये ।
(१०२२)१।१०७।२३ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)
पवस्व वाजसातये ।
[१०७]१।१३।४ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
पवस्व बृहतीरिष । सुवीर्यम् ।
(३०१)१।४२।६ (मेन्यातिथि काण्वः । पवमान सोमः)
पवस्व ।
[११०]१।१३।७ = (इन्द्र २०८४) ६।४५।२५
= (इन्द्र १३७७) ३।४१।५
अभि (इन्द्र) वत्सं न धेनव (मातरः) ।
[,]१।१३।७ = (७८) १।१०।२ दधन्विरे गभस्त्वो ।
[१११]१।१३।८ = (२७) १।३।७
पवमान(०नः) कनिकदत् ।
[,]१।१३।८ (असित काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
विश्वा अप द्विषो जहि ।
(३८९)१।६१।२८ (अमहायुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[११२]१।१३।९ (असित काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
अपघ्नन्तो अरावणः ।
योनावृतस्य सीदत ।

(४५२)१।६३।५ (निधुवि. काश्यपः । पवमानः सोमः)
अपघ्नन्तो अरावणः ।
(२८३)१।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमान सोमः)
योनावृतस्य सीदत ।
[११५]१।१४।३ = (इन्द्र २३१४)८।६९।११
विश्वे देवा अमन्सत ।
[११७]१।१४।५ (अमित. काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
गाः कृष्णानो न निर्णिजम् ।
(७५३)१।८६।२६ (पृथिव्योऽजा । पवमान सोमः)
गाः कृष्णानो निर्णिजं न ।
(१०२५)१।१०७।२६ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)
गाः कृष्णानो न निर्णिजम् ।
[१२१]१।१५।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ।
(४१२)१।६१।२५ (अमहायुराङ्गिरसः । पवमान सोमः)
[१२३]१।१५।३ एष हितो वि नीयते ।
(२०८)१।२७।३ एष नृभिर्वि नीयते ।
[१२७]१।१५।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
एतं मृजन्ति मर्ज्यम् ।
(३२५)१।४६।६ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[१२८]१।१५।८ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
एतसु त्वं दश क्षिपो मृजन्ति ।
(३९४)१।६१।७ (अमहायुराङ्गिरसः । पवमान सोमः)
[१३१]१।१६।३ = १।२८।९ (शुन शेष आजिगतिः प्रजापतिः
हरिश्चन्द्र. चर्म सोमो वा)
सोमं पवित्र आ सृज ।
[,]१।१६।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमं पवित्र आ सृज ।
पुनीहीन्द्राय पातवे ।
(३४६)१।५१।१ (उक्थ्य आङ्गिरसः । पवमान सोमः)
सोमं... ।
पुनीही ।
[१३२]१।१६।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)
सोमः पवित्रे अर्षति ।
(१३९)१।१७।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमः... । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

(२६६) ९।३७।१ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
सोमः— ।

विघ्न— ।

[१३४] ९।१६।६ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

विश्वो अर्षन्नभि श्रिय ।

शूरो न गोषु तिष्ठति ।

(४३६) ९।६२।१९ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

[१३५] ९।१६।७ = (१३) ९।२।३ धारा सुतस्य वेधस ।

[१३६] ९।१६।८ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

त्वं सोम विपश्चित पुनान ।

अव्यो वारं वि धावति ।

(५०२) ९।६४।२५ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)

एव सोम विपश्चित पुनानो ।

(२१२) ९।२८।१ (पियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अव्यो वारं वि धावति ।

(९९५) ९।१०६।१० (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)

पुनान अव्यो वारं वि धावति ।

(६६५) ९।७४।९ (कर्षावान्देधनमगः । पवमानः सोमः)

अव्यो वारं वि पवमान धावति ।

[१३७] ९।१७।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमा असुप्रमाशवः ।

(१८०) ९।२३।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

[१३९] ९।१७।३ = (१३२) ९।१६।४ सोमः पवित्र अर्षति ।

[११] ९।१७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमः पवित्रे अर्षति ।

विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

(२६६) ९।३७।१ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(३६८) ९।५६।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

आशुः पवित्रे अर्षति ।

विघ्नन्— ।

[१४०] ९।१७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते ।

(५८१) ९।६७।१४ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)

— धावति ।

(२९९) ९।४२।४ (मेथ्यानिधिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवित्रे परि षिच्यते ।

[१४३] ९।१७।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

धीभिर्विप्रा अवस्यव ।

मृजान्ति. ... ।

दे० [सोमः] ११

(४६७) ९।६३।२० (नि रवि काश्यपः । पवमानः सोमः)
मृजान्ति. . . धीभिर्विप्रा अवस्यव ।

[१४४] ९।१७।८ = १।६३७।२ (पम्बुच्छपो देवोदागिः । मित्रावरुणा)

चारुर्कृताय पीतये ।

[१४५-५१] ९।१८।१-७ मदेषु सर्वधा असि ।

[१४९] ९।१८।५ = (उन्द्र १४६४) ३।५३।१०

(विश्वामित्रो गाथिनः । उन्द्रः)

य इमे रोदसी मरु (उम्) ।

[१५२] ९।१९।२ तन्न पुनान आ भर ।

(अग्नि. २०) १।१२।११ ग नः गन्वान आ भर ।

[१५३] ९।१९।२ = ५।७१।२ (बाहुवृक्त अत्रियः । मित्रावरुणा)

ईशाना पिप्यतं धियः ।

[१५५] ९।१९।४ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

अवावशन्न धीतयो ।

(५४८) ९।६६।११ (जतं वैश्वानरा । पवमानः सोमः)

[१५७] ९।१९।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवमान विदा रयिम् ।

(३०५) ९।४३।४ (मे यानिधि काण्वः । पवमानः सोमः)

(४५८) ९।६३।११ (नि रवि काश्यपः । पवमानः सोमः)

[१५९] ९।२०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

अव्यो वारंभिरर्षति ।

(२७२) ९।३८।१ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१६४] ९।२०।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

मृज्यमानो गभस्त्यो ।

सोमश्चमूषु सीदति ।

(२६३) ९।३६।४ (प्रभवसुर्गोत्तरमः । पवमानः सोमः)

मृज्यमानो— ।

(४८२) ९।३४।५ (काश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)

मृज्यमाना गभस्त्योः ।

(५१३) ९।३५।६ (सुगुर्वारुणजमदग्निर्भार्गवो वा ।

पवमानः सोमः)

(९३९) ९।९९।६ (रेभगुर्न काश्यपा । पवमानः सोमः)

सोमश्चमूषु सीदति ।

[१६५] ९।२०।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवित्रं सोम गच्छामि ।

दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ।

(५८६) ९।६७।१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)

(४४७) ९।६२।३० (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

सोमः पवित्रम् ।

दधत्— ।

(५६४) ९।६६।२७ (शतं वैखानसा । पवमानः सोमः)
दधत् ।

[१६६] ९।२१।१ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
मत्परासः स्वविदः ।

(१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[१७५] ९।२२।३ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
एते पूता विपश्चितः । सोमामो दध्याशिरः ।

(९५५) ९।१०१।१२ (मनु भावरणः । पवमानः सोमः)

["] ९।२२।३ = (इन्द्र १८) १।५।५ = (इन्द्रः २२३८ ७.३२।४)
= १।१३७।२ (परच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
= ५।५।१७ (स्वन्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः)

सोमामो दध्याशिरः ।

[१८०] ९।२३।१ = (१३७) ९।१७।१ सोमा असृग्माशयः ।

["] ९।२३।१ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि विश्वानि काव्याः ।

(४४२) ९।६२।२५ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)

(७२) ९।६३।२५ (निरुवि काश्यपः । पवमानः सोमः)

(५३८) ९।६६।१ (शत वैखानसा । पवमानः सोमः)

[१८३] ९।२३।४ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि सोमास आयवः पवन्ते मघ मदम् ।

अभि कोश मधुश्चुतम् ।

(१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

अभि सोमाम ... ।

(२६१) ९।३६।२ (प्रभृमुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अभि कोश मधुश्चुतम् ।

[१८४] ९।२३।५ सोमो अर्षति धर्षतिः ।

(२६७) ९।३७।२ = (२७७) ९।३८।६ हरिरर्षति ।

[१८५] ९।२३।६ = (इन्द्र २३४४) ८।९५।९

इन्द्रो (शुद्धो) वाजं सिषासति ।

[१८६] ९।२३।७ = (इन्द्र २४०२) ८।९१।६

अस्य पीत्वा मदाना ।

[१८७] ९।२४।१ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

प्र पवमानास इन्द्रवः ।

श्रीणाना अण्डु मृजत ।

(५७४) ९।६७।७ (गोतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)

पवमानास इन्द्रवः ।

(९५१) ९।१०१।८ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)

पवमानास इन्द्रवः ।

(५३३) ९।६५।२६ (मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।

पवमानः सोमः)

प्र... .. ।

श्रीणाना अण्डु मृजत ।

[१८८] ९।२४।२ = (इन्द्रः २७६) ८।६।३४ = (इन्द्रः ३२८) ८।१३।८
आपो न प्रवता यतीः ।

["] ९।२४।२ = (४४) ९।६।४ पुनाना इन्द्रमाशत ।

[१८९] ९।२४।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
नृभिर्यतो वि नीयसे ।

(९३४) ९।९२।८ (रैमसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)

[१९१] ९।२४।५ = (इन्द्र २४२१) ८।९२।२५ अरमिन्द्रस्य धाक्त्रो

[१९२] ९।२४।६ = (अग्नि १९२०) १।१४।३

शुचि पावको अद्भुतः ।

[१९३] ९।२४।७ = (१९२) ९।२४।६ शुचिः पावक उच्यते ।

["] ९।२४।७ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
देवावीरघांसहा ।

(२१७) ९।२८।६ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(४०६) ९।६१।१९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१९५] ९।२५।२ (दृक्हच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)

अभि योनिं कनिक्रदत् ।

(२६७) ९।३७।२ (रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[१९६] ९।२५।३ (दृक्हच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)

शोभते ... योनावधि ।

वृत्रहा देववीतमः ।

(२१४) ९।२८।३ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

शुभायतेऽधि योनौ ।

वृत्रहा देववीतमः ।

[१९७] ९।२५।४ = ७।५५।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोषपतिः)

विश्वा रूपाण्याविशन् ।

["] ९।२५।४ (दृक्हच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)

पुनानो याति हर्यतः ।

(३०४) ९।४३।३ (मेभ्यार्तिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पुनानो याति हर्यतः ।

[१९९] ९।२५।६ (दृक्हच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)

= (३४४) ९।५०।४ (उच्यथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

आ पवस्व मदिन्तम पवित्र धारया कवे ।

अर्कस्य योनिमासदम् ।

[२०४] ९।२६।५ (इध्मवाहो दार्ढ्युतः । पवमानः सोमः)

हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

(२२८) ९।३०।५ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(२३७) ९।३१।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)

- (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (२८३) ९।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (३४३) ९।५०।३ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (५१५) ९।६५।८ (सृगुर्वारिणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [२०५] ९।२६।६ (इध्मवाहो दार्ढच्युतः । पवमानः सोमः)
 तं हिन्वन्ति ।
 इन्द्रविन्द्राय मरमरम् ।
 (३५९) ९।५३।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 तं हिन्वन्ति .. ।
 इन्द्रुमिन्द्राय मरमरम् ।
 (४६४) ९।६३।१७ (निरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रुमिन्द्राय मरमरम् ।
 [२०८] ९।२७।३ = (१२३) ९।१५।३ एष तृभि (हितो) विं नीयते ।
 [२११] ९।२७।६ (तृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनान इन्द्रुमिन्द्रमा ।
 (५६५) ९।६६।२८ (शत वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 [२१२] ९।२८।१ = (१३६) ९।१६।८ अयो वार वि धावामि ।
 [२१३] ९।२८।२ = (२९) ९।३९ सोमो (देवो) देवभ्यः सुतः ।
 [२१४] ९।२८।३ = (१९६) ९।२५।३ वृत्रहा देववीतमः ।
 [२१५] ९।२८।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अभि द्रोणानि धावति ।
 (२७१) ९।३७।६ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [२१६] ९।२८।५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानो विचर्षणि ।
 (३८४) ९।६०।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 पवमानं विचर्षणिम् ।
 [२१७] ९।२८।६ = (१०४) ९।१३।१ सोमः पुनानो अर्षति ।
 ["] ९।२८।६ = (१९३) ९।२४।७ देवावीरघनसहा ।
 [२२०] ९।२९।३ (तृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानाय प्रभूवसो ।
 वर्धो समुद्रमुक्थ्यम् ।
 (२५९) ९।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानस्य प्रभूवसोः ।
 (४०२) ९।६१।१५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 वर्धो समुद्रमुक्थ्यम् ।
 [२२१] ९।२९।४ = (१) ९।१।१ पवस्व सोम धारया ।
 [२२३] ९।२९।६ (तृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुमन्त शुष्ममा भर ।
 (९८९) ९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)

- पुमन्तं शुष्ममा भरा स्वरिदम् ।
 [२२४] ९।३०।१ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानो वाचमिष्यति ।
 (५०२) ९।६४।२५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 पुनानो वाचमिष्यति ।
 [२२५] ९।३०।२ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रुर्हियान सोतृभिः ।
 (१०२५) ९।१०७।२६ (राक्षस्यः पवमानः सोमः)
 [२२६] ९।३०।३ = (१) ९।१।१ पवस्व सोम धारया ।
 [२२७] ९।३०।४ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानो अमिष्यदत् ।
 (३४०) ९।४९।५ (कर्वाभीर्यवः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।३०।४ = (२१) ९।३।१ अभि द्रोणान्यामदम् ।
 [२२८] ९।३०।५ = (२०५) ९।२६।५
 ["] (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रविन्द्राय पीतये ।
 (३१४) ९।४५।१ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (३४५) ९।५०।५ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [२२९] ९।३०।६ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 (३४७) ९।५१।२ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 सुनोता मधुमत्तमम् ।
 (उन्द्रः २२४२) ७।३२।८ सुनोता सोमपातः ।
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 [२३२] ९।३१।३ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)
 तुभ्य तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
 (४४४) ९।६२।२७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
 तृभ्येमा ।
 तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
 [२३३] ९।३१।४ = (१११६) १।९१।१६
 [२३५] ९।३१।६ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रो सखिन्वमुश्मभि ।
 (५५१) ९।६६।१४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 [२३७] ९।३२।२ = (२०४) ९।२६।५
 ["] ९।३२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)
 (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 एतं (९।३२।२ आदी) त्रितस्य योषणो हरि
 हिन्वन्त्यद्विभिः ।

इन्दुमिन्द्राय पीतये ।

(३०३) ९।४३।२ (मेऽयानिचः काण्वः । पवमानः सोमः)

इन्दु — ।

(५१५) ९।६५।८ (भृगुवर्षणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)

हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

इन्दुमिन्द्राय ।

[२३०] ९।३१।४ = (अग्निः १०७६) ६।१६।३५

सीदन्नुतस्य योनिमा ।

[२४०] ९।३२।५ अभि गावो अनुषत ।

(२४६) ९।३३।५ अभि ब्रह्मानुषत ।

[२४१] ९।३३।६ = (इन्द्रः २०९८) ६।४६।९

मघवस्यश्च मघा च ।

[२४३] ९।३३।२ (त्रित आत्स्यः । पवमानः सोमः)

शुक्रा ऋतस्य धारया ।

वाज गोमन्तमक्षरन् ।

(४६१) ९।६३।१४ (निःस्वि काश्यपः । पवमानः सोमः)

[२४४] ९।३३।३ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७

(स्वरस्यात्रेयः । इन्द्रवायुः)

सुता इन्द्राय वायवे ।

["] ९।३३।३ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)

वरुणाय मरुत्य ।

[२४६] ९।३३।५ = (२४०) ९।३३।५

["] ९।३३।५ = (अग्निः १९२४) १।१४२।७

= (अग्निः १९६९) ५।५।६

= १०।५९।८ (बन्धुः श्रुतबन्धुः ० । यावापृथिवी)

[२४७] ९।३३।६ (त्रित आत्स्यः । पवमानः सोमः)

गय अस्मभ्य सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणः ।

(२८६) ९।४०।३ (बृहन्मतिरागिर्यः । पवमानः सोमः)

रयि . अस्मभ्य ... ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

(४२९) ९।६२।१२ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

आ पवस्व सहस्रिणं रयिम् ।

(४४८) ९।६३।१ (निकवि काश्यपः । पवमानः सोमः)

आ पवस्व सहस्रिण रयिम् ।

(५२८) ९।६५।२१ (भृगुवर्षणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।

पवमानः सोमः)

अस्मभ्य सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

[२४८] ९।३४।१ (त्रित आत्स्यः । पवमानः सोमः)

इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ।

(५७१) ९।६७।४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

[२४९] ९।३४।२ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७

(स्वरस्यात्रेयः । इन्द्रवायुः)

["] ९।३४।२ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)

[२५०] ९।३४।३ सुन्वन्ति सोममद्रिभिः ।

(इन्द्रः १०३) ८।१।१७ सोता हि सोममद्रिभिः ।

[२५५] ९।३५।२ इन्दो समुदमीह्वय ।

(३५३) ९।५२।४ इन्दो न दानमीह्वय ।

["] ९।३५।२ (प्रभृवसुरागिर्यः । पवमानः सोमः)

समुदमीह्वय पवस्व विश्वमेजय ।

(४४३) ९।६२।२६ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

समुद्रिया... ईरयन् ।

पवस्व विश्वमेजय ।

[२५६] = ९।३५।३ (अग्निः ४०२) २।८।६ अभि व्याम पृतन्यतः ।

[२५७] ९।३५।४ = (१००) ९।१२।६

प्र वाज (च) मिन्दुरिष्यति ।

[२५८] ९।३५।६ = (२२०) ९।२९।३

[२६१] ९।३६।२ = (११) ९।२।१ पवस्व देववीरति ।

["] ९।३६।२ = (१८३) ९।२३।४ अभि कोशं मधुश्नुतम् ।

[२६३] ९।३६।४ (प्रभृवसुरागिर्यः । पवमानः सोमः)

शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः ।

पवते वारे अच्यये ।

(४८०) ९।६४।५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

शुम्भमानो ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।

पवन्ते वारे अच्यये ।

["] ९।३६।४ = (१६४) ९।२०।६ मृज्यमानो गभस्त्योः ।

[२६४] ९।३६।५ (प्रभृवसुरागिर्यः । पवमानः सोमः)

सा विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा ।

पवतामान्तरिक्ष्या ।

(४८३) ९।६४।६ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा ।

पवन्तामान्तरिक्ष्या ।

[२६६] ९।३७।१ = (१३२) ९।१६।४ = (१३९) ९।१७।३

सोमः पवित्रे अर्षति ।

[२६७] ९।३७।२ (रुद्रगण आङ्गिर्यः । पवमानः सोमः)

हरिरर्षति धर्गसिः ।

अभि योनि कनिष्ठतन ।

(२७७) ९।३८।६ (रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
हरि— ।

कन्दन योनिमभि ।

[२६७] ९।३७।२ = (१२५) ९।२५।२

[२६८] ९।३७।३ (रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

पवमानो वि धावति ।

(०७३) ९।१०३।६ (हित आण्य । पवमानः सोमः)
व्यानशिः पवमानो— ।

[२७०] ९।३७।५ (रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

सोमो वाजमिवासत् ।

(४३३) ९।६२।६ (जमदग्निर्गोमः । पवमानः सोमः)

[२७१] ९।३७।६ = (२१५) ९।२८।४ अभि द्रोणानि धावति ।

[२७२] ९।३८।१ = (१५९) ९।२०।१ अथो वारेभिरर्षति ।

["] ९।३८।१ गच्छन् वाज सहस्रिणम् ।

(३७२) ९।५७।१ अन्धा वाज सहस्रिणम् ।

[२७३] ९।३८।२ = (२३७) ९।३२।२

["] ९।३८।२ = (२०४) ९।२६।५

[२७४] ९।३८।३ = (१७) ९।२।७

[२७५] ९।३८।४ (रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

इयेनो न विक्षु सीदति ।

(३७४) ९।५७।३ (अवत्सार काश्यपः । पवमानः सोमः)

इयेनो न वंसु पीदति ।

(७६२) ९।८६।३५

(अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः)

इयेनो न वंसु कलशेषु सीदति ।

[२८०] ९।३९।३ (बृहन्मतिर्गाङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

सुत एति पवित्र आ ।

(३१०) ९।४४।३ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(३९५) ९।६१।८ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[२८३] ९।३९।६ = (२०४) ९।२६।५

["] ९।३९।६ = (११२) ९।१३।२

[२८६] ९।४०।३ = (२४७) ९।३३।६

[२८७] ९।४०।४ विदाः सहस्रिणीरिषः ।

(३९०) ९।६१।३ क्षरा सहस्रिणीरिषः ।

[२८८] ९।४०।५ = (अग्निः २०) १।१२।११

स नः पुमान् (स्तवान्) आ भर ।

[२८९] ९।४०।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

पुनान इन्दवा भर सोम द्विर्बर्हस रयिम् ।

(३७५) ९।५७।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पुनान इन्दवा भर ।

(५०३) ९।६४।२६ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)

पुनान इन्दवा भर ।

(९३६) ९।१००।२ (रेमसुन काश्यपो । पवमानः सोमः)

["] ९।४०।६ = (३७) ९।४।७

सोम द्विर्बर्हस रयिम् ।

[२९१] ९।४१।२ साक्ष्यो दस्युमघ्नतम् ।

(इन्द्रः १०८१) १।१७५।३ महावान् दस्युमघ्नतम् ।

[२९३] ९।४१।४ (मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व सर्वाभिष गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् ।

अश्वावद्वाजवत् सुत ।

(३९०) ९।६१।३ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् । सहस्रिणीरिषः ।

(३०१) ९।४२।६ (मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

गोमघ्नः सोम अश्वावद्वाजवत् सुतः ।

पवस्व बृहतीरिषः ।

[२९७] ९।४२।२ = (२०--३०) ९।३।९--१०

[२९८] ९।४२।३ = (१०६) ९।१३।३

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रराजसः ।

[२९९] ९।४२।४ = (१४०) ९।१७।४

पवित्रे परि पिच्यते ।

[३००] ९।४२।५ (मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

अभि विश्वानि वार्या ।

(५४१) ९।६३।४ (जन्तु वैखानसा । पवमानः सोमः)

पवन् अभि विश्वानि वार्या ।

["] ९।४२।५ = (१०४) ९।१३।१

[३०१] ९।४२।६ = (२९३) ९।४१।४ अश्वावद् वाजवत् सुत ।

["] ९।४२।६ = (१०७) ९।१३।४ पवस्व बृहतीरिषः ।

[३०३] ९।४३।२ = (२३७) ९।३२।२

["] ९।४३।३ = (३०४) ९।२५।४

[३०५] ९।४३।४ = (१५७) ९।१९।६

["] ९।४३।४ (मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवमान विदा रयिमस्मभ्य सोम मथियम् ।

(४५८) ९।६३।११ (निष्कविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

सोम दुष्टम् ।

["] ९।४३।४ इन्द्रो सहस्रवर्चसम् ।

(५०२) ९।६४।२५ = (९१५) ९।९८।१ इन्द्रो सहस्रवर्णमम् ।

[३०७] ९।४३।६ = (१०६) ९।१३।३

["] ९।४३।६ = (अग्निः ८५८) ५।१३।५

- (इन्द्रः २३७५) ८१८१२ = (अग्निः १२८१) ८१२३१२
 [३०८] ९।४४।१ प्र ण इन्द्रो महे तन ।
 (५५०) ९।६६।१३ महे रणे ।
 [३०९] ९।४४।२ = (१०२) ९।१२।८ विप्रस्य धारया कविः ।
 [३१०] ९।४४।३ = (२८०) ९।३९।३
 [३१२] ९।४४।५ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 स नो भगाय वायवे ।
 (३९६) ९।६१।९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [३१४] ९।४५।१ = (२२८) ९।३०।५
 [३१५] ९।४५।२ = (इन्द्र ७) १।४।४
 देवान् (यस्ते) सखिभ्य आ वरम् ।
 [३१६] ९।४५।३ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 वि नो राये दुरो वृधि ।
 (४८०) ९।६४।३ (कश्यपो मारीच । पवमानः सोमः)
 [३१७] ९।४५।४ (अग्निः १४७१) ८।१०९।९
 [३१८] ९।४५।५ = (४५) ९।६।५
 [३१९] ९।४५।६ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 तया पवस्व धारया यया ।
 (३३७) ९।४९।२ (कविर्भागव । पवमानः सोमः)
 [३२०] ९।४६।१ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 असुग्रन् देववीतये ।
 (५८४) ९।६७।१७ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 [३२२] ९।४६।३ = (इन्द्रः ८३) १।१६।६ एते एमे सोमास इन्द्रव ।
 [३२४] ९।४६।५ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवस्व .. महः ।
 अस्मभ्य सोम गानुवित् ।
 (५२०) ९।६५।१३ (सृगुर्वाङ्गिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 महीम् पवस्व ।
 अस्मभ्य ।
 [३२५] ९।४६।६ = (१२७) ९।१५।७ एतं मृजन्ति मज्जम् ।
 [३३७] ९।४९।२ = (३१२) ९।४५।६
 [३४०] ९।४९।५ = (२२७) ९।३०।४
 [३४३] ९।५०।३ = (५५) ९।७।६
 ["] ९।५०।३ = (२०४) ९।०६।५
 ["] ९।५०।३ (उचथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 हिम्बन्ति ।
 पवमानं मधुश्चुतम् ।
 (५७६) ९।६७।९ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)

- [३४४] ९।५०।४ = (१२९) ९।२५।६
 [३४५] ९।५०।५ (उचथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 स पवस्व मदिन्तम् ।
 (९३२) ९।९९।६ (रेभस्नु काश्यपो । पवमानः सोमः)
 स पुनानो मदिन्तम् ।
 ["] ९।५०।५ = (२२८) ९।३०।५
 [३४६] ९।५१।१ = (१३१) ९।१६।३ = १।२८।९
 (द्युनःशेष आजीगर्ति । प्रजापति हरिश्चन्द्रः
 चर्म सोमो वा)
 [३४७] ९।५१।२ = (२२९) ९।३०।६
 = (इन्द्रः २२४२) ७।३२।८
 [३४८] ९।५१।३ (उचथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानस्य मरुत ।
 (५०१) ९।६४।२४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [३५०] ९।५१।५ = (४) ९।१।४
 [३५१] ९।५२।१ = (४३) ९।६।३
 [३५२] ९।५२।२ = (५५) ९।७।६
 [३५३] ९।५२।३ = (२५५) ९।३५।२
 [३५४] ९।५२।४ (उचथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रवेषां पुरुहूत जनानाम् ।
 यो अस्मो आदिदेशति ।
 (५०४) ९।६४।२७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 एषां पुरुहूत जनानाम् ।
 (इन्द्रः २७८६) १०।१३४।१ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)
 यो अस्मो आदिदेशति ।
 [३५५] ९।५२।५ (उचथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 पवस्व महयद्रथिः ।
 (५६८) ९।६७।१ (भरद्वाजो बार्हृगणः । पवमानः सोमः)
 [३५९] ९।५३।४ = (४६४) ९।६३।१७
 हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्द्रमिन्द्राय मत्सरम् ।
 ["] ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६
 [३६२] ९।५४।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 सोमो देवो न सूर्यः ।
 (४६०) ९।६३।१३ (निष्कविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 [३६४] ९।५५।१ = (३२) ९।४।२ = (इन्द्र ६५८) ८७८।८
 [३६८] ९।५६।१ = (१३२) ९।१६।४
 ["] ९।५६।१ = (१३९) ९।१७।३
 [३७१] ९।५६।४ = (९८९) ९।१०६।४
 = (इन्द्रः १७८५) ८।९।३
 [३७२] ९।५७।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

प्र ते धारा असञ्चतो दिवो न यान्ति वृष्टयः ।
 (५६५) ९।६१।२८ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसञ्चतः ।
 [३७४] ९।५७।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 स मर्मृजान आयुभिः ।
 (५६०) ९।६६।२३ (शत वंखानमाः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।५७।३ = (२७५) ९।३८।४
 [३७५] ९।५७।४ = (२८९) ९।४०।६
 [३७६ ७९] ९।५८।१, १-४ तरत् स मन्दी धावति ।
 [३८४] ९।६०।१ = (२१६) ९।२८।५
 [३८५] ९।६०।२ अथो सहस्रभर्णसम् ।
 (५०३) ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।
 [३८६] ९।६०।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 कलशो । इन्द्रस्य हार्द्याविशन् ।
 (७४६) ९।८६।१९, (सिकता निवारः । पवमानः सोमः)
 कलशो .. इन्द्रस्य हार्द्याविशन् मर्णाभिः ।
 [३८८] ९।६१।१ = (इन्द्रः ९४९) १।८४।१३
 [३९०] ९।६१।३ = (२८७) ९।४०।४ = (२९३) ९।४१।४
 [३९१] ९।६१।४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सखित्वमा वृणीमहे ।
 (५१६) ९।६५।९ (मुमुवार्णिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 (इन्द्रः २७८३) १०।१३३।६ (मुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
 सखित्वमा रमामहे ।
 [३९३] ९।६१।६ = (२८८) ९।४०।५
 = (अग्नि २०) १।१२।११ = (इन्द्रः १७९२) ८।२४।३
 [३९४] ९।६१।७ = (१२८) ९।१५।८
 [३९५] ९।६१।८ = (२८०) ९।३९।३
 [३९६] ९।६१।९ = (३१२) ९।४४।५
 [३९८] ९।६१।११ एता विश्वान्यर्थ आ ।
 (अग्निः १७१६) १०।१२१।१ अने विश्वान्यर्थ आ ।
 ["] ९।६१।११ = (इन्द्रः २३४१) ८।२५।६
 [३९९] ९।६१।१२ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
 [४०१] ९।६१।१४ = (इन्द्रः ३३८८) ८।१३।८
 = (इन्द्र २४१७) ८।७२।२१ = ८।६९।११ उत्तरार्धः
 (प्रियमेध आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)
 [४०२] ९।६१।१५ = (इन्द्र ५३७) ८।५४ (वाल०६) । ७
 = (मरुत् ४८) ८।७३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 ["] ९।६१।१५ = (२२०) ९।२९।३
 [४०५] ९।६१।१८ = (अग्निः १९८३)

(असितः काश्यपो देवलो वा । आप्राप्तृक्तं [इळ.])
 [४०६] ९।६१।१९ = (इन्द्रः १८२४) ८।४६।८
 = (इन्द्र २४१३) ८।७२।१७
 ["] ९।६१।१९ = (१९३) ९।२४।७
 [४०८] ९।६१।२१ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सीदच्छयेनो न योनिमा ।
 (५२६) ९।६५।१९ (मुमुवार्णिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [४०९] ९।६१।२२ = (इन्द्र १३३८) ३।३७।५
 (विश्वामित्रो गार्ग्यः । इन्द्रः)
 [४१२] ९।६१।२५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अपन्नन् पवते मृधो ।
 (४७१) ९।६३।२४ (निर्ऋति काश्यपः । पवमानः सोमः)
 अपन्नन् पवसे मृध ।
 ["] ९।६१।२५ = (१२१) ९।१५।१
 [४१५] ९।६१।२८ = (१११) ९।१३।८
 [४१६] ९।६१।२९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अस्य ते सख्ये वयः ।
 (५५१) ९।६६।१४ (शत वंखानमाः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।६१।२९ = (इन्द्रः ४११) १।८।४
 = (इन्द्र ३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राभाः)
 [४१८] ९।६२।१ = (५७४) ९।६७।७
 = (इन्द्र ३२१७) १।१३।६
 [४२०] ९।६२।३ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 (५५९) ९।६६।२२ (शत वंखानमाः । पवमानः सोमः)
 पवमानो ... अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 (७२२) ९।८५।७ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
 पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 [४२१] ९।६२।४ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 असाव्यंशुः ।
 इयेनो न योनिमासदत् ।
 (७०१) ९।८३।१ (वसुभार्गवाजः । पवमानः सोमः)
 असावि सोमो . ।
 इयेनो न योनि घृतवन्तमासदम् ।
 [४२५] ९।६२।८ तिरो रोमाण्यव्यया ।
 (५७१) ९।६७।४ = (१००९) ९।१०७.१०
 तिरो वाराण्यव्यया ।
 [४२६] ९।६२।९ = (इन्द्रः १७८५) ८।९।३ = (९८९) ९।१०६।४
 [४२९] ९।६२।१२ = (२४७) ९।३३।६

[४२९] ९।६२।१२ = (२५१) ८।६।९ = (४५९) ९।६३।१२

[४३०] ९।६२।१३ = (३७४) ९।५।३

[४३१] ९।६२।१४ = (इन्द्रः ४३१) ८।३४।७

["] ९।६२।१४ = (४७) ९।६।७

[४३३] ९।६२।१६ = (२७०) ९।३७।५

[४३५] ९।६२।१८ हवि हिनोत वाजिनम् ।

(अग्निः १८६३) ०।१८८।१ (अयं आग्नेयः जातवेदा अग्निः)

अयं हिनोत वाजिनम् ।

[४३६] ९।६२।१९ = (१३४) ९।१६।६

[४४०] ९।६२।२३ = (५३) ९।७।४

[४४१] ९।६२।२४ = ५।७९।८ (सत्यश्रवा आग्नेयः । उपाः)

[४४२] ९।६२।२५ = (१८०) ९।२३।१

[४४३] ९।६२।२६ = (२५५) ९।३५।२

[४४४] ९।६२।२७ = (२३२) ९।३१।३

तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।

[४४५] ९।६२।२८ = (३७२) ९।५७।१

[४४७] ९।६२।३० = (१६५) ९।२०।७

[४४८] ९।६३।१ = (२७७) ९।३३।६

[४४९] ९।६३।२ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

इन्द्राय मत्सन्तितमः । चमृष्वा नि षीदसि ।

(९३४) ९।९९।८ (रेभमून काश्यपो । पवमानः सोमः)

इन्द्राय मत्सन्तितमश्चमृष्वा नि षीदसि ।

[४५१] ९।६३।४ = (१३७) ९।१७।१

["] ९।६३।४ = (२४३) ९।३३।२

[४५२] ९।६३।५ = (११२) ९।१३।९

[४५४] ९।६३।७ = (इन्द्रः २३६५) ८।९८।२

[४५५] ९।६३।८ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ।

(५२३) ९।६५।१६ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निभार्गवो वा ।

पवमानः सोमः)

[४५७] ९।६३।१० = (२०५) ९।२६।६

[४५८] ९।६३।११ = (१५७) ९।१९।६

["] ९।६३।११ = (३०५) ९।४३।४

[४५९] ९।६३।१२ = (इन्द्रः २५१) ८।६।९ = (४२९) ९।६२।१२

["] ९।६३।१२ = (४) ९।१।४

[४६०] ९।६३।१३ = (३६२) ९।५४।३

[४६१] ९।६३।१४ = (२३७) ९।३२।२

[४६२] ९।६३।१५ = (इन्द्रः १८) १।५।५ = (१७५) ९।२२।३

= (४६२) ९।६३।१५ = (२५५) ९।१०।१२

= १।१३७।२ (परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)

= ५।५१।७ (स्वस्त्याग्नेयः । विश्वे देवाः)

= (इन्द्रः २२३८) ७।३२।४

[४६३] ९।६३।१६ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

सयं अर्षं पवित्रं भा । मद्यो यो देववीतमः ।

(४८९) ९।६४।१२ (काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

स नो अर्षं — ।

[४६४] ९।६३।१७ निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

तमी मृजन्त्यायवः ।

(१०१६) ९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।१७ = (३५९) ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६

[४६६] ९।६३।१९ = (९५) ९।१२।१

[४६७] ९।६३।२० = (१२७) ९।१५।७

["] ९।६३।२० = (१४३) ९।१७।७

[४७०] ९।६३।२३ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

प्रियः समुद्रमा विशा ।

(५०४) ९।६४।२७ (काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

[४७१] ९।६३।२४ = (४१२) ९।६१।२५

[४७२] ९।६३।२५ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पवमाना असृक्षत ।

(१०२४) ९।१०७।२५ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।२५ = (१८०) ९।२३।१

[४७५] ९।६३।२८ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पुनानः सोम धारय ।

(१००३) ९।१०७।४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।२८ = (अग्निः १०७०) ६।१६।२९

(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

[४७६] ९।६३।२९ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्षं कनिक्रदत् ।

धुमन्तं शुष्ममुत्तमम् ।

(५७०) ९।६७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पवमानः सोमः)

[४७७] ९।६३।३० = (२६४) ९।३६।५

[४७९] ९।६४।२ = (इन्द्रः २१९) ८।३३।१०

[४८०] ९।६४।३ = (३१६) ९।४५।३

[४८१] ९।६४।४ = (२६३) ९।३६।४

["] ९।६४।५ = (१६४) ९।२०।६

[४८३] ९।६४।६ = (२६४) ९।३६।५

[४८६] ९।६४।९ = (३९) ९।४।९

["] ९।६४।९ = (३६२) ९।५४।३

[४८८] ९।६४।११ = (अग्निः १०७६) ६।१६।३५

= (२३९) ९।३२।४

[४८९] ९।६४।१२ = (४६३) ९।६३।१६

["] ९।६४।१२ = (२२८) ९।३०।५

[४९४] ९।६४।१७ (कश्यपो मारिचः । पवमानः गोम)

वृथा समुद्रमिन्दवः ।

भगमन्नुतस्य योनिमा ।

(५४९) ९।६६।१२ (अत वैखानगाः । पवमानः गोम.)

अच्छा समुद्र ।

भगमन्नु ।

[४९९] ९।६४।२२ (कश्यपो मारिचः । पवमानः गोम)

इन्द्रायैन्दो ... पवस्व मधुमत्तम ।

(१०२६) ९।१०८।१ (गोविर्वातः जातयः । पवमानः गोम.)

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम ।

(१०४०) ९।१०८।१५ (गोविर्वातः जातयः । पवमानः गोम)

इन्द्राय सोम ।

पवस्व मधुमत्तमः ।

["] ९।६४।२२ = (११२४) ३।६२।१३

(विश्वामित्रो गायिनः । गोम)

[५०१] ९।६४।२४ = (३४८) ९।५१।३

[५०२] ९।६४।२५ = (१३६) ९।१६।८ = (२२४) ९।३०।१

["] ९।६४।२५ (कश्यपो मारिचः । पवमानः गोम.)

इन्दो सहस्रभर्णसम् ।

(९१५) ९।९८।१ (अम्बगणो वार्षागिरः, ऋजिष्वा

भारद्वाजश्च । पवमानः गोम.)

[५०३] ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।

["] ९।६४।२६ = (२८९) ९।४०।६

[५०४] ९।६४।२७ = (३५४) ९।५२।४ = (४७०) ९।६३।२३

[५०५] ९।६४।२८ = १।१३७।१

(परुच्छेपो देवोदागिः । मित्रावरुणा)

सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।

[५०६] ९।६४।२९ = (अग्नि ३१) १।२६।४

(शुन श्रेप आर्जगतिः । अग्नि.)

[५०८] ९।६५।१ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः गोम)

हिन्वन्ति सूर्यमुखयः ।

(५७६) ९।६७।९ (गोतमो गृह्यगणः । पवमानः गोम.)

[५०९] ९।६५।२ = (२९७) ९।४२।२

[५१३] ९।६५।६ = (१६४) ९।२०।६

[५१४] ९।६५।७ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः गोम)

पवमानाय गायत ।

(७७१) ९।८६।४४ (अग्निर्भोमः । पवमानः गोम.)

विपश्चिते पवमानाय गायत ।

दे० [सोमः] १२

[५१५] ९।६५।८ = (२०४) ९।२६।५ = (२३७) ९।३२।२

[५१६] ९।६५।९ = (३०१) ९।६१।४

= (इन्द्रः ३५९) ८।१४।६

[५२०] ९।६५।१३ = (इन्द्रः २६५) ८।६।२३ (वत्सः, काण्वः ।

इन्द्र.)

["] ९।६५।१३ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः

गोमः ।

पवस्य विश्वदर्शतः ।

(९९०) ९।१०६।५ (चक्षुर्मानवः । पवमानः गोम)

["] ९।६५।१३ = (३२४) ९।४६।५

[५२१] ९।६५।१४ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा ।

पवमानः गोम)

आ कलशा इन्द्रो धाराभिरोजसा ।

(९९२) ९।१०६।७ (मनुगामवः । पवमानः गोम)

इन्द्रो धाराभिरोजसा ।

आ कलशं ।

[५२२] ९।६५।१५ = १।१३७।२ (परुच्छेपो देवोदागिः ।

मित्रावरुणा)

[५२३] ९।६५।१६ = (४५५) ९।६३।८

[५२४] ९।६५।१७ = (अग्नि २४६६) १।९३।२

(गोतमो गृह्यगणः । अग्राधामा)

[५२५] ९।६५।१८ = (१०५) ९।१३।२

[५२६] ९।६५।१९ = (४०८) ९।६१।२१

[५२७] ९।६५।२० = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७ (स्वत्याग्नेयः ।

इन्द्रवायु)

["] ९।६५।२० = ८।४१।१ (नाभाकः, काण्वः । वरुण)

[५२८] ९।६५।२१ = (२४७) ९।३३।६

[५२९] ९।६५।२२ = (इन्द्र २४३५) ८।९३।६

[५३१] ९।६५।२४ = (अग्निः ४३७) २।६।५

["] ९।६५।२४ = (१०८) ९।१३।५

[५३२] ९।६५।२५ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः

गोमः)

पवते ह्यथतो हरि ।

(९९८) ९।१०६।१३ (अग्निश्चाशुषः । पवमानः गोम.)

["] ९।६५।२५ = ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा

मित्रावरुणा)

गृणाना जमदग्निना ।

[५३३] ९।६५।२६ = (१८७) ९।२४।१

[५३५-३७] ९।६५।२८ ३० पान्तमा पुरुषृहम् ।

[५३८] ९।६६।१ = (१८०) ९।२३।१

[५३८] ९।६६।१ = (आमि. २२७) १।७५।४ (गोतमो राहूगण. ।
आमि)

[५४१] ९।६६।४ = (३००) ९।४०।५

[५४४] ९।६६।७ = १।४०।४ (कण्वो घाँग. । ब्रह्मणस्पति)

[५४७] ९।६६।१० = (७७) ९।१०।१

क्यानो (वने) अक्षिति. श्रवः ।

[५४८] ९।६६।११ (गत वर्यान्माः । पवमान गोम)

अच्छा कोश मधुश्रुतम् ।

(१०११) ९।१०७।१२ (सप्तर्षयः । पवमान सोम)

[५४८] ९।६६।११ = (१५५) ९।१७।४

[५४९] ९।६६।१२ = (४९४) ९।६४।१७

[५५०] ९।६६।१३ = (३०८) ९।४४।१

प्र ण इन्द्रो महे ण (तन) ।

[' '] ९।६६।१३ = (१४) ९।२।४ (पयो अर्षन्ति सिन्धव. ।

[५५१] ९।६६।१४ = (४१६) ९।६१।२९

अस्य ते मरुते वयम् ।

[' '] ९।६६।१४ = (२३५) ९।३१।६ इन्द्रो सखित्वमुग्रमसि ।

[५५५] ९।६६।१८ = (इन्द्र. ३१५२) ४।४१।७

[५५९] ९।६६।२२ = (४२०) ९।६२।३

[५६०] ९।६६।२३ = (३७४) ९।५७।३ स मर्त्यजान आयुभिः ।

[५६१] ९।६६।२४ (गत वेखानमाः । पवमान. सोम)

कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ।

(इन्द्र. २६६४) १।०८९।२ (गुणैश्चामित्र. । इन्द्रः)

—तमांसि विप्या जघान ।

[५६४] ९।६६।२७ = (१६५) ९।२०।७

[५६५] ९।६६।२८ = (२११) ९।२७।६

[५६८] ९।६६।१ = (३५५) ९।५२।५

[५७०] ९।६६।३ = (४७६) ९।६३।२९

[५७१] ९।६६।४ = (२४८) ९।३४।१

[' '] ९।६६।४ (कदम्बो मारीचः । पवमानः सोम)

तिरो वाराण्यव्यया ।

हरिः ।

(१००९) ९।१०७।१० (सप्तर्षयः । पवमान. सोम.)

[५७४] ९।६६।७ = (१८७) ९।२४।१

[' '] ९।६६।७ = (इन्द्र. ३२१७) १।१३५।६—(४१८) ९।६२।१

[५७६] ९।६६।९ = (५०८) ९।६५।१

[' '] ९।६६।९ = (३४३) ९।१०।३

[५७७ ७९] ९।६६।१०—१२ आ भक्षत् कन्यासु नः ।

[५८०] ९।६६।१३ = (१) ९।१।१

[५८१] ९।६६।१४ = (१४०) ९।१७।४

[५८३] ९।६६।१६ = (९५) ९।११।१

[५८४] ९।६६।१७ = (३२०) ९।४६।१

[' '] ९।६६।१७ = (इन्द्र. १७०) ८।३।१५
(मेत्यानिधिः कण्वः । इन्द्र.)

[५८६] ९।६६।१९ = (१६५) ९।२०।७

[५९५] ९।६६।२८ = (१११७) १।९१।१७

[५९६] ९।६६।२९ (पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा ।
पवमानः सोमः)

अगन्म विभ्रतो नमः ।

१०।६०।१ (वधुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुगोपायना । असमाति)

[५९८] ९।६६।३१ यः पावमानीमध्येत्यृषिभिः समृतं रसम् ।

(५९९) ९।६६।३२ पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः— ।

[६०६] ९।६६।३७ = (इन्द्र. १७६२) ५।३२।३

[६०७] ९।६६।४८ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

सोमं मनीषा अभ्यनृषत स्तुभ. ।

(७४४) ९।६६।१७ (मिकता निवावरी । पवमानः सोम)

[६०८] ९।६६।९ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।

(७३६) ९।६६।९ (अकृष्टा माषाः । पवमान सोमः)

[६०९] ९।६६।१० (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

एवा नः सोम परिषिच्यमानो ।

अद्वेषे थावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रथिमस्मे सुवीरम् ।

(८९२) ९।९७।३६ (पराशरः शाकल्यः । पवमान सोमः)

एवा— ।

(आमिः १६००) १०।४५।१२ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । आमिः)

अद्वेषे— ।

[६१७] ९।६६।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

आ नः पवस्व वसुमद्विरण्यवद् ।

(७६५) ९।६६।३८ (अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमान सोमः)

ग नः— ।

[' '] ९।६६।८ = (इन्द्र. २४३२) ८।९३।३

(गुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्र.)

[६१९] ९।६६।१० = (आमिः ५७) १।३१।८

(हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । आमिः)

[६२२] ९।७०।३ = (आमिः ३८८) २।१।४

(गृन्ममदः शानकः । आमिः)

[६२३] ९।७०।४ स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः ।

(९३३) ९।९७।७ स मृज्यते सुकर्मभिः ।

[६२४] ९।७०।५ स मर्त्यजान इन्द्रियाय धायसे ।

(७३०) ९।८६।३ सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ।

- [६२७] ९।७०।८ = (१०४१) ९।१०८।१६
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे ।
- [६२८] ९।७०।९ (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश ।
(१०४१) ९।१०८।१६ (अक्तिर्वैशिष्टः । पवमानः सोमः)
- [६२९] ९।७०।१० (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
हितो न नसिरभि वाजमर्ष ।
(७३०) ९।८६।३ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष ।
- [६३७] ९।७१।८ = (अग्निः १८७५) १।२५।८
(कुम्भ आद्विरमः । अग्निः आश्विनोऽभिर्वा)
- [६४१] ९।७१।४ (हरिमन्त आद्विरमः । पवमानः सोमः)
शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ।
(७४०) ९।८६।३३ (मिक्ता निवावरी । पवमानः सोमः)
- [६४४] ९।७१।६ = (मरुतः ११३) १।६४।६
(नोधा गांतम । मरुतः)
- [६४५] ९।७१।७ (हरिमन्त आद्विरमः । पवमानः सोमः)
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मो सिन्धुषु ।
सोमो हृदे पवते चारु मरुवर ।
(७३५) ९।८६।८ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अपामूर्मि ... सिन्धुषु ।
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ।
(७४८) ९।८६।२१ (पृथिव्योऽजा । पवमानः सोमः)
सोमो हृदे ... ।
- [६४६] ९।७१।८ (हरिमन्त आद्विरमः । पवमानः सोमः)
स तू पवन्त्र परि पार्थिवं रजः । रयि पिशङ्गं बहुल वसीमहि ।
(१०२३) ९।१०७।२४ (समर्षयः । पवमानः सोमः)
स तू ।
(१०२०) ९।१०७।२१ रयिं पिशङ्गं बहुल पुरुम्भृन् ।
- [६५१] ९।७३।४ (पवित्र आद्विरमः । पवमानः सोमः)
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्नतः ।
(७२५) ९।८५।१० (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
- [६५७] ९।७४।१ = (५३) ९।७।४
- [६६१] ९।७४।५ = १।९२।१३ (गोतमो गृह्मण । उषा)
- [६६५] ९।७४।९ = (१३६) ९।१६।८
- [' '] ९।७४।१० (कक्षावान दैर्घतमसः । पवमानः सोमः)
स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ।
(९००) ९।७४।४ (पराजग शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
... पवमान उन्दे ।
- [६६७] ९।७५।२ = (उन्द्र ३३०५) १।१५।३

- (दर्धतमा औचथ्यः । इन्द्राविणू)
- [६६९] ९।७५।४ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्रगेचयन रोदसी मातरा शुचि ।
(७२७) ९।८५।१२ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्राक्कचद रोदसी मातरा शुचि ।
- [६७१] ९।७६।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
धनो दिवः पवते कृत्यो रम । अत्यो न ।
(६८०) ९।७७।५ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
चक्रिर्दिवः — । अत्यो न ।
- [६७५] ९।७६।५ (कविर्भार्गवः पवमानः सोमः)
वृषेव यूथा परि कोशमर्षमि । कनिकर ।
स इन्द्राय पवमे मन्त्रगन्तिमो ।
(८५२) ९।९६।२० (पतर्दनो देवोदगि । पवमानः सोमः)
— — परि कोशमर्षन् कनिकर ।
(८८८) ९।९७।३२ (समर्षयः । पवमानः सोमः)
कनिकर ।
— — मन्त्रवान् ।
- [६७६] ९।७७।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
वाध्रा अर्षन्ति पयमेव धेनव ।
१०।७५।४ (सिन्धुक्षिप्रयमेध । नयः)
- [६८१] ९।७८।१ प्र राजा वाच जनयन्नसिष्यदन् ।
(७६०) ९।८६।३३ = (९९७) ९।१०६।१२
पुनानो वाच जनयन्नसिष्यदन् ।
(९।८६।३३ अपावमः)
- [' '] ९।७८।१ शुद्धा देवानामुष याति निष्कृतम् ।
(७३४) ९।८६।७ सोमो देवानामुष ।
- [६८५] ९।७८।५ = ७।७७।४ (वसिष्ठो मेत्रावर्णि । उषा)
- [६८६] ९।७९।१ अर्यो नशन्त सनिपन्त नो धिय ।
(उन्द्र २७८०) १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धिय ।
- [६९५] ९।८०।५ (वसर्भार्गवाजः । पवमानः सोमः)
इन्द्र सोम मादयन् दैव्य जन ।
(७९३) ९।८४।३ (पञ्चपतिर्वान्य । पवमानः सोमः)
इन्द्र सोमो मादयन् ।
- [७०१] ९।८२।१ = (४२१) ९।६२।४
- [७१०] ९।८३।५ (पवित्र आद्विरमः । पवमानः सोमः)
नमो वसानः ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयमि श्रवो वृद्ध ।
(७६७) ९।८६।४० (अकृष्टामाषादयन्त्रय । पवमानः सोमः)
अपो वसानो ।
वाजमारुहन् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो वृद्ध ।

- [७११] ९।८४।१ = (इन्द्र ३२३२) ५।५१।७ (स्वम्यात्रेयः ।
इन्द्रवायु)
= (२४४) ९।३३।३ = (२४९) ९।३४।२
(त्रित आत्स्य । पवमानः सोम)
- [७१२] ९।८४।२ = (इन्द्रः ८०८) १।५३।४ (मव्य आश्रम ।
इन्द्र)
- [७१३] ९।८४।३ = (६९५) ९।८०।५
- [७१५] ९।८४।५ = (६७१) ९।७६।१
- [७२०] ९।८५।५ व्यपव्ययं समया वारमर्षमि ।
(९१२) ९।९७।५ वि वारमव्यं समयाति याति ।
- [७२२] ९।८५।७ = (४२०) ९।६२।३
- [७२४] ९।८५।९ = (अग्नि १७७९) ६।७।७ (भरद्वाजो
बार्हस्पत्य । वैश्वानरोऽग्निः)
- ["] ९।८५।९ राजा पवित्रमत्येति रोहवत् ।
(७३४) ९।८६।७ वृषा पवित्रमत्येति ।
- [७२५] ९।८५।१० = (६५१) ९।७३।४
- ["] ९।८५।१० वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
(८३१) ९।९५।४ अंशुं दुहन्त्युक्षण ।
- [७२६] ९।८५।११ (वेनो मार्गवः । पवमानः सोम)
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिमन्तं ।
(७५८) ९।८६।३१ (अक्रुष्टामापादयन्त्रयः । पवमानः सोम)
- [७२७] ९।८५।१२ (वेनो मार्गवः । पवमानः सोम)
ऊध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्ययान् ।
१०।१२३।७ (वेनो मार्गवः । वेनः)
ऊध्वो ।
१०।१२३।८ (वेनो मार्गवः । वेनः)
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकान् ।
- ["] ९।८५।१२ = (६६९) ९।७५।४
- [७३०] ९।८६।३ = (६२९) ९।७०।१०
- ["] ९।८६।३ (अक्रुष्टा माषाः । पवमानः सोम)
वृषा पवित्रे अधि सानो अश्ये ।
(८९६) ९।९७।४० (पराशर शाक्त्यः । पवमानः सोम)
सानो अश्ये ।
- [७३०] ९।८६।३ = (६२४) ९।७०।५
- [७३४] ९।८६।७ = (६८१) ९।७८।१
- ["] ९।८६।७ = (७२४) ९।८५।९
- [७३५] ९।८६।८ = (६४५) ९।७२।७
- [७३६] ९।८६।९ = (अग्नि १११) १।५८।१९

- ["] ९।८६।९ = (६०८) ९।६८।९
- [७४०] ९।८६।१३ = (६४२) ९।७२।४
- [७४४] ९।८६।१७ = (६०७) ९।६८।८
- [७४६] ९।८६।१९ = (३८६) ९।६०।३
- [७४८] ९।८६।२१ = (६४५) ९।७२।७
- [७५३] ९।८६।२६ = (११७) ९।१४।५
- [७५६] ९।८६।२९ (पृथिवीऽज्ञाः । पवमानः सोमः)
त्वं यां च पृथिवीं चाति जग्निषे ।
(९४३) ९।१००।९ (रेभसन् काश्यपो । पवमानः सोम)
- [७५७] ९।८६।३० = (इन्द्र १६१) ८।३।६
- [७५८] ९।८६।३१ = (७२६) ९।८५।११
- [७६०] ९।८६।३३ (अक्रुष्टामापादयन्त्रयः । पवमानः सोमः)
पुनानो वाचं जनयन्नुपावन् ।
(९९७) ९।१०६।१२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
—जनयन्मिष्यदन् ।
- [७६२] ९।८६।३५ = (२७५) ९।३८।४
- ["] ९।८६।३५ (अक्रुष्टामापादयन्त्रयः । पवमानः सोमः)
दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ।
(१०३३) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वोमिष्टः । पवमानः सोम)
दिवो विष्टम्भ उत्तमः ।
- [७६५] ९।८६।३८ = (६१७) ९।६९।८
- [७६७] ९।८६।४० = (७१०) ९।८३।५
- [७७१] ९।८६।४४ = (५१४) ९।६५।७
- [७७३] ९।८६।४६ = (७२६) ९।८५।११
- [७८४] ९।८७।९ = (अग्नि ९५०) ६।१।१२
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि)
- [७८५] ९।८८।१ = (इन्द्र २२१३) ७।२९।१
(वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
- [७९२] ९।८८।८ = (११०३) १।९१।३
- [७९९] ९।८९।७ = ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषा)
- [८०२] ९।९०।३ = (इन्द्र १८७८) ६।१९।८
(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
- [८०४] ९।९०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । पवमानः सोमः)
मत्सि वरुणं मत्सि मित्रं मत्सि ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।
(८९८) ९।९७।४२ (पराशर शाक्त्यः । पवमानः सोमः)
मत्सि मत्सि मित्रावरुणा ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।
- [८०६] ९।९१।१ दश स्वयरो अधि सानो अश्ये ।
(८१५) ९।९२।४ दश स्वपाभिगधि सानो अश्ये ।

[९४१] ९।१००।७ = (इन्द्रः २०८७) ६।४५।२८

(जंयुर्बाह्म्यत्यः । इन्द्रः)

["] ९।१००।७ = (३९) ९।४।९

[९४२] ९।१००।८ = (३१) ९।४।१

["] ९।१००।८ = (अग्निः १३३२) ८।४३।२३

[९४३] ९।१००।९ = (७५६) ९।८६।२०

[९४४] ९।१०१।६ = (८६१) ९।९७।५

[९५०] ९।१०१।७ = ८।३१।११ (मनुर्वेवस्वत । दम्पत्याभियं)

["] ९।१०१।७ = (१०४) ९।१३।१

[९५१] ९।१०१।८ = (१८७) ९।२४।१

[९५२] ९।१०१।९ = (इन्द्रः ३०४१) ५।८६।२

(अत्रिमौमः । इन्द्राग्नी)

[९५३] ९।१०१।१० (मनुः सावरणः । पवमानः सोमः)

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

(९९१) ९।१०६।६ (चक्षुर्मनवः । पवमानः सोमः)

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

[९५५] ९।१०१।१२ = (१७५) ९।२२।३

["] ९।१०१।१२ = (इन्द्रः १८) १।५।५

[९५८] ९।१०१।१५ = ७।८६।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वरुण)

[९५९] ९।१०१।१६ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ।

पवमानः सोमः)

अव्यो वारेभिः पथते ।

(१०३०) ९।१०८।५ (ऊरुगङ्गिरम । पवमानः सोमः)

["] ९।१०१।१६ = (१६) ९।२।६

[९६४] ९।१०२।५ = (अग्निः २४४०) १।१९।३

(मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)

[९६६] ९।१०२।७ = (अग्निः १९२४) १।१४।७

(दीर्घतमा आचथ्यः । आप्रीसृक्तं [उषासानक्ता])

[९६९] ९।१०३।२ = (५७१) ९।६७।४

["] ९।१०३।२ (द्विन आन्य । पवमानः सोमः)

वागण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति ।

(१०२१) ९।१०७।२२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

वारे . अव्यये ।

गोभिरञ्जानो अर्षति ।

[९७०] ९।१०३।३ = (१८३) ९।२३।४

[९७३] ९।१०३।६ = (२९) ९।३।९

["] ९।१०३।६ = (२६८) ९।३७।३

[९७४] ९।१०४।१ = १।२२।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)

[९७५] ९।१०४।२ (पर्वतनारदा काण्वौ, शिखण्डिन्याप्सरसौ

कादयपौ वा । पवमानः सोमः)

समी वामं न मातृभिः ।

देवाव्यं मदम् ।

(९८१) ९।१०५।२ (पर्वतनारदा काण्वौ । पवमानः सोमः)

मं वस्म इव मातृभिः ।

देवावीर्मदो ।

[९७६] ९।१०४।३ = १।१३६।४

(परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणा)

[९७९] ९।१०४।६ रथमं कं चिद्वज्रिणम् ।

(९८५) ९।१०५।६ अदेवं कं ।

[९८१] ९।१०५।२ = (९७५) ९।१०४।२

[९८७] ९।१०६।२ = (४७) ९।६।७

[९८८] ९।१०६।३ = (७७) ९।१०।१

[९८९] ९।१०६।४ = (इन्द्रः १७८५) ८।९।३

(अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)

["] ९।१०६।४ = (२२३) ९।२९।६

[९९०] ९।१०६।५ = (५२०) ९।६५।१३

[९९१] ९।१०६।६ = (९५३) ९।१०१।१०

["] ९।१०६।६ = (९४०) ९।१००।६

[९९२] ९।१०६।७ = (५२१) ९।६५।१४

[९९५] ९।१०६।१० = (१३६) ९।१६।८

["] ९।१०६।१० = (२७) ९।३।७

[९९६] ९।१०६।११ = (४५) ९।६।५

[९९७] ९।१०६।१२ (अग्निश्वाक्षुषः । पवमानः सोमः)

मीळहे ससिर्न वाजयुः ।

(१०१०) ९।१०७।११ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[९९७] ९।१०६।१२ = (७६०) ९।८६।३३

[९९८] ९।१०६।१३ = (५३२) ९।६५।२५

[१०००] ९।१०७।१ = ४।४५।५ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)

[१००३] ९।१०७।४ = (४७५) ९।६३।२८

["] ९।१०७।४ = (इन्द्रः ५५३) ८।६१।६

(भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)

[१००५] ९।१०७।६ = (५५) ९।७।६

[१००६] ९।१०७।७ = (इन्द्रः ३०) १।७।३

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)

[१००९] ९।१०७।१० = (५७१) ९।६७।४

[१०१०] ९।१०७।११ = (९७७) ९।१०६।१२

[१०११] ९।१०७।१२ = (५४८) ९।६६।११

[१०१३] ९।१०७।१४ = (१८३) ९।२३।४

["] ९।१०७।१४ = (इन्द्रः ४३७) ८।३४।१३

(नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

[१०१३] ९।१०७।१४ = (१६६) ९।११।१

[१०१४] ९।१०७।१५ (सप्तषयः । पवमानः गोमः)

राजा देव ऋतं ब्रूहत् ।

(१०३३) ९।१०८।८ (ऊर्वमसा आक्षिरस । पवमानः गोमः)

[१०१६] ९।१०७।१७ = (४७) ९।६।७

["] ९।१०७।१७ = (४६४) ९।६३।१७

[१०२०] ९।१०७।२१ = (६४६) ९।७२।८

[१०२१] ९।१०७।२२ = (५२) ९।७।३

["] ९।१०७।२२ = (९६९) ९।१०३।२

[१०२२] ९।१०७।२३ = (१०६) ९।१३।३

[१०२३] ९।१०७।२४ = (६४६) ९।७२।८

[१०२४] ९।१०७।२५ = (४७२) ९।६३।२५

[१०२५] ९।१०७।२६ = (२२५) ९।३०।२

["] ९।१०७।२६ = (११७) ९।१४।५

[१०२६] ९।१०८।१ = (४९९) ९।६४।२२

[१०३०] ९।१०८।५ = (९५९) ९।१०१।१६

[१०३१] ९।१०८।६ = ८।७३।१८

(गोपवन आत्रेयः सप्तवर्धिवी । अश्विनो)

[१०३३] ९।१०८।८ = (१०१४) ९।१०७।१५

[१०४०] ९।१०८।१५ = (९३) ९।११।८

["] ९।१०८।१५ = (४९९) ९।६४।२२

[१०४१] ९।१०८।१६ = (६२८) ९।७०।९

["] ९।१०८।१६ = (७६२) ९।८६।३५

(वत्सः । काण्वः । इन्द्रः)

["] ९।१०८।१६ = (६२७) ९।७०।८

["] ९।१०८।१६ = (७६२) ९।८६।३५

[१०५३] ९।१०९।१२ = (८४९) ९।९६।१७

[१०६३] ९।१०९।२२ = (२२८१) ८।३२।२

(मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

[१०७२] ९।११०।९ = (इन्द्रः ११८४) २।१७।४

(गुत्तमदः शौनकः । इन्द्रः)

[१०७३] ९।११०।१० = (८४१) ९।९६।९

[१०७८] ९।१११।३ = ८।१५।१३

[१०७९-८२] ९।११२।१-४ = (१०८३-९३) ९।११३।१-११ =

(१०९४-९८) ९।११४।१-४ इन्द्रायेन्दो पणि स्व ।

[१०९०-९३] ९।११३।८ ११ तत्र माममृतं कधि ।

[१०९७] ९।११४।४ (कश्यपो माराचः । पवमान गोमः)

मो च नः किं चनाममद् ।

१०।५९।८-९ (बन्धु श्रुतबन्धु० । यावापृथिवी)

मो पु ते किं चनाममत् ।

(इन्द्रः ३३५५) १०।५९।१० (बन्धु श्रुतबन्धुविप्रबन्धु-

गोपायनाः । इन्द्रयावापृथिव्यः ।

दैवत-संहितान्तर्गत सोमदेवता-मंत्राणां उपमासूची ।

(अस्यां सूच्यां मंत्रक्रमाङ्क १०९७ पर्यन्त ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलं वर्तते । तस्य निर्देशः कृतो नास्ति ।)

अग्निः न वने ८८,५, ७८९ आसृज्यमानः पाजांसि ।
अग्निं न मथितम् ८,४८,६, ११४० सं दिदीपः ।
अग्नेः इव २२,२, १७४ अमाः वृथा ।
अत्कं न निक्तम् ६९,४; ६१३ परि सोमः अव्यत ।
अस्याः हियानाः न १३,६, १०९ असृग्ं वाजसातये ।
अत्यः न ३२,३; २३८ गोभिः अज्यते ।
अत्यः इव ४३,१; ३०२ सृज्यते ।
अत्यः न वाजसृत् ४३,५; ३०३ इन्दुः कनिक्रन्ति ।
अत्यः न सखभिः ७६,१; ६७१ वृथा पाजांसि कृणुते ।
अत्यः न यूथे ७७,५; ६८० वृष्युः कनिक्रदत् ।
अत्यः न ८१,२; ६९७ वोळ्हा वृषा ।
अत्यः न ८२,२, ७०२ सृष्टः ।
अत्यः न ८५,५ ७२० सानसिः ।
अत्यः न हियानः ८६,३, ७३० अभि वाजम् अर्प ।
अत्यः न ८६,२६; ७५३ क्रीळन् परिवार अर्षति ।
अत्यः न ८६,४४; ७७१ क्रीळन् हरिः असरत् ।
अत्यः न ९३,१, ८१८ वाजी द्रोणे ननक्षे ।
अत्यः न वाजी ९६,१५, ८४७ अरातीः तरतीत ।
अत्यः न ९६,२०; ८५२ सखा ।
अत्यः न ९७,१८; ८७४ क्रद ।
अत्यः न ९७,४५, ९०१ हित्वा ।
प्रत्यासः न ससृजानासः ९७,२०; ८७८ शुक्रास धन्वन्ति ।
प्रत्यम् इव वाजिनम् ६,५, ४५ सृजन्ति योषणः दश ।
अन्धसं यथा ते जातम् ५५,२ ३६५ नि बर्हिषि सद् ।
मपसः यथा रथम् १०७,१३; १०१२ तम् ईम् नदीषु ।
मपां न ऊर्मयः ३३,१, २४२ सोमासः प्रयन्ति ।
मपाम् इव ऊर्मय ९५,३, ८३० तर्तुराणाः मनीषा ।
मभ्रा इव विष्टुत् ७६,३, ६७३ रोदसी प्र पिन्व ।
मरिता इव नावम् ९५,२ ८२९ पथां वाचम् ह्यति ।
मरुपः न ७२,१; ६३९ युज्यते ।
मर्यमा इव ८८,८, ७९२ दक्षाद्यः ।
मर्यमा इव १,९१,३, ११०३ दक्षाद्यः ।
मर्वांन् इव ९७,२५; ८८१ श्रवसे सातिम् अच्छा ।
मर्वन्त न १०,१, ७७ अवस्यवः ।

अर्वन्तः न अवस्यवः ६६,१०, ५४७ सर्गाः असृक्षत ।
अर्वताम् इव वाजेषु ४७,५; ३३० भरेषु जिग्युषाम् असि ।
अवताम् इव सर्गासः १०,२५,४, ११६३ समु प्रयन्ति ।
अश्वः न ६४,३; ४८० चक्रद् वृषा ।
अश्वः न ७१,६; ६३५ यज्ञियः देवान् अप्रेति ।
अश्वः न ९७,२८, ८८४ क्रदः ।
अश्वः न १०१,२, ९४५ कृष्यः ।
अश्वः न १०९,१०, १०५१ निक्तः सोमः ।
अश्वः न हतारः ६२,६, ४२३ अमृताय ईम् आशुशुभम् ।
अश्वं न ८७,१; ७७६ वाजिनं मर्जयन्तः ।
अश्वः न १०८,७; १०३२ अपतुरम् रजस्तुरम् ।
अश्वया इव १०७,८; १००७ हरिता याति धारया ।
अहानि इव सूर्यः वासराणि ८,४८,७; ११४१ न आसूषि ।
अहिः न ८६,४४, ७७१ जर्णाम् अति सर्पति त्वचम् ।
अद्याः न ईक्षेण्यास ७७,३; ६७८ चारवः ।
आजिम् यथा ३२,६, २४० एवं हितम् अगन् ।
आपः न प्रवताः ६,४; ४४ इन्द्वः अन्वसरन् ।
आपः न प्रवताः २४,२, १८८ अभि गावः अधन्विषुः ।
आपः न ८८,७, ७९१ सुमतिः भव ।
इन्द्रः न ८८,४, ७८८ महा कर्माणि चक्रिः ।
इन्द्रस्य इव आजो ९७,१३, ८६९ वगनुः आ शृण्वे ।
इषुः न धन्वन् ६९,१; ६१० मतिः प्रति धीयते ।
उक्षा इव यूथा ७१,९; ६३८ परियन् अरावीत् ।
उत्स न कंचित् जनपानम् ११०,५, १०६८ अभि अभि हि ।
उपवक्ता इव होतुः ९५,५; ८३२ वाचम् ह्यन् ।
उरु इव ९६,१५, ८४७ गातुः ।
उशाना इव काव्यम् ९७,७, ८६३ देवः देवानां जनिमा ।
उषसः न सूर्यः ८४,२; ७१२ इन्दुः सिषक्ति ।
उषाः सूर्यः न रश्मिभिः ४१,५; २९४ मही रोदसी आपृण ।
ऊर्मिः इव अपाम् १०८,५; १०३० क्रीळन् पवते ।
ऊर्मि न सिन्धुः ९६,७; ८३९ सोमः गिरः आवीविपत् ।
ऊर्मैः इव सिन्धोः ५०,१, ३४१ ते स्वन उदीरते ।
ऊशुः न रश्मं नवम् २१,६, १७१ दधाता केतम् आदिशे ।

क्वयः न गृध्राः ९७, ५७; ९१३ अदब्धाः पदे रेभन्ति ।
 काम न ९७, ४६; ९०२ य देवयतां असर्जि ।
 कारिणे न ९७, ३८, ८९४ धनं प्र यंसत् ।
 कारिणाम् इव भरासः १०, २, ७८ गभरूप्योः दधन्विरे ।
 कृष्या इव अत्यासः ४६, १; ३२० देववीतये अमृगन् ।
 कृष्टिहा इव ७१, २, ६३१ शूषः रोहवत् प्र ण्ति ।
 गावः न ४१, १; २९० भूर्णयः ।
 गावः यन्ति गोपतिम् ९७, ३४, ८९० पृच्छमानाः सोम ।
 गावः अस्त न धेनव ६६, १२; ५४९ हन्दवः समुद्रम् ।
 गावः न धेनवः ६८, १, ६०० हन्दवः प्र असिष्यदन्त ।
 गावः न यवसेषु १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
 गावः न यवसे १०, २५, १, ११६० ते सख्ये वय रणन् ।
 गावः वत्सं न मातरः १२, २; ९६ हन्द् विप्राः अभ्यनूषत ।
 गाः इव ११२, ३; १०८१ नानाधियः अनुतस्थिम ।
 ग्रन्थिम् न ९७, १८, ८७४ ग्रथित माम् वि व्य ।
 घना इव ९७, १६, ८७२ विष्वक् दुरितानि विघ्नन् ।
 घृतं न पवते मधु ६७, ११, ५७८ अयं सोमः कपर्दिने ।
 घृतं न पवते शुचि ६७, १२, ५७९ अयं ते आघृणे सुतः ।
 चमसाम् इव १०, २५, ४; ११६३ त्वम् विवक्षसे ।
 चरुः न ५२, ३; ३५३ तम् ईक्ष्य ।
 चित्रम् न दिवः ६१, १६; ४०३ ज्योतिः बृहत् ।
 जनः न पुरि १०७, १०, १००९ हरिः चम्बोः सदः विशत् ।
 जन न युष्वा ८८, ५, ७८९ महत् उपन्दिः ।
 जमदग्निवत् ९७, ५१, ९०७ नः आर्षेयं द्रविणं अभ्यश्रवाम ।
 जाया इव पत्न्यौ ८२, ४, ७०४ अधिशेव महसे ।
 जारः न योषितम् ३८, ४; २७५ मानुषीषु आ सीदति ।
 जारः न योषणाम् १०१, १४, ९५७ सरत् योनिम् आसदत् ।
 जारम् इव योषा प्रियम् ३२, ५; २४० प्रिय त्वा गावः ।
 जारम् न कन्या ५६, ३, ३७० दश योषणः त्वा अभ्यनूषत ।
 दिवः न विष्टुत् ८७, ८, ७८३ सोमस्य धारा पवते ।
 दिवः न वृष्टिः ८९, १; ७९३ पवमान अक्षाः ।
 दिवः न वृष्टय ५७, १, ३७२ ते धाराः प्रयन्ति ।
 दिवः न वृष्टयः ६२, २८, ४४५ असश्रतः ते धाराः प्रयन्ति ।
 दिवः न सर्गाः ९७, ३०, ८८६ अससृग्मम् अह्नाम् ।
 दिवः न सानु १६, ७; १३५ धारा पवित्रे वृथा अर्षति ।
 दिवः न सानु ८६, ९, ७३६ स्तनयन् अचिक्रदत् ।
 दिव्याः न कौशासः ८८, ६, ७९० सोमासः अभ्रवर्षाः ।
 दिव्या विट् यथा ८८, ७; ७९१ अनभिशास्ता तथा ।
 हूतम् न ९९, ५, ९३१ पूर्वचित्तयः तम् आशासते ।

दै० [सोमः] १३

देवः न सूर्यः ५४, ३; ३६२ सोम भुवनोपरि तिष्ठति ।
 देवः न सूर्यः ६४, ९, ४८६ अक्रान् ।
 देवः न ६३, १३; ४६० सूर्यः ।
 देवः न ९७, ४८, ९०४ सविता सत्यमन्मा ।
 द्रविणोदाः इव ८८, ३; ७८७ रमन् विश्ववारः ।
 धन्वन् न तृष्णा ७९, ३; ६८८ समरीत तान् अभि ।
 धारा इव उरु दुहे ६९, १, ६१० मतिः अस्य अग्रे आयती ।
 धुर वाजी न यामनि ४५, ४, ३१७ पवित्र अत्यक्रमीत् ।
 धेनुः न वत्सम् ८६, २; ७२९ पयसाभि वज्रिणम् हन्दव ।
 नदी फेनम् इव अथ १, ८, १, १२४० हविः यातुधानान् ।
 नावा न सिन्धुम् ७०, १०, ६२९ वि अति पर्षि विद्वान् ।
 नासत्या इव ८८, ३, ७८७ हवे आ शंभविष्ठ ।
 निम्न इव सिन्धवः १७, १; १३७ घ्नतः वृत्राणि भूर्णयः ।
 पय न ९६, १५; ८४७ दुग्धम् ।
 पयसा इव धेनवः ७७, १, ६७६ वाश्राः अभि अर्षन्ति ।
 परावतः न साम १११, २; १०७७ धीतय यत्र आरणन्ति ।
 पर्जन्यः वृष्टिमान् इव २, ९; १९ मध्वा धारया पवस्व ।
 पर्जन्यस्य इव २२, २, १७४ वृष्टय ।
 पर्णवीः इव ४३, १, २१ पृषः दीयति ।
 पशौ न रेतः ९९, ६; ८३२ सोमः चमूषु सीदति ।
 पिता इव सूनवे १०, २५, ३; ११६२ न मृळ ।
 पिता इव सूनवे ८, ४८, ४, ११३८ सुशेव नः शं भव ।
 पितुः न पुत्र ९७, ३०; ८८६ क्रतुभि यतानः त्वम् ।
 पिश्वस्य इव रायः ८, ४८, ७; ११४१ सुतस्य ते भक्षीमहि ।
 पूषा इव ८८, ३, ७८७ धीजवनः ।
 पृतनाषाट् न ८८, ७, ७९१ त्वं यज्ञः ।
 पैद्व न ८८, ४, ७८८ त्वं अहि हन्ता ।
 प्रघ्नताम् इव सतनिः ६९, २; ६११ पवमानः परिवारम् अर्षति ।
 प्रियः न मित्र ८८, ८, ७९२ शुचिः त्वम् असि ।
 प्रियः न मित्रः १, ९१, ३; ११०३ शुचिः ।
 प्रियाम् न जारः ९६, २३, ८५५ शत्रून् अपघ्नन् ण्षि ।
 भुजे न पुत्रः ओण्यो १०१, १४, ९५७ जामिः अत्के अव्यत ।
 भृतिम् न १०३, १, ९६८ उद्यतं वचः आभर ।
 मख न २०, ७, १६५ क्रीळुः मंहयुः ।
 मखम् न भृगव १०१, १३, ९५३ अराधस खानम् अपहत ।
 मनवे यथा आपवथाः वयोधाः ९६, १२, ८४४ एवा पवस्व ।
 मरुताम् इव स्वनः ७०, ६; ६२५ नानदत् ण्ति ।
 मर्य इव स्व ओक्ये १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
 मर्यः न योषाम् ९३, २; ८१९ अभि निष्कृतं यन् ।

मर्यः न शुभ्र ९६, २०, ८५२ तन्व मृजानः ।
 महिषः न ६९, ३; ६१२ नृग्नः शिशान शोभते ।
 महिषः न शृङ्ग ८७, ७, ७८२ तिग्मे शिशानः अदधावत् ।
 महिषाः इव वनानि ३३, १, २४२ सोमास प्र यन्ति ।
 मर्मृजान महिष न ९५, ४, ८३१ मानौ अशु दुहन्ति ।
 मही इव घौ । अथ ०६, ६, ३, ११८६ वधम्मना तस्य बल ।
 मही न धारा ८६, ४४, ७७१ अति अन्ध अर्षति ।
 मातरा इव १८, ५; १४९ मही रोदसी स दोहते ।
 मातरा न ददशान ७०, ६, ६२५ उस्त्रियः नानदत् एति ।
 मातृभि न शिशुः ९३, २, ८१९ वावशानः ।
 मिता इव सन्न ९७, १; ८५७ सुनः पवित्र पर्येति रेभन् ।
 मित्र न २, ६, १६ दर्शत ।
 मृग न ३२, ४, २३९ तक्त ।
 मृग न महिषः ९२, ६, ८१७ वनेषु मीदन् अयामात् ।
 मृज न रुत धातृभि १०, ३, ७९ सोमास गोभि अञ्जते ।
 मूये न निष्ठा वृषभः ११०, ९, १०७२ विश्वा भुवना वितिष्ठसे
 योपा इव पित्र्यावती ४६, २, ३२१ वायुम् असृजत ।
 योपा इव सुदुवा ९६, २४, ८५६ सुधाराः आ यन्ति ।
 रघुजा इव ८६, १, ७०८ रमना मदा अर्षन्ति ।
 रथः न ८८, २, ७८६ मूरिपाट ।
 रथः न ९०, १; ८०० वाजं सनिपन्न अयासीत् ।
 रथः न ९२, १, ८१२ सर्जि सनये हियानः ।
 रथाः इव १०, १; ७७ प्रस्नानास अक्रमुः ।
 रथाः इव १०, २, ७८ हिन्वानासः दधन्विरे ।
 रथा इव प्र वाजिन २२, १; १७३ सर्गाः सृष्टाः अहेषत ।
 रथाः इव वाजमन्त ६७, १७; ५८४ असृग्रन् देववीतये ।
 रथाः इव सातिम् अच्छ ६९, ९, ६१८ सोमाः इन्द्रं प्र ययुः ।
 रथम् न ७१, ५, ६३४ भुरिजोः सम् ई अहेषत ।
 रथ न गाव समनाह ८, ४८, ५, ११३९ सोमाः मां पर्वसु ।
 रथे न वर्म ९८, २, ९१६ सुवानः अव्ययम् अव्यत ।
 रथाः इव अश्व ६४, १०; ४८७ इन्द्रः पविष्ट सृजत् ।
 रथ्यः यथा ३६, १; २६० सुतः पवित्रे असर्जि ।
 रथ्ये आजौ यथा ९१, १; ८०६ धिया सचेताः असर्जि ।
 रथ्यासः यथा ८६, १, ७२९ एवा ते प्रमदासः पृथक् आशवः ।
 रसा इव विष्टपम् ४१, ६, २९५ सोम विश्वतः परिसर ।
 राजा इव विश ७, ५; ५४ पवमानः स्पृधः अधि सीदति ।
 राजा इव २०, ५; १६३ सुव्रतः ।
 राजा इव इभः ५७, ३; ३७४ सुव्रतः ।
 राजा इव ८२, १, ७०१ दस्स ।
 राजा इव ९०, ६, ८०४ क्रतुमान् ।

राजा न ९७, ३०; ८८६ मित्रम् ।
 राजा न ९२, ६; ८१७ समितीः हियान ।
 राजान न प्रशस्तिभिः १०, ३, ७९ सोमासः गोभिः अञ्जते ।
 रेभ न ७१, ७; ६३६ पूर्वाः उषसः विराजति ।
 रत्न न मातु ऊधनि ६९, १; ६१० मति उपसर्जि ।
 रत्न इव मातृभि १०५, २; ९८१ इन्द्रु हिन्वानः समज्यते ।
 रत्नम् न धेनवः १३, ७, ११० वाश्रा अभि अर्षन्ति ।
 रत्न जात न धेनवः १००, ७, ९४१ मातर स्वां रिहन्ति ।
 रत्न न मातृभिः १०४, २, ९७५ गय साधनं ससृजत ।
 रत्न सशिश्वरीः इव ६१, १४, ४०१ तम् इत् गिरः ।
 रत्न न पूर्वं आयुनि १००, १; ९३५ जात रिहन्ति मातर ।
 वनूषः यशा सीदन्तः ६४, २९; ५०६ वाजी अक्रमीत् ।
 वयो न वृक्षम् अथ ०६, २, २, १२४९ आ य विशन्तीन्द्रवः ।
 वरः न योषणाम् १०१, १४, ९५७ सरत् योनिम् आसदम् ।
 वरुण न सिन्धून् ९०, २, १२ वना वसाना ।
 वर्मा इव १०८, ६, १०३१ घृणो आ रुज ।
 वसुभिः ननिकै ९३, ३; ८२० गावः पयसा अभि ।
 वाजम् इव ३७, ५; २७० सोमः असरत् ।
 वाजम् इव ६२, १६, ४३३ सोमः असरत् ।
 वाज न एतशः अच्छा १०८, २, १०२८ सः इषः ।
 वाजे न वाजयुम् ६३, १९; ४६६ अयः वारेषु सिञ्चत ।
 वाजी न सप्तिः ९६, ९, ८४१ समना जिगाति ।
 वाजी इव सानसिः १००, ४; ९३८ वारं रहमाणा ।
 वाजिनि इव शुभः ९४, १, ८२३ अस्मिन् धियः स्पधन्ते ।
 वात न ९७, ५२, ९०८ जूतः ।
 वाताः इव २२, २; १७४ उरव ।
 वायुः न नियुत्वान् ८८, ३; ७८७ इष्टयामा त्वम् ।
 विः योना वसतौ इव ६२, १५; ४३२ इन्द्रः इह धीयते ।
 विदुष न यज्ञम् यजु ०६, २६; ११९६ शृणोति देवः ।
 विरपतिः न १०८, १०, १०३५ वह्नि ।
 वृक्षम् न पक्कम् ९७, ५३, ९०९ धूनवत् वसूनि ।
 वृषा इव यूथा ७६, ५; ६७५ परि कोशम् अर्षति ।
 वृषा इव यूथा ९६, २०; ८५२ परि कोशम् अर्षन् ।
 वृषा अभि कनिकदत् गाः ९७, १३, ८६९ शोण नदयन् ।
 वृष्टयः पृथिवीम् इव १७, २; १३८ इन्द्र सोमासः अक्षरन् ।
 वृष्टि न तन्यतुः १००, ३; ९३७ मनोयुजं धियम् आ सृज ।
 वृष्टेः इव ४१, ३; २९२ स्वनः शृण्वे ।
 वेः न दुषद् ७२, ५, ६४३ चम्बोः आसदत् हरि ।
 वेधाः न योनिम् १०१, १५; ९५८ हरिः पवित्रे अव्यतः ।
 व्रजम् न पशुवर्धनाय ९४, १, ८१३ कनीयन् मन्म पवते ।

शकुनः न पश्वावनेषु ९६, २३; ८५५ सोम कलशेषु सत्ता ।
 शकुना इव १०७, २०, १०१९ सूर्यम् अति पणितम् ।
 शार्धः न मारुतम् ८८, ७, ७९१ एव पवस्व ।
 शर्यहा इव शुद्धः ७०, ५, ६२४ दुर्मतीः आदेदिशानः ।
 शर्याभिः न भरमाणः ११०, ५, १०६८ अभ्याभि हि श्रवसा ।
 शिशुः न क्रीळन् ११०, १०; १०७३ पवमान अक्षाः ।
 शिशुः न जात ७४, १, ६५७ अवचक्रदत् वने ।
 शिशु जज्ञानम् (न) ९६, १७, ८४९ हर्यतं मृजन्ति ।
 शिशुम् न १०४, १; ९७४ यज्ञैः परि भूषत श्रिये ।
 शिशुम् न १०५, १; ९८० यज्ञैः स्वदयन्त गृतिभिः ।
 शुभ्र न १४, ५; ११७ ममृजे युवा ।
 शूरः न ७६, ९, ६७२ आयुधा धत्ते ।
 शूरः न सत्वा गाः गव्यन् अभि ८७, ७, ७८२ अदधावत् ।
 शूरः न १६, ६, १३४। ६२, १९, ४३६ गोषु तिष्ठति ।
 शूर यस्त्रि सस्वभि ३, ४; २४ सिषासति ।
 शूरः न युध्यन् ७०, १०, ६२९ अव न निदः स्य ।
 शूरः न रथः ९४, ३; २५ कविः काव्या भरते ।
 श्येन न ३८, ४; २७५ विश्वु सीदति ।
 श्येनः न ५७, ३; ३७४ वंसु सीदति ।
 श्येनः न ६१, २१; ४०८ योनिम् आसीद ।
 श्येनः न ६२, ४, ४२१ योनिम् आसदत् ।
 श्येनः न ६५, १९; ५२६ योनिम् आसीदन् ।
 श्येन न योनिम् ७१, ६, ६३५ सदनम् पृषति ।
 श्येनः न ८२, १, ७०१ योनि घृत्वन्त आयदम् ।
 श्येन न वंसु ८६, ३५, ७६२ कलशेषु सीदसि ।
 श्येनः न तक्तः ६७, १५; ५८२ ते रमः अर्षति ।
 श्येनः वर्म वि गाहते ६७, १४, ५८१ कलशेषु आ धावति ।
 श्रवस्यव न पृतनाज ८७, ५; ७८० पवित्रेभिः पवमानाः ।
 श्रौष्टी इव धुम् ८, ४८, २ ११३६ राये अनु क्रध्या ।
 सखा इव सख्ये १०४, ५, ९७८ न गातुवित्तम भव ।
 सखा इव सख्ये १०५, ५, ९८४ नर्यः रुचे भव ।
 सखा इव सख्ये ८, ४८, ४, ११३८ न श भव ।
 सखा सख्युः न ८६, १६, ७४३ प्र मिनाति सगिरम् ।
 सख्युः न जामिम् ९६, २२; ८५४ क्रन्दन् एति ।
 सघ इव ९२, ६, ८१७ पशुमान्ति होता ।
 सप्तिः इव ९६, १६, ८४८ श्रवस्य ।
 सप्तिः न १०३, ६, ९७३ वाजयुः ।

सप्ति न वाजयु १०६, १२, ९९७ असर्जि कलशान् अभि ।
 सप्ति न वाजयुः मीळदे १०७, ११, १०१० तिरः जणवानि ।
 समुद्रासः न ८०, १, ६९१ सवनानि वि विव्यचुः ।
 समुद्रम् न १०७, ९, १००८ सवरणानि अगमन् ।
 समुद्रम् इव सिन्धवः १०८, १६, १०४१ धानम् आ त्रिश ।
 सिन्धवः न नीची ८८, ६ ७९१ सुतामः कलशान् अभि ।
 सर्गः न तक्ति १६, १; १२९ एतश ।
 सर्गः न सृष्ट ८७, ७, ७८२ अर्वा अदधावत् ।
 सिंह न ९७, २८; ८८४ भीम ।
 सिन्धु न निम्नम् ९७, ४५; ९०१ अभि वाजि अक्षा ।
 सिन्धु न १०७, १२, १०११ पिपये अर्णसा ।
 सिन्धोः इव ऊर्मि ८०, ५, ६९५ पवमान अर्पयि ।
 सिन्धोः इव प्रवणे ६९, ७, ६१६ वृषच्युता मदास ।
 सुयम न ९६, १५, ८४७ वोळहा ।
 सुनु न १०७, १३, १०१२ प्रियः सोमः मर्त्य ।
 सूपस्थाभि न धेनुभि ६१, २१; ४०८ समिष्ठा अरणः ।
 सूरः न ६६, २२, ५५९ विश्वदर्शतः ।
 सूरः न ८६, २४, ७११ चित्रः ।
 सूर न स्वयुग्मि १११, १, १०७६ हरिण्या रुवा पुनानः ।
 सूर न उप ९७, ३८, ८९४ उभे रोदसी वि अप्राः ।
 सूर्यः इव ५४, २, ३६१ उपहृक् ।
 सूर्यः इव ५४, २; ३६१ मरांमि धावति ।
 सूर्यास न १०१, १२; ९५५ दर्शतामः ।
 सूर्यस्य इव न रश्मय ६४, ७, ४८४ प्र ते सर्गाः अमृक्षत ।
 सूर्यस्य इव रश्मय ६९, ६, ६१५ द्रावयित्वव ।
 सूर्ये न त्रिशः ९४, १, ८२३ अस्मिन् धियः स्पर्धन्ते ।
 स्तवः तव यथा ५५, २, ३६५ तथा प्रिये ब्रह्मिणि नि सद् ।
 स्तुका इव ९७, १७, ८७३ पीता ।
 स्वशः न ७३, ४, ६५१ नि मिपन्ति भूर्णय ।
 स्वर न ९८, ८; ९२२ हर्यतः ।
 स्वमरे न गावः ९४, २, ८२४ धियः पिन्वाना अभि वा श्रं ।
 हंसः यथा ३२, ३, २३८ गणम् आवीविशत ।
 हित न सप्ति ७०, १०, ६२९ वाजम् अभि अर्प ।
 हिताः न सप्तयः रथ २१, ४; १६९ पवमानासः चार्या आशत ।
 हिन्वानास न सप्तय ६५, २६, ५३३ श्रीणाना, अजु सु तन्त ।
 होता इव ९७, ४७; ९०३ याति समनेषु रेभन् ।
 होता इव सदन ९२, २, ८१३ चमूषु सीदन् ।
 होतारः न ९७, २६; ८८२ दिवियजः सन्दनमा ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

सोममंत्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अश्वरश्मिदेव	११९४	अत्यो न हियानो अभि	७३०	अपो वसानः परि	१०२५
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्	६४४	अदब्ध इन्दो पवसे	७१८	अप्सा इन्द्राय वायवे	५२७
अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे	८२६	अग्निं सोम पृष्ठानस्य	६६५	असु त्वा मधुमत्तमं	२२८
अग्न आयूषि पवस	५५६	अग्नयस्त्वा राजा वरुणो	१२४४	अभय छावापृथिवी	१२५३
अग्निं न मा मथितं	११४०	अद्रिभि सुतः पवते	६३२	अभिक्रन्दन् कलश	७३८
अग्निर्ऋषिः पवमानः	५५७	अद्रिभि सुतः पवसे	७५०	अभि क्षिपः समगमत	११९
अग्निर्न यो वन भा	७८९	अद्रिभिः सुतो मतिभिः	६६९	अभि गव्यानि वीतये	४४०
अग्नीषोमा पुनर्वसू	१२३४	अध क्षपा परिष्कृतो	९२८	अभि गावो अधन्विषु	१८८
अग्ने पवस्व स्वपा	५५८	अध धारया मध्वा	८६७	अभि गावो अनूषत	२४०
अग्नेगो राजाऽयस्त०	७७२	अध यदिमे पवमान	१०७२	अभि ते मधुना पयो	८७
अग्ने सिन्धूनां पवमानो	७३९	अध श्वेतं कलशं	६६४	अभि त्वं गाव पयसा	७१५
अग्निरसो नः पितरो	१२३०	अधा हिन्वान इन्द्रियं	३३५	अभि त्वं पूर्य मदं	४३
अचिक्रद् वृषा हरि०	१६	अधि ग्रामस्थाद् वृषभो	७२४	अभि त्वं मघं मदम्	४२
अचोदसो न धन्व०	६८६	अधि यदस्मिन्	८२३	अभि त्रिष्टुष्टं वृषणं	८०१
अच्छा कोशं मधुश्चुतं	५४८	अधुक्षत प्रिय मधु	१३	अभि त्वा योषणो दश	३७०
अच्छा नृचक्षा असरत्	८१३	अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	३४६	अभि त्वेन्द्र वरिमतः	१२५८
अच्छा समुद्रमिन्दवो	५४९	अनसमप्सु दुष्टं	१३१	अभि शुम्भं बृहद् यश	१०३४
अच्छा हि सोमः कलशो	६९७	अनु द्रप्त्वास इन्द्रव	४४	अभि द्रोणानि बभ्रवः	२४३
अच्छिन्नस्य ते देव	१२०१	अनु प्रत्नास आयवः	१८१	अभि नो वाजसातमं	९१५
अजीजनो अमृत	१०६७	अनु हि त्वा सुतं	१०६५	अभि प्रिया दिवस्सदं(०दा) ८५, १०२	
अजीजनो हि पवमान	१०६६	अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः	१००८	अभि प्रियाणि काव्या	३७३
अजीतयेऽहतये	८३६	अन्तश्च प्रागा अदितिः	११३६	अभि प्रियाणि पवते	६६६, ८६८
अज्जते व्यज्जते	७७०	अपघ्नन्तो अरावणः	११२	अभि ब्रह्मीरनूषत	२४६
अज्जन्त्येनं मध्वो	१०६१	अपघ्नन्नेषि पवमान	८५५	अभि वक्षिरमल्यं	७३
अतस्त्वा रयिमभि	३३३	अपघ्नन्त्यसोम रक्षसो	४७६	अभि वक्षा सुवसना	९०६
अति त्री सोम रोचना	१४१	अपघ्नन् पवते मृधो	४१२	अभि वायुं वीत्यर्षा	९०५
अति वारान् पवमानो	३८६	अपघ्नन् पवसे मृध.	४७१	अभि विप्रा अनूषत	९६, १४२
अति श्रितो तिरश्चता	११८	अप त्या अस्थुरनिरा	११४५	अभि विश्वानि वार्या	३००
अत्य मृजन्ति कलशे	७२२	अप द्वारा मतीनां	८२	अभि वेना अनूषत	४९८
अत्या हियाना न	१०९	अपाम सोमममृता	११३७	अभि सुवानास इन्द्रवो	१३८
अयू पवित्रमक्रमाद्	३१७	अपामिवेदूर्मय	८३०	अभि सोमास आयवः	१८३, १०१३
अयूर्मिमैत्सरो मदः	१३९	अपां रस प्रथमजो	१२४७	अभी नवन्ते अद्रुह.	९३५

अभी नो अर्ष दिव्या	९०७	अया पवस्व धारया	४५४	असृग्रमिन्दवः पथा	५०
अभी३ममद्गया उत	९	अया पवा पवस्वैना	९०८	अस्मभ्यं गातुवित्तमो	९९१
अभीमृतस्य विष्टप	२५२	अया रुचा हरिण्या	१०७६	अस्मभ्यं स्वा वसु०	९७७
अभ्यभि हि श्रवसा	१०६८	अया वीती परि स्वव	३८८	अस्मभ्यमिन्दविन्द्र	१९
अभ्यर्षे बृहद् यशो	१६२	अया सोमः सुकृत्पया	३२६	अस्मभ्य रोदसी रयि	५८
अभ्यर्ष महानां देवानां	४	अयुक्त सूर एतश	४५५	अस्माकमायुर्वर्धय	११२६
अभ्यर्ष विचक्षण	३५०	अरममाणो अत्येति	६४१	अस्मान्समयं पवमान	७१७
अभ्यर्ष सहस्रिणं	४५९	अरमणो येऽरथा	८७६	अस्मे धेहि धुमद्	२४१
अभ्यर्ष स्वायुध सोम	३७	अरावीदशु. सचमान	६६१	अस्मे वसूनि धारय	४७७
अभ्यर्षानपच्युतो	३८	अरुषो जनयन् गिरः	१९८	अस्मे सोम श्रियमधि	१०९८
अभ्यूर्णोति यज्ञमं	११५१	अरुरुचदुषसः	७०८	अस्य ते सख्ये वयं	४१६, ५५१
अमित्रहा विचर्षणिः	९२	अर्थिनो यन्ति चेदर्थं	११५४	अस्य पीत्वा मदाना०	१८६
अमृक्तेन रुशता	६१४	अर्वा इव श्रवसे	८८१	अस्य प्रत्नामनु द्युत	३६०
अयं कक्षीवतो महो	११६९	अर्षा णः सोम श गो	४०२	अस्य प्रेषा हेमना	८५७
अयं कृन्तुरगृभीतो	११५०	अर्षा सोम धुमत्तमो	५२६	अस्य व्रतानि नाष्टवे	३५८
अयं त आष्टुगे सुतो	५७९	अलायस्य परशुः	५९७	अस्य व्रते सजोषसो	९६४
अयं दक्षाय साधनो	९८२	अव द्युतानः कलशौ	६६८	अस्य वो ह्यवसा पान्तो	९२२
अय दिव इयति	६०८	अव यत् स्वे सधस्ते	११५८	अस्येदिन्द्रा मदेष्वा	१०, ९८८
अयं देवेषु जागृविः	३१०	अवा कल्पेषु न.	७४	आ कलशा अनूपत	५२१
अयं नो विद्वान्	६७९	अवावशन्त धीतयो	१५५	आ कलशेषु धावति	१४०, ५८१
अयं पुनान उषसो	७४८	अविता नो अजाश्वः	५७७	आच्छद् विधानैर्गुपितो	११७४
अयं पूषा रयिर्भग	९५०	अव्ये पुनान परि	७५२	आ जागृविर्विप्र	८९३
अयं भराय सानसि	९८७	अव्ये वधूयुः पवते	६१२	आ जामिरस्के अव्यत	९५७
अयं मतवान्ठकुनो	७४०	अव्यो वारे परि प्रियो(०य)५५, ३४३		आ त इन्द्रो मदाय	४३७
अयं मे पीत उदियति	११२९	अव्यो वारेभिः पवते	९५९	आ तू न इन्द्रो शत	६४७
अयं विचर्षणिर्हितः	४२७	अश्वो न क्रदो वृषभि	८८४	आ ते दक्ष मयोभुव	५३५
अयं विद्वच्चित्रदशी०	११३१	अश्वो न चक्रदो वृषा	४८०	आ ते रुच पवमानस्य	८५६
अयं विप्राय दाशुषे	११७०	अश्वो बोळ्हा सुख रथं	१०८२	आत्मन्वज्जभो दुह्यते	६६०
अयं विश्वानि तिष्ठति	३६२	अषाळहं युत्सु पृतनासु	११२१	आत्मा यज्ञस्य रक्षा	४८
अयं स यो दिवस्पति	२८१	असर्जि कलशौ अभि	९९७	आत् सोम इन्द्रियो	३२८
अयं स यो वरिमाण	११३०	असर्जि रथ्यो यथा	२६०	आ दक्षिणा सृज्यते	६३०
अयं सूर्य इवोप	३६१	असर्जि वक्त्रा रथ्ये	८०६	आदस्य शुग्मिणो रसे	११५
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	७८५	असर्जि वाजी तिर	१०६०	आ दिवस्पृष्ठमश्वयु.	२६५
अयं सोमः कपर्दिने	५७८	असर्जि रक्कभो दिव	७७३	आदीं केचित् पश्य	१०६९
अयं स्तुवान आगम	१२४१	असश्चतः शतधारा	७५४	आदीं त्रितस्य योषणो	२३७
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ	११२८	असावि सोमो अरुषो	७०१	आदीमश्व न हेतारो	४२३
अया चित्तो विपानया	५१९	असाव्यंशुमदायाप्सु	४२१	आदीं हसो यथा गण	२३८
अया निजग्निरोजसा	३५७	असृक्षत प्र वाजिनो	४८१	आ धावता सुहस्य	३२३
अया पवस्व देवयु	९९९	असृग्रन् देववीतये	३२०, ५८४	आ न इन्द्रो मर्हामिधं	५२०

आ न इन्द्रो शतविन	५२४, ५७३	आ सोता परि पिञ्जता	१०३२	इन्द्रायेन्दुं पुनीतन	४४६
आ न पवस्व धारया	२५४	आ सोम सुवानो अद्रिभिः	१००९	इन्द्रायेन्दो मरुत्वते	४९९
आ न पवस्व वसु	६१७	आस्मिन् पिङ्गाग्निन्दवो	१७०	इन्द्रो न यो महा	७८८
आ न पूषा पवमान.	६९९	आ हर्यताय घृणवे	९२७	इमं यज्ञमिद वचो	१११०
आ नः शुष्म नृषाह्य	२२६	आ हर्यतो अर्जुने	१०१२	इमे मा पीता यज्ञस	११३९
आ नः सुतास इन्द्रव.	९९४	इद यत् प्रेण्य. शिरो	११९०	इमौ देवौ जायमानौ	१२१८
आ नः सोम पवमानः	६९८	इद स्वरिदमिदास	१२१५	इयमग्ने नारी पति	१२३५
आ न. सोम सहो जुवां	५२५	इद हविर्यार्तुधानान्	१२४०	इषं तोकाय नो दधद०	५२८
आ नः सोम संयन्त	७४५	इन्द्रविन्द्राय बृहते	६१९	इषमूर्जमभ्यर्षांश्च	८२७
आ नः सोम पवित्र आ	४३८	इन्दु रिहन्ति महिषा	९१३	इषमूर्जं च पिन्वस	४४९
आ पवमान धारय	१०३	इन्दुः पविष्ट चारु	१०५४	इषमूर्जं पवमाना	७६२
आ पवमान नो	१८२	इन्दुः पविष्ट चेतनः	४८७	इषिरेण ते मनसा	११४१
आ पवमान सुष्टुति	५१०	इन्दुः पुनानः प्रजा	१०५०	इषुर्न धन्वन् प्रति	६१०
आ पवस्व गविष्टये	५५२	इन्दु पुनानो अति	७५३	इषे पवस्व धारया	४९०
आ पवस्व दिशां	१०८४	इन्दुरत्यो न वाजसूत्	३०६	इष्यन् वाचमुपवक्त्रेव	८३२
आ पवस्व मदिन्तम	१९९, ३४४	इन्दुरिन्द्राय तोशते	१०६३	ईशान इमा भुवनानि	७६४
आ पवस्व महीमिष	२९३	इन्दुरिन्द्राय पवत	९४८	उक्षा मिमाति प्रति	६१३
आ पवस्व सहस्रिण	४२९, ४४८	इन्दुर्देवानामुपसख्य	८६१	उक्षेच यूथा परिय०	६३८
आ पवस्व सुवीर्यं	५२२	इन्दुर्वाजी पवते	८६६	उक्षा ते जातमन्धसो	३९७
आ पवस्व हिरण्यवद्	४६५	इन्दुर्हिन्वानो अर्षति	५७१	उत त्या हरितो दश	४५६
आपानासो विवस्वतो	८१	इन्दुर्हियान. सोतृभि	२२५	उत त्वामरुणं वय	३१६
आप्यायस्व मदिन्तम	१११७	इन्द्रो यथा तव स्तवो	३६५	उत न एना पवया	९०९
आ प्यायस्व समेतु ते	२३३, १११६	इन्द्रो यदद्रिभिः सुतः	१९१	उत नो गोमतीरिषो	४४१
आ मन्द्रमा वरेण्यमा	५३६	इन्द्रो व्यव्यमर्षसि	५७२	उत नो गोविदश्चवित्	३६६
आ मारुक्षत् पर्णमणिः	११८०	इन्द्रो समुद्रमीङ्क्ष्य	२५५	उत नो वाजसातये	१०७
आ मित्रावरुणा भग	५७	इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर	४५२	उत प्र पिण्य ऊध०	८२०
आ यं विशन्तीन्द्रवो	१२७९	इन्द्रमच्छ सुता इमे	९८६	उत व्रतानि सोम ते	११६२
आ यद् योनि हिरण्य०	४९७	इन्द्रस्ते सोम सुतस्य	१०४३	उत स्म राशिं परि	७८४
आयमगन् पर्णमणि	११७६	इन्द्रस्य सोम पवमान	६७३	उत स्वस्या अराग्या	६८८
आ ययोश्चिश्नत तना	३७९	इन्द्रस्य सोम राधसे	६१, ३८७	उताह नक्तमुत	१०१९
आ यस्तस्थौ भुवना०	७१२	इन्द्रस्य हार्दि सोम	१०४१	उतो सहस्रभर्गस	५०३
आ यो गोभिः सृज्यत	७१३	इन्द्राय त्वा वसुमते	११९७	उत् ते शुष्मास ईरते	३४१
आ योनिमरुणो रुद्रद्	२८५	इन्द्राय पवते मद	१०१६	उत् ते शुष्मासो अस्थू	३५६
आ यो विश्वानि वायो	१४८	इन्द्राय वृषणं मद	९९०	उदीची दिक् सोमो	१२४६
आ रयिमा सुचेतुनमा	५३७	इन्द्राय सोम पवसे	१८५	उन्मध्व ऊर्मिर्वनना	७६७
आ वच्यस्व महि	१२	इन्द्राय सोम परि	६८२	उप त्रितस्य पाण्यो	९६१
आ वच्यस्व सुदक्ष	१०३५	इन्द्राय सोम पातवे	९३, ९२४, १०४०	उप प्रिय पनिपन्नतं	५९६
आविवासन् परावतो	२८२	इन्द्राय सोममृत्विज.	१२४८	उपयामगृहीतोऽसि	१२०२, १२०३
आविशन् कलशं सुतो	४३६	इन्द्राय सोम सुषुत	७१६		
आशुरर्षं बृहन्मते	२७८				

उप शिक्षापतस्थुषो	१५७	एते मृष्टा भमर्था	१७६	एष पुरु धियायते	१२०
उपास्मै गायता नरः	८६	एते वाता हवोरव	१७४	एष प्र कोशे मधुमो	६७६
उपो मति पृच्यते	६११	एते विश्वानि वार्या	१६९	एष प्रत्नेन जन्मना	२९
उपो पु जातमन्तुरं	४००	एते सोमा अति	७९०	एष प्रत्नेन मन्मना	२९७
उभयतः पवमानस्य	७३३	एते सोमा अभि गव्या	७८०	एष प्रत्नेन वयसा	२०३
उभाभ्यां देव सवित	५९२	एते सोमा अभि प्रिय	५९	एष रुक्मिभिरीयते	१२५
उभे धावापृथिवी	७००	एते सोमा असृक्षत	४३९	एष वसूनि पिबन्ता	१२६
उभे सोमावचाकशन्	२३९	एते सोमा पवमानास	६१८	एष वाजी हितो नृभिः	२१२
उरुगव्युतिरभयानि	८०३	एते सोमास आशवा	१७३	एष विप्रैरभिष्टुतो	२६
उरुण्या णो अभिशस्ते.	१११५	एते सोमास इन्द्रवः	३२०	एष विश्ववित् पवते	९१०
उशिक्षं देव सोमाभः	१२०८	एता विश्वान्यर्थ आ	३९८	एष विश्वानि वार्या	२४
उस्मा वेद वसूनां	३७७	एन्द्रो पार्थिव रयि	२२३	एष वृषा कनिकदद्	२१५
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि	७२७	एन्द्रस्य कुक्षा पवते	६९३	एष वृषा वृषव्रत	४२८
ऊर्मिर्हस्ते पवित्र आ	४८८	एवा त इन्द्रो सुभ्र	६९०	एष शुष्म्यदाभ्य सोम	२१७
ऊशु पवस्व वृजिनस्य	८९९	एवा देव देवताते	८८३	एष शुष्म्यसिष्यदद्	२११
ऋत वदन्तृत्तुष्म	१०८६	एवा न इन्द्रो अभि	८७७	एष शृङ्गाणि दोधुव०	१२४
ऋतस्य गोपा न दभाय	६५५	एवा न. सोम परि	६०९, ८९२	एष सुवानः परि	७८२
ऋतस्य जिह्वा पवते	६६७	एवा पवस्व मदिरो	८७१	एष सूर्यमरोचयत्	२१६
ऋतस्य तन्तुर्वित्त.	६५६	एवा पुनान इन्द्रयुः	४०	एष सूर्येण हासते	२१०
ऋतूदरेण सख्या	११४४	एवा पुनानो अप	८११	एष सोमो अधि त्वचि	५६६
ऋधक् सोम स्वस्तये	५०७	एवा मृताय महे	१०४४	एष स्य ते पवत	९०२
ऋभुर्न रथं नव	१७१	एवा राजेव क्रतुमा	८०५	एष स्य ते मधुमो	७७९
ऋषिमना य ऋषिकृत्	८५०	एष उ स्य पुरुवतो	३०	एष स्य धारया सुतो	१०३०
ऋषिर्विप्रः पुरण्ता	७७८	एष उ स्य वृषा रथो	२७२	एष स्य परि पिश्यते	४३०
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमै	१०९५	एष इन्द्राय वायवे	२०७	एष स्य पीतये सुतो	२७७
एत उ रथे अवीवशन्	१७२	एष कविरभिष्टुत	२०६	एष स्य मघो रमो	२७६
एतं स्य हरितो दश	२७४	एष गव्युरक्षिकृदत्	२०९	एष स्य मानुषीव्रा	२७५
एत त्रितस्य योषणो	२७३	एष तुष्टो अभिष्टुतः	५८७	एष स्य सोम. पवते	७१४
एतमु रथं दश क्षिपो	१२८, ३९४	एष ते गायत्रो भाग	११९२	एष स्य सोमो मतिभि	८४७
एतमु रथं मदच्युतं	१०३६	एष दिव वि धावति	२७	एष हितो वि नीयते	१२३
एतं मृजन्ति मज्यं	१२७, ३२५	एष दिव व्यासरत्	२८	एषा ययौ परमा	७८३
एतानि सोम पवमानो	६८५	एष देव शुभायते	२१४	एह यातु वरुण	१२५६
एते असृग्रमाशवो	४५१	एष देवो भमर्था	२१	ऋकुभन् रूप वृषभस्य	१२०७
एते असृग्रमिन्द्रवस्तिरः	४१८	एष देवो रथयति	२५	ऋकुह. सोम्यो रस०	५७५
एते धामान्यार्या शुक्रा	४६१	एष देवो विपन्युभिः	२३	कनिकदत् कलशे	७२०
एते धावन्तीन्द्रव	१६६	एष देवो विपा कृतो	२२	कनिकदनु पन्था०	८८८
एते पूता विपश्चित	१७५, २५५	एष धिया यात्यण्डया	१२१	कनिकन्ति हरिरा	८२८
एते पृष्ठानि रोदसो०	१७७	एष नृभिर्वि नीयते	२०८	कवि मृजन्ति मज्यं	४६७
		एष पवित्रे अक्षरत्	२१३	कविर्वेधस्या पर्येषि	७०२
		एष पुनानो मधुमो	१०७४		

कारुहं ततो	१०८१	तं सखाय पुरोरुचं	९२६	तव त्य इन्दो अन्धसो	३४८
कुविद् वृषण्यन्तभ्यः	१५६	तं सानावधि जामयो	२०४	तव त्ये सोम पवमान	८१५
कृण्वन्तो वरिवो गवे	४२०	त सोतारो धनस्पृत	४३५	तव त्ये सोम शक्तिभिः	११६४
कृतानीदस्य कर्वा	३२७	तं हिन्वन्ति मदच्युत	३५९	तव द्रप्सा उदप्रुत	९९३
केतु कृण्वन् दिवस्परि	४८५	तक्षद् यदी मनसो	८७८	तव प्रत्नेभिरध्वभिः	३५२
क्रवा दक्षस्य रथमपो	१३०	तं गाथया पुराण्या	९३०	तव विश्वे सजोषसो	१४७
क्रवा शुक्रेभिरक्षभि	९६७	त गावो अभ्यनूषत	२०१	तव शुक्रासो अर्चयो	५४२
क्रवे दक्षाय नः कवे	९३९	तं गीर्भिर्वाचमीङ्क्षय	२५८	तवाह सोम रारण	१०१८
क्राणा शिशुर्महीनां	९६०	त गोभिर्वृषण रस	४६	तवेमाः प्रजा दिव्यस्य	७५५
क्रीलुर्मन्त्रो न महयुः	१६५	तन्तुं तन्वानमुत्तममु	१७८	तवेमे सप्त सिन्धवः	५४३
गन्धर्व इत्या पदमस्य	७०९	त ते सोतारो रस	१०५२	ता अभि सन्तमस्तृतं	७२
गयस्कानो अमीवहा	१११२	त त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे	४३४	तस्य ते वाजिनो वयं	५१६
गिरस्त इन्द ओजसा	१७	त त्वा देवेभ्यो मधु०	६९४	ताभ्यां विश्वस्य राजसि	५३९
गिरा जात इह स्तुत	४३२	तं त्वा धर्तारमोण्यो.	५१८	तिग्मायुधौ तिग्महेती	१२२६
गिरा यदी सवन्धव	११४	त त्वा नृगानि बिभ्रत	३३१	तिस्त्रो देवीर्महि नः	११८७
गोजिज्ञः सोमो रथ०	६८४	तं त्वा मदाय घृण्वय	१८	तिस्त्रो वाच ईरयति	८९०
गोमज्ञ इन्दो अश्ववत्	९८३	त त्वा विप्रा वचोविदः	५००	तिस्त्रो वाच उदीरते	२४५
गोमज्ञः सोम वीरवद्	३०१	त त्वा सहस्रचक्षस	३८५	तुभ्यं वाता अभिप्रियः	२३२
गोवित् पवस्व वसु०	७६६	त त्वा सुतेष्वाभुवो	५३४	तुभ्यं गावो घृतं पयो	२३४
गोषा इन्दो नृषा असि	२०	त त्वा हस्तिनो मधु०	६९५	तुभ्येमा भुवना कवे	४४४
ग्रन्थि न वि ण्य ग्रथितं	८७४	तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः	२०५	ते अस्य सन्तु केतवो	६२२
ग्राह्या तुष्णो अभिष्टुतः	५८६	तं दुरोषमभी नरः	९४६	ते नः पूर्वास षपरास	६७८
घृतं पवस्व धारया	३३८	तन्तु सत्य पवमान	८१६	ते नः सहस्रिणं रथि	१०८
चक्रिर्दिवः पवते	६८०	त नो विश्वा अवस्युयो	३०३	ते नो वृष्टि दिवस्परि	५३१
चतस्र इ घृतदुहः	७९७	तपोपवित्र विततं	७०७	ते प्रत्नास व्युष्टिपु	९२५
चमूपच्छयेनः शकुनो	८५१	तममृक्षन्त वाजिनं	२००	ते विश्वा दाशुषे वसु	४८३
चरुर्न यस्तमीङ्क्षयेन्दो	३५३	तमस्य मर्जयामसि	९२९	ते सुतासो मदिन्तमाः	५८५
जग्निर्वृत्रममित्रिय	४०७	तमह्यन् भुरिजोर्धिया	२०३	त्रातारो देवा अधि	११४८
जज्ञान सप्त मातरो	९६३	तमिद् वर्धन्तु नो गिरो	४०१	त्रिभिष्ट्वं देव सवितः	५९३
जनयन् रोजना दिवां	२९६	तमीं हिन्वन्त्यग्नवो	८	त्रिरस्मै सप्त धेनवो	६२०
जरतीभिरोषधीभिः	१०८०	तमीमण्वीः समर्थ	७	त्रीणि त्रितस्य धारया	९६२
जायेव पर्यावधि	७०४	तमी मृजन्त्यायवो	४६४	त्वं राजेव सुव्रतो	१६३
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः	१११	तमुक्षमाणमभ्यये	९३१	त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	१४६
जुष्टो मदाय देवतात	८७५	तमु त्वा वाजिनं नरो	१४३	त्वं समुद्रिया अपो	४४३
जुष्टी न इन्दो सुपथा	८७२	त मर्मृजान महिषं	८३१	त्वं समुद्रो असि	७५६
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	७३७	तया पवस्व धारया	३१९, ३३७	त्वं सुतो नृमादनो	५६९
तं वः सखायो मदाय	९८०	तरत् स मन्दी धावति	३७६	त्वं सुष्वाणो अद्रिभिः	५७०
तं वेधां मेधयाह्यन्	२०२	तरत् समुद्रं पवमान	१०१४	त्वं सूर्ये न आ भज	३५
		तव क्रवा तवोतिभिः	३६	त्वं सोम क्रतुभिः	११०२

त्वं सोम तनूकृद्भयो	११५२	द्विविद्युतस्या रुचा	५०५	नाभा पृथिव्या धरुणो	६४५
त्वं सोम नृमादन.	१९०	दिवः पीयूषं पूष्यं	१०७१	नित्यमोत्रो वनस्पति	१०१
त्वं सोम पणिभ्य आ	१७९	दिवः पीयूषमुत्तम	३४७	निरिणानो वि धावति	११६
त्वं सोम पवमानो	३८२	दिवस्पृथिव्या अधि	२३१	नि शत्रोः सोम वृष्ण्य	१५८
त्वं सोम पितृभि	११४७	दिवि ते नाभा परमो	६८९	नि शुष्ममिन्द्रवपा	३५४
त्वं सोम प्र चिकितो	११०१	दिवो धर्तासि शुक्रः	१०४७	नून पुनानोऽविभिः	१००१
त्वं सोम महे भग	११०७	दिवो न सर्गा अमरसृग्	८८६	नून नव्यसे नवीयसे	७५
त्वं सोम विपाश्चित	१३६, ५०२	दिवो न सानु पियुषी	१३५	नून नस्त्वं रथिगे देव	९०४
त्वं सोम सूर ण्य	५५५	दिवो न सानु स्तनय०	७३६	नून नो रथिमुप	८२२
त्वं सोमासि धारयुः	५६८	दिवो नाके मधुजिह्वा	७२५	नून नो रथि महामिन्द्रो	२८६
त्वं सोमासि सत्यनिः	११०५	दिवो नाभा विचक्षणो	९८	नृचक्ष्म त्वा वय	६७
त्वं हि नस्तन्वः सोम	११४३	दिवो यः स्कम्भो धरुणः	६५८	नृधृतो अद्रिपुनो	६४२
त्वं हि सोम वर्धयन्	३४९	दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि	८८९	नृबाहुभ्यां चोदितो	६४३
त्वं ह्यङ्ग दैव्या	१०२८	दिव्यः सदन चक्र	१२२०	नृभिर्यमानो जजान	१०४२
त्वं च सोम नो वशो	११०६	दुहान ऊर्ध्वदिव्य	१००४	नृभिर्यमानो हर्यते	१०१५
त्वं चित्ती तव दक्षैः	११५३	दुहानः प्रत्नमित् पय.	२९९	परा व्यक्तो अरुणो	६३६
त्वं त्यत् पणीनां	१०७७	देवाव्यो नः परिपिच्य	८८०	परि कोश मधुश्चुत	९७०
त्वं द्यां च महीजत	९४३	देवीराप ण्य वो	१२०५	परि णः शर्मयन्त्या	२९५
त्वं धियं मनोयुज	९३७	देवेन नो मनसा देव	११२३	परि णेता मतीना	९७१
त्वं न. सोम विश्वतो	११०८, ११४९,	देवेभ्यस्त्वा मदाय क	६३	परि णो अश्वमश्वविद्	३९०
	११६६	देवेभ्यस्त्वा नृथा	१०६२	परि णो देववीतये	३६३
त्वं न. सोम सुक्रतुः	११६७	देवो देवाय धारया	४७	परि णो याह्यमयुः	४९५
त्वं नृचक्षा असि	७६५	द्यौश्च म इद पृथिवी	१२६१	परि ते जिग्युषो यथा	९३८
त्वं नो वृत्रहन्तमे	११६८	द्राक्षश्चस्कन्द प्रथमो	१२३१	परि त्य हर्यत हरि	९२१
त्वमिन्द्रो परि स्वव	४२६	द्रापि वसानो यजतो	७४१	परि दश इन्द्रस्य	१२६०
त्वमिन्द्राय विष्णवे	३७१	द्विता व्यूर्ध्वज्जमृतस्य	८२४	परि दिव्यानि मर्म्शद्	१२०
त्वमिमा ओषधीः सोम	११२२	द्विर्यं पञ्च स्वयशम	९२०	परि दैवीरनु स्वधा	९७२
त्वं पवित्रे रजभो	७५७	धर्ता दिवः पवते	६७१	परि शुक्ष सहसः	६३३
त्वया वय पवमानेन	९१४	धिय पूषा जिवन्तु	१२२२	परि शुक्ष सनद्रथिः	३५१
त्वया वीरेण वीरवो	२५६	धीभिर्हिन्वान्ति वाजिन	९९६	परि धामानि यानि ते	५४०
त्वया हि नः पितरः	८४३	ध्वस्त्रयो. पुरुषन्त्योरा	३७८	परि प्र धन्वेन्द्राय	१०४२
त्वां यज्ञैरवीवृधन्	३९	न त्वा शत चन हुतो	४१४	परि प्रथमन्तं वय	६०७
त्वां रिहन्ति मातरो	९४१	नप्नीभिर्यो विवस्वत	११७	परि प्र सोम ते रसो	५८२
त्वां सोम पवमान	७५१	नमसेदुप सीदत	९१	परि प्रागिष्यदत् कवि	११३
त्वामच्छा चरामसि	५	नमो दिवे बृहते	१२१६	परि प्रियः कलशं	८४१
त्वां सृजन्ति दश योषण.	६०६	न वा उ सोमो वृजिन	११३४	परि प्रिया दिव कवि	८६
त्वे सोम प्रथमा	१०७०	नाके सुपर्णमुप०	७२६	परि यत् कविः काव्या	८२५
त्वेषं रूप कृणुते	६३७	नानान वा उ नो धियो	१०७९	परि यत् काव्या कविः	५३
त्वोतासस्तवावसा	४११	नाभा नाभि न आ दवे	८४		

परि यो रोदता उभे	१५०	पवमानस्य ते कवे	५४७	पवस्वेन्द्रो पवमानो	८५३
परि वाजे न वाजयु	४६६	पवमानस्य ते रसो	४०४	पवस्वेन्द्रो वृषा सुतः	४१५
परि पाराण्यव्यया	९६९	पवमानस्य ते वयं	३९१	पवित्र ते वितत	७०६
परि विश्वानि चेतसा	१६१	पवमानस्य विश्ववित्	४८४	पवित्रवन्तः परि	६५०
परिष्कृताम् इन्द्रो	३२१	पवमान स्वर्विदो	३८३	पवित्रेभिः पवमानो	८८०
परिष्कृण्वन्निकृन्तं	२७९	पवमाना असृक्षत	४७२, १०२४	पवीतारः पुनीतन	३४
परि ण्य सुवानो अक्षा	९१७	पवमाना दिवस्परि	४७४	पशु नः सोम रक्षसि	११६५
परि ण्य सुवानो अव्यय	९१६	पवमानां आशयः	४७३	पाता नो द्यावापृथिवी	१२५०
परि सद्येय पशु	८१७	पवमानां इन्द्रव	५७४	पावमानो स्वस्त्ययनीः	१२११, १२१४
परि ससिर्न वाजयु	९७३	पवमानो अजीजनद्	४०३	पावमानीर्दधन्तु न	१२१२
परि सुवानश्चक्षसे	१००२	पवमानो अति स्त्रियो	५५९	पावमानीर्यो अध्ये	५९९
परि सुवानां इन्द्रो	८०	पवमानो अभि स्पृधो	५४	पितुर्मातुरभ्या ये	६५२
परि सुवानो गिरिष्ठा	१४५	पवमानो अभ्यर्षा	७०३	पिबन्त्यस्य विश्वे	१०५६
परि सुवानो हरि	८१२	पवमानो असिष्यद्	३४०	पुनन्तु मां देवजनाः	५९४
परि सोम ऋत	३६८	पवमानो रथीतम	५६३	पुनर्नो असु पृथिवी	१२३७
परि सोम प्र वन्वा	६७०	पवमानो व्यश्ववद्	५६४	पुनाता दक्षमाधन	९७६
परि हि ण्मा पुरुहूतो	७८१	पवस्व गोजिदश्वजिद्	३८०	पुनाति ते परिस्त्रुत	६
परीतो वायवे सुत	४५७	पवस्व जनयन्निषो	५४१	पुनान इन्द्रवा भर	२८९, ९३६
परीतो पिबता सुत	१०००	पवस्व दक्षसाधनो	१९४	पुनान इन्द्रवेपा	५०४
पर्जन्यः पिता महिष्य	७०३	पवस्व देवमादनो	७११	पुनानः कलशेष्वा	६४
पर्जन्यवृद्ध महिष	१०८५	पवस्व देववीतय	९९२	पुनानः सोम जागृविः	१००५
पर्णोऽग्नि तनूपातः	११८३	पवस्व देववीरति	११	पुनानः सोम धारया	४७५, १००३
पर्यु पु प्र धन्व	१०६४	पवस्व देवायुषग	४६९	पुनानश्चमू जनयन्	१०१७
पवते हर्यतो हरि	५३२, ९९८	पवस्व मधुमत्तम	१०२६	पुनानास्त्रमूपदो	६०
पवन्ते वाजमानयं	१०६	पवस्व वाचो अग्रिय	४४३	पुनानो अक्रमीदभि	२८४
पवमान ऋत कवि	४४७	पवस्व वाजसातमः	९४०	पुनानो देववीतय	४९२
पवमान ऋत वृहच्छुक्र	५६१	पवस्व वाजसातये	३०७, १०२२	पुनानो याति हर्यत	३०४
पवमान सुतो नृभि	४३३	पवस्व विश्वचर्षणे	५३८	पुनानो रूपे अव्यये	१३४
पवमान सो अद्य न	५८९	पवस्व वृत्रहन्तमो	१९२	पुनानो वरिवस्कृधि	४९१
पवमान विया हितो	१९५	पवस्व वृष्टिमा सु नो	३३६	पुरः सद्य इत्याधिये	३८९
पवमान नि तोशसे	४७०	पवस्व सोम ऋत्वे	१०५१	पुराजिती वो अन्धसः	९४४
पवमानमवश्यवां	१०५	पवस्व सोम ऋतुविज्ञ	७७५	पूर्वापर चरतो	१२३८
पवमान महि श्रप	७६, ९४२	पवस्व सोम दिव्येषु	७४९	पर्वामनु प्रदिश याति	१०७८
पवमान सद्यर्गो वि	७६१	पवस्व सोम देववीतये	६२८	प्र कविर्देवर्वातये	१५९
पवमान रसस्त्व	४०५	पवस्व सोम शुक्लो	१०४८	प्र काव्यमुशनेव	८६३
पवमान रुचारुचा	५०९	पवस्व सोम मधुमाँ	८४५	प्र कृष्टिहेव शूष	६३१
पवमान विद्या रयिम्	३०५, ४५८	पवस्व सोम मन्दयन्	५८३	प्र गायताभ्यर्चाम	८६०
पवमान सुवीर्यं	९४	पवस्व सोम महान्समुद्रः	१०४५	प्र गायत्रेण गायत	३८४
पवमानस्य जङ्घनो	५६२	पवस्वाद्भ्यो अदाभ्य	३८१	प्रजा ह तिस्रो अत्ता	११५९

प्र ण इन्द्रो महे तन	३०८	प्र सेनानी शूरो अग्ने	८३३	मन्द्रया सोम धारया	४१
प्र ण इन्द्रो महे रण	५५०	प्र सोम देववीतये	१०११	मन्द्रस्य रूप विविदुः	६०५
प्र णो धन्वन्तिवन्दवो	६८७	प्र सोम मधुमत्तमो	४६३	मयि क्षत्र पर्णमणे	११७७
प्र त आशवः पवमान	७२८	प्र सोम याहि धारया	५४४	मर्माणि ते वर्मणा	१२२८
प्र त आश्विनी. पवमान	७३१	प्र सोम याहीन्द्रस्य	१०५९	मर्त्यजानास आयवां	४९४
प्र तु द्रव परि कोश	७७६	प्र सोमस्य पत्रमानस्य	६९६	मर्यो न शुभस्तन्व	८५२
प्र ते दिवो न वृष्टयो	४४५	प्र सोमाय व्यश्ववत्	५१४	महत् तत् सोमो महिष	८९७
प्र ते धारा अत्यण्वानि	७७४	प्र सोमास. रथाय	२३०	महो अति सोम ज्येष्ठ	५५३
प्र ते धारा असश्चतो	३७२	प्र सोमासो अधन्विषुः	१८७	महान्त त्वा मही	१४
प्र ते धारा मधुमती	८८७	प्र सोमासो मदच्युतः	२३६	महि पर सुकृत	६५९
प्र ते मदासो मदिरास	७२९	प्र सोमासो विपश्चितो	२४२	महीम अस्य वृषनाम	९१०
प्र ते सोतार ओण्यो	१२९	प्र सोमो अति धारया	२२७	महो नो राय आ भर	४१३
प्र तान्मानादध्या ये	६५३	प्र स्वानासो रथा इव	७७	मा न सोमपरिवाधो	१०९९
प्र त्वा नमोभिरिन्द्रवः	१३३	प्र हसासस्तृपल	८६४	मा न. सोम स वीत्रिजो	११५७
प्र दानुदो दिव्यो	८७९	प्र हिन्वानास इन्द्रवो	४९३	मा मेमां सविक्रया	११९९
प्र देवमच्छा मधुमन्त	६००	प्र हिन्वानो जनिता	८००	मित्रो न एहि सुमित्रध	११९३
प्र धन्वा सोम जागृवि.	९८९	प्रागपागुदगधराक्	१२००	मिमाति वह्निराश	४९६
प्र धारा अस्य शुष्मिणो	२२४	प्रातरग्नि प्रातरिन्द्र	१२२९	मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	६२
प्र धारा मध्वो अग्नियो	५१	प्रावीविपट्वाच जर्भि	८३९	मृजन्ति त्वा समग्रवो	५४६
प्र निम्नेनेव सिन्धवो	१३७	प्रास्य धारा अक्षरन्	२१८	मृजानो वारे पवमानो	१०२१
प्र पवमान धन्वासि	१८९	प्रास्य धारा बृहती	८५४	मृज्यमान सुदस्य	१०२०
प्र पुनानस्य चेतसा	१३२	प्रो अयासीदिन्द्रिरिन्द्रस्य	७४३	मो पु णः सोम मृत्यवे	१२३६
प्र पुनानाय वेधसे	९६८	प्रो स्य वह्निः पथ्या०	७९३	य आर्जिकेषु कृतसु	५३०
प्र प्यादस्व प्र स्यन्दस्व	५९१	सुभवे नु स्वतवसे	८०	य इन्द्रो पवमान	१०९४
प्रप्र क्षयाय पन्थसे	६९	विभर्ति चार्विन्द्रस्य	१०५५	य इमं रादभी मर्ता	१४९
प्र यज्ञो वाचो अग्निर्वा	५२	ब्रह्मा देवानां पदवी.	८३८	य उग्रभ्रश्रिजो जीया	५५४
प्र ये गावो न भूर्णय	२९०	ब्राह्मणासः पितरः	१२२७	य उत्तरतो जुहति	११८८
प्र राजा वाच जनय०	६८१	भद्र नो अपि वातय	११६०	य उत्त्रिया अप्या	१०३१
प्र रेभ एत्यति	७५८	भद्रा वस्त्रा समन्या	८५८	य ओजिष्ठस्तमा भर	९५२
प्र वाचमिन्दुरिष्यति	१००	भुवत् प्रितस्य मज्यो	२५१	यः पात्रमानीरधेति	५९८
प्र वाजमिन्दुरिष्यति	२५७	मघोन आ पवस्व नो	६५	य. सोमः कलशेपो	९९
प्र वृण्वन्तो अभियुजः	१६७	मती जुष्टो धिया हित	३०९	य. सोम सख्ये तव	१११४
प्र वो धियो मन्द्रयुवो	७४४	मत्सि वायुमिष्टं	८९८	यज्ञस्य केतु. पवते	७३४
प्र शक्रासो वयोजुवो	५३३	मत्सि सोम वरुण	८०४	यत् ते पवित्रमर्चिदग्ने	५९१
प्रसवे त उदीरते	३४२	मदच्युत् क्षेति सादने	९७	यत् ते पवित्रमर्चिदग्ने	५९०
प्र सुन्वानस्यान्धलो	९५६	मधुपृष्ठ धारमया	७९६	यत् ते राजजङ्घन	१०९७
प्र सुमेधा गातुविद्	८१४	मधोर्धारामनु क्षर	१४४	यत् ते सोम दिवि	११९८
प्र सुवान इन्द्रुरक्षाः	५६५	मध्व. सूद पवस्व	९००	यत् त्वा देव प्रपिबन्ति	११७५
प्र सुवानो अक्षा	१०५७	मर्ताधिभि. पवते	७४७	यत्र कामा निकामाश्च	१०९०
प्र सुवानो धारया	२४८				

यत्र ज्योतिरजस्र	१०८९	ये राजानो राजकृतः	११८२	विश्वान्यन्यो भुवना	१२२१
यत्र ब्रह्मा पवमान	१०८८	ये सोमासः परावति	५२९	विश्वा रूपाण्याविशन्	१९७
यत्र राजा वैवस्वतो	१०९०	यो अत्य इव मृज्यते	३०२	विश्वा वसूनि संजयन्	२२१
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च	१०९३	यो अद्य सेन्यो वधो	१२५९	विश्वा सोम पवमान	२८७
यत्रानुकाम चरण	१०९१	यो जिनाति न जीयते	३६७	विश्वो यस्य व्रते जनो	२५९
यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	१५२	यो धारया पावकया	९४५	विष्टम्भो दिवो धरुणः	७९८
यत् सोमा वाजमर्पति	३६९	यो न इन्द्रु पितरो	११४६	वीती जनस्य दिव्यस्य	८०७
यथापवया मनवे	८४४	यो नः सोम सुशसिनो	११८५	वृथा क्रीळन्त इन्द्रवः	१६८
यथा पूरेभ्य शतमा	७०५	यो नः सोमाभिदासति	११८६	वृषण धीभिरप्सुर	४६८
यदग्निः परिषिच्यसे	५१३	यो वः शुष्मो हृदयेषु	१२५७	वृषाण वृषभिर्यत	२५०
यदन्ति यच्च दूरके	५८८	रक्षा सु नो भरुषः	२२२	वृषा पवस्व धारया	५१७
य एषा वाजिजघ्न्या	६९२	रक्षोहा विश्वचर्पणि.	२	वृषा पुनान आयुपु	१५४
यं निदधुर्वनस्पतौ	११७८	रथि नश्चित्रमश्विनम्	४०	वृषा मतीना पवते	७४६
यमन्यमिव वाजिन	६५	रस ते मित्रो अर्यमा	५०१	वृषा वि जज्ञे जनय०	१०३७
यमी गर्भमृतावृधो	९६५	रसाय. पयसा	८७०	वृषा वृष्णे रोहव०	८०८
यवयव नो अन्धमा	३६४	राजानो न प्रशस्तिभिः	७९	वृषा शोणो अभि	८६९
यशा इन्द्रो यशा अग्नि	१२५४	राजा मेधाभिरियते	५२३	वृषा सोम शुर्मो असि	४७८
यस्ते द्रप्स स्फुन्दति	१२३२	राजा समुद्र नद्यो	७३५	वृषा ह्यसि भानुना	५११
यस्ते द्रप्स. स्फुन्नो	१२३३	राजा सिन्धूनामवसिष्ट	७९४	वृषेव यूथा परि	६७५
यस्ते मदो वरेण्य	४०६	राजा सिन्धूनां पवते	७६०	वृष्टि दिव परि स्रव	६६
यस्य ते ह्युमनः	५६७	राज्ञो नु ते वरुणस्य	७९७, ११०३	वृष्टि दिवः शतधार	८४६
यस्य ते पीत्वा वृषभो	१०२७	रायः समुद्राश्चतुरो	२४७	वृष्टि नो अर्ष दिव्यां	८७३
यस्य ते मद्य रस	५२२	रास्वेयत् सोमा भूयो	११९१	वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो	४७९
यस्य न इन्द्र. पिबाद्	१०३९	रुजा ट्ठहा चिद्	८०९	व्रेशीनां त्वा पत्नज्ञा०	११०६
यस्य वर्णं मधुश्चुत	५१५	रुवति भीमो वृषभ	६२६	ज्ञात धारा देवजाता	८८५
या ते धामानि दिवि	११०४	वृन्वज्जवातो अभि	७९०	शत न इन्द्र ऊतिभिः	३५५
या ते धामानि हविषा	१११९	वय ते अस्य वृत्रहन्	९१९	श ते अभि सहाग्नि.	१२४२
या ते भीमान्यायुधा	४१७	वरिवोधातमो भव	३	श नो भव हृद् आ	११३८
यास्ते धारा मधुश्चुतो	४२४	वाचो जन्तुः कवीनां	५८०	शर्यणावति सोम	१०८३
यास्ते प्रजा अमृतस्य	११००	वायुर्न यो नियुत्वो	७८७	शिशुं जज्ञान हरिं	१०५३
युव हि स्य स्वर्पती	१५३	वावृधानाय तूर्वये	२९८	शिशुं जज्ञान हर्यत	८४९
ये ते पवित्रमूर्मयो	३९२	वाश्वा अर्पन्तान्दवो	११०	शिशुर्न जातोऽत्र चक्रद्	६५७
ये धीवानां रथकारा	११८१	विघ्नतो दुरिता पुरु	४१९	शुक्र पवस्व देवेभ्यः	१०४६
येन देवा पवित्रेणा	१२१३	विद्द् यत् पूर्य नष्ट०	११५५	शुचिः पावक उच्यते	१९३
येन साभ साहन्त्या	१२५२	विपश्चिते पवमानाय	७७१	शुचि पुनानस्तन्त्रं	६२७
येन सोमादिति पथा	१२५१	वि यो ममे यम्या	६०२	शुभ्रमन्धो देववातं	४२२
येना नवरयो दध्यङ्	१०२९	विश्वसा इत् स्वर्दश	३३४	शुभ्रमान क्रतायुभिः	२६३
येनावपत् सविता	१२५५	विश्वस्य राजा पवते	६७४	शुभ्रमाना क्रतायुभिः	४८२
ये पाकशम विहरन्त	११३२	विश्वा धामानि विश्वचक्ष	७३२	शुष्मी शर्धो न मारुत	७९१

शूरग्राम सर्ववीरः	८०२	स पवस्व धनजय	३२४	समेनमहता इमा	२५३
शूरो न धत्त आयुधा	६७२	स पवस्व मदाय क	३१४	सम्यक् सम्यञ्चो महिषा	६४९
शृण्वे वृष्टेरिव स्वन.	२९२	स पवस्व मदिन्तम	३४५	सं मातृभिर्न शिशु	८१९
श्येनो न योनि सदन	६३५	स पवस्व य आविथ	४०९	समिष्टा अरुणो भव	४०८
श्रिये जात श्रिय आ	८२६	स पवस्व विवर्षण	२९४	स रतत उरुगायस्य	८६५
श्वेत रूप कृणुते	६६३	स पवस्व सहमान	१०७५	स रोरुवदभि पूर्वा	६०१
स ईरथो न भुरि	७८६	स पवित्र विचक्षणो	२६७	स वर्धिता वर्धन.	८९५
सं वत्स इव मातृभिः	९८१	स पुनान उप सूर	८९४	स वह्निरासु दुष्टरां	१६४
सवृक्षधृणुमुक्थ	३३२	स पुनानो मदिन्तम	९३२	स वाह्न सोम जागृति	२६१
सखाय आ नि पीदत	९७४	स पूर्व. पवते य	६७७	स वां यज्ञपु मानवी	९२३
स त् पवस्व परि	६४६, १०२३	स पूर्वो वसुविज्जायमानो	८४२	स वाजी रोचना दिव	२६८
सत्यमुग्रस्य बृहत	१०८७	सप्त दिशो नानासूया.	१०९६	स वाज्यक्षा सहस्रेता	१०५८
सत्येनोत्तमिता भूमि.	११७१	सप्त स्वसारो अग्नि	७६३	स वायुमिन्द्रमश्विना	५६
स त्रितस्याधि सानवि	२६९	सप्त मृजन्त वधमो	२१९	स विश्वा दाशुषं वसु	२६४
स देवः कप्रिनेपितो	२७१	स प्रतवन्नव्यसे	८१०	स वीरो दक्षसाधना	९५८
स न इन्द्राय यज्यत्रे	३९९	स मन्दना उदियति	७६८	स वृक्षहा वृषा सुता	२७०
स न ऊर्जे व्यययय	३३९	स भिक्षमाणो अमृतस्य	६२१	स शुष्मी कलशेष्वा	१५१
स नः पवस्व वाजयु	३११	स मत्सर. पृत्सु	८४०	स सप्त धीतिर्मिदित्ता	७१
स न पवस्व शं गवे	८८	स ममृजान आयुभि	३७४, ५६०	स सुत. पीतये वृषा	२६६
स नः पुनान आ भर	२८८, ३९३	स ममृजान इन्द्रियाय	६२४	स सुन्वे यो वसूना	१०३८
सना च सोम जेपि	३१	समस्य हरि हरयो	८३४	स सूनुर्मातरा शुधि	७०
सना ज्योतिः सना	३२	स मातरा न ददशान	६२५	स सूर्यस्य रश्मिभि.	७५९
सना दक्षमुत क्रतु	३३	स मातरा विचरन्	६०३	सहस्रणीय. शतधारा	७१९
सनेमि कृध्यस्मदा	९७९	स मामृजे तिमो	१०१०	सहस्रधार पवते	९४९
सनेमि त्वमस्मदो	९८५	समिन्ट्रेणात वायुना	३९५	सहस्रवार वृषभ	१०३३
स नो अद्य वसुत्तयं	३१३	समीचीना अनृत	२८३	सहस्रवारऽत्र ता	६६२
स नो अर्ष पवित्र आ	४८९	समीचीनाम आसते	८३	सहस्रधारऽव ते	६५१
स नो अर्षाभि दृत्य	३१५	समीचीने अभि त्मना	९६६	सहस्रधार वितते	६५४
स नो ज्योतीषि पूर्व	२६२	समी रथ न भुरिजो	६३४	सहस्रोति शतामवां	४३१
स नो देव देवताते	८३५	समी वत्स न मातृभि	९७५	स हि त्व देव शश्वत	९१८
स नो देवेभि पवमान	८२१	समी सग्रायो अस्वरन्	३१८	स हि ण्मा जरितृभ्यः	१६०
स नो भगाय वायवे	३१२, ३९६	समु त्वा धीभिस्वरन्	५४५	साक वदन्ति बहवो	६४०
स नो मदानी पत	९७८	समुद्रिया अप्परसो	६८३	साकमुक्षो मर्जयन्त	८१८
स नो विश्वा दिवां	३७५	समुद्रे ते हृदयमास्वन्त	१२०४, १२१०	सिन्धोरिव प्रवणे	६१६
स नो हरीणां पत	९८४	समुद्रा अप्सु मामृजे	१५	सिपासत् रयीणां	३३०
सं ते पयांसि समु	१११८	समु प्र यन्ति धीतय.	११६३	मिह नसन्त मध्वो	७९५
सं श्री पवित्रा वितता	९११	समु प्रिया अनृत	९५१	सुत इन्द्रा पवित्र आ	९३४
सं दक्षेण मनसा	६०४	समु प्रियो मृज्यते	८५९	सुत (ता) इन्द्राय वायवे	२४४, २४९
स देवै. शोभते वृषा	१९६	स मृज्यते सुकर्मभि	९३३	सुत इन्द्राय विष्णवे	४५०
		स मृज्यमाणो दशतिः	६२३	सुत एति परि (ना	२८०

सुता अनु स्वमा रजो	४५३	सोम यास्ते मयोभुव	११०९	सोमो वीरुधामधिपतिः	११८४
सुता इन्द्राय वज्रिणे	४६२	सोम राजन् मृळया	११४२	स्तोत्रे राये हरिरर्षा	८६२
सुतासो मधुमत्तमाः	९४७	सोम राजन् विश्वास्त्वं	११९६	स्रक्वे द्रप्सस्य धमत.	६४८
सुनोता मधुमत्तमं	२२९	सोम रारन्धि नो हृदि	१११३	स्वयं कविर्विधर्तरि	३२९
सुविज्ञानं चिकितुषे	११३३	सोमस्य धारा पवते	६९१	स्वादिष्टया मदिष्टया	१
सुवितस्य मनामहे	२९१	सोमस्य पर्णः सह	११७९	स्वादु पवस्व दिव्याय	७२१
सुवीरासो वयं धना	४१०	सोमस्य राज्ञो वरुणस्य	१२३९	स्वादुष्किलायं मधुमां	११२७
सुशेवो नो मृळयाकु	११५६	सोमा असृग्रमाश्वो	१८०	स्वादोरभाक्षि वयसः	११३५
सुषहा सोम तानि ते	२२०	सोमा असृग्रमिन्दव	९५	स्वायुधः पवते देव	७७७
सुष्वाणासो व्यद्विभिः	९५४	सोमा पवन्त इन्द्रवो	९५३	स्वायुध सोतृभिः	८४८
सूर्यस्येव रश्मयो	६१५	सोमापूषणा जनना	१२१७	स्वायुधस्य ते सतो	२३५
सो अग्ने अह्ना हरिः	७६९	सोमापूषणा रजसो	१२१९	हरि सृजान. पथ्या	८२९
सो अर्षेन्द्राय पीतये	४२५	सोमारुद्रा धारयेथा०	१२२३	हरि सृजन्त्यरुधो न	६३९
सो अस्य विशे महि	७४२	सोमारुद्रा युवमेतानि	१२२५	हविर्हविर्मां महि सश	७१०
सोम उ षुवाण.	१००७	सोमारुद्रा वि बृहत	१२२४	हस्तच्युतेभिरद्विभिः	९०
सोमः पवते जनिता	८३७	सोमेनादित्या बलिनः	११७२	हितो न सप्तिरभि	६२९
सोमः पुनान ऊर्मिणा	९९५	सोमो अर्षति धर्माभि	१८४	हिन्वन्ति सुरमुख्यः	५०८, ५७६
सोमः पुनानो अर्षति	१०४	सोमो अस्मभ्य द्विपदे	११२५	हिन्वानासो रथा इव	७८
सोमः पुनानो अस्थये	१०७३	सोमो जिगाति गातुविद्	११२४	हिन्वानो वाचमिष्यासि	४८६
सोमः सुतो धारयास्यो	९०१	सोमो देवो न सूर्यो	४६०	हिन्वानो देतृभिर्यत	५०६
सोम गीर्भिष्टवा वयं	११११	सोमो धेनु सोमो	११२०	हुवे सोमं सवितारं	१२४५
सोम गावो धेनवो	८९१	सोमो मीद्वान् पवते	१००६	हृदिस्पृशस्त आसते	११६१
सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं	१२४३	सोमो युनक्तु बहुधा	११८९	हृदे त्वा मनसे त्वा	११९५
सोमं मन्यते पपिवान्	११७३	सोमो राजामृतं सुत	१२०९		

दैवत-संहितान्तर्गत-सोमदेवताया गुणबोधक-पदानां सूची।

[सोमदेवतायाः 'सोमः' इति 'सोमासः' इति च एकानेकवचनत्वेन निर्देशकारणानुबोधकपदानामपि तथाविधत्वमेव ।]
(अस्यां सूच्यां १०९७ पर्यन्त मन्त्राः ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्था विद्यन्ते । तेषां मण्डलक्रमाङ्क '९' इत्यत्र न निर्दिष्टः ।)

अंशुः ६२,४; ४२१ । ६८,४,६; ६०३,६०५ । ७२,६;
६४४ । ७४,२,५; ६५८,६६१ । ८६,४६; ७७३ ।
९१,३; ८०८ । ९२,१; ८१२ । ९५,४, ८३१ ।
वा० य० ५,७, ११९४
अक्त गोमिः ९६,२२, ८५४
अक्तुभिः गोमि अञ्जानः ५०,५, ३४५
अक्रान् ६९,३; ६१२
अक्षितः २६,२; २०१ । ७८,३; ६८३ । ७२,६, ६४४
अगृभीतः ८,६९,१; ११५०
अग्नेः जनिता ९६,५; ८३७
अग्रिय ७,३; ५२
अग्रियः गोषु ८६,१२; ७३९
अग्नेगः ८६,४५; ७७२
अघदांस २४,७, १९३ । २८,६, २१७ । ६२,१९, ४०६
अगिरस्तमः १०७,६; १००५
अचोदसः ७९,१; ६८६
अजाश्वः [पूषा] ६७,१०; ५७७
अजिरशोचिः ६६,२५, ५६२
अज्यमान ९७,३५, ८९१
अञ्जानः गोमि १०३,२; ९६९
अञ्जानः गोमि अक्तुभिः ५०,५; ३४५
अस्यः-स्यामः-स्याः १३,६; १०९, ४६, १, ३२० । ६६, २३; ५६०
अस्यवि १०६,११; ९९६
अस्युभिः १७,३; १३९
अदृक् ७७,५; ६८० । ८५,३; ७१८ । ९७,१९; ८७५ ।
१०७,२, १००१
अदाभ्यः ३,२, २२ । २६,४; २०३ । ७५,२; ६६७ ।
८५,६; ७२१ । १०३,४; ९७१ । १०,२५, ७, ११६६
अदाभ्यासः अस्य केतवः ७०,३; ६२२
अदितिः ८,४८, २, ११३६
अदसक्रतुः ८,७९, ७, ११५६

अङ्गि मृजान १०९,१७; १०५८
अङ्गुत २०,५, १६३ । ८५,४; ७१९
अङ्गिदुग्धः ९७,११; ८६७
अङ्गिवः ५३,१, ३५६
अङ्गिपुत ७२,४, ६४२
अङ्गिसहत ९८,६, ९२०
अङ्गौ दुदुहान ९६,१०, ८४२
अधिपतिः अथ० ३,२७,४, १२४६
अधिपतिः वीरुधाम् अथ० ५,२४,७, ११८४
अधिगुः ९८,५, ९१९
अध्वर्युभिः गुहाहितः १०,९, ८५
अनपच्युतः ४,८,३८
अनसः १६,३, १३१
अनभिशास्ता ८८,७; ७९१
अनवद्यः ६९,१०, ६१९
अनिन्धः ८२,४; ७०४
अनिशितः तमोभिः ९६,२, ८३४
अनुकामकृत्, देवेभ्यः ११,७; ९२
अनुमाद्य २४,४,६; १९०,१९२ । १०७,११; १०१०
अनुमाद्यः नृभिः ७६,१, ६७१
अन्तः पश्यन् ९६,७; ८३९
अन्तरिक्षायाः ८६,१४, ७४१
अन्ध ५१,३, ३४८ । ६२,५; ४२२ । १०१,१३; ९५६
अपघ्नन् मृधः ६३,२४; ४७१
अपघ्नन् रक्षस ६३,२९, ४७६
अपघ्नन् वायुन् ९६,२३; ८५५
अपघ्नन्त ९८,११, ९२५
अपसेधन् दुरिता ८२,२, ७०२
अपां गन्धर्व ८६,३६, ७६३
अप कृण्वन् ९६,३; ८३५

अपः वसान. १६,२, १३० । ७८,१, ६८१ । ८६,४०;
७६७ । ९६,१३; ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३,
१०१७,१०२५ । १०९,२१; १०६२

अप नृगान. ९४,१; ८२३

अपः श्रीगन् १०९,२३, १०६४

अपः सिपासन् ९०,४, ८०३

अप्तरः ६१,१३; ४०० । ६३,५,२१; ४५२, ४६८ ।
१०८,७, १०३२

अप्रयावन् अथ० ३,५,१, २१७६

अप्सा १,९१,२१, ११२१

आसु द्रास ८९,२; ७९४

आसु मृजान ९६,१०, ८४२

अब्जित् ७८,४; ६८४

अभयानि कृष्वन् ९०,४; ८०३

अभिक्रन्दन् ८६,११, ७३८

अभिगीतः ९६,२३ ८५५

अभियुजः २१,२; १६७

अभिमातिषाहः १,९१,१८, १११८

अभिमातिहा ६५,१५, ५२२

अभिमाती. सहमानः ३,६३,१५; ११२६

अभिशस्त्रिपाः २३,५, १८४ । ९६,१०; ८४२

अभिशीर्णन् पयः पयसा ९७,४३, ८९९

अभिष्टिक्त् ४८,५, ३३५

अभिष्टुत. २७,१, २०६ । ६७,१९-२०, ५८६-५८७

अभिष्टुतः त्रिषु ३,६ २६

अभ्युन्दत पवित्रम् ६१,४, ३९१

अभ्रवर्षाः ८८,६; ७९०

अमर्त्यः-त्याः ३,१, २१ । ९,६, ७३ । २२,४, १७५ ।

२८,३,६, २१४,२१७ । ६८,८, ६०७ । ६९,५,

६१४ । ८४,२ ७१२ । १०३,५; ९७२ । १०८,१२,

१०३७ । ८,४८,१२, ११४६

अमित्रहा ११,७; ९२ । ८६,१२, ८४४

अमीवहा १,९१,१२, १११२

अमृतः-म् ९१,२८; ८०७ । ११०,४; १०६७ । १,४३,९,

११०० । ८,४८,३; ११३७ । वा०य० १९,७२, १२०९

अमृत्यव. अस्य केतवः ७०,३; ६२२

अयास. ४१,१, २९० । ८९,४; ७९६

अयासः मध्वः ८९,३; ७९५

अरममाण ७२,३, ६४१

अरावगः अपल्लन्तः १३,९; ११२ । ६३,५, ४५२

अरिः ७९,३, ६८८

अरुणः ११,४ ८९ । ४०,२, २८५ । ४५,३, ३१६ ।
७८४, ६८४

अरुष. ८,६, ६४ । २५,५; १९८ । ७१,७, ७३६ । ७४,१;

६५७ । ८२,१, ७०१ । ८९,३, ७९५ । १११,१; १०७६

अरेषम. १०१,१०, ८५३

अर्पितः भुवनेषु ८६,१४; ७४१ । ८६,४५, ७७२

अर्य २३,३; १८२

अर्वा ८७,७, ७८२

अवयाता हरस्य वैव्यम्य ८,४८,२, ११३६

अवात. २६,८,११, ८४०,८४३ । ८,७९७, ११५६

अवीरहा १,९१,१९, १११९

अव्य. ६,१; ४१ । ९,५ ६३ । १२,४; ९८ । २८,१,

२१२ । ३८,१, २७२ । ५०,२-३, ३४२-३४३ ।

५२,२, ३५२ । ६८,७, ६०६

अशान्तिहा ६२,११, ४२८ । ८७,२; ७७७

अश्वजित् ५९,१; ३८०

अश्वयुः ३६,६, २६५

अश्वविद् ५५,३, ३६६ । ६१,३, ३९०

अश्वसा २,१०, २० । ६१,२०, ४०७

अपाळहः युस्सु १,९१,२१; ११२१

अपाळह समस्सु ९०,३, ८०२

अममष्टकाव्यः ७६,४, ६७४

असश्चत. ७३,४, ६५१

असुरः ७३,१ ६४८ । ७४,७, ६६३

अस्तुत ९,५; ७२ । २७,४; २०२

अमृतः ३,८ २८

अस्मभ्य गातुवित्तम १०६,६, ९९१

अस्मयुः २,५, १५ । ६,१, ४१ । ६४,१८; ४९५

अस्मत्सत्ता वा० य० ८,५०, १२०८

आष्टिणि [पूषा] ६७,१२; ५७९

अङ्गूपाणः ९०,२, ८०१

आङ्गूयः ९७,८, ८६४

आत्मा इन्द्रस्य ८५,३; ७१८

आत्मा यज्ञस्य ६,८; ४८

आदधानः हस्तयोः विश्वावसु ९०,१, ८००

आनेता इळानाम् १०८,१३, १०३८

आनेता रायाम् १०८,१३; १०३८

आनेता वसूनाम् १०८,१३, १०३८

आनेता सुक्षितीनाम् १०८,१३, १०३८

आपानासः विवस्वत १०,५; ८१
 आपूर्ण ७४,२; ६५८
 आप्यः ११०,६; १०६९
 आप्यायमानः १,९१,१८; १११८
 आयुः-यवः २३,२,४, १८१,१८३ । ६४,१७; ४२४ ।
 १०७,१४, १०१३
 आयुधा तुम्जानः ५७,२; ३७३
 आयुधानि भिन्नत ९६,१९, ८५१
 आयुधा सशिशानः ९०,१, ८००
 आयुधा ते तिग्मानि ६१,३०; ४१७
 आयुषक् २५,५, १९८
 आविवासन् परावतः ३९,५; २८०
 आविवासन् भर्वावतः ३९,५, २८२
 आविशान् विष्वा रूपाणि २५,४; १९७
 आवृत गोभि ८६,२७, ७५४
 आशिर सृजानः ६४,१४, ४९१
 आशुः शवः १३,६८, १०९ । १७,१, १३७ । २२,१,
 १७३ । २३,१, १८० । ३९,१, २७८ । ५६,१, ३६८ ।
 ६२,१,१८; ४१८,४३५ । ६३,४, ४५१ । ६४,४,१६,
 ४८१,४९३ । ६९,६,७, ६१५,६१६ । ८६,१,२;
 ७२८,७२९
 आश्विनी. धीशुवः ते ८६,४; ७३१
 आहित कलशेषु १२,५; ९९
 आहितः पवित्रे अन्तः १२,५; ९९
 आहुतीवृध् ६७,२९; ५९६
 इन्द्रः १,५; ५ । २,१,२,७,९,१०; ११-१२,१७,१९,२० ।
 ४,१०; ४० । ६,२; ४२ । ८,७, ६५ । ९,५, ७२ ।
 ११,१,६,९, ८६,९१,९४ । १२,५,९; ९९,१०३ ।
 १३,४; १०७ । २३,६; १८५ । २४,५; १९१ ।
 २६,२,६, २०१,२०५ । २७,४,६, २०९,२११ । २९,६;
 २२३ । ३०,२,५; २२५,२२८ । ३१,२,६, २३२,२३५ ।
 ३२,२, २३७ । ३४,१, २४८ । ३५,२,४; २५५,२५७ ।
 ३७,६; २७१ । ३८,२,५; २७३,२७६ । ४०,३,४;
 २८६-२८७ । ४१,४,२९३ । ४३,२,४,५; ३०३,३०५,
 ३०६ । ४४,१; ३०८ । ४५,१,४-६, ३१४,३१७-३१९ ।
 ५०,५, ३४५ । ५१,३, ३४८ । ५२,३-५, ३५३-३५५ ।
 ५३,४; ३५९ । ५४,४, ३६३ । ५५,२; ३६५ ।
 ५६,४, ३७१ । ५७,४; ३७५ । ५९,४; ३८३ । ६०,१;
 ३८४ । ६१,१,२३,२६,२८,२९,३८८,४००,४१३,४१५,
 ४१६ । ६२,२०,२९; ४३७,४४६ । ६३,९,१७,२८,३०;
 ६० [सोमः] १५

४५६,४६४,४७५,४७७ । ६४,३, १०,१२,१३,२२,२५-
 २७,४८०,४८७,४८९,४९०,४९९,५०२-५०४ । ६५,१,
 ५,८,१३,१४,१७; ५०८,५१२,५१५,५२०,५२१,५२४ ।
 ६६,१३,१४,१६,२३,२८; ५५०-५१,५५३,५६०,५६५ ।
 ६७,४,६,८; ५७१-५७३,५७५ । ६८,९, ६०८ । ७०,
 १०, ६२९ । ७२,४,९, ६४२,६४७ । ७६,२; ६७२ ।
 ७७,४; ६७९ । ७९,५, ६९० । ८१,३, ६९८ । ८२,५,
 ७०५ । ८४,२,४; ७१२,७१४ । ८५,३,४,८ । ७१८,
 ७१९, ७२३ । ८६,१६,१८,२२-२४,२६,२८, ३७,३९,
 ४१,४७,४८, ७४३, ७४५, ७४७, ७५०, ७५१, ७५३,
 ७५५,७६४,७६६,७६८,७७४,७७५ । ८७,२; ७७७ ।
 ८८,१, ७८५ । ९०,५,६; ८०४,८०५ । ९१,२,४,
 ८०७,८०९ । ९३,३,५,८२०,८२२ । ९४,२; ८२४ । ९५,५;
 ८३२ । ९६,८,२,२१,२३; ८४०-४१,८५३,८५५ ।
 ९७,५,१०-१२,१६,१७, ८६१,८६६-८६८,८७२,८७३ ।
 ९७,१९,२१,२२,२४, २८, २९, ३३, ४०, ४४, ५२, ५५-
 ५७; ८७५,८७७,८७८,८८०,८८४,८८५,८८९,८९६,
 ९००,९०८,९११-९१३ । ९८,१-४,९; ९१५ ९१८,
 ९२३ । ९९,८, ९३४ । १००,२; ९३६ । १०१,५;
 ९४८ । १०४,५; ९७८ । १०५,२,४-६, ९८१,९८३-
 ९८५ । १०६,४,६, ९८९,९९१ । १०७,३, १००२ ।
 १०९,९,१२,२०,२२; १०५०,१०५३,१०६१,१०६३ ।
 ११०,१०,११; १०७३ ७४ । ११२,१-४,१०७९-१०८२ ।
 ११३,१-११; १०८३-१०९३ । ११४,१-४; १०९४ १०९७ ।
 १,४७,८, १०९९ । १,९१,१; ११०१ । ८,४८,२,४,८,
 १२,१३,१५, ११३६,११३८,११४२,११४६ ४७,११४९ ।
 १०,२५,९, ११६८ । वा० य० ८,९, १२०३
 इन्द्रवः ६,४; ४४ । ७,१; ५० । १०,४, ७० । १२,१,
 ९५ । १३,५,७; १०८,११० । १६,५; १३३ । २१,
 १,३,५; १६६,१६८,१७० । २४,१, १८७ । ४६,२,३,
 ३२१,३२२ । ६२,१, ४१८ । ६३,६,२५,२६; ४५३,
 ४७२-७३ । ६४,१६,१७, ९९३-९९४ । ६५,२४,५३१ ।
 ६६,१२; ५४९ । ६७,७; ५७४ । ६८,१; ६०० ।
 ७७,३, ६७८ । ७९,१,२, ६८६ ८७ । ८५,१,७,
 ७१६,७२२ । ८६,१,२, ७२८-२९ । १०१,२,८,१०;
 ९४५,९५१,९५३ । १०६,१,९, ९८६,९९४ । १०७,२६,
 १०२५ । ८,४८,५; ११३९ । अथर्व० ६,२,२. १२४९
 इन्द्र ६,२; ४२
 इन्द्रः इति सुवन् ६३,९, ४५६
 इन्द्रं वर्धन्तः ६३,५; ४५२

इन्द्रेण दत्त अथ० ३, ५, ४, ११७९
 इन्द्रस्य प्रियः ९८, ६; ९२० । १०२, १; ९३५
 इन्द्रस्य जनिता ९६, ५; ८३७
 इन्द्रस्य सखा ९६, २, ८३४ । १०१, ६, ९४९ । १०, २५, ९, ११६८
 इन्द्रस्य सख्य जुषाण ९७, ११, ८६७ । ८, ४८, २; ११३६
 इन्द्रस्य हृदमनिः ६१, १४, ४०१
 इन्द्रपातम. ९९, ३; ९२९
 इन्द्रपानः ९६, ३, १३; ८३५, ८४५
 इन्द्रपीत ८, ९, ६७
 इन्द्रयुः २, ९, १२ । ६, ९, ४९ । ५४, ४; ३६३
 इन्द्रियः रत्न. ४७, ३, ३२८ । ८६, १०; ७३७ । १०७, २५;
 १०२४
 इन्द्रियावान् वा० य० ८, ९; १२०३
 इभ ५७, ३, ३७४
 इयक्षन्तः पथ रजः २२, ४, १७६
 इयानः समिती. ९२, ६, ८१७
 इपः जनयन् ३, १०, ३०
 इपः मही प्रचक्राण. १५, ७; १२७
 इपयन् गा ९६, ८, ८४०
 इपयन् देवानां सुग्नम् ८४, ३; ७१३
 इपस्पतिः १४, ७; ११९ । १०८, ९, १०३४
 इपित कविना ३७, ६, २७१
 इष्टयामा ८८, ३, ७८७
 इष्यन् वाचम् ९५, ५, ८३२
 इळाना आनेता १०८, १३; १०३८
 ईढ्यः ६६, १, ५३१
 ईरयन् अग्निः वाचः ६२, २६, ४४३
 ईरयन् द्रव्यान् ९७, ५६, ९१२
 ईरयन् समुद्रिया अपः ६२, २६; ४४३
 ईशान-ना १९, २; १५३ । ६१, ६; ३९३ । ६२, २९;
 ४४६ । ८६, ३७; ७६४
 ईशान विश्वस्य १०१, ५; ९४८
 उक्थ्यः २९, २, २१९ । ४८, २, ३३२ । ८६, ४८; ७६४ ।
 १०८, १६; १०४१
 उक्षणम् (द्वि०) ८५, १०, ७२५ । ८७, ४३; ७७० । ९५, ४;
 ८३१
 उक्षमाणः ९९, ५, ९३
 उक्षितः अपां ऊर्मौ ७२, ७; ७४५
 उग्रः ६२, २९; ४४६ । १०९, ६३; १०६४ । ११३, ५;
 १०८७

उत्तमः ५१, २; ३४७ । १०८, १६; १०४१
 उत्तम. धातिः ८५, ३; ७१८
 उत्तमं हविः १०७, १; १०००
 उत्सः १०७, ४, १००३
 उत्सः वस्त्रः ९७, ४४, ९००
 उद्भिद् ८, ७९, १; ११५०
 उदप्रुतः १०८, ७; १०३२
 उज्जीता दध्ना ८१, १; ६९६
 उपदृक् ५४, २, ३६१
 उपपत्तिवान् नाके ८५, ११, ७२६
 उपम ८६, ३५, ७६२
 उपरासः ७७, ३, ६७८
 उपष्टुत् ८७, ९, ७८४
 उपारुहः ६८, २, ६०१
 उपावसु ८४, ३; ७१३
 उराणः १०९, ९; १०५०
 उरवः २२, २, १७४
 उरुगन्धूतिः ९०, ४; ८०३
 उरुगाय ६२, १३; ४३० । ९७, ९; ८६५
 उरु वरूथम् ८, ७९, ३; ११५२
 उरुशंस ८, ४८, ४, ११३८
 उरुस्यु-स्यवः ८, ४८, ५, ११३९
 उशन ६८, ६; ६०५ । ९५, ३; ८३०
 उशिक् वा० य० ८, ५०; १२०८
 उपसः प्रतरीता ८६, १९, ७४६
 उपस भगं जनन्त. १०, ५, ८१
 ऊर्जं वसान ७८, ३; ६८३
 ऊर्मिः ७८, २; ६८२ । ८६, ४०; ७६७ । ११०, ११; १०७४
 ऊर्मि ते देवावी. ६४, ११; ४८८
 ऊर्मय गस्थ मध्वः ७, ८, ५७
 ऊर्मय मधुमन्तः ८६, २, ७२९
 ऊर्मिणा सचमानः ७४, ५; ६६१
 ऊर्मौ ९८, ६; ९२०
 ऊर्गमियः ६८, ६, ६०५
 ऊर्जीषी ८, ७९, ४; ११५३
 ऊर्जु ९७, ४३; ८९९
 ऊर्ज ९७, ९; ८६५
 ऊतः ६२, ३०, ४४७ । ६६, २४, ५६१ । ७७, १; ६७६ ।
 १०७, १५, १०१४ । १०८, १०; १०३३
 ऊतः परस्मिन् धाम १, ४३, ९, ११००

ऋतजातः १०८, ८, १०३३
 ऋतयुज ११३, ४, १०८६
 ऋतुं वदन् ११३, ४; १०८६
 ऋतस्य गर्भः ६८, ५; ६०४
 ऋतस्य गोपाः ४८, ४; ३३४ । ७३, ८; ६५५
 ऋतस्य जिह्वा ७५, २, ६६७
 ऋतस्य तन्तुः ७३, ९; ६५६
 ऋतस्य विष्टपः ३४, ५; २५२
 ऋतावा २६, १३; ८४५ । ९७, ४८; ९०४ । ११०, ११ १०७४
 ऋतावृधः ४२, ५, ३०० । ६, ७५, १०, १२२७
 ऋत्विज ७२, ४; ६४२
 ऋषिः ३५, ४; २५७ । १०७, ७; १००६ । ८, ७९, १; ११५०
 ऋषिः [अग्निः] ६६, २०; ५५७
 ऋषिः विप्राणाम् ९६, ६, ८३८
 ऋषिकृत् ९६, १८, ८५०
 ऋषिमना २६, १८, ८५०
 ऋषिषाद् ७६, ४; ६७४
 ऋषिभिः संभृतः साम० १३००, १२११
 ऋष्वः ८९, ४; ७९६
 एतशः ६४, १९; ४९६
 ओक्थः ८६, ४५, ७७२
 ओजः देवानाम् अथ० ३, ५, १; ११७६
 ओजिष्ठ ६६, १६; ५५३ । ६७, १; ५६८ । १०१, ९, ९५२
 ओजीयान् उग्रैभ्यः चित् ६६, १७; ५५४
 ओषधीनां पयः अथ० ३, ५, १, ११७६
 ककुहः ६७, ८, ५७५
 कनिष्कत् ६३, २०; ४६७
 कनिष्कत् ३, ७, २७ । १३, ८; १११ । २५, २, १९५ ।
 २८, ४, २१५ । ३०, २, २२५ । ३३, ४; २४५ । ३६, २;
 २६७ । ६३, २९; ४७६ । ८५, ५; ७२० । ९६, २०, २१
 ८५२, ८५३ । २७, ३२; ८८८ । १०६, १०; ९९५
 कलशम् आविशान् ६२, १९; ४३६
 कविः ७, ४, ५३ । ९, १, ६८ । १२, ४, ८; ९८, १०२ ।
 १४, १; ११३ । १८, २; १४६ । २०, १, १५९ । २५, ३;
 १९६ । ५०, ४; ३४४ । ५९, ३; ३८२ । २५, ६; १९९ ।
 २७, १; २०६ । ४४, २; ३०९ । ४७, ४; ३२९ ।
 ६२, १४, २७, ३०, ४३१, ४४४, ४४७ । ६३, २, ४६७ ।
 ६४, २४, ५०१ । ६६, ३, १०; ५४०, ५४७ । ६८, ५;
 ६०४ । ७१, ७; ६३६ । ७२, ६; ६४४ । ७४, २;
 ६५८ । ७८, २; ६८२ । ८२, २, ७०२ । ८४, ५, ७१५ ।

८५, ९, ७२४ । ८६, २०, २५, २९; ७४७, ७५२, ७५६ ।
 ९२, २; ८१३ । ९६, १७, ८४९ । ९७, २, ८५८ ।
 १००, ५; ९३९ । १०२, ६, ९६५ । १०७, ७, १८,
 १००६, १०१७ । १०९, १३; १०५४ । १, ९१, १४;
 १११४ ।
 कविः दिवः ६४, ३०; ५०७
 कविना हृषितः ३७, ६, २७१
 कविभिः सुष्टुतः १०८, १२ १०३७
 कवीनां पदवी ९६, ६, १८ ९३८, ९५०
 कवीनां वाचः जन्तुः ६७, १३; ५८०
 कविक्रतुः ९, १; ६८ । २५, ५; १९८ । ६२, १३ ४३०
 कवीयन् ९४, १, ८२३
 काम्यः ९८, ६; ९२० । १०२, १; ९३५
 कारः पुरुषं बिभ्रत् १४, १, ११३
 कारिणः १६, ५, १३३
 कार्मन् श्वेतं कलशम् ७४, ८, ६६४
 काव्येषु रन्ता विश्वेषु ९२, ३, ८१४
 कृषवन् अपः ९६, ३, ८३५
 कृषवन् अभयानि ९०, ४; ८०३
 कृषवन् केतु दिवस्परि ६४, ८, ४८५
 कृषवन् भद्रान् ९६, १, ८३३
 कृषवन् वरिवांसि ९७, १६, ८७२
 कृषवन् विश्वानि सुपथानि यज्यवे ८६, २६, ७५३
 कृषवन् सचृतं विचृतं ८४, २, ७१२
 कृषवन् सव्यानि द्रविणानि ७८, ५, ६८५
 कृषवन् साम ९६, २२, ८५४
 कृषवन्तः वरिवः गवे ६२, ३, ४२०
 कृषवन्तः विश्व आर्यम् ६३, ५; ४५२
 कृषवानः गाः ८६, २६, ७५३ । १०७, २६, १०२५
 कृत्तुः ८, ७९, १; ११५०
 कृत्य ७६, १, ६७१ । ७७, ५, ६८० । ८४, ५, ७१५
 कृष्णां त्वच अपमन्त ४१, १, २९०
 केतु यज्ञस्य ८६, ७, ७३४
 कोशः ६६, ११; ५४८
 क्रतुः ८६, ४३; ७७० । १, ९१, ५, ११०५ । १०७, ३;
 १००२
 क्रतुमान् ९०, ६, ८०५
 क्रतुवित् ४४, ६, ३१३ । ६३, २४, ४७१ । ८६, ४८, ७७५
 क्रतुवित्तमः १०८, १, १०२६
 क्रतुभिः सुक्रतु १, ९१, २, ११०२

ऋतः ०७, २८, ८८४
 क्रन्दन् ४२, ४, २९९ । ९६, २२, ८५४ । ९७, ३३, ८८९
 क्राणा १०२, १, ९६०
 क्राणा सिन्धूनाम् ८६, १९; ७४६
 क्रिवि ९, ६ ७३
 क्रीळन्-न्तः २१, ३, १६८ । ४५, ५, ३१८ । ८६, २६, ७५३
 ९६, २१, ८५३ । ९७, ९; ८६५ । १०८, ५; १०३० ।
 ११०, १०; १०७३ । १०, ८५, १८; १२३८
 क्रीळन् वने ६, ५, ४५ । १०६, ११ ९९६
 क्रीळु. २०, ७, १६५
 क्षरन्तः ४६, १, ३२०
 क्षिप्रधन्वा ९०, ३; ८०२
 क्षेत्रवित्तरः १०, २५, ८, ११६७
 क्षैत. ९७, ३, ८५९
 गच्छन् इन्द्रम् २५, ५; १९८
 गच्छन् वाज सहस्रिणम् ३८, १, २७२
 गन्धर्व ८५, १२; ७२७
 गन्धर्वः अपाम् ८६, ३६, ७६३
 गभस्तिपूत. ८६, ३४, ७६१
 गयसाधनः १०४, २, ९७५
 गयस्फानः १, ९१, १२, १९, १११२, १११९
 गर्भ १०२, ६; ९६५
 गर्भ. पञ्चाद्याः ८२, ४; ७०४
 गवां पतिः ७२, ४; ६४२
 गवां शिरः ६४, २८, ५०५
 गव्ययु ३६, ६, २६५
 गव्यु. २७, ४, २०९ । ९७, १५; ८७१
 गा. इषण्यन् ९६, ८; ८४०
 गा. कृण्वान १०७, २६, १०२५
 गावः ८, ४८, ५, ११३९
 गातुवित् ४६, ५, ३२४ । ६, ५, १३, ५२० । ९२, ३,
 ८१४ । ३, ६२, १३; ११२४
 गातुवित्तमः ४४, ६, ३१३ । १०१, १०, ८५३ । १०४, ५,
 ९७८ । १०७, ७, १००६
 गातुवित्तमः अस्मभ्यम् १०६, ६, ९९१
 गातुं विदत् ९६, १०, ८४२
 गिरा जातः ६२, १५, ४३२
 गिरावृध् २६, ६; २०५
 गिरिष्ठाः १८, १, १४५ । ६२, ४; ४२१ । ८५, १०, ७२५ ।
 ९५, ४ ८३१ । ९८, ९; २२३

गिर्वणाः ६४, १४; ४२१
 गीर्भि परिकृतः ४३, ३, ३०४
 गुपितः विधानैः १०, ८५, ४, ११७४
 गुहाहितः अध्वर्युभिः १०, ९, ८५
 गुह्य [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, ३; ११७८
 गृणानः-ना ६२, २२; ४३९ । ९७, ४९, ९०५
 गृणान जमदग्निना ६२, २४; ४४१ । ६५, २५, ५३२
 गृणाना देववीतये १३, ३, १०६
 गृत्सः १०, २५, ५; ११६४
 गृध्राणा इयेनः ९६, ६; ८३८
 गोभिः अक्तः ९६, २२, ८५४
 गोभिः अज्ज्ञानः १०३, २, ९६९
 गोभिः श्रीणान १०२, १७; १०५८
 गोभिः श्रीतः १०९, ११५; १०५६
 गोजित् ५९, १; ३८० । ७८, ४, ६८४ ।
 गोजीरयाः ११०, ३; १०६६
 गोपति १९, २; १५३ । ९७, ३४; ८९०
 गोपति जनस्य ३५, ५, २५८
 गोपाः २, १०; २० । १६, २, १३०
 गोपाः ऋतस्य ४८, ४, ३३४ । ७३, ८, ६५५
 गोपाः तन्वः ८, ४८, ९; ११४३
 गोपाः विश्वतः १०, २५, ७; ११६६
 गोपा. विश्वस्य भुवनस्य २, ४०, १, १२१७
 गोपा वृजनस्य १, ९१, २१; ११२१
 गोमान् १०७, ९, १००८
 गोवित् ५५, ३, ३६६ । ८६, ३९, ७६६
 गोविन्दु ९६, १९, ८५१
 गोषाः १६, २, १३० । ६१, २०; ४०७
 गोषु अग्रियः ८६, १२, ७३९
 ग्राणा तुङ्गः ६७, १९; ५८६
 घनिमत् विश्वा दुरिता ९०, ६, ८०५
 घृतं वसानः ८२, २; ७०२
 घृतक्षुत्तः ७७, १; ६७६ । साम० १३००, १२११
 घृतस्तु ८६, ४५, ७७२
 घृत्वय २१, १, १६६
 घोरः ८९, ४, ७९६
 घ्नन् क्षिधः अप २७, १; २०६
 घ्नन्तः विश्वा द्विषः अप ६३, २६; ४७३

चक्रद वने १०७, २२; १०२१
 चक्राणः चारुं अध्वरम् ४४, ९; ३११
 चक्रिः ७७, ५; ६८०
 चक्षाणः विश्वा काव्या ५७, २; ३७३
 चनोहितः ७५, १; ६६६
 चनोहितः मतिभिः ७५, ४, ६६९
 चन्द्रः ६६, २६; ५६३
 जम्बूद ८, २; ६०। ९६, १९, ८५१
 चमूः पुनान् १०७, १८; १०१७
 चमू सुताः ४६, ३. ३२२
 चम्बोः सुत. १०८, १०; १०३५
 चारुः-रव. १७, ८; १४४। ३०, ६; २२२। ४८, १; ३३१
 ६१, ९; ३९६। ७७, ३ ६७८। ८६, २१; ७४८।
 १०२, ६; ९६५। १०९, १२; १०५४
 चिकित मनीषा प्र १, ९१, १; ११०१
 चिताना गो अधि त्वाचि १०१, ११; ९५४
 चित्तः विपानथा अया ६५, १२; ५१९
 चेतनः ६४, १०, ४८७
 चोदितः नृबाहुभ्याम् ७२, ५; ६४३
 जङ्घनम् कृष्णा तमांसि ६६, २४ ५६१
 जङ्घनः (त्वष्टी) ६६, २५; ५६२
 जज्ञानः ३, १०; ३०। २९, २; २१९। ८६, ३६; ७६३।
 ९६, १७, ८४९। १०२, ८, १२; १०४९, १०५३
 जनना दिव. [सोमपूषणौ] २, ४०, १; १२१७
 जनना पृथिव्याः " २, ४०, १, १२१७
 जनना रथिणाम् " २, ४०, १, १२१७
 जनयन् १०८, १२; १०३७
 जनयन् हृषः ३, १०, ३०। ६६, ४; ५४१
 जनयन् ज्योतिः १०७, २६, १०२५
 जनयन् मतिम् १०७, १८; १०१७
 जनयन् रोचना दिव ४२, १; २९६
 जनयन् वाचम् ७८, १, ६८१। १०६, १२; ९९७
 जनयन् सूर्यम् अप्सु ४२, १; २९६
 जनिता भग्ने ९६, ५, ८३७
 जनिता इन्द्रस्य ९६, ५; ८३७
 जनिता दिवः ९६, ५; ८३७
 जनिता देवानाम् ८६, १०, ७३७। ८७, २; ७७७
 जनिता पृथिव्याः ९६, ५; ८३७
 जनिता मतीनाम् ९६, ५; ८३७
 जनिता रोदस्योः ९०, १; ८००

जनिता विष्णोः ९६, ५; ८३७
 जनिता सूर्यस्य ९६, ५; ८३७
 जन्तु कवीनां वाचः ६७, १३, ५८०
 जयन् १, २१, २१; ११२१
 जयन् अपः ८५, ४; ७१९
 जयन् क्षेत्रम् ८५, ४; ७१९
 जवीयान् मनस. ९७, २८, ८८४
 जागृविः ३६, २; २६१। ४४, ३; ३१०। ७१, १, ६३०
 जात ९, ३, ७०
 जातः गिरा ६२, १५; ४३२
 जात श्रिये ९४, ४, ८२६
 जातासः श्रुष्टी १०६, १; ९८६
 जानन् ९६, ७; ८३९
 जानन् ऋत प्रथमम् ७०, ६, ६२५
 जायमानः ९६, १० ८४२
 जायमान इन्द्रम् अभि ११०, ८, १०७१
 जिगत्सव. १०१, १२; ९५५
 जिग्युषः (षष्ठी) १०२, ४; ९३८
 जिह्वा ऋतस्य ७५, २; ६६७
 जीरदानुः ८७, ९; ७८४
 जुषाणः इन्द्रस्य सख्यम् ९७, ११; ८६७। ८, ४८, २, ११३६
 जुष्टः ९७, २२; ८७८
 जुष्टः इन्द्राय १३, ८; १११। ७०, ८; ६२७
 जुष्टः मती ४४, २; ३०९
 जुष्टः मदाय ९७, १९, ८७५
 जुष्टः मित्राय १०८, १६; १०४१
 जुष्टः वरुणाय ७०, ८; ६२७। १०८, १६, १०४१
 जुष्टः वायवे ७०, ८, ६२७। १०८, १६; १०४१
 जूतः ९७, ५२, ९०८
 जूताः धिया ६४, १६, ४९३
 जेता ९०, ३, ८०२
 जेन्यः ८६, ३६, ७६३
 ज्येष्ठः उग्रामा ६६, १६; ५५३
 ज्योतिः २९, २; २१९। ६६, २४; ५६१
 ज्योतिः जनयन् १०७, २६, १०२५
 ज्योतिः यज्ञस्य ८६, १०; ७३७
 ज्योतीरथ ८६, ४५, ७७२
 ज्ञप ऊरु ६८, २; ६०१
 तनूपातः अथ ३, ५, ८, ११८३
 तन्तु ऋतस्य ७३, ९, ६५६

तन्वं मृजानः ९६,२०; ८५२
 तन्वः गोषाः ८,४८,९; ११४३
 तमः ज्योतिषा प्रतपन् १०८,१२; १०३७
 तरत् ५८,१-४; ३७६-३७९
 तवस् (सः-षष्ठौ) १०,२५,५ ११६४
 तवस्वान् ९७,४६; ९०२
 तविष्यमाण ७६,३; ६७३
 तिग्मदन्तिः ६,७४,४; १२२६
 तिग्मशृंग ९७,९; ८६५
 तिग्मायुधः ९०,३, ८०२ । ६,७४,४, १२२६
 तिरः दधानः दुहितुः वर्षासि ९७,४७; ९०३
 तीव्र १७,८; १४४ । ६,४७,१; ११२७
 तुजानः आयुधा ५७,२; ३७३
 तुजानः रयिम् ८७,६, ७८१
 तुङ्गः ६७,२०, ५८७
 तुङ्गः प्राग्गा ६७,१९; ५८६
 तुरः १०,२५,१०, ११६९
 तृतीयं धाम सिषासन् ९६,१८, ८५०
 त्रिघातुः ८६,४६; ७७३ । १०८,१२; १०३७
 त्रिष्टु ७१,७; ६३६ । ९०,२; ८०१
 त्रिवरूथं शर्म वसानः ९७,४७; ९०३
 त्विषिं दधान ३९,३; २८०
 त्वेषाः ४१,१, २९०
 दुक्षः ६१,१८, ४०५ । ६२,४ ४२१ । ६५,२८, ५३५ ।
 ८५,२, ७१७ । १,९१,१४, १११४
 दुक्षः देवानाम् ७६,१; ६७१
 दुक्षसाधनः २५,१, १९४ । २७,२; २०७ । १०१,१३
 ९५६ । १०४,३; ९७६
 दुक्षाय साधनः ६२,२९, ४४६ । १०५,३, ९८२
 दुक्षायः ८८,८; ७९२ । १,९१,३; ११०३
 दुक्तः इन्द्रेण अथ० ३,५,४; ११७९
 दुधत् दाशुषे रत्नानि ३,६, २६
 दुधत् वयः ६८,१०; ६०९
 दुधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् २०,७; १६५ । ६२,३०; ४४७ ।
 ६६,२७; ५६४ । ६७,१२; ५८६
 दधानः इन्द्रियं रसम् २३,५, १८४
 दधानः भोजसा विश्वा ६५,१०; ५१४
 दधानः कलशे रसम् ६३,१३; ४६०
 दधानः अक्षिति श्रवः ६६,७; ५४४
 दधान त्विषिम् ३९,३; २८०

दधानः द्रविणम् ९६,१२, ८१४
 दधान नाम ९२,२, ८१३
 दधानः रत्ना दमेदमे ६,७४,१; १२२३
 दध्ना उज्जीता ८१,१; ६९६
 दध्याशिरः २३,३; १७५ । ६३,१५, ४६२ । १०१,१२, ९५५
 दमेदमे सप्त रत्ना दधान ६,७४,१; १२२३
 दशतः-तासः २,६; १६ । १०१,१२; ९५५
 दस्मः ८२,१; ७०१
 दस्योः हन्ता ८८,४; ७८८
 दाता दात्रस्य ९७,५५; ९११
 दात्रस्य दाता ९७,५५; ९११
 दानुदः ९७,२३; ८७९
 दानुपिन्वः ९७,२३, ८७९
 दाशुषे वसुनि करत् ६२,११; ४२८
 दिस्मन् राधः ६१,२७; ४१४
 दिवः आभृतं पय ६६,३०; ५६७
 दिव कवि ६४,३०; ५०७
 दिव जननः २,४०,१, १२१७
 दिवः जनिता ९६,५; ८३७
 दिवः धरुणः २,५, १५
 दिवः धर्ता ७६,१; ६७१ । १०९,६, १०४७
 दिव पतिः ८६,११,३३; ७३८,७६०
 दिव पदम् (दिवस्पदम्) १०,९; ८५
 दिव प्रतरीता ८६,१९, ७४६
 दिवः मूर्धा-धान २७,३, २०८ । ६९,८; ६१७
 दिवः रोचनः ३७,३, २६८
 दिव विष्टम्भः ८६,३५; ७६२ । ८७,२; ७७७ । ८९,६,
 ७९८ । १०८,१६; १०४१
 दिवः शिशुः ३३,५; २४६ । ३८,५, २७६
 दिवः स्कम्भः ७४,२, ६५८ । ८६,४६, ७७३
 दिवा हरि ९७,९; ८६५
 दिवियजः ९७,२६, ८८२
 दिवि अधि श्रितः १०,८५,१; ११७१
 दिविष्टृक् ११,४; ८९
 दिवे शम् १०९,५, १०४६
 दिव्य-भ्याः ७१,९, ६३८ । ८६,१; ७२८ । ३६; ७६३ ।
 ९७,२३,३३, ८७९, ८८९ । १०७,५; १००४ । १०९,
 ३,१०४४
 दिशां पति ११३,२, १०८४
 दुदुहानः अद्रौ ९६,१०; ८४२

बुधुहान त्रिः सप्त आशिरम् ८६, २१, ७४८
 दुराध्यः ७९, ३, ६८८
 दुरिता अपसेधन् ८२, २; ७०२
 दुरिता घनिष्ठत् विश्वा ९०, ६; ८०५
 दुरिता पुरु विघ्नन्तः ६२, २, ४१९
 दुरितानि विघ्नन् ९७, १६; ८७२
 दुरोषः १०१, ३; ९४६
 दुर्मर्षः ९७, ८; ८६४
 दुष्टर अप्सु २०, ६; १६४
 दुस्तरः १६, ३, १३१
 दुहान प्रत्नं इत् पय ४२, ४, २९९
 देवः-वासः ३, १, ६, ९; २१, २६, २९ । ६, ७; ४७ । १३, ५,
 १०८ । ३७, ६; २७१ । ४२, २, २९७ । ६३, २२;
 ४६९ । ६४, १; ४७८ । ६५, २, २४, ५०९, ५३१ ।
 ६७, ३०, ५९७ । ६८, २, ६०१ । ७१, ६, ६३५ ।
 ८७, २; ७७७ । ९५, २; ८२९ । ९६, ३, १६, ८३५, ८४८ ।
 ९७, १, ७, ११, १२, १८, २७, ४२, ४८, ५०, ८५७, ८६३,
 ८६७-६८, ८७४, ८८३, ८९८, ९०४, ९०६ । ९८, ४, ९;
 ९१८, ९२३ । ९९, ७; ९३३ । १०३, ६, २७३ । १०७, १५,
 १०१४ । १०८, ९; १०३४ । १, ९१, १४, २३, १११४,
 ११२३ । ८, ४८, २, ११४३ । १०, ८५, ५, ११७५ ।
 वा०य० ५, ७; ११९४ । ७, १४; १२०१ । ८, २६, ५०,
 १२०५, १२०८
 देवः [सविता] ६७, २५, २६, ५९२, ५९३
 देवतातः ९७, १९; ८७५
 देवतातिः ९७, २७, ८८३
 देवपानः ९७, २७, ८८३
 देवप्सराः १०४, ५, ९७८
 देवप्सरस्तमः १०५, ५, ९८४
 देवमादनः ८४, १; ७११ । १०७, ३, १००२
 देवयुः ६, १; ४१ । ११, २, ८७ । १७, ३; १३९ । ३७,
 १; २६६ । ४३, ५; ३०६ । ५६, १; ३६८ । ९७, ४;
 ८६० । १०६, १४; ९९९ । १०८, ९, १०३४
 देववातः ६२, ५; ४२२ । ९६, ९, ८४१ ।
 देववीः ३६, २, २६१
 देववीतमः २५, ३, १९६ । २८, ३; २१४ । ४९, ३, ३३८ ।
 ६३, १६; ४६३ । ६४, १२; ४८९ । १०७, ७; १००६ ।
 देवश्रुतमम् ६२, २१; ४३८
 देवान् पृच्छन् स्वेन रसेन ९७, १२; ८६८
 देवानाम् भोजः अथ० ३, ५, १; ११७६

देवानां जनिता ८६, १० ७३७ । ८७, २; ७७७
 देवानां दक्षः ७६, १, ६७१
 देवानां पिता ८६, १०, ७३७ । ८७, २; ७७७ । १०९, ४,
 १०४५
 देवानां ब्रह्मा ९६, ६, ८३८
 देववीः २, १; ११ । २४, ७, १९३ । २८, ६, २१७ । ६१,
 १९; ४०६
 देवी [पावमानीः] साम० १३०१, १२१२
 देवेभ्यः मधुमत्तम १०६, ६, २९१
 देवैः समाहृताः साम० १३०१, १२१२
 युक्षः ५२, १, ३५१
 युक्षतमः १०८, १, १०२६
 युतानः ६४, १५; ४९२ । ७५, ३; ६६८
 युमान् ६१, १८, ४०५ । ६४, १; ४७८ । ६५, ४; ५११ ।
 ८०, २, ६९२
 युमत्तम ६५, १९; ५२६ । १०८, ३, १०२८
 युञ्जवत् पयः यस्य ६६, ३०; ५६७ ।
 युञ्जवत्तमः २, २, १२
 युञ्जवर्धनः ३१, २; २३१
 युञ्जी १०९, ७; १०४८
 युञ्जी युञ्जेभिः १, २१, २; ११०२
 द्रप्सः-प्सास ६, ४; ४४ । ६९, २; ६११ । ७३, १,
 ६४८ । ७८, ४; ६८४ । ८५, १०; ७२९ । ९६, १९,
 ८५१ । १०, १७, ११-१३, १२३१-३३
 द्रप्सः भा० ८९, २; ७२४
 द्राप्तान् हारयन् ९७, ५६, ९१२
 द्रविणं दधानः ९६, १२, ८४४
 द्रविणानि सत्यानि कृण्वन् ७८, ५; ६८५
 द्रविणस्त्वन्तः ८५, १, ७१६ ।
 द्रविणोवित् ९७, २५, ८८१
 द्रापि वसान ८६, १४; ७४१
 द्रावयित्वः ६९, ६; ६१५
 द्रयाविन ८५, १; ७१६
 द्विशवस् १०४, २; ९७५
 धनजयः ४६, ५, ३२४ । ८४, ५, ७१५
 धनस्पृत् ६२, १८, ४३५
 धनस्य पुर एता ९७, २९; ८८५
 धनानि सनिता ९०, ३, ८०२
 धमन् ७३, १; ६४८
 धरुण ७४, २, ६५८

धरुणः दिवः २,५; १५। ७२,७, ६४५। ८६,८; ७३५
 धरुणः पृथिव्याः ८७,२; ७७७। ८९,६; ७९८
 धर्णसिः २,२, १२। १४,२; ११४। २३,५; १८४।
 २६,३; २०२। ३७,३; २६८। ३८,६; २७७।
 ९९,५, ९३१
 धर्ता २६,२, २०२। ६५,११; ५१८
 धर्ता दिवः ७६,१, ६७१। १०९,६; १०४७
 धर्मणः पतिः ३५,६, २५९
 धर्माणि वसानः क्रतुधा ९७,१२; ८६८
 धात्रा परिष्कृतः ११३,४; १०८६
 धामधाः प्रथम ८६,२८, ७५५
 धाम तव बृहत् गभीरम् १,९१,३, ११०३
 धाराः अस्य ३०,१; २२४
 धारा असश्चतः ५७,१; ३७२। ६२,२८; ४४५
 धाराः मद्विष्टा १,१, १
 धाराः मध्व ७,२; ५१
 धाराः मधुश्रुत ६२,७, ४२४
 धारा मन्द्राः ६,१, ४१
 धाराः शतम् ५६,२; ३६९
 धाराः शर्मयन्त्य ४१,६; २९५
 धाराः स्वादिष्टा १,१, १
 धाराः शतम् अपस्त्युवः ५६,२; ३६९
 धाराः पिन्वन् ९७,३४; ८८०
 धाराभिः हियान ९८,२, ९१६
 धारयुः ६७,१; ५६८
 धासि उत्तमः ८५,३, ७१८
 धियः पतिः ७५,२, ६६७। ९९,६; ९३२
 धिया मनोता ९१,१, ८०६
 धियावसु ९३,५; ८२२
 धियाहितः ४४,२; ३०९
 धीजवः ८६,१, ७२८
 धीजवनः ८८,३; ७८७
 धीजुवः ८६,४; ७३१
 धीनां अन्तः सबर्द्ध १२,७; १०१
 धीरः ९२,३; ८१४। ९३,१, ८१८। ९७,३०,४६,
 ८८६,९०२। ६,४७,३, ११२९। ८,४८,४; ११३८
 धूतः अप्सु ६२,५; ४२२
 धूतः नृभिः १०७,५; १००४
 धृष्ट्युः ४७,२; ३२७। ९९,१; ९२६। १०८,६; १०३१
 ध्रुवः ८६,६; ७३३। १०१,१२, ९५५। १०२,४; ९६३

नक्तं ऋजः २,७,९; ८६५
 नप्त्योः हितः ९,१; ६८
 नभः वसानः ८३,५; ७१०
 नर्यः १०५,५; ९८४। १०७,१, १०००
 नवः ८६,३६, ७६३
 नाम दधानः ९२,२, ८१३
 निक्तः १०९,१०, १०५१
 निव्यस्तोन्नः १२,७, १०१
 निधापतिः ८३,४; ७०९
 निरिणानः १४,४, ११६
 निर्णिक् ८६,४६, ७७३
 निर्णिजानः ६९,५, ६१४
 नृचक्षाः ८,९; ६७। ४५,१, ३२५। ७८,२, ६८२।
 ८०,१; ६७१। ८६,२३,३६,३८; ७५०,७६३,७६५।
 ९२,२; ८१३। ९७,२४, ८८०। १,९१,२; ११०२।
 ८,४८,९,१५, ११४३, ११४९
 नृधूतः ७२,४; ६४२
 नृभिः धूतः १०७,५; १००४
 नृभिः यतः १०८,१५; १०४०
 नृभिः येमानः ७५,३, ६६८। १०७,१६; १०१५। १०९,
 ८,१८; १०४९, १०५९
 नृमादनः २४,४, १२०। ६७,२; ५६९
 नृम्णा दधानः ओजसा १५,४, १२४
 नृम्णानि बिभ्रत् ४८,१; ३३१
 नृषा २,१०, २०
 पञ्चायाः गर्भः ८२,४, ७०४
 पति ६५,१; ५०८। ९७,२२, ८७८
 पतिः गवाम् ७२,४, ६४२।
 पतिः जनीनाम् ८६,३२, ७५९
 पतिः दिवः ८६,११,३३; ७३८,७६०
 पतिः दिशाम् ११३,२; १०८४
 पतिः धियः ७५,२; ६६७। ९९,६, ९३२
 पतिः भुवनस्य ३१,६; २३५
 पतिः मदानाम् १०४,५; ९७८
 पतिः रयीणाम् १०१,६; ९४९
 पतिः वाचः २६,४; २०३
 पतिः विश्वस्य भुवनस्य ८६,५; ७३२
 पतिः वीरुधाम् ११४,२, १०९५
 पतिः सिन्धूनाम् १५,५; १२५
 पतिः हरीणाम् १०५,५; २८४

पत्नीवान् वा० य० ८,९; १२०३
 पत्न्यन् कुक्कनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् भन्दनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् मदन्तमानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् मधुन्तमानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् श्वेतीनाम् वा० य० ८,४८, १२०६
 पथिकृत् १०६,५; ९९०
 पदवीः कवीनाम् ९६,६, १८, ८३८, ८५०
 पणिमत् ६७,२९; ५९६ । ८५,११; ७२६ । ८६,३१,
 ४६; ७५८,७७३ ।
 पट्टचान अङ्गिः ७४,९, ६६५
 पमिः पृतनासु १,९१,२१, ११२१
 पयः अस्य ५४,१; ३६०
 पयः ऋषिम् ५४,१, ३६०
 पयः श्रुतम् ५४,१; ३६०
 पयः श्रुतवत् ६६,३०, ५६७
 पयः दिव आभृतम् ६६,३०; ५६७
 पयः प्रानम् ५४,१; ३६०
 पयः शुक्रम् ५४,१, ३६०
 पयः सहस्रसाम् ५४,१; ३६०
 पयः ओषधीनाम् [पर्णमणिः] अथ० ३,५,१, ११७६
 पयः पयसा अभिशीणन् ९७,४३, ८९२
 पयसा पिन्वमानः ९७,१४, ८७०
 पयोवृध् ८४,५, ७१५
 पयोवृध १०८,८; १०३३
 परस्मिन् धामन् ऋतः १,४३,९; ११००
 परावतिः ७१,७; ६३६
 परिप्रयन् ६८,८; ६०७
 परियन् ६८,६; ६०५ । ७१,९; ६३८
 परिषिच्यमानः ६८,१०; ६०९ । ९७,१४,३६, ८७०, ८९२
 परिष्कृष्वन् अनिष्कृतम् ३९,२; २७२
 परिष्कृतः अथ क्षपा ९९,२, ९२८
 परिष्कृतः गीर्भिः ४३,३; ३०४
 परिष्कृतः गोभिः ६१,१३, ४००
 परिष्कृतः धात्रा ११३,४; १०८६
 परिष्कृतः मत्तिभिः १०५,२; ९८१
 परिष्कृतः विश्वाभिः मत्तिभिः ८६,२४, ७५१
 परिष्कृतासः ४६,२; ३२१
 पर्जन्य पिता ८२,३; ७०३
 पर्जन्यवृद्धः ११३,३, १०८५

दै० [सोमः] १६

पर्ण [देवता] अथ० ३,५,४,६-८, ११७९, ११८१-
 ११८३
 पर्णमणि [देवता] अथ० ३,५,१,२,५; ११७६, ११७७,
 ११८०
 पर्णी ८२,३, ७०३
 पर्वतावृध ४६,१; ३२०
 पवमान ३,२,३,५,७,८, २२,२३,२५,२७,२८ । ४,१,
 ३१ । ७,५, ५४ । ९,९; ७६ । ११,१,९, ८६,९४ ।
 १३,२,८, १०५,१११ । १२,६, १५७ । २०,२,१६० ।
 २३,३, १८२ । २५,२, १२५ । २६,३,६, २१३,
 २१६ । २७,४,५; २२०,२२१ । २८,५, २१६ ।
 ३०,४, २२७ । ३५,१, २५४ । ३६,३; २६२ ।
 ३७,३,४; २६८,२६९ । ४०,४, २८७ । ४१,३;
 २९२ । ४३,४; ३०५ । ४६,६, ३२५ । ४९,५,
 ३४० । ५०,३, ३४३ । ५१,३, ३४८ । ६०,१,३;
 ३८४,३८६ । ६१,४, १६-१८, २६, ३९१, ४०३-४०५,
 ४१३ । ६२,१०, ११, १६, ३०, ४२७, ४२८, ४३३, ४४७ ।
 ६३,८, २३; ४५५, ४७० । ६४,६, २, २४, ४८४, ४८६,
 ५०१ । ६५,२-४, ७, ११, १६, ५०९-५११, ५१४, ५१८,
 ५२३ । ६६,२, ३, १०, २२, २४-२७, ३०, ५३९, ५४०,
 ५४७, ५५९, ५६१-५६४, ५६७ । ६७,२, २१, २२; ५७६,
 ५८८, ५८९ । ६९,२; ६११ । ७२,९, ६४७ । ७४,२,
 ६६५ । ७६,३, ६७३ । ७८,३, ५; ६८३, ६८५ ।
 ७९,३, ६८८ । ८०,५, ६९५ । ८१,१, ३-५, ६९६,
 ६९८-७०० । ८५,८; ७२३ । ८६,१, ४, ६, १२, १३,
 १८, २४, २८-३०, ३४, ३५, ३८, ४४; ७२८, ७३१, ७३३,
 ७३९, ७४०, ७४५, ७५१, ७५५-७५७, ७६१, ७६२, ७६५,
 ७७१ । ८८,५; ७८९ । ८९,१; ७९३ । ९०,५;
 ८०४ । ९१,३; ८०८ । ९२,४, ५, ८१५, ८१६ ।
 ९३,४; ८२१ । ९४,५, ८२७ । ९६,४, ७, ८, ११,
 २१, २३, २४, ८३६, ८३९, ८४०, ८४३, ८५३, ८५५,
 ८५६ । ९७,८, १४, २४, ३१, ४१, ४४, ५८; ८६४, ८७०,
 ८८०, ८८७, ८९७, ९००, ९१४ । १००, ७, ८, ९, ९४१,
 ९४२, ९४३ । १०१, ९; ९५२ । १०३, ६, ९७३ ।
 १०६, १०; ९९५ । १०७, ११, १५, २१, २२; १०१०,
 १०१४, १०२०, १०२१ । १०८, ३, १०२८ । ११०, २,
 ३, ९, १०; १०६५, १०६६, १०७२, १०७३ । ११३, ७,
 १०८९ । ११४, १; १०९४ । ८, १०१, १४; ११५२ ।
 पवमाना-नासः १३,९, ११२ । २१, ४; १६२ । २४, १,
 १८७ । ३१, १, २३० । ५९, ४; ३८३ । ६३, २५-
 २७; ४७१-४७४ । ६७, ७; ५७४ । ६९, ९; ६१८ ।

८५,७; ७२२ । ८७,५, ७८० । १०१,८; ९५१ ।
 १०७,२५; १०२४ ।
 पवित्र. ३९,३,४; २८०,२८१
 पवित्रम् अभि उन्दन् ६१,४; ३९१
 पवित्रः तपोः ८३,२, ७०७
 पवित्र रथ. ८३,५, ७१० । ८६,४०; ७६७
 पवित्रवन्तः ७३,३, ६५० । १०१,४, ९४७
 पवित्रे व्रिततः ७३,९, ६५६
 पश्यन् अन्तः ९६,७; ८३९
 पस्त्यावान् ९७,१८, ८७४
 पाञ्चजन्यः [अग्नि.] ६६,२०, ५५७
 पात् (पान्तम् द्वि०) ६५,२८-३०; ५३५ ५३७
 पावक २४,६,७, १९२, १९३ । ९७,७; ८६३
 पावमानीः साम० १३००-१३०३, १२११-१२१४
 पाशिनः ७३,४ ६५१
 पिता ७३,३, ६५० । ८७,२, ७७७
 पिता देवानाम् ८६,१०, ७३७ । ८७,२; ७७७ । १०९,४,
 १०४५
 पिता मतीनाम् ७६,४, ६७४
 पिन्वन् धारा. ९७,३४; ८९०
 पिन्वमानः पयसा ९७,१४, ८७०
 पीयूष. १०९,३,६; १०४४, १०४७
 पीयूषम् दिवः उत्तमम् ५१,२, ३४७
 पुनान-ना-नासः ६,९; ४९ । ८,२,३,६; ६०,६१,
 ६४ । ९,७, ७४ । १६,६,८; १३४, १३६ । १८,७;
 १५१ । १९,१,३; १५२, १५४ । २०,५; १६३ ।
 २४,२, १८८ । २५,४, १९७ । २७,१,६, २०६,
 २११ । २८,६; २१७ । ३०,१, २२४ । ३५,५,६,
 २५८, २५९ । ४०,१,५,६; २८४, २८८, २८९ । ४२,५;
 ३०० । ४३,३; ३०४ । ५४,३,४; ३६२, ३६३ ।
 ५७,४, ३७५ । ६१,६, २३, २७; ३९३, ४१०, ४१४ ।
 ६२,२३, ४४० । ६३,२८; ४७५ । ६४,१४, १५, २५,
 २६, २७, ४९१, ४९२, ५०२, ५०३, ५०४ । ६६,२८;
 ५६५ । ६८,९; ५९७ । ८६, ३, २१, २५, ३३, ४७,
 ७३०, ७४८, ७५२, ७५३, ७६०, ७७४ । ८७,१,९; ७७६,
 ७८४ । ९१,४,६; ८०९, ८११ । ९२,३,६, ८१४,
 ८१७ । ९३,५, ८२२ । ९५,१, ८२८ । ९६,३, २३;
 ८३५, ८५५ । ९७,६, १२, १८, २५, २७, ३७, ३८, ४५,
 ८६२, ८६८, ८७४, ८८१, ८८३, ८९३, ८९४, ९०१ ।
 ९७,४७; ९०३ । ९९,४,६, ९३०, ९३२ । १००,२;

९३६ । १०३,१,४,५; ९६८, ९७१, ९७२ । १०५,१;
 ९८० । १०६,९; ९९४ । १०७,२,४,६; १००१,
 १००३, १००५ । १०९,९; १०५० । ११०,१०,११;
 १०७३, १०७४ । १११,१; १०७६
 पुनानः चमूः १०७,१८, १०१७
 पुनानः तन्व अरेपसम् ७०,८, ६२७
 पुनान देववीतये ६४,१५, ५०२
 पुनानः नृभि ७५,५; ६७०
 पुनानः ब्रह्मणा ११३,५; १०८७
 पुनानः मतिभिः ९६,१५; ८४७
 पुनानः वारम् ८२,१, ७०१
 पुर एता महतः धनस्य ९७,२९, ८८५
 पुरन्धिवान् ७२,४; ६४२
 पुरुकृत् ९१,५; ८१०
 पुरुक्षुः ९१,५, ८१०
 पुरुत्राः १०,२५,६; ११६५
 पुरुमेध. ९७,५२; २०८
 पुरुवारः ९३,२; ८१९ । ९६,२४; ८५६
 पुरुवतः ३,१०. ३०
 पुरुष्टुतः ७२,१; ६३९ । ७७,४, ६७२
 पुरुस्पृहः ६५,२८-३०, ५३५-५३७ । १०२,६; ९६५
 पुरुहूतः ५२,४; ३५४ । ८७,६; ७८१
 पुरोरुक् ९८,१२, ९२६
 पुरोजिती १०१,१, ९४४
 पुरोहितः [अग्नि] ६६,२०, ५५७
 पुष्टिर्धन १,९१,१२; १११२
 पूत-ताः २३,३, १७५ । ६७,३१, ५२८ । ९७,३१,
 ८८७ । १०१,१२; ९५५ । १०९,८; १०४९
 पूयमान ८७,६; ७८१ । ९२,१; ८१२ । ९६,१०,२१;
 ८४२, ८५३ । ९७,१,२, ३६, ३९, ४२, ४८-५१, ८५७,
 ८५८, ८९२, ८९५, ८९८, ९०४-९०७ । १०६,९; ९९४
 पूयमान धन्वा ९७,३, ८५९
 पूयमानः सोतृभिः ९६,१६; ८४८
 पूभिः ८८,४; ७८८
 पूवांसः ७७,३, ६७८
 पूर्य ३६,३; २६२ । ६७,८; ५७५ । ७७,२; ६७७ ।
 ८६,२०; ७४७ । ९६,१०, ८४२ । १०९,७; १०४८
 पृञ्चन् देवान् स्वेन रसेन ९७,१२; ८६८
 पृतनासु पग्नि. १,९१,२१, ११२१
 पृत्सु वन्वन् ९६,८; ८४०

पृथिव्यै शम् १०९, ५; १०४६
 पृथिव्या जनन २, ४०, १; १२१७
 पृथिव्याः जनिता ९६, ५, ८३७
 पृथिव्याः धरुणः ८७, २; ७७७ । ८९, ६, ७९८
 पृथिव्या. नाभा ७२, ७, ६४५
 पेरवः ७४, ४; ६६०
 पोता ६७, २२; ५८९
 प्रच्युत ८०, ४; ६९४
 प्रजायै शम् १०९, ५; १००६
 प्रतपन् ज्योतिषातमः १०८, १२; १०३७
 प्रतरण १, ९१, १९; १११९
 प्रतरीता अङ्कः ८६, १९; ७४६
 प्रतरीता उषस ८६, १९; ७४६
 प्रतरीता दिवः ८६, १९, ७४६
 प्रतनः-स्नास २३, २; १८१ । ७३, ३; ६५० । ९८, ११, ९२५
 प्रतनवत् ९१, ५; ८१०
 प्रथम १०७, २३; १०२२
 प्रथमः धामधा ८६, २८; ७५५
 प्रथमः मनीषी ९१, १; ८०६
 प्रथमः युस्तु ८२, ३; ७९५
 प्रभुः ८३, १; ७०६ । ८६, ५, ७३२
 प्रभूवस्तुः २९, ३; २२० । ३५, ४; २५९
 प्रभूवत् २९, १, २१८
 प्रयसे हित ६६, २३, ५६०
 प्रयस्वान् ६६, २३; ५६०
 प्रवृण्वन्तः २१, २, १६७
 प्रसुपः ६९, ६; ६१५
 प्रस्थिता ६९, ८, ६१७
 प्रिय ७, ६; ५५ । १०, ९, ८५ । २५, ३; १९६ ।
 ५०, ३, ३४३ । ६३, २३, ४७० । ६४, १०, २७;
 ४८७, ५०४ । ६७, २९, ५९६ । ७९, ५, ६९० । ८५, २,
 ७१७ । ९६, ९; ८४१ । ९७, ३; ८५९ । १०२, २,
 ८६१ । १०७, ५, ६, १३; १००४, १००५, १०१२ ।
 १०८, ८; १०३३ । १०, २५, १०, १०६९ । अथ०
 ३, ५, ३-४; ११७८, ११७९
 प्रियः इन्द्रस्य ९८, ६; ९२० । १०२, १; ९३५
 प्रियस्तोमः १, ९१, ६, ११०६
 पसरः ७४, ३; ६५९

बध्नुः ११, ४; ८९ । ३१, ५; २३५ । ३३, २; २४३ ।
 ६३, ४, ६, ४५१, ४५३ । ९८, ७ ९२१ । १०७, १९-
 २०, १०१८-१०१९ ।
 बर्हिषि प्रिय ७२, ४, ६४२ । १०७, १५; १०१४ ।
 १०८, ८; १०३३ । ११३, ५, १०८७
 बर्हिष्मान् ४४, ४; ३११
 बली [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, १, ११७६
 बाधमान सृधः ९७, ४३, ८९९
 बार्हतै रक्षितः १०, ८५, ४, ११७४
 बिभ्रत् आयुधानि ९६, १९, ८५१
 बिभ्रत् नृम्णानि ४८, १; ३३१
 बिभ्रत् विश्वा वसूनि १०८, ११, १०३६
 बृहत् ६६, २४, ५६१ । ७५, १, ६६६
 बृहन्मतिः ३९, १, २७८
 बृहस्पतिसुतः वा०य० ८, ९, १२०३
 ब्रह्मणस्पति ८२, १; ७०६
 ब्रह्मणा पुनान. ११३, ५, १०८७
 ब्रह्मा देवानाम् ९६, ६; ८३८
 ब्राह्मणेषु हितम् साम० १३००; १२११
 भग ९७, ५५; ९११
 भङ्गः ६१, १३; ४००
 भद्र १, ९१, ५, ११०५
 भद्रान् कृण्वन् ९६, १ ८३३
 भरमाणः रुशन्तं वर्णम् ९७, १५; ८७१
 भराय सानसि. १०६, २, ९८७
 भरेषु राजा १, ९१, २१, ११२१
 मानुः ८५, १२; ७२७
 भीमः ७०, ७, ६२६ । ९७, २८, ८८४
 भुवना विश्वा संपश्यन् १०, २५, ६; ११६५
 भुवनस्य पतिः ३१, ६; २३५
 भुवनस्य राजा ९६, १०; ८४२ । ९७, ४०, ८९६
 भुवनस्य विश्वस्य गोपा २, ४०, १, १२१७
 भुवनस्य विश्वस्य राजा ९७, ५६, ९१२
 भुवनेषु अर्पितः ८६, ४५, ७७२
 भूरिक्षाः २६, ५, २०४
 भूरिधायाः २६, ३; २०२
 भूरिषाद् (साह्) ८८, २, ७८६
 भूर्णयः १७, १, १३७ । ४१, १; २९०
 भूषन् देवेषु यशः मर्ताय ९४, ३, ८२५
 अमाः २२, २; १७४

मंहना ३७, ६, २७१
 मंहयद्रयिः ५२, ५; ३५५ । ६७, १. ५६८
 महयुः २०, ७; १६५
 महीयान् भूतिदाभ्यः चित् ६६, १७, ५५४
 महिष्ठः १, ३, ३ । १०२, ६; २६५
 मघवा ८०, ३; ६९८
 मघवा मघवद्भ्यः ९७, ५५, ९११
 मघवा वीरेभिः अश्वैः ९६, ११; ८४३
 मणि [पर्णमणिः] अयं ३, ५, ३, ८, ११७८, ११८३
 मतवान् ८६, १३; ७४०
 मति जनयन् १०७, १८; १०१७
 मतिभिः परिष्कृतः १०५, २, ९८१
 मतिभिः पुनान ९६, १५; ८४७
 मतीनां जनिता ९६, ५, ८३७
 मतीनां परि (ने) णेता १०३, ४; ९७१
 मतीनां पिता ७६, ४, ६७४
 मती जुष्टः ४४, २; ३०९
 मत्सर-रासः १३, ८; १११ । १७, ३, १३९ । २१, १,
 १६६ । २६, ६, २०५ । २७, ५; २१० । ३०, ६, २२९ ।
 ३४, ४; २५१ । ४६, ४, ६, ३२३, ३२५ । ५३, ४, ३५९ ।
 ६३, १०, १७, २४; ४५७, ४६४, ४७१ । ६५, १०, ५१७ ।
 ६६, ७, ५४४ । ६९, ६; ६१५ । ७२, ७, ६४५ । ८६, १०,
 २१, ७३७, ७४८ । ९६, ८, १३; ८४०, ८४५ । ९७, ११;
 ८६७ । १०७, १४, २३, २५, १०१३, १०२२, १०२४
 मत्सरवान् ९७, ३२; ८८८
 मत्सरिन्तम ६३, २; ४४९ । ६७, २; ५६९ । ७६, ५;
 ६७५ । ९९, ८, ९३४
 मद-दा-दास १७, ३, १३९ । २३, ७; १८६ । २५, १;
 १९४ । २७, ५, २१० । ४६, ६, ३२५ । ६१, १७,
 १९, ४०४, ४०६ । ६२, १४; ४३१ । ६३, १६; ४६३ ।
 ६८, ३, ६०२ । ६९, ७; ६१६ । ७८, ४; ६८४ ।
 ७९, ५; ६९० । ८०, २, ६९२ । ८५, २; ७१७ ।
 ८६, १-२, ३५, ७२८-७२९, ७६२ । ९७, २; ८५८ ।
 ९९, ३; ९२९ । १०१, ४; ९४७ । १०४, २; ९७५ ।
 १०५, २, ९८१ । १०७, १७, १०१६ । १०८, १, १०२६ ।
 १०, २५, १०, ११६९
 मदच्युत् १२, ३, ९७ । ३२, १; २३६ । ५३, ४, ३५९ ।
 ७९, २; ६८७ । १०८, ११; १०३६
 मदानां पति १०४, ५, ९७८
 मदिन्तम १५, ८, १२८ । २५, ६; १९९ । ५०, ४, ५;

३४४, ३४५ । ६७, १८; ५८५ । ७४, ९, ६६५ । ८०, ३;
 ६९३ । ८५, ३; ७१८ । ८६, १, १०; ७२८, ७३७ ।
 ९६, १३; ८४५ । ९९, ६; ९३२ । १०८, ५, १५; १०३०,
 १०४० । १, ९१, १७, १११७
 मदिरः-रास ८५, ७; ७२२ । ८६, २, ७२९ । ९७, १५;
 ८७१ । १०७, १२; १०११ ।
 मदिष्ठः ६, २; ४९ । ६, ४७, २, ११२८
 मद्राः ते आहनसः विहायसः ७५, ५; ६७०
 मदाय जुष्टः ९७, १९; ८७५
 मद्रेषु सर्वेषाः १८, १-७; १४५-१५१
 मद्यः ३८, ५, २७६ । ८६, ३५, ७६२
 मद्रा ८६, ३५, ७६२
 मधु ११, ५, ९० । १८, २; १४६ । ३९, १, २८२ ।
 ५१, ३, ३४८ । ६९, २, ६०० । ७०, ८; ६२७ । ७१, ४;
 ६३३ । ७२, २, ६४० । ७४, ३, ६५९ । ८, ४८, १; ११३५
 मधुजिह्वाः ७३, ४; ६५१
 मधुशृणुः ८९, ४, ७९६
 मधुमान्-मन्तः ६१, ९, ३२६ । ६३, ३; ४५० । ६८, १,
 ८; ६००, ६०७ । ६९, २; ६११ । ८०, ५; ६२५ ।
 ८५, १०; ७२५ । ७७, १; ६७६ । ८५, ६; ७२१ ।
 ८६, १, ७२८ । ८७, ४; ७७९ । ९६, १३; ८४५ ।
 ९७, ४८; ९०४ । १०६, ७; ९९२ । ११०, ११, १०७४ ।
 ६, ४७, १; ११२७
 मधुमत्तमः-माः १२, १; ९५ । ३०, ५-६; २२८-२२९ ।
 ५१, २, ३४७ । ६२, २१; ४३८ । ६३, १६, १९;
 ४६३, ४६६ । ६४, २२; ४९९ । ६७, १६; ५८३ ।
 ८०, ४; ६९४ । १००, ६; ९४० । १०१, ४, ९४७ ।
 १०५, ३, ९८२ । १०८, १, १५; १०२६, १०४०
 मध्व अंशुः ८९, ६; ७९८
 मध्वः अयासः ८९, ३, ७९५
 मध्वः रस ६२, ६, ४२३
 मध्वः सूदः ९७, ४४; ९००
 मधुश्चुत् ५०, ३; ३४३ । ६५, ८; ५१५ । ६६, ११, ५४८ ।
 ६७, २, ५७६
 मन चित् ११, ८, ९३
 मनसः जवीयान् ९७, २८; ८८४
 मनसस्पतिः ११, ८, ९३ । २८, १, २१२
 मनीषी विणः ६५, २९; ५३६ । ७८, ३; ६८३ । ९६, ८;
 ८४० । ९७, ५६; ९१२ । १०७, १४; १०१३
 मनीषी प्रथमः ९१, १; ८०६

मनुषः ७२,४; ६४२
 मनोता धिया २१,१, ८०६
 मन्दमानः ६५,५; ५१२
 मन्दयन् ६७,१६; ५८३
 मन्दानः ४७,१; ३२६
 मन्वी-न्दिनः ५८,१,४; ३७६,३७९ । १०१,४, ९४७ ।
 १०७,९; १००८
 मन्द्रः ६५,२९; ५३६ । ६७,१; ५६८ । ६८,६, ६०५ ।
 १०९,८; १०४९
 मन्द्रतमाः ९७,२६; ८०२
 मयोमू ६५,२८; ५३५ । ७८,४, ६८४
 मरुद्गण ६६,२६; ५६३
 मरुत्वान्-स्वन्तः १०७,२५, १०२४ । ६,४७,५, ११३१
 मउर्य १५,७, १२७ । ३४,४; २५१ । ६३,२०, ४६७ ।
 १०७,१३; १०१२
 मर्षानां राजा ९७,२४, ८००
 मर्मज्ञानः-नास ६४,१७, ४९४ । ७०,५; ६२४ । ९१,२;
 ८०७ । ९५,४, ८३१
 मर्मज्ञानः भविभि. ८६,११, ७३८
 मर्मज्ञान आयुभिः ५७,३, ३७४ । ६६,१३, ५६०
 मर्मज्ञानः सिन्धुभि ८६,११; ७३८
 मर्मज्ञयमानः ८५,५; ७२०
 मर्मज्ञयमानः आयुभि ६२,१३; ४३०
 मर्यः ९७,१८; ८७४
 मह. ७२,७; ६४५
 महाम् (द्वि०) ६५,१; ५०८
 महान् २,४,६, १४,१६ । ९,३, ७० । ६६,१६; ५५३ ।
 ७७,५, ६८० । १०९,४; १०४५ । ६,४७,५; ११३७
 महान् जायमानः ५९,४, ३८३
 महागयः [भग्निः] ६६,२०, ५५७
 महामहिमतम् ४८,२; ३३२
 महि ७४,३; ६५९ । १०८,१, १०२६
 महिमतः ९७,७, ८६९ । १०२,९, २४३
 महिषः ८२,३; ७०३ । ८६,४०, ७६७ । ९६,१८,१९;
 ८५०,८५१ । ९७,४१, ८९७ । १०३,५, १००४ ।
 ११३,३; १०८५
 महिषः मृगाणाम् ९६,६; ८३८
 महीनां शिशुः १०२,१, ९६०
 महे (च०) ६५,७; ५१४
 मावयन् देवजनम् ८०,५; ६२५ । ८४,३; ७१३

मादयितुः १०१,१, ९४४
 भिक्षमाणः ७०,२; ६२१
 मित्रः-त्राः ७७,५; ६८० । १०१,१०; ९५३ । १,९१,३;
 ११०३
 मित्राय जुष्टः १०८,१६; १०४१
 मीढ्वान् ६१,२३, ४१० । ७४,७, ६६३ । ८५,४, ७१९ ।
 १०७,७, १००६ । ८,७९,९; ११५८
 मूर्धा १,४३,९; ११००
 मृगाणां महिष ९६,६, ८३८
 मृजान. भग्नि १०९,१७, १०५८
 मृजानः अप्सु ९६,१०, ८४२
 मृजानः तन्वम् ९६,२०; ८५२
 मृज्यमान ३०,२; २२५ । १०७,२१, १०२०
 मृज्यमान कविभि ७४,९, ६६५
 मृज्यमानः गभस्त्वोः २०,६; १६४ । ३६,४, २६३ ।
 ६४,५, ४८२ । ६५,६; ५१३
 मृज्यमानः मनीषिभि ६४,१३, ४९०
 मृज्यमानः सुकर्मभिः दशभिः ७०,४, ६२३
 मृधः बाधमान ९७,४३; ८९९
 मृष्टाः २२,४; १७६
 मृळयाकुः ८,७९,७, ११५६
 मेधिरः ६८,४, ५९२
 मेघ्यः १०७,११; १०१०
 यज्ञः १०१,३; ९४६
 यज्ञपति वा०य० ८,२५; १२०४
 यज्ञसाधनः ७२,४; ६४२
 यज्ञस्य आत्मा ६,८,४८
 यज्ञस्य केतुः ८६,७, ७३४
 यज्ञस्य ज्योतिः ८६,१०; ७३७
 यज्ञस्य पूर्व्यः अग्रमा २,१०; २०
 यज्ञियः ७१,६, ६३५ । ७७,५; ६८०
 यतः ६४,२९; ५०६
 यतः नृभिः १०८,१५; १०४०
 यत वाजिभिः ६४,१५, ४९२
 यतः वृषभि. ३४,३; २५०
 यतिः ७१,७, ६३६
 यशाः अथ० ६,५८,३; १२५४
 यशसः ८,४८,५; ११३९
 यशस्वरः ९७,३; ८५९
 यातयन् ह्य जनाय ३९,२; २७९

युजानः पदं ऋकभिः ६४, १९; ४९६
 युजानः वृषभिः ९७, २८; ८८४
 युजानः हरितः ८६, ३७; ७६४
 युस्तु अषाढः १, ९१, २१; ११२१
 युस्तु प्रथमः ८९, ३; ७९५
 युवा ९, ५, ७२। ६७, २९, ५९६
 येमानः नृभिः ७५, ३; ६६८ । १०७, १६; १०१५ ।
 १०९, ८, १८, १०४९, १०५९
 बृहमाणः ११०, ३; १०६६
 रक्षमाणः वृजनम् ८७, २, ७७७
 रक्षांसि अपजङ्घनत् ४९, ५; ३४०
 रक्षांसि सेधन् ११०, १२, १०७५
 रक्षितः बार्हतेः १०, ८५४; ११७४
 रक्षोहा १, २; २, ३७, ३; २६८ । ६७, २०; ५८७
 रघुयामा ३९, ४, २८१
 रघुवर्तनि ८१, २, ६९७
 रजस्तुरः ४८, ४, ३३४ । १०८, ७, १०३२
 रण्यः ९६, ९, ८४१ ।
 रण्यजित् ५९, १, ३८०
 रत्ना दधानः दमेदमे सप्त ६, ७४, १; १२२३
 रत्नानि दाशुवे दधत् ३, ६, २६
 रथः ३८, १; २७२
 रथजित् ७८, ४; ६८४
 रथिरः ९७, ४६, ४८, ९०२, ९०४
 रथिर गविष्टिषु ७६, २, ६७२
 रथीतमः ६६, २६; ५६३
 रथ्यः १६, २, १३०
 रन्ता विश्वेषु कान्येषु ९१, ३; ८१४
 रथिपति २, ४०, ६; १२२२
 रथिपतिः रथीणाम् ९७, २४; ८८०
 रथिषाद् ६८, ८, ६०७
 रथिं तुञ्जान ८७, ६; ७८१
 रथीणां जननः २, ४०, १; १२१७
 रथीणां पतिः १०१, ६; ९४९
 रथीणां रथिपतिः ९७, २४, ८८०
 रथीणां सिंघासतुः ४७, ५; ३३०
 रसः ६, ६; ४६। ३८, ५, २७६। ६२, ६, ४२३। ७६, १;
 ६७१। ७७, ५, ६८०। ७९, ५, ६९०। ८४, ५, ७१५
 रसः इन्द्रियः ४७, ३, ३२८। ८६, १०; ७३७
 रसः सोम्यः ६७, ८; ५७५
 रसः संभृतः ऋषिभिः ६७, ३१, ३२; ५९८, ५९९

रसवान् ६, ४७, १, ११२७
 रसः यस्य मघः तीमः ६५, १५, ५२२
 रसाव्यः ९७, १४, ८७०
 रसी ११३, ५; १०८७
 राजा १०, ३; ८८। ४८, ३; ३३३। ६१, १७, ४०४।
 ६५, १६; ५२३। ७८, १; ६८१। ८३, ५; ७१०।
 ८५, ३, ९, ७१८, ७२४। ८६, ८, ४०, ४५; ७३५, ७६७,
 ७७२। १०७, १५, १६; १०१४, १०१५। १०८, ८;
 १०३३। ११३, ४; १०८६। ११४, २, ४, १०९५, १०९७।
 ८, ७९, ८, ९; ११५७, ११५८। १०, २५, ७; ११६६।
 १, ९१, ३-५; ११०३-११०५। ६, ७५, १८; १२२८।
 १०, १६७, ३, १२३७। अथर्व० ५, ३, ७, ११८७।
 ६, ६८, ३, १२५५। ६, ९९, ३, १२६०। वा० य०
 २, २६; ११९६
 राजा देवानाम् ९७, २४; ८८०
 राजा भुवनस्य ९६, १; ८४२। ९७, ४०; ८९६
 राजा मर्यानाम् ९७, २४; ८८०
 राजा विश्वस्य ७६, ४, ६७४
 राजा विश्वस्य भुवनस्य ९७, ५६; ९१२
 राजा वृजनस्य ९७, १०; ८६६
 राजा वृजन्यस्य ९७, २३; ८७९
 राजा सिन्धूनाम् ९६, ३३; ७६०। ८९, १; ७९४
 रायाम् आनेता १०८, १३, १०३८
 रिशादाः ६९, १०; ६१९
 रीत्यापः १०६, ९; ९९४
 रुजत् वि द्दहा ३४, १; २४८
 रुक्षणिः शतं पुरः ४८, २; ३३२
 रेतोधाः ८६, ३९; ७६६
 रेभः ७, ६, ५५। ६६, ९; ५४६। ८६, ३१; ७५८
 रेभन् ९६, ६, १७; ८३८, ८४९। ९७, १, ७, ४७; ८५७,
 ८६३, ९०३। १०६, १४; ९९९
 रोचना दिवः ३७, ३; २६८
 रोचमानः १११, २; १०७७
 रोचयन् रुचा प्रत्यवत् ४९, ५; ३४०
 रोदस्योः जनिता ९०, १; ८००
 लोककृत् ८६, २१; ७४८
 लोककृत् २, ८; १८
 वृक्षा ७५, २; ६६७
 वचोविद् ९१, ३; ८०८
 वज्रः इन्द्रस्य ७२, ७; ६४५। ७७, १; ६७६

वज्रः सहस्रसा भुवत् ४७,३, ३२८
 वत्सः १९,४; १५५
 वदन् ऋतम् ११३,४; १०८६
 वदन् अदाम् ११३,४; १०८६
 वदन् सत्यम् ११३,४; १०८६
 वधस्तुः ५२,३; ३५३
 वधूयुः ६९,३; ६१२
 वनकक्षः १०८,७; १०३२
 वनवत् ७७,४; ६७९
 वनस्पति १,९१,६; ११०६
 वना वसान ९०,२, ८०१
 वनानां स्वधितिः ९६,६; ३८
 वने क्रीळन् ६,५; ४५ । १०६,११; ९९६
 वने चक्रदः १०७,२२; १०२१
 वन्धन् पृत्सु ९६,८; ८४०
 वपुष्टरः वपुषः ७७,१, ६७६
 वयः ८,४८,१, ११३५
 वयस्कृत २१,२; १६७ । ६९,८, ६१७
 वयोभुवः ६५,२६, ५३३
 वयोधाः ८१,३; ६९८ । ९०,२; ८०१ । ९६,१२; ८४४ ।
 ११०,११; १०७४ । ८,४८,१५; ११४९
 वय्य ६८,८; ६०७
 वरः ९७,२२; ८७८
 वराहः ९७,७; ८६३
 वरिवांसि कृण्वन् ९७,१६; ८७२
 वरिवोधातम १,३, ३
 वरिवोविद्-दः २१,२; १६७ । ३७,५, २७० । ६१,१२;
 ३९९ । ६२,९; ४२६ । ९६,१२; ८४४ । ११०,११, १०७४
 वरिवोवित्तरः ८,४८,१; ११३५
 वरुणः ७३,३; ६५० । ७७,५; ६८० । ९५,४; ८३१ ।
 १,९१,३; ११०३
 वरुणेन शिष्टः अथ० ३,५,४; ११७९
 वरुणाय जुष्टः १०८,१६; १०४१
 वरुथं उरु ८,७९,३; ११५२
 वरेण्यः ६१,१९; ४०६
 वर्णम् ६५,८; ५१५
 वर्धनः ९७,३९; ८९५
 वर्धन्तः हन्तम् ६३,५; ४५२
 वर्धयन् ५१,४; ३४९
 वर्धिता ९७,३९; ८९५

वर्पांसि दुहितुः तिरोदधानः ९७,४७; ९०३
 वर्षयन् घाम् उत हमाम् ९६,३; ८३५
 वशी वा०य० ८,५०; १२०८
 वसानः अपः १६,२, १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०;
 ७६७ । ९६,१३, ८४५ । १०७,४, १८,२६; १००३,
 १०१७, १०२५ । १०९,२१, १०६२
 वसान ऊर्जम् ८०,३; ६९३
 वसानः गाः अपः ४१,१; २९६
 वसानः घृतम् ८२,२; ७०२
 वसानः द्रापिम् ८६,१४; ७४१
 वसानः नभः ८३,५; ७१०
 वसानः नृणा ७४; ५३
 वसान भद्रा वस्त्रा ९७,२; ८५८
 वसानः वना ९०,२; ८०१
 वसान शर्म श्रिवरुथम् अप्सु ९७,४७, ९०३
 वसुः ९८,५; ९१९
 वसुविद् ८६,३९, ७६६ । ९६,१०; ८४२ । १०१,११;
 ९५४ । १०४,४; ९७७ । १,९१,१२; १११२
 वसु आदधानः ९०,१; ८००
 वसूनि विश्वा बिभ्रत् १०८,११; १०३६
 वसूनाम् आनेता १०८,१३; १०३८
 वस्त्रा वसानः ९७,२; ८५८
 वस्वः उत्सः ९७,४४, ९००
 वक्त्रिः २०,५,६; १६३, १६४ । ३६,२, २६१ । ६४,१९;
 ४९६ । ६५,२८; ५३५
 वक्त्रिः विशाम् १०८,१०; १०३५
 वाचः पतिः २६,४; २०३
 वाचस्पतिः १०१,५; ९४८
 वाचम् हृष्यन् ९५,५; ८३२
 वाचं जनयन् ७८,१; ६८१ । १०६,१२, ९९७
 वाचं हिन्वानः ९७,३२; ८८८
 वाजगन्धः ९८,१२, ९२६
 वाजपत्यः ९८,१२; ९२६
 वाजयन् अपः ६८,४; ६०३
 वाजयुः ४४,४; ३११ । ६३,१९; ४६६ । १०३,६; ९७३ ।
 १०६,१२; ९९७ । १०७,११; १०१०
 वाजयुः देववीतौ ९६,१४; ८४६
 वाजसनिः ११०,११; १०७४
 वाजसाः २,१०, ८२०
 वाजसातमः ६६,२७; ५६४ । १०२,६; ९४०

वाजानां पति ३१, २; २३१

वाजी-जिन १४, ७; ११९ । १५, ५, १२५ । १७, ७;
१४३ । २१, ७; १७२ । २२, १; १७३ । २६, १, २०० ।
२८, १; २१२ । ३६, १; २६० । ३७, ३, २६८ ।
४५, ४, ३१७ । ५३, ४; ३५९ । ६२, २, १८, ४१९,
४३५ । ६३, १७, ४६४ । ६४, २९; ५०६ । ६५, ११,
५१८ । ६६, १०; ५४७ । ७४, १; ६५७ । ८०, २;
६९२ । ८६, ११; ७३८ । ८७, १, ७७६ । ८९, ४;
७९६ । ९७, १०, ८६६ । १०६, ११; ९९६ । १०७, ५,
१००४ । १०९, ६, १०, १७, १९; १०४७, १०५१, १०५८,
१०६०

वायवे जुष्टः १०८, २६; १०४१

वावशानः ९३, २, ४; ८१९, ८२१ । ९५, ४, ८३१ ।
९६, १४; ८४६

वावृधानः ८५, १०, ७२५

विघ्नन् दुरितानि ९७, १६, ८७२

विघ्नन्तः पुरु दुरिता ६२, २; ४१९

विघ्नन् रक्षांसि १७, ३, १३९ । ३७, १, २६६

विचक्षण १२, ४, ९८ । ३७, २, २६७ । ५१, ५; ३५० ।
६६, २३, ५६० । ७०, ७, ६२६ । ७५, १; ६६६ ।
८५, ९, ७२४ । ८६, ११, १९, २३, ३५; ७३८, ७४६,
७५०, ७६२ । ९६, २, ८३४ । ९७, २, ८५८ । १०६, ५;
९९० । १०७, ३, ५, ७, १६, २४, १००२, १००४, १००६,
१०१५, १०२३

विचक्षाणः ३९, ३, २८०

विचरन् मातरा ६८, ४; ६०३

विचर्षणिः ११, ७, ९२ । २८, ५, २१६ । ४०, १; २८४ ।
४१, ५, २९४ । ४४, ३, ३१० । ४८, ५, ३३५ । ६०, १,
४; ३९५, ३९८ । ६२, १०; ४२७ । ६७, २२, ५८९ ।
८४, १; ७११

विततः दिवस्पदे ८३, २; ७०७

विततः पवित्रे ७३, ९, ६५६

विदत् गातुम् ९६, १०; ८४२

विदानः व्रता आयुधा ३५, ४; २५७

विदानाः भस्य (ऋतस्य) योजनम् ७, १; ५०

विद्वान् ७०, १०; ६२९ । ७३, ८; ६५५ । ७७, ४, ६७९

विद्वान् देवानां उभयस्य जन्मनः ९१, २; ६९७

विधानैः गुपितः १०, ८५, ४; ११७४

विपश्चितः १२, ३; ९७ । २३, ३; १७५ । ३३, १; २४२ ।

८६, ३६, ४४, ७६३, ७७१ । ९६, २२, ८५४ । १०१, १२,
९५५

विप्रः १३, २; १०५ । १८, २; १४६ । ४०, १; २८४ ।

६५, २९; ५३६ । ६६, ८; ५४५ । ८४, ५; ७१५ ।

९७, ३७; ८९३ । १०७, ६, ७; १००५, १००६ ।

८, ७९, १, ११५०

विप्रवीरः ४४, ५; ३१२

विप्राणाम् ऋषिः ९६, ६; ८३८

विभूवसु ७२, ७; ६४५ । ८६, १०; ७३७

विभृत्वा ९६, १९, ८५१

विमानः अह्नाम् ८६, ४५; ७७२

विमानः रजसः ६२, १४, ४३१

विरोचयन् ३९, ३; २८०

विवस्वतः आपानसः १०, ५; ८१

विवेविदत् इन्द्रस्य सख्यम् ८६, ९; ७३६

विशां वह्निः १०८, १०, १०३५

विश्वचक्षाः ८६, ५; ७३२

विश्वचर्षणिः १, २; २ । ६६, १; ५३८

विश्वजित् ५९, १; ३८० । ८, ७९, १; ११५०

विश्वतो गोपाः १०, २५, ७, ११६६

विश्वदर्शतः ६५, १३; ५२० । १०६, ५; ९९०

विश्वदेवः ९२, ३; ८१४ । १०३, ४; ९७१

विश्ववारः ८८, ३; ७८७ । ९१, ५; ८१०

विश्ववित् २७, ३; २०८ । २८, १, ५; २१२, २१६ ।
६४, ७; ४८४ । ८६, २९, ३२; ७५६, ७६६ । ९७, ५६,
९१२

विश्ववेदा १, ९१, २; ११०२

विश्वस्मै साधारणः ४८, ४; ३३४

विश्वस्य ईशानः १०१, ५; ९४८

विश्वस्य भुवनस्य गोपा २, ४०, १, १२१७

विश्वस्य भुवनस्य राजा ९७, ५६; ९१२

विश्वायुः ८६, ४१, ७६८

विष्टप ऋतस्य ३४, ५, २५२

विष्टम्भ २, ५; १५

विष्टम्भः दिवः ८६, ३५; ७६२ । ८७, २, ७७७ । ८९, ६;
७९८ । १०८, १६; १०४१

विष्णोः जनिता ९६, ५; ८३७

विहायाः ८, ४८, ११; ११४५

वीतिराधाः ६२, २९; ४४६

वीतये साधनः १०५, ३; ९८२

वीरः ३५,३; २५६। १०१,१५, ९५८। ११०,७; १०७०
 वीर [पर्णमणि] अथ० ३,५,८; ११८३
 वीरयुः ३६,६; २६५
 वीरुधाम् अधिपतिः अथ० ५,२४,७; ११८४
 वीरुधां पतिः ११४,२; १०९५
 वीर्यं वर्धन्तः (हन्तस्य) ८,१, ५९
 वृकः ७९,३; ६८८
 वृजनं रक्षमाणः ८७,२; ७७७
 वृजनस्य गोपाः १,९१,२१, ११२१
 वृजनस्य राजा ९७,१०; ८६६
 वृजन्यस्य राजा ९७,२३, ८७९
 वृजिनस्य हन्ता ९७,४३, ८९९
 वृत्रहा २५,३; १९६। २८,३; २१४। ३७,५, २७०।
 ८९,७; ७९९। ९८,५; ९१९। १,९१,५; ११०५
 वृत्रहन्तमः १,३, ३। २४,६; १९२। १०,२५,९, ११६८
 वृत्राणां हन्ता ८८,४; ७८८
 वृत्राणि म्रन्तः १७,१, १३७
 वृषन्-वा २,१,२,६, ११,१२,१६। ६,१,६; ४१,४६।
 ७,३; ५२। १०,६; ८२। १९,३; १५४। २५,३,
 १९६। २७,३,६, २०८,२११। २८,४, २१५।
 २९,१; २१८। ३४,३; २५०। ३७,१,५; २६६,२७०।
 ३८,१; २७२। ४०,२,६; २८५,२८९। ५१,४; ३४९।
 ६१,२८; ४१५। ६२,११; ४२८। ६३,२०,२१,
 ४६७,४६८। ६४,१,२,३, ४७८,४७९,४८०। ६५,४,
 १०; ५११,५१७। ७०,९; ६२८। ८०,२,३, ६९२,
 ६९३। ८१,२; ६९७। ८२,१; ७०१। ८६,३,७,११,
 १२,१९,३१,४४; ७३०,७३४,७३८,७३९,७४६,७५८,
 ७७१। ८७,२४; ७७९। ९०,२; ८०१। ९१,३, ८०८।
 ९३,२, ८१९। ९६,७, ८३९। ९७,१३,४०, ८६९,
 ८९६। १०१,१६, ९५६। १०७,२२, १०२१।
 १०८,१२; १०३७। १,९१,२, ११०२। २,४०,३,
 १२१९
 वृषा वृषत्वेभिः महित्वा १,९१,२; ११०२
 वृषभिः यतः ३४,३, २५०
 वृषभिः युजान २७,२८, ८८४
 वृषयुताः ६९,७; ६१६
 वृषयुः ७७,५, ६८०
 वृषम्रतः ६२,११; ४२८। ६४,१; ४७८
 वृषमः १९,४; १५५। ७०,७, ६२६। ७२,७; ६४५।
 ७६,५, ६७५। ८०,५; ६९५। ८५,२; ७२४। ८६,३८;
 ६० [सोमः] १७

७६५। १०८,८,११; १०३३,१०३६। ११०,९, १०७२।
 ६,४७,५; ११३१
 वृष्टयः २२,२, १७४
 वृष्टिधावः १०६,९, ९९४
 वृष्टिमान् २,९, १२
 वेधाः २,३; १३। १६,७, १३५। २६,३, २०२।
 १०२,४; ९६३। १०३,१, ९६८
 वेविजानः ७७,२; ६९७
 व्यक्तः ७१,७, ६३६
 व्यभ्रवत् रश्मिभिः ६६,२७; ५६४
 झंसन् निवचनानि ९७,२, ८५८
 शकुनः ८५,११; ७२६। ९६,१९, ८५१
 शचीवस्-वान् ८७,९; ७८४
 शतधारः ८५,४, ७१९। ८६,११, ७३८। ९६,१४, ८४६
 शतवाज ९६,९; ८४१। ११०,१०; १०७३
 शतामघः ६२,१४, ४३१
 शत्रून् अपम्रन् ९६,२३; ८५५
 शं दिवे पृथिव्यै प्रजायै १०९,५; १०४६
 शम्भविष्टः ८८,३, ७८७
 शर्धाय साधनः १०५,३, ९८२
 शर्याणि तान्वा जहत् १४,४, ११६
 शवसस्पतिः ३६,६, २६५
 शिवः सखा १०,२५,९; ११६८
 शिशानः शृङ्गे ७०,७; ६२६
 शिशुः १,९, २। ८५,११, ७२६। ८६,३१,३६; ७५८,
 ७६३। २६,१७, ८४९। १०९,१२, १०५३।
 १०,८५,१; १२३८
 शिशुः दिव ३३,५, २४६। ३८,५; २७६
 शिशुः महीनाम् १०२,१; ९६०
 शिष्टः वरुणेन अथ० ३,५,४, ११७९
 शुक्रः-क्राः क्रासः २१,६; १७१। ३३,२, २४३। ४६,४, ३२३।
 ६३,१४, २५, ४६१,४७२। ६४,४, २८, ४८१,५०५।
 ६५,२६, ५३३। ६६,५, २४; ५४२,५६१। ६७,१८,
 ५८५। ९७,२०,३२; ८७६,८८८। १०९,३; १०४४।
 ५,६; १०४६-४७। वा०य० ८,४८,४९; १२०६ ७
 शुचिः ९,३; ७०। २४,६,७; १९२,१९३। ७०,८,
 ६२७। ७२,४, ६४२। ७५,४, ६६९। ८६,१३;
 ७४०। ८८,८; ७९२। १,९१,३, ११०३
 शुचिबन्धुः ९७,७; ८६३
 शुद्धः ७८,१, ६८१

शुभ्रः १४,५; ११७ । ६२,५, ४२२ । ६३,२६; ४७३ ।
 ९६,२०, ८५२ । १०७,२४, १०२३
 शुभ्रशस्त्रमः शुभ्रैः ६६,२६, ५६३
 शुभ्रमानः कृत्यायुभि ३६,४, २६३ । ६४,५; ४७२
 शुष्म ७९,५, ६९०
 शुष्मी १४,३. ११५ । १८,७; १५१ । २७,६, २११ ।
 २८,६, २१७ । ३०,१; २२४ । ४१,३; २९२ । ७१,१,
 ६३० । ८८,७, ७९१
 शूर १५,१, १२१ । ८९,३ ७९५ । ९६,१, ८३३
 शूरग्राम ९०,३; ८०२
 शूरतर शूरैः ६६,१७, ५६५
 शूष ७१,२ ६३१
 शृगाणि दोधुवत् १५,४ १२४
 शोचन्तः ऋचा ७३,५, ६५२
 शोण ९७,१३; ८६९
 श्येन. ९६,१९, ८५१
 श्येन गृध्राणाम् ९६,६; ८३८
 श्येनज्यूतः ८९,२, ७९४
 श्येनभृत. ८७,६, ७८१
 श्रद्धां पदन् ११३,४ १०८६
 श्रवस्यव १०,१, ७७
 श्रित गौरी भधि १२,३, ९७
 श्रित सिन्धोः ऊर्मा भधि १४,१, ११३
 श्रितः सिन्धुषु ८६,८, ७३५
 श्रियः विश्वा अभि अर्पन् १६,६; १३४ । ६२,१९, ४३६
 श्रिये जातः ९४,४; ९२६
 श्रीणन् अप. १०९,२२; १०६३
 श्रीणान गोभिः १०९,१७, १०५८
 श्रीणाना अप्सु २४,१; १८७ । ६५,२६, ५३३
 श्रुष्टी जातासः १०६,१; ९८६
 श्लोकयन्त्रास ७३,६, ६५३
 स्यत् ८६,४७, ७७४
 सयतः ६९,३ ६१२
 सवमानः २६,४; २०३
 सविदानः पितृभिः ८,४८,१३; ११४७
 सवृक्तष्टणु ४८,२, ३३२
 सशिशान ९०,१; ८००
 सक्षणि हर्म्यस्य ७८,३, ६८३
 सखा १,९१,१५,१७, १११५,१११७,
 सखा शिव १०,२५,९, ११६८

सखा इन्द्रस्य ९६,२, ८३४ । १०१,६; ९४९ । १०,२५,
 ९; ११६८ ।
 सखा सखिभ्यः ६६,१,४, ५३८,५४१
 सख्यं गुषाणः इन्द्रस्य ९७,११, ८६७ । ८,४८,२, ११३६
 सचमान अपाम् ऊर्मिम् ९६,१९, ८५१
 सचमाणः ऊर्मिणा ७४,५, ६६१
 सजग्मानः स्वस्त्ये ६४,३, ५०७
 सजयन् विश्वा वसूनि २९,४; २२१
 सत्ता ८६,६, ७३३
 सत्पति १,९१,५; ११०५
 सत्य ९२,६, ८१७
 सत्य वदन् ११३,४, १०८६
 सत्यानि कृण्वन् ७८,५, ६८५
 सत्यकर्मा ११३,४, १०८६
 सत्यमन्मा ९७,४८, ९०४
 सत्यश्रुम् ९७,४६; ९०२
 सत्राजित् २७,४; २०९
 सखा ८७,७; ७८२
 सदावान् ९०,३; ८०२
 सदावृधः ४४,५, ३१२
 सदासर ११०,४; १०६७
 सधमाद्य २३,६, १८५
 सधस्था त्री १०३,२, ९६९
 सन् ८६,५,६, ७३२,७३३
 सनद्रयिः ५२,१, ३५१
 सनिता धनानि ९०,३, ८०२
 सन्तति ६९,२; ६११
 सन्ददिः ९९,७; ९३३
 सन्दहत अवतान् ७३,५, ६५२
 सन्तिः २९,२, २१९
 सवर्द्धघ धीनाम् अन्तः १२,७; १०१
 समप्सु अषाढहः ९०,३; ८०२
 समनाः ९६,९; ८४१
 समाहताः देवैः साम १३०१; १२१२
 समितीः श्यान ९२,६, ८१७
 समुद्रः २,५, १५ । ६४,८; ४८५ । ८६,२९, ७५६ ।
 ९७,४०, ८९६ । १०१,६, ९४७ । १०९,४; १०४५
 समुद्रिय १०७,१६, १०१५
 समुद्रे आहितः ६४,१९; ४९६
 संपश्यन् विश्वा भुवना १०,२५,६; ११६५

सम्भृतः ऋषिभि ६७,२९; ५९८ । साम० १३००,
१२११

सम्मनसः अथ० ६,७३,१; १२५६

संमिश्र ६१,२१; ४०८

सयोनिः [पर्णमणिः] अथर्व० ३,५,८, ११८३

सर्गाः सृष्टाः २२,१; १७३

सर्वधा मद्गेषु १८,१-७; १४५-१५१

सर्ववीरः ९०,३, ८०२

सविता ९७,४८, ९०४

सस्र्वांसः २२,४; १७६

सज्जिः २४,४, १९०

सहः ७१,४, ६३३

सहमानः अभिमातोः ३,६२,१५, ११२६

सहमानः घृतन्यून् ११०,१२, १०७५

सहसाबन् १,९१,२३, ११२३

सहस्र-अ (स्त्रा) ऋसाः ८८,७, ७९१

सहस्र-ऊ (स्त्रो) तिः ६२,१४, ४३१ । ६५,७, ५१४

सहस्रचक्षाः ६०,१,२, ३८४,३८५

सहस्रजित् ५५,४, ३६७ । ७८,४; ६८४ । ८०,४; ६९४ ।
८४,४, ७१४

सहस्रधार १३,१; १०४ । ८०,४; ६९४ । ८६,७,
३३, ७३४, ७६० । ८९,१; ७९३ । ९६,९; ८४१ ।
९७,५,१९, ८६१, ८७५ । १०१,६, ९१९ । १०७,१७;
१०१६ । १०८,८, १११, १०३३, १०३६ । १०९,१६,
१९; १०५७, १०६० । ११०,१०, १०७३ । साम०
१३०२, १२१३

सहस्रनी-णीतिः ७१,७; ६३६

सहस्रनी-णीथ ८५,४, ७१९ । ९६,१८, ८५०

सहस्रपाजस १३,३; १०६ । ४२,३, २९८

सहस्रभर्णस् ६०,२; ३८५

सहस्रमृष्टिः ८३,५; ७१० । ८६,४०; ७६७

सहस्रयामा १०६,५ ९९०

सहस्रेत ९६,८; ८४० । १०९,१७ १०५८

साधनः दक्षाय ६२,२९; ४४६

साधनः दक्षाय शर्षाय वीतये १०५,३; ९८०

साधारणः विश्वस्मै ४८,४, ३३४

सानसि भराय १०६,२; ९८७

साम कृण्वन् ९६,२०; ८५४

सासहिः समस्तु ४,८; ३८

सासहान् शत्रून् ११०,१२, १०७५

साहान् २०,१; १५९ । ९०,३, ८०२ । १०५,६; ९८५

सिंहः ८९,३, ७९५

सिक्त ९७,१५; ८७१

सिन्धुमाता ६१,७, ३९४

सिन्धुषु अन्तः उक्षितः ७२,७; ६४५

सिन्धुषु श्रित ८६,८, ७३५

सिन्धूनां क्राणा ८६,१९, ७४६

सिन्धूनां राजा ८६,३३, ७६० । ८९,२, ७९४

सिषासन् अपः ९०,४, ८०३

सिषासन् तृतीय धाम ९६,३८, ८५०

सिषासितुः रयीणाम् ४७,५; ३३०

सदिन् ऋतस्य योनिम् आ ६४,११, ४८८

सीदन् योना वनेषु आ ६२,८; ४२५

सीदन् वनस्य जठरे ९५,१; ८२८

सुकतुः २,३, १३ । १२,४, ९८ । ४८,३, ३३३ । ६३,२८,
४७५ । ६५,३, ५३७ । ७०,६; ६२५ । ७२,८, ७४६ ।
७३,८, ६५५ । ७४,३; ६५९ । १०२,३; ९६२ ।
१०,२५,८, ११६७

सुकतुः क्रतुभि १,९१,२; ११०२

सुक्षितिः १,९१,२१, ११२१

सुक्षितीनाम् आनेता १०८,१३, १०३८

सुत-सुता. २,३; १३ । १०,४; ८० । १६,७, १३५ ।
२४,७, १९३ । २७,३; २०८ । २९,१, २१८ । ३२,१,
२३६ । ३३,३, २४४ । ३७,१; २६६ । ३८,६; २७७ ।
३९,३, ५, २८०, २८२ । ४०,२, २८५ । ४१,४, २९३ ।
४२,२, २९७ । ४४,३, ३१० । ५१,४, ५, ३४९, ३५० ।
६१,८, २८, ३९५, ४१५ । ६२,१९, ४३६ । ६३,३,
६, १०, १५, ४५०, ४५३, ४५७, ४६२ । ६६,७, ५४४ ।
६७,२, १२, १८, ५६९, ५७९, ५८५ । ६८,७; ६०६ ।
६९,९, ६१८ । ८१,१; ६९६ । ९७,१, ३५; ८५७,
८९१ । १००,४, ५, ६, ९३८, ९३९, ९४० । १०१,१, ५;
९४४, ९४७ । १०६,९ ९९४

सुत. अद्रिभिः २४,५, २८१ । ५१,१, ३४६ । ६३,१३;
४६० । ६८,९, ६०८ । ७१,३, ६३२ । ७५,४, ६६९ ।
८६,२३; ७५० । १०९,१८; १०५९

सुत. हस्तयुतेभि अद्रिभि. ११,५; ९०

सुतः अद्रिभिः नृभिः ८६,३४; ७६१

सुतः ऋजीपेण वा०य० १९,७२, १२०९

सुतः ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपया ११३,२, १०८४

सुत प्रावभिः ८०,४; ६९४

सुतः धारया ३,१०; ३० । ७२,५; ६४३
 सुतः नृभिः ६२,५,१६; ४२२,४३३ । ८६,३४, ७६१
 सुत इन्द्राय पातवे १,१; १ । १६,३; १३१
 सुत देवेभ्यः ३,९; २९ । २८,२, २१३ । ९९,७, ९३३ ।
 १०३,६, ९७३
 सुतः मरुत्वते १०७,१७, १०१६
 सुतः भराय ६,६, ४६
 सुत चम्बो ३६,१, २६०
 सुताः यज्ञस्य सादने १२,१, ९५
 सुदक्षः ८७,२, ७७७ । १०५,४, ९८३ । १०८,१०;
 १०३५ । १,९१,२; ११०२
 सुदुघाः साम० १३००, १२११
 सुदृशीकः ८६,४५, ७७२
 सुधारः १०९,७; १०४८
 सुन्वानः १०१,१३, ९९६
 सुपर्णः ७१,२, ६३८ । ८५,११, ७२६ । ८६,१; ७२०
 सुपर्ण्यः ८६,३७; ७६४ । ९७,३३, ८८०
 सुपेशाः ७९,५, ६९० । ८१,१, ६९६
 सुभ्वः ७९,५, ६९०
 सुमगलः ८०,३; ६९३
 सुमतिः ८८,७, ७९१
 सुमनाः १,९१,४, ११०४
 सुमनस्यमानः ६,७४,४, १२२६
 सुमित्रः १,९१,१२, १११२
 सुमृलीकः ६९,१०, ६१९ । १,९१,११, ११११
 सुमेधाः ९१,३ ८१४ । ९३,३, ८२० । ९७,२३, ८७९
 सुरभिः २७,१२; ८७५
 सुरभिन्तरः १०७,२, १००१
 सुवानः नास ६,३, ४३ । ९,१; ६८ । १०,४; ८० ।
 १३,५, १०८ । १७,२; १३८ । १८,१, १४५ । ३४,१,
 २४८ । ६६,२८; ५६५ । ८७,७, ७८२ । ९२,१;
 ८१२ । ९७,४०; ८९६ । ९८,२,३, ९१६, ९१७ ।
 १०१,१०; ९५३ ।
 सुवानः आ ८६,४७, ७७४
 सुवान प्र १०९,१६, १०५७
 सुवान अद्रिभिः १०७,१०, १००९
 सुवान चक्षसे १०७,३; १००२
 सुवानः नहुष्येभिः ९१,२; ८०७
 सुवानः सोतृभिः १०७,८, १००७
 सुवितस्य दुराव्यः सेतुः ४१,२, २९१

सुवीरः २३,५; १८४ । ८६,३९; ७६६ । १,९१,१९;
 १११९
 सुवीर्यं दधत् स्तोत्रे २०,७, १६५
 सुवृध् ६८,६; ६०५
 सुवत २०,५, १६३ । ५७,३, ३७४
 सुशेवः १,९१,१५, १११५ । ८,४८,४, ११३८ । ८,७९,७;
 ११५६ । ६,७४,४; १२२६
 सुश्रवाः १,९१,२१, ११२१
 सुश्रवस्तमः १,९१,१७, १११७
 सुम-वसद् ६८,८; ६०७
 सुम-वखा ८,४८,९, ११४३
 सुष्टु स्तु-तः कविभिः १०८,१२, १०३७
 सुष्वाणः ६,८; ४८ । १३,२; १०५
 सुष्वाणः णासः-अद्रिभिः ६७,३; ५७० । १०१,११, ९५४
 सुष्वाणः देववीतये ६५,१८, ५२५
 सुहस्यः १०७,२१, १०२०
 सूद-मध्वः ९७,४४, ९००
 सुतु ९,३; ७० । १९,४, १५५
 सूरः-राः १०,५, ८१ । ६३,८,९; ४५५,४५६ । ६५,१;
 ५०८ । ६६,१८, ५५५ । २१,३, ७०८
 सूरिः ६७,२, ५६९
 सूर्यः तव ज्योतीषि ८६,२९; ७५६
 सूर्यस्य जनिता ९६,५, ८३७
 सृजान ९५,१-२; ८२८-८२९
 सृजानः कलशे ८६,२२; ७४९
 सृवा ९६,२०; ८५२
 सृष्टा सर्गाः २२,१; १७३
 सेतुः दुराव्यः सुवितस्य ४१,२, २९१
 सेतवः ७३,४; ७५१
 सेधन् रक्षांसि ११०,१; १०७५
 सेनानीः ९६,१, ८३३
 सोतृभिः पूयमानः ९६,१६; ८४८
 सोतृभिः सुवानः १०७,८, १००७
 सोमः
 सोमा-मासः } अयं निर्देशः प्रायः प्रतिसूक्तं दृश्यते ।
 सोम्यासः ६,७५,१०, १२२७ । १०,१४,६, १२३०
 सोम्यं मधु ७४,३; ६५९
 सोम्यः रस ६७,८, ५७५
 स्कम्भ दिवः ८६,४६; ७७३
 स्तनयन् १९,३, १५४ । ७२,६, ६४४ । ८६,९; ७३६

तवानः नृभि ९७,५; ८६१
 सुतः ६२,१५; ४३२
 थाः क्षामणि ८५,११; ७२६
 जः सिषासन् ७६,२; ६७२
 जतवस् ११,४; ८९
 जदितः मातरिभ्यना ६७,३१, ५९८
 जधितिः वनानाम् ९६,६; ८३८
 जध्वरः ३,८, २८। ८६,७, ७३४
 जवशाः ९८,६; ९२०
 जर्गाः ९०,४, ८०३
 जर्चक्षाः ९७,४६; ९०२
 जर्चस्त ८४,५, ७१५
 जर्जज्ञानः ८६,१४. ७४१
 जर्जित् २६,२, २०७। ७८,४, ६८४
 जर्हना १३,९; ११२। ६५,११, ५१८
 जर्पति १९,२; १५३
 जर्विद् ८,९; ६७ । २१,१, १६६ । ५९,४; ३८३ ।
 ८४,५, ७१५ । ८६,३, ७३० । ९४,२, ८३४ ।
 १०१,१०, ९५३। १०६,१,९. ९८६,९२४। १०७,१४,
 १०१३। १०८,२; १०२७। १०९,८, १०४९। ८,४८,
 १५; ११४९
 जर्षाः ९६,१८, ८५०। १,९१,२१, ११२१
 जस्तये संजगमानः ६४,३०, ५०७
 जस्तयनीः साम० १३००, १२११। १३०३, १२१४
 ज्वादिष्ठः ६२,९, ४२६ । ७८,४; ६८४ । ९७,४८; ९०४
 ज्वाहुः ५६,४, ३७१ । ८५,६; ७२१ । ९७,४, ८६० ।
 १०९,१. १०४२ । ११०,११. १०७४ । ६,४७,१,२;
 ११२७,११२८ । ८,४८,१ ११३५
 ज्वाभ्यः ३१,१; २३० । ६५,४, ५११ । १०१,१०; ९५३
 ज्वानासः १०,१; ७७
 ज्वायुधः ४,७; ३७ । १५,८; १२८ । ३१,६; २३५ ।
 ६५,५; ५१२ । ८६,१२; ७३९ । ८७,२, ७७७ ।
 ९६,१६, ८४८। १०८,१५; १०४०। ११०,१२; १०७५
 ज्वावत. ७४,२, ६५८
 ज्जन्ता अहिनाज्ञाम् ८८,४; ७८८
 ज्जन्ता विश्वस्य दस्योः ८८,४; ७८८
 ज्जन्ता वृजिनस्य ९७,१३; ८९९
 ज्जन्ता वृत्राणाम् ८८,४, ७८८
 ज्जया १०७,२५; १०२४
 ज्जरसः (वृष्टि) १०,६; ८२

जरस्य दैन्यस्य अवयाता ८,४८,२; ११३६
 जरिः २,६, १६ । ३,३,९; २३,२९ । ७,६; ५५ ।
 ८,६, ६४ । १९,३; १५४ । २५,१; १९४ । २६,५;
 २०४ । २७,६; २११ । ३०,५, २२८ । ३२,२, २३७ ।
 ३३,४, २४५ । ३४,४; २५१ । ३६,२, २६७ । ३८,
 २,६, २७३,२७७ । ३९,६; २८३ । ४१,१; २९६ ।
 ५०,३, ३४३ । ५३,४ ३५९ । ५७,२; ३७३ ।
 ६२,१८; ४३५ । ६३,१७, ४६४ । ६४,१४; ४९१ ।
 ६५,८,१२,२५, ५१५,५१९,५३२ । ६६,२५,२६;
 ५६२,५६३ । ६७,४, ५७१ । ६८,२, ६०१ । ६९,३,५,
 ६१२,६१४ । ७०,८, ६२७ । ७१,१, ६३० । ७२,१,५;
 ६३९,६४३ । ७६,१, ६७१ । ७९,१; ६८६ । ८०,३;
 ६९३ । ८२,१; ७०१ । ८६,६,११,२५,२७,३१,३३,
 ४२,४४,४५; ७३३, ७३८, ७५२, ७५४, ७५८, ७६०, ७६९,
 ७७१, ७७२ । ८९,३, ७९५ । ९२,१, ८१२ । ९३,१;
 ८१८ । ९५,१,२, ८२८, ८२९ । ९६,२, २४; ८३४,
 ८५६ । ९७,६, १८; ८६२, ८७४ । ९८,७, ९२१ ।
 ९९,२, ९२८ । १००,७, ९४१ । १०१,१५, १६;
 ९५८, ९५९ । १०३,२, ४, ९६९, ९७१ । १०६,१, १३;
 ९८६, ९९८ । १०७,१०, १००९ । १०९,१२, २१;
 १०५३, १०६२ । १११,१; १०७६ । ११३,५; १०८७
 जरिः दिवा ९७,९; ८६५
 हरीणां पतिः १०५,५, ९८४
 हरितः युजानः ८६,३७; ७६४
 हर्म्यस्य सक्षतिः ७८,३; ६८३
 हर्यत २५,४, १९७ । २६,५, २०४ । ४३,१,३, ३०२,
 ३०४ । ६५,२५, ५३२ । ९६,१७; ८४९ । ९८,७,८;
 ९२१, ९२२ । ९२,१, ९२७ । १०६,१३; ९९८ ।
 १०७,१३, १६, १०१२, १०१५
 हर्यत मद ८६,४२, ७६९
 हविः १०,१२४,६. १२१५
 हविः उत्तमम् १०७,१, १०००
 हविः चारु प्रियतमम् ३४,५, २४८
 हविः हविषु वन्ध ७,२, ५१
 हविष्मान् ८३,५; ७१० । ९६,१२; ८४४
 हितः ६२,१०, ४२७
 हित ऋषिभि. मतिभिः धीतिभिः ६८,७, ६०६
 हित. गुहा अध्वर्युभि १०,९; ८५
 हित धिया २५,२; १९५ । ४४,२, ३०९
 हित. धीतिभिः सप्त ९,४; ७२

हितः नृभि २८,१; २१२
 हितः नप्योः ९,१; ६८
 हितः प्रयसे ६६,२३; ५६०
 हितः ब्राह्मणेषु साम० १३००; १२११
 हिन्वान् ऋतस्य दीधितिम् १०२,१,८; ९६०,९६७
 हिन्वानः-नास १०,२; ७८। ३४,१; २४८। ६४,९;
 ४८६। १०५,२, ९८१
 हिन्वानः प्र ६४,१६; ४९३। ९०,१, ८००। १०७,
 १५, १०१४
 हिन्वानः अधः इन्द्रियम् ४८,५; ३३५
 हिन्वानः आप्यं बृहत् ६२,१०; ४२७
 हिन्वानः गोः अधि त्वचि ६५,२५; ५३२

हिन्वानः मानुषीः अपः ६३,७; ४५४
 हिन्वानः वाचम् ९७,३२, ८८८
 हिन्वानः वाचम् इषिराम् ८४,४; ७०३
 हिन्वानः हेतुभिः ६४,२९; ५०६
 हियानः सनये ९२,१; ८१२
 हियानः सोतुभिः ३०,२; २२५
 हिरण्यजित् ७८,४; ६८४
 हिरण्यय. ८५,११; ७२६। १०७,४, १००३
 हिरण्ययुः २७,४; २०९
 हिरण्यविद् ८६,३९; ७६६
 हृदं सनिः इन्द्रस्य ६१,१४; ४०१
 होता ९२,६; ८१७



सोम-देवता-संहितान्तर्गत- निपातदेवतानां वर्णानुक्रमसूची ।

(नवममण्डलस्थ-सूक्तानि)

अदितिः ८१,५। ९७,५८
 अदिते गर्भः ७४,५
 अन्तरिक्षम् ८१,५
 अर्यमा ६४,२४। ८१,५। १०८,१४
 अश्विनौ ७,७। ८,२। ८१,४। [९७,४९ नरं धीजवम
 रथेष्ठाम् । एक वचनम् अश्विनौ ॥]
 आदित्याः ६१,७। ११४,३ [सप्त]।
 इन्द्र १; १,९,१०। २; १,९। ४; ४। ६; ४,७,९।
 ७, ७। ८, १,३,९। ९; ५। ११; ६,८,९। १२;
 १,२। १३, १,८। १५, १। १६; ३,५। १७, २।
 १९; २। २१, १। २३, ६,७। २४, २,३,५। २५,
 ५। २६; ६। २७; २,६। ३०; ५,६। ३२; २।
 ३३; ३। ३४, २,४। ३७; ६। ३८; २। ३९; ५।
 ४०; २। ४३; २। ४५; १,२। ४६; ३,६। ५०; ५।
 ५१, १,२। ५३, ४। ५६; २,४। ६०, ३,४। ६१;
 ८,१२,१४,२२,२५। ६२; ८,१४,१५,२९। ६३,
 २,३,५,६,९,१०,१५,१७,१९,२२। ६४; १२,१५,२२।
 ६५,८,१०, [मरुत्वान्] १४,२०। ६६, ७,१५,२८,

२९। ६७, २,७,८,१६। ६९; ६,९,१०। ७०; ९,१०।
 ७२; २,४,५। ७३; २। ७४, ३,९ [वृषा अपां नेता]।
 ७५, ५। ७६; २,३,५। ७७, १। ७८, २। ८०;
 २,३,५। ८१, १। ८४, १,३,४। ८५; १-५,६,७।
 ८६; २,९,१३,१६,१९,२२,२३,३०,३५,४१। ८७;
 ४,८,९। ८८, १। ८९; ७। ९०; १,५। ९५; ५।
 ९६; ३,८,९,१२,२१। ९७; ५,६,१०,११,१४,२५,
 ३२,३६,४१,४३,४४,४६,४९। ९८, ६,१०। ९९,
 ३,८। १००, १,५,६। १०१, ४,५,१६। १०३, ५।
 १०६, १-५,८। १०७; १७। १०८; १,२ [वृषभः]
 १४,१५,१६। १०९; १,२,१४,१८-२०,२२। ११०;
 ८,११। १११; ३। ११२; १४। ११३; १-११।
 ११४, १-४

उशनाः ८७,३

उषसः १०,५

ऋतावृधा ९,३ [आवापृथिव्यौ]

ऋत्विजः सप्त ११४,३

गन्धर्वः ८३,४ [सूर्यः], ८५,१२ [सूर्य]।

त्वष्टा ८१, ४;
 दिव्यं जन्म ८५, ६. [देवाः]
 दिशः (सप्त) ११४; ३
 देवाः १, ४। ३, ९। ८, ५। ११; ७। २३, ६। २५;
 १, ३। २८; १। २९; १। ३९, १। ४२; ४, ५।
 ४४, १, ३, ५। ४५, २, ४। ४९, ४। ५१; ३। ६१;
 १३। ६२, २०, २१। ६५; २, ३। ६८; १०। ६९;
 १०। ७८, ४। ८५; ६ [दिव्य जन्म]। ८६; ३०।
 ९०, ५। ९४, ५। ९७, १, ४-७, १२, २०, ४१, ४२।
 ९८, १० [सवनासद् देवः]। १००, ६। १०१; ४।
 १०३; ६। १०५, ३। १०६, ८, ६। १०७; १८, २२,
 २३। १०९, ४, ५, १२, २१
 धावापृथिव्यौ ९, ३ [ऋतावृधा]। ६८, १०। ६९, १०।
 ८१, ५। ९७; ४२
 द्यौः ९७; ५८। १०९, ५
 ना दक्षिणावान् ९८; १०
 पितर ९६; ११
 पूषा ६१; ९। ८१, ४। १०९; १
 पृथिवी ९७; ५८। १०९; ५
 पृथिमातर ३४; ५ [मरुत]।
 प्रजा १०९, ५
 बृहस्पतिः ८१, ४। ८५; ६
 अश्विणस्पतिः ८३; १
 भगः ७; ८। १०; ५। ४४, ६। ६१; ९। ८१; ५।
 १०८, १४। १०९; १।
 मरुतः २५, १। ३३; ३। ३४, २, ५ [पृथिमातरः]।
 ५१; ३। ६१; १२। ६४, २४। ६५; २०। ६६; २६
 [मरुद्गणः]। ७३; ७ [रुद्रास]। ८१, ४। ९०; ५। ९७, ४
 [मारुतं शर्ध]।
 महान् इन्द्रः ९०; ५। ['मस्तीन्द्रम्' द्वि० पादः; 'मस्ति
 महामिन्द्रम्' चतुर्थः पादः]
 मित्र ६१; ९। ६४; २४। ७०, ८। ८१; ४। ८५,
 ६। ९०; ५। ९७, ५८। १००; ५। १०४, ३।

१०७, १५। १०९; १
 मित्रावरुणौ ७; ८। ९७, ४२, ४९
 रुद्रासः ७३; ७। [मरुत]
 रोदसी १८, ५, ६। ७४, २। ९७, २७
 वरुण ३३; ३। ३४, २। ६१; ९, १२। ६४; २४।
 ६५; २०। ७०; ८। ८१; ४। ८४, १। ८५; ६।
 ९०; ५। ९७; ५८। १००, ५। १०४; ३। १०७;
 १५
 वाक् ७३, ७
 वायुः ७; ७। ८, २। १३; १। २५, १, २। २७, २।
 ३३, ३। ३४; २। ४४, ५। ४६; २। ६१, ८, ९।
 ६३; ३, १०, २२। ६५, २०। ६७, १८। ७०, ८।
 ८१; ४। ८४, १। ८५; ६। ९७, २५। ४२; ४९
 विः ४८, ४ [सुपर्णः]
 विधाता ८१, ५;
 विश्वे देवाः १४, ३। १८, ३। ८०, ४। ८१, ५। ९२, ४।
 ९८, ७। ९९, ४, ७। १०२, ५। १०९, २, १५
 विष्णु ३३, ३। ३४, २। ५६, ४। ६३; ३। ६५, २०।
 ९०, ५। १००, ६
 वैश्वानरः ६१, १६
 अद्वा १, ६ [सूर्यस्य दुहिता]।
 सरस्वती ६७, ३२। ८१, ४
 सविता ८१, ४। ११०, ६
 मिन्धुः ९७, ५८
 सुपर्णः [वि] ४८, ३-४
 सूरः १०, ९
 सूर्यः २, ६। ४, ५, ६। १७, ५। २७, ५। २८, ५। ६४, ३०।
 ९७, ४१। ११४, ३ [नानासूर्या]।
 सूर्यस्य दुहिता १, ६ [अद्वा]
 सूर्यस्य रश्मयः ६१, ८
 सूर्यात्मा ८३, ३, ४ [गन्धर्व, पृथ्विः अग्निः, उक्षा]
 ८५, १२ [गन्धर्वः]

ऋग्वेदीय-सर्वानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची ।

अभिरक्षोहा [वृ० दे०] ७३, ७ सहस्रधारे वितते पवित्र० ।
 अभिनौ ९७, ४९ ('नर धीजवन. रथेष्ठाः= अभिनौ)
 अभि वायु वीत्यर्षा गृणानो३ ऽभि० ।
 अभी नरे धीजवनं रथेष्ठामेभीन्द्रं वृषणं वज्रग्राहुम् ॥
 इन्द्रः १०, ५ आपानासो भगम् । सूर्य वि तन्वते॥
 इन्द्रः ४०, २ गमदिन्द्रं वृषा सुतः ।
 इन्द्रः ६१, २२ य आविथ इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
 इन्द्र ६६, २८ पुनान इन्दुरिन्द्रमा ।
 इन्द्रः ६९, ६ नेन्द्रादते पवते धाम किं चन ।
 इन्द्रः ६९, ९ एते सोमाः पवमानास इन्द्रम् ।
 इन्द्र ७२, २ इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः ।
 इन्द्रः ७६, २ इन्द्रस्य शुष्ममीरयन् ।
 इन्द्रः ७६, ३ इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणां ।
 इन्द्रः ७६, ५ स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमः ।
 इन्द्रः ८४, ४ पुन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ।
 इन्द्रः ८५, २ पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ।
 इन्द्रः ८५, ३ आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तम ।
 इन्द्रः ८७, ८ सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ।
 इन्द्र ९७, १० इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।
 इन्द्रः ९७, ११ इन्दुरिन्द्रस्य सख्य जुषाणः ।
 इन्द्रः ९७, १२ अभि प्रियाणि पवते पुनानो० ।
 इन्द्रः ९७, ४३ इन्द्रस्य त्वं तव वय सखायः ।
 इन्द्रः ९७, ४१ अद्घादिन्द्रे पवमान ओजः ।
 इन्द्रः १००, १ अभी नवन्ते अद्घः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
 इन्द्रः १०१, ६ सखेन्द्रस्य दिवे दिवे ।
 इन्द्रः १०९, २२ इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते ।
 इन्द्रधाम ६९, ६ नेन्द्रादते पवते धाम किंचन ।
 दक्षिणावान् ना ९८, १० नरे च दक्षिणावते ।
 दिव्यं जन्म [दिवाः] ८५, ६ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने ।
 देवाः ११, ७ देवेभ्यः अनुकामकृत् ।

देवाः २५, २ पवमान धिया कनिक्रदत् । धर्मणा विशा॥
 देवाः २५, ३ सं देवैः शोभते वृषा ।
 देवाः २५, ६ आ पवस्व कवे । अर्कस्य... योनिमासदम् ॥
 देवाः २८, २ सोमो देवेभ्य सुतः ।
 देवाः ३९, १ यत्र देवा इति ब्रवन् ।
 देवाः ४५, ४ इन्दुर्देवेषु पत्यते ।
 देवाः ४९, ४ देवास शृणवन् हि कम् ।
 देवा. ६५, २ देवो देवेभ्यस्परि ।
 देवा ८६, ३० देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।
 देवाः ९७, ४१ अपां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
 देवा. १०९, २१ देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ।
 देवास ७८, ४ यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदम् ।
 प्रजा १०९, ५ दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै ।
 मरुत ५१, ३ पवमानस्य मरुतः ।
 मित्रः ६१, ९ चारुमित्रे वरुणे च ।
 वायुः १३, १ वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ।
 वायुः २५, २ धर्मणा वायुमा विश ।
 वायुः ४६, २ वायुं सोमा असृक्षत ।
 वायु ६३, ३ मधुर्मां अस्तु वायवे ।
 वायुः ६३, १० परीतो वायवे सुतम् ।
 वायुः ६३, २२ वायुमा रोह धर्मणा ।
 वायुः ६७, १८ शुक्रा वायुमसृक्षत ।
 वायु ८४, १ अप्सा इन्द्राय वरुणाय वायये ।
 विष्णुः ६३, ३ सुत इन्द्राय विष्णवे ।
 विश्वं देवा. ९२, ४ तव त्वे सोम पवमान निष्ये विश्वे देवा ।
 सद्नासद् देवः ९८, १० देवाय सद्नासदे ।
 सरस्वती ६७, ३२ तस्मै सरस्वती हुहे ।
 सविता ११०, ६ वारं न देवः सविता ध्यूर्णते ।
 सूर्यः ९७, ४१ अजनयत् सूर्यं ज्योतिरिन्दुः ।
 सूर्यः ६४, ३० पवस्व सूर्यो इशे ।



दैवत-संहिता ।

(४)

मरुदेवता ।



सम्पादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय-मण्डल, औंध (जि० सातारा)



संवत् १९९९; शके १८६४; सन् १९४२

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औध (जि० सातारा)



मरुत् देवता का परिचय ।



मरुतों के विषय में कोशोंमें (wind, an, breeze) वायु, हवा, पवन, (vital air or breath, life-wind) प्राण, (the god of wind) वायु का देवता, (a kind of plant) मरुवक, मरुत्तक, ग्रंथिपर्णी वनस्पति, (storm-gods) आंधी, प्रचंड वायु, आंधी का देवता इतने अर्थ दिये हैं ।

वैद्यक कोशों में 'मरुत्' अथवा मरुतः' का अर्थ 'घण्टापाटला, मरुवक वृक्ष, मरुत्तक वनस्पति, ग्रंथिपर्णी वनस्पति, पृष्ठा नामक साग (पिडिंग साग) [हिंदी भाषा में इस का नाम 'पुरी' है] इतने अर्थ मरुत् के लिखे हैं । 'मरवा' नामक सुगंध पौधा । मरुत् का यह अर्थ वैद्यकसंबंधी है ।

मरुत् का अर्थ विश्व में 'वायु' और शरीर में 'प्राण' है और ये वनस्पतियाँ प्राणधारण में सहायक होती हैं, प्राण का बल बढ़ाती हैं । इस तरह इनकी संगति होना संभव है ।

निघण्टु में 'मरुत्' शब्द का पाठ निम्नलिखित गणों में किया है—

१. 'मरुत्' शब्दका पाठ 'हिरण्य' नामोंमें (निघण्टु १।२ में) किया है, अतः 'मरुत्' का अर्थ 'हिरण्य' अर्थात् 'सुवर्ण' है ।

२. 'मरुत्' पदका पाठ 'रूप' नामों में (निघण्टु ३।७ में) किया है, इसलिये इस का अर्थ 'रूप' अथवा 'सुन्दरता' होता है ।

३. 'मरुत्' पद का पाठ 'ऋत्विक्' नामों में १

(निघण्टु ३।१८ में) किया है, इसलिये हम का अर्थ ऋत्विज् अथवा याजक होता है ।

४. 'मरुतः' पदका पाठ 'पद नामो' में (निघण्टु ५।५) में किया है ।

निघण्टुकार 'मरुत्' के ये ही अर्थ देता है । निरुक्तकार श्री यास्काचार्य मरुत् के अर्थ निम्नलिखित प्रकार करते हैं—
अथातो मध्यमस्थाना देवगणा । तेषां मरुतः प्रथमगामिनो भवन्ति । मरुतो मितराविणो वा मितरोचनो वा महद् द्रवन्तीति वा ।

(निरु ११।२।१)

'मध्यम स्थान से जो देवगण हैं, उन में मरुत् पहिले आते हैं । मरुत् का अर्थ (मित-राविण) मित-भापी होता है, वे (मित-रोचनः) परिमित प्रकाश देते हैं, (महद्-द्रवन्ति) बड़ी गति से जाते हैं, अथवा बड़ वेग से जलप्रवाह छोड़ देते हैं ।'

ये इस के अर्थ निरुक्तकार के दिये हैं । पर इस निरुक्त के वाक्य का इस से भिन्न पदच्छेद करने से निम्नलिखित अर्थ होता है—

मरुतोऽमितराविणो वाऽमितरोचनो वा महद् द्रवन्तीति वा । (निरु ११।२।१)

'मरुत् (अ-मित-राविण.) अपरिमित शब्द करनेवाले, (अ-मित-रोचनः) अपरिमित प्रकाश देनेवाले, (महद् द्रवन्ति) बड़ा शब्द करते हैं, वे मरुत् हैं ।'

पाठक यहां ये दो प्रकार के निरुक्त के एक ही वचन के परस्परविरोधी अर्थ देखेंगे, तो आश्चर्य से चकित होंगे । पर ऐसे ही टीकाकार मानते आये हैं । इसलिये इस विषय

में हम कुछ नहीं कह सकते ।

इसी तरह और भी ' मरुत् ' पद के अर्थ किये गये हैं और हो सकते हैं-

१ मरुत् (मा-रुद्) = न रोनेवाले, अर्थात् युद्ध में न रोते हुए अपना कर्तव्य करनेवाले ।

२ मरुत् (मा-रुत्) = न बोलनेवाले, भक्तभक्त न करनेवाले, बहुत न बोलनेवाले ।

३ मरुत् (मर-उत्) = मरनेतक उठकर खड़े हो कर युद्ध करनेवाले ।

इस तरह विविध अर्थ मरुत् शब्द के किये जाते हैं । अब इस ' मरुत् ' के अर्थ ब्राह्मणग्रंथों में कैसे किये हैं, देखिये-

मरुतो रश्मयः । (ताण्ड्य ब्रा० १४।१२।९)

ये ते मारुताः रश्मयस्ते । (श० ब्रा० ९।३।१।२५)

मरुतः . देवाः । (श० ब्रा० ५।१।४।९, अमरकोश ३।३।५८)

गणशो हि मरुतः । (ताण्ड्य ब्रा० १९।१।४।२)

मरुतो गणानां पतयः । (तै० ब्रा० ३।१।१।४।२)

सप्त हि मरुतो गणाः (श० ब्रा० ५।४।३।१७)

सप्त गणा वै मरुतः (तै० ब्रा० १।६।२।३।२।७।२।२)

सप्त सप्त हि मारुता गणाः । (वा० य० १७।८०-८५; ३९।७; श० ब्रा० ९।३।१।२५)

मारुत सप्तकपालः (पुरोडाशः) । (ताण्ड्य ब्रा० २१।१।०।२३, श० ब्रा० २।५।१।१२; ५।३।१।६)

मरुतो ह वै देवविशोऽन्तरिक्षभाजना ईश्वराः । (कौ० ब्रा० ७।८)

विशो वै मरुतो देवविशः । (तां० ब्रा० २।५।१।१२)

मरुतो वै देवानां विशः । (ऐ० ब्रा० १।९; तां० ब्रा० ६।१०।१०; १८।१।१४)

अहुतादो वै देवानां मरुतो विट् । (श. ब्रा. ४।५।२।१६)

विट् वै मरुतः (तै. ब्रा. १।८।३।३; २।७।२।२)

विशो मरुत् । (श. ब्रा. २।५।२।६, २७; ४।३।३।६; ३।९।१।१७)

मारुतो वैश्य । (तै. ब्रा. २।७।२।२)

कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः ।

(तै. ब्रा. २।४।८।७)

पशवो वै मरुतः । (ऐ. ब्रा. १।१९)

अञ्जं वै मरुत । (तै. १।७।३।५, १।७।५।२; १।७।७।३)

प्राणा वै मारुता । (श. ब्रा. ९।३।१७)

मारुता वै सावाणा । (तां० ब्रा. ९।९।१।४)

मरुतो वै देवानामपराजितमायतनम् ।

(तै. ब्रा. १।४।६।२)

अप्सु वै मरुतः श्रिताः । गो. ब्रा. उ. १।२२; कौ. ब्रा. ५।४)

आपो वै मरुताः । (ऐ. ब्रा. ६।३०; कौ. ब्रा. १२।८)

मरुतो वै वर्षस्येशते । (श. ब्रा. ९।१।२।५)

इन्द्रस्य वै मरुतः । (कौ. ब्रा. ५।४।५)

मरुतो ह वै क्रीडिनो वृष्टं हनिष्यन्तमिन्द्रं

आगतं तमभितः परिचिक्रीडुर्महद्यन्तः ।

(श. ब्रा. २।५।३।२०)

इन्द्रस्य वै मरुतः क्रीडिनः । (गो. ब्रा. उ. १।२३; कौ. ब्रा. ५।५)

“ किरण मरुत् हैं, देव, समूह में रहनेवाले, सात मरुतों का एक गण है, मरुतों का पुरोडाश सात पात्रों में होता है, प्रजा ही मरुत् है, दैवी प्रजा मरुत् है, वैश्य मरुतों से उत्पन्न है, उत्तम दान देनेवाले किसान मरुत् हैं, अन्न ही मरुत् हैं, प्राण मरुत् हैं, पथर मरुत् हैं । देवों का पराजयरहित स्थान मरुत हैं । मरुत् जल के आश्रय से रहते हैं, जल ही मरुत् हैं । मरुत् वृष्टि के स्वामी हैं । मरुत् इन्द्र के (सैनिक) हैं । जब इन्द्र वृत्र का हनन करता था, तब मरुतों ने खेलते हुए उसका गौरव किया था । ”

मरुतों के सम्बन्ध में ब्राह्मणग्रंथों के वचनों का यह तात्पर्य है । ये अर्थ पाठक मरुतों के सूक्तों में देख सकते हैं ।

पाठकों की सुविधा के लिये यहां मरुतों के वर्णनों के मन्त्रोंमेंसे कुछ विशेष मंत्र उद्धृत करके रखते हैं, उन्हें पाठक देखें और मरुदेवता के संघों के विज्ञान को जानें-

महर्तों के शस्त्र ।

(कण्ठो घोरः । गायत्री ।)

ये पृथ्वीभिः ऋषिभिः साकं वाशीभिः अग्निभिः ।

अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥

इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वान् ।

नि यामश्चित्रमृज्जते ॥ ३ ॥ (ऋ० १।३७)

“(ये) जो (पृथ्वीभिः) चित्रविचित्र (ऋषिभिः) भालों के साथ (वाशिभिः अग्निभिः) शकों और भूषणों के साथ (स्वभानवः) अपने ही प्रकाश से प्रकाशित होनेवाले महत् (अजायन्त) प्रकट हुए हैं । (एषां कशा) इनके चाबूक इनके (हस्तेषु वदान्) हाथों में आवाज करते हैं, (य इह एव शृण्वे) जो शब्द मैं यहीं सुनता हूँ, (यामन् चित्रं नि ऋज्जते) संग्राम में विचित्र रीतिसे यह चाबूक महर्तोंको शोभित करता है । ”

इन मंत्रों में कहा है कि, महर्तों के पास भाले, कुल्हाड़ कुठार, आभूषण और चाबूक हैं । इनसे ये महर्त शोभावात् हुए हैं ।

(लोभरिः काण्वः । प्रगाथः = ककुप् + सतोवृद्धी ।)

समानमज्येषां विभ्राजन्ते रुक्मासो अधिबाहुषु ।
द्विद्युत्तप्तृष्टयः ॥ ११ ॥

त उग्रासो घृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे ।
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेष्वधि
श्रियः ॥ १२ ॥ (ऋ० १।२०)

“(एषां अग्निः समानं) इन सबके आभूषण समान हैं । इनके (ऋष्टयः द्विद्युत्तप्तृष्टयः) भाले चमक रहे हैं, (बाहुषु अधि रुक्मासः विभ्राजन्ते) बाहुओं पर सोने के भूषण चमकते हैं । (ते) वे (उग्रासः) शूर वीर (उग्रबाहवः) बड़े बाहुओंवाले (घृषणाः) सुख की वर्षा करनेवाले, (तनूषु) अपने शरीर के विषय में (न किः येतिरे) कुछ भी यत्न नहीं करते । (वः रथेषु) आप के रथ पर (स्थिरा धन्वानि आयुधा) स्थिर धनुष्य और शस्त्र हैं तथा (अनीकेषु अधि श्रियः) सैन्य की धरा में विजय निश्चित है । ”

इन मंत्रों में महर्तों के शस्त्रों और आभूषणों का वर्णन देनेयोग्य है । भाले, बाहुभूषण और कण्ठे तो हैं, पर

इनके (रथेषु स्थिरा धन्वानि आयुधा) रथों में स्थिर धनुष्य और स्थिर आयुध हैं । यह वर्णन विशेष महत्त्व का है । स्थिर धनुष्य और चल धनुष्य ऐसे धनुष्यों के दो भेद हैं । चल धनुष्यों को ही धनुष्य कहते हैं, जो हाथों में लेकर इधर उधर वीर ले जा सकते हैं । प्रायः धनुर्धारी वीर इसी धनुष्य का उपयोग करते हैं । इसको हम ‘ चल धनुष्य ’, ‘ धनुष्य ’ अथवा ‘ छोटा धनुष्य ’ कहेंगे ।

पर इस मंत्र में महर्तों के रथों पर ‘ स्थिर धनुष्य ’ रहते हैं, ऐसा कहा है । रथों पर ध्वजदण्ड खड़ा रहता है, उस दण्ड के साथ ये धनुष्य बांधे रहते हैं, ये हिलाये नहीं जाते, एक ही स्थान पर पकड़े किये होते हैं । ये बड़े प्रचण्ड धनुष्य होते हैं और इन पर से जो बाण फेंके जाते हैं, वे मामूली बाणों से दूगुने तिगुने बड़े भाले जैसे होते हैं । ये धनुष्य भी बहुत ही बड़े होते हैं और इनकी रस्सी दोनों हाथों से खींची जाती है । इसलिये इनको रथ में ही सदा रहनेवाले ‘ स्थिर धनुष्य ’ कहा है । महर्तों के रथों की यह विशेषता है । रथों में ‘ चल धनुष्य ’ भी रहते हैं और स्थिर भी होते हैं । इसी तरह अन्यान्य आयुध भी रथ में स्थिर रहते हैं ।

ये रथ चार घोड़ों से खींचे जानेवाले बड़े मजबूत होते हैं । महर्तों के रथों को घोड़े या हरिनियाँ जोती जाती थीं, ऐसा मंत्रों में लिखा है और ये घोड़े या हरिनियाँ जिनके पीठपर श्वेत धन्वे होते हैं, ऐसी हैं, ऐसा वर्णन इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं ।

ये महर्त (तनूषु न किः येतिरे) अपने शरीरों की बिल्कुल पर्वा न करते हुए युद्ध करते हैं । यह वर्णन भी वहाँ इन मंत्रों में देखनेयोग्य है ।

(इयावाश्च आत्रेयः । पुर उणिक् ।)

ये अजिषु ये वाशीषु स्वभानवः ।

स्त्रक्षु रुक्मेषु खादिषु ।

आया रथेषु धन्वस् ॥ ४ ॥

शार्धं शार्धव एषां व्रातं व्रातं गणं गणं सुशरितभिः ।

अनुक्रमेम धीतिभिः ॥ ११ ॥ (ऋ० १।५३)

“ हे महर्त ! (ये स्वभानवः) जो भार के प्रकाश (अजिषु) अलंकारों पर, (ये वाशीषु) जो हथियारों पर, (स्त्रक्षु) मालाओं पर, (रुक्मेषु) छाती के भूषणों

पर, (खादिषु) पाँवों के भूषणों पर (रथेषु) रथों पर और (धन्वसु) धनुष्यों पर (आया) आभय पाये हैं । ”

“ हे मरुतो (वः शर्धं शर्धं) आप के बल, (एषां व्रात व्रात) इनके समुदाय, (गणं गणं) और सघ की (सुश-स्तिभिः) प्रशंसा के साथ और (धीतिभिः) कर्मों के साथ अनुसरण करते हैं । ”

अर्थात् मरुतों के हाथों में शस्त्र है, गले में मालाएं हैं, कमर में हथियार, तलवार, जबिया आदि हैं, छाती पर आभूषण है, पावों और हाथों में कटक आदि जेवर हैं, रथों में धनुष्य है। इन शस्त्रों और भूषणों से ये तीर युक्त हैं ।

आगे के मंत्र में ‘ हम (अनुक्रामेम) आप का अनुसरण करते हैं, ’ ऐसा कहा है। मरुतों के जो बल से होने वाले कर्म हैं, समूह से और संघ से होने वाले कर्म हैं, उन सब का अनुसरण हम करते हैं, अर्थात् उनके समूहों के समान हम अपने संघ बनाते हैं, उनके गणों के समान हम अपने गण बनाते हैं, उनके पराक्रमों के समान हम पराक्रम करते हैं, उनकी बुद्धियों के समान हम अपनी बुद्धि के कर्म करते हैं। मरुतों जैसे हम पराक्रम करते हैं और वैसे हम स्वयं शूर वीर बनने का यत्न करते हैं ।

मरुतों के संघों का यहाँ वर्णन है और आगे भी वर्णन बहुत ही है। मरुत् देवता संघ से रहनेवाले हैं। ये सात के संघ हैं, देखिये—

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

यहाँ सात सैनिकों की एक पंक्ति ऐसी सात पंक्तियाँ हैं। यहाँ ये $7 \times 7 = 49$ मरुद्रण होते हैं। न्यूनसे न्यून सातों की एक पंक्ति है, ऐसी सात पंक्तियों का ‘ मारुत् गण ’ अथवा ‘ मरुतों का सघ ’ होता है। इस तरह 49 मरुतों का एक संघ, अथवा सेना का छोटे से छोटा विभाग होता है।

ऐसे 49 विभागों की मरुतों की सेना को ‘ वाहिनी ’

कहते हैं। इस वाहिनी में $49 \times 49 = 2401$ मरुद्रण होंगे। इस तरह यह संख्या सातों के घात से, अथवा 49 के घात से बढ़ती है। छोटी से छोटी मरुद्बीरों की संख्या 7 होगी, उस से बढ़ कर 49 होगी, उस के बाद 2401 होगी और इस के आगे 7 अथवा 49 के घात से जितनी सेना रखनी होगी, उतनी सेना हो सकती है। इस की वरूपना पाठक कर सकते हैं ।

ये मरुत् पैदल (पदाती), रथी (रथमें बैठे), घुड़सवार (अश्वी) और विमानों में चढ़ कर ऐसे विभिन्न पथकों में रहते हैं। पर किसी भी पथक में क्यों न हों, इनकी संख्या 7 और 49 के प्रमाण से रहेगी। मरुतों की सेना का विचार करने के समय यह तत्त्व जानना आवश्यक है।

(नीधा गौतमः । जगती ।)

युवानो रुद्रा अजरा अभोग्नो वषधूरध्रिगावः
पर्वता इव । इच्छा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा
प्रच्यावयन्ति दिव्यानि मज्जना ॥ ३ ॥

चित्रैरज्जिभिर्वपुषे व्यज्जते वक्षः सु रुक्माँ अधि
येतिरे शूभे । अंसेष्वेषां नि मिमिक्षुर्ऋष्टयः
साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ॥ ४ ॥

(ऋ. १।६४)

‘ (रुद्राः) शत्रु को रूकानेवाले मरुत् (युवानः) जवान (अजरा) वृद्धावस्था को न प्राप्त हुए, (अभोग्नः) देवों को हविर्भाग न देनेवालों का वध करनेवाले, (अध्रिगावः) अप्रतिहत गतिवान् अर्थात् जिन की गति को कोई रोक नहीं सकता, ऐसे मरुत् (पर्वता इव वषधुः) पर्वतों के समान सुदृढ़ होकर इष्ट सुख उपासकों को देने की इच्छा करते हैं। ये (मज्जना) अपने सामर्थ्य से (विश्वा पार्थिवा भुवना) सब पार्थिव भुवनों और (इच्छा दिव्यानि) सुदृढ़ दिव्य भुवनों को भी (प्रच्यावयन्ति) हिला देते हैं। अर्थात् इनके विरोध में कोई टहर नहीं सकता । ’

“ ये मरुत् (चित्रैः अज्जिभिः) विचित्र भूषणों से (वपुषे व्यज्जते) अपने शरीरों को भूषित करते हैं। (शूभे) शोभा के लिये (रुक्मान् वक्षःसु) सोने की मालाएं छाती पर (अधि येतिरे) धारण करते हैं। (एषां अंसेषु) इनके कंधों पर (ऋष्टयः निमिमिक्षुः) भाले चमक रहे

हैं । ये (नरः) नेता बीर मरुत् (स्वधया साकं) अपनी धारणशक्तिके साथ (दिवः जज्ञिरे) युलोकसे जन्मे हैं । ”

मरुतों की सेना में तरुण ही भरती होते हैं । वृद्धों (भजराः) का इन में स्थान नहीं है । सब (युवानः) जवान ही होते हैं । इनकी गतिको कोई रोक नहीं सकता । ये सैनिक जहां जाते हैं, वहां के प्रबल शत्रुओं को भी अपने स्थान से उखाड़ देते हैं । ये स्वयं जहां रहते हैं, वहां पर्वतों के समान स्थिर रहते हैं ।

इनके शरीरों पर सोने की मालाएं रहती हैं, छाती पर विविध भूषण पहने होते हैं, बाहुओं पर सोनेके आभूषण रहते हैं, तीक्ष्ण भाले इन के हाथों में रहते हैं, अन्यान्य तलवार आदि तीक्ष्ण शस्त्र सदा इन के पास रहते हैं । ये दिव्य नेता लोग दिव्य और शुभ कार्य के लिये सदा तैयार रहते हैं, कभी पीछे नहीं हटते ।

अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए ये लड़ते हैं और जो अपना अन्न यज्ञ में नहीं अर्पण करते, उन स्वार्थी लोगों को ये यथायोग दण्ड देते हैं । इसलिये इनसे सब डरते हैं और ये अपने यज्ञमार्ग में दत्तचित्त रहते हैं ।

(गोतमो राहूगणः । प्रस्तारपंक्तिः ।)

आ विद्युन्मद्भिर्मरुत स्वर्के रथेभिर्यात ऋष्टि-
मद्भिरश्वपणैः । आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न
पसता सुमायाः ॥ १ ॥ (ऋ० १।८८)

“ हे (सु-मायाः) उत्तम कुशल कर्मों को करनेवाले मरुतो ! (विद्युन्मद्भिः) बिजली से चलनेवाले, (स्वर्केः) तेजस्वी (अश्व-पणैः) घोड़ों के समान पखवाले (ऋष्टि-मद्भिः) उत्तम शस्त्रों से युक्त (रथेभिः) रथों से (आयातं) आओ, (वयो न) पक्षियों के समान (पसता) उड़ते हुए आओ और साथ (वर्षिष्ठया इषा न) उत्तम जलों के साथ (आ) आओ । ”

यहां भी पक्षियों के समान आकाशमार्ग से उड़ते हुए मरुत् आते हैं और उन के विमानों में भरपूर अन्न, पर्याप्त शस्त्र होते हैं और गमन के लिये अश्व के समान पक्ष रहते हैं, ऐसा कहा है ।

मरुतों के ये रथ निःसन्देह विमान ही हैं । क्योंकि ये (वयः न) पक्षियों के समान आकाश में उड़ कर आते

हैं और (अश्व-पणैः) अश्वशक्तिवाले पंख इनको लगे होते हैं । (सुमायाः) उत्तम कारीगरी से ये बने हैं, तथा (विद्युन्मद्भिः) बिजली की शक्तिसे ये चलाये जाते हैं । पक्षी के समान आकाश में उड़ना, बिजली के साधन से गति मिलना, अश्वशक्ति से पक्षों का काम होना, आदि वर्णन इनका विमान होना ही निश्चित करता है ।

मरुतों के ये विमान ही हैं । मरुतों की सेना के पास घोड़े, रथ तथा विमान भी होते हैं, यह बात इस वर्णन से सिद्ध होती है । इन मरुतोंके विमानों में (ऋष्टिमद्भिः) पर्याप्त शस्त्र तथा पर्याप्त (इषा) अन्न होता है । ये वर्णन देखने से मरुतों के विमानों की कल्पना आ सकती है ।

(श्यावाश्व आश्रय । जगती ।)

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः ।
सुधन्वान इपुमन्तो निषगिणः ।
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातर
स्वायुधा मरुतो याथना शुभम् ॥ २ ॥
ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि
सह ओजो बाह्वोर्वा बलं हितम् ।
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो
विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे ॥ ६ ॥

(ऋ० ५।५७)

“ हे मरुतो ! (वाशीमन्त) वरचियां धारण करनेवाले, (ऋष्टिमन्तः) भाले बर्तनेवाले, (सुधन्वानः) उत्तम धनुष्यों से युक्त, (निषगिणः) तर्कम धारण करनेवाले, (सुरथाः) उत्तम रथ जिनके पास हैं तथा (स्वश्वाः) उत्तम घोड़ोंवाले, (स्वायुधाः) उत्तम आयुधों का उपयोग करनेवाले (पृश्निमातरः) मातृभूमि के उपासक आप (मनीषिणः स्थः) बुद्धिमान हैं । हे मरुतो ! आप (शुभं याथन) सबके हित करनेवाले मार्गसे चलो । ”

“ हे मरुतो ! (व अंसयोः अधि) आप के कंधों पर (ऋष्टयः) भाले हैं, (व बाह्वो) आप के बाहुओं में (सहः ओजः बलं हितं) बल, ओज और सामर्थ्य रखा है, (शीर्षसु नृम्णा) सिरोंपर सुन्दर साफे हैं, (वः रथेषु आयुधा) आप के रथों पर आयुध हैं, (वः तनूषु) आप के शरीरों पर (विश्वा श्रीः) सब शोभा (अधि



वीर मरुत् ।

पिपिणे) विराजमान हुई है । ”

इन मंत्रों में मरुतों के शरीरों पर कैसे शस्त्र और कपड़े रहते हैं, यह बताया है । बरछे, भाले, धनुष्य, बाण, तर्कस, तलवार आदि शस्त्र इनके पास हैं । सिर पर साफे अथवा मुकुट हैं । इनके रथ, घोड़े आदि सब उत्तम हैं । शरीर सुडौल है । बाहुओं में प्रचण्ड बल है और ये (वृक्षिमातरः) मातृभूमि की उपासना स्वकर्म से करते रहते हैं, मातृभूमि के लिये आत्मसमर्पण करते रहते हैं ।

(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।)

अंसेष्वा मरुतः स्वादयो वा

वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणा ।

वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना

अनु क्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥१३॥ (क्र० ७/५६)

“ हे (मरुतः) मरुतो ! आप के (अंसेषु) कंधों पर आभूषण हैं, (वक्षःसु रुक्मा) छाती पर मालाएं (उप शिश्रियाणाः) शोभती हैं, (वृष्टिभिः) वृष्टि के साथ चमकती (विद्युतः न) बिजली के समान (विरुचानाः) आप चमक रहे हैं, (आयुधैः) और हथियारों के साथ (स्वर्धा अनुयच्छमानाः) अन्न को अनुकूलता के साथ आप देते हैं । ”

यहां भी मरुतों के हथियारों और भूषणों का वर्णन है ।

(श्यावाश्व आग्नेयः । जगती ।)

अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु स्वादयो वक्षःसु रुक्मा
मरुतो रथे शुभः । अग्निभ्राजसो विद्युतो
गभस्त्यो शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ११
(क्र० ५/५४)

“ हे मरुतो ! (वः अंसेषु ऋष्टयः) आप के कंधों पर भाले हैं, (पत्सु स्वादयः) पावों में भूषण हैं, (वक्षःसु रुक्मा) छाती पर मालाएं हैं और (रथे शुभः) रथ में सब शुभ साधन हैं । (अग्निभ्राजसः) अग्नि के समान तेजस्वी (विद्युतः गभस्त्यो) चमकदार और किरणों से युक्त हैं और आप के (शीर्षसु) सिर पर (हिरण्ययी शिप्रा) सोने के फैले हुए साके हैं ।

यहां भी मरुतों के शस्त्रों और अलंकारों का वर्णन है । इस समय तक मरुतों के शस्त्रों, अलंकारों और वस्त्रों का वर्णन आया है, इससे विदित होता है कि—

-सिर में—

(१) शीर्षसु नृम्णा (क्र. ५/५७/६); शिप्राः
शीर्षन् हिरण्ययीः (क्र. ८/७/२५), हिरण्यशिप्राः
(क्र. २-३४-३),

सिर पर साके या मुकुट धारण किये हैं । ये सोनेके हैं, अर्थात् साके होंगे, तो कलाबत् के होंगे ।

कंधों पर—

(२) अंसेषु ऋष्टयः (क्र. १-६३-४; ५-५४-११);
ऋष्टयो... अंसयोरधि (क्र. ५-५७-६); ऋष्टिमन्तः
(क्र. ५-५७-२); अंसेषु स्वादयः (क्र. ७-५६-१३);

अंसेषु प्रपथेषु खाद्यः (१-१६६-९) ; ऋष्टिविद्युतः (ऋ. १-१६८-५; ५-५२-१३) ; भ्राजन्-ऋष्टयः (ऋ. १-८७-३) .

मरुतों के कंधों पर भाले रहते हैं, इन कंधों पर बाहु-भूषण होते हैं । ये भूषण भी बड़े चमकवाले होते हैं और भाले भी बड़े तेजस्वी और चमकनेवाले होते हैं । ऋष्टि-शस्त्र भाले जैसा लंबा होता है, भाले के फाल विविध प्रकार के होते हैं । बड़े तीक्ष्ण नोकवाले, अनेक मुख-वाले, कांटोंवाले तथा अन्यान्य छेदक नोकवाले होते हैं और इस कारण इनके नाम भी बहुत होते हैं । ' खादी ' नामक एक आभूषण है, जो पावों में तथा बाहुओं में रम्बे जाते हैं ।

हाथों में—

(३) हस्तेषु कशा वदान् (ऋ. १।३७।३) हाथों में चाबूक जो आवाज करता है । चाबूक का आवाज सिटकने से होता है, यह पाठक जान सकते हैं ।

छाती पर—

(४) वक्षःसु रुक्मां (ऋ. १-६४-४; ७-५६-१३, ५-५४), रुक्मासः अधि बाहुषु (ऋ. ८-२०-११), तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः (ऋ. १-८५-३)

छाती पर और बाहुओं पर तथा शरीरों पर रुक्म नामक सुवर्ण के भूषण धारण करते हैं । रुक्म मोहरों जैसे भूषण होते हैं, जिनकी माला बना कर कण्ठ में छाती पर रखते हैं और अन्यान्य अवयवों पर उस स्थान के योग्य अलंकार किया होता है ।

इस तरह का वर्णन मंत्रों में देखनेयोग्य है ।

बल से विजय ।

(कण्वो घौरः । सतोवृहती ।)

स्थिरा वः सत्त्वायुधा पराणुदे वीळ् उत प्रतिष्कभे । युष्माकमस्तु तविधी पनीयसी मा मर्त्यस्व मायिनः ॥ २ ॥ (ऋ. १-३९)

“ (वः आयुधा स्थिरा सन्तु) आप के शस्त्र सुदृढ़ हों, (पराणुदे) शत्रु को दूर भगाने के लिये और (प्रति-स्कभे) शत्रु का प्रतिकार करने के लिये आप के शस्त्र (वीळ्) सामर्थ्यवान् अर्थात् शत्रु के शस्त्रों से अधिक प्रभावी हों ।

(युष्माकं तविधी) आप का बल (पनीयसी अस्तु) प्रशसनीय रहे, वैसा (मायिनः मर्त्यस्य मा) आप के कपटी शत्रु का बल न हो, अर्थात् शत्रु से आप का बल अधिक रहे । ”

विजय तभी होगा, जय शत्रु से अपने साधन अधिक प्रभावी होंगे । अपने शस्त्रास्त्र शत्रु से प्रभाव में, परिणाम में, सख्या में, तथा अन्य सब प्रकारों से अधिक अच्छे रहेंगे, तभी विजय होगा, इसलिये विजय की इच्छा करनेवाले वीर अपना ऐसा उत्तम प्रबन्ध रखें ।

जनता की सेवा ।

(नोधा गौतमः । जगती ।)

रोदसी आ वदता गणश्रियो नृपाचः शूराः शवसाऽहिमन्यवः ।

आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः ॥ ९ ॥ (ऋ. १।६४)

“ हे (गणश्रियः) समुदाय की शोभा से युक्त मरुतो ! हे (नृ-पाचः शूराः) मानवीकी सेवा करनेवाले शूर, (शवसा अ-हि-मन्यवः) बल के कारण प्रबल कोप से युक्त मरुतो ! (रोदसी) युलोक और पृथ्वी में (आवदत) अपनी घोषणा करो । हे मरुतो ! (व रथेषु) आप के रथों में (वन्धुरेषु) बैठकों में (दर्शता अमति न) दर्शनीय रूप के समान अथवा (विद्युत् न) बिजली के समान (आ तस्थौ) आप का तेजस्वी रूप ठहरा है । ”

अर्थात् आप जनता की सेवा करनेवाले स्वयंसेवक वीर जब रथों में बैठकर जाते हैं, उस समय बड़ी शोभा दीखती है ।

साम्यवाद ।

(श्यावाश्व आत्रेयः । जगती ।)

अज्येष्ठास अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा विवावृधुः । सुजातासो जनुषा पृश्नि-मातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥६॥ (ऋ. ५-५९)

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास पते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय । युवा पिता स्वपा रुद्र पशं सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥ ५ ॥ (ऋ. १-६०)

“ मरुतां मे कोई श्रुत नहीं और कोई कनिष्ठ नहीं और कोई मध्यम भी नहीं । ये सब समान हैं । ये अपनी शक्ति से बढ़ते हैं । ये (सुजातासः) कुलीन हैं और (पृथ्विमातरः) भूमि को माता माननेवाले हैं । ये दिव्य नरवार हैं । ”

“ ये अपने आप को (भ्रातरः) भाई कहते हैं और (सौभाग्य स वावृधुः) सौभाग्य के लिये मिलकर यत्न करते हैं । इनकी माता (पृथ्विः) मातृभूमि इनके लिये उत्तम पोषण करनेवाली है । ”

इन मंत्रों में मरुतां का साम्यवाद अच्छी तरह कहा है । ये अपने आपको भाई मानते हैं । यह भी साम्यवादियों के लिये योग्य ही है ।

ये सैनिक हैं । सेना में कोई लड़का नहीं भरती होता, कोई वृद्ध भी नहीं भरती होता । प्रायः सब तरुण ही भरती होते हैं । इसलिये न इन में कोई बड़ा है और न छोटा है, सब समान ही रहते हैं । ये सभी मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करनेवाले होनेके कारण सब समान-तया सन्मान्य होते हैं ।

इस समय तक के वर्णन से मरुत् ये सैनिक हैं, यह बात पाठकों के ध्यान में आ चुकी होगी । सैनिकों के पास शस्त्र होते हैं, उन के शरीर सुडाल होते हैं, सब प्रायः समान ऊँचाई के होने के कारण समान होते हैं । सब के सिरों पर साँफे, मुकुट या शिरस्त्राण समान होते हैं, सब का रहनासहना समान होता है । सब सैनिक उक्त कारण अपने आप को भाई कहते हैं । सब मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करते हैं, अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए, देश के लिये लड़ते हैं, सब ही शत्रु को रलानेवाले होते हैं, सब सैनिक सांघिक जीवन में ही रहते हैं, संघ के बिना ये कभी रहते नहीं, कतार में चलते हैं, सब के शस्त्र समान होते हैं । यह सब वर्णन सैनिकों का है और मरुतां का भी है । अतः पाठक मरुतां को सैनिक समझे और मंत्रों का आशय जान लें ।

मरुतां की शोभा ।

(गीतमो राहूगणः । जगती ।)

प्र ये शुभ्रमन्ते जनयो न सप्तयो

यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।

रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे
मदन्ति वीरा विदथेषु घृध्वय ॥ १ ॥

गोमातरो यच्छुभ्रयन्ते अंजिभिः

तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मत ।

बाधन्ते विश्वं अभिमातिनं अप

वर्तमान्येषामनु रीयते घृतम् ॥ ३ ॥

वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः

प्रच्यावयन्तो अज्युता चिदोजसा ।

मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्व

वृषमातासः पृषतीर्युध्वम् ॥ ४ ॥

(ऋ० १-८५)

“ (ये मरुतः) जो मरुत् (जनयः न) स्त्रियोंके समान (यामन्) बाहर जाने के समय (प्र शुभ्रयन्ते) विशेष अलंकार धारण करने हैं । ये मरुत् (रुद्रस्य सूनवः) रुद्र के अर्थात् शत्रु को रलानेवाले वीर के पुत्र (सु-दंससः) उत्तम कर्म करनेवाले और (सप्तयः) शीघ्रगामी हैं । मरुतां ने (रोदसी) शुलोक और पृथ्वी को (वृधे) अपनी वृद्धि के लिये साधन (चक्रिरे) बनाया, ये (घृध्वयः) शत्रु का घर्षण करनेवाले (वीराः) वीर (विदथेषु) युद्धों में (मदन्ति) आनन्दित होते हैं । ”

“ (गो-मातर) गौको अथवा पृथ्वीको माता मानने-वाले मरुत् (यत्) जब (अंजिभिः शुभ्रयन्ते) अलंकारों से शोभित होते हैं, तब (तनूषु) वे अपने शरीरों पर (शुभ्राः विरुक्मत) तेजस्वी और चमकनेवाले शस्त्र (दधिरे) धारण करते हैं । वे (विश्वं अभिमातिनं) सब शत्रु को (अप बाधन्ते) पराभूत करते हैं, प्रतिबन्ध करते हैं । (एषां वर्तमानि) इनके गमन के मार्ग पर (घृतं अनु रीयते) घी आदि भोग्य पदार्थ (अनु रीयते) अनु-कूलता के साथ मिलते हैं । ”

“ (ये सुमखासः) जो उत्तम यज्ञ करनेवाले मरुत् (ऋष्टिभिः वि भ्राजन्ते) अपने भाइयों से शोभते हैं । जो (ओजसा) अपने बल के साथ (अज्युता) न हिलने-वालों को भी (प्रच्यावयन्ते चित्) निश्चयपूर्वक हिला देते हैं । हे मरुतां ! (यत्) जब आप अपने (रथेषु पृषतीः) रथों को विचित्र रंगोंवाली हरिणों या घोड़ियों

को जोतते हैं तब (वृष-व्राताराः) वीर्यवान् समूह करनेवाले आप (मनो-जुवः) मम जैसे वेगवान् होते हैं । ”

इन मंत्रों में कहा है कि मरुत् वीर स्त्रियों के समान भलेकारोंसे सजते हैं, शत्रुका धर्षण करते हैं, युद्धों से आनंदित होते हैं, मातृभूमि को माता मानते हैं, भाले-बर्चियों को धारण करते हैं, सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं, समूहोंमें रहनेसे इनका बल बढ़ा रहता है। शत्रु पर ये समूह से ही हमला करते हैं ।

मरुत् वीर स्त्रियों के समान अपने आप को सजाते हैं। पाठक यहां सैनिकों की सजावट की ओर देखें। सैनिक अपनी वेषभूषा, शस्त्र, बटसूट, साफे आदि सब जितना सुंदर रखा जा सकता है, उतना सुंदर, स्वच्छ और सुढाल रखते हैं। सैनिक जितने अच्छे सजते हैं और जितना सजावट का खयाल करते हैं, उतना कोई और नहीं करता। इस सजावट में ही इनका प्रभाव रहता है। इसलिये यह सजावट घुरी नहीं है।

यहां के ‘ गो-मातरः, पृथ्वि-मातरः ’ ये शब्द मातृभूमि और गौ को माता मानने का भाव बताते हैं। गोरक्षा करना इस तरह मरुतों का कर्तव्य दीखता है। गोरक्षण, मातृभूमिरक्षण, स्वभाषारक्षण आदि भाव ‘ गोमातरः ’ में स्पष्ट दीखते हैं।

(भगस्यो मैत्रावरुणः । जगती ।)

विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो

मिथस्पृध्यैव तविषाण्याहिता ।

अंसेषु वः प्रपथेषु खादयो-

ऽक्षो वध्वक्रा समया वि वावृते ॥ ९ ॥

(ऋ १-१६६)

“ हे मरुतों ! (वः रथेषु) आप के रथों में (विश्वानि भद्रा) सब कल्याणकारक पदार्थ रहते हैं। (मिथ-स्पृध्या इव) परस्पर स्पर्धा के (तविषाणि आहिता) सब शस्त्र रखे हैं। (अंसेषु) बाहुओं में तथा (वः प्रपथेषु) आप के पांवों में (खादयोः) आभूषण रहते हैं और आप के चक्र का (अक्षः) अक्ष (चक्रा समया) चक्रों के समीप साथ साथ (वि वावृते) रहता है । ”

मरुतों के रथों पर भरपूर अस्त्रादि पदार्थ और शस्त्र रहते हैं ।

(गोतमो राहुगण । जगती ।)

शूरा इवेद् युयुधसो न जग्मयः ।

अवस्यस्यो न पृतनासु येतिरे ।

भयन्ते विश्वा भुवनानि मरुद्भ्यो

राजान इव त्वेषसंदशो नर ॥ ८ ॥

(ऋ १।८५)

“ (शूरा इव इत्) ये शूरों के समान (जग्मय युयुधसः न) शस्त्र पर दौड़नेवाले योद्धाओं के समान (अवस्यस्यः न) यश की इच्छा करनेवालों के समान (पृतनासु येतिरे) लडाइयों में युद्ध करते हैं। (मरुद्भ्यः) मरुतों से (विश्वा भुवनानि) सब भुवन (भयन्ते) डरते हैं। ये मरुत् (राजानः इव) राजाओं के समान (त्वेष-संदशः) क्रोधित दीखनेवाले (नर) ये नेता हैं । ”

युद्ध में मरुतों को आनन्द होता है। ये ऐसा पराक्रम करते हैं कि, जिससे सब विश्व इनसे डरता है। ऐसे पराक्रमी ये वीर हैं ।

(भगस्यो मैत्रावरुणः । जगती ।)

को वोऽन्तर्मरुतो ऋष्टिविद्युतो

रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया ।

धन्वच्युत इषां न यामनि

पुरुप्रैषा अहन्यो नैतशः ॥ (ऋ. १-१६८)

“ हे (ऋष्टिविद्युतः) विद्युत् का शस्त्र बर्तनेवाले मरुतो !

(व अन्तः कः) आप के अन्दर कौन (रेजति) प्रेरणा करता है ? अथवा (जिह्वया हन्वा इव) जिह्वा से हनु को प्रेरणा मिलती है, वैसी (त्मना) स्वयं हि तुम प्रेरित होते हो ? अथवा तुम्हारे अन्दर रहकर कोई दूसरा तुम्हें प्रेरणा देता है ? (इषां यामनि) अश्वों की प्राप्ति के लिये (धन्वच्युतः न) अन्तरिक्ष से चूनेवाले उदक की जैसी इच्छा करते हैं अथवा (अ-हन्यः एतशः न) शिक्षित घोड़े के समान (पुरु-प्रैषाः) बहुत दान देनेवाला याजक तुम्हें बुलाता है । ”

(भगस्यो मैत्रावरुणः । गायत्री ।)

आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋजनी शरुः

आरे अहमा यमस्यथ ॥ (ऋ. १।१७२।२)

“ हे (सुदानवः मरुतः) हे दानशील मरुतो ! (वः मा ऋजनी शरुः) आप का वह तेजस्वी भाला (आरे)

हम से दूर रहे, तथा! (य अस्यथ) जिस को तुम फेंकते हो, वह (अश्मा) पत्थर भी हमसे (आरे) दूर रहे । ”

अर्थात् तुम्हारा शस्त्र और तुम्हारा पत्थर शत्रु पर गिरे, हम उस से दूर रहे । यहां पत्थर भी एक मरुतों का शस्त्र कहा है । ये पत्थर हाथ से, पांव से और रस्सी से फेंके जाते हैं । हाथ से आगे, पांव से पीछे और ‘क्षेपणी’ नामक पत्थर फेंकनेवाली रस्सी से बड़ी दूरी पर फेंका जाता है । इस रस्सी का ‘गोफन’ (क्षेपणी) बोलते हैं, इस से आध सैर वजन का पत्थर सौ गज पर ऐसे वेगसे फेंका जाता है कि, जिससे शत्रुका हाथ भी टूट जाय ।

प्रतिबंधरहित गति !

(इयावाश्च आग्रयः । जगती ।)

न पर्वता न नद्यो वरन्त वो
यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत् ।
उत द्यावापृथिवी याथना परि

शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥७॥ (ऋ. ५।५५)

“ हे मरुतो ! (न पर्वता) न पर्वत और (न नद्यः) न नदियां (वः वरन्त) आप के मार्ग को प्रतिबन्ध कर सकते हैं, (यत्र आचिध्वं) जहां जाना चाहते हैं, (तत् गच्छथ इत् उ) वहां तुम पहुंचते ही हो । तुम युलोक आर पृथ्वी पर पहुंचते हो और (शुभ यातां) शुभ स्थान को पहुंचनेवाले आप के रथ आगे बढ़ते हैं । ”

यहां लिखा है कि, नदी और पर्वत से मरुत् वीरों को किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं होता है । वे जहां जहां पहुंचना चाहते हैं, पहुंचते ही हैं और वहां यश भी कमाते हैं ।

बीच में पर्वत आ जाय, नदियाँ आ जायँ, बीच में जलाशय हों अथवा रेतीले मैदान हों, इन सब प्रतिबंधों को ये गिनते नहीं । इन के रथ ऐसे होते हैं कि, वे जहां चाहें वहां जाते और शत्रु को घेर लेते हैं ।

जहां मरुत् जाना चाहते हैं, वहां वे पहुंचते हैं और जिस शत्रु को पराजित करना चाहते हैं, उस को पराजित कर छोड़ते हैं ।

इनकी गति को रोकनेवाला पृथ्वी, अन्तरिक्ष और युलोक में कोई नहीं है । शत्रु पर विजय प्राप्त करना हो, तो ऐसा

ही सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिये । अपना हरएक शस्त्र शत्रुसे अधिक प्रभावी रहना चाहिये, हरएक रथ शत्रु से अधिक सामर्थ्यशाली रहना चाहिये और अपना हरएक वीर शत्रुसे शक्ति, बुद्धि और युक्ति में श्रेष्ठ रहना चाहिये । तब विजय मिलता है । यह बात मरुतोंके वर्णनमें पाठक देख सकते हैं ।

(कण्वो घौर । सतोबृहती ।)

असाम्योजो विभृथा सुदानवोऽसामि धृतयः
शवः । ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इधुं न
मृजत द्विषम् ॥ (ऋ. १-३९-१०)

“ हे (सुदानव) उत्तम दान देनेवाले मरुतो ! (असामि ओजः विभृथः) अतुल बल आप धारण करते हैं । हे (धृतय) शत्रुको कंपानेवाले मरुतो ! (असामि शवः) अतुल सामर्थ्य आप के पास है । (ऋषिद्विषे) ऋषियों का द्वेष करनेवाले (परिमन्यवे) कोपकारी शत्रु के वध के लिये (द्विष) विनाशक शस्त्र (इधुं न) बाण के समान (मृजत) छोड़ दो ।

मरुतों का बल बहुत है, उस की तुलना किसी के साथ नहीं हो सकती । शानियों का द्वेष करनेवाले का नाश करने के लिये आप ऐसा शस्त्र छोड़िए कि, जिस से उस शत्रु का पूर्ण नाश हो जावे ।

धूम्रास्त्रप्रयोग ।

(ब्रह्मा । त्रिष्टुप ।)

असौ या सेना मरुतः परेषां
अस्मानैत्योजसा स्पर्धमाना ।

तां विध्यत तमसापव्रतेन

यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ॥६॥ (अथर्व० ३।२)

“ हे मरुतो ! यह जो (परेषां) शत्रुओंकी सेना है, जो (अस्मान्) हम पर स्पर्धा करती हुई, (ओजसा एति) वेग से आ रही है, (तां) उस सेना को (अपव्रतेन तमसा) घबराहट करनेवाले तमसास्त्र से (विध्यत) वेध लो (यथा) जिस से इन में से कोई किसी को (न जानात्) न जान सके । ”

यहां अंधेरा उत्पन्न करनेवाला धूम्रास्त्र शस्त्र का वर्णन है । इस से एक दूसरे को जान नहीं सकता ।

यहां ‘अपव्रत तम’ नामक अस्त्र का प्रयोग शत्रु की

सेना के ऊपर करने को कहा है । ' अपव्रत ' का अर्थ यह है कि, जिस से कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान नहीं होता, शत्रुसैन्य घबरा जाता है और जो नहीं करना चाहिये वही करने लगता है । इस घबराहट के कारण शत्रु की सेना का निश्चय से पराभव होता है ।

' तमस् ' नामक अस्त्र अन्धेरा उत्पन्न करनेवाला है । यह धूँवें जैसा ही होगा । आजकल इस को ' गैस ' (Gas) कहते हैं । धूँव का पर्दा जैसा खड़ा करते हैं और उस की ओर में रह कर शत्रु को सताते हैं ।

' तमस् ' और ' अपव्रत तमस् ' ये दो विभिन्न अस्त्र होंगे । अधिक घबराहट करनेवाला तम ही अपव्रत कहलानेयोग्य हो सकता है । यह मरुतों का अस्त्र यहाँ कहा है । पूर्वोक्त अन्यान्य आयुधों के साथ पाठक इस का भी विचार करे ।

(गुप्तमद शौनकः । जगती ।)

उक्षन्ते अश्वान् अर्या इवाजिषु
नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः ।
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः
पृथं याय पृषतीभिः समन्यवः ॥३॥
इन्धन्वभिर्धेनुभी रणशूधभिः
अध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजहृष्टयः ।
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन
मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ॥५॥
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाज्जिभी
रुद्रा ऋतस्य सद्नेषु वावृधुः ।
निमेघमाना अत्येन पाजसा
सुश्वन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् ॥३॥

(ऋ २-३४)

" हे (हिरण्यशिप्रा) सोने के सुकुट धारण करनेवाले (दविध्वतः) शत्रुको कंपानेवाले मरुतों ! (आजिषु) सग्राओं में (अश्वान् अश्वान्) चपल घोड़ों को (उक्षन्ते इव) जैसे स्नान कराते हैं, वैसे जो स्नान करते हैं और (नदस्य कर्णः आशुभिः) हिनहिनानेवाले घोड़ों के कानों के समान चपल घोड़ों के साथ (तुरयन्त) दौड़ते हैं, आप (समन्यवः) उत्साह वाले (पृषतीभिः) बिंदुवाली हरिणियों के साथ (पृथं याय) हविष्यास के पास, यज्ञ के पास, जाओ । "

" हे (आजद्-ऋष्टयः) चमकनेवाले भालों को धारण करनेवाले (समन्यवः) उत्साह से परिपूर्ण मरुतो ! (इन्धन्वभिः) प्रदीप्त, तेजस्वी (रणशूधभिः) भरपूर दुरधाशयवाली (धेनुभिः) धेनुओं के साथ रहते हुए (अध्वस्मभिः पथिभिः) अविनाशी मार्गों से (हंसासः) हंसों के समान (मधोर्मदाय) मधुर सोमरसपान के आनन्द के लिये (स्वसराणि गन्तन) यज्ञस्थानों के पास जाओ । "

" (रुद्राः) शत्रुको हलानेवाले मरुत् (ऋतस्य सद्ने) यज्ञ के मण्डप में (क्षोणीभिः अरुणेभिः न अजिभिः) शब्द करनेवाले, चमकनेवाले अलकारों के समान (वावृधुः) बढ़ते हैं । (निमेघमानाः) मघ के समान (अत्येन पाजसा) गमनशील बल से युक्त (सुश्वद्र वर्णं सुपेशसम्) चमकनेवाला आनन्ददायक वर्ण (दधिरे) धारण करने हैं । "

विवरमार्ग ।

(श्यावाश्व आग्नेयः । अनुष्टुप् । १७ पंक्तिः ।)

आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः ।
एतेभिर्मह्यं नामभि यज्ञ विष्टार ओहते ॥१०॥
य ऋष्या ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥१३॥
सप्त ते सप्ता शाकिन एकमेका शता ददुः ।
यमनायामधि श्रुत उद्राधो गव्यं मृजे निराधो
अद्रव्यं मृजे ॥ १७ ॥ (ऋ. ५।५२)

" (आपथयः) सीधे मार्गसे, (विपथयः) प्रतिकूल मार्ग से, (अन्तस्पथा) अन्दर के गुप्त मार्ग के, विचर के मार्ग से, (अनुपथा) साथवाले अनुकूल मार्ग से अर्थात् (एतेभिः नामभिः) इन सब प्रसिद्ध मार्गोंसे (विस्तारः) यज्ञों का विस्तार करते हुए (यज्ञं ओहते) यज्ञ के पाम आते हैं । "

" जो (ऋष्या) दर्शनीय (ऋष्टिविद्युतः) शस्त्रों से विशेष प्रकाशित, (कवयः) जानी और (वेधसः) वेध करनेवाले (सन्ति) हैं, हे ऋषे ! (त मारुतं गणं) उन मरुतों के गणों को (नमस्या गिरा) नमन करने की वाणी से (रमय) आनन्दित कर । "

“ (ते शाकिनः सप्त सप्ताः) वे समर्थ सातसातों के संघ (एक एकां क्षाता ददुः) एक एक सौ दान देते रहे । (यमुनायां अभिश्रुत) यमुना के तीर पर यह प्रसिद्ध है कि, (गन्धं राघः उद्मृजे) गौओं का धन दान में दिया और (अश्व राघः निमृजे) घोड़ों का धन दान में दिया । ”

इस में चार मार्गों का वर्णन है । मरुत् चारों मार्गों से यज्ञ के प्रति आते हैं, इन मार्गों में अन्तस्पथ अर्थात् भूमि के अन्दर का विवरमार्ग भी है । ये मरुत् गौओं और घोड़ों का दान देते हैं, इत्यादि बातें इन मंत्रों से मननीय है ।

मरुतों का सामर्थ्य ।

(इथावाश्व आग्नेयः । जगती ।)

विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो
वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः ।
अब्दया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः
स्तनयदमा रभसा उदोजसः ॥ ३ ॥

न स जीयते मरुतो न हन्यते
न स्वेधति न व्यथते न रिष्यति ।
नास्य राय उपदस्यन्ति नोतय
ऋषिं वा यं राजानं वा सुपूदथ ॥ ७ ॥

नियुत्वतो ग्रामजितो यथा नरो-
ऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः ।
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्
व्युन्दन्ति पृथिवी मध्वे अन्धसा ॥ ८ ॥

(ऋ. ५-५४)

“ ये (नरः मरुत) नेता मरुत् (विद्युन्महसः) बिजुली के समान महातेजस्वी, (अश्म-दिद्यवः) उल्का के समान प्रकाशमान, (वात-त्विषः) वायु के समान वेगवान्, (पर्वतच्युतः) पर्वतों को भी स्थान से अष्ट करनेवाले, (अब्दया चित् मुहुः आ) पानी देने की अर्थात् वृष्टि की इच्छा बारबार करनेवाले, (हादुनीवृतः) बिजुली को प्रेरित करनेवाले, (स्तनयद्-अमाः) गर्जना में भी जिन की शक्ति प्रकट होती है, ऐसे ये मरुत् (रभसा उत् उोजसः) वेग और सामर्थ्य से युक्त हैं । ”

“ हे मरुतो ! जिस (ऋषिं) ऋषिको (वा यं राजानं वा) अथवा जिस राजा को तुम (सुपूदथ) प्रेरित करने हो, वह

(न सः जीयते) पराजित नहीं होता, (न हन्यते) न मारा जाता, (न स्वेधति) न पीछे हटता है, (न व्यथते) पीड़ित नहीं होता और (न रिष्यति) नाश को प्राप्त नहीं होता । (अस्य रायः न उपदस्यन्ति) इसके धन क्षीण नहीं होते, (न ऊतय) न उसकी रक्षाएं कम होती हैं । ”

“ (यथा ग्रामजित नरः) जैसे नगर को जीतनेवाले नेतालोग गर्व से चलते हैं, वैसे (नियुत्वतः) घोड़ों पर सवार हुए ये मरुत् (अर्यमणः कबन्धिनः) सूर्य के समान तेजस्वी होकर जल देने लगते हैं । (इनासः) ये स्वामी (यत् अस्वरन्) जब शब्द करते हुए (उत्सं पिन्वन्ति) हाँज को जल से भर देते हैं, तब (मध्वः अन्धसा) मधुर जल से (पृथिवीं व्युन्दन्ति) पृथ्वी को भर देते हैं । ”

मरुत् विजयी वीर हैं । सर्वत्र (क-बन्धिनः) ये पानी का प्रबन्ध सुरक्षित रखते हैं । (मध्वः अन्धसा) मधुर अन्न का प्रबन्ध भी सुरक्षित रखते हैं । अन्न और जल का प्रबन्ध सुरक्षित रखने के कारण इनका विजय होता है । सैनिकों का विजय पेट की पूर्ति से हाँता है । पाठक विजय का यह कारण अवश्य देखें और अपने सैनिकों के प्रबन्ध में ऐसी सुव्यवस्था रखें ।

(कण्वो धौरः । बृहती ।)

परा ह यत् स्थिरं ह्यथ नरो वर्तयथा गुरु ।
वि याथन वनिनः पृथिव्याः व्याशा पर्वतानाम् ॥
(ऋ. १।३९)

“ हे (नरः) शूर नेताओ ! (यत् स्थिरं परा ह्यथ) जो स्थावर पदार्थ है, उसको तुम तोड़ देते हो, और (गुरु वर्तयथाः) जो बड़ा भारी पदार्थ हो, उसको तुम हिलाते हो, (पृथिव्याः वनिनः वि याथन) पृथ्वी पर के बड़े वृक्षों को तुम उखाड़ देते हो और (पर्वतानां आशाः वि) पर्वतों को फाड़ते हो । ”

शूर सैनिक स्थिर पदार्थों को अपने मार्ग से हटा देते हैं, बड़े भारी पदार्थों को तोड़कर चूर्ण करते हैं, वनों में बड़े बड़े वृक्षों को तोड़कर वहाँ उत्तम मार्ग बनाते हैं और पर्वतों को भी फाड़कर बीच में से मार्ग निकालते हैं । अर्थात् शूरों को किसी का प्रतिबन्ध नहीं होता । शूरों को सब मार्ग खुले रहते हैं ।

(कण्वो वीरः । सतोबृहती ।)

नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूभ्यां
रिशादसः । युष्माकमस्तु तविषी तनायजा
रुद्रासो नू चिदाधृषे ॥ ४ ॥ (ऋ. १।३९)

“ हे (रिशादसः) शत्रु का नाश करनेवाले मरुतो !
(अधि द्यवि) शुलोक में (व शत्रुः न विविदे) आप
के लिये कोई शत्रु नहीं है, (न भूभ्यां) पृथ्वी पर
भी आप के लिये कोई शत्रु नहीं है । हे (रुद्रासः)
शत्रु को रुढ़ानेवाले मरुतो ! (युष्माकं युजा) आप की
संघटना से (आधृषे) शत्रु पर आक्रमण करने के लिये
(तना तविषी अस्तु) विस्तृत सामर्थ्य आपके पास हो । ”

आप के सामने ठहरनेवाला कोई शत्रु नहीं है और
आप का परस्पर आपस का संगठन ऐसा है कि, आप
शत्रु पर हमला करते हैं और शत्रु को रुढ़ा देते हैं ।

(पुनर्वसुः काण्वः । गायत्री ।)

वि वृत्रं पर्वशो ययुः वि पर्वतां अराजिन ।
चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् ॥ २३ ॥

अनु त्रितस्य युध्यत शुभ्रमावन्नत क्रतुम् ।
अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४ ॥

विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः ।
शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये ॥ २५ ॥

आ नो मखस्य दावनेऽश्वेर्हिरण्यपाणिभिः ।
देवास उप गन्तन ॥ २६ ॥

सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्नि मरुद्भिः ।
स्तुषे हिरण्यवाशिभिः ॥ २७ ॥ (ऋ. ८-७)

“(अ-राजिन.) राजाको न माननेवाले, अराजक (वृष्णि
पौंस्यं चक्राणा) बल के साथ पराक्रम करनेवाले मरुत्
(वृत्रं पर्वशः विययुः) वृत्र को जोड़जोड़ में काटते रहे ॥
(युध्यतः त्रितस्य) युद्ध करनेवाले त्रितका (शुभ्रं अनु
भावन्) बल बढ़ाया (उत क्रतुं) और कर्म की शक्ति भी
बढ़ायी और (वृत्रतूर्ये इन्द्रं अनु) वृत्र के युद्ध में इन्द्र की
रक्षा की ॥ (अभिद्यवः विद्युत्-हस्ताः) तेजस्वी बिजली
जैसा शस्त्र हाथ में लेकर खड़े हुए मरुत् (हिरण्ययीः
शिप्राः) सोनेके शिरछाण (शीर्षन्) सिर पर धारण करते
हैं, (शुभ्राः श्रिये व्यञ्जते) जो (शुभ्राः) शोभासे चमकते
हैं । हे (देवामः) देव मरुतो ! (न मखस्य दावने)

हमारे यज्ञ के प्रति तुम (हिरण्यपाणिभिः अश्वैः) सोने के
आभूषणों से युक्त घोड़ों के साथ (उप आगन्तन) आओ ।
(वज्र हस्तैः) वज्र हाथ में धारण करनेवाले (हिरण्य-
वाशिभिः) सोने की कुठार हाथ में लिये (मरुद्भिः)
मरुतों के साथ अग्नि की भी (सहः) बल के लिये
(कण्वामः) हे जानियो ! (स्तुषे) प्रशंसा करो । ”

इन मंत्रों में मरुतों के शस्त्र बिजली जैसे चमकनेवाले,
सोनेकी नकशी किये कुठार और भाले हैं । मरुतोंके सिर पर
सोने के मुकुट हैं, श्वेत पोषाख किये हैं । और ये शक्ति के
कामों के लिये प्रसिद्ध हैं, ऐसा वर्णन है ।

सिर पर सोने के मुकुट, अथवा जरतारी के साके हैं,
सोने के भूषण हाथों में धारण किये हैं, सोने की नकशी
के कुठार हाथों में धारण किये हैं । यह वर्णन मरुतों का
है । इन्द्र के ये सैनिक हैं ।

(सोभरिः काण्वः । सतो बृहती ।)

गीर्भिर्वाणो अज्यते सोभराणां रथे कोशे
हिरण्यये । गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे
महांते न स्परसे नु ॥ (ऋ. ८-२०-८)

“(हिरण्यये रथे कोशे) सोनेके रथके बीचमें (सोभ-
रीणां गीर्भि) सोभरीयों की प्रशंसा के साथ (वाणः
अज्यते) वाणनामक वाद्य बजने लगा । (गो-बन्धवः)
गौओं के भाई (सुजातासः) उत्तम जन्मे हुए, उत्तम
कुल में जन्म जिन का हुआ है । अतः (महान्त) बड़े
मरुत् (नः इषे भुजे) हमारे भज का भोग करने के लिये
(स्परसे नु) शीघ्र आ जाय । ”

यहां मरुतों को गौओं के भाई कहा है । गौओं के साथ
इन का इतना सम्बन्ध है । इन की बहिने गौवं हैं । ये
मरुत् अपने रथ में वाण नामक वाद्य बजाते हैं । वाण वाद्य
१०० तारों का है और छोटे ढोल जैसा चमड़े का भी
होता है ।

औषधी ज्ञान ।

(सोभरिः काण्वः । सतोबृहती ।)

विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनून्वा तेना नो अधि
वोचत । क्षमा रपो मरुत् आतुरस्य न इष्कर्ता
विन्दुतं पुनः ॥ (ऋ. ८।२०।२६)

“ हे मरुतो ! (विश्वं पश्यन्तः) सब कुछ जाननेवाले

आप (न तनूषु) हमारे शरीरों के पास (बिभृथाः) औषध ले आओ और (तेन अधि वोचन) उस से हमें नीरोग होने का उपदेश करो । (नः आनुरस्य) हमारे में जो रोगी हो, उस के पाससे (रपः क्षमा) दोष दूर करो और (विन्हुत पुनः इष्कर्ता) टूटेफूटे या जखमी को फिर निर्दोष करो । ”

मरुत् सैनिक है, पर वे औषधविद्या को जानते है, जखमियों की सेवा करना उन को मालूम है, पहिले से नीरोग रहने के लिये जो सावधानी रखनी चाहिये, वह भी उन को मालूम है । सैनिकों को दवाइयों का थोडा ज्ञान चाहिये ।

(गीतमो राहगणः । जगती ।)

उपह्वरेषु यदचिध्वं ययि
वय इव मरुतः केनचित् पथा ।
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेषु
धृतमक्षता मधुवर्णमर्चते ॥२॥
प्रेषामज्मेषु विथुरेव रेजते
भूमिर्यामेषु यद्ध युञ्जते शुभे ।
ते क्रीळयो धनयो भ्राजदृष्टयः
स्वयं महित्वं पनयन्त धृतयः ॥३॥ (१८७)

“ हे (मरुतः) मरुतो ! (वय इव) पक्षियोंके समान (केन चित् पथा) जिम् चाहे उस मार्ग से (उपह्वेषु) आकाश में (यत्) जब (ययि अचिध्वं) गमनमार्ग निश्चित करते हैं, तब (वः रथेषु) आप के रथों में (कोशा उप आ श्रोतन्ति) खजाने खले होते हैं और आप (अर्चते) उपासक के लिये (मधुवर्ण धृत) शुद्ध धी (उक्षता) सींचते हैं । ”

“ (यत् ह) जब मरुत् (शुभे युञ्जते) शोभाके लिये रथ जोतते है, तब (एषां) इन के (अज्मेषु यामेषु) घुडदौड के गमनों से (भूमिः) भूमि (विथुरा इव) पति से वियुक्त स्त्री के समान (रेजते) कांपती रहती है । ये मरुत् (क्रीळयः) खेलों में प्रवीण (धुनयः) हिलाने-वाले (भ्राजत्-ऋष्टयः) चमकनेवाले भाले धारण करनेवाले (धृतयः) चलानेवाले (स्वय महित्व) अपना ही महत्त्व स्वयं (पनयन्त) व्यवहार से बताते है । ”

इन मन्त्रों के वर्णन से स्पष्ट है कि, आकाश में जिस चाहे उस मार्ग से जानेवाले मरुतों के विमान पक्षियों जैसे

भ्रमण करते हैं । तथा इन के वाहन जब भूमि पर से घूमने लगते हैं, तब भूमि कांपने लगती है । यह वर्णन बड़ी गाडियों का है और निःसंदेह विमानों का है, पक्षी जैसे जो आकाश में घूमते हैं । ये निःसंदेह विमान ही हैं ।

वीरता और धन ।

(गृत्समदः शौनकः । जगती ।)

तं व शर्थं मारुतं सुमन्युर्गिरा
उपब्रुवे नमसा दैव्यं जनम् ।
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा
अपत्य-साचं श्रुत्यं दिवे दिवे ॥ (ऋ २-३०-११)
“ हे मरुतो ! मैं (सुमन्युः) सुख की इच्छा करनेवाला उपासक (त वः मारुतं शर्थं) उस आप के मरुत्समूह-रूपी बल को तथा (दैव्यं जनं) दिव्य जनों को (नमसा गिरा) प्रणाम से और वाणी से (उप ब्रुवे) प्रशंसित करते हैं । हमें (दिवे दिवे) प्रतिदिन (सर्ववीरं) सब वीरों से युक्त (अपत्यसाचं) संतानों से युक्त और (श्रुत्यं) यश से युक्त (रयिं) धन (नशामहै) प्राप्त हो । ”

धन ऐसा चाहिये कि, जिस के साथ हमें वीरता, संतान और यश मिले । वीरता के बिना धन मिलना असंभव है और सुरक्षित रखना भी असंभवही है ।

मरुतों के विशेषणों का विचार ।

अब मरुत्सूक्तों में जो विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, उन का विचार करते हैं । यहां विचारार्थ थोड़ेसे ही विशेषण लिये हैं और इन के स्थान के निर्देश पाठक सूची में देख सकते हैं, इस लिये यहाँ दिये नहीं हैं—

भाई मरुत् ।

ये मरुत् आपस में समान भाई हैं, न इन में (अउये-ष्टासः) कोई बडा है, न इनमें कोई (अमध्यमासः) मध्यम है और न इनमें कोई (अकनिष्ठासः) कनिष्ठ है, (अचरमा) नीच भी इन में कोई नहीं है, तथापि गुणों से ये (उयेष्टासः) श्रेष्ठ हैं, और (वृद्धाः) गुणों से ये बडे भी हैं । ये (अन्-आनताः) किसीके सामने नमते भी नहीं, उग्र वृत्ति से रहते हैं, ये (सु-जातासः) कुलीन हैं और ये सब मरुत् आपसमें (भ्रातरः) भाई भाई हैं । ये आपस में परस्पर भाई ही अपने आप को कहते हैं ।

जनता के सेवक ।

मरुत् (नृ-साचः) जनता की सेवा करनेवाले हैं, (नरः, वीरः) ये नेता हैं, वीर हैं, जनता की (आतारः) रक्षा करनेवाले हैं । ये (मानुषासः, विश्वकृष्टयः) मनुष्य हैं, सब मानव ही मरुत् हैं । ये (अद्वेषः) किसी का द्वेष नहीं करते, (अमवन्तः) ये बलवान् होते हैं । ये (घोरवर्षसः) बड़े शरीरवाले होते हैं और (पूत-दक्षसः) पवित्र कार्यों में अपने बल का अर्पण करनेवाले होते हैं ।

ये (प्रक्रीडिनः) विशेष खेलनेवाले अथवा खेलों में प्रेम रखनेवाले हैं, (अदाभ्याः) ये कभी दूषे नहीं जाते और (अधृष्टासः) कोई इनको डर भी नहीं बता सकता ।

ये मरुत् (अच्युता ओजसा प्रच्यावयन्तः) स्वयं अपने स्थान से भ्रष्ट नहीं होते, पर अपनी शक्ति से सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं ।

गोसेवा करनेवाले ।

मरुत् (गो-मातरः, पृश्निमातरः, पृश्नेः पुत्राः) गौ को माता माननेवाले, भूमि को माता माननेवाले, मातृभूमि की सेवा करनेवाले हैं, (गो-बंधवः) गौ के भाई जैसे ये बर्तते हैं ।

घोड़े पास रखते हैं ।

मरुत् वीर (अश्वयुजः) घोड़ों को अपने रथों को जोतनेवाले होने हैं, तथा (स्वश्वाः) उत्तम घोड़ोंवाले, (अरुणाश्वाः रोहितः) लाल रंगोंवाले घोड़ों को पास रखनेवाले, (पृषतीः) धन्वोवाले घोड़ोंसे युक्त, (आशवः) खरा से दौड़नेवाले घोड़ोंसे युक्त, (सुयमाः) शिक्षित घोड़ोंवाले ऐसे मरुत् के घोड़ों का वर्णन हैं । इसलिये मरुत् को (अनर्वाणः) कहा है, यहां घोड़ों को अपने पास न रखनेवाले ऐसा अर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि पूर्वोक्त विशेषणों से यह अर्थ विरुद्ध है । इसलिये (अन् अर्वाणः) का अर्थ हीन भावों को अपने पास न रखनेवाले, झगडालु वृत्तियों से रहित आदि अर्थ इस शब्द का करना योग्य है ।

मरुत् का रथ ।

मरुत् का रथ (हिरण्यरथा, हिरण्यया) सोने का है, रथ के पहिये भी (हिरण्यचक्राः) सोने के हैं । ये रथ बड़े (सुरथाः) सुंदर हैं, (सुखाः) अन्दर बठने से सुख होता है, (विद्युन्मन्तः) बिजली की युक्ति इनके रथों में हैं । (ऋष्टिमंतः) शस्त्र इनके रथों पर होते हैं । (अश्वपर्णाः) घोड़े ही इनके रथों के पंख हैं, अर्थात् अश्वशक्ति से ही ये रथ दौड़ते हैं । इस तरह इन के रथों का वर्णन है ।

शत्रुनाश ।

मरुत् के पास तेजस्वी शस्त्रास्त्र भरपूर हैं, इस के वर्णन पूर्वस्थान में आ गये हैं । इन शस्त्रों से ये (रिशादसः) शत्रु का नाश करते हैं और जनता की रक्षा करते हैं ।

मरुत् के विशेषणों का विचार करने से इस तरह ज्ञान होता है ।

स्वरूप ।

मरुत् का स्वरूप अध्यात्म में ' प्राण ' है, अधिदैवत में ' वायु ' है और अधिभूत अर्थात् मानवों में ' वीर ' है । अतः मरुत् के मंत्रों में ' प्राण, वीर, और वायु ' के वर्णन हम देखते हैं ।

प्रचण्ड वायु, आंधी, बादल, मेघ, भोले, वृष्टि आदि का वर्णन मरुत् के सूक्तों में है, पर वह इस ढंग से है कि, जिससे वीरों का ही वह है, ऐसा प्रतीत होता है । अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवत में मिलकर सामान्यतः मरुत् का वर्णन इन सूक्तों में है, इसी लिये ' प्राण, वीर और वायु ' का वर्णन इन सूक्तों में सूक्ष्म दृष्टि से प्रतीत होता है । पाठक इस तरह इन सूक्तों का विचार करें और वीरभाव का लाभ प्राप्त करें ।

आंध, (जि. सातारा)
२४।५।४२

} श्री० दा० सातवलेकर,
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मण्डल ।



मरुदेवता की विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ
१ मरुदेवता का परिचय ।	३
२ मरुतों के शस्त्र ।	५
३ बल से विजय ।	९
४ जनता की सेवा ।	९
५ साम्यवाद ।	९
६ मरुतों की शोभा ।	१०
७ प्रतिबन्धरहित गति ।	१२
८ धृन्नास्त्र-प्रयोग ।	१२
९ विवरमार्ग ।	१३
१० मरुतों का सामर्थ्य ।	१४
११ औषधि-ज्ञान ।	१५
१२ वीरता और धन ।	१६
१३ मरुतों का रथ ।	१७
१४ स्वरूप ।	१७

मरुदेवता-मन्त्रों की ऋषिसूची ।

ऋषिः	मन्त्रसंख्या	पृष्ठम्
मधुच्छन्दा वैश्वामित्र ।	१-४	१
मेधातिथिः काण्व ।	५	१
कण्वो घौरः ।	६-४५	१
पुनर्वसु काण्वः ।	४६-८१	३
सोमरिः काण्व ।	८२-१०७	४
नोधा गौतमः ।	१०८-१२२	६
गोतमो राहूगणः ।	१२३-१५६	७
परुच्छेपो दैवोदासिः ।	१५७	९
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।	१५८-१९७	९
गृत्समदः शौनकः ।	१९८-२१३	१२
गायिनो विश्वामित्रः ।	२१४-२१६	१४
इयावाश्च आत्रेयः ।	२१७-३१७	११
एवयामरुदात्रेयः ।	३१८-३२६	२१
शंयुर्बार्हस्पत्यः ।	३२७-३३३	२२
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।	३३४-३४४	११
मैत्रावरुणिवर्षसिष्ठः ।	३४५-३९४	२३

विन्दुः पूतदक्षो वा		
आङ्गिरसः ।	३९५-४०६	२६
स्यूमरश्चिर्मर्गवः ।	४०७-४२२	२७
विवस्वानृषिः ।	४२३-४२८	२८
इयावाश्च आत्रेयः ।	४२९	११
अस्या ।	४३०-४३३	११
अथर्वा ।	४३४-४३६	२९
शंतातिः ।	४३७-४३९	११
मृगार ।	४४०-४४६	११
अङ्गिराः ।	४४७	३०

मरुत्सहचारी देवगणः ।

(१) मरुद्रुद्रविष्णव । वसुध्रुत आत्रेयः ।	४४८	११
(२) मरुतोऽन्नामरुतौ वा । इयावाश्च आत्रेय	४४९-४५६	११
(३) सोमो मरुतः । अथर्वा ।	४५७	३१
(४) मरुत्पञ्चम्यौ । अथर्वा ।	४५८	११
(५) मरुत आपः । अथर्वा ।	४५९-४६४	३१

मरुदेवता की सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृ० ३२-३६
प्रथम मण्डलम् ।	३२-३३
द्वितीयं ” ।	३३
तृतीयं ” ।	११
पञ्चमं ” ।	३३-३४
षष्ठं ” ।	३४
सप्तमं ” ।	३४-३५
अष्टमं ” ।	३५-३६
दशमं ” ।	३६
२ उपमासूची ।	३७-३९
३ अकारादि वर्णानुक्रमसूची ।	४०-४४
४ गुणबोधक-पदसूची ।	४४-५३
५ निपात-देवतानां सूची ।	५४
६ ” ” वर्णानुक्रमसूची	५५



दैवत-संहिता ।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणा संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निमिता ।]



४ मरुद्देवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।६।४,६,८,९)

(१-४) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

आदहं स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिं	। दधाना नाम यज्ञिर्यम्	४	
देवयन्तो यथा मतिमच्छां विदद्वसुं गिरः	। महामनूपत श्रुतम्	६	
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति	। गणैरिन्द्रस्य कार्म्यः	८	
अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नश्नते गिरः		९	४

॥ २ ॥ (ऋ० १।५।२)

(५) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुतः पिबन्त क्रतुनां पोत्राद् यज्ञं पुनीतन	। यूयं हि षा सुदानवः	२	५
---	----------------------	---	---

॥ ३ ॥ (ऋ० १।३।७।१-१५)

(६-४५) कण्वो घोरः । गायत्री ।

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनुवाणं रथं शुभम्	। कण्वा अभि प्र गांयत	१	
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिर्ऋष्टिभिः	। अजायन्त स्वभानवः	२	
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद् वदान्	। नि यामश्चित्रमृश्नते	३	
प्र वः शर्धीय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे	। देवतं ब्रह्म गांयत	४	
प्र शंसा गोष्वध्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम्	। जम्भे रसस्य वावृधे	५	१०
को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च रमश्च धूतयः	। यत् सीमन्तं न धूनुथ	६	
नि वो यामाय मानुषो दध उग्राय मन्यवे	। जिहीत पर्वतो गिरिः	७	
येषामज्मेषु पृथिवी जुजुवाँ इव विस्पतिः	। भिया यामेषु रजते	८	१३

स्थिरं हि जानमेषां वयां मातुर्निरतवे	। यत् सीमनु द्विता शवः	९	
उदु त्ये सूनवो गिरः काण्ठा अज्मेण्वत्त	। वाश्चा अभिजु यातवे	१०	१०
त्यं चिद वा वीर्धं पृथुं मिहां नपातममृधम्	। प्र च्यावयन्ति यामभिः	११	
मरुतो यद्ध वो बलं जनां अचुच्यवीतन	। गिरीरचुच्यवीतन	१२	
यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना	। शृणोति कश्चिदेषाम्	१३	
प्र यातु शीर्भमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः	। तत्रो पु मादयाध्वे	१४	
अस्ति हि ण्मा मदाय वः स्मसिं ण्मा वयमेषाम् । विश्वं चिदायुर्जीवसे		१५	२०

॥ ४ ॥ (क्र० १।३८।१-१०)

कद्ध नूनं कंधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः	। दुधध्वे वृक्तवर्हिषः	१	
कं नूनं कद वो अर्थं गन्तां दिवो न पृथिव्याः	। कं वो गावो न रणयन्ति	२	
कं वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः कं सुविता	। क्वोऽं विश्वानि सौभगा	३	
यद यूयं पृश्निमातरो मर्तासः स्यातन	। स्तोता वां अमृतः स्यात्	४	
मा वो मृगो न गर्वसे जरिता भूदजोष्यः	। पथा यमस्य गादुषं	५	२५
मा पु णः परापरा निर्कृतिर्दुर्हणां वधीत्	। पवीण्ट तृष्णाया सह	६	
मत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वश्चिदा रुद्रियांसः	। मिहं कृण्वन्त्यवाताम्	७	
वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति	। यदेषां वृष्टिरसंजि	८	
दिवा चित् तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन	। यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति	९	
अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्य पार्थिवम्	। अरेजन्त प्र मानुषाः	१०	३०
मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु	। यातेमखिदयामभिः	११	
स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम्	। सुसंस्कृता अभीशवः	१२	
अच्छा वदा तना गिरा जरायु ब्रह्मणस्पतिम्	। अग्निं मित्रं न दर्शितम्	१३	
मिमीहि श्लोकं मास्ये पर्जन्य इव ततनः	। गायं गायत्रमुक्थ्यम्	१४	
वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम्	। अस्मे वृद्धा असन्निह	१५	३५

॥ ५ ॥ (क्र० १।३९।१-१०)

(प्रगाथः=(विपमा) बृहती, (समा) सतो बृहती) ।

प्र यद्वित्था पंगवतः शोचिर्न मानमस्यथ ।

कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्षसा कं याथ कं ह धूतयः १

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे ।

युष्माकमस्तु तविंषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः २ ३७

परां ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु ।	
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम्	३
नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः ।	
युष्मार्कमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे	४
प्र वेपयन्ति पर्वतान् वि विश्रान्ति वनस्पतीन् ।	
प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा	५ ४०
उपो रथेषु पृषतीरयुग्धं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।	
आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रो—दबीभयन्त मानुषाः	६
आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवो वृणीमहे ।	
गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरे—त्या कण्वाय विभ्युषे	७
युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अभ्व ईषते ।	
वि तं युयोत शर्वसा व्योजसा वि युष्मार्काभिरूतिभिः	८
असामि हि प्रयज्यवः कण्वं दृद प्रचेतसः ।	
असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभि—र्गन्ता वृष्टिं न विद्युतः	९
असाम्योजो विभृथा सुदानवो ऽसामि धूतयः शर्वः ।	
ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषं न सृजत द्विषम्	१० ४१

॥ ६ ॥ (क्र० ८।७।१-२६)

(४६-८१) पुनर्वन्तः काण्वः । गायत्री ।

प्र यद् वस्त्रिण्डुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत	। वि पर्वतेषु राजथ	१
यदुङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम्	। नि पर्वता अहासत	२
उदीरयन्त वायुभि—र्वाश्रासः पृश्निमातरः	। धुक्षन्त पिप्युषीमिषम्	३
वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान्	। यद् यामं यान्ति वायुभिः	४
नि यद् यामाय वो गिरि—र्नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे		५ ५०
युष्माँ उ नक्तमूतये युष्मान् दिवा हवामहे	। युष्मान् प्रयत्यध्वरे	६
उदु त्ये अरुणप्सव—श्चित्रा यामेभिरीरते	। वाश्रा अधि ण्णुना विवः	७
सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय यातवे	। त भानुभिर्वि तस्थिरे	८
इमां मे मरुतो गिरि—मिमं स्तोममृभुक्षणः	। इमं मे वनता हवम्	९
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुहे वज्रिणे मधु	। उत्सं कवन्धमुद्विणम्	१० ५१
मरुतो यद्वं वो विवः सुम्नायन्तो हवामहे	। आ तू न उप गन्तन	११ ५२

यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा क्रभुक्षणो दमे । उत प्रचेतसो मदे १२	
आ नो रयिं मकुच्युतं पुरुक्षुं विश्वधांसम् । इयतां मरुतो दिवः १३	
अधीव यद गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम् । सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः १४	
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः । अदाभ्यस्य मन्मभिः १५	६०
ये द्रप्सा इव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः । उत्सं दुहन्तो अक्षितम् १६	
उदु स्वानेभिरीरत उद रथैरुदु वायुभिः । उत स्तोमैः पृश्निमातरः १७	
येनाव तुर्वशं यदु येन कण्वं धनस्पृतम् । राये सु तस्य धीमहि १८	
इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः । वर्धन् काण्वस्य मन्मभिः १९	
कं नूनं सुदानवो मदथा वृक्तवर्हिषः । ब्रह्मा को वः सपर्यति २०	६१
नहि ण्म यद्ध वः पुरा स्तोमैर्भिवृक्तवर्हिषः । शर्धां क्रतस्य जिन्वथ २१	
समु त्ये महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम् । सं वज्रं पर्वशो दधुः २२	
वि वृत्रं पर्वशोययुर्वि पर्वतां अराजिनः । चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् २३	
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावक्षुत क्रतुम् । अन्विन्द्रं वृत्रतूर्यं २४	
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिपाः शीर्षन् हिरण्ययीः । शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये २५	७०
उशना यत् परावत उक्ष्णो रन्ध्रमयातन । द्यौर्न चक्रदद् भिया २६	
आ नो मखस्य द्वावंत ऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः । देवास उषं गन्तन २७	
यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः । यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः २८	
सुपोमे शर्यणावत्यार्जीके पस्त्यावति । युयुर्निचक्रया नरः २९	
कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम् । मर्डीकेभिर्नाधमानम् ३०	७१
कद्ध नूनं कंधप्रियो यदिन्द्रमजहातन । को वः साखित्व ओहते ३१	
सहो पु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः । स्तुपे हिरण्यवाशीभिः ३२	
ओ पु वृष्णः प्रयज्यूना नव्यसे सुविताय । ववृत्यां चित्रवाजान् ३३	
गिर्यश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः । पर्वताश्चिन्नि येमिरे ३४	
आक्षण्यावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः । धातारः स्तुवते वयः ३५	८०
अग्निर्हि जानिं पूर्य इच्छन्वो न सूर्यो अचिषा । ते भानुभिर्वि तस्थिरे ३६	८१

॥ ७ ॥ (क्र० ८१२०१-२६)

(८०-१०७) संभरिः काण्वः । प्रगाथः=(विपमा ककुप, समा सतोवृहती); १४ सतो विराट् ।

आ गन्ता मा रिषण्यत् प्रस्थावानो मापं स्थाता समन्यवः । स्थिरा चिन्नमयिष्णवः १ ८९

वीळुपविभिर्मरुत क्रभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।	
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः	२
विद्या हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् । विष्णोरेषस्य मीळहुषाम्	३
वि द्वीपानि पापतन् तिष्ठद् दुच्छुनो—भे युजन्त गेदसी ।	
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभानवः	४ ८५
अच्युता चिद् वो अज्मन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः । भूमिर्यामेषु रेजते	५
अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत ।	
यत्रा नरो देदिशते तनू—प्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः	६
स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः । वहन्ते अहुतप्सवः	७
गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्यये ।	
गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्पर्से नु	८
प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् । हव्या वृषप्रयावणे	९ ९०
वृषणश्वेन मरुतो वृषंसुना रथेन वृषनाभिना ।	
आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत	१०
समानमश्वेषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु । दविद्युतयूटयः	११
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिण्टनूषु येतिरे ।	
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वो ऽनीकेष्वधि श्रियः	१२
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेष शश्वतामेकमिद् भुजे । वयो न पित्र्यं सहः	१३
तान् वन्दस्व मरुतस्तां उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।	
अराणां न चरमस्तदेषां दाना मद्वा तदेषाम्	१४ ९५
सुभगः स व ऊति—प्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु । यो वा नूनमुतासति	१५
यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ	
अभि ष द्युन्नैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत्	१६
यथा रुद्रस्य सूनवो द्विवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः । युवानस्तथेदसत्	१७
ये चाहन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळहुषश्चरन्ति ये ।	
अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम्	१८
यून ऊ षु नविष्ठया वृष्णः पावकां अभि सोभरे गिरा । गाय गा इव चर्कषत्	१९ १००
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु ।	
वृष्णश्चन्द्राक्ष सुश्रवस्तमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अह	२० १०१

गावश्चिद् वा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः । रिहते ककुभो मिथः	२१	
मर्तश्चिद् वो नृतवो रुक्मवक्षस उर्ष भ्रातृत्वमायति ।		
आर्धं नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमास्ति निधुवि	२२	
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः । यूयं संखायः सप्तयः	२३	
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् ।		
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः	२४	१०५
यत् सिन्धौ यदसिक्न्यां यत् समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः । यत् पर्वतेषु भेषजम्	२५	
विश्वं पश्यन्तो विभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत ।		
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विहुतं पुनः	२६	१०७

॥ ८ ॥ (क्र० १६४।१-१५)

(१०८-१२२) नोधा गौतमः । जगती, १५ त्रिष्टुप ।

वृष्णे शर्धाय सुमन्वाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भेरा मरुद्भ्यः ।		
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समन्त्रे विदथेष्वाभुवः	१	
ते जज्ञिरे दिव ऋक्वास उक्ष्णो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः		
पावकासः शुचयः सूर्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्षसः	२	
युवानो रुद्रा अजरा अभोग्धनां ववक्षुरधिगावः पर्वता इव ।		
दृळ्हा चिद् विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना	३	११०
चित्रैरस्त्रिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्मो अधि येतिरे शुभे ।		
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुर्ऋण्यः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः	४	
ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान् विद्युतस्तविषीभिरक्रत ।		
दुहन्त्यूधर्किव्यानि धूतयो भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रयः	५	
पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद् विदथेष्वाभुवः ।		
अयं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम्	६	
महिषासां मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुप्यदः ।		
मृगा इव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीर्युग्धवम्	७	
सिंहा इव नानवृत्ति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशां विश्ववेदसः ।		
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः समित् सबाधः शवसाहिमन्यवः	८	११५
रोदसी आ वदता गणाश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।		
आ बन्धुरेवमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः	९	११६

श्वेदसो रयिभिः समोकसः समिश्लासस्तविषीभिर्विरग्निनः ।	
स्तार इधुं दधिरे गर्भस्त्यो—रनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः	१०
रण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्यां न पर्वतान् ।	११
खा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुधकृतो मरुतो भ्राजदृष्टयः	१२
धुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसां गृणीमसि ।	१३
जस्तुरं तवसं मारुतं गण—मृजीषिणं वृषणं सश्वत श्रिये	१४
नू स मर्तः शर्वसा जनों अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत ।	१५
मर्वाज्जिर्वाजं भरते धना नृभि—गपृच्छन् क्रतुमा क्षेति पुष्यति	१६
वृकृत्यं मरुतः पुत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन ।	१७
नस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्ये म तनयं शतं हिमाः	१८
पुष्टिरं मरुतो वीरवन्त—मूर्तपाहं रयिमस्मासु धत्त ।	१९
प्रहसिणं शतिनं शशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुजंगम्यात	२०

॥८॥ (क्र० ११८-११९-१२०)

(१२३-१५६) गोतमो राहगणः । जगती. ५.१२ त्रिष्टुप ।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।	
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु वृष्वयः	१
त उक्षितासो महिमानमाशत विवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।	२
अचन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रिय—मधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः	३
गोमातरो यच्छुभयन्ते अस्त्रिभि—स्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः	४
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्मान्येषामनु रीयते घृतम्	५
वि ये भ्राजन्ते सुमखास क्रष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा	६
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषवातासः पृषतीर्युग्ध्वम्	७
प्र यद् रथेषु पृषतीर्युग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः ।	८
उतारुषस्य वि प्यन्ति धारा—श्वर्मेवोदमिर्व्युन्दन्ति भूमं	९
आ वो वहन्तु सप्तयो रघुप्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः ।	१०
सीदृता बर्हिरुरु वः सदस्कुतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः	११
तेऽवधन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरु चक्रिरे सदः ।	१२
विष्णुर्यद्वावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीदृन्नधि बर्हिषि प्रिये	१३

शूरा इवद् युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।	
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजान इव त्वेषसंहशो नरः	८ १३०
त्वष्टा यद् वज्रं सुकृतं हिरण्यं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।	
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवे ऽहन् वृत्रं निरपामौजदर्णवम्	९
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृहाणं चिद् बिभिदुर्वि पर्वतम् ।	
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवां मकु सोमस्य रण्यानि चक्रिरे	१०
जिह्वां नुनुद्रेऽवतं तया दिशा—सिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तूष्णजे ।	
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः	११
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि ।	
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम्	१२

॥ १० ॥ (क्र० १।८६।१-१०) गायत्री ।

मरुतो यस्य हि क्षयं पाथा द्विवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः	१ १३५
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम्	२
उत वा यस्य वाजिनो ऽनु विप्रमर्तक्षत । स गन्ता गोमति व्रजे	३
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिपु । उक्थं मदश्च शस्यते	४
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित् ससुषीरिषः	५
पूर्वाभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम्	६ १४०
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयांसि पर्वथ	७
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः	८
यूयं तत् सत्यशवस आविष्कृतं महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः	९
गूहता गुह्यं तमां वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि	१०

॥ ११ ॥ (क्र० १।८७।१-६) जगती ।

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरिञ्चिनो ऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः ।	
जुष्टमासो नृतमासो अस्त्रिभिर्व्यानजे के चिदुस्त्रा इव स्तृभिः	१ १४५
उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वयं इव मरुतः केन चित् पथा ।	
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते	२
प्रेषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्धं युञ्जते शुभे ।	
ते क्रीळ्यो धुन्यो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धृतयः	३ १४७

स हि स्वसृत् पृषदश्वो युवा गणोऽ ॥ ५ ॥ इयानस्तविषीभिरावृतः ।
 असि सत्यं क्रणयावानेद्यो ॥ ६ ॥ स्या धियः प्राविताथा वृषा गणः
 पितुः प्रत्तस्य जन्मना वदामसि ॥ ७ ॥ सोमस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा ।
 यद्वीमिन्द्रं शम्युक्ताण आशतादिन्नामानि यज्ञियानि दधिरे ॥ ८ ॥
 श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ॥ ९ ॥ ते रश्मिभिस्त कक्रभिः सुखादयः ।
 ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो ॥ १० ॥ विद्रे प्रियस्य मारुतस्य धाम्नः ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ (क्र० १।८८।१-६)

(त्रिष्टुप्. १.६ प्रस्तावपंक्तिः, ५ विगडरूपा) ।

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्के ॥ १ ॥ रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिर्श्वपणैः ।
 आ वर्षिष्ठया न इषा ॥ २ ॥ वयो न पतता सुमायाः
 तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः ॥ ३ ॥ शुभे कं यान्ति रथतूभिरेश्वैः ।
 रुक्मो न चित्रः स्वर्धितीवान् ॥ ४ ॥ पव्या रथस्य जङ्घनन्त भूमं
 श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीर्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ।
 युष्मभ्यं कं मरुतः सुजातास्तुविद्युन्मासो धनयन्ते अद्रिम् ॥ ५ ॥
 अहानि गृध्राः पर्या व आगुं रिमां धियं वार्कार्यां च देवीम् ।
 ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्के ॥ ६ ॥ रूर्ध्वं नुनुद् उत्सधिं पिबध्यै
 एतत् त्यन्न योजनमचेति ॥ ७ ॥ सस्वर्ह यन्मरुतो गोतमो वः ।
 पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान् ॥ ८ ॥ विधावतो वराहान्
 एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री ॥ ९ ॥ प्रति शोभति वाघतो न वाणी ।
 अस्तोभयद् वृथासा मनु ॥ १० ॥ स्वधां गभस्तयोः ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ (क्र० १।१३९।८)

(१।७) परच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

मो षु वो अस्मदुभि तानि पौंस्या ॥ १ ॥ सना भूवन् द्युन्नानि मोत जारिषु ॥ २ ॥ रस्मत् पुरोत जारिषुः ।
 यद् वश्चित्रं युगेयुगे ॥ ३ ॥ नव्यं घोषादमर्त्यम् ।
 अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं ॥ ४ ॥ दिधूता यच्च दुष्टरम् ॥ ५ ॥

॥ १४ ॥ (क्र० १।१६६।१-१५)

(१।८-१९७) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तच्छु वोचाम रभसाय जन्मने ॥ १ ॥ पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे ।
 ऐधेव यामन् मरुतस्तुविष्वणो ॥ २ ॥ युधेवं शक्रास्तविषाणि कर्तन
 दे० [मरुत] २

नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृण्वयः । नक्षन्ति रुद्रा अर्वसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्	२	
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस्पोषं च हविषा ददाशुषे । उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरु रजांसि पर्यसा मयोभुवः	३	१६०
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अधजन् । भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु	४	
यत् त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान् दिवो वा पृष्ठं नया अचुच्यवुः । विश्वो वो अज्मन् भयते वनस्पती रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः	५	
यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुना ऽरिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन । यत्रा वो दिव्यद् रदति किर्विदती रिणार्ति पश्वः सुधितेव ब्रह्णा	६	
प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्रराधसो ऽलातृणासो विदथेषु सुष्टुताः । अचन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौस्या	७	
शतभुजिभिस्तमभिहुतेरघात् पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत । जनं यमुग्रास्तवसो विरप्तिनः पाथना शंसात् तनयस्य पुष्टिषु	८	१६५
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृध्वेव तविषाण्याहिता । अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयो ऽक्षो वश्चक्रा समया वि वावृते	९	
भूरीणि भद्रा नयेषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अश्रयः । अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान् व्यनु श्रियो धिरे	१०	
महान्तो महा विश्वाऽ विभूतयो दूरदृशो ये दिव्या इव स्तृभिः । मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संमिश्रा इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः	११	
तद् वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घ वो द्वात्रमदितेरिव व्रतम् । इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्नुणाति तज्जनाय यस्मै सुकृते अराध्वम्	१२	
तद् वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरु यच्छंसममृतास आवत । अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो दंसनैरा चिकित्रिरे	१३	१७०
येन दीर्घ मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः । आ यत् ततनन् वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदुभीष्टिमश्याम्	१४	
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः । एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेष वृजनं जीरदानुम्	१५	१७१

॥ १५ ॥ (क्र० १।१६।१२-११) त्रिष्टुपः (१० पुरस्ताज्ज्योतिः) ।

आ नोऽवोभिमरुतो यान्त्वच्छा ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्वैः सुमायाः ।	
अध यदेषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चिद् धनयन्त पारे	२
मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः ।	
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदुष्येव सं वाक्	३
परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ।	
न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः	४ १७५
जोषद् यदीमसुर्या सचधै विषितस्तुका रोदसी नृमणाः ।	
आ सूर्येव विधतो रथं गात् त्वेपप्रतीका नभसो नेत्या	५
आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभे निमिश्लां विदथेषु पञ्चाम् ।	
अर्को यद् वो मरुतो हविष्मान् गायद् गाथं सुतसोमो दुवस्यन्	६
प्र तं विवक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति ।	
सचा यदीं वृषमणा अहंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः	७
पान्ति मित्रावरुणावद्यौ चर्यत ईमर्यमो अप्रशस्तान् ।	
उत च्यवन्ते अच्युता ध्रुवाणि वावृध ईं मरुतो दातिवारः	८
नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः ।	
ते धृष्णुना शर्वसा शूशुवांसो ऽर्णो न द्वेपो धृषता परि प्लुः	९ १८०
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये ।	
वयं पुरा महि च नो अनु द्यून् तन्न क्रभुक्षा नरामनु प्यात	१०
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य काराः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	११

॥ १६ ॥ (क्र० १।१६।१२-१०) जगती ८-१० त्रिष्टुप ।

यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणिर्धियं धियं वो देव्या उ दधिध्वं ।	
आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः	१
वमासो न ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धूतयः ।	
सहस्रियांसो अपां नोर्मय आसा गावो वन्द्यांसो नोक्षणः	२
सोमांसो न ये सुतास्तृतांशवो हृत्सु पीतासो दुवसो नासते ।	
एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे	३ १८५
अव स्वयुक्ता क्रिव आ वृथा ययुर्मर्त्याः कशया चोदत त्मना ।	
अरेणवस्तुविज्ञाता अचुच्यवुर्हृळ्हानि चिन्मरुतो भ्राजदृष्टयः	४ १८६

को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टिविद्युतो रेजति त्मना हन्वेव जिह्वा ।	
धन्वच्च्युत इषां न यामनि पुरुषैषा अह्नयोऽ नैतशः	५
क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय ।	
यच्चयावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम्	६
सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिण्वती ।	
भद्रा वो रातिः पूणतो न दक्षिणा पृथुजयी असुर्येव जञ्जती	७
प्रति शोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदुभ्रियां वाचमुदीरयन्ति ।	
अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः पुष्णुवन्ति	८ १९०
असूत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमयासां मरुतामनीकम् ।	
ते सप्तरासोऽजनयन्ताभ्वमादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्	९
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेपं वृजनं जीरदानुम्	१०

॥ १७ ॥ (क० १।१७।१-२) त्रिष्टुप् ।

प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षे सुमतिं तुराणाम् ।	
रराणता मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान्	१
एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान् हृदा तृष्टो मनसा धायि देवाः ।	
उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्ठा नमस इद वृधासः	२

॥ १८ ॥ (१।१७।१-३) गायत्री ।

चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः । मरुतो अहिभानवः	१ १९५
अरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । अरे अश्मा यमस्यथ	२
तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क सुदानवः । ऊर्ध्वान् नः कर्त जीवसे	३

॥ १९ ॥ (क० २।३०।११)

(१९.८-२.१३) गुत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । जगती ।

तं वः शर्धं मारुतं सुमनयुर्गिरोप ब्रुवे नमसा देव्यं जनम् ।	
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाचं श्रुत्यं दिवेदिवे	११

॥ २० ॥ (क० २।३४।१-१५) जगती. १५ त्रिष्टुप् ।

धारावरा मरुतो धृष्णवो जसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः ।	
अग्रयो न शुशुचाना क्रजीषिणो भूमिं धर्मन्तो अप गा अवृण्वत	१ १९९

द्यावो न स्तुभिश्चितयन्त स्वादिनो व्यभ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः ।		
रुद्रो यद् वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊर्ध्वानि	२	२००
उक्षन्ते अश्वाँ अत्यौ इवाजिषु नदस्य कर्णेस्तुरयन्त आशुभिः ।		
हिरण्यशिप्रा मरुतो दर्विध्वतः पूक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः	३	
पूक्षे ता विश्वा भुवना ववाक्षिरे मित्राय वा सद्गमा जीरदानवः ।		
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः	४	
इन्धन्वभिर्धेनुभी रृशदूधभि रध्वस्मभिः पृथिभिर्भ्राजदृष्टयः ।		
ओ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः	५	
आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसः सर्वनानि गन्तन ।		
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूर्धनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम्	६	
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथं आपानं ब्रह्म चितयद् द्विवेदिवे ।		
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनि मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः	७	२०१
यद् युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसो ऽश्वान् रथेषु भग आ सुदानवः ।		
धेनुर्न शिष्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम्	८	
यो नो मरुतो वृकताति मर्त्यो रिपुर्दुधे वसवो रक्षता रिपः ।		
वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्तना वधः	९	
चित्रं तद् वो मरुतो याम चेकिते पृश्न्या यदूधरण्यापयो दुहुः ।		
यद् वा निदे नवमानस्य रुद्रिया श्रितं जराय जुस्तामदाभ्याः	१०	
तान् वो महो मरुत एवयात्रो विष्णोरिपस्य प्रभृथे हवामहे ।		
हिरण्यवर्णान् ककुहान् यतसुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे	११	
ते दशग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूपसो व्युष्टिषु ।		
उषा न रामीररुणैरपोणुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा	१२	२१०
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभि रुद्रा ऋतस्य सदेनेषु वावृधुः ।		
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम्	१३	
ताँ इयानो महि वरूथमूतय उप घेदेना नमसा गृणीमसि ।		
त्रितो न यान् पञ्च होतृनभिष्टय आववर्तदवराञ्चक्रियावसे	१४	
यया रथं पारयथात्यहो यया निदो मुश्चथ वन्दितारम् ।		
अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो पु वाश्वेव सुमन्तिर्जिगातु	१५	२१३

॥ २१ ॥ (ऋ० ३।२६।४-६)

(२१४-२१६) गाथिनो विश्वामित्रः । जगती ।

प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्रयः शुभे संमिश्राः पृषतीरयुक्षत ।

बृहदुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वताँ अदाभ्याः ४

अग्निभियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।

ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषकृतवः सुदानवः ५ २१५

व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभि रग्रेभामं मरुतामोज ईमहे ।

पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ६ २१६

॥ २२ ॥ (ऋ० ५।११।१-१७)

(२१७-२१७) श्यावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुप . ६.१६, १७ पङ्क्तिः ।

प्र श्यावाश्व धृष्णुया ऽर्चा मरुद्धिर्क्रकाभिः ।

ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः १

ते हि स्थिरस्य शर्वसः सखायः सन्ति धृष्णुया ।

ते यामन्ना धृषद्विन स्मना पान्ति शश्वतः २

ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऽति ण्कन्दन्ति शर्वरीः ।

मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे ३

मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।

विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः ४ २२०

अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः ।

प्र यज्ञं यज्ञिर्यभ्यो द्विवो अर्चा मरुद्धयः ५

आ रुक्मैरा युधा नरं ऋष्वा ऋटीरसृक्षत ।

अन्वेनाँ अहं विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्तं त्मना विवः ६

ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।

वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो द्विवः ७

शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वंसम् ।

उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत त्मना ८

उत स्म ते परुष्ण्या मूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।

उत पव्या रथाना मद्रिं भिन्दुन्त्योजसा ९ २२५

आर्पथयो विपथयो ऽन्तस्पथा अनुपथाः ।

एतेभिर्मह्यं नामभि र्यज्ञं विष्टार ओहते १० २२६

अधा नरो न्योहते ऽधा नियुत ओहते ।	
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्श्या	११
छन्दुःस्तुभः कुम्भन्यव उत्समा कीरिणां नृतुः ।	
ते मे के चिन्न तायव ऊर्मा आसन् वृशि त्विषे	१२
य ऋष्वा ऋष्टिर्विद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।	
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा	१३
अच्छ ऋषे मारुतं गणं वृाना मित्रं न योषणा ।	
द्विवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत	१४ २३०
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।	
वृाना संचेत सूरिभि—र्यामश्रुतेभिरस्त्रिभिः	१५
प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम् ।	
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिकसः	१६
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः ।	
यमुनायामधि श्रुत—मुद् राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे	१७ *

॥ २३ ॥ (ऋ० ५।५.३।१-१६)

(१,५,१०-११,१५ककुप्, २ बृहती. ३ अनुष्टुप्, ४ पुराणिक, ६,७,९,१३,१४,१६ सतो बृहती. ८,१२ गायत्री)।

को वेदु जानमेषां को वा पुरा सुन्नेष्वास मरुताम् ।	
यद् युयुजे किलास्यः	१
ऐतान् रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।	
कस्मै ससुः सुदासे अन्वापय इळाभिर्वृष्टयः सह	२ २३५
ते मे आहुर्य आययु—रुप द्युभिर्विभिर्मदे ।	
नरो मर्या अरेपस इमान् पश्यन्निति ष्णुहि	३
ये अस्त्रिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु स्वादिषु ।	
श्राया रथेषु धन्वसु	४
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः ।	
वृष्टी द्यावो यतीरिव	५
आ यं नरः सुदानवो दवाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।	
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः	६ २३९

ततुद्वानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र संसुर्धेनवो यथा । स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद् वर्तन्त एन्यः आ यात मरुतो द्विव आन्तरिक्षादुमादुत । माव स्थात परावर्तः मा वो रसानितभा कुभा कुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् । मा वः परि ष्ठात् सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत् सुन्नमस्तु वः तं वः शर्ध रथानां त्वेषं गुणं मारुतं नव्यसीनाम् । अनु प्र यन्ति वृष्टयः शर्धशर्ध व एषां व्रातंव्रातं गुणगणं सुशस्तिभिः । अनु क्रामेम धीतिभिः कस्मा अद्य सुजाताय गतहव्याय प्र ययुः । एना यामेन मरुतः येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षितम् । अस्मभ्यं तद् धत्तन यद् व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हिंत्वावद्यमरातीः । वृष्टी शं योराप उस्मि भेषजं स्याम मरुतः सह सुवेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः । यं त्रायध्वे स्याम ते स्तुहि भोजान्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे । यतः पूर्वा इव सखीरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः	७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६	२४० २४५
---	---	------------

॥ २३ ॥ (ऋ० ५।५।३।१-१५) जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते । घर्मस्तुभे द्विव आ पृष्ठयज्वने द्युन्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत प्र वो मरुतस्तविषा उदुन्यवो वयोवृधो अश्वयुज परिज्रयः । सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वररन्त्यापोऽवना परिज्रयः विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः । अब्दया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः व्यक्तून् रुद्रा व्यहानि चिक्रसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः । वि यदज्जो अजथ नाव ई यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ	१ २ ३ ४	२५० २५३
--	------------------	------------

तद् वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दूरीतं ततान सूर्यो न योजनम् । एता न यामे अगृभीतशोचिषो ऽनश्वदां यन्नययातना गिरिम्	५	
अभ्राजि शर्षी मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः । अध स्मा नो अरमतिं सजोषस—श्चक्षुरिव यन्तुमनु नेषथा सुगम्	६	२५५
न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्नेधति न व्यथते न रिण्यति । नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ	७	
नियुत्वंतो ग्रामजितो यथा नरो ऽर्यमणो न मरुतः कवन्धिनः । पिबन्त्युत्सं यद्विनासो अस्वरन् व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा	८	
प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः । प्रवत्वतीः पृथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः	९	
यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः । न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिंघतः सद्यो अस्याध्वनः पारमश्रुथ	१०	
अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः । अग्निभ्राजसो विद्युतो गर्भस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः	११	२६०
तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत् पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ । समच्यन्त वृजनातिं त्विषन्त यत् स्वरन्ति घोषं विततमृतायवः	१२	
युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्योऽं वयस्वतः । न यो युच्छति तिष्योऽं यथा दिवोऽं ऽस्मे रारन्त मरुतः सहास्त्रिणम्	१३	
यूयं रथिं मरुतः स्पार्हवीरं यूयमृषिमवथ सामविप्रम् । यूयमर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्	१४	
तद् वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो येना स्वर्णं ततनाम नूरभि । इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा ज्ञतं हिमाः	१५	

॥ २५ ॥ (ऋ० ५।१५।१-१०) जगती, १० त्रिष्टुप् ।

प्रयज्यवो मरुतो भ्राजहृष्टयो बृहद् वयो दधिरे रुक्मवक्षसः । ईर्यन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	१	२६५
स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद् बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ । उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	२	
साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः । विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	३	२६७

आभूषण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षेणम् ।	
उतो अस्मौ अमृतत्वे दधातनु शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	४
उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः ।	
न वो दस्त्रा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	५
यदश्वान् धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान् प्रत्यक्कां अमुग्ध्वम् ।	
विश्वा इत् स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	६ २७०
न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत् ।	
उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	७
यत् पूर्य मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते ।	
विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	८
मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनाऽस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन ।	
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातनु शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	९
यूयमस्मान् नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः ।	
जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम्	१०

॥ २६ ॥ (ऋ० ५।५।६।१-९) बृहती; ३, ७ सतो बृहती ।

अग्ने शर्धन्तमा गुणं पिष्टं रुक्मेभिरस्त्रिभिः ।	
विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवाश्चित् रोचनादधि	१ २७५
यथा चिन्मन्यसे हृदा तदिन्मे जग्मुराशसः ।	
ये ते नेदिष्टं हवनान्यागमन् तान् वर्ध भीमसंहशः	२
मीळहुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्त्येत्यस्मदा ।	
ऋक्षो न वो मरुतः शिमीवो अमो दुधो गौरिव भीमयुः	३
नि ये रिणन्त्योर्जसा वृथा गावो न दुर्धुरः ।	
अश्मानं चित् स्वर्यं पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः	४
उत तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम् ।	
मरुतां पुरुतमपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये	५
युङ्गध्वं ह्यरुपी रथे युङ्गध्वं रथेषु रोहितः ।	
युङ्गध्वं हरीं अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे	६ २८०
उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्वणिं रिह स्म धायि दर्शतः ।	
मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत प्र तं रथेषु चोदत	७ २८१

रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे ।

आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदुसी

८

तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे ।

यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळहुषी

९

॥ २७ ॥ (ऋ० ५।१७।१-८) जगती, ७-८ त्रिष्टुप ।

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितायं गन्तन ।

इयं वो अस्मत् प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न विव उत्सा उदुन्यवे

१

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः ।

स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्

२

२८१

धूनुथ द्यां पर्वतान् द्वाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया ।

कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्धवम्

३

वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमा इव सुसदृशः सुपेशसः ।

पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः

४

पुरुद्वप्सा अश्विमन्तः सुदानवस्त्वेषसदृशो अनवभ्रगधसः ।

सुजातासो जुनुषा रुक्मवक्षसो विवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे

५

ऋष्टयो वो मरुतो असंयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वा बलं हितम् ।

नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे

६

गोमदश्वावद् रथवत् सुवीरं चन्द्रवद् राधो मरुतो ददा नः ।

प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य

७

२८०

हृये नरो मरुतो मूळता नस्तुवीमघासो अमृता क्रतज्ञाः ।

सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्विरयो बृहदुक्षमाणाः

८

॥ २८ ॥ (ऋ० ५।५८।१-८) त्रिष्टुप ।

तमु नूनं तविधीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।

य आश्वश्वा अमवद् वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः

१

त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिवतं मायिनं दातिवारम् ।

मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविरार्धसो नृन्

२

आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति ।

अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः

३

यूयं राजानमिर्यं जनाय विभवतष्टं जनयथा यजत्राः ।

युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत् सदश्वो मरुतः सुवीरः

४

२८५

अरा इवेदचरमा अहेव प्र जायन्ते अकवा महोभिः ।
 पृथ्वेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ५
 यत् प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः ।
 क्षोदन्त आपो रिणते वना न्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः ६
 प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः ।
 वातान् ह्यश्वान् धुर्यायुयुञ्जे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियांसः ७
 ह्ये नरो मरुतो मूळता नस्तुवीमघासो अमृतो कर्तज्ञाः ।
 सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्विरयो बृहदुक्षमाणाः ८

॥ १९ ॥ (ऋ० ५।५९।१-८) जगती, ८ त्रिष्टुप् ।

प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय द्वावने ऽर्चां दिवे प्र पृथिव्या क्रतं भरे ।
 उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजो ऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः १ ३००
 अमादिषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती ।
 दूरेदृशो ये चितयन्त एमभि रन्तमहे विदथे येतिरे नरः २
 गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षु रजसो विसर्जने ।
 अत्या इव सुभ्वः श्वारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः ३
 को वो महान्ति महतामुदश्वत् कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या ।
 यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद् भरध्वे सुविताय द्वावने ४
 अश्वा इवेदरुषासः सर्वन्धवः शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः ।
 मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः ५
 ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदो ऽर्मध्यमासो महसा वि वावृधुः ।
 सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ६ ३०५
 वयो न ये श्रेणीः प्तुरोजसा ऽन्तान् दिवो बृहतः सानुनस्परि ।
 अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूरचुच्यवुः ७
 मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उपसो यतन्ताम् ।
 आर्चुच्यवुर्विव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ८

॥ ३० ॥ ऋ० ५।६१।१-४।११-१६) गायत्री, ३ निचुत्

के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकैक आयय । परमस्याः परावतः १
 क्व वोऽश्वाः क्वाऽभीशवः कथं शोक कथा यय । पुष्टे सदा नसौर्यमः २
 जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ३ ३१०

परा वीरास एतन् मयीसो भद्रजानयः	। अग्नितपो यथासथ	४०
य ई वहन्त आशुभिः पिबन्तो मक्षिरं मधु	। अत्र श्रवांसि दधिरे	११
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्ववा	। द्विवि रुक्म इवोपरि	१२
युवा स मारुतो गण—स्त्वेषरथो अनेद्यः	। शुभंयावाप्रतिष्कृतः	१३
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः	। क्रतजाता अरेपसः	१४ ३१५
यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया	। श्रोतारो यामहूतिषु	१५
ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः	। आ यज्ञियासो ववृत्तन	१६ ३१७

॥ ३१ ॥ (ऋ० ५।८७।१-९)

(३१८-३२६) एवयामरुदात्रेयः । अतिजगती ।

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् ।	
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शर्वसे	१
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्वनां ब्रुवत एवयामरुत् ।	
क्रत्वा तद् वो मरुतो नाधृषे शवो वाना म्हा तदेषा—मधृष्टासो नाद्रयः	२
प्र ये द्विवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्रानः सुभ्व एवयामरुत् ।	
न गेषामिरी सधस्थ ईष्ट आ अग्नयो न स्वविद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम्	३ ३१०
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात् सदस एवयामरुत् ।	
यदायुक्त तमना स्वादधि ण्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः	४
स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् ।	
येना सहन्त क्रञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः	५
अपारो वो महिमा वृन्द्रशवस—स्त्वेषं शवोऽवत्वैवयामरुत् ।	
स्थातारो हि प्रसितौ संहशि स्थन ते न उरुण्यता निदः शुशुक्रासो नाग्रयः	६
ते रुद्रासः सुमखा अग्रयो यथा तुविद्युन्ना अवन्त्वैवयामरुत् ।	
वीर्यं पृथु पंपथे सद्य पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धास्यज्जुतैनसाम्	७
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन् श्रोता हवं जरितुरैवयामरुत् ।	
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन् स्मद् रुथयोऽ न दूसना ऽप द्वेषांसि सनुतः	८ ३१५
गन्ता नो यज्ञ यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरुक्ष एवयामरुत् ।	
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः	९ ३२६

॥ ३२ ॥ (ऋ० ६।४८।११-१५, २०-२१)

(३२७-३३३) शंयुर्बाहस्पत्य (तृणपाणि). [१३-१५ लिङ्गोक्ता वा] । ११ ककुप, १२ सतो बृहती, १३ पुरजङ्गिक्, १४ बृहती, १५ अतिजगती, २० बृहती, २१ महाबृहती यवमध्या ।

आ संखायः सबर्दुधां धेनुर्मजध्वमुप नव्यसा वचः । सूजध्वमनपस्फुराम् ११

या शर्धाय मारुताय स्वभानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।

या मृळीके मरुतां तुराणां या सुझैरेवयावरी १२

भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता । धेनुं च विश्वदोहसमिषं च विश्वभोजसम् १३

तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।

अर्यमणं न मन्द्रं सूप्रभोजसं विष्णुं न स्तुष आदिशे १४ ३३०

त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्वण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा ज्ञता ।

सं सहस्रा कार्षिच्चर्षणिभ्य आं आविर्गृह्णा वसू करत सुवेदा नो वसू करत १५

वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।

देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः २०

सद्यश्चिद् यस्य चर्कृतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।

त्वेषं शवो दधिरे नाम यजियं मरुतो वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः २१ ३३३

॥ ३३ ॥ (ऋ० ६।६६।१-११)

(३३४-३४४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् ।

मर्तेष्वन्यद् द्रोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः १

ये अग्रयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत् त्रिर्मरुतो वावृधन्त ।

अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौंस्यैभिश्च भूवन् २ ३३५

रुद्रस्य ये मीळहुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरध्वै ।

विदे हि माता महो मही षा सेत् पृश्निः सुभ्वेऽर्गर्भमाधात् ३

न य ईषन्ते जनुषोऽया न्वऽन्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः ।

निर्यद् दुहे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमुक्षमाणाः ४

मक्षू न येषु द्रोहसे चिदुया आ नाम धृष्णु मारुतं दधानाः ।

न ये स्तौना अयासो म्हा नू चित् सुदानुरव यासदुग्रान् ५

त इदुग्राः शर्वसा धृष्णुषेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके ।

अर्ध स्मैषु रोदसी स्वशोचि रामवत्सु तस्थौ न रोकः ६ ३३९

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्व—नश्वाश्चिद् यमजत्यरंथीः ।		
अनवसो अनभीशू रजस्तू—वि रोदसी पथ्या याति साधन	७	३४०
नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वार्जसातौ ।		
तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः	८	
प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् ।		
ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्रे पृथिवी मखेभ्यः	९	
विषीमन्तो अध्वरस्येव विद्युत् तृषुच्यवसो जुहोऽ नाग्नः ।		
अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः	१०	
तं वृधन्तं मारुतं भ्राजहृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।		
द्विवः शर्धीय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृधन्	११	३४४

॥ ३४ ॥ (क्र० ७१६१-२५)

(३४५-३९४) मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, १-११ द्विपदा विराट् ।

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः	१	३४५
नकिर्हीषां जनूंषि वेदु ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम्	२	
आभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वार्तस्वनसः श्येना अस्पृधन्	३	
एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार	४	
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्	५	
यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिर्ग्राः	६	३५०
उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्य—धा मरुद्भिर्गणस्तुर्विष्मान्	७	
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः	८	
सनेभ्यस्मद् युयोतं विद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्गः	९	
प्रिया वो नाम हुवे तुराणा—मा यत् तपन्मरुतो वावशानाः	१०	
स्वायुधासं इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः	११	३५५
शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।		
ऋतेन सत्यमृतसाप आय—ञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः	१२	
अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिथ्रियाणाः ।		
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः	१३	
प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।		
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम्	१४	३५८

यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथे—तथा विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।

मक्ष्ण रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद् यमन्य आदभदरावा १५

अत्यासो न ये मरुतः स्वश्रोत्रो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः ।

ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः १६ ३६०

दृशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके ।

आरे गोहा नूहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् १७

आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।

य ईर्वतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः १८

इमे तुरं मरुतो रामयन्ती—मे सहः सहस्र आ नमन्ति ।

इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति १९

इमे रधं चिन्मरुतो जुनन्ति भूमिं चिद् यथा वसवो जुषन्त ।

अपं बाधध्वं वृषणस्तमोसि धत्त विश्वं तनयं लोकमस्मे २०

मा वो वृत्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद् दध्म रथ्यो विभागे ।

आ नः स्पर्हे भजतना वसव्येऽ यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति २१ ३६५

सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनांसः शूरा यद्द्विष्वोषधीषु विश्वु ।

अध स्मा नो मरुतो रुद्रियास—स्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः २२

भूरिं चक्र मरुतः पित्र्याण्यु—क्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।

मरुद्धिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्धिरित् सनिता वाजमवी २३

अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता ।

अपो येन सुक्षितये तरेमा—ऽधु स्वमोको अभि वः स्याम २४

तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि—राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।

शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः २५

॥ ३५ ॥ (क्र० ७।५।७।१-७) त्रिष्टुप् ।

मध्वो वो नाम मरुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शर्वसा मदन्ति ।

ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः १ ३७०

निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म ।

अस्मार्कमद्य विदथेषु बर्हि—रा वीतये सदत पिप्रियाणाः २

नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः ।

आ रोदसी विश्वापिशः पिशानाः संमानमश्रयश्नते शुभे कम् ३ ३७१

ऋधक् सा वो मरुतो विद्युदस्तु यद् वा आगः पुरुषता कराम ।
 मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ४
 कृते चिदत्र मरुतो रणन्ताऽनवद्यासः शुचयः पावकाः ।
 प्र णोऽवत सुमतिर्मियजत्राः प्र वाजैभिस्तिरत पुण्यसे नः ५
 उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि ।
 ददात नो अमृतस्य प्रजयै जिगृत रायः सूनृता मघानि ६
 आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरिन्सर्वताता जिगात ।
 ये नस्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥ ३६ ॥ (ऋ० ७।१८।१-८)

प्र साक्मुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।
 उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निक्कतेखंशात १
 जनूश्चिद् वो मरुतस्त्वेण्येण भीमास्तुविमन्यवोऽयासः ।
 प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वा यामन् भयते स्वर्दक् २
 ब्रुहद् वयो मघवन्धो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
 गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पर्हाभिरुतिभिस्तिरेत ३
 युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अवा सहुरिः सहसी ।
 युष्मोतः सम्राज्युत हन्ति वृत्रं प्र तद् वो अस्तु धूतयो वृष्णम ४
 तां आ रुद्रस्य मीळहुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
 यत् सस्वती जिहीळिरे यदावि—ख तदेन ईमहे तुराणाम ५
 प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोना—मिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
 आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ ३७ ॥ (७।१९।१-११)

(प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ७-८ त्रिष्टुप, ९-११ गायत्री ।)

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ ।
 तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन् मरुतः शर्म यच्छत १
 युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
 प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति २
 नहि वश्वरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।
 अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ३

दै० [मरुत] ४

नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।		
अभि व आवर्त सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः	४	
ओ षु घृष्ट्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।		
इमा वो हव्या मरुतो रर हि कं मो ष्वान्यत्र गन्तन	५	
आ च नो बर्हिः सदताविता च नः स्पर्हाणि दातवे वसु ।		
अस्त्रेधन्तो मरुतः सोम्ये मर्धा स्वाहेह मादयाध्वे	६	
सस्वश्चिद्धि तन्वः शुभर्ममाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपसन्न ।		
विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेदु नरो न रणवाः सर्वे मर्दन्तः	७	
यो नो मरुतो अभि दुर्हणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।		
द्रुहः पाशान् प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठन हन्मना हन्तना तम्	८	३९०
सान्तपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुष्टन । युष्माकोती रिशादसः	९	
गृहमधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती मुदानवः	१०	
इह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यज्ञं मरुत आ वृण	११	
॥ ३८ ॥ (ऋ० अ० १०.४१-४८) जगती ।		
वि तिष्ठध्वं मरुतां विक्ष्विच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।		
वयो ये भूत्वी पतर्यन्ति नक्तभिर्न्ये वा रिपो दधिरे देवं अध्वरे	१८	३९४
॥ ३९ ॥ (ऋ० अ० १०.४१-४२)		
(३९१-४०६) विन्दुः पृतदक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री ।		
गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् । युक्ता वह्नी रथानाम्	१	३९५
यस्या देवा उपस्थं व्रता विश्वे धारयन्ते । सूर्यामासा हृशे कम	२	
तन् सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये	३	
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना	४	
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः	५	
उतो न्वस्य जेषुर्मा इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति	६	४००
कदत्विपन्त सूर्यस्तिर आप इव सिधः । अर्पन्ति पूतदक्षसः	७	
कद्रो अद्य महानां देवानामवो वृण । त्मना च वुस्मर्वचसाम्	८	
आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन् रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये	९	
न्यान् नु पूतदक्षसो विवो वो मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये	१०	
न्यान् नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हुवं । अस्य सोमस्य पीतये	११	४०५
त्यं नु मारुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे । अस्य सोमस्य पीतये	१२	४०६

॥ ४० ॥ (ऋ० १०।७।१-८)

(४०७-४१२) स्यमरश्मिर्भाविः । त्रिष्टुप , ५ जगती ।

अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः
 सुमार्कतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोप्येषां न शोभसे १
 श्रिये मयीसो अर्न्तैरकृण्वत सुमार्कतं न पूर्वैरिति क्षपः ।
 दिवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्तं अक्रा न वावृधुः २
 प्र ये दिवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरित्रे अभ्रान्न सूर्यः ।
 पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशादसो न मयी अभिद्यवः ३
 युष्माकं बुध्रे अपां न यामनि विधुर्यति न मही श्रथर्यति ।
 विश्वसुर्यज्ञो अर्वागयं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत ४ ४१०
 यूयं धूर्षु प्रयुजो न रश्मिभिर्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु ।
 श्येनासो न स्वयंशसो रिशादसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः ५
 प्र यद् वहध्वे मरुतः पराकाद यूयं महः संवरणस्य वस्वः ।
 विद्वानासो वसवो राध्यस्याऽऽराच्चिद् द्वेषः सनुतयुयोत ६
 य उद्वचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यां न मानुषो ददाशत ।
 रेवत् स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीश्रे अस्तु ७
 ते हि यज्ञेषु यज्ञियांस ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः ।
 ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः ८

॥ ४१ ॥ (ऋ० १०।७।१-८) त्रिष्टुप , २, ५-७ जगती ।

विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यां देवाव्यो न यज्ञैः स्वप्रसः ।
 राजानो न चित्राः सुसंद्दशः क्षितीनां न मयी अरेपसः १ ४१५
 अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्य ऊतयः ।
 प्रजातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते २
 वातासो न ये धुनयो जिगत्तवो ऽग्नीनां न जिह्वा विरोकिणः ।
 वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितृणां न शंसाः सुरातयः ३
 रथानां न येराः सनाभयो जिगीर्वासो न शूरा अभिद्यवः ।
 वरेयवो न मयी धृतप्रुषो ऽभिस्वतारो अर्कं न सुष्टुभः ४
 अश्वसो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः ।
 आपो न निन्नैरुदभिर्जिगत्तवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः ५ ४१९

ग्रावाणो न सूरयः सिन्धुमातर आदर्विरासो अद्रयो न विश्वहा ।

शिंशूला न क्रीळयः सुमातरो महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा

६ ४२०

उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नास्त्रिभिर्व्यश्वितन् ।

सिन्धवो न ययियो भ्राजहृष्टयः परावतो न योजनानि मभिरे

७

सुभागात्रो देवाः कृणुता सुरत्वा नस्मान्स्तोतृन् मरुतो वावृधानाः ।

अधि स्तोत्रम्यं सख्यस्य गात मनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति

८ ४२१

॥ ४२ ॥ (य० ३।४४)

प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः । क्रम्भेण सजोषसः

४४ ४२३

॥ ४३ ॥ (य० ७।३६)

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ।

उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे

३६ ४२४

॥ ४४ ॥ (४२५-४२७) (य० १७।८४-८६)

दृष्टक्षास एतादृक्षास ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतेन ।

मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्

८४ ४२५

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च । क्रीडी च आकी चोज्जेषी

८५

इन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् यथेन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् ।

एवमिमं यजमानं देवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु

८६ ४२७

॥ ४५ ॥ (य० २५।२०)

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह

२० ४२८

॥ ४६ ॥ (साम० ३।५६) इयावाश्व आत्रेयः ॥ अनुष्टुप् ।

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा । पिबन्तो मदिरे मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ५ ४२९

॥ ४७ ॥ (अथर्व० १।२६।३-४)

(४३०-४३३) ब्रह्मा । ३ गायत्री, ४ ण्कावसाना पादनिष्ठत् ।

युयं नः प्रवतो नपा न्मरुतः सूर्यत्वचसः । शर्म यच्छात्र सप्रथाः

३ ४३०

सुषूतं मुडतं मुडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि

४

॥ ४८ ॥ (अथर्व० ५।२६।५) छिपदार्णी उष्णिक् ।

छन्वांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः

५ ४३१

॥ ४० ॥ (अथर्व० १३।१।३) जगती ।

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।

आ वो रोहितः शृणवत् सुदानव—स्त्रिषत्तासौ मरुतः स्वादुसंमुदः

३ ४३३

॥ ४० ॥ (अथर्व० ३।१।२)

(४३४-४३६) अथर्वा । विराड्गर्भा भुरिक् ।

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्थाभि प्रेत मृणत सहध्वम् ।

अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्रिह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान्

२

॥ ४१ ॥ (अथर्व० ३।१।६) त्रिष्टुप् ।

असौ या सेना मरुतः परेषा—मस्मानेत्यभ्योर्जसा स्पर्धमाना ।

तां विध्यत तमसापर्वतेन यथेषामन्यो अन्यं न जानात्

६

४३५

॥ ४२ ॥ (अथर्व० ५।२४।६) चतुष्पदातिशकरी ।

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु । अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां

प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

६

४३६

॥ ४३ ॥ (अथर्व० ४।१३।४) (४३७-४३९) जंतातिः । अनुष्टुप् ।

त्रायन्तामिमं देवा—स्त्रायन्तां मरुतां गणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरणा असंत ४

॥ ४४ ॥ (अथर्व० ६।२२।२-३) २ चतुष्पदा भुरिजगती, ३ त्रिष्टुप् ।

पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।

ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु

२

उदुपुतो मरुतस्तां ईयत वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणति ।

एजाति ग्लहां कन्येवितुन्ने—रुं तुन्दाना पत्येव जाया

३

४३९

॥ ४५ ॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) (४४०-४४६) १-७ मृगारः । त्रिष्टुप् ।

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु ।

आशूनिव सुयमानह ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

१

४४०

उत्समाक्षितं व्यचन्ति ये सदा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु ।

पुरो दधे मरुतः पृश्निमातृ—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

२

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।

ज्ञग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योना—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

३

अपः समुद्राद् दिवमुद्गहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

४

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

५

४४४

यदीदृिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा दैव्येनेदृगारं ।

यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृते—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

६

तिग्ममनीकं विदितं सहस्व—न्मारुतं शर्धः पृतनासूग्रम् ।

स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

७

४४६

॥ ५६ ॥ (अथर्व० ७।७७ [८२] १३) (४४७) अङ्गिराः । जगती ।

संवत्सरीणां मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सर्गणा मानुपासः ।

ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्त्वेनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः

३

४४७

मरुत्सहचारी देवगणः ।

(१) मरुद्रुद्रविष्णवः ।

॥ ५७ ॥ (ऋ० ५।३।३) (४४८) वसुधृत आत्रेयः । त्रिष्टुप ।

तव श्रियं मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत ते जनिम चारु चित्रम् ।

पदं यद् विष्णोरुपमं निधायि तेन पामि गुह्यं नाम गोनाम

३

४४८

(२) मरुतोऽग्रामरुतौ वा ।

॥ ५८ ॥ (ऋ० ५।६०।१-८)

(४४९-४५६) इयावाश्व आत्रेयः । त्रिष्टुप, ७-८ जगती ।

ईळे अग्निं स्ववसं नमोभि—रिह प्रसक्तो वि चयत् कृतं नः ।

रथैरिव प्र भरे वाजयन्तिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोममुध्याम्

१

आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु ।

वनां चिदुग्रा जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद रेजते पर्वतश्चित्

२

४५०

पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय द्विवश्चित् सानु रेजत स्वने वः ।

यत् क्रीळथ मरुत ऋष्टिमन्त आप इव सध्यश्चो धवध्वे

३

वरा इवेद् रवतासो हिरण्यै—रभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिशे ।

श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु

४

अज्येष्ठासो अर्कनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।

युवां पिता स्वपां रुद्र एषां सुदुग्रा पृश्निः सुदिना मरुज्यः

५

यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद् वावमे सुभगासो द्विवि ष्ठ ।

अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्या—ऽग्नें वित्ताद्धविषो यद् यजाम

६

अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो द्विवो वहध्व उत्तरादधि ण्णुभिः ।

ते मन्वसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते

७

४५५

अग्रं मरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋक्भिः सोमं पिब मन्दसानो गणभिभिः ।
पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजृः

८ ५५६

(३) सोमः मरुतः ।

॥ ५९ ॥ (अथर्व० १।२०।१) अथर्व। त्रिष्टुप् ।

अदारसृद् भवतु देव सोमा—ऽस्मिन् यजे मरुतो मूढता नः ।
मा नो विददभिभा मो अशस्ति—मा नो विदद वृजिना द्वेष्ट्या या

१ ४५७

(४) मरुत्पर्जन्यो ।

॥ ६० ॥ (अथर्व० ४।१५।४) विराद पुरस्ताद्वृहती ।

गुणास्त्वोषं गायन्तु मरुताः पर्जन्य घ्राषिणः पृथक् ।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु

४ ४५८

(५) मरुत आपः ।

॥ ६१ ॥ (४।१९-४६४) (अथर्व ४।१५।५-२०)

(१. विराड् जगती, ७ अनुष्टुप्, ६, ८ त्रिष्टुप्, ९ पथ्या पंक्तिः, १० मुक्तिः।)

उदीरयत मरुतः समुद्रत—स्त्वेषो अर्को नभ उत्पातयाथ ।

महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्वा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु

५

अभि क्रन्द स्तनयार्दयोद्वाधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्घि ।

त्वया सृष्टं बहुलमेतु वर्ष—माशरिषी कृशगुरित्वस्तम

६ ४६०

सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु

७

आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु

८

आपो विद्युदुभ्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु

९

अपामग्निस्तनूभिः संविद्वानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।

स नो वर्ष वन्तुतां जातर्वेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि

१० ४६४

मरुदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[४] १।६।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मरुतः)

दिवो वा रोचनादधि ।

१।४९।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । उपा ।)

दिवश्चिद् रोचनादधि ।

(२७५) ५।५६।१ (स्यावाश्च आत्रेयः । मरुतः)

८।८।७ (सन्वसः काण्वः । अश्विनौ)

दिवश्चिद् रोचनादध्या ।

[५] १।१५।२ (मेघतिथिः काण्वः । मरुतः)

यूयं हि धा सुदानवः ।

६।५१।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)

(५७) ८।७।१२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

८।८३।९ (कुमादी काण्वः । विश्वेदेवाः)

[९] १।३७।४ (कण्वो घौरः । मरुतः)

प्र व .. ।

देवत्तं ब्रह्म गायत ।

(इन्द्र २०६) ८।३२।२७ (मेघान्ति काण्वः । इन्द्रः)

प्र व .. ।

देवत्तं ब्रह्म गायत ।

[६, १०] १।३७।१, ५ क्रीळ वः शर्धो (५ क्रीळ यच्छधो) मारुतम्

[१३] १।३७।८ (कण्वो घौरः । मरुतः)

भिया यामेषु रेजते ।

(८६) ८।२०।५ (गोभरिः काण्वः । मरुतः)

भूमिर्यामेषु रेजते ।

[१६] १।३७।११ (कण्वो घौरः । मरुतः)

प्र स्यावयन्ति यामभिः ।

(२७८) ५।५६।४ (स्यावाश्च आत्रेयः । मरुतः)

[१७] १।३७।१२ (कण्वो घौरः । मरुतः)

मारुतो यद्ध वो वलं ।

(५६) ८।७।११ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

वो दिवः ।

[२१] १।३८।१ (कण्वो घौरः । मरुतः)

कद्ध नूनं कथप्रियः ।

(७६) ८।७।३१ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

[४०] १।३९।५ (कण्वो घौरः । मरुतः)

प्र वेपयन्ति पर्वतान् ।

प्रो आगत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा ।

५।२६।९ (वमूयव आत्रेयाः । विश्वेदेवाः)

णट मरुतो ।

देवासः सर्वया विशा ।

(४९) ८।७।४ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

वपन्ति मरुतो मिह प्र वेपयन्ति पर्वतान् ।

[४१] १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

(१२७) १।८५।५ (गौतमो राहुगणः । मरुतः)

प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

[११] १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।

(७३) ७।७।२८ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

यदेपा पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः ।

[४२] १।३९।७ रथा भवो वृणीमहे ।

१।४२।५ (कण्वो घौरः । पृषा)

प्रपन्नवो वृणीमहे ।

[१११] १।६४।४ (नोधा गौतमः । मरुतः)

वक्ष सु रुक्मो अभि येतिरे शुभं ।

(२६०) ५।५४।११ (स्यावाश्च आत्रेयः । मरुतः)

वक्ष सु रुक्मा मरुतो रथे शुभः ।

[११३] १।६४।६ उर्यो दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम् ।

९।७२।६ (हरिमुन्त आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अंगु दुहन्ति—

[११९] (नोधा गौतमः । मरुतः)

रुक्मस्य सुतुं हवसा गृणीमसि ।

रजरतुरं तवस मारुतं ।

(३४४) ६।६६।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुतः)

त वृधन्तं मारुतं प्राजदष्टि रुक्मस्य सुतुं हवसा विवासे ।

[१२०] १।६४।३३ (नोधा गौतमः । मरुतः)

तस्थौ व ऊनी मरुतो यमावत ।

(१६५) १।१६६।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः)

प्रभी रक्षता मरुतो यमावत ।

- [१२०] १।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)
मरुतो . ।
अर्वद्विर्वाजं भरते धना नृभिः ।
१।२६।३ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणरपतिः)
स इज्जेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः ।
(इन्द्रः २८०७) १०।१४७।४ (मुवेदा शैरीपि । इन्द्रः)
स इन् . ।
मक्ष् स वाज भरते धना नृभिः ।
[१२४] १।८५।२ त उक्षितासो महिमानमाशत ।
(इन्द्र ३२०३) ८।५९ (बाल० ११)।२
(मुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणः)
• इन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।
[१२७] १।८५।५ प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।
(४१) १।३९।६ (कण्वो घोरः । मरुतः)
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।
[१३०] १।८५।८ (गौतमो राहुगणः । मरुतः)
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो ।
(१६१) १।१६६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
. . भुवनानि हर्म्या ।
[१३१] १।८५।९ अहन् वृत्र निरपामौब्जदर्णवम् ।
(इन्द्रः ८०९) १।५६।५ (सव्य आदिरमः । इन्द्रः)
[१३७] १।८६।३ स गन्ता गोमति व्रजे ।
(इन्द्रः २२४४) ७।३२।१० गमस्व गोमति व्रजे ।
(इन्द्रः १८२५) ८।४६।९ (वज्रोऽरुव्यः । इन्द्रः)

- (इन्द्रः ५०९) ८।५१ (बाल० ३) । ५ गमेम गोमति व्रजे
[१३८] १।८६।४ (गौतमो राहुगणः । मरुतः)
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
उक्थं मदश्च शस्यते ।
(इन्द्र ६३६) ८।७६।९ (कुरुमुनिः काण्वः । इन्द्रः)
सुतं सोम दिविष्टिषु ।
[इन्द्रः ३३१७] ४।४९।१ [वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणपतिः]
उक्थं मदश्च शस्यते ।
[१३९] १।८६।५ [गौतमो राहुगणः । मरुतः]
विश्वा यश्चर्षणीरभि ।
[अग्निः ६२६] ४।७४ [वामदेवो गौतमः । अग्निः]
[अग्निः ९०३] ५।२३।१ [द्युम्नो विश्वचर्षणिगत्रेयः । अग्निः]
[१४८] १।८७।४ [गौतमो राहुगणः । मरुतः]
असि सत्य ऋणयावान्यो ।
२।२३।११ [गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणरपतिः]
ऋणया ब्रह्मणरपत ।
[१९१] १।१६८।९ [अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः]
आदित स्वधामिषिरा पर्यपश्यन् ।
१०।१५७।५ [भुवन आप्त्यः साधनो वा सौवनः । विश्वे देवाः]
[१९२] १।१६८।१० = [इन्द्रः ३२६४] १।१६५।१५
= [१७२] १।१६६।१५ = [१८२] १।१६७।११
[अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुत्वानिन्द्रः]
एष वः स्तोमो . . . कारोः ।
पृषा यामीष्ट . . . जीरदानुम् ॥

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [१९८] २।३०।११ तं वः शर्धं मास्त ।
(२४३) ५।५३।१० तं वः शर्धं रथाना ।
[२०९] २।३४।४ (गृत्समदः शौनकः । मरुतः)

- पृषदश्वासो अनवभ्रराधसः ।
(२१६) ३।२६।६ (गाथिनो विश्वामित्रः । मरुतः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [२१६] ३।२६।६ = (२०२) २।३४।४

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२३०] ५।५२।४ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
वो स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
[अग्निः १०६३] ६।१६।२२ [भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः]
वः स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
दै० [मरुतः] ५

- [२४३] ५।५३।१० त्वेयं गणं मास्तं नव्यसीताम् ।
[२९२] ५।५८।१ रतुपे गणं ।
[२४९] ५।५३।१६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
रणन् गावो न यवसे ।

१०।२५।१ [विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा वसुकृद्धा वासुकः ।
सोम]

रणन् गावो न यवसे विवक्षसे ।

[२६०] ५।५४।११ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुत]

विद्युतो गमस्यो शिप्रा शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ।

[७०] ८।७।२५ [पुनर्वत्सः काण्वः । मरुत]

विद्यद्वस्ता ...शिप्रा शीर्षन् हिरण्ययीः ।

[२६५-७३] ५।५।१-९ शुभ यातामनु रथा भवृत्सत ।

[२६७] ५।५५।३ विरंकिण सूर्यस्येव रश्मयः ।

(अग्निः १६५४) १०।९।१४ (अरुणो वैतहव्यः । अग्निः)

अरंपस सूर्यस्येव रश्मयः ।

[२७३] ५।५५।९ [श्यावाश्व आत्रेयः मरुत]

अस्मभ्यं शर्मं बहुलं वि यन्तन ।

अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन ।

६।५।५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वे देवाः)

अस्मभ्यं शर्मं बहुलं वि यन्त ।

(४२२) १०।७।८ (रयूमरश्मिर्भागव । मरुतः)

अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गात ।

[२७४] ५।५५।१०=४।५।६ [वामदेवो गौतमः । बृहस्पति]

वयं स्याम ण्नयो रयीणाम् ।

[२७५] ५।५६।१=१।४९।१ [प्रकण्व काण्व । उषा]

दिवश्चिद् रोचनादधि ।

[२७८] ५।५६।४=१।६ १।३७।११

प्र श्यावयन्ति यामभिः ।

[२८०] ५।५६।६ युद्धं हारुषी रथे ।

१।१४।१२ [मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः]

युक्त्वा हारुषी रथे ।

["] ५।५६।६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुत]

रथे ।

अजिरा धुरि वोळहवे वहिष्ठा धुरि वोळहवे ।

१।१३४।३ [परच्छेपो देवोदासिः । वायु]

[२९०] ५।५७।७ [श्यावाश्व आत्रेय । मरुत]

भक्षीय वो ऽवसो दैव्यस्य ।

[इन्द्रः १५५३] ४।२१।१० [वामदेवो गौतमः । इन्द्रः]

भक्षीय ते ऽवसो दैव्यस्य ।

[२९१] ५।५७।८=२९९ ५।५८।८ [श्यावाश्व आत्रेय । मरुतः]

हये नरो मरुतो मृळता नस्तुक्मिघासो भमृता क्रतुजा ।

सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्भिर्यो बृहदुक्षमाणाः ।

[२९२] ५।५८।१=२४३ ५।५३।१०

[३१९] ५।८७।२ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)

दाना मङ्गा तदेषाम् ।

(९५) ८।२०।१४ (सोमरिः काण्वः । मरुत)

[३२२] ५।८७।५ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)

स्वायुधास इष्मिणः ।

(३५५) ७।५६।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुत)

स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३३४] ६।६६।१ (वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मरुतः)

शुक दुदुहे पृश्निरूध ।

(अग्निः ६७५) ४।३।१० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[३४१] ६।६६।८ नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति ।

१।४०।८ (कण्वो घौर । ब्रह्मणस्पतिः)

नास्य वर्ता न तरुता महाधने ।

["] ६।६६।८ मरुतो यमवथ वाजसातौ ।

१०।३५।१४ (लुप्तो धानाकः । विश्वे देवाः)

य देवासोऽनथ वाजसातौ ।

१०।६३।१४ (गय प्लात । विश्वे देवाः)

["] ६।६६।८ तोके वा गोषु तनये यमप्सु ।

(इन्द्र १९४१) ६।२५।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

.... यदासु ।

[३४४] ६।६६।११=१।१९ १।६४।१२

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३५५] ७।५६।११-३२२ ५।८७।५

[३६७] ७।५६।२३ इत् मनिता वाजमर्वा ।

(इन्द्रः २०१७) ६।३३।२ (अनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)

[३६९] ७।५६।२५=७।३४।२५ यूय पात स्वस्तिभिः सदानः ।

["] ७।५६।२५ आप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।

१०।६६।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)

आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।

७।३४।२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

[३७३] ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)

यद्वा आगः पुरुषता कराम ।

अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चमिष्ठा ।

१०।१५।६ (शङ्खा यामायनः । पितरः)
यद्... ।
७।७०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
अस्मे वामस्तु सुमतिश्च निष्ठा ।
[३७६] ७।५७।७ आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती ।
५।४३।१० (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।
[३७९] ७।५८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
प्र णः स्वाह्वाभिर्कृतिभिस्तिरेत ।

(इन्द्रः ३१९४) ७।८४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
रेतम् ।
[३८२] ७।५८।६ आराखिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
(इन्द्रः २१११) ६।४७।१३ (गर्गो भागद्वाजः । इन्द्रः)
आराखिद् द्वेषः सानुत युयोतु ।
[३८४] ७।५९।२ युष्माक देवा अवसाहनि ।
१।११०।७ (कुत्स आगिरसः । ऋभवः)
["] ७।५९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
प्र स क्षयं तिरते नि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।
८।२७।१६ (मनुर्वैवस्यत । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[४६] ८।७।१ प्र यद् वक्षिष्टुभमिषं ।
(इन्द्रः २३०४) ८।६९।१ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः)
प्रप्र वक्षिष्टुभमिष ।
[४७] ८।७।२ यद्ग्नं तविषीयवो ।
(इन्द्रः २६८) ८।६।२६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यद्ग्नं तविषीयस ।
[४७.५९] ८।७।२, १४ यामं शुभ्रा अविध्वम् ।
[४८] ८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ।
(इन्द्रः ३४५) ८।१३।२५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च न ।
(इन्द्रः ५३७) ८।५४(वाल० ६)।७ (मातरिश्वा काण्वः । इन्द्रः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
९।६१।१५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
[४९] ८।७।४ = (४०) १।३९।५
प्र वेपयन्ति पर्वतान् ।
[५३, ८१] ८।७।८, ३६ ते भानुभिर्वि तस्थिरे ।
[५५] ८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
दुदुहे वज्रिगे मधु ।
(इन्द्रः २३०९) ८।६९।६ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः)
[५६] ८।७।११ = (१७) १।३७।१२
मरुतो यद्ग्नो दिवः [बलं] ।
[५७] ८।७।१२ = (५) १।१५।२
यूयं हि ष्टा सुदानवो [०व] ।
[५८] ८।७।१३ पुरुक्षु विश्वधायसम् ।
८।५।१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

[६०] ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
एषां सुभ्र भिक्षेत मल्यः ।
८।१८।१ (इरिम्बिन्धिः काण्वः । आदित्याः)
[६५] ८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
ब्रह्मा को वः सपर्यति ।
(इन्द्रः ५९५) ८।६४।७ प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)
ब्रह्मा कस्त सपर्यति ।
[६७] ८।७।२२ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः)
सम् स क्षोणी समु सूर्यम् । सम् ।
(इन्द्रः ५२४) ८।५२ (वाल० ४) । १०
(आयुः काण्वः । इन्द्रः)
सम् . सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सम् सम् ।
[६८] ८।७।२३ = (इन्द्रः २५५) ८।६।१३
वि वृष पर्वशो ययु (रजनः) ।
[७०] ८।७।२५ = २६०) ५।५४।११
[७१] ८।७।२६ = (इन्द्रः १०१९) १।१३०।९
उशना यत् परावतः ।
[७३] ८।७।२८ = (४१) १।३९।६
[७६] ८।७।३१ = (२१) १।३८।१
[८०] ८।७।३५ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः)
वहन्यन्तरिक्षेण पतत ।
१।२५।७ (शुनः रोप आजीगतिः । वरुणः)
पदमन्तरिक्षेण पतताम् ।
[८६] ८।२०।५ = (१३) १।३७।८
भूमि (मिया) यामेषु रेजते ।

[८९] ८।२०।८ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)

रथे कोशे हिरण्यये ।

८।२०।९ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ)

रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वस् ।

[९५] ८।२०।१४ = (३१९) ५।८७।२

[१०७] ८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)

तेना नो अधि वोचत ।

८।६७।६ (मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः बहवो वा

मत्स्या जालनदाः । आदित्याः)

["] ८।२०।२६ इष्कर्ता विहृतं पुन ।

(इन्द्रः ९८) ८।१।१२ (मेधातिथि-मेधातिथी काण्वौ ।

इन्द्रः)

[३९७] ८।९४।३ तत् सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः ।

६।४५।३३ (अयुर्बार्हिस्पत्यः । वृषुस्तथा)

["] ८।९४।३ मरुतः सोमपीतये ।

१।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

[३९८] ८।९४।४ अस्ति सोमो अयं सुतः ।

(इन्द्रः १७६६) ५।४०।२ ऋषा सोमो अयं सुतः ।

[४०२] ८।९४।८ = १।३८।१०

[४०३] ८।९४।९ = १।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

[४०४-६] ८।९४।१०-१२ अस्य सोमस्य पीतये ।

= १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायुः)

(इन्द्रः ३३२१) ४।४९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (बार्हिस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)

(इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)

५।७१।३ (बाहुवृक्तः अत्रियः । मित्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४१२] १०।७७।८ = (इन्द्रः २१११) ६।४७।१३

(गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः)

[४१६] १०।७७।८ ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।

७।३९।४ (वासष्टो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

[४२२] १०।७८।८ = (२७३) ५।५।९



दैवत-संहितान्तर्गत मरुदेवता-मन्त्राणां उपमासूची ।

अमय न इयानाः ६,६६,२; ३३५ मरुतः शोशुचन् ।
 अमयः न १,३४,१; १९९ शोशुचानाः ।
 " " ५,८७,३; ३२० स्वविद्युत ।
 " " ५,८७,६; ३२३ शुशुकासः ।
 अग्नि न १०,७८,२; ४१६ भाज्रमा रुक्मवक्षसः ।
 अग्नीनां न जिह्वा १०,७८,३; ४१७ विरोकिणः ।
 अग्निपः यथा ५,६१,४; ३११ [तद्वत् प्रदसि] ।
 अङ्गिरस न १०,७८,५; ४१९ सामभिः विश्वरूपाः ।
 अत्यम् न १,६४,६; ११३ वाजिन मिहे वि नयन्ति ।
 अत्यासः न ७,५६,१६; ३६० स्वच्छः ।
 अत्याः इव ५,५२,३; ५०२ सुभ्यः चारव ।
 अत्यान् इव वाजिषु २,३४,३; २०१ अथान् उक्षन्ते ।
 अदितेः इव व्रतम् १,१६६,१२; १६९ दीर्घ दात्रम् ।
 अद्रयः न ५,८७,२ ३१९ अधृष्टासः ।
 " " आर्द्धिरासः १०,७८,६; ४२० विश्वहा ।
 अध्वरस्य इव ६,६६,१०; ३४३ मरुत दिद्युत् ।
 अन्तम् न १,३७,६ ११ सीम् धूतुथ ।
 अपः न १,६४,१; १०८ मनसा गिर समञ्जे ।
 आपः इव ८,९६,७; ४०१ सूरयः तिरः इषन्त ।
 " " ५,६०,३; ४५१ सध्न्यञ्चः धवध्वे ।
 " " न १०,७८,५; ४१९ निम्नैः उदभि जिगन्तवः ।
 अपां न उर्मयः १,१६८,२; १८४ सहस्रियासः मरुतः ।
 अपां न यामनि १०,७७,४; ४१० युष्मार्कं बुध्ने मही न ।
 अभ्रपुषः न १०,७७,१; ४०७ वाचा वसुमुषा ।
 अभ्रात् न सूर्यः १०,७७,३; ४०९ त्मना प्र रिरिञ्जे ।
 अभ्रियाः न २,३४,२; २०० वृष्टय वि छुतयन्त ।
 अमतिः न १,६४,९; ११६ [तेजः] रथेषु आ तम्यौ ।
 अराः इव ५,५८,५; २९६ अचरमाः ।
 अराणां न चरमः ८,२०,१४; ९५ एषां दाना मङ्गा ।
 अर्कम् न अभिस्वतरिः १०,७८,४; ४१८ सुष्टुभः ।
 अर्णः न ८,२०,१३; ९४ सप्रथ स्वेषम् ।
 " " १,१६७,९; १८० मरुतः द्वेषः परि प्लुः ।
 अर्यमणम् न ६,४८,१४; ३३० मन्द्रम् ।
 अर्यमणः न ५,५४,८ २५७ [दीप्तः] ।

अश्वा इव ५,५९,५; ३०४ [शीघ्रगन्तारः] ।
 अश्वास न १०,७८,५; ४१९ ज्येष्ठासः आशवः ।
 अश्वाः इव अध्वनः ५,५३,७; २४० क्षोदसारजः प्र सस्यु ।
 अश्वाम् इव ऊधनि २,३४,६; २०४ धेनु पिप्यत ।
 असुर्या इव १,१६८,७; १८९ रातिः जग्जती ।
 अहा इव ५,५८,५; २९६ अचरमा ।
 आशान् इव अथ ४,२७,१; ४४१ सुयमान् अह्म ऊतये ।
 दुत्या न नभसः १,१६७,६; १७६ स्वेष प्रतीका विधतः ।
 इन्द्रम् न ६,४८,१४; ३३० सुक्रतुं मारुतं गणम् ।
 इन्द्रम् दैवी यथा वा ०५ १७,८६; ४२७ यजमानं विद्याः ।
 इषम् न १,३९,१०; ४५ द्विषं ऋषिद्विषे सृजत ।
 उपरा न १,१६७,३; १७४ ऋष्टिः ।
 उषा न रामीः अरुणैः २,३४,१२; २१० मदः ज्योतिषा ।
 उपसां न केतव १०,७८,७; ४२१ अध्वराभ्रियः ।
 उस्ताः इव केचित् १,८७,१; १४५ अग्निभिः द्यानञ्जे ।
 ऊक्षः न ५,५६,३; २७७ अमः शिमीवान् ।
 ऊजिण्यासः न २,३४,४; २०३ वयुनेषु धूर्षद ।
 ऊष्टिषु प्रयतासु १,१६६,४; १६१ विश्वा हर्म्या भुवनानि
 एतसः न अहन्यः १,१६८,५; १८७ पुरुषैषा [स्रोत्रैः] ।
 एताः न यामे ५,५४,५; २५४ योजनं दीर्घं ततान ।
 ऐधा इव १,१६६,१; १५८ तविषाणि कतेना ।
 किरणम् न ५,५९,३; ३०४ भूमिं रेजथ ।
 क्षितीनां न मर्याः १०,७८,१; ४१५ अरेपसः ।
 गर्भम् इव भर्ता ५,५८,७; २९८ स्वमित् शवः धुः ।
 गवां सर्गम् इव ५,५६,५; २७९ [मरुतां सर्गं] ह्वये ।
 गवाम् इव शृङ्गम् ५,५९,३; ३०२ उत्तमं भ्रियसे [धारयथ] ।
 गावः न १०,३८,२; २२ व क रणयन्ति ।
 गावः न १,१६८,२; १८४ वन्द्यास ।
 गावः न वन्द्यास १,१६८,२; १८४ उक्षणः ।
 गावः न यवसे ५,५३,१६; २४० [मरुतः] रणन् ।
 गावः न दुर्धरः ५,५६,४; २७८ भोजसा वृथा रिणन्ति ।
 गाः इव चर्कृषत् ८,३०,१९; १०० वृष्ण गिरा अभि गाय ।
 गिरयः न १,६४,७; ११४ स्वतवमः ।

गिरयः न ६,६६,११; ३४४ अस्पृधन् ।
 गौः इव दुध्रा भीमयु ५,५६,३; २७७ शिमीवान् अमः ।
 ग्रामजितः नरः यथा ५,५४,८, २५७ मरुतः तथा ।
 ग्रावाणः न सूर्य १०,७८,६, ४२० सिन्धुमातरः ।
 घृतम् न ८,७,१९, ६४ इषा विद्युषी ।
 घृतवत् आभुवः विदथेषु १,६४,६; ११३ मरुतः पय ।
 चक्षुः इव ५,५४,६; २५५ सुगं यन्तं अनु नेपथ ।
 चर्म इव १,८५,५; १२७ धारा उदभि भूम व्युन्दन्ति ।
 जम्भती इव ५,५२,६; २२२ मरुतः विद्युतः ।
 जनयः न १,८५,१; १२३ मरुतः प्र शुम्भन्ते ।
 जिगीवांसः शूराः १०,७८,४; ४१८ अभिद्यव ।
 जुजुर्वान् इव विदपतिः १,३७,८, १३ पृथिवी अजमेपु ।
 जुह्वः न अग्नेः ६,६६,१०; ३४३ मरुतः त्विषीमन्तः ।
 ज्योतिष्मन्तः न १०,७७,५; ४११ आमा युक्ता ।
 तायवः न ५,५२,१२, २२८ केचित् मरुतः ।
 तिष्यः यथा ५,५४,१३; २६२ तथा यः [राः] न युच्छति ।
 तृष्णजे न दिव उत्साः ५,५७,१, २८४ इयं अस्मत् मतिः ।
 त्यत् न १,८८,५, १५५ एतत् योजनं अचेति ।
 दिक्षिषवः न १०,७८,५, ४१९ रथ्यः सुदानवः ।
 दुर्मदाः इव १,३९,५; ४० मरुतः प्रो आरत ।
 देवः न सूर्यः ६,४८,२१; ३३३ यस्य चकृतिः द्यां परि ।
 देवाभ्यः न यज्ञैः १०,७८,१; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः ।
 द्यौः न ८,७,२६, ७१ (पृथिवी अपि) भिया चक्रदत् ।
 द्यौः इव ५,५७,४, २८७ उरवः मरुतः ।
 द्यावः इव ५,५३,५, २३८ वृष्टी यती ।
 द्यावः न स्तुभिः चितयन्तः २,३४,२, २०० खादिनः मरुतः ।
 द्रप्ता इव ८,७,१६; ६१ रोदसी वृष्टिभिः अनु धमन्ति ।
 धन्वव्युतः न इषां यामनि १,१६८,५; १८७ [इषां यामनि] ।
 धुनयः न ६,६६,१०; ३०३ वीराः ।
 धेनु न शिखे २,३४,८, २०६ जनाय महर्षे इषं च पिन्वते ।
 धेनवः यथा ५,५३,७, २४० क्षोदसा राज प्र सस्रुः ।
 निषं न स्रुम् १,१६६,२; १५९ मरुतः मधु बिभ्रतः ।
 नरः न रणवः सवने मदन्तः ७,५७,७, ३८९ विश्वं शर्धः ।
 नरां न शंस २,३४,६, २०४ सवनानि आ गन्त न ।
 नौः न पूर्णा ५,५९,२, ३०१ भियसा भूमि एजते ।
 पृथ्या इव जाया अयं ६,२२,३; ४३९ एजाति ग्लहा कन्येव
 पथ्यः न १,६४,११; ११८ पर्वतान् उजिघ्नन्ते ।
 परावतः न १०,७८,७; ४२१ योजनानि ममिरे ।
 पर्जन्यः इव १,३८,१४; ३४ आस्ये श्लोकं ततन ।

पर्वताः इव १,६४,३; ११० दृढाङ्गा मरुतः ।
 पर्वतासः ज्येष्ठास ५,८७,९, ३२६ [अतिप्रवृद्धाः] ।
 पाजस्वन्तः न वीराः १०,७७,३; ४०९ पनस्यवः मरुतः ।
 पितृणां न शंसाः १०,७८,३; ४१७ सुरातयः ।
 पिशाः इव १,६४,८; ११५ सुपिशाः विश्ववेदसः ।
 पुत्रं न हस्तयोः पिता १,३८,१, २१ अस्यान् कद्ध दधिध्वे ।
 पुत्रकृथे न जनयः ५,६१,३; ३१० जघने चोदः सकथानि ।
 पुरा यथा १,३९,७, ४२ इत्या कण्वाय नूनं गन्त ।
 पृणतः न दक्षिणा १,१६८,७; १८९ वः रातिः भद्रा ।
 पृथिवी इव मीळहुष्मती ५,५६,३; २७७ मदन्ती अस्मत् ।
 प्रजातार न १०,७८,२; ४१६ ज्येष्ठाः सुनीतयः ।
 प्रयस्वन्त न १०,७७,४, ४१० सत्राचः आगता ।
 प्रयुज न ध्रुवं १०,७७,५, ४११ परिपुषः स्थ ।
 प्रवासः न प्रसितास १०,७७,५, ४११ परिपुषः ।
 मतिम् यथा १,६६,२ महाम् अच्छा अनूषत ।
 मनुषः न योषा १,१६७,३; १७४ गुहा चरन्ती विद्युत् ।
 मरुतः रुक्मैः यथा ७,५७,३, ३७२ एतावत् अन्ये न ।
 मरुद्भ्यः न १०,७७,७, ४१३ मानुष ददाशत् ।
 मर्याः इव ५,५९,३, ३०२ श्रियसे चेतय ।
 मर्याः इव ५,५९,५, ३०४ सुवृधः ।
 महा ग्रामः न यामन् १०,७८,६; ४२० मरुतः त्विषा ।
 माता इव पुत्रम् अथ ५,२६,५, ४३२ पिप्रत इह युक्ताः ।
 मित्रम् न ५,५२,१४, २३० मारुतं गणं दाना अच्छा ।
 मित्राय वा सदम् । २,३४,४, २०२ पृक्षे विश्वा भुवना ।
 मुनिः इव ७,५६,८, ३५२ धुनि ।
 मुष्टिहा इव हव्यः ८,२०,२०, १०१ ये सहाः सन्ति ।
 मृगः न यवसे १,३८,५; ३५ जरिता अजोष्य मा भून् ।
 मृगाः इव १,६४,७, ११४ हन्तिनः वना खादथ ।
 मृगाः न २,३४,१; १९९ भीमाः ।
 युक्षदशः न मर्याः ६,६६,१६; ३६० मरुतः शुभयन्त ।
 यमाः इव ५,५७,४, २८७ सुमदशः ।
 युधा इव १,१६६,१; १५८ तविषाणि कर्तन ।
 युयुधयः न १,८५,८, १३० जग्मयः ।
 रथैः इव ५,६०,१; ४४९ वाजयज्ञिः प्र भरे ।
 रथानां न भराः १०,७८,४; ४१८ सनाभयः ।
 रथीयन्ती इव १,१६६,५; १६२ ओषधिः प्र जिहीते ।
 रथ्य न ५,८७,८; ३२५ दंसना द्वेषांसि अप युयोतन ।
 रग्भिणी इव १,१६८,३, १८५ अंसेषु [लक्ष्मीः] रारमे ।
 राजान इव १,८५,८; १३० त्वेषसदशः ।

राजानः न चित्राः १०,७८,१; ४१५ चित्राः सुसंदृशः ।
 रिशादसः न मर्याः १०,७७,३; ४०९ अभिद्यव ।
 रुक्मः न १,८८,२, १५२ चित्रः मरुद्गणः ।
 रुक्मः इव उपरि दिवि ५,६१,१२; ३१३ मरुतः रथेषु ।
 वृत्तसम् न मातरम् १,३८,८; २८ विद्युत् मरुतः सिषकि ।
 वत्सासः न ७,५६,१६; ३६०; प्रक्रीलिनः ।
 वना न १,८८,३, १५३ मेधा ऊर्ध्वो कृणवन्ते ।
 वयः न १,८५,७, १२९ मरुतः बर्हिषि अधि सीदन् ।
 वयः इव १,८७,२; १४६ केनचित् पथा मरुतः ययि अचिध्वम् ।
 वयः न १,८८,१; १५१ न आपसन् ।
 वयः न ५,५९,७; ३०६ मरुतः श्रेणी परि पणुः ।
 वयः न पक्षान् १,१६६,१०; १६७ मरुतः श्रियः अनु किधिरः ।
 वयः न पित्र्यं सह ८,२०,१३; ९४ येषां एकमित् नाम भुजे ।
 वराः इव ५,६०,४; ४५२ रैवतासः हिरण्ये तन्वः पिपिश्रे ।
 वरुणम् इव ६,४८,१४; ३३० मायिनम् ।
 वरेयवः न मर्याः १०,७८,४, ४१८ घृतमुषः ।
 वर्मण्वन्तः न योधा १०,७८,३, ४१७ शिमीवन्तः ।
 वज्रासः न १,१६८,२, १८४ मरुतः स्वजाः स्वतवसः ।
 वातासः न १०,७८,२, ४१६ स्वयुजः सद्य ऊतयः च ।
 वातासः न १०,७८,३, ४१७ धुनयः जिगन्तयः ।
 वाश्रा इव १,३७,८, २८ विद्युत् मिमाति ।
 वाश्रा इव २,३४,१५; २१३ सुमतिः आ जिगातु ।
 विद्युरा इव १,८७,३, १४७ एषां अजमेषु भूमिः प्ररेजते ।
 विद्युरा इव १,१६८,६, १८८ संहित च्यावयथ ।
 विदध्या इव वाक् १,१६७,३; १७४ सभावती ।
 विद्युत् न दर्शता १,१६६,९; १६६ रथेषु वः (तेजः) आ तस्थौ ।
 विद्युत् न वृष्टिभिः ७,५६,१३, ३५७ रुचानाः ।
 विप्रासः न १०,७८,१; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः मरुतः ।
 विष्णुम् न ६,४८,१४; ३३० सुप्रभोजसम् ।
 वृष्टिम् न विद्युतः १,३९,९; ४४ ऊतिभिः नः आ गन्तः ।
 वृंशः नरां न २,३४,६, २०४ नः सवनानि आ गन्तनः ।
 शिशवः न हर्म्येष्ठाः ७,५६,१६; ३६० शुभ्राः ।
 शिखलाः न सुमातरः १०,७८,६; ४२० क्रीळयः ।

शुभंयव न १०,७८,७; ४२१ अजिभिः व्यश्नितन् ।
 शूराः इव १,८५,८; १३० जगमयः ।
 शूराः इव ५,५९,५, ३०४ प्रयुधः ।
 शोचिः न १,३९,१, ३६ मानम् परावतः प्र अस्यथ ।
 श्येनासः न पक्षिण ८,२०,१०; ९१ नः हव्यानि आ गतः ।
 श्येनासः न १०,७७,५, ४११ स्वयशसः रिशादसः ।
 श्रवस्यवः न १,८५,८, १३० मरुतः घृतनासु येमिरे ।
 सक्तीन् इव पूर्वान् ५,५३,१६; २४९ मरुतः अनु ह्ययः ।
 सत्त्वान न १,६४,२; १०९ घोरवर्णः ।
 सातिः न १,१६८,७; १८९ वः रातिः अमवती ।
 साधारण्या इव १,१६७,४; १७५ यव्या परा मिमिक्षुः ।
 सिहा इव १,६४,८, ११५ प्रवेतसः नानदति ।
 सिहा न हेषकृतवः ३,२६,५; २१५ स्वानिनः रुद्रियाः ।
 सिन्धवः न १०,७८,७; ४२१ मरुतः ययियः ।
 सुधिता इव बर्हणा १,१६६,६, १६३ क्रिविर्दती दिद्युत् ।
 सूरः न छन्दः ८,७,३६,३१ अभिः पूर्व्यः जानि ।
 सूर्यः न योजनम् ५,५४,५; २५४ तद्वीर्यं दीर्घं ततान ।
 सूर्यः न ५,५९,३, ३०२ रजसः विसर्जने चक्षुः ।
 सूर्याः इव १,६४,२; १०९ शुचयः ।
 सूर्याः इव १,१६७,५; १७६ विषितस्तुका विधतः रथं ।
 सूर्यस्य इव चक्षणम् ५,५५,४, २६८ दिदक्षण्य वः महस्वम् ।
 सूर्यस्य इव रश्मयः ५,५५,३; २६७ विरोकिणः ।
 सोमासः न सुताः तृसांशवः १,१६८,३; १८५ पीतासः हस्तु ।
 सोमा न १०,७८,२; ४१६ सुशर्माणः ।
 स्तृभिः इव दिव्याः १,१६६,११; १६८ कूरेदशः ।
 स्वर न ५,५४,१५, २६४ नृन् अभि ततनाम ।
 हंसासः आ नीळपृष्ठाः ७,५९,७; ३८९ मरुतः अपसन् ।
 हंसासः न स्वसराणि २,३४,५, २०३ मधोः मदायः ।
 हन्वा इव जिह्वया १,१६८,५; १८७ त्मना कः रेजति ।
 हविष्मन्तः न यज्ञाः १०,७७,१, ४०७ मरुतः वि जालुषः ।
 हिता इव १,१६६,३, १६० मयोभुवः ।
 होता इव ८,९६,६; ४०० इन्द्रः प्रातः अस्य मत्सति ।

दैवत-संहितान्तर्गत मरुद्देवता-मन्त्राणां सूची ।

ॐ सेषु व ऋष्टय	२६०	अर्हन्तो ये सुदानवो	२२१	आ विद्युन्मग्निः	१५१
असेष्वा मरुतः स्वादयो	३५७	अव स्वयुक्ता दिव	१८६	आ वो मक्ष तनाय	४२
अग्निर्न ये भ्राजसा	४१६	अश्वा इवेदरुषासः	३०४	आ वो यन्मूदवाहासो	२९४
अग्निर्हि जानि पूर्य	८१	अश्वासो न ये ज्येष्ठास	४१९	आ वो वहन्तु	१२८
अग्निश्च यन्मरुतो	४५५	असामि हि प्रयज्यवः	४४	आ वो होता जोहवीति	३६२
अग्निश्रियो मरुतो	२९५	असाम्योजो बिभृथा	४५	आशामाशां वि द्योतता	४६२
अग्ने मरुद्भिः शुभ	४५६	असूत पृश्निर्महते	१९१	आ सखाय सर्वर्तुषां	३२७
अग्ने शर्धन्तमा गणं	२७५	असौ या सेना	४३५	आ स्तुतासो मरुतो	३७६
अच्छ ऋषे मारुतं	२३०	अस्ति सोमो अयं सुतः	३९८	आस्थापयन्त युवतिं	१७७
अच्छा वदा तना गिरा	३३	अस्ति हि ण्मा मदाय	२०	इन्द्रं दैवीविंशो	४२७
अच्युता चिद् वो	८६	अस्मे वीरो मरुतः	३६८	इन्द्रधन्वभिर्धेनुभी	२०३
अज्येष्ठासो अकनिष्ठास	४५३	अस्य वीरस्य बर्हिषि	१३८	इमा उ वः सुदानवो	६४
अतः परिजम्ना गहि	४	अस्य श्रोपन्त्वा भुवो	१३९	इमां मे मरुतो	५४
अरीयाम निदस्तिरः	२४७	अहानि गृध्राः पर्या	१५४	इमे तुरं मरुतो	३६३
अचासो न ये मरुतः	३६०	आक्षय्यावानो वहन्ति	८०	इमे रध्र चिन्मरुतो	३६४
आदारसूद भवतु देव	४५७	आ गन्ता मा रिषण्यत	८२	इहेव शृण्व एषां	८
आद्वेषो नो मरुतो	३२५	आ च नो बर्हिः	३८८	इहेह वः स्वतवसः	३९३
अथ स्वनान्मरुतां	३०	आदह स्वधामनु	१	ईदक्षास एतादक्षास	४२५
अवा नरो न्योहते	२२७	आ नोऽवोभिमरुतो	१७३	ईळे अग्निं स्ववसं	४४९
अशीव यद् गिरीणां	५९	आ नो ब्रह्माणि	२०४	ईशानकृतो धुनयो	११२
आनवद्यैरभिद्युभिः	३	आ नो मखस्य दावने	७२	उक्षन्ते अर्था अर्था	२०१
अनु त्रितस्य युध्यतः	६९	आ नो रयिं मदच्युतं	५८	उग्रं व भोजः स्थिरा	३५१
अनेनो वो मरुतो	३४०	आपथयो त्रिपथयो	२२६	उत वा यस्य वाजिनो	१३७
अः समुद्राद् दिवं	४४३	आपो विद्युदभ्रं वर्ष	४६३	उत स्तुतासो मरुतो	३७५
अपामग्निस्तनूभिः	४६४	आभूषण्य वो मरुतो	२६८	उत स्म ते परुषण्याम्	२२५
अपारो वो महिमा	३९३	आ यं नरः सुदानवो	२३९	उत स्य वाज्यरुषः	२८१
अभि ऋद् स्तनया	४६०	आ यात मरुतो	२४१	उतो न्वस्य जोषमां	४००
अभि स्वपूभिर्मिथो	३४७	आ ये तस्थुः पृषतीषु	४५०	उत् तिष्ठ नूनमेषां	२७९
अत्रपुषो न वाचा	४०७	आ ये रजसि	१६१	उत्समक्षितं व्यचन्ति	४४१
अत्राजि शर्धो मरुतो	२५५	आ ये विश्वा पार्थिवानि	४०३	उदयुवो मरुतस्तौ	४३९
अग्नादेषां भियसा	३०१	आ रुक्मैरा युधु	२२२	उदीरयत मरुतः	४५९
अनाय वो मरुतो	८७	आ रुद्रास इन्द्रवन्तः	२८४	उदीरयथा मरुतः	२६९
अना इवेदचरमा	२९६	आरे सा वः सुदानवो	१९६	उदीरयन्त वायुभिः	४८

उदु स्ये अरुणस्रव	५२	गुन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः	३२६	तं नो दात मरुतो	२०५
उदु स्ये सूनवो गिरः	१५	गणास्वोप गायन्तु	४५८	तशु नूनं तविषीं	२९७
उदु स्वानेभिरीरत	६२	गवामिव भ्रियसे	६०२	तव भ्रिये मरुतो	४४८
उपयामगृहीतोऽसि	४२४	गावश्चिद् घा समन्यवः	१०२	ततृदानाः सिन्धव	२४०
उपहोषु यद्विध्वं	१४६	गिरयश्चिञ्चि जिहते	७९	ताँ आ रुद्रस्य मीळुषो	३८१
उपो रथेषु पृषती	४१	गूढता गुह्यं तमो	१४४	ताँ इयानो महि	२१२
उशना यत् परावत	७१	गृहमेधास आ गत	३९२	तान् वन्दस्व मरुतस्ता	९५
उषसां न केतवोऽध्वर	४२१	गोभिर्वाणो अज्यते	८९	तान् वो महो मरुत	२०९
ऊर्ध्वं नुनुवेऽवतं	१३२	गोमदश्चावद् रथवत्	२९०	तिग्ममनीक विदितं	४४६
ऊर्ध्वं सा वो मरुतो	३७३	गोमातरो यच्छुभयन्ते	१२५	तृणस्कन्दस्य नु विश	१९७
ऊष्टयो वो मरुतो	२८९	गौर्धयति मरुतां	३९५	ते अज्येष्टा अकनिष्ठाम	३०५
एतत् स्रज योजन	१५५	प्रावाणो न सूरयः	४२०	तेऽरुणेभिर्वरमा	१५२
एतानि धीरो निण्या	३४८	घृष्टं पाषकं वनिनं	११९	तेऽवधन्त स्वतवसो	१२९
एतावतश्चिदेषां	६०	चर्क्यं मरुतः पृम्सु	१२१	ते क्षोणीभिररुणेभिः	२११
एष वः स्तोमो मरुत १७२, १८२, १९२		चित्रं तद् वो मरुतो	२०८	ते जज्ञिरे दिव ऋक्वाम	१०९
एष वः स्तोमो मरुतो	१९४	चित्रैरत्तिभिर्वपुषे	१११	ते वशग्वा प्रथमा	२१०
एषा स्या वो मरुतो	१५६	चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र	१९५	तं नो वसुनि काम्या	३१७
एतान् रथेषु तस्थुषः	२३५	छन्दस्तुभः कुभन्यव	२२८	ते म आहुय	२३६
ओ षु वृष्टिराधसो	३८७	छन्दामि यज्ञे मरुतः	४३२	ते रुद्रासः सुमखा	३०४
ओ षु वृष्णः प्रयज्युना	७८	जघने चोद गुषां	३१०	ते स्पन्द्रासो नोभ्रणो	२१९
क ई व्यक्ता नरः	३४५	जन्नुश्चिद् वो मरुतस्वे	३७८	ते हि यज्ञेषु यज्ञियाम	४१४
कदास्विषन्त सूरयः	४०१	जिह्वा नुनुवेऽवतं	१३३	ते हि स्थिरस्य	२१८
कदा गच्छाथ मरुत	७५	जोषद् यदीमसुर्या	१७६	स्यं चिद् घा दीर्घं	१६
कद् नूनं कधप्रियः	२१, ७६	तं व इन्द्रं न सुकृतं	३३०	स्यं नु मारुतं गण	४०६
कद्रो अथ महानां	४०२	तं वः शर्धं मारुतं	१९८	स्यान् नु पूतदक्षसो	४०४
कस्मा अथ सुजाताय	२४५	तं वः शर्धं रथानां	२४३	स्यान् नु ये वि रोदसी	४०५
कृते चिदत्र मरुतो	३७४	तं वः शर्धं रथेषुभं	२८३	प्रायन्तामिम देवाः	४३७
के ष्टा नरः श्रेष्ठतमा	३०८	तं वृधन्तं मारुतं	३४४	त्रीणि सरांसि पृथयो	५५
को वेद जानमेषां	२३४	त इदुमाः शवसा	३३९	त्वष्टा यद वज्र	१३१
को वेद नूनमेषां	३१५	त उक्षितासो महिमान	१२४	विषीमन्तो अध्वरस्येव	३४३
को वोऽन्तर्मरुत	१८७	त उग्रासो वृषण	९३	त्वेषं गणं तवस	२०३
को वो महान्ति महता	३०३	तत् सु नो विश्वे अयं	३९७	त्वेषं शर्धो न मारुत	३३१
को वो वर्षिष्ठ आ	११	तद् वः सुजाता	१६९	दशस्यन्तो नो मरुतो	३६१
कीलं वः शर्धो मारुत	६	तद् वीर्यं वो मरुतो	२५४	दिवा चित तमः	२९
क नूनं कद् वो	२२	तद् वो जामिस्वं	१७०	देवयन्तो यथा मति	२
क नूनं सुदानवो	६५	तद् वो यामि द्रविण	२६४	द्यावो न सृभिश्चितयन्त	२०७
क वः सुज्ञा नद्यांसि	२३	तञ्ज इन्द्रो वरुणो	३६९	धारावरा मरुतो	१९९
क वोऽश्वाः क्वाभीशवः	३०९	तं नाकमर्यां	२६१	धनुथ स्यां पर्वतान्	२८६
क स्त्रिवदस्य रजसो	१८८	तन्नु वोचाम रभसाय	१५८	नकिर्द्येषां जन्वि	३४६

न पर्वता न नद्यो	२७१	प्रथिष्ट यामन् पृथिवी	२९८	मरुतो मास्तस्य न	१०४
न य ईषन्ते जनुषोऽया	३३७	प्र नू स मर्तः	१२०	मरुतो यद्ध वो दिवः	५६
न स जीयते मरुतो	२५६	प्र बुध्न्या व ईरते	३५८	मरुतो यद्ध वो बलं	१७
नहि व ऊति. पृतनासु	३८६	प्रयज्यवो मरुतो	२६५	मरुतो यस्थ हि क्षये	१३५
नहि वश्वरमं चन	३८५	प्र यत्रिथा परावत.	३६	मरुतो वीळुपाणिभि	३१
नहि व. शत्रुर्विविदे	३९	प्र यद् रथेषु पृषती	१२७	मरुसु वो दधीमहि	२२०
नहि ण्म यद्ध वः	६६	प्र यद् वस्त्रिष्टुभमिपं	४६	मर्तश्चिद् वो नृतवो	१०३
नहं नु वो मरुतो	१८०	प्र यद् वहध्वे मरुतः	४१२	महान्तो मङ्गा	१६८
नारय वर्ता न तरुता	३४१	प्र यन्तु वाजास्तविषी	२१४	महिषासो मायिनः	११४
निचेतारो हि मरुतो	३७१	प्र यात शीभमाशुभि	१९	मा वो दात्रान्मरुतो	३६५
नित्यं न सृजं मधु	१५९	प्र ये जाता महिना	३१९	मा वो मृगो न यवसे	२५
नि यद् यामाय वो	५०	प्र ये दिवः पृथिव्या	४०९	मा वो रसानितभा	२४२
नियुष्वन्तां ग्रामजितो	२५७	प्र ये दिवो वृद्धतः	३२०	मिमातु घौरदितिः	३०७
नि ये रिणन्त्योजसा	२७८	प्र ये मे बन्ध्वेषे	२३२	मिमिहि श्लोकमास्ये	३४
नि वो यामाय मानुषो	१२	प्र ये शुम्भन्ते जनयो	१२३	मिम्यक्ष येषु सुधिता	१७४
नृ मन्वान एषा	२३१	प्रवत्तती पृथिवी	२५८	मीळहुमतीव पृथिवी	२७७
नृष्टिर मरुतो	१२२	प्र वः शर्धाय घृध्वये	९	मृळत नो मरुतो	२७३
नैतावदन्ये मरुतो	३७२	प्र व स्पलकन्सुविताय	३००	मो पु णः परापरा	२३
पयस्वती कृणुयाप	४३८	प्र वेपयन्ति पर्वतान्	४०	मो पु वो अस्सदभि	१५७
पयो धेनूनां रसं	४४२	प्र वो मरुतस्तविषा	२५१	य ई वहन्त आशुभिः	३१२
परा वीराम एतन	३११	प्र वो महे मतयो	३१८	य उदचि यज्ञे अध्वरेष्ठा	४१३
परा शुभ्रा अयासो	१७५	प्र शंसा गोवध्न्यं	१०	य ऋषवा ऋष्टिविद्युतः	२२९
परा ह यत स्थिरं	३८	प्र शर्धाय मारुताय	२५०	यज्ञायज्ञा व समना	१८३
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो	४५१	प्र श्यावाश्च धृष्णुया	२१७	यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो	१३६
पान्ति मित्रावरुणा	१७९	प्र साकमुक्षे अचेता	३७७	यत् त्वेषयामा	१६२
पितु प्रत्नस्य	१४९	प्र सा वाचि सुष्टुतिः	३८२	यत् पूर्यं मरुतो	२७२
पिन्वन्त्यपो मरुतः	११३	प्र स्कम्भदेष्णा	१६४	यत् प्रायासिष्ट पृषती	२९७
पित्रन्ति मित्रो अर्यमा	३९९	प्रिया वो नाम हुवे	३५४	यत् सिन्धौ यदभिकन्यां	१०६
पुरुदप्ता अजिमन्त	२८८	प्रैषामजमेपु विथुरेव	१४७	यथा चिन्मन्यमे हदा	२७६
पूर्वाभिर्हि ददाशिम	१४०	बृहद् वयो मघवद्भयो	३७९	यथा रुद्रस्य सूनवो	९८
पृक्षे ता विश्वा भुवना	२०२	भरद्वाजायाव धुक्षत	३२९	यदङ्ग तविषीयवो	४७
पृषदथा मरुतः	४२८	भूरि चक्र मरुतः	३६७	यदश्वान् धूर्षु	२७०
प्रघासिनो हवामहे	४२३	भूर्गणि भद्रा नर्येषु	१६७	यदि स्तुतस्य मरुतो	३५९
प्र चित्रमर्क गृणते	३४२	मक्ष न येषु दोहसे	३३८	यदीदिदं मरुतो	४४५
प्र त विवक्तिम वक्त्र्यो	१७८	मध्वो वो नाम मारुतं	३७०	यदी वहन्याशवो	४२९
प्रति व एना	१९३	मरुतः पर्वतानाम्	४३६	यदुत्तमे मरुतो	४५४
प्रति वो वृषदग्जयो	९०	मरुतः पिबत ऋतुना	५	यदेषां पृषती रथे	७३
प्रति षोभन्ति सिन्धवः	१९०	मरुतां मन्वे अधि मे	४४०	यद् युयं पृथिमातरो	२०६
प्रवक्षस. प्रतवसो	१४५				२४

यद्ध यान्ति मरुतः	१८	येन दीर्घं मरुतः	१७१	वृष्णे शर्धाय सुभत्वाय	१०८
यं त्रायध्व इदमिदं	३८३	येनाव तुर्वशं यदुं	८३	व्यक्त्तु रुद्रा व्यहानि	२५३
यन्मरुतः सभरसः	२५९	ये पृथ्वीभिर्ऋष्टिभिः	७	घ्रातघ्रात गणगण	२१६
यया रश्मि पारयथा	२१३	ये वावृधन्त पार्थिवा	२२३	ज्ञातभुजिभिस्तमभि	१६५
यस्मा ऊमासो अमृता	१६०	येषामज्जेषु पृथिवी	१३	शर्धशर्ध व एषां	२४४
यस्य वा यूयं प्रति	९७	येषामर्णो न सप्रथो	९४	शर्धो नारुतमुच्छंस	२२४
यस्या देवा उपस्थे	३९६	येषां श्रियाधि रोदसी	३१३	शशमानस्य वा नरः	१४०
याभिः सिन्धुमवथ	१०५	यो नो मरुतो अभि	३९०	शुवी वो हव्या मरुतः	३५६
यामं येष्ठाः शुभा	३५०	यो नो मरुतो वृकताति	२०७	शुभ्रो व शुष्मः कृष्मी	३५२
या वः शर्म शशमानाय	१३४	रथ तु मारुतं वयं	२८२	शरा इवेष्ट युयुधयो	१३०
या शर्धाय मारुताय	३०८	रथानां न येराः	४१८	श्रियसे क भानुभिः	१५०
युङ्गध्वं ह्यरुषी रथे	२८०	रुद्रस्य ये मीळहुष	३३६	श्रिये कं वो अधि	१५३
युवानो रुद्रा अजरा	११०	रोदसी आ वदता	११६	श्रिये मयासो अङ्गो	४०८
युवा स मारुतो गण	३१४	वन्दस्व मारुतं गणं	३५	सं यद्धनन्त मन्युभि	३६६
युष्माँ उ नक्तमृतये	५१	वपान्ति मरुतो मिहं	४९	संवत्सरीणा मरुतः	४४७
युष्माकं देवा अवसा	३८४	वपुर्नु तच्चिकितुषे	३३४	स वोऽवन्तु सुदानव	४६१
युष्माकं बुध्ने अपां	४१०	वयमघेन्द्रस्य प्रेष्ठा	१८१	स चक्रमे महतो	३२१
युष्माक स्या रथो	२३८	वयो न ये श्रेणीः	३०६	सत्य त्वपा अमवन्तो	२७
युष्मादत्तस्य मरुतो	२६२	वरा इवेद् रैवतासो	४५२	सद्यश्चिद् यस्य चर्कृतिः	३३३
युष्मेषितो मरुतो	४३	वज्रासो न य स्वजाः	१८४	सनेस्यस्मद युयोत	३५३
युष्मोतो विप्रो मरुतः	३८०	वातस्त्रियो मरुतो	२८७	सप्त मे सप्त शाकिन	२३३
यून ऊ पु नविण्डया	१००	वातासो न ये धुनयो	४१७	समानमज्जेषां	९०
यूयं रथि मरुतः	२६३	वामी वामस्य धृतयः	३३२	समु त्थे महतीरप	६७
यूयं राजानमिथं	२९५	वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो	२८५	सस्वाश्चिद्धि तन्पराः शुम्भमाना	३८९
यूयं हि ष्ठा सुदानवो	५७	वाश्रैव विद्युन्मिमाति	२८	स हि स्वसृत्	१४८
यूयं तत् सप्तशवस	१४३	वि तिष्ठध्व मरुतो	३९४	सहो पु णो वज्रहस्तै	७७
यूयं धूर्षु प्रयुजो	४११	विष्ठा हि रुद्रियाणां	८४	साक जाताः सुभ्वः	२६७
यूयं न उम्रा मरुतः	१६३	विद्युद्धस्ता अभिद्यवः	७०	सातिर्न वोऽमवती	१८९
यूयं नः प्रवतो	४३०	विद्युन्महसो नरो	२५२	सान्तपना द्रवं हविः	३९१
यूयमस्मान् नयत	२७४	वि द्वीपानि पापतन्	८५	सा विट सुवीरा मरुद्	३४९
यूयमुम्रा मरुत ईदशे	४३४	विप्रासो न मन्मभि	४१५	साहा ये सन्ति	१०१
यूयमुम्रा मरुतः पृथि	४३३	वि ये आजन्ते सुमखास	१२६	सहा इव नानवति	११५
यूयं मर्तं विपन्यवः	३१६	वि वृत्रं पर्वशोययुर्वि	६८	सुदेवः समहामति	२४८
ये अग्नयो न शोशुच	३३५	विश्वं पश्यन्तो विश्रुया	१०७	सुभगः स प्रयज्यवो	१४१
ये अग्निषु ये वाशीषु	२३७	विश्ववेदसो रथिभिः	११७	सुभगः स व ऊति	९३
ये कीलालेन तर्पयन्ति	४४४	विश्वानि भद्रा मरुतो	१६६	सुभागाज्ञो देवाः कृणुता	४२२
ये चार्हन्ति मरुतः	९९	वीळुपविभिर्मरुत	८३	सुपुद्गत मृडत	४२१
ये द्रप्सा इव रोदसी	६१	वृषणश्चैन मरुतो	९१	सुषोमे शर्यणावति	७४
येन तोकाय तनयाय	२४६			सृजन्ति रश्मिमोजसा	५३

सोमामो न ये सुता	१८५	स्थिरा वः सम्बायुधा	३७	स्वयं दधिध्वे तविषीं	२६६
स्तुहि भोजान्स्तुवतो	२४९	स्वतवांश्च प्रघासी च	४२६	स्वायुधास इमिणः	३५५
स्थिरं हि जानमेषां	१४	स्वधामनु श्रियं नरो	८८	ह्रये नरो मरुतो	२९१, २९९
स्थिरा वः सन्तु नेमयो	३२	स्वनो न वोऽमवान्	३२२	हिरण्ययेभिः पविभिः	११८



दैवत-संहितान्तर्गत-मरुदेवतायाः

गुणबोधक-पदानां सूची ।

['मरुतः' इति बहुवचम्, 'मरुतां गणः' इति एकवचनम् । अतः गुणबोधकपदानि उभयवचनान्तानि संहितायां संदृश्यन्ते ।]

अकनिष्ठासः ५, ५९, ६; ३०५ । ६०, ५; ४१३
 अकवा ५, ५८, ५; २९६
 अक्काः १०, ७७, २; ४०८
 अस्त्रियामानः १, ३८, ११; ३१
 अगृभीतशोचिषः ५, ५४, ५; २५४
 अग्निजिह्वाः वा० य० २५ २०; ४२८
 अग्निश्रियः ३, २६, ५; २१५
 अग्नयः १, ३७, ५; १०
 अचरमा ५, ५८, ५; २९६
 अच्युताचिन्-भोजसा प्रच्यावयन्तः १, ८५, ४; १२६
 अजगराः अथ० ४, १५ ७, ९; ४६१, ४६३
 अजरा १, ६४, ३; ११०
 अज्येष्टा ५, ५९, ६; ३०५ । ६०, ५; ४१३
 अज्जिमन्त ५, ६७, ५; २८८
 अद्राभ्याः २, ३४, १०; २०८ । ३, २६, ४; २१४
 अद्भुतैतनसः ५, ८७, ७; ३२४
 अद्भि रंहयन्त १, ८५, ५; १२७
 अद्वेषः ५, ८७, ८; ३२५
 अधिपतयः पर्वतानाम् अथ० ५, २४, ६; ४३६
 अधृष्टा-ष्टासः ५, ८७, २; ३१२ । ६, ६६, १०; ३४३
 अग्निगावः १, ६४, ३; ११०
 अध्वरश्रियः १०, ७८, ७; ४२१
 अनन्तशुष्माः १, ६४, १०; ११७
 अनर्वा १, ३७, १; ६ । ६, ४८, १५; ३३१
 अनवद्याः १, ६, ८; ३ । ७, ५७, ५; ३७४

अमवभ्राधसः १, १६६, ७; १६४ । २, ३४, ४; २०२ ।
 ३, २६, ६; २१६ । ५, ५७, ५; २८८
 अनानताः १, ८७, १; १४५
 अनीकं तिग्मम् अथ० ४, २७, ७; ४४६
 अनुपथाः ५, ५२, १०; २२६
 अनुवर्त्मानः इन्द्रं दैवी विना वा० य० १७, ८६; ४२७
 अनेद्य १, ८७, ४; १४८ । ५, ६१, १३; ३१४
 अन्तरिक्षेण पततः ८, ७, ३५; ८०
 अन्तस्पथाः ५, ५२, १०; २२६
 अप्रतिष्कु-स्कृतः ५, ६१, १३; ३१४
 अर्द्धया मुहुः ५, ५४, ३; २५२
 अभिशुः-द्यवः १, ६, ८; ३ । ८, ७, २५; ७० । १०, ७७, ३;
 ४०९ । ७८, ४; ४१८
 अभिस्वर्तारः १०, ७८, ४; ४१८
 अभीरवः १, ८७, ६; १५०
 अभोग्वनः १, ६४, ३; ११०
 अमध्यमास ५, ५९, ६; ३०५
 अमर्त्याः १, १६८, ४; १८६
 अमवन्तः १, ३८, ७; २७ । ८, २०, ७; ८८
 अमिताः ५, ५८, २; २९३
 अमृता-तासः १, १६६, ३, १३; १६०, १७० । ५, ५७, ८;
 २९१ । ५८, ८; २९९
 अयासः १, ६४, ११; ११८ । १६७, ४; १७५ । १६८, ९;
 १९१ । ७, ५८, २; ३७८
 अयोद्वेष्टाः १, ८८, ५; १५५

भराजिनः ८,७,२३; ६८
भरिष्टग्रामाः १,१६६,६; १६३
अरुणापवः ८७,७; ५२
अरुणाश्वः ५,५७,४; २८७

मरुतां अश्वाः ।

अजिरा ५,५६,६; २८०
अरुणाः १,८०,२; १५०
अरुषः ५,५६,७; २८१
अरुषी ५,५५,६; २७०
आशवः २,३४,३; २०१ । ५,६१,११ ३६०
एतास १,१६६,४; १६१
तुविष्वणिः ५,५६,७; २८१
दर्शतः ५,५६,७ २८१
नियुतः ५,५४,८; २५७
पिशंगा १,८८,०; १५०
पृषतीः १,३९,६; ४१ । ५,५५,६; २७० । ५७,३;
२८६ । ५८,६; २९७
प्रष्टिः १,८५,४५; १२६,१२७
रथतुरः १,८८,२; १५०
रोहितः १,३९,६; ४१ । ५,५६,६; २८०
वहिष्ठाः ५,५६,६; २८०
वाताः ५,५८,७; २९८
सुयमा ५,५५,१; २६५
स्वयतासः १,१६६,४; १६१
हरी ५,५६,६; २८०
अरुषासः ५,५९,५; ३०४
अरेणवः १,१६८,४; १८६
अरेपसः १,६४,२; १०९ । ५,५३,३; २३६ । ५७,४
२८७ । ६१,१४; ३१९ । १०,७८,१; ४१५
अर्काः ५,५७,५; २८८
अर्क अर्चन्तः १,८५,२; १०४
अर्का १,३८,१५; ३५
अर्चप्रयः ६,६६,१०; ३४३
अर्चिनः तविषीभिः २,३४,१; १९९
अर्थः ५,५४,१२; २६१
अर्हन्तः ५,५२,५; २२१
अलातृणासः १,१६६,७; १६४
अविधुराः १,८७,१; १४५
अश्मदिषवः ५,५४,३; २५२
अश्वयुजः ५,५४,२; २५१

असच्चक्षिषः ८,२०,२४; १०५
असामिशवसः ५,५२,५; २२१
असुराः १,६४,२; १०९
अस्तारः १,६४,१०; ११७
अस्त्रधन्तः ७,५९,६; ३८८
अहिभानव १,१७०,१; १९५
अहिमन्यव शवसा १,६४,८-९; १६५,११६
अहुतापव ८,२०,७; ८८
आदित्यासः १०,७७,२; ४०८
आपथयः ५,५२,१०; २२६
आपयः ५,५३,२; २३५
आयुषः ५,६०,८; ४५६
आशवः १०,७८,५; ४१९ । साम० ३५६, ४२९
आशसः ५,५६,२; २७६
आश्वश्वः ५,५८,१; २९७
आसभिः स्वरितारः १,१६६,११; १६८
इनासः ५,५४,८; २५७
इन्द्रधन्तः ५,५७,१; २८४
इन्द्रियं जनयन्तः १,८५,२; १२४
इषुमन्तः ५,५७,२; २८५
इष्मिण १,८७,६; १५० । ५,८७,५; ३२२ । ७,५६,
११; ३५५
ईश्रामः वा० य० १७,८४; ४०५
ईशानः--ना १,८७,४; १४८ । अथ० ४,२७,४-५;
४४३,४४४
ईशानकृतः १,६४,५ ११०
उक्षणः १,६४,२; १०९
उक्षमाणा तन्वम् ६,६६,४; ३३७
उक्षितामः १,८५,२; १२४
उक्षिता साकम् ५,५५,३; २६७
उग्रा ग्रासः ८,२०,१२; ९३ । १,१६६,६,८; १६३,१६५ ।
५,५७,३; २८६ । ६,६६,५-६; ३३८,३३९ । ७,५७,१,
३७० । अथ० १३,१,३; ४३३ । ३,१,२; ४३४
उग्रं पृतनासु अथ० ४,२७,७; ४४६
उग्रा ओजोभिः ७,५६,६; ३५०
उग्रवाहनः ८,२०,१२; ९३
उज्जरी वा० य० १७,८५; ४२६
उन्मा अथ० ४,१५,७,९; ४६१,४६३
उद्वयवः ५,५४,२; २५१
उद्वयुतः अथ० ६,२२,३; ४३९

उद्वाहासः ५,५८,३; २९४
 उदोजसः ५,५४,३; २५२
 उद्भिदः ५,५९,६; ३०५
 उपमासः ५,५८,५; २९६
 उपविश्रियाणाः वक्षःसु रुक्मा ७,५६,१३; ३५७
 उरवः ५,५७,४, २८७
 उरुक्षया अथ० ७,७७,३; ४४७
 उमासः १,१६६,३; १६०
 ऊकाणः १,८७,५; १४९ । ५,६०,८; ४५६
 ऋजिषी-विणः १,६४,१२; ११९ । ८७,१, १४५ ।
 २,३४,१; १९९
 ऋजतः ५,८७,५; ३२२
 ऋणयावा १,८७,४, १४८
 ऋतजाताः ५,६१,१४, ३१५
 ऋतज्ञाः ५,५७,८; २९१ । ५८,८, २९९
 ऋता त-यव. ५,५४,१२; २६१
 ऋभुक्षणः ८,७९,१२; ५४,५७ । २०,२, ८३
 ऋवसम् ५,५२,८, २२४
 ऋष्टिमन्तः ५,५७,२; २८५ । ६०,३, ४५१
 ऋष्टिविद्युतः १,१६८,५; १८७ । ५,५२,१३, २२९
 ऋष्याः-प्रासः १,६४,२; १०९ । ५,५२,१३, २२९
 एताः १०,७७,२, ४०८
 एतादक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५
 एवयावानः २,३४,११; २०९
 ककुहाः २,३४,११; २०९
 कधप्रियः १,३८,१; २१ । ८,७,३१; ७६
 कवन्धिनः ५,५४,८; २५७
 कवयः ५,५२,१३; २२९ । ५७,८ २९१ । ५८,३,८,
 २९४,२९९ । ७,५,११, ३९३ । अथ० ४,२७,३, ४४२
 कामिनः ५,५३,१६; २४९ । ७,५९,३; ३८५
 काम्यः १,६,८; ३
 कुभन्यवः ५,५२,१२; २२८
 क्रीडी वा० य० १७,८५; ४२६
 क्रीलम् [शर्धः] १,३७,१,५; ६,१०
 क्रीलयः १,८७,३; १४७ । १०,७८,६; ४२०
 क्षपः जिम्बन्तः १,६४,८; ११५
 स्वादिनः २,३४,२; २००
 स्वादिहलः ५,५८,२; २९३

गणः-णाः १,६,८ ३ । ८७,४; १४८ । ५,५६,१; २७५ ।
 ५,५८,२, २९३ । ७,५८,१, ३७७
 गणाः मरुताम् अथ० ४,१३,४; ४३७
 गणाः मारुताः अथ० ४,१५,४; ४५८
 गणः मारुतः १,३८,१५,३५ । ६४,१२; ११९ । ५,५३,१०,
 २४३ । ५,६१,१३ ३१४ । ८,९४,१२; ४०६
 गणश्रिय १,६४,९ ११६ । ५,६०,८, ४५६
 गन्तारः यज्ञम् ३,२६,६; २१६
 गिरः सूनवः १,३७,१०; १५
 गिरिष्ठाः ८,९४,१२; ४०६
 गृणानाः ५,५५,१०; २७४ । ५२,८; ३०७
 गृहमेधासः ७,५९,१०; ३९२
 गृहमेधी वा० य० १७,८५, ४२६
 गोबन्धवः ८,२०,८; ८९
 गोमातरः १,८५,३; १२५

मरुतां माता ।

अनपस्फुरा ६,४८,११; ३२७
 एवयावरी ६,४८,१२; ३२८
 गौः ८,९४,१; ३९५
 धेनुः ६,४८,११; ३२७
 पृभिः ५,५२,१६, २३२
 यस्या उपस्थं विश्वे देवा व्रतं धारयन्ते ८,९४,२; ३९६
 युक्ता ८,९४,१; ३९५
 वह्निः स्थानाम् ८,९४,१; ३९५
 विश्वदोहाः ६,४८,१३; ३२९
 विश्वभोजाः ६,४८,१३; ३२९
 श्रवस्युः ८,९४,१, ३९५
 सवर्तुषा ६,४८,११; ३२७
 सुदुषा ५,६०,१, ४४२
 सूर्यामासा दशो कम् ८,९४,२, ३९६
 गोषु अहयम् [शर्धः] १,३७,५; १०
 घर्मस्तुभ ५,५४,१; २५०
 घृतप्रुषः १०,७८,४; ४१८
 घृषुः १,६४,१२; ११९
 घृष्टिवः १,३७,४; ९ । ८५,१; १२३ । १६६,२; १५९
 घृष्ट्वराधसः ७,५९,५; ३८७
 घोराः १,१६७,४; १७५
 घोरवर्षसः १,६४,२; १०९
 घोषिणः अथ० ४,१५,४; ४५८

चक्राणाः वृष्णि पौष्यम् ८७,२३, ६८
 चन्द्राः ८,१० २०, १०१
 चारवः ५,५७,३; ३०२
 चित्रा ८,७,७, ५२
 चित्रमानवः १,६४,७, ११४। ८५,११; १३३
 चित्रवाजा. ८७,३३, ७८
 छन्दस्तुभः ५,५२,१२; २२८
 जग्मयः १,८५,८, १३०
 जग्मयः विदथेषु वा० य० २५,२०; ४२८
 जनः दैव्यः २,३०,११, १९८
 जाताः साकम् ५,५५,३; २६७
 जिगत्नवः १०,७८,३,५; ४१७,४१९
 जित्वन्तः १,६४,८; ११५
 जीरदानव २,३४,४; २०२। ५,५३,५; २३८
 जुषाणाः मनसा १,१७२,२, १९४
 जुष्टतमास. १,८७,१, १४५
 ज्यष्ठाः-ष्ठासः १०,७८ २५, ४१६,४१९
 तत्तद्वानाः ५,५३,७; २४०
 तवसः १,६४ १२; ११९। १६६,८; १६५। ५,५८,२,
 २१३। ६०,४; ४५२
 तविषीभिः आबुतः १,८७ ४, १४८
 तविषीभिः [तृतीया] ३,२६,४, २१४
 तविषीमान् ५,५८,१; २९२
 तविषीयव ८,७,२; ४७
 तस्थिवांसः रथेषु ५,५३,२; २३५
 तिमं भनीकम् अथ० ४,२७,७; ४४६
 तुरः ६,६६,९; ३४२
 तुरासः १,१६६,१४; १७१। १७१,१, १९३। ६,४८,१२;
 ३२०। ७,५६,१०, ३५४। ५८,५; ३८१
 तुविजाताः १,१६८,४; १८६
 तुविष्टुम्नाः ५,८७,७, ३२४
 तुविमन्ववः ७,५८,२, ३७८
 तुविराधसः ५,५८ २; २९३
 तुविष्मान् गणः ७,५६,७, ३५१
 तुविष्मान् दैव्यस्य धाम्नः ७,५८,१; ३७७
 तुविष्वाणिः स्वनिः ६,४८,१५; ३३१
 तुवी-वि-मघासः ५,५७,८; २९१। ५८,८; २९९
 तुष्यवसः ६,६६,१०, ३४३
 त्रातारः ७,५६,२२; ३६६
 त्रिष-स-सासः अथ० १३,१,३; ४३३

त्रिषीमन्तः ६,६६,१०; ३४३
 त्वेषाः १,३८,७,१५, २७,३५। ८,२०,७; ८८। ६,४८,
 १५; ३३१
 त्वेषः ५,५३,१०; २४३। ५८,२; २९३
 त्वेषुम्नाः १,३७,४; ९
 त्वेषयामा १,१६६,५; १६२
 त्वेषरथः ५,६१,१३, ३१४
 त्वेषसंहसः ५,५७,५, २८८
 तुधाना नाम यज्ञियम् १,६,४; १
 दविध्वतः २,३४,३; २०१
 दशग्वाः २,३४,१२; २१०
 दशस्थन्त ७,५६,१७; ३६१
 दस्मवर्चसः ८९४,२, ४०२
 दस्ताः ५,५५,५, २६९
 दातिवारः ५,५८,२, २९३
 दिव नरः ५,५४,१०; २५९
 दिवः पुत्रासः १०,७७,२; ४०८
 दुधकृत १,६४,११; ११८
 दुधर्तवः ५,८७,९; ३२६
 दुर्मदा १,३९,५, ४०
 दुहन्त. आक्षित उत्सम् ८,७,१६; ६१
 दूरेदशः १,१६६,११; १६८। ५,५९,२, ३०१
 देवाः-वासः १,३९,५, ४०। ८,७,२७, ७२। १,१७१,२;
 १९४। ५,५२,१५; २३१। ७,५२,१-२; ३८३,३८४।
 ८,९४,८; ४०२। १०,७८,८, ४३२। अथ० ४,१३,४;
 ४३७। २७,६; ४४५
 दैव्यः जन. २,३०,११, १९८
 द्युम्नाश्वस. ५,५४,१; २५०
 द्रप्तिनः १,९४,२; १०९
 धूमन्त ऋमिम् २,३४,१; १९९
 धमन्त. वाणम् १,८५,१०, १३२
 धारावराः २,३४,१; १९९
 धियावसुः १,६४,१५; १२२
 धीरा. विदथेषु ३,२६,६, २१६
 धुनि-नयः ८,२०,१४, ९५। १,६४,५; ११२। ८७,३; १४७
 ६,६६,१०; ३४३। १०,७८,३; ४१७। ५,६०,७; ४५५
 धुनिन्नतः ५,४८,२; २९३। ८७,१, ३१८
 धृतय १,३०,१,१०, ३६,४५। ६४,५; ११२। ८७,३
 १४७। १६८,२८; १८४। ५,५४,४; २५३। ६१,१४
 ३१५। ६,४८,२०, ३३१। ७,५८,४; ३८०

धृतयः दिवश्च गमश्च १,३७,६, ११
 धूर्ध्वदः २,३४,४, २०२
 धृषद्विनः ५,५२,२, २१८
 धृष्णुः ७,५६,८; ३५२
 धृष्णव ओजसा ५,५२,१४, २३०
 धृष्णवेणाः ६,६६,६, ३३९
 धृष्णवोजसः २,३४,१; १९९
 ध्रुवच्युत १,६४,११ ११८
 नमयिष्णवः ८,२०,१; ८२
 नरः १,३९,३, ३८ । ८,२०,१०,१६, ९१, ९७ । १,६४,
 १०; ११७ । ८६,८; १४२ । ५,५२,५,११; २२१,
 २२७ । ५३,३,६,१५ २३६,२३९,२४८ । ५४,३;
 २५२ । ५७,८, २९१ । ५८,२; २९३ । ५९,२-३;
 ३०१,३०२ । ७,५६,१, ३४५ । ५७,६, ३७५ । ५९,४;
 ३८६; अथ० ६,२२,२; ४३८
 नवेदसः ५,५५,८, २७२
 नव्यसी ५,५८,१, २९२
 निचेतारः गृणन्तम् ७,५७,२, ३७१
 निमेघमानाः अत्येन पाजसा २,३४,१३; २११
 निष्ठुत्वन्त ५,५४,८; २५७
 निरुक्तमः ५,८७,४, ३२१
 निषङ्गिणः ५,५७,२, २८५
 नृतमासः १,८७,१; १४५
 नृतवः ८,२०,२२, १०३
 नृषा सा चः १,६४,९; ११६
 एनस्युः-स्यवः १,३८,१५, ३५ । १०,४७,३; ४०९
 पयोधाः ७,५६,१६; ३६०
 पयोवृधः १,६४,११; ११८
 परा १,१६७,४; १७५
 परिजम् १,६,९; ४
 परिज्रयः १,६४,५, ११२ । ५,५४,२; २५१
 परिपुषः १०,७७,५, ४११
 परिष्टुभः १,१६६,११; १६८
 पर्वतानां अधिपतयः अथ० ५,२४,६; ४३६
 पर्वतच्युत् ५,५४,१, २५०
 पाजस्वन्तः १०,७७,३, ४०९
 पावका-कासः ८,२०,१९; १०० । १,६४,२, १२; १०९, ११९
 ७,५७,५, ३७४ । ५,६०,८, ४५६
 पारावताः ५,५२,११, २२७
 पिता रुद्रः एषाम् ५,६०,५; ४५३

पिपीषवः ७,५९,४; ३८६
 पिप्रियाणा वीतये ७,५७,२; ३७१
 पिबन्तः मदिरं मधु सामं ३५६; ४२९
 पिशङ्गाश्वाः ५,५७,४; २८७
 पिशानाः ७,५७,३; ३७२
 पुनानाः अवद्यानि अंत ६,६६,४, ३३७
 पुरीषिणः ५,५५,५, २६९
 पुरुद्वप्साः ५,५७,५, २८८
 पुरुश्च चन्द्राः ५,६१,१६, ३१७
 पुरुस्पृह ८,२०,२ ८३
 पूतदक्षमः ८,९४,७,१०, ४०१,४०४
 पूषा ६,४८,१५, ३३१
 पृथिमातर १,३८,४; २४ । ८,७,३, १७; ४८,६२ । १,८५,२;
 १२४ । ५,५७,२-३; २८५-२८६ । ५९,६, ३०५ ।
 वा० य० २५,२०, ४२८ । अथ० ४,२७,२; ४४१ ।
 १३,१,३, ४३३
 पृथे पुत्रा ५,५८,५ २९६
 पृथदश्वा १,८७,४; १४८ । २,३४,४ २०२ । ३,२६,६;
 २१६ । वा० य० २५,२०, ४२८
 पृष्ठयज्वा ५,५४,१, २५०
 प्रकीलिन ७,५६,१६ ३६०
 प्रघासी-सिन वा० य० ३,४४; ४२३ । १७,८५; ४२६
 प्रच्यावयन्तः अच्युता १,८५,४; १२६
 प्रचेतसः १,३९,९; ४४ । ६४,८, ११५
 प्रणेतारः ५,६१,१५, ३१६
 प्रणेतारः यजमानस्य मन्म ७,५७,२, २७१
 प्रतवसः १,८७,१, १०५
 प्रतिसद्वक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५
 प्रवक्षस १,८७,१, १०५ । ५,५७,४; २८७
 प्रथमा २,३४,१२; २१०
 प्रयज्युः-ज्यवः १,३९,९; ४४ । ८,७,३३; ७८ । १,८६,७;
 १४१ । ५,५५,१, २६५ । ८७,१; ३१८ । ६,४८,२०;
 ३३२ । ७,५४,१४; ३५८
 प्रयन्तः ५,५४,९, २५८
 प्रयुधः ५,५९,५, ३०४
 प्रसक्तः नमोभिः इह ५,६०,१; ४४९
 प्रसितासः १०,७७,५, ४११
 प्रस्थावानः ८,२०,१, ८२
 व्राह्मोजसः ८,२०,६; ८७
 बिभ्रत मधु १,१६६,२; १५९

बृहदुक्षमाणा ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
 बृहद्विरयः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९
 ब्रह्मणस्पतिः १,३८,१३; ३३
 भद्रजानयः ५,६१,४; ३११
 भन्ददिष्टि ५,८७,१; ३१८
 भीमाः० मास २,३४,१; १९९ । ७,१८,२; ३७८
 भीमसंहतः ५,५६,२; २७६
 भूमि धमन्तः २,३४,१; १९९
 भोजाः ५,५३,१६; २४९
 आजमानाः साम० ३५६; ४२९
 आजजन्मानः ६,६६,१०; ३४३
 आजहृष्टयः १,६४,११ ११८ । ८७,३; १४७ । १६८,४
 १८६ । २,३४,५; २०३ । ५,५५,१ २६५ । १०,७८,
 ७; ४२१
 आतर ५,६०,५; ४५३
 मखाः १,६४,११; ११८
 मघवानः ८,९४,१; ३९५
 मत्सराः अथ० ७,७७,३ ४४७
 मधु मिश्रतः १,१६६,२; १५९
 मनवः वा० य० २५,२०; ४२८
 मनीषिणः ५,५७,२; २८५
 मनोजुवः १,८५,४; १२६
 मन्दसानाः ५,६०,७; ४५१
 मन्त्राः १,१६६,११; १६८
 मन्त्रः [अर्थमा] ६,४८,१४; ३३०
 मघोभुवः ८,२०,२४; १०५ । १,१६६,३; १६० । ५,५८,
 २; २९३
 मरुतः ५,६१,१-४,११-१६; ३०८-३१७
 मरुतां गणाः अथ० ४,१३,४; ४३७
 मरुतां सर्गः ५,५६,५; २७९
 मरुत्वान् ५,८७,१; ३१८
 मर्याः-यांसः ५,५३,३; २३६ । ५२,६; ३०५ । ६१,४,
 ३११ । ७,५६,१; ३४५ । १०,७७,२; ४०८
 महान्तः १,६,६; २ । ८,२०,८; ८९ । ५,५५,२; २६६ ।
 ८,९४,८; ४०२
 महान्तः मङ्गा- १,१६६,११; १६८
 महिषासः १,६४,७; ११४
 माद्विष्णवः अथ० ७,७७,३; ४४७
 माजुवासः अथ० ७,७७,३; ४४७
 मायी-यिनः १,६४,७; ११४ । ५,५८,२; २९३
 दे० [मरुत्] ७

मायी [वरुणः] ६,४८,१४; ३३०
 मारुतम् ८,२०,९; ९०
 मारुतः गणः १,३८,१५; ३९ । ६४,१२; ११९ । ५,५२,
 १३-१४; २२९,२३० । ५३,१०; २४३ । ५८,१;
 २९२ । ६१,१३; ३१४ । ८,९४,१२; ४०६
 मारुत शर्धः १,३७,१५; ६,१० । ८,२०,९; ९० ।
 २,३०,११; १९८ । ५,५२,८ २२४ । ५४,१; २५० ।
 अथ० ४,२७,७; ४४६
 मितस वा य० १७,८४; ४२०
 मीळुषः ८,२०,३,१८; ८४,२९
 युच्छमानाः स्वधाम् ७,५६,१३; ३९७
 यजत्राः ५,५५,१०; २७४ । ५८,४; २९५ । ७,५७,१,४,
 ५; ३७०,३७३,३७४
 यज्ञवाहसः १,८६,२; १३६
 यज्ञियाः-यासः ५,५२,१; २१७ । ६१,१६; ३१७ । ८७,
 ९; ३२६ । १०,७७,८; ४१४
 यतस्तुचः २,३४,११; २०९
 ययियः १०,७८,७; ४२१
 यामं येष्टाः ७,५६,६ ३५०
 युक्ताः इह अथ० ५,२६,५; ४३२
 युधा ५,५२,६; २२२
 युवा-वान ८,२०,१७-१९; ९८-१०० । १,६४,
 ३; ११० । ५,५७,८; २९१ । ५८,३,८; २९४,२९९ ।
 ६१,१३; ३१४ । १,८७,४; १४८
 रहयन्तः अद्रिम्- १,८५,५; १२७
 रघुपत्नानः १,८५,६; १२८
 रघुव्य-स्य-दः १,६४,७; ११४
 रजस्तुरः १,६४,१२; ११९
 रथेष्टुभ १,३७,१; ६
 रथेषु तस्थिवांसः ५,५३,२; २३५

मरुतां रथः ।

अश्वपर्णा १,८८,१; १५१
 ऋष्टिमन्तः १,८८,१; १५१
 वृषल्यः ५,६०,२; ४५०
 विद्युन्मन्तः १,८८,१; १५१
 वीळुपवयः ५,५८,६; १९७
 श्रवस्यव ५,५५,८; २७४
 श्रुता ५,६०,२; ४५०
 सुखाः ५,६०,२; ४५०

हिरण्ययाः ५,५७,१; २८४

यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुसु रोदसी
५,५६,८, २८२

रथ्यः १०,७८,५, ४१९

रभिष्ठा ४,५८,५, २९६

रिशादस १,३९,४; ३९ । ६४,५; ११२ । ५,६१,१६;
३१७ । ७,५९,९, ३९१ । १०,७७,३,५; ४०९,४११ ।

वा० य० ३,४४. ४२३ । क्र० ५,६०,७; ४५२

रुक्मवक्षसः ८,२०,२२, १०३ । २,३४,२,८; २००,२०६ ।
५,५५,१; २६५ । ५७,५; २८८ । अथ० ६,२२,२;
४३०

रुचाना. वृष्टिभि. ७,५६,१३, ३५७

रुद्रः पृषा पिता ५,५२,१६; २३२ । ६०,५; ४५३

रुद्रस्य पुत्रा. ५,५९,८, ३०७ । ६,६६,३; ३३६

रुद्रस्य मर्या. १,६४,२, १०९ । ७,६६,१; ३४५

रुद्रस्य सुनु-नवः ८,२०,१७, ९८ । १,६४,१२; ११९ ।
८५,१, १२३ । ६,६६,११; ३४४

रुद्राः-द्रामः १,३९,४,७, ३९,४२ । ८,७,१२; ५७ ।
२०,२, ८३ । १,६४,३, ११० । ८५,२, १२४ । १६६,
२; १५९ । २,३४,९; २०७ । ५,५४,४, २५३ । ५७,
१; २८४ । ८७७; ३२४ । ६०,२, ४५०

मरुतां पिता ।

हृत्मा ५,५२,१६; २३२

युवा ५,६०,५, ४५३

रुद्र ५,५२,१६; २३२ । ६०,५; ४५३

स्वपाः ५,६०,५, ४५३

रुद्रियाः-यास १,३८७; २७ । ८,२०,३, ८४ । २,३४,
१०, २०८ । ३,२६,५, २१५ । ५,५७,७, २९० ।

५८,७, २९८ । ७,५६,२२; ३६६

रूपाणि चित्रा दृश्या ५,५२,११; २२७

रैवतासः ५,६०,४; ४५२

रोहित. अथ० १३,१,३; ४३३

वज्रहस्ताः ८,७,३२, ७७

वनी १,६४,१२. ११९

वयोवृध ५,५४,२; २५१

वराहवः १,८८,५; १५५

वरिवर्यन्तः ७,५६,१७; ३६१

वर्षनिर्णिज ३,२६,५, २१५ । ५,५७,४, २८७

वर्षिष्ठ. १,३७,६; ११

ववक्षु १,६४,३; ११०

वसव २,३४,९, २०७ । ५,५५,८; २७२ । ७,५६,१७;
३६१ । ५९,८; ३९० । १०,७७,६, ४१२ । अथ० ३,
१,२; ४३४ । ४,२७,६; ४४५

वाणं धमन्तः १,८५,१०; १३२

वातविषः ५,५४,३; २५२ । ५७,४; २८७

वातस्वनसः ७,५६,३; ३४७

वावक्षानाः ७,५६,१०; ३५४

वावृधानाः स्तोत्रम् १०,७८,८, ४२२

वाशीमन्त. १,८७,६; १५० । ५,५७,२, २८५

वाश्राः-आसः ८,७,३,७, ४८,५२

विचयत् नः कृतम्- [अभि] ५,६०,१; ४४९

विचर्षणिः १,६४,१२; ११९

विचेतसः ५,५४,१३; २६२

विजानुषः १०,७७,१, ४०७

विद्वस्तु १,६,६, २

विदितम् अथ० ४,२७,७, ४४६

विद्युद्धस्ताः ८,७,२५; ७०

विद्युन्महसः ५,५४,३, २५२

विधावन्तः १,८८,५; १५५

विपथयः ५,५२,१०; २२६

विपन्यवः ५,६१,१६; ३१७

विप्रः १,८६,३; १३७

विभ्वः १,१६६,११; १६८

विभूतयः १,१६६,११; १६८

विमहस १,८६,१; १३५ । ५,८७,४; ३२१

विराग्निः १,६४,१०; ११७ । ८७,१; १४१ । १६६,८;
१६५

विरोक्णिः १०,७८,३; ४१७

विश्वे ५,५८,३; २९४

विश्वकृष्टयः ३,२६,५; २१५

विश्वपिशाः ७,५७,३; ३७२

विश्वमिन्वाः ५,६०,८; ४५६

विश्ववेदसः १,६४,८,१०; ११५, ११७ । ३,२६,४; २१४ ।
५,६०,७; ४५५

विष्टार यज्ञम् ५,५२,१०; २२६

विष्णु ५,८७,१; ३१८

विष्णुर्धा-स्पर्ध-स ५,८७,४; ३२१

वीरः-राः-रासः १,८५,१; १२३ । ८६,४; १३८ । ५,६१,
४, ३११

वीळुपाणय १,३८,११; ३१

वृक्षवर्हिषः १,३८,१, २१ । ८,७,२०-२१; ६५-६६

वृद्धाः १, ३८, १५; ३५
 वृद्धशवसः ५, ८७, ६; ३२३
 वृद्धन् ६, ६६, ११; ३४४
 वृद्धासः तमसः इत् १, १७२, २; १९४
 वृद्धा-वाणः ८, ७, ३३; ७८ । २०, ९, १२, १९, २०; ९०, ९३,
 १००, १०१ । १, ६४, १, १२; १०८, ११९ । ७, ४, ८
 १४८ । ७, ५८, ६; ३८२ । ८, ९४, १२; ४०६
 वृषत्वादयः १, ६४, २०; ११७
 वृषप्रयावा ८, २०, ९; ९०
 वृषसवः ८, २०, ७, ८८
 वृषवातासः १, ८५, ४; १२६
 वृष्टयः २, ३४, २; २०० । ५, ५३, ६; २३९
 वेधाः १, ६४, १; १०८ । ५, ५२, १३; २२९ । ५४, ६; २५५
 वेधस असुरस्य ८, २०, १७; ९८
 व्यक्ता ७, ५६, १; ३४५
 झग्माः अथ० ४, २७, ३; ४४२
 झग्मविष्टाः आदित्येन नाम्ना- १०, ७७, ८; ४१४
 शर्धः १, ३७, ४, ९ । ८, २०, ९; ९० । १, ६४, १ १०८ ।
 ५, ८७, १; ३१८ । ७, ५६, ८; ३५२
 शर्धः मारुतम् १, ३७, १, ५; ६, १० । ८, २०, ९; ९० ।
 २, ३०, ११; १९८ । ८ ५, ५२, २२४ । ५४, १,
 २५० । अथ० ४, २७, ७, ४४६
 शर्धन् ५, ५६, १, २७५
 शर्धमारुतः ६, ४८, १२, १५, ३२८, ३३१
 शवस् ५, ८७, १; ३१८
 शवसा आहिमन्यवः १, ६४, ८, ९. ११५, ११६
 शश्वतः ५, ५२, २; २१८
 शाकी वा० य० १७, ८५; ४२६
 शाकिन ५, ५२, १७; २३३
 शिकल ५, ५२, १६, २३२ । ५४, ४, २५३
 शिमीवन्तः ८, २०, ३; ८४ । १०, ७८, ३; ४१७
 शुचयः १, ६४, २; १०९ । ६, ६६, ४, ३३७ । ७, ५६, १२;
 ३५६ । ५७, ५; ३७४
 शुचिजन्मानः ७, ५६, १२, ३५६
 शुभं यावत् ५, ५५, १-९; २६५-२७३
 शुभंयावा-वानः ५, ६१, १३ ३१४ । वा० य० २५, २०, ४२८
 शुभयन्तः ५, ६०, ८; ४५६
 शुभा शोभिष्ठाः ७, ५६, ६, ३५०
 शुभ्रा ८, ७, २, १४, २५, २८; ४७, ५९, ७०, ७३ । १, ८५, ३,
 १२५ । १६७, ४. १७५ । ७, ५६, १६; ३६०

शुभ्रत्वादयः ८, २०, ४; ८५
 शुभ्रमानाः तम्बः ७, ५६, ११; ३५५ । ५९, ७; ३८९
 शुश्रूक्षांसः ५, ८७, ६, ३२३
 शुश्रूचाना २, ३४, १. १९९
 शुष्मी १, ३७, ४, ९
 शूराः १, ६४, ९; ११६
 शूश्रूक्षांस घृणुना शवसा १, १६७, ९ १८०
 शेवृध ५, ८७, ४, ३२१
 श्रायाः ५, ५३, ४; २३७
 श्रुतः १, ६, ६, २
 श्रियांसः श्रिये ५, ६०, ४, ४५२
 श्रेष्ठतमाः ५, ६१, १, ३०८
 श्रोतार यामहृतिषु ५, ६१, १५, ३१६
 संवत्सरीणाः अथ० ७, ७७, ३; ४४७
 सखाय ८, २०, २३, १०४ । ६, ६६, ११, ३२७
 सखाय स्थिरस्य शवसः -- ५, ५२, ०. २१८
 सगगा अथ० ७, ७७, ३; ४४७
 सजोषस. ५, ५७, १; २८४
 सजोषस. करम्भेण वा० य० ३, ४४, ४२३
 सत्य १, ८७, ४; १४८
 सत्यशवसः १, ८६, ८, ९, १४२, १४३ । ५, ५२, ८, २२४
 सत्यश्रुत ५, ५७, ८, २९१ । ५८, ८; २९९
 सटश्रासः वा० य० १७, ८४; ४२५
 सद्यजतयः १०, ७८, २; ४१६
 सद्यश्च ५, ६०, ३, ४५१
 सनाभयः १०, ७८, ४, ४१८
 सनीळा, ७, ५६, १, ३४५
 सप्तसप्त ५, ५२, १७; २३३
 सप्तय ८, २०, २३; १०४ । १, ८५, १, १०३
 सप्रथाः अथ० १, २६, ३; ४३०
 सप्तसरासः १, १६८, ९ १९१
 सप्तन्धव ८, २०, २१; १०२ । ५, ५९, ५, ३०४
 सबाधः १, ६४, ८, ११५
 सभरसः ५, ५४, १०, २५९ । वा० य० १७, ८४; ४२५
 समन्यव ८, २०, १, २१, ८२, १०२ । २, ३४, ३, ५, ६; २०१
 २०३, २०४ । ५, ८७, ८, ३२५
 समुक्षिता स्तोमैः ५, ५६, ५; २७९
 समोकसः १, ६४, १०; ११७
 समित्ताम. वा० य० १७, ८४; ४२५
 संमिष्ठा इन्द्रे १, १६६, ११; १६८

समिश्रास तविषीमि १,६४,१०; ११७
 समिश्रा भ्रिया ७,५६,६, ३५०
 सर्गाः मरुताम् ५,५६,५, २७९
 सर्गा वर्षस्य अथ० ४,१५,४; ४५८
 सस्व ७,५९,७ ३८९
 सहन्त ५,८७,५, ३२२
 साकम् उक्षिताः ५,५५,३ २६७
 साकंजाता ५,५५,३; २६७
 सान्तपना ७,५९,९,३९ । वा० य० १७,८५,४२६ । अथ०
 ७,७७,३, ४४७
 मा (स) हा ८,२०,२०, १०१
 सिन्धवः ५,५३,७, २४०
 सिन्धुमातरः १०,७८,६, ४२०
 सुक्रतु [इन्द्र] ६,४८,१४, ३३०
 सुखादि ५,८७,१, ३१८
 सुजाता -- तास ८,२०,८, ८९ । १,८८,३; १५३ ।
 १६६,१२; १६९ । ५,५७,८, २८८ । ५९,६; ३०५
 सुजिह्वाः १,१६६,११; १६८
 सुदसस १,८५,१ १२३
 सुदानव १,१५,२, ५ । ३९,१०, ४५ । ८,७,१२,१९,
 २०, ५७,६४,६५ । ८,२०,१८,२३, ९९,१०४ ।
 १,६४,६; ११३ । ८५,१०, १३२ । १७२,१,२,३;
 १९५,१९६,१९७ । २,३४,८; २०६ । ३,२६,५, २१५ ।
 ५,५२,५ २२१ । ५३,६, २३९ । ५७,५, २८८ ।
 ७,५९,१०, ३२२ । १०,७८,५; ४१९ । अथ० १३,
 १,३; ४३३ । ४,१५,७; ४६१
 सुधन्वान ५,५७,२, २८५
 सुनिष्का ७,५६,११, ३५५
 सुनीतयः १०,७८,२, ४१६
 सुपिशः १,६४,८; ११५
 सुपंशसः ५,५७,४; २८७
 सुबर्हिषः ८,२०,२५, १०६
 सुभगास ५,६०,६; ४५४
 सुभ्रवः ५,५५,३; २६७ । ५९,३ ३०२ । ८७,३, ३२०
 सुमस्व -त्वाः १,६४,१, १०८ । ८५,४; १२६ । ५,८७,७,
 ३२४
 सुमातरः १०,७८,६, ४२०
 सुमाया १,८८,१; १५१
 सुमारुतः गणः १०,७७,१,२, ४०७,४०८
 सुग्धा ५,५७,२, २८५

सुरातयः १०,७८,३; ४१७
 सुवृधः ५,५९,५, ३०४
 सुशर्माण १०,७८,२; ४१६
 सुशुक्लानः ५,८७,३, ३२०
 सुश्रवस्तमाः ८,२०,२०; १०१
 सुष्टुताः विदथेषु १,१६६,७, १६४
 सुष्टुभाः १०,७८,४; ४१८
 सुसदशः ५,५७,४; २८७
 सुसंज्ञा १०,७८,१, ४१५
 सूरय ८,९४,७, ४०१ । १०,७८,६, ४२०
 सूरचक्षस वा० य० २५,२०; ४२८
 सूर्यत्वच -- चसः ७,५९,११, ३९३ । अथ० १,२६,३; ४३०
 सप्रभोजा. [विष्णु] ६,४८,१४; ३३०
 सोभरीयवः ८,२०,२, ८३
 स्कम्भदेवणा प्र १,१६६,७; १६४
 स्तनयदमाः ५,५४,३, २५२
 स्तुतासः ७,५७,६,७, ३७५,३७६
 स्थातारः ५,८७,६; ३२३
 स्थारश्मानः ५,८७,५, ३२२
 स्थिराः ८,२०,१, ८१
 स्पन्दासः ५,५२,३; २१९
 स्पन्दास धुनीनाम्-५,८७,३०, ३२०
 स्थोना अथ० ४,२७,३, ४४२
 स्वजाः १,१६८,२, १८४
 स्वस्वः ७,५६,१६, ३६०
 स्वतवसः १,१६६,२, १५९ । १६८,२; १८४ । ६,६६,९;
 ३४२ । ७,५९,११; ३९३
 स्वतवान् वा० य० १७,८५; ४२६
 स्वभानवः १,३७,२, ७ । ८,२०,४; ८५ । ५,५३,४, २३७ ।
 ५४,१, २५० । ६,४८,१२; ३२७
 स्वयुक्ताः १,१६८,४; १८६
 स्वयुजः १०,७८,२, ४१६
 स्वराजः ५,५८,१, २९७ । ८,९४,४, ३९८
 स्वरितार आसभिः १,१६६,११, १६८
 स्वरोचिषः ५,८७,५; ३२२
 स्वर्काः अथ० ७,७७,३; ४४७
 स्वर्णरः ५,५४,१०; २५९
 स्ववसः [अग्नि] ५,६०,१, ४४९
 स्वविद्युतः ५,८७,३; ३२०
 स्वस्था ५,५७,२; २८५ । ७,५७,१, ३४५

स्वस्त-तः १,६४,११, १११ । ८७,४; १४८
 स्वादुसंमुदः अथ० १३,१,३; ४३३
 स्वानिनः ३,२६,५; २६५
 स्वायुधा.-धासः ५,५७,२; २८५ । ८७,५; ३२२
 हर्म्येष्टाः ७,५६,१६; ३६०
 हस्तिन १,६४,७; ११४

हिरण्यचक्राः १,८८,५; १५५
 हिरण्ययाः ५,८७,५; ३२२
 हिरण्यरथाः ५,५७,१; २८४
 हिरण्यवर्णाः २,३४,११; २०९
 हिरण्यवाशी ८,७,३२, ७७
 हिरण्यशिप्रा २,३४,३; २०१
 हादुनी नि-वृत्तः ५,५४,३; २५२



मरुदेवता-संहितान्तर्गत-निपातदेवतानां

सूची ।

ऋषिजः । १,६,६ अग्नेवेद

इन्द्र । १,६,८

ऋतु । १,१५,२

मरुतः क्रीळिन । १,३७, १-१५

निकृतिः । १,३८,६

मरुस्तोता ऋषिगणः । १,३८,१३-१५

ब्रह्मणस्पति, अग्निः, मित्रः । १,३८,१३

वज्री [इन्द्रः] । ८,७,१०

अग्निः । ८,७,३६

रुद्राः । १,६४,३

* मरुदिन्द्रविष्णवः । [ऐत० ब्रा० १२,७] १,६४,६

रुद्राः । १,८५,२

* ऋभवः [ऐत० ब्रा० २८,४] १,६४,६

त्वष्टा, इन्द्रश्च । १,८५,९

* इन्द्रामरुतः [ऐत० ब्रा० २८,२] १,८६,१

* अग्निमरुत्वान् [ऐत० ब्रा० ३२,८] १,८६,१

रुद्राः । १,१६६,२

रोदसी [मरुत्पत्नी, विष्णु] १,१६७,५

रोदसी । १,१६८,१

पृथ्विः । १,१६८,९

अग्निः । ५,५६,१

मारुतः रथः । ५,५६,८

मीकडुषी [= रुद्रपत्नी] ५,५६,९

रुद्राः । ५,५७,१

अग्निः । ५,५८,३

धौः, अदितिः, उषसः । ५,५९,८

विष्णु मरुत्वान् । ५,८७,१

रुद्राः । ५,८७,७

धेनुः । ६,४८,११-१३

धेनु, इन्द्र । ६,४८,१३

इन्द्रः, वरुणः, अर्यमा, विष्णु । ६,४८,१४

पृथ्विः । ६,६६,१-३

अग्निः । ६,६६,९

मरुतः क्रीळिनः । ७,५६,१६

इन्द्रः, मित्रः, वरुणः, अग्निः,

आपः, ओषधीः, वनिनः,

मरुतः च । ७,५६,२५

देवाः, अग्नि, वरुणः, मित्रः,

अर्यमा, मरुतः च । ७,५९,१

देवाः । ७,५९,२

सान्तपना मरुतः । ७,५९,९

गृहमेधासः मरुतः । ७,५९,१०

स्वतवसः मरुतः । ७,५९,११

गौः [मरुतां माता] ८,९४,१-२

मित्र, अर्यमा, वरुण । ८,९४,५

इन्द्रः । ८,९४,६

मरुतः, देवाः च । १०,७७,७

मरुदेवता-संहितान्तर्गत निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची ।

अग्निः ऋ० १,३८,१३; ८,७,३६; ५,५६,१; ५८,३; ६,६६,
९; ७,५६,२५; ७,५०,१
अदितिः ५,५९,८
अथेमा ६,४८,१४; ७,५९,१; ८,९४,५
आपः ७,५६,२५
इद् ६,४८,१३
इन्द्रः १,६,८; ८,७,१०; १,८५,९; ६,४८,१४. ७,५६,
२५; ८,९४,६
वृषासः ५,५९,८
ऋतुः १,१५,२
ऋत्विजः १,६,६
ऋत्विग्गणः [मरुत्सोता] १,३८,१३--१५
ओषधीः ७,५६,२५
क्रीलिनः मरुतः १,३७,१--१५; ७,५६,१६
गौः ८,९४,१-२
गृहमेधासः मरुतः ७,५९,१०
त्वष्टा १,८५,९
देवाः ७,५९,१ २; १०,७७,७

घौः ५,५९,८
धेनुः ६,४८,११--१३
निर्ऋतिः १,३८,६
पृथिः १,१६८,९; ६,६६,१-३
ब्रह्मणस्पतिः १,३८,१३
मरुत पश्य - 'क्रीलिनः,' 'गृहमेधास,' 'सान्तपनाः,'
'स्वतवसः'
मित्रः १,३८,१३; ७,५६,२५; ७,५९,१; ८,९४,५
मीळुषी ५,५६,९
रथः मारुत ५,५६,८
रुद्राः १,६४,३; ८५,२; १६६,२; ५,५७,१; ५,८७,७
रोदसी १,१६७,५; १,१६८,१
वज्री [इन्द्र] ८,७,१०
वनिनः ७,५६,२५
वरुणः ६,४८,१४; ७,५६,२५; ७,५९,१; ८,९४,५
विष्णुः ५,८७,१; ६,४८,१४
सान्तपना मरुतः ७,५९,९
स्वतवसः मरुतः ७,५९,११



